वचनामृतम्

रहस्यार्थप्रदीपिकाटीकोपेतम्

॥ श्री स्वामिनारायणो विजयतेतराम् ॥

श्री प्रगट पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायणनां



वचनामृत.

(२७३)

संग्रह करनार,

सद्गुरु मुक्तानंदस्वामी, स. गोपालानंदस्वामी, स. ब्रह्मानंदस्वामी,
स. नित्यानंदस्वामी, स. शुकानंद मुनि.

श्री कच्छदेशे वृषपुरनिवासी अनादि मुक्तराज
अवजीभाइए करेली

रहस्यार्थ प्रदीपिका टीका.

संग्रह करनार,

सद्गुरु ईश्वरचरणदासजी स्वामी.

ग्रंथोऽयं सकलार्थ साधनकरो दुस्तर्क मूलापहृद्
भक्तिज्ञान विरागधर्म भगवन्माहात्म्य रत्नाकरः ।
अत्र श्रीहरिणात्मनाह्यनुभवः सच्छास्त्रसंमानितः
प्रोक्तोऽस्तीति भजन्निमं प्रतिदिनं स्यात्पूर्णकामोनरः ॥

श्रीजीमहाराज, आचार्य, साधु तथा सत्संगीनी प्रसन्नताने अर्थे

छपावी प्रसिद्ध करनार,

परीख बळदेवदास वल्लभदास.

सं. १९८२. आवृत्ति पहेली ई. स. १९२५.

मूल्य रु. ५-०-०

मुद्रक, देशाइभाई हीराचंद मुद्रणस्थान, देशाइ प्रीन्टींग प्रेस
रीचीरोड-अमदावाद.

अनुक्रमणीका तथा प्रस्तावना,
वसंत प्री. प्रेसमां चीमनलाल ईश्वरलाले छापी.

मुखपृष्ठ तथा फोटाओ छाप्या श्री फीनीक्ष प्री. वर्क्स, टंकशाळ, अमदावाद.

पुस्तक मळवानां ठेकाणां:-

प्रकाशक पासेथी श्री फाईन नीटींग मील नरोडा रोड, अमदावाद.
महेता लालशंकरभाई जीवराम, ठे. श्री मदुरा क्लोथ स्टोर, भुलेश्वर, मुंबाई.
मोन्जी लालजी जीवराम.... ... रामस्वामी गाडीखातुं, करांची.
दलपतराम करुणाशंकर ओझा, वजु कंटोइनो डेलो, मु. जामनगर
तारमास्तर केशवलाल जगजीवनदास,... ... जुनागढ.
रा. रा. हरगोविंदभाई कालीदासभाई, ... वडवा, भावनगर.
ठाकर मणीलाल खांडीदास. ... ... मु. वढवाण.

पूर्ण ब्रह्म पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान



PHOENIX P. WORKS



अनादि मुक्तराज सद्गुरु श्री गोपाळानंद स्वामी.



अनादि मुक्तराज सद्गुरु श्री मुक्तानंद स्वामी.



अनादि मुक्तराज पंडीताग्रगण्य सद्गुरु श्री नित्यानंदस्वामी.



अनादि मुक्तराज सद्गुरु श्री ब्रह्मानंद स्वामी.



अनादि मुक्तराज सद्गुरु श्री शुकानंद स्वामी.



प्रस्तावना.

आपणा उद्धवीय संप्रदायमां धर्म, ज्ञान भक्ति वैराग्यादि सद्गुणोनुं असरकारक रीते निरुपण करनारा मोटा मोटा सद्गुरुओना हाथथी लखापला ग्रंथोनुं प्रमाण ठीक छे. परंतु श्री प्रगट पुरुषोत्तम श्रीस्वामिनारायण भगवाननी स्वमुख वाणी के जे "श्रीवचनामृत" नामथी ओळखाय छे, ए सौमां प्रथम स्थान ले छे. आ ग्रंथ मांहेना कोइ एक विषयनुं विचार पूर्वक अध्ययन मात्र तेने सारमूळक अने सर्व ग्राह्य होवानुं वगर विलंबे साबीत करे छे. पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीस्वामिनारायण भगवाननां वचनामृतो आ पृथ्वीपर क्यांथी श्रवणगोचर थइ शके? ए तो पोते कृपा करी नरनाटक धरी पृथ्वीपर पधारी आश्रित जनोने श्रवण मनोहर वचनामृतो संभळावे त्यारेज बनी शके. परब्रह्म पूर्णपुरुषोत्तमे वचनामृतो संभळाव्यां तो खरां, परंतु अनादिमुक्तराज गोपाळानंदस्वामी आदिक पांच सद्गुरुओए मुमुक्षुओपर दया करी ते वचनामृतोनो संग्रह करी राख्यां न होत-तो ते लाभ आपणने क्यांथी मळत? सद्गुरुओए ते कार्य पण कर्युं अने ते संग्रह तेमणे पूर्णपुरुषोत्तमने बतावी तेमनो आशीर्वाद पण मेळव्यो. आ पृथ्वीपर ज्ञानना अनेक ग्रंथो छे तेमां वचनामृत सर्वना मुकुट स्थाने विराजे छे. ते सरळ प्राकृत भाषामां होइ ज्ञानना गहन विषयो पण तेमांथी घणी सहेलाइथी आबाळवृद्ध सर्वने समजाइ जाय छे. श्रीवचनामृतनी आम टुंकमां सर्वोत्कृष्टता बताव्या पछी यटलुं कहेवानी जरुर जणाय छे के, आ ग्रंथनी असल प्रतनी हस्तलिखित जूज नकलो मात्र मोटा मोटा मंदिरोमांज रहेली अने वंचाती, परंतु समय जतां आ पुस्तकनी मांग दिन प्रतिदिन वधवा लागी अने तेने पहोंची वळवा मुद्रित करेल प्रतो संप्रदायमां फेलावा पामी. आ वचनामृतना मूळ स्वरुपने बाधित थवो कोइ पण फेरफार कर्याथी तेनी अंदर रहेलो जुस्सो, भावना अने रस मार्यो जाय छे. तेथी अमोए मूळ प्रतमां कोइ जातना सुधारा वधारा करवा अनुचित धारी प्रथमनी सद्गुरुओना हाथथी लखापल प्रतने आ स्वरुपमां लाववा श्रद्धाळु हरिजनना लाभार्थे प्रयास कर्यो छे. अमोने आशा छे के सौ कोइ हरिभक्त एनो लाभ लेवा चूकशे नहि. श्रीवचनामृत जेवा दिव्यग्रंथमां वांचक वर्गनी सगवडता जाळववानो हेतु अमारा लक्ष्य बहार न होइ, ग्रंथमांहेला प्रश्न बाबत अने विषय तथा एक एक वचनामृतमां शुं शुं विषयपर शा शा प्रश्नोत्तर थया छे, ते संपूर्ण रीते अने सहेलाइथी जोइ शकाय, ए हेतुथी एक एक पानामां बन्ने हांसीया पाडवामां आव्या छे. अने तेनी अंदर एक तरफ प्रश्न अने बीजी तरफ बाबतना आंक विगतपूर्वक आपवामां आव्या छे. वचनामृतना अंक नीचे अथवा प्रश्नना अंक नीचे जे अंक होय ते बाबतनो जाणवो.

आ श्री वचनामृतरूप दिव्य ग्रंथ उपर श्रीकच्छदेशमां आवेला वृषपुर (बळधोया) निवासी अनादिमुक्तराज श्री अबजी बापाए आपणा उद्धव संप्रदायना तत्त्वज्ञाननी घणीज अलौकिक, सूक्ष्म अने आध्यात्मिक बाबतो, के जेना अर्थो सामान्य लोक समूहना जाणवा बहार छे, अने जेने लइ स्वरूपनिष्ठानी जोइए तेवी समजण पडती नहि होवाथी, श्रीवचनामृतनी एकवाक्यता जाळवी श्रीजीमहाराजना प्रगट स्वरूपना आध्यात्मिक रहस्यनी बाबतो-उपर सादी अने सरळ भाषामां, "रहस्यार्थ प्रदीपिका" नामे टीका करेल छे. यद्यपि श्रीजीमहाराजे आ वचनामृतथी अतिरिक्त कंइ कहेवानुं बाकी राख्युं नथी, तोपण देशकाळादिकने ध्यानमां लइने केटलीक वातो बीजरूपे तो केटलीक परोक्षभावमां कही छे. वळी श्रीजीमहाराजे क्यांक पोताने भक्त तरीके तो क्यांक अवतार तरीके अने क्यांकतो वळी सर्वना अवतारी तरीके पण पोताने जाहेर कर्या छे. आथी मुमुक्षुने श्रीहरिना स्वरूप निर्णय संबंधमां मुंझवण थाय छे खरी, तेथी अनादि मुक्तराज अबजी बापाए कृपा करी श्रीजीमहाराजना सर्वोपरि दिव्य स्वरूपनुं ज्ञान आ " रहस्यार्थ प्रदीपिका टीका " द्वारे आप्युं छे. मूळ वचनामृतमां कोइक स्थळे कोइ निमित्त वचनो श्रीजीमहाराजे परोक्ष भावमां भले कह्यां होय, परंतु आपणे जो तेमना सर्व अवतारना अवतारीपणाना मुख्य वाक्यो तरफ जोइशुं तो खात्री थशे के श्रीजीमहाराज सर्व अवतारना अवतारी कारण मूर्ति छे. आ रह्यां तेमांनां केटलांक अवतरणोः—

"एवां अनंत आश्चर्य छे ते सर्वे मुने मळया एवा जे भगवान तेनां कर्यां ज थाय छे. एम समझे पण प्रगट प्रमाण जे आ भगवान ते विना बीजो कोइ ए आश्चर्यनो करनार छे एम माने नहि." (प्र. २७-१-१) "आज सर्वे हरिभक्त छे ते एम समझे छे जे अक्षरातीत एवा जे भगवान पुरुषोत्तम ते अमने प्रत्यक्ष मळया छे अने अमे कृतार्थ थया छइए एम समझीने प्रत्यक्ष भगवानना आज्ञामां रह्या थका भक्ति करे छे." (प्र. ३१-२-३) "गमे तेवो पापी होय ने अंत समे जो तेने स्वामिनारायण एवा नामनुं उच्चारण थाय तो ते सर्व पाप थकी छुटीने ब्रह्ममहोलने विषे निवास करे एवो भगवाननो प्रताप मोटो छे." तथा "ज्यारे ब्रह्मांडोनो प्रलय थइ जाय छे त्यारे आ प्रगट भगवान छे तेज एक रहे छे." [प्र. ५६-३-४] "अक्षरातीत ने मन वाणी थकी पर ने अगोचर एवा जे भगवान तेज पोते कृपा करीने एम धारे छे जे ज्ञानी अज्ञानी एवां जे मर्त्यलोकनां मनुष्य ते सर्वे मुने देखो एम धारीने सत्य संकल्प एवा जे आ भगवान ते कृपाए करीने मर्त्यलोकनां सर्व मनुष्य देखे एवा थाय छे." (प्र ७८-९-९) "जे भक्त एम समझे जे आ भगवान ने आ संत ते सर्वे वैकुंठ गोलोकने ब्रह्मपुर तेना निवासी छे, ते संत ने परमेश्वर ज्यां विराजमान छे त्यांज सर्वे धाम छे," (प्र-७८-११-११) "जे साधु एम समझतो होय जे मारा चैतन्यने विषे आ भगवान सदा विराजमान छे." [सा. १०-२-४] "सर्वना स्वामी जे पुरुषोत्तम ते मुने प्रत्यक्ष मळया छे अने ते मारा आत्माने विषे अखंड विराजमान छे." [का. १-२-२] "पोताना इष्टदेव जे प्रत्यक्ष श्री स्वामिनारायण तेनो भक्त तेने विषे जे कांइक अल्प दोष होय ते महि-

माना समझनाराजी दृष्टिमां आवे नहि." [का. ९-२-२] "जीवनुं कल्याण तो आटलीज वातमां छे जे प्रगट प्रमाण एवा जे श्री स्वामिनारायण तेमनुंज कर्युं सर्वं थाय छे." [का. १०-१-२] "ज्यारे एवा भुंडा घाट थवा मांडे त्यारे ध्यानने पडयुं मुकीने जीभे करीने उंचे स्वरे निर्लज्ज थइने ताळी वजाडीने स्वामिनारायण, स्वामिनारायण भजन करवुं. अने हे दिनबंधो ! हे दयासिंधो ! एवी रीते भगवाननी प्रार्थना करवी तथा भगवानना संत जे मुक्तानंदस्वामी जेवा मोटा होय तेनां नाम लेइने तेनी प्रार्थना करवी तो घाट सर्वे टळी जाय." (लो. ६-१४-१७) "सर्वथी पर एक मोटो तेजनो समूह छे, ते तेजनो समूह अधोऊर्ध्व तथा चारे कोरे प्रमाणे रहित छे ने अनंत छे, ने ते तेजना समूहना मध्य भागने विषे एक मोटुं सिंहासन छे. तेनी उपर दिव्य मूर्ति एवा जे श्री नारायण पुरुषोत्तम भगवान ते विराजमान छे ने ते सिंहासनने चारे कोरे अनंत कोटि मुक्त बेठा थका ते नारायणनां दर्शन करे छे." (लो. १४-१-२) "बीजा अवतारे करीने थोडी शक्ति जणावी छे, अने आ अवतारे करीने संपूर्ण ऐश्वर्य, शक्तिओ जणावी छे. माटे आ अवतार सर्वोत्कृष्ट-पणे वर्ते छे. एवी रीते जो उपासनानी दृढता आ भगवानने विषे राखशो तो कदाचित् कांइक अवळुं वर्ताइ जाशे तो पण अंते कल्याण थाशे." [पं. ६-१-२] एवा मर्मना जाणनारा छे ते आ भगवाननुं स्वरुप अक्षरधामने विषे जेवुं रह्युं छे तेवुंज पृथ्वीने विषे जे भगवाननुं मनुष्य स्वरुप रह्युं छे तेने समझे छे पण ते स्वरुपने विषे ने आ स्वरुपने विषे लेशमात्र फेर समजता नथी." [पं ७-१-२] "भगवाननी मूर्तिनुं बळ अतिशे राखवुं जोइए. सर्वोपरि जे भगवाननुं स्वरुप छे, तेज मुने प्राप्त थयुं छे." (म. ९-१-१.) "तेजने विषे जे मूर्ति छे तेज आ प्रत्यक्ष महाराज छे. एम जाणज्यो.' (म. १३-१-३)

"तत्तेजःपुंजमध्यस्थएवाऽद्याहंवदामिच। युष्मानपिचपश्यामिनिषण्णांस्तत्रसर्वशः॥२९॥ भूरितेजसियःमोक्तोभगवान्दिव्यविग्रहः । मामेवतंतुजानीतस्थितमत्रनराकृतिम्॥६३॥ हरिवाक्यसुधासिन्धु तरंग ॥ १४६ ॥"

"आ तमे सर्वे छो ते मुने भगवान जाणो छो ते अमे ज्यां ज्यां उच्छव समैया कर्या होय ए आदिक जे अमारां चरित्र लीला तेने कहेवां ने सांमळवांने तेनुं मनमां चिंतवन करवुं. माटे एवां जे अमारां सर्वे चरित्र किया तथा नाम स्मरण ते कल्याणकारी छे." (म. ३५-१-४)

"सांमतंत्विहसर्वेषांभवतांसुदृढामतिः । मय्येवकृष्णोऽयमितितत्कार्यामदुपासना ॥ ३२ ॥ मच्चरित्राणिहेयन्निश्रोतव्यानिचसादरम्। ममध्यानंविधातव्यंस्मर्तव्यामत्कृतोत्सवाः॥३४॥ एवं विदधतोयूयंमद्भक्तेरतुमतापतः । देहांतेपरमं धाम मदीयं प्राप्स्यथ ध्रुवम् ॥ ३६ ॥ सद्यस्तान्तिततः प्राप्यदेहं हित्वा सभौतिकम् । मद्धाम प्रापपरमंयूयंभजतमांततः॥२९॥" ह. सु. तरंग ॥१६८॥

"तमारो सर्वेनो आचार्य, गुरु, उपदेष्टा, ने इष्टदेव एवो जे हुं ते मारा देहनां जे आचरण ते प्रमाणे पण तमारे न करवुं." (१८-१-१४)

"त्यागिनांगृहिणांयेतुधर्माःसन्त्यौद्भवाध्वनि।तान्येवममवाक्यानिपालनीयानिमच्छ्रितैः ॥
वर्तिष्यतेऽन्यथायरतुसमदीयोनकर्हिचित्।वार्तैषाहृदयेधार्यासर्वैःकार्याचसर्वतः ॥४७॥"
ह. सु. तरंग ॥ २१८ ॥

"जे भगवान आ ब्रह्मांडने विषे विराजे छे तेज भगवान सर्वना स्वामी छे, तेने शरणे असंख्य जीव थाय छे तेणे करीने अक्षरधाममां श्री पुरुषोत्तमना चरणारविंदने घणाक जीव पामे छे." (अ. ५-२-२)

तम्रुवाचहरिःसाक्षाज्जातःकृष्णोऽत्रयोऽस्तिसः।धृत्वावतारंचरतिब्रह्मांडेष्वखिलेष्वपि ॥१२॥
प्रपद्यंते जनायेतं शरणं दृढ निश्चयाः । ब्रह्मधाम नयत्येव सतुतानखिलानपि ॥१३॥
अनंतकोटिब्रह्मांडाधारः कर्मफलप्रदः । ईश्वराणामीश्वरोऽसौदेवानामपिदेवता ॥८॥
ह. सु. तरंग ॥ २२४ ॥

आ सत्संगने विषे भगवान विराजे छे तेज भगवानमांथी चोवीश अवतार थया छे ने पोते तो अवतारी छे, सर्व जीवोना अंतर्यामी रुप छे, ने अक्षरधामने विषे तेजोमय छे, ने सदा साकार छे, ने अनंत ऐश्वर्य युक्त छे. अने पज राजाधिराज अनंत ब्रह्मांडना छे, ने अक्षर ब्रह्मना पण कारण छे. ने जेटला अवतार थया छे. ते आमांथी थया छे, ने तमने सर्वने आज भगवान मळ्या छे ते सर्वना कारण छे ने सर्व अवतारना अवतारी छे ने अक्षरधामना धामी छे." (अ. ६-१-१)

"योत्रास्तिभगवान्कृष्णस्तस्मादेवाऽखिलाअपि।अवताराहिसंजाताअवतारीस्वयंत्विह ॥८॥
अंतर्याम्येषएवास्तिसर्वेषामपिदेहिनाम् । एषएवाक्षरस्थश्चस्तेजस्वीपुरुषोत्तमः ॥९॥
अनंतकोटिब्रह्मांडराजराजोमहेश्वरः। अनंतैश्वर्यसंपन्नःसर्वकारणकारणम् ॥१०॥"
ह. सु. तरंग ॥ २२६ ॥

सर्व थकी पर एवुं जे श्रीपुरुषोत्तमनुं धाम तेमां गया त्यां पण हुंज पुरुषोत्तम छुं पण मारा विना बीजो मेंतो देख्यो नहि." तथा "जे जे जीव मारा शरणे आव्या छे अने आवशे ने एम समजशे ते सर्वने हुं सर्वोपरि एवुं जे मारुं धाम छे तेने पमाडीश, ने सर्वने अंतर्यामी जेवा करीश, ने ब्रह्मांडोनी उत्पत्यादिक करे एवा शरणागतने करवा छे." (अ. ७-१-१-२)

आज्ञाप्यतंचैकएवब्रह्मगम्ब्रह्मधामवै। तत्रमत्तःपरतरोनदृष्टःपुरुषोत्तमः॥ मामेवपूजयामासुःसर्वेब्रह्मांडनायकाः ॥१७॥
अहमेवाखिलांडानांजन्मादेहेतुरस्मिवै॥ मत्तःपरतरःकश्चिन्नास्त्येवभगवान्क्वचित् ॥
मत्तेजसैवसूर्याद्याःसन्तितेजस्विनोऽखिलाः ॥ १९ ॥
मदिच्छयैव ब्रह्मांड स्थिति रस्तिन चान्यथा ॥ २० ॥ "
ह. सु. त. ॥ २२७ ॥

"प्रत्यक्ष नरनारायण तमारी सभामां नित्य विराजे छे." (जे. ४-१-३)

"नारायणऋषिःस्त्रोऽयंप्रत्यक्षंमिलितोस्त्विवः । अतस्तमेवभजतनिश्चिन्ताःसर्वदादृढम् ॥"
ह. सु. तरंग ॥ २३३ ॥

"अमे तो भगवान जे श्रीनरनारायण ते छइए, अने अमारे आशरे आवशो तै धर्म नियममां रहेशे, तेने अमे अंतकाळे दर्शन दइने अक्षरधामने पमाडीए छइए." (जे. ५-१-१) "प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्ति ने धामनी मूर्ति तेमां लगार पण भेद नथी तेमां ने आमां पकरोमनो पण फेर न जणाय, धामने विषे जे मूर्ति छे तेज मूर्ति आ प्रत्यक्ष छे." (छे. ३१-१-१)

अतोयोऽस्त्यक्षरेधाम्निगुणातीतेहरिःस्वयम् । सएवास्त्यत्रप्रत्यक्षोनास्त्यल्पापितयोर्भिदा ॥
मनुष्याकृतिरप्येवकृष्णोभवतिनिर्गुणः । अक्षरस्थइवेत्येवविज्ञेयंसूक्ष्मदर्शिभिः ॥
ह. सु. तरंग ॥ २६४ ॥"

"तेजोमय एवुं जे पोतानुं अक्षरधाम तेने विषे सदा साकार मूर्तिथका विराजमान छे ने सर्वना कारण छे, सर्वना नियंता छे, सर्वना अंतर्यामी छे; अनेककोटि ब्रह्मांडना राजाधिराज छे, ने अलौकिक दिव्य सुखमय मूर्ति छे ने मायाना गुण थकी रहित छे एवी रीते आ प्रत्यक्ष भगवानने जाणीने भगवान विना जे बीजा सर्वे मायिक पदार्थ मात्र तेने अतिशे तुच्छ ने नाशवंत समजे." (छे. ३२-२-२):

उपरनां अवतरणो-प्रमाणोथी श्री सहजानंदस्वामीना पुरुषोत्तमपणामां-सर्वोपरिणामां-कशो संदेह रहेतो नथी. श्रीजीमहाराज सर्व अवतारोना अवतारी कारण मूर्ति छे एटलुंज नहि परंतु तेमनी साथे आवेला पांचसो परमहंसो पण अक्षरधामना दिव्य मुक्तोज हता, ते पण नीचे प्रमाणे श्रीमुखे कह्युं छे जेः—

"भगवान जीवना कल्याणने अर्थे ज्यारे मूर्ति धारण करे छे, त्यारे पोतानुं अक्षरधाम, अने चैतन्य मूर्ति एवा जे पार्षद अने पोतानां सर्व ऐश्वर्य ते सहितज पधारे छे."

यदाप्रादुर्भवत्यत्रकृपयाश्रेयसेनृणाम् । तदासहस्वधाम्नाचपरिवारेणजायते ॥ २८ ॥
नृत्वदिव्यत्वयोर्भिदस्नेषांनास्त्येवसर्वथा ॥ यत्तानेवसमाधिस्थानदिव्यरूपान्विचक्षते"॥३०॥
ह. सु. तरंग ॥७१॥

"जे भक्त एम समझे जे आ भगवानने आ संत ते सर्वे वैकुंठ, गोलोकने ब्रह्मपुर तेना निवासी छे. ते संत ने परमेश्वर ज्यां विराजमान छे त्यांज ए सर्वे धाम छे." (प्र. ७८-११-११)

अयंकृष्णइमेसंतःसर्वेब्रह्मनिवासिनः । यत्रकृष्णोस्तितत्रैवतद्धामास्तीतिवेत्तियः ॥३०॥"
महद्भाग्यमिदंमेयदेभिःसहममस्थितिः । एवंचवेत्तियस्तस्यचित्रंवर्त्ततचेतसि ॥३१॥
ह. सु. तरंग ॥ ७८ ॥

"जे भगवाने रामकृष्णादिक अवतारे करीने अनंत जीवनो उद्धार कर्यो छे ते भगवानना आ संत छे. तेमो मारे समागम मळ्यो छे." [प्र. ७८-१८-१८]

"तमुवाचहरिर्योऽत्रभगवान्वर्ततेभुवि । सर्वावतारधर्त्ताऽसौसर्वजीवोधृतिक्षमः ॥६२॥
तस्यसाक्षात्प्रभोःसंतएतेसन्त्यात्मवत्प्रियाः । सचस्वसद्गुणैरेभिःसर्वथाह्येवशीकृतः ॥६३॥
ममाप्यहोमहद्भाग्यंसंगमेषांयदाप्तवान् । एवंविदोभवेत्साधुमाहात्म्यज्ञानमंजसा ॥६४॥
ह. सु. तरंग ॥ ७८ ॥

"एवी रीतनो जे संत तेनो जेवा श्वेतद्वीपमां मुक्त छे ते सरखो छे, अने एवा संतनुं दर्शन थयुं त्यारे एम जाणवुं जे मने साक्षात्कार भगवाननुं दर्शन थयुं छे." (सा. १०-२-४)

"ईदृशाःकृष्णभक्तायेश्वेतमुक्तैःसमाहिते । तद्दर्शनंचभगवद्दर्शनेनसमंमतम् ॥२८॥
अनीदृशास्तुयेभक्तास्तेप्येतेषांसमागमम् । यदिकुर्युर्दृढंतर्हितत्समाःस्युरसंशयम् ॥२९॥
ह. सु. तरंग ॥ ८८ ॥

"जेम भगवान स्वतंत्र छे तेम ए भगवाननो भक्त पण स्वतंत्र थाय छे" (सा. ११-१-२) "आवुं जे मायाथकी पर शुद्ध आत्मानुं ज्ञान तेने हुं पाम्यो ते संतने प्रतापे पाम्यो छुं" (लो. १०-६-७) "आत्यंतिक प्रलय थाय छे त्यारे पण भगवान ने भगवानना भक्त ते दिव्य साकाररूपे करीने अक्षरधामने विषे दिव्यभोगने भोगवता थका रहे छे, ते भगवाननुं रुप ने भक्तनां रुप ते अनंत सूर्य चंद्रना प्रकाश सरखा प्रकाशे युक्त छे. एवा तेजोमय दिव्य मूर्ति जे भगवान ते जीवोना कल्याणने अर्थे कृपा करीने पोतानी सर्वशक्तियो ऐश्वर्य पार्षद तेणे सहित थकाज मनुष्य जेवा थाय छे" [पं. ७-१-२]

सप्रभुःकृपयासर्वदेहिनांश्रेयसेनृषु ॥ स्वशक्तिपार्षदैश्वर्यैःसहाविर्भवतीहवै ॥४६॥
अतःसाक्षाद्धरेरूपंरूपंयच्चाक्षरस्थितम् । तयोर्येनविदुर्भेदंज्ञानिभक्तास्तउत्तमाः ॥४७॥
साक्षात्कृष्णंविदुर्येऽत्रसर्वकारणकारणम् ॥ नराकृतिःपरंब्रह्मतेज्ञेयाब्रह्मवित्तमाः ॥५०॥"
ह. सु. तरंग ॥ १३३ ॥

"अमे बोलीए छइए ते पण त्यांज बेठा थका बोलीए छीए, अने तमे पण सर्वे त्यांज बेठा छो एम हुं देखुं छुं" (म. १३-१-१)

"तत्तेजःपुंजमध्यस्थएवाऽद्याहंवदामिच। युष्मानपिचपश्यामिनिषण्णांस्तत्रसर्वशः॥२५॥"
ह. सु. त. ॥ १४६ ॥

वळी पोताना मुक्तोनो महिमा तथा तेमनी सेवा समागम करनारानी प्राप्ति वर्णवतां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे; "साधु थकी कांइ बीजी मोटी पदवी नथी. जेम राजा होय ने तेनी राणी होय ते जेटलामां राजानुं राज्य छे तेटलामां राणीनुं राज्य पण कहेवाय, अने जेवो राजानो हुकम चाले, तेवोज राणीनो पण हुकम चाले, तेम भगवाननो जेवो प्रताप छे, तेवो ए साधुनो पण प्रताप छे" (म. २२-३-५)

"एवंविधाःसाधवोयेतेहिसर्वाधिकामताः । तेभ्यःपरंभगवतोनकिंचिदपिविद्यते ॥३६॥
[illegible]भक्तानांचतादृशः । प्रतापोजायतेनूनमाज्ञाऽप्रतिहतातथा ॥४०॥

ब्रह्मांडाना मीश्वरायेब्रह्मरुद्रादयश्चते । श्रीकृष्णाययथातद्वद्भलीस्तेभ्योर्पयंतिहि"॥४२॥
ह. सु. त. ॥ १५५ ॥

" सूर्य चंद्रादिक जे प्रकाशमान छे तेणे पण भगवानने भगवानना संतने शुभ कर्मे करीने राजी कर्या हशे त्यारे एवा प्रकाशने पाम्या छे." (म. ४५-२-४)

"ब्रह्मांडे सुखिनोयेयेसंतिलोकाश्चराचराः। तेसर्वेकृष्णतद्भक्तप्रीणनादितिगम्यताम्॥३२॥
ह. सु. तरंग ॥ १७८ ॥

" ए राजाने पोताना दिकराने विषे आत्मबुद्धि थइ गइ छे एवी जेने भगवानना भक्तने विषे आत्मबुद्धि थाय छे तेणेज सर्व साधनथकी अधिक कल्याणकारी सत्संगने जाण्यो छे." [म. ५४]

"तथैवयस्यसत्सुस्यात्स्नेहबुद्धिःसुनिश्चला । आत्मबुद्धिर्मतासैवयानमतिहताक्कचित् ॥१०॥
इयंयस्यभवेत्सत्सुतेनज्ञातोहिसर्वतः । सत्संगोऽधिकइत्येवयूयंजानीतनिश्चितम् ।।११॥
आत्मबुद्धिर्भवेद्यस्यसत्सुतस्यैवसर्वथा। स्वधीश्चपूज्यधीस्तेषुस्याद्यतीर्थमतिर्ध्रुवम् ॥१२॥
एतानमतयोयस्यसत्सुजातान्देहिनः । अन्यत्रचभवेयुस्ताःसतुप्रोक्तःपशुर्बुधैः ॥१३॥"
ह. सु. त. ॥ १८७ ॥

" जेवा प्रतापे युक्त भगवानने जाण्या छे, ते भक्त ज्यारे देह मुकीने भगवानना धाममां जाय छे त्यारे रुप तथा सामर्थि ते ए भक्तनी पण तेवीज थाय छे."[म. ६७]

कृष्णभक्ताःकालकर्ममायावरणवर्जिताः । ब्रह्मीभूता ब्रह्मधाम्नि वसंति हरिसन्निधौ ॥८॥
ह. सु. त. ॥ २०० ॥

" भगवानने ने उत्तम लक्षणवाळा जे संत तेनी अति प्रेमे करीने सरखी सेवा जे करे तो ते कनिष्ठ भक्त होय ने ते बे जन्मे तथा चार जन्मे तथा दश जन्मे के सो जन्मे करीने उत्तम भक्त जेवो थवानो होय ते आने आ जन्मे करीने उत्तम भक्त थाय छे, पर्ण भगवान ने ते भगवानना भक्त तेनी सरखी सेवा कर्यानुं फळ छे. " (ग. ५-४-४)

"यथाभगवतःकुर्याद्वाह्याभ्यंतरपूजनम् । तथाद्रव्यैस्तदुच्छिष्टैरर्चेद्भक्तान्सउत्तमान् ॥३४॥
भगवंतमिवप्रीत्यासदन्नैस्तांश्चभोजयेत् । द्रव्यव्ययंचकृष्णार्थमिवकुर्यात्तदर्थकम् ॥२५॥
एवमुत्तमभक्तानांसेवनंकृष्णवत्तुयः । अतिप्रीत्याऽऽचरेत्क्रियसोऽत्रैवस्यात्खलूत्तमः॥२६॥
अन्यथातुकनिष्ठोऽसौबहुभिर्जन्मभिर्हरिम् । भजन्नुत्तमतांयायादितिमश्नोत्तरंतव ॥३७॥
ह. सु. त. ॥ २०५ ॥

"भगवान ज्यारे पृथ्वीने विषे प्रत्यक्ष न होय त्यारे ते भगवानना मळेला साधु तेनो आशरो करवो तो ते थकी पण जीवनुं कल्याण थाय छे." (व. १०-१-२)

मत्यक्षोभगवान्नस्याद्यदाभुवितदातुये । संतस्तंमिलितास्तेषांमाश्रयादपितद्भवेत् ॥१६॥
साधुलक्षणसंपन्नास्तेपिनस्युर्यदातदा । कृष्णप्रतिकृतिर्भक्त्यातत्स्याद्धर्मयुजाहृदम् ॥१७॥

"मायाथी पर जे साक्षात्कार श्री पुरुषोत्तम भगवान ने भगवानना मळेला संत तेनी ज्यारे जीवने प्राप्ति थाय छे त्यारे ते सर्व [कर्म ने माया] उलंघाय छे."(जे. १-१-१) " तम जेवा संत जे धर्म नियमे युक्त तेनी तो वातज नोखी छे. तमने कोइक भावे करीने जमाडे तेने कोटि यज्ञनुं पुन्य थाय ने ते अंते मोक्षने पामे छे, ने तमारा चरणनो कोइक स्पर्श करशे तेनां कोटि जन्मनां पाप नाश पामशे, तमने भावे करीने जे वस्त्र ओढाडशे तेनुं पण परम कल्याण थशे अने तमे जे जे नदी तळावने विषे पग बोळो छो ते ते सर्व तीर्थरुप थाय छे, तमे जे वृक्ष तळे बेठा हो ने जे जे वृक्षनुं फळ जम्या हो ते ते सर्वनुं रुडुं थाय छे, अने तमारां कोइक भावे करीने दर्शन करे छे ने तमने भावे करीने नमस्कार करे छे तेनां सर्व पापनो क्षय थाय छे, अने वळी जेने तमे भगवाननी वात करो छो अने कोइकने धर्म संबंधी नियम धरावो छो तेनो मोक्ष थाय छे." (जे. ४-१-३)

मदुक्तेषुस्वधर्मेषुदृढस्थितिमतांतुवः । भिन्नैवप्रक्रियास्तीतियूयंसर्वोत्तमामताः ॥१२॥
दर्शनात्स्पर्शनाच्चापिभवतांभोज्यदानतः । वस्त्रपात्रादिदानाच्चभवेत्पुण्यमनंतकम् ॥१३॥
फलंचानेकयज्ञानांसर्वपापविनाशकम् । स्याद्भवत्सेविनामत्रपुरुषाणांनसंशयः ॥१४॥
भवन्मुखोक्तवार्त्तायाःश्रवणान्मननाच्चवः । आश्रयाच्चनराणांस्यान्मुक्तिरेवहिसंसृतेः ॥१५॥
तीर्थानिपावनानिस्युश्चरणस्पर्शतोहिवः । तरूणामपिमुक्तिस्स्यात्तच्छायाफलसेवनात् ॥१६॥
सर्वाप्यस्तिहियुष्माकंक्रियाश्रेयस्करीनृणाम् । यतोनारायणऋषिःसाक्षादस्त्येववोंतरे ॥१७॥
प्रतापात्तस्यसामर्थ्यंभवतांचास्तिवैमहत् । सर्वजीवाशयज्ञत्वमैश्वर्यंनास्तिदुर्लभं ॥१८॥
सर्वसिद्धाधिपत्यंचनिधीशत्वंतथैवच । ब्रह्मादीनांक्रियाश्चापिभवंतिसुलभाःखलु ॥१९॥
किंतुसर्वंतदैश्वर्यंप्रत्यक्ष्यस्यप्रभोरिह । सुखाप्तयेऽस्तिगूढंवैनारायणऋषीच्छया" ॥२०॥
ह. सु. त. ॥ २३३ ॥

"जेवी श्वेतद्वीपमां सभा छे ने जेवी गोलोक वैकुंठ लोकने विषे सभा छे ने जेवी बदरिकाश्रमने विषे सभा छे. तेथी पण हुं आ सत्संगीनी सभाने अधिक जाणुं छुं अने सर्वे हरिभक्तने अतिशे प्रकाशे युक्त देखुं छुं एमां जो लगार पण मिथ्या कहेता होइए तो आ संत सभाना सम छे" [छे. २-१-२]

"श्वेतद्वीपेचवैकुंठेगोलोकेबदरीवने । यादृश्यस्तिसभातस्या अप्येषास्त्यधिकाऽधुना॥२६॥
अतितेजस्विनोभक्तासर्वान्वीक्षइमानहम् । अत्रनास्त्येवसंदेहोयथादृष्टंब्रवीम्यिदं" ॥२७॥
ह. सु. त. ॥ २३६ ॥

जेवी पोताना देहने विषे आत्मबुद्धिने दृढ प्रीति रहे छे तेवी ज भगवान तथा भगवानना भक्तने विषे आत्मबुद्धि ने दृढ प्रीति रहे तो जेवी निर्विकल्प समाधिमां शान्ति रहे छे, तेवी शांति ए समाधि विना पण सदाय रह्या करे" (छे. ११-२-२)

आत्मबुद्ध्यादृढप्रीतिःस्वदेहेऽस्तियथातथा। साक्षात्कृष्णेचकार्ष्णेषुतर्हिशांतिस्तथाभवेत् ॥१०॥

भक्तस्वतव्रतोनस्यात्पातःश्रेयोऽध्वनःक्वचित्।असद्देशादियोगेपिनिर्विघ्नःसोऽस्तिसर्वथा११

ह. सु. त. ॥ २४५ ॥

"जेवा श्वेतद्वीप, वैकुंठ, गोलोक, तेने विषे भगवानना पार्षद छे, ते जेवाज आ सर्वे सत्संगी छे, ने अमे तो जेवा माया पर जे दिव्य धाम तेने विषे भगवानना पार्षद छे ते थकी अधिक जो आ सत्संगीने न जाणता होइए तो अमने भगवान तथा भगवानना भक्तना सम छे" (छे. २१-१-६)

"अलौकिकाभवंत्येतेमनुष्याकृतयोपिवै । श्वेतवैकुंठगोलोककृष्णपार्षदसन्निभाः ॥३५॥
अहंतु[illegible]कृष्णपार्षद्यूथतः । आधिक्येनैवजानामिभक्तानेतान्स्वचेतसि ॥३६॥"

ह. सु. त. ॥ २५५ ॥

"सत्संगमांथी मन पाछुं हठे नहि, एवा जे दृढ सत्संगी वैष्णव छे तेज अमारे तो सगावहाला छे, ने तेज अमारी नात्य छे, ने आ देहे करीने पण एवा वैष्णव भेळुंज रहेवुं छे. ने धाममां पण एवा वैष्णव भेळुंज रहेवुं छे." (छे. २१-१-७) " जे प्रत्यक्ष भगवानने विषे निष्ठा राखे छे तेने तो भगवान पोते बळात्कारे पोताना धामने विषे जे पोतानां ऐश्वर्य छे ने पोतानी मूर्तियो छे तेने देखाडे छे" (प्र. ९-१-२) " एवा जे भगवानना स्वरुपना ज्ञानवाळा छे ते सर्वे देहने मेलीने भगवानना धाममां चैतन्यनीज मूर्ति थइने भगवानना हजुरमां रहे छे. तेनुं दर्शन तो भगवानना दर्शन तुल्य छे अने एना दर्शने करीने अनंत पतित जीवनो उद्धार थाय छे एवा ए मोटा छे" (प्र. ३७-१=८)

"भक्तएवंविधोज्ञानीदेहांतेचिन्मयाकृतिः । ब्रह्मधामैवसंमा[illegible]वर्ततेहरेः ॥२८॥
तद्दर्शनंपातकसंघहर्तृक्रेभक्षयातुल्यमिहेतिवित्त ॥

ह. सु. त. ॥ ३७ ॥

"जेम भगवान सर्वेप्रकारे निर्बंध छे. ने जे चहाय ते करवाने समर्थ छे तेम ए भक्त पण अतिशे समर्थ थाय छे अने निर्बंध थाय छे. (प्र. ६२-१-१)

"कृष्णवत्ततोभक्तोनिर्बंधःसन्निजेप्सितम् । कार्यंविधातुशक्नोतिस्वतंत्रस्तत्प्रसादतः॥१५॥

ह. सु. त. ॥ ६२ ॥

"ज्यारे सर्वे कर्म ने माया तेना नाश करनारा ने मायाथी पर जे साक्षात्कार श्री पुरुषोत्तम भगवान अथवा भगवानना मळेला संत तेनी जीवने प्राप्ति ज्यारे थाय छे त्यारे ते सर्वेने उलंघाय छे" (जे. १-१-१)

अताम[illegible]तेः । आश्रयात्रातदीयानांतस्याउल्लंघनंभवेत् ॥१२॥

ह. सु. त. ॥ २२० ॥

" अने एवी रीते आपणा सत्संगमां जे समाधिनिष्ठ पुरुष होय ते पण समाधिए करीने बीजाना देहमां प्रवेश करीने सर्वेने देखे छे...जेम प्रत्यक्ष भगवान बिराजता

होय ते तेनी मर्यादा राखे, तेम ते मूर्तिनी पण राखी जोइए अने तेमज संतना हृदयमां भगवाननी मूर्ति रही छे ते संतनी पण मर्यादा राखी जोइए...प्रतिमा तथा जे संत तेने विषे हुं अखंड निवास करीने रहुं छुं." (प्र. ६८-१-१)

"समाधिनिष्ठाअत्रापिसंतिवर्त्मनिभूरिशः । येऽन्यदेहंप्रविश्यैवविशुस्तद्धाहंमंजसा ॥७॥
क्रष्णोमहांतःसंतश्चप्राप्तयोगमहोदयाः । इच्छास्वस्यभवेद्यत्रतत्रकुर्युःप्रवेशनम् ॥९॥
अतःसाक्षाद् भवतोमर्यादापाल्यतेयथा । तथैवपालनीयाऽत्रतस्याअपिचपूजकैः ॥११॥
संतांचहृदयेसाक्षाद्धरिराविश्यवर्त्तते । तेषामपि ततःपाल्यामर्यादाताहशीसदा ॥१२॥
ह. सु. त. ॥६८॥

उपर प्रमाणे श्रीजीमहाराजे पोतानुं सर्वोपरिपणुं तेमज संत हरिजनोनो महिमा समजाववामां कंइपण कचास राखी नथी. सर्वोपरिपणानां तेमज संत महिमानां उपरनां अवतरणो मुमुक्षुने जेटलां उपकारक अने कल्याणकारी छे तेटलांज श्रीजी महाराजनां धर्म, ज्ञान, वैराग्यादि साधन परत्वे उच्चारेलां वचनो पण उपयोगी छे. पण आ स्थळे धर्म, ज्ञानादिनी महत्ताप्रतिपादक श्रीजीमहाराजनां वचनो अवतरण रुपे स्थळ संकोचने लइने आपवामां आव्यां नथी, तोपण अनादि मुक्तराज अबजीबापाए आ बधां वचनामृतोनो समन्वय करी 'रहस्यार्थ प्रदीपिका' टीकामां दरेक स्थळे मुमुक्षु एकदेशी समजणमां उतरी न जाय तेवी काळजी राखी पूर्वापर वचनामृतो साथे राखी, श्रीजीमहाराजनी मूळ शैली प्रमाणे धर्म, ज्ञान वैराग्य अने महात्म्य ज्ञाने युक्त भक्ति सहितनी परम एकांतिकनी तथा अनादि मुक्तनी समजण प्रवर्तावेली छे. आ टीकामां जे बाबतो लखवामां आवी छे ते वचनामृतने आधारेज लखवामां आवी छे. आ टीकाना वांचनथी अनेक सत्संगीओनो आत्यंतिक मोक्ष सधाय, अने श्रीजीमहाराजनी स्वरुपनिष्ठानुं बळ वृद्धि पामे, ए हेतुथी आ वचनामृत परनी टीका प्रथम अमोए छपावी प्रसिद्ध करेल छे.

आ ग्रंथ साथे ग्रंथस्थ विषयोनी एक विशुद्ध अनुक्रमणिका पण जोडवामां आवी छे. अभ्यासीने आ अनुक्रमणिका बहुज उपयोगी थइ पडे तेवी छे, केम जे तेमां सर्वे वचनामृतोमां तथा रहस्यार्थ प्रदीपिका टीकामां जेटला विषयो-जेटली बाबतो रहेली छे, ते सर्वेनो अकारादिक्रममां समावेश करवामां आव्यो छे. वचनामृतरुपी महासागरमांथी अमूल्य सिद्धांतरुपी रत्नो काढवा माटे कुशळ ताकनी-महान अभ्यासीनी- आवश्यकता हमेशां रहेती हती, परंतु आ अनुक्रमणिका परथी गमे ते जिज्ञासु गमे ते बाबत घणी सहेलाइथी शोधी शके छे. आ अनुक्रमणिकामां जे बाबत जे वचनामृतमां होय छे, ते वचनामृतनो आंक आपवा उपरांत ते क्रिया प्रश्न तथा कइ बाबतमां छे तेना पण आंक आपवामां आव्या छे. वळी टीकामां रहेला विषयोनी पण जुदी अनुक्रमणिका करवामां आवी छे. तेमांथी पण जे बाबत शोधवी होय ते टीकानी अनुक्रमणिका जोवाथी किया वचनामृतनी टीकाना किया प्रश्नोत्तरमां छे ते घणी सरळताथी जाणी शकाय छे.

આ પુસ્તકમાં વપરાયેલા શબ્દોની સંકેત સુચી નીચે આપેલી છેઃ—

પરથારી	પર૦	લોયા૦	લો૦	અમદાવાદ	અ૦
પ્રથમ પ્રકરણ	પ્ર૦	પંચાળા	પં૦	અખ્લાલી	અપ્રલ૦
સારંગપુર	સા૦	મધ્યપ્રકરણ	મ૦	જેતલપુર	જે૦
કારિયાણી	કા૦	વરતાલ	વ૦	છેલ્લુ પ્રકરણ	છે૦

આ સાથે અમોપ શ્રીજીમહારાજ, પાંચ સદ્‌ગુરુઓ, ટીકાકાર અનાદિ મુક્તરાજ અબજી બાપા તથા આ ટીકામાં પ્રશ્ન પુછી સંગ્રહ કરનાર સ્વામિશ્રી ઇશ્વરચરણદાસજીની એમ બધી મળી આઠ છબીઓ આપવામાં આવી છે.

આ પુસ્તક શોધવામાં તેમજ અનુક્રમણિકા વગેરે તૈયાર કરવામાં સ્વામિશ્રી ઇશ્વરચરણદાસજીની સાથે રહી પુરાણી ધર્મકિશોરદાસજીએ જે અમૂલ્ય સેવા બજાવી છે તે માટે શ્રીજીમહારાજ તથા તેમના અનાદિમુક્ત તથા સંત હરિજનો તેમનાપર પ્રસન્ન થાઓ એમ અમારી પ્રાર્થના છે આ પ્રમાણે આ પુસ્તક તૈયાર કરવામાં અથાક પ્રયાસ લેવામાં આવ્યો છે, છતાં કેટલીક ખામી રહી ગઇ હોય તો સુજ્ઞ વાંચકો તેને હંસ ક્ષીર ન્યાયે સુધારી વાંચશો એવી આશા છે, આ પુસ્તક વાંચી સૌ સંત હરિજનો દિવ્યમૂર્તિ શ્રીજીમહારાજનો દિવ્ય આનંદ અમોને મળે એવા દઢ આશીર્વાદ આપશો એવી પ્રાર્થના છે.

અમદાવાદ.
સં૦ ૧૯૮૨
કાર્તિક શુદિ પુર્ણિમા

છપાવી પ્રસિદ્ધ કરનાર,
સત્સંગ સેવક,
પરીખ બળદેવદાસ વલભદાસના
જયશ્રી સ્વામિનારાયણ

अनादि मुक्तराजश्री अबजीबापानुं जीवन चरित्र.

आत्यंतिक कल्याणनी शरद् ऋतु.

अक्षराधिपति पूर्ण पुरुषोत्तम श्री सहजानंद स्वामिए सं. १८३७ ना चैत्र शुक्ल नवमीनी निशाए आ भारतवर्षमां अयोध्या पासे छपैयापुरमां श्री धर्मदेवने गृहे नरनाटक धार्युं. ते धन्य दिवस भारतवर्षना आध्यात्मिक इतिहासमां सुवर्णाक्षरे अंकित थयो छे. अनादि मुक्तराजश्री अबजीबापाना शब्दोमां कहीए तो सं. १८३७ नी सालथी ' आत्यंतिक कल्याणनी शरद्‌ऋतु ' बेठी छे. त्यारथी आ ब्रह्मांडमां अनेक जीव ईश्वरो तेमज धामांतरवासीओ पोताना आत्यंतिक कल्याण माटे नरतनु धरी आव्या छे. आ ब्रह्मांडमां कार्यकारण अंशावतारो प्रगट थता हता अने ते जीवोने पोताना धाममां लेइ जता हता; परंतु पूर्ण-पुरुषोत्तम तो दरेक ब्रह्मांडमां एकज वखत पधारे छे, ते मुजब आ ब्रह्मांडमां पण वैराट्‌नारायणनी लगभग अर्धी आवरदा थइ त्यारे पुरुषोत्तमनारायण पोताना अनंत मुक्तोने साथे लेइ पहेलीजवार पधार्या. ते पहेलां कोइने आ पुरुषोत्तम नारायणनी ओळखाण पण नहोती तेथी तेमना धाममां कोइ जइ शकतुं नहतुं. पण हवे ज्यारे आ ब्रह्मांडमां पुरुषोत्तम नारायण पधार्या त्यारे आज सुधी जे जे जीवो भगवाननुं भजन करता हता अने धर्म भक्ति आदि साधनोवडे वासना रहित थइ गया हता, ते सर्वे तेमज नाना मोटा अवतारो ते सर्वेए पण पोतानुं आत्यंतिक कल्याण साधवा पृथ्वीपर नर देह धार्या. आ प्रमाणे सं. १८३७ थी आत्यंतिक कल्याणनी शरद्‌ऋतु बेठी छे ते छेक आ ब्रह्मांडना अंत सुधी रहेशे.

पुरुषोत्तम नारायण ने तेमना मुक्तो.

पूर्ण पुरुषोत्तमनी जान पृथ्वीपर आवे त्यारे पोतानी जानमां अनंत मुक्तो पण साथे होय तेमां कहेवुं शुं ? एतो होयज. अहीं पृथ्वीपर वैराट्-नारायणने मांडवे धामाधिपतियो पण हाजर हता अने अनेक मुमुक्षुओरूपी कन्याओ आ मुक्तरूपी गोरनी आतुर कंठे राह जोइ रही हती. तेमने आ मुक्तोनो योग यथार्थ

पुरुषोत्तमनो महिमा जाण्यो एटलुंज नहि पण ते पुरुषोत्तमने सर्व भावे वरी चुक्या, अने परिणामे 'हयेवाळो हरि संघाथे' मेळवेलो होवाथी सर्वे गावा लाग्या के "आज सखी आनंदनी हेली हरिवर जोइने हुं थइ छुं घेली." अने मुक्तो पण देश देशांतरमां फरी टेल नांखवा मंडया के 'जेने जोइए ते आवो मोक्ष मागवारे लोल, आज धर्मवंशीने द्वार मारी बेनी, प्रगट हरि मुजने मळयारे लोल.' श्रीजीमहाराज पण दया करी अनेक मुमुक्षुओने पोताना धाममां पोतानी दिव्य मूर्तिनो आनंद आपवा लाग्या. आ प्रमाणे मुक्तोए आत्यंतिक कल्याणनो मोटो मार्ग चलाव्यो.

सं. १८८६ नी साल सुधी न गणाय एटली संख्यामां मुमुक्षुओए श्रीजी-महाराजनो आश्रय ग्रहण कर्यो, अने ते पण मुक्त संज्ञाने पाम्या. अने पोते पण नवा मुमुक्षुओने श्रीजीमहाराजने मळाववा मंडया.

श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के अमे आ संत तथा आ नियमो अक्षरधाममांथी लाव्या होवाथी, आ उद्धवीय संप्रदायरुपी अक्षर वाटिकामां, धर्म, ज्ञान, वैराग्य आदि सद्-गुणरुपी कमळो एवांतो खीली उठयां के अनंत मुमुक्षुरुपी भ्रमरो त्यां आकर्षाइ आव्या. हवे श्रीजीए धार्युं के मुक्त मंडळीए मारी उपासना ठीक प्रवर्तावी छे. अने मारी करेली व्यवस्था द्वारा हवे चाली शके तेम छे, त्यारे पोते हवे मूळ मथके जइ बेठा अने पोताना मुक्तोद्वारा पोताना घडेला धारा धोरणथी काम लेवा लाग्या.

अ. मु. गोपाळानंद स्वामि आदि मुक्तो.

पूर्णपुरुषोत्तम ज्यारे लीलाविग्रह संकेली मूळ मथके विराज्या त्यारे आ उद्धवीय संप्रदायनी सोंपणी अनादि मुक्तराजश्री गोपाळा-नंद स्वामिने करता गया. यद्यपि पुरुषोत्तमनारायणे पोतानो उग्र प्रताप समाधि आदि अनेक ऐश्वर्य चमत्कारो द्वारा देखाडी पोतानी मूर्तिमां सौने खेंची लीधा हता तो पण केट-लाक मुमुक्षुओ तेमनो यथार्थ महिमा समजी शक्या नहोता. तेओने महात्म्ये ज्ञाने सहित सर्वोपरि निश्चय कराववानो बाकी हतो. आ ब्रह्मांडमां पुरुषोत्तम नारायणनी पहेलीज वारनी पधरामणी थइ होवाथी तेमनो अद्भूत तेज प्रताप जोइने कोइ तेमने रामचंद्रजी जेवा, तो कोइ श्री कृष्ण जेवा, तो कोइ वळी ए सर्वे अवतारोना अवतारी समजता. एम सत्संगमां बहुधा समझण प्रवर्तती हती. आवी जातनी विविध समजणवाळा मुमुक्षुने श्रीजीमहाराजनो सर्वोपरि निश्चय कराववा माटेज श्रीजीमहाराजे अनादि मुक्तराजश्री गोपाळनंदस्वामि आदि महा

मुक्तोने पृथ्वीपर राख्या. ते संतोए मुमुक्षुओने सर्वोपरि निश्चय कराववा मांडयो. आ सर्वोपरि निश्चय कराववामां अनेक मुक्तोए बहुज परिश्रम सेवीने श्रीजीमहाराजनी सर्वोपरि उपासना सारी फेलावी अने घणाने सर्वोपरि निश्चय कराव्यो.

अ. मु. अबजीभाइनुं प्रागट्य.

तेमना प्रतापे आजे श्रीजीमहाराजने सर्व अवतारना अवतारी, धामना धामी, कारणना कारण विगेरे अपार मोटयप सौ छाती ठोकीने आपी शके छे. अने आवा सर्वोपरि शुद्ध निश्चयथी अनंत मुमुक्षुओ ब्रह्मरुप थइ श्रीजीनी दिव्य मूर्तिनो दिव्य आनंद लुंटी रह्या छे. नवुं राज्य स्थपातां केटलीक प्राथमिक अव्यवस्था पण जोवामां आवे छे तेम मुमुक्षुना हृदयमां जुनी नवी समझणनो गुंचवाडो उभो थतां केटलीक मुश्केली नडे छे. आपणा उद्धवीय संप्रदायमां पण तेवाज प्रकारनी स्थिति हती. अत्यारे सत्संगनी भर युवानीनो समय गणी शकाय. आ काळ शेरडीनी वचली गांदळी जेवो छे. आ समये श्रीजीमहाराजे कृपा करी आ संप्रदायने शोभामां वृद्धि करे, अनंत मुमुक्षुओने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां जोडे, तेमज उद्धवीय संप्रदायनी शुद्धि वृद्धि करे तेवा पोता जेवा समर्थ अनादि महा मुक्तराजने पृथ्वीपर पोतानी पेढीए मोकलवानो संकल्प कर्यो. आ वखते श्रीजीए देशकाळादिनो विचार करी अक्षरधाम जेवा कच्छ देशने अने मूर्तिमान ब्रह्म जेवी कणबी ज्ञातिने अने संसारने उभयविध पावन करे तेवा गृहस्थाश्रमने पसंद करी, " अबजीभाइ " एवुं अपूर्व नामाभिधान धारण करी पांचाभाइनुं कुळ पावन कर्युं. कच्छनी कणबी ज्ञातिने धन्य छे ! नाथा पटेल जेवा भगवानना भोळा भक्तने गंगदास, रुडा अने तेजा एम त्रण पुत्र हता, ते त्रणे भाइओ प्रगट प्रभु श्री स्वामिनारायणना आश्रित हता. अने अहोनिश भगवद्‌भक्तिपारायण रहेता हता. तेमां गंगादासने देवजी, करसन, भीमजी, अर्जुन अने मुळजी ए पांच पुत्र हता.

जन्म धारण तथा बाळ लीला

तेमां पण रुडाभाइनी स्थिति अलौकिक हती. आ रुडाभाइने श्रीजीमहाराजनी कृपाथी प्रेमजीभाइ तथा पांचाभाइ ए बे पुत्रो हता. आ पांचाभाइ ते आपणा अनादि मुक्तराज अबजी बापाने पुत्ररुपे लाड लडाववा भाग्यशाळी थया हता. पांचाभाइने सत्संगनो अपूर्व रंग चडयो हतो, तेमनी धर्मपत्नी देवबाइ पण महाप्रभुजीनां मोटां भक्त हतां. महाप्रभुजीनी इच्छा एज तेमनुं प्रारब्ध हतुं. आर्थिक अवस्था तो छेक दुर्बळ हती, छतां प्रेम

मग्न थइ महाप्रभुजीनी भक्ति अहोनिश करतां. हमेशां देवबाइ कृष्ण तळावे न्हावा जतां. त्यां एक समयने विषे श्रीजीमहाराजे तेमनी अनन्य पतिव्रतानी निष्ठा जोइ प्रसन्न थइ दर्शन आप्यां अने प्रसन्न थइ कह्युं जे अमो तमारापर राजी छीए माटे वर मागो, त्यारे देवबाइ श्रीजीमहाराजने बहु रुपाळा जोइने बोल्यां जे ' हे महाराज ! तम जेवा पुत्र खपे '. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ' अम जेवा तो अमे एकज छीए पण अमारा अनादि मुक्त ते अमारा तुल्य कहेवाय ते तमारे घेर प्रगट थाशे, एम वर आपीने अंतर्धान थया. पछी देवबाइए घेर आवी पांचाभाइने वात करी. त्यारपछी सं. १९०१ ना कार्तिक शुक्ल ११ ने सोमवारे अनादि मुक्तराज अबजी बापा प्रगट थता हवा, अने देवबाइने अलौकिक तेजोमय दर्शन आपता हवा. आ पुत्रनी अलौकिक कांति जोइ देवबाइने तळावे श्रीजीए दर्शन आप्यां हतां ते सांभरी आव्या अने निश्चय थयो के आतो श्रीजीमहाराजे वर आप्यो हतो ते सत्य कर्यो. माताजी जणावे छे के बापाश्री क्यारेक महिने के बे मासे अने क्यारेकतो चार छ मासे स्तनपान करता. अने अखंड समाधिमां रहेता.

समाधिदशा.

आ समाधि थती त्यारे तेओ उंडा उतरी जता अर्थात् बाह्यवृत्ति संकेली लइ केवळ मूर्तिमांज थीजी रहेता. आ समाधि काळमां देहनी एकेय क्रिया चालती नहि. नाडी गतिहीन रहेती अर्थात् स्तब्ध थइ जती. खावुं, पीवुं शौचादिक विगेरे होयज शानुं? आ समाधिकाळ पांच दश दिवस सुधी पण रहेता. बापाश्री तो अनादि मुक्त छे तेमने समाधि करवानुं एटलुंज प्रयोजन छे के तेणे करीने मुमुक्षुओने ओळखाण पडे, परंतु पोते अखंड मूर्तिमांज रहे छे. आ समाधि बापाश्री इच्छता, के कोइ पोता जेवा मुक्ती इच्छता त्यारे अंगीकारता परंतु ज्यारे प्रौढावस्था आववा लागी त्यारे आ स्वतंत्र समाधिनुं अखंड समाधिमां रुपांतर कर्युं. अने हवे तो त्रणे काळमां एकज दिव्य स्थिति वर्ते छे. बापाश्री मूर्तिमां संलग्न थका बोले चाले छे. समाधिदशा विषे विशेष जाणवा इच्छनारा जिज्ञासुओने अमो एटलुंज जणावशुं के आज पण ते दशा नजरे जोनारा घणा संत हरिजनो मोजुद छे. तेमने मुखेथी ते वर्णन सांभळवाथी तेमने विशेष माहीती मळी शकशे. आंहींतो ते समाधिदशानो निर्देश करी संतोष मानवानो छे. बापाश्रीनी बाळलीला पण अद्भुत हती. ते सर्वे खेलाडीना अग्रणी हता. बाळकोनी रमवानी टुकडी थती त्यारे दरेक टुकडीवाळा " आपणा अबजी-बापाश्रीने " पोतानी टुकडीमां लेवा घणीवार तो लडी पडता. जेम मुक्तोमां बापा-

श्रीनो नंबर पहेलो छे तेम दोडवा तरवा वगेरे कसरतोमां पण बापाश्रीनो नंबर पहेलो हतो. पण आ बाळलीलानुं नरनाटक तो तरत संकेली लेइ तेमणे गृहस्थाश्रमनो पाठ भजववा मांड्यो.

गृहस्थाश्रम.

बापाश्रीनो गृहव्यवहार पहेलेथीज दुर्बळ हतो. पोते खेड करता अने तेमांथी अनादि मुक्त पर्वतभाइनी पेठे पोतानुं गुजरान चलावी अखंड तेलधारा मूर्तिमां वृत्ति राखता एटलुंज नहि पण संतोनी सेवा करता. महाराजना मळेला घणा मोटा मोटा संतो आवता तेमने आग्रहथी बे चार मास रोकी रसोइ आपी श्रीजीनी वातो करता सांभळता अने मूर्तिनो आनंद देता लेता. आथी मोटा संतो पण बापाश्रीनो महिमा समजी तेमना समागमनो आनंद अनुभवता. आ प्रमाणे संतो तथा हरिजनोनी आवक जावकनो प्रवाह "बापाश्री" प्रगट थया त्यारथीज बहुज वधतो गयो छे, अने अद्यापि पर्यंत जेम दशे दिशामांथी नानी मोटी नदीयो समुद्रने मळवा आवी नीकळे छे तेम अनंत मुक्तो तथा मुमुक्षुओ 'बळधिया' तरफ गति करी रह्या छे, अने त्यांथी मूर्तिनो आनंद लुंटी मदमाता पोतपोताना स्थानके मूर्तिमांज पाछा वळे छे. वळी श्रीजीमहाराजे कृपा करी आ वखते गृहस्थाश्रमनी पसंदगी करावी तेमां एक बीजो पण हेतु छे ते ए छे के बाइ-भाइ सर्वे पोताना धर्ममां रही बापाश्रीनां दर्शननो दिव्य आनंद लइ शके छे.

यज्ञपारायणो.

पूर्ण पुरुषोत्तमे जे हेतु माटे बापाश्रीने पृथ्वीपर मोकल्या ते हेतु पूर्ण करवा बापाश्री अनेकवार सत्संगमां तीर्थाटन निमित्ते फर्या छे. अने त्यां त्यां रहेला मुमुक्षुओनां कल्याण कर्यां छे. एटलुंज नहि पण त्रण चार वखत तो मोटी पारायणो पण करावी छे, अने ते ते प्रसंगे हजारो संत हरिजनोने तेडावीने मूर्तिनो आनंद आप्यो छे. ते प्रसंगे 'जे जे कोइ जीव आ यज्ञप्रसादि जमशे ते सर्वेने अमो धाममां तेडी जइ श्रीजीनी मूर्तिनुं सुख अपावशुं' एवो वर आप्यो छे. जे तळावे श्रीजीमहाराजे पोतानां माताजीने दर्शन आप्यां हतां त्यां श्रीजीमहाराज वर्णीवेशे आवी एक पत्थरपर थाळ जम्या हता. त्यां बापाश्रीए देरी करावी चरणारविंद पधराव्यां ते वखते मोटी पारायण करावी बन्ने देशना संत हरिजनोने तेडाव्या हता, अने ते प्रसंगे अनंत जीवोनो मोक्ष कर्यो हतो अने चरणारविंद पधरावती वखते वर आप्यो छे के 'आ छबीए जे दर्शन क-

रवा आवशे तेने अमे अक्षरधाममां तेडी जइशुं. ' वळी तेज स्थळे हनुमानजीनी प्रतिष्ठा करावी बीजी पारायण पण करावी हती. ते प्रसंगे पण घणा संत हरिजनोने तेडावी मोटो यज्ञ कर्यो हतो अने एवीज रीते वर आप्यो हतो. वळी पोते आ जगतमांथी उदास थया त्यारे पण एक पारायण करावी हती. ए प्रमाणे मोटी पारायणो उपरांत नानी पारायणो बहुए करावी छे, ते बधीनुं स्थळ संकोचने लीधे अहीं वर्णन थइ शके तेम नथी. कहेवानुं ए छे के बापाश्रीए अहीं आवी अपार योगैश्वर्य वापरी श्रीजीनी मूर्तिमां अनंत मुमुक्षुओने जोड्या छे.

योगैश्वर्य.

वळी बापाश्रीनां योगैश्वर्योनो पण अवधि नथी. जेवा महाराज तेवाज तेमना मुक्तो. जेम महाराजे योगैश्वर्य वापरवामां मणा राखी नथी तेम आज " बापाश्री 'ना चमत्कार परचा पण लखे पार आवे एवा नथी; एक स्थळे रह्या थका बीजे स्थळे देखावुं, अनेक संत हरिजनोने श्रीजीनी दिव्यमूर्त्तिनो साक्षात्कार कराववो, हरिजनोने श्रीजीमहाराज भेळां दर्शन देइ धाममां तेडी जवा, तो कोइने कोइ संत हरिभक्तना आग्रहथी राखी जवा, तो कोइने वळी वायदो देवो जे आ वखते तमने तेडी जाशुं, मुमुक्षु उपरांत प्रसंगमां आवेला अधिकारी के अनधिकारी सारुं न जोतां पोतानी मोटाइ सारुं जोइ घणा भूत प्रेतो तथा जन तेमज एवा असद्गति पामेला जीवोने पण दया करी बदरिकाश्रम जेवा धामोमां तथा ठेठ अक्षरधाममां मोकलवा, पोताना शिष्योनी अनंत आपत्काळथी रक्षा करवी, इत्यादि 'बापाश्रीना' चमत्कार एटला तो असंख्य छे के तेनो लखतां पार आवे तेम नथी. आ बाबतोनो विस्तार तेमनी वातोमां जोवा विनंति छे. बापाश्रीना अनेक त्यागी गृही बाइ भाइ शिष्यो छे. आ शिष्य वर्गज एवो विशाळ अने गहन छे के तेनी कोइ संख्या करे तेम नथी, तो पछी तेमना चमत्कारोनी गणना तो थायज केवी रीते ? केमके आ एक एक शिष्य त्यागी–गृही–बाइ–भाइ–परचा चमत्कारना एक एक पुस्तक जेवां छे. अस्तु. अमो एटलुंज जणावशुं के आ तो चमत्कारनो–चमकनो पर्वत आव्यो छे ! आ तो अनंत जीव, ईश्वर, ब्रह्म, अक्षरादिने श्रीजीनी मूर्तिमां जोडी दे एवा अनादि महामुक्त पधार्या छे ! ! आ तो "श्रीजीमहाराजनां आपणे दर्शन पण कर्यां नहि " अने " अरे ! आपणे दर्शन तो कर्यां पण आपणे श्रीजीमहाराजने जाण्या ओळख्या नहि. अने पुरी सेवाय न करी " आवा निराश थएला, पंक्तिनी पाछळ रही गयेला, के पंक्तिमां भूल्या रहेला, सौने संतोषवा आवेला श्रीजीमहाराजनी संकल्पमूर्ति छे ! ! ! अमो तो कहीशुं

के " जुओ जीव मोह निद्रामांथी जागीरे. " आवो ! आवो !! आजे बळधियामां अपूर्व ल्हावो मळे छे. आ समयमां आ महामुक्तने ओळख्या तेनुं काम थइ गयुं अने रही गया ते अभागिया !!!

ज्ञानदान अने रहस्यार्थ प्रदीपिका.

जेम योगैश्वर्य वापरवामां मणा नथी राखी तेम ज्ञानदान आपवामां पण बाकी नथी राख्युं. कथा वार्तानो सोंपो पडतोज नथी ब्रह्मयज्ञ तो अखंड चाल्याज करे छे. अनेक संत हरिजनो बाइ भाइयो बापाश्री पासेथी ज्ञानामृतनुं पान करी बळीया थया छे, परंतु अनादि मुक्तवर्य सद्गुरु स्वामि श्री निर्गुणदासजी स्वामिना शिष्य स्वामि ईश्वरचरणदासजीए तो आ ज्ञानामृतनो मीठो महेरामण ' रहस्यार्थ प्रदीपिका ' टीकारूपे संग्रही लीधो अने आ भरतखंडमां एक स्थावर तीर्थ सजीवन कर्युं. आ ' रहस्यार्थ प्रदीपिका ' टीकानुं ज्ञानामृत पान करनारने त्रिताप–अध्यात्म, अधिभूत अने अधिदैवनी–शांति थशे. पोते ब्रह्मरूप थशे एटलुंज नहि पण व्यतिरेक मूर्तिनो दिव्यानंद पण मळशे. आ टीका ता कल्पतरु के चिंतामणी जेवी छे. जेवुं श्रीहरिनुं सर्वोत्तम वचनामृत तेवीज रहस्यार्थ प्रदीपिका टीका पण सर्वोत्तम छे. माटे महिमा समझी जे कोइ आ टीका वांचशे विचारशे तो तेमने अनादि मुक्तराज अबजी बापाश्रीनो वर छे के तेमना मनोरथ सफळ थशे अने आ टीका वांचवाथी पोताना समागम कर्या जेटलुंज फळ मळे छे.

अपूर्व लाभ.

आवा अनादि महामुक्त मळवाथी अनंत मुमुक्षुओने अपूर्व लाभ मळयो छे. ज्यारे भगवान पृथ्वीपर नरनाटक धारे छे त्यारे तेमनी बधी क्रिया मनुष्यना जेवीज होय छे, तेथी आ ' नर ' ना रूपमां रहेला 'नारायण'ने ओळखी काढवा ए बहु जबरी गांठी छे. तप करीने शरीर सुकवी नाखवुं वगेरे तपश्चर्या करनाय पण ' नर ' देहमां रहेला दिव्य 'नारायण'ने ओळखवा ए मोंघी उग्र तपश्चर्या छे. आ नरदेहधारी नारायणने ओळख्या तेमो बेडो पार जाणवो. तेवीज रीते पुरुषोत्तमना अनादि मुक्तोने ओळखवा ने तेमनो आश्रय करवो ए पण मुमुक्षुओने अपूर्व लाभ छे. जेओ उत्तम कोटीना मुमुक्षुओ होय छे तेज प्रगट पुरुषोत्तम तथा तेमना मुक्तोने ओळखी तेमनो आश्रय करी शके छे. जेमना पुन्यनो पूर्ण परिपाक नथी थयो, ते आ पुरुषोत्तम तथा तेमना मुक्तने ओळखी शकता नथी. ज्यारे आ जीव अनंतकोटी जन्मपर्यंत सत्पुरुषनी सेवा परिचर्या करी तेमने राजी करे छे त्यारे तेना पुन्यनो परिपाक थाय छे अने तेने प्रगट पुरुषोत्तमनो योग

थाय छे, एटलुंज नहि परंतु तेने ' जे धाममां दिव्यमूर्ति छे तेज आ मनुष्यमूर्ति छे, ' एवो दिव्य उत्तम निर्विकल्प निश्चय पण थाय छे, अने परिणामे ते पुरुषोत्तमना धामने पामे छे अर्थात् मुक्त थाय छे; परंतु आ बधी अलौकिक प्राप्ति दैवी जीवनेज थाय छे; आसुरी जीवने आ अमृतवल्ली पचती नथी. श्रीजी महाराजे कह्युं छे तेम, जीव जेम जेम सत्पुरुषनो ने भगवाननो गुण ग्रहण करतो जाय छे तेम तेम दैवी थतो जाय छे, अने जो तेमनो अवगुण ग्रहण करतो जाय तो आसुरी थतो जाय छे. माटे आपणे मुमुक्षुओए सत्पुरुषनो तथा भगवाननो अवगुण न आवे एवी खास काळजी राखवानी छे. ' भगवान के मुक्त आम केम करता हशे ? ' के ' आटलुं ठीक नथी करता ' एवा एवा संकल्प थाय ते अवगुण आव्यो कहेवाय. भगवाननी ने मुक्तनी दरेक क्रिया दिव्य जणाय, तेमनुं हालवुं बोलवुं चालवुं वगेरे सर्व—दरेक लीला मुमुक्षुओनां कल्याणमाटे ज छे एम मनाय, ते तेमनो गुण आव्यो कहेवाय. माटे आपणे हंमेशां पुरुषोत्तमने तथा तेमना मुक्तने दिव्य जाणी तेमना हंमेशां गुण ग्रहण करवा के जेथी तेमनो क्यारेय अभाव आवे नहि. पुरुषोत्तम ने तेमना मुक्तना द्रोहथी कोइ मोटुं पाप नथी अने तेमने दिव्य जाणवा जेवुं कोइ मोटुं पुन्य नथी. हवे आपणे कच्छमां तेमज गुजरात काठीयावाडमां अ. मु. अबजी बापाए सत्संगनी केवी सेवा करी छे ते जोइए.

कच्छनो दिव्य सत्संग

आ पृथ्वीपर अनेक संप्रदायोना मुकुट मणीरुप उद्धवीय संप्रदाय पण, एक सर्वोत्तम संप्रदाय होइ, मुमुक्षुओने भवसागर पार उतारवा माटे, अत्यार सुधी आवेली अनेक मोक्ष मनवारोमां सर्वोत्तम मोक्ष मनवार मणाय छे. उद्धव संप्रदायनी शाखा–प्रशाखा टुंक वखतमां एटली तो फेलाइ गइ छे के मुमुक्षुओने चारे दिशाथी आ संप्रदायनो आश्रय ग्रहण करवानी सुगमता थइ गयेली छे. तेमां पण आ उद्धवीय संप्रदायमां कच्छनो सत्संग मुकुट स्थाने छे केमके त्यां श्रीजीमहाराजे पोताना जेवाज अनादि मुक्तो मुक्या छे एटलुंज नहि पण त्यांना सत्संगीयो पण एवा उंची कोटीना मुमुक्षुओ छे के जेओ त्यां पधारेला मुक्तोनी आज्ञामां मन, क्रम, वचने, वर्ती श्रीजीमहाराजनुं अक्षरधाम कच्छमां लावी रह्या छे. कच्छना आ अपूर्व सत्संगनो प्रताप त्यांनी मुक्त त्रयीने आभारी हतो ने छे. आ मुक्तत्रयी आज मात्र अनादि मुक्तराज अबजीबापा मांज आवी रही छे. बे मुक्तोए तो क्यारनुंय लीला संवरण करी लीधुं छे. रह्या तो मात्र बापाश्री. पण बापाश्री एटले शुं ? ए तो बधानी स्वामी भागे एवा अने सौने श्रीजीनी मूर्तिमां जोडे तेवा. सौने धर्म नियममां राखवा माटे तेमनो आग्रह बहुज छे.

अने जेम ' वंकाआगे वंका शीळाआगे पाधरा, ने तरवंक आगे चोवंक ' तेम जेओ सीधा छे तेमने तो बापाश्री नमी माग आपे ने तेवा भक्तोने भजनारा छे; पण जेओ धर्मभंग करी सत्संगीपणानो दावो करनारा छे तेमने बापाश्रीनुं सौम्य स्वरुपनुं दर्शन न थतां हमेशां रुद्र मूर्तिनांज दर्शन थाय छे. आज कच्छना कणबीओनी वाहवाह थाय छे, तेमना धर्म नियमो एकी अवाजे वखणाय छे, अने रामकृष्णभाइ जेवा कणबी कुळमां अवतार लेवा इच्छे छे, ते वधुं आपणा बापाश्रीना आ रुद्र स्वरुपनेज आभारी छे. बापाश्री धर्मभंग–तेमां पण पाप करीने छुपावनार मानीना माननें तो जरापण सहन करी शकता नथी. तेमनां मानने तो तेओश्री मोडचेज रहेवाना. अस्तु.

कच्छमां हंमेशां जाणे सत्संग हसतोज होय ने शुं ! श्रीजीमहाराज त्यां प्रगट प्रमाणज विराजता होय नहि शुं ! तथा आ देहेज कल्याणनी प्रतीति आवी जीवन्मुक्तिना आनंदना फुवारा छुटता होय नहि शुं ! एम दरेक त्यागी गृहीने मालुम पडया वगर रहेतुं नथी. आ बधानुं मध्य बिंदु बापाश्री छे. तेओ हंमेशां पोतें श्रीजीनी अदल आज्ञामां वर्ते छे अने बीजाओने त्यागी गृही बाइ भाइ सौने–आज्ञा पळाववापर खूब तान राखे छे. उत्सव समैयाओ पोते पण करे करावे छे अने दरेक उत्सव समैयामां पोते गमे तेम करीने पण अचूक हाजरी आपे छे. अने त्यां जइ सर्वेने धर्म, ज्ञान, महात्म्ये सहित भक्ति तेमज वैराग्यनी वातो करी बाइ भाइ सौने समास करे छे. आ सर्वेना, कच्छना सत्संगीना वर्त्तननी आपणापर एवी तो अद्भुत छाप पडे छे के घडीभर आपणे अक्षरधाममां होइए नहि शुं एवी समाधि दशा आवी जाय छे. बापाश्री पासे गमे त्यारे जाओ पण एज एकनी एक वात. पोताने जे हेतु माटे श्रीजीमहाराजे मोकल्या छे एज कार्यने करता होय छे. सौने श्रीजीनुं सर्वोपरि ज्ञान दान करवुं, अने नियम वर्तमान माथा साटे पळाववां, तेमां जरा पण मचक न आपवी, एटलुंज नहि पण कोइनी मोटाइनी शे'मां पण तणावुं नहि, आ तेमनो सुवर्ण मंत्र छे. देशीपरदेशी सौने पोतानी मीठी दिव्यवाणीमां सर्वोपरि निश्चयनी अने नियम धर्म आज्ञा उपासनानीज वातो करे छे. अने बापाश्रीनी वातो सबीज होवाथी मुमुक्षुओने तो चटदइने हृदयमां उतरी जाय छे अने तेमनां जीवन धन्य थइ जाय छे.

पण बापाश्री कंइ कच्छनेज अक्षरधाम बनावी संतोष माने एवा क्यां छे ? तेमने तो आखा नरनारायण देशमां–अरे ! लक्ष्मी नारायणना देशमां पण–श्रीजीमहाराजनी आज्ञा उपासना प्रवर्तावबानी महत्वाकांक्षा छे. जड चैतन्य माय़ाना प्रसंग रहित जेवो

सत्संग सुधारणा.

दिव्य सत्संग कच्छमां प्रवर्ते छे तेवोज गुजरात काठीयावाडमां प्रवर्ते एवी तेमनी इच्छा छे. बहारथी जे जे संत हरिजनो तेमना समागमनो लाभ लेवा आवे छे तेमने सर्वेने श्रीजीमहाराजनी आज्ञा अदल पाळवानो उपदेश आपे छे. तेमज पत्रद्वारा पण सौने श्रीजीमहाराजनी नानी मोटी आज्ञापर सुरत राखवानुं सूचवे छे. स्त्री धननो त्याग ए उद्धवीय संप्रदायनी एक विशिष्ठता छे. आ स्त्री धनरुपी राहु उद्धवीय संप्रदायरुपी निर्मळ पुन्यमचंद्रने जरापण पीडे नही तेनी तेओश्री सतत् काळजी राखे छे. आचार्य संत, हरिजनो सौ पोत पोताना धर्ममां वर्ते, देवने दिव्यजाणी तेमनी सेवा दिव्यभावे करे, अने उज्जवळ सत्संगने डाघ लागे एवुं कोइपण आचरण न करे, तथा देवनुं सत्संगनुं ममत्वराखी हळीमळी सौ तेनो सेवा व्यवहार चलावे, अने कोइपण–आचार्य संत के हरिजन–मनमुखी थइ देव सत्संगने घसारो आवे एवुं कंइ न करे, आ बापाश्रीना हंमेशना उपदेशमांनुं नवनीत छे. बापाश्रीनो मूळथीज एवो हेतु छे जे वर्त्तन जेवुं कोइ बळवान नथी.आथी तेमणे प्रथमतो पोताना जे कहेवाता हता तेमने पहेलां शुद्ध कर्या अने जड चैतन्य मायाना खरा त्यागी बनाव्या. तेमने सर्वोपरि शुद्ध निश्चय करावी, आज्ञामां दृढपणे वळगी रहेवानो आग्रह रखावी, देवसेवा करवानी दीक्षा आपी, आवा एकांतिक संतो पोताना गुरुश्रीनी आज्ञा मुजब सत्संगीओने पण तेवी ज रीतना एकांतिक बनाववा लाग्या. आथी आपणे जोइ शकीए छीए के अनादि मुक्तराज बापाश्रीए सत्संगमां आवी श्रीजीमहाराजे आत्यंतिक कल्याणनो जे अपूर्व उद्यान पृथ्वीमां बनाव्यो हतो, तेनी शोभामां शतगुण वृद्धि करी छे अने करता जाय छे एटलुं ज नहि पण ते शोभा वधावी राखनार कुशळ माळीयो पण उत्पन्न कर्या छे.

पृथ्वी पर पधारी पोताना स्वामिनो दिग्विजय करावता अनादि मुक्तराज हाल पण बळदियामां मुमुक्षुओने श्रीजीनी मूर्तिमां जोडवानुं

शिष्यवर्ग.

अखंडित सदाव्रत चलावी रह्या छे. तेवुंज सदाव्रत तेमना प्रधान शिष्यगणो पण चलावी रह्या छे. आपणने आवो अपूर्व 'रहस्यार्थ प्रदीपिका' नामनो संप्रदायनो दिव्य ग्रंथ सांपडयो ते माटे आपणे आ सद्गुरुना ऋणी छीए. वळी आ शिष्यो–सद्गुरुओ एवा तो बळीया छे के तेओ 'बापाश्री'नी जीवनदोरी पण साचवी रह्या छे. जेम श्रीजीमहाराजे घणीवार लीला विग्रह संकेली लेवानो संकल्प करेलो, पण मोटा सद्गुरुओए अने हरिजनोए रोकी राखेला; तेमज बापाश्रीने पण आ सद्गुरुओए वश करी लीधा होवाथी, बापाश्रीए लीला संकेली लेवानो संकल्प करेल होवा छतां पण–अरे ! बापाश्रीए पोताना घरबार

वगेरेनी पण छेल्ली व्यवस्था करी परवार्या छतां पण—आ शिष्योनी प्रेमदोरीथीज बंधायेला "बापा" छटकी जवा पाम्या नथी. शाबाश छे शिष्यो ! शाबाश ! ! ! हवेथी जे जे मुमुक्षु श्रीजीनी मूर्तिनो दिव्य आनंद बापाश्री तरफथी मेळवशे तेमां तमारुं कमीशन तो चालवानुं ज ! अस्तु. आपणे पण सौए मळी ए प्रेमदोरीमां आपणो प्रेम मेळवी ए दोरीने करीए दोरडुं अने बापाश्रीमां करीए आपोपुं ! अने आखो शिष्य समुदाय बापाश्री साथे अविच्छिन्नपणे बंधाइ जइए, एक थइ जइए ! अने बापाश्रीनी पेठेज मूर्तिमां संलग्न थइ जइए !!! बोलो श्रीसहजानंद स्वामिमहाराजनी जय ॥

मंगलाचरण.

मुनीशार्रसारंशुचिकनकवृंदंपरिदधत्निचोलंकौसुंभंकटीतटपटंचारुणरुचिम् ॥ बहुन्हारान्हैमान्वरवलयकेयूरमुकुटानहसहक्त्रेन्दुर्मेदशिजयतुनारायणमुनिः ॥१॥ यईशोऽपि-स्वेच्छाधृतनृतनुरानंद निलयः कृपासिंधुर्बंधुर्भवजलनिधौदुःखितनृणाम्॥ सकामैर्निष्कामैरपिसुरनरैःसेव्यचरणं नमाम्यात्मात्मानंतमहमिहनारायणमुनिम् ॥२॥ स्वभक्तवृंदपालिनंमणींद्रमाल्यमालिनंविमुक्तसंघशालिनंस्वशक्तियुक्तलालिनम् ॥ क्षमादयाधिमालिनंविनाशिताघजालिनंभवंतमार्चिकंदनंभजामिधर्मनंदनम् ॥३॥ यःस्वेष्टदेवमगवत्यनुरक्तचेताः॥ ब्रह्मस्थितिंह्यधिगतोऽतिविरक्तियुक्तः ॥ शांतंसतांगुरुमुदारविशुद्धबोधंतंसुव्रतंमुनिमहंप्रणमाम्यजस्रम् ॥४॥ नारायणोनीलकंठःस्वामिनारायणोहरिः ॥ हरिकृष्णश्चसहजानंदःकृष्णोऽस्तुमेहृदि ॥५॥ श्रूयतांदेवदेवेशस्वामिनारायणप्रभो ॥ त्वदीयेनावधानेनकथयिष्येशुभाःकथाः ॥ ६ ॥

अवतारि श्रीअक्षराधिपति पुरुषोत्तमना प्रगट थवाना छ हेतु.

सभायांमहावस्तुसिंहासनस्थंसुमन्धानबहून् पुष्पहारान्दधानम् ।
अनेकार्कचन्द्राग्न्यतिस्वच्छकान्तिं शरचन्द्रदिव्याम्बरं नौमिधार्मिम् ॥१॥

स्मारंस्मारंश्रीसहजानन्दपदंश्री स्वामिब्रह्मानन्दमुनिप्रोक्तसुखाश्च ।
अस्मिल्लोकेधर्मसुतस्यागमनेये षट्संख्यानेतान्वरहेतून्प्रवदामि ॥ २ ॥
प्रभौ प्रेमवन्तःपरैकान्तिकाये जनावैष्णवाःसन्तितेषांसुखाय ॥
तदिच्छाप्रपूर्णायितल्लालनायाऽक्षरादागतस्तत्रहेतुः परोऽयम् ॥ ३ ॥
अधर्म्यासुरक्लेशगौ भक्तिधर्मौ तयोरक्षणाय प्रवृत्यैपृथिव्याम् ॥
स्वयंकोसलच्छप्पयोधामधर्मा लयेजन्मजग्राह हेतुर्द्वितीयः ॥ ४ ॥
सदा स्वाक्षरस्थावतारीप्रभुर्यः ससर्वोपरि ज्ञानमस्ति स्वकीयम् ॥
निजोपासनायाप्रथिव्यां प्रवृत्यै तयोरागतोहेतुरुक्तस्तृतीयः ॥ ५ ॥
स्वकीयावतारास्तदीयाश्चभक्तानिजोपासनांज्ञानमाबोध्यतेषाम् ।
तथैतान्स्वधामाऽधिनेतुंविचिन्त्याऽऽगतः श्रीहरिर्हेतुरुक्तश्चतुर्थः ॥ ६ ॥
चिरान्नष्टएकान्तिकोधर्मउर्व्यांसतत्स्थापनायाऽसतांनिग्रहाय ॥
सदैकान्तिकानांसतांरक्षणायाऽऽगतःश्रीहरिःपञ्चमोहेतुरुक्तः ॥ ७ ॥
स्वयंपूर्वजीवान्मुमुक्षून्निजोपासनाज्ञानमाबोध्यनेतुंस्वधाम ॥
तथा स्वस्वभक्ताश्रयेणापिकर्तुं मुमुक्षूनवानागतःषष्ठहेतुः ॥ ८ ॥

॥ अवतारि श्री पुरुषोत्तम भगवाननां असाधारण लक्षण ॥

श्रीधर्मपुत्रंप्रणीपत्यपूर्वं वदामितच्छ्रीपुरुषोत्तमस्य ॥
श्रीस्वामिगोपालमुनिप्रणीताऽ साधारणान्यत्रतुलक्षणानि ॥ १ ॥
पूर्वंत्वसाधारणलक्षणंयच्छ्रीस्वामिनारायणदिव्यमूर्तेः ।
पूर्वाऽवतारान्सकलान्स्वमूर्तौ संदर्शयेदुक्तमिदंहिलक्ष्म ॥ २ ॥
वैकुण्ठलोकादिपुदिव्यमूर्त्तौ दिव्येऽद्भुतैश्वर्यसुखेचनश्च ॥
स्वकीयरूपेशनशोमनुष्यानसंदर्शयेच्चिन्हमिदंद्वितीयम् ॥ ३ ॥
साधारणान्नृनपितंसमाधिं यःकारयित्वामनसःप्रवृत्तिम् ॥
संरोधयेत्स्वात्मनितत्तृतीयं लक्ष्मोदितंब्रह्मपुराधिपस्य ॥ ४ ॥
अन्यावतारैःश्रितमानवानां श्रेयस्कृतंवृत्तिनिरोधनंषा ॥
संदर्शयेत्तद्द्वयमेवभक्त द्वाराहितूर्यंप्रभुलक्षणंतत् ॥ ५ ॥
धाम्न्यक्षरेस्वेबहुलप्रकाशे मुक्तव्रजैःस्नेहभरेणसेव्याम् ॥
सिंहासनस्थांरुचिरांस्वमूर्त्तिं संदर्शयेद्यादृशतादृशान्नृन् ॥ ६ ॥

तत्पश्चमंलक्षणमत्रधार्मे रथोच्यतेचिन्हमिदंहिषष्ठम् ॥
पूर्वागमेज्ञानविरागभक्तिधर्मादिकंयोगपथश्चसांख्यम् ॥ ७ ॥
कुर्याद्धितद्वर्णनमात्मयोगात् स्वैःकारयेत्तत्रचमत्कृतिश्च ॥
पूर्वागमार्थादिपसौक्ष्म्यर्थौ प्रादुर्भवेच्छान्तिकरःसुधेव ॥ ८ ॥
स्वालोकमात्रेणसहस्रजीववृत्तेस्तुनैसर्गिकरोधनंस्यात् ॥
स्वस्मिन्यथाचुंबकमेतिलोहंतत्सप्तमंचिन्हमथाष्टमंच ॥ ९ ॥
कस्यापिनुःस्वाश्रयमात्रतोऽपिमहाशिवंस्याद्धितदन्तकाले ॥
तमक्षरंनेतुमियात्स्वकीयैर्मुक्तैर्विमानैःसहितःसधार्मिः ॥ १० ॥
निजेनिदेशेश्वतशामनुष्यान् ज्ञानेतथात्यागयुतेस्वधर्मे ॥
संस्थापयेद्घोरकलौयुगेऽस्मिन्प्रोक्तंप्रभोस्तन्नवमंहिलक्ष्म ॥ ११ ॥
जनाःस्वसंबंधगवस्त्रपुष्पस्पर्शेक्षणाभ्यांसमियुःसमाधिम् ॥
पश्येयुरैश्यंहरिमत्रधाम विनापियागंदशमंचलक्ष्म ॥ १२ ॥
देशान्तरेकश्चनधार्मिमूर्त्ते वार्त्तामकुर्यात्पुरतोनृणान्तम् ॥
श्रुत्वाजनास्तेजसिलोकयेयु रेकादशंचिन्हमिदंहरेश्च ॥ १३ ॥
प्रधानजीवेश्वरकालमाया मुक्ताक्षराणांपुरुषोत्तमस्य ॥
पृथक्पृथक् लक्षणमेवकुर्यात् स्वयंस्वभक्तैरपिकारयेद्वा ॥ १४ ॥
सैश्वर्यरूपाणिपुनश्चतेषां प्रदर्शयेद्वाबहुशोजनांश्च ॥
सर्वोत्तमस्वाक्षरधामभाज श्चिन्हंपरंद्वादशमुक्तमेतत् ॥ १५ ॥
संदर्शयेत्पूर्वंनिजावताराल्लीनान्स्वमूर्त्तौश्वतशोमनुष्यान् ॥
लीनोनतेषुस्वयमद्भुतन्तत्त्रयोदशंधर्मसुतस्यलक्ष्म ॥ १६ ॥
इमानिप्रभातेप्रदोषेऽथरात्रौ सभायांसदावर्णयेन्मंगलानि ॥
सतुश्रीहरौभ[illegible] सतंधर्मजःप्रापयत्यक्षरंच ॥ १७ ॥
प्रसन्नतार्थंवृषनन्दनस्यतत्प्रीतितोबालमुकुन्दवर्णी ॥
यस्तत्कृतिःकापितयारसज्ञास्तुष्यन्तुमत्संगिजनाश्चसन्तः ॥ १८ ॥



रहस्यार्थ प्रदीपिका टीकाकार अनादि मुक्तराज अबजीबापा, वृषपुरवासी.



रहस्यार्थ प्रदीपिका टीकास्थ प्रश्न पुछनार स्वामि ईश्वरचरणदासजी

॥ श्री स्वामिनारायणो विजयतेतराम ॥



१२५८८

॥ श्रीजिमहाराजना वच- ामृतनो परथारो ॥

॥ प्रथम प्रकरण प्रारंभः ॥

पातुं धर्म मधर्म मुरवनयितुं श्रीभक्ति धर्माङ्गतो जातायोत्तर कोशलेषु दयया सर्वेश्वरेशायच ॥ तृप्तिं वाक्य सुधारसै र्विदधते नैजे र्निजानां मुहु स्तस्मै श्रीहरये नमोस्तु सहजानंदाय सद्दर्शिने॥ ॥१॥ ज्ञानेन धर्मेण युतां विरक्त्या माहात्म्य बोधेन च यो निजस्य ॥ प्रवर्त्तयामास भुवि स्वभक्तिं सश्रीहरि र्नोऽस्तु मतिप्रदाता ॥ २ ॥ अज्ञान संज्ञं गहनांधकारं निजाश्रितस्वान्तगुहागतं यः ॥ अपाहर- ज्ज्ञानदिवाकरः श्री धर्माङ्ग जन्मा जयति प्रभुः सः ॥ ३ ॥ प्रोक्तानि यानीह वचोमृतानि श्रीस्वामिना तेन निजाश्रितेभ्यः तेषां लिखामः कतिचित्तदीय तुष्ट्यै यथा बुद्धि यथा श्रुतंच ॥४॥ तत्रादौ श्रीहरे स्तस्य जन्मादि चरितं शुभं ॥ कथयामः समासेन तदीयानंददायकम्॥५॥

श्री गोलोकना मध्यने विषे भगवाननुं अक्षरधाम छे, ते केवुं छे तो कोटी कोटी सूर्य चंद्र ने अग्नि ते सरखुं प्रकाशमान छे, ने दिव्य छे, ने अत्यंत श्वेत छे, ने सच्चि- दानंदरुप छे, अने जेने ब्रह्मपुर कहे छे, अमृतधाम कहे छे, परमपद कहे छे, अनंतअपार कहे छे, ब्रह्म कहे छे, चिदाकाश कहे छे. (१) १

एवुं जे ए अक्षरधाम तेने विषे श्रीकृष्ण भगवान जे ते सदाय विराजमान छे, ते केवा छे तो जेने पुरुषोत्तम कहे छे, वासुदेव कहे छे, नारायण कहे छे, परमात्मा कहे छे,

ब्रह्म कहे छे, परब्रह्म कहे छे, इश्वर कहे छे, परमेश्वर कहे छे, विष्णु कहे छे. अने वळी ते भगवान्केवा छे तो क्षर अक्षरथकी पर छे, सर्वज्ञ छे, सर्वकर्ता छे, सर्वना नियंता छे, सर्वना अंतर्यामी छे, सर्व कारणना कारण छे, निर्गुण छे, स्वप्रकाश छे, स्वतंत्र छे, अने ब्रह्मरुप एवा जे अनंतकोटी मुक्त, तेमने उपासना करवा योग्य छे, अने अनंतकोटी ब्रह्मांडनी जे उत्पत्तिस्थिति ने प्रलय, ते रुप छे लीला जेमनी एवा छे, अने प्रकृतिपुरुष, काळ, प्रधान पुरुष, ने महतत्वादिक ए जे पोतानी शक्तियो तेना प्रेरक छे, अने अनंतकोटी ब्रह्मांडना राजाधिराज छे, सदाय किशोर मूर्ति छे, ने कोटी कोटी कंदर्प सरखा सुंदर छे, ने नवीन मेघ सरखा श्याम छे, वर्ण जेमनो एवा छे, अने अमूल्य ने दिव्य एवां जे नाना प्रकारनां वस्त्रने आभूषण तेणे युक्त छे, अने कानने विषे मकराकार कुंडळ धर्या रह्या छे, ने मस्तकने विषे नाना प्रकारना रत्ने जडित एवो, मुगट तेने धरी रह्या छे, अने शरदऋतुनुं जे कमळ तेनी पांखडी सरखां अणियाळां छे, नेत्रकमळ जेमनां एवा छे, अने रुडुं एवुं जे सुगंधिमान चंदन तेणे करीने चर्च्या छे, अंग जेमनां एवा छे, अने मधुरे स्वरे करीने वेणूने वजाडेछे अने राधिकाजी ने लक्ष्मीजी तेमणे पूज्या छे, अने मूर्तिमान एवां जे सुदर्शनादिक आयुध तथा नंदसुनंदने श्रीदामादिक जे असंख्य पार्षद तेमणे सेव्या छे, अने कोटी कोटी सूर्य चंद्र सरखा प्रकाशे युक्त छे मूर्ति जेमनी एवा छे, अने अनंतकोटी एवा जे कल्याणकारी गुण तेणे युक्त छे, अने धर्मज्ञानने वैराग्यादिक जे ऐश्वर्य तथा अणिमादिक जे सिद्धियो तेमणे सेव्यां छे चरणकमळ जेमनां एवा छे, अने मूर्तिमान एवा जे चार वेद तेमणे स्तुतिने कर्या छे, अने वासुदेवादिक जे चतुर्व्यूह, तथा केशवादिक जे चोवीश मूर्तियो, तथा वाराहादिक अवतार ए सर्वना धरनारा छे. एवा जे श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम भगवान ते जेते आ जे पोतानुं समग्र ऐश्वर्य तेणे युक्त थका पृथ्वीने विषे एकांतिक धर्मने प्रवर्तावावाने अर्थे श्री नरनारायण ऋषिने रुपे करीने प्रथम धर्मदेवथकी मूर्तिने विषे प्रगट थता हवा, अने पछी श्री नरनारायण जेते पृथ्वीने विषे मनुष्य जे तेमना कल्याणने अर्थे तप करवा सारु धर्मना आश्रम थकी बदरिकाश्रम प्रत्ये जता हवा, अने ते बदरिकाश्रमने विषे सनातन एवा, ने लोकोना स्वामी एवा, ने अतिशे कृश एवा, ने नाडीये करीने व्याप्त छे शरीर जेमनुं एवा, ने पोतानुं जे तेज तेणे करीने देवता जे तेमणे पण दुःखे करीने दर्शन करवा योग्य एवा, ने मुनिनां छे रुप जेमनां एवा, ने परम उदार एवा, ने भरतखंडनी समग्र जे प्रजा तेने सुखना देनारा, एवा, ने अतिशे दयाळु एवा जे श्री नरनारायण ते जेते अतिशे उग्र एवुं जे तप तेने करीने, ते तपनुं जे फळ तेने समग्र एवी जे भरतखंडनी प्रजा तेने आपे छे, अने वळी तेना तेज समग्र एवुं जे जगत् तेना आधार एवा जे श्री नरनारायण ते जे ते पृथ्वीनो जे भार

तेने उतारवाने अर्थे द्वापर ने कळिनी संधिने विषे यदुकुळ ने कुरुकुळने विषे प्रगट थता हवा. तेमां नारायण जे ते मथुराने विषे वसुदेव थकी देवकीने विषे प्रगट थया, अने नर जे ते कुरुकुळने विषे प्रगट थया, अने ए बे भाइ जे ते पृथ्वीनो भार उतारीने भक्तजनने मनवांछित एवां जे सुख तेने देता हवा, अने वळी तेना तेज नरनारायण जे ते पोताना एकांतिक भक्त जे धर्म भक्तिने मरीच्यादिक ऋषि तेमनी रक्षा करवाने अर्थे, ने तेमने सुख आपवाने अर्थे, अने अनेक जीवोना कल्याण करवाने अर्थे, अने अधर्मनो उच्छेद करवाने अर्थे कोशळ देशने विषे प्रगट थता हवा. (२) २

हवे ए नारायण ऋषि जेवी रीते प्रगट थया छे ते संक्षेपे करीने कहीए छैए. एक समये मरीच्यादिक ऋषि जे ते बदरिकाश्रमने विषे नरनारायण भगवाननां दर्शन करवा सारु आवता हवा. ते वातने सांभळीने धर्म देव पण पोतानी स्त्री जे मूर्ति तेणे सहित थका, श्री नर नारायणनां दर्शन करवा आव्या पछी ते ऋषिनी सभाने विषे उद्धवे सहित बेठा एवा जे श्री नरनारायण ऋषि तेनुं दर्शन करीने श्री नरनारायणे मान्या थका धर्मदेव जे ते ते सभाने विषे बेसता हवा, अने मरीच्यादिक ऋषिए श्री नरनारायण ऋषि आगळ प्रथम करी हती जे भरतखंडना वृत्तांतनी वार्ता तेने श्री नरनारायण ऋषिना मुखारविंद थकी एकाग्रचित थइने धर्मदेव जेते सांभळता हता, तथा ते ऋषिने उद्धव ते पण ते वार्ताने एकाग्रचित्त थइने सांभळता हता, ते समयमां कैलास पर्वत थकी दुर्वासा ऋषि जेते श्री नरनारायण ऋषिने दर्शने आव्या तेनुं कोइथी सन्मान थयुं नहि. माटे ते दुर्वासा ऋषि तो ए धर्मादिक सर्वेने शाप देता हवा जे, मारा अपमानना करनारा जे तमे सर्वे ते भरतखंडने विषे मनुष्यपणाने पामो, ने त्यां असुर थकी अपमानने ने कष्टने पामो. एवा शापने सांभळीने धर्म देवे घणी प्रकारना विनययुक्त वचने करीने शांति पमाड्या, एवा जे दुर्वासा ऋषि ते बोल्या जे तमे सर्वे श्री नारायण ऋषिनी वार्ता सांभळवाने विषे आसक्त हता माटे मने न देख्यो ने मारुं सन्मान न थयुं, एनी मने खबर नहोती ते सारु में तमने शाप दीधो पण ते मारो शाप तो निवारण नहि थाय पण ते शाप मेळो हुं तमने अनुग्रह करुं छुं जे हे धर्म देव ! तमे ने आ तमारी स्त्री मूर्ति ते ब्राह्मणना कुळने विषे मनुष्य देह धरशो, ने त्यां आ श्री नारायण ऋषि जेते तमारा पुत्र थशे, ते तमने ने आ ऋषियोने मारा शाप थकी मुकावशे ने असुरना कष्ट थकी तमारी सर्वेनी रक्षा करशे. एम कहीने दुर्वासा ऋषि तो पाछा कैलास पर्वतमां गया.

पछी श्री नारायण ऋषि जेते धर्मादिक सर्वे प्रत्ये बोलता हवा जे, अपराध विना जे आ शाप तमने थयो तेने जो हुं टाळवाने इच्छुं तो हुं समर्थ छुं, ते टळी जाय पण हमणां भरतखंडने विषे कळियुगना बळने पामीने अधर्म ने असुर ते बहु वृद्धिने पाम्या

छे तेमना नाशने अर्थे मारी इच्छाये करीनेज ए शाप थयो छे ते में अंगीकार कर्यो छे. माटे हे धर्मदेव ! हुं जेते हरिकृष्ण नामे करीने तमारो पुत्र थइने ते असुरनो ने अधर्मनो नाश करीश, ने तमारी सर्वेनी रक्षा करीश, ने पृथ्वीने विषे एकांतिक धर्मने प्रवर्तावीश, माटे तमे कांइ चिंता राखशोमां ने पृथ्वीने विषे सर्वे मनुष्य देहने धारो. एवां वचन सांभळीने श्री नारायण ऋषिने नमस्कार करीने धर्मादिक सर्वे जेते मनुष्य देह धरवाने अर्थे पृथ्वी प्रत्ये जता हवा (३) ३

ने हवे धर्म ने मूर्ति जेवी रीते प्रगट थयां छे ते कहीए छैए. जे कोशळ देशने विषे इटार नामे पुर छे तेमां सरवरीया ब्राह्मण शामवेदी पांडे बाळ शर्मा नामे हता ते थकी भाग्यवती नामे जे तेनी पत्नी तेने विषे धर्मदेव जेते संवत् १७९६ सत्तरसोने छन्नुना कार्तिक शुदि ११ एकादशीने दिवसे मध्याह्न पछी प्रगट थता हवा, अने पिता जेते विधिये करीने तेमना जात कर्मादिक संस्कार ने करता हवा, ने बारमे दिवसे देव शर्मा एवुं नाम धरता हवा. अने ते कोशळ देशने विषे ज छपैया नामे गाममां प्रवाडी कृष्णशर्मा नामे ब्राह्मण ते थकी भवानी नामे जे तेनी पत्नी तेने विषे मूर्ति जेते संवत् १७९८ सत्तरसो अठाणुंना कार्तिक शुदि १५ पुनमने दिवसे सायंकाळे प्रगट थतां हवां. ते पछी दिवसे दिवसे मोटां थयां ने श्रीकृष्ण भगवाननी अतिशे भक्ति करवा लाग्यां माटे भक्ति एवा नामने पामतां हवां.पछी ए भक्तिना पिता कृष्णशर्मा ते जे ते पोतानी पुत्री जे भक्ति तेनो धर्मना अवतार जे देवशर्मा ते साथे यथाविधि विवाह करता हवा, ने ए जे पोताना जमाइ तेने पोताना गाममां पोताने घेर राखता हवा. पछी ते देवशर्मा जे ते भक्ति जे पोतानी पत्नी तेणे सहित गृहस्थाश्रमना जे धर्म तेने आशरीने श्रीकृष्ण भगवाननी भक्ति करतां हवां अने पोते धर्मने विषे अति दृढपणे वर्त्या तेने जोइने सर्वे लोक जे ते धर्म एवे नामे करीनेज बोलावता हवा. पछी ए धर्मभक्तिने असुरथकी अतिशे कष्ट थयुं, तेना निवारणने अर्थे ते धर्मभक्ति जे ते वृन्दावनमां जइने मरीच्यादिक ऋषिये युक्त थकां श्रीकृष्ण भगवाननी आराधना करतां हवां. तेणे करीने ते भगवान एमनी उपर प्रसन्न थया ने पोताना अक्षरधाममां जेवा पोते सदा विराजमान छे तेवुं पोतानुं दर्शन आपीने धर्मभक्ति प्रत्ये बोलता हवा जे, हे धर्मभक्ति ! तमने कष्टना देनारा जे असुर तेमने पूर्वे में कृष्णावतारने विषे मार्या हता ते मारा उपर एमने वैर छे, माटे तमने मारा जाणीने पीडे छे. ते असुरना नाशने अर्थे हुं जे ते नारायण ऋषिरूपे तमथकी प्रगट थइने हरीकृष्ण नामे विख्यात थइश, ने तमारी ने ऋषिनी असुरना कष्ट थकी रक्षा करीश, ने तमने दुर्वासानो शाप थयो छे ते मेळो मने पण शाप थयो छे, माटे तमने ते शाप थकी मुकावीश ने असुरनो ने अधर्मनो उच्छेद करीश, ने पृथ्वीमे

विषे एकांतिक धर्म प्रवर्तावीश. एम कहीने श्रीकृष्ण भगवान जे ते अंतर्धान थइ जता हवा. पछी धर्मभक्ति अति आनंदने पामीने त्यांथी पाछां पोताने गाम आवीने श्रीकृष्ण भगवाननी भक्तिने करतां हवां. अने एवी रीते ए धर्मने भगवान प्रसन्न थया माटे सर्वे जन जेते तेमने हरिप्रसाद नामे करीने बोलावता हवा ॥ ४ ॥ ४

पछी करुणानिधि एवा ने भगवान कहेतां समर्थ एवा जे श्री नरनारायण ते जे ते जीव जे तेमना कल्याणने अर्थे पृथ्वीने विषे मनुष्यपणाने अंगीकार करवाने ज्यारे इच्छता हवा त्यारे नरनारायण एवा जे ए भगवान ते जे ते पोतानी इच्छाये करीने धर्मना हृदयकमळने विषे विराजमान थता हवा. पछी केटलाक मास गया केडे ते हरिप्रसादजी थकी भक्तिने विषे श्रीपुरुषोत्तम एवा जे नारायण मुनि जे ते संवत् १८३७ अढारसो ने साडत्रीशना चैत्र शुदि ९ नवमीनी रात्रि दश घडी गइ त्यारे प्रगट थता हवा ते समयमां हरिप्रसादजीना घरने विषे मोटो उच्छव थतो हवो अने इंद्रादिक देव जे ते जय जय शब्दने करता थका ने दुंदुभीने वजाडता थका, पुष्पनो वर्षाद करता हवा अने अप्सराउं जे ते नृत्य करती हवी ने गंधर्व जे ते गान करता हवा, अने मुनि जे ते आशिर्वाद देता हवा, अने देवता ने साधुनां जे मन ते अति प्रसन्न थतां हवां, अने असुरनां जे मन ते तत्काळ त्रासने पामतां हवां, अने ते गाममां रहेनारी जे स्त्रीयो ते मंगळ गाती हवी ने बाळरुप एवा जे हरि तेने आशिष देती हवी अने ते समयने विषे मंद सुगंध ने शीतळ एवा जे वायु ते वाता हवा अने तारा गणे सहित आकाश जे ते अतिशय निर्मळ थतो हवो, अने ते श्रीहरिना जन्मथी ते छपैयापुर अक्षरधाम तुल्य थतुं हवुं. ते वार पछी ते हरिप्रसादजी जेते ते पोताना पुत्रनुं जे जातकर्म ते ब्राह्मण पासे यथाविधि करावीने ब्राह्मणने घणीक प्रकारनां दान आपता हवा. पछी जन्मथी छठ्ठा दिवसने विषे कोटरा आदिक बाळग्रह जे ते बाळस्वरुप एवा जे भगवान तेमने मारवा सारु आव्या, तेने भगवान जे ते पोतानी दृष्टिमात्रे करीने बाळीने भगावी देता हवा. पछी भगवान सवात्रण महिनाना थया त्यारे मार्कंडेय ऋषि जे ते ब्राह्मणने वेषे ते हरिप्रसादजीने घेर आवता हवा. त्यारे हरिप्रसादजी जे ते ते ऋषिनुं अतिशे सन्मान करीने तेमने ज्योतिषी जाणीने कहेता हवा जे, तमे अमारा पुत्रनुं नामकरण करो, पछी ते ऋषि जे ते राजी थइने नामकरण करता थका बोल्या जे, हे हरिप्रसादजी ! आ तमारा पुत्र जे ते तमारी सर्वे आपदाने हरशे, तथा जे जन एमना आश्रित थशे तेमनी सर्व आपदाने हरशे अने कर्कराशिने विषे एमनो जन्म छे माटे एमनुं हरि एवुं नाम थशे, अने वळी आ जे तमारा पुत्र तेमना देहनो कृष्णवर्ण छे तथा पोताना आश्रित जननां जे मन तेने पोतानी मूर्तिने विषे ताणी लेशे तथा चैत्र मासमां

जन्म छे माटे कृष्ण एवे नामे विख्यात थशे, अने ए बे नाम नोखां नोखां छे तोपण ए बे मेळां मळीने हरिकृष्ण एवुं त्रीजुं नाम पण थशे अने आ तमारा पुत्र जे ते त्याग, ज्ञान, तप, धर्मने योग ए पांच गुणे करीने तो शिवजी जेवा थशे माटे नीलकंठ एवे नामे करीने लोकने विषे प्रसिद्ध थशे अने आ जे तमारा पुत्र तेमना हाथने विषे पद्मनुं चिह्न छे तथा पगने विषे वज्र, उर्ध्वरेखा ने कमळ तेनां चिह्न छे ते माटे आ तमारा पुत्र जे ते लक्षावधि मनुष्यना नियंता थशे, अने आ तमारा पुत्र जे ते कल्याणकारी एवा अनंतगुणे युक्त थशे ने तमारी समग्र कष्ट थकी रक्षा करशे. एम कहीने विराम पाम्या एवा जे मार्कंडेय ऋषि तेने हरिप्रसादजी जे ते घणीक दक्षिणा ने भारे भारे नवां वस्त्र ने आभूषण ते आपता हवा. पछी ते ऋषि जे ते एक दिवस त्यां रहीने प्रयाग तीर्थनी यात्रा करवा सारु चाली निसरता हवा अने ते पछी ते हरिप्रसादजी ने भक्तिमाता जे ते पोताना पुत्रना गुणने सांभळीने बहु प्रसन्न थतां हवां. पछी ते श्रीहरि जे ते पोतानी बाळ लीलाए करीने पोतानां माता पिताने ने संबंधी जनने बहु आनंद उपजावता थका बाळ्चंद्रनी पेठे वृद्धिने पामता हवा. अने ते पछे हरिप्रसादजी जे ते पोताना पुत्रने पांचमे महिने प्रथम पृथ्वी उपर बेसारता हवा अने सातमे महिने कानने विंधावता हवा. तथा ए सातमा महिनाने विषेज प्रथम अन्न जमवा शिखवता हवा अने त्रीजुं वरस बेठुं त्यारे चौळ संस्कार जे गर्भना केश उतरावना ते करावता हवा, अने एज दिवसे मायावी एवो जे काळीदत्त नामे असुर ते भगवानने मारवाने आव्यो तेने भगवाने पोतानी दृष्टिए करीने मोह पमाड्यो, ते वृक्षोने विषे अथडाइ अथडाइने मरी जातो हवो, अने ते पछी हरिप्रसादजी जे ते असुरना उपद्रव थकी छपैया गामनो त्याग करीने पोताना कुटुंबे सहित थका अयोध्यापुरीमां निवास करीने रहेता हवा, अने पछी हरिप्रसादजी जे ते पोताना पुत्रने पांचमा वर्षने विषे प्रथम अक्षर भणवा शिखवता हवा अने आठमा वर्षने विषे भारे भारे सामग्रीयोने भेगी करीने पोताना पुत्रने यज्ञोपवित देता हवा अने ते श्रीहरि जेते पोताना पिता थकी यज्ञोपवितने पामीने नैष्ठिक ब्रह्मचारीना धर्मने विषे रह्या थका वेदाध्ययनने करता हवा, अने पोताना पिता पासे वेद शास्त्र, पुराण, इतिहास, धर्मशास्त्र, ए सर्वे ग्रंथनुं पोते अध्ययन करीने तथा श्रवण करीने ते सर्वेनुं जे रहस्य तेने यथार्थ जाणता हवा अने ए सर्वेमांथी पोते चार सार काढता हवा; तेमां श्रीमद्भागवत् पुराण थकी तो पंचमस्कंध ने दशमस्कंध ए सार काढ्यो तथा स्कंदपुराणथकी वासुदेव महात्म्य ए सार काढ्यो तथा इतिहास जे महाभारत ते थकी भगवद्गीता, विदुरनीति, ने विष्णुसहस्र नाम ए सार काढ्यो तथा सर्वे धर्मशास्त्र थकी याज्ञवल्क्य स्मृति ए सार काढ्यो. एवी रीते चार सार काढीने तेनो

गुटको लखावीने पोतानी पासे नित्ये राखता हवा. ॥५॥ ५

पछी ते श्रीहरि जे ते जन्मथकी अगीयार वर्षना थया त्यारे पोतानी माता जे भक्ति तेने धर्मज्ञान ने वैराग्ये सहित एवी जे भक्ति तेनो उपदेश करीने दिव्य गतिने आपता हवा ने दुर्वासाना शाप थकी मुकावता हवा, अने ते पछी केटलाक मास गया ते केडे ते श्रीहरि जे ते पोताना पिता जे हरिप्रसादजी तेमने पोताना स्वरुपनुं यथार्थ ज्ञान आपीने दिव्य गतिने पमाडता हवा, ने दुर्वासाना शाप थकी मुकावता हवा, अने एवी रीते भक्ति धर्म जे ते दिव्य गतिने पामीने पछी दिव्य देहे करीने निरंतर ते श्रीहरिनी पासे रहेतां हवां ॥६॥ ६

ते वार पछी ते श्रीहरि जे ते पोतानां जे संबंधी तेमने पुछ्या विनाज नित्यस्नान ने मिषे करीने तीव्र वैराग्यना वेग थकी पोताना घरनो त्याग करीने पोते एकलाज उत्तर दिशाने विषे तप करवा सारु चाली निसरता हवा. ते पोते केवा छे तो बहिर्वासे सहित जे कौपीन तेने धारी रह्या छे ने मृगचर्म धार्युं छे ने पळाशनो दंड धार्यो छे; अने श्वेत एवुं जे यज्ञोपवित तेने धार्युं छे; ने कंठने विषे तुलसीनी बेवडी माळा धारी छे, ने चांदले सहित उर्ध्वपुंड्र तिलकरुं चिन्ह ते धार्युं छे, ने मस्तक उपर जटाने धारी रह्या छे, ने केड्यने विषे मुंजनी मेखळा धारी छे, ने हाथने विषे जपमाळा कमंडळु भिक्षापात्र ने जळ्गरणुं एटलां वानांने धारी रह्या छे, ने शाळग्राम ने बाळमुकुंदनो जे बटुवो तेने गळाने विषे धारी रह्या छे, ने चार सारनो जे गुटको तेने खभाने विषे धारी रह्या छे, एवा वेषने धरता थका श्रीनीलकंठ ब्रह्मचारी जे ते सरयू नदीने तरीने उत्तर दिशामां जता हवा. ते चालते चालते केटलेक दिवसे करीने हिमाळा पर्वतनी तळाटीमां जे एक महा मोटुं वन आव्युं तेने पामता हवा. पछी त्यांथी चाल्या ते केटलेक दिवसे करीने हिमाळा पर्वतने पाम्या, ने ते पर्वतने विषे चालता थका केटलेक दिवसे करीने मुक्तनाथ प्रत्ये आवीने उग्र तप कर्युं, ने ते तपे करीने सूर्यनारायणने प्रसन्न करता हवा अने त्यां केटलाक मास रहीने पछी त्यांथी दक्षिण दिशामां चाल्या ते हिमाळा पर्वतनी तळाटीमां एक महा घोर वन आव्युं तेने विषे चार मास सुधी विचरता हवा. पछी श्री नीलकंठ ब्रह्मचारी जे तेते वनने विषे वडना वृक्ष तळे बेठाने तपने करता एवा जे गोपाळयोगी तेने देखता हवा, ने ते योगी पासे रहीने अष्टांग योगने शीखता थका एक वरस सुधी रह्या, ने ते योगीने पोताना स्वरुपनुं ज्ञान आपीने सिद्ध गतिने पमाडता हवा. अने पछी त्यांथी उत्तर मुखे चाल्या एवा जे श्रीनीलकंठ ब्रह्मचारी ते जे ते आदिवाराह नामे जे तीर्थ तेने पाम्या अने त्यांथी चाल्या ते बंगाळ देशने विषे सीरपुर नामे जे शहेर तेने पामता हवा, अने ते शहेरनो राजा सिद्ध वल्लभ नामे महा धार्मीक हतो तेणे प्रार्थनाने

कर्या एवा जे श्रीनीलकंठ ब्रह्मचारी जे ते चोमासाना चार महिना सुधी त्यां रहेता हवा, अने ते शहेरने विषे काळी ने भैरव तेना उपासकने सिद्धपणानुं छे अभिमान जेने एवा जे असुर तेना मदने हरता हवा ने पोतानो सेवक जे गोपाळदास नामे साधु तेनी असुरना अभिचार थकी पोताने सामर्थ्ये करीने रक्षा करता हवा. अने वळी ते शहेरने विषे वेद शास्त्र पुराणनो भणेलो एवो तेलंग देशनो कोइक ब्राह्मण हतो तेणे ते राजा थकी हस्ति आदिकनुं महादान लीधुं तेणे करीने ते ब्राह्मण गोरवर्ण हतो पण श्यामवर्ण थइ गयो. पछी ते ब्राह्मण पोताना पापनी शांतिने अर्थे श्रीनीलकंठ ब्रह्मचारीने शरणे आव्यो, तेने पोताना सामर्थ्ये करीने ते पाप थकी मुकाव्यो त्यारे काळो मटीने प्रथमना जेवो गोरवर्ण थातो हवो. पछी त्यांथी चाल्या जे श्रीहरि ते जे ते कामाक्षी देवीने समीपे कोइक गाम हतु तेने पाम्या, ने ते गाममां महाकाळीनो उपासक एक ब्राह्मण हतो ते पोताना गाममां जे कोइ साधु तथा ब्राह्मण तीर्थवासी आवे तेने अभिचारे करीने जितीने पोताना शिष्य करे एवो अभिमानी हतो, ते ब्राह्मण आवीने श्रीहरिने उपर पोतानुं जंत्र मंत्र अभिचार संबंधी जे घणुंक सामर्थ्य तेने करतो हवो पण तेणे करीने पोते कांइ पराभव पाम्या नहि ने पोताना सामर्थ्ये करीने ते ब्राह्मणनो समग्र मद उतारीने पोतानो आश्रित करता हवा. पछी श्रीहरि जे ते त्यांथी चाल्या थका नवलखा पर्वतने पाम्या, ने ते नवलखा पर्वतने विषे नवलाख सिद्धनां स्थानक छे ने नवलाख ठेकाणे अग्निनी ज्वाळा निसरे छे तथा पाणीना कुंड छे, ते पर्वतने विषे रह्या जे सिद्ध तेमने पोतानुं दर्शन आपीने ते पर्वतथी उतर्या ते बाळवा कुंड नामे जे तीर्थ तेने पामता हवा, अने त्यांथी चाल्या जे श्रीहरि ते गंगासागरना संगमने पामीने, ने त्यां स्नान करीने पछी ते समुद्रनी ग्वाडीने वहाणमां बेसीने उतर्या ने कपिलाश्रमने पामता हवा, ने त्यां नित्ये कपिलजीनां दर्शन करता थका एक मास सुधी रह्या, अने पछी त्यांथी चाल्या ते जगन्नाथपुरी प्रत्ये गया, ने त्यां केटलाक मास निवास करीने पृथ्वीना भाररुप एवा जे घणाक असुर तेमने परस्पर वेर करावीने युद्धे करीने नाश करावी नाखता हवा. पछी श्री नीलकंठ ब्रह्मचारी जे ते त्यांथी दक्षिण दिश प्रत्ये चाल्या ते आदिकूर्म नामे जे तीर्थक्षेत्र तेने पाम्या, ने पछी त्यांथी महावनने विषे चालता थका मानसपुरने पाम्या, ने ते पुरनो सत्रधर्मा नामे राजा हतो ते पोतानो आश्रित थयो, ने ते राजा द्वारे असुरनो पराभव करावता हवा, अने त्यांथी चाल्या एवा जे श्रीनीलकंठ ब्रह्मचारी ते वेंकटाद्रिने पाम्या, ने त्यांथी शिवकांची ने विष्नुकांचीने पाम्या, ने त्यांथी श्रीरंगमां जईने बे मास सुधी रहेता हवा, ने त्यां वैश्नव संगाथे संवाद करता थका तेमने विषे रह्यो जे दुराचार तेनो पोताने प्रतापे करीने त्याग करावता हवा. पछी त्यांथी

चाल्या एवा जे श्रीहरि ते सेतुबंध नामे जे तीर्थ तेने पामीने समुद्रने विषे स्नान करीने नित्ये रामेश्वर महादेवनां दर्शन करता थका बे मास सुधी त्यां रहेता हवा, अने पछी त्यांथी चाल्या ते सुंदरराज नामे जे विष्णु तेनां दर्शन करीने त्यांथी चालता थका मार्गने विषे एक घोर वन आव्युं तेमां पांच दिवस सुधी चाल्या पण क्यांइ अन्नजळने न पाम्या, पछी छठ्ठे दिवसे मध्याह्न समे वनमां एक कूप आव्यो. तेमांथी कमंडळुए करीने जळने काढीने स्नान कर्युं, ने पछी वडना वृक्ष तळे बेसीने पोतानो नित्यविधि करता थका शाळग्रामनी सेवा करवा लाग्या त्यारे ते शाळग्रामने पात्रमां मुकीने कमंडळुनी धारे करीने स्नान कराववा मांड्युं, ते जेटलुं पाणी रेड्युं तेटलुं शाळग्राम पी गया, ते एम करतां करतां पांच सात कमंडळु रेड्यां तेने पी गया. पछी जळ पीने तृप्त थया जाणीने ते शाळग्रामने चंदनादिके करीने पूजता हवा, अने एम विचार करवा लाग्या जे साळग्रामने आटली तरस लागी त्यारे भूख पण हशे खरी पण आपणी पासे कांइ नैवेद्य धर्यानुं नथी, माटे विष्नुने शुं जमाडीए ? एम विचार करे छे तेटलामां शिवजी ने पार्वती पोठीया ऊपर बेसीने कापडीने वेषे त्यां आवीने प्रथमथीज ऊभां हतां, ते श्री नीलकंठ ब्रह्मचारीने एवी रीते शाळग्रामनी पूजा करता जोइने, तेमने साथवो ने मीठुं आपतां हवां, पछी ते साथवाने जळमां चोळीने विष्नुने नैवेद्य धरीने पोते जमता हवा, अने पछी त्यांथी चाल्या एवा जे श्रीनीलकंठ ब्रह्मचारी ते जेते भूत पुरीने पाम्या ने त्यां रहीजे रामानुज आचार्यनी प्रतिमा तेनुं दर्शन तथा पूजन करीने त्यांथी कुमारिका क्षेत्र प्रत्ये आव्या, ने त्यांथी पद्मनाभ गया, ने त्यांथी जनार्दन गया, ने त्यांथी आदिकेशव नामे जे विष्नु तेनां दर्शन करीने मल्याचळ नामे जे कुळगिरि तेने पामता हवा, अने त्यां सार्क्षीगोपाळ नामे जे विष्नु तेनां दर्शन करता थका पांच दिवस रहेता हवा, अने त्यांथी चाल्या एवा जे श्रीनीलकंठ ब्रह्मचारी ते पंढरपुर गया, ने त्यां विठ्ठलनाथ नामे जे विष्नु तेनां दर्शन करता थका बे मास सुधी रहेता हवा. पछी ते विठ्ठलनाथने भेटीने त्यांथी चाल्या ते दंडकारण्यने पाम्या, ने ते दंडकारण्यनी प्रदक्षिणा करीने नाशिकपुर प्रत्ये आव्या ने त्यां त्र्यंबकेश्वर महादेवनां दर्शन करीने तापी नदी प्रत्ये आव्या ने त्यांथी चाल्या ते नर्मदा नदीने उतरीने मही नदीने पाम्या ने महीने उतरीने तथा साभ्रमति नदीने उतरीने ने भाल देशने ओलंघीने भीमनाथ आवता हवा. अने त्यांथी चाल्या एवाजे श्रीनीलकंठ ब्रह्मचारी ते जेते गोपनाथ नामे शिवजीनां दर्शन करीने पंचतीर्थी करता करता मांगरोळ बंदरमां आवता हवा. एवी रीते तीर्थयात्राने करता एवाजे श्री हरिकृष्ण भगवान ते जे ते जेजे तीर्थमां पोते गया ते ते तीर्थने विषे रह्यो जे अधर्म तेनो उच्छेद करता हवा ने एकान्तिक धर्म-

नुं स्थापन करता हवा. अने ते तीर्थमां रहेनारा जे जन तेमने पोतानां दर्शन आपीने तथा तेमनुं अन्न जळादिक ग्रहण करीने तेमने संसारना बंधन थकी छोडावता हवा॥७॥ ७

अने पछी त्यांथी चाल्या, जे नीलकंठ ब्रह्मचारी ते जेते संवत् १८५६ अढारसो ने छपन्नना श्रावण वदि ६ छठ्यने दिवस लोजपुरमां आवता हवा. अने ते लोजपुरमां उद्धवना अवतार एवाजे श्री रामानंद स्वामी तेना शिष्य जे मुक्तानंद स्वामी आदिक साधु तेमने देखता हवा ने तेमने साधु लक्षणे युक्त एवा श्रीकृष्ण भगवानना भक्त जाणीने ते भेळा पोते रहेता हवा. अने केटलाक मास त्यां रहीने पछी त्यांथी ते साधु भेळा चाल्या ते गिरनार पर्वतनी छायामां जे पीपळाणुं गाम तेमां रह्या जे नरसिंह महेता नामे ब्राह्मण तेना घरने विषे विराजमान एवाजे श्री रामानंद स्वामी तेनां दर्शन संवत् १८५६ अढारसोने छपन्नना ज्येष्ट वदि १२ द्वादशीने दिवसे करता हवा. ते रामानंद स्वामी केवा छे तो गौर अने पुष्ट छे मूर्ति जेमनी एवा छे, ने श्वेत वस्त्र पहेर्यां छे ने नैष्ठिक ब्रह्मचारीना वेशने धरी रह्या छे, एवाजे स्वामी तेने साष्टांग नमस्कार करीने ने मळीने स्वामीनी पासे बेसता हवा. पछी ते स्वामी जेते श्री नीलकंठ ब्रह्मचारीने जोइने बहु आनंद पामता हवा ने तेमनुं जे सर्वे वृतांत तेने पुछता हवा. पछी ते श्री नीलकंठ ब्रह्मचारी जेते पोतानुं जन्मस्थान, कुळ, माता पिता, गोत्र, वेद, प्रवर, गुरु, इष्टदेव ए सर्वेने जेम छे तेम कहेता हवा तथा पोतानो जे वैराग्य तथा पोते जेम स्वजननो त्याग कर्यो तथा पोते जेम वनमां निवास करीने रह्या तथा पोते जेम नाना प्रकारे तपश्चर्या करी तथा पोते जेम अष्टांग योग साध्यो तथा पोते जेम तीर्थ यात्रा करी तथा ते तीर्थमां रहेनारा जे पाखंडी गुरु तेनो पोते जेम पराजय कर्यो ए आदिक जे सर्वे पोतानुं वृतान्त तेने अनुक्रमे करीने विस्तारे सहित कहेता हवा. त्यारे ते वार्ताने सांभळीने स्वामी जेते अतिशे प्रसन्न थया ने श्री नीलकंठ ब्रह्मचारी प्रत्ये बोल्या जे, " हे ब्रह्मचारी ! तमे तो अमारा छो केम जे तमारा पिता जे धर्म ते प्रथम प्रयागक्षेत्रने विषे अमथकीज भागवती दीक्षाने पाम्या हता. ने अमारी आज्ञाए करीने मुमुक्षु जनने धर्मे सहित श्री कृष्ण भगवाननी भक्तिनो उपदेश करता थका कोशळ देशमां रह्या हता. ते धर्मना तमे पुत्र छो ने गुणे करीने तो तमारा पिता थकी पण अधिक छो. " एवी रीतनां जे स्वामीनां वचन तेने सांभळीने श्रीनीलकंठ ब्रह्मचारी जेते अतिशे प्रसन्न थया थका ते स्वामी पासे रहेता हवा. पछी संवत् १८५७ अढारसोने सतावनना कार्तिक शुदि ११ एकादशीने दिवसे ते स्वामी थकी भागवती दीक्षानुं ग्रहण करता हवा. त्यारे ते स्वामीए सहजानंद एवुं पोतानुं नाम धार्युं तथा बीजुं नारायण मुनि एवुं नाम धार्युं. पछी पोते अतिशे प्रीतिए करीने ते स्वामीने सेवता हवा. पछी ते स्वामी जेते सर्वे साधु

गुणे संपन्न ने अति समर्थ एवा जे नारायण मुनि तेमने जोइने अने पोतानी जे धर्मधुर ते नारायण मुनिने सोंपीने पोते संवत् १८५८ अढारसोने अठावनना मागशर सुदि १३ तेरसने दिवसे देह त्याग करीने पाछा बदरिकाश्रमने विषे जाता हवा ने दुर्वासाना शाप थकी मुकाता हवा ॥८॥ ८

पछी श्री सहजानंद स्वामी जे ते पोताना गुरुनी जे देहक्रिया तेने यथाविधि करीने धर्मधुरने उपाडी लेता हवा ने श्री रामानंद स्वामीना आश्रित जे साधु ब्रह्मचारीने गृहस्थ हता तेमनी सतशास्त्रना उपदेशे करीने संभावना करता हवा. अने तेमने पोतानो अलौकिक प्रताप देखाडीने पोताने विषे तेमना चित्तने ताणी लेता हवा. तै वार पछी स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज जे ते पोताना शिष्य जे त्यागी साधु तथा ब्रह्मचारी तथा केटलाक गृहस्थ सत्संगी तेमणे विंटाणा थका सोरठ, हालार, कच्छ, झालावाड, दंढाव्य, काठीआवाड, भाल, गुजरात ए आदिक जे सर्वे देश तेमने विषे पोताना प्रतापने विस्तारता थका ने धर्म ज्ञान ने वैराग्ये युक्त जे भक्ति तेने प्रवर्तावता थका ने अधर्मनो उच्छेद करता थका ने अधर्मी एवा जे पाखंडी असुरांश गुरु तेमनो पराभव करता थका विचरता हवा. अने श्रीजीमहाराज जेते जेजे देशने विषे विचर्या तेते देशना जे जन ते श्रीजीमहाराजना अलौकिक ऐश्वर्यने जोइने घणाक आश्रित थता हवा ने श्रीजीमहाराजनुं प्रगट प्रमाण भजन करता हवा. पछी श्रीजीमहाराज जेते तेमना उत्साहने अर्थे ने तेमनी बुद्धिनी दृढताने अर्थे पोतानुं जे नाना प्रकारनुं ऐश्वर्य ते समाधिये करीने देखाडता हवा; तेमां केटलाक मनुष्यने तो गोलोकने मध्ये जे अक्षरधाम तेने विषे लक्ष्मी, राधिका ने श्रीदामादिक पार्षदे सहित श्रीकृष्णरुपे पोतानुं दर्शन देता हवा,अने केटलाकने तो वैकुंठ लोकने विषे लक्ष्मी ने नंद सुनंदादिक पार्षदे सहित विष्णुरुपे पोतानुं दर्शन देता हवा अने केटलाकने तो श्वेतद्वीपने विषे निरन्नमुक्ते सहित महापुरुषरुपे पोतानुं दर्शन देता हवा. अने केटलाकने तो अव्याकृत धामने विषे लक्ष्मी आदिक शक्तियोने पार्षदे सहित भूमापुरुषरुपे पोतानुं दर्शन देता हवा. अने केटलाकने तो बदरिकाश्रमने विषे मुनिए सहित श्रीनरनारायण रुपे पोतानुं दर्शन देता हवा, अने केटलाकने तो क्षीर समुद्रने विषे लक्ष्मीने शेषनागे सहित योगेश्वर रुपे पोतानुं दर्शन देता हवा अने केटलाकने तो सूर्यना मंडळने विषे हिरण्यमय पुरुषरुपे पोतानुं दर्शन देता हवा. अने केटलाकने तो अग्निमंडळने विषे यज्ञपुरुष रुपे पोतानुं दर्शन देता हवा. अने केटलाकने तो प्रणवनो जे नाद तेने तत्काळ संभळावता हवा. अने केटलाकने तो कोटी कोटी सूर्य सरखुं जे पोतानु तेज तेने देखाडता हवा, अने केटलाकने तो जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति थकी पर ने सच्चिदानंद छे लक्षण जेनुं ने द्रष्टा छे नाम जेनुं एवुं जे ब्रह्म

ते रुपे पोतानुं दर्शन देता हवा. अने केटलाकने तो ब्रह्मांडना आधार ने पुरुषसुक्तने विषे कह्या एवा जे विराट पुरुष ते रुपे पोतानुं दर्शन देता हवा, अने केटलाकने तो भूगोळ ने खगोळने विषे रह्यां जे देवतानां स्थानक ने ऐश्वर्य तेने देखाडता हवा, अने केटलाकने तो आधारादिक जे छो चक्र तेने विषे रह्या एवा जे गणेश आदिक देवता तेमने पृथक् पृथक् देखाडता हवा, अने क्यारेक तो सोए सो गाउने छेटे रह्या एवा जे पोताना भक्त तेमने प्रत्यक्ष प्रमाण पोतानुं दर्शन देता हवा, अने क्यारेक तो छेटे रह्या एवा जे पोताना भक्त तेमणे पोताना घरने विषे श्रीजीमहाराजनी प्रतिमाने आगळ धर्युं जे नैवेद्य तेने पोताना भक्तने विस्मय पमाडता थका जमता हवा, अने क्यारेक तो देहत्यागने करता एवा जे पोताना भक्त तेमने पोताना धाम प्रत्ये लइ जवाने इच्छता थका त्यां पोते आवीने ते भक्तना गामने विषे रह्या एवा जे बीजा भक्त अथवा अभक्त तेमने पण पोतानुं साक्षात् दर्शन देता हवा, एवी रीते मुमुक्षु अथवा मुमुक्षु नहि एवा जे जन तेमने पोताना अलौकिक ऐश्वर्यने देखाडता हवा एवा जे श्रीसहजानंदजी महाराज तेने जोइने अतिशे विस्मयने पाम्या एवा जे हजारो मनुष्य ते पोतपोताना मतनो ने गुरुनो त्याग करीने, ने श्रीजीमहाराजनो अनन्य आश्रय करीने, प्रगट प्रमाण भजन करता हवा, पछी घणाक जे मतवादी ते श्रीजीमहाज संगाथे विवाद करवा आव्या पण वादे करीने श्रीजीमहाराजने जीतवाने काजे कोइ समर्थ न थया. पछी ते सर्वे मतवादी जे ते श्रीजीमहाराजना अलौकिक एश्वर्य प्रतापने देखीने नमस्कार करीने बोल्या जे, हे महाराज ! तमे तो परमेश्वर छो माटे अमारा जे जे इष्टदेव छे तेनां दर्शन अमने कृपा करीने करावो. एवीरीते जे तेमनु प्रार्थना वचन तेने सांभळीने ते सर्वेने वेसाडीने, ने पोताना प्रतापे करीने तेमने तत्काळ समाधि करावता हवा. पछी ते सर्वे जे ते श्रीजीमहाराजने दर्शन मात्रे करीने खेंचाइ गयां छे नाडी प्राण जेमनां एवा थका पोतपोताना हृदयने विषे पोतपोताना इष्टदेव रुपे श्रीजीमहाराजने देखता हवा; तेमां जे वल्लभकुळने आश्रित एवा वैश्नव हता तथा निमानंदी हता तथा माधवी संप्रदायना हता ए त्रण तो गोपीना गणे विटाणा ने वृंदावनने विषे रह्या ने बाळलीलाए करीने मनोहर मूर्ति एवा जे श्रीकृष्ण भगवान ते रुपे देखता हवा, अने जे रामानुज संप्रदायना हता तेतो नंदसुनंदने विश्वकसेन ने गरुडादिक पार्षदे सहित लक्ष्मीनारायणरुपे देखता हवा, अने जे रामानंदी हता तेतो सीता लक्ष्मण ने हनुमाने युक्त थका दिव्य सिंहासन उपर बेठा एवा जे श्रीरामचंद्रजी ते रुपे देखता हवा, अने जे शंकराचार्यना मतवाळा हता तेतो ब्रह्मज्योतिरुपे देखता हवा, अने जे शैवी हता तेतो पार्वतीने प्रमथ गणे सहित जे शिवजी ते रुपे देखता हवा अने जे सूर्यना उपासक हता तेतो सूर्यना मंडळने विषे रह्या जे हिरण्यमय पुरुष ते रुपे देखता हवा, अने जे

गणपतिना उपासक हता तेतो गणपतिरुपे देखता हवा, अने जे देवीना उपासक हता तेतो देवी रुपे देखता हवा, अने जे जैन हता तेतो तीर्थंकर रुपे देखता हवा, अने जे यवन हता, तेतो पेगंबर रुपे देखता हवा. एवी रीते समाधिए करीने पोतपोताना इष्टदेवरुपे श्रीजीमहाराजने जोइने, ने सर्वना कारण जाणीने पोतपोताना मतनो त्याग करीने श्रीजीमहाराजनो दृढ आश्रय करता हवा. ने प्रगट प्रमाण भजन करता हवा. एवी रीते श्रीसहजानंदजी महाराज जेते पोताने प्रतापे करीने जीवनुं जे मूळ अज्ञान तेनो नाश करता थका पृथ्वीने विषे नाश पाम्यो एवो जे एकांतिक धर्म तेनुं दृढे प्रकारे स्थापन करता हवा. ॥ ९ ॥ ९

अने वळी धनाढ्य एवा जे पोताना भक्त गृहस्थ सत्संगी ते पासे घणांक अन्नसत्र करावता हवा, तथा हिंसाए रहित एवा जे विष्णुयाग, महारुद्र ने अतिरुद्रादिक यज्ञ तेने करावता हवा, अने ते यज्ञने विषे हजारो ब्राह्मणोने मिष्ट अन्ने करीने तृप्त करावता हवा. अने ते ब्राह्मणने बहु प्रकारनां दान देवरावता हवा, अने साधु, ब्राह्मण ने देवता तेमनुं जे पूजन तथा भोजने करीने तृप्ति तेने वारंवार करता हवा, तथा अधर्म ने पाखंड तेनो वारंवार उच्छेद करता हवा ॥१०॥ १०

अने वळी देश देशमां मोटां मोटां शिखरबंध मंदिर करावीने तेमने विषे नरनारायण, लक्ष्मीनारायण, ने भक्ति, धर्म ने राधाकृष्ण ए आदिक मूर्तियोनुं स्थापन करता हवा, अने ते मूर्तियो द्वारे अनंत भक्तजनने चमत्कार जणावता हवा. अने श्रीजीमहाराज पोते ज्यां ज्यां विचर्या त्यां त्यां रह्या जे पोताना भक्तजन तेमनी आगळ वर्णाश्रमनो धर्म तथा आत्मज्ञान तथा वैराग्य तथा पोताना स्वरुपनुं ज्ञान तथा पोतानी महात्म्ये सहित भक्ति एमना जे बहु प्रकारना भेद तेने विस्तारे करीने यथार्थपणे कहेता हवा. एवी रीते नित्य प्रत्ये पोताना भक्तजनने आनंद पमाडता, एवा जे श्रीजीमहाराज ते जेते श्रीगढडा नगरने विषे पोताना भक्त एवा जे अभय नामे राजा ने तेमनी पुत्रीयो ने तेमना पुत्र ए सर्वेनी भक्तिने वश थइने एमने घेर पोते निवास करीने रहेता हवा, अने त्यां रह्या थका जन्माष्टमी, रामनवमी, प्रबोधनी एकादशी, हुताशनी ने अन्नकोट ए आदिक जे उत्सवना दिवस तेने विषे भारे भारे सामग्रीओ मगावीने मोटा मोटा उत्सव करावता हवा. अने ते उत्सवने विषे परमहंस तथा ब्रह्मचारी तथा देशदेशना जे हरिभक्त सत्संगी ते श्रीजीमहाराजनां दर्शन करवाने अर्थे वारंवार आवता हवा अने नाना प्रकारनां वस्त्र आभूषण चंदन पुष्प ए आदिक जे पूजानी सामग्रीयो तेणे करीने श्रीजीमहाराजने पूजता हवा. अने ते उत्सवने विषे श्रीजीमहाराज जे ते नाना प्रकारनी भोजन सामग्रीयो करावीने हजारो साधुने तथा ब्राह्मणने घणाक प्रकारे वारंवार तृप्त करता हवा ॥११॥ ११

एवा जे श्रीसहजानंद स्वामी महाराज तेमनी मूर्तिनां जे चिन्ह ते प्रथम लिखिये छैये,× श्रीजी महाराजना बे चरणारविंदना तळामां उर्ध्व रेखा छे ते केवी छे तो अंगुठानी पासेनी जे आंगळी तेनी बेयकोरां नीकळी छे, ने पानीनी बेयकोरां निकळी छे ॥ १ ॥ अने जमणा पगना अंगुठाना थडमां उर्ध्वरेखाने मळतुं जवनुं चिन्ह छे ॥ २ ॥ ए आदिक नव *चिन्ह ते जमणा पगना तळामां छे, अने जमणा पगना अंगुठाना नखमां चिन्ह छे ॥ १० ॥ ने एज अंगुठाने बाहेरले पडखे एक तिल छे ॥ १ ॥ अने ए अंगुठानी पासेनी जे आंगळी तेनुं जे अंगुठानी कोरनुं पडखुं तेमां एक तिल छे ॥२॥ अने जमणा पगनी छेल्ली आंगळीना बाहेरना पडखामां नखनी पासे एक तिल छे ॥ ३ ॥ अने डाबा पगनी उर्ध्व रेखानी डाबी कोरे श्याम एवां बे चिन्ह पासे पासे छे ॥१२॥ अने वळी ए उर्ध्वरेखाने मळतुंज फणाना थडमां एक व्योमनुं चिन्ह छे ए आदि +सात चिन्ह ते डाबा पगना तळामां छे ॥ १९ ॥ अने बे पगनां तळां रक्त छे ने बे पगना अंगुठाने आंगळीयोना जे नख ते रक्त छे, ने उपडता छे, अने बे पगना अंगुठाने आंगळीयोनी उपर झीणा झीणा रोमनां चिन्ह छे. ॥ २९ ॥ अने बे पगना अंगुठाने तेनी पासेनी बे आंगळीयो ते उपर चाखडीना घसारानां चिन्ह छे. ॥ ३१ ॥ अने बे पगनी जे बाहेरनी घुंटियो तेथी हेठे आसनना घसारानां चिन्ह छे. ॥ ३३ ॥ अने जमणा पगनी घुंटिथी पांच तसु उंचो नळीने उपर एक नानो तिल छे. ॥ ४ ॥ अने ए पगना साथळने बहारली कोरे एक मोटुं चिन्ह छे. ॥३४॥ अने डाबा पगनी घुंटीथी पांच तसु उंचो नळीने उपर एक मोटो तिल छे॥५॥ ने तेथी उपर पासेज एक नानो तिल छे. ॥६॥ अने ए पगना ढींचणने बहारले पडखे एक चिन्ह छे. ॥३५॥ अने कटी भागने विषे बे कोरे धोतीयुं पहेर्याना घसाराना श्याम चिन्ह छे.॥३७॥ अने सदा शीतळ एवुं जे उदर ते उपर त्रिवळी पडे छे. ॥ ३८ ॥ अने उंडीने गोळ एवी जे नाभि तेने बे कोरे तिल छे; तेमां जमणी कोरे तो नाभिना कांठा उपर छे ने डाबी कोरे जरा छेटे छे. ॥८॥ अने जमणी कुखमां एक मोटो तिल छे. ॥९॥ ने बीजो नानो तिल छे. ॥ १० ॥ अने नाभिथी उपर बे तसु छेटे त्रण तिल छे; तेमां बे नळ उपर एक एक छे, ने एक वच्चे छे ॥१३॥ अने ते वचला तिलथी बे तसु उपर एक तिल छे. ॥ १४ ॥ अने डाबे पडखे कुखथी उंचे ने बगलथी हेठे मोटा चार तिलनी एक उभी हार छे. ॥ १८ ॥

× " चिन्ह " शब्दनी बांसे चिन्हनी गणत्रीना आंक छे, अने "तिल" शब्दनी बांसे तिलनी गणत्रीना आंक छे. एकंदर ५२ चिन्ह छे अने ६३ तिल छे.

* ऊर्ध्वरेखा, यव, कमळ, अंकुश, ध्वज, अष्टकोण, वज्र, स्वस्तिक, ने जंबुफळ.

+ व्योम धनुष, कळश, मत्स्य, त्रिकोण, गोपद, अर्धचंद्र.

तेनी पासे बहारली कोरे एक बीजी नाना चार तिलनी उभी हार छे ॥२२॥ अने तेज बगल नीचे त्रण तिलनी एक उभी हार छे ॥२५॥ अने हृदयने विषे रोमनुं श्रीवच्छनुं चिन्ह छे ॥३९॥ अने छातीनी वच्चे अर्धचंद्रने आकारे पांच तसु पोळुं ने जराक रातुं एवुं मोटुं एक चिन्ह छे ते जमणी कोरे कांईक विशेषे चडतुं छे ॥४०॥ अने ए चिन्हने वच्चे जराक डावी कोरे एक मोटो तिल छे ॥२६॥ अने ए तिलथी डावी कोरे बे आंगळने छेटे एक तिल छे ।।२७॥ ने तेथी डावी कोरे बे तसुने छेटे डाबा स्तनथी उपर एक तिल छे ।।२८॥ अने बे स्तनथी उपर बे छापनां चिन्ह छे ॥४२॥ अने जमणी भुजाने पासे मांहेली कोरे उभी ओळे चार तिल छे ॥३२॥ अने जमणी भुजाना मूळथी उपर त्रण तसु हेठुं एक छापनुं चिन्ह छे, ॥४३॥ ने ते छापना चिन्हनी पडखे बारली कोरे चार नाना तिल छे ॥३६॥ अने जमणी कोणीथी हेठा, ने कांडाथी उंचा बे तिल छे ।।३८।। अने जमणा हाथनी टचली आंगळीथी उपर अर्धा आंगळने छेटे एक नानो तिल छे. ।।३९॥ अने डावी भुजाना मूळथी त्रण तसु हेठुं एक छापनुं चिन्ह छे ॥ ४४ ॥ अने डावी कोणीथी बे तसु हेठो हाथने उपले भागे एक तिल छे ॥ ४० ॥ अने डाबा हाथना अंगुठा पासेनी जे आंगळी तथा वचली आंगळी ए बे आंगळीयोनी वच्चे एक तिल छे, ॥ ४१ ॥ अने ए अंगुठा पासेनी आंगळीमा नखनी पासे मांहेली कोरे एक नानो तिल छे ॥ ४२ ॥ अने डाबा हाथना पोंचा उपर एक तिल छे ॥ ४३ ॥ अने बे हाथना जे नख ते रक्त छे ने उपडता छे ने ते नखना जे अग्र भाग ते अति तीक्ष्ण छे. अने बे हाथनां जे तळां ते रक्त छे ने ते तळामां जे रेखाउं ते थोडी थोडी श्याम जणाय छे अने बे हथेळीना मूळथी उपर आठ तसु उंचां बे छापनां चिन्ह छे ।। ॥४६॥ अने बे कोणीयुं श्याम छे. अने कंठना खाडानी वच्चे एक तिल छे ।। ४४ ॥ ने ए तिलथी जराक छेटे एक नानो तिल छे ॥ ४५ ॥ अने डाढीथी हेठो एक तिल छे ॥ ४६ ॥ अने डाबा खभाथी बे आंगळ हेठो बांसामां रोमे सहित एक मोटो तिल छे ॥४७॥ ने ए तिलथी हेठे एक तिल छे ॥ ४८ ॥ ने वळी तेन हेठे बीजो तिल छे ॥४९॥ ने करोडानी जमणी कोरे डोकथी बे तसु हेठो एक तिल छे ॥ ५० ॥ अने जमणी खरपडी उपर एक नानो तिल छे ॥ ५१ ॥ अने करोडाथी जम णी कोरे बांसानी मध्ये चार तिल छे ।। ५५ ।। अने नासिकानी पासे जमणी कोरे एक मोटो तिल छे ।।५६॥ अने ए तिलथी उंचो ने आंखना खुणाथी हेठो पासेज एक नानो तिल छे ॥५७॥ अने बे नेत्रनी जे हेठलीने उपली पांपण्युं तेथी उपर ने हेठे झीणी झीणी करचलीयुं पडे छे, अने नासिका ने उपर झीणां झीणां शीळीना चाठानां चिन्ह छे ॥४७ ॥ अने मुखमां जमणी कोरे हेठली जे प्रथमनी दाढय तेमां श्याम चिन्ह छे ॥४८॥

तथा जीभ उपर पण श्याम चिन्ह छे ॥ ४९ ॥ अने डावा कानने मांहेली कोरे श्याम बिंदुनुं चिन्ह छे ॥५०॥

अने विशाळ ने उपडतुं एवुं जे ललाट तेने विषे तिलकने आकारे उभी बे रेखा छे ॥५१॥ अने वळी ललाटने विषे जमणी कोरे केशथी हेठुं एक चिन्ह छे ॥ ॥५२॥ अने जमणा काननी बुटी उपर एक नानो तिल छे ॥५८॥ अने ताळवानी उपर एक मोटो तिल छे ॥५९॥ अने शिखाथी आगळ समीपे एक तिल छे ॥ ६० ॥ अने शिखाथी पछवाडे जमणी कोरे त्रण तिल छे ॥६३॥ अने ए विना बीजा पण झीणा झीणा तिल शरीरमां केटलाक छे. आवी रीते श्रीजिमहाराजनी मूर्तिनां जे चिन्ह ते पोतानी स्मृतिने अनुसारे लख्यां छे, अने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनां जे करचरण आदिक सर्वे अंग ते सामुद्रिक शास्त्रमां जेवां कह्यां छे तेवां छे ॥१२॥ १२

हवे श्रीजीमहाराजनी जे स्वाभाविक चेष्टा ते लखीये छैए. जे श्रीजीमहाराज सहेजे बेठा होय त्यारे तुलसीनी माळाने फेरवे छे, अने क्यारेक तो रमत्यनी पेठे ते माळाने बेवडी करीने बे बे मणका भेळा फेरवे छे, अने क्यारेक तो वार्ता करता थका ते माळाने भेळी करीने बे हाथना ताळा वच्चे राखीने घसे छे, अने क्यारेक तो नेत्रकमळने मिंचिने ध्यान करता थका बेसे छे, अने क्यारेक तो नेत्र कमळने उघाडां राखीने ध्यान करता थका बेसे छे, अने क्यारेक तो ध्यान करता थका चमकीने जागे छे, अने क्यारेक तो पोतानी आगळ साधु वार्जींत्र वजाडीने कीर्तन गाता होय, त्यारे पोते ध्यान करीने बेसे छे, ने क्यारेक तो चपटी वजाडता थका ते साधु भेळा गावा लागे छे, अने क्यारेक तो साधु ताळी वजाडीने कीर्तन गाता होय ते भेळा पोते ताळी वजाडीने कीर्तन गाय छे, अने क्यारेक तो पोतानी आगळ वार्जींत्र वजाडीने साधु कीर्तन गाता होय तथा पोतानी आगळ कथा वंचाती होय तथा पोते पोताना भक्तजननी आगळ वार्ता करता होय त्यारे खसीने तेने समीपे जाय छे, अने क्यारेक तो पोताना भक्तजननी सभामां बेठा थका धर्म, ज्ञान, वैराग्ये युक्त जे भक्ति ते संबंधी जे वार्ता ते पोताना भक्तजननी आगळ करे छे, अने क्यारेक तो सांख्य योग, पंचरात्र, वेदान्त इत्यादिक जे शास्त्र तेना रहस्यनी वार्ता करे छे, अने क्यारेक तो उत्सवने विषे नाना प्रकारना देशथी आव्या जे पोताना भक्तजन तेमनी पूजानुं ग्रहण करे छे, अने क्यारेक तो पोताना भक्तजनने समाधि करावे छे, ने क्यारेक तो समाधिमांथी उठाडे छे, अने क्यारेक तो सभामां बेठा होय ने कोइक भक्तजनने पोतानी पासे तेडवो होय; त्यारे नेत्रकमळनी सानें करीने, अथवा अंगुठा पासेनी जे आंगळी तेनी साने करीने ते भक्तजनने बोलावी ले छे, अने क्यारेक तो वार्ता करता थका पुष्पना गुच्छने अथवा

कोइक मोटा पुष्पने बे हाथे करीने चोळी नाखे छे. अने क्यारेक तो पुष्पना हारने तथा लींबु आदिक जे फळ तेने शीतळ जाणीने पोतानी आंखे वारंवार अडाडे छे, अने क्यारेक तो पोते राजीपामां वार्ता करता होय अथवा कथा वंचावता होय अथवा कीर्तन गवरावता होय, अथवा कोइक विचारमां बेठा होय, ने ते वचमां कोइक जम्यानुं पुछवा आवे अथवा कोइक पूजा करवा आवे अथवा हार चढाववा आवे तो ते उपर बहु कच-वाइ जाय छे. अने कथा वंचावता होय त्यारे हरे एवा शब्दनो उच्चार करे छे. अने बीजी जे जे क्रिया करता होय तेने विषे पण ते कथाने भाने करीने क्यारेक तो अचानक हरे एवा शब्दनो उच्चार करे छे, ने तेनी स्मृति थाय छे त्यारे पोता पासे जे भक्तजन बेठा होय तेमनी सामुं जोइने मंद मंद हसे छे. अने क्यारेक तो ढोलिया उपर बेसे छे, ने क्यारेक तो गोदडुं ओछाडे सहित पाथर्यु होय ते उपर बेसे छे, ने क्यारेक तो गादी उपर बेसे छे. अने क्यारेक तो चाकळा उपर बेसे छे, अने क्यारेक तो ढोलिया उपर तकियो पड्यो होय ते उपर बेसे छे, अने बेसे त्यारे क्यारेक तो पलांठी वाळीने बेसे छे अने क्यारेक तो वस्त्रे करीने ढींचणने बांधीने बेसता थका पोताने हस्ते करीने पगनी आंगळीयो ने ग्रहण करीने ढोले छे अने ज्यारे ज्यारे बेसे त्यारे बहुधा तो तकियानुं उठींगण करीने ज बेसे छे अने जीभने एक कोरना दांत तळे दबाववी एवो सहज स्वभाव छे, अने छींक खावी होय त्यारे प्रथमथी रुमालने खोळीने ते रुमालने मुखारविंद आगळ राखीने छींक खाय छे, अने कांइक रमुजे करीने अतिशे हसे छे त्यारे रुमालने मुखारविंद आडो दइने हसे छे. अने क्यारेकतो वार्ता करता थका, हाथे करीने रुमालना छेडाने वळ देवो एवो सहज स्वभाव छे, अने कोइकने दुखीयो देखीने तेनी उपर दयाये करीने बहु आकळा थइ जाय छे. अने चाले छे त्यारे पछेडीने डाबा खभा उपर आडसोडे नाखीने, जमणा हाथने हलावता थका चाले छे, अने क्यारेकतो रुमाले युक्त जे जमणो हाथ तेने हलावता थका चाले छे, अने क्यारेक तो डाबा हाथने केड उपर मुकीने जमणा हाथमां रुमालने लेइने, ते जमणा हाथने हलावता, हलावता चाले छे, अने सहेजे उतावळुं चालवानो स्वभाव छे, अने साधुने पीरसवुं होय त्यारे डाबे खभे खेसने नाखीने ते खेसना छेडाने केड्य संघाथे ताणी बांधीने पीरसे छे, अने पीरसे त्यारे लाडु, जलेबी आदिक जे जम्यानी जणसो तेनुं वारंवार नाम लेता थका पंक्तिमां वारंवार फरे छे, ने साधु हरिभक्तने जमाडवामां तथा पीरसवामां पोताने श्रद्धा आदर सहित प्रस-न्नता ते घणी छे. अने पाछली चार घडी अथवा त्रण घडी रात्रि रहे त्यारे दातण कर-वानो स्वभाव छे, अने स्नान करीने पछी कोरे वस्त्रे करीने शरीरने लुइने, पछी उभा थइने पहेर्यांना वस्त्रने बे साथळ वच्चे भेळुं करीने तेने बे हाथे करीने नीचोवीने, पछी साथ-ळने, ने पगने लुइने, साथळ वच्चे राखीने पछी कोरुं वस्त्र सारी पेठे ताणीने पहेरे छे अने

ते पछी बीजुं धोएलुं वस्त्र ओढीने, ने चाखडी उपर चडीने, जमवा पधारे छे, ने जमवा बेसे त्यारे ओढवाना वस्त्रने कानने पछवाडे राखीने कानने उघाडा राखीने जमवा बेसे छे. अने जमवा बेसे त्यारे डावा पगनी पलांठी वाळीने, ने ते उपर डावा हाथनी हथेळी मुकीने, जमणो पग उभो राखीने, ते उपर जमणा हाथनी कोणी राखीने जमे छे अने जमतां जमतां वारंवार पाणी पीवानो स्वभाव छे अने जमतां जमतां जे सारी स्वादु जणस पोताने जणाय ते बीजा कोइक श्रेष्ट हरिभक्त पोताने मनगमता होय तेने आपीने पछी पोते जमे छे, अने जमता थका ओडकार खाइने पेट उपर हाथ फेरववानो स्वभाव छे, अने माथे फेंटो बांधे छे त्यारे फेंटाना छेडानुं छोगलुं मुकीने बांधे छे तथा फेंटाना एक आंटानो पेच भ्रकुटीनी पांपण उपर लावीने बांधे छे, अने वर्षा ऋतु तथा शरदऋतुने विषे घेला नदीनुं निर्मळ जळ जाणीने साधु तथा सत्संगी सहित नावा पधारे छे ने ते नदीना जळने वखाणता थका त्यां बहु प्रकारे भक्तजन भेळा जळक्रीडा करे छे, अने सुवे त्यारे प्रथम जागता थका हाथनी जे बे आंगळीयो तेने तिलक करवानी पेठे भालने विषे उभी फेरवे छे अने सुवानुं होय त्यारे पोतानी माळाने मागीने जमणा हाथमां लेइने फेरवता थका सुवे छे, आवी रीते श्रीजीमहाराजनी जे स्वभाविक चेष्टा ते पोतानी स्मृतिने अनुसारे लखी छे ने बीजी पण केटलीक चेष्टा छे, अने प्रथम लख्यां जे श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनां चिन्ह तथा स्वाभाविक चेष्टा तेने आवी रीते संभारीने नीत्ये भक्तजने ध्यान करवुं. एवा जे श्रीजीमहाराज तेमणे श्री गढडामां रह्या थकां पोताना भक्तजनना संशय टाळवाने अर्थे स्वधर्म, आत्मज्ञान, वैराग्य, पोताना स्वरुपनु ज्ञान, ने पोतानी महात्म्ये सहित भक्ति ए पांच वार्ता संबंधि जे जे वचनामृत कह्यां छे तथा श्री अमदावादने विषे रह्या थकां जे जे वचनामृत कह्यां छे तथा श्री वरतालने विषे रहीने कह्यां छे तथा त्यांथी बीजा गाममां जइने जे जे वचनामृत कह्यां छे तेमांथी केटलाक दिवसनां जे वचनामृत ते श्रीजीमहा-राजना जे एकांतिक भक्त तेमनी प्रसन्नताने अर्थे पोतानी स्मृति ने बुद्धि तेने अनुसारे लिखीए छैए. (१३) १३

॥ अथ रहस्यार्थ प्रदीपिका टीका प्रारभ्यते ॥



आ परथारामां वाचनो तेर छे, तेमांपहेलीमां श्रीजीमहाराजे पोताना अक्षरधामनो नाम तथा तेनुं अपारपणुं वर्णन कर्युं छे. (१) बीजीमां पोतानां नाम तथा पोतानो महिमा तथा शोभानुं अतिशय-पणुं वर्णनकर्युं छे. (२) त्रीजीमां दुर्वासानो शाप वर्णन कर्यो छे. (३) चोथीमां धर्म भक्तिनो प्रादुर्भाव वर्णन कर्यो छे. (४) पांचमीमां श्रीजीमहाराजनो प्रादुर्भाव तथा नामकरण तथा ऐश्वर्य तथा अध्ययन कर्युं ते वर्णन कर्युं छे. (५) छट्ठीमां पोतानां माता पिता जे भक्ति धर्म तेमने दिव्यगति आपी, ते वर्णन कर्युं छे. (६) सातमीमां पोते वनमां तथा तीर्थोमां विचरीने, तीर्थोने सजीवन कर्यां, अने असुरोनो नाश कर्यो अने अधर्मनो उच्छेद करीने, एकांतिक धर्म स्थापन कर्यो, ते वर्णन कर्युं छे. (७) आठमीमां रामानंद स्वामीने मळ्या ने ते थकी दीक्षा लीधी ने रामानंद स्वामी पोतानी धर्मधुर सोंपीने अंतर्धान थया, ते वर्णन कर्युं छे. (८) नवमीमां सर्वने समाधियो करावीने पोतानो अलौकिक प्रताप जणावीने पोताना आश्रित कर्या. तथा मतवा-दीयोने समाधि करावीने तेमना इष्टदेव रूपे पोते दर्शन आपीने तेमने पोताना आश्रित कर्या. ने जीवोनुं मूळ अज्ञान टाळीने, आत्यंतिक मोक्ष कर्यो, ते वर्णन कर्युं छे. (९) दश-मीमां पोते अन्नसत्र तथा मोटा मोटा यज्ञ कर्या, ते वर्णन कर्युं छे. (१०) अगीयारमीमां मोटां मोटां शिखरबंध मंदिरो करावी, तेमां पोतानी मूर्तियो पधरावीने, ते ते मूर्तियो द्वारे चमत्कार जणाव्या; ने उत्सव समैया कर्या तथा साधु ब्राह्मणने तृप्त कर्या. ते वर्णन कर्युं छे. (११) बारमीमां श्रीजीमहाराजनां चिन्ह वर्णन कर्यां छे. (१२) तेरमीमां श्रीजीमहाराजनी स्वाभाविक चेष्टा वर्णन करी छे. (१३)

१ प्र०. पहेली वाचनमां गोलोकना मध्यने विषे अक्षरधाम कह्युं. अने (अ० ६ ना बीजा प्रश्नमां) अक्षरधामनेज गोलोक कह्युं छे, तथा *(प्र० ७/१ मां) अक्षर ब्रह्मथी गोलोकधामने पर कह्युं छे, अने (लो० १७ ना ५/७ पांचमा प्रश्नमां तथा पं० १/१ मां) तथा (अ० ७/१ मां) अक्षरथी गोलोकने नीचुं तथा जुदुं कह्युं छे, ते परस्पर विरोध आव्यो ते केवी रीते समजवुं ?

१ उत्तर. आमां "गो" शब्द किरण वाचक छे, ने "लोक" शब्द समूह वाचक छे, माटे "गो" जे किरण तेनो समूह तेने गोलोक कह्युं छे. अने ए जे किरणो ते श्रीजी-महाराजनी मूर्तिना प्रकाश रूप जे अक्षरधाम तेनी छे माटे गोलोकने मध्ये एटले किरणोना मध्ये अक्षरधाम कह्युं छे. अने (अ० ६ मां) ए अक्षरधामनुं, अने ए धामनी किरणोनुं अभेदपणुं कह्युं छे, माटे गोलोक शब्दे करीने अक्षरधामने कह्युं छे. अने (प्र० ७ मां) मूळअक्षरने अक्षर ब्रह्म कह्या छे, ते अक्षरब्रह्मने विषे श्रीजीमहाराज किरणो द्वारे व्यापक छे. ते अक्षरधामनी

*वचनामृतना अंक नीचे अथवा प्रश्नना अंक नीचे जे अंक होय ते वाचननो जाणवो.

किरणोरुपी गोलोकथी ब्रह्मज्योति, जे श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनो प्रकाश तेने पर कह्यो छे, माटे धाम ते साक्षात् श्रीस्वामिनारायण भगवाननी मूर्तिनो प्रकाश छे. ते प्रकाशरूप धाममां श्रीजीमहाराज पोताना मुक्तोए सहित सदा दिव्य तेजोमय साकार मूर्ति थका विराजमान छे. अने (लो० १७ मां तथा पं० १ मां तथा अ० ७ मां) परोक्ष श्रीकृष्ण भगवानना धामने गोलोक कह्युं छे, तेथी अक्षरधाम पर छे.

२ प्र० श्रीजीमहाराजना प्रकाशने अक्षरधाम कहो छो ते किया वचनामृतमां कह्युं छे?

२ उ० (पं० १/२ मां)श्रीजीमहाराजनी मूर्तिना प्रकाशने अक्षरधाम कह्युं छे. ते हरिवाक्य सुधासिंधुमा १२७ मा तरंगमां कह्युं छे त्यां श्लोकः—सच्चिदानंदरूपं यद्ब्रह्म निर्गुणमक्षरम् ॥ अंगप्रकाश स्तत्स्वस्य धामचे[illegible]त्कमस्तिहि ॥११॥

सत् चिद् ने आनंदमय एवुं ने मोटुं ने निर्गुण एवुं जे अक्षर ते तो आ प्रत्यक्ष भगवानना अंगनो प्रकाश छे, अथवा ए अक्षरने धाम शब्दथी कहेल छे तथा ६६ मा तरंगमां पण पोताना तेजने पोतानुं धाम कह्युं छे. त्यां श्लोकः—

माया गुणैर्विहीनत्वान्निर्गुणः परमेश्वरः । निजधामस्थ एवाऽसौ सर्वत्र व्यापकोऽस्ति च ॥ १० ॥ मूर्तः सूर्यः स्वतेजोभिर्जगद्व्याप्याऽस्तितत्पृथक् । यथा तथा सोऽपि मूर्तः कान्त्या व्याप्यास्ति तत्पृथक् ॥ ११ ॥ प्राकृतं नास्ति तद्रूपं यतोऽसौ दिव्यविग्रहः । अतोऽरूप इति प्रोक्तो निराकारश्च कुत्रचित् ॥ १२ ॥ कोटि कोट्यर्कवत्स्वाङ्ग तेजो व्याप्त तया सच । ज्योतिरूप इति प्रोक्तो दुर्लक्ष्यांगत्वतस्तथा ॥ १३ ॥ निराधारं न तेजःस्या दितिसर्वत्र दृश्यते । तदङ्ग कान्ति तेजोऽतो यद्ब्रह्मेत्युच्यतेऽक्षरम् ॥ १४ ॥

मायाना गुणोए रहित, ते हेतु माटे निर्गुण एवा, ने पोताना धामने विषे रहेला एवा, आ परमेश्वर ते जे ते सर्वने विषे व्यापक छे. १० ने पोताना तेज वडे करीने मूर्तिमान सूर्य जे ते जगतने विषे जे प्रकारे व्यापक छे, ने तेथी पृथक मूर्तिमान रह्या छे तेज प्रकारे आ प्रत्यक्ष मूर्तिमान भगवान, जे ते कान्ति एटले तेज वडे करीने व्यापीने रह्या छे, ने तेथी पृथक् मूर्तिमान पण रह्या छे. ११ ते भगवाननुं स्वरूप प्राकृत नथी, जे हेतु माटे दिव्य छे देह जेमनो, एटले दिव्य मूर्तिमान एवा आ प्रत्यक्ष भगवान छे, एज हेतु माटे कोइक स्थानकने विषे अरूप, ए प्रकारे कह्या छे अने कोइक स्थानकने विषे निराकार पण कह्या छे पण विशेषणोए करीने मूर्तिमानज कह्या छे. १२ कोटान कोटी सूर्य तुल्य एवुं पोतानी मूर्तिनुं तेज तेनुं जे व्यापवापणुं तेणे करीने तथा ध्यानना करनाराने घणाक प्रयासे करीने जणावापणुं ए हेतु माटे भगवान जे ते ज्योतिरूप कहेला छे. पण वस्तुगते भगवान मूर्तिमानज छे. १३ तेज जे ते निराधार नथी रहेतुं, ए प्रकारे सर्वत्र सूर्यादिकने विषे देखाय छे. ए हेतु माटे ते भगवाननुं अंग, जे मूर्ति, तेनी कान्ति, जे प्रकाश ते जे ते अक्षरब्रह्म, कहेलां, अक्षरधाम ए नामे कहेवाय छे. १४ आ तेजने (प्र० ४५ मां) सच्चिदा-

नंद नामे कह्युं छे. तथा (१/६ ४ मां)आत्मानामे कह्युं छे. तथा (म० १/२ ३ मां) आत्मा, ब्रह्म, तथा अक्षरधाम ए त्रण नामे कह्युं छे. तथा (१/३ ० मां) एक रस परिपूर्ण ब्रह्मस्वरूप तथा अक्षरब्रह्म ए बे नामे कह्युं छे, माटे धाम ते श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनो प्रकाश छे.

३ प्र० आ अक्षरधामनां ब्रह्मपुरादिक छ विशेषण आप्यां तेनो अर्थ शो समजवो ?

३ उ० ब्रह्म एवुं श्रीजीमहाराजनुं नाम छे, माटे ब्रह्म जे श्रीजीमहाराज तेमने रहेवानुं धाम छे तेथी ब्रह्मपुर कह्युं छे. १ अने अतिशय अविनाशी सुखनुं स्थान छे, माटे अमृतधाम कह्युं छे. २ अने अतिशय श्रेष्ठमां श्रेष्ठ पद छे, माटे परमपद कह्युं छे. ३ अने एनो अंत ने पार नथी माटे अनंत ने अपार कह्युं छे. ४ अने सर्व धामोथी मोटुं छे, माटे ब्रह्म कह्युं छे. ५ अने मूळपुरुष तथा ब्रह्म तथा अक्षर ए सर्वेना प्रकाश ते चैतन्य छे, ते सर्वेनो आधार एवो जे श्रीजीमहाराजनो प्रकाश ते अतिशे चैतन्यरूप छे, माटे चिदाकाश कहेल छे. (६)

४ प्र० श्रीजीमहाराजने ब्रह्म नामे कहो छो ते क्यिा वचनामृतमां छे ?

४ उ० आ परथारानी बीजी बाबतमां तथा (ब० १३ ना बीजा प्रश्नमां) श्रीजीमहाराजने ब्रह्मनामे कह्या छे.

५ प्र० बीजी बाबतमां श्रीजीमहाराजनां श्रीकृष्णादिक १० नाम कह्यां तेनो अर्थ शो समजवो ?

५ उ० पोताना आश्रितोने पोताने विषे आकर्षण करे छे, तथा चैत्र मासमां जन्म छे अने मार्कंडेय मुनिए कृष्ण एवुं नाम धारण कर्युं, माटे कृष्ण एवुं नाम छे, अने मुक्तकोटी, अक्षरकोटी, ब्रह्मकोटीने मूळपुरुष ईश्वरकोटी, ते सर्वेने शोभा आपवापणुं, ते श्रीजीमहाराजने विषे रह्युं छे, माटे "श्री" जे शोभा तेणे युक्त माटे श्रीकृष्ण एवुं नाम श्रीजीमहाराजनुं छे. १ अने पुरुष जे पोताना मुक्तो तेमने विषे उत्तम माटे पुरुषोत्तम कह्या छे. २ अनेअक्षरादिक सर्वेने विषे अन्वयपणे अंतर्यामी रूपे वास करीने रह्या छे, माटे वासुदेव कह्या छे. ३ अने नार जे पोताना मुक्तोनो समूह तेना मध्ये अयन एटले निवास करीने रह्या छे, माटे नारायण कह्या छे. ४ अने पोतानुं तेज जे अक्षरधाम ते क्षर अक्षरादिक सर्वेनुं आत्मा छे, ते पोताना तेजरूप आत्माथी पर छे ने तेना पण शरीरी छे, माटे परमात्मा कह्या छे. ५ अने क्षर अक्षरादिक सर्वेथी पोताना तेजरूप जे अक्षरधाम ते मूर्तिमान अक्षरादिक सर्वेथी मोटुं छे, तेने ब्रह्म कहे छे. ते ब्रह्मना पण आधार ने तेथी पण मोटाई अधिक छे, माटे ब्रह्म कह्या छे. ६ अने ए तेजरूप अक्षरधामना पण नियंता छे, ने तेथी पर छे, माटे परब्रह्म कह्या छे. ७ अने जीवकोटी, मायाकोटी, ईश्वरकोटी, तेथी पर ब्रह्मकोटी, तेथी पर मूर्तिमान मूळअक्षरकोटी, अने तेथी पर मुक्तकोटी, ते सर्वेना नियामक छे, माटे ईश्वर कह्या छे. ८. अने मूळपुरुष रूप जे ईश्वरकोटी जेना तेजने वेदान्ती ब्रह्मनामे कहे छे, ने जे ब्रह्म शुद्ध सत्त्वगुण ग्रहण करे छे, ते ईश्वर कहेवाय एम कहे छे, तथा जे ब्रह्म मलीन सत्त्वगुण ग्रहण करे ते जीव कहेवाय एम कहे छे. तथा आकृतिमात्र जेमांथी उत्पन्न थाय छे तेवा विशेषणोथी जे ब्रह्मने प्रतिपादन करे छे, ते तेजना कारण ने आधार जे मूळपुरुष रूप ब्रह्म, जेने आमां ईश्वरकोटी नामे कह्या छे, ते ईश्वरकोटी, ब्रह्मकोटी, अक्षरकोटी, ते सर्वेने पोते ऐश्वर्य आप्युं छे, तेथी ईश्वर कहेवाय छे. ने सर्वेथी पर ने तेमना कारण ने प्रेरक ने सर्वेथी मोटा छे. माटे परमेश्वर कह्या छे. ९. अने ए सर्वेने विषे व्यापे छे,माटे विष्णु कह्याछे. १०

६ प्र० श्रीजीमहाराजने श्रीकृष्ण, पुरुषोत्तम, वासुदेव, नारायण, परमात्मा, ब्रह्म, परब्रह्म, ईश्वर, परमेश्वर अने विष्णु एवे नामे किया किया वचनामृतमां कह्या छे ?

६ उ० परथारानी २, ४, ८, ९, बाबतमां तथा:—

	प्रथम प्रकरणनां								लोयानां			पं		मध्य प्रकरणनां		
वच०	५	७	८	९	१२	१३	२१	७८	१	४	७	२	६	१९	२९	३०
प्रश्न०	१	१	१	१	२	१	१	२५	८	२	२	१	१	१	१	१
वा०	१	१	१	१	२	१	८	२५	८	२	६	१	२	२	१	१

	मध्य प्रकरणनां						वरतालनां			अम्दा०	छेल्ला प्रकरणनां			
वच०	३५	३८	३९	४०	६४	६५	१	२	१३	१	५	२०	२१	३१
प्रश्न०	१	१	१	१	२	१	१	१	२	१	३	२	१	१
वा०	१	२	१	१	२,३	१	१	२	२	१	३,४	२	७	१

आमां महाराजने श्रीकृष्ण, श्रीकृष्ण भगवान तथा श्रीकृष्ण पुरुषोत्तमनामे कह्या छे. (१) अने परथारानी २ अने पांचमी बाबतमां तथा:—

	प्रथम प्रकरणनां							सा०	का०	लोयानां				
वच०	८	१२	२१	४१	५१	६४	७१	१	८	७	१२	१४	१५	१८
प्रश्न०	२	२	१	१	१	१	३	१	१	२	१	१	५	१
वा०	४	२	८	१	१	१	३	१	१	४	१	१	५	२

	पं०	मध्य प्रकरणनां						अमदावादनां				अम्दा०	जे०		छेल्लानां	
वच०	७	८	१३	२१	३१	३२	४२	४	५	६	७	१	४	५	२७	३७
प्रश्न०	१	२	१	४	१,२	१	१	१	१,२	२	१	१	१	१	१	१
वा०	१	२	२,३	८	१,५	२	१,२	२	१,२	३	१	१	१	१	१	१

आमां श्रीजीमहाराजने पुरुषोत्तम नामे कह्या छे. तथा:---

	प्रथम	का०	लोयानां				पं०	मध्यनां		अक्षा०
वच०	२१	१२	२	११	१२	१३	७	३	४२	१
प्रश्न०	१	३	२	२	१	२	१	१	१	२
बा०	७,८	३	२	२	१	२	२	२	१	२

आमां श्रीजीमहाराजने पुरुषोत्तम नारायण नामे कह्या छे. तथा:---

	प्रथम प्रकरणनां																सारंगपुर		
वच०	७	२०	२४	३१	३२	३३	४१	४५	५१	६३	६४	६६	७१	७२	७३	७८	४	५	१२
प्रश्न०	१	२	२	२	४	१	१	१	१	३,४	१	१	५	२	५	१६,२५	१	२	२
बा०	२	२	५	३	३	१	१	१	१	३,४५	१,२	२	५	३	६	१६,२५	१	३	३

	कारीयाणी		लोयानां		मध्य प्रकरणनां							व०	जे०	छेल्लानां	
वच०	७	८	१	१४	९	१०	१३	१७	१९	४२	५०	१२	१	२६	३१
प्रश्न०	४	१	८	१	१	१,२	१	२	१	१	१	१	१	१	१
बा०	४	१,२	८	२	२	१,२	२	२	२	१,२	१	१	१	१	१

आमां श्रीजीमहाराजने पुरुषोत्तम भगवान नामे कह्या छे (२) अने

	का.	मध्य प्रकरणनां					व०	अक्षा०	छेल्ला०
वच०	७	१०	३१	३२	४८	५७	५	१	३३
प्रश्न०	४	१	१,२	१	१	१	१	१	२
बा०	४	१	१,३,४,५	२	७	१	१	१	३,६

आमां श्रीजीमहाराजने वासुदेव नामे कह्या छे. (३)

अने परथारानी ४, ५, ८ मी बाबतमां तथा:----

	लोयानां			मध्यनां०		अक्षा०
वच०	१०	१३	१४	१९	५७	१
प्रश्न०	६	१,२	१	१	१	१
बा०	८	१,२	२	२	१	१

आमां श्रीजीमहाराजने नारायण नामे कह्या छे (४)

	प्रथमनां		सा.	लो.	मध्यनां			अ०	जे०
वच०	८	७२	१	१०	३६	५७	६२	१	३
प्रश्न०	२	४	२	६	१	१	३	१	२
बा०	४	६	२	८	१	१	३	१	४

आमां श्रीजीमहाराजने परमात्मा नामे कह्या छे (५)

(प्र० ३९ अने ४२ नी बा० १) | ५० | वर० १३ प्रश्न २ | अ० ४ नी बा०१ |
एमां ब्रह्म नामे कह्या छे (६)

	प्रथमनां			सा.	लोयानां		मध्य प्रकरणनां.						अ०	अक्षा०
वच०	८	७१	७३	१२	७	१०	३	८	१३	३०	६२	६५	६	१
प्रश्न०	२	३	५	२	२	६	१	२	१	१	३	१	२	१
बा०	४	३	९	३	४	८	२	२,३	२	१	३	१	३	१

आमां परब्रह्म नामे कह्या छे. (७)

अने (का० तथा छे० १० प्रश्न १ मां) इश्वर नामे कह्या छे. (८)
अने परथारानी नवमी बाबत तथा:—

	प्रथम प्रकरणनां.																
वच०	२	८	१८	२७	३०	३१	३३	३४	३५	३६	३७	३९	४५	४७	४८	४९	५३
प्रश्न०	१	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१,२	१	१	१
बा०	१	४	१	१	१	१,२	१	१,२,३	१	१	४	१	१	१,२	२	१	१

	प्रथम प्रकरणनां.											सारंगपुरनां							
वच०	५४	५५	५६	५८	६३	६५	६७	७०	७३	७४	७८	१	२	४	५	९	१०	११	१३
प्रश्न०	२	१	३	४	५	४	१	१,४	६	२	१	२	२	१	३	३	१	१	१
बा०	२	२	४	५	६	४	१	१,४	११	६	१	२	३	३	४	४	१	२	१

	का.	लोयानां				पं०	मध्य प्रकरणनां								
वच०	६	२	१०	१२	१७	५	७	९	१०	१२	१६	१९	२१	२६	२७
प्रश्न०	४	१	६,८	१	५	१	१	१	१,२,३	१	२	१	२, ४	१	३
बा०	६	१	८,१०	१	७	१	२	५	१,२,३	२	२	२	४,५ ८	१	४

	मध्य प्रकरणनां								वरतालनां						
वच०	३४	३६	३७	४१	५३	५७	६२	६५	२	५	६	८	११	१२	१७
प्रश्न०	६	१	१	१	१	१	३	१	१	१	१	१	४	१	२
बा०	२	१	१	१	२	२,४	३	३	२	१	१,२	१	५	१,२	२

	अमदावादनां			छेला प्रकरणनां								
वच०	१	२	३	१	२	४	७	९	१०	१४	१८	२२
प्रश्न०	१,२	१	१	१	१	२	१	१	१	१,१०,११	४	२
बा०	१,२	१	१	१	१,२	२	३	१	१	१,११,१२	४	४

आमां श्रीजीमहाराजने परमेश्वरनामे कह्या छे (९). अने परथारानी बीजी बाबतमां विष्णु नामे कह्या छे. (१०).

७ प्र० मकराकार कुंडळ तथा रत्नेजडीत मुगट तेने भगवान धरी रह्या छे एम कह्युं, ते रत्न तो मायिक वस्तु छे, ते अक्षरधाममां तो होय नहि माटे ते केवी रीते समजवुं ?

७ उ० ज्यां श्रीजीमहाराज मनुष्यरूपे विराजमान होय ते अक्षरधाम जाणवुं.ते(म० ४/२ मां)-"ज्यां अमारी मूर्ति त्यां अक्षरधामनुं मध्य छे," एम कह्युं छे. माटे अहींनी ने त्यांनी एकता करीने कह्युं छे. अने चंदनवेणु ते पण अहींनांज वर्णन कर्यां छे, केमजे ज्यां धामाधिपति विराजता होय त्यांज धाम कहेवाय.

८ प्र० राधिका, लक्ष्मी, मूर्तिमान आयुध, नंदसुनंद, श्रीदामादिक पार्षद, तथा अणिमादिक सिद्धियो तेमणे सेव्या छे, अने चार वेद तेमणे स्तुतिने कर्या छे एम कह्युं, ते सर्वे अक्षरधाममां श्रीजीमहाराजनी सेवामां हशे के केम ? अने वेद स्तुति करता हशे के केम ?

८ उ० ज्यारे श्रीजीमहाराज दया करीने सर्वेनो मोक्ष करवा मनुष्यरूपे दर्शन आपे छे, त्यारे पोताना अवतारो तथा ते अवतारोना पार्षदो ए सर्वे पोताना कल्याणने अर्थे अहीं आवे छे, ते सर्वे श्रीजीमहाराजनी सेवा करे छे, ते (म० ५८ ना पहेला प्रश्नोत्तरमां) चोथा हेतुमां कह्युं छे, अने वेद पण तेवीज रीते स्तुति करे छे.

९ प्र० वासुदेवादिक चतुर्व्यूह तथा केशवादिक तथा वाराहादिक अवतार ए सर्वेना धरनारा श्रीजीमहाराजने कह्या. तथा नरनारायणरूपे अने श्रीकृष्णने अर्जुनरूपे प्रगट थया एम कह्युं, ते श्रीजीमहाराज तो सर्वोपरि छे ने ते ते रूपे कह्या ते केम समजवुं ?

९ उ० सर्वे अवतारोने विषे श्रीजीमहाराजनो आविर्भाव छे; माटे ए अवतारो पोतानाज छे, तेथी पोते प्रगट थया एम कह्युं छे. ते (प्र० २७/१ मां)"आगळ थइ गयां ने हमणां थाय छे, ने आगळ थाशे ते सर्वे आश्चर्य अमारां जाणवां." एटले ए सर्वे अवतारोमां श्रीजीमहाराजनी सत्ता छे; माटे सर्वे अवतारना धरनारा कह्या छे. अने आज वर्तमानकाळे तो स्वयं पोतेज पधार्या छे.

१० प्र० त्रीजी बाबतमां बदरिकाश्रममां नरनारायण अने ऋषिओ रह्या छे. तेमने शाप थयो, ने तेज पृथ्वी उपर प्रगट थया एम (५) बा०मां कह्युं छे. ने तमे बीजी बा० ना (९) प्रश्नोत्तरमां नरनारायणादिक सर्वे अवतारोना अवतारी श्रीजीमहाराज पोते पधार्या छे. एम कह्युं, अने श्रीजीमहाराजे पण (प्र० ३/३१ मां) पोताने अक्षरातीत कह्या छे, अने (७८ ना नवमा प्रश्नमां) " अमे कृपा करीने दर्शन दीधां छे." एम कह्युं छे एम जोतां तो श्रीजीमहाराज पोतेज पधार्या छे, माटे ते परस्पर विरोध आवे छे ते केम समजवुं ?

१० उ० जे वखते अक्षरधाममां श्रीजीमहाराजे अनंत जीवोना उद्धारने अर्थे आ ब्रह्मांडमां पधारवानो संकल्प कर्यो, तेज वखते बदरिकाश्रममां नरनारायणने शाप थयो माटे नरनारायणने मिषे करीने अक्षरधामना पति श्रीस्वामिनारायण भगवान परब्रह्म पोते श्री छपैया धामने विषे भक्तिधर्मथकी प्रगट थाता हवा, ते (जे० ४ ना १/४ पहेला प्रश्नमां) " श्री पुरुषोत्तम ते जे ते आज तमने सर्वेने नरनारायण ऋषिरूपे थइने मळ्या छे." तथा (५/६ मां) अमे "अक्षरधामना पति श्री पुरुषोत्तम छीए" एम कह्युं छे, माटे श्रीजीमहाराजे दया करीने दर्शन आप्यां छे ते वात साची छे, अने नरनारायणने शाप थयो ते वात पण साची छे.

११ प्र० अक्षरधामने विषे रहेला श्रीकृष्ण भगवाने वृंदावनने विषे भक्तिधर्मने दर्शन आप्यां एम चोथी बा० मां कह्युं, ते श्रीकृष्ण कियां जाणवा ? अने अक्षरधाम कियुं जाणवुं ?

११ उ० भक्तिधर्मने श्रीजीमहाराजे दर्शन आप्युं छे माटे श्रीकृष्ण नामे श्रीजीमहाराजने कह्या छे, ने अक्षरधाम पण श्रीजीमहाराजनुं कह्युं छे.

१२ प्र० भक्तिधर्मने श्रीजीमहाराजे दर्शन आप्यां त्यारे " में पूर्वे दैत्योने मार्या हता " एम केम कह्युं ?

१२ उ० पूर्वे जे जे अवतार थइ गया छे, अने हवे जे जे थशे ते सर्वेने ऐश्वर्य आपनारा श्रीजी महाराज छे, माटे परोक्ष अवतारोए श्रीजीमहाराजना ऐश्वर्यना प्रतापे करीने दैत्योने मार्या छे, माटे श्रीजीमहाराजे मार्या छे एम जाणवुं, ते (प्र० २६ मां) " पूर्वे जे जे आश्चर्य थइ गयां ने आज थाय छे, ने आगळ थशे ते सर्वे मने मळ्या एवा जे प्रत्यक्ष भगवान ते वतेज थाय छे " एम कह्युं छे.

१३ प्र० रामानंद स्वामीने उद्धवनो अवतार आठमी बाबतमां कह्या तेनो अर्थ शो समजवो ?

१३ उ० " उत् " एटले उत्कृष्ट एवा, " धव " कहेतां स्वामी, ते उद्धव कहेवाय, एटले उत्कृष्ट स्वामी एवा जे श्रीजीमहाराज तेमना अवतार एटले मुक्त ते रामानंदस्वामी हता एम कह्युं छे.

१४ प्र० रामानंद स्वामीने तमे श्रीजीमहाराजना मुक्त कह्या अने आठमी बा०मां " रामानंदस्वामी देहोत्सव करीने बदरिकाश्रममां जता हवा, ने दुर्वासाना शाप थकी मुकाता हवा." एम कह्युं छे, ते परस्पर विरोध आव्यो ते केम समजवुं ?

१४ उ० नरनारायणना शाप निमित्ते श्रीजीमहाराज पोते पधार्या छे तेथी पोतानुं नाम नर नारायण कह्युं छे, अने तेथीज पोताना अक्षरधामने बदरिकाश्रम नामे कह्युं छे. माटे अक्षरधाममां गया एम समजवुं अने शाप निमित्त पधार्या हता. तेथी शापथी मुकाता हवा एम कह्युं छे.

१५ प्र० नवमी बाबतमां श्रीजीमहाराज पोताना आश्रितोने लक्ष्मी राधिकादिक तथा श्रीकृष्णादिक घणेरूपे पोतानुं दर्शन देता हवा. एम कह्युं ते श्रीजीमहाराज पोते देखाया हशे के श्रीकृष्णादिक अवतारोने देखाड्या हशे ?

१५ उ० सर्वे अवतारो रूपे तथा लक्ष्मी राधिका तथा सर्वे पार्षदो रूपे पोते देखाया छे. एम एज बाबतमां कह्युं छे.

१६ प्र० श्रीजीमहाराज कोटी कोटी सूर्य सरखुं पोतानुं तेज देखाडता हवा ते तेज कियुं जाणवुं ?

१६ उ० श्रीजीमहाराजनी मूर्तिना तेजनो समूह छे, ते प्रकाशने (प्र० ९ मां) तथा (छे० ३६ ना पहेला प्रश्नमां) ब्रह्मज्योति कह्यो छे. ते ब्रह्मज्योतिनी अनंत किरणो छे तेमांथी एक किरणना किंचित् प्रकाशने देखाडता हवा, तेने कोटी कोटी सूर्य सरखो प्रकाश कह्यो छे अने समग्र प्रकाशने तो अक्षरधाम कह्युं छे माटे उपर कह्यो एटला प्रकाशे करीने अक्षरधामनी किरणनो किंचित् प्रकाश समजवो पण समग्र अक्षरधाम न समजवुं.

१७ प्र० द्रष्टा एवुं जे ब्रह्म ते रूपे श्रीजीमहाराज पोतानुं दर्शन देता हवा एम कह्युं ते द्रष्टा एवुं जे ब्रह्म ते शुं समजवुं ?

१७ उ० द्रष्टा एवुं जे ब्रह्म कह्युं ते मूळपुरुष इश्वरने कह्या छे, ते मूळपुरुषने (सा० ६ ना ३ पहेला प्रश्नमां) अंतर्यामी, फळप्रदाता, द्रष्टा, ब्रह्म, परब्रह्म एवे नामे कह्या छे, ते मूळपुरुष

रूपे पोते देखाता हवा. ते (सा० ५ ना १/३ बीजा प्रश्नमां) सच्चिदानंद कह्या छे.

१८ प्र० मूळ अज्ञान कयुं, ए ते शुं समजवुं ?

१८ उ० कारण शरीर छे ते जीवनी माया छे, ते मूळ अज्ञान छे ते (का० १२ ना पहेला प्रश्नमां) कह्युं छे, अने बीजुं श्रीजीमहाराज जीवकोटी, ईश्वरकोटी, ब्रह्मकोटी, मूर्तिमान् मूळ अक्षरकोटीथी पर छे. एवुं न समजाय अने श्रीजीमहाराज विना अन्यदेवनी उपासना थइ जाय ते पण मूळ अज्ञान कहेवाय. ते (लो० १७ ना १/३ पांचमा प्रश्नमां) कह्युं छे. जे अक्षरादिक सर्वेना सुखनुं परिमाण करीने ने अमारा सुखने सर्वेथी अधिक मानीने अमारी मूर्तिमां जोडावुं एवुं न समजाय त्यां सुधी मूळ अज्ञान छे. ते मूळ अज्ञान टाळवा सारु श्रीजीमहाराज पधार्या छे, माटे मूळ अक्षरादिक अन्यदेवनी उपासना थइ जाय एज मूळ अज्ञान छे.

१९ प्र० ब्रह्मनी तथा अक्षरनी कोटीयो कहोछो ते किया वचनामृतमां छे ?

१९ उ० (का० १० ना १/३ पहेला प्रश्नमां) " अमारा भक्त अमने भजीने अमारा प्रतापे करीने प्रकृति पुरुष जेवा थाय अने ब्रह्म जेवा थाय तथा अक्षर जेवा थाय पण अमारा जेवा कोइ न थाय," एम कह्युं छे. माटे मूळपुरुष तथा ब्रह्म जे वासुदेव तथा अक्षरादिक अनंत थाय. माटे कोटीयो छे एम जाणवुं.

२० प्र० अगीयारमी बाबतमां श्रीजीमहाराजे मोटां मोटां शिखरबंध मंदिरो करावीने तेमां मूर्तियो स्थापन करी एम कह्युं, ते परोक्ष अवतारोनी मूर्तियो स्थापन करवानुं शुं कारण हशे ?

२० उ० श्रीजीमहाराजे पोते अवतारो रूपे दर्शन आप्यां हतां, तेज पोतानां स्वरूप पधराव्यां छे, पण बीजा अवतारोने पधराव्या नथी. माटे आपणा संप्रदायनां सर्व मंदिरोमां जे जे परोक्ष नामे मूर्तियो छे, ते ते सर्वे रूपे श्रीजीमहाराज पोतेज छे, पण बीजा अवतारो नथी पधराव्या एम जाणवुं.

२१ प्र० श्रीजीमहाराजे बीजा अवतारो रूपे मनवादीओने पोतानां दर्शन आप्यां ते स्वरूपोने मंदिरोमां पधराव्यानुं शुं कारण हशे ?

२१ उ० एवे रूपे श्रीजीमहाराजनुं दर्शन करवाथी परोक्षना आश्रितोने हेत थाय तेथी दर्शने आवे, ने पछी सत्पुरुषनो समागम करे तेणे करीने श्रीजीमहाराजने सर्वोपरि जाणीने श्रीजी-महाराजना आश्रित थाय, ने तेनुं मूळ अज्ञान टळीने तेनो आत्यंतिक मोक्ष थाय, माटे ते स्वरूप पधराव्यां छे.

२२ प्र० आपणा संप्रदायना मंदिरोमां जे स्वरूप पधराव्यां छे ते सर्वे स्वरूप अक्षरकोटीथी तथा मुक्तोथी पर जाणवां के न्यून जाणवां ?

२२ उ० ए मूर्तियो मूळ अक्षरथी तथा मुक्तोथी पर छे, केमजे श्रीजीमहाराजनां पोतानां स्वरूप छे माटे श्रीजीमहाराज पोतेज छे.

२३ प्र० ए मूर्तियोनुं ध्यान थाय के नहिं ?

२३ उ० घणाक जीवोना समासने अर्थे ए रूप पधराव्यां छे. पण ध्यान करवा सारुं पधराव्यां नथी. ध्यान करवा माटे तो सहजानंदस्वामी, हरिकृष्ण महाराज, श्री घनश्याम महाराज,

एवा नामनी पोतानी मूर्तियो पधरावी छे, ते मूर्तियोनुंज ध्यान करवुं; ते (लो० ११ ना ३ बीजा प्रश्नमां) "पोताने मळी जे मूर्ति तेनुंज ध्यान करवुं पण परोक्ष अवतारोनुं ध्यान करवुं नहि" एम कह्युं छे. माटे परोक्षरूपे देखाया ते स्वरूपनुं पण ध्यान करवुं नहि. (पत्यारो संपूर्ण.)

॥ अथ वचनामृत गढडा प्रथम प्रकरणम् ॥

संवत् १८७६ ना मागशर शुदि ४ चतुर्थीने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादा-खाचरना दरबारमां साधुनी जायगाने विषे रात्रिने समे पधार्या हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पूछ्यो जे (१) सर्वे साधनमां कियुं साधन कठण छे ? त्यारे सर्वे ब्रह्मचारी, साधु तथा गृहस्थ, तेमणे पोतानी समजण प्रमाणे उत्तर कर्यो पण थयो नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या, जे ल्यो अमे उत्तर करीए जे, भगवानना स्वरूपमां मननी अखंड वृत्ति राखवी तेथी कोइ साधन कठण नथी. अने जे मनुष्यना मननी वृत्ति भगवानना स्वरूपमां अखंड रहे छे, तेने तेथी बीजी अधिक प्राप्ति शास्त्रमां कही नथी, कांजे भगवाननी मूर्ति छे, ते तो चिंतामणि तुल्य छे. जेम चिंतामणि कोइक पुरुषना हाथमां होय, ते पुरुष जे जे पदार्थने चिंतवे ते ते प्राप्त थाय छे, तेम भगवाननी मूर्तिने विषे जेना मननी अखंड वृत्ति रहे छे, तेतो जीव, ईश्वर, माया ने ब्रह्म एमना स्वरूपने जो जोवाने इच्छे तो तत्काळ देखे छे. तथा वैकुंठ, गोलोक, ब्रह्ममोहोल ए आदिक जे जे भगवानना धाम छे तेने पण देखे छे माटे भगवानना स्वरूपमां अखंड वृत्ति राखवी तेथी कोइ कठण साधन पण नथी ने तेथी कोइ मोटी प्राप्ति पण नथी.(१) १

२ त्यार पछी कोइक हरिभक्ते श्रीजीमहाराज प्रत्ये प्रश्न पूछ्यो जे (२) जेने भगवाननी माया कहे छे तेनुं रूप शुं छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे भगवाननो भक्त होय, तेने भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान करते जे पदार्थ आडुं आवीने आवरण करे तेने माया कहीए(२) २

३ पछी मुक्तानंद स्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे (३) भगवाननो भक्त ज्यारे पंचभूतना देहने मुकीने भगवानना धाममां जाय छे, त्यारे ते केवा देहने पामे छे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे धर्मकुळने आश्रित एवो जे भगवाननो भक्त छे, ते भगवाननी इच्छाए करीने ब्रह्ममय देहने पामे छे, अने ज्यारे देहने मुकीने भगवानना धाम प्रत्ये जाय छे, त्यारे कोइक तो गरुड उपर बेसीने जाय छे ने कोइक तो रथ उपर बेसीने जाय छे, ने कोइ-

करतो विमान उपर बेसीने जाय छे; एवी रीते भगवानना भक्त भगवानना धाममां जाय छे. तेने योगसमाधिवाळा छे ते प्रत्यक्ष देखे छे. (३) ३

४ पछी वळी कोइक हरिभक्ते पूछ्युं जे, (४) केटलाक तो घणा दिवसथी सत्संग करे छे तो पण तेने जेवी पोताना देहने देहना संबंधीने विषे गाढ प्रीति छे तेवी सत्संगमां गाढ प्रीति नथी थाती तेनुं शुं कारण छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एने भगवाननुं महात्म्य संपूर्ण जाण्यामां आव्युं नथी, अने जे साधुने संगे करीने भगवाननुं महात्म्य परिपूर्ण जाण्यामां आवे छे ते साधु ज्यारे पोताना स्वभाव उपर वात करे छे, त्यारे ते स्वभावने मुकी शकतो नथी, ने ते वातना करनारा जे साधु तेनो अवगुण ले छे ते पापे करीने सत्संगमां गाढ प्रीति थाती नथी, कां जे अन्य स्थळने विषे जे पाप कर्यां होय ते संतने संगे करीने जाय, अने संतने विषे जे पाप करे छे ते पाप तो एक संतना अनुग्रह विना बीजा कोइ साधने करीने टळतां नथी. ते शास्त्रमां कह्युं छे जे, ॥ अन्यक्षेत्रे कृतं पापं तीर्थक्षेत्रे विनश्यति । तीर्थक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति ॥ ते माटे संतनो अवगुण जो न ले तो एने सत्संगमां दृढ प्रीति थाय. (४) इति वचनामृतम् ॥१॥ ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (४) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारी मूर्तिमां अखंड वृत्ति राखनारो गोलोकादिक धाम, जीव, इश्वर, माया ने ब्रह्म तेने जोवाने इच्छे तो देखे छे. (१) बीजामां अमारुं ध्यान करतां आवरण करे ते माया जाणवी,(२) त्रीजामां अमारा आश्रित देह मुकीने ब्रह्ममय देहने पामे छे. (३) चोथामां स्वभाव उपर वात करनारानो अवगुण ले तेने सत्संगमां प्रीति थती नथी ने पाप लागे छे, ते पाप संतना अनुग्रहथी टळे छे ने संतने तीर्थ कह्या छे. (४) बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां मननी वृत्ति अखंड रहे ते कठणमां कठण साधन, ने सर्वथी श्रेष्ठ प्राप्ति कही ते मन तथा वृत्ति तो मायिक छे. ते मायिक वस्तुए महाराज केम देखाय ?

१ उ० प्रथम तो जीव मन द्वारे भगवाननी मूर्तिने विषे वृत्ति राखे ते वृत्ति राखतां राखतां निर्गुण थइ जाय; त्यारे जीवमत्ताएज मूर्तिने जुवे छे. ते हरिवाक्य सुधासिंधुमां तरंग (२०८) मां कह्युं छे के:—**देहत्रयमलंतद्वत्सांख्यज्ञानांबुना स च ॥ धूत्वा शुचिर्हरिंध्यायेत्तदा ऽति सुखभाग् भवेत् ॥१६॥** देव जेवा पवित्र थइने देवने पूजे तो ते पूजाने देव अंगीकार करे तेनी पेठे त्रण देहरूपी मळने सांख्यज्ञान रूपी जळ तेणे करीने त्याग करीने शुद्ध ब्रह्मरूप थइने श्रीजीमहाराजनुं ध्यान करे त्यारे श्रीजीमहाराजनुं अति सुख तेने पामे छे.

२ प्र० श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां अखंड वृत्ति राखनारो भक्त, जीव, माया, इश्वर, ब्रह्म तथा गोलोकादिक धामने देखे छे एम कह्युं; अने (प्र० ४९ ना बीजा प्रश्नमां) भगवाननी मूर्ति विना षट्चक्र तथा गोलोकादिकधाम देखाय ते बाह्यदृष्टि कही छे, ते केम समजवुं ?

२ उ० आमां साधनदशावाळा सकाम भक्तने लोभ बतावीने पोताना स्वरूपमां जोडवा

माटे कह्युं छे, माटे ए वचन अधिकारी पर छे अने (प्र० ४९ मां) भगवाननी मूर्ति विना ए धामादिक देखाय ए बाह्यदृष्टि कही छे; पण वगर इच्छे भगवाननी मूर्ति भेळां धामादिक देखाय ए बाह्यदृष्टि कही नथी. ए तो सिद्धदशावाळा जाणवा. ते (सा० १० ना बीजां प्रश्नमां) कह्युं छे जे, अंतर्दृष्टिवाळाने भगवान तथा भगवाननां धाम अणुमात्र छेटे नथी, केमजे एने भगवान वगर इच्छे देखाडे छे ते (प्र० ६ मां) अमारा धामने विषे अमारां ऐश्वर्य तथां मूर्तियो रही छे ते भक्तने बळात्कारे देखाडीए छीए एम कह्युं छे. माटे वगर इच्छे श्रीजीमहाराज देखाडे ते बाह्यदृष्टि न कहेवाय पण भक्त पोते जोवा इच्छे तो ते बाह्यदृष्टि कहेवाय.

३ प्र० बीजा प्रश्नमां ध्यानमां आवरण करे तेने माया कही ते कइ जाणवी ?

३ उ० मूळ प्रकृति तथा तेमांथी जे जे उत्पन्न थयुं ते ते ते संबंधी घाट संकल्प थाय ते सर्वे माया छे. अने ते मूळ प्रकृतिथी पर मूळ पुरुष जे इश्वरकोटी, तेथी पर ब्रह्मकोटी, तेथी पर मूळ अक्षरकोटी ते सर्वे ध्यान उपासनामां आवरण करनार छे माटे मूळ अक्षरपर्यंत आवरण करनारं छे, एम जाणवुं; एतो ज्यारे मूळ अक्षरथी पर ने ते मूळ अक्षरनुं कारण जे श्रीजी महाराजनां तेजरूप अक्षरधाम ते रूप पोताने मानीने ए तेजमां पोताना आत्माने लीन करीने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने धारे, त्यारे श्रीजीमहाराजनी ने ध्यान करनार भक्तनी वच्चे बीजुं आवरण रहेतुं नथी, माटे मूळ अक्षर पर्यंत आवरण करनार छे एम जाणवुं.

४ प्र० श्रीजीमहाराजना तेजने मूर्तिमान मूळ अक्षरनुं कारण कहो छो ते कियामां छे ?

४ उ० (का० ६ मां) श्रीजीमहाराजे पोताना निर्गुण स्वरूपने एटले तेजने मूळ अक्षरनुं आत्मा कह्युं छे अने (प्र० ६४ मां) ए तेजने मूळ अक्षरमां व्यापक तथा तेनुं आत्मा तथा द्रष्टा कह्युं छे, माटे मूळ अक्षरनुं कारण श्रीजीमहाराजनुं तेज छे.

५ प्र० माया तो संकल्प विकल्पादिक रूपे आवरण करनार छे ते समजाय छे पण इश्वर-कोटी, ब्रह्मकोटी ने मूळ अक्षरकोटी ते केवी रीते आवरण करता हशे ?

५ उ० जेम दीवाना प्रकाशनो संबंध आपणा नेत्रने थाय त्यारे दीवो देखाय छे, अने तारानां प्रकाशनो संबंध थाय तो तारा देखाय; अने चंद्रना प्रकाशनो संबंध नेत्रने थाय तो चंद्र देखाय; अने सूर्यना प्रकाशनो संबंध नेत्रने थाय तो सूर्य देखाय छे, तेम मूळ मायाथी पर मूळ पुरुष छे; तेना तेजरूप आपणा आत्माने मानीए तो मूळपुरुष इश्वरना प्रकाशनो संबंध आपणा आत्माने थाय तेणे करीने मूळपुरुष पमाय, पण तेथी पर जे ब्रह्मकोटी तेनो संबंध न थाय, ते आवरण कर्युं कहेवाय, तेमज ब्रह्मना प्रकाशनो संबंध थाय तो ब्रह्मनी प्राप्ति थाय पण अक्षर न पमाय ते आवरण कर्युं कहेवाय, तेमज अक्षरना प्रकाशनो संबंध थाय तो अक्षर पमाय, पण पुरुषोत्तमने न पमाय ए आवरण कर्युं कहेवाय अने पुरुषोत्तमना प्रकाशनो संबंध आपणा चैतन्यने थाय तो पुरुषोत्तम पमाय, त्यारे अक्षरादिकनुं आवरण रहेतुं नथी ते (प्र० ९१ मां) कह्युं छे जे, "पुरुषोत्तमने आकारे दृष्टि थाय त्यारेज पुरुषोत्तमनुं दर्शन थाय छे" माटे अक्षरादिक सर्वेथी पर श्रीजीमहाराज छे तेमनां प्रकाशरूप आपणा चैतन्यने

मानीने, ते प्रकाशरूप धाम साथे एकता करीने, श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने आकारे थाय, तोज श्रीजीमहाराजने पमाय पण ते विना पमाय नहि.

६ प्र० आ तेजने श्रीजीमहाराजने ग्ह्यातुं धाम किया वचनामृतमां कह्युं छे ?

६ उ० (पं० १ मां) आ तेजने पोताने रह्यानुं धाम कह्युं छे तथा (प्र० ३१ मां) पोतानी मूर्तिनो प्रकाश कह्यो छे. आनो विस्तार परथाराना बीजा प्रश्नोत्तरमां छे.

७ प्र० मूळपुरुषनी ने मूळ अक्षरनी वच्चे ब्रह्म कह्या ते किया वचनामृतमां छे ?

७ उ० (का० ना १० ३ पहेला प्रश्नमां) मूळपुरुषनी ने मूळअक्षरनी वच्चे ब्रह्मनो भेद कह्यो छे ते ब्रह्म श्वेतद्वीपपति वासुदेवने कह्या छे अने ए वासुदेव ब्रह्मनुं धाम मूळपुरुषना गोलोक धामथी पर छे तेने ब्रह्मपुर नामे करीने (अ० २ मां) कह्युं छे.

८ प्र० त्रीजा प्रश्नमां धर्मकुळने आश्रित ब्रह्ममय देहने पामे छे एम कह्युं ते धर्मकुळ शुं समजवुं ? अने ब्रह्ममय ते केवो जाणवो ?

८ उ० आ ठेकाणे धर्मकुळ एटले धर्मना पुत्र एवा जे साक्षात् श्रीस्वामिनारायण भगवान तेमने जाणवा तेमनो आश्रित थाय ते ब्रह्ममय देहने पामे छे एम कह्युं छे, अने ब्रह्म ते श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनुं तेज जाणवुं, अने ए तेज साथे एकता करीने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनुं ध्यान करे ते ध्याने करीने श्रीजीमहाराजना जेवो साकार थाय ते ब्रह्ममय देह कह्यो छे.

९ प्र० यथार्थ ज्ञान थाय त्यारे देह मूक्यो कहेवाय के देह पडे त्यारेज मुक्यो कहेवाय ?

९ उ० ज्यारे आत्माने विषे श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनो साक्षात्कार थाय त्यारे देह मूक्यो कहेवाय तोपण सर्पनी कांचळीनी पेठे मायिक देह तो उपर होयज पण सिद्धमुक्त जेम श्रीजीमहाराजनी ईच्छाथी दिव्य मूर्ति थका मनुष्य जेवा देखाय छे तेवा तो न कहेवाय, अने ज्यारे कांचळीवत् रहेला देहनो अंत आवे त्यारे रथ वैमानादिक बीजा जीवोना समासने अर्थे श्रीजीमहाराज बनावे छे पण जे ब्रह्मरूप थयो तेने रथ वैमाननी जरुर नथी केम जे जेने श्रीजी महाराजनी मूर्तिनो साक्षात्कार थयो तेने जवुं आववुं नथी ए तो पामीज रह्यो छे.

१०प्र० धाममां जाय तेने योगसमाधिवाळा देखे छे ते योग समाधिवाळा कोने जाणवा ?

१०उ० जेने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनो अखंड साक्षात्कार होय, तेने योगसमाधिवाळा कह्या छे पण योगाभ्यास करता होय ने मूर्ति सिद्ध न थइ होय तेने आ ठेकाणे योगसमाधिवाळा नथी कह्या. इति रहस्यार्थ ॥ १ ॥

संवत् १८७६ ना मागशर शुदि ५ पंचमीने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां रात्रिने समे विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी मयाराम भट्टे श्रीजीमहाराज प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे, (१) हे महाराज उत्तम, मध्यम ने कनिष्ठ ए त्रण प्रकारनो जे वैराग्य तेनां शां लक्षण छे ते कहो ? त्यारे श्रीजीमहाराज

बोल्या जे, उत्तम वैराग्य जेने होय ते परमेश्वरनी आज्ञाए करीने अथवा पोताना प्रारब्ध कर्मवशे करीने व्यवहारमां रहे पण ते व्यवहारमां जनकराजानी पेठे लोपाय नहि, अने शब्द, स्पर्श, रूप, रस ने गंध ए पंच प्रकारना जे उत्तम विषय ते पोताना प्रारब्धानुसारे प्राप्त थाय तेने भोगवे पण प्रीतिए रहित उदास थको भोगवे अने ते विषय एने लोपी शके नहि ने तेनो त्याग मोळो न पडे अने ते विषयने विषे निरंतर दोषने देखतो रहे ने विषयने शत्रु जेवा जाणे, अने संत, सत्शास्त्रने भगवाननी सेवा तेनो निरंतर संग राखे अने देश, काळ, संग आदिक जो कठण आवी पडे तो पण एनी जे एवी समझण ते मोळी पडे नहि तेने उत्तम वैराग्यवाळो कहीए. अने जेने मध्यम वैराग्य होय ते पण उत्तम एवा जे पंच प्रकारना विषय तेने भोगवे पण तेमां आसक्त न थाय ने जो देश, काळ, संग कठण प्राप्त थाय तो विषयने विषे बंधाइ जाय ने वैराग्य मंद पडी जाय तेने मध्यम वैराग्यवाळो कहीए. अने जे कनिष्ठ वैराग्यवाळो होय तेने सामान्य ने दोषेयुक्त एवा पंचविषय जो प्राप्त थाय ने तेने भोगवे तो तेमां न बंधाय अने जो सारा पंचविषय प्राप्त थाय ने तेने भोगवे तो तेमां बंधाय तेने मंद वैराग्यवाळो कहीए.(१)इति वचनामृतम्.॥२॥ १

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे तेमां श्रीजीमहाराजे गृहस्थना उत्तम, मध्यम ने कनिष्ट वैराग्यनां लक्षण कह्यां छे (१) बाबत छे.

१ प्र० केवीरीते व्यवहारमां रह्यो होय ते आज्ञाए तथा प्रारब्धे करीने रह्यो कहेवाय ?

१ उ० त्यागी थवुं होय तेने भगवान अथवा सत्पुरुष ते व्यवहारमां रहेवानी आज्ञा करे ए आज्ञाए करीने रह्यो कहेवाय. अने जेने मावाप वृद्ध होय ने बीजो भाइ न होय ने तेने खावापीवानुं न होय तेथी मावापनी सेवामां रहेवुं पडयुं होय ते प्रारब्धे करीने रह्यो कहेवाय.

२ प्र० उत्तम विषय किया जाणवा ? अने सामान्यने दोषे युक्त किया जाणवा ?

२ उ० स्त्री रूपवान होय ने पोतानी आज्ञामां रहेती होय ने धन समृद्धि घणी होय ते उत्तम विषय कहेवाय. अने स्त्री कुरूप होय ने कह्यामां न वर्ते अने घणे दाखडे खावा पीवानुं मळे ते सामान्यने दोषे युक्त विषय कहेवाय.

३ प्र० कठण देशकाळमां वैराग्य मोळो न पडे ते देशकाळ केवा जाणवा ?

३ उ०पोताने स्त्री आदिक तथा खानपानादिक उत्तम वैभव मळ्याहोय पण तेने प्रारब्धानुसारे परदेशमां जवुं पडे ने त्यां पोतानां स्त्रीआदिक संबंधी तथा वैभवनो योग न रहे ने त्यां कोइक रूपवान स्त्री मळे ने ते पोतानुं धन धामादिक सर्वस्व आपीने लोभावे अने कोइक समे पोताना वैभव सर्व नाश पामीजाय तथा पोताना शरीरमां दीर्घरोग आवी पडे ने सत्पुरुषनो योग न रहे त्यारे तेने कोइक अन्यवंचना मंत्रथी तथा उपासनाथी तथा ध्यानथी तथा पर सांप्रदायिक शास्त्र श्रवण पठनादिकथी, स्त्रीधनादिक वैभवनी प्राप्ति थशे, तथा रोगादिक कष्ट नाश पामशे एवो उपदेश करे, एवा देशकाळ संगादिक प्राप्त थाय ते कठण देशकाळादिक कहेवाय. ॥ २ ॥

संवत् १८७६ ना मागशर शुदि ६ छठने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां रात्रिने समे विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) जेने भगवाननी मूर्ति अंतरमां अखंड देखाती होय तेणे पण भगवाने जे जे अवतारे करीने जे जे स्थानकने विषे जे जे लीळा करी होय ते संभारी राखवी, ने ब्रह्मचारी, साधु तथा सत्संगी तेने साथे हेत राखवुं ने ए सर्वेने संभारी राखवा. ते शा सारु जे कदापि देह मुक्या समे भगवाननी मूर्तिने भुली जवाय तो पण भगवाने जे जे स्थानकने विषे लीळा करी होय ते जो सांभरी आवे अथवा सत्संगी सांभरी आवे अथवा ब्रह्मचारीने साधु सांभरी आवे तो तेने योगे करीने भगवाननी मूर्ति पण सांभरी आवे ने ते जीव मोटी पदवीने पामे ने तेनुं घणुं रुडुं थाय ते माटे अमे मोटा मोटा विष्णुयाग करीए छैए तथा जन्माष्टमी ने एकादशी आदिक व्रतना वर्षो वर्ष उच्छव करीए छैए ने तेमां ब्रह्मचारी साधु सत्संगीने भेळा करीए छैए अने जो कोइक पापी जीव होय ने तेने पण जो एमनी अंतकाळे स्मृति थइ आवे तो तेने भगवानना धामनी प्राप्ति थाय. (१) इति वचनामृतम् ॥३॥ १

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, अमारी मूर्ति अंतरमां अखंड देखाती होय, तेणे पण अमारी तथा अमारा अवतारोनी लीळा संभारी राखवी, अने साधु ब्रह्मचारी तथा सत्संगी साथे हेत राखवुं. (१) बाबत छे.

१ प्र० अंतःकरणमां मूर्ति देखाय अने जीवमां देखाय तेनुं शुं लक्षण हशे ?

१ उ० हृदयने विषे मूर्ति मनुष्यना जेवी देखाय पण तेजोमय न देखाय अने नखथी शिखा सुधी समग्र न देखाय चरण सामुं जुवे तो मुखारविंद न देखाय ने मुखारविंद सामुं जुवे तो चरण न देखाय, एवी रीते ध्यान थाय ते अंतःकरणमां देखी कहेवाय. अने तेजोमय ने समग्र मूर्ति देखाय ते जीवमां देखी कहेवाय.

२ प्र० मूर्ति अखंड देखतो होय तेने लीला संभारी राखवामां शुं विशेष छे ?

२ उ०आत्माने विषे मूर्ति देखे तेने लीळा संभारी राखवानुं कह्युं नथी पण अंतःकरणमां मूर्ति देखाती होय त्यां सुधी मूर्ति भुली जवानो संभव छे, माटे लीला संभारे तो मूर्ति सांभरी आवे.

३ ० अवतारोनी लीळा संभारी राखवी एम कह्युं ते अवतार किया जाणवा ?

३ उ० श्रीजीमहाराजनी साथे आवेला सिद्धमुक्तोने आ ठेकाणे अवतार कह्या छे ते मुक्तोनी लीळा श्रीजीमहाराजना संबंधवाळी होय तेथी तेमनी लीळा संभारवाथी श्रीजीमहाराजनी मूर्ति सांभरी आवे एम कह्युं छे. अने साधनदशावाळा एकांतिकने आ ठेकाणे साधु, ब्रह्मचारी, सत्संगी कह्या छे. ते सिद्धमुक्तनुं लक्षण (व० ३ ना त्रीजा प्रश्नोत्तरमां तथा जे० १ ना आठमा प्रश्नोत्तरमां) कह्युं छे.

४ प्र० सिद्धदशावाळा मुक्तोने श्रीजीमहाराजना अवतार कहो छो ते किया वचनामृतमां छे ?

४ उ० (प्र० ३३ ना पहेला प्रश्नमां) श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे जीवना कल्याणने अर्थे अमे नारद सनकादिकरूपे वर्तीए छीए माटे मुक्त अवतार छे ॥ ३ ॥

संवत् १८७६ना मागशर शुदि ७ सप्तमीने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता. अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे,(१)भगवानना भक्तने परस्पर इर्ष्या न करवी.त्यारे आनंदानंद-स्वामी बोल्या जे, हे महाराज ! इर्ष्या तो रहे छे. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, इर्ष्या करवी तो नारदजीना जेवी करवी, जेम एक समयने विषे नारदजी ने तुंबरु ए बे वैकुंठने विषे लक्ष्मीना-रायणनां दर्शन करवा गया ते लक्ष्मीनारायण आगळ तुंबरुए गान कर्युं, तेणे करीने लक्ष्मीजी तथा नारायण ए बेय प्रसन्न थइने तुंबरुने पोतानां वस्त्र आभूषण आप्यां त्यारे नारदजीने तुंबरु उपर इर्ष्या आवी जे, हुं तुंबरुना जेवी गानविद्या शिखुं ने भगवानने प्रसन्न करुं; पछी नारदजी गानविद्या शिखता हवा ने भगवान आगळ गाता हवा. त्यारे भगवाने कह्युं जे, तमने तुंबरुना जेवुं गातां नथी आवडतुं. पछी वळी शिव उपर तप करीने शिव थकी वर पामीने, गानविद्या शिखीने, भगवान आगळ गाता हवा, तोपण भगवान एनी गानविद्या उपर प्रसन्न न थया. एवी रीते सात मन्वंतर सुधी गानविद्या शिख्या ने भग-वान आगळ गाया तोपण भगवान प्रसन्न न थया. पछी तुंबरु पासे गानविद्या शिख्या ने रुक्मणी आदिक अष्ट पटराणियो पासे शिख्या ने श्रीकृष्ण भगवान आगळ द्वारिकामां गाता हवा. त्यारे श्रीकृष्ण भगवान प्रसन्न थया, ने पोतानां वस्त्र अलंकार नारदजीने आप्यां, त्यारे नारदजीए तुंबरु साथे इर्ष्या मेली. माटे इर्ष्या करवी तो एवी करवी जे जेनी उपर इर्ष्या होय तेना जेवा गुणने ग्रहण करवा ने पोताना अवगुणने त्याग करवा ने तेवुं न थवाय ने जे इर्ष्याए करीने भगवानना भक्तनो द्रोह थाय तेवी इर्ष्यानो तो भगवानना भक्ते सर्व प्रकारे त्याग करवो. (१) इति वचनामृतम् ॥४॥ १

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां निर्मानी थइने गुणवान पासेथी तेना गुण शिखवा. पण तेनो द्रोह थाय तेवी इर्ष्या न करवी एम कह्युं छे. (१) बाबत छे.

१ प्र० तुंबरु पासेथी गानविद्या शिख्या पछी पटराणियो पासेथी शुं शिख्या हशे ?

१ उ० वखाणावानी इच्छानो त्याग करीने, निर्मानी थइने, प्रसन्नताने अर्थे गाशो तो भगवान राजी थशे, ए युक्ति शिख्या. ॥४॥

संवत् १८७६ ना मागशर शुदि ८ अष्टमीने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने

पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) राधिकाए सहित एवा जे श्रीकृष्ण भगवान तेनुं ध्यान करवुं अने ते ध्यान करतां मूर्ति हृदयने विषे न देखाय तो पण ध्यान करवुं पण कायर थइने ते ध्यानने मुकी देवुं नहि, एवी रीतना जे आग्रहवाळा छे तेना उपर भगवाननी मोटी कृपा थाय छे ने एनी भक्तिए करीने भगवान एने वश थइ जाय छे. (१) १
इति वचनामृतम् ॥५॥

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां मुक्तोए सहित पोतानुं ध्यान करवानुं कह्युं छे. (१) बावन छे.

१ प्र० आमां राधिकाए सहित श्रीकृष्ण भगवाननुं ध्यान करवानुं कह्युं छे ने तमे तो रहस्यार्थमां मुक्तोए सहित श्रीजीमहाराजनुं ध्यान करवानुं कह्युं ते केम समजवुं ?

१ उ० ते समये परोक्षना उपासको सभामां घणा बेठा हता तेथी राधिका नामे पोताना मुक्तोने कह्या छे अने श्रीकृष्ण नामे पोताने कह्या छे, पण बीजा कोइनुं ध्यान करवानुं कह्युं नथी ते (लो० ११ ना ३/६ बीजा प्रश्नमां) अमारा विना बीजा अवतारोनुं ध्यान करवुं नहि, तथा (म० १/६ मां) अमारुं ध्यान करवुं अने अमे मनुष्यरूपे पृथ्वी उपर न होइए त्यारे अमारी प्रतिमानुं ध्यान करवुं पण बीजा कोइ देवनुं ध्यान करवुं नहि. माटे आ ठेकाणे मुक्तोए सहित पोतानुंज ध्यान करवानुं कह्युं छे.

२ प्र० भगवान भेळुं राधिकानुं ध्यान करवानुं कह्युं ने लक्ष्मीजीनुं ध्यान केम न कह्युं ?

२ उ० राधिका श्रीकृष्ण भगवाननी समीपे रहे छे, अने लक्ष्मीजी मूर्तिने विषे क्यारेक लीन रहे छे तेथी तेनी आकृति बहार देखवामां आवती नथी तेथी ध्यान करवानुं कह्युं नथी तेम राधिकाने ठेकाणे श्रीजीमहाराजना परम एकांतिक मुक्त छे, ते श्रीजीमहाराजने सन्मुख रह्या छे, ते मुक्त सहित श्रीजीमहाराजनुं ध्यान करवानुं कह्युं छे; अने लक्ष्मीजीने ठेकाणे श्रीजीमहाराजना अनादि मुक्त छे ते श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां सदाय रह्या छे, तेथी तेमनी आकृति बहार देखाती नथी माटे पृथक् धारवाना नथी कह्या. ॥५॥

संवत् १८७६ ना मागशर शुदि ९ नवमीने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) आ सत्संगमां जे विवेकी छे ते तो दिवसे दिवसे पोताने विषे अवगुणने देखे छे ने भगवानने भगवानना भक्तने विषे गुणने देखे छे ने भगवान ने साधु पोताना हितने अर्थे कठण वचन कहे छे तेने पोताना हितकारी माने छे ने दुःख नथी लगाडतो ते तो दिवसे दिवसे सत्संगने विषे मोटपने पामे छे. (१) अने १

जे अविवेकी छे तेतो जेम जेम सत्संग करे छे ने सत्संगनी वात सांभळे छे तेम तेम पोताने
विषे गुण परठे छे अने भगवानने संत एनो दोष देखाडीने एनी आगळ वात करे छे ते
वातने माने करीने अवळी ले छे ने वातना करनारानो अवगुण ले छे ते तो दिवसे
दिवसे घटतो जाय छे ने सत्संगमां प्रतिष्ठाहीन थइ जाय छे, माटे पोताने विषे जे गुणनुं
मान तेनो त्याग करीने शूरवीर थइने भगवानने भगवानना संतने विषे विश्वास राखे तो
एनो अविवेक टळी जाय छे ने सत्संगमां मोटपने पामे छे. (२) इति वचनामृतम् ॥ ६ ॥ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां जे पोताना गुणना माननो त्याग करीने अमारो ने संतनो विश्वास राखे ते मोटप पामे छे: अने अविवेकीने एना दोष टाळवानी अमे तथा संत वार्त्ता करीए तेने माने करीने अवळी ले ने अमारो ने संतनो अवगुण ले ते प्रतिष्ठाहीन थई जाय छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (१) वाक्य छे. ॥६॥

संवत् १८७६ ना मागशर शुदि १० दशमीने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा
मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां
ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.
१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) शास्त्रमां ज्यां ज्यां अध्यात्म वार्ता आवे छे ते कोइने
समझाती नथी ने भ्रमि जवाय छे माटे ए अध्यात्म वार्ता जेम छे तेम यथार्थपणे अमे
कहीए छीए ते सर्वे सांभळो जे स्थूळ, सूक्ष्म ने कारण ए त्रण देहेयुक्त जे जीवने कहेवो
ते ए जीवनो वाच्यार्थ छे ने ए त्रण देहथी पृथक्पणे सत्तामात्र जे कहेवो ते जीवनो
लक्ष्यार्थ छे तथा विराट् सूत्रात्मा ने अव्याकृत ए त्रण शरीरे सहित जे ईश्वरने कहेवा ते
इश्वरनो वाच्यार्थ छे अने ए त्रण शरीरथी पृथक् ने सत्तामात्रपणे कहेवा ते इश्वरनो लक्ष्यार्थ
छे तथा माया ने मायानां कार्य जे अनंतकोटी ब्रह्मांड तेने विषे अन्वयपणे जे अक्षर
ब्रह्मने कहेवा ते एनो वाच्यार्थ छे अने ए सर्वेथी व्यतिरेक सच्चिदानंदपणे जे अक्षरब्रह्मने
कहेवा ते एनो लक्ष्यार्थ छे तथा अक्षरब्रह्म ने इश्वर ने जीव ने माया ने मायानां कार्य
जे ब्रह्मांड एमने विषे जे श्रीकृष्ण भगवानने अंतर्यामीपणे कहेवा ने नियंतापणे कहेवा ते
ए भगवाननो वाच्यार्थ छे अने ए सर्वेथी पृथक्पणे करीने पोताना गोलोक धामने विषे
जे ब्रह्मज्योति तेने विषे रह्या छे एम जे कहेवुं ते ए भगवाननो लक्ष्यार्थ छे. (१) अने १
ए पुरुषोत्तम भगवानने अक्षरब्रह्म ने माया ने इश्वर ने जीव ए जे पांच भेद ते अनादि
छे. (२) इति वचनामृतम् ॥७॥ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे जीवकोटी इश्वरकोटी अने अक्षरकोटीनुं तथा पोतानुं वाच्यार्थ एटले अन्वयपणुं अने लक्ष्यार्थ एटले व्यतिरेकपणुं कह्युं छे अने पोताने रहेवानुं पोतानी किरणोना मध्यने विषे ब्रह्मज्योतिरूप धाम छे तेने

जीवकोटी, ईश्वरकोटी तथा अक्षरकोटीथी पर कह्युं छे. (१) अने पांच भेद अनादि कह्या छे. (२) बाबतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां जीव, ईश्वर, ने अक्षरब्रह्म कह्या ते कोने कोने जाणवा.

१ उ० (छे० १० मां) जे मूळमायामां रह्या छे ते सर्वेने जीव कह्या छे माटे प्रधान पुरुष सुधी जीवकोटी छे पण आ ठेकाणे वैराजथी उत्पन्न थया ते सर्वेने जीव कह्या छे पण वास्तविक रीते तो मूळमायानी अंदर जे रह्या छे ते सर्वे जीव कहेवाय. अने ईश्वर पण एज वचनामृतमां मूळपुरुषने कह्या छे परंतु आ ठेकाणे वैराज पुरुषने ईश्वर कह्या छे पण वास्तविक रीते ईश्वर तो मूळपुरुष छे. अने मूर्तिमान मूळअक्षरने आ ठेकाणे अक्षरब्रह्म कह्या छे. अने श्रीजी महाराजे पोताने श्रीकृष्ण नामे कह्या छे.

२ प्र० आमां श्रीजीमहाराजे वैराजथी पर पाधराज अक्षरब्रह्मने कह्या छे ने तेना वचमां प्रधान पुरुष तथा प्रकृतिपुरुषने गण्या नथी तेथी करीने प्रधानना अधिष्ठाता पुरुषनेज अक्षरब्रह्म समजाय छे अने प्रधान प्रकृतिनेज माया समजाय छे ने मूळपुरुषने श्रीकृष्ण समजाय छे ने गोलोक पण मूळपुरुषनुं धाम समजाय छे ने ब्रह्मज्योति ते मूळपुरुषनो प्रकाश समजाय छे अने तमे तो मूळमायाने माया कहो छो ने तेथी पर मूळपुरुषने तथा वासुदेवब्रह्मने मूकीने मूळअक्षरने अक्षरब्रह्म कहो छो अने श्रीजीमहाराजने श्रीकृष्ण कहो छो ते कांई समजातुं नथी माटे कृपा करीने समजावो ?

२ उ० श्रीजीमहाराजे कह्युं जे, अध्यात्म वार्ता कोईने समजाती नथी एनो अर्थ एवो छे जे कोइने एटले अमे ने अमारा मुक्त विना कोइने समजाती नथी अने बीजुं सर्वेने सांभळवानुं कह्युं छे तेनो अर्थ एवो छे के अक्षरादिक सर्वे अवतारोने पण सांभळवानुं कह्युं, माटे श्रीजीमहाराजे पोतानो सिद्धांत कह्यो छे पण परोक्ष शास्त्रनो सिद्धांत नथी कह्यो केमजे परोक्ष शास्त्रनो सिद्धांत तो शास्त्रोना करनारा जाणेछेज ते सिद्धांत कहेवानुं कांइ प्रयोजन नथी, अने कोइ वचनामृतमां प्रधान प्रकृतिने मूळ माया कही नथी ने तेना पति पुरुषने अक्षर कह्या नथी प्रधान पुरुषने तो (प्र० १२ना बीजा प्रश्नमां) मूळ मायामांथी उत्पन्न थया छे एम कह्युं छे अने मूळ मायाने क्षेत्र कही छे अने (छे० १० मां) मूळमायाने पृथ्वीने ठेकाणे कही छे अने प्रधान पुरुषादिक सर्वेने बीजने ठेकाणे एटले जीव कह्या छे ने मूळपुरुषने ईश्वर कह्या छे ने मेघने ठेकाणे कह्या छे, माटे मायामांथी उत्पन्न थाय ने मायामां लीन थाय तेतो जीवज कहेवाय पण ईश्वर कहेवाय नहि तो ब्रह्म के अक्षर तो कहेवायज केम ? माटे श्रीजीमहाराजे आ वचनामृतमां वैराजथी लइने मूळपुरुष सुधी ईश्वरमां गण्या छे, अने मूळमायानेज माया कही छे ने मूळअक्षरनेज अक्षरब्रह्म कह्या छे अने पोताना तेजनी किरणोनेज गोलोक नामे कहेल छे ने पोताना तेजनेज ब्रह्मज्योति कहेल छे ने पोतानेज श्रीकृष्ण नामे कह्या छे.

३ प्र० पंचाळानी पहेली बाबतमां गोलोकना मध्यने विषे अक्षरधाम कह्युं छे अने आमां तो गोलोकनेज धाम कह्युं ते परस्पर विरोध आव्यो ते केम समजवुं ?

३ उ० धाम शब्द घणे ठेकाणे प्रवर्ते छे. ब्रह्मज्योतिनी किरणोने अने ब्रह्मज्योतिने अने श्रीजी-महाराजनी मूर्तिने अने मूळअक्षर ए सर्वने धाम नामे कहेवाय छे.

४ प्र० श्रीजीमहाराजने तथा मूळअक्षरने किया किया वचनामृतोमां धाम नामे कह्या छे ?

४ उ० (पं० ७/१ मां) श्रीजीमहाराजे पोताने धाम नामे कह्या छे. (प्र० ५१ तथा ६३ ना ३/३ त्रीजा प्रश्नमां) तथा (सा० १७ मां) मूळअक्षरने धाम नामे कह्या छे, अने परथारानी पहेली बाबतमां पोतानो प्रकाश जे ब्रह्मज्योति तेने धाम नामे कहेल छे अने आ ठेकाणे ब्रह्मज्योतिनी किरणोने धाम नामे कहेल छे.

५ प्र० आमां अक्षरब्रह्मने साकार कह्या ने तेथी पर गोलोक धामने विषे ब्रह्मज्योति छे तेमां अमे रह्या छीए एम कह्युं, अने परथाराना बीजा प्रश्नोत्तरमां (म० ५० नी) साख्य आपी छे, तेमां श्रीजीमहाराजनी मूर्तिना प्रकाशने अक्षरब्रह्म कह्या छे माटे ते साकार अक्षरब्रह्म कोने जाणवा ?अने निराकार अक्षरब्रह्म कोने जाणवा ?

५ उ० आमां अधिकारी वर्गवाळा मूळअक्षरने साकार अक्षरब्रह्म कह्या छे अने परथाराना बीजा प्रश्नोत्तरमां श्रीजीमहाराजनी मूर्तिना प्रकाशने अक्षरब्रह्म कह्या छे अने साकार अक्षर-ब्रह्मने (प्र० ६४/१ मां) अक्षर नामे कह्या छे ने निराकार अक्षरब्रह्मने आत्मा नामे कह्या छे ने साकार मूळअक्षरना द्रष्टा कह्या छे ने साकार मूळअक्षरने ते आत्माना दृश्य कह्या छे, तथा (का० ६ मां) साकार मूळअक्षरने अक्षर कह्या छे अने निराकार अक्षरब्रह्मने ते साकार मूळअक्षरब्रह्मना आत्मा कह्या छे.

६ प्र० कया कया वचनामृतोमांथी साकार अक्षरब्रह्मने समजवा ? अने कया कयामांथी साकार अक्षरब्रह्मथी पर ने तेना कारण, आधार, व्यापक, नियंता, द्रष्टा ने आत्मा एवा जे श्रीजी-महाराजना तेजरूप ब्रह्मज्योति जे अक्षरब्रह्म तेने समजवा.

६ उ० (प्र १/१ मां) श्रीजीमहाराज अक्षरब्रह्मने विषे अन्वयपणे रह्या छे एम कह्युं छे ते अक्षरब्रह्म साकार जाणवा (प्र० २१/७ मां) ए अक्षर बीजे रूपे करीने पुरुषोत्तमनी सेवामां रहे छे एम कह्युं छे ते श्रीजीमहाराजना प्रकाशरूप निराकार अक्षरधाम छे ते मूळअक्षरमां व्यापीने ते मूळअक्षरद्वारे सृष्टि करावे छे ते सृष्टिकर्ता मूळअक्षर ते निराकार अक्षरनुं बीजुं स्वरूप छे अने ते साकार छे (३३ ना पहेला प्रश्नमां) श्रीजीमहाराज अक्षररूपे वर्ते छे एम कह्युं छे. (४१ मां) श्रीजीमहाराज अंतर्यामीरूपे रह्या छे. (६३ ना ३/३ त्रीजा प्रश्नमां) अक्षरधाम नामे कह्या छे. (६४ मां) अक्षर कह्या छे, (७२ ना २/३ बीजा प्रश्नमां) अक्षर कह्या छे. अने चोथी बाबतमां " अक्षरब्रह्मना आत्मा छे. अने ते अक्षरने पोतानी श-क्तिए करीने धरी रह्या छे ने ते अक्षरथी न्यारा छे. " ते अक्षर साकार जाणवा. (सा० ५ ना २/३ बीजा प्रश्नमां) श्रीजीमहाराज अन्वयपणे रह्या छे. (का० ६ मां) " निर्गुण स्वरूप अक्षरनुं आत्मा छे. " (१० ना १/३ पहेला प्रश्नमां) " अक्षर जेवो थाय " एम कह्युं छे (लो. ४ ना २/३ बीजा प्रश्नमां) अमारा जेवो थवाने अक्षर पर्यंत कोइ समर्थ नथी. (७ ना ३/८ त्रीजा प्रश्नमां) अक्षरथी पर श्रीजीमहाराजने कह्या छे. (१० ना २/६ छठ्ठा प्रश्नमां) अमे

अक्षरना आत्मा छीए. (१३ ना बीजा प्रश्नमां) " अक्षरने पण भगवान न कहेवाय." (१५ ना पांचमा प्रश्नमां) अक्षर कह्या छे. (१७ ना ३/५ पांचमा प्रश्नमां) अक्षरने श्रीजीमहाराजे पोतानी शक्ति कही छे. (१/२८ मां) अक्षरनो भाव अमारे विषे आवे एम कह्युं छे. (अ. ४/३ मां अक्षरादिक मुक्तना नियंता छीए. (५ना पहेला प्रश्नमां) "अक्षरादिक मुक्तने नियममां राखवा समर्थ छे," (६ मां २/३ बीजा प्रश्नमां) " अक्षरादिकना स्वामीने परब्रह्म पुरुषोत्तम तेज आ सत्संगने विषे विराजमान छे;" (प्र० ५१ तथा ६३ ना ३/३ त्रीजा प्रश्नमां तथा सा० २/२ ए त्रणमां) अक्षरधाम नामे कह्या छे. ए वचनामृतोमां साकार अक्षरब्रह्म समजवा. (१)

हवे साकार अक्षरब्रह्मथी परने एनुं आत्मा, आधार, व्यापक ने द्रष्टा जे श्रीजीमहाराजनी मूर्तिना तेजरूप निराकार अक्षरधाम जे ब्रह्मज्योतिरूप अक्षरब्रह्म जेमां कहेल छे, ते वचनामृतो लखीए छीए. परथारानी पहेली बाबतमां सच्चिदानंद, ब्रह्मपुर, अमृतधाम, परमपद, अनंत, अपार, ब्रह्म, चिदाकाश ए नामे कहेल छे; (प्र० १ ना त्रीजा प्रश्नमां) भगवाननुं धाम कह्युं छे, (७/१ मां) ब्रह्मज्योति नामे कहेल छे, (८ ना २/४ बीजा प्रश्नमां) " जीवने भगवानना धाममां पहोंचाडवो ते अमने आवडे छे." (८/२ मां) " पोताना धामने विषे ऐश्वर्य तथा मूर्तियो देखाडे छे " (१२ ना त्रीजा प्रश्नमां) " तेजोमय भगवाननुं धाम तेने पामे छे," (१६/४ मां) " मुक्त थइने धाममां जाशे," (२१/२ मां) अर्चि मार्गे करीने अक्षर धामने पामे छे " तथा सातमी बाबतमां " निराकार एकरस चैतन्य छे तेने चिदाकाश कहीए ब्रह्ममोहोल कहीए " तथा अक्षर तथा अक्षरधाम नामे कह्युं छे तथा आठमी बाबतमां अक्षरधाम तथा अक्षरनामे कहेल छे, (३१ ना २/३ बीजा प्रश्नमां) " अक्षरातीत एवा जे भगवान पुरुषोत्तम ते मने प्रत्यक्ष मळ्या छे, " (३७/५ मां) " भगवानना धाममां चैतन्यनीज मूर्ति थइने भगवानना हजुरमां रहे छे, " (४० ना पहेला प्रश्नमां) " अक्षरब्रह्मना साधर्म्यपणाने पामीने मूर्तिने विषे निमग्न रहेतो होय," [४५ मां] " सच्चिदानंद ब्रह्म छे ते तो मूर्तिमान एवा जे पुरुषोत्तम भगवान तेमनुं तेज छे," [४६ मां] सर्वाधार अने चिदाकाश शब्दथी कहेल छे, [५६ ना ३/४ त्रीजा प्रश्नमां] " परमपदने पामे छे." तथा " स्वामिनारायण नाम उच्चारण थाय तो पापथी छुटीने ब्रह्ममोहोलने विषे निवास करे; " [५९ पहेला प्रश्नमां] " आ भगवान ब्रह्ममोहोलादिक धामना पति छे," [६० ना २/२ बीजा प्रश्नमां] "भगवाननुं अतिशय महात्म्य जाणवुं जोइए जे भगवान वैकुंठ, गोलोक, ब्रह्ममोहोल, ते सर्वे धामना पति छे;" [६३ ना ३/४ त्रीजा प्रश्नमां] " पोतानी कांतिए करीने अन्वय पणे रह्या छे, " त्यां कांति शब्दथी पोताना प्रकाशरूप धामने कहेल छे. तथा " ते अक्षरधामने विषे पोताना साधर्म्यपणाने पाम्या एवा अनंत मुक्त भगवाननी सेवाने विषे रहे छे," त्यां अक्षरधाम शब्दथी कांति जे प्रकाश तेने कहेल छे, [६४/१ मां] आत्मा तथा ब्रह्म तथा द्रष्टा नामथी कहेल छे, [६६/४ मां] " ब्रह्मसत्तारुप प्रकाश ते पुरुषोत्तमनी मूर्तिनो छे." तथा [बीजी बाबतमां] " एकांतिक संत भगवाननी मूर्तिने अक्षरातीत समजे छे," (७१ ना पांचमा प्रश्नमां) निराकार अक्षरब्रह्म, ब्रह्मपुर, अक्षरधाम शब्दथी कहेल छे, तथा

[छट्ठी बाबतमां] धाम तथा अक्षरधाम शब्दथी कहेल छे, [७२ ना २/४ बीजा प्रश्नमां] "भगवान अक्षरने पोतानी शक्तिए करीने धरी रह्या छे," ते शक्ति शब्द श्रीजीमहाराजना प्रकाशवाचक छे, [७३ ना २/४ पांचमा प्रश्नमां] " पुरुषोत्तम भगवान तो अनंतकोटी ब्रह्मांडना आधार जे अक्षर ते थकी पण पर छे " तथा [नवमी बाबतमां] "ब्रह्मथी पर जे परब्रह्म तेनुं साक्षात् दर्शन थाय छे " तथा [१० मी बाबतमां] "ब्रह्मनो प्रकाश देखीने पुरुषोत्तम भगवानथी ब्रह्ममां अधिकपणुं माने, " (७८ ना नवमा प्रश्नमां) "अक्षरातीत छे," [अगीयारमा प्रश्नमां] "आ भगवानने आ संत ब्रह्मपुरादिक धामना निवासी छे," (सोळमा प्रश्नमां) "अक्षरातीत एवा जे आ पुरुषोत्तम भगवान तेनी इच्छाए करीने ब्रह्मांडनी उत्पत्ति थाय छे, ने पोतानी शक्तिए करीने धारी रह्या छे; " [सा० १० ना २/४ बीजा प्रश्नमां] धाम तथा श्वेतद्वीप ए बे नामथी कहेल छे, [११ ना बीजा प्रश्नमां] "साधननी न्यूनतावाळो अक्षरधामने न पामे." (१२ ना २/४ बीजा प्रश्नमां] "ब्रह्मने विषे परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान अखंड विराजे छे " [१४ ना पहेला प्रश्नमां] "भगवाननी इच्छाए तो अक्षरधाममांथी पण देह धरे छे. " (१/७ मां) "महातेज जेवो थाय " (का० ७ ना चोथा प्रश्नमां) "प्रकृति पुरुष ते अक्षरब्रह्मना तेजमां अदृश्य थइ जाय छे. पछी एकलुं सच्चिदानंद चिद्घन तेज रहे छे " (पांचमी बाबतमां) अक्षरधाम शब्दथी कहेल छे. [३/६ मां] सगुण निर्गुण, ऐश्वर्य शब्दथी कहेल छे. (लो० ३/६ मां) धाम कहेल छे अने (त्रीजी बाबतमां) ब्रह्ममोहोल कहेल छे. (४ ना पहेला प्रश्नमां) अक्षरधाम कहेल छे. (७ ना २/४ बीजा प्रश्नमां) "ब्रह्मरूप थयो तेनेज भगवाननी भक्तिनो अधिकार छे. " (१० ना ३/६ छट्ठा प्रश्नमां) सर्वात्मा ब्रह्म नामे कहेल छे. (१२ ना पहेला प्रश्नमां) "धाम रूप अक्षर तेने विषे रह्यो थको पुरुषोत्तम भगवाननी उपासना करे," (१३ ना बीजा प्रश्नमां) अक्षर धाम तथा अक्षर नामे कहेल छे. (१४ ना पहेला प्रश्नमां) "तेजना समूहमां दिव्य सिंहासन उपर दिव्यमूर्ति पुरुषोत्तम भगवान विराजमान छे." (१५ ना पांचमा प्रश्नमां) " जीव, पुरुष, अक्षर अने पुरुषोत्तमना तेजमां भेद घणो छे. " (पं० १/३ मां) "अक्षरब्रह्म छे ते तो ए भगवानना अंगनो प्रकाश छे अथवा रह्यानुं धाम छे." (२ मां) "पोताना आत्माने शुद्ध ब्रह्मरूप मानीने भगवाननुं ध्यान करवुं " (४ मां) अक्षरधाम नामे कह्युं छे. (७/२ मां) "अक्षरधाममां जेवुं भगवाननुं स्वरूप छे तेवुंज आ प्रत्यक्ष जाणवुं." (म० ३/२ मां) ब्रह्मनामे कह्या छे. (६/२ मां) अक्षरधाम नामे कहेल छे. (१० ना पहेला प्रश्नमां) ब्रह्मरूप पोतानी शक्ति कही छे. अने ए ब्रह्मने पोतानी किरण कही छे. (११/१ मां) गुणातीत जे भगवाननुं धाम त्यां गुणथी पर एवुं जे धाम कहेतां महाराजनो प्रकाश तेने गुणातीत नामे कहेल छे, (१३/२ मां) एक रस तेजने आत्मा, ब्रह्म तथा अक्षरधाम नामे कहेल छे, (२२ मां ३/४ त्रीजा प्रश्नमां) धाम नामे कहेल छे, (२४ मां) अक्षरधाम नामे कहेल छे, (२५ मां पहेला प्रश्नमां) ब्रह्मपुर धाम नामे कहेल छे, (३२/२ मां) अक्षरधाम नामे कहेल छे, [३४ मां १/२ पहेला प्रश्नमां] धाम नामे कहेल छे, (३९ ना पहेला प्रश्नमां)

चैतन्यमय ने तेजोमय एवुं भगवाननुं अक्षरधाम कहेल छे, (६२/१ मां) अक्षरधाम कहेल छे, तथा (बीजी बाबतमां) अक्षरब्रह्म कहेल छे तथा "ज्यां अमारी मूर्ति त्यांज अक्षरधामनुं मध्य छे," (४७/३ मां) धाम कहेल छे, [४८/१ मां] परमपद तथा श्वेतद्वीप नामे कह्युं छे, [५०/१ मां] "एक रस परिपूर्ण एवुं ब्रह्म स्वरूप तथा तेजोमय एवुं अक्षरब्रह्म तेने विषे मूर्तिमान एवा पुरुषोत्तम भगवान रह्या छे." [६२ बीजा प्रश्नमां] धाम कहेल छे. (६४ ना २/१ बीजा प्रश्नमां) "अक्षरधामरूपी तखत तेमां विराजमान छे" तथा (त्रीजी बाबतमां) "अक्षरधाममां रह्या थका अनंत ब्रह्मांडमां देखाय छे," (६६ ना ४/३ चोथा प्रश्नमां) अक्षरधाम कह्युं छे, (६७ मां) धाम कहेल छे, (व० ९ मां) "चिदाकाश ने मध्ये सदा भगवाननी मूर्ति विराजमान छे," (१२/१ मां) "अनंतकोटी सूर्य, चंद्रमाने अग्नि ते सरखुं प्रकाशमान एवुं जे अक्षरधाम तेने विषे सदा दिव्यमूर्ति थका विराजमान छे;" (अ० ५ ना बीजा प्रश्नमां) अक्षरधाम कहेल छे, (६ ना पहेला प्रश्नमां) अक्षरधाम नामे कह्युं छे तथा (बीजा प्रश्नमां) ब्रह्ममोहोल तथा अक्षरब्रह्म तथा गोलोक नामे कह्युं छे. (७ मां) ब्रह्ममोहोल तथा पुरुषोत्तमनुं धाम नामे कह्युं छे; (अश्ला० १ ना पहेला प्रश्नमां) अक्षरधाम नामे कहेल छे; (जे० ४ ना १/२ पहेला प्रश्नमां) निर्गुण धाम नामे कहेल छे. (५/१ मां) अक्षरधामने पमाडीए छीए; (छे० ५ ना ३/४ त्रीजा प्रश्नमां) भगवानना धाममां बहु मोटा सुखने पामे छे, (७/२ मां) ब्रह्मपुर धामने विषे भगवान सदा साकारमूर्ति विराजमान छे. तथा धाम शब्दथी कहेल छे. तथा (त्रीजी बाबतमां) छती देहेज धामने पामी रह्या छे, (९ मां) अक्षरधाम कह्युं छे, (२१/१ मां) मायाने तरीने अक्षरधामने पामे छे, तथा (छठ्ठी बाबतमां) मायापर दिव्यधाम कह्युं छे, (सातमी बाबतमां) धाम शब्दथी कहेल छे, [२२ ना ३/२ बीजा प्रश्नमां] धाम कह्युं छे, (३० ना पहेला प्रश्नमां) चैतन्यना तेजनो राशि छे तेने मध्ये पुरुषोत्तम भगवान सदा विराजे छे, (३१ मां) तेजनो समूह समुद्र जेवो जणाय छे अने ब्रह्मरूप तेजोमय भगवाननुं धाम कह्युं छे तथा ते अक्षरधामने गुणातीत कहेतां गुण थकी पर एवुं विशेषण आप्युं छे. [३३ ना २/४ बीजा प्रश्नमां] तेजना मंडळने विषे दिव्यमूर्ति एवा वासुदेव भगवानने विषे ए भक्तने स्नेह होय. (३५ ना ५/२ पांचमा प्रश्नमां) सदा पोताना अक्षरधामने विषे विराजमान छे, [३६ ना पहेला प्रश्नमां] पुरुषोत्तम भगवानने ब्रह्मज्योतिना समुहने विषे अनादि साकार मूर्ति समजवा. (३७ मां) भगवानना धाममां भक्तनो आकार पण भगवानना जेवो छे," [३८ ना पहेला प्रश्नमां] "अक्षरधामने विषे जे भगवाननो मूळ आकार छे ते तो मनुष्यना जेवो छे," [३०/४ मां] "पोतानी मूर्तिमां तथा पोताना धाममां जे सुख छे ते तो बहु भारे छे," इत्यादिक वचनामृतोमां ब्रह्म, चिदाकाश, ब्रह्ममोहोल, सच्चिदानंद, ब्रह्मपुर, सर्वाधार, तेजनोसमूह, महातेज, शक्ति, कांति, अक्षरधाम, परमपद, किरण, अक्षरब्रह्म, ब्रह्मज्योति, एकरसतेज, चिद्घनतेज, इत्यादिक विशेषणोथी श्रीजीमहाराजनी मूर्तिना प्रकाशरूप अक्षरधामने समजवुं. ॥७॥

संवत् १८७६ ना मागशर शुदि ११ एकादशीने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.
१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) इंद्रियोनी जे क्रिया छे तेने जो श्रीकृष्ण भगवानने तेना भक्तनी सेवाने विषे राखे तो अंतःकरण शुद्ध थाय छे ने अनंतकाळनां जे पाप जीवने वळग्यां छे तेनो नाश थइ जाय छे. (१) अने जो इंद्रियोनी वृत्तियोने स्त्रीयादि- १
कना विषयमां प्रवर्त्तावे छे, तो एवुं अंतःकरण भ्रष्ट थाय छे. अने कल्याणना मार्ग थकी पडी जाय छे. (२) माटे शास्त्रमां जे रीते विषय भोगव्यानुं कह्युं छे, तेवी रीते नियममां २
रहीने विषयने भोगववा, पण शास्त्रनी मर्यादाने उल्लंघन करीने भोगववा नहि अने साधुनो संग राखवो ने कुसंगनो त्याग करवो. अने ज्यारे ए कुसंगनो त्याग करीने साधुनो संग करे छे, त्यारे एने देहने विषे जे अहंबुद्धि छे ते निवृत्ति पामे छे, अने देहना संबंधीने विषे जे ममत्वबुद्धि छे ते निवृत्ति पामे छे, ने भगवानने विषे असाधारण प्रीति थाय छे, ने भगवान विना अन्यने विषे वैराग्य थाय छे, (३) पछी तेने तेज दिवस स्वामी ३
श्री सहजानंदजी महाराज दादाखाचरना दरबारमां लिंबडा सामा गोखमां विराजता हता ने दिवस पहोर एक चडयो हतो अने लिंबडा हेठे परमहंसनी सभा बेठी हती. अने गृहस्थ सत्संगी पण बेठा हता अने सांख्ययोगी, कर्मयोगी बाइयोनी सभा पण हती.
२ ते समाने विषे श्रीजी एम बोल्या जे, (२) हे परमहंसो ! जेने जे अंगनी अतिशे दृढता होय ते सर्वे पोत पोताना अंगनी वात करो, ने जे अंग काचुं पोचुं जणातुं होय ते अंगनी करशो मां. ते दृढ अंगनी विक्ति जेने भगवानना स्वरूपनो अति दृढ निश्चय होय तो ते अंगनी वात करज्यो ने जेने आत्मज्ञाननुं अति बळ होय तो ते अंगनी वात करज्यो जे हुं देह नथी, आत्मा छुं ने जेने निर्लोभी तथा निष्कामी तथा निःस्पृही तथा निःस्वादी तथा निर्मानी ए पंच वर्त्तमानमां जे जे अंगनी अति दृढता होय ते ते अंगनी सर्वे वात कहो.पछी तो श्रीजी पोते प्रसन्न थइने बोल्या जे,प्रथम तो अमे अमारा अंगनी वात करीए, पछी तमे तमारा अंगनी वात कहेज्यो. श्रीनरनारायणना प्रताप थकी अमने एवुं वर्ते छे जे हुं आत्मा छुं,अछेद्य छुं,अभेद्य छुं, सच्चिदानंद छुं अने मारी मोटप छे ते तो स्वस्वरूप-नो प्रकाश तथा श्रीनरनारायणनी उपासना ते वडे छे, पण भारे भारे वस्त्र तथा अमूल्य आभूषण तथा रथ, पालखी हाथी घोडा तेनी जे अस्वारी ते वडे करीने मोटप नथी अने जगत् बधीना माणस ने जगत बधीना राजा सत्संगी थइने हाथ जोडीने उभा रहे ते वडे करीने पण अमारे मोटाइ नथी अने आ सत्संगी सर्वे छे ते विमुख थइ जाय ने मने कोइ माने नहि अने पहेरवाने वस्त्र ने रहेवाने जग्या न मळे तेणे करीने मारी हिम्मप

वाती नथी. मारी मोटप तो श्रीनरनारायणनी उपासना वडे करीने हुं ब्रह्म छुं, हुं आत्मा छुं एवी रीतनी जे मारी मोटप ते तो हुं मुकवाने इच्छुं अथवा बीजा कोइ ब्रह्मादिक देव छे ते मुकावाने इच्छे तोयपण मारी मोटप टळे नहि अने अमारे श्रीनरनारायणनी उपासना छे ते पोतानुं जे ब्रह्मरूप तेने विषे परब्रह्म, परमात्मा एवा जे श्रीनरनारायण तेमनी साकार मूर्ति तेनी उपासना छे, ते कोइ पोताने अनुभवे करीने कहे अथवा शास्त्रे करीने कहे जे, परब्रह्म जे पुरुषोत्तम ते आकारे रहित छे, तो ते वात अमने मनाय नहि, कांजे ते पुरुषोत्तमनी कृपा थकी ए पुरुषोत्तमनुं साकार स्वरूप तेने हुं प्रत्यक्ष देखुं छुं. अने अमारा हैयामां एम समझाय छे जे, परब्रह्म एवा जे पुरुषोत्तम तेने आकारे रहित कहे छे तेने परमेश्वरनी वात पण समझाणी नथी ने तेने ते स्वरूपनुं दर्शन पण नथी अने ते शास्त्रने समजी जाणता नथी. अने शास्त्रमां जे भगवाननुं निराकार स्वरूप कह्युं छे, तेतो मायिक आकारने खोटा करवाने अर्थे कह्युं छे, कांजे भगवाननी मूर्तिने विषे मायिक जे पंचभूत, तथा दश इंद्रियो तथा चार अंतःकरण ते प्राकृतजीवना जेवां नथी, माटे शास्त्रे निराकार कह्या छे. अने भगवानने अलौकिक आकार तो छे खरो, जो भगवान्ने नेत्र छे तो ते नेत्रे करीने पुरुषद्वारे माया सामुं जुवे छे. त्यारे ते मायामांथी अनंतकोटी ब्रह्मांड उत्पन्न थाय छे. ते ब्रह्मांडोने विषे ब्रह्मादिक देव अनंतकोटी उत्पन्न थाय छे, अने ते ब्रह्मांडमां सरख्या एवा जे स्थावर, जंगम, जीव ते सर्वे उत्पन्न थाय छे, माटे भगवानने नेत्र पण छे. अने जे दहाडे स्थावर जंगम सृष्टि सर्वेनो नाश थाय छे, ने महा प्रलय थाय छे, त्यारे एकज पुरुषोत्तम रहे छे, ते दहाडे वेद आवीने भगवाननी स्तुति करे छे. ते स्तुतिने सांभळीने भगवान विश्वने सरजे छे, तो भगवानने कान पण छे, एवी रीते चौदे इंद्रियो छे पण अलौकिक छे, अने मनवाणीथी पर छे, अने रामकृष्णादिकरूपे करीने जीवना कल्याणने अर्थे प्रवर्ते छे, त्यारे अतिशे दया करीने जीवने दृष्टिगोचर थाय छे, ने एम धारे छे जे हुं दृष्टिगोचर नहि थाउं तो जीव मारुं ध्यान तथा स्मरण, पूजन, अर्चनादिक शी रीते करशे ! माटे ज्ञानी, अज्ञानी सर्वेने प्रत्यक्ष जणाय एवा थाता हवा पण भगवान तो जेवा छे तेवाज छे, ने जीवने दृष्टिगोचर थया माटे कांइ मायिक एवा जे देहने इंद्रिये युक्त नथी माटे जे भगवानने निराकार कहे छे ते अमने कोइ काळे मनाय नहि. अने ते श्री नरनारायणनी उपासनाने प्रतापे करीने आ ब्रह्मांडनुं राज्य आवे, अने ब्रह्मांडमां जेटली देवांगना आदि देहने स्त्रियो छे ते सर्वे आवीने सेवामां हाजर उभी रहे, अने जेटलां ब्रह्मांडमां सारां पदार्थ छे ते सर्वे आणीने हाजर करे तो पण ए सर्वे मळीने अमने मोह पमाडवा समर्थ नथी. अने अमे धारीए जे हुं मोह पामीने एमां बंधाउं तो पण कोइ रीते मारे बंधनज थाय नही, एवी रीते मारे इष्टदेवनी कृपाए

करीने स्वस्वरूपनी दृढता छे. अने कोइने दिकरो देवो के कोइने द्रव्य देवुं के कोइ मुवाने जीवतो करवो, के कोइने मारवो ए तो अमने नथी आवडतुं, पण जीवनुं जे रीते करीने कल्याण थाय अने जीवने भगवानना धाममां पोंचाडवो ते तो अमने आवडे छे. अने हवे तो अमे बधु नही कहीए, जो बोलीए तो बोलतां बोलतां बधु बोलाइ जवाय, एवां वचन कहीने सुंदर शरद ऋतुना कमळ सरखां नेत्रे करीने सर्वे परमहंस सामुं जोइने हसते मुखे संतो प्रत्ये बोल्या जे, हे संतो ! हवे तमे तमारा अंगनी वात कहो. पछी पोते एम बोल्या जे अमे ने तमेतो एक अंगवाळा छैए,माटे अमारा अंगमां तमारो भाग छे माटे अमे कह्युं ते रीते सर्वे दृढ निश्चय राखज्यो. एवी रीते श्रीजीए पोतानु अंग कही देखाडयुं ते भक्तजनने अर्थे छे. ॥ ४ ॥ इति वचनामृतम् ॥ ८ ॥

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (२) छे. तेमां पहेलामां इंद्रियोनी क्रियाने अमारी तथा अमारा भक्तनी सेवामां राखवाथी अंतःकरण शुद्ध थाय छे (१) अने स्त्रीआदिकना विषयमां प्रवर्तावे तो भ्रष्ट थइने कल्याणना मार्गमांथी पडी जाय छे. (२) अने शास्त्रना नियम प्रमाणे वर्तीने एकांतिक साधुनो संग करवाथी अमारी मूर्ति विना मायिक वैभवमां तथा मूळ अक्षरादिकना ऐश्वर्यमां तथा अमारा तेजरूप अक्षरधाममां क्यांइ प्रीति रहेती नथी. (३) बीजामां पदार्थ वडे करीने तथा माने करीने मोटप माने नहि, एक अमारी सदा साकार मूर्तिनी उपासना वडे करीने तथा पोताना आत्माने अमारा तेजरूप मानवे करीनेज मोटप माने, ने ते मोटप कोइनी मुकावी मुके नहि, ने अमारी मूर्तिने सदाय देखे, ने अक्षरादिकना ऐश्वर्यमां बंधाय नहि, ने मायिक सुख कोइने आपवुं ते रुचे नहि, केवळ जीवोने अमारा धाममां लइ जवा एज रुचे, ए अमारा मुक्तनुं अंग छे, एवं अंग सर्वेने करवुं एम कह्युं छे. (४) बाबतो छे.

१ प्र० (३/३ बीजा प्रश्नमां) श्रीजीमहाराजे अमारे नरनारायणनी उपासना छे, अने नरनारायणना प्रतापे करीने हुं आत्मा छुं एवुं वर्ते छे एम कह्युं, तथा (प्र० २/८ मां) पण अमारा हृदयमां नरनारायण प्रगट विराजे छे. अने अमे अनादि मुक्त छीए एम कह्युं छे, तथा (८/८ मां) पोताने सत्पुरुष कह्या छे अने नरनारायणने भगवान कह्या छे अने परथारामां (नवमी बाबतमां) सर्वे अवतारो रूपे पोते दर्शन आपीने पोतानुं सर्वोपरिपणुं जणाव्युं छे तथा [जे० ४ ना ३/४ पहेला प्रश्नमां तथा १/१ मां] अमे प्रगट नरनारायण छीए एम कह्युं छे, तथा (अ० १/१ मां) हुंज पुरुषोत्तम छुं अने सर्वे मारुं कर्युंज थाय छे एम कह्युं छे, ने परस्पर विरोध आव्यो ते केवी रीते समजवुं ?

१ उ० आमां तथा (२/८ मां) तथा [८/८ मां] श्रीजीमहाराज मुक्तभावमां रहीने बोल्या छे, अने परथारामां पोतानुं सर्वोपरि ऐश्वर्य जणाव्युं छे, अने (जे० ४ तथा ५ मां) तथा [अ० ७मां] पोते भगवानपणे बोल्या छे. माटे ज्यां अमे भगवान छीए एम कह्युं होय त्यां पोते भगवानपणे बोल्या छे एम जाणवुं; अने ज्यारे अमे भगवान छीए एम न कह्युं होय त्यारे मुक्तभावे बोल्या छे एम जाणवुं.

२ प्र० ब्रह्मादिक देव मोटप मुकावे तोय मुकाय नहि एम कह्युं ते देव किया जाणवा ?

२ उ० श्रीजीमहाराजे पोताने मिषे पोताना मुक्तनी स्थिति कही छे ने आदि सृष्टिकर्ता मुळअक्षर छे तेने आ ठेकाणे ब्रह्मा कह्या छे, अने आदि शब्दे करीने ब्रह्मकोटीने कह्या छे ते ब्रह्मकोटी तथा इश्वरकोटीना ऐश्वर्यमां सारप्य न मनाय ने तेमां लोभाय नहि, ते अक्षरादिकनी मुकावी मोटप न मुकी कहेवाय एम कह्युं छे ते एवो पोताना मुक्तनो महिमा कह्यो छे. पण अक्षरादिक कोई मोटप मुकावा इच्छेज नहि केमजे श्रीजीमहाराजना मुक्त तो मूळअक्षरादिक थकी पर छे माटे एमनी मोटप मुकावाने कोई समर्थ होयज नहि.

३ प्र० आ ठेकाणे भगवानने अलौकिक इंद्रियो छेज एम कह्युं ने (प्र० ७१ ना त्रीजा प्रश्नमां) तो ज्यारे पृथ्वीने विषे भगवान प्रगट थाय छे, त्यारे तत्त्वने अंगीकार करे छे, ते तत्त्व ब्रह्मरूप छे एम कह्युं छे.ते परस्पर विरोध आव्यो अने वळी (म० ६५ना बीजा प्रश्नमां) भगवाननी मूर्तिमां त्यागभाग छेज नहि एम कह्युं छे तथा (पं० ७/२ मां) तथा (छे० ३१ मां) धाममां रही जे मूर्तिने मनुष्यरूप मूर्ति ते एकज छे; तेमां एक रोमनो पण फेर नथी एम कह्युं छे ते केम समजवुं ?

३ उ० भगवानने विषे देह देही भाव नथी. भगवान तो दिव्य कैवल्यमूर्तिज छे. तेमां त्याग भाग नथी. एकज वस्तु छे. जेम साकरना रसनी मूर्ति करी होय तेने नासिका, हाथ, पग, मुखारविंद कर्या होय ते साकरनांज छे पण बीजी वस्तु नथी; तेम भगवान दिव्य मूर्ति छे तेमां बीजी वस्तु नथी पण हस्त चरण मुखारविंदादिक अवयवोने लईने इंद्रियो कही छे पण पोते तो सदाय साकार मूर्तिज छे तेनी विशेष दृढता कराववाने अर्थे कह्युं छे; अने (७१ मां) तत्त्वनो अंगीकार करे छे एम कह्युं छे ते ज्यारे पृथ्वी उपर दर्शन आपे छे त्यारे संकल्प करे छे जे, अमने ज्ञानी अज्ञानी सर्वे मनुष्य जेवा देखो; एम संकल्प करे छे त्यारे मनुष्य जेवा देखाय छे, माटे अंगीकार करे छे एटले संकल्प करे छे एम समजवुं, अने (प्र० ३/७ मां) मुक्तने चैतन्यमूर्ति कह्या छे ते मुक्त पण चैतन्यमूर्ति छे. अने मूळअक्षरकोटी तथा ब्रह्मकोटी तथा मूळपुरुषइश्वरकोटी ते पण चैतन्यमूर्तियो छे; तो श्रीजीमहाराज चैतन्यमूर्ति होय तेमां शुं कहेवुं ? एनो होयज.

४ प्र० स्थावर जंगम सृष्टि कही ते कइ जाणवी ?

४ उ० पर्वत वृक्षादिक न चाले तेने आ ठेकाणे स्थावर सृष्टि कही छे; अने मनुष्य, पशु, पक्षी, आदिक जे हाले चाले तेने जंगम सृष्टि कही छे.

५ प्र० ज्यारे महाप्रलय थाय छे. त्यारे एक भगवान रहे छे; ते भगवाननी वेद स्तुति करे छे; एम आमां कह्युं; अने (म० ६४ ना २/३ बीजा प्रश्नमां) सर्वे ब्रह्मांड वसेज छे; पण एक सामटो प्रलय थतो नथी एम कह्युं ते केम समजवुं ?

५ उ० मूळपुरुष घणा छे ते [म० ३१ ना २/५ बीजा प्रश्नमां] कह्या छे तेमांना एक मूळपुरुषना कार्यनो प्रलय थाय छे तेने महाप्रलय कहे छे; ने सृष्टि समे मूळपुरुष द्वारे वेद पुरुषोत्तमनी स्तुति करे छे.

६ प्र० श्रीजीमहाराजनी उपासना वडे करीने हुं आत्मा छुं; सच्चिदानंद छुं; ब्रह्म छुं; ए मोटप

टाळी टळे नहि अने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने सदाय प्रत्यक्ष देखे अने एने मोह पमाडवा कोइ समर्थ थाय नहि; अने कोइने मायिक पदार्थ आपवुं ते गमे नहि केवळ जीवोनो आत्यंतिक मोक्ष करवो एज गमे ते मुक्तने केवी स्थितिवाळा जाणवा ?

६ उ० (व० ३ ना त्रीजा प्रश्नमां) कह्या एवा सिद्धदशावाळा परम एकांतिकनी स्थिति कही छे.

७ प्र० नरनारायण पुरुषोत्तम अने स्वामिनारायण नामनो शो अर्थ हशे ?

७ उ० नरना जेवो छे आकार जेमनो माटे नराकार अने नार जे मुक्तोनो समुह तेज छे निवासस्थान जेमनुं ते नारायण कहेवाय. माटे नराकार सता नारायण ते नरनारायण कहेवाय. माटे नरनारायण एवुं श्रीजीमहाराजनुं नाम छे. अने पुरुष जे मुक्तो तेमने मध्ये उत्तम माटे पुरुषोत्तम एवुं श्रीजीमहाराजनुं नाम छे. अने स्वामी एटले नियंतावाचक छे; ते जे स्वतंत्र ऐश्वर्यवान होय तेने स्वामी कहेवाय ते मूळअक्षरादिक सर्वे अवतारो तथा मुक्तो तेमना स्वामी छे माटे स्वामिनारायण एवुं श्रीजीमहाराजनुं मुख्य नाम छे ते (प्र० १४ ना २/६ बीजा प्रश्नमां) पोताने सर्वेना स्वामी कह्या छे; (२१/८ मां) अमे सर्वेना स्वामी छिये. (६३ ना त्रीजा प्रश्नमां) वैराजना तथा [चोथी बाबतमां] मुक्तोना स्वामी कह्या छे. [सा० १ ना बीजा प्रश्नमां] अनंतकोटी ब्रह्मांडना पतिना अमे स्वामी छिये (का० १० ना १/५ पहेला प्रश्नमां) अमे मूळपुरुष इश्वरकोटी, ब्रह्मकोटी, अक्षरकोटी ते सर्वेना स्वामी छिये (२/३ बीजा प्रश्नमां) अमारी स्वामीसेवक भावे भक्ति करवी. (लो० १ ना आठमा प्रश्नमां) अमारी स्वामीसेवक भावे उपासना करवी (म० ३/६ मां) अमे सर्वेना स्वामी छिये अने (बीजी बाबतमां) अमारी स्वामीसेवक भावे उपासना करवी (१८ मां) अमे सर्वेना स्वामी छिये (३१ ना २/५ बीजा प्रश्नमां अमे सर्वेना स्वामी छीए. (६७ मां) अमारा मुक्त अमारा सरखा थाय, तो पण अमारे विषे स्वामी सेवकपणुं रहे छे (अ० ४/६ मां) अमे सर्वेना स्वामी छिये. (५ ना २ बीजा प्रश्नमां) अमे सर्वेना स्वामी छीए (६ ना ३/३ बीजा प्रश्नमां) अक्षरादिक सर्वेना स्वामी छिये. [८/६ मां) अमारा भक्त उपर क्रोध उपजे त्यारे अमे तमारा स्वामी छिये, माटे तेने अमारा भक्त जाणीने तेने नमस्कार करवो. (छे० ३७ मां) अमे सर्वे मुक्तना स्वामी छिये. (३१/५ मां) अमे सर्वेना स्वामी छिये अने अमे एकज भगवान छिये एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे; माटे स्वामी शब्द श्रीजीमहाराजनुं विशेषण छे, माटे स्वामीनारायण नाममां मूळअक्षरादिक कोइ अवतारोने भेळा गणवा नहि अने मुक्तोने पण गणवा नहि.

८ प्र० मूर्तिमान मूळअक्षरने तमे श्रीजीमहाराजना अवतार कहो छो ते किया वचनामृतमां छे ?

८ उ० [प्र० ६/६ मां तथा ३३ ना पहेला प्रश्नमां] उत्पत्तिकाळे अमे अक्षररूपे वर्तीए छीए, तथा (४१ मां) अमे सृष्टि समयने विषे अक्षरमां प्रवेश करीए छिये, तथा (६३ ना त्रीजा प्रश्नमां) अमे अक्षरमां प्रवेश करीए छिए एम कह्युं छे माटे अक्षर श्रीजीमहाराजना अवतार छे. त्यां हरिवाक्य सुधासिंधुना (४१ तरंगमां) कह्युं छे.

श्रीकृष्णो भगवानस्ति सर्वकारण कारणं । प्रकाशकानां सर्वेषां सचैवास्ति प्रकाशकः ॥ १० ॥ सर्गादावक्षरं ब्रह्म वीक्षतेसिसृक्षया । अभुज्येतां तदात्र कीनौ प्रकृतिपुरुषौ॥

॥११॥ ततोऽक्षरात्मनामाया पुरुषाभ्यां बभूवतुः। तेनेक्षिताभ्यांमकटौ प्रधानपुरुषौमुने॥१२॥

अर्थ—सर्व कारणना कारण साक्षात् श्रीकृष्ण भगवान छे अने सर्वने प्रकाशना करनारा अक्षरादिक तेने पण प्रकाशने करनारा छे ॥१०॥ ते भगवान उत्पत्ति समयने विषे सृजवानी इच्छाथी अक्षरब्रह्मना सन्मुख जुवे छे ते समयने विषे ते अक्षरने विषे लीन रहेला एवा प्रकृतिपुरुष ते जाग्रत थाय छे ॥ ११ ॥ ते वार पछी अक्षरद्वाराए करीने ते भगवान तेमणे जोया एवा जे मूळप्रकृतिने पुरुष ते द्वाराए प्रधान ने पुरुष प्रगट थता हवा ॥ १२ ॥ तथा तरंग (५१ मां)— तद्दृष्ट्या नेक्ष्यते माया पुमानेवैकईक्ष्यते ॥ आविर्भूतोऽस्ति सोप्यादाऽवक्षरस्यैकदेशतः ॥ १७ ॥ अंतर्बहिश्च तं व्याप्यस्थितं तत् कृष्णधाम च ॥ कृष्णस्यैवांगतेजश्च सच्चिदानंद लक्षणम् ॥ १८ ॥ अनेक कोटि ब्रह्मांडाधारोऽनंतमनादि च ॥ तदीय दृष्ट्या त्वऽस्त्येकं ब्रह्मैवनतुपुरुषः ॥ १९ ॥ तत्रस्थितोऽस्तिभगवान् सर्व कारण कारणम् ॥ अनेक कोटि ब्रह्मांडोत्पत्ति स्थिति लयक्रियः ॥ २० ॥ सर्वात्मात्मा स्वतंत्रश्च सर्वशक्तिपतिः प्रभुः ॥ परात्परतरः शुद्धः ईश्वराणामपीश्वरः ॥ २१ ॥ सर्वत्रकारणत्वेनाऽन्वितोऽस्तिनिजतेजसा ॥ व्यतिरिक्तश्च धाम्निस्वे राजतेऽनेकशक्तिभिः ॥ २२ ॥

अर्थः—ते मूळपुरुषनी दृष्टिए करीने जोइए तो माया नथी देखाती, एक पुरुषज देखाय छे. ते पुरुष पण प्रथम सृष्टिकाळमां अक्षरना एक देशमांथी उत्पन्न थयेल छे. [१७] ते पुरुषमां अक्षर अंतर्यामी शक्तिए करीने व्यापीने रहेल छे अने बहार ते पुरुषना आधारभूत थइने रहेल छे अने ते अक्षर कृष्ण (भक्तना आधार अने दुःख हरनार श्रीस्वामिनारायण)नुं धाम छे, अने सत् चित् ने आनंद छे लक्षण जेनुं एवुं जे धाम ते कृष्ण (आ प्रगट श्रीकृष्ण) ना अंगनुं तेज छे. [१८] ते तेजरूप अक्षरधाम अनंतकोटी ब्रह्मांडनुं आधार ने अनंत एटले बीजा सर्व धामथी मोटुं ने अनादि छे, ते तेजरूप अक्षरनी दृष्टिए जोइए तो ए एकज ब्रह्म छे, पण बीजा कोइ पुरुष तथा मूळअक्षरादिक छेज नहि. (१९) ने सर्व कारणनुं कारण एवुं जे ब्रह्म तेने विषे अनंतकोटी ब्रह्मांडनी उत्पत्ति, स्थिति, लय रूपी छे क्रिया जेनी एवा जे भगवान ते रहेला छे. [२०] अने अक्षरादि सर्वना आत्मा अने स्वतंत्र ने सर्वे शक्तिना पति ने प्रभु अने सर्व अक्षरादिक थकी पर एवुं जे तेजरूप ब्रह्म ते थकी परने शुद्ध अने इश्वर जे अक्षरादिक तेना पण नियामक छे. (२१) अने मूळपुरुष तथा वासुदेव, ब्रह्म, अने अक्षर ए सर्वने विषे तेजरूप ब्रह्म तेणे करीने अन्वयपणे रह्या छे; अने व्यतिरेक पणे पोताना तेजरूप धामने विषे अनेक शक्तियो तेमणे युक्त रहेला छे. (२२) आवी रीते मूळअक्षरादिक सर्वेने विषे तेजद्वाराए करीने श्रीजीमहाराज व्यापीने रहेला छे. माटे मूळअक्षरादिक सर्वे महाराजना अवतार छे एम जाणवुं.

९ प्र० बोलवां बोलवां वातु बोलाई जवाय एम कह्युं ते बोलवानुं शुं बाकी हशे ?

९ उ० श्रीजीमहाराज पोते भगवान छे, ते अने भगवान बीजो एम नथी कह्युं ते बाकी छे; अने

श्रीजीमहाराजे बोलवानुं बाकी छे एम सुचव्युं तो पण बोलवानुं शुं बाकी हशे एम केटलाक न समज्या तेथी श्रीजीमहाराज हसता हवा.

१०प्र० अमारा अंगमां तमारो भाग छे एम कयुं ते अंग कियां जाणवां ?

१०उ० उपर कह्यो जे श्रीजीमहाराजनो निश्चय, तथा पंच वर्तमाननी दृढता तथा पोताने ब्रह्मरूप मानीने, श्रीजीमहाराजनी साकारपणे उपासना करवी तथा श्रीजीमहाराजना मनुष्य स्वरूपने दिव्य समजवुं इत्यादिक अंग कह्यां छे ते अंग तमारे पण दृढ करवां एम भाग कह्यो छे. ॥ ८ ॥

संवत् १८७६ ना मागशर शुदि १२ द्वादशीने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) श्रीकृष्ण भगवाननो प्रत्यक्षपणे निश्चय कर्यो होय ने तेनी भक्ति करतो होय ने तेनां दर्शन करतो होय तोपण जे पोताने पूर्णकाम न माने ने अंतःकरणमां न्युनता वर्ते जे गोलोक, वैकुंठादिक धामने विषे जे आमे आ भगवाननुं तेजोमय रूप छे, ते मुने ज्यां सुधी देखाणुं नथी त्यां सुधी मारुं परिपूर्ण कल्याण थयुं नथी,एवुं जेने अज्ञान होय तेना मुखथी भगवाननी वात पण न सांभळवी.(१) १

अने जे प्रत्यक्ष भगवानने विषे दृढ निष्ठा राखे छे, ने तेने दर्शने करीनेज पोताने परिपूर्ण माने छे, ने बीजुं कांइ नथी इच्छतो तेने तो भगवान पोते बळात्कारे पोताना धामने विषे जे पोतानां ऐश्वर्य छे ने पोतानी मूर्तियो छे तेने देखाडे छे माटे जेने भगवानने विषे अनन्य निष्ठा होय तेने प्रत्यक्ष भगवान विना बीजुं कांइ इच्छवुं नहि. (२) २

इति वचनामृतम् ॥९॥

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां अमारी मनुष्यरूप मूर्तिने दर्शने करीनेज पोताने परिपूर्ण न माने तेना मुखनी वात न सांभळवी. (१) अने अमारी आ मनुष्यरूप मूर्तिने विषे दृढ निष्ठा राखीने, आ प्रत्यक्ष मूर्तिना दर्शने करीनेज जे भक्त पोताने परिपूर्ण माने तेने अमे अमारा धामने विषे जे अमारां ऐश्वर्यने मूर्तियो छे तेने देखाडीए छीए, एम श्रीजीमहाराजे कयुं छे. (२) बाबतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां अमारा मनुष्य स्वरूपने दर्शने करीने परिपूर्ण न माने तेना मुखनी वात न सांभळवी एम कयुं तेनो शो हेतु हशे ?

१ उ० श्रीजीमहाराज जीवोना मोक्षने अर्थे मनुष्य जेवा थइने दर्शन आपे छे तो पण जेवा अक्षरधाममां दिव्य साकार मूर्ति छे, तेवाने तेवाज दिव्य छे तेमने विषे मनुष्यभाव कल्पे छे ते द्रोष छे माटे तेनी वात सांभळवानी ना पाडी छे.

२ प्र० धामने विषे मूर्ति छे ते अने मनुष्यरूप मूर्ति एक जणायानो शो उपाय हशे ?

२ उ० धाममांथी आवेला मुक्तना समागमथी दिव्यमूर्ति ने मनुष्यमूर्ति एक समजाय छे.

३ प्र० धाममांथी आवेला सिद्धमुक्तनां लक्षण केवां होय ?

३ उ० एवा सिद्धमुक्त श्रीजीमहाराजना धाममां तथा श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां रह्या थका श्रीजीनी ईच्छाथी आ लोकमां मनुष्यरूपे देखाता होय, ते मुक्त जेम अक्षरधाममां श्रीजीमहाराजना भेळा होय, तेमज आंही पण एमना भेळा महाराज होय ने तेमनी साथे बोले चाले ने सर्व क्रिया करे ने एवा मुक्त अनंत जीवोने दर्शन आपीने धाममां पहोंचाडे ते देह मुकनार तथा बीजा पण देखे ने सर्वेना अंतरनी वात कहे, कांइ पण अजाण्युं होय नहि, एवां लक्षण जेमां होय तेमने सिद्धमुक्त जाणवा.

४ प्र० श्रीजीमहाराज मनुष्यरूपे प्रत्यक्ष हता तेवा प्रत्यक्ष आज केवी रीते जाणवा ?

४ उ० श्रीजीमहाराजे पोतानी दिव्य मूर्तिने मनुष्यरूपे देखाडी हती, तेज मूर्तिने आज प्रतिमा रूपे देखाडे छे, माटे श्रीजीमहाराजनी प्रतिमा ते प्रत्यक्ष श्रीजीमहाराज छे. ते प्रतिमाने दिव्य न जाणे त्यां सुधी कोटी साधन करे तो पण कल्याण थाय नहि, माटे आज प्रतिमा छे तेज दिव्य मूर्ति छे अने परोक्षशास्त्रमां प्रतिमा उरुकाळे कल्याण करे तथा प्रतिमापूजकने कनिष्ट कह्या छे, परंतु श्रीमुखे तो (म० ४८ तथा ६८ मां) "अमारी मूर्ति तं अमे पंडेज छीए अने अमारी मूर्तिनी मर्यादा न राखे ने फेल फतुर करे तेने अमारो निश्चय नथी, अने ते पाखंडी छे, अने तेनुं कल्याण नहि थाय " एम कह्युं छे. माटे पोतानी मूर्तिने माटे उरुकाळवाचक कलम श्रीमुखे बाद करी छे, तेथी प्रतिमा ते श्रीजीमहाराज पोतेज छे एम जाणवुं.

५ प्र० बीजी बाबतमां धामने विषे ऐश्वर्य कह्यां ते कियां हशे ?

५ उ० (का० ई आठमामां) सगुण निर्गुणरूप अनंत ऐश्वर्य पोतानी मूर्तिना तेजमांथी प्रगट थाय छे अने लीन थाय छे एम कह्युं छे ते ऐश्वर्य जाणवां.

६ प्र० श्रीजीमहाराजनी मूर्ति तो एक छे अने बहु देखाडे छे एम कह्युं ते कइ जाणवी ?

६ उ० श्रीजीमहाराजना तेजरूप अक्षरधाममां तथा मूर्तिमां मुक्त रह्या छे ते श्रीजीमहाराजना सरखाज छे, ते माटे मुक्तोने पोतानी मूर्तियो कही छे ते (म० ६७ मां) कह्युं छे जे अमारा भक्त अमारा सरखा थाय छे, तेनां दर्शन करावेछे.

७ प्र० मूर्तिमां मुक्त रहे छे एवुं कया वचनामृतमां कह्युं छे ?

७ उ० [सा० ११ ना ½ पहेला पक्षमां] मुक्त मूर्तिमां रहे छे, एम कह्युं छे. ते मुक्तोनी अनादि मुक्त एवी संज्ञा छे.

८ प्र० [सा० ११ मां] तो लक्ष्मीजीनी पेठे क्यारेक मूर्तिमां लीन रहे छे अने क्यारेक नोखा रह्या थका सेवामां रहे छे, एम कह्युं छे पण सदाय मूर्तिमां रहे छे एम कह्युं नथी माटे अनादि मुक्त सदाय मूर्तिमां रहे छे के क्यारेक रहे छे ?

८ उ० अति स्नेहे करीने लीन थाय छे एम कह्युं छे माटे अनादिमुक्त अति स्नेहवाळा छे ते (म० ५६ मां) अतिशे प्रीतिवाळा गोपाळानंद स्वामीने कह्या छे एवा अनादिमुक्त क्यारेय

बहार आवता नथी. अने बहार आवे छे एम कह्युं छे ते श्रीजीनी इच्छाथी जीवोनो उद्धार करवा सारु मूर्तिमां रह्या थका बहार एटले जगतने विषे दर्शन आपे छे, ते बहार कह्या छे अने अनंत जीवोनो उद्धार करे छे ते सेवा कही छे.

९ प्र० 'अनादिमुक्त' कहो छो ते किया वचनामृतमां कह्युं छे ?

९ उ० [प्र० ३२ ना पहेला प्रश्नमां] नारद सनकादिकने अनादिमुक्त कह्याछे तथा (प्र० २६ मां) श्रीजीमहाराजे "हुं अनादिमुक्त छुं" एम कह्युं छे, माटे अनादिमुक्तनी संज्ञा छे अने "हुं अनादिमुक्त छुं," एम कह्युं ते परम एकांतिकथी अनादिमुक्तनुं अधिकपणुं दर्शाव्युं छे. ॥९॥

संवत् १८७६ ना मागशर शुदि १३ तेरशने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) अमे वेंकटाद्रिथी सेतुबंध रामेश्वर जाता हता, त्यां एक सेवकराम नामे साधु हतो ते श्रीमद्भागवतादिक पुराणने भण्यो हतो ते मार्गमां चालतां मांदो पड्यो, तेनी पासे रुपैया हजारनी सोना म्होरो हती, पण चाकरीनो करनारो कोइ नहि माटे रोवा लाग्यो. पछी तेने अमे कह्युं जे कांइ चिंता राखशोमां तमारी चाकरी अमे करशुं. पछी गामने बहार एक केळांनी फुलवाडी हती, तेमां एक वडनो वृक्ष हतो ते वडना वृक्षने विषे हजारो भूत रहेतां पण ते साधु तो चाली शके एवो रह्यो नहि, ने अतिशे मांदो थयो ते उपर अमने अतिशे दया आवी पछी ते ठेकाणे अमे ते साधुने केळनां पत्र लावीने हाथ एक उंची पथारी करी आपी अने ते साधुने लोहिखंड पेट बेसणुं हतुं तेने अमे धोता ने चाकरी करता, ने ते साधुतो पोताने जेटलुं जोइए तेटलुं अमारी पासे खांड, साकर, घी, अन्न ते पोताना रुपैया आपीने मगावतो ते अमे लावीने रांधी खवरावता ने अमो वस्तिमां जइने जमी आवता, ने कोइक दिवस तो अमने वस्तिमां अन्न मळतुं नहि त्यारे अमारे उपवास थातो. तो पण कांइ दिवस ते साधुए अमने एम कह्युं नहि जे अम पासे द्रव्य छे, ते आपणे बेने काजे रसोइ करो ने तमे पण अम भेळा जमो. पछी एम सेवा करते थके ते साधु बे मासे कांइक साजो थयो. पछी सेतुबंध रामेश्वरने मार्गे चाल्या त्यारे तेनो भार मण एक हतो ते अमारे पासे उपडावतो ने पोते तो एक माळा लइने चालतो ने देहे पण साजो ने एक शेर घी जमीने पचावे एवो समर्थ थयो तो पण भार अमारे पासे उपडावे ने पोते अमथो चाले, ने अमारी प्रकृति तो एवी हती जे, भार नामे तो एक रुमाल पण राखता नहि. माटे तेने साधु जाणीने अमे एनो मण एकनो भार उपाडी चालता. (१) एवी रीते ते साधुनी १
अमे चाकरी करीने साजो कर्यो, पण ते साधुए अमने एक पैसाभार अन्न आप्युं नहि.

पछी अमे तेने कृतघ्नी जाणीने तेना संगनो त्याग कर्यो, एवी रीते जे मनुष्य कर्या कृत्यने न जाणे तेने कृतघ्नी जाणवो. अने कोइक मनुष्ये कांईक पाप कर्युं ने तेणे ते पापनुं यथाशास्त्र प्रायश्चित्त कर्युं, ने वळी तेने ते पापे युक्त जे कहे तेने पण ते कृतघ्नी जेवो पापी जाणवो. ॥ २ ॥ इति वचनामृतम् ॥१०॥

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१)छे.तेमां श्रीजीमहाराजे मांदानी तथा निराधारनी सेवा करवी, एम त्यानुं अधिकपणुं जणाव्युं छे. (१) अने कृतघ्नीनुं लक्षण कह्युं छे अने पायश्चित्त कर्युं होय तेने पापे युक्त कहे तेने तेना जेवोज पापी कह्यो छे. [२] बावत छे ॥१०॥

संवत् १८७६ ना मागशर शुदि १४ चौदशने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी ब्रह्मानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (१) हे महाराज ! वासनानुं शुं रूप छे ? त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे, पूर्वे जे विषय भोगव्या होय, दीठा होय ने सांभळ्या होय तेनी जे अंतःकरणने विषे इच्छा वर्ते तेने वासना कहीए. अने वळी जे विषय भोगव्यामां न आव्या होय ने तेनी जे अंतःकरणने विषे ईच्छा वर्ते तेने पण वासना कहीए. (१) १

२ त्यारे मुक्तानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (२) हे महाराज ! भगवाननो एकांतिक भक्त केने कहीए ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेने भगवान विना बीजी कोई वासना न होय ने पोताने ब्रह्मरूप मानीने भगवाननी भक्ति करतो होय ते एकांतिक भक्त कहेवाय (२) २ इति वचनामृतम् ॥११॥

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [२] छे, तेमां पहेलामां अंतःकरणमां विषयनी इच्छा वर्ते तेने वासना कही छे. [१] अने बीजामां निर्वासनिक थइने ब्रह्म जे अमारुं तेज ते रूप पोताने मानीने अमारी भक्ति करे ते एकांतिक भक्त छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युंछे. [२] बावतो छे ॥११॥

संवत् १८७६ना मागशर शुदि १५ पुनमने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता. अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाज बोल्या जे, (१) जगतनां कारण एवां जे पुरुष, प्रकृति ने काळ ने महत्तत्त्वादिक चोवीश तत्त्व एमना स्वरूपने ज्यारे ए जीव जाणे छे त्यारे पोताने विषे रही जे अविद्या ने तेनां कार्य एवां जे चोवीश तत्त्व तेना बंधनथकी मुकाय छे. (१) १

२ त्यारे मुक्तानंद स्वामीए पूछ्युं जे, (२) हे महाराज ! एमनुं स्वरूप केम जाण्यामां आवे? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एमनां स्वरूप तो एमनां लक्षणने जाणवे करीने जणाय छे. ते लक्षण कहीए छैए जे, प्रकृतिना नियंता ने प्रकृति थकी विजाति, ने असंड, ने

अनादि, ने अनंत, ने सत्य, ने स्वयंज्योति, ने सर्वज्ञ ने दिव्यविग्रह, ने समग्र आकार मात्रनी प्रवृत्तिना कारण ने क्षेत्रज्ञ एवा पुरुष छे. अने जे प्रकृति छे ते त्रिगुणात्मक छे, ने जडचिदात्मक छे, ने नित्य छे, ने निर्विशेष छे ने महदादिक समग्र तत्त्वने जीवमात्र तेनुं क्षेत्र छे, ने भगवाननी शक्ति छे अने गुणसाम्यने निर्विशेष एवी जे माया तेनो जे क्षोभ करे छे तेने काळ कहीए. अने हवे महत्तत्त्वादिक जे तत्त्व तेनां लक्षण कहीए, ते सांभळो. जे चित्तने ने महत्तत्त्वने अभेदपणे जाणवुं, अने जे महत्तत्त्वने विषे सूक्ष्मरूपे करीने समग्र जगत् रह्युं छे, ने पोते निर्विकार छे, ने प्रकाशमान छे, ने स्वच्छ छे, ने शुद्ध सत्त्वमय छे, ने शान्त छे. अने हवे अहंकारनुं लक्षण कहीए छैए जे अहंकार जे ते त्रिगुणात्मक छे, अने भूत, मात्रा, ने इंद्रियो, अंतःकरण, ने देवताने प्राण ए सर्वेनी उत्पत्तिनुं कारण छे, ने एने विषे शान्तपणुं छे, ने घोरपणुं छे ने विमूढपणुं छे. अने हवे मननुं लक्षण कहीए छैए जे, मन जे ते स्त्री आदिक पदार्थनी जे समग्र कामना तेनी उत्पत्तिनु क्षेत्र छे ने संकल्प विकल्परूप छे, अने समग्र इंद्रियोनु नियंता छे. हवे बुद्धिनुं लक्षण कहीए छैए जे, बुद्धिने विषे पदार्थ मात्रनुं ज्ञान रह्युं छे, अने समग्र इंद्रियोने विषे जे विशेष ज्ञान छे ते बुद्धि वते छे, अने जे बुद्धिने विषे संशय, निश्चय, निद्रा ने स्मृति ए रह्यां छे. अने श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, रसना, घ्राण, वाक्, पाणि, पाद, पायु ने उपस्थ ए जे दश इंद्रियो तेमनुं लक्षण तो ए छे जे, पोतपोताना विषयमां प्रवर्त्तवुं. हवे पंच मात्रानां लक्षण कहीए छीए, तेमां शब्दनुं लक्षण तो ए छे जे, शब्द जे ते अर्थ मात्रनो आश्रय छे, ने व्यवहार मात्रनो कारण छे; अने बोलनारानी जे जाति ने स्वरूप तेनो जणावनारो छे; ने आकाशने विषे रहेवापणुं छे ने आकाशनी मात्रा छे अने श्रोत्र इंद्रिए करीने ग्रहण कर्यामां आवे छे ए शब्दनुं लक्षण छे. हवे स्पर्शनुं लक्षण कहीए छैए जे स्पर्श छे ते वायुनी तन्मात्रा छे, अने कोमळपणुं, कठणपणुं, शितळपणुं, उष्णपणुं ने त्वचाए करीने ग्रहण करवापणुं ए स्पर्शनुं स्पर्शपणुं छे. हवे रूपनुं लक्षण कहीए छैए जे पदार्थमात्रना आकारने जणावी देवापणुं, ने ते पदार्थने विषे गौणपणे रहेवापणुं, अने ते पदार्थनी रचनाए करीने परिणामपणुं; अने तेज तत्त्वनुं तन्मात्रापणुं ने चक्षु इंद्रिए करीने ग्रहण करवापणुं ए रूपनुं रूपपणुं छे. हवे रसनुं लक्षण कहीए छैए जे मधुरपणुं, तीखापणुं, कषायलापणुं, कडवापणुं, खाटापणुं, खारापणुं, ने जळनुं तन्मात्रापणुं ने रसना इंद्रिये करीने ग्रहण करवापणुं ए रसनुं रसपणुं छे. हवे गंधनुं लक्षण कहीए छैए जे सुगंधपणुं; दुर्गंधपणुं ने पृथ्वीनुं तन्मात्रापणुं ने घ्राण इंद्रिए करीने ग्रहण करवापणुं ए गंधनुं गंधपणुं छे. हवे पृथ्वीनुं लक्षण कहीए छैए जे, सर्वे जीवमात्रनुं धारवापणुं, ने लोकरूपे करीने स्थानपणुं, ने आकाशादिक जे चारभूत तेनुं विभाग करवापणुं, ने समग्र

भूतप्राणीमात्रना शरीरनुं प्रगट करवापणुं ए पृथ्वीनुं लक्षण छे. हवे जळनुं लक्षण कहीए छैए जे पृथ्वी आदिक द्रव्यनुं पिंडीकरण करवापणुं ने पदार्थने कोमळ करवापणुं, ने भीनुं करवापणुं, ने तृप्ति करवापणुं, ने प्राणीमात्रने जीवाडवापणुं ने तृषानी निवृत्ति पमाडवापणुं, ने तापने टाळवापणुं, ने बहुपणुंए जळनुं लक्षण छे. हवे तेजनुं लक्षण कहीए छैए जे, प्रकाशपणुं, ने अन्नादिकने पचवी नाखवापणुं, ने रसने ग्रहण करवापणुं, ने काष्ठनुं ने हुतद्रव्यादिकनुं ग्रहण करवापणुं ने टाढ्यने हरवापणुं, ने शोषण करवापणुं ने क्षुधाने तृषा ए तेजनुं लक्षण छे. हवे वायुनुं लक्षण कहीए छैए जे, वृक्षादिकने कंपाववापणुं, ने तृणादिकने भेळां करवापणुं, ने शब्द, स्पर्श, रूप, रस ने गंध ए जे पंचविषय तेने श्रोत्रादिक पंचइंद्रियो प्रत्ये पमाडवापणुं ने सर्वे इंद्रियोनुं आत्मापणुं ए वायुनुं लक्षण छे. हवे आकाशनुं लक्षण कहीए छैए जे समग्र जीवमात्रने अवकाश देवापणुं, ने भूत प्राणीमात्रनो जे देहने मांहिलो व्यवहार, ने देहने बहारनो व्यवहार तेनुं कारणपणुं, ने प्राण, इंद्रियो, अंतःकरण ने जीव ए सर्वेनुं स्थानकपणुं ए आकाशनुं लक्षण छे.

एवी रीते चोवीश तत्त्व, प्रकृति, पुरुष ने काळ एमनां जो लक्षण जाणे तो ए जीव अज्ञान थकी मुकाय छे. अने ए जे सर्वे तेनी उत्पत्तिने जाणवी, ते उत्पत्ति कहीए छीए जे पोताना धामने विषे रह्या एवा जे श्रीकृष्ण भगवान ते अक्षरपुरुषरूपे करीने मायाने विषे गर्भने धारता हवा; त्यारे ते मायाथकी अनंतकोटी जे प्रधान ने पुरुष ते थता हवा. ने प्रधानपुरुष केवा छे तो अनंतकोटी ब्रह्मांडनी उत्पत्तिना कारण छे. ते मध्ये एक ब्रह्मांडनी उत्पत्तिना कारण जे प्रधान पुरुष तेने कहीए छैए जे, प्रथम पुरुषोत्तम एवा जे श्रीकृष्ण भगवान ते पुरुषरूपे करीने प्रधानने विषे गर्भने धरता हवा. पछी ते प्रधान थकी महत्तत्त्व उत्पन्न थातुं हवुं ने महत्तत्त्व थकी त्रण प्रकारनो अहंकार उत्पन्न थातो हवो; तेमां सात्त्विक अहंकार थकी मन ने इंद्रियोना देवता उत्पन्न थाता हवा, ने राजस अहंकार थकी दश इंद्रियो बुद्धि ने प्राण ए उत्पन्न थातां हवां, अने तामस अहंकार थकी पंचभूत ने पंच तन्मात्रा ए उपजतां हवां. एवी रीते ए समग्र तत्त्व उपज्यां. पछी ते परमेश्वरनी इच्छाए प्रेर्यां थकां पोतपोताने अंशे करीने ईश्वरने जीवना देहने सृजतां हवां. ते ईश्वरना देह ते विराट् सूत्रात्मा ने अव्याकृत ने जीवना देह ते स्थूळ, सूक्ष्मने कारण अने विराट् नामे जे ईश्वरनो देह तेनुं द्विपरार्द्ध काळपर्यंत आयुष्य छे; अने ते विराट् पुरुषना एक दिवसने विषे चौद मन्वंतर थाय छे; अने जेवडो एनो दिवस छे तेवडीज रात्रि छे; अने ज्यां सुधी तेनो दिवस होय त्यां सुधी त्रिलोकिनी स्थिति रहे छे, अने ज्यारे एनी रात्रि पडे छे, त्यारे त्रिलोकीनो नाश थाय छे. तेने निमित्त प्रलय कहीए. अने ज्यारे ते विराट्पुरुषनो द्विपरार्द्ध काळ पुरो थाय छे त्यारे ए विराट् देहनो

सत्यादिक लोके सहित नाश थाय छे. अने महदादिक जे चोवीश तत्त्व, प्रधान, प्रकृति ने पुरुष ए सर्वे महामायाने विषे लय पामे छे; तेने प्राकृत प्रलय कहीए.अने ए महामाया ते अक्षरब्रह्मना प्रकाशने विषे लय पामे छे; जेम दिवसने विषे रात्रि लय पामे छे तेम लय पामे छे, तेने आत्यंतिक प्रलय कहीए. अने देव, दैत्य ने मनुष्यादिकना जे देह तेना जे क्षण क्षण प्रत्ये नाश तेने नित्य प्रलय कहीए. एवी रीते जे विश्वनी उत्पत्ति, स्थिति ने प्रलय तेने जो जाणे तो जीवने संसारने विषे वैराग्य थाय ने भगवानने विषे भक्ति थाय छे. अने ज्यारे ए सर्व ब्रह्मांडनो लय थाय छे त्यारे जे सर्वे जीव छे तेतो मायाने विषे रहे छे, ने जे भगवानना भक्त छे ते तो भगवानना धाममां जाय छे. (२) २

३ त्यारे वळी मुक्तानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (३) ते भगवानुं धाम केवुं छे ? त्यारे श्रीजी-महाराज बोल्या जे, ते भगवानुं धाम तो सनातन छे, नित्य छे, अप्राकृत छे, सच्चिदा-नंद छे, अनंत छे ने अखंड छे तेने दृष्टांते करीने कहीए छैए जे, जेम पर्वतने वृक्षादिके सहित ने मनुष्य पशु पक्षी आदिकनी जे आकृति तेणे सहित एवी जे आ समग्र पृथ्वी ते कांचनी होय ने आकाशने विषे जे समग्र तारा ते सर्वे सूर्य होय, पछी तेने तेजे करीने समग्र आकृतिए सहित कांचनी पृथ्वी जेवी शोभे तेवी शोभाए युक्त भगवाननुं धाम छे. एवुं जे भगवाननुं धाम तेने भगवानना भक्त छे ते समाधिने विषे देखे छे, ने देह मूक्या पछी ए तेजोमय जे भगवाननुं धाम तेने पामे छे. (३) इति वचनामृतम्॥१२॥ ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (३) छे, तेमां (१) पहेलुं कृपावाक्य छे. तेमां श्रीजीमहा-राजे जगतना कारण जे पुरुष प्रकृति आदिक तेमना स्वरूपने जाणे त्यारे अविद्या थकी मुकाय छे एम कह्युं छे. [१] बीजामां पुरुष प्रकृति आदिक सर्वेना लक्षण तथा उत्पत्ति कही छे. (२) त्रीजामां पोताना तेजरूप अक्षरधामनुं रूप कर्युं छे. [३] वाक्यो छे.

१ प्र० बीजा प्रश्नमां जगतना कारणने जाणवे करीने अविद्याथी मुकाय एम कह्युं त्यारे बीजां साधन करवानुं शुं प्रयोजन हशे ?

१ उ० एमना स्वरूपने जाणवे करीने अज्ञानथी मुकाय एटले सत्यासत्यनो विवेक थाय ने असत्यमां वैराग्य थाय, ने सत्य वस्तु जे आत्माने परमात्मा तेनुं ज्ञान थाय. पछी भगवानने सर्वेथी पर ने सर्वे सुखमय मूर्ति जाणीने तेमनी भक्ति करे ने आज्ञा यथार्थ पाळे त्यारे बंधनथी मुकाय ने आत्यंतिक मोक्ष जे भगवाननुं अक्षरधाम तेने पामे.

२ प्र० जीवने विषे अविद्या कही ते कई जाणवी ?

२ उ० जेमांथी सर्वे तत्त्व उत्पन्न थाय छे ने जे जीवने जन्म मरणने पमाडे छे एवी जे माया तेने अविद्या कही छे.

३ प्र० पुरुषने नियंतादिक बार विशेषणो आप्यां तेनो अर्थ शो हशे ?

३ उ० प्रकृति जे माया तेने नियममां राखे छे माटे नियंता कह्या छे. अने मायामां देहदेही

भाव छे अने पुरुष चैतन्य मूर्ति छे माटे विजाति कह्या छे. अने खंडायमान न थाय माटे अखंड कह्या छे अने पोतानां कार्य जे अनंत कोटी प्रधान पुरुष रूपी ब्रह्मांड तेना आदि कर्ता छे माटे ते ब्रह्मांडथी अनादि कह्या छे. अने माया तथा मायामांथी जे जे उत्पन्न थाय छे ते कोइ पुरुषनो अंत जे पार तेने पामता नथी, माटे तेनां कार्य जे माया तथा प्रधान पुरुषादिक तेमने मते अनंत कह्या छे. जने अनंत कोटी ब्रह्मांड छे ते महा प्रलयने विषे लय पामे छे, त्यारे ते सर्वने पोताने विषे लीन करीने पोते (अ० ६ मां) कह्युं एवुं जे पोतानुं गोलोक धाम तेथी पर वासुदेवब्रह्मना ब्रह्मपुर धाममां जईने वासुदेवने समीपे रहे छे, पण परिणाम पामता नथी माटे सत्य कह्या छे. अने पोताना प्रकाशे प्रकाशमान छे, माटे स्वयंज्योति कह्या छे. अने पोताना कार्यमां रह्या एवा जे प्रधान पुरुष, अहंकार, वैराज, ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा देव मनुष्यादिक समग्रना अंतरने जाणे छे, माटे सर्वज्ञ कह्या छे. अने मायिक तत्त्वनो देह नथी, पोते चैतन्य मूर्ति छे पण भाग त्याग नथी, माटे दिव्यविग्रह कह्या छे. अने प्रधान पुरुषादिकनी उत्पति करे छे माटे प्रवृत्तिना कारण कह्या छे, ने मायामांथी उत्पन्न थया एवा जे प्रधान पुरुषादिक समग्र जीव ते सर्व क्षेत्र छे, तेने जाणनारा छे, माटे क्षेत्रज्ञ कह्या छे.

४ प्र० प्रकृति रूप मायाने त्रिगुणात्मकादिक विशेषणो आप्यां तेनो अर्थ शो समजवो ?

४ उ० रज तम, सत्त्व ए त्रण गुणमय छे, माटे त्रिगुणात्मक कही छे; तेनो देह जड छे, ने जीव चैतन्य छे माटे जडचिदात्मक कही छे; अने उत्पत्ति काळमां पोताना कार्यने विस्तारीने रहे छे, अने आत्यंतिक प्रलयने विषे पोतानुं कार्य पोतामां लीन करीने पुरुषना अंगमां लीन रहे छे माटे नित्य कही छे; तेना कार्यमां कोइ एना जेवुं नथी माटे निर्विशेष कही छे, पण पुरुष आगळ निर्विशेष नथी कही; अनंत प्रधान पुरुषादिक जीव प्राणीमात्रनुं स्थानरूप छे माटे क्षेत्र कही छे, भगवान जे पुरुष तेनी शक्ति छे माटे भगवाननी शक्ति कही छे; त्रण गुण समपणे करीने एने विषे रह्या छे माटे गुणसाम्य कही छे.

५ प्र० काळ कोने कह्यो छे ? अने ते मूर्तिमान छे के अमूर्त छे ?

५ उ० मूळ पुरुषना कार्यनो प्रलय करे छे तेने काळ कह्यो छे. अने ते मूर्तिमान छे, ने मूळ पुरुषथी पर छे, ते (पत्थारानी बीजी बाबतमां तथा लो० १७ ना ७ पांचमा प्रश्नमां) काळ अमारी शक्ति छे एम श्रीजीए कह्युं छे.

६ प्र० मायानी साथे तो मूळपुरुष जोडाय छे ने काळने क्षोभकर्ता कह्यो तेनो शो हेतु हशे ?

६ उ० मूळपुरुष साथे जोडावाने अर्थे मायाने सचेतन करे छे माटे क्षोभकर्ता कह्यो छे.

७ प्र० चित्तने ने महत्तत्त्वने अभेदपणुं कह्युं तथा महत्तत्त्वमां जगत् रह्युं छे तथा निर्विकार, प्रकाशमान, स्वच्छ, शुद्ध, सत्त्वमय अने शांत कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

७ उ० [का० ४ ना बीजा प्रश्नमां] महत्तत्त्वमां स्वच्छपणुं ने निर्मळपणुं छे तेमज चित्तमां पण छे, माटे ए गुणना सादृश्यपणाथी अभेदपणुं कह्युं छे. अने महत्तत्त्व तथा प्रधान पुरुष ए सर्वे मायामांथी उत्पन्न थाय छे, पण महत्तत्त्व द्वारे जगतनी व्यक्ति थाय छे, माटे तेमां जगत रह्युं छे.

अने ते पोताना कार्यमां रहे छे तो पण आकाशवत् निर्विकार छे. अने सूर्यनी पेठे तेजस्वी छे, माटे प्रकाशमान कह्युं छे. अने मलिन गुणथी पर छे माटे स्वच्छ कह्युं छे. अने रजतम रहित केवळ सत्त्वगुण प्रधान वर्ते छे माटे शुद्ध सत्त्वमय कह्युं छे. अने शांत स्वभावे वर्ते छे माटे शान्त कह्युं छे.

८ प्र० अहंकारने विषे घोरपणुं ने विमूढपणुं ने शान्तपणुं कह्युं ते घोर ने विमूढपणामां शान्तपणुं केवी रीते समजवुं ?

८ उ० राजस्, तामस्, ने सात्त्विक ए त्रण प्रकारनो अहंकार छे तेमां शान्तपणुं ते सत्त्वगुणनुं छे, अने घोरपणुं ते तमोगुणनुं छे अने विमूढपणुं एटले चपळपणुं ते रजोगुणनुं छे, माटे शान्तपणुं ते सत्त्वगुणनुं कह्युं छे.

९ प्र० राजस् तामस् ने सात्विक अहंकार ते कोने जाणवा ?

९ उ० राजस् ते अनिरुद्ध, तामस् ते संकर्षण अने सात्विक ते प्रद्युम्न जाणवा. आ त्रणेनी उपासना वैराज करे छे. ते (म० ३१ ना ३ पहेला प्रश्नमां) कह्युं छे.

१०प्र० तत्त्व कह्यां ते मूर्तिमान् छे के अमूर्त छे ?

१०उ० तत्त्व मूर्तिमान छे ते (प्र० ४६ तथा ६३ ना त्रीजा प्रश्नमां) कह्युं छे.

११प्र० देहनो मांहीलो ने बहारनो व्यवहार कह्यो ते केवी रीते जाणवो ?

११उ० देहमां प्राणने फरवापणुं तथा अन्नजळादिकने अवकाश देवापणुं ते मांहीलो, अने देहने हरवा फरवादिक सर्वे क्रिया करवापणुं ते बहारनो व्यवहार जाणवो.

१२प्र० धामने विषे श्रीकृष्ण भगवान कह्या ते कोने जाणवा ? अने एमनुं धाम कयुं जाणवुं ?

१२उ० आ ठकाणे श्रीकृष्ण नामे श्रीजीमहाराजने कह्या छे. अने पोताना तेजने धाम कह्युं छे.

१३प्र० मायाने विषे अक्षरपुरुषरूपे गर्भ धरता हवा एम कह्युं ते कोने जाणवा ?

१३उ० मूळपुरुषने अक्षरपुरुष नामे आ ठेकाणे कह्या छे.

१४प्र० परार्द्ध केटले वर्षे कहेवाय ?

१४उ० (८६४००००००००) आठ अबज ने चोसठ करोड वर्षे ब्रह्मानो एक रात्रि दिवस थाय छे, तेने निमित्त प्रलय कहे छे; एवा छत्रीश हजार निमित्त प्रलय थाय छे, त्यारे वैराजना सो वर्ष पुरां थाय छे; तेने द्विपरार्ध कहे छे, अने तेनां पचास वर्षने परार्ध कहे छे.

१५प्र० माया अक्षरब्रह्मना प्रकाशमां लय पामे छे, एम कह्युं ते अक्षरब्रह्म किया जाणवा ?

१५उ० महामाया तो मूळपुरुषमां लीन थाय छे ने मूळपुरुष पण वासुदेवब्रह्मनी समीपे रहे छे पण जेम आकाशमां सूर्य, चंद्र, तारा सर्वे रह्या छे तेम श्रीजीमहाराजना तेजमां अक्षरनी तथा ब्रह्मनी तथा मूळपुरुषनी कोटीयो रही छे ते सर्वेनुं आधार श्रीजीमहाराजनुं तेजरूप अक्षरब्रह्म छे, माटे अक्षरब्रह्ममां लीन थाय छे एम कह्युं छे ते (का० ७ ना चोथा प्रश्नमां) पुरुषप्रकृति अक्षरब्रह्ममां लीन थाय छे एम कह्युं छे.

१६प्र० त्रीजा प्रश्नमां भगवाननुं धाम सनातन, नित्य, अप्राकृत, सच्चिदानंद, अनंत, ने अखंड कह्युं अने (सा० ११ ना ३ त्रीजा प्रश्नमां तथा छे० ३१ मां) अमारुं धाम गुणातीत छे,

एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे ते ए अक्षरधामनां विशेषणो छे के ते ते नामे साधु होय तेने अक्षरधाम कह्या हशे ?

१६उ० ए सर्वे श्रीजीमहाराजना तेजरूप अक्षरधामनां विशेषणो छे. पण सनातनानंद, नित्यानंद, अप्राकृतानंद, सच्चिदानंद, अनंतानंद, अखंडानंद तथा गुणातीतानंद एवे एवे नामे साधु होय तेमने अक्षरधाम न जाणवा. सनातन एटले अनादि जाणवुं. नित्य एटले निरंतर जाणवुं. अप्राकृत एटले दिव्य जाणवुं. सच्चिदानंद एटले सत् चित् ने आनंदमय जाणवुं. अनंत एटले पार रहित जाणवुं. अखंड एटले अविनाशी जाणवुं. गुणातीत एटले गुणथी पर जाणवुं. माटे ते ते विशेषणे करीने साधुनां नाम भावे तेणे करीने साधुओने धाम न जाणवा, धाम तो श्रीजीमहाराजनो प्रकाश छे.

१७प्र० आपणा संप्रदायमां केटलाक श्री गोपाळानंदस्वामीने तथा गुणातीतानंद स्वामीने मूळ-अक्षर कहे छे ते केम समजवुं ?

१७उ० श्रीगोपाळानंदस्वामी, मुक्तानंदस्वामी, ब्रह्मानंदस्वामी, नित्यानंदस्वामी, ब्र० मुकुंदानंदजी, कृपानंदस्वामी, स्वरूपानंदस्वामी, व्यापकानंदस्वामी, सतानंदस्वामी, गुणातीतानंद स्वामी, वासुदेवानंदस्वामी, महानुभावानंदस्वामी, निर्गुणानंदस्वामी आदि सर्वे अनादिमुक्त छे. पण जीवने एकदम महिमा समजाय नहि ते सारु श्रीजीमहाराजे ऋषियो तथा अवतारोनी उपमा आपी छे.पछी जेम जेम महिमा समजता गया तेम तेम वधु वधु उपमा आपी छे. जेम मुक्तानंद स्वामीने नारदजीनी उपमा आपी अने वळी अमारी साथे आव्या छे एम पण छेली वारे कह्युं अने नित्यानंद स्वामीने व्यासनी उपमा आपी पण उपासना विषेनो संवाद थयो त्यारे आ साधु अमारो महिमा जाणे छे तेवो कोई जाणता नथी एम प्रशंसा करी, तेमज श्रीगोपाळानंद स्वामीने पहेली दत्तात्रेयनी उपमा आपी ने पछी श्रीकृष्णनी उपमा आपी ने पछी मूळअक्षर-नी उपमा आपी ने छेलीवारे अक्षरधाममां दिव्यमुक्त छे तेथी पण आ गोपाळानंद स्वामी अधिक छे एम (छे० २१ मां) पोताना तथा पोताना मुक्तोना सम खाइने कह्युं छे माटे ते सर्वे श्रीजीमहाराजना अनादिमुक्त छे. अने तेथी नीचे परम एकांतिक छे ने तेथी नीचे श्रीजीमहाराजना एकांतिक ते आ सत्संगमां छे ने तेथी नीचे मूळअक्षरनी कोटीयो छे ने ते अक्षरोना पण उत्तम, मध्यम, ने कनिष्ठ त्रण प्रकारना मुक्तो छे ते मूळअक्षरोना उत्तम मुक्तने पण अनादि कहेवाय अने मध्यमने परम एकांतिक कहेवाय अने कनिष्ठने एकांतिक कहेवाय अने ते सर्वे अक्षर संज्ञिक पण कहेवाय अने तेवीज रीते लक्ष्मीजी श्रीकृष्णनां अनादि कहेवाय अने राधिकाजी परम एकांतिक कहेवाय अने श्रीकृष्णना साधनदशावाळा भक्त ते एमना एकांतिक कहेवाय, अने ते मूळपुरुषोना मुक्तो तथा मूळपुरुषो तथा वासुदेव ब्रह्म तथा तेमना मुक्तो तथा मूळअक्षरो तथा तेमना मुक्तो ए सर्वे अक्षर संज्ञिक कहेवाय. पण जेनाथी जे नीचा गण्या होय ते तेना मुक्त जाणवा. अने श्रीजीमहाराजनुं तेजरूप जे अक्षर ते भावने पाम्या जे साधनदशावाळा एकांतिक ते पण अक्षरसंज्ञिक कहेवाय. अने श्रीजीमहाराजना धाममां श्रीजीमहाराजना सन्मुख रह्या जे परम एकांतिक तेमने पुरुषोत्त-

मरूप कहेवाय ने अक्षरसंज्ञिक पण कहेवाय अने मूर्तिमां रह्या थका जे अनादि मुक्त ते पुरुषोत्तमरूप कहेवाय एवा अनादि तथा परम एकांतिक मुक्तोने जे अक्षरादिकनी उपमा आपी छे ते धीमे धीमे महिमा समजाववा सारु आपी छे. आ अनादिनो प्रसंग (प्र० १८ ना पांचमा प्रश्नोत्तरमां) छे. ॥१२॥

संवत् १८७६ना मागशर वदि१ पडवाने दिवस रात्रिने समे श्रीजीमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिरनी समीपे लींबडाना हृक्षनी हेठे ओटा उपर ढोल्यियो ढळावीने विराजमान हता अने रातो सुरवाळ पहेर्यो हतो ने राती डगली पहेरी हती ने माथे सोनेरी शेलुं बांध्युं हतुं. ने कटीने विषे सोनेरी शेलुं बांध्युं हतुं, अने कंठने विषे मोतीनी माळाओ पहेरी हती. ने पायने विषे मोतीना तोरा लटकता मुक्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजने नित्यानंद स्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे,(१) देह देह मत्ये जीव एक छे के अनेक छे? ने जो एक कहेशो तो वडपीपर आदिक जे वृक्ष छे तेनी डाळखियो कापीने बीजे ठेकाणे रोपे छे त्यारे तेवोने तेवोज वृक्ष थाय छे ए ते एक जीव बे प्रकारे थयो के बीजे जीवे प्रवेश कर्यो ? ने कहेशो जे एतो एनो ए जीव छे तो जीव तो अखंड छे ने अच्युत छे ते कपाणो केम ?

त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो एनो उत्तर करीए जे, श्रीकृष्ण भगवान छे तेनी पुरुषने प्रकृति ए बे शक्तियो छे ते जगतनी उत्पत्ति, स्थिति ने प्रलय तेनुं कारण छे, ते पुरुषने प्रकृति रूप जे पोतानी बे शक्तियो तेनुं ग्रहण करीने पोते विराटरूपने धारता हवा.ने ते विराट्रूप जे ए भगवान ते प्रथम ब्राह्मकल्पने विषे तो पोतानाअंग थकी ब्रह्मादिक स्तंब पर्यंत समग्र जीवने सृजता हवा. ने पाद्मकल्पने विषे तो ए भगवान ब्रह्मारूपे करीने मरीच्यादिकने सृजता हवा. ने कश्यपने दक्षरूपे करीने देव दैत्य मनुष्यने पशुपक्ष्यादिक समग्र स्थावर जंगम जे जीव तेने सृजता हवा. एवा जे श्रीकृष्ण भगवान ते जे ते पुरुष प्रकृतिरूप जे पोतानी शक्ति तेणे सहित थका जीव जीव मत्ये अंतर्यामी रूपे रह्या छे, ने जे जीवे जेवां कर्म कर्यां छे ते जीवने तेवा देहने पमाडे छे, ने ते जीव छे तेणे पूर्व जन्मने विषे केटलांक कर्म तो सत्त्वगुण प्रधानपणे करीने कर्यां छे, ने केटलांक कर्म तो रजोगुण प्रधानपणे करीने कर्यां छे, ने केटलांक कर्म तो तमोगुण प्रधानपणे करीने कर्यां छे ते कर्मने अनुसारे करीने ए जीवने भगवान जे ते उद्भिज जातिना जे देह ने जरायुज जातिना जे देह ने स्वेदज जातिना जे देह ने अंडज जातिना जे देह तेने पमाडे छे, ने सुख दुःखरूप जे ते कर्मनां फळ तेने पमाडे छे

अने ते जीवना कर्मने अनुसारे करीने तेना देह थकी बीजा देहने सृजे छे, जेम कश्यप आदिक प्रजापतिना देह थकी अनेक जातिना देहने सृजता हवा, तेम एना ए भगवान अंतर्यामीरूपे करीने समग्र जीव जीव प्रत्ये रह्या थका जे देह थकी जेम उपज्यानी रीति होय तेम बीजा देहने उपजावे छे, पण जे जीव थकी बीजा देहने उपजावे छे, ते जीवज अनेक रूपे थाय एम नथी, ए तो जे जीवने जेना देह थकी उपज्यानो कर्म संबंध प्राप्त थयो होय ते जीवने ते द्वाराए उपजावे छे (१) इति १ वचनामृतम् ॥१३॥

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [१] छे. तेमां पुरुषने प्रकृति ए बे जे अमारी शक्तियो तेणे सहित जीव जीव प्रत्ये अंतर्यामीरूपे रह्या थका जे जीवने जेना देह थकी उपज्यानो कर्म संबंध प्राप्त थयो होय ते जीवने ते द्वारे उपजावीए छीए, पण जीव अनेकरूपे थतो नथी एम श्रीजीमहाराजे कह्यु छे. (१) बाबत छे.

१ प्र० पुरुष, प्रकृति बे शक्तियो कही ते पुरुष कोने जाणवा ? ने प्रकृति कोने जाणवी ?

१ उ० परोक्ष शास्त्रमां जेने श्रीकृष्ण कह्या छे तेने आ ठेकाणे पुरुष कह्या छे ते (म० ३१ ना बीजा प्रश्नमां) बहुधा शास्त्रमां पुरुषनेज पुरुषोत्तम कह्या छे, अने लक्ष्मीरूप जे माया तेने आ ठेकाणे प्रकृति कही छे.

२ प्र० ब्राह्मकल्प तथा पाद्मकल्प कह्या ते शुं समजवुं ?

२ उ० शेषशायी नारायण जे ते निमित्त प्रलयमां शेषशय्याने विषे जलार्णवमां सुता हता. तेनी नाभिमां पद्म थयुं तेमां ब्रह्मा उत्पन्न थया ने ते पद्ममां ब्रह्माए चौदलोकनी रचना करी तेने पाद्मकल्प कहे छे. ने ब्रह्माए अंगथकी सृष्टि करी ते ब्राह्मकल्प कहेवाय छे.

३ प्र० पुरुष प्रकृतिए सहित जीव जीव प्रत्ये अंतर्यामीरूपे केवी रीते रह्या हशे ?

३ उ० जीव जीव प्रत्ये पुरुष अंतर्यामीरूपे पोताना तेजद्वारे रह्या छे ते (प्र० ४६ मां) प्रकृतिना कार्यने विषे अन्वय व्यतिरेकपणुं पुरुषनुंज कह्यु छे. अने (प्र० ७ मां तथा सा० ५ ना बीजा प्रश्नमां) प्रकृति पुरुषादिक सर्वेने विषे अक्षरनुं अन्वयपणुं कह्युं छे ने अक्षरमां, मुक्तजीवमां, तथा मूळपुरुष इश्वरमां तथा मायारुढ जीव ए सर्वेमां श्रीजीमहाराजनु अन्वयपणु कह्युं छे. अने (प्र० ४१ मां) अक्षरथी लईने पशुपक्ष्यादिक सर्वेने विषे श्रीजीमहाराज अंतर्यामीपणे तेजद्वारे रह्या छे ते हरिवाक्य सुधासिंधुना तरंग (५१) मां श्लोकः—

सर्वात्मात्मास्वतंत्रश्च सर्वशक्तिपतिः प्रभुः । परात्परतरः शुद्ध ईश्वराणामपीश्वरः ॥ ॥२१॥ सर्वत्र कारणत्वेनाऽन्वितोऽस्ति निजतेजसा । व्यतिरिक्तश्च धाम्निस्वे राजतेऽनेकशक्तिभिः ॥ २२ ॥

स्वतंत्र ने सर्वेना आत्मा, अने सर्वे शक्तिना पति, अने परथकी पण पर, अने इश्वरना इश्वर, एवा जे श्रीजीमहाराज ते सर्वेने विषे कारणपणे करीने पोताना तेजे करीने अन्वय-

पणे रह्या छे. अने व्यतिरेकपणे अनेक शक्तिए युक्त पोताना धामने विषे रह्या छे. (२१,२२) ते जेवा अक्षरमां छे तेवा उत्तरोत्तर एक बीजामां नथी रह्या एम कह्युं छे, तेनुं कारण ए छे जे मूळअक्षरमां श्रीजीमहाराज एकज पोताना तेजद्वारे अन्वयपणे रह्या छे. अने वासुदेव ब्रह्मने विषे श्रीजीमहाराजने मूळअक्षर ए बेय तेजद्वारे अन्वयपणे रह्या छे. अने मूळपुरुषमां वासुदेवब्रह्मसहित त्रणेय तेजद्वारे रह्या छे. अने जीवमां पुरुषे सहित तेजद्वारे चारेय अन्वयपणे रह्या छे. माटे अधिक न्यून रह्या छे एम कह्युं छे. अने प्रकृति पण पुरुषना मेळीज रहे छे. माटे प्रकृति पण जीव जीव प्रत्ये अंतर्यामीपणे रही छे. तथा तरंग (६३)मां श्लोकः—

उपासकानां कृष्णस्य तेषामेकांतिनामपि ॥ एकैकरोम्णि तेजोस्ति कोटिकोट्यर्क सन्निभम् ॥ ५१ ॥ तदावर्णयितुं शक्यं केन कृष्णांगजं महः॥ सकृष्णोमहसा स्वेनान्वितो ऽस्ति पुरुषादिषु ॥५२॥

कृष्णना (अमारा) उपासक एवा एकान्तिकोना एक एक रोमने विषे कोटानकोटी सूर्यना सरखुं तेज छे ॥ ५१ ॥ तो कृष्णना [अमारा] अंगनुं तेज तेने वर्णन करवा तो कोण समर्थ थाय ? एवा साक्षात् भगवान ते पोताना तेजे करीने पुरुषादिकने विषे अन्वयपणे रह्या छे (५२) एवी रीते श्रीजीमहाराज सर्वमां अन्वयपणे रह्या छे. ॥१३॥

संवत् १८७६ ना मागशर वदि २ बीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिर आगळ लिंबडाना वृक्ष हेठे ढोलीया उपर दक्षिणादे मुखारविंदे विराजमान हता ने माथे धोळीपाघ बांधी हती, अने धोळो खेस पहेर्यो हतो, ने धोळी चादर ओढी हती, अने पीळा पुष्पना तोरा पाघमां विराजमान हता, ने बे कान उपर पीळा पुष्पना गुच्छ विराजमान हता, ने ते गुच्छनी उपर गुलाबनां पुष्प विराजमान हतां, ने कंठने विषे पीळा पुष्पना हार विराजमान हता. अने जमणा हाथमां धोळुं जे सेवतीनुं पुष्प तेने फेरवता हता, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे मुनि प्रत्ये प्रश्न पूछ्यो जे, (१) एक हरिजन छे ते संसारने तजीने निसर्यो छे, ने अति तीव्र वैराग्यवाळो तो नथी अने देहे करीने तो वर्तमान यथार्थ पाळे छे, अने मनमां थोडी थोडी संसारनी वासना रही छे, तेने विचारे करीने खोटी करी नाखे छे, एवो एक त्यागी भक्त छे, अने तेने भगवाननो निश्चय पण दृढ छे. अने वळी बीजो गृहस्थ भक्त छे तेने पण भगवाननो निश्चय दृढ छे, ने आज्ञाए करीने घरमां रह्यो छे ने संसार थकी उदास छे, अने जेटली त्यागीने जगतमां वासना छे तेटली ते गृहस्थने पण वासना छे, ए बे जे भगवानना भक्त तेमां कोण श्रेष्ठ छे? पछी मुक्तानंद स्वामी बोल्या जे, ए त्यागी भक्त श्रेष्ठ छे. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ओल्यो मुंझाइने पोतानी मेळे मेल लइने निसर्यो छे, ते केई रीते श्रेष्ठ छे? ने गृहस्थ तो आज्ञाये

करीने घरमां रह्यो छे ते केइ रीते न्यून छे ? पछी श्रीजीमहाराजना प्रश्ननुं मुक्तानंद स्वामीए बहु प्रकारे समाधान कर्युं पण समाधान थयुं नहि. पछी मुक्तानंद स्वामी बोल्या जे, हे महाराज तमे उत्तर करो. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, त्यागी होय ने तेने सारी पेठे खावा मळे, अने जो काचीमतिवाळो होय तो पाछी संसारनी वासना हृदयमां उदे थाय, अथवा घणुं दुःख पडे तो पण पाछी संसारनी वासना उदे थाय एवा त्यागी करतां तो गृहस्थ घणो सारो, केम जे गृहस्थ भक्तने ज्यारे दुःख पडे अथवा घणुं सुख आवी पडे त्यारे ते एम विचार राखे जे रखे मारे आमांथी बंधन थाय एवुं जाणीने ते संसारमांथी उदास रहे. माटे त्यागी तो ते खरो जे जेणे संसार मुक्यो ने पाछी ते संसारनी वासना रहेज नहि, अने गृहस्थ तो वासनावाळा त्यागी करतां घणो श्रेष्ठ छे, जो गृहस्थना धर्म सचवाय तो, पण गृहस्थना धर्म तो घणा कठण छे, ने अनंत प्रकारनां सुख दुःख आवी पडे त्यारे संतनी सेवामांथी ने धर्ममांथी मनने आडुं अवळुं डोलवा दे नहि, अने एम समझे जे संतनो समागम मल्यो छे ते तो मुने परम चिंतामणिने कल्पवृक्ष मल्यो छे, ने धन, दोलत, दिकरा, दिकरी ए तो सर्वे स्वप्न तुल्य छे, अने साचो लाभ ते संतनो समागम मळ्यो एज छे, एम समझे, अने गमे तेवुं भारे दुःख आवी पडे पण तेणे करीने पाछो पडे नहि एवो जे गृहस्थ ते अति श्रेष्ठ छे, अने सौ करतां भगवानना भक्त थावुं ए घणुं कठण छे, अने भगवानना भक्तनो समागम मळवो घणो दुर्लभ छे, एम कहीने ते उपर श्रीजीमहाराजे भगवानने संतना महिमानां मुक्तानंद स्वामिनां कीर्तन गवराव्यां (१) १

२ पछी मुक्तानंद स्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे, (२) श्रुतिमां एम कह्युं छे जे ॥ अन्ते या मतिः सा गतिः ॥ एवी रीते कह्युं छे, जे अंतकाळे भगवानने विषे मति रहे तो गति थाय अने न रहेतो न थाय, एवो ए श्रुतिनो अर्थ भासे छे, त्यारे जे भक्ति करी होय तेनो शो विशेष छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने साक्षात् भगवाननी प्राप्ति थइ छे, तेने अंतकाळे स्मृति रहे अथवा न रहे तोपण तेनुं अकल्याण थाय नहि तेनी तो भगवान रक्षा करे छे. अने जे भगवान थकी विमुख छे ते तो बोलतां चालतां देह मुके छे, पण तेनुं कल्याण थातुं नथी ने मरीने यमपुरीमां जाय छे. ने केटलाक पापी कसाइ होय ते बोलतां चालतां देह मुके छे, अने भगवाननो भक्त होय ने तेनो अकाळ मृत्यु थयो ते माटे शुं तेनुं अकल्याण थाशे, ने ते पापीनुं शुं कल्याण थाशे ? नहिज थाय. त्यारे ए श्रुतिनो अर्थ एम करवो जे जेवी हमणां एनी मति छे तेवी अंतकाळे गति थाय छे. माटे ते जे भक्त छे तेनी मतिमां एम रह्युं छे जे मारुं कल्याण तो थई रह्युं छे, तो तेनुं कल्याण अंतकाळे थइज रह्युं छे. अने जेने संतनी प्राप्ति नथी, ब्रह्म,

ने भगवानना स्वरूपनी पण प्राप्ति नथी थइ, तेनी मतिमां तो एम वर्ते छे जे हुं अज्ञानी छुं ने मारुं कल्याण नहि थाय तो जेवी एनी मति छे तेवी एनी अंतकाळे गति थाय छे (२) अने जे भगवानना दास थया छे तेने तो कांइ करवुं रह्युं नथी. एना दर्शने क- २
रीने तो बीजा जीवनुं कल्याण थाय छे, तो एनुं कल्याण थाय एमां शुं कहेवुं ? पण भगवाननुं दासपणुं आववुं ए घणुं कठण छे, केम जे भगवानना दास होय तेनां तो ए लक्षण छे जे देहने मिथ्या जाणे, ने पोताना आत्माने सत्य जाणे अने पोताना जे स्वामी तेने भोगव्यानां जे पदार्थ तेने पोते भोगववाने अर्थे इच्छेज नहि, अने पोताना स्वामीनुं गमतुं मुकीने बीजुं आचरण करेज नहि; एवो जे होय ते हरिनो दास कहेवाय. अने जे हरिनो दास होय ने देहरूपे वर्ते तेतो प्राकृत भक्त कहेवाय. (३) इति वचनामृतम्॥१४॥ ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां (१) पहेलामां श्रीजीमहाराजे वासनावाळा त्यागी करतां संसारथी उदास रहे एवा गृहस्थने श्रेष्ठ कह्यो छे, (१) बीजामां अमारी साक्षात् प्राप्ति थइ होय तेने अंतकाळे अमारी स्मृति न रहे अथवा अकाळ मृत्यु थाय तो पण तेनुं कल्याण थाय ने विमुख नरके जाय (२) अने पोताना आत्माने सत्य जाणे ने अमारे भोगववानां पदार्थ तेने भोगववा इच्छे नहि अने सर्वना स्वामी जे अमे ते अमारा गमता प्रमाणे वर्ते ते अमारो दास कहेवाय एम कह्युं छे. (३) बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां आज्ञाए घरमां रह्यो होय तेने श्रेष्ठ कह्यो ते केवी रीते समजवुं ?

१ उ० त्यागी थयुं होय तेने भगवान के संत संसारमां राखे ते आज्ञाथी रह्यो कहेवाय.

२ प्र० धाममांथी आवेला सिद्धमुक्तने गृहस्थाश्रममां रहेवानुं शुं प्रयोजन हशे ?

२ उ० सर्वे जीवोना कल्याणने अर्थे श्रीजीमहाराजनी मरजीथी रहे छे.

३ प्र० आमां संतने परम चिंतामणिनी उपमा दीधी अने (प्र० १ मां पहेला प्रश्नमां तथा म० २२ना ३ त्रीजा प्रश्नमां) श्रीजीमहाराजने चिंतामणिनी उपमा दीधी छे एम जोतां तो भगवान करतां संत वधे ते केवी रीते समजवुं ?

३ उ० श्रीजीमहाराज आगळ संतने परमचिंतामणि कह्या नथी एतो मायिक पदार्थनी आगळ संतनो समागम परमचिंतामणि एटले अधिक कह्यो छे. जेम मायिक सर्वे पदार्थथी चिंतामणि अधिक छे, ते चिंतामणिथी पण संतनो समागम विशेष छे एम कह्युं छे पण श्रीजीमहाराजथी संतने विशेष नथी कह्या. संत तो श्रीजीमहाराजना दास छे ने श्रीजीमहाराज तो संतना स्वामी छे तेने जे बरोबर कहे तेतो महापापी ने दुष्ट छे ते (लो० १३ ना बीजा प्रश्नमां) सर्वोपरि एवा जे अमे ते अमने ने बीजा अक्षरादिकने तथा मुक्तोने सरखा कहे छे तेने दुष्ट मतवाळा जाणवा, ने अति पापी जाणवा, ने एवानां दर्शन करे तो पंचमहापाप जेवुं पाप थाय. माटे आ लौकिक चिंतामणिथी संतनो समागम विशेष कह्यो छे. केमजे चिंतामणि नाशवंत सुख आपनार छे; अने संतनो समागम अविनाशीने दिव्य एवुं श्रीजीमहाराजनुं सुख आपनार छे तेथी विशेष कह्यो छे पण श्रीजीमहाराजथी संतने विशेष नथी कह्या.

४ प्र० बीजा प्रश्नमां अंतकाळे स्मृति रहे अथवा न रहे तो पण कल्याण थाय एम कह्युं अने (म० ४/२८ मां) अमारी मूर्ति विना बीजा पदार्थनुं चिंतवन करतां देह पडे तेने दुःखनो अंत आवतो नथी एम कह्युं छे ते केवी रीते समजवुं ?

४ उ० आमां स्वप्न अवस्थामां श्रीजीमहाराजनी विस्मृति थाय तेनुं कल्याण थाय एम कह्युं छे अने (म० ४८ मां) तो जाग्रत अवस्थामां बीजा पदार्थनुं चिंतवन करतो होय तेने दुःखनो अंत न आवे एम कह्युं छे. केमजे सावधानपणामां बीजुं संभारे छे तेथी कह्युं छे.

५ प्र० केवी रीते प्राप्ति थइ होय ते साक्षात्प्राप्ति कहेवाय ?

५ उ० ज्यारे श्रीजीमहाराज मनुष्यरूपे दर्शन आपता होय त्यारे ते मनुष्यरूप मूर्तिने विषेथी मायिक भाव टाळीने दिव्य भाव लावे, ने तेमनी आज्ञामां रहे, ने आशरो करे तो साक्षात्प्राप्ति थइ कहेवाय तेमज आज प्रतिमारूपे दर्शन आपे छे तेमांथी प्रतिमा भाव टाळीने दिव्य भाव आवे ने तेमनी कहेली आज्ञामां वर्तीने आशरो करे, अने (म० ६६ ना सातमा प्रश्नमां) भगवाननी कथा कीर्तन करतां थकां दिवस रात्रि वीते, अने पोताना जीवात्मानुं ब्रह्मरूपे साक्षात् दर्शन थाय, अने भगवान विना अन्यमां वैराग्य थाय, अने अधर्मनो त्याग करीने धर्मने विषे रहेवाय तेने साक्षात् प्राप्ति थइ कहेवाय. अने जे मर्यादा न पाळे ने मनुष्यभावने प्रतिमाभाव न टाळे तेने प्राप्ति थई न कहेवाय.

६ प्र० मनुष्यरूप ने प्रतिमा ते एक कहो छो ते मनुष्यरूपे तो बोलता चालता ने जमता तेम प्रतिमारूपे बोलता चालता नथी ने जमता नथी त्यारे ते एक शी रीते कहेवाय ?

६ उ० (पं० ४ मां) कह्युं छे जे " भगवान ज्यारे देवलोकमां दर्शन आपे त्यारे देवना जेवी चेष्टा करे अने मनुष्य लोकमां दर्शन आपे त्यारे मनुष्यनी पेठे वर्ते. " तेमज ज्यारे पशुना जेवा देखाय त्यारे पशुनी रीते वर्ते, अने ज्यारे प्रतिमारूपे दर्शन आपे त्यारे प्रतिमाना धर्म प्रमाणे वर्ते. माटे आज प्रतिमारूपे दर्शन दे छे, माटे प्रतिमाना धर्म प्रमाणे वर्ते छे. अने क्यारेक कोइक भक्तनी साथे बोलवुं घटे तो तेनी साथे बोले छे, जमे छे, ने चमत्कार जणावे छे, ते जो प्रत्यक्ष न होय तो शी रीते चमत्कार जणावे ? माटे आज श्रीजीमहाराज प्रतिमारूपेसाक्षात् छे एमां नास्तिकपणुं लावे एथी बीजो कोइ पापी नथी.

७ प्र० विमुखनुं कल्याण न थाय एम कह्युं ते केवो होय तेने विमुख जाणवो ?

७ उ० आमां (२/६ बीजा प्रश्नमां, तथा म० ७७ ना २/५ बीजा प्रश्नमां, लो० ३/२ मां, तथा म० ५/६ मां, १७ ना बीजा प्रश्नमां, छे० ४ ना पहेला प्रश्नमां), एटलामां जेने प्रत्यक्ष भगवाननो आशरो न होय तेने विमुख कह्या छे. आ कह्या ते सत्संग बहारना विमुख छे अने (प्र० ७/६ मां) कामीने विमुख कह्यो छे, (७७ ना १/६ पहेला प्रश्नमां) धर्मभंग वात करे तेने गुरुद्रोही, वचनद्रोही, असुर, अधर्मीने विमुख कह्यो छे. (लो० १ ना नवमा प्रश्नमां) " संतनो अवगुण आवे ते विमुख थाशे. " (म० २६/२ मां) जे बीजामां अवगुण परठे ने पोतामां गुण परठे ते सत्संगीने अर्धो विमुख कह्यो छे. (५६/२ मां) जे श्रीजीमहाराज-

नां ने मोटा पुरुषनां चरित्रमां, ने तेमनी समजणमां दोष परठे तेने अधर्मी, मूर्खनो राजा ने विमुख कह्यो छे. अने (व० ११/२ मां) भगवानमां दोषबुद्धि थाय ते विमुख थाय. आ कह्या ते सत्संग मांहिला विमुख छे.

८ प्र० कोई दोषे विमुख थएलो मान मुकी सत्संगमां आवे तेनुं कल्याण थाय के केम ?

८ उ० सत्संगमां आवीने पोताना गुना माफ करावे तो श्रीजीमहाराज ने मोटा संत कृपासाध्य छे ते कल्याण करे.

९ प्रं० (३ बीजा प्रश्नमां) स्वामीने भोगव्यानां पदार्थ इच्छवां नहि ते कियां जाणवां ?

९ उ० त्यागी तथा गृहस्थो खावापीवानी वस्तुओ श्रीजीमहाराजनी मूर्त्तिने अथवा शिक्षापत्रीने जमाड्या विना जमे, ने वस्त्र अलंकार पण मूर्त्तिनी अथवा शिक्षापत्रीनी प्रसादी कर्या विना वापरे ते स्वामीने भोगव्यानां पदार्थ पोते भोगव्यां कहेवाय अने गृहस्थोए मंदिरनां वस्त्र, घरेणां, वाहन, पात्र ते भोगववा ईच्छवां नहि अने त्यागीए गामडामां गया होय त्यां धर्मादा निमित्त अन्न द्रव्य आवे, ते अनाज ठाकोरजीने पहोंच्या पहेलां पोताने खावापीवामां वापरवुं नहि, अने कथा निमित्ते वस्त्र आवे तेमांथी धर्मामृतमां कह्या प्रमाणे वापरवां अने वधे ते कोठारमां आपी देवां पण पोतानी पासे राखवां नहि. आ कह्या प्रमाणे न वर्ते तो स्वामीने भोगव्यानां पदार्थ भोगव्यां कहेवाय ॥१४॥

संवत् १८७६ ना मागशर वदि ३ त्रीजने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ सर्वे साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे एम वार्ता करी जे, (१) जेना हइयामां भगवाननी भक्ति होय तेने एवी वृत्ति रहे जे, भगवान तथा संत ते मुने जे जे वचन कहेशे तेमज मारे करवुं छे, एम तेना हइयामां हिंमत रहे, अने आटलुं वचन मुथी मनाशे ने आटलुं नहि मनाय एवुं वचन तो मुखे पण न कहे. (१) १

अने वळी भगवाननी मूर्तिने हइयामां धारवी तेमां शूरवीरपणुं रहे ने मूर्ति धारतां धारतां जो न धराय तो पण कायर न थाय, ने नित्य नवी श्रद्धा राखे ने मूर्ति धारतां ज्यारे भुंडा घाट संकल्प थाय ने ते हठाव्या हठे नहि, तो भगवाननो मोटो महिमा समजीने, पोताने पूर्णकाम मानीने, ते संकल्पने खोटा करतो रहे, ने भगवानना स्वरूपने हइयामां धारतो रहे ते धारतां धारतां दश वर्ष थाय, अथवा वीश वर्ष थाय, अथवा पचवीश वर्ष थाय, अथवा सो वर्ष थाय, तो पण कायर थईने भगवानना स्वरूपने धारवुं ते मुकी दे नहि, केमजे श्रीकृष्ण भगवाने गीतामां कह्युं छे जे ॥ अनेक जन्मसंसिद्धस्ततो

यातिपरांगतिम् ॥ ते माटे एमने एम भगवानने धारतो रहे एवुं जेने वर्ततुं होय तेने एकांतिक भक्त कहीए. (२) इति वचनामृतम् ॥१५॥ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य [१] छे. तेमां अमे तथा संत जेम कहीए तेम करे, [१] ने अमारी मूर्ति धारवामां नित्य नवी नवी श्रद्धा राखे ते एकांतिक छे, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. [२] बाबतो छे.

१ प्र० बीजी बाबतमां मूर्ति धारवामां नवी नवी श्रद्धा राखवानुं कह्युं ते शा उपाये आवे ?

१ उ० श्रीजीमहाराजनो महिमा जाणे तो श्रद्धा वृद्धि पामे. ते महिमा एम जाणवो जे, श्रीजी-महाराज जीवकोटी, ईश्वरकोटी, ब्रह्मकोटी तथा मूळअक्षरकोटीथी पर छे, ने सदा साकार मूर्ति छे ने ए सर्वेने पोतानी शक्तिये करीने धरी रह्या छे, अने ए सर्वेमां अन्वयपणे रह्या थका पण अतिशे निर्लेप, असंगीने निर्विकार छे, ने ए सर्वेने अगम्य छे. ने मूळअक्षरादिक कोइ पण श्रीजीमहाराजनो महिमा जाणी शकता नथी तथा मूळअक्षरादिक अनंतकोटी-योनां सुख मळीने श्रीजीमहाराजना एक रोमना कोटीमा भागना पासंगमां पण आवतां नथी. ने मूळअक्षरकोटीथी पर पोताना धाममां पोताना साधर्म्यपणाने पामेला परम एकांतिक मुक्त तथा पोतानी मूर्तिमां रहेला अनादिमुक्त जे सदाय भेळा रह्या छे ते पण जेना महि-मानो तथा सुखनो पार पामी शकता नथी, अने ए सर्वे मुक्त तथा मूळअक्षरादिक सर्वे अव-तार ते सर्वे जेनी आज्ञामां वर्ते छे. आवो अद्भूत महिमा श्रीजीमहाराजनो जाणे तो श्रद्धा नवी नवी आवे. ते (प्र० २७/५ | ५१ | ५६ प्रश्न ३/४ | ६२ प्रश्न १ | ६३ प्रश्न ३ ७८ प्रश्न १६ | सा० १ प्रश्न २ | १७ | लो० १० प्रश्न ६/८ | १३ प्रश्न २ | १७ प्रश्न ५/७ | पं० १/५-२ | म० १-२-३/५-२-४ | ६७ | अ० १/५-४ | छे० ३७ | ३१/५) ए आदिकमां कह्यो एवो श्रीजीमहाराजनो महिमा जाणे तो घाट संकल्प टळी जाय छे ने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनुं ध्यान करवामां नित्य नवी श्रद्धा वृद्धि पामे छे. ॥१५॥

संवत् १८७६ ना मागशर वदि ४ चोथने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे एम वार्ता करी जे, (१) जे भगवानना भक्तने सत् असत्नो विवेक होय तेतो जे जे अवगुण पोतामां होय तेने जाणे, ने विचारीने तेनो त्याग करी दे, अने संतमां अथवा कोइ सत्संगीमां कांइक अवगुण पोताने भासतो होय तोतेने त्याग करीदे ने तेना जे गुण तेनुंज ग्रहण करे, अने परमेश्वरने विषे तो तेने कोइ अवगुण भासेज नहि, अने भगवानने संत जे जे वचन कहे तेने परम सत्य करीने माने, पण ते वचनने विषे संशय करे नहि, अने संत कहेजे तुं देह, इंद्रियो, मन, प्राणथी जुदो छुं ने सत्य छुं ने एनो जाणनारो छुं, ने ए देहादिक सर्वे असत्य छे एम वचन कहे तेने सत्य मानीने, ते

सर्वेथी जुदो आत्मारूपे वर्ते, पण मनना घाट भेळो भळी जाय नहि अने जेणे करीने पोताने बंधन थाय ने पोताना एकांतिक धर्ममां खोट्य आवे एवां जे पदार्थ तथा कुसंग तेने ओळखी राखे, ने तेथी छेटेज रहे ने तेना बंधनमां आवेज नहि, अने सवळो विचार होय तेने ग्रहण करे, ने अवळो विचार होय तेनो त्याग करे एवी रीते जे वर्ततो होय त्यारे जाणीए जे तेने विवेक छे. (१) इति वचनामृतम् ॥१६॥ १

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां जे पोताना अवगुणनो त्याग करीने, अमारो तथा अमारा भक्तनो गुण ग्रहण करे, ने अमारा तथा अमारा संतना वचनमां वर्ते, ने आत्मारूपे वर्ते, ने बंधनकारी पदार्थ तथा कुसंगथी छेटे रहे, ने सवळा विचारने ग्रहण करे ते विवेकी छे, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. [१] बाबत छे.

१ प्र० आमां संतमांने सत्संगीमां अवगुण भासे तो पण न लेवो एम कह्युं, अने [प्र० ५३ मां ने छे० -३- मां] मोटा वर्त्तमानमां चुके तो अवगुण लेवो एम कह्युं छे. ते केम समजवुं ?

१ उ० जे दोषनां प्रायश्चित्त करवानां कह्यां छे ते मांहेलो दोष होय तेनो अवगुण ले ते अवगुण लीधो न कहेवाय. पण जेनुं प्रायश्चित्त न करवुं पडे एवा स्वभाविक अल्पदोष देखाय तेनो अवगुण न लेवो एम कह्युं छे.

२ प्र० संतनुं वचन सत्य मानवानुं कह्युं, तेमां कोइ संशय करवा जेवुं हशे के केम ?

२ उ० एनो खुलासो आमांज करेलो छे. जे देहादिकने असत्य कहे ने आत्माने सत्य कहे एमां संशय न करवो; अने पोताना इष्टदेवनी तथा मंदिरोनी सेवा बतावे ते श्रीजीमहाराजनी आज्ञा प्रमाणे शक्ति अनुसारे हेते सहित करवी, पण श्रद्धाथी अधिक वचन मानवुं नहि. अने मांदाने खावापीवानुं, तथा योग्य औषध मागे तो श्रद्धा प्रमाणे आपवुं पण रोकडो पैसो न आपवो. अने वस्त्र ओढाडवानी इच्छा होय त्यारे वस्त्र लावीने आपवुं पण ते निमित्त रोकडा पैसा न आपवा. अने श्रीजीमहाराजे त्यागी तथा गृहस्थने शिक्षापत्री, निष्कामशुद्धि, धर्मामृत, जनशिक्षा, बृहद्धर्म ए आदिकमां जे जे आज्ञाओ करी छे तेने घसारो आवतो होय एवुं वचन कहे ते मानवुं नहि.

३ प्र० सवळा विचारने ग्रहण करवो, ने अवळानो त्याग करवो एम कह्युं; ते विचार किया ?

३ उ० श्रीजीमहाराजनी आज्ञा विरुद्ध संकल्प थाय ते अवळा विचारनो त्याग करवो, अने पंच विषयनो अभाव करवो, तप करवुं, त्याग करवो, धर्म पाळवो, भक्ति करवी तथा ध्यान भजन करवुं ते संबंधी जे संकल्प थाय ते सवळा विचारने ग्रहण करवा. ॥१६॥

संवत् १८७६ ना मागशर वदि ५ पंचमीने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बारणे ओरडामां कथा वंचावता हता, अने धोळो खेस पहेर्यो हतो, तथा धोळी चादर ओढी हती, तथा धोळी पाघ बांधी हती, अने पीळा पुष्पनी माळा पहेरी हती, ने पीळा पुष्पनो तोरो पाघने विषे खोस्यो हतो, अने अति प्रसन्न थका विराजमान हता.

ते समयने विषे शुक्तानंदस्वामी तथा गोपाळानंदस्वामी आदिक साधुने तेडाव्या ने
१ श्रीजीमहाराज ते सर्वे प्रत्ये बोल्या जे, (१) आपणा सत्संगमां थोडोक कुसंगनो भाग रह्यो जाय छे ते आज काढवो छे, ने आ प्रकरण एवुं चलाववुं छे जे, सर्वे परमहंस तथा सांख्ययोगी तथा कर्मयोगी सर्वे सत्संगीमां प्रवर्त्ते ते सत्संगमां कुसंग ते शुं छे ? तो जे वातना करनारा हिंमत विनानी वात करे छे ते सत्संगमां कुसंग छे. ते केवी रीते वात करे छे तो एम कहे छे जे, भगवाननुं जे वचन तेने यथार्थ कोण पाळी शके छे ? ने वर्त्तमान धर्म पण यथार्थ कोण पाळी शके छे ? माटे जेटलुं पळे तेटलुं पाळीए ने भगवान तो अधम उद्धारण छे ते कल्याण करशे अने वळी एम वात करे छे जे, भगवानलुं स्वरूप जे हृदयमां धारवुं ते कांइ आपणुं धार्युं धरातुं नथी. ए तो भगवान जेने दया करीने धरावे छे तेने धराय छे. एवी रीतनी मोळी वात करीने धर्म, ज्ञान, वैराग्य ने भक्ति इत्यादिक जे भगवाननी प्रसन्नतानां साधन तेमांथी बीजाने मोळा पाडे छे, माटे हवे आज दिनथी आपणा सत्संगमां कोइ पण एवी हिंमतरहित वात करशो नहि सदा हिंमत सहितज वात करज्यो; अने जे एवी हिंमत रहित वात करे तेने तो नपुंसक जाणवो, अने एवी हिंमत विनानी वात जे दिवस थइ जाय ते दिवस उपवास करवो. (१) १
इति वचनामृतम् ॥ १७ ॥

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां जे हिंमत विनानी वात करीने अमारी प्रसन्नताना साधनमांथी बीजाने मोळा पाडे ते कुसंगी तथा नपुंसक छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे (१) बाबत छे. ॥१७॥

संवत् १८७६ ना मागशर वदि ६ छठ्ठने दिवस रात्रि पाछली पोहोर एक बाकी हती त्यारे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बारणे ओरडानी ओसरीने आगळ फळीयामां ढोलिया उपर विराजमान हता, ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां.

पछी परमहंस तथा सत्संगीने तेडाव्या ने घणीवार सुधी तो पोते विचारी रह्या ने पछी बोल्या जे, एक वात कहीए ते सांभळो. एम कहीने श्रीजीमहाराज
१ बोल्या जे, (१) अमारा मनमां तो एम थाय छे जे वात न कहीए पण तमे अमारा छो माटे जाणीए छैए जे कहीएज, अने आ वात छे तेने समझीने तेज प्रमाणे वर्ते तेज मुक्त थाय छे ने ते विना तो चार वेद, षट्शास्त्र ने अढार पुराणने भारतादिक इतिहास तेने भणवे करीने तथा तेना अर्थने जाणवे करीने अथवा तेने श्रवणे करीने पण मुक्त थाय नहि. ते वात कहीए ते सांभळो जे, बहार तो गमे तेटली उपाधि होय पण तेनो जो मनमां संकल्प न होय तो तेनो अमारे खरखरो नहि

ने अंतरमां जो रंच जेटलो पदार्थनो घाट थाय तो तेनो त्याग करीए त्यारे निरांत थाय एवो अमारो स्वभाव छे, माटे अमे हृदयमां विचार कर्यो जे भगवानना भक्तना हृदयमां विक्षेप थाय छे, तेनुं कारण ते शुं छे ? पछी मन, बुद्धि, चित्त, ने अहंकार सामुं जोयुं त्यां तो ए अंतःकरण पण उद्वेगनुं कारण नथी अंतःकरणमां तो भगवानना स्वरूपना निश्चयनुं बळ अथवा आत्मज्ञाननुं बळ तेने योगे करीने अंतःकरणने गाफलता रहे छे जे, भगवान मळ्या छे ते हवे कांइ करवुं नथी एवुं गाफलपणुं रहे छे एटलोज अंतःकरणनो वांक छे. अने झाझो वांक तो पंच ज्ञान इंद्रियोनो छे. तेनी विगति कहीए छैए जे,ए जीव जे नाना प्रकारनां भोजन जमे छे ते भोजन भोजन प्रत्ये जुदा जुदा स्वाद छे, अने जुदा जुदा गुण छे ते भोजनने ज्यारे जमे छे त्यारे ते गुण अंतःकरणमां तथा शरीरमां प्रवर्ते छे, अने जो लीलागर भांग्य पीए ने ते प्रभुनो भक्त होय तोपण लीलागर भांग्यने केफे करीने धर्मसाननी खबर रहे नहि ने प्रभुना भजननी पण खबर रहे नहि तेम अनंत प्रकारना जे आहार तेना गुण पण लीलागर भांग्यनी पेठेज अनंत प्रकारना छे तेनो गणतां पण पार आवे नहि. तेमज ए जीव श्रोत्रद्वारे अनंत प्रकारना शब्दने सांभळे छे, ते शब्दना पण अनंत प्रकारना गुण जुदा जुदा छे. ते जेवो शब्द सांभळे छे तेवोज ए जीवने अंतःकरणमां गुण प्रवर्ते छे, जेम कोइक हत्यारो जीव होय अथवा कोइक पुरुष व्यभिचारी होय, अथवा कोइक स्त्री व्यभिचारणी होय अथवा लोकने वेदनी मर्यादाने लोपीने वर्त्ततो एवो कोइक भ्रष्ट जीव होय, तेनी जे वात सांभळ्वी तेतो जेवी लीलागर भांग्य पीए अथवा दारु पीए एवी छे. माटे ते वातना सांभळनाराना अंतःकरणने भ्रष्ट करी नाखे छे, ने भगवाननुं भजन, स्मरण तथा वर्त्तमान तेनी विस्मृति करावी नाखे छे. तेमज त्वचाना स्पर्श पण अनंत प्रकारना छे. ने तेना गुण पण जुदा जुदा अनंत प्रकारना छे. तेमां पापी जीवनो जे स्पर्श तेज भांग्य दारुना जेवो छे, माटे ते स्पर्शनो करनारो हरिभक्त होय तेनी पण शुद्ध बुद्धने भुलाडी दे छे. तेमज रूप पण अनंत प्रकारनां छे ने तेना गुण पण अनंत प्रकारना जुदा जुदा छे, ते कोइक भ्रष्ट जीव होय ने जो तेनुं दर्शन थयुं होय तो जेम लीलागर भांग्य तथा दारु पीधे भुंडुं थाय तेमज ते पापीना दर्शनना करनारानुं पण भुंडुंज थाय ने बुद्धि भ्रष्ट थइ जाय छे. तेमज गंध पण अनंत प्रकारना छे ने तेना गुण पण अनंत प्रकारना छे ते जो पापी जीवना हाथनुं पुष्प अथवा चंदन तेनी जो सुगंधी लेतो जेम लीलागर पीधे बुद्धि भ्रष्ट थाय तेमज बुद्धि भ्रष्ट थाय छे. एवी रीते जेम भुंडाने योगे करीने जीवनी बुद्धि भ्रष्ट थाय छे तेमज परमेश्वर अथवा परमेश्वरना संत तेने योगे करीने जीवनी बुद्धि सारी थाय छे; अने जीवनी बुद्धि भ्रष्ट होय तो पण भगवान ने संतना शब्दने सांभळ्वे करीने उत्तम थाय छे, तेमज एमने स्पर्शे करीने

पण मति उत्तम थाय छे. अने वर्त्तमाननी आडचे करीने मोटा संतनो स्पर्श न थाय तो तेना चरणनी रज लइने माथे चडावे तेणे करीने पवित्र थाय, अने तेमज मोटा संतने दर्शने करीने पण पवित्र थाय, पण वर्त्तमान राखीने दर्शन करवां तेमज ते मोटानी प्रसादी छे तेने जमवे करीने पण पवित्र थाय छे. तेमां पण वर्णाश्रमनी मर्यादा परमेश्वरे बांधी छे. ते मर्यादाने राखीने प्रसादी लेवी ने जेने न खपे तेने साकरनी प्रसादी करावीने प्रसादी लेवी. तेमज ते मोटा पुरुषने चडयुं एवुं जे पुष्पचंदन तेनी सुगंधी लीधे पण बुद्धि निर्मळ थाय छे, ते माटे ए पंच विषयने समज्या विना जे भोगवशे, ने सार असारनो विभाग नहि करे, ने ते नारद सनकादिक जेवो हशे तेनी पण बुद्धि भ्रष्ट थइ जशे; तो जे देहाभिमानी होय ने तेनी बुद्धि भ्रष्ट थाय तेमां शुं कहेवुं ? ते सारु ए पंचे इंद्रियोने योग्य अयोग्य विचार्या विना जे मोकळी मेलशे तेनुं अंतःकरण भ्रष्ट थइ जशे. अने पंच इंद्रियो द्वारे जीव जे आहार करे छे, ते आहार जो शुद्ध करशे तो अंतःकरण शुद्ध थाशे. अने अंतःकरण शुद्ध थाशे तो अखंड भगवाननी स्मृति रहेशे. अने जो पंचे इंद्रियोना आहारमांथी एके इंद्रियनो आहार मलिन थाय छे तो अंतःकरण पण मलीन थइ जाय छे माटे भगवानना भक्तने भगवानना भजनने विषे जे कांइ विक्षेप थई आवे छे तेनुं कारण ते पंच इंद्रियोना विषयज छे, पण अंतःकरण नथी. (१) १

ने आ जीव छे ते जेवी सोबत करे छे तेवुं एनुं अंतःकरण थाय छे ते ज्यारे ए जीव विषयी जीवनी सभामां बेठो होय,अने ते जग्या पण सुंदर सात माळनी हवेली होय,ने ते हवेलीने विषे काचना तकता सुंदर जड्या होय,ने सुंदर बीछानां कर्यां होय तेमां नाना प्रकारनां आभूषण तथा वस्त्रने पहेरीने विषयी जन बेठा होय, अने दारुना शीशा लइने परस्पर पाता होय, ने केटलाक तो दारुना शीशा भरेला पड्या होय, ने वेश्याओ थेइ थेईकार करी रही होय, ने नाना प्रकारनां वाजींत्र वाजतां होय, ने ते सभामां जईने जे जन बेसे ते समे तेनुं अंतःकरण बीजी जातनुं थइ जाय छे; अने तृणनी झुंपडी होय ने तेमां फाटेल गोदडी-वाळा परमहंसनी सभा बेठी होय, ने धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति सहवर्त्तमान भगवद्वार्ता थाती होय, ते सभामां जईने जे जन बेसे त्यारे ते समे तेनुं अंतःकरण बीजी रीतनुं थाय छे, माटे सत्संगने ने कुसंगने योगे करीने जेवुं अंतःकरण थाय छे, तेने जो विचारीने जुवे तो जाण्यामां आवे छे, अने गवरगंडने तो कांइ खबर पडती नथी. माटे आ वार्ता छे ते छेक मूर्खपणे पशुने पाडे वर्त्ततो होय तेने तो न समजाय अने जे कांइक विवेकी होय ने कांइक भगवाननो आश्रित होय, तेने तो आ वार्ता तुरत समज्यामां आवे छे. माटे परमहंस तथा सांख्ययोगी हरिजन तथा कर्मयोगी हरिजन ए सर्वेने कुपात्र माणसनी संगत करवी नहि. (२) २

अने सत्संग मोर तो गमे तेवो कुपात्र जीव होय, तोय तेने नियम धरावीने सत्संगमां लेवो. पण सत्संगमां आव्या पछी कुपात्रपणुं राखे. तो बाई अथवा भाई जे होय तेने सत्संग बहार काढी मेलवो, अने जो न काढे तो एमांथी झाझुं भुंडुं थाय, जेम जे आंगळीने सर्पे करडी होय अथवा कीडीयारानो रोग थयो होय ने तेटलुं अंग जो तुरत कापी नाखे, तो पंडे कुशळ रहे ने तेनो लोभ करे तो झाझो बीगाड थाय, तेम जे कुपात्र जीव जणाय तेनो तत्काळ त्याग करज्यो. (३) ३

अने आ जे अमारुं वचन छे ते भला थइने सर्वे जरुर राखज्यो, तो जाणीए तमे अमारी सर्वे सेवा करी. अने अमे पण तमने सर्वेने आशिर्वाद देशुं. ने तमो उपर घणा प्रसन्न थाशुं, कांजे तमे अमारो दाखडो सुफळ कर्यो. अने भगवाननुं धाम छे, त्यां आपण सर्वे मेळा रहेशुं. अने जो एम नहि रहो तो तमारे ने अमारे घणुं छेटुं थइ जाशे. अने भूतनुं के ब्रह्मराक्षसनुं देह आवशे, ने हेरान थाशो. अने जे कांइ भगवाननी भक्ति करी हशे तेनुं फळ तो रझळतां रझळतां कोइक काळे प्रगट थाशे, त्यारे पण अमे वात करी ते प्रमाणे रहेशो त्यारपछी मुक्त थइने भगवानना धाममां जाशो, अने जो कोइ अमारो वाद लेशे तो तेनुं तो जरूर भुंडुं थाशे कां जे अमारा हृदयमां तो नरनारायण प्रगट विराजे छे. अने हुं तो अनादिमुक्तज छुं पण कोइने उपदेशे करीने मुक्त नथी थयो. अने मन, बुद्धि, चित्त ने अहंकार तेने तो हुं पकडी लेउं छुं, जेम सिंह बकराने पकडे छे तेनी पेठे ए अंतःकरणने हुं पकडुं छुं, अने बीजाने तो ए अंतःकरण देख्यामां पण आवतां नथी. माटे अमारो वाद लईने जाणे जे उपाधिमां रहीने शुद्धपणे रहेशुं तेतो नारद सनकादिक जेवो होय तेथी पण रहेवाय नहि, तो बीजानी शी वार्ता कहेवी ? अने अनंत मुक्त थइ गया ने अनंत थाशे तेमां उपाधिमां रहीने निर्लेप रहे एवो कोइए थयो नथी ने थाशे पण नहि. अने हमणां पण कोइए नथी. अने कोटी कल्प सुधी साधन करीने पण एवो थावाने कांइ समर्थ नथी, माटे अमे कहुं छे ते प्रमाणे रहेशो तो रुडुं थाशे अने अमे जे कोईने हेत करीने बोलावीए छैए, ते तो तेना जीवना रुडा सारु बोलावीए छैए. अथवा कोइने हेत करीने साम्हुं जोइए छैए अथवा कोइ सारां भोजन करावे छे तेने जमीए छैए, अथवा कोई ढोलियो बिछावी दे छे ते उपर बेसीए छैए, अथवा कोइ वस्त्र आभूषण तथा पुष्पना हार इत्यादिक जे जे पदार्थ लावे छे तेने अंगीकार करीए छैए, तेतो तेना जीवना रुडा वास्ते अंगीकार करीए छैए, पण अमारा सुखने वास्ते करता नथी ने जो अमारा सुखने वास्ते करता होईए तो अमने श्री रामानंदस्वामीना सम छे. माटे एवुं विचारीने कोइ अमारो वाद करशोमां, ने पंच इंद्रियोना आहार छे तेने अतिशे शुद्धपणे करीने राख-

ज्यो. ए वचन अमारुं जरुराजरुर मानज्यो. अने आ वात तो सर्वेने समजाय एवी सुगम छे, माटे सर्वेना समज्यामां तुरत आवी जाशे ते सारु सत्संगमां अतिशे प्रवर्त्ताविज्यो. तेमां अमारो घणो राजीपो छे, एम वार्ता करीने जय सच्चिदानंद कहीने श्रीजीमहाराज पोताना उतारामां पधारता हवा. (४) इति वचनामृतम् ॥१८॥ ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां इंद्रियोना आहार शुद्ध करवाथी अंतः-करण शुद्ध थाय ने अंतःकरण शुद्ध थाय तो अखंड अमारी स्मृति रहे; (१) अने सत्पुरुषनो संग करवो. (२) अने कुपात्रने सत्संग बहार काढी मुकवो. (३) अने अमारो वाद लेशे तेनुं जरुर भुंडुं थाशे, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (४) बाबतो छे.

१ प्र० त्रीजी बाबतमां जे आंगळीने सर्पे करडी होय अथवा कीडीयारानो रोग थयो होय ते अंग कापी नाखे तो पंड कुशळ रहे; एम कह्युं ते अंगने ठेकाणे शुं जाणवुं ? अने पंडने ठेकाणे शुं जाणवुं ?

१ उ० पंड एटले शरीर तेने ठेकाणे सत्संग समुदाय जाणवो, अने सर्पे करडेल आंगळी तथा कीडीयाराना रोगवाळा अंगने ठेकाणे कुपात्र माणस जाणवो. ते कुपात्र माणसने सत्संग बहार काढे तो सत्संग समुदायरूपी पंड कुशळ रहे.

२ प्र० कुपात्र माणसने सत्संगमांथी काढी मुकवानी आज्ञा करी ते कोने माथे जाणवी ?

२ उ० जेना घरमां जे मुखीयो होय ते पोताना घरना माणसोनो नियंता छे, तेने पोताना घरना माणसोने धर्ममां वर्तावबां ने पोताने धर्ममां वर्तवुं ते आज्ञा छे; अने गामना हरिजनोने धर्ममां वर्तावबां ते गाममां मुखीया हरिजन धर्मवाळा होय तेमने माथे छे, ने सर्वे हरिजनोए पण मोटेरा हरिजननुं मानीने धर्ममां वर्तवुं, अने जे हरिजन धर्ममां न वर्ते तेने धर्मनिष्ठ मोटेरा हरिजनोए सत्संग बहार करवो, अने साधुना मंडळमां जे मुखीयो साधु होय तेणे पोताना शिष्योने धर्ममां वर्तावबा अने जे न वर्ते तेने सत्संग बहार काढी मुकवो, ने गुरु धर्ममां न वर्ते तो शिष्योए तेनो त्याग करवो; अने शिखरबंध मंदिरोना नियंता धर्मनिष्ठ महांत मंदिरना अधिकारी छे तेणे धर्ममां वर्तवुं, ने मंदिरना माणसोने धर्ममां वर्तावबां, ने न वर्ते तेने सत्संग बहार काढी मुकवो, अने आचार्य तथा साधुओ तथा सत्संगीओए मळीने जे धर्मनिष्ठ होय तेने मंदिरनो अधिकार सोंपवो, अने अधिकारीनी वर्तणुक श्रीजीमहाराजनी आज्ञा विरुद्ध जणाय, तो तेने पण अधिकारथी दूर करवो, अने आचार्यपद आपवुं ते पण आचार्य तथा साधुओ तथा सत्संगीओए मळीने आचार्यना पुत्रमांथी, अथवा धर्मकुळमांथी, धर्मवाळा होय ने धर्म पाळी पळावी शके एवा होय, तेने श्रीजीमहाराजे बे गादीओ निर्माण करेली छे, ते गादी उपर आचार्य नीमवानुं श्रीजीमहाराजे लेखमां कह्युं छे अने आचार्यना दिकरा होय तेमां गादीने लायक न होय तो धर्मकुळमांथी जे लायक होय तेने आचार्य, साधु तथा सत्संगीओ मळीने आचार्यपद आपवुं ते (अ० ३/१ त्रीजा प्रश्नमां) साधु अने सत्संगीओने भलामण करी छे, जे आचार्यने कोइक एक जणना कहेवाथी कोइ काम करवा देवुं नहि,

तेमां श्रीजीमहाराजनो घणो राजीपो छे; अने जो करवा दे तो घणुं दुःख आवे. अने आचार्ये पण धर्ममां वर्तवुं अने त्यागी गृही सर्वने धर्ममां वर्तावववा ने जे धर्ममां न वर्ते तेने सत्संगमांथी दूर करवो अने आचार्य तथा त्यागी तथा गृहस्थ सत्संगी बाइ भाइ तेमां जे श्रीजीमहाराजनी आज्ञा विरुद्ध वर्ते तेने श्रीजीमहाराजनी आज्ञामां वर्तनाराओय न मानवा आ अमारे मुखे श्रीजीमहाराज बोल्या छे एम जाणज्यो.

३ प्र० भूतनो के ब्रह्मराक्षसनो देह आवशे एम कह्युं, ते सहेल अंगवाळाने कह्युं के केने कह्युं ते समजातुं नथी माटे कृपा करीने समजावो ?

३ उ० कुपात्र माणसने सत्संग बहार न काढे एवा उपर कह्या ते सर्व अधिकारीओने भूतनो के ब्रह्मराक्षसनो देह आवशे. ए दंड दीधो छे, अने एमणे जे भक्ति करी हशे तेनुं फळ रखळतां रखळतां मळशे, एटले ज्यारे भूतना के ब्रह्मराक्षसना देहनो अंत आवे, त्यारे पण आहार शुद्ध करशे ने कुसंगीना संगनो तथा कुपात्र माणसनो त्याग करशे त्यारे कल्याण करीशुं एम कह्युं छे, माटे त्यागी होय तेमणे धर्म पाळवो ने धर्मवाळो साधु होय तेनीज पासे सेवा कराववी, पण कुपात्र एटले धन स्त्री आदिकनो प्रसंग होय तेने सेवामां न राखवो ने शिष्ये पण धन स्त्री आदिकना प्रसंगवाळा गुरुने सेववा नहि धर्मवाळानेज सेववा. अने गृहस्थ होय तेमणे पण वर्तमानरहित एवा कुपात्र माणसनो प्रसंग कोइ प्रकारे न राखवो. ने जे आचार्य होय तेमणे तो सर्वथी विशेष धर्म पाळवो. अने जे कुपात्र छे ते तो जीवतांज भूतने ब्रह्मराक्षस छे, ने जीवे छे तो पण मरेलो छे. अने कदापि सत्संगमां पडयो होय, तो पण शबवत् छे, तेने तो भूख दुःख ने मारज मळे पण कल्याण न थाय.

४ प्र० चोथी बाबतमां श्रीजीमहाराजे अमारा हृदयमां नरनारायण प्रगट विराजे छे, अने हुं अनादि मुक्त छुं एम कह्युं अने (म० १३/३ मां तथा अ० ७/१ मां तथा जे० ४ ना ४/१ पहेला प्रश्नमां तथा ५/१ पांचमामां) अमेज भगवान छीए एम कह्युं छे ते केम समजवुं ?

४ उ० श्रीजीमहाराज ज्यारे मुक्तभावे बोल्या होय त्यारे अमे भगवान छीए एम न कह्युं होय, ने पोते भगवानपणे बोल्या होय, त्यारे अमेज भगवान छीए एम कह्युं होय पण पोतेज भगवान छे, अने अमे अनादि मुक्त छीए एम कह्युं, ते अनादि मुक्तना भावे बोल्या छे. अने अनादि मुक्त छे ते परम एकांतिक मुक्तथी अधिक छे, ने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां सदाय रहेछे.

५ प्र० श्रीजीमहाराजे "अनादि मुक्त हुं छुं" एम पोताने कह्युं अने (प्र० ३२ मां) नारद सनकादिकने अनादि मुक्त कह्या छे अने तमे पण (प्र० ५ना बीजा प्रश्नोत्तरमां) श्रीजीमहाराजना मुक्तने अनादि कह्या छे ते केम समजवुं ?

५ उ० स्वसिद्ध अनादि तो जेने कोइनो उपदेश न होय, अने कोइनी भक्ति न होय, ने जे कोइने आधीन न होय तेनेज कहेवाय, माटे अनादि तो श्रीजीमहाराज एकज छे. अने जे श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने विषे रह्या होय तेने पण अनादि कहेवाय. जेम श्रीजीमहाराज एकज भगवान छे तो पण तेमनी सत्ता जेमां आवेली छे, ते सर्वे अवतारोने पण श्रीजीमहाराजने लेइने भगवान कहेवाय छे, तेम जेने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने विषे एकता थाय,

तेने श्रीजीमहाराजने लेइने अनादि कहेवाय. अने जेम मूळअक्षरकोटी, ब्रह्मकोटी, तथा मूळपुरुषकोटीने भगवान कहेवाय छे, तेमज तेमने विषे एकताने पामेला तेमना उत्तम भक्तोने पण अनादि कहेवाय. जेम सरकार एकज छे पण तेने लेइने बीजा अधिकारीओने पण सरकार कहेवाय छे, पण खरा सरकार तो विलायतमां एकज छे, तेम खरा अनादिने खरा भगवान तो एक श्रीजीमहाराजज छे, अने बीजा एमने लइने कहेवाय छे.

६ प्र० श्रीजीमहाराजे कह्युं जे अमारो वाद न लेवो ते केवी रीते वर्तेत्यारे वाद लीधो कहेवाय ?

६ उ० श्रीजीमहाराज जेम जेने समास थाय तेम आचरण तथा लीलाओ करता तेम त्यागी गृहीए न करवुं. त्यागी गृहीए तो जेम श्रीजीमहाराजे पोतपोताना धर्म कह्या छे ते प्रमाणे वर्त्तवुं, पण श्रीजीमहाराज करता माटे आपणने शो बाध छे, एम जाणीने तेवी कियानुं आचरण करे तो ते वाद लीधो कहेवाय. ॥ १८ ॥

संवत् १८७६ ना पोष शुदि १ पडवाने दिवस श्रीजीमहाराज संध्या समे श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजता हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) आत्मज्ञाननुं काम भारे छे, तेमज भगवानने विषे जे प्रीति तेनुं काम पण भारे छे, अने एकले आत्मज्ञाने पण काम सरतुं नथी, ने कदापि आत्मज्ञान नहोय ने एकलो प्रेम होय, तो तेणे करीने पण काम सरतुं नथी, कांजे आत्मज्ञान न होय तो भगवानमां प्रीति करते करते देहाभिमानने योगे करीने बीजा पदार्थमां पण प्रीति थइ जाय; अने आत्मज्ञान होय ने प्रीति न होय तो ते मोटा ऐश्वर्यने न पामे, ने ज्ञानी भक्त न कहेवाय. माटे जे स्वधर्ममां रहीने परमेश्वरने भजतो होय तेने आत्मज्ञान पण दृढ जोइए, ने भगवानने विषे प्रीति पण दृढ जोइए, अने वैराग्य पण मुद्दो दृढ जोइए, ने ए त्रणे अंगनी जेने दृढता होय तेने पुरो हरिभक्त जाणवो ने तेमां कांई न्यूनता होय तेटली खोट्य जाणीने तेने टाळी नाखवी. (१) इति वचनामृतम् ॥१९॥ १

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे धर्म, आत्मनिष्ठा, प्रीति ने वैराग्य ए चार अंगनी दृढता करवानुं कह्युं छे. (१) बाबत छे.

१ प्र० आमां स्वधर्म, आत्मज्ञान, प्रीति ने वैराग्य ते संपूर्ण न होय तेने खोटय कही अने (म० १/१ मां) अतिशे प्रीति होय तो कांइ करवुं रहेतुं नथी एम कह्युं छे ते केम समजवुं ? तेमज (प्र० २/१-मां) पण स्वधर्मादिक चार साधने पोतानी प्रसन्नता कही छे, अने (म० (६२ ना त्रीजा प्रश्नमां) आत्मनिष्ठा, प्रीतिने दासपणुं एमांथी एक अंग दृढ करे तो पण मोक्ष थाय एम कह्युं छे ते केम समजवुं ?

१ उ०आमां तथा(प्र०२/१मां)साधारण प्रीति कही छे अने (म० १/१मां अने ६२मां)असाधारण प्रीति कही छे. अने आमां तथा (प्र० २/१मां) आत्मज्ञान कह्युं छे ते त्रण देहथी नोखो जे जीवात्मा

तेनुं ज्ञान कह्युं छे. अन (म० ६२मां) श्रीजीमहाराजना तेरूजप जे आत्मा ते रूप थवुं ते आत्मनिष्ठा कही छे. ते (सा० ५ना ¹/₂ पहेला प्रश्नमां) महात्म्ये सहित भक्ति आवे, तो कल्याणकारी सर्वे गुण आवे छे. तथा (व० ३ना बीजा प्रश्नमां) असाधारण भक्ति आवे, तो ज्ञानादिक त्रणे एक भक्तिमां आवी जाय एम कह्युं छे. माटे आमां तथा (प्र० २१मां) चार साधन कह्यां ते सामान्य कह्यां छे, अने असाधारण होय तो एकना पेटामां चारे आवी जाय. ॥ १९ ॥

संवत् १८७६ ना पोष शुदि २ बीजने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे वार ओरडानी ओसरीए गादी तकियो नखावीने विराजता हता, अने धोळी पाघ माथे बांधी हती ने ते पाघने विषे पीळा फुलनो तोरो विराजमान हतो, अने कंठने विषे पीळा पुष्पनो हार विराजमान हतो, अने बे कानने विषे धोळा ने पीळा पुष्पना गुच्छ विराजमान हता. अने धोळो चोफाळ ओढयो हतो, ने काळा छेडानो खेस पहेर्यो हतो, ने कथा वंचावता हता, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज बोल्या जे, (१) सांभळो सर्वेने एक प्रश्न पुछीए छइए त्यारे सर्वे हरिभक्ते हाथ जोडीने कह्युं जे पूछो. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे अज्ञानीमां अतिशे अज्ञानी ते कोण छे ? पछी तो सर्वे विचारी रह्या पण उत्तर करी शक्या नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ल्यो अमेज उत्तर करीए. त्यारे सर्वेए राजी थइने कह्युं जे, हे महाराज ! तमथीज यथार्थ उत्तर थाशे माटे कहो. पछी श्रीजी महाराज बोल्या जे, आ देहमां रहेनारो जे जीव छे ते रूपने जुवे छे ने कुरूपने जुवे छे तथा बाळ, यौवनने वृद्धपणाने जुवे छे, एवां अनंत पदार्थने जुवे छे, पण जोनारो पोते पोताने जोतो नथी. अने केवळ बाह्यदृष्टिए करीने पदार्थने जोया करे छे. पण पोते पोताने नथी जोतो तेज अज्ञानीमां अतिशे अज्ञानी छे अने जेम नेत्रे करीने अनंत प्रकारना रूपना स्वादने ले छे, तेमज श्रोत्र, त्वक्, रसना, घ्राण इत्यादिक सर्वे इंद्रियोए करीने विषय सुखने भोगवे छे, ने जाणे छे पण पोते पोताना सुखने भोगवतो नथी ने पोते पोताना रूपने जाणतो नथी एज सर्वे अज्ञानीमां अतिशे अज्ञानी छे, ने एज घेलामां अतिशे घेलो छे, ने एज मूर्खमां अतिशे मूर्ख छे, ने एज सर्वे नीचमां अतिशे नीच छे.(१) १

२ त्यारे शुकमुनिए आशंका करी जे, (२) पोतानुं स्वरूप जोवुं ते शुं पोताना हाथमां छे ? ने जो पोताना हाथमां होय तो जीव शीद अतिशे अज्ञानी रहे ? त्यारे श्रीजी महाराज बोल्या जे, जेने सत्संग थयो छे, तेने तो पोताना जीवात्मानुं दर्शन पोताना हाथमांज छे ने के दहाडे एणे पोताना स्वरूपने जोयानो आदर कर्यो, ने न दीठुं ? अने

ए जीव मायाने आधीन थको परवश थइने तो स्वप्नने सुषुप्ति अवस्थामां अंतर्दृष्टि करीने जाय छे. पण पोते पोताने जाणे कोइ दिवस पोताना स्वरूपने जोवाने अंतर्दृष्टि करतो नथी. अने जे भगवानना प्रतापने विचारीने अंतर्दृष्टि करे छे, ते तो पोताना स्वरूपने अतिशे उज्वळ प्रकाशमान जुवे छे. ने ते प्रकाशने मध्ये प्रत्यक्ष एवा जे पुरुषोत्तम भगवान तेनी मूर्तिने जुवे छे. अने नारद सनकादिक जेवो सुखीयो पण थाय छे. माटे हरिभक्तने तो जेटली कसर रहे छे तेटली पोतानी आळसे करीने रहे छे. (२) इति २ वचनामृतत् ॥२०॥

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे अंतरवृत्तिए करीने पोते पोताने न जाणे ने न जुवे तेने अतिशे अज्ञानी कह्यो छे (१) अने बीजामां अमारो प्रताप विचारीने अंतर्दृष्टि करे, ते पोताना स्वरूपने प्रकाशमान देखे अने तेने मध्ये अमने प्रत्यक्ष देखे छे अने नारद सनकादिक जेवो एटले अमारा सिद्ध मुक्त जेवो सुखियो थाय छे, एम कह्युं छे (२) बाबतो छे.

१ प्र० बीजा प्रश्नमां जे अमारो प्रताप विचारीने अंतरवृत्ति करे ते पोताना स्वरूपने देखे छे. ने तेने विषे अमारी मूर्तिने पण देखे छे, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते अंतर्दृष्टि ते शुं ? अने जीवात्माने विषे तो श्रीजीमहाराज अन्वयपणे अंतर्यामीरूपे रह्या छे. ने व्यतिरेक मूर्ति तो अक्षरकोटीथी पर पोताना तेजरूप अक्षरधामने विषे रही छे, ते जीवात्माने विषे शी रीते देखाय ?

१ उ० देहभाव भुलीने पोताना चैतन्यने श्रीजीमहाराजना तेजरूप अक्षरधाम, ते रूप मानीने ते आत्माकारे वृत्ति करीने तेमां श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने धारे, ते अंतर्दृष्टि कहेवाय अने साधुनो समागम करीने, श्रीजीमहाराजने सर्वोपरि जाणीने, पोताने श्रीजीमहाराजना तेजरूप मानीने, श्रीजीमहाराज मनुष्यरूपे दर्शन आपता होय, त्यारे ते मनुष्यरूप मूर्तिने जीवात्मामां धारे, अने मनुष्यरूपे न देखाता होय, त्यारे श्रीजीमहाराजनी प्रतिमाने धारे, त्यारे ते जीव महातेजरूप थाय. ने ते तेजमां मूर्तिने प्रकाशमान देखे. ॥ २० ॥

संवत् १८७६ ना पोष शुदि ३ त्रीजने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां सांजने समे उगमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजता हता अने काळा छेडानो खेस पहेर्यो हतो, ने धोळो चोफाळ ओढ्यो हतो, ने धोळी पाघ माथे बांधी हती, ने उगमणे मुखारविंदे विराजमान हता. ने पोतानी आगळ साधु झांझ पखाज लइने कीर्तन गाता हता. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना सत्संगीनी सभा भराइने बेठी हती.
पछी ते सर्वेने श्रीजीमहाराजे छाना राख्या, ने एम बोल्या जे, सर्वे सांभळो एक वार्ता करीए एम कहीने, झाझीवार सुधी तो नेत्रकमळने मींचीने विचारी रह्या ने पछी बोल्या

१ जे, (१) जे हरिभक्तना मनमां भगवानने अति प्रसन्न करवानी इच्छा होय, ते भगवानने प्रसन्न करवानो तो ए उपाय छे जे, पोतपोताना वर्णाश्रमनो जे धर्म तेने विषे अचळ निष्ठा, तथा आत्मनिष्ठानी अतिशे दृढता, तथा एक भगवान विना बीजा सर्वे पदार्थने विषे अरुची, तथा भगवानने विषे महात्म्ये सहित एवी निष्काम भक्ति, ए चार साधने करीने भगवानननी अतिशे प्रसन्नता थाय छे. अने ए जे चार साधन तेने एकांतिक धर्म कहीए. ने एवा एकांतिक धर्मवाळा जे भक्त ते आ समामां आपणा सत्संगमां केटलाक छे.(१) १

अने जे भगवाननो भक्त होय तेने खातां पीतां, नातां धोतां, चालतां बेठतां, सर्वे क्रियाने विषे भगवानननी मूर्तिनुं चिंतवन करवुं, अने ज्यारे अंतरमां कांई विक्षेप न होय त्यारे तो भगवाननुं चिंतवन करवुं, ने भगवानननी मूर्ति सामुं जोई रहेवुं, अने जो अंतरमां संकल्प विकल्पनो विक्षेप थाय तो देह, इंद्रियो, अंतःकरण, देवता, विषय ए सर्वेथी पोतानुं स्वरूप जुदुं समजवुं, ने ज्यारे संकल्पनो विराम थाय त्यारे भगवानननी मूर्तिनुं चिंतवन करवुं. (२) २

अने आ देहने तो पोतानुं स्वरूप मानवुं नहि ने देहनां जे संबंधी तेने पोताना संबंधी मानवां नहि, केमजे आ जीव छे ते चोराशीलाख जात्यना देहने पूर्वे धरी आव्यो छे, ने जेटली जगतमां स्त्रियो छे, ते सर्वेने पेट जन्म लीधा छे तथा जगतमां जेटली कुतरियुं,जेटली मीनडियुं,जेटली वानरियुं, ए आदिक जे जे चोराशीमां जीव छे ते सर्वेने पेट केटलीक वार जन्म धर्या छे. अने जगतमां जेटली जातनी स्त्रियो छे, तेमां केइ एणे स्त्री नथी करी? सर्वेने पोतानी स्त्रियो करी छे. तेमज ए जीवे स्त्रीना देह धरीने जगतमां जेटली जात्यना पुरुष छे, ते सर्वेने पोताना धणी कर्या छे, तेटला माटे जेम ए चोराशी लाख जात्यना सगपणने हमणे मानता नथी, तथा चोराशी लाख जात्यना देहने पोतानो देह मानता नथी, तेमज आ देहने पोतानुं स्वरूप मानवुं नहि, ने आ देहनां संबंधीने पोताना संबंधी मानवां नहि, केमजे चोराशी लाख जात्यना देह धर्या तेनो संबंध रह्यो नहि, तो आ देहनो संबंध पण नहिज रहे. ते माटे देहगेहादिक सर्वे पदार्थने असत्य जाणीने तथा देह इंद्रियो, अंतःकरण तेथी जुदुं पोतानुं स्वरूप जाणीने, तथा पोताना धर्ममां रहीने, भगवानननी निष्काम भक्ति करवी. (३) ३

अने दिवसे दिवसे भगवाननुं अतिशे महात्म्य जणाय तेने अर्थे साधुनो संग निरंतर राखवो. (४) ४

अने जे आवी रीते नथी समजतो ने केवळ देहाभिमानी ने प्राकृत मतिवाळो छे, ने ते जो सत्संगमां पड्यो छे, तो पण एने पशु जेवो जाणवो. अने आ सत्संगमां तो भगवाननो मोटो प्रताप छे,तेणे करीने पशुनुं पण कल्याण थाय छे, तो मनुष्यनुं कल्याण थाय

तेमां शुं आश्चर्य कहेवाय ! पण एने खरेखरो भगवाननो एकांतिक भक्त न कहेवाय. (५) ५

एकांतिक भक्त तो जेनी प्रथम कह्युं एवी समजण होय तेनेज कहीए अने एवो जे एकांतिक भक्त ते देहनो त्याग करीने, ने सर्वे मायाना भावथी मुक्त थईने, अर्चिमार्गे करीने भगवानना अक्षरधामने पामे छे. (६) ६

ते अक्षरनां बे स्वरूप छे. एक तो निराकार एकरस चैतन्य छे तेने चिदाकाश कहीए, ब्रह्ममोहोल कहीए, अने ए अक्षर बीजेरूपे करीने पुरुषोत्तम नारायणनी सेवामां रहे छे. (७) ७

अने ए अक्षरधामने पाम्यो जे भक्त ते पण अक्षरना साधर्म्यपणाने पामे छे, ने भगवाननी अखंड सेवामां रहे छे. अने ए अक्षरधामने विषे श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम नारायण ते सदा विराजमान छे. अने ए अक्षरधामने विषे अक्षरना साधर्म्यपणाने पाम्या एवा अनंतकोटी मुक्त रह्या छे ते सर्वे पुरुषोत्तमना दास भावे वर्ते छे, ने पुरुषोत्तम नारायण ते सर्वेना स्वामी छे, ने अनंतकोटी ब्रह्मांडना राजाधिराज छे. माटे आपणा सत्संगी सर्वेने तो एमज निश्चय करवो जे, आपणे पण ए अक्षररूप जे मुक्त तेमनी पंक्तिमां भळवुं छे ने ए अक्षरधाममां जइने अखंड भगवाननी सेवामां हजुर रहेवुं छे. पण नाशवंत ने तुच्छ एवुं जे मायिक सुख तेने इच्छवुं नथी, न एमां कोई ठेकाणे लोभावुं नथी. एवो दृढ निश्चय राखीने, निरंतर भगवाननी एकांतिक भक्ति करवी, अने भगवाननुं अतिशे महात्म्य यथार्थ समझीने, भगवान विना बीजा जे स्त्री धनादिक सर्वे पदार्थ तेनी जे वासना तेने देह छतेज टाळी नाखवी. (८) ८

अने जो भगवान विना बीजा पदार्थनी वासना रही गइ होय ने तेनो देह पडे ने तेने भगवानना धाममां जाते जो मार्गमां सिद्धियो देखाय तो ते भगवानने मुकीने ते सिद्धियोमां लोभाइ जाय तो तेने मोटुं विघ्न थाय. माटे सर्वे पदार्थनी वासना टाळीने भगवानने भजवा. (९) इति वचनामृतम् ॥२१॥ ९

रहस्यार्थ प्र०——आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां स्वधर्मादिक चार साधन दृढ करे तेना उपर अमे प्रसन्न थइए छीए. अने ए चार साधन ते एकांतिक धर्म छे. (१) अने सर्वे क्रियामां अमारी मूर्तिनुं चिंतवन करवुं. (२) अने देहगेहादिकने असत्य जाणीने तेथी पोतानुं स्वरूप जुदुं मानीने, धर्मे सहित अमारी निष्काम भक्ति करवी. (३) ने अमारो महिमा समजवा माटे साधुनो संग राखवो. (४) अने अमारे प्रतापे पशुनुं पण कल्याण थाय छे. (५) अने अमारा एकांतिक भक्त अर्चिमार्गे करीने अक्षरधामने पामे छे, ने अमारी सेवामां रहे छे. (६) अने ते अक्षरधामनां बे स्वरूप छे. (७) अने मुक्त सर्वे अमारा दास छे. ने अमे सर्वेना स्वामी छीए. (८) अने अमारा विना बीजी वासना रही गइ होय, तेने सिद्धियो देखाय तेमां मोह पामे तो मोटुं विघ्न थाय, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. [९] बाबतो छे.

१ प्र० चोथी बाबतमां साधुनो समागम करवानो कह्यो, ते साधु कोने जाणवा ? ने निरंतर संग राखवानो कह्यो, ते केवी रीते संग राखे ते निरंतर संग राख्यो कहेवाय ?

१ उ० श्रीजीमहाराजनी सर्वोपरि उपासना होय ने स्वधर्मादिक चार साधने युक्त होय, तेने आ ठेकाणे साधु कह्या छे. अने ए साधुनो संग सदाय करवो. एवा साधुनो योग देहे करीने न होय त्यारे ए साधु थकी प्रथम ज्ञान सांभळेलुं होय, ते संभारीने ते प्रमाणे निरंतर वर्त्तवुं ते निरंतर संग राख्यो कहेवाय.

२ प्र० पांचमी बाबतमां पशु जेवानुं कल्याण थाय एम कह्युं, ते केवा लक्षणवाळो होय तेने पशु जेवो जाणवो ?

२ उ० स्थूळ देहे वर्त्तमान पाळतो होय पण सूक्ष्म देहमां विषयना संकल्प थता होय, ने देहाभिमान होय, ने वासना होय, ने आत्मा परमात्मानुं ज्ञान न होय, ने कथा वार्तामां समजतो न होय, अने कोइनो अवगुण न लेतो होय, ते त्यागीमां अथवा गृहस्थमां होय तेने पशुतुल्य कह्यो छे.

३ प्र० छठ्ठी बाबतमां अर्चिमार्गे करीने अक्षरधामने पामे छे एम कह्युं, ते अर्चिमार्ग ते कियो समजवो ? अने अक्षरधाम कियुं जाणवुं ?

३ उ० चार साधने युक्त एवा एकांतिक साधुनो संग करीने धर्म, आत्मनिष्ठा, वैराग्य ने महात्म्ये सहित निष्काम भक्ति, ए चार साधन सिद्ध करीने एकांतिक थाय. ते मायाथी मुक्त थयो कहेवाय. पछी तेने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां अखंडवृत्ति रहेवा मांडे, ते वृत्ति राखतां राखतां देहनी विस्मृति थाय. ने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनो प्रकाश देखाय. ते तेजद्वाराए श्रीजीमहाराजनी मूर्ति देखाय, ते तेजने अर्चिमार्ग कह्यो छे. अने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिना प्रकाशने अक्षरधाम कह्युं छे. ते (पं० ३/१मां) पोतानी मूर्तिना प्रकाशने पोताने रहेवानुं धाम कह्युं छे. तथा (म० -१/२३मां) पोताना तेजने आत्मा तथा ब्रह्म तथा अक्षरधाम कह्युं छे. आनो विस्तार (प्र० ७ना छठ्ठा प्रश्नोत्तरमां तथा ४५ ना बीजा प्रश्नोत्तरमां) कर्यो छे.

४ प्र० श्रीजीमहाराजना तेजरूप धामने श्रीजीमहाराजने विषे स्वामीसेवक भाव छे के नथी ?

४ उ० जेम सूर्यना प्रकाशने सूर्यने विषे तथा अग्निनी ज्वाळाने अग्निने विषे स्वामीसेवक भाव नथी तेम श्रीजीमहाराजना तेजरूप अक्षरधामने श्रीजीमहाराजने विषे स्वामीसेवक भाव नथी, केम जे ए तेज मूर्तिनुं कार्य छे. पण मूर्तिथी जुदी वस्तु नथी. माटे स्वामीसेवक भाव नथी, पण कार्यकारण भावने शरीरशरीरी भाव छे.

५ प्र० जे वस्तु जुदी न होय तेमां कार्यकारण भावने शरीरशरीरी भाव केवी रीते होय ?

५ उ० जेम सूर्यनुं तेज सूर्यने आधारे छे ने अग्निनी ज्वाळा अग्निने आधारे छे तेम श्रीजीमहाराजनुं तेज श्रीजीमहाराजने आधारे छे. माटे आधारआधेय भावने कार्यकारण भाव तथा शरीरशरीरी भाव छे एम (प्र० ६४/६मां) कह्युं छे.

६ प्र० अक्षरधाम श्रीजीमहाराजथी जुदी वस्तु नथी त्यारे (७ बाबतमां) ए अक्षरधाम बीजे रूपे

करीने श्रीजीमहाराजनी सेवामां रहे छे, एम कह्युं ते बीजुं रूप केवी रीते समजवुं ? अने सेवा शी समजवी ?

६ उ० श्रीजीमहाराजना तेजरूप अक्षरधाम छे ते मूर्तिमान मूळअक्षरनुं शरीरी, व्यापक, द्रष्टा आत्माने आधार छे. ते मूळअक्षरमां अंतर्यामीपणे रहीने ते मूळअक्षरद्वारे सर्वेनी उत्पत्त्यादिक करावे छे. ते मूर्तिमान अक्षरने आ तेजरूप अक्षरधामनुं बीजुंरूप कह्युं छे. अने सर्वेनी उत्पत्ति करवी ते सेवा कही छे. पण हजुरनी सेवा कही नथी. अखंड सेवामां तो मुक्त रह्या छे एम कह्युं छे. अने मुक्तनेज पोताना दास कह्या छे, ने पोताने मुक्तना स्वामी कह्या छे. अने अक्षरधाम तो श्रीजीमहाराजनो प्रकाश छे ते प्रकाशरूप धामने ने श्रीजीमहाराजने स्वामी सेवकपणुं कहेवाय नहि. अने आठमी बाबतमां अक्षरना साधर्म्यपणाने पामे छे, एम कह्युं छे, ते निराकार अक्षरना साधर्म्यपणाने पामे छे, एम कह्युं छे. पण मूर्तिमान अक्षरना साधर्म्यपणाने पामे छे एम नथी कह्युं, केम जे मूर्तिमान अक्षरना मुक्त तो जुदा छे. अने श्रीजीमहाराजना तेजरूप थइने ए तेजमां एकता करे तोज श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनो साक्षात्कार थाय. ते [म० ५०मां] एकरस परिपूर्ण एवुं ब्रह्मस्वरूप, जे श्रीजीनुं तेज, तेमां आत्माने लीन करीने, तेमां महाराजने मुक्त रह्या छे तेमने विषे प्रीति जोडवी एम कह्युं छे. माटे अक्षरना साधर्म्यपणाने पामवानी वात ज्यां आवे, त्यां श्रीजीमहाराजना तेजरूप निराकार अक्षर जाणवुं. ते निराकार अक्षर जे श्रीजीमहाराजनुं तेज तेमां एकता करवाथी श्रीजीनी मूर्तिनो साक्षात्कार थाय छे त्यारे ते मुक्तनो चैतन्य श्रीजीमहाराजना जेवोज साकार थइ जाय छे, जेम भमरीने ध्यांने इयळनी भमरी थई जाय छे तेम.

७ प्र० श्रीजीमहाराजना तेजरूप अक्षरधामने साकार मूळअक्षरनुं शरीरीने व्यापक ने द्रष्टाने आत्मा कह्युं ते किया वचनामृतमां कह्युं छे ?

७ उ० (प्र० ६४मां)आ अक्षरधामने साकार मूळअक्षरनुं शरीरी तथा व्यापक ने द्रष्टाने आत्मा कह्युं छे, ने [का० ६मां] पण साकार अक्षरनुं आत्मा कह्युं छे.

८ प्र० अक्षरधामने विषे श्रीजीमहाराजनी सेवा मुक्त करे छे. एम कह्युं ते धाममां सेवा शी हशे ?

८ उ० श्रीजीमहाराजना महिमानुं मुक्तने अपारपणुं रहे छे. तेणे करीने अतिशे दृढ स्वामीसेवक भाव छे. ते स्वामी सेवकभाव एज सेवा कही छे, माटे सेवक भाव छे एज सेवा छे.॥२१॥

संवत् १८७६ना पोष शुदि ४ चोथने दिवस मध्यान समे श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता. अने सर्वे श्वेत वस्त्र धार्या हतां. ने पाघने विषे फूलनो तोरो खोस्यो हतो, ने बे कान उपर पुष्पना गुच्छ धार्या हता, ने कंठमां गुलदावदीना पुष्पनो हार पहेर्यो हतो, ने उगमणे मुखारविंदे विराजमान हता. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. ने परमहंस कीर्तन गाता हता.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, सांभळो एक वात करीए त्यारे सर्वे परमहंस गाववुं

१ राखीने वात सांभळवा तत्पर थया. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) मृदंग, सारंगी, सरोदा, ताल इत्यादिक वार्जीत्र वजाडीने कीर्तन गाववां, तेने विषे जो भगवाननी स्मृति न रहे, तो ए गायुं ते न गाया जेवुं छे, ने भगवानने विसारीने तो जगतमां केटलाक जीव गाय छे, तथा वार्जीत्र वजाडे छे, पण तेणे करीने तेना मनमां शांति आवती नथी. ते माटे भगवाननां कीर्तन गाववां तथा नाम रटण करवुं, तथा नारायण धून्य करवी, इत्यादिक जे जे करवुं ते भगवाननी मूर्तिने संभारीनेज करवुं. अने भजन करवा बेसे त्यारे तो भगवानने विषे वृत्ति राखे ने ज्यारे भजनमांथी उठीने बीजी क्रियाने करे, त्यारे जो भगवानमां वृत्ति न राखे तो तेनी वृत्ति भजनमां बेसे त्यारे पण भगवानना स्वरूपमां स्थिर थाय नहि. माटे हालतां, चालतां, खातां, पीतां सर्व क्रियाने विषे भगवानना स्वरूपमां वृत्ति राखवानो अभ्यास करवो, तो तेने भजनमां बेसे त्यारे भगवानमां वृत्ति स्थिर थाय. अने जेने भगवानमां वृत्ति रहेवा लागे तेने तो कामकाज करते पण रहे, अने जेने गाफलाई होय तेने तो भजनमां बेसे त्यारे पण भगवानमां वृत्ति न रहे. ते माटे सावधान थइने भगवानना स्वरूपमां वृत्ति राखवानो अभ्यास भगवानना भक्तने करवो. एटली वात करीने श्रीजीमहाराज बोल्या जे हवे कीर्तन गाओ. (१) १
इति वचनामृतम् ॥२२॥

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां कथा कीर्तनादिक सर्व क्रियामां अमारी मूर्तिने विषे वृत्ति राखे तो अमारी मूर्तिमां वृत्ति स्थिर थाय छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (१) बाबत छे.

१ प्र० वार्जीत्र वजाडीने कीर्तन गातां भगवाननी स्मृति न रहे, तो गायुं ते न गाया जेवुं कह्युं ते जगत्‌ना जीवन तो भगवाननी उपासना नथी, एटले फळ नथी थतुं पण भगवानना भक्त तो कथा वार्ता करता होय, ने मूर्तिनी स्मृति न रहेती होय तेने कथा कीर्तननुं फळ थाय के नहि ?

१ उ० जेने भगवाननी स्मृति न रहे तेने स्मृतिनुं फळ जे भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान करतां कोई प्रकारनो विक्षेप न आवे, ने सुखे मूर्तिमां वृत्ति रहे ए फळ न थाय. तेथी ते गायुं ते न गाया जेवुं कह्युं छे, पण कथा कीर्तननुं फळ जे भगवाननी स्मृति रहेवा मांडे, ते फळतो थाय, केम जे कथा कीर्तनमां भगवाननी मूर्तिना अंगनुं वर्णन आवे माटे कथा कीर्तन छे ते स्मृति रहेवानो उपाय छे. ॥२२॥

संवत् १८७६ ना पोष शुदि ५ पंचमीने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता, अने श्रीजीमहाराजे माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो, तथा धोळुं अंगरखुं पहेर्युं हतुं,

तथा धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो, तथा केडे कसुंबल शेलुं बांध्युं हतुं. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी करुणा करीने परमहंसनी आगळ श्रीजीमहाराज वात करवा लाग्या, जे (१) वासुदेव महात्म्य नामे जे ग्रंथ ते अमने अतिशे प्रिय छे, केम जे भगवानना भक्तने भगवानने भज्यानी जे रीति ते सर्वे ए ग्रंथमां कही छे. अने भगवानना जे भक्त ते बे प्रकारना छे. तेमां एकने भगवाननो निश्चय तो यथार्थ छे, पण ते देहात्मबुद्धि सोतो भगवाननुं भजन करे छे. अने बीजो तो जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति ए त्रण अवस्था तथा स्थूळ सूक्ष्म ने कारण ए त्रण देह तेथी परने चैतन्यरूप एवुं पोताना स्वरूपने माने, अने ते पोताना स्वरूपने विषे भगवाननी मूर्तिने धारीने भगवाननुं भजन करे, पछी त्रण अवस्थाथी ने त्रण शरीरथी पर जे पोतानुं स्वरूप तेने अतिशे प्रकाशमान भाळे ने ते प्रकाशने विषे भगवाननी मूर्ति जेवी प्रगट प्रमाण छे, तेवी अतिशे प्रकाशे युक्त भासे एवी रीतनी स्थितिवाळो होय; अने एवी रीतनी स्थिति ज्यां सुधी थइ नथी त्यां सुधी भगवाननो भक्त छे, तो पण तेने माथे विघ्न छे. अने जो एवी स्थितिमां शिवजी नहोता वर्त्तता तो मोहनी स्वरूपमां मोह पाम्या. अने एवी स्थितिमां ब्रह्मा नहोता वर्त्तता तो सरस्वतीने देखीने मोह पाम्या. अने एवी स्थितिमां नारदजी नहोता वर्त्तता तो परण्यानुं मन थयुं.अने इंद्र तथा चंद्रादिक तेमने जो एवी स्थिति नहोती तो कलंक लाग्यां. अने भगवाननो भक्त होय पण जो एवी स्थितिने न पाम्यो होय तो भगवानने विषे पण प्राकृत भाव परठाइ जवाय छे, जेम राजा परीक्षित् एवो भक्त नहोतो तो रासक्रीडा सांभळीने श्रीकृष्ण भगवानने विषे संशय थयो; अने शुकजी जो एवा भक्त हता, तो तेने कोइ जातनो संशय थयोज नहि. अने जे एवो भक्त होय ते तो एम समझे जे, मारे विषे कोई दोष अडी शके नहि तथा ते दोष कांइ बाध करी शके नहि, तो जेने भजने करीने हुं आवो थयो एवा जे भगवान तेने विषे तो कोइ मायिक दोष होयज केम? एम दृढपणे समझे छे. (१) अने एवो जे भगवाननो भक्त छे ते भगवाननी मूर्तिने विषे १
ज्यारे वृत्तिने राखे छे, त्यारे ते वृत्तिना बे विभाग थाय छे तेमां एक वृत्ति तो भगवानना स्वरूपमां रहे छे, ने बीजी तो जे भजननो करनारो तेमां रहे छे, ने भगवानना स्वरूपमां जे वृत्ति रहे छे ते प्रेमे युक्त रहे छे, ने भजनना करनारामां जे वृत्ति रहे छे तेतो विचारे युक्त रहे छे, ने ते वृत्ति जे ते भजनना करनाराने विषे भगवानना भजन विना बीजा जे जे घाट संकल्प थाय छे ते सर्वेने खोटा करी नाखे छे,तथा ते भजनना करनारामां जे दोष ते सर्वेने खोटा करी नाखे छे, एवी रीते तेनी वृत्ति भगवानमां अखंड रहे छे. अने घडीक तो एकाग्र चित्ते बेसीने भगवाननुं भजन करे ने घडी-

कमां तो चाळा चुंथतो फरे तेने तो एवी स्थिति थाती नथी. जेम पाणीनो घडो भरीने एक ठेकाणे ढोळी आवीए पछी वळी बीजे दिवस अथवा त्रीजे दिवसते ठेकाणे पाणीनो घडो ढोळीए तेणे करीने त्यां पाणीनो धरो भराय नहि, कां जे आगला दिवसनुं जळ आगले दिवसे सुकाइ जाय, ने पाछला दिवसनुं पाछले दिवसे सुकाई जाय; अने जो आंगळी जेवी नानीज पाणीनी सेरच अखंड वहेती होय तो मोटो पाणीनो धरो भराइ जाय, तेम खातां, पीतां, हालतां, चालतां तथा शुभ क्रियाने विषे तथा अशुभ क्रियाने विषे सर्वे काळे भगवानमां अखंड वृत्ति राखवी पछी एवी रीते भगवानमां अखंड वृत्ति राखतां राखतां एवी दृढ स्थिति थाय छे. (२) इति वचनामृतम् ॥२३॥ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां त्रण देहथी पर जे पोतानो जीवात्मा तेने चैतन्यरूप जे अमारुं तेज ते रूप मानीने तेमां अमारी आ प्रगट मनुष्यरूप मूर्तिने धारे तो पोताना स्वरूपने तथा ते स्वरूपने विषे आ अमारी मूर्तिने अतिशे प्रकाशमान देखे, अने तेने अमारा चरित्रने विषे संशय थाय नहि. (१) अने अमारी आ मूर्तिमां एक वृत्ति प्रेमे युक्त ने बीजी वृत्ति विचारे युक्त अखंड राखवे करीने एवी स्थिति थाय छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. [२] बाबतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां चैतन्यने विषे श्रीजीमहाराजनी मनुष्यरूप मूर्तिने धारे तो देखे एम कह्युं ते श्रीजीमहाराज मनुष्यरूपे विचरता, त्यारे तो ते मूर्ति धार्यामां आवे, पण आज तो श्रीजीमहाराज मनुष्य रूपे विचरता नथी त्यारे कइ मूर्ति धारवी ?

१ उ० जेम मनुष्यरूपे प्रगट हता तेमज आज प्रतिमारूपे प्रगट छे. माटे श्रीजीमहाराजना तेजरूप पोताने मानीने तेमां श्रीजीमहाराजनी प्रतिमाने धारेतो प्रतिमाने तेजोमय देखे माटे आज श्रीजीमहाराजनी प्रतिमाने धारवी.

२ प्र० पोताना चैतन्यने विषे श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने देखे एवी स्थितिवाळो होय ते एम समजे जे, मारे विषे कोई दोष अडी शके नहि तथा बाध करी शके नहि एम कहुं ते ए दोषने विषे प्रवर्ते तो पण बाध न थाय के ए दोष मोह पमाडी शके नहि ते केम समजवुं ?

२ उ० एवी स्थितिवाळो होय ते तो श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने सुखे सुखीयो होय ने मायिक पदार्थने नरक तुल्य माने, अने आ लोकने विषे त्यागीना आश्रममां रह्यो होय, तो त्यागीना धर्म प्रमाणेज वर्ते अने गृहस्थना आश्रममां रह्यो होय तो गृहस्थना धर्म प्रमाणेज वर्ते, पण आज्ञा बहार कोई क्रिया करेज नहि अने जे कोइ वर्त्तमान विरुद्ध क्रिया करे तेने श्रीजीमहाराजनुं दर्शनज नथी ने आशरो पण नथी. ए तो केवळ दंभी ने विषयीज छे ने महादुष्ट छे. तेने तो (म० ३/५ मां) चंडाळ जेवो कह्यो छे, माटे तेने चंडाळ जाणीने श्वपचनी पेठे त्याग करवो पण तेने श्रीजीमहाराजनो भक्त न जाणवो. ॥२३॥

संवत् १८७६ ना पोष शुदि ६ छट्ठने दिवस संध्या समे श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विरा-

जमान हता, ने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो, ने धोळो खेस पहेर्यो हतो, तथा गरम पोसनी राती डगली पहेरी हती, ने धोळो चोफाळ ओढ्यो हतो, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज परमहंस प्रत्ये बोल्या जे, (१) जे रीते ज्ञाने करीने स्थिति थाय छे ते कहीए छैए. ते ज्ञान केवुं छे तो प्रकृति पुरुषथी पर छे, ने ए ज्ञानने विषे स्थिति थाय छे, त्यारे प्रकृति पुरुषने प्रकृति पुरुषनुं जे कार्य ते कांइए नजरमां आवतुं नथी. ने एनुं नाम ज्ञान प्रलय कहेवाय छे अने एवी स्थिति थाय छे तेने एकरस चैतन्य भासे छे, ने तेने विषे एक भगवाननी मूर्तिज रहे छे, पण बीजो कोइ आकार रहेतो नथी अने क्यारेक तो ए प्रकाशमां भगवाननी मूर्ति पण देखाय नहि एकलो प्रकाशज देखाय छे ने क्यारेक तो प्रकाश पण देखाय ने भगवाननी मूर्ति पण देखाय, एने ज्ञाने करीने स्थिति जाणवी. (१) अने जेवी भगवाननी मूर्ति प्रगट देखाय छे ते मूर्तिने विषे अखंड १
वृत्ति रहे तेणे करीने एवी स्थिति थाय छे. (२) ने जेने जेवो भगवाननो महिमा सम- २
जाणो होय तेना हृदयमां तेटलोज प्रकाश थाय छे, ने तेटलोज तेने प्रणव ने नाद संभळाय छे, ने जेटलो जेने भगवाननो निश्चय, ने महिमा समजाय छे तेने तेटला मुंदा घाट बंध थइ जाय छे. ने ज्यारे भगवाननो निश्चय यथार्थ थाय छे, ने यथार्थ महिमा समजाय छे त्यारे तेने मुंदा घाट मात्र टळी जाय छे. जेम लींबुनी एक चीरच चुशी होय तो थोडा थोडा दांत अंबाय पण हळवा हळवा चणा चवाय खरा, ने जो आखुं लींबु चुश्युं होय तो चणा चवाय नहि ने मगनो दाणो पराणे पराणे चवाय, अने जो घणां लींबु चुश्यां होय तो रांधेलो भात पण चवाय नहि, तेम भगवानना निश्चयने महात्म्य रूपी जेने खटाइ चढी होय तेनी चार अंतःकरणने दश इंद्रियो रूप जे डाढ्यो ते सर्वे अंबाई जाय छे, त्यारे ए जीव मनरूप पोतानी डाढचे करीने विषयना संकल्परूपी चणाने चाववाने समर्थ थातो नथी. तेमज चित्तरूप पोतानी डाढ्ये करीने विषयनुं चिंतवन करवा समर्थ थातो नथी.तेमज बुद्धिरूप पोतानी डाढ्ये करीने विषयनो निश्चय करवा समर्थ थातो नथी. तेमज अहंकाररूप पोतानी डाढ्ये करीने विषय संबंधी अभिमान करवा समर्थ थातो नथी, तेमज पंचज्ञान इंद्रियोने पंचकर्म इंद्रियोरूपजे डाढ्यो छे, ते डाढ्ये करीने ते ते इंद्रियोना विषयरूप जे चणा तेने चाववाने समर्थ थातो नथी. अने जेने यथार्थ भगवाननो निश्चय न होय, ने यथार्थ भगवाननो महिमा जणाणो न होय तेनां इंद्रियो तथा अंतःकरण ते पोतपोताना विषय थकी यथार्थपणे निवृत्ति पामतां नथी. (३) ३
अने जे भगवाननुं स्वरूप छे तेतो मायाने मायाना जे गुण ते थकी पर छे, अने सर्वे विकारे रहित छे, पण जीवना कल्याणने अर्थे मनुष्य जेवा भासे छे ते भगवानने विषे

जे अल्पमतिवाळा छे, ते जेवा जेवा दोष कल्पे छे ते भगवानने विषे तो एके दोष नथी,
पण कल्पनारानी बुद्धिमांथी ए दोष कोइ काळे टळवाना नहि. तेमां जे भगवानने कामी
समझे छे ते पोते अत्यंत कामी थइ जाय छे, अने जे भगवानने क्रोधी समझे छे ते पोते
अत्यंत क्रोधी थइ जाय छे, ने जे भगवानने लोभी समझे छे ते पोते अत्यंत लोभी थई
जाय छे, अने जे भगवानने ईर्ष्यावान समझे छे ते पोते अत्यंत ईर्ष्यावान थइ जाय छे,
ए आदिक जे जे दोष भगवानने विषे कल्पे छे ते तो जेम सूर्य सामी धूळनी फांट
भरीने नाखीए ते पोतानी आंखमां पडे छे, तेम भगवानने विषे जे जात्यनो दोष
कल्पे छे ते पोताने दुःख दे छे. अने पोतामां गमे तेवा भुंडा स्वभाव होय ने जो भग-
वानने अतिशे निर्दोष समझे, तो पोते पण अतिशे निर्दोष थइ जाय छे. (४) ४
२ पछी ब्रह्मानंद स्वामीए पूछ्युं जे, (२) कोइ विषयमां पण पोतानां इंद्रियो तणातां न होय,
ने अंतःकरणमां पण खोटा घाट थाता न होय, ने भगवाननो निश्चय पण यथार्थ छे;
तो पण अपूर्णपणुं रहे छे, ने अंतर सुनुं रहे छे तेनुं शुं कारण छे ? त्यारे श्रीजीमहाराज
बोल्या जे, ए पण हरिभक्तमां मोटी खोट्य छे जे पोतानुं मन स्थिर थयुं छे ने भगवा-
ननो निश्चय पण अतिशे दृढ छे तोय पण हइयामां अतिशे आनंद आवतो नथी जे हुं
धन्य छुं, ने हुं कृतार्थ थयो छुं, ने आ संसारमां जे जीव छे ते काम, क्रोध, लोभ,
मोह, मद, मत्सर, आशा, तृष्णा, तेने विषे हेरान थाता फरे छे, अने त्रिविधि तापमां
रात्य दिवस बळे छे ने मुने तो प्रगट पुरुषोत्तमे करुणा करीने पोतानुं स्वरूप ओळखाव्युं
छे,ने कामक्रोधादिक सर्वे विकारथी रहित कर्यो छे,अने नारद सनकादिक जेवा संत तेना
समागममां राख्यो छे, माटे मारुं मोटुं भाग्य छे, एवो विचार नथी करतो, ने आठो पहोर
अतिशे आनंदमां नथी वर्त्ततो ए मोटी खोट्य छे. जेम बाळकना हाथमां चिंतामणि दीधो
होय, तेनुं तेने महात्म्य नथी एटले तेनो तेने आनंद नथी, तेम भगवान पुरुषोत्तम मळ्या
छे ने तेनो अंतरमां आठो पहोर केफ रहेतो नथी जे, मारुं पूर्णकामपणुं थयुं छे एवुं नथी
समझतो ए हरिना भक्तने मोटी खोट्य छे. (५) अने ज्यारे कोई हरिभक्तनो दोष नज- ५
रमां आवे त्यारे एम समझवुं जे आनो स्वभाव तो सत्संगमां न घटे एवो छे तोय पण
एने जो सत्संग मळ्यो छे ने ए जो जेवो तेवो छे तोय पण सत्संगमां पड्यो छे, तो
एनो पूर्व जन्मनो अथवा आ जन्मनो संस्कार भारे छे तो आवो सत्संग मळ्यो छे, एम
समझीने तेनो पण अतिशे गुण लेवो. एम वार्ता करीने श्रीजीमहाराज जय सच्चिदानंद
कहीने पोताने उतारे पधार्या. (६) इति वचनामृतम् ॥२४॥ ६

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [२] छे. तेमां पहेलुं कृपावाक्य छे. तेमां ज्ञाने करीने
स्थिति थाय त्यारे एकरस चैतन्य भासे छे ने ए चैतन्यने विषे अमारी मूर्ति भासे छे. (१)

अने एवी स्थिति अमारी मूर्तिमां अखंड वृत्ति राखवाथी थाय छे. (२) अने अमारो महिमा जणाय तेना हृदयमां प्रकाश थाय छे, ने प्रणव ने नाद संभळाय छे, ने भुंडा घाट टळी जाय छे. (३) अने अमारे विषे जे जे दोष कल्पे ते एने दुःख दे छे. अने अमने निर्दोष जाणे ते निर्दोष थइ जाय छे. (४) बीजामां जेनुं मन स्थिर थयुं होय ने अमारो निश्चय पण दृढ होय तो पण तेना हैयामां आनंद आवतो नथी ते मोटी खोट्य छे. (५) अने कोइ हरिजननो दोष देखवामां आवे त्यारे, एनो भारे संस्कार छे तो सत्संग मळ्यो छे एम गुण लेवो एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. [६] बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां प्रकृति पुरुषथी पर ज्ञान कह्युं ते पर ज्ञान केवी रीते जाणवुं ?

१ उ० श्रीजीमहाराजने जीवकोटी, इश्वरकोटी, ब्रह्मकोटी तथा मूर्तिमान मूळअक्षरकोटीथी पर ने ए सर्वेना कर्ता ने ए सर्वेने विषे अंतर्यामीपणे रह्या थका अतिशे निर्लेप, निर्विकार ने अतिशे असंगी ने ए सर्वेथी जुदा जाणे, अने पोताना धामने विषे पोताना साधर्म्यपणाने पाम्या एवा जे पोताना मुक्त तेमने सुखदाता, ने सर्व सुखमय मूर्ति एवा जाणे, ने श्रीजी-महाराजना तेजरूप जे पोतानो आत्मा तेने विषे श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने साक्षात्कार देखे ते ज्ञान प्रकृति पुरुषथी पर कहेवाय. अने ते मूर्तिमां अखंड निमग्न रहेवाय ते स्थिति जाणवी.

२ प्र० एकरस चैतन्य भासे छे एम कह्युं ते एकरस चैतन्य ते शुं जाणवुं ?

२ उ० श्रीजीमहाराजना तेजने एकरस चैतन्य कह्युं छे तेने देखे छे.

३ प्र० क्यारेक एकलो प्रकाश देखाय ने मूर्ति न देखाय एम कह्युं तेनो शो हेतु हशे ?

३ उ० ज्यां सुधी सिद्धदशा परिपक न थइ होय त्यां सुधी कोइक वखते श्रीजीमहाराजना तेजरूप पोताना आत्माने विषे मूर्ति देखाय, ने कोइ वखत न देखाय अने ज्यारे परिपक्व सिद्धदशा जेवी (का० ७ना ४ चोथा प्रश्नमां) कही छे तेवी दृढ थाय त्यारे मूर्ति सदाय देखाय.

४ प्र० त्रीजी बाबतमां प्रकाश, प्रणव ने नाद कह्यो ते शो समजवो ?

४ उ० श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमांथी तेज छुटे छे तेना झणझणाट–जुदा जुदा शब्द–थाय छे ते शब्दने प्रणव कह्यो छे अने ते प्रणवनो घोष थाय छे, ते घोषने नाद कह्यो छे. अने ए तेजने प्रकाश कह्यो छे.

५ प्र० चोथी बाबतमां अमारे विषे दोष देखाय एम कह्युं, ते मनुष्यरूपे हता त्यारे तो दोष जोनाराने देखाय पण आज दोष शी रीते लेवाता हशे ?

५ उ० श्रीजीमहाराजनां चरित्र शास्त्रमांथी सांभळीने संशय करे ते श्रीजीमहाराजनो दोष लीधो कहेवाय.

६ प्र० (६ बीजा प्रश्नमां) नारद सनकादिक कह्या ते कोने जाणवा ?

६ उ० पोताना मुक्तोने आ ठेकाणे ए नामे कह्या छे. ॥२४॥

संवत् १८७६ ना पोष शुदि ७ सप्तमीने दिवस प्रभात समे श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां परमहंसनी जायगाने विषे पधार्या हता. ने धोळो

खेस पहेर्यो हतो, ने घोळो चोफाळ ओढयो हतो, ने धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने आथमणे परथारे उगमणुं मुखारविंद करीने विराजमान हता. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज कृपा करीने बोल्या जे, (१) ब्रह्मानंद स्वामीए काल्य प्रश्न पुछयो हतो तेनो उत्तर वळी आज करीए छइए जे इंद्रियो अंतःकरण पोताने वश होय तोय पण अंतर सुनुं रहे छे तेनुं ए कारण छे जे, एने एकलुं साधननुं बळ छे पण भगवानना निश्चयनुं तथा आत्मज्ञाननुं बळ नथी, माटे एना अंतरमां न्यूनता रहे छे. ते सारु भगवानना निश्चयनो प्रताप, तथा भगवानना महिमानो प्रताप, तथा पोताना जीवात्माने ब्रह्मरूपे मानवो, ए त्रण वानां तो एने अतिशे दृढ जाण्यां जोइए छैये. अने एमां जेटली खामी रहे तेटली तो समाधिमां पण नडे छे अने हमणां अमे एक हरिभक्तने समाधि करावी हती तेने तेज अतिशे देखाणुं ते तेज जोइने चीस पाडवा मांडी ने कह्युं जे, हुं बळुं छुं माटे समाधिवाळाने पण आत्मज्ञाननुं जरुर काम पडे छे अने पोतानुं स्वरूप आत्मा न जाणे ने देहने माने तो तेने घणी काच्यप रही जाय छे. अने अमे ते हरिभक्तने समझाव्युं जे, तारुं स्वरूप तो आत्मा छे, देह नथी, ने आ लाडकीबाई नामने भाटनो देह ते तुं नथी, ने अछेद्य, अभेद्य एवो जे आत्मा ते तारुं स्वरूप छे. पछी अमे तेने समाधि करावीने कह्युं जे, गणपतिने स्थानके चार पांखडीनुं कमळ छे त्यां जइने तारुं स्वरूप जो. अने ज्यारे समाधिवाळो गणपतिने स्थानके जाय छे त्यारे त्यां नाद संभळाय छे, ने प्रकाश देखाय छे. ने तेथी पर ब्रह्माना स्थानकने विषे जाय छे त्यारे तेथी नाद पण घणो संभळाय छे ने प्रकाश पण तेथी अतिशे घणो देखाय छे. अने तेथी पर विष्णुने स्थानके जाय छे त्यारे तेथी अतिशे नाद संभळाय छे ने तेथी तेज पण अतिशे देखाय छे. एवी रीते जेम जेम उंचा उंचा स्थानकने विषे जाय छे तेम तेम वधुवधु नाद संभळाय छे, ने वधु वधु प्रकाश देखाय छे. अने एवी रीते समाधिमां अतिशे तेज देखाय छे, ने अतिशे नाद थाय छे, ने कडाका अतिशे थाय छे ते गमे तेवो धीरजवान होय तो पण कायरपणुं आवी जाय छे. जो अर्जुन भगवानना अंश हता ने महा शूरवीर हता तो पण भगवाननुं विश्वरूप जोवाने समर्थ थया नहि माटे एम बोल्या जे, हे महाराज ! आ रूप जोवाने हुं समर्थ नथी, माटे तमारुं जेवुं प्रथम रूप हतुं तेवुं तमारुं दर्शन करावो. एवी रीते एवा समर्थने पण समाधिने विषे ज्यारे ब्रह्मांड फाटी जाय एवा कडाका थाय छे ने जेम समुद्र मर्यादा मेले एवा तेजना समुह देखाय छे त्यारे धीरज रहेती नथी, ते सारु देह थकी पोतानुं स्वरूप जुदुं समझ्युं जोइए. (१) अने एवी जे १
समाधि थाय छे तेना बे भेद छे एक तो प्राणायामे करीने प्राणनो निरोध थाय छे ते

मेळो चित्तनो पण निरोध थाय छे; अने बीजो प्रकार ए छे जे, चित्तने निरोधे करीने प्राणनो निरोध थाय छे. ते चित्तनो निरोध क्यारे थाय छे तो ज्यारे सर्वे ठेकाणेथी वृत्ति तुटीने एक भगवानने विषे वृत्ति जोडाय ने ते भगवानने विषे वृत्ति क्यारे जोडायतो ज्यारे सर्वे ठेकाणेथी वासना तुटीने एक भगवानना स्वरूपनी वासना थाय त्यारे ते वृत्ति कोईनी हठावी भगवानना स्वरूपमांथी पाछी हठे नहि, जेम कोइ कुवो होय ने ते उपर बीश कोश फरता होय ने तेनो प्रवाह जुदो जुदो चालतो होय त्यारे ते प्रवाहमां जोर होय नहि, अने ते बीशे कोशनो प्रवाह भेळो करीए तो नदीना जेवो अतिशे बळवान प्रवाह थाय ते कोईनो हटाव्यो पाछो हठे नहि तेम जेनी वृत्ति निर्वासनिक थाय छे, त्यारे तेनुं चित्त छे ते भगवानना स्वरूपमां जोडाय छे अने जेना चित्तमां संसारना सुखनी वासना होय तेने तो श्रोत्र इंद्रिय द्वारे अनंत जातना जे शब्द तेने विषे जुदी जुदी वृत्ति फेलाइ जाय छे, तेमज त्वचा इंद्रिय द्वारे हजारुं जातना जे स्पर्श तेने विषे जुदी जुदी वृत्ति फेलाई जाय छे, तेमज नेत्र इंद्रियनी वृत्ति ते हजारुं जातमां जे रूप तेने विषे फेलाइ जाय छे, तेमज रसना इंद्रियनी वृत्ति ते हजारुं जातना जे रस तेमां फेलाइ जाय छे, तेमज नासिका इंद्रियनी वृत्ति ते अनंत जातना जे गंध तेमां फेलाई जाय छे, तेमज कर्म इंद्रियोनी वृत्तियुं पण पोतपोतामा विषयने विषे हजारुं प्रकारे फेलाइ जाय छे. एवी रीते दशे इंद्रियो द्वारे एवुं अंतःकरण छे ते हजारुं प्रकारे फेलाइ गयुं छे ते ज्यारे चित्त ते भगवाननुंज चिंतवन करे, अने मन ते भगवाननोज घाट घडे, अने बुद्धि ते भगवानना स्वरूपनोज निश्चय करे, अने अहंकार ते हुं आत्मा छुं, ने भगवाननो भक्त छुं एवुंज अभिमान धरे त्यारे एनी एक वासना थइ जाणवी. अने प्राणे करीने जे चित्तनो निरोध थाय छे तेतो अष्टांग योगे करीने थाय छे ते अष्टांग योग तो यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा ने समाधि ए जे आठ अंग तेणे युक्त छे. ने ए अष्टांग योग ते साधनरूप छे ने एनुं फळ ते भगवानने विषे निर्विकल्प समाधि छे. ते ज्यारे एवी निर्विकल्प समाधि थाय छे, त्यारे प्राणने निरोधे करीने चित्तनो निरोध थाय छे, अने जो चित्त निर्वासनिक थइने भगवानने विषे जोडाय छे तो ते चित्तने निरोधे करीने प्राणनो निरोध थाय छे, माटे जेम अष्टांगयोग साधवे करीने चित्तनो निरोध थाय छे तेम भगवानना स्वरूपने विषे जोडावे करीने चित्तनो निरोध थाय छे, माटे जे भक्तनी चित्तवृत्ति भगवानना स्वरूपने विषे जोडाणी तेने अष्टांगयोग वगर साधे सधाइ रह्यो, माटे एवो जे भगवानना स्वरूपनो महिमा तेने कुकीने एकलुं साधननुं बळ ले छे तेने कोइ रीते अंतरमां सुख रहेतुं नथी अने तेनुं अंतकाळे पण सारुं थातुं नथी, माटे साधन छे, वर्णाश्रम छे, ते तो भगवाननी आज्ञा छे ते जरुर राखवां, जेम ब्राह्मणनो धर्म छे जे नावुं

धोवुं ने पवित्रपणे रहेवुं, ते कोइ दिवस शूद्रना घरनुं पाणी पीयेज नहि तेम सत्संगी होय तेने भगवाननी आज्ञामां फेर पाडवोज नहि, केमजे ए भगवाननी आज्ञा पाळे तो तेनी उपर भगवान राजी थाय छे, अने भगवाननो निश्चय तथा भगवाननुं महात्म्य तथा वैराग्ये सहित आत्मज्ञान ए त्रणनी अतिशे दृढता राखवी ने पोताने विषे पूर्णकामपणुं समजवुं जे मुने साक्षात् पुरुषोत्तम नारायण मळ्या छे, ने तेनी आज्ञामां रहीने हुं तेनुं भजन करुं छुं, माटे हवे मारे कांइ न्यूनता रही नथी एम समजीने निरंतर भगवाननी भक्ति करवी, ने ते समजणने केफे करीने छकी पण जावुं नहि, अने पोताने अकृतार्थ-पणुं पण मानवुं नहि, अने जो अकृतार्थपणुं माने तो एने उपर जे एवी भगवाननी कृपा थइ ते जाणीए खारापाटमां बीज वाव्युं ते उग्युंज नहि, ने जो छकी जइने जेम तेम करवा लागे तो जाणीए अग्निमां बीज नाख्युं ते बळी गयुं, माटे अमे कह्युं तेम जे समजे तेने कोइ प्रकारनी न्यूनता रहे नहि. एम कहीने श्रीजीमहाराज पोताना आसन उपर पधार्या. (२) इति वचनामृतम् ॥२५॥ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, अमारो निश्चय, महिमा, ने आत्मनिष्ठा ए त्रण न होय तेने एकला साधनथी कृतार्थपणुं मनातुं नथी ने ए त्रणनुं बळ होय तेने पूर्णकामने कृतार्थपणुं मनाय छे. (१) अने समाधिना बे प्रकार कह्या छे. (२) बाबतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां निश्चय कह्यो ते केवो जाणवो ?

१ उ० पुरुष, काळ, ब्रह्म, अक्षर तथा मुक्त ए सर्वेथी श्रीजीमहाराजने पर, सदा साकार, सर्वेना कर्त्ता, नियंता, ने सर्वेना अंतर्यामी जाणवा, ते निश्चय कहेवाय.

२ प्र० श्रीजीमहाराजनो महिमा कह्यो ते केवो जाणवो ?

२ उ० श्रीजीमहाराज जीवकोटी, ईश्वरकोटी, ब्रह्मकोटी, तथा मूळअक्षरकोटीथी पर छे, ने सदा साकार मूर्ति छे, ने सर्वेने पोतानी शक्तिए करीने धरी रह्या छे. अने ए सर्वेमां अन्वयपणे रह्या थका पोताना तेजरूप अक्षरधाममां व्यतिरेकपणे रह्या छे, एवो महिमा जाणे ते महिमा जाण्यो कहेवाय.

३ प्र० जीवात्माने ब्रह्मरूप मानवो एम कह्युं ते ब्रह्मरूप एटले केवो मानवो ?

३ उ० ब्रह्मरूप एटले श्रीजीमहाराजना तेजरूप मानवो ते ब्रह्मरूप मान्यो कहेवाय.

४ प्र० पहेली बाबतमां नाद संभळाय छे, ने प्रकाश देखाय छे, एम कह्युं ते कोनो हशे ?

४ उ० जेना जेना स्थानकने विषे जाय ते ते स्थानना अधिपतिना तेजमांथी ध्वनि थाय छे तेने आ ठेकाणे नाद कह्यो छे अने प्रकाश पण ते ते स्थानीना अधिपतिओनो छे, ते देखे छे.

५ प्र० बीजी बाबतमां साक्षात् पुरुषोत्तम मळ्या छे एम कह्युं, ते साक्षात् मळ्या क्यारे कहेवाय ?

५ उ० श्रीजीमहाराज मनुष्यरूपे दर्शन देता होय त्यारे धाममां जे मूर्ति छे, तेज आ मूर्ति छे

एम जाणे, अने प्रतिमारूपे दर्शन आपता होय, त्यारे ते प्रतिमाने धाममां मूर्ति छे तेज जाणे, ने आज्ञामां रहीने भक्ति करे तो साक्षात् मळ्या कहेवाय.

६ प्र० छकी जावुं नहि एम कह्युं ते केम वर्ते तो छकी गयो कहेवाय ?

६ उ० श्रीजीमहाराजना ज्ञाननो ने महिमानो ओथ लइने वर्त्तमानमां फेर पाडे ने सत्संगना धोरण प्रमाणे न वर्त्ते, ने बीजाथी पोताने अधिक माने, ते छकी गयो कहेवाय. तेने प्रथम श्रीजीमहाराजनी कांइक कृपा थइ होय, तेणे करीने कांइक शुभ गुण प्राप्त थया होय ते जता रहे, ने उलटो श्रीजीमहाराजनो कोप थाय. ॥२५॥

संवत् १८७६ ना पोष शुदि ११ एकादशीने दिवस बपोरना समे श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता,ने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो,तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो,तथा धोळो चोफाळ ओढ्यो हतो, तथा बे काननी उपर गुलदावदीनां मोटां बे पुष्प खोश्यां हतां, तथा पुष्पनो तोरो पाघने विषे खोश्यो हतो, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. ने परमहंस ताळपखाज लेइने कीर्त्तन गाता हता.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) हवे कीर्त्तन बोलवां राखो ने अमे आ एक वातरूपी कीर्त्तन बोलीए ते सांभळो. पछी परमहंसे कह्युं जे हे महाराज बहु सारुं तमे वात करो. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, भगवानना रसिक कीर्त्तन गातां गातां जो एक भगवानना स्वरूपमांज रस जणाय तो तो ठीक छे, ने जो भगवानना स्वरूप विना बीजे ठेकाणे रस जणाय तो तो एमां मोटी खोट्य छे,केमजे ए भक्तने जेम भगवानना शब्दमां हेत थाय छे ने ते शब्दमां रस जणाय छे, तेमज गीत वाजींत्रना शब्दमां अथवा स्त्रिया-दिकना शब्दमां रस जणाय छे ने हेत थाय छे, माटे ए भक्तने अविवेकी जाणवो, अने भगवान अथवा भगवानना संत तेनां जे वचन तेने विषे जेवो रस जणाय छे, तेवोज बीजा विषयना शब्दमां रस जणाय छे, एवी जे ए मूर्खता तेनो त्याग करवो. अने एवी मूर्खतानो त्याग करीने, एक भगवानने शब्दे करीनेज सुख मानवुं, ने एवी जातनो जे रसिक भक्त छे ते खरो छे, अने जेम शब्द तेमज स्पर्श पण एक भगवाननोज इच्छे.अने अन्य स्पर्शने तो काळो नाग तथा बळतो अग्नि ते जेवो जाणे त्यारे ते रसिक भक्त साचो, तेमज रूप पण भगवानतुं जोइने परम आनंद पामे ने बीजा रूपने तो जेवो नरकनो ढगलो तथा सडेल कुतरुं तेवुं जाणे ए रसिक भक्त साचो, तेमज रस पण भगवानना महाप्रसादनो होय, तेणे करीने परम आनंद पामे पण बीजा जे नाना प्रकारना रस तेने स्वादे करीने आनंद न पामे ते रसिक भक्त साचो, तेमज भगवानने चढ्या

एवा जे तुलसी पुष्पना हार तथा नाना प्रकारनी सुगंधिए युक्त एवा अत्तर चंदनादिक तेनी सुगंधीने ग्रहण करीने परम आनंद पामे पण कोइ अन्य विषयी जीवे देहे अत्तर चंदनादिक चर्च्या होय अथवा पुष्पना हार पहेर्या होय तेना सुगंधने पामीने राजी नज थाय, एवी रीते पंचे विषय भगवान संबंधी होय तेने विषे अतिशे प्रीतिवान थाय. अने जगत् संबंधी जे पंच विषय तेने विषे अतिशे अभावे युक्त वर्ते ते रसिक भक्त साचो छे. अने रसिक भक्त थइने जेम भगवान संबंधी विषयने योगे करीने आनंद पामे छे तेमज अन्य संबंधी जे शब्द स्पर्श रूप रस ने गंध तेने योगे करीने जो आनंद पामे छे तो ए खोटो रसिक भक्त छे, केमजे जेम भगवानने विषे आनंदने पाम्यो तेमज विषयने विषे पण आनंद पाम्यो माटे एवा रसिकपणाने ने एवी उपासनाने खोटी करी नाखवी, कांजे भगवान तो कांइ खोटा नथी पण एनो भाव खोटो छे. अने जेवां अन्य पदार्थने जाण्यां तेवाज भगवानने पण जाण्या माटे एनी भक्ति ने एनुं रसिकपणुं ते खोटुं कह्युं. हवे जेम स्थूळ देहने जाग्रत अवस्थामां पंचविषयनो विवेक कह्यो तेमज सूक्ष्म देहने स्वप्न अवस्था तेने विषे सूक्ष्म पंचविषय छे. ते स्वप्नमां ज्यारे भगवाननी मूर्तिने देखीने ते भगवान संबंधी शब्द, स्पर्श, रूप, रसने गंधे करीने जेवो आनंद पमाय तेवोने तेवोज जो अन्य पंचविषयने देखीने स्वप्नमां आनंद पमाय तो ते भक्तनुं रसिकपणुं खोटुं छे; अने स्वप्नमां केवळ भगवानने संबंधे करीने आनंद पामतो होय ने अन्य विषयने विषे उलटा अग्ननी पेठे अभाव रहेतो होय तो ए रसिक भक्त साचो छे, अने एम न जाणतो होय तो जे भगवान स्वप्नमां देखाणा तेतो साचा छे, पण ए भक्तने तो जेवो भगवानमां प्रेम तेवो अन्य विषयमां प्रेम छे, माटे एनी समझण खोटी छे. अने एक भगवानना स्वरूपमां लोभाइ रहे ने बीजा विषयमां न लोभाय ते समझण साची छे.

अने ज्यारे केवळ भगवाननुंज चिंतवन रहे छे त्यारे चिंतवन करतां करतां शून्यभावने पामी जाय छे. त्यारे ए भक्तने भगवाननी मूर्ति विना पिंड ब्रह्मांड कांइ भासतुं नथी. पछी एवा शून्यने विषे भगवाननी मूर्तिने जोतां जोतां प्रकाश थइ आवे छे, ने ते प्रकाशमां भगवाननी मूर्ति देखाय छे माटे एवी रीते केवळ भगवानना स्वरूपमां प्रीति होय ए पतिव्रतानी भक्ति छे. (१) १

अने अमे पण ज्यारे तमे रसिक कीर्त्तन गावो छो, त्यारे आंख्युं मींचीने विचारीए छइए, ते आवोज विचार करीए छइए, अने अमारो विचार थोडोज छे, पण भगवान विना ते विचारमां बीजुं कांइ टकी शकतुं नथी, अने भगवानना स्वरूपमांज रसिक प्रीति छे ने तेमां जो कोइ विषय आडो आवे तो तेनुं माथुं उडी जाय एवो अमारो बळवान विचार छे. अने तमे जेम कीर्त्तन जोडी राखो छो तेम अमे पण आ वात करी

एटलुं ए कीर्तन जोडी राख्युं छे ते तम आगळ कह्युं. एम श्रीजीमहाराजे पोतानुं मिष लइने पोताना भक्तने अर्थे वात करी देखाडी. (२) इति वचनामृतम् ॥२६॥ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारा संबंधी पंच विषयमां प्रीतिवान होय, ने जगत संबंधी पंच विषयमां अभाव रहे, ते स्थूळ देह ने जाग्रत अवस्थानो विवेक छे. अने स्वप्नमां अमारा स्वरूप विना एटले मूर्ति विना बीजा विषयमां न लोभाय ते सूक्ष्म देहने स्वप्न अवस्थानो विवेक छे. अने कारण देहमांथी पंच विषयनी सारप टाळीने केवळ अमारी मूर्तिनुं चिंतवन करे ते चिंतवन करतां करतां देहादिकनी विस्मृति थाय ए कारण देहने सुषुप्ति अवस्थानो विवेक छे. अने शून्यभाव एटले आकाशवत् निर्लेप कहेतां मायाथी रहित निर्गुण थइने पोताने विषे अमारी मूर्तिने जोतां जोतां प्रकाश थइ आवे, ने ते प्रकाशमां अमारी मूर्ति देखाय छे ते जीवात्मानो विवेक छे. (१) अने अमारे विषे प्रीतिमां कोइ विषय आडो न आवे ते विचार बळवान छे. (२) बाबतो छे. ॥२६॥

संवत् १८७६ ना पोष शुदि १२ द्वादशीने दिवस श्रीजीमहाराज दिवस उग्या पहेलां श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां परमहंसनी जायगाने विषे पधार्या हता, ने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो, तथा धोळो चोफाळ ओढ्यो हतो, तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो,ने ओटा उपर आथमणुं मुखारविंद राखीने विराजमान हता, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज अर्ध घडी सुधी तो पोतानी नासिकाना अग्र सामुं जोई रह्या ने
१ पछी बोल्या जे, (१) परमेश्वरने भजवानी तो सर्वेने इच्छा छे पण समजणमां फेर रहे छे, माटे जेनी आवी समजण होय तेना हृदयमां भगवान सर्वे प्रकारे निवास करीने रहे छे. तेनी विगत जे एम समजतो होय जे, आ पृथ्वी जेनी राखी स्थिर रही छे ने डोलावी डोले छे. तथा आ तारामंडळ जेनुं राख्युं अधर रह्युं छे तथा जेना वर्षाव्या मेघ वर्षे छे तथा जेनी आज्ञाए करीने सूर्य, चंद्र उदय अस्तपणाने पामे छे तथा चंद्रमानी कळा वधे घटे छे. तथा पाळ विनानो समुद्र जेनी मर्यादामां रहे छे तथा जळना बिंदुमांथी मनुष्य उत्पन्न थाय छे ने तेने हाथ, पग, नाक, कान ए आदिक दश इंद्रियो थइ आवे छे तथा आकाशने विषे अधर जळ राखी मुक्युं छे ने तेमां गाजवीज थाय छे. एवां अनंत आश्चर्य छे ते सर्वे मुने मळ्या एवा जे भगवान तेनां कर्यांज थाय छे एम समजे पण मगट प्रमाण जे आ भगवान ते विना बीजो कोइ ए आश्चर्यनो करनारो छे एम माने नहि. अने पूर्वे जे जे अनंत प्रकारनां आश्चर्य थई गयां छे तथा हमणां जे थाय छे तथा आगळ थाशे ते सर्वे मुने मळ्या एवा जे प्रत्यक्ष भगवान ते वतेज थाय छे एम समजे

अने वळी पोते एम समझतो होय जे, चहाय कोइ मारी उपर धूळ नाखो, चहाय कोई गमे तेवुं अपमान करो, चहाय कोइ हाथीये बेसारो, चहाय कोइ नाक कान कापीने गधेडे बेसारो, तेमां मारे समभाव छे. तथा जेने रूपवान एवी यौवन स्त्री अथवा कुरूपवान स्त्री अथवा वृद्ध स्त्री तेने विषे तुल्यभाव रहे छे तथा सुवर्णनो ढगलो होय तथा पत्थरनो ढगलो होय ते बेयने जे तुल्य जाणे छे, एवी जातना ज्ञान भक्ति वैराग्यादिक जे अनंत शुभ गुण तेणे युक्त जे भक्त होय तेना हृदयमां भगवान निवास करे छे. पछी ते भक्त जे ते भगवानने प्रतापे करीने अनंत प्रकारनां ऐश्वर्यने पामे छे अने अनंत जीवना उद्धारने करे छे. अने एवी सामर्थी युक्त थको पण अन्य जीवना मान अपमानने सहन करे छे ए पण मोटी सामर्थी छे, कां जे समर्थ थका जरणा करवी ते कोइथी थाय नहि एवी रीते जरणा करे तेने अति मोटा जाणवा. अने ए समर्थ तो केवा छे जे पोताना नेत्रमां भगवान जोनारा छे ते ब्रह्मांडमां जेटला जीव प्राणी छे तेना नेत्रने प्रकाशे छे, अने पोताना पगमां चालनारा जे भगवान ते ब्रह्मांडमां सर्वे जीवना पगने विषे चालवानी शक्तिने पोखे छे, एम ए संतनी चौदे इंद्रियोद्वारे करीने ब्रह्मांडमां सर्वे जीवोनी इंद्रियोने सचेतन करे छे, माटे ए संत तो सर्वे जगत्‌ना आधाररूप छे, ते तुच्छ जीवनुं अपमान सहे ते एमनी ए अतिशे मोटप छे, ने एवी रीतनी क्षमावाळा छे तेज अति मोटा छे. (१) अने जे आंख्युं काढीने पोताथी गरीब १
होय तेने बीवरावे छे ने मनमां जाणे जे, हुं मोटो थयो छुं पण ए मोटो नथी, अथवा सिद्धाइ देखाडीने लोकुंने डरावे छे एवा जे जगतमां जीव छे, ते भगवानना भक्त नथी, ए तो मायाना जीव छे, अने यमपुरीना अधिकारी छे. ने एवानी जे मोटप छे ते संसारना मार्गमां छे, जेम संसारमां जेने घोडुं चढवा न होय तेथी जेने घोडुं होय ते मोटो; अने एक घोडुं जेने होय तेथी जेने पांच घोडां होय ते मोटो एम जेम जेम अधिक संपत्ति होय तेम संसार व्यवहारमां अति मोटो कहेवाय, पण परमेश्वर भज्यामां ए मोटो नथी. (२) अने जेनी मति एवी होय जे आ स्त्री तो अतिशे रूपवान छे, ने आ वस्त्र तो २
अतिशे सारुं छे, अने आ मेडी तो घणी सारी छे, अने आ तुंबडी तो अतिशे सारी छे, ने आ पात्र तो अतिशे सारुं छे, एवी रीतना जे गृहस्थ तथा मेखधारी ते सर्वे तुच्छ बुद्धिवाळा छे. त्यारे तमे कहेशो जे एनुं कल्याण थाशे के नहि थाय ? तो कल्याण तो पामर जेवो सत्संगमां होय तेनुंय थाय छे, पण मोरे कह्या एवी जे संतता ते एमां कोई दहाडे आवती नथी, तथा पूर्वे कह्या एवा जे संत तेना जे गुण ते पण एवामां आवता नथी, कां जे ए पात्र थयो नथी. एम वात करी ने जयसच्चिदानंद कहीने श्रीजीमहाराज दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे पधार्या. (३) इति वचनामृतम् ॥ २७ ॥ ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे.तेमां अमने सर्वे कर्ता हर्ता जाणे, अने मान अपमान तथा सर्व पदार्थने विषे समभाव थाय, एवा हृदयमां अमे निवास करीए छीए.पछी ते भक्त अमारे प्रतापे करीने अनंत ऐश्वर्यने पामे छे, ने अनंत जीवोना उद्धारने करे एवो समर्थ थाय छे. (१) अने गरीबने बीवरावे तथा सिद्धाई देखाडीने लोकोने बीवरावे ते मायाना जीव छे, ने यमपुरीना अधिकारी छे. (२) अने रूपवान स्त्री, सारी मेडी, सारूं वस्त्र तेमां मोह पामे एवा गृहस्थ तथा सारी तुंबडी, सारूं पात्र तेमां मोह पामे एवा त्यागी ते तुच्छ बुद्धिवाळा छे, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (३) वातो छे.

१ प्र० पहेली वातमां आगळ थइ गयां ने आज थाय छे ने आगळ थशे ते सर्वे आश्चर्य अमारां जाणवां एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते आगळ तो बीजा अवतारोए आश्चर्य कर्यां छे, अने पछी थशे ते पण बीजा अवतारो थशे ते करशे ते बीजा अवतारोमां करेलां आश्चर्य ते श्रीजी-महाराजनां केवी रीते जाणवां ?

१ उ० श्रीजीमहाराजना आपेला ऐश्वर्य वडे करीने सर्वे अवतारो आश्चर्य जणावे छे, माटे सर्वे आश्चर्य श्रीजीमहाराजनां छे एम जाणवुं.

२ प्र० ज्ञान भक्ति वैराग्यादिक अनंत शुभ गुणे संपन्न थाय अने तेमां श्रीजीमहाराज निवास करे त्यारे ते भक्त केवो कहेवाय ?

२ उ० श्रीजीमहाराज निवास करे त्यारे ते उत्तम एकांतिक भक्त कहेवाय.

३ प्र० ए संतने सर्व जगतना आधाररूप कह्या ते आधार केवी रीते समजवा अने सर्वेनी इंद्रि-योने सचेतन करे छे एम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

३ उ० आ ठेकाणे आधाररूप एटले सर्व जीवमात्रने आश्रय करवा रूप कह्या छे पण धारण करनार कह्या नथी अने एवा एकांतिकने विषे श्रीजीमहाराज रहीने तेनो आश्रय करनारने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान समजावे ने एनां इंद्रियोने विषयने मार्गेथी पाछां वाळीने पोताने सन्मुख चालवानी सामर्थी आपे छे एम सचेतन करे छे एम कह्युं छे.

४ प्र० बीजी वातमां गरीबने दुःखावे तो यमपुरीमां जाय एम कह्युं अने (प्र० ७२ ना ३/४ पहेला प्रश्नमां) गरीबने दुःखाव्यानुं ब्रह्महत्या जेटलुं पाप कह्युं छे तथा (व० ११ ना पहेला प्रश्नमां) गरीबने दुःखाडवाथी जीव नाश पामे छे एम कह्युं छे ते जे गरीबने दुःखाडवाथी यमपुरीमां जवाय ते गरीब केवो जाणवो ? अने जे गरीबने दुःखवेथी ब्रह्महत्या जेटलुं पाप थाय ते गरीब केवो जाणवो ? अने जे गरीबने दुःखवेथी जीव नाश पामे ते गरीब केवो जाणवो ?

४ उ० दबाइने सामो थइ शके नहि एवा गरीबने दुःखवे तो यमपुरीमां जाय अने पोहोंची शके एवो होय पण स्वभावे गरीब होय तेने दुःखवे तो ब्रह्महत्या जेवुं पाप थाय अने स्वभावे गरीब होय ने ब्रह्मचर्य अहिंसादिक धर्मने विषे अतिशे दृढतावाळो होय ने दुःखवनारनुं भुंडुं थवानो संकल्प पण करे नहि एवा गरीबने दुःखवे तो जीव नाश पामी जाय.

५ प्र० त्रीजी वातमां संतता कही ते केवी जाणवी ? अने संतना गुण कह्या ते किया जाणवा ?

५ उ० सर्व पदार्थने विषे तथा मानअपमानने विषे समभाव तथा सहनशक्ति ते संतता जाणवी अने आत्यंतिक कल्याण रूपी पोषण करवानी सामर्थी ते संतना गुण जाणवा.

६ प्र० सत्संगमां पामर जेवो होय तेनुं पण कल्याण थाय छे एम कह्युं ते पामर जेवो कोने जाणवो ? तथा विषयी तथा मुमुक्षु तथा पतितनां केवां लक्षण होय ?

६ श्रीजीमहाराजनी बांधेली पंचवर्त्तमाननी मर्यादा यथार्थ पाळे पण सार असारनो कांइ विवेक न होय, ने प्रमादी होय, ने सत्संगनी सेवा कांइ पण करे नहि, अने ध्यान भजन आदिक साधन करे नहि, ए पामर कहेवाय. अने जे पंचवर्तमानमां रहीने, नवधा भक्ति आदिक श्रीजीमहाराजनी प्रसन्नतानां साधन करे, अने श्रीजीमहाराजने पामवानी एटले आत्माने विषे देखवानी इच्छा राखे, पण तेनो उपाय न करे ते विषयी कहेवाय. अने जे पंचवर्त्तमानमां रहीने धर्म, ज्ञान, वैराग्य, तथा महात्म्ये सहित निष्काम भक्ति आदिक श्रीजीमहाराजनी प्रसन्नतानां साधन करे अने श्रीजीमहाराजने पोताना आत्माने विषे देखवानो अति आग्रह पूर्वक अभ्यास करे, ते मुमुक्षु जाणवो अने जे पंचवर्त्तमानमां फेर पाडे तेने तो पतित जाणवो ने तेनाथी कोइ साधन सिद्ध थायज नहि, ने तेनुं कल्याण पण थायज नहि. ।।२७।।

संवत् १८७६ना पोष शुदि १४ चौदशने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना ओरडानी हारे जे ओरडो तेनी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता. ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधुनी जमणा पंक्ति थइ हती.

ते समे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) जे सत्संगी सत्संगमांथी पाछो पडवानो होय तेने असद्वासनानी वृद्धि थाय छे, ने तेने प्रथम तो दिवसे दिवसे सत्संगी मात्रनो अवगुण आवे छे, ने पोताना हइयामां एम जाणे जे, सर्वे सत्संगी तो अणसमझु छे ने हुं समझु छुं, एम सर्वेथी अधिक पोताने जाणे, ने रात्रि दिवस पोताना हैयामां मुंझाया करे, अने दिवसमां कोइ ठेकाणे सुखे करीने बेसे नहि, ने रात्रिमां सुवे तो निद्रा पण आवे नहि, ने क्रोध तो क्यारेय मटेज नहि, ने अधबळेला काष्टनी पेठे धुंधवाया करे, एवुं जेने वर्ते त्यारे तेने एम जाणीए जे ए सत्संगमांथी पडवानो थयो छे, ने एवो होय ने ते जेटला दिवस सत्संगमां रहे पण तेना हइयामां कोइ दिवस सुख आवे नहि ने अंते पाछो पडी जाय छे. (१) अने सत्संगमां जेने वधारो थवानो होय तेने शुभ वासना १
वृद्धि पामे छे, त्यारे तेने दिवसे दिवसे सत्संगी मात्रनो हइयामां गुणज आवे, अने सर्वे हरिभक्तने मोटा समजे ने पोताने न्यून समजे, ने आठे पहोर तेना हइयामां सत्संगनो आनंद वर्त्या करे, एवां लक्षण ज्यारे होय त्यारे जाणीए जे शुभ वासना वृद्धि पामी छे, ने ते जेम जेम वधु वधु सत्संग करे तेम तेम वधु वधु समास थातो जाय, ने अतिशे मोक्ष-

पने पामी जाय छे. एवी रीते श्रीजीमहाराज वात करीने जय सच्चिदानंद कहीने पोताने आसने पधार्या. (२) इति वचनामृतम् ॥२८॥ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां जे सत्संगमांथी पाछो पडवानो होय तेने असद् वासना वृद्धि पामे ने सत्संगीमात्रनो अवगुण आवे ने पाछो पडी जाय. (१) अने सत्संगमां वधारो थवानो होय तेने शुभ वासना वृद्धि पामे, ने सत्संगीनो गुण आवे, ने सत्संगमां मोट्यप पामे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (२) वाक्तो छे.

१ प्र० बीजी वाक्नमां आनंद वर्ते तथा मोट्यप पामे एम कह्युं ते आनंद ने मोट्यप शी समजवी ?

१ उ० श्रीजीमहाराजनो निश्चय सर्वोपरि होय, ने पंचवर्तमान दृढपणे पाळता होय,तेवा सत्संगी मात्रनो गुण आवे तेणे करीने तेमने विषेथी मनुष्यभाव टळीने मुक्तपणानी बुद्धि थाय जे मुने साक्षात् श्री स्वामीनारायण भगवानना मुक्त मळ्या, ने देह मुकीने जेने पामवा हता ते छते देहे मळ्या एम जाणे तेथी आनंद आवे ते सत्संगनो आनंद जाणवो. अने पोते मुक्त थाय ए अतिशे मोट्यप समजवी. ॥२८॥

संवत् १८७६ना पोष सुदि१५ पुन्यमने दिवस सांझने समे श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता, अने धोळो खेस पहेर्यो हतो, ने धोळी चादर ओढी हती, ने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो, ने धोळा पुष्पना हार पहेर्या हता, ने पाघने विषे धोळा पुष्पनो तोरो लटकतो हतो, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे प्रश्न पूछो. त्यारे गोपाळानंदस्वामीए पूछयुं जे,(१) धर्म-ज्ञान वैराग्ये सहित जे भक्ति तेनुं बळ वृद्धि केम पामे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एना उपाय चार छे. एक तो पवित्र देश, बीजो रुडो काळ, त्रीजी शुभ क्रिया अने चोथो सत्पुरुषनो संग. तेमां क्रियानुं समर्थपणुं तो थोडुं छे, ने देश काळने संगनुं कारण विशेष छे, केमजे जो पवित्र देश होय, पवित्र काळ होय, ने तम जेवा संतनो संग होय, तो त्यां क्रिया रुडीज थाय अने जो सिंध जेवो भुंडो देश होय, तथा भुंडो काळ होय, तथा पातर्यु ने भडवा, अथवा दारु मांसना भक्षण करनारा तेनो संग थाय तो क्रिया पण भुंडीज थाय, माटे पवित्र देशमां रहेवुं अने भुंडो काळ वर्त्ततो होय त्यांथी आघु पाछुं खसी निसरवुं. अने संग पण प्रभुना भक्तने पंच वर्तमाने युक्त एवा जे ब्रह्मवेत्ता साधु तेनो करवो, तो हरिभक्तने परमेश्वरनी ते भक्तिनुं बळ अतिशे वृद्धि पामे ए प्रश्ननो ए उत्तर छे. (१) १

२ पछी मुक्तानंदस्वामीए पूछयुं जे, (२) हे महाराज ! कोइक हरिभक्त होय तेने प्रथम तो

अंतर गोवरुं सरखुं होय, अने पछी तो अतिशे शुद्ध थइ जाय छे, ते एने कोइ पूर्वेनो संस्कार छे तेणे करीने एम थयुं ? के भगवाननी कृपाए करीने एम थयुं ? के ए हरिभक्तने पुरुष प्रयत्ने करीने थयुं ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, पूर्वने संस्कारे करीने जे सारुं अथवा नरसुं थाय ते तो सर्वे जगतना जाण्यामां आवे, जेम भरतजीने मृगलामां आसक्ति थइ एवे ठेकाणे प्रारब्ध लेवाय, अथवा कोइ कंगाल होय ने तेने मोटुं राज्य मळे, एवी रीते थाय तेतो सर्वे जगत्‌ना जाण्यामां आवे त्यारे तेने तो प्रारब्ध जाणवुं. अने जे रुडा साधुनो संग करे ने पोते पोताने विचारे करीनेज सारो थाय ते तो ए भक्तनुं पुरुष प्रयत्न कहेवाय. पछी श्रीजीमहाराजे पोतानी वात करी जे, अमे जे जे साधन कर्यां हतां, तेने विषे कोइ रीते देह रहेज नहि,ने तेमां पण देह रह्यो तेने प्रारब्ध कहीए. ते शुं तो अमे श्रीपुरुषोत्तमपुरीमां रहेता,त्यारे केटलाक मास सुधी तो वायु भक्षण करीने रह्या तथा त्रण चार गाउना पहोळा पटवाळी एक नदी हती तेने विषे शरीर तणातुं मेल्युं तथा शियाळो, उनाळो ने चोमासु तेने विषे छाया विना एक कौपिनभर रहेता तथा झाडीने विषे वाघ हाथी तथा अरणा पाडा तेनी भेळे फरता, एवां एवां अनंत विकट ठेकाणां तेने विषे फर्या तोय पण कोइ रीते देह पड्यो नहि त्यारे एवे ठेकाणे तो प्रारब्ध लेवुं. अने पोताने विचारे करीने पोताने समास थाय तेने तो पुरुष प्रयत्न कहीए. एम वात करीने जय सच्चिदानंद कहीने श्रीजीमहाराज हसता हसता पोताने
आसने पधार्या. (२) इति वचनामृतम् ॥२९॥ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलामां देशकाळादिक सारा सेवे, अने पंच वर्त्तमाने युक्त एवा ब्रह्मवेत्ता साधुनो संग करे, तो अमारी भक्तिनुं बळ अतिशे वृद्धि पामे छे. (१) बीजामां पूर्वेलुं प्रारब्ध, तथा अमारी ने अमारा मुक्तनी कृपा, तथा पुरुष प्रयत्न ए त्रण प्रकारे अंतर शुद्ध थाय छे, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे, (२) बाबतो छे.

१ प्र० घणांक वचनामृतोमां देशकाळादिक कह्या छे, ते केवा केवा प्रकारना जाणवा ?

१ उ० (प्र० २ मां) रूपवान स्त्रीनो एकांतमां योग थाय ने धर्ममांथी पाडवानो आग्रह करे, तथा आज्ञा विरुद्ध घणुंक धन प्राप्त थतुं होय, ते कठण देशकाळ कह्या छे. अने आमां पहेला प्रश्नमां धर्मवाळा भगवानना भक्त रहेता होय तेस्थळने पवित्र देश कह्यो छे, अने कोइ प्रकारनो उपद्रव न होय ते पवित्र काळ कह्यो छे, अने श्रीजीमहाराजना एकांतिक संतनो संग होय ते पवित्र संग कह्यो छे, अने जे स्थळमां पापी पुरुषो रहेता होय ते स्थळने भुंडो देश कह्यो छे, अधर्मी जनो भगवान भजवामां तथा धर्म पाळवामां विघ्न करता होय ते भुंडो काळ कह्यो छे, अने उपर कह्या एवा पापी पुरुषोनो संग थाय, ते भुंडो संग कह्यो छे, अने (प्र० ५५/६ मां तथा प्र० ३२/४ मां तथा ३९ ना पहेला प्रश्नमां, तथा छे० १४ ना २/३ बीजा प्रश्नमां, तथा १५ तथा ३५

ना पहेला प्रश्नमां) भुंडा तथा रुडा देशादिक कह्या ते आ [२९ मां] भुंडा तथा पवित्र देशाशिक कह्या तेवा जाणवा, अने (प्र० ५५ ना चोथा प्रश्नमां) शुभ अशुभ देशकाळादिकना हेतु पुरुषने कह्या छे, अने (७८ ना बावीशमा प्रश्नमां) जे स्थळमां शत्रु बहु रहेता होय, तथा नात्यनो तथा राजानो उपद्रव होय, तथा धननो तथा लाजनो नाश थतो होय ते विषम देशादिक कह्या छे,अने (लो० ६ ना २/१८ अढारमा प्रश्नमां) जे स्थळमां त्यागीओने पोताना देहना संबंधी रहेता होय ते देशमां रहेवुं ते कठण देश कह्यो छे, अने श्रीजीमहाराजनां दर्शन भेळां स्त्रियोनां दर्शन थतां होय तेवो संग ते कठण संग कह्यो छे, अने मंदिरो आदिक कारखानां थातां होय तेमां स्त्रियो वारंवार जोवामां आवे ते कठण क्रिया कही छे, ने जे स्थळमां मारकुट थती होय तेने विषमकाळ कह्यो छे, अने (लो० १० ना ४/४ चोथा प्रश्नमां) काळ कह्यो ते (प्र० ७८ मां) कह्यो तेवो जाणवो अने (६ बाबतमां) युगना धर्मने काळ कह्यो छे, तेमां कळियुगना धर्मने विषमकाळ कह्यो छे, अने (लो० १७ ना बीजा प्रश्नमां तथा व० २/२ मां तथा छे० ११ ना त्रीजा प्रश्नमां) प्रगट भगवान जे श्रीस्वामिनारायण तेमना द्वेषीनो संग थाय ते भुंडा देशादिक कह्या छे, अने [म० ५१ ना बीजा प्रश्नमां] श्रीजीमहाराजनी बांधेली मर्यादामां रहे ते रुडा देशादिक कह्या छे, अने मर्यादाथी बहार वर्ते ते भुंडा देशादिक कह्या छे, अने (म० २/६ मां) जे देशमां मान मोटयपनो तथा मायिक पदार्थनो घणो योग थातो होय तेने भुंडा देशादिक कह्या छे, अने (छे० २६ ना बीजा प्रश्नमां) मानरूपी दोषने भुंडा देशादिक कह्या छे.

२ प्र० बीजा प्रश्नमां हसता हसता पधार्या एम कह्युं ते हसवानुं शुं कारण हशे ?

२ उ० अमारो देह प्रारब्धे करीने रह्यो एम कह्युं तेथी केटलाक श्रीजीमहाराजने प्रारब्ध छे एम समज्या तेथी हस्या जे अमारे माथे पण प्रारब्ध ठराव्युं. ॥२९॥

संवत् १८७६ ना पोष वदि १ पडवाने दिवस सांझने समे श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदिरनी हारे उत्तरादे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता, ने धोळो खेस पहेर्यो हतो, ने धोळी चादर ओढी हती, ने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो, ने धोळा पुष्पना हार पहेर्या हता ने बे कानने विषे धोळा पुष्पना गुच्छ खोस्या हता ने पाघने विषे धोळा पुष्पना तोरा लटकता हता ने धोळा पुष्पना बेरखा पहेर्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. ने मुनि मंडळ कीर्तन गाता हता.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, हवे तो प्रश्न उत्तर करो त्यारे श्रीजीमहाराज प्रत्ये
१ दीनानाथ भट्टे पुछ्युं जे, (१) हे महाराज ! कोइक समे तो हजारुं घाट थाय पण तेनो मनने विषे डंस बेसे नहि अने कोइक समे तो अल्प घाट थाय तेनो पण

मनने विषे डंस बेसे तेनुं कारण शुं छे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एलुं कारण तो गुण छे ते ज्यारे तमोगुण प्रधान होय ने तेमां घाट थाय त्यारे सुषुप्ति सरखी अवस्था रहेती होय, माटे तेमां घाटनो डंस बेसे नहि. अने ज्यारे सत्त्वगुण वर्त्ततो होय त्यारे प्रकाश जेवुं वर्त्ते ने ते समे जे जे घाट थाय तेने विचारे करीने खोटा करी नाखे माटे ते घाटनो पण डंस बेसे नहि अने ज्यारे रजोगुण वर्त्ते त्यारे जे घाट थाय तेनो मनने विषे डंस बेसे.माटे डंस बेसे छे ने नथी बेसतो तेनुं कारण तो गुणनी वृत्ति छे.अने बुद्धिवान होय तो आ वातने विचारीने जे समे घाट थाय ते समे ते घाट सामुं जुवे तो पोतामां जे गुण प्रधान वर्त्ततो होय तेने ओळखे ने घडी घडी पळ पळमां सूक्ष्म घाट थाय छे ते तो कोइना ओळख्यामां आवे नहि, ने तम जेवो कोइक बुद्धिवान होय तो आखा दिनमां बे त्रण चार स्थूळ घाट थाय ते तेना ओळख्यामां आवे, अने जे गुणने प्रधानपणे पोतामां घाट थाता होय ते सामी दृष्टि राखे अने सत्संगमां जे भगवाननी वार्त्ता थाय तेने धार्या विचार्या करे, तो आ सत्संगनो प्रताप एवो छे जे, जे गुणना घाट थाता होय ते घाटनी तेने निवृत्ति थइ जाय छे, ने निरुत्थान थइने अखंड परमेश्वरना स्वरूपनुं चिंतवन थाय छे, अने सत्संग विना तो बीजां कोटी साधन करे पण तेने घाटनी तथा रजोगुण आदिक गुणनी निवृत्ति थाय नहि, अने जो निष्कपटपणे करीने सत्संग करे ने परमेश्वरनी वार्ताने धारे विचारे तो ए मलीन घाटनो नाश थाय छे. माटे सत्संगनो प्रताप तो अतिशे मोटो छे,अने बीजां साधन छे ते कोइ सत्संग तुल्य थाय नहि, कांजे कोइ साधने करीने जे घाटनी निवृत्ति नथी थाती तेनी निवृत्ति सत्संगमां थाय छे. ते कारणपणा माटे जेने रजोगुण संबंधी मलीन घाट टाळ्वा होय तेने मन, कर्म, वचने निष्कपटपणे सत्संग करवो, तो सत्संगना प्रतापथी ए घाटनी निवृत्ति थइ जाशे. (१) इति वचनामृतम् ॥३०॥ १

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां रजोगुणमां घाटनो डंस बेसे छे, ने निष्कपटपणे सत्संग करे तो घाटनी निवृत्ति थइ जाय एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे, (१) बावत छे.

१ प्र० अमारी वार्ताने विचारे तो घाट टळी जाय एम कह्युं ते वात शी जाणवी ?

१ उ० श्रीजीमहाराजना महिमारूप वार्ता जाणवी ते महिमा एवो जाणवो जे, श्रीजीमहाराजने जीव, माया, इश्वर, ब्रह्मने अक्षर ए सर्वेना कर्त्ता, नियंता, आधार, सर्वेने सुखना दाता ने जेनी सत्ताना प्रतापथी मूळअक्षरकोटी आदिक अनंत ऐश्वर्यार्थीयो ते ब्रह्मांडोनी उत्पत्त्यादिक करे छे, एवा अति समर्थ ने सर्व सुखमय मूर्ति श्रीजीमहाराजने जाणे. आवो महिमा विचारे, त्यारे बीजेथी प्रीति टळीने एक श्रीजीमहाराजने विषेज प्रीति थाय, ने निरुत्थान थवाय ने श्रीजीमहाराजनुं अखंड चिंतवन थाय. ॥३०॥

संवत् १८७६ ना पोष वदि २ बीजने दिवस सांझने समे श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे उगमणे बार ओरडानी ओसरीए गादी तकिया नखावीने विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां.

१ ने ते समे कोइक हरिभक्ते प्रश्न पूछ्यो जे, (१) हे महाराज ! भगवानना भक्त बे होय तेमां एक तो निवृत्ति पकडीने बेठो रहे ने कोइने वचने करीने दुःखवे नहि, ने एक तो परमेश्वर अथवा परमेश्वरना भक्त तेनी अन्न वस्त्र पुष्पादिके करीने सेवा कर्या करे पण वचने करीने कोइने दुःखथाय खरुं, एवी रीतना बे भक्त तेमां कियो श्रेष्ठ छे ? पछी श्रीजीमहाराजे एनो उत्तर कर्यो नहि, ने मुक्तानंदस्वामी तथा ब्रह्मानंदस्वामीने तेडाव्या ने ए प्रश्न संभळाव्युं, ने पछी कह्युं जे, एनो उत्तर तमे करो. त्यारे ए बे जणे उत्तर कर्यो जे, वचने करीने कोइने दुःखवे छे पण भगवाननी अथवा संतनी सेवा करे छे ते श्रेष्ठ छे. ने निवृत्तिने विषे रहे छे ने कोइने दुःखवतो नथी ने तेथी भगवाननी तथा संतनी कांइ सेवा थाती नथी तेने असमर्थ सरखो जाणवो, ने जे टेल चाकरी करे तेने तो भक्तिवाळो कहीए, ते भक्तिवाळो श्रेष्ठ छे. (१) पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ए १ उत्तर ठीक कर्यो, ने एवी भक्तिवाळो होय ने भगवानना वचनमां दृढपणे रह्यो होय ने तेने विषे कांइक अल्प सरखो दोष देखाय ते साथे जोडने तेनो अवगुण लेवो ते मोटी खोट्य छे, अने एवी रीते दोष जुवे त्यारे तो परमेश्वरे जीवना कल्याणने अर्थे देह धर्यो होय तेमां पण दोषना जोनाराने खोटय देखाय खरी. अने अति मोटा भगवानना भक्त होय तेमां पण खोटय देखाय खरी, ने ते दोषने जोनारो खोटय काढी तेणे करीने परमेश्वरना अवतार अथवा संत ते शुं कल्याणकारी नहि ? ते तो कल्याणकारीज छे, पण जेने अवळी बुद्धि होय तेने अवळुंज सुझे, जेम शिशुपाळ एमज कहेतो जे, पांडव तो वर्णसंकर छे ने पांच जणे एक स्त्री राखी माटे अधर्मी पण छे, अने कृष्ण छे ते पण पाखंडी छे,केमजे जन्म थयो त्यांथी प्रथम तो एणे एक स्त्री मारी त्यार पछी बगलो मार्यो, वाछडो मार्यो ने मथना ग्रुढा उखेड्या तेणे करीने एने मधुसूदन कहे छे पण एणे कांइ मधुनामे दैत्य मार्यो नथी,ने वर्णसंकर एवा जे पांडव तेणे पूज्यो तेणे करीने शुं ए भगवान थयो ? एवी रीते भगवानने भगवानना भक्तनो अवगुण आसुरी बुद्धिवाळो शिशुपाळ तेणे लीधो पण भगवानना भक्त हता तेणे एवो अवगुण कांइ न लीधो, माटे एवी जातनो जेने अवगुण आवे तेने आसुरी बुद्धिवाळो जाणवो. (२) २

२ त्यारे फरीने ते हरिभक्ते पूछ्युं जे, (२) हे महाराज ! मोटा जे प्रभुना भक्त होय तेनो तो अवगुण आवे नहि पण जेवो तेवो हरिभक्त होय तेनो अवगुण तो आवे खरो. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेम तमे समझो छो तेम नान्यप मोट्यप नथी, मोट्यप

तो प्रत्यक्ष भगवानना निश्चये करीने तथा ते भगवाननी आज्ञाने विषे वर्तवे करीने छे ने ए बे वातां जेने न होय, ने ते गमे तेवो व्यवहारे करीने मोटो होय तो पण ए नानोज छे. अने प्रथम कही एवी मोटपप तो आज आपणा सत्संगमां सर्वे हरिभक्तने विषे छे, केम जे आज जे सर्वे हरिभक्त छे ते एम समझे छे जे, अक्षरातीत एवा जे भगवान पुरुषोत्तम ते अमने प्रत्यक्ष मळ्या छे ने अमे कृतार्थ थया छइए एम समझीने प्रत्यक्ष भगवाननी आज्ञामां रह्या थका भगवाननी भक्ति करे छे. माटे एवा जे हरिभक्त तेनो कांइक देहस्वभाव जोइने तेनो अवगुण लेवो नहि, अने जेने अवगुण लीधानो स्वभाव होय तेनी तो आसुरी बुद्धि थइ जाय छे. (३) इति वचनामृतम् ॥३१॥ ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [२] छे. तेमां पहेलामां अमारी ने अमारा संतनी सेवा करतो होय तेनाथी वचने करीने कोइकने दुःखवाय तो पण ते निवृत्तिवाळा भक्त करतां श्रेष्ठ छे. (१) तेमां अल्प सरखो दोष देखीने अवगुण ले तेने अमारे विषे पण दोष देखाय, तेने आसुरी बुद्धिवाळो जाणवो. (२) बीजामां अक्षरातीत प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम श्रीस्वामीनारायण जे अमे ते अमारो निश्चय होय ने अमारी आज्ञामां वर्ते ते मोटा छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (३) बाबतो छे.

१ प्र० ($\frac{२}{१}$ पहेला प्रश्नमां) अल्पदोष जोइने अवगुण न लेवो एम कह्युं ते किया जाणवा ?

१ उ० बहु बोलवानी ने धार्युं करवानी प्रकृति होय तथा देहनी क्रिया कोइने मळती आवे एवी न होय, ने सरळपणुं न होय एवा स्वभाव होय ते अल्पदोष जाणवा.

२ प्र० ($\frac{२}{२}$ बीजा प्रश्नमां) अक्षरातीत तथा प्रत्यक्ष कह्या ते किया अक्षरथी पर कह्या हशे ?

२ उ० पोताना तेजरूप अक्षरथी पर कह्या छे. अने वचनामृतमां प्रत्यक्ष शब्द ज्यां ज्यां आवे त्यां त्यां श्रीजीमहाराजनेज कह्या छे, ते हरिवाक्य सुधासिंधुना तरंग (२२७) मां कह्युं छे जेः— **आज्ञाप्यतं चैक एव हागमं ब्रह्मधाम वै ॥ तत्रमत्तः परतरो न दृष्टः पुरुषोत्तमः ॥ मामेव पूजयामासुः सर्वे ब्रह्मांडनायकाः ॥१७॥ अहमेवाखिलांडानां जन्मादेर्हेतुरस्मिवै ॥ मत्तः परतरः कश्चिन्नास्त्येव भगवान् कचित् ॥ मत्तेजसंक्सूर्याद्याः सन्तितेजस्विनोऽखिलाः ॥ १९ ॥ मदिच्छयैव ब्रह्मांडस्थितिरस्ति न चान्यथा ।एवं मयास्वस्वरूपं सर्वथाऽस्ति सुनिश्चितम् ॥ २० ॥**

ते गरुडने पड्यो मुकीने अमे एकलाज ब्रह्मधाम जे अमारुं अक्षरधाम त्यां जता हवा. त्यां अमारा विना कोइ बीजो पुरुषोत्तम न देख्यो, अने सर्वे ब्रह्मांडना अधिपतिओ अमारुं पूजन करता हवा (१७) अने समग्र ब्रह्मांडनी उत्पत्त्यादिकना कर्ता अमेज छीए, अमारा विना बीजो कोइ पण भगवान कोइ समयने विषे छेज नहि, अने अमारे तेजे करीने सूर्यादिक कहेतां सूर्यथी आरंभीने ब्रह्मा, विष्णु, शिव, वैराज पुरुष, प्रधान पुरुष, मूळ पुरुष, ब्रह्म तथा मूळ अक्षरादिक सर्वे तेजस्वी छे. [१९] अने अमारी इच्छाए करीने सर्वे ब्रह्मांडोनी स्थिति

छे, बीजो कोइ प्रकारे नथी, ए रीते अमे अमारुं स्वरूप सर्व प्रकारे निश्चय कर्युं छे. [२०] माटे मूळअक्षरथी पर जे श्रीजीमहाराजना तेजरूप अक्षरधाम तेथी पर सर्वेना कारण, सर्वाधार प्रत्यक्ष भगवान ते श्रीजीमहाराज छे एम जाणवुं ॥३१॥

संवत् १८७६ ना पोष वदि ३ श्रीजने दिवस प्रभात समे श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो, ने माथे धोळी पाघ बांधी हती, ने धोळी चादर ओढी हती ने ललाटने विषे केसरनी आड्य करी हती ने धोळा पुष्पनो हार पहेर्यो हतो ने पाघने विषे धोळा पुष्पनो तोरो लटकतो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने कीर्त्तन गवातां हतां.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) सांभळो एक प्रश्न करीए. त्यारे मुनि तथा हरिभक्ते कह्युं जे, हे महाराज ! पूछो, पछी श्रीजीमहाराज घणीकवार सुधी विचारीने बोल्या जे, आ संसारमां जे विषयी जीव होय ते पंच विषय विना रही शके नहि,ते जेम ए विमुख जीवने पंच विषय छे, तेम हरिजनने पण पंच विषय छे पण तेमां भेद छे ते भेद केम छे तो विषयी जीवतो भगवान विना अन्य जे ग्राम्य विषय तेने भोगवे छे, ने भगवानना भक्त छे तेने तो भगवाननी कथा सांभळवी तेज श्रोत्रनो विषय छे, अने भगवानना चरणारविंदनो स्पर्श करवो, अथवा संतना चरणनी रजनो स्पर्श करवो ते त्वचानो विषय छे, अने भगवान अथवा संत तेनां दर्शन करवां ते नेत्रनो विषय छे, अने भगवाननो प्रसाद लेवो तथा भगवानना गुण गावा ते जीभनो विषय छे, अने भगवानने चड्यां एवां जे पुष्पादिक तेनी सुगंधी लेवी ते घ्राणनो विषय छे. एवी रीते विमुख अने हरिभक्तना विषयमां भेद छे, अने एवी रीतना विषय विना तो हरिभक्ते पण रहेवातुं नथी, अने नारद सनकादिक जेवा अनादिमुक्त छे तेणे पण एवा पंच विषय विना रहेवातुं नथी; ते समाधिमां घणा काळ रहे छे पण ते समाधिमांथी निकळीने भगवाननी कथा कीर्त्तन श्रवणादिक विषयने भोगवे छे, अने जेम पक्षी होय ते पोताना माळाने मुकीने चरवा निकळे छे ते चारो करीने रात्रिने समे पोत पोताना माळामां जइने विराम करे छे, पण पोत पोताना स्थानकने कोइ दिवस भुलीने बीजाने स्थानके जातां नथी, तेम भगवानना भक्त छे ते भगवाननी कथाकीर्तन श्रवणादिक एवो जे चारो तेने चरीने पोतानो माळो जे भगवाननुं स्वरूप तेमां जइने विराम करे छे. अने वळी पशु पक्षी सर्वे जीव जेम पोत पोतानो चारो करीने पोत पोताने स्थानके जइने विराम करे छे तेम मनुष्य पण जे जे कार्य होय तेने अर्थे देश विदेश जाय छे पण पोताने घेर आवे छे त्यारे निरांत करीने बेसे छे. ए सर्वे दृष्टांत सिद्धांत कह्यां, ते उपर तमे सर्वे हरिभक्तने

अमे प्रश्न पुछीए छइए जे, जेम विमुख जीव ग्राम्य पंच विषयमां बंधाणा छेने ते विषय विना पळ मात्र चालतुं नथी तेम तमे भगवाननी कथा वार्तानुं जे श्रवणादिक ते रूपी जे विषय तेमां दृढपणे बंधाइने एना विषयी थया छो के नहि ?

२ अने वळी बीजुं प्रश्न पूछीए छइए जे, (२) जेम पक्षी चारो करीने पोताना माळामां आवे छे, तेम तमे सर्वे भगवाननी कथा कीर्तनादिक रूपी चारो करीने पाछा भगवानना स्वरूपरूपी माळामां विराम करो छो के बीजे ज्यां त्यां विराम करो छो ? अने वळी जेम धणीयातुं ढोर होय ते सीममां चरीने सांझे पोताने खीले आवे छे, ने जे हरायुं ढोर होय ते खीले आवे नहि ने जेतुं तेतुं खेतर खाइने ज्यां त्यां बेसी रहे, पछी कोइक धोका मुके कां वाघ आवे तो मारे, तेम तमे ते धणीयाता ढोरनी पेठे पोताने खीले आवो छो ? के हराया ढोरनी पेठे कोइतुं खेतर खाइने ज्यां त्यां बेसीने विराम करो छो ? ए सर्वे प्रश्ननो उत्तर पोताना अंतरमां विचारीने मोटा मोटा हो ते करो. पछी मुनि तथा हरिभक्त सर्वे जुदा जुदा बोल्या जे, हे महाराज ! भगवाननी कथा कीर्तना-
दिकना विषयी पण थया छइए, (१) ने भगवाननी मूर्तिरूपी जे माळो तथा खीलो १
तेने मुकीने बीजे ठेकाणे रहेता पण नथी. (२) ते वार्ताने सांभळीने श्रीजीमहाराज घणुं २
प्रसन्न थया, अने वळी तेने ते दिवस बपोर नमते श्रीजीमहाराज दादाखाचरना दरबार वचे लिंबडा तळे ढोलिया उपर विराजमान हता. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने पोते श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर सन्मुख विराजमान हता, ने मुनि कीर्त्तन बोलता हता.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, हवे तो प्रश्न उत्तर करो. पछी दीनानाथ भट्ट तथा
३ ब्रह्मानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे, (३) कोइ समे तो भगवानना भक्तना हृदयमां आनंदथी भगवानतुं भजन स्मरण थाय छे, ने भगवाननी मूर्तिनुं चिंतवन थाय छे, अने कोइ समे तो अंतर डोळाइ जाय छे, ने भजन स्मरणनुं सुख आवतुं नथी तेनुं शुं कारण छे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे,एने भगवाननी मूर्ति धार्यानी युक्ति आवडती नथी.

४ त्यारे मुक्तानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (४) केवी रीते युक्ति जाणवी ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे युक्ति तो एम छे जे, अंतःकरणने विषे गुणनो प्रवेश थाय छे, ते ज्यारे सत्त्वगुण वर्तेतो होय त्यारे अंतःकरण निर्मळ वर्ते ने भगवाननी मूर्तिनुं भजन स्मरण सुखे थाय, ने ज्यारे रजोगुण वर्ते त्यारे अंतःकरण डोळाइ जाय, ने घाट संकल्प घणा थाय ने भजन स्मरण सुखे थाय नहि. अने ज्यारे तमोगुण वर्ते त्यारे तो अंतकरण शून्य वर्ते, माटे भजनना करनाराने गुण

ओळखवा ने जे समे सत्त्वगुण वर्ततो होय, ते समे भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान करवुं. अने तमोगुण ज्यारे वर्ते त्यारे कशो घाट थाय नहि,ने शून्य सरखुं वर्ते,तेमां भगवाननुं ध्यान न करवुं अने ज्यारे रजोगुण वर्ततो होय, त्यारे घाट संकल्प घणा थाय, माटे ते समे पण भगवाननुंध्यान करवुं नहि. ने ते समे तो एम जाणवुं जे,हुं तो संकल्प थकी जुदो छुं ने आत्मा छुं ने ए संकल्पनो जाणनारो छुं ने मारे विषे अंतर्यामीरूपे आ पुरुषोत्तम भगवान सदाकाळ विराजे छे. अने ज्यारे रजोगुणनो वेग मटी जाय त्यारे भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान करवुं. अने ज्यारे रजोगुण वर्ततो होय त्यारे संकल्प घणा थाय,ते संकल्पने जोइने मुंझावुं नहि, केमजे अंतःकरण तो जेवुं नानुं छोकरुं तथा वानरुं तथा बाळकनो रमाडनार तेवुं छे,ने ए अंतःकरणनो एवो स्वभाव छे ते विना प्रयोजन चाळा कर्या करे, माटे जेने भगवाननुं ध्यान करवुं तेने अंतःकरणना घाटने जोइने कचवाइ जावुं नहि,ने अंतःकरणना घाटने मानवा पण नहि, ने पोताने ने अंतःकरणने जुदुं मानवुं अने पोताना आत्माने जुदो मानीने भगवाननुं भजन करवुं. (३) इति वचनामृतम् ॥३२॥ ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (४) छे. तेमां पहेला तथा बीजामां अमारी कथाकीर्त्तनादिकना विषयी थवुं. (१) अने अमारी मूर्तिरूपी माळे तथा खीले रहेवुं. (२) त्रीजा तथा चोथामां सत्त्वगुण वर्ते, त्यारे अंतरवृत्तिए अमारुं ध्यान करवुं, पण रजतम वर्तता होय त्यारे न करवुं, ने रजोगुण वर्ते त्यारे अंतःकरणथी पोताना आत्माने जुदो मानीने अमारुं भजन करवुं ने घाटथी कचवावुं नहि, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (३) बाबतो छे.

१ प्र० वचनामृतोमां घणे ठेकाणे नारद सनकादिक कह्या छे तेमां कियामां परोक्ष नारदादिकने कह्या हशे ? अने कियामां श्रीजीमहाराजना मुक्तने कह्या हशे ?

१ उ० (प्र० २० ना बीजा प्रश्नमां, २४ ना १/५ पहेला प्रश्नमां, ३३ ना पहेला प्रश्नमां, ६८ ना चोथा प्रश्नमां, पं० ७/३ मां, म० २ मां, ४७/२ तथा ६२ ना बीजा प्रश्नमां, अ० १ ना पहेला प्रश्नमां, जे० ४ ना २/५ बीजा प्रश्नमां, छे० १० एमां) श्रीजीमहाराजे पोताना सिद्ध मुक्तोने नारद सनकादिक नामे कह्या छे. अने (प्र० १८/५ मां, ३२ ना पहेला प्रश्नमां, ४० ना पहेला प्रश्नमां, ६३ ना बीजा प्रश्नमां, लो० १३ ना बीजा प्रश्नमां, म० ५/३ मां, ९/५ मां, १३/३ मां, १४/३ मां, १८ मां, २७ ना २/३ बीजा प्रश्नमां, छे० ३/२ मां, २१/२ मां, २२ ना बीजा प्रश्नमां एमां) परोक्ष नारद सनकादिकने कह्या छे. अने (प्र० २३ ना पहेला प्रश्नमां ३४ ना १/३ पहेला प्रश्नमां, ३७/३ मां, का० १० ना पहेला प्रश्नमां, लो० १५ ना ६/७ छठ्ठा प्रश्नमां, म० १९/३ मां, ३४ ना पहेला प्रश्नमां, ५१ ना बीजा प्रश्नमां, व० २/३ मां, २० मां, छे० ३०/२ एमां) परोक्ष नारदने कह्या छे. अने (प्र० ४५ मां,म० २०ना १/३ पहेला प्रश्नमां,२१ ना १/३ पहेला प्रश्नमां, ४७/३ मां, छे० ४९/३ एमां) परोक्ष नारद सनकादिक शुकजीने कह्या छे.

२ प्र० बीजा प्रश्नमां अमारी मूर्तिरूपी माळे तथा खीले रहेवुं, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते मूर्ति

तो एकज छे ने माळानुं ने खीलानुं बे दृष्टांत दीधां तेनुं शुं कारण हशे ?

२ उ० जेम पशु खीले बंधाय छे ते खीलाने मुकीने क्यांइ जतुं नथी. ने रज्जुए बंधाया छतां खीलाने सन्मुखज रहे छे, तेम श्रीजीमहाराजना भक्त प्रेमवृत्तिए करीने श्रीजीमहाराजने सन्मुख रहीने कथा, वार्ता, खावुं, पीवुं ए आदि सर्व क्रिया करे तेमां क्षणवार मूर्तिनो वियोग न थाय, सर्व क्रिया मूर्तिने सन्मुख रहीनेज करे, एवी स्थितिने खीलाने दृष्टांते कही छे; ते स्थिति परम एकांतिक मुक्तनी छे. अने जेम पक्षी माळामां रहीने बोले जुए तेम श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां निमग्न रहीनेज सर्व क्रिया करे पण मूर्तिथी बहार आवेज नहि, एवी स्थितिने माळाने दृष्टांते कही छे ते अनादिमुक्तनी स्थिति छे. तेमां जेवी स्थिति प्रमाणे साधनकाळमां वर्ते तेवी स्थिति अंते पामे. ॥३२॥

संवत् १८७६ ना पोष वदि ५ पंचमीने दिवस पाछलो पहोर दिवस हतो त्यारे श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी जोडे जे ओरडो तेनी ओसरीये उगमणे मुखारविंदे ढोलिया उपर विराजमान हता, ने धोळो खेस पहेर्यो हतो, ने धोळी चादर ओढी हती, ने माथे कसुंबी रंगना छेडानो फेंटो बांध्यो हतो, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१　ते समे मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे, (१) भगवानने प्रसन्न करवानां साधन अनंत प्रकारनां शास्त्रमां कह्यां छे, पण ते मध्ये एवुं एक साधन कियुं बळवान छे जे समग्र साधन कर्ये जेवा भगवान प्रसन्न थाय तेवा एक साधने करीने भगवान राजी थाय तेवो एक उपाय कहो ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एकज साधने करीने भगवान राजी थाय ते कहीए ते सांभळो जे, भगवाननो जे दृढ आशरो एज एक सर्व साधनमां मोटुं साधन छे. तेणे करीने भगवान राजी थाय छे, ने ते आशरो अति दृढ जोइए, जेने विषे कांइ पोल्य रहे नहि, ते आशरामां त्रण भेद छे. एक मूढपणे करीने भगवाननो आश्रय थाय छे ते अति मूढ होय तेने ब्रह्मा जेवो होय ते आश्रयमां डोलावे तो पण डोले नहि, अने बीजो प्रकार ए छे जे, भगवानमां जे प्रीति तेणे करीने भगवाननो दृढ आशरो थाय छे, ते जेने दृढ प्रीति होय ते परमेश्वरने मुकीने बीजा पदार्थमां जोरावरी प्रीति करे तोय पण थाती नथी, एवी रीते जेने दृढ प्रीति होय ते प्रीतिए करीने भगवाननो दृढ आशरो कहेवाय छे, अने त्रीजो प्रकार ए छे जे,जेने बुद्धि विशाळ होय ते भगवाननुं सगुण निर्गुणपणुं, तथा अन्वय व्यतिरेकपणुं, तेने समजतो होय, अने भगवाननी माया थकी जे जे सर्ग थयो छे तेने समजतो होय, अने भगवानना जे पृथ्वीने विषे अवतार थाय छे तेनी रीतने समजतो होय, अने जगत्नी उत्पत्तिकाळे भगवान जे प्रकारे अक्षररूपे वर्ते छे तथा पुरुषप्रकृतिरूपे वर्ते छे तथा विराट

पुरुषरूपे वर्ते छे तथा ब्रह्मादिक प्रजापतिरूपे वर्ते छे, तथा जीवना कल्याणने अर्थे नारद सनकादिकरूपे वर्ते छे ए सर्वे रीतने समझी जाणे, अने पुरुषोत्तम भगवानने सर्वेथी पर ने निर्विकार समझतो होय, एवी रीते जेनी दृष्टि पहोंचती होय तेने बुद्धिए करीने भगवाननो दृढ आशरो छे. ते बीजानो टाळ्यो टळे नहि ने पोतानो पण टाळ्यो टळे नहि अने भगवान मनुष्य देहने ग्रहण करीने समर्थपणे अथवा असमर्थपणे वर्त्तता होय तो तेने देखीने तेनी बुद्धिने विषे भ्रान्ति थाय नहि. (१) १

एम कहीने पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, कहो तो तमने एक प्रश्न पुछीए,
२ त्यारे मुक्तानंदस्वामी बोल्या जे पूछो महाराज. पछी एम पूछ्युं जे, (२) अमे कह्यां जे त्रण अंग तेमां तमारुं कियुं अंग छे ? अने ए त्रणे अंग भगवानना भक्तने मिश्रित होय पण तेमां जे अंग प्रधान होय तेणुं ते अंग कहेवाय, माटे मूढपणुं, प्रीति ने समझण ए जे त्रण अंग तेमां तमारुं कियुं अंग छे ? पछी मुक्तानंदस्वामी तथा ब्रह्मानंदस्वामी बोल्या जे, अमारे तो समझणनुं अंग छे अने बीजा साधुए पण जेने जे अंग हतां ते कह्यां.(२) २
इति वचनामृतम् ॥ ३३ ॥

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे मूढपणुं, प्रीति ने समजण ए त्रण प्रकारे आशरो करवाथी पोतानी प्रसन्नता कही छे ने ते आशरानां त्रण प्रकारनां लक्षण कह्यां छे. (१) बीजामां समजणनुं अंग श्रेष्ठ कह्युं छे. (२) बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां मूढपणे आशरो करवो एम कह्युं तेनां केवां लक्षण होय ?

१ उ० श्रीजीमहाराज विना बीजा कोइने भगवान माने नहि, ने जंत्र, मंत्र, औषध, परचा चमत्कारमां क्यांइ लेश मात्र प्रतीति आवे नहि, ने श्रीजीमहाराज बीए, भागे, हारे एवां मनुष्य चरित्र करे अथवा एवी लीला सांभळे तेमां लेशमात्र संशय थाय नहि, अने मायिक विषयमां तथा अक्षरादिकना ऐश्वर्यमां रंच मात्र राग होय नहि, अने बीजे दिवस खावानुं कांइ न होय तेनी पण चिंता न होय, एक श्रीजीमहाराजनोज आधार होय एवां लक्षण होय, अने उगमणा आथमणानी तथा पोताना व्यवहारनी खबर न होय ते मूढपणे आशरो जाणवो.

२ प्र० ब्रह्मा जेवो डोलावे तो पण डोले नहि एम कह्युं ते ब्रह्मा जेवो ते केवो जाणवो ?

२ उ० बहु विचित्र बुद्धिशाळी ने युक्तिवाळो ने शास्त्रवेत्ता होय ते घणाक प्रकारनी युक्तिए करीने श्रीजीमहाराजना आश्रयमांथी पाडवाना उपाय करे, तेने आ ठेकाणे ब्रह्मा जेवो कह्यो छे.

३ प्र० समजणना अंगवाळो अमारुं सगुण निर्गुणपणुं समजे एम कह्युं ते केम समजवुं ?

३ उ० अष्टावरणे वेष्टित एवां जे ब्रह्मांड ते मूळपुरुषना तेजने आधारे रह्यां छे ते मूळपुरुषना तेजनुं सगुणपणुं छे अने एनुं ए तेज प्रधान पुरुषादिक सर्वे जीवने विषे अंतर्यामीपणे रह्युं छे ते मूळपुरुषना तेजनुं निर्गुणपणुं छे, तेमज वासुदेव ब्रह्मना तेजने आधारे मूळपुरुष इश्वररूपी

कोटीयो रही छे ते ब्रह्मना तेजनुं सगुणपणुं छे अने एनुं ए तेज अंतर्यामीपणे मूळपुरुषरूपी कोटीयोमां व्यापक छे ते ब्रह्मना तेजनुं निर्गुणपणुं छे, अने तेमज अक्षरना तेजने आधारे ब्रह्मनी कोटीयो रही छे ते अक्षरना तेजनुं सगुणपणुं छे अने एनुं ए जे अक्षरनुं तेज ते ब्रह्मनी कोटीयोने विषे व्यापक छे ते अक्षरना तेजनुं निर्गुणपणुं छे, तेमज श्रीजीमहाराजना तेजने आधारे मूळअक्षरनी कोटीयो रही छे ते श्रीजीमहाराजना तेजनुं सगुणपणुं एटले अपारपणुं छे, जेम सूर्यना प्रकाशमां तारा चंद्रादिक पोताना परिवारे सहित रह्या छे तेमज ए सर्वे श्रीजीमहाराजना तेजमां पोत पोताना पार्षदोए सहित रह्या छे, अने एनुं ए तेज मूळ-अक्षरनी कोटीयोने विषे अंतर्यामीपणे व्यापक छे ते श्रीजीमहाराजना तेजनुं निर्गुणपणुं एटले सूक्ष्मपणुं छे. अने श्रीजीमहाराज तो ए पोताना तेजथी पण पर छे. ने ए तेजना पण आधार छे ने सदा मूर्तिमान छे तेमने तो सगुण के निर्गुण कहेवायज नहि. माटे ज्यां ज्यां श्रीजी-महाराजनुं सगुण निर्गुणपणुं आवे त्यारे श्रीजीमहाराजना तेजरूप अक्षरधामनुं सगुण निर्गुण-पणुं जाणवुं. ते (म० ४२ मां) कह्युं छे.

४ प्र० अन्वय व्यतिरेकपणुं केवी रीते जाणवुं ?

४ उ० श्रीजीमहाराज जीव, माया, इश्वर, ब्रह्म तथा मूळअक्षरादिक सर्वने विषे पोताना तेज-रूपे अंतर्यामीपणे रह्या छे ते श्रीजीमहाराजनुं अन्वयपणुं छे. अने पोताना ब्रह्मज्योतिरूप अक्षरधामने विषे मूर्तिमान रह्या छे ते व्यतिरेकपणुं छे.

५ प्र० भगवाननी माया थकी सर्ग थयो छे एम कह्युं ते माया तथा सर्ग कियो जाणवो ?

५ उ० मूळ प्रकृतिने माया कही छे अने माया थकी जे जे उत्पन्न थाय तेने सर्ग कह्यो छे. ते (प्र० १२ ना बीजा प्रश्नमां) कह्यो छे.

६ प्र० अमारा अवतारनी रीत जाणवी एम कह्युं, ते रीत केवी रीते जाणवी ?

६ उ० मूळअक्षरथी लइने पृथ्वीने विषे जे जे अवतार थाय छे ते सर्वेने विषे श्रीजीमहाराजनो आविर्भाव छे. ते सर्वे महाराजना अवतार कहेवाय अने ते अवतारो पोतपोताना स्थानोमां होय त्यारे अक्षर, ब्रह्म, पुरुष, प्रधान पुरुष, वैराजपुरुष अने विष्णु एवे एवे नामे कहेवाय छे अने पृथ्वीने विषे दत्त, कपिल, नरनारायण, वासुदेव ने राम कृष्णादिक नामे कहेवाय छे.

७ प्र० उत्पत्तिकाळे मूळअक्षरथी लइने ब्रह्मादिकरूपे वर्त्ते छे एम कह्युं ते केम समजवुं ?

७ उ० उत्पत्ति समयने विषे अक्षरादिक सर्वेने विषे कारणपणे अंतर्यामी शक्तिए प्रवेश करीने न्यूनाधिक भावे प्रकाश करे छे. ते, ते ते रूपे वर्त्ते छे एम जाणवुं. ते (प्र० ४१ मां) कह्युं छे.

८ प्र० जीवना कल्याणने अर्थे नारद सनकादिकरूपे वर्ते छे एम कह्युं ते केम समजवुं ?

८ उ० जीवोना आत्यंतिक कल्याण करवाने अर्थे पोतानी इच्छाथी पोताना मुक्त द्वारे पृथ्वीने विषे दर्शन आपे छे ते नारद सनकादिकरूपे एटले मुक्तरूपे वर्ते छे एम कह्युं छे.

९ प्र० अमने परने निर्विकार समजवा एम कह्युं ते केवी रीते समजवा ?

९ उ० मूळअक्षरादिक सर्वेमां अंतर्यामीपणे रह्या थका मूर्तिमान सर्वेथी न्यारा छे ते पर सम-जवा अने ए सर्वेमां अंतर्यामीरूपे रह्या थका ते ते उपाधि थकी रहित छे पण कोइनी

उपाधि श्रीजीमहाराजने अडती नथी ते निर्विकार समजवा ते (सा० ५ ना ३/४ बीजा प्रश्नमां) " इश्वरना ने अक्षरना हृदयमां साक्षीरूपे रह्या छे ने ते ते उपाधिथी रहित छे " एम कह्युं छे. ॥३३॥

संवत् १८७६ ना पोष वदि ११ एकादशीने दिवस सवारमां श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर दक्षिणादु मुखारविंद राखीने विराजमान हता, ने धोळो खेस पहेर्यो हतो, ने धोळो चोफाळ ओढ्यो हतो, ने माथे धोळी पाघ बांधी हती ने फुलना हार पहेर्या हता, ने पाघने विषे पुष्पना तथा हीरना तोरा लटकता मुक्या हता ने बे काननी उपर पुष्पना गुच्छ खोस्या हता, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना सत्संगीनी सभा भराइने बेठी हती. ने मुनि वार्जींत्र लेइने कीर्तन गाता हता.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे कीर्तन राखीने प्रश्न उत्तर करो. पछी ब्रह्मानंद-
१ स्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे, (१) सर्वे सुखना धाम ने सर्वथकी पर एवा परमेश्वर छे तेमां जीवनी वृत्ति चोटती नथी, ने मायिक एवां जे नाशवंत तुच्छ पदार्थ तेमां जीवनी वृत्ति चोटी जाय छे तेनुं शुं कारण छे ? पछी तेनो उत्तर मुक्तानंदस्वामी करवा लाग्या पण थयो नहि. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ए प्रश्ननो उत्तर सांभळो अमे करीए छइए जे,जे दिवसथी परमेश्वरे आ जगतनी सृष्टि करी छे ते दिवसथी एवीज कळ चडावी मुकी छे जे, फरीने परमेश्वरने दाखडो करवो पडे नहि ने संसारनी जे वृद्धि करवी ते पोतानी मेळेज थया करे एवो फेर चडावी मुक्यो छे, ते माटे सहेजेज स्त्रीमां पुरुषने हेत थाय छे ने पुरुषमां स्त्रीने हेत थाय छे ने ए स्त्रीथी उपजी जे प्रजा तेमां पण सहेजे हेत थाय छे ते हेतरूपीज भगवाननी माया छे. (१) ते मायाना प्रवाहमां जे न वहे तेनी वृत्ति १
भगवानना स्वरूपमां रहे छे, माटे जे भगवाननो भक्त होय ते मायिक पदार्थने विषे दोषबुद्धि राखीने वैराग्यने पामे. ने भगवानने सर्वे सुखमय जाणीने भगवानमां वृत्ति राखे, अने जो मायिक पदार्थने विषे वैराग्य न राखे ने भगवानना स्वरूपथी जुदा पडे तो शिव, ब्रह्मा ने नारदादिक जेवा समर्थ मुक्त होय ते पण मायिक पदार्थमां तणाइ जाय छे, तेटला माटे भगवानने मुकीने मायिक पदार्थनो संग करे तो जरूर तेमां जीवनी वृत्ति चोटी जाय ते सारु परमेश्वरना भक्तने परमेश्वर विना बीजे कोइ ठेकाणे प्रीति राखवी नहि. (२) २

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, हवे मुक्तानंदस्वामीने प्रश्न कर्यानो वारो आव्यो
२ ते प्रश्न करो. पछी मुक्तानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (२) जीवने भगवाननी प्राप्ति थावी ते अति दुर्लभ छे, अने भगवाननी प्राप्ति थइ त्यारे एथी बीजो मोटो लाभ पण नथी.

ने तेथी आनंद पण बीजो नथी, ते एवा मोटा आनंदने मुकीने तुच्छ पदार्थ माटे क्लेशने केम पामे छे ? ए प्रश्न छे, त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो एनो अमे उत्तर करीए जे, परमेश्वरना वचनने मुकीने ज्यारे आडो अवळो डोले छे त्यारे क्लेशने पामे छे, अने जो वचनने विषे रहे तो जेवो भगवाननो आनंद छे तेवा आनंदमां रहे छे ने जेटलुं जे भगवाननुं वचन लोपे छे तेटलो तेने क्लेश थाय छे, माटे त्यागीने जे जे आज्ञा करी छे ते प्रमाणे त्यागीने रहेवुं ने गृहस्थने जे प्रमाणे आज्ञा करी छे ते प्रमाणे गृहस्थने रहेवुं ने तेमां जेटलो फेर पडे तेटलो क्लेश थाय छे, अने त्यागी होय तेने अष्ट प्रकारे स्त्रीनो त्याग राखवो त्यारे तेनुं ब्रह्मचर्य व्रत पुरुं कहेवाय, ने तेमांथी जेने जेटलो फेर पडे तेने तेटलो क्लेश थाय छे अने गृहस्थने पण ब्रह्मचर्य कह्युं छे जे, परस्त्रीनो त्याग राखवो तथा पोतानी स्त्रीनो पण व्रतने दिवस त्याग राखवो ने ऋतु समेज स्त्रीनो संग करवो, ए आदिक जे जे त्यागीने ने गृहस्थने नियम कह्या छे तेमां जेटलो जेने फेर पडे तेटलो तेने क्लेश थाय छे. (३) अने भगवानथी जे विमुख जीव होय तेने जे सुख दुःख आवे छे ते ३
तो पोताने कर्मे करीने आवे छे ने जे भगवानना भक्त होय तेने जेटलुं सुख दुःख थाय छे ते कर्मनुं मेर्युं थातुं नथी, भगवानना भक्तने तो जेटलुं दुःख थाय छे ते भगवाननी आज्ञा लोपवे करीने थाय छे ने जेटलुं सुख थाय छे ते भगवाननी आज्ञा पाळवे करीने थाय छे. (४) इति वचनामृतम् ॥३४॥ ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलामां स्त्री पुरुषने तथा स्त्रीथी उपजेली प्रजाने परस्पर हेत थाय छे ते हेतरूपीज भगवाननी माया छे. (१) अने जे अमारा स्वरूपथी एटले अमारी मूर्तिथी जुदा पडे ते मायिक पदार्थमां तणाइ जाय छे. (२) बीजामां त्यागीने अष्ट प्रकारे स्त्रीनो त्याग राखवो अने गृहस्थने परस्त्रीनो त्याग राखवो तेमां फेर पडे तो क्लेश थाय छे अने अमारी आज्ञा पाळे तो सुख थाय छे. (३) अने विमुखने कर्म प्रमाणे सुख दुःख आवे छे, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (४) बाबतो छे. ॥३४॥

संवत् १८७६ ना पोष वदि १२ द्वादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर आगळ लिंबडाना झाड तळे ढोलिया उपर उगमणे मुखारविंदे विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज मुनि प्रत्ये बोल्या जे, तमे प्रश्न पूछो कां अमे पुछीए. त्यारे
१ मुनिए कह्युं जे, हे महाराज ! तमे पूछो. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) कोइ पुरुष छे तेमां थोडी बुद्धि छे तो पण पोताना कल्याणने अर्थे जे यत्न करवुं तेमांथी पाछो

पडतो नथी, अने कोइ बीजो पुरुष छे तेमां बुद्धि तो घणी छे अने मोटा मोटामां पण खोट्य काढे एवो छे. तोय पण ते कल्याणने मार्गे चालतो नथी तेनुं शुं कारण छे? त्यारे मुनिए उत्तर करवा मांड्यो पण श्रीजीमहाराजे आशंका करी ते उत्तर न थयो. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे उत्तर करीए जे, एमां बुद्धि तो झाझी छे पण एनी बुद्धि दूषित छे, माटे ए कल्याणने मार्गे चाली शकतो नथी, जेम सुंदर भेंसनुं दुध होय तेमां साकर घोळी होय ने तेमां सर्पनी लाळ पडी एटलेए साकर ने दुध हतुं ते झेर थयुं, पछी तेने जे पीए तेना प्राण जाय, तेम बुद्धि तो झाझी छे पण एणे कोइ मोटा संतनो अथवा परमेश्वरनो अवगुण लीधो छे ते अवगुणरूप दोष एनी बुद्धिमां आव्यो छे ते सर्पनी लाळ सरखो छे माटे एतो कल्याणने मार्गे क्यांथी चाले! पण जो कोइक एना मुखनी वात सांभळे तो ते सांभळनारानी बुद्धि पण सत्संगमांथी पाछी पडी जाय छे. (१) अने एवी दुषित बुद्धिवाळो ज्यां ज्यां जन्म धरे त्यां त्यां भगवाननो अथवा १
भगवानना भक्तनो द्रोहज करे; अने जेनी बुद्धि एवी रीते दुषित न होय ने तेजो थोडीज होय तो पण ते पोताना कल्याणने अर्थे यत्न करतो थको पाछो पडतो नथी. (२) २

२ त्यारे मुक्तानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (२) हे महाराज! ए कोइ दिवस भगवानने सन्मुख थाय के न थाय? त्यारे श्रीजीमहाराजे कह्युं जे,ए तो कोइ काळे भगवान सन्मुख थायज नहि. (३) ३

३ त्यारे वळी मुक्तानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (३) हे महाराज! कोइ रीते एवी आसुरी बुद्धि न थाय तेनो जे उपाय होय ते कहो. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एक क्रोध, बीजुं मान, त्रीजी ईर्ष्या, चोथुं कपट ए चार वानां परमेश्वर साथे तथा संत साथे राखे नही, तो कोइ दिवस एनी आसुरी बुद्धि थाय नहि, अने ए चार वानां मांहेलुं एके जो राखे तो जेम जय विजय घणाय डाह्या हता पण सनकादिक संघाथे माने करीने वैकुंठ लोकमांथी पडी गया, ने आसुरी बुद्धि थइ तेम तेनी पण आसुरी बुद्धि थाय अने ज्यारे आसुरी बुद्धि थाय त्यारे भगवान तथा भगवानना भक्तना जे गुण होय ते दोष सरखा भासे छे ने ए ज्यां ज्यां जन्म धरे त्यां त्यां कां तो शिवनो गण थाय ने कां तो कोइ दैत्यनो राजा थाय ने वैरभावे परमेश्वरनुं भजन करे. (४) इति वचनामृतम् ॥३५॥ ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (३) छे. तेमां पहेलामां जेनी बुद्धिमां अमारो तथा अमारा भक्तनो अवगुणरूप दोष होय ते तथा तेनी वात सांभळनारो ए बे कल्याणना मार्गथी पडी जाय छे. (१) अने जेनी बुद्धि एवी दूषित न होय ने ते थोडी होय तो पण ते कल्याणने मार्गे चाले छे. (२) बीजामां दूषित बुद्धिवाळो अमारा सन्मुख थायज नहि.

(३) त्रीजामां क्रोध, मान, ईर्ष्या ने कपट ए च्यार वानां न राखे तेनी बुद्धि आसुरी न थाय, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (४) वातो छे. ॥३५॥

संवत् १८७६ ना पोष वदि १३ तेरशने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदिरनी आगळ लिंबडाना झाड हेठे ओटा उपर ढोलियो ढळावीने विराजमान थया हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. ने कंठने विषे धोळा ने पीळा पुष्पना हार धारण कर्या हता ने बे कान उपर धोळा पुष्पना गुच्छ खोश्या हता ने पाघने विषे पीळा पुष्पनो तोरो लटकतो हतो तथा कर्णिकारनां रातां पुष्पनुं छोगलुं मुक्युं हतुं अने जमणा हाथने विषे धोळा पुष्पनो दडो फेरवता हता, एवी रीतनी शोभाने धारण करता ने पोताना भक्तजनने आनंद उपजावता थका विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) जेणे संसार मुक्यो ने त्यागीनो भेख लीधो अने तेने परमेश्वरना स्वरूप विना जे असत् पदार्थमां प्रीति रहे छे, तेने केवो जाणवो ? तो जेवो मोटा शाहुकार माणसनी आगळ कंगाल माणस होय तेवो जाणवो, जेम कंगाल माणस होय ने पहेरवा वस्त्र न मळतुं होय ने उकरडामांथी दाणा वीणी खातो होय ते पोते पोताने पापी समझे अने बीजा शाहुकार लोक पण तेने पापी समझे जे आणे पाप कर्यां हशे, माटे एने अन्न वस्त्र मळतुं नथी, तेम जे त्यागी थइने सारां सारां जे वस्त्रादिक पदार्थ तेने भेळां करी राखे अने तेनी तृष्णा पण घणी राखे अने धर्म, ज्ञान वैराग्य ने भक्ति तेने विषे प्रीतिए रहित होय एवो जे त्यागी तेने तो जे मोटा एकांतिक साधु छे ते कंगाल माणसनी पेठे पापी जाणे छे, केमजे जो ए पापी छे तो एने धर्म, ज्ञान, वैराग्य ने भक्ति तेने विषे प्रीति थाती नथी ने परमेश्वर विना बीजा पदार्थमां प्रीति थाय छे. (१) १
अने जे त्यागी होय तेने तो कचरो ने कंचन ए बेय बरोबर होय अने आ पदार्थ सारुं ने आ पदार्थ भुंडुं एवी तो समझण होयज नहि अने एक भगवानने विषेज प्रीति होय तेज साचो त्यागी छे. (२) इति वचनामृतम् ॥३६॥ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां वस्त्रादिक पदार्थने भेळा करी राखे ने धर्म, ज्ञान, वैराग्य ने भक्तिमां प्रीति न होय एवा त्यागीने श्रीजीमहाराजे पापी कह्यो छे. (१) ने कचरो ने कंचन सरखां थइ जाय ने एक अमारे विषेज प्रीति होय ते साचो त्यागी छे, एम कह्युं छे. [२] वातो छे.

१ प्र० त्यागी वस्त्रादिक पदार्थ भेगा करी राखे तेने पापी कह्यो ते पदार्थ कियां जाणवां ?

१ उ० श्रीजीमहाराजे " सत्संगी जीवनमां " साधु ब्रह्मचारी पार्षदोने वस्त्रादिक राखवानुं कह्युं छे तेथी अधिक राखे तेने पापी कह्यो छे.

२ प्र० वस्त्रादिक अधिक राखे तेने पापी कह्यो त्यारे द्रव्य, पैसा राखे ते त्यागीने केवो जाणवो?

२ उ० (म० ३९ ना ३/४ बीजा प्रश्नमां) अमारी बांधेली मर्यादा लोपे तेनी अधोगति थाय छे. अने (जे० ३/४ मां) अमारा सत्संगना नियम नहि पाळो तो महा दुःख पामशो. तेमां अमारे तमारे लेणा देणा नथी. अने (छे० ३८ ना बीजा प्रश्नमां) द्रव्यादिक छो वानां होय तेने जीववानां ने मरीने सुख नहि थाय. अने (म० ३/४ मां) धर्म रहितने चंडाळ कह्यो छे. अने प्र० (३/४ मां) सर्पे करडेल आंगळी तथा कीडीयाराना रोगवाळा अंगनी पेठे कुपात्रनो तत्काळ त्याग करवो. अने (प्र० ५३ मां तथा छे० ३/४ मां) पंचवर्तमानमांथी कोइ वर्तमाननो भंग करे तेनो अवगुण लेवो. अने [प्र० ७७ ना ३/४ पहेला प्रश्नमां] धर्मभंग वात करे तेने अधर्मी, विमुख, गुरुद्रोही, वचनद्रोही ने असुर कह्यो छे. अने (छे० १ ना ३/४ बीजा प्रश्नमां) शिक्षापत्रीनो पाठ करवानुं कह्युं छे; तेमां श्लोक [१८९] मां— न द्रव्य संग्रहः कार्यः कारणीयो न केनचित् अमारा आश्रित त्यागीए द्रव्य राखवुं रखाववुं नहि. श्लोक (२०७) मां बहिर्भूता इति ज्ञेयं स्त्रीपुंसैः सांप्रदायिकैः अमारा कहेला धर्ममां यथार्थ वर्तनारा एवा जनोए जे अमारा कह्या प्रमाणे नहि वर्तनारा तेमने, अमारा संप्रदायथी बहार जाणवा. माटे जे द्रव्य राखे वा रखावे ते तो स्वामिनारायणनो कहेवाय ज नहि. ते एवा भेखधारीना मुख थकी कथा सांभळनार गृहस्थ चांद्रायण करे त्यारे शुद्ध थाय. ॥ ३६ ॥

संवत् १८७६ ना पोष वदि १४ चौदशने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेवनारायणना मंदिर आगळ लिंबडा तळे ढोलिया उपर आथमणे मुखारविंदे विराजमान हता ने माथे धोळी पाघ विराजमान हती अने ते पाघमां पीळा पुष्पनो तोरो विराजमान हतो अने बे कान उपर धोळा पुष्पना गुच्छ विराजमान हता अने कंठने विषे पीळा अने धोळा पुष्पनो हार विराजमान हतो अने धोळी चादर ओढी हती अने धोळो खेस पहेर्यो हतो, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिजननी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) जे अणसमजु होय ने तेणे भेख लीधो होय तो पण तेने ज्यां ज्यां पोतानी जन्मभूमि होय तेने विषे हेत टळतुं नथी, एम कहीने पछी पोताना साथळने विषे नानपणमां झाडनो खांपो लाग्यो हतो ते सर्वेने देखाडयो ने बोल्या जे, आ चिन्हने ज्यारे अमे देखीए छइए त्यारे ते झाड ने तळावडी सांभरी आवे छे, माटे जन्मभूमि तथा पोतानां सगां संबंधी तेने अंतरमांथी विसारी देवां ते घणुं कठण छे, माटे जेने जेने जन्मभूमि तथा देहना संबंधी ते न सांभरतां होय

ते बोलो ने जे लाजे करीने न बोले तेने श्री नरनारायणना सम छे. पछी सर्वे मुनि जेम जेने वर्ततुं हतुं तेम बोल्या, पछी ते सांभळीने श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ज्यारे पोताने आत्मारूपे मानीए त्यारे ते आत्मानी जन्मभूमि केइ ? ने ते आत्मानुं सगुं कोण ? ने ते आत्मानी जात्य पण केइ ? अने जो सगपण लेवुं होय तो पूर्वे चोराशी लाख जात्यना देह धर्या छे ते सर्वेनुं सगपण सरखुं जाणवुं ने ते सगानुं कल्याण इच्छवुं तो सर्वेनुं इच्छवुं अने आ मनुष्य देहमां आव्या त्यारे चोराशी लाख जातनां जे मावाप ते अज्ञाने करीने विसर्या छे तेम आ मनुष्य शरीरनां जे मावाप छे तेमने ज्ञाने करीने विसारी देवां. (१) अने अमारे तो कोइ सगां संबंधी साथे हेत नथी तथा १
अमारी सेवा करतो होय ने तेना हृदयमां जो परमेश्वरनी भक्ति न होय तो ते उपर हेत करीए तोय पण न थाय ने जो नारदजी जेवो गुणवान होय ने तेने भगवाननी भक्ति न होय तो ते अमने न गमे. (२) अने जेना हृदयमां भगवाननी भक्ति २
होय ने एम समझतो होय जे जेवा आ प्रगट भगवान पृथ्वी उपर बिराजे छे अने जेवा भगवानना भक्त भगवाननी समीपे बिराजे छे, तेवाने तेवाज ज्यारे आत्यंतिक प्रलय थाय छे त्यारे पण रहे छे, अने आ भगवानने भगवानना भक्त ते सदा साकारज छे एम समझतो होय ने गमे तेवा वेदांतना ग्रंथ सांभळे पण भगवानने भगवानना भक्तने निराकार समझेज नहि, अने एम जाणे जे आ भगवान विना बीजो कोइ जगत्‌नो कर्त्ता छेज नहि, अने एम जाणे जे आ भगवान विना सुकुं पांदडुं पण फरवाने समर्थ नथी, एवी जेने भगवानने विषे साकारपणानी दृढ प्रतीति होय, ने ते जेवो तेवो होय तो पण ए अमने गमे छे ने एने माथे काळ, कर्म ने माया तेनो हुकम नथी अने जो एने दंड देवो होय तो भगवान पोते दे छे पण बीजा कोइनो एने माथे हुकम नथी, अने एवी निष्ठा न होय ने ते जो त्याग वैराग्ये युक्त होय, तो पण तेनो अमारा अंतरमां भार आवे नहि अने जेना हृदयमां भगवाननी एवी निष्ठा अचळ होय ने ते गमे तेटलां शास्त्र सांभळे, अथवा गमे तेनो संग करे तो पण पोताने जे भगवानना साकारपणानी निष्ठा छे ते टळे नहि, अने तेजना बिंब जेवा निराकार भगवानने कोइ दिवस समझेज नहि, एवी निष्ठावाळो जे संत छे तेना पगनी रजने तो अमे पण माथे चडावीए छइए अने तेने दुःखावता थका मनमां बीए छइए अने तेनां दर्शनने पण इच्छीए छइए. (३) अने एवी निष्ठा विनाना जे जीव छे ते पोताना साधनने बळे करीने पोतानुं ३
कल्याण इच्छे छे पण एवा परमेश्वरना प्रतापे करीने पोतानुं कल्याण इच्छता नथी एवा जे जडमतिवाळा पुरुष छे ते तो जेम नाव विना पोताना बाहुबळे करीने समुद्र तरवाने इच्छे तेवा मूर्ख छे. (४) अने जे एवा भगवानने प्रतापे करीने पोतानुं कल्याण ४

इच्छे छे ते तो जेम नावमां बेसीने समुद्र तरवाने इच्छे एवा डाह्या छे, अने एवा जे भगवानना स्वरूपना ज्ञानवाळा छे ते सर्वे देहने मुकीने भगवानना धाममां चैतन्यनीज मूर्ति थइने भगवानना हजुरमां रहे छे; अने एवी निष्ठा जेने न होय ने तेणे बीजां साधन जो कर्यां होय तो ते बीजा देवताना लोकमां रहे छे. अने जे एवा यथार्थ भगवानना भक्त छे तेनुं दर्शन तो भगवानना दर्शन तुल्य छे, अने एना दर्शने करीने अनंत पतित जीवनो उद्धार थाय छे एवा ए मोटा छे, एवी रीते वार्ता करीने श्रीजीमहाराजे कह्युं जे कीर्तन बोलो. (५) इति वचनामृतम् ॥३७॥ ५

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां आत्मारूप माने तो जन्मभूमि तथा देहना संबंधीमांथी हेत टळी जाय छे. (१) अने अमारी भक्ति न होय, ने तेमां बीजा गुण घणा होय, तो पण तेनी साथे हेत न करवुं. (२) अने अमने ने अमारा मुक्तोने सदा दिव्य साकार मूर्ति समझे, अने अमने एकनेज कर्त्ता जाणे तेने माथे काळ, कर्म ने मायानो हुकम नथी. [३] अने एवी निष्ठा न होय ते जडमतिवाळा ने मूर्ख छे. (४) श्रीजी बाबतमां कही गया एवा अमारा स्वरूपना ज्ञानवाळा छे तेमनो चैतन्य मूर्तिमान थइने अक्षरधामने विषे अमारी हजुरमां रहे छे, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (५) बाबतो छे.

१ प्र० बीजी बाबतमां भक्तिरहित गुणवान गमे नहि एम कह्युं ते गुण ने भक्ति कियां जाणवां?

१ उ० श्रीजीमहाराजनी बांधेली मर्यादाने स्थूळ देहे करीने यथार्थ पाळे, तथा कथा, कीर्त्तन, जप, तप, व्रतादिक करे ते गुण जाणवा, ते गुणे संपन्न होय तो पण श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां हेत जे भक्ति ते न होय ते गमतो नथी एम कह्युं छे.

२ प्र० त्रीजी बाबतमां जेना दर्शनने श्रीजीमहाराज इच्छे अने जेना दर्शनथी अनंत पतित जीवोनो उद्धार थाय तेवा समर्थने जेवो तेवो कहेवानो शो हेतु हशे ?

२ उ० श्रीजीमहाराजने विषे प्रेमलक्षणा भक्तिए युक्त होय, ते विना बीजे क्यांय प्रीति न होय अने श्रीजीमहाराजने एमना मुक्त जेवा अक्षरधाममां छे तेवाज अहीं मनुष्यरूपे देखाता होय तेमने सदा दिव्य साकार जाणे, अने निराकार प्रतिपादन करनारा ग्रंथनुं श्रवण थाय, तो पण श्रीजीमहाराजने ने मुक्तोने निराकार समजेज नहि अने अति समर्थ जाणे, एवी श्रीजी-महाराजने विषे दृढ प्रतीति होय, आवा गुणे युक्त होय, ने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां अखंड जोडाइ रह्या होय, अने प्रकृति पुरुष, काळ, ब्रह्म, तथा मूळअक्षर ए आदिक कोइने जग-त्ना कर्त्ता जाणे नहि ने ए सर्वेना कर्त्ता एक श्रीजीमहाराजने जाणे अने श्रीजीमहाराज विना बीजा कोइने विषे आस्था आवे नहि ने जंत्र मंत्र देव देवीमां क्यांइ लेशमात्र प्रतीति आवे नहि, अने ते त्यागीमां रह्यो होय ने विद्वत्ता के आ लोकनो अधिकार वगेरे लौकिक मोटाइ न होय ने गृहस्थमां होय ने तेने धन समृद्धि न होय अने गरीब स्थितिमां होय, तेने आ लौकिक मोटाइनी दृष्टिए जेवो तेवो कह्यो छे, एने दर्शने करीने अनंत पतित जीवनो उद्धार थाय छे ने एने माथे काळ, कर्म ने मायानो हुकम नथी.

३ प्र० एने माथे काळ, कर्म ने मायानो हुकम नथी एम कह्युं ते हुकम शो समजवो ?

३ उ० कोइकना कर्ममां दुःख लख्युं होय ते मटाडीने सुखीओ करे अने कोइकना कर्ममां जीववुं लख्युं होय तेनो देह मुकावे तेमां कर्मनुं जोर चाले नहि ते कर्मनो हुकम न चाल्यो कहेवाय. (१) अने कोइकनी आयुष्य आवी रही होय तेने मरवा दे नहि अने काळ कोइक जीवने लई जतो होय, तेनी पासेथी मुकावीने पोतानी इच्छा होय त्यां मुकी दे, तेमां काळनुं जोर चाले नहि ते काळनो हुकम न चाल्यो कहेवाय. (२) अने मायाना तावाना पामर जीवने वगर साधने मायाथी मुकावीने, श्रीजीमहाराजना धाममां मुकी दे तेमां मायानुं जोर चाले नहि ते मायानो हुकम न चाल्यो कहेवाय. (३)

४ प्र० एवा समर्थने श्रीजीमहाराज दंड शो देता हशे ?

४ उ० श्रीजीमहाराजनी मरजी विना उपर कह्यं एवुं काम करे तेने श्रीजीमहाराज ठपको दे जे आवुं काम केम कर्यु ? ए दंड जाणवो.

५ प्र० पांचमी बाबनमां साकार निष्ठावाळो चैतन्यनी मूर्ति थाय एम कह्युं ते केम समजवुं ?

५ उ० श्रीजीना ध्यानथी भक्तनो चैतन्य मूर्तिमान थाय छे तेने चैतन्यनी मूर्ति जाणवी.

६ प्र० साधनने बळे कल्याण इच्छे ते देवताना लोकने पामे ते देव किया जाणवा ?

६ उ० आ ठेकाणे इंद्रथी लइने प्रधानपुरुष सुधी देवता कह्या छे. ॥३७॥

संवत् १८७६ ना महा शुदि १ पडवाने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां सांझने समे घोडशाळनी ओसरीए गादलुं नखावीने विराजमान हता, ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने माथे राता छेडानो धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने देरीयानुं अंगरखुं पहेर्युं हतुं ने धोळो चोफाळ ओढयो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

ते समे श्रीजीमहाराज सर्वे हरिभक्त सामुं जोइने झाझीवार विचारी रह्या ने पछी
१ एम बोल्या जे (१) सांभळो वात करीए छइए जे, जे सत्संगी होय तेने ज्यांथी पोताने सत्संग थयो होय त्यांथी पोताना मननो तपास करवो जे, प्रथमना वर्षमां मारुं मन आवुं हतुं ने पछी आवुं हतुं अने आटली भगवाननी वासना हती ने आटली जगतनी हती, एम वर्षोवर्षनो सरवाळो विचार्या करवो. अने पोताना मनमां जेटली जगत्नी वासना बाकी रही गइ होय तेने थोडे थोडे निरंतर टाळवी, अने एम विचारे नहि ने बधी भेगी करे तो ते वासना एनी टळे नहि, जेम वणिकने घेर नाणुं कर्युं होय ते जो महिना महिनानुं निरंतर चुकावी देइए तो देतां कठण न पडे ने वर्ष दहाडानुं भेगुं करीए तो आपवुं बहु कठण पडे तेम निरंतर विचार करवो, अने मन छे ते जगत्नी वासनाए करीने वसाणुं छे, जेम फुले करीने तिल वसाय छे, तेम मनने भगवान-

नां जे चरित्र तेनुं जे महिमाए सहित नित्य स्मरण ते रूप फुलने विषे वासवुं,अने भगवाननां चरित्ररूप जाळाने विषे मनने घुंचवी मेलवुं ने भगवानना घाट मनमां कर्या करवा, एक सम्पो ने बीजो करवो बीजो सम्पो ने त्रीजो करवो एम ने एम मनने नवरुं रहेवा देवुं नहि. एम कहीने पछी भूतनुं दृष्टांत विस्तारीने कही देखाडयुं ने पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एवी रीते भगवाननां जे चरित्र तथा वार्ता तथा दर्शन ते एक दिवसनां जो संभारवा मांडे तो तेनो पार न आवे तो सत्संग थयां तो दश पंदर वर्ष थयां होय ते एनो तो पारज न आवे, अने ते एवी रीते संभारवां जे आ गाममां आवी रीते महाराज तथा परमहंसनी सभा थइ अने आवी रीते महाराजनी पूजा थइ ने आवी रीते वार्ता थइ इत्यादिक जे भगवाननां चरित्र तेने वारंवार संभारवां; अने जे झाझुं न समझतो होय तेने तो एम करवुं एज श्रेष्ठ उपाय छे, ए जेवो बीजो नथी. त्यारे तमे कहेशो जे, अन्न थोडुं खाइए तथा घणा उपवास करीए तो ते अमे कहेता नथी, ए तो जेम जेना नियम कह्या छे ते प्रमाणे साधारणपणे रहेवुं अने करवानुं तो आ अमे तमने कह्युं ते छे. अने अमे तो एम मान्युं छे जे,मन निर्वासनिक जोइए अने देहे करीने गमे तेटली प्रवृत्ति होय ने तेनुं मन जो शुद्ध छे तो तेनुं अति भुंडुं थाय नहि अने बाहेर लोकमां तो ते प्रवृत्तिवाळानुं भुंडा जेवुं जणाय अने जेने मनमां वासना होय ने ते बाहेर सारी पेठे निवृत्तिपरायण वर्ततो होय तो तेनुं बाहेर लोकमां तो सारुं जणाय पण तेना जीवनुं अति भुंडुं थाय, केम जे मुवा टाणे तो जेवा मनमां संकल्प होय तेवा स्फुरी आवे, जेम भरतजीने अंतकाळमां मृगनुं बाळक स्फुरी आव्युं त्यारे मृगने आकारे थइ गया ने प्रथम राज्य मेल्युं हतुं ने ऋषभदेव भगवान तो पोतानां बाप हता तो पण एम थयुं, माटे मने करीने निर्वासनिक रहेवुं ए अमारो मत छे. अने जे उपवास करवा तेणे करीने देह दुर्बळ थाय त्यारे मन दुर्बळ थाय तो खरुं, पण ज्यारे देह पुष्ट थाय त्यारे वळी मन पुष्ट थाय, माटे देहे करीने त्याग ने मने करीने त्याग ए बे भेळा जोइए. अने जेने मनमां भगवानना घाट थाता होय ने जगतना घाट न थाता होय ते आपणा सत्संगमां मोटेरो छे ने एवो जे न होय ते नानेरो छे. अने गृहस्थ होय तेने पण देहे करीने व्यवहार करवो ने मने करीने तो त्यागीनी पेठेज निर्वासनिक रहेवुं ने भगवाननुं चिंतवन करवुं ने व्यवहार तो भगवानने वचने करीने राखवो, अने मननो त्याग साचो न होय तो जनक जेवा राजा हता ते राज्य करता ने मन तो मोटा योगेश्वरना जेवुं हतुं, ते माटे मने करीने जे त्याग तेज ठीक छे, अने जे पोताना मनमां भुंडा घाट थाता होय ते कहेवा पण जेम कुतरानुं मुख कुतरो चाटे तथा सर्पने घेर परोणो साप मुख चाटीने वळीओ आप, तथा रांढीनी

पासे सुवासणी स्त्री जाय त्यारे ते कहे जे आव्य बाइ हुं जेवी तुं पण था, तेम पोतानी पेठे जेने ग्रुंडा घाट थाता होय तेने आगळ जे घाट कहेवो ते तो आ दृष्टांत दीधां एम छे, माटे घाट केने कहेवो तो जेना मनमां कोइ दिवस जगत्नो ग्रुंडो घाट न थातो होय एवो बळीयो होय तेनी आगळ कहेवो अने एम घाट न थाय एवा पण घणा होय तेमांथी पण एवाने घाट कहेवो जे ते घाटने सांभळीने ते घाट उपर वात करे, ते ज्यां सुधी ते कहेनारानो घाट टळी जाय,त्यां सुधी बेसतो,उठतो,खातो, पीतो, सर्व क्रियामां वात कर्या करे, अने ते घाट टाळ्यामां केवी चाड्य होय तो जेम पोताना घाटने टाळ-वानी चाड्य होय तेवीज होय, एवा आगळ घाट कहेवो; अने जेनी आगळ घाट कहीए ने ते आवी रीते वात तो न करे ने पोते आळ्सु होय तो शो समास थाय? माटे एवी रीते पोताना मनना घाट कहीने ते घाटने टाळी नाखीने पोताना मनने विषे केवळ भग-वानना घाट कर्या करवा ने जगत्ना सुखथी निर्वासनिक थावुं.अने एकादशीनो उपवास करवो तेनुं शुं लक्षण छे तो,दश इंद्रियोने अगीयारमुं मन तेमने पोतपोताना विषयमांथी काढीने भगवानमां जोडवां तेने एकादशीनुं व्रत कर्युं कहेवाय,ने एवुं व्रत तो भगवानना भक्तने निरंतर कर्या करवुं.अने एवी रीते जेनुं मन निर्वासनिक न होय ने देहे करीने तो व्रत तप करे तो पण तेनुं अतिशे सारुं थातुं नथी, माटे जे भगवाननो भक्त होय तेने पोतपोताना धर्ममां रहीने, ने भगवानतुं महात्म्य समजीने, पोताना मनने निर्वासनिक करवानो नित्ये अ-भ्यास राखवो, एम वार्ता करी. (१) अने वळी श्रीजीमहाराजे बीजी वार्ता करीजे, १
साचो त्यागी केने कहीए तो जे पदार्थ त्याग कर्या तेनो पाछो कोइ दिवस मनमां संकल्प पण न थाय, जेम विष्टानो त्याग कर्यो छे तेनो पाछो संकल्प थातो नथी तेम संकल्प न थाय, त्यां शुकजी प्रत्ये नारदजीनो कहेलो श्लोक छे जे ॥ त्यज धर्ममधर्मंच ॥ ए श्लोकनुं हारद ए छे जे, एक आत्मा विना बीजां जे जे पदार्थ छे तेनो त्याग करीने केवळ आत्मापणे वर्तवुं ने भगवाननी उपासना करवी तेने पुरो त्यागी कहीए; अने जे गृहस्थ हरिभक्त होय ते तो जेम जनक राजाए कह्युं जे, आ मारी मिथिला नगरी बळे छे, पण तेमां मारुं कांइ बळतुं नथी, त्यां श्लोक छे जे ॥ मिथिलायां प्रदीप्तायां न मे दह्यति किंचन ॥ एम समजे ने गृहमां रहेतो होय ते गृहस्थ हरिभक्त खरो कहेवाय, अने एवी रीतनो जे त्यागी न होय ने एवी रीतनो जे गृहस्थ न होय ते तो प्राकृत भक्त कहेवाय, अने मोरे कह्यो एवो जे होय ते तो एकांतिक भक्त कहेवाय, एवी रीते वार्ता करी. (२) २

२ पछी मोटा आत्मानंद स्वामीए श्रीजीमहाराजने प्रश्न पूछ्यो, जे, (२) देह, इंद्रियो तथा अंतःकरण तथा देवता तेथी जुदो जे जीवात्मा तेनुं रूप केवी रीते छे ? पछी

श्रीजीमहाराज बोल्या जे, थोडाकमां एनो उत्तर करीए छइए जे, देहने इंद्रियादिकना स्वरूपनो जे वक्ता ते सर्वेना स्वरूपने जुदुं जुदुं करीने श्रोताने समझावे छे ते जे समजावनारो वक्ता ते देहादिक सर्वना प्रमाणनो करनारो छे ने जाणनारो छे ने सर्वेथी जुदो छे एने जीव कहीए, अने जे श्रोता छे ते देहादिकना रूपने जुदां जुदां समजे छे ने एनुं प्रमाण करे छे ने एने जाणे छे ने ए सर्वेथी जुदो छे एनेज जीव कहीए, एवी रीते जीवना स्वरूपने समझवानी रीत छे एवी रीते वार्ता करी. (३) इति वचनामृतम् ।।३८।। ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलुं कृपावाक्य छे तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, पोताना मननो निरंतर तपास करवो तथा अमारी मूर्तिमां निमग्न रही न शके तेणे अमारां लीला चरित्र संभारवां, तथा अमारी मूर्तिनुं चिंतवन करवुं, तथा बीजाना घाटने टाळी नाखे एवा अमारा समर्थ मुक्तनो संग करवो, ने पोतपोताना धर्ममां रहेवुं, अने अमारो महिमा समजीने निर्वासनिक थावुं. (१) अने अमारा विना बीजो संकल्पज न थाय ने आत्मापणे वर्ते ने अमारी उपासना करे ते साचो त्यागी छे, अने अमारा विना बीजुं कांइ पोतानुं मनायज नहि ते खरो हरिभक्त छे, (२) बीजा प्रश्नमां जे समजावी शके ने समजी शके ते जीवनुं स्वरूप कह्युं छे, (३) आवतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां जेने घाट थता होय ने जेने घाट न थता होय ने जे बीजाना घाट टाळी नाखे तेने केवा जाणवा ?

१ उ० जेने घाट थाता होय ते प्राकृत गुणबुद्धिवाळा जाणवा, अने जेने घाट न थाता होय तेने एकांतिक संत जाणवा, अने बीजाना घाटने टाळी नाखे तेने सिद्धदशावाळा जाणवा.।।३८।।

संवत् १८७६ना महा सुद ३ त्रीजने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिरनी आगळ लिंबडाना वृक्ष हेठे ओटा उपर ढोलियो ढळावीने विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो. ने धोळी चादर ओढी हती ने माथे धोळी पाघ बांधी हती ने पीळां पुष्पना तोरा पाघमां लटकता हता ने कान उपर धोळा ने पीळा पुष्पना गुच्छ खोश्या हता ने कंठमां पीळा पुष्पना हार पहेर्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ सर्वे मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे एक वेदांती ब्राह्मण आव्यो हतो तेने प्रश्न पूछयो जे (१) तमे एक ब्रह्मनुं प्रतिपादन करो छो ने ते विना जे जीव, ईश्वर, माया, ने जगत तथा वेदशास्त्र पुराण ते सर्वेने मिथ्या कहो छो, ए वात अमने समजाती नथी तथा मान्यामां आवती नथी, माटे तमने पुछीए छइए तेनो उत्तर करो. ते वेदशास्त्र, पुराण स्मृति, इतिहास तेनी शाख्ये करीने करो पण कोइक कल्पित ग्रंथने वचने करीने करशो तो अमे तेने नहि मानीए; अने जो व्यासजीने वचने करीने करशो तो अमारा मान्यामां आवशे, केमके

अमारे व्यासजीना वचनमां तो दृढ प्रतीति छे. पछी ते वेदांतीए घणीक प्रकारनी युक्तिओ लावीने उत्तर करवा मांड्यो, पण श्रीजीमहाराजे तेमां आशंका करी माटे ते प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे सांभळो ए प्रश्नने उत्तर अमे करीए छइए जे एतो परमेश्वरने भजीने थया जे मुक्त तेनी स्थितिना भेद छे, जेम मेरु पर्वत उपर उभा जे पुरुष ते जेते ते मेरु थकी ओरा जे सर्वे पर्वत, तथा सर्वे वृक्ष तथा ते पर्वत वृक्षनुं आधार जे पृथ्वीनुं तळ ते सर्वेने पृथक् पृथक्पणे देखे छे, तेम सविकल्प समाधिवाळा जे जीवन्मुक्त ते जेते जीव, ईश्वर, माया तथा एमनुं आधार जे ब्रह्म ए सर्वेने पृथक् पृथक्पणे देखे छे, अने वळी जेम लोकालोक पर्वत उपर उभा जे पुरुष ते जेते लोकालोक पर्वतथी ओरा जे पर्वत तथा वृक्ष ते सर्वेने एक पृथ्वीरूपेज देखे छे, पण पृथक् पृथक्पणे नथी देखता, तेम निर्विकल्प समाधिवाळा जे विदेह मुक्त ते जेते जीव, ईश्वर, ने माया तेने एक ब्रह्मरूपे करीनेज देखे छे पण पृथक्पणे नथी देखता. एवी रीते बे प्रकारनी स्थितिवाळा मुक्त छे तेनी स्थितिने योगे करीने ए सर्वेनुं सत्यपणुं कहेवाय छे ने असत्यपणुं कहेवाय छे, अने सविकल्प स्थितिवाळानां वचन वेदशास्त्र पुराणादिकमां आवे छे ते ए सर्वेने सत्य कहे छे, ने निर्विकल्प स्थितिवाळानां जे वचन ते ए सर्वेने असत्य कहे छे पण कांइ ए सर्वे असत्य नथी, एतो एने निर्विकल्पस्थितिने बळे करीने देखाता नथी, माटे असत्य कहे छे. अने वळी जेम सूर्यना रथमां जे बेठा होय तेने रात्य नथी पण जे पृथ्वी उपर रह्या छे तेने रात्रि दिवस छे, तेम निर्विकल्प स्थितिवाळाने मते ए सर्वे छे नहि पण बीजाने मते तो ए सर्वे छे; अने आवी रीते ब्रह्मनिरूपण करे तो शास्त्रना वचनमां पूर्वापर बाध न आवे, ने एम न करेतो पूर्वापर बाध आवे ते बाधने तो समझतो न होय तथा एवी रीतनी स्थितिने पण न पाम्यो होय ने केवळ शास्त्रमांथी शिखीने वचन मात्रे करीने एक ब्रह्मपणानुं प्रतिपादन करतो होय ने गुरु, शिष्य, जीव, ईश्वर, माया, जगत, तथा वेद पुराण, शास्त्र ए सर्वेने कल्पित कहेतो होय ते तो महा मूर्ख छे, ने अंत्ये नारकी थाय छे. एम कहीने बोल्या जे, आ अमे वार्ता करी तेमां तमने आशंका थती होय तो बोलो; त्यारे ते वेदांती ब्राह्मण बोल्यो जे, हे महाराज! हे प्रभो! हे स्वामिन्! तमेतो परमेश्वर छो ने जगतना कल्याणने अर्थे प्रगट थया छो; ते तमे जे उत्तर कर्यो ते यथार्थ छे, एमां आशंकानो माग नथी एम कहीने अति प्रसन्न थयो ने पोतानी जे अगसपझग तेनो त्याग करीने श्रीजीमहाराजने आश्रित थयो. (१) १

इति वचनामृतम् ॥३९॥

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां सविकल्प समाधिवाळा जीवन्मुक्त, जीव, ईश्वर, माया ने ब्रह्म ए सर्वेने जुदा जुदा देखे छे, माटे सर्वेने सत्य कहे छे अने निर्वि-

कल्प समाधिवाळा विदेह मुक्त ते जीव, माया, ईश्वर, तेमने ब्रह्मरूपे देखे छे, अर्थात् जीव, माया, ईश्वर, तेमने देखताज नथी, एक ब्रह्मनेज एटले अमनेज देखे छे, जेम लोकालोक उपर चडेला पुरुषने पृथ्वी उपर झाड मनुष्य तथा बीजा पर्वत ते कांइ देखातां नथी, एक पृथ्वीज देखाय छे, ते माटे ते जीव, माया, ईश्वरने असत्य कहे छे, अने आवी स्थिति न थइ होय ने ते शास्त्रमांथी शिखीने जीव, माया, ईश्वर, गुरु, शिष्य, वेद, पुराण, शास्त्र तेमने मिथ्या कहे ते नारकी थाय छे. (१) बाबत छे.

१ प्र० आमां ब्रह्म कह्या ते कोने जाणवा ?

१ उ० आ ठेकाणे ब्रह्म शब्दे करीने श्रीजीमहाराजने कह्या छे.

२ प्र० (प्र० ४५, ३/६, पं० १/३, म० ३/२–२, १० ना पहेला प्रश्नमां, १/२, अने ६/६ मां) ब्रह्मने परब्रह्मनो प्रकाश कह्यो छे तथा (लो० १ ना आठमा प्रश्नमां, १० ना ६/८ छठ्ठा प्रश्नमां म० ८ ना बीजा प्रश्नमां इत्यादिकमां) ब्रह्मरूप थइने परब्रह्मना दास थवुं एम कह्युं छे. अने (म० २१ ना ४/८ चोथा प्रश्नमां, ३० मां अने अ० २/६ मां) ब्रह्मरूप थइने परब्रह्मनी भक्ति उपासना करवानुं कह्युं छे, तथा (छे० ३६ ना २/३ बीजा प्रश्नमां) श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनी उपासना विना आत्मा तथा ब्रह्म देखायज नहि एम कह्यं छे माटे एम जोतां तो ब्रह्म ते श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनो प्रकाश छे अने तमे श्रीजीमहाराजने ब्रह्म कहो छो ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० आमां निर्विकल्प स्थितिवाळाने सर्वत्र ब्रह्म देखाय छे एम कह्युं ते ब्रह्म श्रीजीमहाराजने जाणवा; ते हरिवाक्यसुधासिंधुना तरंग (३९) मां कह्युं छे केः—**आद्यायां तत्र पश्यंति जीवेशाद्यखिलं पृथक् । द्वितीयायां तुनेक्षंते मुक्ताः किंचित्पृथग्घरेः ॥ १२ ॥ लोकालोक नगारूढास्त्वेतत्किंचित्क्षितेः पृथक् । नपश्यंति यथा तद्वदन्येप्येतद्धरेः पृथक् ॥ १५ ॥** पहेली सविकल्प स्थितिवाळाने जीव, ईश्वर वगेरे पृथक् पृथक् देखाय छे पण बीजी निर्विकल्प स्थितिवाळा मुक्तने तो एक हरि-श्रीजीमहाराज-विना बीजुं कांई देखातुं नथी (१२) जेम लोकालोक पर्वत पर उभेला मनुष्यने पृथ्वी विना कांइ पण देखातुं नथी तेम बीजी निर्विकल्प स्थितिवाळा मुक्तने पण एक श्रीहरि विना बीजुं कांइ देखातुं नथी. (१५) माटे ब्रह्म जे श्रीजीमहाराज ते सर्वत्र देखाय छे ते (का० ७ ना ४/५ चोथा प्रश्नमां) आत्यंतिक कल्याण पामीने सिद्धदशा पाम्यो होय ते " अक्षरधामने विषे जे भगवाननी मूर्ति अखंड विराजमान रहे छे ते मूर्तिने स्थावर जंगम सर्वे आकारने विषे ज्यां ज्यां दृष्टि जाय त्यां त्यां साक्षात्कार देखे ने ए मूर्ति विना बीजुं अणुमात्र पण भासे नहि ए सिद्धदशानुं लक्षण छे. " एम कह्युं छे. माटे आ ठेकाणे ब्रह्म ते श्रीजीमहाराजने कह्या छे पण तेजने ब्रह्म कहेल नथी केमजे (अस्ला १ ना २/३ बीजा प्रश्नमां) आत्मदर्शननी इच्छा राखे तेने मध्यम कह्यो छे तथा (छे०५ ना त्रीजा प्रश्नमां) अमारा विना बीजुं कांइ आत्मदर्शनादिक इच्छे तेने न्यून सुखनी प्राप्ति थाय छे एम कह्युं छे. अने (का० १ ना ५/६ पांचमा प्रश्नमां) कैवल्यार्थीनुं अमारी मूर्तिने विषे

तदाकारपणुं थतुं नथी. अने (श्लो० २४/१ मां) अमारुं तेज एकलुं देखाय तो कष्ट पामवुं अने [पांचमी बाबतमां] " अमारी साकारपणे उपासना भक्ति करवी. अने (व० ३/६ मां) अमने निराकार जाणे ते अमारो द्रोही छे. अने [म० ६४/१ मां] " एकलुं ब्रह्मज्ञान नकारुं अने अकल्याणकारी छे. " अने [छे० ३६ ना बीजा प्रश्नमां] मूर्तिनी उपासना विना आत्मा के ब्रह्म देखायज नहि. अने [छे० ३०/१ मां] केवळ तेजने मानतो होय ने तेनी उपासना करतो होय ते अमने गमेज नहि. एवी रीते पोताना तेजरूप ब्रह्मनो पण निषेध कर्यो छे, अने शुष्क वेदांतीनो तो श्रीजीमहाराजे [म० १८, १९, प्र० ४८, लो० ७ ना ३/२ त्रीजा प्रश्नमां, छे० २८ ना पहेला प्रश्नमां, इत्यादिकमां] अतिशे निषेध कर्यो छे. [अने प्र० ४२, ५० तथा परथारानी बीजी बाबतमां तथा व० १३ ना बीजा प्रश्नमां) ब्रह्म तो अमेज छीए एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. माटे ब्रह्म नामे श्रीजीमहाराजनेज जाणवा पण निराकार ब्रह्म जे श्रीजीमहाराजनुं तेज ते आ ठेकाणे न जाणवुं. ॥३९॥

संवत् १८७६ ना महा शुदि ४ चोथने दिवस प्रातःकाळे श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ लिंबडाना वृक्षनी हेठे ढोलिया उपर बिराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो, अने धोळी चादर ओढी हती ने माथे धोळी पाघ बांधी हती ने पाघने विषे पीळा पुष्पनो तोरो लटकतो हतो ने कंठने विषे पीळा पुष्पनो हार पहेर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ सर्वे मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजने मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे, (१) हे महाराज सविकल्प समाधि ते केने कहीए ? ने निर्विकल्प समाधि ते केने कहीए ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने भगवानना स्वरूपमां स्थिति थइ होय तेने अशुभ वासना तो न होय ने शुभ वासना रही होय जे, हुं नारद सनकादिकने शुकजी ते जेवो थाउं अथवा नरनारायणना आश्रममां जइने ते आश्रममां मुनि भेळो रहीने तप करुं अथवा श्वेतद्वीपमां जइने तप करीने श्वेतमुक्त जेवो थउं, एवी रीतनो जेने विकल्प रहेतो होय तेने सविकल्प समाधिवाळो कहीए. अने जेने एवी रीतनो विकल्प न होय ने अक्षरब्रह्मना साधर्म्यपणाने पामीने केवळ भगवाननी मूर्तिने विषेज निमग्न रहेतो होय तेने निर्विकल्प समाधिवाळो कहीए. (१) १

२ पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे, (२) हे महाराज ! भक्तिमां ने उपासनामां ते शो भेद छे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ॥ श्रवणं कीर्त्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनं अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ॥ एवी रीते नव प्रकारे करीने जे भगवानने भजवा तेने भक्ति कहीए. (२) अने उपासना तो तेने कहीए जे, भगवा- २
नना स्वरूपने विषे सदा साकारपणानी दृढ निष्ठा होय ने पोते जे भजननो करनारो ते

अक्षररूप थाय, तो पण ते निष्ठा जायज नहि, ने गमे तेवा निराकार प्रतिपादनना ग्रंथने सांभळे तो पण भगवानना स्वरूपने सदा साकारज समझे, अने शास्त्रने विषे गमे तेवी वात आवे पण पोते भगवानना साकार स्वरूपनुंज प्रतिपादन करे, पण पोतानी उपासनानुं खंडन थावा देज नहि, एवी रीते जेनी दृढ समझण होय तेने उपासनावाळो कहीए. (३) इति वचनामृतम् ॥४०॥ ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलामां अमारा तेजरूप अक्षरधामना साधर्म्यपणाने पामीने अमारी मूर्तिमां स्नेहे करीने जोडाइ जाय ते निर्विकल्प समाधिवाळो छे, अने जेने अमारी मूर्तिमां स्थिति थइ होय एटले अमारी मूर्तिने देखतो होय, पण बदरिकाश्रम तथा श्वेतद्वीपमां जइने एमना मुक्त जेवो थाउं;एवो विकल्प रहे ते सविकल्प समाधिवाळो छे. (१) बीजामां नव प्रकारे अमने भजे ते भक्ति छे. (२) अने अमने सदा साकार जाणीने अमारे विषे स्वामीसेवकभाव राखवो ते उपासना छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (३) बावतो छे.

१ प्र० आमां (२/३ बीजा प्रश्नमां सा० १७, म० १९/२, २७ ना ३/२ त्रीजा प्रश्नमां तथा लो० १४/२ मां, ए पांचमां) उपासना कही ते एक प्रकारनी हशे के जुदा जुदा प्रकारनी हशे ?

१ उ० आमां श्रीजीमहाराजने सदा साकार जाणवा ते उपासना कही छे अने (म० २७ मां) श्रीजीमहाराजने साकार जाणीने श्रीजीमहाराजनी प्रतिमाने थाळ जमाडवा, वस्त्र घरेणां पहेराववां, आरती उतारवी ते सेवाभक्तिरूप उपासना कही छे अने (म० १९ मां) पतिव्रतापणुं राखीने प्रेमे सहित सेवाभक्ति करवारूपी उपासना कही छे अने (सा० १७ मां) श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनो साक्षात्कार करीने स्वामीसेवकपणुं ने दासपणुं दृढ करवुं एवी रीतनी उपासना कही छे. आमां उपासना कही तेथी (म०२७ मां) कही ते श्रेष्ठ छे अने तेथी (म० १९ मां) कही ते श्रेष्ठ छे, अने तेथी (सा० १७ मां) कही ते श्रेष्ठ छे अने (लो० १४/२ मां) सर्वेथी पर तेजना समूहने मध्ये दिव्य मूर्ति एवा ने पोताना मुक्तोए सहित देखे ते सर्वेथी श्रेष्ठ छे. ॥४०॥

संवत् १८७६ना महा शुदि ५ पंचमीने दिवस सांझने समे श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी समीपे लिंबडा तळे चोतरा उपर ढोलिए विराजमान हता, ने सर्वे धोळां वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पीळा पुष्पना हार पहेर्या हता ने पीळा पुष्पना गुच्छ कान उपर धार्या हता ने पाघने विषे पीळा पुष्पना तोरा लटकता मुक्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे प्रश्नोत्तर करो. पछी नृसिंहानंदस्वामीए पूछ्युं जे,
१ (१) हे महाराज ! ॥ एकोहं बहुस्यां ॥ ए जे श्रुति तेनो जे अर्थ तेने जगत्मां केटलाक

पंडित छे तथा वेदांती छे ते एम समझे छे जे, प्रलयकाळने विषे जे एक भगवान हता तेज पोतानी इच्छाए करीने सृष्टिकाळे सर्वे जीव इश्वररूपे थाय छे ते ए वार्ता तो मूर्ख होय तेना मान्यामां आवे ने अमारे तो तमारो आश्ररो छे, एटले ए वातनी घेड्य बेसती नथी ने अमे तो एम समझीए छइए जे, भगवान तो अच्युत छे ते च्यवीने जीव इश्वररूपे थाय नहि, माटे ए श्रुतिनो जे अर्थ ते तो तमे कहो तो यथार्थ समझाय. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ए श्रुतिनो अर्थ तो ए सर्वे करे छे एम नथी, एनो अर्थ तो बीजी रीते छे. ते वेदस्तुतिना गद्यमां कह्यो छे जे, ॥ स्वकृतविचित्रयोनिषु विशन्निव हेतुतया तरतमतश्चकास्त्यनलवत्स्वकृतानुकृतिः ॥ एनो अर्थ एम छे जे, पुरुषोत्तम भगवाने पोते करी एवी जे नाना प्रकारनी योनियो तेमने विषे कारणपणे अंतर्यामीरूपे करीने प्रवेश करीने न्यूनाधिक भावे प्रकाश करे छे. तेनी विगति जे अक्षरातीत एवा जे पुरुषोत्तम भगवान ते सृष्टि समयने विषे अक्षर सामी दृष्टि करे छे, त्यारे ते अक्षरमांथी पुरुष प्रगट थई आवे छे, पछी ते पुरुषोत्तम जे ते अक्षरमां प्रवेश करीने पुरुषने विषे प्रवेश करे छे ने पुरुषरूपे थइने प्रकृतिने प्रेरे छे, एवी रीते जेम जेम पुरुषोत्तमनो प्रवेश थातो गयो तेम तेम सृष्टिनी प्रवृत्ति थइने पछी ते प्रकृति पुरुषथकी प्रधानपुरुष थया अने ते प्रधानपुरुष थकी महत्तत्त्व थयुं ने महत्तत्त्व थकी त्रण प्रकारनो अहंकार थयो ने अहंकार थकी भूत, विषय, इंद्रियो, अंतःकरण ने देवता ते थया ने ते थकी विराट्पुरुष थया ने तेनी नाभि कमळमांथी ब्रह्मा थया ने ब्रह्माथकी मरीच्यादिक प्रजापति थया ने ते थकी कश्यप प्रजापति थया ने ते थकी इंद्रादिक देवता थया ने दैत्य थया ने स्थावर जंगम सर्वे सृष्टि थइ अने पुरुषोत्तम भगवान जे ते ए सर्वेमां कारणपणे अंतर्यामीरूपे प्रवेश करीने रह्या छे पण जेवा अक्षरमां छे तेवी रीते पुरुषप्रकृतिमां नथी ने जेवा पुरुषप्रकृतिमां छे तेवा प्रधानपुरुषमां नथी ने जेवा प्रधानपुरुषमां छे तेवा महत्तत्त्वादिक चोवीश तत्त्वमां नथी ने जेवा चोवीश तत्त्वमां छे तेवा विराट्पुरुषमां नथी ने जेवा विराट्पुरुषमां छे तेवा ब्रह्मामां नथी ने जेवा ब्रह्मामां छे तेवा मरीच्यादिकमां नथी ने जेवा मरीच्यादिकमां छे तेवा कश्यपमां नथी ने जेवा कश्यपमां छे तेवा इंद्रादिक देवतामां नथी ने जेवा इंद्रादिक देवतामां छे तेवा मनुष्यमां नथी ने जेवा मनुष्यमां छे तेवा पशुपक्षीमां नथी, एवी रीते पुरुषोत्तम भगवान जेते तारतम्यताए सर्वेमां कारणपणे अंतर्यामीरूपे करीने रह्या छे, जेम काष्ठने विषे अग्नि रह्यो छे ते मोटा काष्ठमां मोटो अग्नि रह्यो छे ने ने लांबा काष्ठमां लांबो अग्नि रह्यो छे ने वांका काष्ठमां वांको अग्नि रह्यो छे तेम ए पुरुषोत्तम भगवान छे ते जे द्वारे जेटलुं कार्य कराववुं होय तेने विषे तेटली सामर्थीए युक्त थका रहे छे अने अक्षर ने पुरुष प्रकृति आद्ये सर्वेने विषे पुरुषोत्तम भगवान अंतर्या-

मीरूपे रह्या छे पण पात्रनी तारतम्यताए करीने सामर्थ्यमां तारतम्यपणुं छे एवी रीते एक पुरुषोत्तम भगवान छे ते अंतर्यामीरूपे करीने ए सर्वेने विषे प्रवेश करीने रह्या छे पण जीव ईश्वरपणाने पोते पामीने बहुरूपे नथी थया,एवी रीते ए श्रुतिनो अर्थ समजवो. (१) इति वचनामृतम् ।।४४।। १

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां मूळमाया सुधी क्षर अने मूळअक्षर सुधी अक्षर ते सर्वेथी पर अने सदा मूर्तिमान प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम जे अमे ते मूळअक्षरथी लइने ब्रह्म, ईश्वर, माया, जीव ए सर्वेने विषे पात्रनी तारतम्यताए अंतर्यामीरूपे एटले अन्वय स्वरूप जे अमारूं तेज ते द्वारे करीने रह्या छीए पण अमे जीव, माया, ईश्वर, ब्रह्म ने अक्षर ते रूपे थया नथी अमे तो सर्वेथी पर छीए अने ए सर्वेने अगम्य छीए, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (१) बाबत छे.

१ प्र० उत्पत्ति समे अक्षर सामी दृष्टि करे छे एम कह्युं ते दृष्टि केवी रीते करता हशे ?

१ उ० श्रीजीमहाराज मूळअक्षरादिक सर्वेमां तेजद्वारे अन्वयपणे रहीने प्रेरणा करे छे ते (म० १० ना पहेला प्रश्नमां) अमे मूर्तिमान ने सर्वेथी जुदा छीए अने ब्रह्मरूपजे अमारी शक्ति तेणे करीने सर्वेने विषे व्यापक छीए ने ए ब्रह्म ते अमारी किरण छे अने (प्र० ६४/२ मां) अमारूं तेज जे आत्मा ते मूळअक्षरमां व्यापक छे ने ते अक्षरना दृष्टा छे एम कह्युं छे, माटे पोताना तेजरूप अक्षरधामनी किरणोद्वारे मूळअक्षरादिक सर्वेने विषे रह्या छे, माटे अक्षर सामी दृष्टि करे छे एम कह्युं ते अंतर्यामीपणे तेजद्वारे प्रेरणा करे छे एम समजवुं. ते (प्र० ४५ ना बीजा प्रश्नोत्तरमां) छे.

२ प्र० आ अक्षरने वचनामृतमां क्यांये मूळअक्षरनामे कह्या नथी अने तमे मूळअक्षर कहो छो तेनुं शुं कारण हशे ?

२ उ० श्रीजीमहाराज सृष्टि करवानी प्रेरणा प्रथम अक्षरने करे छे ते अक्षर मूळपुरुषद्वारे सृष्टि करावे छे, माटे सृष्टिकर्त्ता मूळकारण ए छे, तेथी मूळअक्षर कहेवाय छे.

३ प्र० अक्षरमांथी पुरुष प्रगट थइ आवे छे ते पुरुष माया साथे जोडाय छे एम कह्युं ते पुरुषना उपरितो (का० १० ना १/२ पहेला प्रश्नमां) ब्रह्मने कह्या छे ते ब्रह्मने अहीं गण्या नथी ने पाधराज अक्षरमांथी पुरुष प्रगट थइ आवे छे एम कह्युं अने (प्र० १२ ना बीजा प्रश्नमां) श्रीजीमहाराज अक्षरपुरुषरूपे मायाने विषे गर्भ धरे छे एम कह्युं छे ते अक्षरपुरुष जे मूळपुरुष तेने तो प्रेरणा ब्रह्मनी जोइए ने ब्रह्मने अक्षरनी जोइए ने ते अक्षरने श्रीजीमहाराजनी प्रेरणा जोइए, केमजे ए सर्वे एक बीजाना उपरी छे ते उपरिनी प्रेरणा होवी जोइए तेमने गण्या विना पाधराज श्रीजीमहाराज पुरुषरूपे मायाने विषे गर्भ धरे छे एम कह्युं अने वळी एज बाबतमां प्रधानने विषे पण प्रधानना पति पुरुषरूपे करीने श्रीजीमहाराज गर्भ धरता हवा एम कह्युं छे, तेमां पण मूळपुरुष, ब्रह्म अक्षर ए बधायने गण्या नहिं ने पाधराज प्रधानना पति पुरुषरूपे प्रधानने विषे गर्भ धरता हवा एम कह्युं छे तेमज (प्र० ५६ ना ३/२ त्रीजा

प्रश्नमां) पण आ प्रगट भगवान जे अमे ते सृष्टि रचवाने समे प्रकृति पुरुषद्वाराए सृष्टिने उपजावीए छीए एम कह्युं छे ते ठेकाणे पण अक्षर के ब्रह्म कोइने गण्या नथी अने (म० ३१ ना पहेला प्रश्नमां) पुरुषरूपे करीने मायाने विषे वीर्य धरीए छीए अने एज वाक्यमां मूळपुरुषने मूळमाया थकी वैराजपुरुष उत्पन्न थाय छे एम कह्युं छे ते मूळपुरुषने मूळमाया थकी तो प्रधानपुरुष उत्पन्न थाय छे अने ते प्रधान पुरुषथकी महत्तत्त्व उत्पन्न थाय छे अने महत्तत्त्व थकी अहंकार उत्पन्न थाय छे अने अहंकार थकी चोवीश तत्त्व उत्पन्न थाय छे अने वैराज तो चोवीश तत्त्वथी उत्पन्न थाय छे अने पाधराज मूळपुरुषने मूळमायामांथी वैराजपुरुष उत्पन्न थया एम कह्युं छे ते केवी रीते समजवुं ?

३ उ० उत्पत्ति समे श्रीजीमहाराज पोतानी अंतर्यामी शक्ति जे तेजरूपअक्षर ते द्वारे मूळ-अक्षरने उत्पत्तिनी प्रेरणा करे छे, अने मूळअक्षर पोताना तेजद्वारे ब्रह्मने प्रेरणा करे छे ने वासुदेव ब्रह्म पोताना तेजद्वारे मूळपुरुषने प्रेरणा करे छे ते मूळपुरुष माया साथे जोडाय छे ने ते थकी अनंत प्रधानपुरुष थाय छे ते प्रधान साथे तेनो पति पुरुष जोडाय छे ने ते थकी ब्रह्मांड थाय छे, आवी रीते अनुक्रम प्रमाणेज प्रेरणा थाय छे पण एक बीजाना उपरिने मूकीने पाधराज श्रीजीमहाराज प्रेरणा करता नथी पण ए सर्वेने विषे श्रीजीमहाराजनी सत्ता रही छे, माटे मुझे ते द्वारे प्रेरणा करे छे पण श्रीजीमहाराज पोतेज प्रेरणा करे छे एम कह्युं होय, माटे पुरुषरूपे करीने प्रधानने विषे तथा मूळपुरुषरूपे करीने मायाने विषे श्रीजीमहाराज गर्भ धरे छे एम कह्युं होय ते ठेकाणे तेमना उपरि द्वारेज प्रेरणा करे छे एम जाणवुं पण श्रीजीमहाराज पोते एक बीजाना उपरिने पडद्या मुकीने प्रेरणा करता नथी पण ग्रंथ विस्तार पामे तेथी स्थळे स्थळे लखता नथी आ एक बीजाना उपरीना भेद (सा० १७ ना चोथा प्रश्नोत्तरमां) छे. ॥४१॥

संवत् १८७६ ना महा शुदि ६ छठ्ठने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदिर आगळ लिंबडाना वृक्षनी हेठे ओटा माथे ढोलिया उपर आथमणे मुखारविंदे विराजमान हता, ने माथे धोळी पाघ बांधी हती ने धोळी चादर ओढी हती ने धोळो खेस पहेर्यो हतो, ने बे कानने उपर पीळा पुष्पना गुच्छ विराजमान हता, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने ते सभाने विषे कोइक वेदांती ब्राह्मण आवीने बेठो हतो तेने जोइने श्रीजी-
१ महाराज बोल्या जे, (१) वेदांत शास्त्रने जे जे भणे छे तथा सांभळे छे ते एम कहे छे जे, विधिनिषेध तो मिथ्या छे अने विधिनिषेधे करीने पमाय एवा जे स्वर्ग ने नरक ते पण मिथ्या छे अने तेने पामनारो जे शिष्य ते पण मिथ्या छे अने गुरु पण मिथ्या छे ने एक ब्रह्मज सभर भर्यो छे ते सत्य छे,एवी रीते जे कहे छे ते शुं समझीने कहेता हशे ? अने सर्व वेदांतीना आचार्य जे शंकराचार्य तेणे तो पोताना शिष्यने दंड कमंडलु धारण

कराव्यां अने एम कह्युं जे, भगवद्गीता ने विष्णुसहस्रनामनो पाठ करवो तथा विष्णुनुं पूजन करवुं, अने जेने झाझां चोमासां थयां होय तेनुं थोडा चोमासावाळाए वंदन करवुं, अने सारो पवित्र ब्राह्मण होय तेना घरनीज भिक्षा करवी, एवी रीते जे विधिनिषेधनुं प्रतिपादन कर्युं ते शुं एने यथार्थ ज्ञान नहि होय अने जे हमणाना ज्ञानी थया तेमणे विधिनिषेधने खोटा करी नाख्या ते शुं शंकराचार्य करतां ए मोटा थया ? माटे एम जणाय छे जे, एतो केवळ मूर्खाइमांथी बोले छे अने विधिनिषेध शास्त्रमां खोटा कह्या छे ते तो एम कह्या छे जेम कोइ मोटुं वहाण होय अने ते वहाण महासमुद्रने विषे एक वर्ष सुधी चाल्युं जाय छे तेने आगलो कांठो पण देख्यामां आवे नहि अने पाछलो कांठो पण देख्यामां आवे नहि अने ते बे कांठा उपर जे मोटा मोटा पर्वत ते पण देख्यामां आवे नहि तो झाडवां तथा मनुष्य ते तो क्यांथी देख्यामां आवे ? अने ज्यां देखे त्यां एकलुं जळज देखाय पण जळ विना बीजो कोइ आकार देख्यामां आवे नहि अने उंचुं जुवे तो मोटी मोटी समुद्रनी लहेर्युं उठती होय, माटे उंचुं पण जळज जणाय त्यारे ते वहाणने विषे बेठा एवा जे पुरुष ते एम कहे जे, एकलुं जळज छे बीजुं कांइ नथी ए दृष्टांतनुं सिद्धांत ए छे जे, जेने ब्रह्मस्वरूपने विषे निर्विकल्प स्थिति थइ होय ते एम बोले जे, एक ब्रह्मज छे अने ते विना बीजुं जे जीव, ईश्वर ने माया ए आदिक सर्वे ते मिथ्या छे अने तेनां वचन शास्त्रमां लखाणां होय तेने सांभळीने पोताने तो एवी स्थिति न थइ होय तो पण विधि निषेधने खोटा कहे छे अने स्त्रीनी शुश्रषा करे ने छोकरांनी शुश्रूषा करे अने जेटलो संसारनो व्यवहार होय ते सर्वेने साचो जाणीने सावधान थइने करे छे शास्त्रे प्रतिपादन कर्या एवा जे विधिनिषेध तेने खोटा कहे छे, एवा जे आ जगत्ने विषे ज्ञानना कथनारा छे तेने तो महा अधम जाणवा ने नास्तिक जाणवा. (१) अने शंक- १
राचार्ये तो जीवना हैयामां नास्तिकपणुं आवी जाय तेनी बीके करीने॥ भज गोविंदं भज गोविंदं गोविंदं भज मूढमते ॥ ए आदिक घणांक विष्णुनां स्तोत्र कर्या छे तथा शिवजी तथा गणपति तथा सूर्य ए आदिदेने जे घणाक देवता तेनां स्तोत्र कर्या छे जेने सांभळीने सर्वे देवता सत्य भासे एवो आशय जाणीने शंकराचार्ये सर्वे देवतानां स्तोत्र कर्या छे, अने आजना जे ज्ञानी थया ते तो सर्वेने खोटां करी नाखे छे ने वळी एम कहे छे जे, ज्ञानी तो गमे तेवुं पाप करे तो पण कांइ अडतुं नथी ते मूर्खपणामांथी कहे छे अने जेटला त्यागी परमहंस थया ते सर्वेने विषे जडभरत श्रेष्ठ छे अने जेटलां पुराण मात्र तथा वेदांतना ग्रंथ ते सर्वेने विषे जडभरतनी वार्ता लखाणी छे एवा मोटा जे जडभरत ते पूर्व जन्ममां ऋषभदेव भगवानना पुत्र हता ने राज्यनो त्याग करीने वनमां गया हता तेने दयाये करीने पण जो मृग संघाथे प्रीति थइ तो तेनो दोष लाग्यो ने पोताने मृगनो

जन्म लेवो पड्यो अने मृगना सरखा चार पग ने टुंकी पुंछडी ने माथे नानी शींगडीयो एवो आकार पोताने प्राप्त थयो अने परमात्मा जे श्रीकृष्ण भगवान तेनी संघाथे व्रजनी गोपीयोए काम बुद्धिए करीने प्रीति करी तो पण सर्वे भगवाननी मायाने तरी गइ ने पोते गुणातीत थइ ने निर्गुण एवुं जे भगवाननुं अक्षरधाम तेने पामीयुं, तेनुं कारण ए छे जे श्रीकृष्ण भगवान पोते साक्षात् पुरुषोत्तम गुणातीत दिव्य मूर्ति हता तो ते संघाथे गोपीयोए जाणे अजाणे प्रीति करी तो पण ते गोपीयो गुणातीत थइयुं अने भरतजीए दयाए करीने मृगलामां प्रीति करी तो पोते मृगलुं थया, माटे गमे तेवा मोटा होय तेनुं
पण कुसंगे करीने तो भुंडुंज थाय छे. (२) अने गमे तेवो पापी जीव होय ने तेजो सत्य २
स्वरूप एवा जे भगवान तेनो प्रसंग करे तो परम पवित्र थइने अभयपदने पामे अने जो श्रीकृष्ण भगवान पोते गुणातीत न होत तो एना भक्त जे गोपीयो ते गुणातीतपणाने न पामत ने जो गुणातीतपदने पामीयो तो श्रीकृष्ण भगवान गुणातीत कैवल्य दिव्य मूर्तिज छे अने वेदांति कहे छे जे, सर्वत्र ब्रह्म सभर भर्यो छे, त्यारे जेम गोपीयोए श्रीकृष्ण भगवानने विषे प्रीति करी तेमज सर्वे स्त्रीयो पोत पोताना धर्णीने विषे प्रीति करे छे तथा सर्वे पुरुष पोतानी स्त्रीयोने विषे प्रीति करे छे तो पण तेमने गोपीयोना जेवी प्राप्ति थाती नथी तेमने तो घोर नरकनी प्राप्ति थाय छे, माटे जे विधिनिषेध छे ते साचा छे पण खोटा नथी ने जे ए विधिनिषेधने खोटा करे छे तेतो नारकी थाय छे एम वार्ता
करीने श्रीजीमहाराज जय सच्चिदानंद कहीने पोताने उतारे पधार्या. (३) इति ३
वचनामृतम् ॥ ४२ ॥

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां ब्रह्मस्वरूपने विषे निर्विकल्प स्थिति थया विना जीव, माया ईश्वरादिकने मिथ्या कहे तथा विधिनिषेधने खोटा कहे तेने अधमने नास्तिक कह्या छे. (१) अने कुसंगने योगे भुंडुं थाय छे. [२] अने जेम श्रीकृष्णने प्रसंगे गोपीयो अभयपद पामी तेम अमारा प्रसंग थकी अभयपदने पामे छे अने नास्तिकने नरकनी प्राप्ति थाय छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (३) बाबतो छे.

१ प्र० ब्रह्मस्वरूपनो अर्थ शो हशे ? अने निर्विकल्प स्थितिवाळानां लक्षण शां हशे ?

१ उ० आ ठेकाणे ब्रह्मस्वरूप एटले श्रीजीमहाराजने जाणवा अने श्रीजीमहाराजने मूर्ति विना बीजुं कांइ देखे नहि तेने निर्विकल्पस्थितिवाळा जाणवा.

२ प्र० बीजी बाबतमां श्रीकृष्णने प्रसंगे गोपीयो अक्षरधामने पामी एम कह्युं ते श्रीकृष्ण कोने जाणवा अने अक्षरधाम कियुं जाणवुं ? अने श्रीकृष्णने गुणातीत कह्या ते गुणातीत केवी रीते जाणवा ?

२ उ० आ ठेकाणे मूळपुरुषने श्रीकृष्ण कह्या छे ने तेना गोलोक धामने अक्षरधाम कह्युं छे अने मायाना गुणथी पर छे, माटे गुणातीत कह्या छे.

३ प्र० गमे तेवा मोटानुं कुसंगे करीने मुंडुं थाय ते मोटो केवो, अने कुसंग ते शुं ?

३ उ० साधन दशावाळो उत्तम मुमुक्षु होय पण एकांतिक थयलो न होय एवा मोटाने कुसंग लागे ने स्त्रीधनादिक पदार्थने विषे मोह पामीने तेमां बंधाइ जाय, अने जे एकांतिक होय ते तो स्त्रीधनादिकने अति तुच्छ जाणीने तेमां प्रीति करेज नहि, अने शास्त्रने विषे कहेला विधिने खोटा करीने जीमहाराजनी आज्ञा न पाळे ते कुसंग छे अने तेनो संग ते कुसंग जाणवो.

४ प्र० त्रीजी बाबतमां पापी जीव अमारो प्रसंग करे तो परमपवित्र थइने अभयपदने पामे छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते प्रसंग केवी रीते जाणवो ?

४ उ० श्रीजीमहाराजने अंतर्यामी जाणीने आशरो करे ते प्रसंग कहेवाय, अने सत्संगमां आव्या पछी आज्ञामां रंचमात्र फेर पडे नहिं तो तेनां प्रथम करेलां पाप बळी जाय ने ते अभयपद एटले अक्षरधामने पामे छे अने सत्संगमां आव्या पछी आज्ञा लोपे तो कल्याण न थाय. ॥ ४२ ॥

संवत् १८७६ना महा शुदि ७ सातमने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर सांजने समे विराजमान हता अने माथे धोळी पाघ बांधी ने धोळी चादर ओढी हती ने धोळो खेस पहेर्यो हतो. ने पाघने विषे पीळा पुष्पना तोरा लटकता हता ने कंठने विषे पीळा पुष्पना हार पहेर्या हता ने बे काननी उपर पीळा पुष्पना गुच्छ खोस्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

ते समे श्रीजीमहाराज सर्वे भक्तजन उपर करुणानी दृष्टिए करीने सर्वे सामुं जोइने
१ बोल्या जे, सर्वे सांभळो एक प्रश्न पुछीए छइए जे, (१) श्रीमद्भागवत पुराणमां कह्युं छे जे, जे भगवानना भक्त होय ते चार प्रकारनी मुक्तिने नथी इच्छता अने बीजा पण जे जे भगवानना मोटा भक्त छे ते एम कहे छे जे, भगवानना भक्त होय ते चार प्रकारनी मुक्तिने नथी इच्छता ते चार प्रकारनी मुक्ति ते शुं ? तो एक तो भगवानना लोकमां रहेवुं अने बीजुं भगवानने समीपे रहेवुं अने त्रीजुं भगवानना सरखुं रूपने ऐश्वर्य पामवुं अने चोथुं भगवानना स्वरूपने विषे लीन थावुं, एवी रीते जे चार प्रकारनी मुक्ति छे तेने तो भगवाननो भक्त न इच्छे त्यारे ए शाने इच्छे ? ए प्रश्न छे तेनो उत्तर लेने जेवो आवडे तेवो ते करो. पछी सर्वे परमहंस उत्तर करवा लाग्या पण उत्तर थयो नहि. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ए प्रश्ननो उत्तर अमे करीए छइए जे जे भगवाननो भक्त थइने ए चार प्रकारनी मुक्तिनी इच्छा राखे तो ते सकाम भक्त कहेवाय ने जे चतुर्धा मुक्तिने न इच्छे ने केवळ भगवाननी सेवानेज इच्छे ते निष्काम भक्त

कहेवाय, ते श्रीमद्भागवतमां कह्युं छे जे ।। सालोक्यसार्ष्टि सामीप्य सारूप्यैकत्वमप्युत ।। दीयमानं न गृह्णंति विना मत्सेवनं जनाः ।। नेच्छन्ति सेवया पूर्णाः सालोक्यादि चतुष्टयम् ।। ए श्लोकनो अर्थ ए छे जे जे भगवानना निष्काम भक्त छे ते सेवा जे भगवाननी परिचर्या करवी ते जो ए चतुर्धा मुक्तिमां न होय तो एने इच्छेज नहि ने एक सेवानेज इच्छे अने एवा जे निष्काम भक्त तेमने भगवान पोतानी सेवामां राखे छे ने ए भक्त नथी इच्छता तो पण बळात्कारे भगवान एने पोताना ऐश्वर्य सुखने पमाडे छे ते कपिल देव भगवाने कह्युं छे जे, ।। अथो विभूतिं मम मायाविनस्तामैश्वर्यमष्टांगमनुप्रवृत्तम् । श्रियं भागवतीं चास्पृहयन्ति भद्रां परस्यमेतेऽश्नुवते तुलोके ।। अने ए निष्काम भक्तनेज गीतामां भगवाने ज्ञानी कह्यो छे ने जे सकाम भक्त छे तेने अर्थार्थी कह्यो छे, माटे भगवानना भक्तने भगवाननी सेवा विना बीजुं कांइ न इच्छवुं ने इच्छे तो एमां एटली काच्यप कहेवाय अने जो काच्यप होय तो निष्काम एवा जे भगवानना एकांतिक भक्त तेनो समागम करीने ए काच्यपने टाळवी. (१) इति वचनामृतम् ।।४३।। १

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्यं छे के चार प्रकारनी मुक्तिने इच्छे ते सकाम ने अर्थार्थी छे अने ते न इच्छे ने एक सेवानेज इच्छे ते निष्काम ने ज्ञानी छे अने अमारा एकांतिक भक्तनो समागम करीने ते काच्यप टाळवी (१) बाबत छे.

१ प्र० भगवानना स्वरूपमां लीन थावुं ते मुक्ति न इच्छवी एम कह्युं ते मुक्तिनी इच्छावाळा केवी रीते लीन थवा इच्छता हशे ते ना पाडी हशे, केमके (सा० ११ ना पहेला प्रश्नमां) अति प्रेमवाळा भक्त भगवाननी मूर्तिमां लीन थाय छे एम कह्युं छे, माटे ते कांइ समजातुं नथी ते कृपा करीने समजावो ?

१ उ० ते मुक्तिनी इच्छावाळा जळमां जळवत् अने अग्निमां अग्निवत् एक थइ जवा इच्छे छे तेनो निषेध कर्यो छे अने सेवाने एटले दासपणाने इच्छनारा निष्काम भक्त तो जळमां मीनवत् मूर्तिमान थका मूर्तिमां रहे छे पण एक थइ जता नथी. निष्काम भक्तने तो श्रीजीमहाराज पोतानी मूर्तिमां राखीने पोतानुं सुख ऐश्वर्य आपे छे, आ अनादिमुक्तनी स्थिति छे. अने परम एकांतिक जे मूर्तिने सन्मुख रह्या छे ते मुक्त पण दासत्व भक्तिवाळा छे, ने श्रीजीमहाराजना साधर्म्यपणाने पामेला छे.

२ प्र० निष्काम भक्तने ऐश्वर्य सुख पमाडे छे एम कह्युं ते कियां जाणवां ?

२ उ० काळ, कर्म, मायाथी रहितपणुं अने असंगी, निर्विकार, निर्लेपपणुं अने अनंत जीवोने मोक्ष करवापणुं, स्वतंत्रपणुं, सर्वज्ञपणुं अने श्रीजीमहाराजनी पेठेज चहाय ते करवापणुं इत्यादि ऐश्वर्य जाणवां अने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां सुख रह्यां छे ते सुख जाणवां.।।४३।।

संवत् १८७६ ना महा शुदि ८ अष्टमीने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ लिंबडाना वृक्ष हेठे ओटा मध्ये ढोलिया उपर आथमणे मुखारविंदे सवारना पहोरमां विराजमान हता, ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने ते फेंटाने एक आंटे करीने बोकानी वाळी हती ने ते पाघ उपर धोळा पुष्पनो हार विराजमान हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पूछ्यो जे, (१) भगवानने विषे स्नेह होय तेनुं शुं रूप छे ? पछी ब्रह्मानंदस्वामीए स्नेहनुं रूप करवा मांड्युं पण समाधान न थयुं. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, तमने तो स्नेहनी दिशज जडी नहि अने तमे जे पिंडब्रह्मांडथी निस्पृह रहेवुं तेने स्नेह कह्यो ए स्नेहनुं रूप नहि ए तो वैराग्यनुं रूप छे, अने स्नेह तो एनुं नाम जे भगवाननी मूर्तिनी अखंड स्मृति रहे एनुं नाम स्नेह कहीए ने जे भक्तने परिपूर्ण भगवानने विषे स्नेह होय तेने एक भगवान विना बीजो संकल्पज न थाय अने जेटलो भगवान विना बीजो घाट थाय छे तेटलो तेना स्नेहमां फेर छे अने जेने परिपूर्ण भगवानमां स्नेह होय ने तेने जो जाणे अजाणे भगवाननी मूर्ति विना बीजो कांइक घाट थाय तो, जेम पंचामृत भोजन जमतो होय तेमां कोइ कांकरा तथा धुळनो खोबो भरीने नाखे ने जेवुं वसमुं लागे अथवा कपाळमां बळबळ्तो डाम दे ने ते जेवो वसमो लागे तेवो भगवान विना बीजो घाट थाय ते वसमो लागे, एवी रीते जेने वर्ततुं होय तेने भगवानने विषे प्रीति छे एम जाणवुं ते सर्वे पोत पोताना हृदामां तपासी जुओ तो, जेने जेवी प्रीति हशे तेने तेवी जणाइ आवशे. (१) १

२ पछी ब्रह्मानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (२) एवी दृढ प्रीति भगवानने विषे थाय तेनुं शुं साधन छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, सत्पुरुषनो जे प्रसंग एज परमेश्वरने विषे दृढ प्रीति थवानुं कारण छे. (२) २

३ त्यारे सोमलोखाचर बोल्या जे, (३) एवो प्रसंगतो अतिशे करीए छइए पण एवी दृढ प्रीति केम थाती नथी ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, प्रसंग तो करो छो पण अर्धो अमारो प्रसंग करो छो, ने अर्धो जगत्‌नो प्रसंग करो छो, ते माटे भगवानने विषे दृढ प्रीति थाती नथी. (३) ३

४ पछी गाम वसोना विप्रवालो प्रभु तेणे प्रश्न पूछ्यो जे, (४) हे महाराज ! देहने देहना संबंधीने विषे अहं ममत्वपणाना घाट थाय छे ते केम टळे ? त्यारे श्रीजीमहाराज

बोल्या जे, ए तो ए जीवने विपरीत भावना थइ छे जे पोताने देहथी पृथक् जे जीवात्मा ते रूपे नथी मानतो ने देहरूपे माने छे ने ए जीवात्माने विषे देह तो केवी रीते वळ्योा छे तो, जेम कोइक पुरुष होय तेणे दरजीने घेर जइने डगलो सीवाडीने पहेर्यो, त्यारे ते एम माने जे, दरजी ते मारो बाप छे ने दरजण ते मारी मा छे एम जे माने ते मूर्ख कहेवाय, तेम आ जीवने आ देहरूप जे डगलो ते क्यारेक तो ब्राह्मण ने ब्राह्मणी थकी उत्पन्न थाय छे अने क्यारेक तो नीच जातिमांथी उत्पन्न थाय छे तथा चोराशी लाख जात्य थकी देह उत्पन्न थाय छे. ते देहने विषे पोतापणुं माने ने ते देहना मावापने पोतानां मावाप माने ते मूर्ख कहेवाय ने तेने पशु जेवो जाणवो अने चोराशी लाख जातमां जे पोतानी मा, बोन, दिकरीओ ने स्त्रियो छे ते पतिव्रतानो धर्म एके पाळती नथी, माटे जे एवा सगपणने साचुं माने छे तेने अहं ममत्वना घाट केम टळशे ? अने आवी रीतनी समझण विना जन्मभूमिनी जे देश वासना ते टळवी घणी कठण छे अने ज्यां सुधी देहने पोतानुं रूप माने छे, त्यां सुधी एनी सर्वे समझण वृथा छे अने ज्यां सुधी वर्णनुं के आश्रमनुं मान लइने फरे छे, त्यां सुधी एने विषे साधुपणुं आवतुं नथी, माटे देहने देहना संबंधीने विषे अहंममत्वनो त्याग करीने ने पोताना आत्माने ब्रह्मरूप मानीने, सर्वे वासनानो त्याग करीने, स्वधर्ममां रह्यो थको जे भगवानने भजे छे ते साधु कहेवाय छे. अने जेने एवुं साधुपणुं आव्युं तेने ने पुरुषोत्तम भगवानने कांइ छेटुं रहेतुं नथी अने बीजुं सर्वे थाय पण एवी साधुता आववी तो घणी कठण छे ने एवो साधु तो हुं छुं जे मारे वर्णाश्रमनुं लेश मात्र पण मान नथी, एवी रीते श्रीजीमहाराज बोल्या ते तो, भक्तने शिक्षाने अर्थे छे एम जाणवुं ने पोते तो साक्षात् पुरुषोत्तम नारायण छे. (४) ४

इति वचनामृतम् ॥ ४४ ॥

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (४) छे. तेमां पहेलामां अमारी मूर्तिनी अखंड स्मृति रहे ते स्नेहनुं रूप छे. (१) बीजामां सत्पुरुषने प्रसंगे करीने अमारे विषे दृढ प्रीति थाय छे. (२) त्रीजामां जगतनो प्रसंग करे तो अमारे विषे एवी प्रीति थाय नहि. (३) चोथामां देहमांथी ने संबंधीमांथी अहं ममत्व टाळीने, पोताना आत्माने अमारा तेजरूप जे अक्षर-ब्रह्म ते रूप मानीने, वासना टाळीने, स्वधर्ममां रहीने अमने भजे त्यारे साधु थवाय एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (४) वाक्यो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां ब्रह्मानंदस्वामीए स्नेहनुं रूप कर्युं ते ब्रह्मानंदस्वामी तो अनादि मुक्त हता तेमणे स्नेहनुं रूप वैराग्यना रूपमां केम कर्युं हशे ?

१ उ० आ प्रश्ननो उत्तर ब्रह्मानंदस्वामीने श्रीजीमहाराज पासे कराववो हतो ने श्रीजीमहाराजने स्वामी पासे कराववो हतो ते श्रीजीमहाराजे आग्रह करीने स्वामी पासे कराव्यो, तेथी

ब्रह्मानंदस्वामीए श्रीजीमहाराज पासे उत्तर करावबा सारु यथार्थ उत्तर न कर्यो. त्यारे श्रीजीमहाराजे विनोद कर्यो जे, तमने तो दिशज जडी नहि पण ब्रह्मानंदस्वामी, गोपाळानंदस्वामी, मुक्तानंदस्वामी नित्यानंदस्वामी आदि सर्वे अनादिमुक्त हता ने श्रीजीमहाराजना साधर्म्यपणाने पामेला हता एमनुं कांइ पण अजाण्युं नहोतुं अने एमणे जे जे प्रश्न पुछ्यां छे ते बीजा जीवोना समासने अर्थे छे.

२ प्र० बीजा प्रश्नमां सत्पुरुषने प्रसंगे श्रीजीमां दृढ प्रीति थाय एम कह्युं ते सत्पुरुष केवा जाणवा ?

२ उ० आ ठेकाणे श्रीजीनी मूर्तिमां निमग्न एवा सिद्धमुक्तने सत्पुरुष कह्या छे.

३ प्र० त्रीजा प्रश्नमां जगत्‌नो प्रसंग कह्यो ते जगत् शुं जाणवुं ?

३ उ० आ ठेकाणे देहने देहना संबंधीने जगत कह्युं छे.

४ प्र० चोथा प्रश्नमां स्वधर्ममां रहीने श्रीजीने भजे एम कह्युं ते स्वधर्म कयो जाणवो ?

४ उ० देहनो ने आत्मानो जे धर्म ते स्वधर्म जाणवो ते देहना धर्म जे स्थूळ देहे नियम पाळवा अने सूक्ष्मदेहे आज्ञाविरुद्ध संकल्प थवा देवा नहि अने आत्माने विषे श्रीजीमहाराजनी मूर्ति अखंड धारी राखवी ते आत्मानो धर्म छे.

५ प्र० श्रीजीमहाराज पोतेज भगवान छे तेमणे एवो साधु हुं छुं एम केम कह्युं हशे ?

५ उ० वर्ण जे ब्राह्मणादिक अने आश्रम जे ब्रह्मचर्यादिक तेनुं अभिमान मुकीने तथा मायिक विषयनी तथा ऐश्वर्यनी वासना मात्र टाळीने, ब्रह्म जे श्रीजीमहाराजनुं तेज ते रूप थइने, श्रीजीमहाराजनुं अखंड चिंतवन करे ते साधुने श्रीजीमहाराजे पोता तुल्य कह्यो छे, माटे एवो साधु हुं छुं एम कह्युं ते जेवा अमे छीए एवोज ए साधु छे एम कह्युं छे. ॥४४॥

संवत् १८७६ ना महा शुदि १० दशमने दिवस सांझने समे स्वामी श्रीसहजानंदजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ ओटा उपर दक्षिणादे मुखारविंदे विराजमान हता अने धोळी चादर ओढी हती ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने माथे धोळी पाघ बांधी हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१　पछी गोपाळानंदस्वामीए पूछयुं जे, (१) हे महाराज ! केटलाक वेदांती एम कहे छे जे, भगवानने आकार नथी अने तेवाज प्रतिपादननी श्रुतिओने भणे छे अने केटलाक जे नारद शुक सनकादिक सरखा भगवानना भक्त छे ते तो भगवाननुं साकारपणुं प्रतिपादन करे छे ते ए बेमांथी कोण साचा छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जे भगवान पुरुषोत्तम छे ते तो सदा साकारज छे ने महा तेजोमय मूर्ति छे अने सर्वत्र पूर्ण एवुं सच्चिदानंद ब्रह्म छे ते तो मूर्तिमान एवा जे पुरुषोत्तम भगवान तेनुं तेज छे अने श्रुतिए पण एम कह्युं छे जे, ते भगवान माया साम्हुं जोता हवा अने ज्यारे जुवे

त्यारे तेने शुं एकली आंख्यज होय ? हाथ पग पण होय, माटे साकाररूपनुं प्रतिपादन थयुं अने वळी जेम समग्र जळ छे तेना जीवरूप जे वरूण ते पोताना लोकने विषे साकार छे ने जळ निराकार छे ने जेम अग्निनी जे ज्वाळा छे ते निराकार छे ने तेना देवता जे अग्नि ते अग्नि लोकने विषे साकार छे ने जेम समग्र तडको ते निराकार छे ने सूर्यना मंडळने विषे जे सूर्यदेव छे ते साकार छे, तेम सच्चिदानंद जे ब्रह्म ते निराकार छे अने पुरुषोत्तम जे भगवान ते साकार छे अने सर्वत्र पूर्ण एवुं जे सच्चिदानंद ब्रह्म ते पुरुषोत्तम भगवाननुं तेज छे अने कोइ एम कहे जे श्रुतिमां एम कह्युं छे जे, परमेश्वर तो कर चरणादिके रहित छे ने सर्वत्र पूर्ण छे तो ए जे श्रुतिए कर चरणादिकनो निषेध कर्यो छे ते तो मायिक कर चरणादिकनो निषेध कर्यो छे अने भगवाननो आकार छे ते तो दिव्य छे पण मायिक नथी; अने जेम सूर्यनुं तेज छे तेने आगळ दर्पण धरीए, त्यारे ते किरणनुं जे रूप ते सूर्यना जेवुंज भासे छे, तेम पुरुषोत्तम भगवान मूर्तिमान छे तेनी किरणरूप जे सर्वत्र व्यापक सच्चिदानंद ब्रह्म तेनुं रूप पण दर्पण जेवुं जेनुं निर्मळ अंतःकरण थयुं होय तेने पुरुषोत्तम भगवानना जेवुं साकारज भासे छे, माटे भगवान पुरुषोत्तम तो सदा साकारज छे पण निराकार नथी ने जे निराकार कहे छे ते तो समझता नथी.(१) १

इति वचनामृतम् ॥४५॥

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे, तेमां अमे महा तेजोमय ने सदा साकार मूर्ति छीए अने सर्वत्र पूर्ण ने सर्वत्र व्यापक एवुं सच्चिदानंद ब्रह्म ते अमारुं तेज छे ते तेज द्वारा अमे सर्वत्र व्यापक छीए ने ते तेज वस्तुताए निराकार होवा छतां पण निर्मळ अंतःकरणवाळाने साकार जेवुं भासे छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (१) बाबत छे.

१ प्र० आमां श्री गोपाळानंदस्वामीए वेदांतीनी समजणनो प्रश्न पूछ्यो छे ते वेदांती जेने ब्रह्म कहे छे ते तो मूळ पुरुषनो प्रकाश छे तेनेज ब्रह्म समजे छे, माटे आमां सच्चिदानंद तेज कह्युं ते मूळ पुरुषनुं समजाय छे ने मूळपुरुषनेज पुरुषोत्तम समजाय छे माटे ते जेम होय तेम कृपा करीने समजावो.

१ उ० श्री गोपाळानंदस्वामीए तो, भक्त भगवानने साकार समजे छे, ने वेदांती निराकार कहे छे, पण परब्रह्म पुरुषोत्तम जे तमे ते तमने केवा समजवा, एवा भावथी पूछ्युं छे, तेमने अमे सदा साकार छीए ने सच्चिदानंद ब्रह्म ते अमारो प्रकाश छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे.

२ प्र० (लो० १८/६ मां) श्रीजीमहाराजने सच्चिदानंदरूप कह्या छे अने (आमां तथा पत्थारानी बीजी बाबतमां तथा का० ७ ना चोथा प्रश्नमां) श्रीजीमहाराजना तेजने सच्चिदानंद नामे कहेल छे अने (प्र० ७/६ मां) मूर्तिमान मूळ अक्षर ब्रह्मने सच्चिदानंद

नामे कह्या छे अने (सा० ५ ना ३/इ बीजा प्रश्नमां) ईश्वरना व्यतिरेक स्वरूपने सच्चिदानंद नामे कहेल छे ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० ईश्वर जे पुरुष तथा ब्रह्म तथा अक्षर तथा श्रीजीमहाराज ते सर्वेने तथा तेमना तेजने सच्चिदानंद शब्दे करीने कहेवाय छे पण ज्यां जेनो प्रसंग होय त्यां तेने सच्चिदानंद नामे कह्या होय, पण जेम तारा, चंद्र ने सूर्यना तेजमां तथा बिंबमां ने सामर्थीमां भेद छे, तेम पुरुष, ब्रह्म, अक्षर ने पुरुषोत्तम तेमने विषे सुख, सामर्थी ने प्रकाशमां भेद घणो छे पण वस्तु सत्य अने चैतन्य छे, माटे सच्चिदानंद नामे कह्या छे अने अक्षरकोटी, ब्रह्मकोटी ने पुरुषरूप जे ईश्वरकोटी ते सर्व चैतन्य मूर्तियो छे पण देहदेही भाव नथी, माटे ए सर्वे दिव्य साकार छे अने मायाकोटी ने जीवकोटी तेने विषे देहदेही भाव छे अने एमना देहनुं परिणाम छे, ने ते निराकार छे ते साकारनी उपासना तथा ध्यानथी तद्भावने पामे छे. अने श्रीजीमहाराज तथा तेमना मुक्त तो सदा साकार छे ते (प्र० -३७/इ मां) आत्यंतिक प्रलयने अंते अमे तथा अमारा मुक्त सदा साकार छीए. (-६६/इ मां) मूळ अक्षरथी पर अमारा प्रकाशरूप अक्षरधामने विषे अनंतकोटी मुक्ते सहित सदा मूर्तिमान छीए अने अमारा तेज द्वारे सर्वेना आत्मा छीए. (७१ ना पांचमा प्रश्नमां) निराकार एवुं जे अक्षरब्रह्म तेथी पर ने सदा साकार छीए. (का० ७ ना ४/प चोथा प्रश्नमां) जेवा अमारा तेजरूप अक्षरधामने विषे सदाय दिव्यरूपे करीने विराजमान छीए तेवाज आ प्रत्यक्ष छीए, (८/इ मां) आ अमे मनुष्यरूपे आंही प्रत्यक्ष विचरीए छीए एज अमारुं मूळ स्वरूप छे, (लो० १ ना आठमा प्रश्नमां) गोलोक, ब्रह्मपुरादिक धाम तथा अनंत कोटीमुक्त ते सर्वेना स्वामी छीए ने जीवोना कल्याणने अर्थे सर्वेने दृष्टिगोचर थया छीए, (७ ना ३/ट त्रीजा प्रश्नमां) प्रकृति पुरुष, अक्षर तेथी पर ने सर्वेना कारण ने सर्वेना आधार एवा जे अमे ते सदा साकार मूर्ति छीए, (-३४/इ मां) सर्वेथी पर अमारा तेजना समूहने विषे दिव्यमूर्ति थका अनंतकोटी मुक्ते सहित सदाय विराजमान छीए, (-१८/इ मां) अमे सच्चिदानंद तेजोमय मूर्ति छीए अने सर्वेना नियंता ने अंतर्यामी छीए, (पं० १/इ मां) अक्षरब्रह्म जे अमारा अंगनो प्रकाश तेमां अमे सदा साकार छीए, (७/इ मां) अमारुं स्वरूप अमारा तेजरूप धाममां तेजोमय छे तेवुंज मनुष्याकार पृथ्वी उपर छे तथा बीजी बाबतमां आत्यंतिक प्रलयने अंते अमे अक्षरधाममां सदा साकार ने दिव्य तेजोमय छीए तेवाने तेवाज पृथ्वी उपर छीए, (म० ३/इ मां) ब्रह्म, सर्वेना कारण आधार ने अंतर्यामी शक्तिए करीने व्यापक छे ने अमे ए ब्रह्मना पण कारणने आधार छीए. (१० ना पहेला प्रश्नमां) अमे सदा साकार मूर्तिमान छीए. ने ब्रह्मरूप जे अमारी शक्ति तेणे करीने सर्वेने विषे व्यापक छीए अने ए सर्वेथी जुदा मूर्तिमान छीए अने ए ब्रह्म ते अमारी किरण छे [-२३/इ मां] अमारा तेजरूप अक्षरधाममां अमे सदा मूर्तिमान छीए एज आ प्रत्यक्ष प्रमाण विचरीए छीए [-३१/इ मां] अक्षरधाममां अमे सदा साकार छीए (व० २/इ मां) अमे सदा मूर्तिमान ने

सर्वेना कर्ता छीए ने अमने जे अकर्ता तथा निराकार कहे ते अमारो द्रोही छे (१३ ना बीजा प्रश्नमां) अमे मूर्तिमान थका सर्वेमां व्यापक छीए, (छे० ७ ना १/१ पहेला प्रश्नमां) अमे अमारा तेजरूप ब्रह्मपुर धामने विषे सदाय साकार मूर्तिथका अमारा मुक्ते सहित विराजमान छीए तेज आ प्रत्यक्ष छीए, [२० मां] चैतन्य तेजना राशिने मध्ये मूर्तिमान सदा विराजमान छीए. (३१ मां) ब्रह्मरूप तेजोमय अमारा धाममां छीए ते आ प्रत्यक्ष मनुष्याकार छीए. (३५ ना ५/१ पांचमा प्रश्नमां) अमारा तेजरूप अक्षरधामने विषे सदा साकार छीए तेज आ प्रत्यक्ष छीए ने सर्वेना कर्ता छीए, [३७ मां] प्रकृतिमांथी थएला जे आकार ते सर्वेथी श्रेष्ठ एवो अमारो सदा दिव्याकार छे, (३८ ना पहेला प्रश्नमां) अमे अमारा धाममां सदा द्विभुज मनुष्याकार छीए तेवाने तेवाज पृथ्वी उपर छीए एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे माटे श्रीजीमहाराज तथा तेमना मुक्त ते सदा साकार, दिव्य, तेजोमय छे तेवाने तेवाज पृथ्वी उपर मनुष्यरूपे देखाय छे, त्यां हरि वाक्य सुधासिंधुमां तरंग (९ नवमामां) श्लोकः ॥ गोलोकाधिपतिर्यो हि सएवास्त्यऽत्रनेतरः ॥ स्वतंत्रः स्वेच्छयैवाऽसौ नराकारेण दृश्यते ॥ १० ॥ वेषांतरं धृतवतो नटस्येवास्यसर्वथा ॥ स्वरूपभेदो नास्त्येव ज्ञेयमित्थं मनीपिभिः ॥ ११ ॥ अर्थ—गोलोकादिक धामना पति छे तेज भगवान आ स्थळने विषे स्वतंत्रपणे पोतानी इच्छाए मनुष्याकारे आ प्रत्यक्ष देखाय छे, ते तो वेशांतरने धरतो एवो जे नट तेमां जेम भेद नथी तेमज धाममां रहेलुं जे स्वरूप अने आमां (प्रत्यक्ष जणाता जे अमे ते अमारामां) भेद नथी एम बुद्धिवाळा पुरुषोए जाणवुं. ॥ १० ॥ ११ ॥ अतः प्रत्यक्षमासाद्य कृष्णंतदितरत् क्वचित ॥ वांच्छनीयं नवैवस्तु कार्या निष्ठादृढाऽत्र च ॥ १२ ॥ अर्थ—एज हेतु माटे आ प्रत्यक्ष कृष्ण (जे अमे ते अमने) ने पामीने ते कृष्ण विना (अमारा विना) बीजुं कांई इच्छवुं नहि. अमारे विषेज दृढ निष्ठा करवी. तरंग (३७) साक्षात् कृष्णस्य तत्सेवानिरतायेऽत्रपुरुषाः ॥ भवंतियादृशाः सर्वे लय आत्यंतिकेऽपिते ॥ १६ ॥ तादृशाएवसाकारा वर्त्ततेनत्वलिंगिनः ॥ एवंयोवेदवैसम्यक् सभक्तोनिर्भयः सदा ॥ १७ ॥ अर्थ—आ प्रत्यक्ष श्री कृष्णनी सेवाने विषे प्रीतिवाळा भक्तो आंही जेम साकार मूर्तिमान छे, तेवाज आत्यंतिक प्रलयने अंते अक्षरधामने विषे सदा दिव्य साकार रहे छे, पण निराकार नथी एम जे भक्त सर्व प्रकारे जाणे छे, ते भक्त सदाय निर्भय छे, अर्थात् तेने कल्याणमां अधुरापणुं रहेतुं नथी. ॥ १६–१७ ॥ तरंग [४५] तमुवाचहरिः साधो भगवान् साकृतिःसदा ॥ भूरि तेजो दिव्यमूर्तिरस्तीत्येवमतं हिसत ॥ ६ ॥ सच्चिदानंदरूपं यत्पूर्णं ब्रह्मास्ति सर्वतः ॥ तेजस्तस्यैवतज्ज्ञेयं निराकार मनावृतम् ॥ ७ ॥ ययाचार्कोस्ति साकार आतपोऽस्ति निराकृतिः ॥ तथा कृष्णोस्ति साकारस्तेजो ब्रह्म निराकृतिः ॥ १७ ॥ अर्थ— श्रीगोपाळानंदस्वामीने श्रीजीमहाराज कहेता हवा जे भगवान दिव्यमूर्ति अति तेजोमय

ने सदा साकार छे ते मत निश्चय सत्य छे (६) अने सत्चित्ने आनंदरूप सर्वत्र पूर्ण निराकारने आवरणे रहित एवुं जे ब्रह्म ते भगवाननुं तेज छे [७] जेम सूर्य साकार छे ने तेनो प्रकाश निराकार छे तेवी रीते कृष्ण साकार छे ने तेज जे ब्रह्म ते निराकार छे [१७] तरंग [६३] सकृष्णो महसास्वेनान्वितोऽस्ति पुरुषादिषु ॥ [५२] जेना सेवकना एक एक रोमने विषे कोटानकोटी सूर्यनो प्रकाश छे तो ते भगवानना अंगनुं तेज तो कोनाथी वर्णन करी शकाय ? ते कृष्ण पोताना तेजे करीने पुरुष, काळ, ब्रह्म, अक्षर ए आदिकने विषे अन्वयपणे करीने रह्या छे (५२) तरंग (६६) मूर्तः सूर्यः स्वतेजोभि र्जगद्व्याप्यास्तितत्पृथक् ॥ यथा तथा सोपिमूर्तिः कांत्या व्याप्याऽस्ति तत्पृथक् ॥ ११ ॥ निराधारं न तेजःस्यादिति सर्वत्र दृश्यते ॥ तदंगकांतिस्तेजोतो यद्ब्रह्मेत्युच्यतेऽक्षरम् ॥ १२ ॥ दिव्य विग्रह एवाऽस्ति हरिस्तत्संगतस्तत: ॥ दिव्यतांयांतिबहव: प्राकृता अपि देहिन: ॥१७॥ अतो नराकृति रपि कृष्णोऽ स्त्येवाऽ क्षरात्पर: ॥ अमायिकाकृति दिव्य रूपइत्यऽस्ति सन्मतम् ॥२२॥ अर्थ—मूर्तिमान सूर्य पोताना प्रकाशे करीने जगतमां व्यापीने जेम रहेल छे ने तेथी मूर्तिमान जुदा छे तेम पोताना धामने विषे मूर्तिमान रह्या थका कान्तिए करीने सर्वत्र व्यापक छे तोपण तेथी व्यतिरेक कहेतां मूर्तिमान जुदा छे, [एम तमे अमने जाणो.] ॥ ११ ॥ अने तेज जे ते निराधार नथी रहेतुं ए प्रकारे सर्व स्थळने विषे देखाय छे एज हेतु माटे भगवानना अंगनी कान्ति (अमारी मूर्तिनो प्रकाश) जे तेज ते अक्षर ब्रह्म नामे कह्युं छे. ॥१२॥ हरि दिव्य स्वरूप छे एम भगवानना संतना समागमथी जाणीने घणा प्राकृत मनुष्यो ते पण दिव्यभावने पामी जाय छे अर्थात् भगवानने ध्याने करीने साकार मूर्तिमान थाय छे. ॥१७॥ एज हेतु माटे मनुष्य जेवा जणाता छतां पण कृष्ण (आ प्रत्यक्ष भगवान) अक्षर थकी पर छे अने मायिक आकृतिए रहित अने दिव्य मूर्तिमान छे ए प्रकारनो सत्पुरुषनो मत छे ॥२२॥ तरंग [७१] साकारमेवकृष्णाख्यं ब्रह्मास्त्यभिमतंहिन: ॥ नराकृतेस्तस्यलब्ध्या परंनि:श्रेयसंभवेत् ॥ १७ ॥ नृत्वदिव्यत्वयोर्भेदस्तेषां नास्त्येव सर्वथा ॥ यत्तानेव समाधिस्था दिव्य रूपान्विचक्षते ॥ ३० ॥ कृष्ण छे नाम जेनुं एवुं जे ब्रह्म ते साकारज छे ए प्रकारे अमारो मत छे, ने मनुष्याकृति एवा भगवान तेने पामीने परम कल्याण थाय छे. ॥१७॥ अने भगवानने मुक्तना मनुष्य भावने दिव्य भावमां सर्व प्रकारे भेद नथी, केम जे समाधिवाळा भक्तो आ मनुष्यरूपे विचरता एवा भगवान तथा मुक्तोने दिव्यरूपे देखे छे ॥ ३० ॥ तरंग [१०३] आत्यंतिको लयोयर्हि जायते तर्हि लीयते ॥ सह स्वकार्यैः प्रकृतिः पुरुषे सोपिचाक्षरे ॥ २८ ॥ तदैकं सच्चिदानंद रूपं तेजः प्रकाशते ॥ ब्रह्माख्येतत्र भगवान् राजतेपुरुषोत्तमः ॥ २९ ॥ दिव्यमूर्तिः कृष्णसंज्ञो दिव्यवासो विभूषणः ॥ सेव्यमानो महामुक्तैः ब्रह्मभूतैः सहस्रशः ॥३०॥

भूत्वानराकृतिर्भूमौ चरत्यद्भुतचेष्टितः ॥ २२ ॥ आत्यंतिक प्रलय ज्यारे थाय छे, त्यारे प्रकृति पोताना कार्ये सहित पुरुषने विषे लीन थाय छे, अने ते पुरुष अक्षरने विषे लय पामे छे. ॥२८॥ ते समयमां सत्चित् ने आनंदरूप ब्रह्मने विषे पुरुषोत्तम भगवान रहे छे. ॥ २९ ॥ ब्रह्मरूप अनंत महामुक्त तेमणे सेवनने कर्या ने दिव्य वस्त्र आभूषणने धारण करी रह्या एवा दिव्यमूर्तिमान भगवान जे ते कृपाए करीने मनुष्यना जेवी आकृति धारण करीने आश्चर्यकारी चरित्रने करता छता आ पृथ्वी उपर विचरे छे. ॥ ३०॥ ॥३२॥ तरंग (१२१) ॥ तेजोविग्रहतासाम्याचंद्रताराचयद्यपि ॥ तुल्याइव समीक्ष्यंते तथाप्यस्त्येवतद्भिदा ॥ २७ ॥ अर्थ—तेजोमय देहे करीने सरखापणुं ए हेतु माटे तारा अने चंद्रमा जो पण तुल्य होय ने शुं ? एम देखाय छे तो पण तेमां अति भेद छे तेमज अमारे विषे ने मुक्तने विषे भेद छे. ॥ २७ ॥ तरंग (१२२) ॥सदामंगलरूपोहि श्रीकृष्णोभगवान् स्वयम् ॥ अवतारावतारित्व भेदोनैवात्रविद्यते ॥ २४ ॥ दिव्यसिंहासनारूढोऽनंतमुक्तगणैर्वृत्तः ॥ अति तेजस्वि दिव्यांगो दिव्यवासो विभूषणः ॥ २५ ॥ अर्थ—दिव्य सिंहासन उपर विराजमानने दिव्य छे अंग जेमनां अति तेजस्वी अने दिव्य वस्त्राभूषणे युक्त ने अनंत मुक्तना जे समूह तेणे वींटाएला ने सदा मंगळमूर्ति एवा प्रत्यक्ष श्री कृष्ण भगवान छे [अमे छीए] आमां अवतार अवतारी एवो भेद नथी. ॥२४॥२५॥ तरंग. [१२६] ॥ सच्चिदानंदरूपोति लावण्यो दिव्य विग्रहः ॥ अप्राकृतेंद्रियो दिव्य वासो लंकार मंडितः ॥२३॥ सोऽसौकृष्णः सदैवास्ते द्विभुजोऽति मनोहरः ॥२८॥ अर्थ—अक्षरधामने विषे सत्चित् ने आनंदरूप एवा अने अति सुंदर दिव्य छे देह जेमनो, अने अप्राकृत छे इंद्रियो जेमनां, कहेतां दिव्य साकारमूर्ति अने दिव्य एवा वस्त्रालंकारे युक्त; ॥२३॥ तेज आ प्रत्यक्ष प्रमाण कृष्ण सदाय अति मनोहर द्विभुज एवा सता रहेला छे. ॥५८॥ तरंग [१२७] ॥ सच्चिदानंदरूपंयद्ब्रह्मनिर्गुणमक्षरम् ॥ अंगप्रकाशस्तत्त्वस्यथामवेत्युक्तमस्तिहि ॥ ११ ॥ अर्थ—सत्चित् आनंद छे रूप जेनुं एवुं अने निर्गुण एवुं जे अक्षरब्रह्म ते तो आ प्रत्यक्ष प्रमाण श्री स्वामिनारायण भगवान जे अमे ते अमारा अंगनो प्रकाश छे, अने तेने धाम एवे नामे पण कहेलुं छे. ॥ ११ ॥ तरंग [१३३] ॥ तथैवब्राकृतिरपि दिव्यमूर्तिः स्वयंप्रभुः॥ अस्तीतितत्त्वतोज्ञेयः प्रत्यक्षः पुरुषोत्तमः॥११॥ अतः साक्षाद्धरेरूपं रूपंयच्चाक्षरस्थितम् ॥ तयोर्येनविदुर्भेदं ज्ञानभक्तास्त उत्तमाः॥४७॥ अर्थ—जे प्रकारे अक्षरधामने विषे दिव्य मूर्तिमान छे, तेज प्रकारे मनुष्याकृति आ प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवान दिव्य मूर्तिमान छे एम यथार्थपणे करीने जाणवा. ॥ ११ ॥ एज हेतु माटे आ प्रत्यक्ष प्रमाण एवा हरि जे अमे ते अमारां रूपमां ने अक्षरधाममां रह्युं जे रूप ते बेमां जे भेद न जाणे ते ज्ञानी ने उत्तम भक्त छे. ॥ ४७ ॥ तरंग (१४६) ॥ यस्मिंस्तेजसितद्रूपं भवत्येकरसेसिते ॥ आत्मब्रह्माक्षराधाभि स्तदाख्याभिः प्रकीर्त्यते ॥

॥ ३० ॥ ॥ यस्तत्रभगवान् साक्षात्सपरब्रह्मसंज्ञकः ॥ आत्मतत्त्वाभिधश्चासौ पुरुषोत्तम-उच्यते ॥३१॥ अर्थ—एकरस श्वेत तेज तेने विषे भगवानतुं स्वरूप रह्युं छे, ते तेजने आत्मा, ब्रह्म ने अक्षर ए नामे कहेलुं छे, अने ते तेजने विषे परब्रह्म साक्षात् पुरुषोत्तम एवा जे आ भगवान ते जे ते आत्मतत्त्व एवे नामे तथा परब्रह्म ने पुरुषोत्तम एवे नामे कह्या छे. ॥ ३० ॥ ३१ ॥ तरंग (१८३) ॥ तादात्म्यं तेन संप्राप्य निषेवेकृष्णमेवहि ॥ तेजोमयेऽक्षरे तस्मिन् धाम्नि दिव्यतनुमप्रभुम् ॥५॥ अर्थ—ते ब्रह्मना संघाथे तदात्मकभावने पामीने, तेजोमय एवुं ते अक्षरधाम तेने विषे दिव्य मूर्तिमान भगवान जे कृष्ण तेमनुं सेवन करुं छुं एम पोताने मिषे भक्तजनने शिखववाने वास्ते श्रीजीमहाराजे ध्याननी रीत बतावी छे. ॥ ५ ॥ तरंग (१९७) ॥ ब्रह्मधाम्निहरिः साक्षात् महाराजाधिराजवत् ॥ वर्त्तते पूज्यमानांघ्रिर्नैकब्रह्मांडनायकैः ॥ १४ ॥ तत्रस्थएवव्याप्नोति ब्रह्मांडानि स्वशक्तिभिः गगनस्थो यथाभास्वान् देशान् सर्वान्मरीचिभिः ॥१६॥ अर्थ—ब्रह्मधामने विषे अनंत ब्रह्मांडना अधिपतियोए पूज्यां छे चरणकमळ जेमनां एवा आ साक्षात् श्रीहरि ते महाराजाधिराजपणे वर्ते छे. ॥ १४ ॥ जेम आकाशमां रहेलो सुर्य पोताना किरणोवडे सर्व देशोमां व्यापे छे तेम अक्षरधाममां रह्या थका आ भगवान पोतानी शक्तिवडे ब्रह्मांडोमां व्यापीने रहे छे. ॥ १६ ॥ तरंग (२१३) ॥ ब्रह्मतत्कृष्णएवोक्त एकदेशगतोपिसः ॥ सर्वत्रव्यापकोस्त्येव स्वशक्त्या तेजसाऽर्कवत् ॥ १९ ॥ अर्थ—ब्रह्म ते आ प्रत्यक्ष श्रीकृष्णज छे ते एक देशने विषे रह्या छे, तो पण पोतानी शक्तिरूप जे तेज तेणे करीने सर्वत्र व्यापक छे. जेम सूर्य पोतानी शक्ति जे तेज तेणे करीने सर्वत्र व्यापक छे तेम. ॥ १९ ॥ तरंग (२४१) ॥ योब्रह्म धाम्नि भगवान् सदाऽस्तेदिव्यविग्रहः ॥ सएवसाक्षात् कृष्णोस्ति नराकारो धरातले ॥ ९ ॥ अर्थ—ब्रह्मधाम जे पोताना तेजरूप अक्षरधाम तेने विषे जे भगवान सदाय दिव्य मूर्तिमान विराजमान छे तेज भगवान साक्षात् कृष्ण (आ श्रीजीमहाराज) पृथ्वी उपर विराजमान छे. ॥ ९ ॥ तरंग (२६६) ॥ सदाकृष्णोस्ति साकारो बृहद्धाम्न्यतितेजसि॥ योंतर्यामी च सर्वेषां सर्वकारण कारणम् ॥१४॥ अनेक कोटि ब्रह्मांड महाराजश्च निर्गुणः॥ दिव्यानंदमयाकारः प्रत्यक्षोऽस्ति सर्वहरिः ॥१५॥ अर्थ—अति तेजोमय एवुं पोतानुं तेजरूप जे ब्रह्मधाम तेमां सदाय साकार कृष्ण भगवान रहेला छे तेज सर्वना कारण जे अक्षर तेना कारण ने अंतर्यामी ने अनंतकोटी ब्रह्मांडना राजा अने निर्गुण कहेतां मायाना गुणे रहित दिव्य आनंदमय छे आकार जेमनो एवा जे भगवान छे तेज आ प्रत्यक्ष श्रीस्वामिनारायण भगवान छे एम निश्चे तमे जाणो. ॥१४॥१५॥ तरंग (२६९) विराजतेऽक्षरे धाम्नि सहिराजाधिराजवत् ॥ सएवच नराकारो भुवि साक्षात्समीक्ष्यते ॥ ४८ ॥ अर्थ—अक्षरधामने विषे राजाधिराजपणे विराजे छे तेज आ प्रत्यक्ष श्रीस्वामिनारायण मनुष्याकारे देखाय छे. ॥ ४८ ॥ तरंग (२७१) तेजः पुंजेक्षरे धाम्नि नित्यंकृष्णो विराजते ॥ तद्रकाश तदाकाराःसेवंते [illegible] ॥१२॥

अर्थ—तेजोमय एवुं जे अक्षरधाम तेमां भगवान विराजे छे अने ते धाममां भगवानना भक्त पण भगवानना जेवा छे आकार जेमना एवा सता ते स्वामिनारायण भगवान तेमनुं सेवन करे छे. ॥ १२ ॥ तरंग (२७२) दिव्यदेहस्य संप्राप्तिस्तस्यकृष्णेच्छयातत: ॥ जायते तेन सहरिं सेवतेऽक्षरधामनि ॥ ७ ॥ आकारस्तत्रकृष्णस्य मनुष्यस्येववर्त्तते ॥ चिदानंदमयोगोपवेषो दिव्योतिभासुर: ॥ ८ ॥ अर्थ—प्रत्यक्ष भगवाननी उपासनाने करतो एवो जे भक्त तेने भगवाननी इच्छाए करीने दिव्य देहनी प्राप्ति थाय छे, अने ते दिव्य देहे करीने अक्षरधामने विषे हरि (पोताना भक्तना दु:खने हरनारा श्रीस्वामिनारायण) नुं सेवन करे छे, अने ते धामने विषे भगवाननो [अमारो] आकार मनुष्यना जेवो छे, अने चैतन्यघनने आनंदमय अने दिव्य अति प्रकाशमान छे. ॥७॥८॥ आवी रीते श्रीजीमहाराज सदा दिव्य साकार मूर्ति छे अने दिव्य मूर्तिमान अनंत मुक्तोए सहित पोताना तेजरूप अक्षरधामने विषे विराजमान छे ने पोताना मुक्तने सुख आपे छे, एवा ने एवाज पोते तथा पोताना मुक्तो ते जीवोना कल्याणने अर्थे मर्त्यलोकने विषे मनुष्य जेवा देखाय छे, अने पोताना तेज रूपे सर्वेना आधार कर्मफळप्रदाता ने अंतर्यामी छे.

अने मूर्तिमान पण व्यापक छे तेनी रीत कहीए छीए. तरंग [१९७] एकोऽप्यनेकरूपेण प्रयोजनवशात्वस: ॥ जायतेऽडेप्सिच्छयैव स्वतंत्र: सिद्धयोगिवत् ॥ १७ ॥ अर्थ—एक एवा पण भगवान ते धर्मस्थापनरूप प्रयोजनना वशपणा थकी अनेकरूपे ब्रह्मांडोने विषे पोतानी इच्छाए स्वतंत्रपणे प्रगट थाय छे जेम सिद्धयोगी अनेकरूपे थाय छे तेम. ॥ १७ ॥ तरंग (२१३) यदा यदा यत्र यत्र दातुमिच्छेत्स्वदर्शनम् ॥ तदा तदा तत्र तत्र स्वेच्छयाविर्भवत्यसौ ॥२२॥ एकोप्यनेकरूपोऽसौ स्वसामर्थ्येन जायते ॥ एवं व्यापकतातस्य ज्ञातव्या नत्वरूपत: ॥ २३ ॥ अर्थ—ज्यारे ज्यारे जे जे स्थळने विषे दर्शन देवाने इच्छे त्यारे त्यारे ते ते स्थळमां पोतानी इच्छाए आ भगवान प्रगट थाय छे ॥२२॥ अने एक एवा पण आ भगवान ते अनेकरूपे पोताना सामर्थ्ये करीने प्रगट थाय छे, ए प्रकारे भगवाननुं व्यापकपणुं जाणवुं पण अरूपपणे करीने व्यापकपणुंन जाणवुं॥२३॥ तरंग (१००) शुद्धदर्पणवत्तस्मिन् सकलाकृतयोऽमले॥ व्याप्यस्थितायथातद्वत्सोऽपि जीवेऽतिनिर्मले ॥१२॥ अर्थ–शुद्ध दर्पणमां जेम आकृतियो देखाय छे, तेम निर्मळ एवा चित्तमां आकृतियो व्यापीने रही छे, तेनी पेठे अति निर्मळ कहेतां गुण संबंधे रहित एवा जीवने विषे भगवान (श्रीस्वामीनारायण) मूर्तिमान रह्या छे ॥१२॥ तरंग [११२] एकोप्यनेकरूपोऽस्ति कृष्ण एवं निजेच्छया ॥ नराकृति परं ब्रह्म तत् सदैवाऽक्षरे स्थिरम् ॥ ८ ॥ अर्थ—एज प्रकारे कहेतां जेम ब्रह्मांडमां सुर्य देखाय तथा मध्ये रहेल पुरुष काचनी कोटडीयोमां सर्वत्र देखाय छे, तेम एक एवा मनुष्याकार परब्रह्म कृष्ण [मनुष्यरूप जणाता ने अक्षरब्रह्मना कारणने पोताना भक्तोने पोतानी मूर्तिमां आकर्षण करनारा श्रीस्वामीनारायण] ते पोतानी इच्छाए करीने अनेकरूपे थाय छे ते सदाय अक्षरधामने विषे एक स्थळमां रह्या छे. ॥ ८ ॥

आवी रीते जीवना कल्याणने अर्थे श्रीजीमहाराज अक्षरधाममां रह्याथका अनंतरूपे मूर्तिमान व्यापक छे ते [म० ६४ ना बीजा प्रश्नमां] धाममां रह्या थका अनंतकोटी ब्रह्मांडमां जेने जेम दर्शन देवुं घटे त्यां तेने तेम दर्शन आपीए छीए. [व० १३ ना बीजा प्रश्नमां] अमे अक्षरधाममां रह्या थकाज अनंतकोटी ब्रह्मांडमां अनंतरूपे दर्शन आपीए छीए पण अरूपथका व्यापक नथी, माटे जीवोना मोक्षने अर्थे श्रीजीमहाराज मूर्तिमान व्यापक छे अने पोताना एकांतिक भक्तने विषे पण साक्षात् मूर्तिमान रह्या छे ते (प्र०-३७ मां) ज्ञान, भक्ति वैराग्यादिक अनंत शुभ गुणेयुक्त भक्त होय तेना हृदयमां अमे निवास करीए छीए. [छे० २७ ना चोथा प्रश्नमां] निष्काम, निर्लोभ, निर्मान,निःस्वाद, निःस्नेह इत्यादिक संतनां लक्षणे युक्त होय ते संतने ने अमारे साक्षात् संबंध छे, [लो० १५ ना चोथा प्रश्नमां] तमारा चित्तनी वृत्तिनो मारे विषे निरोध थाय तेने अर्थे नथी देखातो पण रह्यो तो मूर्तिमान छुं, [व० ४ ना बीजा प्रश्नमां) एकांतिक भक्त अंतरने विषे रही जे साक्षीरूप मूर्ति ने बहारनी मूर्ति तेने एक करे (छे० ४ ना बीजा प्रश्नमां) जीवने विषे परमेश्वर साक्षीरूपे रह्या छे एम कह्यु छे, माटे एकांतिकने विषे श्रीजीमहाराज मूर्तिमान रह्या छे, अने (प्र० ७८ ना सोळमा प्रश्नमां) भगवान जेवा प्रत्यक्ष प्रमाण छे तेवाने तेवाज अणुअणु प्रत्ये अंतर्यामीरूपे विराजमान छे अने जीवोना कल्याणने अर्थे मनुष्य जेवा थइने मने दर्शन आपे छे एम एकांतिक भक्त समजे छे, माटे एकांतिकने विषे साक्षात् मूर्तिमान रह्या छे. अने जे सिद्धदशावाळा छे ते तो अणु अणु प्रत्ये ज्यां दृष्टि जाय त्यां साक्षात्कार देखे छे, पण मूर्ति विना बीजुं अणुमात्र भासे नहि, माटे सिद्धमुक्तोने तो सर्वत्र साक्षात् मूर्तिमान छे. अने एकांतिकने पोताना आत्माने विषे व्यतिरेक मूर्ति विराजमान छे, अने मूळअक्षरादिक सर्वे अवतारोने विषे शक्तिद्वारे एटले तेजद्वारे अन्वयपणे रह्या छे ए श्रीजीमहाराजनो सिद्धांत छे. ।। ४५ ।।

संवत् १८७६ ना महा शुदि ११ एकादशीने दिवस सांझने समे श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदिरनी समीपे ओटा उपर दक्षिणादे मुखारविंदे विराजमान हता, ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने माथे धोळी पाघ बांधी हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिनी सभा तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

ते समे भट माहेश्वर नामे वेदांती ब्राह्मण हतो तेणे श्रीजीमहाराजने प्रश्न पूछ्यो
१ जे (१) समाधिने विषे सर्वे लीन थाय छे, आकाश केवी रीते लीन थाय छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे आकाशनुं रूप अमे रुडे प्रकारे करीए ते तमे सर्वे सावधान थइने सांभळो जे, आकाश ते अवकाशने कहीए अने जे जे पदार्थ रहे छे ते अवकाशमांज रहे छे; अने ते पदार्थमां पण आकाश व्यापीने रहे छे ने एवुं कोइ पदार्थ नथी जे

जेने विषे आकाश न होय, केम जे पृथ्वीनी एक रज अति झीणी होय तेने विषे पण आकाश छे ने ते एक रजना कोटानकोटी कटका करीए तो पण तेने विषे आकाश छे, माटे आकाशनी दृष्टिए ज्यारे जोइए, त्यारे पृथ्व्यादिक चार भूत देखातां नथी, एकलो आकाशज देखाय छे, ते आकाश सर्वनो आधार छे अने स्थूळ, सूक्ष्म ने कारण ए जे त्रण शरीर ते आकाशने विषे छे अने आ ब्रह्मांड छे ते पण आकाशने विषे रह्युं छे अने ब्रह्मांडनुं कारण जे प्रकृति ने पुरुष ते पण आकाशने विषे छे, एवो जे आकाश ते प्रकृति पुरुषने तेनुं कार्य जे पिंड ब्रह्मांड ए सर्वनी मांहि पण रह्यो छे ने सर्वेनो आधार थइने बहार पण रह्यो छे, एवो जे ए आकाश ते तो सुषुप्तिने विषे अथवा समाधिने विषे लीन थातो नथी अने कोइ कहेशे जे, आकाशादिक पंचभूत तो तमोगुणथी उपज्यां छे ते आकाश पुरुष ने प्रकृतिनो आधार केम कहेवाय ? ने सर्वमां व्यापक केम कहेवाय? तो एनो उत्तर ए छे जे, प्रकृतिमां जो अवकाशरूप आकाश न होय, तो जेम वृक्षमांथी फळ पुष्पादिक बहार निसरे छे ने जेम गायना पेटमांथी वाछडुं बहार निसरे छे तेम प्रकृतिमांथी महत्तत्त्व नीसरे छे ते केम निसरे ? माटे प्रकृतिने विषे आकाश रह्यो छे अने महत्तत्त्वमांथी अहंकार निसरे छे, माटे महत्तत्त्वमां आकाश रह्यो छे अने अहंकारमांथी त्रण गुण निसरे छे, माटे अहंकारने विषे आकाश रह्यो छे अने तमोगुणमांथी आकाशादिक पंचभूत निसरे छे, माटे तमोगुणने विषे पण आकाश रह्यो छे ने तमोगुणमांथी जे आकाश निसरे छे ते आकाश तो तमोगुणनुं कार्य छे ने विकारवान छे ने सर्वनो आधार जे आकाश छे ते निर्विकारी छे ने अनादि छे ने एवो सर्वाधार जे आकाश छे ते आकाशने ब्रह्म कहीए, चिदाकाश कहीए ने ए आकाशने विषे पुरुषने प्रकृति ते संकोच अवस्था ने विकाश अवस्थाने पामे छे, केवी रीते तो ज्यारे पुरुष, प्रकृति साम्हु जुवे छे त्यारे जेम स्त्री पुरुषथकी संताननी उत्पति थाय छे, तेम पुरुष जे पतिने प्रकृतिरूप जे स्त्री ते थकी महत्तत्त्वादिक संतान उत्पन्न थाय छे, एवी रीते जे ए प्रकृति ते चोवीश तत्त्वरूपे ने पिंड ब्रह्मांडरूपे थाय छे ए प्रकृतिनी विकाश अवस्था छे; अने जेटलां प्रकृतिनां कार्य छे तेने विषे पुरुष पोतानी शक्तिए करीने व्यापकपणे रहे छे ते पुरुषनी विकाश अवस्था छे. अने ज्यारे काळे करीने प्रकृतिनुं कार्य सर्व नाश पामी जाय छे अने प्रकृति पण पुरुषना अंगमां लीन जेवी रहे छे ए प्रकृतिनी संकोच अवस्था छे, अने पुरुष पण प्रकृतिनां कार्य सर्व नाश पाम्यां, त्यारे पोताने स्वरूपे रह्यो ए पुरुषनी संकोच अवस्था छे, जेम काचबो छे ते ज्यारे विकाशने पामे छे त्यारे पोतानां अंग सर्वे बहार काढे छे अने ज्यारे संकोचने पामे छे, त्यारे सर्वे पोताना अंग ताणी ले छे ने संकुंद थई रहे छे,

तेम पुरुष प्रकृतिनी संकोच विकाश अवस्था छे. अने ए प्रकृतिने प्रकृतिना कार्यने विषे अन्वय व्यतिरेकपणुं पुरुषतुंज छे, पण सर्वनो आधार एवो जे चिदाकाश तेनुं नथी, केमजे जे सर्वाधार होय ते कोणथकी व्यतिरेक होय ते तो सदा सर्वमां रह्योज होय, अने आ ब्रह्मांड छे तेने चारे कोरे लोकालोक पर्वत छे ते गढनी पेठे रह्यो छे ने ते लोकालोकनी बहार ते अलोक छे ते ते अलोकथी पर सप्त आवरण छे ने तेथी पर एकलुं अंधारुं छे ने ते अंधाराथी पर प्रकाश छे ते प्रकाशने चिदाकाश कहीए, तेमज उंचुं पण ब्रह्मलोक सुधी कहेवाय ने तेनी उपर सप्त आवरण छे ने ते आवणरनी पार अंधकार छे ने अंधकारनी पार प्रकाश छे ते प्रकाशने चिदाकाश कहीए ने तेमज हेठे पण सप्त पाताळ सुधी कहेवाय ने तेथी हेठां सप्त आवरण छे ने तेथी हेठुं अंधकार छे ने तेथी हेठो प्रकाश छे ते प्रकाशने चिदाकाश कहीए, एवी रीते ब्रह्मांडनी चारे पासे चिदाकाश छे अने ब्रह्मांडनी मांही पण छे अने एवो जे सर्वाधार आकाश छे तेने आकारे जेनी दृष्टि वर्तती होय तेने दहरविद्या कहीए, अने अक्षिविद्या आदिक घणीक प्रकारनी ब्रह्मविद्या कही छे ते मांहेली ए पण एक ब्रह्मविद्या छे. अने ए चिदाकाश छे ते अति प्रकाशवान छे अने ते चिदाकाश अनादि छे ने तेनी उत्पत्ति विनाश नथी अने जे आकाशनी उत्पत्ति ने विनाश कह्यो छे ते आकाशतो तमोगुणनुं कार्य छे ने अंधकाररूप छे तेनी लीनता थाय छे पण सर्वनो आधार एवो जे चिदाकाश तेनी तो लीनता थाती नथी, एवी रीते तमारा प्रश्ननो उत्तर कर्यो, हवे तेमां कोइने शंका रही होय तो पूछो. पछी ते वेदांती ब्राह्मण तथा सर्वे हरिजन बोल्या जे हवे कोइने लेशमात्र संशय नथी. ॥ १ ॥ इति १ वचनामृतम् ॥ ४६ ॥

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे, तेमां श्रीजीमहाराजे पोताना प्रकाशरूप चिदाकाशने सर्वनो आधार ने निर्विकारी कह्यो छे, ने एनी लीनता नथी एम कह्युं छे. (१) बाबत छे.

१ प्र० अष्टावरण पारतो मूळपुरुषनो प्रकाश छे अने रहस्यार्थमां महाराजनो केम कह्यो ?

१ उ० पुरुषनी तो संकोच विकाश अवस्था आमां कही छे, माटे तेना भेळी तेना प्रकाशनी संकोच विकाश अवस्था आवी गइ अने चिदाकाशनी तो संकोच विकाश अवस्था क्यांइ कही नथी ने श्रीजीमहाराजथी ओरा जे रह्या ते सर्वनो आधार कह्यो छे, माटे सर्वाधार तो श्रीजीमहाराजनुं तेज छे तेनेज आ ठेकाणे चिदाकाश कह्यो छे अने मूळपुरुष तथा वासुदेव ब्रह्म तथा मूळ अक्षर ते सर्वे ए चिदाकाशने आधारे छे अने मूळपुरुषादिकना प्रकाशने पण पूर्वे शास्त्रोमां चिदाकाश नामे कह्यो छे.

२ प्र० ब्रह्मांडनी बारे कोरे लोकालोक पर्वत गढनी पेठे रह्यो छे एम कह्युं अने ते लोकालोकथी बहार अलोक कह्यो ने ते अलोकथी पर सप्त आवरण कह्यां अने ते आवरणथी पर अंधारुं कह्युं अने ते अंधकारथी पर प्रकाश छे तेने चिदाकाश कह्यो अने हेठे ने उपर पण तेवीज रीते छे एम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० आ पृथ्वीमां पाताळथी लइने रसातळ, महातळ, तळातळ, सुतळ, वितळ, अतळ, भूर्, भुवर्, स्वर्ग, महर्, जन, तप अने सत्य लोक सुधी चौद लोक रह्या छे ते चौदे लोकमां सुंसगो लोकालोक पर्वत रह्यो छे ते पर्वतनी बहार अलोक छे ते चौद लोकने ब्रह्मांड कह्युं छे ते पूर्व पश्चिम अडताळीश करोड योजनमां छे अने उत्तर दक्षिण पण अडताळीश करोड योजन छे ते अडताळीश करोड योजन अवकाश अने ते अवकाशमां रह्या एवा जे चौद लोक तेना फरतुं एक करोड योजन जाडुं पृथ्वीनुं दळ छे ते दळे सहित पचास करोड योजन पृथ्वी छे अने तेना फरतुं तळे उपर अडखे पडखे सर्व दिशामां फरतुं पांच अबज योजन जळनुं आवरण छे, एवीज रीते तेज, वायु, आकाश, अहंकार ने महत्तत्त्व एमनां एक एकथी दश दश गणां आवरणो छे. तेमां महत्तत्त्वनुं सातमुं आवरण पांच जलदि योजननुं छे; अने तेथी पर पांच पांच अंत योजनतां अनंत प्रधान पुरुषोनां आवरणो छे; अने तेथी पर मूळमायानो अंधकार छे ते अंधकारमां अनंत प्रधानपुरुषो रह्या छे तेमने मायाना अंधकारमां भेळा गण्या छे, माटे मूळमाया सुधी आठ आवरण कह्यां छे अने ते मायाना अंधकारना फरतो चिदाकाश जे श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनो प्रकाश छे, अने जेम आकाशमां सूर्य, चंद्र, तारा रह्या छे, तेम ए चिदाकाशने मध्ये सुर्यने ठेकाणे श्रीजीमहाराजने तेमना मुक्तो रह्या छे, ने चंद्रने ठेकाणे मूळअक्षरने तेमना मुक्तो रह्या छे. अने ताराने ठेकाणे वासुदेव ब्रह्म ने तेमना मुक्तो रह्या छे ते सर्वे अचळ छे.

३ प्र० दहर तथा अक्षिविद्या कोने कहेवाय ?

६ उ० हृदयमां तेजना समूहने मध्ये श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने धारवी ते दहरविद्या कहेवाय. अने एक नेत्रे अंतरमां मूर्ति जुवे ने बीजा नेत्रने उघाडुं राखीने मटका रहित करीने बहार मूर्ति जुवे, अने बेय नेत्रने उलट सुलट करे एटले जे नेत्रनी वृत्ति अंतर सन्मुख करीने मूर्ति जोतो होय ते नेत्रनी वृत्तिने बहार लावे ने बहार मूर्तिने जुवे; अने जे नेत्रने मटकाए रहित करीने बहार मूर्ति जोतो होय ते नेत्रनी वृत्ति अंतर सन्मुख करीने अंतरमां मूर्ति जुवे ते अक्षिविद्या कहेवाय. ॥ ४६ ॥

संवत् १८७६ ना महा शुदि १२ द्वादशीने दिवस सवारना पहोरमां स्वामीश्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ लिंबडाना वृक्षनी हेठे ओटा मध्ये ढोलिआ उपर विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज जमणे हाथे चपटी वगाडीने बोल्या जे, (१) सर्वे सावधान थइने सांभळो एक वात करीए छीए ने ते वात तो स्थूळ छे पण सुधि सुरत दइने सांभळशो तो समझाशे नहींतो नही समझाय. पछी सर्वे हरिभक्ते कह्युं जे, हे महाराज! कहो. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, परमेश्वरना भक्त होय तेमां कोइकने भक्तिनिष्ठा प्रधान होय अने कोइकने स्वरूपनिष्ठा प्रधान होय ने कोइकने आत्मनिष्ठा प्रधान होय ते कोइकने त्यागनिष्ठा प्रधान होय ने गौणपणे तो ए सर्वे अंग सर्वे हरिभक्तमां होय. हवे जेने भक्तिनिष्ठा प्रधान होय तेने तो भगवानने थाळ धरवा अने भगवानना मंदिरमां गार करवी अने भगवाननां कथा कीर्तन करवां तथा संतनी सेवा चाकरी करवी, एवी रीतनी भक्ति कर्या विना रहेवाय नहि तेने भक्तिनिष्ठा जाणवी. अने जे भगवानना स्वरूपमां वृत्ति राखतां थकां कथा कीर्तन अथवा सेवा चाकरी थाय तेटली करे पण पोताने भगवानना स्वरूपमां वृत्ति राखवी तेमां विक्षेप थाय ते खमी शके नहि, एवी रीतनो जेनो स्वभाव होय तेने स्वरूपनिष्ठा जाणवी. अने जे आत्मारूपे वर्ते ने आत्माना स्वरूपनेज मोढे करीने प्रतिपादन करे अने जे ग्रंथमां आत्मानुं प्रतिपादन होय ते ग्रंथ तेने सारा लागे, एवी रीतनो जे भक्त होय तेने आत्मनिष्ठा जाणवी. अने पंडे त्यागी रहेतो होय ने त्यागनीज रीत गमती होय अने मोढे पण त्यागनीज वात करतो होय अने शास्त्र पण त्यागनांज सारां लागतां होय, एवी रीतनो जे होय तेने त्यागनिष्ठा जाणवी, माटे ए वार्ताने विचारीने जेनुं जेवुं अंग होय तेवुं ते कहो; अने आ वार्ता छे ते तो दर्पण तुल्य छे ते जेनुं जेवुं अंग होय तेवुं तेने देखाडी आपे छे अने भगवानना भक्त होय ते तो अंग विनाना होय नहि पण पोताना अंगने ओळखे नहि एटले पोताना अंगनी दृढता थाय नहि. अने ज्यां सुधी पोताना अंगनी दृढता न थइ होय त्यां सुधी जेवी वात थाय तेवुं तेनुं अंग व्यभिचारी जाय, माटे आ वार्ताने विचारीने पोतपोताना अंगनी दृढता करो ने जेनुं जेवुं अंग होय ते तेम बोलो. पछी हरिभक्त सर्वे जेवुं जेनुं अंग हतुं ते तेवी रीते बोल्या. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेनुं एक सरखुं अंग होय ते उठी उभा थाओ. पछी जेनुं जेनुं एक सरखुं अंग हतुं ते सर्वे उभा थया. पछी श्रीजीमहाराजे ए सर्वेने पाछा बेसार्या. (१) १

२ पछी नित्यानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (२) ए चारे अंगवाळाने पोतपोताना अंगमां कांइ गुण दोष छे के नथी? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, गुण दोष छे ते कहीए ते सांभळो जे भक्तिनिष्ठावाळो जे होय ते तो जेम परमेश्वर कहे तेम करे, जेम श्री कृष्ण भगवाने अर्जुनने कह्युं जे, ॥ सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ॥ एवी

रीते जे वर्तवुं ते भक्तिवाळाने विषे गुण छे. अने शास्त्रनी सारुय लेवा जाय एटलो एने विषे दोष छे अने स्वरूपनिष्ठावाळाने जे भगवाननुं स्वरूप पोताने प्राप्त थयुं छे तेज स्वरूपने विषे मति अचळ रहे छे ए एने विषे गुण छे अने एम जाणे जे आ जे भगवाननुं स्वरूप छे ते तो सगुण छे ने निर्गुण स्वरूप तो बीजुं छे एम जो समझाय तो ए स्वरूपनिष्ठावाळाने विषे दोष छे. अने आत्मनिष्ठावाळाने देह, इंद्रियो, मन अने प्राण थकी जुदुं वर्तवुं अने भगवाननी कथा कीर्तनादिक करवुं ते पण आत्मरूपे थइने करवुं अने देहादिक जे मायिकभाव तेमां भळी जावुं नहि, एवी रीते वर्ताय ते एने विषे गुण छे; अने देहादिकने विषे एकपणे वर्ताय ए एने विषे दोष छे, अने त्यागनिष्ठावाळाने भगवाननी मूर्ति विना पिंड ब्रह्मांडमां तथा अष्टसिद्धि नव निधिमां तथा वैकुंठादिक जे भगवानना धाम तेमां क्यांइ पण प्रीति रहे नहि ए एने विषे गुण छे; अने भगवान विना बीजाने विषे लेश मात्र प्रीति रहे ए एने विषे दोष छे. अने ए चार प्रकारनी जे निष्ठा तेनुं फळ ए छे जे, भगवानने विषे द्रढ प्रीति थाय अने भगवान विना बीजुं जे मायिक पदार्थ मात्र ते तुच्छ जणाय ए एनुं फळ छे. (२) २

३ पछी मुक्तानंदस्वामीए पूछ्युं जे (३) ए चार निष्ठाने विषे कोइ अधिक न्यून छे के ए चारे तुल्य छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ज्यां सुधी एक एक निष्ठाने विषे वर्तता होय, त्यां सुधी तो ए चारे सरखा छे अने ज्यारे ए चारे निष्ठा एकने विषे वर्ते त्यारे ते सर्वे थकी अधिक छे अने ज्यारे ए चारे निष्ठा एकने विषे वर्ते त्यारे तेने परम भागवत् कहीए अने एनेज एकांतिक भक्त कहीए. (३) इति ३ वचनामृतम् ॥४७॥

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (३) छे. तेमां पहेलुं कृपावाक्य छे तेमां श्रीजीमहाराजे भक्तिनिष्ठा, स्वरूपनिष्ठा, आत्मनिष्ठा ने त्यागनिष्ठा ए चारनां रूप कर्यां छे. (१) बीजामां ए चार निष्ठावाळाने गुणदोष कह्या छे. [२] त्रीजामां ए चारे निष्ठाओने सरखी कही छे ने ए चारेय निष्ठा एकने विषे वर्ते तेने परम भागवत् संत कह्या छे. [३] बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां एकसरखुं अंग कह्युं ते केवुं समजवुं ?

१ उ० चार अंगमांथी जे दृढ थयुं होय ते अंग कोइ रीते फरे नहि ते सरखुं अंग कह्युं छे.

२ प्र० बीजा प्रश्नमां भक्तिवाळो शास्त्रनी सारुय ले ते तेने दोष कह्यो ते दोष शो समजवो ?

२ उ० श्रीजीमहाराज प्रत्यक्ष मनुष्यरूपे दर्शन आपता होय ते वखते शास्त्रमां जे प्रमाणे वर्तवानुं कह्युं होय तेथी बीजी रीते वर्तवानुं कहे, त्यारे शास्त्रनी सारुय लेवा जाय ते दोष कह्यो छे. ते वचन पण वधारेक नाह्या विना जमवानुं कहे, एवां वचन जाणवां पण पंचवर्तमान लोपवा संबंधी वचन तो न मानवां ते (लो. ६ ना२६ अढारमां प्र-

भमां) अमारा मेळां स्त्रीओनां दर्शन थतां होय, त्यां अमारी आज्ञाए करीने पण न बेसवुं, माटे पंचवर्तमान लोपवा सिवायनां बीजां वचन श्रीजीमहाराज कहे तो, तेमां शास्त्रनी साख्य न लेवी अने श्रीजीमहाराज प्रतिमारूपे दर्शन देता होय ते वखते तो श्रीजीमहाराजनां शास्त्र प्रमाणेज वर्तवुं, अने कोइक मोटा मुक्तनुं वचन पण श्रीजी-महाराजना शास्त्रथी विरूद्ध होय ते न मानवुं. अने जे मुक्त होय ते तो श्रीजीमहा-राजनां वचन यथार्थ पाळे ने पोताना आश्रितोने पळावे अने जे श्रीजीमहाराजना वचनथी बहार वर्ते ने वर्तावे ने कहे जे, अमे मुक्त छीए एम कहेता होय तेनुं वचन न मानवुं.

३ प्र० भगवाननुं स्वरूप पोताने प्राप्त थयुं छे ते स्वरूपने विषे मति अचळ रहे ए स्व-रूपनिष्ठावाळाने विषे गुण छे एम कह्युं ते पोताने प्राप्त थयुं ते स्वरूप कियुं जाणवुं ?

३ उ० श्रीजीमहाराज अनंत जीवोना आत्यंतिक कल्याण करवा सारु दया करीने मनुष्यरूपे श्री छपैया धामने विषे भक्ति धर्मथकी प्रगट थया ते स्वरूप पोताना अश्रित सर्वेने प्राप्त थयुं छे ते स्वरूप कह्युं छे.

४ प्र० श्रीजीमहाराजे मनुष्यरूपे दर्शन आप्यां ते वखते तो श्रीजीमहाराजनुं स्वरूप प्राप्त थयुं हतुं पण आज ए स्वरूप केवी रीते प्राप्त थयुं कहेवाय ?

४ उ० जे स्वरूप मनुष्यरूपे हतुं ते स्वरूप आज प्रतिमारूपे दर्शन आपे छे, माटे ते स्वरूप प्राप्त थयुं छे एम जाणवुं; अने श्रीजीमहाराजनी प्रतिमाने दिव्य न जाणे ने प्रतिमा जाणे ने श्रीजीमहाराजना मनुष्य स्वरूपने दिव्य न जाणे ने सगुण एटले मनुष्य जेवा जाणे ते ए स्वरूपनिष्ठावाळाने दोष कह्यो छे.

५ प्र० वैकुंठादिक धामोमां प्रीति न राखवी एम कह्युं ते तो ठीक पण अक्षरधाममां सदा रहेवुं छे तेमां प्रीति राखवी के केम ?

५ उ० (लो -२/६ मां) कह्युं छे के मुक्ते सहित अमारां दर्शन न थाय ने एकलुं अमारुं तेज देखाय तो कष्ट पामवुं माटे धाममां प्रीति न राखवी. अने श्रीजीमहाराजमां ने मुक्तमां प्रीति राखवी एम (म. -२/९ मां) कह्युं छे तेमां मुक्तने विषे पण श्रीजीम-हाराजना जेवी प्रीति न राखवी एम (छे. १६ मां) कह्युं छे. ॥४७॥

संवत् १८७६ ना महा शुदि १३ तेरशने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ लिंबडाना वृक्षनी हेठे ओटा मध्ये ढोलिया उपर आथमणे मुखारविंदे संध्या समे विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र पहेर्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ बे मशालुं बळती हती अने श्रीवासुदेवनारायणनी संध्या आरती तथा नारायण धुन्य थइ रही.

ते केडे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, सर्वे सावधान थइने सांभळो एक वार्ता करीए छैए. त्यारे सर्वे मुनि तथा हरिभक्त बोल्या जे, हे महाराज ! कहो.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) ए अमारी आज्ञा छे जे, हरिभक्त मात्रने श्रीनरनारायणनी मूर्ति कागदमां लखावी देशुं ते पूजज्यो अने ए पूजा सर्वे शास्त्रे करीने प्रमाण छे अने श्रीमद्भागवतने विषे पण अष्ट प्रकारनी मूर्ति कही छे, माटे चित्रमूर्ति पण अति प्रमाण छे अने अमारी आज्ञा पण छे, माटे हरिभक्त मात्रने प्रातःकाळमां स्नान करीने श्रीनरनारायणनी पूजा करवी. (१) अने पूजा कर्या पछी प्रक्रमा करवी १
ने साष्टांग प्रणाम करवा पछी भगवान पासे एम मागवुं जे, हे महाराज ! अमारी कुसंगथकी रक्षा करज्यो ते कुसंग चार प्रकारनो छे एक तो कुंडापंथी, बीजा शक्तिपंथी, त्रीजा वेदांती ने चोथा नास्तिक ए चार प्रकारनो कुसंग छे, माटे जो कुंडापंथीनो संग थाय तो वर्त्तमानमां चुकाडे अने शक्तिपंथीनो संग थाय तो दारु माटी खवरावीने भ्रष्ट करे अने जो वेदांतीनो संग थाय तो आकारमात्र खोटा करे अने भगवानना धाम तथा भगवाननी मूर्तियो खोटा करी देखाडीने भ्रष्ट करे अने नास्तिक होय ते कर्मनेज साचां करीने इश्वरने खोटा करी देखाडीने भ्रष्ट करे, माटे एवा कुसंगथी तथा क्रोधलोभादिकथी रहित थवा वास्ते नरनारायणनुं स्तवन करवुं. (२) अने तमे सर्व हरिभक्त २
एम मनमां लावशो मां जे, ए तो कागद उपर चित्रामण छे ते आपणी केम कुसंगथकी रक्षा करशे ? एवो भाव तो कोइ दहाडे लावशोज मां, कां जे अमे तो सत्पुरुष छैए ते अमारी आज्ञाए करीने तमे सर्वे नरनारायणनी पूजा राखशो, तो अमारे ने नरनारायणने तो सुधो मन मेळाप छे ते अमे नरनारायणने कहेशुं जे, हे महाराज ! जे पंचवर्त्तमानमां रहीने अमारी आपेल जे तमारी मूर्ति तेने पूजे तेमां अखंड वास करीने रहेजो, माटे ए नरनारायण देव छे तेने अमे स्नेहरूपी पाशे बांधीने जोरावरी पण राखशुं, माटे तमे सर्वे एम निश्चे जाणज्यो जे, ए मूर्ति छे ते श्री नरनारायणदेव पंडेज छे, एवुं जाणीने कोइ दहाडे मूर्ति अपूज्य रहेवा देशो मां अने प्रातःकाळमां स्नान करीने भगवाननी पूजा करवी ने पछी बीजो धंधो करवो अने ज्यां सुधी पंचवर्त्तमानमां रहीने ए नरनारायणदेवनी पूजा करशो त्यां सुधी ए मूर्तिने विषे श्रीनरनारायण विराजमान रहेशे ए अमारी आज्ञा छे ते सर्वे दृढ करीने मानज्यो, एवी रीते श्रीजी बोल्या ते श्रीजीनां वचन माथे चडाव्यां. (३) इति वचनामृतम् ॥४८॥ ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे पोतानी चित्रमूर्ति प्रमाण करी छे ने प्रातःकाळे ए मूर्ति पूजवानी आज्ञा करी छे. (१) अने चार प्रकारना कुसंगथी तथा कामादिक शत्रुथी रक्षा करज्यो, एम चित्रमूर्तिनी स्तुति करवानुं कह्युं छे. (२) अने ए चित्रमूर्ति अमे पंडेज छीए, माटे अपूज्य रहेवा देवी नहि अने पंचवर्त्तमानमां रहीने पूजा करशो त्यां सुधी ए मूर्तिमां अमे रहेशुं एम कह्युं छे. (३) बाबतो छे.

१ प्र० आमां नरनारायणनी मूर्ति पूजवानुं कह्युं अने रहस्यार्थमां श्रीजीनी केम कही ?
१ उ० महाराज मुक्तभावे बोल्या छे माटे एम कह्युं छे ते (प्र० ८ ना पहेला प्रश्नोत्तरमां) छे.
२ प्र० कुसंगथी रक्षा मागवानुं कह्युं ते बहारना तो ओळखाय पण सत्संगमां केम ओळखाय ?
२ उ० त्यागी होय ते स्त्री धननो प्रसंग राखे तथा स्त्री संबंधी संकल्प थइ जाय तेनुं प्रायश्चित्त एटले उपवास न करे अने गृहस्थ होय ते परस्त्रीनो संग करे तथा परधनने ग्रहण करवानी इच्छा राखे ते कुंडापंथी जेवा जाणवा. अने त्यागी अथवा गृहस्थ दारु मांसना संसर्गवाळुं औषध खाय अने जे परदेशथी दवानी शीशीओ आवती होय ते पण दारुज छे अने लशुन, डुंगळी, तमाकु, लीलागर, हिंग, अफीण आदिक अभक्ष वस्तु खाता होय ते शक्तिपंथीना जेवा जाणवा. अने श्रीजीमहाराजने अंतर्यामी न जाणे ने मर्यादा न राखे अने पंचवर्तमाने युक्त श्रीजीमहाराजना भक्तने विषे मनुष्यभाव रहे अने श्रीजीमहाराजनी प्रतिमाने विषे चित्र पाषाणादिकनो भाव राखे पण दिव्य न जाणे तेने नास्तिकना जेवा जाणवा. अने जे श्रीजीमहाराजने निराकार समजे तेने वेदांती जेवा जाणवा. तेमनो पण संग न करवो. ॥४८॥

संवत् १८७६ ना महा शुदि १४ चौदशने दिवस संध्या समे स्वामी श्री सहजानंदजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ लिंबडाना वृक्ष हेठे ओटा मध्ये ढोलिया उपर विराजमान हताने पोताना मुखारविंदनी आगळ बे दिवियो बळती हती अने कंठने विषे पीळा पुष्पनो हार पहेर्यो हतो ने बे हाथमां पीळा पुष्पना गजरा धारण कर्या हता अने सर्वे धोळां वस्त्र पहेर्या हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे प्रश्न उत्तर करो. पछी ब्रह्मानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्यो
१ जे, (१) भगवानने विषे वृत्ति राखीए छैए ते तो सुधी जोरे करीने राखीए छैए त्यारे रहे छे अने जगतना पदार्थ सन्मुख तो एनी मेळेज रहे छे तेनुं शुं कारण छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, भगवानना भक्त होय तेनी वृत्ति तो भगवान विना बीजे रहेज नहि अने तेने तो एज फिकर रहे छे जे, मारे जगतना पदार्थमां वृत्ति राखवी ते तो घणुं कठण पडशे, माटे परमेश्वरना भक्त होय तेने तो जगतना पदार्थमां वृत्ति राखवी एज कठण छे अने जे जगतना जीव छे तेने परमेश्वरमां वृत्ति राखवी ते घणी कठण छे, माटे जेने परमेश्वरमां वृत्ति न रहे ते परमेश्वरनो भक्त नहि अने ते सत्संगमां आवतो होय तो ए धीरे धीरे संतनी वार्ता सांभळतां सांभळतां परमेश्वरनो भक्त थाशे. (१) १

२ पछी ब्रह्मानंदस्वामीए वळी पूछ्युं जे,(२) एवी रीते भगवानमां वृत्ति राख्यानुं शुं साधन छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एनुं साधन तो अंतर्दृष्टि छे ते अंतर्दृष्टि ते शुं तो जेवा पोताने प्रत्यक्ष भगवान मळ्या छे तेनी मूर्ति सामुं जोइ रहेवुं ए अंतर्दृष्टि छे; अने ते मूर्ति विना षट्चक्र देखाय अथवा गोलोक वैकुंठादिक भगवानना धाम देखाय, तो पण ते अंतर्दृष्टि नहि, माटे भगवाननी मूर्तिने अंतरमां धारीने ते सामुं जोइ रहेवुं, अथवा बहार भगवाननी मूर्ति सामुं जोइ रहेवुं तेनुं नाम अंतर्दृष्टि छे अने ते मूर्ति विना बीजे ज्यां ज्यां वृत्ति रहे ते सर्वे बाह्यदृष्टि छे. पछी वळी श्रीजीमहाराज परमहंस प्रत्ये बोल्या जे, हवे तो बे बे जण थइने सामसामा प्रश्न उत्तर करो. पछी घणी वार सुधी परमहंसे परस्पर प्रश्न उत्तर कर्या तेने सांभळता थका श्रीजीमहाराज तेमनी बुद्धिनी परीक्षा करता हवा. (२) इति वचनामृतम् ॥४९॥ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, अमारी मूर्तिमां वृत्ति न रहे ते अमारो भक्त नहि. [१] बीजामां अमारी मूर्ति सामुं जोइ रहेवुं ते अंतर्दृष्टि छे अने मूर्ति विना बीजे वृत्ति रहे ते बाह्यदृष्टि छे. (२) बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां तमारे विषे वृत्ति जोरे करीने राखीए छीए त्यारे रहे छे एम ब्रह्मानंदस्वामीए पूछ्युं ते ब्रह्मानंदस्वामी तो अनादि मुक्त हता तेमणे जोरे करीने वृत्ति राखीए छीए एम केम पूछ्युं हशे ?

१ उ० साधनिकने उपदेशने माटे सर्वेना भेळा भळीने पूछ्युं छे पण पोताने माटे पूछ्युं नथी. एतो अनादिमुक्त हता ने श्रीजीमहाराजना भेळा बीजा जीवोना कल्याणने अर्थे आव्या हता, एमनुं अजाण्युं कांइ नहोतुं.

२ प्र० मूर्तिमां तो वृत्ति न रहे पण महाराजनी आज्ञा यथार्थ पाळे ते भक्त कहेवाय के नहि ?

२ उ० एकांतिक भक्त न कहेवाय, चालोचाल कहेवाय. अने आज्ञा न पाळे ते तो कुसंगी कहेवाय. ॥ ४९ ॥

संवत् १८७६ ना महा वदि १ पडवाने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरनी मेडीनी ओसरी आगळ प्रातःकाळे विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे मुनि प्रत्ये एम पूछ्युं जे, (१) जेने कुशाग्र बुद्धि होय तेने ब्रह्मनी प्राप्ति थाय छे ते कुशाग्रबुद्धि ते जे संसार व्यवहारमां बहु जाणतो होय तेनी कहेवाय

के नहि ? अथवा शास्त्रपुराणना अर्थने बहु जाणतो होय तेनी कहेवाय के नहि ? पछी एनो उत्तर मुनिए करवा मांड्यो पण थयो नहि. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, केटलाक तो व्यवहारमां अति डाह्या होय, तो पण पोताना कल्याणने अर्थे कांइ यत्न करे नहि तथा केटलाक शास्त्र पुराण इतिहास तेना अर्थने सारी पेठे जाणता होय, तो पण पोताना कल्याणने अर्थे कांइ पण यत्न करे नहि, माटे एने कुशाग्र बुद्धिवाळा न जाणवा, एने तो जाडी बुद्धिवाळा जाणवा अने जे कल्याणने अर्थे यत्न करे छे ने तेनी बुद्धि थोडी छे तो पण ते कुशाग्र बुद्धिवाळो छे अने जे जगत् व्यवहारनी कोरे सावधान थइने मंड्यो छे ने तेनी बुद्धि अति झीणी छे, तो पण ते जाडी बुद्धिवाळो छे, ए उपर भगवद्गीतानो श्लोक छे जे ॥ या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ॥ यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥ ए श्लोकनो अर्थ एम छे जे भगवाननुं भजन करवुं तेमां तो सर्व जगत्ना जीवनी बुद्धि रात्रिनी पेठे अंधकारेयुक्त वर्ते छे. कहेतां भगवाननुं भजन नथी करता अने जे भगवानना भक्त छे ते तो ते भगवानना भजनने विषे जाग्या छे कहेतां निरंतर भगवाननुं भजन करता थका वर्ते छे अने शब्द, स्पर्श, रूप, रस ने गंध ए जे पंच विषय तेने विषे जीव मात्रनी बुद्धि जाग्रत वर्ते छे कहेतां विषयने भोगवता थकाज वर्ते छे; अने जे भगवानना भक्त छे तेनी बुद्धि तो ते विषयभोगने विषे अंधकारे युक्त वर्ते छे कहेतां ते विषयने भोगवता नथी, माटे एवी रीते जे पोताना कल्याणने अर्थे सावधानपणे वर्ते छे तेज कुशाग्र बुद्धिवाळा छे ने ते विना तो सर्वे मूर्ख छे. (१) इति वचनामृतम् ॥५०॥ १

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कल्याणने अर्थे सावधानपणे वर्ते तेने झीणी बुद्धिवाळो कह्यो छे अने एने ब्रह्मनी एटले अमारी प्राप्ति थाय छे एम कह्युं छे. (१) बाबत छे. [आ ब्रह्मनो अर्थ प्र. ३९ ना बीजा प्रश्नोत्तरमां कर्यो छे.]

१ प्र० बुद्धि अंधकारेयुक्त वर्ते छे एम कह्युं ते केवी रीते वर्ते ते अंधकारेयुक्त कहेवाय ?

१ उ० श्रीजीमहाराजने विषे प्रीतिवाळा भक्त जगतथी उदास होय, पण जो तेने प्रारब्ध वशे करीने गृहस्थाश्रममां रहेवुं पडयुं होय तो तेने गृहस्थाश्रमनी रीति प्रमाणे वर्तवुं जोइए, पण उदासथको विषयने भोगवे ते अंधकारेयुक्त वर्ते छे एम जाणवुं; अने त्यागीमां रह्यो होय तो पण सारी पथारी, सारुं खावानुं, सारुं पात्र ए आदिक सारी वस्तुने ग्रहण न करे ने जेवी तेवी वस्तुए करीने गुजरान करे अने सर्वे क्रियामां श्रीजीमहाराजनी स्मृति राखे पण क्रियानी स्मृति न राखे, एवी रीते वर्ते ते विषयने विषे अंधकारेयुक्त वर्ते छे एम जाणवुं. ॥५०॥

संवत् १८७६ ना महा वदि २ बीजने दिवस रात्रिने समे स्वामी श्री सहजानंदजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ आथमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता, अने धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो ने धोळो अंगरखो पहेर्यो हतो ने माथे धोळी पाघ बांधी हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, कांइ प्रश्न पूछो. पछी पूर्णानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्यो
१ जे, (१) दश इंद्रियो छे ते तो रजोगुणनी छे अने चार अंतःकरण छे ते तो सत्त्वगुणनां छे, माटे ए सर्वे इंद्रियो ने अंतःकरण ते तो मायिक छे ने भगवान तो मायाथी पर छे तेनो मायिक अंतःकरणे करीने केम निश्चय थाय ? अने मायिक एवी जे चक्षु आदिक इंद्रियो तेणे करीने भगवान केम जोयामां आवे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, मायिक वस्तुए करीने मायिक पदार्थ होय ते जणाय, माटे मायिक जे अंतःकरणने इंद्रियो तेणे करीने जो भगवान जणाणा तो ए भगवान पण मायिक ठर्या ए रीते तमारो प्रश्न छे ? पछे पूर्णानंदस्वामी तथा सर्व मुनिए कह्युं जे एज प्रश्न छे तेने हे महाराज ! तमे पुष्ट करी आप्युं पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एनो तो उत्तर एम छे जे, पचासकोटी योजन पृथ्वीनुं पीठ छे ते पृथ्वी उपर घटपटादिक अनेक पदार्थ छे ते सर्व पदार्थमां ए पृथ्वी रही छे ने पोताने स्वरूपे करीने नोखी पण रही छे अने ज्यारे पृथ्वीनी दृष्टिए करीने जोइए, त्यारे ए सर्व पदार्थरूपे पृथ्वी थइ छे ने पृथ्वी विना बीजुं कांइ पदार्थ नथी ने ते पृथ्वी जळना एक अंशमांथी थइ छे ने जळ तो पृथ्वीनी हेठे पण छे ने पडखे पण छे ने उपर पण छे ने पृथ्वीना मध्यमां पण जळ सर्वत्र व्यापी रह्युं छे, माटे जळनी दृष्टिए करीने जोइए तो पृथ्वी नथी एकलुं जळज छे अने ए जळ पण तेजना एक अंशमांथी थयुं छे, माटे तेजनी दृष्टिए करीने जोइए तो जळ नथी एकलुं तेजज छे अने ते तेज पण वायुना एक अंशमांथी थयुं छे, माटे ते वायुनी दृष्टिए करीने जोइए तो तेज नथी एकलो वायुज छे ने ते वायु पण आकाशना एक अंशमांथी थयो छे, माटे जो आकाशनी दृष्टिए करीने जोइए तो वायु आदिक जे चार भूत ने तेनुं कार्य जे पिंड ने ब्रह्मांड ते कांइ भासेज नहि एकलो आकाशज सर्वत्र भासे अने ए आकाश पण तामसाहंकारना एक अंशमांथी उत्पन्न थयो छे ने ते तामसाहंकार, राजसाहंकार, सात्त्विकाहंकार ने भूत, इंद्रियो, अंतःकरण ने देवता ए सर्वे महत्तत्त्वना एक अंशमांथी उत्पन्न थया छे, माटे महत्तत्त्वनी दृष्टिए जोइए तो त्रण प्रकारनो अहंकार तथा भूत, इंद्रियो अंतःकरण, देवता ए सर्वे नथी एकलुं महत्तत्त्वज छे अने ते महत्तत्त्व पण प्रकृतिना एक अंशमांथी

उत्पन्न थयुं छे, माटे प्रकृतिनी दृष्टिए जोइए तो महत्तत्त्व नथी एकली प्रकृतिज छे अने ते प्रकृति पण प्रलयकाळमां पुरुषना एक अंशमां लीन थइ जाय छे अने पाछी सृष्टि समे एक अंशमांथी उत्पन्न थाय छे, माटे पुरुषनी दृष्टिए करीने जोइए तो प्रकृति नथी एकलो पुरुषज छे अने एवा अनंतकोटी पुरुष छे ते पुरुषोत्तमनुं धाम जे अक्षर तेना एक देशने विषे लीन थइ जाय छे ने पाछा उपजे छे, माटे ए अक्षरनी दृष्टिए करीने जोइए तो ए सर्वे नथी एक अक्षर छे अने ते अक्षरथकी पर अक्षरातीत एवा जे पुरुषोत्तम भगवान ते छे ने ते सर्वेना उत्पत्ति, स्थिति ने प्रलय तेना कर्त्ता छे ने सर्वेना कारण छे अने जे कारण होय ते पोताना कार्यने विषे व्यापक होय ने तेथी जुदुं पण रहे माटे ए सर्वेना कारण जे पुरुषोत्तम भगवान तेनी दृष्टिए करीने जोइए त्यारे ए पुरुषोत्तम भगवान विना बीजुं कांइ भासेज नहि. एवा जे ए भगवान तेज कृपा करीने जीवना कल्याणने अर्थे पृथ्वीमां सर्वे मनुष्यने प्रत्यक्ष दर्शन आपे छे, त्यारे जे जीव संतनो समागम करीने आ पुरुषोत्तम भगवाननो आवो महिमा समझे छे त्यारे एनां इंद्रियो अंतःकरण सर्वे पुरुषोत्तमरूप थइ जाय छे, त्यारे तेमणे करीने आ भगवाननो निश्चय थाय छे, जेम हीरे करीनेज हीरो वेंधाय छे पण बीजा वते नथी वेंधातो, तेम भगवाननो निश्चय ते भगवान वतेज थाय छे ने भगवाननुं दर्शन पण भगवान वतेज थाय छे पण मायिक एवां जे इंद्रियो अंतःकरण तेणे करीने नथी थातो, एम वार्ता करीने श्रीजीमहाराज जयसच्चिदानंद कहीने पोताने उतारे पधार्या.(१) इति वचनामृतम् ॥५१॥ १

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, पृथ्वीथी लइने मूळ अक्षरआदिक सर्वेना कर्ता ने सर्वेना कारणने ए सर्वेमां अमारी अंतर्यामी शक्तिए करीने व्यापक ने मूळ अक्षरादिक सर्वेथी पर एवा जे अमे ते जीवोना कल्याणने अर्थे सर्व मनुष्यने प्रत्यक्ष दर्शन आपीए छीए, त्यारे जे जीव अमारा मुक्तनो समागम करीने अमारो महिमा समजे त्यारे ते जीवना इंद्रियो, अंतःकरण सर्वे अमारा रूप थइ जाय छे त्यारे अमारुं दर्शन अने अमारो निश्चय थाय छे. [१] बाबत छे.

१ प्र० पृथ्वी आदिकनी दृष्टिए जोइए एम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

१ उ० जे जे देवनी उपासना करे ते ते देवना भावने पामीने एटले तद्रूप थइने ते ते देवना नेत्रे करीने जुवे ते तेनी दृष्टिए जोयुं कहेवाय. एवी रीते वरुण, अग्नि, वायु, आकाश, अहंकार, महत्तत्त्व अने प्रधान पुरुष तेमनी उपासना करीने, तेमना भावने पामीने तेमनी दृष्टिए कहेतां तेमना नेत्रे करीने जुवे तो तेथी ओरुं होय ते नजरमां आवे नहि एटले तुच्छ थइ जाय तेमज मूळ पुरुषनी उपासनावाळा मूळपुरुषने नेत्रे जुवे तो तेथी ओरुं तेमनुं कार्य जे मूळमायादिक ते कांइ नजरमां आवे नहि अने वासुदेव

ब्रह्मनी उपासना करीने, ते रूप थइने, तेमना नेत्रे करीने जुए तो मूळपुरुषादिक कांइ नजरमां न आवे अने एवीज रीते मूळअक्षरनी उपासना करीने, तद्रूप थइने, ते मूळ अक्षरना नेत्रे करीने जुवे त्यारे वासुदेव ब्रह्म आदिक कोइ नजरमां आवे नहि अने पुरुषोत्तमनी उपासना करीने तद्भावने पामीने एटले ते रूप थइने ते पुरुषोत्तम परब्रह्म जे श्रीस्वामीनारायण तेमनी दृष्टिए कहेतां तेमनां नेत्रे करीने जुवे त्यारे मूळअक्षरादिक कोइ भासेज नहि, एटले श्रीजीमहाराजनुं सुख सामर्थीने प्रकाश तेना आगळ मूळअक्षरनुं सुख सामर्थीने प्रकाश ते कोटीमा भागना पासंगमां पण आवे नहि, तेथी ए अक्षरादिकनी गणतरी रहेज नहि, तेमज ते अक्षरना सुख आदिकनी आगळ वासुदेवब्रह्मनुं सुख सामर्थीने प्रकाश पण तेवोज छे, माटे मूळअक्षर आगळ ए वासुदेव ब्रह्मनी गणतरी रहे नहि, तेवी रीते उत्तरोत्तर मूळ पुरुषादिकना सुख सामर्थ्यादिकनुं पण जाणवुं.

२ प्र० प्रलयसमे अनंतकोटी पुरुष जे मूळ पुरुष ते अक्षरधामने विषे लीन थइ जाय छे एम कह्युं ते मूळ पुरुषना उपरि तो वासुदेवब्रह्म छे ते वासुदेवब्रह्मना तेजमां लीन थवा जोइए अने अक्षरधाममां लीन थाय छे एम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० यथार्थ अनुक्रम कोइक ठेकाणे कह्यो होय ने कोइक ठेकाणे न कह्यो होय, जेम महत्तत्त्वनी लीनता प्रधान प्रकृतिमां छे ने प्रधाननी लीनता पुरुषमां छे अने एवा अनंत पुरुषनी लीनता मूळ प्रकृतिमां छे ने मूळप्रकृतिनी लीनता मूळपुरुषमां छे तो पण महत्तत्त्वनी लीनता आ वचनामृतमां पाधरीज मूळ प्रकृतिमां कही, तेमज मुळ पुरुषनी लीनता ब्रह्मना तेजने विषे न कही ने पाधरीज अक्षरने विषे कही छे, माटे कोइक ठेकाणे अनुक्रम न कह्यो होय पण अनुक्रम प्रमाणेज उपजे छे ने लीन थाय छे एम जाणवुं.

३ प्र० इंद्रियो अंतःकरण तो जड छे ते पुरुषोत्तमरूप केवी रीते थतां हशे ?

३ उ० श्रीजीमहाराज तथा मुक्तने योगे करीने श्रीजीमहाराजनो यथार्थ महिमा समजे पछी ते भक्त श्रीजीमहाराजनुं तेज जे अक्षरधाम ते रूप पोताने मानीने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनुं ध्यान करे ते ध्याने करीने श्रीजीमहाराजने आकारे थइ जाय छे त्यारे ते जीव मटीने मुक्त थाय छे, जेम भमरीने ध्याने करीने इयळ भमरी थाय छे, तेम श्रीजीमहाराज दिव्यमूर्ति छे तेमने ध्याने करीने भक्तनो चैतन्य दिव्य साकार थइ जाय छे, माटे एनां इंद्रियो पुरुषोत्तमरूप थइ जाय छे एम कह्युं छे ते तो जेम पुरुषोत्तम भगवानने दिव्य अवयव छे तेवाज एना अवयव दिव्य थइ जाय छे एम कह्युं छे, माटे इंद्रियो एटले दिव्य अवयव जाणवा पण आ मायिक इंद्रियो दिव्य थइ जाय छे एम न जाणवुं. आ निश्चय स्थितिए सहित कह्यो छे.

४ प्र० भगवाननो महिमा संत समागमे समजाय एम कह्युं त्यारे भगवानने समागमे सम-

जाय के केम ? अने हीरे हीरो विंधाय ते बे हीरा कया ? अने भगवाननो निश्चय ने दर्शन भगवान वतेज थाय ते केवी रीते जाणवुं ?

४ उ० ज्यारे भगवान पृथ्वीने विषे पधारे त्यारे संत पण भेळाज होय ते संत जेने प्रथम मळे ते संतना समागमथी भगवाननो महिमा जाणे अने भगवान जेने प्रथम मळे ते भगवान थकी महिमा जाणे, माटे भगवान तथा संत ए बेयना समागमथी श्रीजीमहाराजनो महिमा समझाय छे अने संतमां पण श्रीजीमहाराज साक्षात् रह्या छे, माटे संतद्वारे पण श्रीजीमहाराज पोतेज पोतानो महिमा समजावे छे. अने जेम समुद्रमां पाणीनो घडो ढोळीए ते समुद्रमां जाय तेम श्रीजीमहाराज मनुष्यरूपे मळे ते मूर्तिमां एकता करवाथी मूर्तिमां संलग्न थवाय अने नदीमां पाणी रेडीए ते पाणीने नदीद्वारे समुद्रमां एकता थाय छे, तेम श्रीजीमहाराजने मळेला एटले श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां संलग्न रहेला संत जे मुक्त तेने विषे आपोपुं करीने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने विषे एकता करे तो ते मुक्तद्वारे पण श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां एकता थाय छे, केम जे ते मुक्त मूर्तिमांज रह्या छे, माटे तेनी साथे आपोपुं करवाथी पण श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां एकता थाय छे ते मूर्तिमां निमग्न रहेवानुं (लो० १२ ना पहेला प्रश्नमां) कह्युं छे जे अमारे विषे निमग्न रहे तेने माया पराभव न करे तथा (का० १ ना पांचमा प्रश्नमां) अमारे ज्ञाने करीने अमारे आकारे थइ जाय छे अने मुक्तमां आपोपुं करवानुं [जे० १ ना बीजा प्रश्नमां] कह्युं छे माटे वेंधनारा हीराने दृष्टांते श्रीजीमहाराजने ने मुक्तने जाणवा अने वेंधवाना हीराने दृष्टांते मुमुक्षु जाणवा अने श्रीजी थकी अथवा एमना मुक्त थकी श्रीजीमहाराजनो यथार्थ महिमा समजीने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां संलग्न थइने श्रीजीमहाराजना मुखमां मुख, हस्तमां हस्त, चरणमां चरण, नेत्रमां नेत्र, मस्तके मस्तक, एवी रीते एकता करीने श्रीजीमहाराजने नेत्रे करीने श्रीजीमहाराजने जुवे ते भगवान वतेज भगवाननुं दर्शन कहेवाय ने भगवान वतेज भगवाननो निश्चय कहेवाय. आ ध्याननी छटक श्रीजीमहाराज कां एमना अनादिमुक्त थकीज पमाय छे, ॥५१॥

संवत् १८७६ ना महा वदि ३ श्रीजने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरनी मेडीनी ओसरीमां कथा वंचावता हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी ते कथामां एम आव्युं जे, सांख्य, योग, वेदांत ने पंचरात्र ए चार शास्त्रे करीने जे भगवानना स्वरूपने समझे ते पुरो ज्ञानी कहेवाय. त्यारे मुक्तानंदस्वामीए पूछ्युं जे,

१ (१) हे महाराज ! ए चार शास्त्रे करीने भगवानने केम जाणवा? ने ए चार शास्त्रे करीने जे भगवानने न जाणे तेमां शी न्यूनता रहे छे ते कहो? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जे सांख्यशास्त्र छे ते भगवानने पचवीशमा कहे छे ने चोवीश तत्त्व जेम भगवान विना कांइ करवाने समर्थ नथी थातां, तेम जीव इश्वर पण भगवान विना कांइ करवाने समर्थ

नथी, माटे एने पण चोवीश तत्त्व भेळाज गणे छे ने जीव ईश्वरे सहित एवां जे चोवीश तत्त्व तेने क्षेत्र कहे छे ने पचवीशमा जे भगवान तेने क्षेत्रज्ञ कहे छे अने योगशास्त्र छे ते भगवानने छवीशमा कहे छे ने मूर्तिमान कहे छे ने जीव ईश्वरने पचवीशमा कहे छे ने चोवीस तत्त्वने पृथक् कहे छे ने ए तत्त्वथकी पोताना आत्माने पृथक् समझीने भगवान्नुं ध्यान करवुं एम कहे छे. अने वेदांत शास्त्र छे ते भगवानने सर्व कारण, सर्व व्यापक, सर्वाधार, निर्गुण, अद्वैत, निरंजन ने कर्ता थका अकर्ताने प्राकृत विशेषणे रहित ने दिव्य विशेषणे सहित एम कहे छे अने पंचरात्र शास्त्र छे ते भगवानने एम कहे छे जे, एक जे श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम नारायण छे तेज वासुदेव, संकर्षण, अनिरुद्ध, प्रद्युम्न, ए चतुर्व्यूहरूपे थाय छे ने पृथ्वीने विषे अवतारनुं धारण करे छे ने तेने विषे जे नव प्रकारनी भक्तिने करे छे तेनुं कल्याण थाय छे एवी रीते ए चारे शास्त्र भगवानने कहे छे तेने यथार्थ समझे त्यारे पुरो ज्ञानी कहेवाय. अने जो बीजां त्रण शास्त्रने मुकीने एक सांख्य शास्त्रे करीनेज भगवानना स्वरूपने समझे तो ए बाध आवे जे सांख्य-शास्त्रमां जीव ईश्वरने तत्त्वथी नोखा नथी कह्या ते ज्यारे तत्त्वनो निषेध करीने तत्त्वथी पोताना जीवात्माने नोखो समझे त्यारे पचवीशमो पोतानो जीवात्मा समझाय पण भगवान न समझाय; अने जो एकले योगशास्त्रे करीनेज भगवानना स्वरूपने समझे तो ए दोष आवे जे,योगशास्त्रे भगवानने मूर्तिमान कह्या छे तेने परिच्छिन्न समझे पण सर्वांतर्यामीने परिपूर्ण एवा न समझे; अने जो एक वेदांत शास्त्रे करीनेज भगवानना स्वरूपने समझे तो ए दोष आवे जे, जे भगवानने सर्वकारण ने सर्व व्यापक ने निर्गुण कह्या छे तेने निराकार समझे पण प्राकृत करचरणादिके रहित ने दिव्य अवयवे सहित एवो सनातन जे भगवाननो आकार छे तेने न समझे; अने जो एकले पंचरात्र शास्त्रे करीने भगवानना स्वरूपने समझे तो एवो दोष आवे जे, जे भगवानना अवतारने विषे भक्ति कही छे तेने विषे मनुष्यभाव आवे तथा एकदेशस्थपणुं समझाइ जाय पण सर्वांतर्यामीपणुं ने परिपूर्णपणुं न समझाय, माटे ए सर्वे शास्त्रे करीने जो भगवानने न समझे तो आवा दोष आवे छे ने जो ए सर्वे शास्त्रे करीने समझे तो जे एकएक शास्त्रनी समझणे करीने दोष आवे छे ते बीजा शास्त्रनी समझणे करीने टळी जाय छे, माटे ए चारे शास्त्रे करीने जे समझे ते परिपूर्ण ज्ञानी कहेवाय अने जो ए चारमांथी एकने मुकी देतो पुणो ज्ञानी कहेवाय ने बेने मुकी दे तो अर्धो ज्ञानी कहेवाय ने त्रणने मुकी दे तो पा ज्ञानी कहेवाय, ने ए चारेने मुकीने जे पोताना मननी कल्पनाए करीने गमे तेवी रीते शास्त्रने समझीने वर्ते छे ने ते जो वेदांती छे अथवा उपासनावाळो छे ते बेय भुला पड्या छे पण कल्याणनो मार्ग ए बेमांथी कोइने जडशे नथी,

माटे ए वेदांती ते दंभीज्ञानी छे ने ए उपासनावाळो ते दंभीभक्त छे. (१) इति १ वचनामृतम् ॥ ५२ ॥

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे, तेमां श्रीजीमहाराजे सांख्य, योग, वेदांत ने पंचरात्र ए चार शास्त्रे करीने भगवानना स्वरूपने समझे तेने पुरो ज्ञानी कह्यो छे अने शास्त्रने मुकीने मनमते वर्ते तेने दंभी ज्ञानी ने दंभी भक्त कह्यो छे [१] बाबत छे.

१ प्र० सांख्यने मते चोवीश तत्त्वना भेळा जीव इश्वरने गणीने पचवीशमा परमात्मा कह्या ते मूळ पुरुषने कह्या छे, अने योगने मते तत्त्वथी नोखा जीव इश्वरने कहीने छवी-शमा परमात्मा कह्या ते पण मूळ पुरुषने कह्या छे; अने वेदांत पण एनोज महिमा कहे छे; पंचरात्र छे ते वासुदेव भगवाने कर्यु छे ते श्वेतद्वीप पति वासुदेवनुं वर्णन करे छे एम (व० ½ मां) कह्युं छे, एवी रीते चारे शास्त्र जेम मूळपुरुषनुं तथा वासुदेवनुं ध्यान भजन करवानुं कहे छे, तेम श्रीजीमहाराजना भक्तने श्रीजीमहाराजनुं स्वरूप केवी रीते समजवुं ?

१ उ० जेम सांख्यवाळे मूळ पुरुष विना जीव इश्वर कांइ करवा समर्थ नथी एम जाणीने मूळ पुरुषने परमात्मा कह्या छे, तेम प्रत्यक्ष श्री स्वामीनारायणना भक्तोए मूळ पुरुष तेथी पर ब्रह्मकोटी तेथी पर अक्षरकोटी ते कोइ श्रीजीमहाराज विना कांइ करवा समर्थ नथी एम जाणीने श्रीजीमहाराजने परमात्मा जाणवा. (१) अने जेम योगवाळा त्रण देहथी भिन्न जीवात्माने मानीने मूळ पुरुषनी मूर्तिनुं ध्यान करवानुं कहे छे तेम श्रीजी-महाराजना भक्तने श्रीजीमहाराजनुं तेज जे अक्षरधाम ते रूप पोताना आत्माने मानीने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनुं ध्यान करवुं. [२] अने जेम वेदांत मूळ पुरुषने जीव मायाने विषे व्यापक ने जीव मायाना कारण जाणवा एम कहे छे, तेम प्रत्यक्ष श्री स्वामिना-रायणना भक्तोए प्रत्यक्ष श्रीजीमहाराजने जीव, माया, मूळ पुरुष, ब्रह्म, अक्षर ए सर्वेने विषे पोताना तेजद्वारे व्यापकने ए सर्वेना आधार, कर्ता, नियंता ने कर्मफळ प्रदाता जाणवा. [३] अने जेम पंचरात्रशास्त्र श्वेतद्वीपपति वासुदेवने मच्छ कूर्मादिक तथा राम कृष्णादिक सर्व अवतारना कारण जाणीने तेमनी भक्ति करवानुं कहे छे, तेम श्रीजीम-हाराजना भक्तोए श्रीजीमहाराजने अक्षरादिक सर्वे अवतारना कारण अवतारी जाणीने तेमनी भक्ति करवी. (४) आवी रीते प्रत्यक्ष श्री स्वामिनारायणने चारे प्रकारे जाणे ते पुरो ज्ञानी कहेवाय. ॥५२॥

संवत् १८७६ ना महा वदि ९ नवमीने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदिरनी आगळ आथमणे बार ओर-डानी ओसरीए ढोलिया उपर आथमणे मुखारविंदे विराजमान हता, ने धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो ने धोळो अंगरखो पहेर्यो हतो ने जरकसी छेडानुं कसुंबल भारे शेलुं केडे बांध्युं हतुं ने जरकसी छेडानो भारे कसुंबल रेटो माथे बांध्यो हतो ने ते पाघमां पुष्पना

तोरा झुकी रह्या हता ने कंठमां पुष्पना हार पहेर्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ सर्वे मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे कोइ प्रश्न पूछो. त्यारे मुक्तानंदस्वामीए पूछ्युं जे,
१ (१) कोइक तो सत्संगमां रहीने दिवस दिवस प्रत्ये वृद्धिने पामतो जाय छे ने कोइकतो सत्संगमां रहीने दिवस दिवस प्रत्ये घटतो जाय छे तेनुं शुं कारण छे? पछी श्रीजी-महाराज बोल्या जे,मोटा जे साधु तेनो जे अवगुण ले छे ते घटतो जाय छे ने ते साधुनो जे जे गुण ले छे तेनुं अंग वृद्धि पामतुं जाय छे ने तेने भगवानने विषे भक्ति पण वृद्धि पामे छे, माटे ते साधुनो अवगुण न लेवो ने गुणज लेवो ने अवगुण तो त्यारे लेवो ज्यारे परमेश्वरनी बांधेल जे पंचवर्तमाननी मर्यादा तेमांथी कोइक वर्तमाननो ते साधु भंग करे त्यारे तेनो अवगुण लेवो, पण कोइ वर्तमानमां तो फेर न होय ने तेनी स्वाभाविक प्रकृति ठीक न जणाती होय तेने जोइने ते साधुमां बीजा घणाक गुण होय तेनो त्याग करीने जो एकला अवगुणनेज ग्रहण करे तो तेना ज्ञान, वैराग्यादिक जे शुभ गुण ते घटी जाय छे, माटे वर्तमानमां फेर होय तोज अवगुण लेवो पण अमथो भगवानना भक्तनो अवगुण लेवो नहि ने जो अवगुण ले नहि तो तेने शुभ गुणनी दिवस दिवस प्रत्ये वृद्धि थाती जाय छे. (१) इति वचनामृतम् ॥५३॥ १

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [१] छे. तेमां पंचवर्तमाने युक्त एवा जे अमारा मोटा साधु तेनी स्वाभाविक प्रकृति देखीने तेनो अवगुण ले तेना भक्ति ज्ञानादिक शुभगुण घटी जाय छे अने एवा साधुनो गुण ले तो तेना शुभगुण वृद्धि पामे छे. अने पंच वर्तमानमां फेर होय तो अवगुण लेवो एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (१) बाबत छे. [आ स्वाभाविक प्रकृतिनो खुलासो प्र० ३१ ना १ पहेला प्रश्नोत्तरमां छे.] ॥५३॥

संवत् १८७६ ना महा वदि ११ एकादशीने दिवस स्वामीश्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ आथमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिआ उपर गादी तकिया नखावीने विराजमान हता, ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने जरीयान छेडावाळो कसुंबल रेंटो ओढ्यो हतो अने आसमानी रंगनो जरीयानी रेशमनो फेंटो माथे बांध्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे, (१) हे महाराज! श्रीमद्भागवतना एका-दश स्कंधमां कह्युं छे जे, भागवत धर्मने आश्रयो जे जीव ते आंख्युं मींचीने चाल्यो जाय तो पण पडेय नहि ने आखडेय नहि ते भागवात धर्म ते किया? पछे श्रीजीमहा-

राज बोल्या जे ।। प्रसंगमजरं पाशमात्मनः कवयो विदुः स एव साधुषु कृतो मोक्षद्वार मपावृत्तम् ।। १ ।। जेवो ए जीवने पोताना संबंधीने विषे दृढ प्रसंग छे, तेवोने तेवोज प्रसंग जो भगवानना भक्तने विषे थाय तो ए भगवानना मार्गथकी कोइ दिवस पाछो पडे नहि. (१) १

२ पछी शुकमुनिए पूछ्युं जे, (२) गमे तेवो आपत्काळ पडे ने पोताना धर्ममांथी न खसे ते किये लक्षणे करीने ओळखाय ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने परमेश्वरना वचननी खटक रहे अने नानुं मोटुं वचन लोपी शके नहि, एवी रीतनो जेनो स्वभाव होय तेने गमे तेवो आपत्काळ आवे तोयपण ए धर्मथकी पडेज नहि, माटे जेने वचनमां दृढता छे तेनोज धर्म दृढ रहे अने तेनोज सत्संग पण दृढ रहे. (२) इति वचनामृतम् ।।५४।। २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [२] छे. तेमां पहेलामां जीवने जेवो देहना संबंधीने विषे दृढ प्रसंग छे, तेवो अमारा भक्तने विषे थाय ते भागवत धर्म छे. [१] बीजामां अमारां नानां मोटां वचन यथार्थ पाळे तेनोज धर्म ने सत्संग दृढ रहे छे, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (२) बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां भागवतधर्म किया हशे ? एम पूछ्युं छे तेना उत्तरमां श्रीजीमहाराजे संतनो प्रसंग राखवानुं कह्युं तेनो शो हेतु हशे ?

१ उ० मने, वचने ने देहे करीने भगवान संबंधी शुभ क्रिया करवी ते भागवत धर्म छे, पण ए धर्म मुक्तना प्रसंगथी आवे छे माटे मुक्तनो प्रसंग राखवानुं कह्युं छे. ।।५४।।

संवत् १८७६ ना महा वदि ११ एकादशीने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उताराने विषे उगमणे बार ओरडानी ओसरी उपर विराजता हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ संत तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे प्रश्न उत्तर करो. पछी मुक्तानंदस्वामीए पूछ्युं जे,
१ (१) जीवने भजन स्मरणनो तथा वर्तमाननो एक दृढाव केम रहेतो नथी ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ए तो अशुभ एवा जे देशकाळ क्रियाने संग तेने योगे करीने रहेतो नथी ने ते दृढाव पण त्रण प्रकारनो छे; उत्तम, मध्यम ने कनिष्ट, तेमां जो उत्तम दृढता होय ने देश काळ क्रिया ने संग ए जो अति भुंडा थाय तो ते उत्तम दृढताने पण टाळी नाखे तो मध्यम ने कनिष्ट दृढतानी तो शी वात कहेवी ? अने देश, काळ, क्रिया ने संग ए अति भुंडा थाय ने तेमां पण दृढता जेम छे एमने एम जो रहे तो एने पूर्वनुं भारे बीजबळ छे ने भारे पुन्य छे; अने देश, काळ, क्रिया ने संग अति पवित्र छे अने

तेमां पण जो एनी बुद्धि मलीन थइ जाय छे तो एने पूर्व जन्मनुं तथा आ जन्मनुं कोइ मोटुं पाप छे ते नडे छे अथवा कोई मोटा भगवानना भक्तनो द्रोह थइ गयो छे ते एने नडे छे, केमजे देश, काळ, क्रिया ने संग रुडा छे तोय पण एनुं अंतर भुंडुं थइ जाय छे. (१) माटे हवे जो मोटा पुरुषनी सेवामां खबरदार थइने रहेतो एनां पाप बळीने १
भस्म थइ जाय अने जो अति पापीनो संग थाय तो पापनो वधारो थाय अने कांइक सुकृत होय ते पण नाश पामे अने मदिरापाननी करनारी जे पातर्यो तेना गळामां हाथ नाखीने बेसे अने पछी परमेश्वरनो वांक काढे जे, मारुं मन केम ठेकाणे राख्युं नहि ? तेने तो महा मूर्ख जाणवो. (२) इति वचनामृतम् ॥५५॥ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे, तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे देशकाळादिक अति भुंडा थाय तो अमारा भजन स्मरणनी तथा वर्त्तमाननी उत्तम दृढताने पण टाळी नाखे अने जेने पूर्वेनुं भारे बीजबळने भारे पुन्य होय तेनी दृढता टळे नहि अने जेणे पूर्वजन्मे तथा आ जन्मे मोटुं पाप कर्युं होय अथवा अमारा मोटा भक्तनो द्रोह कर्यो होय तेने देश, काळ, संगादिक अति पवित्र होय तो पण तेनुं अंतर भुंडुं थइ जाय छे. [१] अने ते जो खबरदार थइने एवा मोटा पुरुषनी सेवा करे तो ए पाप बळीने भस्म थइ जाय छे, माटे सारा देशादिक सेववा. (२) बाबतो छे. [आ देशकाळनुं रूप प्र० २९ ना पहेला प्रश्नोत्तरमां कर्युं छे.]

१ प्र० पहेली बाबतमां उत्तम, मध्यम ने कनिष्ट दृढता कही तेना लक्षण केवां हशे ?

१ उ० रूपवान स्त्रियोनो ने सारा खानपानादिकनो योग हमेशां रहेतो देहाभिमान टळयुं नथी तेथी डगी जाय अने श्रीजीमहाराजना ध्यान भजनमां पण ते स्त्रियादिकना संकल्प विक्षेप करे ते कनिष्ट दृढता कहेवाय. अने एकांतमां रूपवान स्त्रीओनो तथा खानपानादिकनो योग हमेशां रहे तो डगी जाय, अने भजन स्मरणमां पण ते संबंधी संकल्प थाय ते मध्यम दृढता कहेवाय. अने रूपवान स्त्रियो धर्मथी पाडवा सारु घणुंक द्रव्यादिक आपीने पण धर्मथी पाडवानो अति आग्रह करे तथा दुष्ट कर्म करनारा पापी लोको नात बहार मुके तथा धर्ममांथी पाडवा सारु व्यवहारमां अनेक प्रकारनी उपाधियो करे तेने सहन करी शके नहि ने धर्मथी डगी जाय ने ए उपाधिनी चिंताए करीने भजन स्मरण पण विक्षेपरहित थाय नहि ते उत्तम दृढता जाणवी. अने आवी उपाधिने पण आत्मविचारे करीने देहपर्यंत सहन करे पण पोताना नियममांथी पडे नहि ने भजनमां पण ए विषेनो संकल्प थायज नहि ते अति उत्तम दृढता कहेवाय ते देशकाळे करीने पण टळे नहि.

२ प्र० देशादिक अति भुंडा थाय तो पण दृढता होय तेवीने तेवी रहे तेने भारे बीजबळने भारे पुन्य कह्युं ते बीजबळ तथा पुन्य ते शुं हशे ?

२ उ० पोताने पुरुष प्रयत्ने करीने धर्म, ज्ञान वैराग्य ने भक्ति ए चार साधने संपन्न थयो होय ते भारे बीजबळ कह्युं छे. अने जे श्रीजीमहाराजनी मूर्तिना सुखमां रह्या होय ने बीजाने मूर्तिने सुखे सुखिआ करता होय ने पंचवर्त्तमान दृढ पाळता पळावता होय एवा अतिशे मोटा मुक्तनी निष्कामभावे अतिशे सेवा करीने तेमनी प्रसन्नता मेळवी होय ते भारे पुन्य कह्युं छे एवाने देशकाळादिक अति मलीन होय तो पण तेनी दृढता लेश मात्र टळे नहि.

३ प्र० बीजी बाबतमां मदिराने पातर्यो कही ते मदिरा तथा पातर्यो कोने जाणवी ?

३ उ० इंद्रियोने ने पंचविषयने एकता छे, माटे विषयरूपी मदिरा पीनारी इंद्रियोने पातर्यो कही छे. ते इंद्रियोनो दोर्यो दोराय तेने इंद्रियोरूपी वेश्याना गळामां हाथ नाखीने बेसे एम कह्युं छे. ॥ ५५ ॥

संवत् १८७६ना महा वदि१२ द्वादशीने दिवस सांझने समे श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेवनारायणना मंदिर आगळ आथमणा बारना ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने जरियान कसुंबल रेटो ओढ्यो हतो ने माथे फरता छेडानो कसुंबी रेटो बांध्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने नारायण धुन्य करीने मुनि झांझ मृदंग लइने कीर्तन गावता हता.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे कीर्तन राखो ने घडीक प्रश्न उत्तर करीए. एम
१ कहीने वळी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो हुं प्रश्न पूछुं छुं जे, (१) श्रीकृष्ण भगवाने गीतामां चार प्रकारना भक्त कह्या छे तेमां ज्ञानीने अधिक कह्यो छे अने चारे ने भगवानना स्वरूपनो निश्चय तो सरखो छे, माटे ज्ञानी ते केई रीते विशेष छे ? पछी ए प्रश्ननो उत्तर मुनिए करवा मांड्यो पण थयो नहि पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ज्ञानी छे ते तो ब्रह्मस्वरूपे वर्ते छे, माटे एने भगवानना स्वरूप विना बीजी मनमां कांइ कामना रहेती नथी अने बीजा जे त्रण प्रकारना भक्त छे तेने भगवाननो निश्चय तो छे तोय पण पोताने विषे देहात्मबुद्धि वर्ते छे ते माटे एने भगवान विना बीजी कामना रही जाय छे ते माटे ज्ञानीने बरोबर थाता नथी, ते सारु भगवानना भक्तने भगवान विना बीजी कोइ जातनी कामना रहे ए मोटी खोव्य छे. (१) १
अने जेने कोइ जातनी वासना न होय ने तीव्र वैराग्यवान होय अने जो ते वैराग्यने योगे अहंकारेयुक्त वर्ते तो ए पण एने विषे मोटी खोव्य छे अथवा अत्यंत आत्मज्ञाननुं बळ होय अथवा भगवानने विषे दृढ भक्तिनुं बळ होय ने तेना मानने योगे करीने जो गरीब हरिभक्तने नमाय नहि अथवा तेनी आगळ दीन वचन बोलाय नहि तो ए पण एने विषे मोटी खोव्य छे ते खोटचे करीने ए हरिभक्तनुं अंग वृद्धिने न पामे

जेम सलाट कुवो खोदतो होय अने जो हेठे पाणो पोलो बोले तो सलाट एम कहे जे पाणी घणुं थाशे ने जो उपरथी रणकतो होय ने मांहि कापे त्यां अग्नि झरे तो सलाट एम कहे जे, आ कुवामां पाणी थाशे तो अर्धा कोशनुं के पा कोशनुं थाशे पण वधु नहि थाय, तेम ज्ञान वैराग्यने भक्ति तेना मानमां जे अटंट रहे तो ए मोटो कहेवाय पण जेवुं अर्धा कोशनुं के पा कोशनुं पाणी थयुं एवो मोटो थाय पण जेवा निर्मानी भक्तमां मोटा गुण आवे तेवा मोटा गुण एमां न आवे, माटे जेने भगवानने प्रसन्न करवा होय तेने ज्ञान वैराग्य भक्ति तथा बीजा कोइ श्रेष्ठ गुण होय तेने अभिमाने करीने अटंट थावुं नहि तो ए पुरुषना हृदयने विषे प्रगट प्रमाण एवा जे श्री नरनारायण ते प्रसन्न थइने निवास करीने रहे छे. (२) २

२ पछी मुक्तानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (२) हे महाराज ! ज्ञान वैराग्य भक्ति तथा बीजा जे शुभ गुण तेने योगे करीने मान आवे ते मानने किया उपाये करीने टाळवुं ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, भगवानना भक्तनुं महात्म्य जाणीने पोते देहे करीने तेमने नमस्कार करे तथा तेमनी सेवा चाकरी करे ने जो हैयामां माननो संकल्प थाय तो तेने ओळखे ने विचारनुं बळ राखे तो मान टळी जाय अने अतिशे प्रेमलक्षणा भक्ति होय ने ते भक्तिए करीने भगवान तेने वश वर्तता होय अने जो ते भक्तिनुं भक्तना हृदयमां मान आवे तोय पण एने अति खोट्य छे, अने आत्मज्ञाननुं मान होय अथवा वैराग्यनुं मान होय पण ते अभिमान तो देहात्मबुद्धिनेज दृढ करावे, माटे भगवानना भक्त होय तेने कोइ प्रकारे अभिमान राखवुं नहि, एज भगवानने राजी कर्यानो उपाय छे अने अंतर्दृष्टिवाळा जे भगवानना भक्त होय ते जो तपासीने पोताना हृदय सामुं जुवे तो ज्यारे लगारे मान आवतुं हशे त्यारे हृदयमां रही जे भगवाननी मूर्ति तेनी नजर करडी देखाती हशे, अने ज्यारे निर्मानीपणे वर्ततुं हशे त्यारे पोताना हृदयमां रही जे भगवाननी मूर्ति तेनी दृष्टि अति प्रसन्न जणाती हशे, माटे भगवानना भक्त होय तेने विचारनुं बळ राखीने कोइ प्रकारनुं मान उदे थावा देवुं नहि अने जो मानसहित ज्ञान वैराग्य भक्ति होय तो, जेम सोनुं होय ने तेमां मेग भळे त्यारे ते सोनुं पनरवलुं कहेवाय ने तेथी वधतो मेग भळे तो बारवलुं कहेवाय ने तेथी वधतो मेग भळे तो आठवलुं कहेवाय, तेम ए भक्तने ज्ञान वैराग्य भक्तिमां जेम जेम अहंकारनो मेग भळतो आवे तेम तेम ए त्रणे ओछां थातां जाय छे, माटे मान रहित जे ज्ञान वैराग्य ने भक्ति ते तो सोळवला सोना जेवां छे अने मान सहित होय ते उपरथी तो एने घणो शोभाडे पण एना अंतरमां झाझुं बळ होय नहि, त्यां दृष्टांत छे, जेम पचासकोटी योजन पृथ्वी ते समुद्र, पर्वत ने सर्वभूत प्राणीमात्र तेनो आधार छे, माटे अती बळवान जणाय छे, ने

ते थकी जळ बळी घणुं बळवान जणाय छे, जे जळने विषे पृथ्वी छाणानी पेठे तरे छे अने जळ थकी तेजमां घणुं बळ जणाय छे अने तेज थकी वायुमां घणुं बळ जणाय छे अने आकाशनुं तो कांइ बळ जणातुं नथी पण आकाश सर्वथा बळवान छे, कां जे ए चारेनो आकाश आधाररूप छे, तेम मान रहित जे ए भक्तनां ज्ञान, वैराग्य ने भक्ति ते आकाश सरखां बळवान छे, माटे उपरथी तो जणाय नहि पण निर्मानि भक्त ते सौथी श्रेष्ठ छे. ने जेम बाळक होय ते दिवस कांइ माननो घाट संकल्प होय नहि तेमज साधुने तो गमे तेटली पूजा प्रतिष्ठा थाती होय पण बाळकनी पेठे मानरहित वर्तवुं. (३) ३

३ पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे, (३) इंद्रियो, अंतःकरण ने प्राण तथा जाग्रत, स्वप्न, ने सुषुप्ति ए त्रण अवस्था तथा स्थूळ, सूक्ष्म ने कारण ए त्रण शरीर ए सर्वे थकी जीवनुं स्वरूप न्यारुं छे, एवुं सत्संगमांथी सांभळीने दृढ निश्चय कर्यो छे, तोय पण इंद्रियो अंतःकरणादिक भेळो भळीने सुखरूप एवो जे जीवात्मा ते परमात्मानुं भजन स्मरण करतो थको संकल्पने योगे करीने दुःखीओ केम थइ जाय छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, केटलाक सिद्ध थाय छे ने केटलाक सर्वज्ञ थाय छे ने केटलाक देवता थाय छे, इत्यादिक अनंत प्रकारनी मोट्यप पामे छे तथा परमपदने पामे छे ए सर्वे भगवाननी उपासनाने बळे पामे छे पण उपासना विना कोइ वात सिद्ध थाती नथी, माटे शास्त्रमांथी आत्मा अनात्मानी विगत समझीने अथवा कोइक मोटा संतना मुखथी वात सांभळीने जाणे जे, हुं आत्मा अनात्मानी विगति करी लेउं एम विगति थाती नथी ए तो ए जीवने जेटली पोताना इष्टदेव जे परमेश्वर तेने विषे निष्ठा होय तेटलेज आत्मा अनात्मानो विवेक थाय छे पण इष्टदेवना बळ विना तो कोइ साधन सिद्ध थातां नथी ने जेने गोपियोना जेवी प्रेमलक्षणा भक्ति छे तेने तो सर्वे साधन संपूर्ण थयां छे अने जेने एवो प्रेम न होय तेने तो भगवाननो महिमा समझवो जे, भगवान तो गोलोक, वैकुंठ, श्वेतद्वीप, ब्रह्ममहोल तेना पति छे अने मनुष्य जेवा जणाय छे ते तो भक्तना सुखने अर्थे जणाय छे पण एनी ए मूर्ति छे ते गोलोकादिक जे पोतानां धाम तेने विषे एक एक नखमां कोटी कोटी सूर्यना प्रकाशे युक्त जणाय छे ने मर्त्यलोकने विषे तो ए भगवाननी मनुष्य सेवा करे छे ने दीवो करे त्यारे एने आगळ प्रकाश थाय छे पण ए तो सूर्य चंद्रादिक सर्वेने प्रकाशना दाता छे ने गोलोकादिक जे धाम छे तेने विषे तो राधिकालक्ष्मी आदिक जे पोताना भक्त छे तेमणे निरंतर सेव्या एवा ए भगवान छे अने ज्यारे ब्रह्मांडोनो प्रलय थइ जाय छे त्यारे आ प्रगट भगवान छे तेज एक रहे छे ने पछी सृष्टि रचवाने समे पण प्रकृतिपुरुषद्वारे करीने अनंतकोटी ब्रह्मांडोने एज भगवान उपजावे छे, एवी रीते भगवाननो महिमा विचारवो

एज आत्मा अनात्माना विवेकनुं कारण छे ने जेटली ए भगवानने विषे निष्ठा छे तेटलेज ए भक्तना हृदयमां वैराग्य आवे छे, माटे बीजा साधनना बळने तजीने एकलुं भगवाननी उपासनानुं बळ राखवुं अने जे एवा भक्त होय ते तो एम समझे जे, गमे तेवो पापी होय ने अंतसमे जो तेने स्वामिनारायण एवा नामनुं उच्चारण थाय तो ते सर्व पाप थकी छुटीने, ब्रह्ममहोलने विषे निवास करे एवो भगवाननो प्रताप मोटो छे माटे भगवाननुं बळ राखवुं, जेम ध्रुवनी हता तेणे यक्ष साथे लडाइ करी त्यारे ध्रुव पासे नरनारायणनुं आपेलुं नारायण अस्त्र हतुं ते एक लाख ने त्रीश हजार ने उनमाने नारायण अस्त्रे करीने यक्ष मार्या ते यक्ष सर्वे महा कामी ने अति पापी हता, तोय पण नारायण अस्त्रने प्रतापे करीने उर्ध्ववेरेता जे मुनि ते जे लोकने पामे छे ते लोकने पाम्या, माटे नरनारायणना अस्त्रमां एटलो प्रताप छे, तो जेने प्रगट नरनारायण मळ्या होय तेनुं नामस्मरण करता होय, ने ध्यान करता होय अने जे सत्संगना नियम होय तेने सर्वेने शिरसाटे पाळता होय तेना कल्याणमां शुं संशय छे ? एम महात्म्य समझी ते सारु जे भगवाननो भक्त होय तेने भगवाननी उपासनानुं बळ सत्संग करीने दिवसे दिवसे वृद्धि पमाडवुं. (४) इति वचनामृतम् ॥५६॥ ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [३] छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे त्रण प्रकारना भक्तथी ज्ञानीने अधिक कह्यो छे. (१) अने ज्ञान भक्ति आदिक गुणनुं मान आवे तेमां मोटा गुण नथी आवता अने ए गुणनुं मान राखे नहि तेना हृदयमां अमे निवास करीने रहीए छीए. (२) बीजामां भक्तनु महात्म्य जाणीने सेवा करे ने विचारनुं बळ राखे तो ए रुडा गुणनुं मान टळी जाय छे. [३] त्रीजामां अमे सर्वे धामोना पति छीए ने भक्तना सुखने अर्थे मनुष्य जेवा देखाइए छीए पण अमे धामने विषे एक एक नखमां कोटी कोटी सूर्यना प्रकाशे युक्त छीए ने आंही सो दीवो करे त्यारे अमारुं दर्शन थाय छे पण ए सर्वेने प्रकाशना दाता छीए अने महा प्रलय थाय छे त्यारे पण अमे एकज भगवान रहीए छीए. अने प्रकृति पुरुषद्वाराए अनंतकोटी ब्रह्मांडने अमेज उपजावीए छीए अने गमे तेवो पापी जीव होय ते अंतसमे अमारुं स्वामिनारायण एवुं नाम उच्चारण करे तो अमारा धामने विषे निवास करे एवो अमारो प्रताप छे, एवो अमारो महिमा जाणे तो शुद्ध आत्मारूप एटले अमारा तेजरूप थइने परमपद एटले अमारा साधर्म्यपणाने पामे छे एम कह्युं छे. (४) बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां आर्त्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी ने ज्ञानी ए चार प्रकारना भक्त कह्या तेमनां लक्षण शां हशे ?

१ उ० श्रीजीमहाराज विना बीजा कोइ पासेथी दुःखनी निवृत्ति इच्छे नहि ते आर्त्त जाणवो. अने स्त्री धनने राज्यादिकनी इच्छा होय ते श्रीजीमहाराज विना बीजा कोइ

देव पासेथी न इच्छे ते अर्थार्थी जाणवो. अने श्रीजीमहाराजनी मूर्ति विना बीजी आत्मदर्शनादिकनी इच्छा राखे तेने जिज्ञासु जाणवो ते जिज्ञासुनुं लक्षण [छे० ५ ना ३/४ त्रीजा प्रश्नमां] कह्युं छे अने पोते अक्षरधामरूप थइने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां जोडाइ रहे अने मूर्ति विना बीजुं कांइ पण इच्छे नहि तेने ज्ञानी ने निष्काम जाणवो.

२ प्र० श्रीजी पासेथी इच्छे तेने सकाम कह्या, तो बीजा देव पासेथी इच्छे तेने केवा जाणवा ?

२ उ० श्रीजीमहाराज विना बीजा कोइ देव पासेथी कांइ पण इच्छे तो ते सकामभक्त पण न कहेवाय, ते तो गुण बुद्धिवाळो प्राकृतने अज्ञानी भक्त कहेवाय अने एनी भक्ति [म० २/१ मां तथा छे० ना १६ मां] वेश्याना जेवी कही छे.

३ प्र० [३/१ पहेला प्रश्नमां] तीव्र वैराग्य, आत्मज्ञान, ने भक्तिनुं मान आवे तेमां मोटा गुण नथी आवता एम कह्युं ते एवा हडा गुणनुं मान आव्यानुं शुं कारण हशे ?

३ उ० जेने श्रीजीमहाराजनो महिमा यथार्थ न समजाणो होय ने एमना भक्तने विषे दिव्य भाव न आव्यो होय पण पोताने मायिक पदार्थमांथी वैराग्य थयो होय तेने बीजा भक्तने विषे वैराग्यमां खामी देखीने मान आवे जे हुं वैराग्यवान छुं एवा बीजा नथी अने पोताने आत्म स्वरूपनुं ज्ञान थयुं होय पण आत्माने विषे स्थिति न थइ होय तेने बीजाने विषे ज्ञान देखवामां न आवे तेथी एम जाणे जे, मारा जेवुं ज्ञान बीजामां नथी अने जे अतिशे माळा, मानसी पूजा, भजन, स्मरण करतो होय ते आ ठेकाणे भक्ति कही छे ते भक्ति बीजाने विषे न देखे तो एम जाणे जे, मारा जेवी भक्ति बीजा करता नथी हुं सर्वेथी झाझी भक्ति करुं छुं, एवी रीते मान आवे ते जो अतिशे मोटा सत्पुरुषनी सेवा ने समागमे करीने श्रीजीमहाराजनो यथार्थ महिमा समजे तो मान टळी जाय ने एने विषे श्रीजीमहाराज प्रसन्न थइने साक्षात् विराजमान रहे एवा मोटा गुण आवे छे.

४ प्र० (३/२ बीजा प्रश्नमां) अतिशे प्रेम लक्षणा भक्तिए करीने अमे एने वश वर्तता होइए तेनुं मान आवे ते मोटी खोटय छे एम कह्युं ते भक्ति कई जाणवी ? अने श्रीजीमहाराज एने वश केवी रीते वर्तता हशे ? अने अंतर्दृष्टिवाळाने मान केवी रीते आवतुं हशे ?

४ उ० जे भक्त प्रेममग्न थइने, रोमांचित गात्र ने गद्गद् कंठ थइने, श्रीजीमहाराजनी मानसी पूजा, ध्यान भजन करे तेवी भक्तिने आ ठेकाणे प्रेम लक्षणा कही छे अने एवा भक्तना अंतरने विषे श्रीजीमहाराज सर्वे क्रियामां दर्शन आपता होय ते वश वर्ते छे एम जाणवुं पण एने पोताना आत्माने विषे श्रीजीमहाराजनो साक्षात्कार नथी थयो ते ने सत्संग दिव्य जणाणो नथी, तेथी बीजाथी पोताने सरस माने छे ते मानरूप खोटय छे, अने साक्षात्कारवाळाने तो माननो संभवज नथी अने अंतर्दृष्टिवाळाने मान आवे छे एम कह्युं छे ते पण ध्याने करीने अंतरने विषे मूर्ति देखे छे पण जीवात्माने

विषे श्रीजीमहाराजनो साक्षात्कार नथी, माटे बीजा ध्यान न करता होय तेनाथी पोताने सरस माने, माटे एने लगारेक मान आवे छे एने पण आत्माने विषे साक्षात्कार थाय तो मान न आवे.

५ प्र० (३/४ त्रीजा प्रश्नमां) अमारी उपासनाने बळे करीने सिद्ध, सर्वज्ञने देवता थाय छे, तथा परमपदने पामे छे ते केवा थाय ते सिद्ध, सर्वज्ञ ने देवता कहेवाय, ने परमपदने पाम्या कहेवाय ?

५ उ० प्रकृति पुरुषना कार्यमां तथा ब्रह्मकोटी तथा मूळ अक्षरकोटीनां ऐश्वर्यमां क्यांई मोह पामे नहि ने मायिक विषय तथा अक्षरादिकनां ऐश्वर्य तेने विषे समभाव थइ जाय तेने आ ठेकाणे सिद्ध कह्या छे. अने एक ठेकाणे रह्याथका सर्वत्र देखे ने सर्वना अंतरने विषे प्रवेश करे अने सर्वना अंतरनुं जाणे तेने सर्वज्ञ कह्या छे, अने मूळ अक्षरनी पदवीने पामे तेने देवता कह्या छे, अने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां रहे ते परमपद कह्युं छे.

६ प्र० (३/४ प्रश्नमां) जेटली इष्टदेवने विषे निष्ठा होय तेटलोज आत्मा अनात्मानो विवेक थाय छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं तेनो शो हेतु हशे ?

६ उ० (प्र० ३/४ मां) शरीर शरीरी भेद कह्यो छे तेवी रीते आ ठेकाणे आत्मा अनात्मा एटले शरीर शरीरी भावनो विवेक समजवानुं कह्युं छे ते जे रामचंद्रजीना उपासक होय ते रामचंद्रजीने परमात्मा समजे अने तेमनो प्रकाश ते आत्मा समजाय अने पोताने पण ए तेजरूप समजे, माटे तेमनी उपासनाने बळे एटलीज आत्मनिष्ठा सिद्ध थाय अने तेमना तेजथी ने पोताथी जे ओरुं रह्युं ते सर्व अनात्मा समजाय. अने तेमज मूळ पुरुषना उपासक मूळ पुरुषने परमात्मा समजे अने तेमना तेजने आत्मा समजाय अने पोताने एमना तेजरूप माने एटली आत्मनिष्ठा प्राप्त थाय अने तेथी ओरा जे प्रधान पुरुषादिक ते सर्व अनात्मा समजाय. अने वासुदेव ब्रह्मनी उपासना मळी होय ते तेमने परमात्मा समजे अने तेमना तेजने आत्मा समजीने ते रूप पोताने माने एटली आत्मनिष्ठा प्राप्त थाय अने ते ब्रह्मथी ओरा मूळ पुरुषादिक सर्वने अनात्मा समजे. अने मूळ अक्षरना उपासक मूळ अक्षरने परमात्मा समजे अने तेना तेजने आत्मा समजे ने ते आत्मारूप पोताने समजे अने वासुदेवादिक सर्व अनात्मा समजाय. अने श्रीजीमहाराजनो उपासक श्रीजीमहाराजनी उपासनाने बळे श्रीजीमहाराजना तेजने आत्मा समजे अने पोताने ए आत्मारूप माने त्यारे संपूर्ण आत्मनिष्ठानी सिद्धि थाय अने तेथी ओरा मूळ अक्षरादिक सर्वे अनात्मा समजाय, एवी रीते जे जे इष्ट देवनी उपासना थाय ते ते इष्टदेवना तेजरूप पोताने समजे एटलोज आत्मा अनात्मानो विवेक थाय एम समजवुं.

७ प्र० (का० ७ ना ४/५ चोथा प्रश्नमां, म० ३/४ मां, ३/१० मां, व० १३ ना बीजा प्रश्नमां तथा अ० १ ना पहेला प्रश्नमां) एमां सिद्धदशा कही ते केवी जाणवी ?

७ उ० (म० १ मां) सिद्धदशा कही ते आमां सिद्ध कह्या तेवी जाणवी अने [का० ७ मां तथा अ० १ मां तथा म० २० मां] कही ते सरखी छे अने

[व० १३ मां] सिद्ध दशा कही ते आमां सर्वेज्ञ कह्या तेना जेवी जणवी. आमां परमपद सर्वेथी अधिक छे.

८ प्र० प्रेम लक्षणा भक्ति आवे तो सर्वे साधन संपूर्ण थाय एम कह्युं ते केवी जाणवी ?

८ उ० जगत संबंधी सर्वे विषय हराम करीने पांचे प्रकारे श्रीजीमहाराज साथे ओडाणा होय ने श्रीजीमहाराज विना क्षण मात्र रहेवाय नहि एवी प्रेमलक्षणा भक्ति आ ठेकाणे कही छे.

९ प्र० सर्व ब्रह्मांडोनो प्रलय थइ जाय छे त्यारे प्रगट भगवान जे अमे ते अमे एकज रहीए छीए एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते प्रलय तो मूळ पुरुषना कार्यनो थाय छे एम (प्र० १२ना बीजा प्रश्नमां) कह्युं छे अने मूळ पुरुष इश्वर ते वासुदेव ब्रह्मने समीपे जइने रहे छे एम तमे एज वचनामृतना (२ त्रीजा प्रश्नोत्तरमां) कह्युं छे. तेम जोतां तो इश्वरकोटी ब्रह्मकोटी, अक्षरकोटी तथा मुक्तकोटी ए सर्वे अचळ रहे छे, ने अमे एकलाज रहीए छीए एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

९ उ० अमे एकज भगवान रहीए छीए एम कह्युं ते उत्पत्ति, स्थितिने प्रलय ए सर्वेकाळे भगवान तो अमे एकज छीए पण अमे जेनी जेनी पासे उत्पत्ति, स्थितिने प्रलय करावीए छीए ते कोइ भगवान नथी भगवान तो अमे एकज छीए एम कह्युं छे, पण अमारा विना बीजुं कांइ रहेतुं नथी एम कह्युं होय तो [प्र० ना ३७/३ मां] प्रलयकाळे अमे तथा अमारा मुक्त सदा साकार रहीए छीए एम कह्युं छे अने आ ठेकाणे मुक्तने पण गण्या नथी, माटे जो अमारा विना बीजुं कोइ रहेतुं नथी एम कह्युं होय तो तो आ वचनामृतमां पोताना मुक्तोने पोताना भेळा गणवा जोइए, माटे अमे एकज रहीए छीए एम आ ठेकाणे कहेवुं नथी आ ठेकाणे तो पोतानुं भगवानपणुं कहेवुं छे जे उत्पत्ति, स्थितिने प्रलयकाळे अमे एकज भगवान छीए पण अमारा विना बीजो कोइ भगवान नथी एम पोतानुं भगवानपणुं तथा कर्तापणुं कह्युं छे, अने मुक्तकोटी, अक्षरकोटी, ब्रह्मकोटी, तथा मूळपुरुष इश्वरकोटी ते तो सदा अचळ रहे छे.

१० प्र० पापी जीव अंतकाळे स्वामिनारायण नामनुं उच्चारण करे एटलामांज श्रीजीमहाराजनो ब्रह्ममहोल जे अक्षरधाम तेने पामे त्यारे आज्ञापाळे तेने शो विशेष छे ?

१० उ० पापी जीवने अंतकाळे श्रीजीमहाराजनुं नाम उच्चारण करवानुं सुझेज नहि पण श्रीजीमहाराजे उच्छव समैया कर्या होय ते तेना देखवामां आवेला होय ते एना अंत वखते सांभरी आवे के ते वखते संत के सत्संगी आवी चडया होय ने तेमणे उपदेश करीने श्रीजीमहाराजनुं नाम एना मुखथकी उच्चारण कराव्युं होय तेज वखते तेनो देह पडे तो श्रीजीमहाराज पोताना धाममां ए जीवने लइ जाय, पण एवो योग क्वचित् बने पण सर्वेने एवो योग न आवे, केम जे पापी जीव तो एम जाणे जे हुं पापी छुं ते मारुं कल्याण नहिज थाय एम एनी मतिमां रह्युं छे, माटे तेनुं कल्याण न थाय अने भक्तनी मतिमां तो मारुं कल्याण सहज रह्युं छे एम होय माटे तेनुं कल्याण थाय, माटे

कल्याण तो श्रीजीमहाराजना आश्रये करीनेज थाय छे अने प्रसन्नता पण श्रीजीमहाराजनी आज्ञा पाळवाथीज थाय छे, माटे जे कोइ स्वामिनारायणना नाम उच्चारणथी पाप बळी जाय एम जाणीने आज्ञा लोपे तेतो महा अधम, नास्तिक अने चंडाळ छे ने एनुं कल्याण थातुं नथी ने एना संग करनारनुं पण कल्याण थातुं नथी.

११ प्र० नरनारायणना आपेला अन्न करीने ध्रुवजीए यक्ष मार्या एम कह्युं ते नरनारायण किया जाणवा ? अने प्रगट नरनारायण कह्या ते किया जाणवा ?

११ उ० ध्रुवजीने मळया ते नरनारायण जे बदरिकाश्रमने विषे दर्शन आपे छे तेमने कह्या छे अने प्रगट नरनारायण पोताने कह्या छे.

१२ प्र० ध्रुव, नरनारायण अन्न तथा यक्षना दृष्टांतनो सिद्धांत शो हशे ?

१२ उ० ध्रुवजीने ठेकाणे भक्त जाणवा अने नरनारायणने ठेकाणे श्रीजीमहाराजने जाणवा अने अन्नने ठेकाणे श्रीजीमहाराजनुं ज्ञान जाणवुं अने यक्षने ठेकाणे काम क्रोधादिक अंतरशत्रु जाणवा ते श्रीजीमहाराजना स्वरूपनुं यथार्थ ज्ञान थयुं होय तो अंतरशत्रुनो नाश करे एम जाणवुं. ॥५६॥

संवत् १८७६ ना फागण शुदि २ द्वितीयाने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां साधुनी जायगाने विषे विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेने प्रश्न उत्तर करतां आवडे ते एक एक प्रश्न

१ पूछो. पछी मुक्तानंदस्वामीए पूछयुं जे, (१) हे महाराज ! मोक्षनुं असाधारण कारण ते शुं छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान ने भगवाननुं महात्म्य जाणवुं ए बे असाधारण मोक्षना हेतु छे. (१) १

२ पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पूछयुं जे, (२) भगवानने विषे जे स्नेह तेनुं शुं रूप छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, स्नेहनुं रूप तो ए छे जे स्नेहमां कोइ जातनो विचार न जोइए, अने ज्यारे जे गुण विचारीने स्नेह करे ते तो ज्यारे अवगुण देखे त्यारे तेनो स्नेह तुटी जाय, माटे हेत तो जेम थयुं होय तेमने तेम रहेवा देवुं पण विचार करीने वारे वारे स्थापन उत्थापन करवुं नहि ने मूढपणे भगवानने विषे हेत करवुं ने जे गुणने विचारीने हेत करे ते हेतनो विश्वास नहि, माटे हेत तो जेम देहना संबंधी संगाथे छे तेवुं भगवानने विषे हेत करवुं ने ए हेतने मूढपणानुं हेत कहीए; अने भगवाननुं महात्म्य जाणीने जे हेत थाय छे ते तो बीजीज रीतनुं छे एम जाणवुं. (२) २

३ पछी शिवानंदस्वामीए पूछयुं जे, (३) सत्संगमां रहेवानो खप छे तो पण कोइक अयोग्य स्वभाव छे ते केम टळतो नथी ? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जे स्वभाव

सत्संगमां अंतराय करतो होय ते उपर जेने अभाव न आवे त्यां सुधी एने क्यां सत्संगमो पुरो रूप छे ? ने ते स्वभावने पण क्यां पुरो शत्रु जाण्यो छे ? त्यां दृष्टांत छे, जेम कोइक पुरुष आपणो मित्र होय ने तेज पुरुषे आपणा भाइने मारी नाख्यो होय पछी ते साथे मित्रपणुं न रहे अने तेनुं माथुं कापवाने तैयार थाय, कां जे मित्र करतां भाइनो संबंध अधिक छे, तेमजो एने पोतानो स्वभाव वर्त्तमानमां भंग पडावीने सत्संगथी विमुख करे एवो छे, तोय पण एनी उपर वैरभाव आवतो नथी अने ते स्वभाव उपर रीस चढती नथी तो जो एने सत्संगमां पुरुं हेत नथी अने जेवुं भाइमां हेत मनुष्यने छे तेवुं जो सत्संग उपर हेतहोय तो भुंडा स्वभावने तत्काळ टाळी नाखे,आ माटे जे जीवतो अति समर्थ छे, केमजे मनने इंद्रियो ए सर्वे तो क्षेत्र छे अने जीव तो एनो क्षेत्रज्ञ छे, माटे जे करे ते थाय. (३) इति वचनामृतम् ॥५७॥ ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (३) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, अमारा स्वरूपनुं ज्ञान ने अमारुं महात्म्य ए बे मोक्षना असाधारण हेतु छे [१] बीजामां देहना संबंधीमां हेत छे तेवुं अमारे विषे हेत थाय ते हेत मूढपणानुं छे अने अमारो महिमा जाणीने हेत करे ते विशेष छे. (२) त्रीजामां सत्संगमां हेत राखे तो अयोग्य स्वभाव टळी जाय छे. (३) वातो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां अमारुं ज्ञान ने महिमा मोक्षना हेतु छे एम कह्युं ते केवी रीते जाणवा ?

१ उ० सर्वे क्रियाने कर्त्ताथका अकर्त्ता जाणवा ने सर्वेना संगीथका असंगी ने निर्लेप जाणवा, अने जीवोना कल्याणने अर्थे मनुष्यरूपे देखाता होय तो पण जेवा अक्षरधाममां दिव्य छे तेवा दिव्य जाणवा ते श्रीजीमहाराजना स्वरूपनुं ज्ञान कहेवाय. आ ज्ञाननुं रूप (का० ७ ना चोथा प्रश्नमां) छे. अने महिमानुं लक्षण [प्र० १५ ना पहेला प्रश्नोत्तरमां] कर्युं छे.

२ प्र० बीजा प्रश्नमां गुण विचारीने स्नेह करे तो अवगुण देखे त्यारे हेत मटी जाय एम कह्युं अने [सा० २ ना पहेला प्रश्नमां] गुणे करीने हेत थाय छे ते सदाय रहे छे एम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० आमां देहबुद्धि सहित हेत कह्युं छे ते ज्यारे श्रीजीमहाराजनां मनुष्य चरित्र देखे अथवा सांभळे त्यारे अवगुण आवे ने हेत मटी जाय अने [सा० २ मां] श्रीजीमहाराजनो दिव्यभावे सहित महिमा जाणीने हेत कर्युं होय ते श्रीजीमहाराजनां मनुष्य चरित्र जोइने अथवा सांभळीने पण न टळे एम कह्युं छे. ॥५७॥

संवत् १८७६ ना फागण शुदि ५ पंचमीने दिवस संध्या आरतीने समे स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां जे परम-

हंसनी जायगा त्यां विराजमान हता ने सर्वे धोळां वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे प्रश्न करो. पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे,

१ (१) हे महाराज ! ज्यारे भजन स्मरण करवा बेसे त्यारे भगवानना भक्तना अंतरमां रजोगुण तमोगुणना वेग आवे त्यारे भजन स्मरणनुं सुख आवतुं नथी ते ए गुणना वेग केम टळे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ए गुणनी प्रवृत्तिना कारण तो देह, कुसंग ने पूर्व संस्कार ए त्रण छे. तेमां देहने योगे करीने जे गुण प्रवर्त्या होय ते तो आत्मा अनात्माना विचारे करीने टळी जाय छे ने कुसंगे करीने प्रवर्त्या होय ते संतने संगे करीने टळे छे ने जे रजोगुण तमोगुणना वेग ए बेये करीने पण न टळे ते तो कोइ पूर्वना भुंडा संस्कारने योगे करीने छे, माटे ए टळवा घणा कठण छे. (१) १

२ पछी आनंदानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (२) पूर्वना संस्कार मलीन होय ते केम टळे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, अतिशे जे मोटा पुरुष होय तेनो जे उपर राजीपो थाय तेना गमे तेवा मलीन संस्कार होय तो नाश पामे ने मोटा पुरुषनो राजीपो थयो होय तो रांक होय ते राजा थाय ने गमे तेवां भुंडां प्रारब्ध होय तो रुडां थाय ने गमे तेवुं तेने माथे विघ्न आवनारुं होय ते नाश थइ जाय. (२) २

३ पछी वळी आनंदानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (३) शो उपाय करे तो मोटा पुरुष राजी थाय ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, प्रथम तो मोटा संत साथे निष्कपटपणे वर्ते ने काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, आशा, तृष्णा, अहंकार, इर्ष्या ए सर्वेनो त्याग करे अने संतनो गुलाम थइने रहे ने अंतरमां मान टळे भावे रहे, पण देहे करीने सर्वेने नमतो रहे तो एने उपर मोटा संत राजी थाय छे. (३) ३

४ पछी महानुभावानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (४) हे महाराज ! सत्संगमां रहेते थके जेटला अवगुण होय ते सर्वे नाश पामी जाय अने दिन दिन प्रत्ये भगवानमां भक्ति वृद्धि पामती जाय एनो शो उपाय छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, मोटा पुरुषनो जेम जेम गुण ग्रहण करतो जाय तेम तेम एनी भक्ति वृद्धि पामती जाय ने अतिशे जे मोटा होय तेने जो अतिशे निष्कामी जाणे तो पोते कुतरा जेवो कामी होय ते निष्कामी थाय अने जो मोटा पुरुषने विषे कामीपणानो दोष परठे तो गमे तेवो निष्कामी होय तोय पण अतिशे कामी थाय अने मोटाने विषे क्रोधी लोभीपणुं परठे तो पोते क्रोधी लोभी थाय ने जो मोटा पुरुषने अतिशे निष्कामी, निर्लोभी, निःस्वादी, निर्मानी, निःस्नेही समझे तो पोते पण ए सर्वे विकारथी रहित थइ जाय ने पाको हरिभक्त थाय ते पाका हरिभक्तनुं शुं लक्षण छे तो सारा जे शब्द, स्पर्श, रूप, रस ने गंध ए पंच

विषय तेनो जेम दुःखदायक वस्तुनो सहेजे अभाव रहे छे, तेम जेने सहेजे अभाव रहे छे ने एक परमेश्वरना स्वरूपने विषे अचळ निष्ठा वर्ते छे तेने पाको हरिभक्त जाणवो, (४) ते एवो पाको हरिभक्त थयानो तो एज उपाय छे जे, परमेश्वरना दासनो गुलाम ४
थइने रहे ने एम जाणे जे, ए सर्वे भक्त मोटा छे ने हुं तो सर्वथी न्यून छुं, एम जाणीने हरिभक्तनो दासानुदास थइ रहे ने एवी रीते जे वर्ते तेना सर्व विकार नाश पामे ने तेने दिवसे दिवसे ज्ञान वैराग्य भक्ति आदिक जे शुभ गुण ते वृद्धि पामता जाय छे. (५) इति वचनामृतम् ॥५८॥ ५

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [४] छे. तेमां पहेलामां देह कुसंगने पूर्व संस्कार ए त्रण गुणनी प्रवृत्तिना हेतु कह्या छे अने देहने योगे प्रवर्त्या होय ते गुण आत्म विचारे करीने टळे छे अने कुसंगने योगे प्रवर्त्या होय ते गुण संतने संगे करीने टळे छे. (१) बीजामां मोटा पुरुषना राजीपाथी मलीन संस्कार टळे छे. (२) त्रीजामां मोटा पुरुषनी आगळ निष्कपटपणे वर्ते ने कामादिक शत्रुनो त्याग करे ने तेनो गुलाम थइने रहे ने मान टळे भावे एटले मान होय तो खरुं पण उपरथी देखावा दे नहि ए रीते रहे तो मोटा पुरुष राजी थाय [३] चोथामां मोटा पुरुषने निर्दोष जाणे तो सर्वे विकारथी रहित थइने अमारो पाको भक्त थाय. (४) ने अमारा दासनो गुलाम थइने रहे ने सर्वे भक्तथी पोताने न्यून माने ए पाका भक्तनुं लक्षण छे अने तेना शुभ गुण वृद्धि पामे छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (५) बाबतो छे.

१ प्र० बीजा प्रश्नमां संत, मोटा संतने अतिशे मोटा संत कह्या ते कोने जाणवा ?

१ उ० [व० ३ ना त्रीजा प्रश्नमां] विजळी जेवा कह्या छे ते संत जाणवा अने सिद्धदशा-वाळा मुक्तोने मोटा तथा अतिशे मोटा संत जाणवा.

२ प्र० रांक तथा राजा कह्या ते कोने जाणवा ?

२ उ० काळ कर्म मायाने आधीन होय तेने रांक जाणवा अने काळ कर्म मायाथी रहीत थइने स्वतंत्र थाय तेने राजा जाणवा.

३ प्र० भुंडां तथा रुडां प्रारब्ध कह्यां ते किया जाणवां ?

३ उ० पूर्वे अतिशे भुंडां देशकाळ संगादिके करीने अतिशे मलीन कर्म थइ गयां होय ते कर्मने भुंडां प्रारब्ध जाणवां. अने सर्वे कर्मथी ने वासनाथी रहित थवाय ने मोटा पुरुष राजी थाय एवी क्रिया करी होय ते रुडां प्रारब्ध जाणवां.

४ प्र० विघ्न ते शुं जाणवुं ? अने स्वरूप ते शुं जाणवुं ?

४ उ० कल्याणना मार्गथी पाडे एवा क्रोध मानादिक दोष होय तथा जेम भरतजीने मृगला साथे हेत थयुं एवो संग थइ जाय तथा कोइक सत्संगथी विमुख थनारो होय तेनी साथे हेत थइ जाय तो तेना भेळा विमुख थइने सत्संगथी बहार जवुं पडे एवुं होय

तथा जे पंचवर्त्तमान पाळता न होय तेने मुक्त जाणीने तेनी साथे हेत थइ जाय तथा कोइ मोटा पुरुषनो द्रोह थाय एवी क्रिया थइ जाय, एवां घणाक विघ्न छे ते मोटा पुरुष साथे जीव जोडयो होय तो ए विघ्न आववा दे नहि. अने स्वरूप ते श्रीजीमहाराजनी मूर्ति जाणवी पण स्वरूप तथा मूर्ति जुदी न जाणवी, जेम लिंबडानो वृक्ष कहीए ते लिंबडो ने वृक्ष जुदा नथी, तेम भगवाननुं स्वरूप कहीए अथवा भगवाननी मूर्ति कहीए अथवा भगवाननुं अंग कहीए ते भगवाननी मूर्ति के स्वरूप के अंग ते जुदां न समजवां; मूर्ति कहे तोय भगवान समजवा अने स्वरूप कहे तोय भगवान समजवा अने भगवाननुं अंग कहे तोय भगवान समजवा.

५ प्र० त्रीजा प्रश्नमां काम, मानादिक सर्वे विकारनो त्याग करे तोज मोटा पुरुष राजी थाय एम कह्युं अने उपर बीजा प्रश्नमां मोटा पुरुषनो राजीपो थाय तोज मलीन संस्कार नाश पामे एम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

५ उ० स्थूळ देहे करीने कामादिक विकारने विषे प्रवर्ते नहि ते त्याग कह्यो छे. माटे स्थूळदेहे कामादिक विकारनुं कह्युं न करे तेना उपर मोटा पुरुष राजी थाय अने मोटा पुरुषनो राजीपो थाय त्यारे एना जीवमांथी कामादिक सर्वे विकार मात्रनो नाश थइ जाय. ।। ५८ ।।

संवत् १८७६ ना फागण शुदि १४ चतुर्दशीने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ आथमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता, ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने माथे हीरकोरनुं धोळुं धोतीयुं बांध्युं हतुं ने ललाटने विषे चंदननी अर्चा विराजमान हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे प्रश्न उत्तर करो. पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न
१ पूछ्यो जे, [१] हे महाराज ! भगवानने विषे असाधारण प्रेम थाय तेनुं शुं कारण छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एक तो भगवाननो विश्वास होय जे, आ मुने मळ्या छे ते निश्चेज भगवान छे तथा आस्तिकपणुं होय तथा भगवाननां जे ऐश्वर्य तेने जाणे जे, आ भगवान छे ते ब्रह्ममहोल, गोलोक श्वेतद्वीप ए आदिक सर्वे धामना पति छे तथा अनंतकोटी ब्रह्मांडना पति छे तथा सर्वना कर्त्ता छे अने पुरुष, काळ, कर्म, माया, त्रण गुण, चोवीश तत्त्व, ब्रह्मादिक देव ए कोइने आ ब्रह्मांडना कर्त्ता जाणे नहि. एक भगवान पुरुषोत्तमनेज कर्त्ता जाणे अने सर्वना अंतर्यामी जाणे, एवी रीतनी समझण होता जे प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपने विषे निश्चय तेज परमेश्वरने विषे असाधारण स्नेहनुं कारण छे, (१)　　१

२ पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (२) एवो भगवाननो महिमा पण जाणतो होय अने असाधारण हेत न थाय तेनुं शुं कारण छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जो ए भगवाननो आवो महिमा जाणे छे तो एने भगवानने विषे असाधारण हेत छे पण ए जाणतो नथी, जेम हनुमानजीमां अपार बळ हतुं पण कोइकना जणाव्या विना जणाणुं नहि. अने जेम प्रलंबासुर बळदेवजीने लइ चाल्यो त्यारे पोतामां बळ तो अपार हतुं पण पोते जाणता नहोता पछी ज्यारे तपासीने जोयुं त्यारे जाण्युं तेवी रीते ए भक्तने भगवानने विषे असाधारण प्रीति तो छे पण जणाती नथी, (२) २

३ पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (३) ए प्रीतिनुं वळ जणायानुं शुं कारण छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, सत्संग ने सत्शास्त्रनुं श्रवण करते सते एने भगवानने विषे असाधारण प्रीति छे ते जणाइ आवे छे. (३) ३

४ पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पूछ्युं जे, [४] देश, काळ ने क्रिया ते भुंडा थाय अथवा भला थाय तेनुं कारण ते संग छे के कोइ बीजो छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, देश तो पृथ्वी कहेवाय ते सर्वे ठेकाणे सरखो छे अने काळ पण सरखो छे पण अतिशे जे मोटा समर्थ पुरुष होय ते जे देशमां रहेता होय तेने प्रतापे करीने भुंडो देश होय, भुंडो काळ होय, भुंडी क्रिया होय ते सर्वे सारां थइ जाय छे; ने अतिशे भुंडा पापी पुरुष जे देशमां रहेता होय तेने योगे करीने सारो देश, सारी क्रिया, ने सारो काळ होय ते पण भुंडा थइ जाय छे. माटे शुभ ने अशुभ एवा जे देश, काळ ने क्रिया तेना हेतु तो पुरुष छे ते पुरुष जो अतिशे समर्थ होय तो सर्व पृथ्वीमां देश, काळ ने क्रिया ते पोताना स्वभाव प्रमाणे प्रवर्तावे ने तेथी उतरतो होय तो एक देशमां प्रवर्तावे ने तेथी उतरतो होय तो एक गाममां प्रवर्तावे ने तेथी उतरतो होय तो एक फळी तथा एक पोतानुं घर तेमां प्रवर्तावे,एवी रीते शुभ अशुभ जे देश,काळ ने क्रिया तेना हेतु तो शुभ ने अशुभ ए बे प्रकारना पुरुष छे. (४) इति वचनामृतम् ॥५९॥ ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [४] छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारो निश्चय, विश्वास ने आस्तिकपणुं होय ने अमने सर्वकर्ता जाणे तो अमारे विषे असाधारण स्नेह थाय छे. (१) बीजामां अमारो महिमा जाणे छे तेने अमारे विषे प्रीति छे. (२) त्रीजामां सत्संग ने सत्शास्त्रनुं श्रवण करवुं ते प्रीति जणायानुं कारण छे. (३) चोथामां शुभ अशुभ देशकाळादिकना हेतु शुभ ने अशुभ बे प्रकारना पुरुष छे. (४) बाबतो छे. [आ देशकाळनुं रूप प्र० २९ ना पहेला प्रश्नोत्तरमां कर्युं छे.]

१ प्र० पहेला प्रश्नमां प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपने विषे निश्चय कह्यो ते प्रत्यक्ष केवी रीते समजवा ?

१ उ० श्रीजीमहाराजे संकल्प कर्यो जे, अमने मनुष्य जेवा देखो, त्यारे मनुष्यरूपे देखाया

अने पछे संकल्प कर्यो जे, अमने प्रतिमारूपे देखो, माटे आज प्रतिमारूपे प्रत्यक्ष छे.

२ प्र०प्रतिमारूपे प्रत्यक्ष कहीए त्यारे तो सर्वे अवतारोनी प्रतिमाओ छे तेने परोक्ष केम कहे छे ?

२ उ० प्रगट थवे करीने अने अंतर्धान थवे करीने प्रत्यक्ष ने परोक्ष कहेता नथी, प्रत्यक्ष तो उपरीने कहे छे अने जे एना नीचे होय तेने परोक्ष कहे छे, जेम परशुरामनुं ऐश्वर्य रामचंद्रजीए लइ लीधुं त्यारे परशुराम परोक्ष कहेवाया अने रामचंद्रजी प्रत्यक्ष कहेवाया, माटे जे बीजानुं ऐश्वर्य ढांकीने वर्ते ते प्रत्यक्ष कहेवाय. अने जेनु ऐश्वर्य ढंकाइ जाय ते परोक्ष कहेवाय ते जेम व्यापकानंदस्वामीने तथा अभय राजा आदिकने पोतानी मूर्तिमां सर्वे अवतार लीन करी देखाडया एम पोतानुं अलौकिक ऐश्वर्य प्रताप जणावीने पोतानुं सर्वोपरिपणुं जणाव्युं छे, माटे श्रीजीमहाराज सदा प्रत्यक्ष छे पण आगळ ते परोक्ष ने पछीथी आवे ते प्रत्यक्ष एम न समजवुं. सर्वोपरि होय तेज प्रत्यक्ष कहेवाय. ने परतंत्र होय ते आगळथी आवे अथवा पाछळथी आवे तो पण ते परोक्ष कहेवाय, माटे श्रीजीमहाराज सर्वेना उपरी छे तेमनी प्रतिमाने साक्षात् प्रत्यक्ष जाणीने दिव्यभाव लावीने निश्चय करवो तो मोक्ष थाय.

३ प्र० त्रीजा प्रश्नमां सत्‌शास्त्र कह्यां ते कियां जाणवां ?

३ उ० प्रत्यक्ष भगवान तथा एमना मुक्तनुं साकारपणुं प्रतिपादन करेलुं होय ने एमना चरित्रनुं तथा एमणे कहेला धर्मनुं जेमां वर्णन होय ते सत्‌शास्त्र जाणवां. अने ए शास्त्रने वांचवा सांभळवाथी श्रीजीमहाराजने विषे प्रीति थाय छे ने ते प्रीतिनुं बळ जणाइ आवे छे. ॥ ॥ ५९ ॥

संवत् १८७६ ना फागण वदि १ प्रतिपदाने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां परमहंसनी जायगाने विषे विराजमान हता, ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती अने मस्तक उपर श्वेत पाघ बांधी हती ने ते पाघने विषे धोळा पुष्पना तोरा विराजमान हता ने कंठमां धोळा पुष्पना हार विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे,(१) सर्वे साधन करतां वासना टाळवी ए साधन मोटुं छे. ते वासना टाळवानी एम विक्ति छे जे, शब्द स्पर्श, रूप, रसने गंध ए जे पंच विषय तेने विषे जेटली पोताने तृष्णा होय तेनो विचार करवो जे, मारे जेटली भगवानने विषे वासना छे, तेटलीज जगतने विषे छे के ओछी वधु छे ? तेनी परीक्षा करवी ने जेटली भगवाननी वात सांभळवामां श्रोत्र इंद्रि लोभाती होय तेटलीज जगतनी वात सांभळवामां लोभाती होय तो एम जाणवुं जे, भगवानमां ने जगतमां बरोबर वासना छे. एवीज रीते शब्द, स्पर्श, रूप, रस ने गंध ए सर्वे

विषयनो तपास करवो, अने ज्यारे एवी रीते तपास करतो करतो जगतनी वासनाने घटाडतो जाय ने भगवाननी वासनाने वधारतो जाय, तेणे करीने एने पंच विषयने विषे समबुद्धि यइ जाय छे ने समबुद्धि थया पछी निंदा ने स्तुति सरखां लागे अने सारो स्पर्श ने भुंडो स्पर्श सरखो लागे, तेमज सारुं रूप ने भुंडुं रूप तथा बाळ यौवन ने वृद्ध एवी जे स्त्रियो तथा कचरो ने कंचन ए सर्वे सरखुं भासे,तेमज सारा ने भुंडा जे रस ने गंध ते पण सरखा भासे एवी रीते स्वाभाविकपणे वर्ताय, त्यारे जाणीए जे, वासना जिताणी, अने वासना रहित वर्तवुं ए एकांतिकनो धर्म छे, अने वासना जराके रही जाय तो समाधिवाळो होय अने नाडी प्राण तणातां हो तोयपण वासना समाधिमांथी पाछो खेंची लावे छे, माटे वासना टाळे तेज एकांतिक भक्त छे, (१) १

२ पछी मुक्तानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (२) वासना टळ्यानो शो उपाय छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एक तो आत्मनिष्ठानी दृढता जोइए अने बीजुं पंचविषयनुं तुच्छपणुं जाण्युं जोइए अने त्रीजुं भगवान्नुं अतिशे महात्म्य जाण्युं जोइए जे, भगवान वैकुंठ, गोलोक, ब्रह्ममहोल ए सर्वे धामना पति छे, माटे एवा भगवानने पामीने तुच्छ विषयना सुखमां हुं शुं प्रीति राखुं ? एवी रीते भगवानना महिमानो विचार करे अने वळी एम विचार करे जे, भगवानने भजतां थकां पण जो कांइक खोट्य रही जाशे ने कदापि जो भगवानना धाममां नहि जवाय ने इंद्रलोक तथा ब्रह्मलोकने विषे भगवान मुकशे तोय पण आ लोकना करतां तो त्यां कोटी गणां वधु सुख छे, एवो विचार करीने पण आ संसारना तुच्छ सुख थकी वासनाए रहित थावुं. अने एवी रीते भगवाननो महिमा जाणीने वासनाए रहित थाय छे,त्यारपछी एम जणाय छे जे, मारे कोइ काळे वासना हतीज नहि अने ए तो मुने वचमां कांइक भ्रम जेवुं थयुं हतुं पण हुं तो सदा वासनाए रहित छुं एवुं भासे छे. (२) अने आवी रीतनो जे एकांतिक धर्म ते तो २ जे एवा निर्वासनिक पुरुष होय अने जेने भगवानने विषे स्थिति थइ होय तेने वचने करीनेज पमाय, पण ग्रंथमां लखी राख्यो होय तेणे करीने नथी पमातो. अने कोइक सांभळीने तेवी वात कहेवा जाय तो कहेतां पण आवडे नहि, माटे जेने एकांतिकना धर्ममां स्थिति होय ते थकीज एकांतिकनो धर्म पमाय छे. (३) इति वचनामृतम् ॥६०॥ ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे, तेमां पहेलुं कृपावाक्य छे तेमां श्रीजीमहाराजे वासना टाळे तेने एकांतिक भक्त कह्यो छे, (१) बीजामां आत्मनिष्ठा, वैराग्य, ने महात्म्य ए त्रण वासना टाळवाना उपाय कह्या छे. [२] अने एकांतिक धर्ममां स्थिति थइ होय ते थकीज एकांतिक धर्म पमाय छे एम कह्युं छे. [३] वावतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां वासना टाळवी ते सर्वेथी मोटुं साधन कह्युं ते वासनानुं शुं रूप हशे ?

१ उ० आमां मायिक विषयमां प्रीति रहे तेने वासना कही छे ते वासनाने [प्र० ११ ना पहेला प्रश्नमां, ३८ ना पहेला प्रश्नमां, ७८ ना तेवीशमां प्रश्नमां, लो. १६ ना बीजा प्रश्नमां, म, २५ ना पहेला प्रश्नमां, तथा ४७/२ मां] मायिक पंच विषयमां आसक्तिरूप वासना कही छे. अने [प्र० ५८ ना बीजा प्रश्नमां, का. १२ ना त्रीजा प्रश्नमां तथा म. ७ ना बीजा प्रश्नमां] विकार नामे कही छे, अने (छे. १८ ना बीजा प्रश्नमां) पूर्व कर्मरूप वासना कही छे, तथा (२० ना पहेला प्रश्नमां) पूर्वकर्मने स्वभाव प्रकृतिने वासना ए त्रण नामे कहेल छे. अने (छे. १४ ना पहेला प्रश्नमां तथा ३८ ना बीजा प्रश्नमां) स्त्रीना राग संबंधी कामरूपी वासना कही छे अने (प्र. ७३ ना त्रीजा प्रश्नमां] ब्रह्मचर्यमां कसररूपी वासना कही छे.

२ प्र० ए वासना टाळवानो उपाय शो हशे ?

२ उ० [प्र. ३८ ना पहेला प्रश्नमां] श्रीजीमहाराजनां चरित्र संभारवां, ने मुक्तोनो समागम करवो, ए बे उपाय बताव्या छे अने (५८ ना बीजा प्रश्नमां) मोटा पुरुषना एटले मुक्तना समागमथी ने तेमना राजीपाथी टळे छे एम कह्युं छे अने (७३ ना ५/८ पांचमां प्रश्नमां) आत्मनिष्ठा अने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनुं यथार्थ ज्ञान, वैराग्य ने श्रीजीमहाराजने ने मुक्तने निर्लेप जाणीने तेमने मन अर्पे तो उर्ध्वरेता थवाय अने सर्व विकार मात्र टळी जाय ए उपाय बताव्यो छे अने (सा० ५ ना पहेला प्रश्नमां) श्रद्धा तथा श्रीजीमहाराजना ने एमना भक्तना एटले मुक्तना वचनमां विश्वास तथा श्रीजीमहाराजमां प्रीति तथा महात्म्य ए चार साधने करीने वासना निवृत्ति थइ जाय एम कह्युं छे; अने [का० १२ ना त्रीजा प्रश्नमां] विश्वास राखीने प्रीतिए सहित श्रीजीमहाराजनी वात सांभळवी ए उपाय बताव्यो छे. अने (लो० १६ ना बीजा प्रश्नमां) आत्मनिष्ठा, वैराग्य, ब्रह्मचर्यादिक धर्मने महात्म्ये सहित भक्ति ए चार उपाय बताव्या छे अने (म० ७ ना बीजा प्रश्नमां) अतिशे मोटा संतनी सेवा करवी ते उपाय बताव्यो छे. अने [२५ ना बीजा प्रश्नमां) श्रीजीमहाराजनी ने एमना संतनी सेवा ए उपाय बताव्यो छे. अने [४७/३ मां] संतना समागमरूप उपाय बताव्यो छे अने (छे. १४ ना २/३ बीजा प्रश्नमां) पवित्र देश, काळ, क्रिया ने संग ए चार उपाय बताव्या छे. अने [१८ ना त्रीजा प्रश्नमां] सत्पुरुषनां संगरूपी उपाय बताव्यो छे आमां संतनो एटले मुक्तनो समागम मन, कर्म, वचने निष्कपटपणे करवो ते सर्वथी श्रेष्ठ उपाय छे.

३ प्र० बीजा प्रश्नमां आत्मनिष्ठा कही ते केवी जाणवी ?

३ उ० त्रण देहथी नोखो पोताना आत्माने ब्रह्मरूप मानवो ए आत्मनिष्ठा आ ठेकाणे कही छे.

४ प्र० पंच विषयनुं तुच्छपणुं जाण्यानो शो उपाय हशे ?

४ उ० (प्र० १५ ना पहेला प्रश्नमां) महिमा कह्यो छे एवो श्रीजीमहाराजनो महिमा जाणे त्यारे श्रीजीमहाराजनुं सुख सर्वथी अधिक जणाय त्यारे मायिक विषय तुच्छ थइ जाय छे. ॥ ६० ॥

संवत् १८७६ ना फागण वदि ३ श्रीजने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदिरनी आगळ लिंबडाना वृक्ष नी हेठे ओटाने विषे ढोलिया उपर विराजमान हता, ने हीरकोरनुं श्वेत धोतीयुं मस्तके बांध्युं हतुं ने श्वेत पछेडी ओढी हती ने श्वेत खेस पहेर्यो हतो ने कंठमां श्वेत पुष्पना हार धारण कर्या हता ने श्वेत पुष्पना तोरा पाघमां डाबी कोरे लटकता हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पूछयो जे, (१) काम, क्रोध, लोभ, तथा भय एमने योगे करीने पण धीरज डगे नहि तेनो शो उपाय छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, हुं देह नहि, हुं तो देहथी नोखो ने सर्वनो जाणनारो एवो जे आत्मा ते छुं, एवी जे आत्मनिष्ठा ते ज्यारे अतिशे दृढ थाय, त्यारे कोइ रीते करीने धीरज डगे नहिं ने आत्म निष्ठा विना बीजा अनेक उपाय करे तो पण धीरज रहे नहि. (१) १

२ पछी ब्रह्मानंदस्वामीए पूछयुं जे, (२) आत्मनिष्ठा होय ते अंतसमे केटलीक सहाय करे छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेम नदी तरवी होय त्यां तो जेने तरतां आवडतुं होय ते तरी जाय ने जेने तरतां न आवडतुं होय ते तो उभो थइ रहे पण ज्यारे समुद्र तरवो होय त्यारे तो ते बेयने वहाणनुं काम पडे छे, तेम टाढ, तडको, भूख, तरस, मान, अपमान, सुख, दुःख ते रूपी जे नदी तेने तो आत्मनिष्ठावाळो होय ते तरी जाय पण मृत्युसमो तो समुद्र जेवो छे माटे त्यां तो आत्मनिष्ठावाळो होय तथा वगर आत्मनिष्ठावाळो होय ए बेयने भगवाननी उपासनारूपी वहाणनुं काम पडे छे, माटे अंतकाळे तो भगवाननो दृढ आशरो होय तेज काममां आवे छे पण अंत समे आत्मनिष्ठा कांइ काममां आवती नथी, ते सारु भगवाननी उपासनाने दृढ करीने राखवी. [२] २

३ पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पूछयुं जे, (३) भगवाननो भक्त होय तेने सिद्धियो आदी आवे छे ते जेने भगवानना निश्चयमां डगमगाट होय तेनेज आवे छे के निश्चयवाळाने आवे छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, सिद्धियो तो जेने परिपक्व भगवाननो निश्चय होय तेनेज आवे छे ने बीजाने तो सिद्धियो घणी दुर्लभ छे अने ए सिद्धियोने पण ए भक्तनी परीक्षा लेवा सारु भगवानज प्रेरे छे जे एने हुं उपर घणुं हेत छे के सिद्धियो उपर घणुं हेत छे ? एवी रीते भगवान पोताना भक्तनी परीक्षा जुवे छे पछी जो ए पाको भक्त होय ने भगवान विना बीजुं कांइ न इच्छे ने निर्वासनिक एवो एकांतिक भक्त होय तो भगवान पोते ते भक्तने वश थइ जाय छे, जेम वामनजीए बळीराजानुं त्रिलोकीनुं राज्य लइ लीधुं अने चौदलोकमां बे पगलां कर्या अने त्रीजा पगला सारु ते बळीराजाए

पोतानुं शरीर आप्युं, एवी रीते श्रद्धासोत भगवानने सर्वस्व आप्युं तोय भगवाने एने बगर वांके बांध्यो, तो पण भक्ति थकी पछ्यो नहि त्यारे एवी पोतानी अनन्य भक्ति जोइने पोते भगवान ते बळीना बंधनमां आवता हवा अने भगवाने तो बळिराजाने क्षणमात्र बांध्यो हतो अने भगवान तो एनी भक्तिरूपी दोरीए करीने बंधाणा छे ते आज दिवस सुधी पण अखंड बळिने दरवाजे उभा छे अने बळिराजानी दृष्टियकी पळमात्र पण भगवान छेटे थाता नथी, एवी रीते आपण पण बीजी सर्वे वासना टाळीने ने भगवानने सर्वस्व अर्पण करीने, भगवानना दास थइ रहेछुं अने एम करतां भगवान आपणने वधु दुःख देशे तो भगवान पण पोते आपणे वश थइ जाशे, शा माटे जे पोते भक्त वत्सल छे अने कृपासिंधु छे ते जेनी पोताने विषे अति दृढ भक्ति देखे तेने पोते आधीन थइ जाय छे. पछी ते प्रेमभक्तिए युक्त जे भक्तनुं मन ते मनरूपी दोरीए करीने बंधनमां आवे छे पछी छूटवाने समर्थ थाता नथी. माटे जेम जेम भगवान आपणने कसणीमां राखे तेम तेम वधु राजी थयुं जोइए जे भगवान जेम जेम ह्मने वधु दुःख देशे तेम तेम वधु मारे वश थाशे अने पळमात्र ह्मजथी छेटे नहि रहे, एवुं समजीने जेम जेम भगवान अति कसणी देता जाय तेम तेम अति राजी थावुं पण कोइ रीते दुःख देखीने अथवा देहना सुख सारु पाछो पग भरवो नहि. (३) इति वचनामृतम् ॥६१॥ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (३) छे, तेमां पहेलामां आत्मनिष्ठा दृढ थाय तो धीरज टळे नहि. (१) बीजामां अहसमे तो अमारी उपासनाज काम आवे छे. [२] त्रीजामां पाका भक्तनेज सिद्धियो आवे छे तेमां न लोभाय, अमे कसणी दइए तो राजी थाय तेने अमे वश थइए छीए एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (३) बाकतो छे.

१ प्र० त्रीजा प्रश्नमां सिद्धियो कही ते शी समजवी ? अने [प्र० $\frac{२१}{६}$ मां] सिद्धियो कही ते शी जाणवी ?

१ उ० आमां योग मार्गे करीने श्रीजीमहाराजनुं ध्यान करतां अणिमादिक सिद्धियो देखाय तथा बीजाना अंतरनुं जाणे एवुं सर्वज्ञपणुं आवे तथा वचनसिद्धि प्राप्त थाय एवां अनंत ऐश्वर्य आवे तथा आ लोकमां पूजा प्रतिष्ठा थाय एवां ऐश्वर्य आवे ते सर्वे सिद्धियो कहेवाय तेमां पण न लेवाय ते परिपक्व निश्चयवाळो कहेवाय. अने [प्र० २१ मां] जेने मायिक वासना यथार्थ टळी न होय तेने देह मुकीने धाममां जातां अणिमादिक सिद्धियो देखाय तो तेमां लोभाइ जाय एम कह्युं छे.

२ प्र० भगवान वधु कसणी दे तो वधु वश थाय एम कह्युं ते कसणी शुं देता हशे ? अने वधु वश केवी रीते थाता हशे ?

२ उ० त्यागी होय तेने देहमां दीर्घरोग आवी पडे ने कोइ सेवा न करे ने औषध के खा-

बानी वस्तु कांइ न मळे, तोपण राजी रहे ने श्रीजीमहाराज मारुं सारुंज करे छे एम समजे पण ए दुःख टळे एवो संकल्प पण न करे. अने श्रीजीमहाराजने विषे प्रीति अतिशे वृद्धि पमाडतो जाय पण दुःखे करीने लेशमात्र खेद पामे नहि, एवी कसणीमां राजी रहे तो एने श्रीजीमहाराज सदाय संभारे ने एनी दृष्टिथी पळमात्र छेटे रहे नहि ते वश थया कहेवाय. अने गृहस्थ होय तेने सत्संग निमित्त नातीला नातबहार मुके ने छोकरां परण्या विना रहे अने श्रीजीमहाराज धन समृद्धिनो ने स्त्री पुत्रादिकनो नाश करे ने रोगादिक आपदा मुके ने श्रीजीमहाराज दर्शन आपीने कहे जे, तारे दुःख टाळवुं होय तो अमे टाळीए पण ए भक्त मारुं दुःख टाळो एम न कहे अने कोइ दिवस दुःख मटवानो संकल्प पण न करे तो ए भक्तने श्रीजीमहाराज सदाय संभारे ने एनी दृष्टिथी पळमात्र छेटे रहे नहि ए वश थया कहेवाय. ॥६१॥

संवत् १८७६ ना फागण वदि ४ चोथने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां चोक वच्चे ढोलिया उपर विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो अने धोळी चादर ओढी हती अने माथे श्वेत पाघ विराजमान हती अने ते पाघने विषे श्वेत पुष्पना हार तथा श्वेत पुष्पना तोरा विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए पूछयुं जे, (१) श्रीमद्भागवतमां कह्युं छे जे ॥ सत्यं शौचंदयाक्षान्तिः ॥ इत्यादिक जे ओगणचाळीस कल्याणकारी गुण ते भगवानना स्वरूपने विषे निरंतर रहे छे ए गुण संतने विषे केइ रीते आवे छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ए गुण संतमां आव्यानुं कारण तो ए छे जे एने भगवानना स्वरूपनो यथार्थ निश्चय थाय तो ए कल्याणकारी गुण भगवानना छे ते संतमां आवे छे. ते निश्चय केवो होय तो जे भगवानने काळ जेवा न जाणे, कर्म जेवा न जाणे, स्वभाव जेवा न जाणे, माया जेवा न जाणे, पुरुष जेवा न जाणे ने ए सर्वथकी भगवानने जुदा जाणे अने ए सर्वना नियंता जाणे ने सर्वना कर्त्ता जाणे अने ए सर्वने कर्त्ता थका पण निर्लेप छे एम भगवानने जाणे अने एवी रीते आ प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय कर्यो छे ते कोइ रीते करीने डगे नहि ते गमे तेवां तरे तरेनां शास्त्र सांभळे अने गमे तेवा मतवादीनी वात सांभळे अने गमे तेवा पोतानुं अंतःकरण कुतर्क करे पण कोइ रीते करीने भगवानना स्वरूपमां डगमगाट थाय नहि एवी जातनो जेने भगवानना स्वरूपनो निश्चय होय तेने भगवाननो संबंध थयो कहेवाय, माटे जेने जे संगाथे संबंध होय तेना गुण तेमां सहेजे आवे. जेम आपणां नेत्र छे तेने ज्यारे दिवा संगाथे संबंध थाय छे त्यारे ते दिवानो प्रकाश नेत्रमां आवे छे, तेणे करीने नेत्र आगळ अंधारुं होय तेनो नाश थइ जाय छे, तेम जेने भगवानना स्वरूपनो दृढ निश्चये करीने संबंध थाय छे तेने विषे भगवानना कल्याणकारी गुण आवे

छे, पछी जेम भगवान सर्वे प्रकारे निर्बंध छे ने जे चहाय ते करवाने समर्थ छे तेम ए भक्त पण अतिशे समर्थ थाय छे ने निर्बंध थाय छे. (१) १

२ पछी वळी निर्विकारानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (२) निश्चय होय तोय पण रुडा गुण तो आवता नथी अने मान ने ईर्ष्या तो दिवसे दिवसे वधती जाय छे तेनुं शुं कारण हशे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, भगवान पासे एक अमृत लावीए अने सिंगडीयो वछनाग लावीए अने दुधपाक ने साकर लावीए अने अफीण लावीए अने ते सर्वने भगवानना थाळमां धरीए तो पण जेनो जेवो गुण होय तेनो तेवोने तेवोज रहे पण पलटाइ जाय नहि,तेम जे जीव आसुरी ने अति कुपात्र होय ते भगवानने समीपे आवे तोयपण पोताना स्वभावने मुके नहि, पछी ए कोइक गरीब हरिभक्तनो द्रोह करे तेणे करीने एवुं भुंडुं थाय, शा माटे जे भगवान सर्वमां अंतर्यामीरूपे करीने रह्या छे ते पोतानी इच्छा आवे त्यां तेटली सामर्थी जणावे छे, माटे भक्तने अपमाने करीने ते भगवाननुं अपमान थाय छे. त्यारे ते अपमानना करनारानुं अतिशे भुंडुं थइ जाय छे, जेम हिरण्यकशीपु हतो तेणे त्रिलोकी पोताने वश करी राखी हती एवो बळवान हतो पण तेणे जो प्रह्लादजीनो द्रोह कर्यो तो भगवान स्तंभमांथी नृसिंहरूपे प्रगट थइने ते हिरण्यकशीपुनो नाश करी नाख्यो, एम विचारीने भगवानना भक्त होय तेने अतिशे गरीबपणुं पकडवुं पण कोइनुं अपमान करवुं नहि, कां जे भगवान तो गरीबना अंतरने विषे पण विराजमान रह्या छे ते ए गरीबना अपमानना करतलनुं भुंडुं करी नाखे छे, एवुं जाणीने कोइ अल्पजीवने पण दुववो नहि, अने जो अहंकारने वश थइने जेने तेने दुवतो फरे तो गर्वगंजन एवा जे भगवान ते अंतर्यामीरूपे सर्वमां व्यापक छे ते खमी शके नहि, पछी गमे ते द्वारे प्रगट थइने ए अभिमानी पुरुषना अभिमानने सारी पेठे नाश करे छे, ते माटे ते भगवानथी डरीने जे साधु होय तेने लेशमात्र अभिमान राखवुं नहि अने एक कीडी जेवा जीवने दुववो नहि एज निर्मानी साधुनो धर्म छे. (२) इति वचनामृतम् ॥ ६२ ॥ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [२] छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमने सर्वेथी जुदा अने सर्वेना नियंता ने सर्वेना कर्त्ताथका निर्लेप जाणीने कोइ रीते न डगे एवो अमारो निश्चय थाय तेने विषे अमारा कल्याणकारी गुण आवे छे, पछी ते भक्त अमारा जेवो समर्थ ने निर्बंध थाय छे. [१] बीजामां आसुरीने अति कुपात्र जीव होय ते स्वभावने मुके नहि ने अमारो ने अमारा भक्तनो द्रोह करे ने अमारा गरीब भक्तनुं अपमान करे तेथी अमे दुःखाइए ने एनुं भुंडुं थाय. अने साधुने लेशमात्र मान राखवुं नहि (२) बावतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां अमारे विषे कल्याणकारी गुण रह्या छे एम कह्युं ते किया समजवा ?

१ उ० सत्य=सर्वे जीव प्राणीमात्रने मायाना बंधनथी रहित करीने ब्रह्मभावने पमाडवारूपी हित छे जेमने विषे तथा पोताना मुक्तोद्वारे एवुं हित करावधापणुं तथा सत्य जे ब्रह्म तेनुं कारणपणुं (१) शौच=पोतानुं ध्यान करनारा भक्तोनुं मायारूपी वगळ टाळीने पोता जेवा निर्दोष करवापणुं (२) दया=भवाब्धिमां डूबेला एवा जीवोना जन्ममरणने यमयातनादिक दुःखने टाळीने पोतानुं सुख आपवापणुं (३) क्षांति=आसुरी जीवोए करेला अनेक उपद्रवोनुं सहन करवापणुं तथा पोताने मन अर्पनारा एवा पोताना आश्रितजनो तेमने क्रोध थवानुं निमित्त छतां पण चित्तमां क्रोध उत्पन्न न थवा देवापणुं [४] त्याग=मोक्षार्थी जनना अपराधने न गणीने, पोतानी मूर्तिना सुखने आपवापणुं (५) संतोष=निजाश्रितने पोताने सुखे सुखी करवाथी पोताने परिपूर्ण मानवापणुं (६) आर्जव=बहारनी तथा अंदरनी एकतारूपी स्वभावनी सरळता, अथवा पोताना आश्रितना रज, तमादिक दोष टाळीने मन वाणी आदिके करीने कोइने दुःखनो उद्भव न थवा देवापणुं तथा सत्पुरुषद्वारे पण तेवी रीते करावधापणुं [७] शम=योगादिक प्रयास विना पण पोताना ध्यानथी भक्तना मनने वश करावधापणुं (८) दम=पोते कहेली धर्म मर्यादामां वर्ताववाथी भक्तनां इंद्रियोनुं निग्रह करवापणुं (९) तप=जीवोना मोक्षने अर्थे पृथ्वी उपर विचरीने अनेक जनोना अपमानादिकनुं तथा अनेक प्रकारना कष्टनुं सहन करवापणुं अथवा वन विचरणादिक (१०) साम्य=अनवधिकातिशय जे पोतानुं सुख तेने विषे पोताना ध्याननिष्ठ भक्तोने निमग्न करवाथी सारा नरसा विषयने विषे समभाव पमाडवापणुं (११) तितिक्षा=पोताना आश्रितने पोताना संबंधे करीने कोइना अपराधने न गणे एवा करवापणुं [१२] उपरति=पोताना आश्रितने अनेक प्रकारना वैभवनी प्राप्ति छतां पण रागे रहित करवापणुं (१३) श्रुत=पोताने विषे निष्ठावाळा भक्तने शास्त्रना अर्थने यथार्थ जाणी शके एवी शक्ति देवापणुं [१४] ज्ञान=पोताना आश्रितोने जीव, माया, ईश्वर, ब्रह्म, अक्षर तथा मुक्त ए सर्वेनुं नियंता एवुं जे पोतानुं स्वरूप तेनुं यथार्थपणे जणाववापणुं (१५) विरक्ति=पोताना आश्रितोने पोतानी मूर्तिनुं सुख आपीने वासनाए रहित करवापणुं (१६) ऐश्वर्य=सर्वेनुं नियंतापणुं (१७) शौर्य=महापापीने पण भक्त बनावी देवापणुं तथा पोताना आश्रितोने नाना प्रकारना स्वभाव तथा काम क्रोधादिक शत्रुने जीतवामां सामर्थि आपवापणुं (१८) तेज=कोइथी पराभव न पामवापणुं अथवा पोताना आश्रितोने काळ मायादिकथी पराभव न पामवा देवापणुं (१९) बळ=अनेक जनने समाधि करावीने नाडी प्राणनुं आकर्षण करवापणुं तथा पोताना आश्रितोने प्राणने नियममां कराववानुं सामर्थ्य आपवापणुं (२०) स्मृति=पोताना अक्षरधामथी जे कर्तव्यने अर्थे पोते पृथ्वीने विषे प्रगट थएला ते कर्तव्यनुं अनुसंधानपणुं तथा पोताना आश्रितोने ते अनुसंधान करावधापणुं (२१) स्वातंत्र्य=सर्वोपरिपणुं जे सर्वेनुं नियंतापणुं अने पोताना आश्रितोने काळ मायादिकना भये रहित करीने पोतानुं साधर्म्यपणुं पमाडीने स्वतंत्र

करवापणुं (२२) कौशल= आत्यंतिक मोक्ष करवारूप क्रियामां निपुणपणुं, कोइपण प्रकारे गमेतेवा जीवने पोताना सन्मुख करी आकर्षी लेवानी कुशळता तथा पोते कहेला नियम परायण एवा जे जन तेमने अनेक जीवना मोक्ष करवारूपी क्रियानुं सामर्थ्य दातापणुं (२३) कान्ति=ब्रह्मकोटी, अक्षरकोटी, तथा मुक्तकोटी ते सर्वेथी अतिशे प्रकाशमानपणुं वा ते सर्वेने प्रकाश देवापणुं [२४] धैर्य=पोताना आश्रितोने इंद्रियो अंत:करणने जितवा-रूपी धीरज आपवापणुं तथा पोताना ध्याननिष्ठ भक्तोने साक्षात्कार थवा पर्यंत ध्यानमां एकाग्रता आग्रह तथा उत्साह टकावी राखवारूपी धीरज आपवापणुं (२५)मार्दव=भक्तोनां दु:ख न जोइ शकवापणुं तथा पोतानुं ध्यान करनारा भक्तोना चित्तने कोमळ करवापणुं (२६) प्रागल्भ्य= पोताना भक्तोने पोतानी मूर्तिनुं नवीन नवीन सुखनुं अनुभव करवारूपी ज्ञाननुं देवापणुं तथा विद्वत्सभामां शास्त्रार्थे करी प्रतिपक्षीओने परास्त करी स्वमत स्थापन करवापणुं (२७) प्रश्रय=पोताना भक्तोने सत्पुरुष आगळ दासपणुं रहे एवी बुद्धि देवापणुं (२८) शील= पोताना आश्रितोने ब्रह्मचर्यव्रत दृढ करावबापणुं [२९] सह=पोताना भक्तोनी प्राणवृत्ति-ओनुं स्वाभाविक पोतानी मूर्तिमां आकर्षण करवापणुं (३०) ओज=पोताना भक्तोनी ज्ञानइंद्रियो तथा कर्म इंद्रियोने जीतवामां सामर्थ्य देवापणुं तथा देहे करीने सुख दु:खा-दिकने सहन करवानी सत्ता आपवापणुं (३१) बळ=जीव कोटी, ईश्वरकोटी, ब्रह्मकोटी, मूळ अक्षरकोटी तथा मुक्तकोटी ते सर्वेने पोताना तेजरूप शक्तिद्वारे धारवापणुं तथा ते सर्वेने धारण करवानी शक्तिनं आपवापणुं (३२) भग=पोताना मुक्तोने आत्यंतिक कल्याण करवानुं सामर्थ्य आपवापणुं तथा मूळ अक्षर तथा मूळ पुरुषादिक सर्वे अवतारोने उत्पत्त्यादिक करवानुं ऐश्वर्य आपवापणुं [३३] गांभीर्य=थोडी वातमां राजी कराजी न थवारूप सागरहृदयपणुं तथा मूळ पुरुष ब्रह्म तथा मूळ अक्षरादिक ते कोइए पोतानो अभिप्राय न जाणी शकवापणुं तथा पोतानी समीपे रहेनारा निष्काम मुक्तो तेमणे पण यथार्थ अभिप्राय न जाणीशकवापणुं तथा पोताना आश्रितोने कोइ विकारे करीने क्षोभ न पामवा देवापणुं (३४) स्थैर्य=पोतानी मूर्तिने पामेला भक्तोने पोताना सुखथी चळायमान नहि थवा देवापणुं (३५) आस्तिक्य=पोताना भक्तोने पोतानी सर्वोपरि उपासनाना बळवळे पोता सिवाय बीजे क्यांइ आस्ता नहि आववा देवापणुं [३६] कीर्ति= घोर कलियुगमां एकांतिक धर्म स्थापन करी मोक्षदानरूपी अपूर्व कीर्ति फेलावबापणुं अने पोतानी आज्ञा पाळीने धर्मने दृढ करनारा एवाजे भक्तो तेमनी कीर्तिनुं वधा-रवापणुं [३७] मान=पोतानी सर्वोपरी उपासना तथा ध्याने करीने पोताना तद्राकार भावने पामेला एवा जे पोताना भक्तो तेमने मोटा मोटा ईश्वरो तथा ब्रह्मकोटी तथा अक्षरादिक ऐश्वर्यार्थीओ द्वाराए मान–पूज्यपणुं अपाववापणुं (३८) अनहंकृति=पोताना भ-क्तोनी माया निवृत्ति पामवाथी अहंकाररहित करवापणुं [३९] आ उपर कह्या जे श्रीजीमहा-राजना कल्याणकारी गुण ते राजारूप ने साधुरूप ए सर्वे अवतारोना कारण एवा जे श्रीजीमहाराज तेमना निश्चये करीने संतमां आवे छे.

२ प्र० अमने काळ, कर्म, स्वभाव, माया ने पुरुष जेवा न जाणे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते केवा जाणे तो काळ, कर्म, स्वभाव, माया अने पुरुष जेवा जाण्या कहेवाय ? अने अने श्रीजीमहाराजने सर्वेना नियंता, सर्व कर्ता, ने निर्लेप केवी रीते जाणवा ?

२ उ० काळ छे ते प्रकृति पुरुषना कार्यनो प्रलय करे छे एटलोज महिमा श्रीजीमहाराजनो जाणे तो काळ जेवा जाण्या कहेवाय, अने कर्म प्रमाणे फळ मळे छे पण एथी अधिक भगवान आपी शकता नथी, एम जाणे तो कर्म जेवा जाण्या कहेवाय. अने आ जगत स्वाभाविक थयाज करे छे पण भगवान कर्ता छे एम न जाणे तो स्वभाव जेवा जाण्या कहेवाय. अने मायाद्वारे जगत सृजे छे तेटलुंज कार्य भगवान करी शके छे एम जाणे तो माया जेवा जाण्या कहेवाय. अने जेटलुं मूळपुरुष थकी थाय छे तेटलुंज महाराज करी शके छे एम जाणे तो पुरुष जेवा जाण्या कहेवाय. अने जीवकोटी, मायाकोटी, पुरुषकोटी, ब्रह्मकोटी, अक्षरकोटी ने मुक्तकोटी ए सर्वे श्रीजीमहाराजनी आज्ञामां निरंतर वर्ते छे, एवी रीते जाणे तो नियंता जाण्या कहेवाय. अने अनंत मूळ अक्षरो ते अनंतकोटी ब्रह्मांडोनी उत्पत्त्यादि करे छे ते श्रीजीमहाराजनी आपेली सत्ताथी करे छे पण श्रीजीमहाराज विना बीजो कोइ स्वतंत्रपणे करी शके तेम नथी, एवी रीते श्रीजीमहाराजने जाणे तो कर्ता जाण्या कहेवाय, अने मूळ अक्षरादिक सर्वेने विषे अंतर्यामीपणे रह्या छे पण ते अक्षरादिकनी तथा मूळ पुरुषादिक कोइनी उपाधि श्रीजीमहाराजने अडती नथी एम जाणे तो निर्लेप जाण्या कहेवाय.

३ प्र० संत भगवाननी पेठे निर्बंध ने चहाय ते करवा समर्थ थाय छे एम कह्यं ते केवी रीते समजवुं ?

३ उ० निर्बंध एटले मूळअक्षरादिक कोइना ऐश्वर्यमां लेवाय नहि अने आवरण रहित थाय ते निर्बंध कहेवाय, अने श्रीजीमहाराजनी पेठेज असंख्यात जीवोनो उद्धार संकल्प मात्रमां करे ते चहाय ते करवा समर्थ जाणवा पण मूळअक्षरादिकनी पेठे उत्पत्त्यादिक तथा कर्मफळ आपवुं ते काम नथी करता ए कामने तो तुच्छ जाणे छे.

४ प्र० बीजा प्रश्नमां गरीबने दुःखवेथी श्रीजीमहाराज दुःखाय एम कह्युं ते गरीब केवा जाणवा ?

४ उ० श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने अखंड धारी रह्या होय तेवा पोताना भक्तने गरीब कह्या छे, ते लोक व्यवहारे गरीब होय अने स्वभावे पण गरीब होय ते कोइना सामो जवाब न आपे ने संकल्प पण न करे जे आणे मारुं अपमान कर्युं, एवा मोटा सहनशक्तिवाळा भक्त होय तेने दुःखावे तो ते पोते तो न दुःखाय, पण श्रीजीमहाराज दुःखाय तो दुःखावनारना जीवनो नाश थइ जाय छे. ॥६२॥

संवत् १८७६ना फागण वदि ७ सप्तमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ आथ-

मणे वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने धोळुं हीरकोरनुं धोतीयुं माथे बांध्युं हतुं ने कोटने विषे श्वेत पुष्पना हार विराजमान हता अने पाघने विषे गुलाबना पुष्पना तोरा विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी नृसिंहानंदस्वामीए पूछयुं जे, (१) भगवानना निश्चयमां कसर होय तेने केवा संकल्प थाय ? पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने निश्चयमां कसर होय तेने ज्यारे भगवानमां कांइ सामर्थि देखाय, त्यारे अति आनंद थाय अने ज्यारे सामर्थि न देखाय त्यारे अंतर झांखुं थइ जाय; अने पोताना हृदयमां भुंडा संकल्प थाता होय ने तेने टाळे तोयपण टळे नहि त्यारे भगवानमां अवगुण परठे जे, हुं आटला दहाडाथी सत्संग करी करीने मरी गयो, तोय पण भगवान मारा भुंडा घाट टाळता नथी, एवी रीते भगवानमां दोष परठे, अने जे पदार्थमां पोताने हेत होय ने कोइ प्रकारे ते पदार्थमांथी मन पाछुं न वळतुं होय, त्यारे तेवोने तेवो दोष भगवानने विषे परठे जे, जेम मारे विषे कामादिक दोष छे, तेम भगवानने विषे पण छे पण ए भगवान छे ते मोटा कहेवाय छे, एवी रीतना जेने अंतरमां घाट थाता होय तेना निश्चयमां कसर जाणवी, एनो परिपक्व निश्चय न कहेवाय. (१) १

२ पछी परमचैतन्यानंदस्वामीए पूछयुं जे, (२) हे महाराज ! जेने भगवाननो परिपक्व निश्चय होय तेने केवी जातना घाट थाय ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने परिपक्व निश्चय होय तेने तो मनमां एम रहे जे, मारे सर्वे प्राप्ति थइ रही छे, अने ज्यां प्रत्यक्ष भगवान रह्या छे त्यांज परमधाम छे, अने आ संत सर्वे ते नारदसनकादिक जेवा छे, अने सत्संगी सर्वे ते तो जेवा उद्धव, अक्रूर, विदुर सुदामा ने वृंदावनना गोप तेवा छे, अने जे बाइयुं हरिभक्त छे ते तो जेवी गोपीयो तथा द्रौपदी कुंताजी, सीता, रुक्मिणी, लक्ष्मी, पार्वती एवी छे. अने हवे मारे कांइ करवुं रह्युं नथी ने गोलोक, वैकुंठ, ब्रह्मपुर तेने हुं पामी रह्यो छुं, एवी रीतना घाट थाय अने पोताना हृदयमां अति आनंद वर्ते, एवी रीते जेना अंतरमां वर्ततुं होय तेने परिपक्व निश्चय जाणवो. (२) २

३ एम कहीने पछी श्रीजीमहाराज एम बोल्या जे, (३) तत्त्वे करीने भगवाननुं स्वरूप जाण्या पछी एने कांइ जाणवुं रहेतुं नथी. ते तत्त्वे करीने जाण्यानी रीत कहीए ते सांभळो, जे सांभळीने परमेश्वरना स्वरूपनो अडग निश्चय थाय छे. जे प्रथम तो एने भगवाननी मोटाइ जाणी जोइए, जेम कोइक मोटा राजा होय तेना जे गोला ने गोलियो होय तेने पण सात भूमिनी तो हवेलीयो रहेवानी होय अने बाग, बगीचा ने घोडा,

वेल्युं घरेणां ए आदिक जे सामग्री तेणे करीने देवलोक सरखां तेनां घर जणाय, त्यारे ते राजानो जे दरबार तथा तेमां जे सामग्री ते तो अति शोभायमान होय, तेम श्रीपुरुषोत्तम भगवाननी आज्ञामां वर्तता एवा जे ब्रह्मांडना अधिपति ब्रह्मादिक तेना जे लोकने ते लोकना वैभव तेना पारने पमातो नथी तो जेना नाभिकमळमांथी ब्रह्मा उत्पन्न थया एवा जे विराट् पुरुष तेना वैभवनो पारतो क्यांथी पमाय ? अने एवा अनंतकोटी जे विराट् पुरुष तेमना स्वामी जे पुरुषोत्तम भगवान तेनुं धाम जे अक्षर, जेने विषे एवां अनंतकोटी ब्रह्मांड ते एक एक रोम प्रत्ये अणुनी पेठे उडतां फरे छे एवुं ए भगवाननुं धाम छे ने ते धामने विषे पुरुषोत्तम भगवान पोते दिव्यरूपे करीने सदा विराजमान छे अने ते धाममां अपार दिव्य सामग्री छे ते भगवाननी मोट्यपनो पार तो आवेज केम? एवी रीते भगवाननी मोट्यप समजे, अने जे जे थकी मोटो होय ते ते थकी सूक्ष्म होय, अने ते तेनुं कारण पण होय, जेम पृथ्वी थकी जळ मोटुं छे अने ते पृथ्वीनुं कारण छे अने ते थकी सूक्ष्म पण छे ने जळ थकी तेज मोटुं छे ने तेज थकी वायु मोटो छे ने वायु थकी आकाश मोटो छे, एवी रीते अहंकार, महत्तत्त्व, प्रधानपुरुष, प्रकृतिपुरुष ने अक्षर ए सर्वे एक बीजाथी मोटा छे ने एक बीजाथी सूक्ष्म छे ने कारण छे अने ए सर्वे मूर्तिमान छे पण भगवाननुं जे अक्षरधाम छे ते तो अत्यंत मोटुं छे, जेमा एक एक रोमने विषे अनंतकोटी ब्रह्मांड अणुनी पेठे उडतांज फरे छे, जेम कोइ मोटो हस्ति होय तेना शरीर उपर कीडी चाली जाती होय ते कशी गणतीमां आवे नहि, तेम ए अक्षरनी मोटाइ आगळ बीजुं कोइ कांइ गणतीमां आवतुं नथी, जेम झीणां मच्छर होय तेने मध्ये कीडी होय ते मोटी देखाय ने कीडीने मध्ये विंछी होय ते मोटो देखाय अने विंछीने मध्ये साप होय ते मोटो देखाय अने सापने मध्ये समळा होय ते मोटी देखाय ने समळाने मध्ये पाडो होय ते मोटो देखाय ने पाडाने मध्ये हाथी होय ते मोटो देखाय अने हाथीने मध्ये गिरनार सरखो पर्वत होय ते मोटो देखाय अने ते पर्वतने मध्ये मेरु पर्वत मोटो देखाय अने ते मेरु जेवा पर्वतने मध्ये लोकालोक पर्वत ते अति मोटो जणाय अने लोकालोक पर्वतथकी पृथ्वी अति मोटी जणाय अने पृथ्वीनुं कारण जे जळ ते ते थकी मोटुं पण छे अने सूक्ष्म पण छे, एवी रीते जळनुं कारण तेज छे, तेजनुं कारण वायु छे, वायुनुं कारण आकाश छे, आकाशनुं कारण अहंकार छे, अहंकारनुं कारण महत्तत्त्व छे, महत्तत्त्वनुं कारण प्रधान ने पुरुष छे अने प्रधान ने पुरुषनुं कारण मूळप्रकृति ने ब्रह्म छे अने ए सर्वेनुं कारण अक्षरब्रह्म छे ने ते अक्षर तो पुरुषोत्तम भगवाननुं धाम छे अने ए अक्षरनी संकोच ने विकाश अवस्था थाती नथी सदाय एक रूपे रहे छे अने ते अक्षर मूर्तिमान छे पण अति मोटा छे माटे कोइनी

नजरे अक्षरनुं रूप आवतुं नथी, जेम चोवीश तत्त्वनुं कार्य जे ब्रह्मांड ते पुरुषावतार कहेवाय छे ने ते विराट्पुरुष जे ते करचरणादिके करीने युक्त छे पण तेनी मूर्ति अतिशे मोटी छे माटे नजरे आवती नथी अने तेनी नाभिमांथी थयुं जे कमळ तेना नाळमां ब्रह्मा देवतानां सो वर्ष लगी चाल्या पण तेनो अंत न आव्यो ने जो कमळनोज अंत न आव्यो तो विराट्पुरुषनो पार केम आवे ? माटे ते विराट्नुं रूप नजरे आवतुं नथी, तेम अक्षरधाम पण मूर्तिमान छे पण कोइने नजरे आवे नहि, ते शा माटे जे एवां एवां ब्रह्मांड एक एक रोममां असंख्यात उडतांज फरे छे एवडा मोटा छे ते अक्षरधामने विषे पुरुषोत्तम भगवान पोते सदा विराजमान छे. (३) अने पोतानी कान्तिए करीने ३
अक्षरधाम अने अनंतकोटी ब्रह्मांड अने ते ब्रह्मांडोना जे ईश्वर ते सर्वेने विषे अन्वयपणे रह्या छे अने ते अक्षरधामने विषे पोताना साधर्म्यपणाने पाम्या एवा जे अनंतकोटी मुक्त ते ए भगवाननी सेवाने विषे रहे छे. अने ते भगवानना सेवकना एक एक रोमने विषे कोटी कोटी सूर्यना जेवो प्रकाश छे, माटे जेना सेवक एवा छे तो एमना स्वामी जे पुरुषोत्तम भगवान तेनो महिमा तो केम कहेवाय ? एवा अति समर्थ जे भगवान ते पोते अक्षरमां प्रवेश करीने अक्षररूपे थाय छे ने पछी मूळप्रकृति पुरुषरूपे थाय छे ने पछी प्रधान पुरुषरूपे थाय छे ने पछी प्रधानमांथी थयां जे चोवीश तत्त्व तेने विषे प्रवेश करीने ते रूपे थाय छे ने पछी तत्त्वे करीने सरजाणा जे विराट्पुरुष तेने विषे प्रवेश करीने ते रूपे थाय छे ने पछी ब्रह्मा, विष्णु, शिवमां प्रवेश करीने ते ते रूपे थाय छे, एवी रीते अति समर्थ ने अति प्रकाशे युक्त ने अति मोटा जे ए भगवान ते पोतानुं जे आवुं ऐश्वर्य ने तेज तेने पोतामां समावीने, जीवना कल्याणने अर्थे मनुष्य जेवा थाय छे ने मनुष्य दर्शन करी शके तथा सेवा अर्चनादिक करी शके एवुं रूप धारण करे छे, जेम कीडीना पगमां झीणो कांटो वाग्यो होय तेने बरछी तथा नरेणीए करीने काढे तो निसरे नहि, ते तो अतिशे झीणुं लोढुं होय तेणे करीने निसरे, तेम भगवान पण पोतानी मोटाइने पोतामां समावीने अतिशे अल्परूपतुं धारण करे छे जेम अग्नि पोतानो प्रकाश ने ज्वाळा तेने समावीने मनुष्य जेवो थाय, तेम भगवान पण पोतानी सामर्थि छुपावीने जीवना कल्याणने अर्थे मनुष्यनी पेठे वर्ते छे अने जे मूर्ख होय तेतो एम जाणे जे, भगवान कांइ सामर्थी केम प्रगट करता नथी पण भगवान तो मुळगी जीवना कल्याणने अर्थे पोतानी सामर्थी ढांकीने वर्ते छे अने जो पोतानी मोटप्प प्रगट करे तो ब्रह्मांड पण नजरमां न आवे तो जीवनी शी गणना ? एवी रीते महिमाए सोतो जे आ भगवाननो निश्चय जेने हृदयमां दृढपणे थयो होय तेने काळ, कर्म, माया कोइ बंधन करवा समर्थ नथी, माटे एवी रीते तत्त्वे करीने भगवानने जाणे तेने कांइ करवुं रह्युं नथी. (४) ४

४ पछी नित्यानंद स्वामीए पूछयुं जे, (४) एवी रीते अनुक्रमे करीने भगवान मनु-
ष्याकृति धरे छे के अनुक्रम विना पण मनुष्याकृति धरे छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या
जे, अनुक्रमनो कांइ मेळ नथी, त्यां दृष्टांत जेम कोइ पुरुष होय ते तळावने विषे डबकी
खाय, ते डबकी खाइने गमे तो त्यांने त्यां निसरे अथवा कांठे निसरे अथवा आसपास
निसरे, तेम पुरुषोत्तमभगवान छे ते अक्षररूप धामने विषे डबकी खाइने गमे तो त्यांथी
पाधराज मनुष्याकृतिने धारे छे ने गमे तो एवी रीते अनुक्रमे करीने मनुष्याकृतिने धारे
छे एम वार्ता करी. (५) ५

५ अने पछी वळी श्रीजीमहाराज बोल्या जे (५) जेने अति दृढ निश्चय होय तेनुं थोडाकमां
लक्षण कहुं ते सांभळो जे, जेने परिपक्व निश्चय होय ने ते पोते अत्यंत त्यागी होय तोय
पण ते पासे गमे तेवी प्रवृत्ति मार्गनी क्रिया करावीए तो तेने करे पण तेमांथी पाछो हठे
नहि ने कचवाइने पण करे नहि राजीथको करे ने बीजुं ए लक्षण जे, गमे तेवो पोतामां
कोइक स्वभाव होय ने ते कोटीक उपाय करे तोय पण टळे एवो न होय ने जो ते स्व-
भावने मुकाव्यानो परमेश्वरनो आग्रह देखे तो ते स्वभावने तत्काळ मुके ने त्रीजुं ए
लक्षण जे, पोताने कांइ वर्त्तमानमां ठीक जेवुं न होय, तोयपण परमेश्वरनी कथा कीर्तन
तथा भगवानना संत ते विना घडीमात्र रहेवाय नहि ने पोतानो अवगुण ले ने संतनो
अति गुण ग्रहण करे अने भगवाननी कथा कीर्तनने भगवानना संत तेनो अति महिमा
समजे, एवुं जेने वर्तंतु होय तेने परिपक्व निश्चय जाणवो, एवा निश्चयवाळाने कोइक
दिवस कोइक प्रारब्धने योगे करीने कांइक वर्त्तमानमां फेर पडी जाय तोय पण तेनुं अ-
कल्याण न थाय. (६) अने एवो निश्चय न होय ने ते गमे तेवो त्यागी होय, तोय पण ६
तेना कल्याणमां फेर छे. (७) इति वचनामृतम् ॥६३॥ ७

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (५) छे. त्रीजुंने पांचमुं कृपावाक्य छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, अमारा निश्चयमां कसर होय तेने ज्यारे अमारे विषे सामर्थि न देखाय, त्यारे अंतर झांखुं थइ जाय अने पोताने भुंडा घाट थाता होय ते टळे नहि त्यारे अमारे विषे दोष परठे जे, मारा घाट केम टाळता नथी. (१) बीजामां अमारो परिपक्व निश्चय होय ते एम जाणे जे, आ महाराज छे त्यांज अक्षरधामने मुक्त छे. (२) त्रीजा मां पोताने यथार्थपणे जाणवानी रीत कही छे जे पृथ्वीथी लइने मूर्तिमान मूळअक्षर पर्यंत एक बीजाथी मोटा ने एक बीजाना कारण ने एक बीजाथी सूक्ष्मने मूर्तिमान कह्या छे अने ए मूळअक्षरने धाम नामे कह्या छे ने अति मोटा कह्या छे ने एना अकेका रोममां एटले तेनी किरणोमां असंख्यात ब्रह्मांड उडतां फरे छे अने ए मूळअक्षरने विषे अमे सदा विराजमान छीए एम कह्युं छे ते कांतिए करीने रह्या छे ते चोथी बाबतमां कह्युं छे. (३) अने

चोथी बाबतमां अमे अमारी कांतिए करीने एटले अमारा तेजरूप अक्षरधाम ते द्वारे करीने श्रीजी बाबतमां कही गया ते अक्षरधाम जे मूळअक्षर तथा अनंतकोटी ब्रह्मांड अने ते ब्रह्मांडोना ईश्वरो ते सर्वेने विषे अन्वयपणे रह्या छीए, एवी रीते मूळअक्षरथी लइने विष्णु, ब्रह्मा, शिवादिकने विषे अन्वयपणे रह्या छीए अने ते अमारी कान्तिरूप जे अक्षरधाम तेमां कोटानकोटी सूर्यना जेवा प्रकाशमान एवा अमारा मुक्तोए सेव्या थका विराजमान छीए एवा अति समर्थ ने अति प्रकाशे युक्त जे अमे ते जीवोना कल्याणने अर्थे मनुष्य जेवा थया छीए, आवो अमारो महिमा समझे तेने अमारो अडग निश्चय थाय ने ते काळ, कर्म,मायाना बंधनथी मुकाय छे ने तेने कांइ करवुं रहेतुं नथी. (४) चोथामां अमे अनुक्रमे तथा अनुक्रम विना पण मनुष्याकृति धारीए छीए. [५] पांचमामां अति दृढ निश्चयवाळा भक्तनां लक्षण कह्यां छे. (६) अने एवो निश्चय न होय तेना कल्याणमां फेर कह्यो छे [७] बाबतो छे.

१ प्र० बीजा प्रश्नमां ज्यां अमे रह्या होइए त्यांज परमधाम जाणे एम कह्युं ते कियुं जाणवुं ?

१ उ० श्रीजीमहाराजना तेजरूप अक्षरधामने परमधाम कह्युं छे अने प्रत्यक्ष भगवान पोताने कह्या छे, माटे वचनामृतमां ज्यां ज्यां प्रत्यक्ष भगवान कह्या होय त्यां श्रीजीमहाराजने जाणवा.

२ प्र० संतने नारदसनकादिक जेवा, सत्संगीओने उद्धव, अक्रूर तथा गोप जेवा, बाइयोने गोपीयो, लक्ष्मी, सीता, पार्वती जेवी कही अने (छे० ३ मां) गोलोक, वैकुंठादिक धामोनी सभाथी आ सत्संगीनी सभाने अधिक कही छे, ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० जेम नारदसनकादिक, उद्धवादिक तथा लक्ष्मी आदिक ते सर्वे एमना इष्टदेवोना मुक्त छे, तेम आ संत तथा सत्संगीयो तथा बाइयो ते सर्वे अक्षरधामना धामी जे प्रत्यक्ष श्री स्वामिनारायण भगवान अमे ते अमारा मुक्त छे एम कह्युं छे ते (लो०११ ना बीजा प्रश्नमां) ते ते स्थानोने ते ते इष्टदेवनां धाम जाणवां अने ते ते पार्षदोने ते ते इष्टदेवना मुक्त जाणवा एम कह्युं छे.

३ प्र० त्रीजा प्रश्नमां वैराजना स्वामी पुरुषोत्तम कह्या ने तेमनुं धाम अक्षर कह्युं ते वैराजनी ने श्रीजीमहाराजनी वच्चे तो घणा भेद छे अने आ ठेकाणे पाधराज वैराजना स्वामी पुरुषोत्तम कह्या ते पुरुषोत्तम किया जाणवा ? अने एमनुं अक्षरधाम कह्युं ते कियुं जाणवुं ? अने अक्षरधामनां रोम कह्यां ते कियां जाणवां ?

३ उ० वैराजथी लइने मूळअक्षरपर्यंत तथा तेथी पर जे मुक्त ते सर्वेना मूळस्वामी श्रीजीमहाराज छे, माटे श्रीजीमहाराजने स्वामी कह्या छे अने मूर्तिमान मूळअक्षरने आ ठेकाणे अक्षरधाम कह्युं छे अने ए मूर्तिमान अक्षरधामनी किरणोने रोम कह्यां छे.

४ प्र० मूळअक्षरना तेजनी किरणोरूपी रोमने विषे ब्रह्मांड उडतां फरे छे ते कियां जाणवां ?

४ उ० आ ठेकाणे मूळपुरुषरूपी ब्रह्मांड कह्यां छे अने वासुदेवब्रह्मने तेना ईश्वरो कह्या छे.

५ प्र० पृथ्वीथी लइने ठेठ मूळअक्षर सुधी एक बीजाना कारणने मूर्तिमान कह्या अने वळी पछीथी

भगवान्नुं अक्षरधाम छे ते तो अत्यंत मोटुं छे एम कह्युं ते पहेला अक्षर कह्या ते किया जाणवा ? अने पछीथी अक्षरधाम कह्युं ते कियुं जाणवुं ?

५ उ० मूर्तिमान अक्षर कह्या ते मूळअक्षरने कह्या छे, अने ए अक्षर श्रीजीमहाराजना अन्वय स्वरूपने रहेवानुं पात्र छे, माटे एनेज अक्षरधाम नामे आ ठेकाणे कह्या छे.

६ प्र० झीणां मच्छरथी लइने पृथ्वी सुधी लइने दश दृष्टांतने ठेकाणे सिद्धांत शो समझवो ?

६ उ०जेम आ पृथ्वी आगळ झीणां मच्छर होय, तेम मूर्तिमान मूळअक्षर आगळ अनेक ब्रह्मांडोनी अनेकपृथ्वीओनां आवरणो छे ते झीणां मच्छर जेवां छे.[१] अने जेम आ पृथ्वी आगळ कीडीओना समूह होय, तेम ए अक्षर आगळ जळनां आवरणो ते कीडीओ जेवां छे.(२) अने जेम आ पृथ्वी आगळ विंछीयो होय, तेम ते अक्षर आगळ तेजनां आवरणो छे. (३) अने जेम आ पृथ्वी आगळ सर्पोना समूह होय, तेम ए मूळअक्षर आगळ वायुनां आवरणो छे. (४) अने जेम आ पृथ्वी आगळ समळाना समूह होय तेम ए अक्षर आगळ आकाशोनां आवरणो छे. (५) अने जेम आ पृथ्वी आगळ पाडानो समूह होय, तेम ए अक्षर आगळ अहंकारोनां आवरणो छे. (६) अने जेम आ पृथ्वी आगळ हाथीना समूह होय, तेम मूळअक्षर आगळ महत्तत्त्वोनां आवरणो छे. [७] अने जेम आ पृथ्वी आगळ गिरनारना समूह होय, तेम मूळअक्षर आगळ प्रधान पुरुषोनां आवरणो छे. (८)अने जेम आ पृथ्वी आगळ मेरुना समूह होय, तेम मूळअक्षर आगळ प्रकृति पुरुषोनां आवरणो छे. (९) अने जेम पृथ्वी आगळ लोकालोको होय, तेम मूळअक्षर आगळ वासुदेव ब्रह्मानां आवरणो छे, एम कह्युं छे. [१०] माटे जेम आ पृथ्वी मच्छर आदिकथी लइने लोकालोक पर्यंत सर्वेथी अतिशे मोटी छे, तेम आ पृथ्वीओथी लइने वासुदेवब्रह्मनी कोटीयो पर्यंत सर्वेथी मूळअक्षर ते अत्यंत मोटा छे अने एवीज रीते श्रीजीमहाराजनी कांति जे अक्षरधाम तेना आगळ मूळअक्षरो पण अनंत छे एवुं श्रीजीमहाराजना प्रकाशरूप धाम ते अत्यंत मोटुं छे ने ते धामना पण श्रीजीमहाराज कारणने आधार छे.

७ प्र० मूळप्रकृतिना कारण ब्रह्म अने सर्वेना कारण अक्षरब्रह्म कह्या ते कोने जाणवा ?

७ उ० आ ठेकाणे मूळपुरुषने ब्रह्म नामे कह्या छे. अने मूळअक्षरने अक्षरब्रह्म कह्या छे.

८ प्र० ब्रह्म तो वासुदेवने कहेवाय छे अने मूळपुरुषने ब्रह्म कह्या तेनुं शुं कारण हशे ?

८ उ० मूळपुरुष पोताथी ओरा सर्वे अवतारोना तथा अनंतकोटी ब्रह्मांडना कारण छे ने पोताना तेजवडे करीने माया तथा मायामांथी उत्पन्न कर्यां एवां जे अनंतकोटी ब्रह्मांड ते सर्वेना आधार ने ते सर्वेमां व्यापक ने कर्मफळप्रदाता छे ने पोताना कार्यमां सर्वेथी मोटा छे, माटे ब्रह्म नामे कह्या छे.

९ प्र० आमां मूळअक्षररूप धामनी संकोच विकाश अवस्था नथी, एम कह्युं ने (लो० ७ ना २/६ बीजा प्रश्नमां) श्रीजीमहाराजनी पण संकोच विकाश अवस्था कही छे ते केवी रीते समजवुं ?

९ उ० पुरुषना कार्यमां अन्वय व्यतिरेकपणुं तथा संकोच विकाश अवस्था ते पुरुषनीज छे एम (प्र० ४६ मां) कह्युं छे पण ते पुरुषने विषे अन्वयपणे श्रीजीमहाराज तेजद्वारे रह्या छे ते पुरुषनी एकताए करीने (लो० ७ मां) श्रीजीमहाराजनी संकोच विकाश अवस्था कही छे पण वास्तव्य तो पुरुषनीज छे.

१०प्र० वैराजनुं ने मूळअक्षरनुं रूप अतिशे मोटुं कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

१०उ० एमना तेजने ने मूर्तिने अभेदपणे करीने अतिशे मोटा कह्या छे ते (लो० २ ना बीजा प्रश्नमां) मूळप्रकृति तथा अग्नि, वरुण, सूर्य तथा श्रीजीमहाराज ते सर्वे मनुष्य जेवडाज छे ने तेमनां कार्य मोटां छे एम कह्युं छे, माटे श्रीजीमहाराज तथा मूळअक्षर तथा ब्रह्म तथा मूळपुरुष इश्वर आदि सर्वेनी मूर्तियो मनुष्यना जेवडीज छे पण कोइनी मूर्ति मोटी नथी, माटे ज्यां मूर्ति मोटी कही होय त्यां मूर्तिना तेजनुं ने मुर्तिनुं अभेदपणुं कह्युं छे एम जाणवुं पण मुर्ति मोटी छे एम न समजवुं, माटे आ ठेकाणे अक्षरनी मुर्ति मोटी कही छे ते एना तेजने ने एने अभेदपणे करीने कह्युं छे एम जाणवुं ने श्रीजीमहाराजनुं तेज अतिशे अपार छे ते (लो० १५ ना पांचमा प्रश्नमां) जीव, पुरुष, अक्षरने पुरुषोत्तम तेमना प्रकाशमां भेद घणो छे, माटे मुळअक्षरना प्रकाशथी श्रीजीमहाराजनुं तेज अनंतगणुं छे अने श्रीजीमहाराजना तेज आगळ मुळअक्षरनी कोटीयोनां तेज ते कोटीमा भागना पा संगमां पण नथी आवतां, एवुं श्रीजीमहाराजनुं तेज छे ते जेना उपर श्रीजीमहाराज कृपा करे ते विलक्षणपणे देखे छे पण बीजो कोइ पृथक् देखवा समर्थ नथी एम कह्युं छे, माटे जे पुरुषोत्तमरूप थएला परम एकांतिक तथा अनादिमुक्त छे ते पृथक् देखे छे पण मुळअक्षररूप पोताने मानता होय ते मुळअक्षरना ने श्रीजीमहाराजना प्रकाशने पृथक् देखी शकता नथी माटे श्रीजीमहाराजनी मोटयप तो अतिशे अपार छे अने [प्र० ७२ ना २/४ बीजा प्रश्नमां] जेना एक एक रोमना छिद्रने विषे अनंतकोटी ब्रह्मांड परमाणुनी पेठे रह्यां छे एम कह्युं छे ते पण श्रीजीमहाराजनी मुर्तिने तेजनी अभेदपणे मोटयप कही छे अने ते ब्रह्मांड मुळअक्षररूपी जाणवां.

११प्र० धाम तो (पं० १/२ मां तथा प्र०-६/१६ मां) पोताना प्रकाशने कहेल छे तथा(म० -१/२३ मां) पोताना तेजने अक्षरधाम कह्युं छे तथा (-५/२० मां) एक रस परिपूर्ण पोताना तेजने कह्युं छे अने तेमां अमारा मुक्तोए सहित रह्या छीए एम कह्युं छे तथा (प्र० ४५ मां) पोताना तेजने सर्वत्र पूर्ण ने निराकार कह्युं छे तथा (प्र० ७/१ मां) तथा [छे० ३६ ना पहेला प्रश्नमां] पोताना तेजनेज ब्रह्मज्योतिनो समुह कह्यो छे ने तेमां अमे ने अमारा मुक्त सदा साकार मुर्तिमान रह्या छीए इत्यादिक घणे ठेकाणे पोताना तेजनेज अक्षरधाम कह्युं छे अने आमां मुळअक्षरने धाम नामे कह्या तेनुं शुं कारण हशे ?

११उ० मूळअक्षरमां श्रीजीमहाराज पोतानी कान्तिद्वारे अन्वयपणे रह्या छे, माटे तेने धाम नामे कह्युं छे. आ मूळअक्षरमां श्रीजीमहाराज अन्वयपणे रह्या छे (ते प्र० ७/१, ४१ मां सा० ५ ना बीजा प्रश्नमां तथा का० ६ मां इत्यादिकमां) कह्युं छे अने (प्र० -२/६१ मां)

आ मूळअक्षरने श्रीजीमहाराजना तेजरूप धामनुं बीजुं स्वरूप कह्युं छे अने उत्पत्त्यादिक करे छे ते सेवा कही छे.

१२ प्र० आ मूळ अक्षरने आ विना बीजा कोइ वचनामृतमां धाम नामे कह्या हशे के नहि ?

१२ उ० [प्र० ५१ मां तथा सा० १७ मां] आ मूळअक्षरने धाम नामे कह्या छे.

१३ प्र० अमारुं साधर्म्यपणुं पामेला मुक्त धाममां सेवामां रह्या छे एम कह्युं तेने केवा जाणवा ?

१३ उ० स्वामीत्वपणुं, दातापणुं, नियंतापणुं ए विना बीजा रूप, गुण, लावण्यता, सुंदरता, स्वतंत्रता, ऐश्वर्य, प्रताप, सामर्थी, सुखदायीपणुं इत्यादिक गुणे सरखा जाणवा. ते (म० ६७ मां) कह्युं छे.

१४ प्र० अक्षरमां प्रवेश करे छे ते अक्षर किया जाणवा ? अने प्रवेश केवी रीते करता हशे ?

१४ उ० जेमां प्रवेश करे छे ते अक्षर मूर्तिमान जाणवा अने ते अक्षरथी लइने ब्रह्मादिक सर्वेने विषे पात्रनी तारतम्यता प्रमाणे पोतानी अंतर्यामी शक्तिए करीने रह्या छे, ते उत्पत्तिकाळे अंतर्यामी शक्ति वडे प्रेरणा करे छे एम प्रवेश जाणवो.माटे प्रवेश एटले प्रेरणा जाणवी अने मूर्तिमान तो ए सर्वेथी जुदा पोताना तेजरूप धामने विषे रह्या छे ते पोताना मुक्तोने आनंद उपजावे छे.

१५ प्र० (४ चोथा प्रश्नमां) अमे पाधराज मनुष्याकृति धारीए छीए अने अनुक्रमे करीने पण मनुष्याकृति धारीए छीए एम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

१५ उ० श्रीजीमहाराज पोते स्वयं पधारे ते पाधराज आवे छे एम जाणवुं अने बीजा पोताना अवतारो आवे तेमां पोतानुं ऐश्वर्य आवे छे ते अनुक्रम जाणवो.

१६ प्र० (५ पांचमा प्रश्नमां) वर्त्तमानमां फेर पडे तो पण कल्याण थाय एम कह्युं ते वर्त्तमान किंयु जाणवुं ? अने कल्याण केवुं थतुं हशे ?

१६ उ० पंचवर्त्तमानमांहेलुं वर्त्तमान जाणवुं. तेमां प्रारब्धे करीने फेर पडे तो पण दृढ निश्चयवाळो कल्याणना मार्गमांथी पडे नहि पण दंड भोगववो पडे ने पछी धाममां जाय. ॥ ६३ ॥

संवत् १८७६ ना फागण वदि ९ नवमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणेबार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने काळा छेडानो खेस ओढ्यो हतो ने मस्तके हीरकोरनुं धोतीयुं बांध्युं हतुं ने तुळसीनी नवी कंठी कंठने विषे पहेरी हती ने मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे मुनिने प्रश्न पूछयो जे, (१) पुरुषोत्तम एवा जे भगवान तेमनुं शरीर आत्मा तथा अक्षर छे एम श्रुतिए कह्युं छे ते आत्मा तो सर्वत्र पूर्ण छे ने विकारे रहित छे ने ते आत्माने विषे कांइ हेय उपाधि नथी ने जेम भगवान मायाथकी पर छे,

तेम आत्मा पण माया थकी पर छे, एवो जे आत्मा ते कइ रीते भगवाननुं शरीर कहेवाय छे ? ने जीवनुं शरीर तो जीवथकी अत्यंत विलक्षण छे ने विकारवान छे ने देही जे जीव ते तो निर्विकारी छे. माटे देहने ने देहीने तो अत्यंत विलक्षणपणुं छे, तेम पुरुषोत्तमने ने पुरुषोत्तमना शरीरने विषे अत्यंत विलक्षणपणुं जोइए ते कहो केम विलक्षणपणुं छे? पछे सर्वे मुनिए जेनी जेवी बुद्धि तेणे तेवो उत्तर कर्यो पण यथार्थ उत्तर कोइ थकी थयो नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे उत्तर करीए जे, पुरुषोत्तम भगवान छे ते सदाय मूर्तिमान छे ने मूर्तिमान होय ते अशरीरीना आत्मा होय, जेम वरुण मूर्तिमान छे ते अशरीरी जे जळ ते सर्वनो आत्मा छे ने मूर्तिमान जे अग्नि ते ज्वाळारूप जे अशरीरी अग्नि ते सर्वनो आत्मा छे ने मूर्तिमान जे सूर्य ते अशरीरी जे प्रकाश तेनो आत्मा छे, तेम अशरीरी जे ब्रह्म तेना मूर्तिमान जे पुरुषोत्तम भगवान ते आत्मा छे, एवी रीते अक्षरने आ जे ब्रह्म ते पुरुषोत्तमनुं शरीर छे ने पुरुषोत्तम भगवान पोते शरीरी छे अने जे अशरीरी होय, ते असमर्थ होय ने आकाशनी पेठे शून्य धर्मवाळो होय, ने मूर्तिमान होय, तेतो समर्थ होय ने जे चाहे ते करे, ने ते मूर्तिमान जे पुरुषोत्तम भगवान ते आत्मा जे दृष्टाने ते आत्मा जेमां व्यापक छे एवुं जे दृश्य ए बेयना आत्मापणे करीने वर्ते छे ने ते आत्मा जे पुरुषोत्तम ते ज्यारे रूपवान एवुं जे दृश्य तेना आत्मापणे करीने शास्त्रने विषे कह्या होय, त्यारे ते पुरुषोत्तमने दृश्यरूपे करीने प्रतिपादन कर्या होय ने ज्यारे ए दृष्टाना आत्मापणे करीने प्रतिपादन कर्या होय, त्यारे ए पुरुषोत्तमने अरूपपणे करीने शास्त्रने विषे कह्या होय छे ने वस्तुताए तो रूपवान जे दृश्य ने अरूप जे आत्मा ए बे थकी पुरुषोत्तम भगवान न्यारा छे ने सदा मूर्तिमान छे ने प्राकृत आकारे रहित छे ने मूर्तिमानथका पण दृष्टा ने दृश्य ए बेयना दृष्टा छे. (१) एवा जे पुरुषोत्तम भगवान १
ते जीवना कल्याणने अर्थे कृपाए करीने पृथ्वीने विषे मनुष्य जेवा जणाय छे. (२) २
तेने जे आवी रीते सदा दिव्य मूर्तिमान जाणीने उपासना भक्ति करे छे, तेतो ए भगवानना साधर्म्यपणाने पामे छे, ने अनंत ऐश्वर्यने पामे छे. (३) अने जे ए भगवानने ३
निराकार जाणीने ध्यान उपासना करे छे, तेतो ब्रह्मसुषुप्तिने विषे लीन थाय छे ते पाछो कोइ दिवस निसरतो नथी ने कोइ ऐश्वर्यने पण पामतो नथी अने आ जे वार्त्ता ते अमे प्रत्यक्ष देखीने कही छे, माटे एमां कांइ संशय नथी. (४) अने आ वार्त्ता तो जेने ४
एवा भगवानना स्वरूपमां स्थिति थइ होय ते थकीज पमाय छे पण बीजा थकी तो पमातीज नथी, माटे आ वार्त्ताने अति दृढ करीने राखजो. (५) इति वचनामृतम् ॥६४॥ ५

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [१] छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, दृष्टा जे अमारुं तेज ते जेमां व्यापक छे एवुं दृश्य जे मूर्तिमान अक्षर ए बेयना अमे आत्मा छीए

अने ए बेयथी न्यारा ने सदा मूर्तिमान छीए. (१) अने जीवोना कल्याणने अर्थे कृपाए करीने मनुष्यरूपे देखाइए छीए. [२] अने जे अमने आवी रीते दिव्यमूर्तिमान जाणीने अमारी उपासना भक्ति करे ते अमारा साधर्म्यपणाने पामे छे ने अनंत ऐश्वर्यने पामे छे. [३] अने जे अमने निराकार जाणीने भजे ते ब्रह्मसुषुप्तिमां लीन थाय छे ते कोई दिवस निसरतो नथी. (४) अने अमारी मूर्तिमां स्थिति थइ होय ते थकीज आ वात पमाय छे. (५) बाबतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां अक्षर करतां आत्माने पहेले नंबरे गण्या छे अने वळी सर्वत्र पूर्ण अने विकारे रहित कह्या छे ए आदिक मोटां मोटां विशेषणो श्रीजीमहाराजना जेवांज आप्यां छे ते आत्मा कोने समजवा ? अने आत्मा जेमां व्यापक छे एवुं दृश्य कह्युं ते दृश्य कोने समजवुं ? अने आत्माना शरीरी श्रीजीमहाराजने केवी रीते जाणवा ?

१ उ० श्रीजीमहाराजनी मूर्तिना प्रकाशने आत्मा कह्या छे अने आ आत्माने (प्र० ४५ मां) सच्चिदानंद ब्रह्म नामे कह्या छे, [६६/५ मां] ब्रह्मसत्तारूप प्रकाश नामे कह्या छे. [७१ ना पांचमा प्रश्नमां] निराकार अक्षरब्रह्म नामे कह्या छे. (का० ६मां) निर्गुण स्वरूप नामे कह्या छे ने अक्षरना आत्मा कह्या छे. (पं० १/२ मां) पोतानी मूर्तिनो प्रकाश तथा अक्षर ब्रह्म तथा धाम नामे कह्या छे. (म० १३/२ मां) आत्मा, ब्रह्म तथा अक्षरधाम ए त्रण नामे कहेल छे, (५०/६ मां) एकरस परिपूर्ण ब्रह्मस्वरूप तथा अक्षर ब्रह्म ए बे नामे कह्या छे, (छे० ३० ना पहेला प्रश्नमां) चैतन्यनो राशि कहेल छे, (३६ ना पहेला प्रश्नमां) आ आत्माने ब्रह्म ज्योति नामे कह्या छे, माटे आ ब्रह्म एटले श्रीजीमहाराजनी मूर्तिना तेजरूप आत्मा ते सर्वत्र पूर्ण छे अने मूर्तिमान मूळ अक्षरना दृष्टा छे अने मूर्तिमान मूळ अक्षर ते आ आत्मानुं दृश्य छे एटले आ आत्मा मुर्तिमान मूळ अक्षरमां व्यापक छे, माटे आत्माने दृष्टा कह्या छे अने मुर्तिमान मूळ अक्षरने दृश्य कह्या छे, माटे मूळअक्षर छे ते आ आत्मानुं शरीर छे अने आत्मा मूळ अक्षरना शरीरी छे एम जाणवुं अने आ जे ब्रह्म कहेतां आत्मा जे श्रीजीमहाराजनुं तेज ते श्रीजीमहाराजने आधारे छे, माटे श्रीजीमहाराज शरीरी छे ने आत्मा शरीर छे.

२ प्र० अशरीरी होय ते असमर्थ होय ने शून्य धर्मवाळो होय ने मुर्तिमान होय ते समर्थ होय एम कह्युं त्यारे मूळ अक्षर तो मुर्तिमान छे, माटे समर्थ होवा जोइए अने आत्मा तो निराकार छे माटे असमर्थ होवा जोइए, माटे असमर्थ एवा जे निराकार आत्मा ते मुर्तिमान मळअक्षरमां व्यापक केम कहेवाय ?

२ उ० जे मुर्तिनुं तेज होय ते मुर्ति आगळ असमर्थ होय पण एथी जे ओरा होय तेनाथी तो समर्थ होय अने तेनुं आधार, व्यापक ने नियामक होय, माटे श्रीजी-महाराजनुं तेज श्रीजीमहाराज आगळ असमर्थ छे, पण मूळ अक्षरनुं तो आधार ने व्यापक ने नियंता छे. अने मूळ अक्षरनुं तेज मूळ अक्षरनी मुर्ति आगळ असमर्थ छे, पण

वासुदेव ब्रह्मनुं नियंता आधारने व्यापक छे, अने वासुदेव ब्रह्मनुं तेज ते वासुदेवनी मुर्ति आगळ असमर्थ छे, पण मूळ पुरुषनुं नियंताने आधारने व्यापक छे, माटे कारण आगळ असमर्थ कह्युं छे, पण कार्य आगळ तो समर्थ छे.

३ प्र० दृश्य अने दृष्टा कोने कोने कहेवाता हशे ?

३ उ० देहने दृश्य अथवा शरीर कहेवाय अने देहने धारण करनार चैतन्य वर्ग जे जीवात्मा तेने देहना शरीरी, दृष्टा तथा आत्मा कहेवाय, अने चैतन्य जीव वर्गने धारण करनारुं जे मूळ पुरुषनुं तेज तेने जीव वर्गनुं शरीरी, दृष्टा तथा आत्मा कहेवाय, अने मुर्तिमान मूळ पुरुषने चैतन्य जीव वर्गना परमात्मा कहेवाय. अने वासुदेव ब्रह्मनु तेज छे तेने मुर्तिमान मूळ पुरुषादिकनुं शरीरी, दृष्टा तथा आत्मा कहेवाय, अने मुर्तिमान वासुदेवने मूळ पुरुषादिकना परमात्मा कहेवाय, अने मूळ अक्षरना तेजने वासुदेव ब्रह्मआदिकनुं शरीरी, आत्मा तथा दृष्टा कहेवाय, अने मुर्तिमान मूळ अक्षरने वासुदेव ब्रह्म आदिकना परमात्मा कहेवाय. अने श्रीजीमहाराजनुं तेज छे तेने मूळअक्षरादिकनुं शरीरी, दृष्टा तथा आत्मा कहेवाय, अने मुर्तिमान पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण तेमने मुर्तिमान मूळ अक्षरादिक सर्वेना परमात्मा कहेवाय.

४ प्र० आ उपर कह्या ते सर्वेने एक बीजाना उपरीनां दर्शन थतां हशे के नहिं ?

४ उ० जीववर्ग तो मायाबद्ध छे, तेथी मूळपुरुषना तेजनी ने जीवनी वच्चे मायानो पडदो छे, माटे जीववर्गने मूळपुरुषना तेजनुं दर्शन न थाय ने मूळपुरुष तो वासुदेवब्रह्मनी सभामांथी उठ्या छे ने एना कार्यनो प्रलय थाय छे, त्यारे वासुदेवनी समीपे रहे छे अने वासुदेवब्रह्मना तथा मूळअक्षरोनां धाम जुदां जुदां छे ने अचळ छे ने एमने पोतपोताना उपरी पासे आववा जवानी गति नथी, माटे वासुदेवब्रह्मने मूळअक्षरनां तेजद्वारे दर्शन थाय छे अने मूळअक्षरने श्रीजीमहाराजनां तेजद्वारे दर्शन थाय छे, जेम समुद्रने विषे जळजंतु रह्या छे ते जळने देखे छे, पण वरुणने देखता नथी तेम अने जेम सूर्यना प्रकाशने विषे मनुष्य पशुपक्षी आदिक सर्वे रह्या छे ते सूर्यना तेजने देखे छे, पण सूर्यनी मुर्तिने देखता नथी तेम अने जेम वालखिल्य ऋषि सूर्यना समिपे रह्या थका सूर्यनां दर्शन करे छे, तेम श्री स्वामिनारायणना परमएकांतिक मुक्तो तो ते साक्षात् श्री स्वामिनारायण भगवाननां दर्शन करे छे अने अनादिमुक्त श्री स्वामिनारायण भगवाननी मूर्तिमां रह्या थका सुख भोगवे छे, आ वात अमे नजरे जोइने यथार्थ जेम छे तेम कही छे.

५ प्र० श्रीजीमहाराजे मुर्तिमान मूळ अक्षरने दृश्य कह्या ने ते दृश्य जे मुर्तिमान मूळ अक्षर तेनुं आत्मा पोतानुं तेज कह्युं अने पोतानुं तेज जे दृष्टा तेना आत्मा मुर्तिमान पोताने कह्या, अने शास्त्रमां दृश्यना आत्मा कह्या होय, त्यारे मुर्तिमान कह्या होय अने दृष्टाना आत्मा कह्या होय त्यारे अरूप कह्या होय एम कह्युं ते परोक्ष शास्त्रनो मत जोतां तो मुर्तिमानना आत्मा मुर्तिमान थया अने निराकारना आत्मा निराकार थया ते केवी रीते समजवुं ?

५ उ० परोक्ष शास्त्रमां मूळ पुरुष पुरुषोत्तमने मायाथकी थयुं जे विश्व तेना आत्मा कह्या होय त्यारे विश्वरूपे वर्णव्या होय, अने ए मूळ पुरुषनुं तेज जे विश्वनुं आत्मा तेना आत्मा कह्या होय त्यारे अरूपपणे वर्णव्या होय पण विश्व जे दृश्य अने दृष्टा जे तेज ए बेथी न्यारा न कह्या होय, केम जे परोक्षशास्त्रमां दृश्य जे विश्व तेने विषे पोताना तेजरूप अंतर्यामी शक्तिए व्यापक थका ए बेयथी मुर्तिमान न्यारा छे ते वर्णव्या नथी. माटे श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, आजे अमे वात करी तेतो जेने अमारा स्वरूपमां एटले अमारे विषे स्थिति थइ होय ते थकीज पमाय छे. माटे श्रीजीमहाराजे पोतानो सिद्धांत कह्यो छे जे, अमारुं तेज मुर्तिमान अक्षरनुं आत्मा छे ने नियंताने व्यापक छे अने ए तेजना पण अमे मुर्तिमान आत्मा छीए, अने ए अक्षरथी ने अमारा तेजथी न्यारा छीए, एवी रीते मूळ अक्षरथी तथा अमारा तेजथी अमने न्यारा ने सदा दिव्य मुर्तिमान जाणीने अमारी उपासना भक्ति करे ते अमारा साधर्म्यपणाने पामे छे अने अनंत ऐश्वर्यने पामे छे एटले अमारा अनादिमुक्त जेवा थाय छे अने बीजा सर्वेने भावी वात समजावीने, पोताना जेवा मुक्त करीने, अमारी मुर्तिना सुखे सुखीआ करे छे एम कह्युं छे, पण अमारा विना कां अमारा मुक्त विना कोइथी आ वात पमाती नथी ने सुखीआ पण थवातुं नथी एम कह्युं छे. अने मायानी अंदर रह्या जे चैतन्य जीव वर्ग तेमनां दृश्य जे मायिक देहो ते साकार छे अने पोते चैतन्य जीव वर्ग जे दृष्टा ते निराकार छे अने मायाथी पर जे मूळ पुरुष तथा वासुदेव ब्रह्म तथा मूळ अक्षर ते सर्वे दिव्य मुर्तिमान छे अने ए सर्वेनां जे पोतपोतानां तेज छे ते पोतपोतानां दृश्य छे माटे मुर्तिमानना दृश्य निराकार छे ने पोतपोताना तेजना दृष्टा जे पोते ते मुर्तिमान छे अने ए सर्वेना दृष्टा श्रीजीमहाराज छे अने श्रीजीमहाराजनुं तेज छे ते मुर्तिमान श्रीजीमहाराजनुं दृश्य छे ने मुर्तिमान मूळ अक्षरनुं दृष्टा छे ने मूळ अक्षरनुं तेज ते मूळ अक्षरनुं तेज ते मूळ अक्षरनुं दृश्य छे ने मुर्तिमान वासुदेव ब्रह्मनुं दृष्टा छे ने वासुदेवनुं तेज ते वासुदेवनुं दृश्य छे ने मूर्तिमान मूळ पुरुषनुं दृष्टा छे अने मूळ पुरुषनुं तेज ते मूळ पुरुषनुं दृश्य छे ने मूळ मायानी अंदर रह्या जे सर्वे चैतन्य जीव वर्ग तेनुं दृष्टा छे अने ए जीव वर्ग सर्वे निराकार छे ने पोतपोताना देहना दृष्टा छे, केमके तेने विषे देहदेही भाव छे.

६ प्र० त्रीजी बाबतमां भगवानने निराकार जाणीने ध्यान उपासना करनारो ब्रह्म सुषुप्तिमां लीन थाय छे एम कह्युं ते ब्रह्मसुषुप्ति कइ जाणवी ?

६ उ० आंही साधनकाळमां भगवानना अवतार थाय छे तेने सगुण जाणीने ध्यान, भजन, उपासना, भक्ति करतो होय अने एमनी आज्ञामां यथार्थ वर्ततो होय ने शास्त्रमां कह्या जे विधि निषेध ते यथार्थ पाळतो होय पण निर्गुण स्वरूप छे ते तो निराकार छे एम जाणतो होय ते भगवानने मूळ पुरुषना तेजथी पर जाणी शके नहि, माटे ते मूळपुरुषना तेजमां जळे पाषाणवत् लीन थाय छे पण तेथी पर निराकार समजनारनी गति नथी ते

तेजने आ ठेकाणे ब्रह्मसुषुप्ति कही छे अने जे भगवानने केवळ निराकार जाणे छे ने पृथ्वीने विषे भगवानना अवतार थाय छे तेनुं भजन वंदन करता नथी ते शुष्क वेदांती तो नारकी थाय छे. ॥६४॥

संवत् १८७६ ना फागण वदि १४चौदशने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने पोढवाना ओरडानी ओसरीए गादी तकिया नखावीने विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. ने श्रीजीमहाराज कथा करावता हता ते समे मोटा मोटा परमहंसने पोताने समीपे बोलाव्या पछी कथानो अध्याय पुरो थयो त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, हवे जेटला मोटा मोटा साधु छो ते परस्पर प्रश्न उत्तर करो, केम जे प्रश्न उत्तर करे त्यारे जेने जेवी बुद्धि होय ते जाणवामां आवे.

१ पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए परमानंदस्वामीने प्रश्न पूछ्यो जे, (१) आकाशनी उत्पत्ति ने लय ते किये प्रकारे छे ? त्यारे परमानंदस्वामी ए प्रश्ननो उत्तर करवा लाग्या पण थयो नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेम बाळक होय ने ते ज्यारे प्रथम माताना उदरमां होय त्यारे तथा जन्म समयमां तेने हृदयादिक जे इंद्रियोनां छिद्र ते सूक्ष्म होय ने पछी जेम जेम ते बाळक वृद्धिने पामतो जाय, तेम तेम छिद्रनी वृद्धि थती जाय ने तेमां आकाश पण उत्पन्न थातो जणाय अने ज्यारे ए वृद्ध अवस्थाने पामे, त्यारे एनां इंद्रियोनां छिद्र ते संकोचने पामतां जाय ने तेमां आकाश पण लय थातो जणाय, तेम ज्यारे विराट्देह उपजे, त्यारे तेने अवांतर हृदयादिक छिद्रमां आकाश उत्पन्न थातो जणाय अने ज्यारे ए विराट्देहनो लय थाय त्यारे आकाश लय पाम्यो जणाय, एम आकाशनी उत्पत्ति ने लय छे, पण जे आकाश सर्वेनो आधार छे ते तो जेम प्रकृतिपुरुष नित्य छे तेम नित्य छे एनी उत्पत्तिने लय ते कहेवाय नहिं अने वळी समाधिए करीने पण आकाशनी उत्पत्ति ने लय छे तेनी रीतने तो जे समाधिवाळा छे ते जाणे छे. (१) १

२ पछी परमानंदस्वामीए स्वयंप्रकाशानंदस्वामीने प्रश्न पूछ्यो जे,[२]सुषुम्णा नाडी ते देहने मांहिली कोरे केम रही छे ? ने देहथी बाहेर केम रही छे ? त्यारे ए प्रश्ननो उत्तर स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए करवा मांड्यो पण थयो नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, आ ब्रह्मांडमां जेटलुं कारखानुं छे तेटलुंज आ पिंडमां पण छे ते पिंडमां अल्प छे ने ब्रह्मांडमां महत् छे ने जेवो आ पिंडनो आकार छे तेवोज ब्रह्मांडनो आकार छे ने जेम ब्रह्मांडमां नदियो छे तेम पिंडमां नाडीयो छे ने जेम ब्रह्मांडमां समुद्र छे तेम पिंडमां

कुक्षिने विषे जळ छे ने जेम त्यां चंद्र सूर्य छे तेम पिंडमां इडा पिंगळा नाडीने विषे चंद्र सूर्य छे इत्यादिक सामग्री जेम ब्रह्मांडमां छे तेम पिंडमां छे अने आ पिंडमां जे इंद्रियोनी नाडीयो छे तेनी ब्रह्मांड साथे एकता छे ते जिह्वाना अंतने पामे, त्यारे वरुण देव पमाय छे अने वाक् इंद्रियना अंतने पामे त्यारे अग्निदेवने पामे छे अने त्वचाना अंतने पामे त्यारे वायुदेवने पामे छे अने शिश्नना अंतने पामे त्यारे प्रजापतिने पामे छे अने हाथना अंतने पामे त्यारे इंद्रने पामे छे अने तेमज हृदयने विषे रही जे सुषुम्णा नाडी तेनुं अंत जे ब्रह्मरंध्र तेने ज्यारे पामे त्यारे शिशुमारचक्रने विषे रही जे वैश्वानर नामे अग्नि अभिमानी देवता तेने पामे छे त्यारे ब्रह्मरंध्रथी लइने प्रकृति पुरुष सुधी एक तेजनो मार्ग सळंग रह्यो छे तेने देखे छे ते तेजना मार्गने सुषुम्णा कहीए, एवी रीते सुषुम्णा नाडी पिंडमां ने ब्रह्मांडमां रही छे. (२) २

३ पछी वळी परमानंदस्वामीए स्वयंप्रकाशानंदस्वामीने प्रश्न पूछ्यो जे, (३) प्रथम जाग्रत अवस्थानो लय छे के स्वप्ननो लय छे के सुषुप्तिनो लय छे? त्यारे ए प्रश्ननो उत्तर स्वयंप्रकाशानंदस्वामीने न आवड्यो त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जाग्रत अवस्थाने विषे स्नेहे करीने भगवाननी मूर्तिने विषे लक्ष थाय त्यारे प्रथम जाग्रत अवस्थानो लय थाय छे ने पछी स्वप्ननो ने सुषुप्तिनो लय थाय छे अने ज्यारे मने करीने चिंतवन करते करते स्वप्नने विषे भगवाननी मूर्तिमां लक्ष थाय, त्यारे प्रथम स्वप्ननो लय थायने पछी जाग्रतनो ने सुषुप्तिनो लय थाय छे अने ज्यारे उपशमपणे करीने भगवाननी मूर्तिनुं चिंतवन करते करते सुषुप्तिने विषे लक्ष थाय छे, त्यारे प्रथम सुषुप्तिनो लय थाय छे ने पछी जाग्रतनो ने स्वप्ननो लय थाय छे एवी रीते ए प्रश्ननो उत्तर कर्यो. [३] ३

४ पछी वळी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए परमानंदस्वामीने प्रश्न पूछ्यो जे, [४] भगवानने विषे ज्ञानशक्ति,क्रियाशक्ति ने इच्छाशक्ति छे ते केम समजवी? त्यारे श्रीजीमहाराज हसीने बोल्या जे एनो उत्तर तो तमने पण नहि आवडतो होय एम कहीने पोते उत्तर करवा लाग्या जे, आ जीव ज्यारे सत्त्वगुण प्रधानपणे वर्ततो होय ने त्यारे जे कर्म करे ते कर्मनुं फळ ते जाग्रत अवस्था छे अने आ जीव ज्यारे रजोगुण प्रधानपणे वर्ते ने ते समयमां जे कर्म करे ते कर्मनुं फळ स्वप्न अवस्था छे अने ज्यारे आ जीव तमोगुण प्रधानपणे वर्ततो होय ने ते समयमां जे कर्म करे तेनुं फळ ते सुषुप्ति अवस्था छे अने ते सुषुप्ति अवस्थाने आ जीव पामे छे, त्यारे जेवी पाणानी शिला होय ते जेवो जड थइ जाय छे अने एने कोइ प्रकारनुं ज्ञान रहेतुं नथी जे, हुं पंडित छुं के मूर्ख छुं के आ काम कर्युं छे के आ काम करवुं छे के आ मारी जाति छे के आवो मारो वर्ण छे के आवो मारो

आश्रम छे के आ मारुं नाम छे के आ मारुं रूप छे के हुं देव छुं के मनुष्य छुं के बाळक छुं के वृद्ध छुं के धर्मिष्ठ छुं के पापिष्ठ छुं इत्यादिक कोइ प्रकारनुं ज्ञान रहेतुं नथी अने एवी रीतनो ज्यारे आ जीव थइ जाय छे त्यारे जे भगवान छे ते एने ज्ञानशक्तिए करीने सुषुप्तिमांथी जगाडीने एने एनी सर्व क्रियानुं ज्ञान आपे छे तेने ज्ञानशक्ति कहीए; अने ए जीव जे जे क्रियाने विषे प्रवर्ते छे ते भगवाननी जे क्रियाशक्ति तेनुं अवलंबन करीने प्रवर्ते छे तेने क्रियाशक्ति कहीए; अने ए जीव जे जे कोइ पदार्थनी इच्छाने प्राप्त थाय छे ते परमेश्वरनी इच्छाशक्तिने अवलंबने करीने प्राप्त थाय छे तेने इच्छाशक्ति कहीए; अने ए जीवने जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति ए त्रण अवस्था भोगवाय छे ते केवळ कर्मे करीनेज नथी भोगवाती ए तो एने कर्मना फळप्रदाता जे परमेश्वर ते ए जीवने ज्यारे कर्मफळने भोगवावे छे त्यारे भोगवे छे, केम जे आ जीव ज्यारे जाग्रत अवस्थाना फळने भोगवतो होय ने त्यारे ए इच्छे जे मारे स्वप्नमां जवुं छे तो एनी वते स्वप्नमां जवाय नहिं, शा माटे जे फळप्रदाता जे परमेश्वर ते एनी इन्द्रियोने रुंधी राखे छे अने स्वप्नमांथी जाग्रतमां आववाने इच्छे तो जाग्रतमां अवाय नहि, अने सुषुप्तिमां पण जवाय नहि अने सुषुप्तिमांथी स्वप्नमां तथा जाग्रतमां अवाय नहिं, ए तो ज्यारे जे कर्मना फळना भोगवावनारा परमेश्वर छे ते एने जे अवस्थाना कर्मफळने भोगवावे तेनेज भोगवी शके छे पण ए जीव पोतानी इच्छाए करीने अथवा कर्मे करीने कर्मनां फळने भोगवी शकतो नथी, एवी रीते भगवानने विषे ज्ञानशक्ति, क्रियाशक्ति ने इच्छाशक्ति ते रही छे एम श्रीजीमहाराजे कृपा करीने उत्तर कर्यो. (४) इति वचनामृतम् ॥ ६५ ॥ ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (४)छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे तमोगुणनुं कार्य जे आकाश तेनी उत्पत्ति ने लय कह्यो छे पण सर्वाधार आकाशनो लय नथी कह्यो. (१) बीजामां पिंडनी ने ब्रह्मांडनी एकता कही छे ने सुषुम्णा नाडीनुं अंत ब्रह्मरंध्र कह्युं छे ते ब्रह्मरंध्रने पामे त्यारे मूळपुरुषना तेजने देखे छे, [२] त्रीजामां स्नेहे करीने अमारी मूर्तिमां लक्ष थाय त्यारे प्रथम जाग्रतनो लय थाय छे अने मने करीने चिंतवन करतां करतां स्वप्नने विषे अमारी मूर्तिमां लक्ष थाय त्यारे प्रथम स्वप्ननो लय थाय छे अने उपशमपणे करीने अमारी मूर्तिनुं चिंतवन करतां करतां सुषुप्तिने विषे अमारी मूर्तिमां लक्ष थाय त्यारे प्रथम सुषुप्तिनो लय थाय छे. [३] चोथामां जाग्रत, स्वप्न, ने सुषुप्ति अवस्थानुं फळ तेने जीव पोतानी इच्छाथी अथवा कर्मे करीने भोगवी शकतो नथी; अमे भोगवावीए ते अवस्थाना फळने भोगवी शके छे एम कह्युं छे. [४] बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां समाधिए करीने आकाशनी उत्पत्तिने लय कह्यो ते केवी रीते समजवो ?
१ उ० जेम इंद्रियोना छिद्रनी वृद्धि थवे करीने अने संकोच पामवे करीने उत्पत्ति ने लय

छे, तेवी रीते समाधिवाळा समाधिमां जाय छे त्यारे नाडीयो जीवमां खेंचाईने संकोचने पामे छे, त्यारे आकाश लय पामे छे, अने ज्यारे समाधिमांथी बहार आवे छे त्यारे नाडीयो विकाशने पामे छे, त्यारे आकाश उत्पन्न थाय छे, एवी रीते समाधिने विषे आकाशनी उत्पत्तिने लय छे.

२ प्र० बीजा प्रश्नमां इंद्रियोना अंतने पामे, त्यारे देवने पामे एम कह्युं ते शी रीते पमातुं हशे?

२ उ० योगाभ्यासवाळो होय ते जे जे नाडीने जे जे इंद्रियो साथे एकता होय ते ते नाडीए जीवने चडावे, ने ते नाडीना अंतने पामे त्यारे ते इंद्रियना देवने देखे.

३ प्र० चोथा प्रश्नमां भगवाननी ज्ञानशक्तिना अवलंबने करीने जीव ज्ञान पामे छे अने भगवाननी क्रियाशक्तिने अवलंबने करीने जीव क्रिया करे छे ने भगवाननी इच्छाशक्तिने अवलंबने करीने जीव पदार्थनी इच्छाने पामे छे एम कह्युं, त्यारे तो कर्मना कर्त्ता भगवान थया त्यारे पुन्य पाप जीवने माथे न रह्युं अने (प्र० २९ ना पहेला प्रश्नमां तथा ७८ ना पहेला प्रश्नमां इत्यादिकमां) पवित्र देशकाळादिक सेववा एम कह्युं छे ते ज्यारे कर्मना कर्त्ता भगवान होय त्यारे जीवने रुडा देशादिक सेववानुं शुं प्रयोजन छे, केमजे कर्म तो भगवान करावे त्यारेज थाय छे, माटे ए परस्पर विरोध आवे छे ते केवी रीते समजवुं ?

३ उ० जीवे त्रण गुण प्रधानपणे पूर्वे करेलां कर्म ते कर्मनुं फळ त्रणे अवस्थाओमां भोगवाय छे, ते फळ भोगववां तेमां भगवाननी इच्छाशक्ति, क्रियाशक्ति ने ज्ञानशक्ति भळे तो भोगवाय. पण केवळ जीवनी इच्छाथी के कर्मे करीने फळने भोगवी शकातां नथी एम कह्युं छे, पण जीव जे जे कर्म करे छे तेमां तो भगवाननी एके शक्ति भळती नथी मात्र फळ भोगववामां भळे छे, पण कर्म करवामां भळती नथी कर्म तो बुद्धि अनुसारे ने संगानुसारे करे छे, ते (सा० ६ ना ½ पहेला प्रश्नमां) कह्युं छे जे जीवने त्रणे अवस्थाओना फळने भोगवावनारा भगवान छे पण कर्म करावनारा भगवान छे एवुं क्यांई कह्युं नथी,माटे सारा देशादिक सेववा ने संतनो संग राखवो ने नियममां वर्त्तवुं; जो नियममां वर्ते नहि तो करेलां कर्म जीवने भोगववां पडे ते (जे० ½ मां) अमारा नियम नहि पाळो तो अमारे ने तमारे लेवा देवा नथी एम कह्युं छे. ॥६५॥

संवत् १८७६ना फागण वदि अमासने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणेबार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने काळा छेडानो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी पछेडी ओढी हती ने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ **पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) श्रीमद्भागवतने विषे वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न ने अनिरुद्ध ए चतुर्व्यूहनीज वार्ता छे ते कोइ ठेकाणे एने सगुण करी कहे छे अने कोइ ठेकाणे एने निर्गुण करी कहे छे,ते ज्यारे निर्गुण करीने कहे छे,त्यारे वासुदेव**

भगवानने कहे छे ने ज्यारे सगुण करीने कहे छे त्यारे संकर्षण, अनिरुद्ध, प्रद्युम्नने कहे छे, माटे ज्यारे निर्गुणपणे कह्या होय, त्यारे सांभळनारानी ने वांचनारानी मति भ्रमि जाय छे अने एम जाणे छे जे, भगवानने तो आकार नथी ते समझनारानी अवळी समझण छे अने शास्त्रमां जे शब्द छळ छे ते एकांतिक भक्त विना बीजाने समझाता नथी ते किया शब्द छळतो जे, भगवान अरूप छे, ज्योतिस्वरूप छे, निर्गुण छे ने सर्वत्र व्यापक छे, एवां वचन सांभळीने मूर्ख होय ते एम जाणे जे, शास्त्रमां तो भगवानने अरूपज कह्या छे अने जे एकांतिक भक्त होय तेतो एम जाणे जे, शास्त्रमां भगवानने जे अरूप ने निर्गुण कह्या छे तेतो मायिक एवा जे रूपने गुण तेना निषेधने अर्थे कह्या छे पण भगवान तो नित्य दिव्यमूर्ति छे अनंत कल्याण गुणे युक्त छे ने तेजपुंज कह्या छे ते तो मूर्ति विना तेज होय नहि, माटे ए तेज ते मूर्तिनुं छे, जेम अग्निनी मूर्ति छे ते मूर्तिमांथी अग्निनी ज्वाळा प्रगट थाय छे तेणे करीने ते अग्निनी मूर्ति देखाती नथी अने ज्वाळा देखाय छे, पण समजु होय ते एम जाणे जे, अग्निनी मूर्तिमांथीज ज्वाळा निकळे छे तेमज वरुणनी मूर्तिमांथी जळ प्रगट थाय छे ते जळ देखाय छे अने वरुणनी मूर्ति देखाती नथी, पण समजु होय ते एम जाणे जे, वरुणनी मूर्तिमांथी सर्वे जळ छे, तेम ब्रह्म सत्तारूप जे कोटी कोटी सूर्य जेवो प्रकाश छे ते पुरुषोत्तम भगवाननी मूर्तिनो प्रकाश अने शास्त्रमां एवां वचन होय जे, जेम कांटे करीने कांटो काढीने पछी बेयनो त्याग करे, तेम भगवान पृथ्वीनो भार उतारवाने काजे देहने धरे छे ने भार उतारीने देहनो त्याग करेछे एवा जे शब्दना छळ तेने सांभळीने मूर्ख होय ते भुला पडे छे अने भगवानने अरूप समजे छे, पण भगवाननी जे मूर्ति तेने दिव्य जाणता नथी अने एकांतिक भक्त होय तेतो एम जाणे जे, ज्यारे श्रीकृष्ण भगवान अर्जुननी प्रतिज्ञा राखवाने काजे ब्राह्मणना पुत्र लेवाने गया,त्यारे द्वारिकामांथी रथ उपर बेसीने अर्जुन सोता चाल्या ते लोकालोक पर्वतने ओलंघीने मायानो जे अंधकार तेने सुदर्शनचक्रे करीने कापीने तेने विषे रथने हांकीने तेजपुंजने विषे प्रवेश करीने अने भूमा पुरुष पासेथी ब्राह्मणना पुत्रने लइ आवता हवा, माटे श्रीकृष्ण भगवान दिव्यमूर्ति हता तो तेने प्रतापे करीने लाकडानो जे रथ अने पंचभूतना देहवाळा जे घोडा ते सर्वे दिव्यने मायापर जे चैतन्य ते रूपे थाता हवा; अने जो दिव्यरूप न थया होय तो जेटलुं मायानुं कार्य होय तेटलुं मायामांज लीन थाय पण मायाथी पर जे ब्रह्म त्यां सुधी पहोंचे नहि, माटे जे भगवाननी मूर्तिने प्रतापे मायिक पदार्थ हतां ते पण अमायिक थयां एवुं जे भगवाननुं स्वरूप तेने मूर्ख होय ते मायिक समजे. (१) अने जे एकांतिक संत छे तेतो भगवाननी मूर्तिने १
अक्षरातीत समजे छे ने मूर्तिमान एवा जे पुरुषोत्तम भगवान तेने ब्रह्मरूप जे अनंतकोटी

मुक्त अने अक्षरधाम ए सर्वेना आत्मा जाणे छे, माटे कोइ गमे तेवां शास्त्र वंचातां होय ने तेमां भगवाननुं निर्गुणपणे करीने प्रतिपादन आवे ते ठेकाणे एम जाणवुं जे, ए भगवानन्नी मूर्तिनो महिमा कह्यो छे पण भगवान तो सदा मूर्तिमानज छे, एवी रीते जे समजे तेने एकांतिक भक्त कहीए. (२) इति वचनामृतम्. ॥ ६६ ॥ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे, तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, भागवतमां निर्गुण करीने कह्या होय, त्यारे श्री कृष्ण भगवानने कह्या होय अने सगुण करीने कह्या होय त्यारे अनिरुद्ध, प्रद्युम्ने संकर्षणने कह्या होय एम जाणवुं. पण तेजपुंज कह्या होय त्यारे ते तेज सूर्य अने अग्निना प्रकाशनी पेठे मूर्तिनुं समजवुं, तेमज ब्रह्म सत्तारूप एटले अक्षर ब्रह्मरूप प्रकाश छे ते अमारी मूर्तिनो छे अने अमे सदा दिव्यमूर्तिने अनंत कल्याण गुणे युक्त छीए. (१) अने एकांतिक संत अमने दिव्य साकार, अक्षरातीत अनंतकोटी मुक्तना तथा अक्षरधामना आत्मा जाणे छे अने अमे सदा साकारने सर्वेना कारण ने सर्वेना अवतारी छीए. [२] बावलो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां भूमा पुरुष पासे जतां मायानो अंधकार आव्यो ते कियो जाणवो ?

१ उ० आ पृथ्वीना गोळानी अंदर ४८ अडतालीश करोड योजन अवकाश छे ते अवकाशमां सात द्वीप ने सात समुद्र छे तेना फरतो लोकालोक छे ने ते लोकालोकने फरतुं अंधकार छे ते अंधकारना फरतुं आ पृथ्वीना गोळानुं दळ एक करोड योजन जाडुं छे ते दळनी ने अंधकारनी वचमां भूमा पुरुष पोताना साधनिक पार्षदोए सहित रहे छे ते अंधकार आ ठेकाणे कह्यो छे.

२ प्र० उपर कह्युं ते सिवाय भूमा पुरुषने रहेवानुं बीजुं धाम हशे के केम ?

२ उ० जेने प्रधान पुरुष कहे छे तेज पोते भूमा पुरुष छे अने पृथ्वीना दळना फरतां जळ, तेज, वायु, आकाश, अहंकारने महत्तत्त्व तेमना आवरणथी पर प्रधान पुरुषनुं आवरण छे तेज भूमा पुरुषनुं धाम छे, त्यां रह्या थका प्रथम कह्युं जे अव्याकृत धाम तेने विषे दर्शन आपे छे.

३ प्र० रथने घोडा दिव्य चैतन्य थया ते केवा जाणवा ? अने माया पर ब्रह्म शुं जाणवुं ? अने माया कइ जाणवी ?

३ उ० ए रथ घोडाने विषे श्री कृष्ण भगवाने पोतानुं ऐश्वर्य मुक्युं हतुं तेने लइने चैतन्यने दिव्य कह्या छे अने आ मर्त्य लोकने विषे लोकालोकना फरतुं जे अंधकार छे ते अंधकारनेज माया कही छे ते अंधकाररूप मायाथी पर गया एम कह्युं छे पण मायाना आठमा आवरणथी पर गया एम नथी कह्युं. अने जेम आ पृथ्वीमां लोकालोकना फरता अंधकारने मायानो अंधकार कह्यो, तेमज भूमा पुरुषना तेजने ब्रह्म कह्युं छे ते भूमा पुरुष माया सबळित ब्रह्म छे, माटे तेनुं तेज ते पण माया सबळित ब्रह्म छे पण मायाथी पर जे ब्रह्म छे ते न जाणवुं. ॥६६॥

संवत् १८७६ ना चैत्र शुदि ७ सातमने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां मुनिने उतारे विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराजे मुनि प्रत्ये प्रश्न पूछयो जे,(१) कोइ पुरुष छे तेने आ लोकना सुखमां तो प्रीतिज नथी ने परलोक जे भगवाननुं धाम तथा भगवाननी मूर्ति तेने विषे वासना छे अने जे तेनो संग करे तेनुं पण एवीज जातनुं हित करे जे आ मारो संगी छे तेने आ संसारनी वासना त्रूटी जाय ने भगवानने विषे प्रीति थाय तो घणुं सारुं अने जेटलुं कांइ यत्न करे ते सर्वे देहने मुकीने भगवानना धाममां गया केडे सुख आपे एवुंज करे पण देहना सुखने अर्थे तो कांइ क्रिया करेज नहि, एवा जे पुरुष होय तेना सरखा जे गुण ते मुमुक्षुने विषे केम समझे तो आवे ? ए प्रश्न छे. पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे, जेने आ लोकना सुखमां इच्छा नथी एवा सत्पुरुष छे तेने विषे देवनी बुद्धि राखे अने जे वचन कहे ते सत्य माने ने ते प्रमाणे वर्ते, तो ए सत्पुरुषना गुण होय ते मुमुक्षुमां आवे. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ए उत्तर तो खरो पण आम समझे तो मोटा सत्पुरुषना गुण मुमुक्षुमां आवे छे ते समझ्यानी रीत कहीए ते सांभळो जे, जे पुरुषने परमेश्वर विना बीजे क्यांइ प्रीति न होय तेनो एम गुण ग्रहण करे जे, आ पुरुष तो अतिशे मोटा छे ने एने आगळ लाखो माणस हाथ जोडीने उभा रहे छे तो पण लेशमात्र संसारना सुखने इच्छता नथी अने हुं तो अतिशे पामर छुं जे केवळ संसारना सुखमां आसक्त थइ रह्यो छुं अने परमेश्वरनी वातमां तो लेशमात्र समझतोज नथी, माटे मुने धिक्कार छे एवी रीते अनुताप करे अने मोटा पुरुषनो गुण ग्रहण करे अने पोताना अवगुण ग्रहण करीने अनुताप करे, पछी एमने एम परिताप करते करते एना हृदयने विषे वैराग्य उपजे ने पछी तेमां सत्पुरुषना जेवा गुण आवे छे. (१) १

हवे जेना हृदयमां सत्पुरुषना गुण नज आवे तेनां लक्षण कहीए ते सांभळो जे, (२) जे पुरुष एम समझे जे, आ मोटा कहेवाय छे पण विवेकतो कोइ प्रकारनो नथी अने खातां पीतां पण आवडतुं नथी अने ओढतां पहेरतां पण आवडतुं नथी ने परमेश्वरे सुख घणुं आप्युं छे तेने भोगवतां पण आवडतुं नथी अने कोइने आपे छे ते पण विवेक विनानुं आपे छे, एवी रीते सत्पुरुषमां अनंत प्रकारना अवगुण परठे एवो जे कुमति पुरुष होय तेने विषे कोइ काळे सत्पुरुषना गुण आवेज नहि. (२) इति वचनामृतम् ॥६७॥ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे तेमां बीजुं कृपावाक्य छे, तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे सत्पुरुषना गुण मुमुक्षुमां आववानी समझण कही छे. (१) बीजामां सत्पु-

रुषना गुण न आवे तेनां लक्षण कह्यां छे. [२] बावतो छे.

१ प्र० पहेलामां सत्पुरुष कह्या छे ते कोने जाणवा ? अने देव कह्या ते कोने जाणवा ?

१ उ० आत्मा परमात्माना साक्षात्कारवाळा होय तेने सत्पुरुष कह्या छे. अने आ ठेकाणे पोताना इष्टदेवने देव कह्या छे ते देव जे श्रीजीमहाराज तेमना तुल्य ए मुक्तने जाणे तो तेना गुण मुमुक्षुमां आवे एम कह्युं छे.

२ प्र० मुक्तानंदस्वामीना उत्तरने साचो करीने श्रीजीमहाराजे बीजी रीते केम उत्तर कर्यो हशे?

२ उ० मुक्तानंदस्वामीनो करेलो उत्तर वास्तव्य छे अने श्रीजीमहाराजे पण (प्र० ७८ ना बारमा प्रश्नमां) आवीज रीते उत्तर कर्यो छे, पण मोटा मुक्तनी क्रिया देखीने कोइकने अवगुण आवेलो ते अवगुण टाळवा माटे जेवी रीते अवगुण टळे तेवो उपाय बताव्यो छे. ॥ ६७ ॥

संवत् १८७६ ना चैत्र शुदि ९ नवमीने दिवस स्वामीश्री सहजानंदजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ लिंबडाना वृक्ष हेठे ढोलिया उपर विराजमान हता, ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हतो अने माथे धोळुं हीरकोरनुं धोतिंयु बांध्युं हतुं अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, अमे एक प्रश्न पूछीए छैए. त्यारे मुनिए कह्युं जे पूछो, पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) ओगणतेरा काळमां अमने एक महिना सुधी ज्यारे निद्रा आवे त्यारे एम भासतुं जे, अमे पुरुषोत्तमपुरीने विषे जइने श्रीजगन्नाथजीनी मूर्तिने विषे प्रवेश करीने रह्या छैए ने ते मूर्ति तो काष्टनी जणाय पण तेने नेत्रे करीने अमे सर्वने देखता अने पूजारीनो भक्तिभाव तथा छळकपट सर्वे देखता अने एवी रीते आपणा सत्संगमां जे समाधिनिष्ठ पुरुष होय ते पण समाधिए करीने बीजाना देहमां प्रवेश करीने सर्वने देखे छे अने सर्व शब्दने सांभळे छे अने शास्त्रमां पण एवां वचन छे जे, शुकजी वृक्षमां रहीने बोल्या हता. माटे मोटा जे सत्पुरुष होय अथवा जे परमेश्वर होय ते ज्यां इच्छा आवे त्यां प्रवेश करे छे, माटे ते परमेश्वरे पोतानी आज्ञाए करीने जे मूर्ति पूजवा आपी होय ते मूर्ति अष्ट प्रकारनी कही छे तेमां पोते साक्षात् प्रवेश करीने विराजमान रहे छे; ते मूर्तिने जे भगवानना भक्त पूजतो होय, त्यारे जेम प्रत्यक्ष भगवान विराजता होय ने तेनी मर्यादा राखे, तेम ते मूर्तिनी पण राखी जोइए, अने तेमज संतना हृदयमां भगवाननी मूर्ति रही छे ते संतनी पण मर्यादा राखी जोइए ते तो ए भक्त लेशमात्र राखतो नथी अने मूर्तिने तो चित्रामणनी अथवा पाषाणादिकनी जाणे छे अने संतने बीजा माणस जेवा जाणे छे. अने भगवाने तो श्रीमुखे एम कह्युं छे जे,मारी अष्ट प्र कारनी जे प्रतिमा तथा जे संत तेने विषे हुं अखंड निवास करीने

रहुं छुं. ने ए भक्त तो भगवाननी प्रतिमा आगळ तथा संत आगळ गमे तेटलां फेलफतुर करे छे पण लेशमात्र भगवाननो डर राखतो नथी एने भगवाननो निश्चय छे के नथी ? ए प्रश्न छे त्यारे परमहंस बोल्या जे, ज्यारे ए भगवानने अंतर्यामी जाणीने मर्यादा नथी राखतो तो एने भगवाननो निश्चयज नथी. (१) १

२ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (२) एने निश्चय तो नथी अने उपरथी पाखंड जेवी भक्ति करे छे, त्यारे एनुं कल्याण थाशे के नहि थाय ? पछी संत बोल्या जे एनुं कल्याण नहि थाय. (२) २

३ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (३)जेने भगवाननी मूर्तिने विषे नास्तिकपणुं आवे ने संतने विषे नास्तिकपणुं आवे तेने एटलेज नहि रहे, एने तो जेनुं भजन स्मरण करे छे एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तेने विषे पण नास्तिकपणुं आवशे अने ए भगवाननां जे गोलोक, ब्रह्मपुर आदिक धाम छे तेने विषे पण नास्तिकपणुं आवशे अने जगतनी जे उत्पत्ति, स्थिति ने प्रलय तेने पण काळे करीने ने मायाए करीने ने कर्मे करीने मानशे, पण परमेश्वर वते करीने नहि माने एवो पाको नास्तिक थाशे. (३) ३

४ पछी मुक्तानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (४) ए नास्तिकपणानो हेतु ते कोइ पूर्वनुं कर्म छे के कोइ कुसंग छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे नास्तिकपणाना हेतु तो नास्तिकना ग्रंथ सांभळवा एज छे अने नास्तिकना ग्रंथने विषे जेने प्रतीति होय तेनो जे संग ते पण नास्तिकपणानो हेतु छे अने वळी काम क्रोध, लोभ, अहंकार, मान ने ईर्ष्या ए पण नास्तिकपणाना हेतु छे, केमजे ज्यारे ए मांहेलो एके स्वभाव वर्त्ततो होय त्यारे नारद, सनकादिक जेवा साधु वात करे तोयपण मनाय नहिं अने ए नास्तिकपणुं मटे क्यारे तो ज्यारे श्रीमद्भागवत जेवा आस्तिक ग्रंथने विषे कही जे जगतनी उत्पत्ति, स्थिति ने प्रलयरूप एवी भगवाननी लीला तेने सांभळे तथा भगवाननुं ने संतनुं महात्म्य समझे, त्यारे एनुं नास्तिकपणुं जाय ने आस्तिकपणुं आवे. (४) इति वचनामृतम् ॥६८॥ ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (४) छे. तेमां त्रीजुं कृपावाक्य छे. पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारी प्रतिमा ते अमे साक्षात् छीए, माटे जे अमारी प्रतिमाने साक्षात्भगवान जाणीने न पूजे ने अमारी प्रतिमानी तथा संतनी मर्यादा न राखे तेने अमारो निश्चय नथी. [१] बीजामां प्रतिमानी तथा संतनी मार्यादा न राखे तेनुं कल्याण नहि थाय. (२) त्रीजामां जेने अमारी प्रतिमाने विषे ने मुक्तने विषे नास्तिकपणुं आवे तेने प्रत्यक्ष एवा जे अमे ते अमारे विषे ने अमारा धामने विषे पण नास्तिकपणुं आवशे ने अमने कर्त्ता नहि माने, एवो पाको नास्तिक थाशे. (३) चोथामां नास्तिकना ग्रंथ सांभळवाथी तथा ते ग्रंथमां प्रतीति आववाथी अथवा नास्तिकना

संगथी नास्तिक थाय छे; अने भगवानना साकार स्वरूपनुं प्रतिपादन करनारा ग्रंथ सांभळे तो नास्तिकपणुं जाय ने आस्तिकपणुं आवे. (४) बाबतो छे.

१ प्र० त्रीजा प्रश्नमां मूर्तिने विषे नास्तिकपणुं आवे तेने अमारा मनुष्य स्वरूपने विषे पण नास्तिकपणुं आवशे, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते मनुष्य स्वरूपने प्रतिमा ते जुदां हशे के केम ?

१ उ० मनुष्य स्वरूपने प्रतिमा तथा धामने विषे जे मूर्ति छे ते एकज छे पण जुदां नथी, तेथी श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के जेने प्रतिमाने विषे नास्तिकपणुं आवे तेने प्रत्यक्ष एवा जे अमे ते अमारे विषे ने अमारा धामने विषे पण नास्तिकपणुं आवेलुंज छे, केमजे अमारे विषे दिव्य भाव थयो नथी, तेथी अमारी प्रतिमाने दिव्य जाणतो नथी एम कह्युं छे; ते जो श्रीजीमहाराजनो दिव्य भावे सहित महिमा जाणे तो श्रीजीमहाराजने विषे सर्वांतर्यामीपणुं समजाय, तो मनुष्यरूपे श्रीजीमहाराज विचरता होय, त्यारे मनुष्य चरित्र जोइने संशय थाय नहि अने प्रतिमा बोले चाले नहि तो पण प्रतिमाने विषे नास्तिकपणुं आवे नहि, माटे श्रीजीमहाराजनो महिमा यथार्थ जाणीने प्रतिमाने विषे तथा मनुष्य स्वरूपने विषे दिव्य भाव समजे तोज मोक्ष थाय पण ते विना मोक्ष थायज नहिं. ।।६८।।

संवत् १८७६ ना चैत्र शुदि १२ द्वादशीने दिवस स्वामीश्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिर आगळ आथमणेवार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछी श्री वासुदेवनारायणनी संध्या आरति थइ रही.

१ ते पछी नारायण धून्य करी ने पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) धर्म ते केलुं नाम छे एनो शास्त्रनी रीते करीने उत्तर करो ? अने जे हिंसक राजा हता ते पण शरणे आव्यो होय तेने मारता नहि अने मारवा पण देता नहि, माटे शरणे आव्यो जे जीव तेने मार्यानुं जेम पाप छे, तेम बीजाने मार्यानुं पाप छे के नथी ? पछी एनो उत्तर जेम जेने भास्यो तेम तेणे करवा मांड्यो, पण श्रीजीमहाराजे आशंका करी एटले कोइथी उत्तर थयो नहिं. पछी मुनि सर्वे बोल्या जे, हे महाराज ! अमे एज तमने प्रश्न पूछीए छैए जे यज्ञादिकने पशु हिंसा सहित धर्म कह्यो छे अने अहिंसारूप पण धर्म कह्यो छे, माटे ए जेम यथार्थ होय तेम कहो ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, हिंसायुक्त जे धर्म छे ते तो धर्म अर्थने कामपर छे अने अहिंसामय जे धर्म छे ते मोक्षपरायण छे अने ए साधुनो धर्म छे ने हिंसामय जे धर्म छे तेतो व्यवहारिक छे पण कल्याणने अर्थे नथी अने जे अहिंसारूप धर्म छे तेतो केवळ कल्याणने अर्थे छे, माटे गृहस्थ अथवा त्यागी ए सर्वेने अहिंसारूप जे धर्म तेज कल्याणने अर्थे कह्यो छे, जेम राजा युधिष्ठिर राज्यमां हता तोय पण अहिंसा धर्मने विषे रह्या हता, ते माटे साधुने तो मन, कर्म, वचने करीने कोइनुं भुंडुं

वांछवुं नहि अने कोइ वातनो अहंकार पण राखवो नहि ने सर्वना दासानुदास थइने रहेवुं अने क्रोधेयुक्त जे प्रकृति ते तो दुष्टनो धर्म छे अने शांत स्वभावे वर्तवुं तेज साधुनो धर्म छे, अने कोइ कहेशे जे, हजारो माणसने नियममां वर्ताववां होय तेने केम साधुता ग्रहण कर्ये चाले ? तो एनो उत्तर ए छे जे, राजा युधिष्ठिरनुं हजारो गाउमां राज्य हतुं, तोय पण साधुता राखी हती ने डारा देनारा तो भीमसेन जेवा हजारो होय ते वारीए तोय पण ते कर्या विनानुं रहेवाय नहिं, माटे तीखा स्वभाववाळानी तो कांइ खोटय नथी एवा तो घणाय होय,पण साधु थावुं एज घणुं दुर्लभ छे.(१) इतिवचनामृतम्॥६९॥ १

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां अहिंसा धर्मे करीने कल्याण थाय छे अने क्रोधेयुक्त प्रकृति होय ते दुष्टनो धर्म छे ने शान्त स्वभावे वर्तवुं ते साधुनो धर्म छे, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (१) बाबत छे. ॥६९॥

संवत् १८७६ ना चैत्र शुदि १५ पुनमने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणेबार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने माथे हीरकोरनुं धोळुं धोतीयुं बांध्युं हतुं ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने हस्तकमळमां तुळसीनी माळा लेइने फेरवता हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, मोटा मोटा परमहंस मांहोमांही प्रश्न उत्तर करो तथा कोइ हरिभक्तने पूछवुं होय तो परमहंसने पूछो. त्यारे गाम रोजकाना हरिभक्त
१ काकाभाइए नित्यानंदस्वामीने प्रश्न पूछयो जे, (१) अंतरने मांहिली कोर एक कहे छे जे, विषयने भोगवीए ने एक तेनी ना पाडे छे ते ना पाडे छे ते कोण छे ने हा पाडे छे ते कोण छे ? त्यारे नित्यानंदस्वामीए कह्युं जे, ना पाडे छे ते जीव छे ने हा पाडे छे ते मन छे. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो ए प्रश्ननो उत्तर अमे करीए जे, आ आपण छैए ते जे दिवसथी समझणा थया ने मावापनी ओळखाण पडी ते दिवसथी मावापे निश्चय कराव्यो जे, आ तारी मा ने आ तारो बाप ने आ तारो काको ने आ तारो भाइ ने आ तारो मामो ने आ तारी बोन ने आ तारी मामी ने आ तारी काकी ने आ तारी माशी ने आ तारी भेंस ने आ तारी गाय ने आ तारो घोडो ने आ तारुं लुगडुं ने आ तारुं घर ने आ तारी मेडी ने आ तारुं खेतर ने आ तारां घरेणां इत्यादिक जे कुसंगीना शब्द ते आ जीवनी बुद्धिमां रह्या छे ते केवी रीते रह्या छे तो, जेम कोइक स्त्रियो भरत भरे छे तेमां काचनो कटको होय छे तेम भरतने ठेकाणे बुद्धि छे ने काचना कटकाने ठेकाणे ते जीव छे ते बुद्धियां ए कुसंगीना शब्दने तेनां रूप ते पंचविषये सहित

रह्यां छे ने ते जीवने पछी सत्संग थयो, त्यारे संते परमेश्वरना महिमानी ने विषयखंडननी ने जगत् मिथ्यानी वात करी ते संतनी वार्ताने ते संतनां रूप ते पण ए जीवनी बुद्धिमां रह्यां छे ते ए बे लश्कर छे ने सामसामां उभां छे, जेम कुरुक्षेत्रने विषे कौरवने पांडवनां लश्कर सामसामां उभां हतां ने परस्पर तीरने बरछी ने बंधुक ने तोप ने जंजाळोनी लडाइ थाती हती, अने कोइक तरवारे लडता हता ने कोइक गदाए लडता हता ने कोइक बथोबथ लडता हता तेमां कोइनुं माथुं उडी गयुं ने कोइनी साथळ कपाइ गइ एम कचरघाण उडतो हतो, तेम आ जीवना अंतःकरणमां पण जे कुसंगीनां रूप छे ते पंचविषयरूपी शस्त्र बांधीने उभां छे; अने वळी जे आ संतनां रूप छे ते पण भगवान सत्यने जगत्मिथ्या ने विषय खोटा एवा जे शब्द ते रूपी शस्त्र बांधीने उभां छे ने ए बेने परस्पर शब्दनी लडाइ थाय छे ते ज्यारे कुसंगीनुं बळ थाय छे, त्यारे विषय भोगव्यानी इच्छा थइ आवे छे ने ज्यारे आ संतनुं बळ थाय छे, त्यारे विषय भोगव्यानी इच्छा नथी थाती, एम परस्पर अंतःकरणमां लडाइ थाय छे ते जेम ॥ यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थोधनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥ ए श्लोकमां कह्युं जे,ज्यां योगेश्वर एवा श्रीकृष्ण भगवान छे ने धनुषना धरतल अर्जुन छे त्यांज लक्ष्मी छे,विजय छे, ऐश्वर्य छे ने अचळ नीति छे, तेम जेनी कोरे आ संतमंडळ छे तेनोज जय थाशे एम निश्चय राखवो. (१) १

२ त्यारे वळी काकेभाइए प्रश्न पूछ्यो जे, (२) हे महाराज ! ए संतनुं बळ वधे ने कुसंगीनुं बळ घटे तेनो शो उपाय छे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे,अंतरमां जे कुसंगी रह्या छे ने बहार रह्या छे ते बे एक छे अने वळी अंतरमां संत रह्या छे ने बहार रह्या छे ते बे एक छे पण जे अंतरमां कुसंगी छे तेनुं बहारना कुसंगीने पोषणे करीने बळ वधे छे अने अंतरमां जे संत छे तेनुं पण बहार जे संत छे तेने पोषणे करीने बळ वधे छे, माटे बहारना कुसंगीनो संग न करे ने बहारना जे संत छे तेनोज संग राखे तो कुसंगीनुं बळ घटी जाय ने संतनुं बळ वधे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं. (२) २

३ त्यारे वळी काकेभाइए प्रश्न पूछ्यो जे,(३) हे महाराज ! एकने तो कुसंगीनी लडाइ आळसी गइ छे ने संतनुंज बळ छे एक एवो छे अने एकने तो एमने एम लडाइ थाती रहे छे ते बेमां जेने लडाइ आळसी गइ छे ते मरे त्यारे तेने भगवानना धामनी प्राप्ति थाय तेमां तो कांइ संशय नथी पण जेने लडाइ एमने एम थाय छे ते मरे तेनी शी गति थाय ते कहो ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेम एक लडवा निसर्यो तेने आगळ वाणीया के गरीब वर्ण आव्या तेने जिती गयो ते पण जित्यो अने एक तो लडवा निसर्यो तेने आगळ आरबनी बेरख आवी तथा रजपूत आव्या तथा काठी तथा कोळी आव्या

तेने तो जीतवा कठणज छे पण कांइ ए वाणीयानी पेठे तरत जिताइ जवाय एवा नथी माटे ए तो एमने एम लडे छे ने तेमां जो जित्यो तो जित्यो ने जो लडते लडते मराणो तो पण जे एनो धणी छे ते शुं नहि जाणे जे, एने आगल आवां करडां माणस आव्यां हतां ते नहि जिताय ने आनी आगळ तो वाणीआ आव्या हता ते जिताय एवा हता, एम ए बेय धणीनी नजरमां होय तेम एनी भगवान सहाय करे जे, अने आवा संकल्प विकल्पनुं बळ छे ने लडाइ ले छे माटे एने शाबाश छे, एम जाणीने भगवान एनी सहाय करे छे माटे बेफकर रहेवुं कांइ चिंता राखवी नहि भगवानने एमने एम भज्या करवुं ने संतनो समागम अधिक राखवो ने कुसंगीथी छेटे रहेवुं, एम प्रसन्न थइने श्रीजी महाराज बोलता हवा. (३) ३

४ त्यारे जसकावाळे जीवाभाइए नित्यानंदस्वामीने प्रश्न पूछ्यो जे, (४) भगवाननो अडग निश्चय केम थाय ? त्यारे नित्यानंदस्वामी बोल्या जे, कुसंगीथकी छेटे रहीए ने संतनो समागम अतिशे राखीए तो ते संतनी वाते करीने भगवाननो अडग निश्चय थाय. त्यारे वळी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे एनो उत्तर करीए जे, भगवाननो निश्चय करवो ते एकलो पोताना जीवना कल्याणनेज अर्थे करवो पण कोइक पदार्थनी इच्छाए करीने न करवो जे, हुं सत्संग करुं तो मारो देह मांदो छे ते साजो थाय अथवा वांझियो छुं ते दीकरो आवे के दीकरा मरी मरी जाय छे ते जीवता रहे के निर्धन छुं ते धनवान थाउं के गाम गरास गयो छे ते सत्संग करीए तो पाछो आवे, एवी जातनी पदार्थनी इच्छा राखीने सत्संग न करवो अने जो एवी जातनी इच्छा राखीने सत्संग करे ने ए पदार्थनी इच्छा पुरी थाय तो अतिशे पाको सत्संगी थइ जाय अने जो इच्छा पुरी न थाय तो निश्चय घटी जाय, माटे सत्संग करवो ते पोते पोताना जीवना कल्याणनेज अर्थे करवो पण कोइ पदार्थनी इच्छा तो राखवीज नहि, कांजे घरमां दश माणस होय ने ते दशेनुं मृत्यु आव्युं होय तेमांथी एक जण जो उगरे तो शुं थोडो छे ? के हाथमां रामपत्तर आववानुं होय ने रोटला खावा मळे तो शुं थोडा छे ? सर्वे जनारुं हतुं तेमांथी एटलुं रह्युं ते तो घणुं छे एम मानवुं, एम अतिशे दुःख थवानुं होय तो तेमांथी परमेश्वरनो आशरो करीए तो थोडुंक ओछुं थाय खरुं पण ए जीवने ए समझातुं नथी अने जो शूळी लखी होय तो कांटेथी टळी जाय एटलो तो फेर पडे छे, त्यां एक वार्ता छे जे एक गाममां चोर बहु रहेता तेमांथी एक चोर साधुने पासे बेसवा आवतो हतो तेने मार्गने विषे पगमां कांटो वाग्यो ते पगमां सोंसरो नीकळ्यो तेणे करीने पग सुण्यो ते चोरीए न जवाणुं ने बीजा चोर तो चोरी करवा गया ते एक राजानो खजीनो फाडीने घणुंक धन लइ आव्या अने सौए मांहोमांही वहेंची लीधुं

ते पैसा बहु आव्या, तेने सांभळीने बे चोर साधु पासे आवतो हतो ने कांटो लाग्यो हतो तेनां मावाप, स्त्री ने सगां सर्वे वढवा लाग्यां जे, तुं चोरी करवा न गयो ने साधु पासे गयो ते आपणुं शुंडुं थयुं ने ते चोर चोरी करीने लाव्या तो केटलाय पैसा एमने आव्या, एम वार्ता करे छे त्यां राजानुं लश्कर आव्युं ते ते सर्वे चोरने झालीने शूळीए दीधा तेने भेळे एने पण झालीने शूळीए देवा सारु लइ गया त्यारे ते सर्वे गामने माणसे तथा साधुए सारुप पुरी जे, आ तो चोरी करवा नहोतो गयो, एने तो कांटो वाग्यो हतो त्यारे ते उगर्यो, एम सत्संग करे छे तेने शूळी जेटलुं दुःख होय तो कांटे मटे छे, कांजे अमे रामानंदस्वामी पासे मागी लीधुं छे जे, तमारा सत्संगी होय तेने एक विंछीनुं दुःख थावानुं होय तो ते मुने एक एक रुंवाडे कोटी कोटी विंछीनुं दुःख थाओ पण तमारा सत्संगीने ते थाओ नहिं अने तमारा सत्संगीने प्रारब्धमां रामपत्तर लख्युं होय ते रामपत्तर मुने आवे पण तमारा सत्संगी अन्न वस्त्रे करीने दुःखी न थाय ए बे वर मुने आपो, एम अमे रामानंदस्वामी पासे माग्युं, त्यारे अमने रामानंदस्वामीए राजी थइने वर आप्यो छे, माटे जे कोइ सत्संग करे छे तेने व्यवहारे दुःख थावानुं लख्युं होय ते थाय नहि तोय पण पदार्थ नाशवंत छे माटे ए पदार्थनी इच्छाए सत्संग करे तो एने निश्चयमां संशय थया विना रहेज नहिं, माटे सत्संग करवो ते तो एकलो निष्कामपणे पोताना जीवना कल्याणनेज अर्थे करवो तो अडग निश्चय थाय इत्यादिक घणीक वात तो करी छे पण आ तो दिशमात्र लखी छे. (४) इति वचनामृतम् ।।७०।। ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (४) छे, तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, कुसंगीना तथा संतना शब्दरूपी लश्कर आ जीवनी बुद्धिमां रह्यां छे ते बेने परस्पर शब्दनी लडाइ थाय छे तेमां कुसंगीना शब्दनुं बळ थाय त्यारे जीवने विषय भोगववानी इच्छा थइ आवे छे अने संतना शब्दनुं बळ थाय त्यारे जीवने विषय भोगववानी इच्छा थाती नथी. [१] बीजामां बहारना कुसंगीनो संग न राखे ने बहारना संतनो संग राखे तो कुसंगीनुं बळ घटी जाय छे. (२) त्रीजामां संकल्पनो हठाव्यो हठे नहि ने साधुनो संग राखे तेनुं अमे पुरुं करशुं. (३) चोथामां बीजी सर्वे इच्छानो त्याग करीने पोताना कल्याणनेज अर्थे सत्संग करे तो अमारो अडग निश्चय थाय छे. (४) बावतो छे.

१ प्र० चोथा प्रश्नमां नित्यानंदस्वामीए अडग निश्चय थवानो उत्तर कर्यो ते साचो हशे के, श्रीजीमहाराजे कर्यो ते साचो हशे ?

१ उ० नित्यानंदस्वामीए करेलो उत्तर वास्तव्य छे. पण कोइ भक्तने गरास विगेरेनी इच्छा होय ते टाळवा माटे एवो उत्तर कर्यो छे. ।।७०।।

संवत् १८७६ ना चैत्र वदि ४ चतुर्थीने दिवस सांझने समे श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार मेडीनी आगळ ओटा उपर ढोलियो

ढळावीने विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. ने मुक्तानंदस्वामी आदिक साधु वाजींत्र वजाडीने कीर्त्तन गाता हता.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, हवे कीर्तन भक्तिनी समाप्ति करीने मांहोमांही प्रश्न
१ उत्तर करो. पछी सोमलेखाचरे प्रश्न पूछ्यो जे, (१) भगवान पोताना भक्तना सर्वे अपराध माफ करे छे पण एवो कियो अपराध छे जे भगवान माफ न करे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, बीजा सर्वे अपराध भगवान माफ करे छे पण भगवानना भक्तनो द्रोह करे ए अपराधने भगवान माफ नथी करता, माटे भगवानना भक्तनो कोइ प्रकारे द्रोह करवो नहि. (१) १

२ पछी मातरेधाधले पूछ्युं जे, (२) ईर्ष्यानुं शुं रूप छे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेनी उपर जेने ईर्ष्या होय तेनुं रुडुं थाय त्यारे तेथी खमाय नहि ने तेनुं भुंडुं थाय त्यारे राजी थाय ए ईर्ष्यानुं लक्षण छे. (२) २

३ पछी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पूछ्यो जे, (३) सर्वंखल्विदं ब्रह्म ।। ए जे श्रुति छे तेनो अर्थ सर्वे पंडित एम करे छे जे, आ जे यत्किंचित् नाम रूप छे ते सर्वे ब्रह्म छे; अने वळी घटवत्सर्गादि विनश्यति ।। ए जे श्रुति ते सर्वेने नाशवंत कहे छे, माटे ए परस्पर श्रुतिनो विरोध आव्यो ते केम टळे ? पछी साधुमां जेने जेवो सुझ्यो तेवो उत्तर कर्यो पण ए प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे उत्तर करीए छैए जे, परब्रह्म पुरुषोत्तम एवा जे भगवान ते जीवना कल्याणने अर्थे पृथ्वीने विषे प्रगट थाय छे त्यारे जेजे तत्त्वनो अंगिकार करे छे ते सर्वे तत्त्व ब्रह्मरूप छे, कांजे रामकृष्णादिक अवतारने विषे स्थूळ, सूक्ष्म ने कारण ए त्रण देह तथा जाग्रत, स्वप्नने सुषुप्ति ए त्रण अवस्था ते जणाय छे तथा दश इंद्रियो पंच प्राण इत्यादिक सर्वे तत्त्व मनुष्यनी पेठे जणाय छे पण ए सर्वे ब्रह्म छे पण मायिक नथी, एम ए श्रुतिनो अर्थ छे अने ए भगवाननी मूर्ति विना बीजुं जे मायिक नाम रूप छे ते सर्वे नाशवंत छे एम बीजी श्रुतिनो अर्थ छे, एवी रीते ए बे श्रुतिनो अर्थ करीए तो परस्पर विरोध नथी आवतो. (३) ३

४ पछी वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पूछ्यो जे, [४] भगवाननी प्रत्यक्ष मूर्तिनो निश्चय होय ने भजन करतो होय ने सत्संगना नियम प्रमाणे वर्त्ततो होय तेनुं कल्याण थाय एतो सत्संगनी रीति छे पण शास्त्रमां कल्याणनी केम रीति छे ? अने वेदनो अर्थ तो अति कठण छे माटे तेनी कथा थाती नथी अने श्रीमद्भागवत् पुराणने भारत एमां वेदनोज अर्थ छे ने सुगम छे माटे तेनी जगतमां कथा थाय छे, माटे शास्त्रनी रीते करीने कल्याण

यातुं होय तेम कहो ? अने शंकराचार्ये तो निराकारपणे भगवाननुं प्रतिपादन कर्युं छे अने रामानुजादिक जे आचार्य तेमणे तो साकारपणे भगवाननुं प्रतिपादन कर्युं छे ते ए बे प्रकारनुं जे प्रतिपादन ते अनादि शास्त्रमां छे एटले प्रतिपादन कर्युं छे, माटे एवी रीते शास्त्रनो मत लइने उत्तर करो ? पछी मुनिए शास्त्रनी रीते निराकारनो पक्ष खोटो करीने साकार भगवानने भजने करीने कल्याण छे, एवी रीते प्रतिपादन कर्युं. (४) ४

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, अमे पण एज पक्षनुं ग्रहण करीए छैए पण तेमां
५ तमने एक प्रश्न पूछीए छैए जे, [५] निराकार एवुं जे अक्षर ब्रह्म तेथी परने सदा साकार एवा जे पुरुषोत्तम भगवान ते पृथ्वी उपर प्रगट मळ्या ते केडे ब्रह्मपुर तथा गोलोक, वैकुंठ, श्वेतद्वीप, ए आदिक जे भगवानना धाम तेने देखवानी जेने लालच रहे त्यारे एने निश्चय छे के नथी ? पछी मुनि बोल्या जे, भगवान मळ्या पछी जेना मनमां एम रहेतुं होय जे ज्यारे अक्षरादिक धाम देखशुं अथवा कोटी कोटी सूर्यनो प्रकाश देखशुं त्यारे आपणुं कल्याण थशुं, एवी समझणवाळाने तो यथार्थ भगवाननो निश्चय नथी. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एणे ब्रह्मपुरादिक धामने तथा ब्रह्मस्वरूपने देखवानी लालच राखी ए ते शुं एणे पाप कर्युं जे निश्चयनी ना पाडो छो ? पछी मुनि बोल्या जे, जेणे प्रत्यक्ष प्रमाण भगवानने दर्शने करीने कल्याण मान्युं होय ते ब्रह्मपुर, गोलोक आदिक जे धाम छे ते पण भगवाननांज छे, माटे तेनी पण अरुचि शा सारु राखे ? पण भगवान विना एने इच्छे नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ते धामने ते धामने विषे रह्या जे पार्षद तेतो चैतन्य मूर्ति छे ने माया पर छे, माटे एमां शुं दूषण छे जे एने इच्छे नहि ? अने भगवान पृथ्वी उपर प्रगट विराजता होय ने त्यां जे सेवक होय ते पण मरी जाय एवा होय अने घर होय ते पण पडी जाय एवां होय ते केम समझो छो ? पछी मुनि बोल्या जे, ए घरने तो अमे ब्रह्मपुरादिक धाम समझीए छैए ने ए सेवकने तो अमे ब्रह्मरूप समझीए छैए. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ब्रह्मपुरने ब्रह्मपुरने विषे रह्या जे भगवानना पार्षद तेतो अखंड छे ने अविनाशी छे तेने मर्त्यलोकनां नाशवंत एवां जे घर ने पार्षद ते बे बरोबर केम कहो छो ? पछी नित्यानंद स्वामी बोल्या जे, हे महाराज ! एनो उत्तर तो तमे करो. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, भगवान जीवना कल्याणने अर्थे ज्यारे मूर्ति धारण करे छे, त्यारे पोतानुं जे अक्षरधाम अने चैतन्य मूर्ति एवा जे पार्षद अने पोतानां जे सर्वे ऐश्वर्य ते सहितज पधारे छे पण ए बीजाना देखवामां आवे नहि अने ज्यारे कोइ भक्तने समाधिने विषे अलौकिक दृष्टि थाय छे, त्यारे तेने भगवाननी मूर्तिने विषे कोटी कोटी सूर्यना सरखो प्रकाश भासे छे अने अनंत कोटी जे मुक्त ते पण मूर्ति भेळा भासे छे अने अक्षरधाम पण ए भगवाननी मूर्ति भेळुंज भासे छे,

माटे ए सर्वे भगवान भेळं छे. [५] तेय पण भगवान मनुष्य जे पोताना भक्त ५
होय तेनीज सेवाने अंगीकार करे छे अने ते पोताना भक्तनां गार, माटीने पाणानां जे घर तेने विषे विराजमान रहे छे अने ते भक्त धूप, दीप, अन्न, वस्त्रादिक जे जे अर्पण करे छे तेने भगवान प्रीतिए करीने अंगीकार करे छे ते ए मनुष्य सेवक छे तेने दिव्यरूप पार्षद भेळा भेळववा वास्ते करे छे अने जे भक्तजन जेजे वस्तु भगवानने अर्पण करे छे तेते वस्तु भगवानना धामने विषे दिव्यरूप थाय छे ने ए भक्त दिव्यरूप थइने तेने पामे छे, माटे एवुं अचळ अखंड सुख भक्तजनने पमाडवाने अर्थे भगवान जे ते मनुष्य एवा जे पोताना भक्तजन तेनी सर्वे सेवाने अंगीकार करे छे, माटे भगवानना भक्तने भगवाननुं स्वरूप अक्षरधाम सोतुं पृथ्वी उपर विराजमान छे, एम समझवुं. अने बीजा आगळ पण एवी रीते वार्ता करवी. (६) इति वचनामृतम् ॥७१॥ ६

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (५) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, अमारा भक्तनो द्रोह करे ते अपराधने अमे माफ करता नथी. (१) बीजामां कोइनुं रुडुं देखी खमाय नहि ते ईर्ष्यानुं रूप छे. (२) त्रीजामां जीवोना कल्याणने अर्थे अमे मर्त्य लोकने विषे दर्शन आपीए छीए त्यारे अमारी दिव्यमूर्तिने मनुष्यना जेवी देखाडीए छीए. पण मनुष्यभाव नथी, माटे मनुष्यना जेवां देखातां एवां इंद्रियादिक तत्त्व ते दिव्य छे पण त्याग भाग नथी, माटे सर्व खल्विदंब्रह्म ॥ ए जे श्रुतिए कह्युं छे ते मनुष्यरूपे देखातुं एवुं जे अमारुं स्वरूप ते ब्रह्म छे एटले दिव्य छे, एवो ए श्रुतिनो अर्थ छे पण समग्र जगत ब्रह्म छे, एम ए श्रुतिनो अर्थ न समजवो ने अमारी मूर्ति विना जे मायिक नामरूप छे ते नाशवंत छे, एम ॥ घटवन् सर्गादि विनश्यति ॥ ए श्रुतिनो अर्थ छे. (३) चोथामां अमने सदा साकार जाणीने भक्ति करे तो कल्याण थाय छे. (४) पांचमामां जीवना कल्याणने अर्थे अमे मूर्ति धारीए छीए त्यारे अमारुं अक्षरधाम ने दिव्यमूर्ति एवा मुक्त अने अमारां सर्वे ऐश्वर्य ते सर्वे अमारी आ मूर्तिना भेळांज होय छे, एम समजवुं [५] अने आंही जे भक्तजन मायिक पदार्थे करीने अमारी तथा अमारा संतनी एटले मुक्तनी सेवा करे छे तेने अमारी मूर्तिनुं दिव्य सुख आपीए छीए. (६) बाबतो छे.

१ प्र० पांचमा प्रश्नमां श्रीजीमहाराजे पोताने निराकार अक्षरब्रह्मथी पर कह्या ते साकार अक्षर ब्रह्मथी पर तो [प्र० ७/६ मां, ४१ मां, ७२ ना २/४ बीजा प्रश्नमां, सा० ५ ना २/३ बीजा प्रश्नमां, का० ८/९ इत्यादिकमां] कह्या छे अने निराकार अक्षरब्रह्म जे पोतानुं तेज तेने विषे तो श्रीजीमहाराज सदा विराजमान रह्या छे, एम (प्र० ७/६ मां, २१/८ मां, का० ७ ना चोथा प्रश्नमां, लो० १४ मां, पं० १/६ मां, म० १३/२ मां, ४२/६ मां, ५०/९ इत्यादिकमां) कह्युं छे अने आ ठेकाणे साकार ब्रह्मथी पर एवुं जे श्रीजीमहाराजना तेजरूप

निराकार अक्षर ब्रह्म तेथी श्रीजीमहाराजे पोताने पर कह्या ते पोताना तेजरूप अक्षर ब्रह्ममां तो पोते रह्याज छे अने तेथी पर पोताने केम कह्या हशे ?

१ उ० साकार अक्षरब्रह्मथी पर ने तेनुं कारण, आत्मा, आधार, प्रेरक ने नियंता, एवुं जे पोताना तेजरूप निराकार अक्षरब्रह्म तेना पण श्रीजीमहाराज आधार, कारण ने आत्मा छे, ते सारु पोताना तेजथी पोताने पर कह्या छे पण पर एटले पृथक् नथी कह्या, माटे पर एटले कारण, आधार, आत्मा ने शरीरी कह्या छे, एम समजवुं.

२ प्र० ब्रह्मपुर, गोलोक, वैकुंठ, श्वेतद्वीप ए धाम कह्यां ते कोनां कोनां समजवां ?

२ उ० ब्रह्म जे श्रीजीमहाराज तेमने रहेवानुं धाम माटे अक्षरधामने आ ठेकाणे ब्रह्मपुर नामे कह्युं छे अने गोलोक ते मूळ पुरुषनुं धाम जाणवुं अने वैकुंठ ते रामचंद्रजीनुं धाम जाणवुं अने वासुदेव ब्रह्मना साधनिक मुक्तो पृथ्वी उपर साधन करे छे ते धामने श्वेतद्वीप कह्युं छे.

३ प्र० ब्रह्मस्वरूप कह्युं ते ब्रह्मस्वरूप शुं समजवुं ?

३ उ० [४/४ चोथा प्रश्नमां] श्रीजीमहाराजे ब्रह्मपुरादिक धामने तथा ब्रह्मस्वरूपने देख्यानी लालच राखी ए ते एणे शुं पाप कर्युं ? तेना उत्तरमां धाम अने धामने विषे रह्या जे पार्षद ते तो चैतन्यमूर्ति छे, माटे एमां शुं दूषण छे जे एने इच्छे नहि ? एम कह्युं छे, माटे ब्रह्म जे श्रीजीमहाराज तेमना तदाकारभावने पामेला मुक्तोने ब्रह्मस्वरूप कह्या छे.

४ प्र० धाम अने ते धामने विषे रह्या जे पार्षद ते तो चैतन्य मूर्ति छे एम कह्युं ते चैतन्य मूर्ति ते पार्षदनेज कह्या छे के धामने पण चैतन्य मूर्ति कह्युं छे ते समजातुं नथी, केम जे आमां पांचमा प्रश्नमांज धामने निराकार कह्युं छे, माटे ते केवी रीते समजवुं ?

४ उ० चैतन्य मूर्ति तो मुक्तनेज कह्या छे ते पांचमा प्रश्नना उत्तरमांज श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, अमे जीवना कल्याणने अर्थे मूर्ति धारण करीए छीए त्यारे अमारुं अक्षरधाम अने चैतन्य मूर्ति पार्षदो अने अमारां सर्वे ऐश्वर्य ते सहितज पधारीए छीए तेमां पार्षदनेज चैतन्य मूर्ति कह्या छे पण धामने तथा ऐश्वर्यने मूर्ति शब्दनो संबंध नथी, माटे धामने तो श्रीजीमहाराजना तेजवाचकज समजवुं.

५ प्र० श्रीजीमहाराजने विषे कोटी कोटी सूर्य सरखो प्रकाश भासे छे अने अक्षरधाम पण ते मूर्ति मेळेज भासे छे एम कह्युं त्यारे तो प्रकाश ने धाम बे वस्तुओ जुदी थइ अने तमे तो प्रकाशनेज धाम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

५ उ० श्रीजीमहाराजनी मूर्तिना प्रकाशरूप अक्षरधामनी अनंत किरणो छे तेमांनी एक किरणना किंचित् प्रकाशने कोटी कोटी सूर्य सरखो प्रकाश कह्यो छे अने ए समग्र प्रकाशने अक्षरधाम कह्युं छे, केमजे (प्र० ६३ ना त्रीजा प्रश्नमां) श्रीजीना सेवकना एकेका रोममां कोटी कोटी सूर्यना जेवो प्रकाश कह्यो छे तो ज्यारे सेवकना रोममां एटलो प्रकाश छे तो श्रीजीमहाराजना रोमना किंचित् प्रकाशमां कोटी कोटी सूर्यथी अधिक प्रकाश होय तेमां शुं कहेवुं ? माटे आ ठेकाणे अक्षरधामनी एक किरणना किंचित्

प्रकाशने कोटी कोटी सूर्य सरखो प्रकाश कह्यो छे ते (प्र० ५६ ना३ त्रीजा प्रश्नमां) अमारा एकेक नखमां कोटी कोटी सूर्यनो प्रकाश छे माटे समग्र प्रकाशने अक्षरधाम कह्युं छे.

६ प्र० त्यारे अक्षरधामनो प्रकाश देखाय छे एम केम न कह्युं ने प्रकाश ने धाम ए बे देखाय छे एम केम कह्युं ?

६ उ० एनो उत्तर पांचमा प्रश्नमांज छे जे समाधिवाळाने देखाय छे ते जेने जेटली स्थिति थइ होय ते प्रमाणे प्रकाशने देखे छे, माटे स्थितिना भेदे करीने अधिक न्यून प्रकाश देखवामां आवे छे ते जे अधुरी स्थितिवाळो होय ते किंचित प्रकाश देखे छे अने परिपूर्ण स्थितिवाळो होय ते समग्र प्रकाशरूप अक्षरधामने देखे छे अने श्रीजीमहाराजने ने मुक्तने पण दखे छे, माटे देखनारानी स्थितिनो भेद कह्यो छे पण आगळ कह्यो जे कोटी कोटी सूर्यनो प्रकाश ते तो ए अक्षरधामनोज छे. ।।७१।।

संवत् १८७६ ना चैत्र वदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिरने समीपे उत्तरादेबार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर उगमणे मुखारविंदे विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ **पछी मुक्तानंदस्वामीए पूछयुं जे, (१) हे महाराज ! काल्यने दिवस तमे दादाखाचर आगळ बहु रुडी वार्ता करी हती ते वार्ता सांभळवानी अमारे सर्वेने घणी इच्छा छे. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जे भगवानना भक्तने भगवाननो निश्चय महात्म्ये सहित होय ने संतनुं ने सत्संगीनु महात्म्य घणुं जाणतो होय ने ते भक्तनुं जो कर्म कठण होय ने काळ पण कठण होय तो पण ते भक्तने एवी भक्तिनुं अतिशे बळ छे ते काळने कर्म ए बेय मळीने तेनुं भुंडुं करी शकतां नथी अने जेने भगवान ने भगवानना संतने विषे जो निष्ठामां कांइक फेर होय तो तेनुं भगवान रुडुं करवाने इच्छे तोय पण रुडुं थातुं नथी. (१) अने जे गरीबने कल्पावे तेनुं तो कोइ रीते रुडुंज थाय नहिं अने** १
महाभारतमां भीष्मपिताए राजा युधिष्ठिरने एम कह्युं छे जे, जो तुं गरीबने कल्पाविशतो तुं तारा वंशे सहित बळीने भस्म थइ जइश, माटे भगवाननो भक्त होय अथवा कोइ बीजो होय पण गरीब मात्रने लेश मात्र दुःखाववो नहि अने जो गरीबने दुःखाडे तो तेनुं कोइ प्रकारे सारुं थाय नहिं अने जो गरीबने दुःखाडे तो ब्रह्महत्या जेटलुं पाप थाय छे अने तेमज कोइकने माथे जुठुं कलंक देवुं ते पण ब्रह्महत्या जेवुंज छे अने जो साचुं कलंक होय तो पण तेने एकांते तेडीने तेनुं रुडुं थाय एम कहेवुं पण तेने फजेत करवो

नहिं अने तेमज पांच प्रकारनी जे स्त्रियो छे तेनो जो धर्म भंग करावे तो तेने पण ब्रह्म-हत्यानुं पाप लागे छे ते पांच प्रकारनी स्त्रियो केइ तो, एक तो पोताने शरणे आवी होय अने बीजी ते पोतानो संग करवा न इच्छती होय अने त्रीजी ते पतिव्रता होय अने चोथी ते विधवा स्त्री अने पांचमी ते विश्वासी स्त्री ए पांच प्रकारनी स्त्रियोने संगाथे जो व्यभिचार करे तो तेने ब्रह्महत्यानुं पाप लागे छे. तेमां जे विधवा स्त्री छे तेनुं जो मन कुमार्गने विषे डोलतुं होय तो तेने समझावीने धर्ममां राखवी. (२) २

पछी मुनि जे ते भगवाननां रसिक कीर्तन गावा लाग्या. तेने सांभळीने श्रीजी-
२ महाराज बोल्या जे, (२) भगवान जीवना कल्याणने अर्थे देह धरे छे त्यारे मनुष्यना जेवीज सर्वे क्रिया होय तेने देखीने जे भगवानना भक्त होय तेतो चरित्र करी जाणे अने विमुख जीव होय अथवा काचोपोचो हरिभक्त होय तेतो ते चरित्रने विषे दोष परठे, जेम शुकजीए रासपंचाध्यायीनुं वर्णन कर्युं त्यारे राजा परीक्षितने संशय थयो, पछी एम पूछ्युं जे, भगवान तो धर्मनी मर्यादा स्थापन करवाने अर्थे प्रगट थया हता तेणे पर स्त्रीनो संग करीने धर्मनो भंग केम कर्यो ? एवी रीते दोष लीधो अने शुकजीए तो समझी विचारीने भगवाननुं गुणगान कर्युं जे, कामदेवे ब्रह्मादिक देवताने जीतीने पोताने वश कर्या तेनो कामदेवने अतिशे गर्व थयो ते गर्वने उतारवाने काजे भगवाने काम-देवने पडकार्यो, ते जेम कोइ बळवान राजा होय ते शत्रुने पोताना गांठनी दारु गोळी अपावीने पछी ते साथे लडवा जाय तेम भगवाने कामदेवरुपी शत्रुने लड्यानो सामान मोरथी आप्यो ते शुं तो कामदेवनुं बळ ज्यारे स्त्रीनो संबंध होय त्यारे थाय तेमां पण शरद ऋतुने विषे रात्रिमां कामदेवनुं वधु बळ थाय तथा स्त्रीना रागरंग विलासना शब्द सांभळवा तथा स्त्रीनुं रूप जोवुं स्त्रीनो स्पर्श करवो तेणे करीने कामदेवनुं अतिशे बळ वधे छे, ए सर्वे सामान श्रीकृष्ण भगवाने कामदेवने आपीने तेने जीती लीधो. अने अखंड ब्रह्मचारीनी पेठे उर्ध्वरेता रह्या अने एवी रीते कामनो गर्व उतार्यो एवुं अलौकिक सामर्थ्य भगवान विना बीजामां होय नहि. एवुं अति भगवाननुं सामर्थ्य जाणीने शुकजीए भग-वाननां चरित्र गान कर्यां. अने राजा परीक्षितने ते वात समझाणी नहि, त्यारे दोष परठ्यो, माटे कोइक एम कहे जे तमे परमहंस थइने रसिक कीर्तन केम गाओ छो ? तो तेने एम कहेवुं जे, जो अमे रसिक कीर्तन न गाइए अने भगवाननां रसिक चरित्रने विषे दोष परठीए तो अमे पण राजा परीक्षित तथा बीजा जे नास्तिक, विमुख जीव तेनी पंक्तिमां भळीए माटे अमारे तो विमुखनी पंक्तिमां भळवुं नथी, शामाटे जे परमहंस मात्रना गुरु जे शुकजी तेणे भगवाननां रसिक चरित्र गायां छे, माटे अमारे पण जरुर गाववां. अने क्षर, अक्षरथी पर एवा जे पुरुषोत्तम भगवान छे, ते ज्यारे जीवना कल्या-

णने अर्थे ब्रह्मांडने विषे मनुष्य जेवी मूर्ति करीने विचरे छे. त्यारे सर्वे मनुष्यना जेवांज चरित्र करे छे. अने जेम मनुष्यने विषे हारवुं, जीतवुं, भय, शोक, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, आशा, तृष्णा, ईर्ष्या इत्यादिक मायिक स्वभाव होय, तेवाज स्वभाव भगवान पण पोतामां देखाडे छे, ते सर्वे जीवोना कल्याणने अर्थे छे, पछी जे भक्त होय तेतो ए चरित्रने गाइने परमपदने पामे छे; अने जे विमुख होय ते दोष परठे छे. (३) ३
अने ए भगवान तो जेम क्षरना आत्मा छे. तेमज प्रकृति पुरुष थकी पर जे अक्षरब्रह्म तेना पण आत्मा छे. अने क्षर, अक्षर ए बेयने पोतानी शक्तिए करीने धरी रह्या छे. अने पोते तो क्षर, अक्षरथी न्यारा छे. अने भगवाननी मोटाइ तो एवी छे जे, जेना एक एक रोमना छिद्रने विषे अनंत कोटी ब्रह्मांड परमाणुनी पेठे रह्यां छे, एवा जे मोटा भगवान ते जीवोना कल्याणने वास्ते मनुष्य जेवडाज थाय छे, त्यारे जीवने सेवा कर्यानो योग आवे छे अने जो भगवान जेवडा छे तेवडा ने तेवडा रहे तो ब्रह्मादिक जे ब्रह्मांडना अधिपति देव तेने पण दर्शन कर्यानुं के सेवा कर्यानुं सामर्थ्य रहे नहिं तो मनुष्यने तो रहेज कयांथी ? अने जेम वडवानळ अग्नि छे, ते समुद्रना जळने विषे रह्यो छे, ने समुद्रना जळने पीए छे, ने समुद्रनो ओलाव्यो ओलातो नथी, एवो मोटो छे, ते अग्नि ज्यारे आपणे घरमां दीवो जोइतो होय त्यारे आवीने आपणा घरमां बेसे तो आपणने दीवा जेवुं सुख थाय नहि अने बळीने सर्वे भस्म थइ जइए अने तेज अग्नि दीवारूपे होय तो अजवाळुं करे ने आनंद थाय; अने ते दीवो छे तो तेनो तेज अग्नि पण फुंकीए तथा हाथे करीने ओलावीए तो ओलाइ जाय, एवो असमर्थ छे तोपण ते थकीज आपणने सुख थाय. पण वडवानळ अग्निथी सुख न थाय, तेमज भगवान मनुष्य जेवा असमर्थ जणाता होय पण अनेक जीवनुं कल्याण ए थकीज थाय. पण जेना एक एक रोममां अनंत कोटी ब्रह्मांड रह्यां छे एवी मूर्तिनुं तो जीव दर्शन करवा पण समर्थ थाय नहि. माटे एवे रूपे करीने कल्याण न थाय. ते माटे भगवान मनुष्य जेवी मूर्ति धारीने जेवां जेवां चरित्र करे छे ते सर्वे गान करवा योग्य छे पण एम न समजवुं जे, भगवान थइने एम शुं करता हशे ? अने भगवाननां चरित्र तो सर्वे कल्याणकारीज समजवां एज भक्तनो धर्म छे, अने एवुं समजे तेज भगवाननो पुरो भक्त कहेवाय छे. (४) ४

३ पछी रोजकाना हरिभक्त काकेभाइए पूछयुं जे, (३) जेने महात्म्य विनानो एकलो भगवाननो निश्चय होय तेनां शां लक्षण छे ? अने जेने महात्म्ये सहित निश्चय होय तेनां शां लक्षण छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने एकलो निश्चय होय, तेने एम घाट थाय जे, भगवान तो मळ्या छे, पण शुं जाणीए कल्याण तो थाशे के नहिं थाय ? अने जेने महात्म्ये सहित निश्चय होय तेने तो एम समजाय जे, जे दिवसे भग-

वाननुं दर्शन थयुं, ते दिवसथीज कल्याण तो थइ रह्युं छे. अने जे जीव भावे करीने मारूं दर्शन करे तथा मारुं वचन माने तेनुं पण कल्याण थइ जाय तो मारे कल्याणनो शो संशय छे? हुं तो कृतार्थछुं. अने जे कांइ साधन करूंछुं, तेतो भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे करुंछुं, एम समझे तेने भगवाननो महात्म्ये सहित निश्चय जाणवो. (५) ५

४ पछी वळी काकेभाइए पूछ्युं जे (४) उत्तम, मध्यम ने कनिष्ठ ए त्रण प्रकारना जे भगवानना भक्त तेनां शां लक्षण छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जे भक्त पोताने देह थकी जुदो जे आत्मा ते रूप माने अने देहना गुण जे जड, दुःख, मिथ्या, अपवित्रपणुं इत्यादिक छे ते आत्माने विषे माने नहिं अने अछेद्य, अभेद्य, अविनाशी इत्यादिक जे आत्माना गुण ते देहने विषे माने नहिं अने पोताना शरीरने विषे रह्यो जे जीवात्मा तेने देखे अने ते आत्माने विषे रह्या जे परमात्मा तेमने पण देखे. अने बीजाना देहमां जे आत्मा रह्यो छे तेने पण देखे ने एवो समर्थ थयो छे तो पण ए आत्मदर्शन थकी भगवानने भगवानना संत तेने अधिक जाणे छे पण पोताने आत्मदर्शन थयुं छे तेनुं अभिमान लेश मात्र न होय, एवां जेनां लक्षण छे ते उत्तम भक्त कहेवाय. हवे जेने भगवाननो निश्चय होय ने आत्मनिष्ठा पण होय तो पण भगवानना भक्त उपर ईर्ष्या आवे अने जो भगवान एनुं अपमान करे तो भगवान उपर पण ईर्ष्या आवे जे मोटा थइने वगर वांके आम शीद करता हशे? एवां जेनां लक्षण होय ते मध्यम भक्त जाणवो. अने भगवाननो निश्चय तो होय पण आत्मनिष्ठा न होय अने भगवानने विषे प्रीति होय ने जगतना व्यवहारने विषे पण प्रीति होय अने संसारिक व्यवहारने विषे हर्ष शोकने पामतो होय, तेने कनिष्ठ भक्त जाणवो. (६) इति ६ वचनामृतम् ॥७२॥

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (४) छे. तेमां बीजुं कृपावाक्य छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, अमारो महात्म्ये सहित निश्चय होय, अने अमारा संतनुं ने सत्संगीनु महात्म्य घणुं जाणतो होय ते भक्तनुं काळ कर्म मुंडुं करी शकतां नथी. अने एवी निष्ठामां फेर होय तेनुं रुडुं थतुं नथी. (१) अने गरीबने कलपावे, कोइने माथे जुठुं कलंक दे तथा पांच प्रकारनी स्त्रियोनो धर्म भंग करावे तेने ब्रह्महत्या जेटलुं पाप लागे छे. (२) बीजामां अमारां मनुष्य चरित्रने अमारा भक्त दिव्य जाणे अने विमुख तथा काचो हरिभक्त दोष परठे छे (३) अने अमे क्षर, अक्षरथी न्यारा ने तेना आधार छीए. अने अमारा एक एक रोमना छिद्रमां अनंत कोटी मळअक्षर रूपी ब्रह्मांड परमाणुवत् रह्यां छे एवा जे अमे ते मनुष्य जेवी मूर्ति धारीने मनुष्य जेवां चरित्र करीए तेने कल्याणकारी समजे एज अमारो पुरो भक्त छे. (४) त्रीजामां जेने अमारो महात्म्य विनानो निश्चय होय तेने कल्याणमां संशय रहे छे. अने जेने अमारो महात्म्ये सहित निश्चय होय तेने

कल्याणमां संशय नथी रहेतो. (५) चोथामां उत्तम, मध्यम ने कनिष्ठ ए त्रण प्रकारनां भक्तनां लक्षण कह्यां छे. (६) बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां अमारो निश्चय महात्म्ये सहित होय ने अमारा संततुं ने सत्संगीनुं महात्म्य घणुं जाणतो होय तेनुं काळ, कर्म मळीने भुंडुं करी शकतां नथी, एवुं प भक्तने अमारी भक्तिनुं अतिशे बळ छे, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते महात्म्ये सहित निश्चय केवो जाणवो ? अने संततुं ने सत्संगीनुं महात्म्य केवुं जाणवुं ? अने भक्ति केवी जाणवी ? अने कर्म कियां जाणवां ? अने काळ कियो जाणवो ? अने काळ, कर्म भुंडुं शुं करतां हशे ?

१ उ० श्रीजीमहाराजने प्रकृति पुरुष, ब्रह्म तथा मूळअक्षरना आत्मा जाणे अने अनंत मूळ-अक्षरादिक सर्वेने पोतानी अंतर्यामी शक्तिए करीने धारण करी रह्या छे अने पोताना तेजनी एक एक किरणना छिद्रमां अनंत मूळअक्षररूपी ब्रह्मांड रह्यां छे, एवा अतिशे ऐश्वर्ययुक्त, अतिशे निर्लेप, अतिशे असंगी, अतिशे प्रकाशेयुक्त ने अतिशे सुखमय मुर्ति एवा भगवान श्रीस्वामिनारायण तेज आ प्रत्यक्ष मनुष्यरूपे दर्शन आपे छे, एवा जाणीने निश्चय कर्यो होय ते महात्म्ये सहित निश्चय कहेवाय अने आवो महिमा श्रीजीमहाराजनो जाणे त्यारे एमना आश्रितने पण श्रीजीमहाराजना जेवाज दिव्य ने समर्थ जाणे ए संततुं ने सत्संगीनुं महात्म्य जाण्युं कहेवाय. अने श्रीजीमहाराजने तथा एमना भक्तने अतिशे दिव्य ने कल्याणकारी जाणीने सर्व दोषे रहित थइने निष्कामभावे अनुवृत्तिए सहित अतिशे सेवाए करीने श्रीजीमहाराजनी तथा एमना भक्तोनी अतिशे प्रसन्नता मेळवी होय ते भक्ति आ ठेकाणे कही छे. अने पूर्वे कोइक अतिशे भुंडा देश, काळ, संगादिके करीने अतिशे भुंडां कर्म थइ गयां होय अने ते कर्मनो एना चित्तमां अतिशे पास लाग्यो होय ए प्रारब्धरूपी कर्म जाणवां. अने अतिशे मलीन आचरणवाळा अधर्मी ने निर्लज्ज मनुष्यो रहेतां होय ते स्थळमां निवास थयो होय ते कठण काळ कह्यो छे. अने ते भक्तने प्रारब्धे करीने मलीन देशमां जवुं पडे त्यां श्रीजीमहाराजनो के संतनो योग न रहे ने नोखुं रहेवुं पडे पण काळ के कर्म ते एने एवी निष्ठामांथी तथा धर्ममांथी पाडी शके नहिं ते भुंडुं करी शके नहि एम जाणवुं.

२ प्र० (३/२ बीजा प्रश्नमां) अमे क्षर, अक्षर बेयना आत्मा छीए अने क्षर, अक्षर बेयने अमारी शक्तिए करीने धरी रह्या छीए एम कह्युं ते क्षर क्यां सुधी जाणवुं ? अने अक्षर किया जाणवा ? अने शक्ति कही ते शी जाणवी ?

२ उ० मूळ प्रकृति सुधी क्षर जाणवुं. अने मूळअक्षरने अक्षर जाणवा. अने शक्ति जे पोताना प्रकाशरूप अक्षरब्रह्म तेणे करीने ए बेयने धरी रह्या छे अने ते प्रकाशनी किरणोरूपी जे रोम तेने विषे मूळअक्षररूपी ब्रह्मांड अनंत रह्यां छे एम समजवुं.

३ प्र० ब्रह्मांड तो अष्टावरण सुधी कहेवाय छे ने मूळअक्षररूपी कह्यां ते केम समजवुं ?

३ उ० अष्टावरणे सहित अनंत प्रधान पुरुषरूपी ब्रह्मांड ते मूळपुरुषरूपी ब्रह्मना प्रकाशमां रह्यां छे, माटे मूळपुरुष आगळ प्रधानपुरुषरूपी ब्रह्मांड कहेवाय. अने मूळपुरुष छे ते वासुदेव

ब्रह्मना प्रकाशने आधारे रहे छे, माटे वासुदेवब्रह्म आगळ मूळपुरुषरूपी ब्रह्मांड कहेवाय. अने मूळअक्षरना प्रकाशने आधारे वासुदेव ब्रह्म रहे छे, माटे मूळअक्षर आगळ वासुदेव ब्रह्मरूपी ब्रह्मांड कहेवाय, अने श्रीजीमहाराजना प्रकाशने आधारे अनंत मूळअक्षर रह्या छे, माटे श्रीजीमहाराज आगळ मूळअक्षररूपी ब्रह्मांड कहेवाय. माटे श्रीजीमहाराजना रोम पटले ब्रह्मज्योतिनी किरणो तेने विषे मूळअक्षररूपी ब्रह्मांड अनंत रह्यां छे, एम परंपराए ब्रह्मांडनो अंतर्भाव छे माटे कह्यां छे.

४ प्र० अमे जेवडा छीए तेवडाने तेवडा रहीए तो ब्रह्मादिकने पण अमारां दर्शन करवानुं सामर्थ्य रहे नहि, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते जेवडा एटले केवडा जाणवा अने ब्रह्मादिक किया जाणवा ?

४ उ० [प्र० ६३ ना त्रीजा प्रश्नमां] जेम वैराजनुं रूप नजरे आवतुं नथी अने मूळअक्षरनुं रूप नजरे आवतुं नथी ते तेमना अन्वय स्वरूप सहितनुं रूप नजरे आवतुं नथी एम कह्युं छे तेम श्रीजीमहाराजनुं तेज अतिशे अपार छे ते तेजे सहित श्रीजीमहाराज दर्शन आपे तो मूळअक्षरादिक कोइ पण दर्शन करी शके नहि. उत्पत्ति समयने विषे श्रीजीमहाराज पोताना तेजरूप अंतर्यामी शक्तिद्वारे मूळअक्षरने प्रेरणा करे छे, पछी ते अक्षर वासुदेव ब्रह्म द्वारे मूळपुरुषने प्रेरणा करे छे, पछी ते मूळपुरुष माया साथे जोडाइने सृष्टि करे छे ते पहेली प्रेरणा मूळअक्षरने थइ, माटे आ ठेकाणे मूळअक्षरने ब्रह्मा कह्या छे. ॥७२॥

संवत् १८७६ ना चैत्र वदि अमासने दिवस रात्रिने समे स्वामीश्री सहजानंदजी-महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उताराने विषे उत्तरादे बार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता. ने श्वेत खेस पहेर्यो हतो, अने श्वेत चादर ओढी हती, तथा श्वेत फेंटो मस्तक उपर बांध्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुक्तानंदस्वामी आदिक मोटेरा साधु चार तथा पचासने आशरे हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी गोपाळानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे, (१) कामनुं शुं रूप छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, वीर्य एज कामनुं रूप छे. पछी आशंका करी जे, वीर्य तो सात धातु मांहिलो धातु छे, माटे एज कामनुं रूप केम कहेवाय ? अने ते वीर्यनी उत्पत्ति शणे करीने छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, मनोवहा नामे नाडीने विषे मन रह्युं छे. ते मनने विषे ज्यारे स्त्री संबंधी संकल्प थाय छे, त्यार जेम दहीं होय ते रवाइये करीने मथाय त्यारे घी होय ते सर्व उपर तरी आवे छे, तेम स्त्री संबंधी संकल्पे करीने वीर्य जे ते शरीरमांथी मथाइने मनोवहा नामे नाडीने विषे भेळुं थइने शिश्नद्वारे आवे छे, अने जेने वीर्य शिश्नद्वारे न आवे ते उर्ध्वरेता पुरुष कहेवाय. अने ते नैष्ठिक ब्रह्मचारी कहेवाय. अने श्रीकृष्ण भगवाने रासक्रीडाने विषे स्त्रियोनो संग करीने पण वीर्यपात थवा दीधो नहि

ते माटे उर्ध्वरेता ब्रह्मचारी कहेवाणा ने कामने जीत्यो, माटे वीर्य तेज कामनुं रूप छे. पछी जेणे वीर्यने जीतीने वश राख्युं तेणे कामने जीत्यो. (१) १

२ पछी वळी गोपाळानंदस्वामीए पूछयुं जे, (२) ज्यारे देहने बाळी दे छे, त्यारे सप्त धातु देह भेळा बळी जाय छे. माटे जो वीर्यज कामनुं रूप होय तो देह भेळे वीर्यने बळवे करीने काम पण बळी गयो जोइए, त्यारे ए जीव बीजा देहमां जाय छे, त्यारे कामना केम उदय थाय छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, सूक्ष्म देह भेळुं वीर्य रहे छे. ते सूक्ष्म देहने योगे करीने स्थूळ देह उदय थइ आवे छे, जेम भूत होय ते सूक्ष्म देह प्रधान होय. पछी सूक्ष्म देहमांथी स्थूळ देहने धरीने स्त्रीनो संग करे छे. ते स्त्रीने भूत थकी बाळक उत्पन्न थाय छे, माटे सूक्ष्म देह भेळुंज वीर्य रहे छे. (२) २

३ पछी वळी गोपाळानंदस्वामीए पूछयुं जे, (३) शिवजी उर्ध्वरेता हता, पण मोहनी रूपने जोइने वीर्यपात थयो, तेम जेना देहमां वीर्य होय ने तेने जाग्रतमां अथवा स्वप्नमां स्त्रीनो योग थाय त्यारे वीर्यपात थया विना रहे नहि, माटे ज्यां सुधी देहमां वीर्य होय, त्यां सुधी निष्कामी केम कहेवाय ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, शिवजीने पण एटली योगकळामां खोट कहेवाय छे. अने जेने जाग्रत अथवा स्वप्नने योगे करीने स्त्रीना संकल्प थकी वीर्यपात थाय तो तेने पाको ब्रह्मचारी कहेवाय नहि, माटे आ संसारमां दृढ ब्रह्मचर्यवाळा तो एक नरनारायण ऋषि छे. अने ते नरनारायणनो आपणे आश्रय छे, तेना प्रताप थकी धीरे धीरे ए नरनारायणनुं भजन करीने आपणे पण ए सरखाज निष्कामी थाशुं. अने देहमां जे वीर्य रहे छे तेने बाळी नाखवाने अर्थे योगी केटलाक प्रकारनुं यत्न करे छे. अने श्रीकृष्ण भगवाने स्त्रियोने संगे रहीने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य राख्युं ते एवुं सामर्थ्य तो भगवानमांज होय. पण बीजाथी एम रहेवाय नहि, माटे बीजा योगीने तो जाग्रतमां अथवा स्वप्नमां स्त्रीनो संकल्प न थाय एवुं यत्न करवुं. (३) ३

४ पछी शुकमुनिए पूछयुं जे, (४) द्वारिकामां सोळ हजार एकसोने आठ जे भगवाननी स्त्रियो ते पण भगवानना मनने चळाववाने समर्थ न थाती हवी, एम कह्युं छे. ने एक एक स्त्रीने विषे दश दश पुत्रने एक एक पुत्री थइ एम पण कह्युं छे तेनुं केम समजवुं ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, द्वारिकानी वात बीजी छे, ने व्रजनी बीजी छे. द्वारिकामां तो भगवान सांख्य मतने आशर्या हता. ते सांख्य मतवाळो होय, ते देह, इंद्रियो, मन, सर्व थकी पोतानुं स्वरूप भिन्न समजे, ने सर्व क्रियाने करतो थको पोताने अकर्ता समजे ने ते क्रियाए करीने हर्ष शोकने पामे नहि. ए मतने भगवान आशर्या हता, माटे भगवानने निर्लेप कह्या. अने भगवान द्वारिकामां जे सांख्य मतने आशर्या हता, ते मत तो जनक जेवा राजाओनो छे, जेम राजा गृहस्थाश्रममां रहीने प्रभुने भजे

तेज सांख्य मतने अनुसरे, एम भगवान पण गृहस्थाश्रममां हता, अने द्वारिकाना राजा कहेवाता हता, माटे सांख्य मतने अनुसर्या थका एम निर्लेप हता. अने वृंदावनने विषे तो योग कळाने आशर्या हता, ते स्त्रियोनो संग करीने पण नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रत राख्युं. ए ठेकाणे तो पोताने विषे नरनारायण ऋषिपणुं देखाड्युं ते श्रीमद्भागवतमां कपिलदेवे देवहूति प्रत्ये कह्युं छे जे, स्त्रीरुप जे मारी माया तेने जीतवाने अर्थे नरनारायण ऋषि विना बीजो कोइ समर्थ नथी, माटे श्रीकृष्ण भगवाने स्त्रियोने संगे रहीने कामने जीत्यो अने ज्यारे दुर्वासा ऋषि आव्या त्यारे भगवाने सर्वे गोपीयोने अन्नना थाळ भरीने मोकलवा मांडी त्यारे गोपीयो बोली जे, अमे यमुनाजी केम उतरशुं? पछी श्रीकृष्ण भगवाने कह्युं जे, यमुनाजीने एम कहेजो जे, जो श्रीकृष्ण सदा बाळब्रह्मचारी होय तो अमने माग देजो. पछी गोपीयोए एम कह्युं, त्यारे यमुनाजीए माग दीधो. पछी सर्वे गोपीयो ऋषिने जमाडीने बोली जे, अमारे आडां यमुनाजी छे, ते अमे घेर केम करीने जाशुं? पछी ऋषिए कह्युं जे, केम करीने आव्यां हतां? पछी गोपीयोए कह्युं जे, अमे यमुनाजीने एम कह्युं जे, श्रीकृष्ण सदा ब्रह्मचारी होय तो माग देजो. एटले यमुनाजीए माग दीधो. पण हवे केम करीने घेर जाइए? पछी दुर्वासाऋषि बोल्या जे यमुनाजीने एम कहेजो जे, दुर्वासाऋषि सदा उपवासी होय तो माग देजो. पछी गोपीयोए एम कह्युं त्यारे यमुनाजीए माग दीधो त्यारे गोपीओना मनने विषे अति आश्चर्य थयुं. पण भगवाननो तथा ते ऋषिनो जे महिमा तेने न जाणी शकती हवी. अने भगवान तो नैष्ठिक व्रत राखीने गोपीने संगे रम्या हता, माटे ब्रह्मचारी हता. अने दुर्वासाऋषि तो विश्वात्मा जे श्रीकृष्ण भगवान तेने विषे पोताना आत्माने एक करीने सर्वे गोपीयोना थाळ जमी गया, माटे ऋषि पण उपवासीज हता. ने अन्न तो सर्वे भगवानने जमाड्युं हतुं, माटे एवा अति मोटा होय तेनी क्रिया कळयामां आवे नहि. अने सांख्यवाळाने खोळीए तो हजारुं जडे पण योग कळाए करीने उर्ध्वरेता होय एवा तो एक नरनारायणज छे. अथवा जे नरनारायणना अनन्य भक्त होय ते पण तेना भजनने प्रतापे करीने दृढ ब्रह्मचर्यवाळा थाय छे पण बीजाथी थवातुं नथी. अने जेने इंद्रियद्वारे करीने जाग्रत अथवा स्वप्नमां वीर्यनो पात थाय छे ते ब्रह्मचारी कहेवाय नहि. अने जे स्त्रीनो अष्ट प्रकारे त्याग राखे छे. ते तो ब्रह्मचर्यने मार्गे चाल्या छे, ते हवे नरनारायणने प्रतापे करीने धीरे धीरे दृढ ब्रह्मचारी थाशे.(४) अने ज्यारे अमे नाना हता,त्यारे एम सांभळ्युं हतुं जे, ४
वीर्य तो परसेवाद्वारे करीने पण नीकळी जाय छे, पछी ते वीर्यने उर्ध्व राखवाने सारु अमे बे प्रकारनी जळ बस्ती शिख्या हता अने कुंजर क्रिया शिख्या हता. अने कामने जीत्या सारु केटलांक आसन शिख्या हता अने रात्रिए सुता त्यारे गोरख आसन करीने

सुता, जेणे करीने स्वप्नमां पण वीर्यनो पात थवा पामे नहि. पछी ते काम जीत्यानुं एवुं
साधन कर्युं जे, शरीरमांथी परसेवोज निकळे नहिं, अने टाढ, तडको पण लागे नहिं.
पछी अमे रामानंदस्वामी पासे आव्या त्यारे स्वामीए परसेवो वळ्या सारु बधे शरीरे
आवळना पाटा बंधाव्या हता, तो पण शरीरमां परसेवो आव्यो नहि, माटे काम जीत्यानुं
साधन तो सौथी घणुं कठण छे. ए तो जेने भगवानना स्वरूपनी उपासनानुं दृढ बळ
होय अने अतिशे पंच विषयमांथी निर्वासनिक थयो होय अने ते निर्वासनिकपणानी
अतिशे गांठ बंधाणी होय तो ते पुरुष भगवानने प्रतापे करीने निष्कामी थाय छे. (५) ५
५ पछी नित्यानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (५) निर्वासनिक थयानुं कारण ते आवी वात
सांभळवी ते छे के वैराग्य छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, वैराग्य तो एकलो टकी
शके नहि अंते जातो नाश थइ जाय छे अने ज्यारे आत्मनिष्ठा होय अने भगवाननी
मूर्तिनुं यथार्थ ज्ञान होय पछी एम विचारे जे, हुं तो आत्मा छुं, सच्चिदानंद रूप छुं
अने पिंड ब्रह्मांड तो मायिक छे ने नाशवंत छे माटे हुं क्यां ने ए पिंड ब्रह्मांड क्यां
अने मारा इष्टदेव जे श्रीपुरुषोत्तम भगवान तेतो अनंतकोटी ब्रह्मांडना आधार जे अक्षर ते
थकी पण पर छे ते भगवाननो मारे दृढ आशरो थयो छे, एवा विचारमांथी जे वैराग्य उदय थाय
ते वैराग्य ज्ञाने युक्त कहेवाय ने ए वैराग्यनो कोइ काळे नाश थाय नहि, जेम अग्नि बळतो होय
तेने माथे जळ पडे तो ओलाइ जाय अने वडवानळ अग्नि समुद्रने विषे छे ते जळनो
ओलाव्यो ओलातो नथी, तेम जे ज्ञाने युक्त वैराग्य छे ते तो वडवानळ अग्नि तथा
वीजळीनो अग्नि तेवो छे ते कोइ काळे ओलाय नहि अने ते विना बीजा वेराग्यनो तो
विश्वास आवे नहि अने अमारो जे वैराग्य तेतो जेवो वीजळीनो अग्नि तथा वडवानळ
अग्नि ते सरखो छे ते अमारा स्वभावने तो जे अतिशे अमारे भेळा रह्या हशे ते जाणे
छे अने जे छेटे रहे छे तेने अमारो स्वभाव जाण्यामां आवतो नथी अने आ मुकुंद ब्रह्म
चारी छे ते भोळा जेवा जणाय छे तो पण अमारा स्वभावने यथार्थ जाणे छे जे, महा-
राज तो आकाश जेवा निर्लेप छे अने एमने कोइ पोतानुं पण नथी अने पारकुं पण
नथी, एवी रीते जो अमारा स्वभावने जाणे छे तो जेवा ईश्वरमां गुण होय तेवा गुण
ब्रह्मचारीमां वर्ते छे. अने अंतर्यामी सौमां रह्या छे ते बाइ भाइने मनमां एम समझावे छे
जे, ब्रह्मचारीमां कोइ वातनी खोड्य नथी. (६) ते एवा रूडा गुण आव्यानुं कारण ए ६
छे जे, मोटा पुरुषने विषे जे निर्दोष बुद्धि राखे छे ते पोते सर्वे दोष थकी रहित थाय
छे अने जे मोटा पुरुषने विषे दोष परठे छे ते दोषना परठनारानी बुद्धि भ्रष्ट थइ जाय
छे अने कामादिक जे शत्रु ते सर्वे तेना हैयामां आवीने निवास करे छे पछी ए सत्पुरु-
षने विषे दोष बुद्धिनो परठनारो जे पुरुष तेना हैयामां ऊंधा घाट पण पीक्या करे छे
अने ए सत्संग करे छे तोय पण दुःखीयो मटे नहि; अने जे बुद्धिमान छे ते तो अमारे

समीपे रहीने अमारी सर्व प्रकृतिने जाणे छे जे, जेटलां संसारमां मोह उपजावनारां पदार्थ धन, स्त्री, अलंकारादिक तथा खानपानादिक छे ते कोइमां महाराजने हेत नथी अने महाराज तो सर्व थकी उदासी छे अने कोइकने दया करीने पासे बेसवा दे छे के ज्ञान वार्त्ता करे छे ते तो केवळ तेना जीवना कल्याणने अर्थे दया करीने करे छे अने जे मूर्ख होय ते तो पासे रहे, तोय पण अमारा स्वभावने एम न जाणे अने छेटे रहे ते पण एम न जाणे. (७) अने आ वात समझाय पण तेने, जेने आत्मनिष्ठा होय अने ७
ते आत्माने विषे परमेश्वरनी मूर्तिने धारीने तेनी भक्ति करतो होय अने पोते ब्रह्मरूप थइ गयो होय, तोय पण भगवाननी उपासनानो त्याग करे नहि, माटे आत्मनिष्ठाने भगवाननी मूर्तिनो महिमा समज्या थकी कोइ पदार्थने विषे वासना रहेती नथी. (८) ८
अने वासना टळ्या पछी जेवुं पोताना देहनुं प्रारब्ध होय, तेवा सुखदुःखने भोगवे खरो पण इंद्रियोनी तीक्ष्णता मटी जाय छे अने मनोमयचक्रनी जे धारा ते तो इंद्रियो छे. ते ज्यारे ब्रह्मने तेयी परजे परब्रह्म तेनुं साक्षात् दर्शन थाय छे त्यारे बुठीयुं थइ जाय छे, पछी जेम कोइ पुरुषे लिंबु चुस्यां होय ने दांत अतिशे अंबाइ गया होय ने पछी तेने चणा चाववा पडे त्यारे तेथी कोइ रीते चवाय नहि. अने अतिशे भूख्यो थयो होय तो ते चणाने गळी जाय पण चवाय नहि. तेम जेणे आत्मानोने भगवाननो यथार्थ महिमा जाण्यो छे, तेने कोइ लोकना विषयसुखने विषे आनंद थाय नहि अने देहनुं प्रारब्ध होय त्यां सुधी खानपानादिक सर्वे भोग भोगवे खरो, पण जेम दांत अंबाइ गया होय ने चणा आखा गळी जाय एम भोगवे अने वासना टळ्वी ए पण काम अतिशे भारे छे. वासना तो समाधिनिष्ठ थाय, तोपण रही जाय छे. अने समाधि थया केडे तो ब्रह्मना स्वरूपमांथी देहमां कोइ रीते अवातुं नथी, अने जो अवाय छे तो तेना त्रण हेतु छे. तेमां एक तो जो कांइ संसारना सुखनी वासना होय तो समाधिमांथी पाछो देहमां आवे अने कांतो अति समर्थ होय ते समाधिमां जाय ने पोतानी इच्छाए पाछो देहमां आवे अने कांतो कोइ पोता थकी अति समर्थ होय, ते पाछो समाधिमांथी देहमां लावे ए त्रण प्रकारे समाधिमांथी पाछो देहमां आवे छे. (९) अने ज्यारे समाधि थाय छे ने तेमां ९
ब्रह्मनुं दर्शन थाय छे, त्यारे कोटी कोटी सूर्य सरखो ब्रह्मनो प्रकाश देखीने जो थोडी समझण होय तो प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवाननी जे मूर्ति छे, तेने विषे न्यूनपणुं समझे अने ब्रह्ममां अधिकपणुं मानी ले एटले उपासनानो भंग थयो, माटे प्रत्यक्ष मूर्तिने विषे अति दृढ निश्चय थयो जोइए तो सर्वे काम सरे. अने अमे पण एम दृढ निश्चय कर्यो छे जे कोइ अमने साचो थइने मन अर्पे अने लेश मात्र अंतराय राखे नहि तो,तेमां अमे कोइ वातनी कसर रहेवा दइए नहि. (१०) १०

६ पछी मुक्तानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (६) जेणे मन दीधुं होय तेनां केवां लक्षण होय? अने मन न दीधुं होय तेनां केवां लक्षण होय ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेणे मन अर्पण कर्युं होय तेने जो परमेश्वरनी वात थती होय तथा परमेश्वरनां दर्शन थातां होय अने ते समे जो पोते न होय तो तेनी अतिशे पोताना हैयामां दाझ थाय. अने ज्यारे भगवाननी वात सांभळे तथा भगवाननां दर्शन करे तेने विषे अधिक अधिक प्रीति थाती जाय पण तेमांथी मन पाछुं हठे नहि, अने परमेश्वर ज्यारे कोइकने परदेश मुकयानी आज्ञा करता होय, त्यारे जेणे मन अर्प्युं होय तेना मनमां एम थाय जे, जो मुने आज्ञा करे तो बुरानपुर तथा काशी ज्यां मुके त्यां राजी थको जाउं, एवी रीते परमेश्वरना ममतामां रहीने जे राजी रहेतो होय तेतो हजारो गाउ गयो होय तोय अमारे पासे छे. अने जेणे एवी रीते मन न अर्प्युं होय ने ते अतिशे अमारे समीपे रहेतो होय तोय ते लाखो गाउ छेटे छे. अने जेणे अमने मन न अर्प्युं होय तेने तो उपदेश करतां पण बीक लागे जे, शुं जाणीए सवळुं समजशे,के अवळुं समजशे ? एवी रीते मन अर्प्युं होय ने न अर्प्युं होय, तेनां लक्षण छे. (११) इति वचनामृतम् ॥७३॥ ११

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [६] छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के वीर्य कामनुं रूप छे. (१) बीजामां वीर्य सूक्ष्मदेह मेळुं रहे छे. (२) त्रीजामां स्त्रीना संकल्पथी वीर्यपात थाय ते काचो ब्रह्मचारी छे अने स्त्रीनो संकल्प न थाय एवुं यत्न करवुं. (३) चोथामां देह, इंद्रियोथी पोताने जुदो समजीने शास्त्रनी मर्यादा प्रमाणे क्रिया करे तेमां पोताने अकर्ता समजे ने हर्ष, शोक पामे नहि ए सांख्यवाळानुं लक्षण छे अने स्त्रीनो संग करे तो पण उर्ध्वरेता रहे ते तथा अमारे विषे पोताना आत्मानी एकता करीने पोताने मुखे अमने जमाडी दे ते योगवाळानुं लक्षण छे. (४) अने अमारी उपासनाथी तथा निर्वासनिकपणाथी दृढ निष्कामी थवाय छे. (५) पांचमामां आत्मनिष्ठा ने अमारुं ध्यान ने यथार्थ ज्ञाने सहित वैराग्य ए वासना जित्यानो उपाय छे. (६) अने मोटा पुरुषने विषे निर्दोष बुद्धि राखे ते दोषे रहित थाय छे ने दोष परठे ते भ्रष्ट थाय छे. (७) अने आत्मनिष्ठाने अमारी मुर्तिनो महिमा समजे तेने वासना रहेती नथी. (८) अने वासना समाधिमांथी पाछो खेंची लावे एवी बळवान छे. (९) अने समाधिमां ब्रह्मना प्रकाशमां अधिकपणुं माने तो अमारी उपासनानो भंग थाय छे, माटे आ मुर्तिनो दृढ निश्चय करवो. (१०) अने छठ्ठामां अमारे विषे अधिक प्रीति थवानुं कारण ते अमारी वार्ता तथा दर्शन विना रहेवाय नहि ते छे; अने मन अर्प्युं होय ने न अर्प्युं होय तेनां लक्षण कह्यां छे. (११) बाकसो छे.

१ प्र० त्रीजा प्रश्नमां ब्रह्मचर्य कह्युं तेनुं शुं रूप हशे ?

१ उ० स्थूळ देहे करीने शिक्षापत्री, निष्कामशुद्धि, धर्मामृत तेमां कहेला नियम पाळे तथा तेमां देशकाळे फेर पडवा दे नहि तथा स्वप्नमां वीर्यपात थाय के मनमां संकल्प थाय तेनुं प्राय-

भ्रित करी नाखे ते कनिष्ठ ब्रह्मचर्य कहेवाय, अने मनमां संकल्प थावा दे नहि ते मध्यम ब्रह्मचर्य कहेवाय, अने उर्ध्वरेता रहे ते उत्तम ब्रह्मचर्य कहेवाय, ने ते यथार्थ निष्कामी कहेवाय. तेना उपाय [लो० १ ना त्रीजा प्रश्नमां तथा म० ३३ ना बीजा प्रश्नमां] कह्या छे, आ त्रण प्रकारना ब्रह्मचर्यमां कनिष्ठ ब्रह्मचर्य पाळे तेना उपर पण श्रीजीमहाराजने संत प्रसन्न थाय अने जेम जेम विशेष निष्कामी थाय तेम तेम विषेश प्रसन्नता थाय छे.

२ प्र० नरनारायणनो आपणे आशरो छे ते आपणे नरनारायणने भजने करीने तथा एमने प्रतापे करीने नरनारायण जेवाज निष्कामी थाशुं एम श्रीजीमहाराजे आमां कह्युं अने [जे० ६ मां] अमेज नरनारायण छीए एम कह्युं छे ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० केटलाक वचनामृतोमां श्रीजीमहाराज पोते भगवानपणे बोल्या छे अने केटलाकमां पोताना भक्त भेळा भळीने पोते भक्तपणे बोल्या छे ते [लो० १३ ना बीजा प्रश्नमां] जो भगवान सरखा थइ जवातुं होय तो एवडो दाखडो शुं करवा करीए. अने [अ० ६ मां] हुंज पुरुषोत्तम छुं एम कह्युं छे माटे ज्यारे भक्तपणे बोल्या होय त्यारे पोताना भक्तोने शिखववाने अर्थे मनुष्यभाव जणावीने मनुष्यभावे बोल्या छे एम जाणवुं; अने ज्यारे भगवानपणे बोल्या होय त्यारे पोताने स्वरूपे बोल्या छे एम जाणवुं, माटे भगवान तो श्रीजीमहाराज एकज छे. अने आमां नरनारायणनो आशरो छे एम कह्युं छे ते नरनारायण नामे पोतानेज कह्या छे अने आशरो तथा भजन ते पोतानुंज करवानुं कह्युं छे.

३ प्र० चोथा प्रश्नमां श्रीकृष्ण भगवाने पोताने विषे नरनारायण ऋषिपणुं देखाडयुं एम कह्युं ते नरनारायण ऋषि किया जाणवा ? अने ऋषिपणुं देखाडयुं ते केवी रीते समजवुं ?

३ उ० आ ठेकाणे बदरिकाश्रमने विषे नरनारायण रह्या छे ते कह्या छे अने नरनारायण ऋषिपणुं देखाडयुं एम कह्युं छे ते नरनारायणमां उर्ध्वरेतापणानो गुण छे ते एमां आवेलो ते गुण देखाडयो एम जाणवुं, माटे उर्ध्वरेतापणानो गुण देखाडवा पूर्वक जाणवुं, पण नरनारायणपणुं बताव्युं एम न जाणवुं.

४ प्र० बदरिकाश्रममां नरनारायण रह्या छे तेने भजने करीने उर्ध्वरेता थाय के नहि ?

४ उ० श्रीकृष्ण, नरनारायण, वासुदेव ब्रह्म, मूळअक्षर तथा श्रीजीमहाराज ए सर्वेने भजने करीने उर्ध्वरेता थाय छे अने जन्ममरणथी रहित पण थाय छे पण सर्वोपरी एवुं आत्यंतिक कल्याण ते तो श्रीजीमहाराजने भजने करीनेज थाय छे.

५ प्र० (४/५ चोथा प्रश्नमां) अतिशे निर्वासनिक कह्यो ते केवी समजणवाळाने जाणवो ?

४ उ० मुर्तिमान मूळअक्षर कोटी सुधीना ऐश्वर्यने के सुखनी सारप्य न रहे अने श्रीजीमहाराजनी मुर्ति सिवाय ने मुर्तिना सुख सिवाय श्रीजीमहाराजना तेजरूप धामने विषे पण प्रीति न राखे ते अतिशे निर्वासनिक जाणवो.

६ प्र० श्रीजीमहाराजना तेजरूप धाममां प्रीति न राखवी एवुं किया वचनामृतमां कह्युं छे. ?

६ उ० [लो० २४/२ मां] अमे ने अमारा मुक्त विना अमारुं तेज एकलुं देखाय तो कष्ट पामवुं एम कह्युं छे, माटे तेजमां प्रीति न राखवी.

७ प्र० (५/६ पांचमा प्रश्नमां) आत्मनिष्ठा कही ते केवी जाणवी ?

७ उ० श्रीजीमहाराजना तेजरूप जे अक्षरधाम ते रूप पोताना आत्माने मानवो ते आत्मनिष्ठा आ ठेकाणे कही छे.

८ प्र० अनंतकोटी ब्रह्मांड कियां जाणवां ? ने ब्रह्मांडोना आधार अक्षर कह्या ते किया जाणवा ?

८ उ० मूळअक्षररूपी ब्रह्मांड कह्यां छे अने पोताना तेजने अक्षर कह्युं छे ते मूळअक्षरनुं आधार छे.

९ प्र० (५/८ पांचमा प्रश्नमां) ब्रह्मनुं स्वरूप कह्युं तथा दशमी बाबतमां ब्रह्मनो प्रकाश कह्यो ते स्वरूप तथा प्रकाश कह्यो ते शो समजवो ?

९ उ० श्रीजीमहाराजना तेजरूप ब्रह्मज्योतिनी किरणना प्रकाशने ब्रह्मनुं स्वरूप तथा प्रकाश कह्यो छे. आनो विस्तार (प्र० ३२ ना त्रीजा प्रश्नोत्तरमां) छे.

१०प्र० [५/६ पांचमा प्रश्नमां] समाधिवाळो श्रीजीमहाराजनी मुर्तिथी ब्रह्मना प्रकाशने अधिक माने छे एम कह्युं ते श्रीजीमहाराज करतां प्रकाशने अधिक शाथी मानतो हशे ?

१०उ०ज्ञाननी अपकता छे, तेथी एणे श्रीजीमहाराजनी मुर्तिना सुखनुं अतिशेपणुं ने कारणपणुं जाण्युं नथी, माटे ते समाधिमां प्रथम ब्रह्मनो प्रकाश देखे ते प्रकाशने अधिक मानीने तेना सुखमां जोडाइ जाय; अने श्रीजीमहाराजने ब्रह्मना पण कारण ने आधार ने पर समजे तो तेमां बंधाय नहि. ॥७३॥

संवत् १८७६ ना वैशाख शुदि ११ एकादशीने दिवस सवारमां स्वामी श्रीसहजानंदजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदिरनी आगळ लिंबडाना वृक्षनी हेठे ओटा उपर ढोलियो बिछाव्यो हतो ते उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) जेने जेटलो वैराग्य होय अने जेने जेटली समझण होय, तेतो ज्यारे कोइक विषय भोगनी प्राप्ति थाय, अथवा ज्यारे कोइक आपत्काळ आवी पडे त्यारे कळाय पण ते विना कळाय नहिं, अने झाझी संपत् के आपत् आवे एनी वात शी कहेवी ? पण आ दादाखाचरने थोडुंज आपत्काळ जेवुं आव्युं हतुं, तेमां पण जेनुं अंतःकरण जेवुं हशे तेवुं सौने जणाणुं हशे. (१) पछी मुक्तानंदस्वामी बोल्या जे, भगवानना भक्तनो पक्षतो हैयामां रहे छे खरो ते पण समजीने रहे छे जे, जो सत्संगनुं उत्कृष्टपणुं होय तो घणा जीवोने समास थाय अने ज्यारे कांइ सत्संगनुं अपमान जेवुं होय त्यारे कोइ जीवने समास थाय नहि, एटला माटे हर्ष शोक जेवुं थइ आवे छे.

२ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, [२] आपण तो श्रीनरनारायणना दास छैए ते श्रीनरनारायणने जेम गमे तेम राजी रहेवुं ने ए श्रीनरनारायणनी इच्छा हशे तो सत्संगनी

वृद्धि थाशे ने जो एमने घटाडवो हशे तो घटी जाशे, अने ए नरनारायण आपणने हाथीए बेसाडे तो हाथीए बेसीने राजी रहेवुं, अने गधेडे बेसाडे तो गधेडे बेसीने राजी रहेवुं. (२) अने ए श्रीनरनारायणना चरणारविंद विना बीजे कयांइ प्रीति राखवी २
नही. (३) अने आवा थुंकना सांधा होय तेने विषे जेनुं मन क्षोभ पामे तो ज्यारे ३
साचेसाचोज जगत् व्यवहार माथे आव्यो होय तो तेना शा हाल थाय? माटे आपणा पति जे श्रीनरनारायण तेतो बोरडीना झाड हेठे बेठा तप करे छे, अने कोइ जातना संसारना सुखने स्पर्श करता नथी, त्यारे आपणा पति जे नरनारायण तेना आपण दास छैए ते जेम पतिव्रता स्त्री होय, ते पोताना पति करतां घरेणां, वस्त्र, खानपानादिक जे भोग ए सर्वे पतिथी पोताने वास्ते न्यून राखे पण अधिक राखे नहि, तेम आपणा पति जे श्रीनरनारायण ते थकी आपणे पण संसारिक सुख न्यून राख्युं जोइए. (४) अने ४
जेटलां कांइक भगवानने वास्ते सारां सारां पदार्थ इच्छवां तेतो ए भक्त पोतानी भक्तिए करीने, निष्कामी थइने इच्छतो होय तो तो ठीक छे, पण पोते इच्छनारो जे भक्त तेने ते भगवान संबंधी पदार्थ भोगववानी इच्छा राखवी नहि,अने भगवानने तो संसारना सुखनी इच्छा नथी. पण पोताना भक्तनी भक्ति जाणीने पोताने जे जे पदार्थ अर्पण करे छे तेनो अंगीकार करे छे. [५] अने जो भगवानने संसारनुं सारुं सुख जोइतुं होय, तो अनंत ५
कोटी ब्रह्मांडना पति, ने ब्रह्मपुर गोलोक ने वैकुंठादिक धामना पति, अने राधिका लक्ष्मी आदिक जे पोतानी शक्तियो तेना पति, एवा जे भगवान ते सर्वे पोताना वैभवने तजीने बोरडीना झाड हेठे तप करवाने शा सारु बेसे? माटे भगवानने तो विषय संबंधी सुखनी आसक्ति होयज नहि. तेमां पण बीजा अवतार करतां आपणा पति जे नरनाराजण तेतो अत्यंत त्यागी छे. अने जीवना कल्याणने अर्थे तप करे छे. अने ए नरनारायणने कोइ वैभव जोइतो होय तो बोर खाइने शा सारु बेसी रहे? ने आ संसारमां मूर्खा जीव होय छे ते पण गाम गरास भोगवे छे, तो नरनारायण तो साक्षात् भगवान छे, ते जो एमने कांइ जोइतुं होय तो बधु तो नहि पण चारतो गामडां वसावी बेसे? पण ए भगवानने कांइ जोइतुंज नथी. माटे आपणा स्वामी ज्यारे एवा त्यागी छे, तो आपणे तो ए थकी विशेष त्यागी रह्युं जोइए अने भगवाननी इच्छाए करीने जेवी जेवी रीते सत्संगनी वृद्धि थाती जाय तेवी तेवी रीते राजी रहेवुं.पछी भगवाननी इच्छा होय तो बधुं जगत सत्संगी थाओ अथवा सर्वे सत्संगी मटी जाओ पण कोइ रीते हर्ष शोक मनमां धारवो नहि. आ भगवाननुं कर्युं सर्वे थाय छे, माटे सुकुं पांदडुं जेम वायुने आधारे फरे तेम भगवानने आधिन रहीने आनंदमां भजन करवुं. अने कोइ जातनो मनमां उद्वेग आववा देवो नहि. (६) ६
इति वचनामृतम् ॥७४॥

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (२) छे, तेमां पहेलामां संपत् मळवाथी वैराग्य कळाय छे अने आपत्काळथी समजण कळाय छे. (१) बीजामां अमारी इच्छाथी सत्संगनुं उत्कृष्टपणुं थाय अथवा गौणपणुं जणाय अथवा पोताने मान अपमान थाय तेमां राजी रहेवुं. (२) अने अमारी मुर्ति विना बीजे क्यांई प्रीति राखवी नहिं. (३) अने अमारे तपनी रुचि छे अने तमे अमारा दास छो माटे तमारे पण तपनी रुचि विशेष राखवी. (४) अने अमे कांइक अंगीकार करीए छीए ते भक्तनी भक्ति जाणीने करीए छीए [५] अने बीजा अवतार करतां अमे अत्यंत त्यागी छीए ने जीवोना कल्याणने अर्थे अमे तप करीए छीए माटे अमारा आश्रितो सर्वेने त्याग विशेष राखवो. अने अमारे आधीन रहीने अमारुं भजन करवुं, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. [६] बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां दादाखाचरने आपत्काळ जेवुं आव्युं हतुं एम कह्युं ते आपत्काळ शो आव्यो हतो ?

१ उ० दादाखाचरने ने भाणखाचरने वैर हतुं ते लडाइमां भगुजीने ने वेचर खावडाने घायल कर्या हता अने गेबी तथा आरबनी हल्लां आवी हती ते आपत्काळ आव्यो हतो.

२ प्र० बीजा प्रश्नमां श्रीजीमहाराजे कह्युं जे आपण नरनारायणना दास छीए. त्यारे तो श्रीजी-महाराज पण दास ठर्या ते केम समजवुं ?

२ उ० श्रीजीमहाराज मनुष्यभावे बोल्या छे पण पोतानेज नरनारायण नामे कह्या छे अने चोथी बाबतमां नरनारायण आपणा पति छे एम कह्युं छे ते पण मनुष्यभावे बोल्या छे पण सर्वेना पति श्रीजीमहाराज छे अने नरनारायण बोरडीना झाड तळे बेसीने तप करे छे, एम कह्युं छे ते पण श्रीजीमहाराज वनमां विचर्या त्यारे वृक्ष नीचे रहेता ने अतिशे तप कर्युं छे ते तप आ ठेकाणे समजवुं. आनो विस्तार [प्र० ८ ना पहेला प्रश्नोत्तरमां तथा ७३ ना बीजा प्रश्नोत्तरमां] कर्यो छे.

३ प्र० [५/३ बीजा प्रश्नमां] श्रीजीमहाराज करतां आपणे वैभव न्यून राखवा एम कह्युं ते वैभव किया जाणवा ? अने ए वैभव त्यागीए केवी रीते न्यून राखवा ? अने गृहस्थोए केवी रीते न्यून राखवा ?

३ उ० त्यागीए श्रीजीमहाराजनी इच्छाथी जे अन्नादिक आवे तेनो थाळ करीने श्रीजीमहाराजने जमाडवाने ते प्रसादीनुं अन्न प्रसादीना पाणीथी मेळावीने स्वादेरहित जमवुं पण जुदुं जुदुं न राखवुं अने मेळाव्या विना न जमवुं अने काष्ट पात्रमां जमवुं ए वैभव ओछा भोगव्या कहेवाय. अने गृहस्थोए जे वस्त्र घरेणां ठाकोरजीने धरातां होय ते पहेरवां नहि, इष्टदेवने जमवाना पात्रमां जमवुं नहि, एमने बेसवाना वाहनमां बेसवुं नहि अने पोताने जमवानी तथा पहेरवा ओढवानी वस्तुओ श्रीजीमहाराजनी मुर्तिनी प्रसादी करीने वापरवी ए वैभव न्यून भोगव्या कहेवाय.

४ प्र० भगवान तो दिव्यमुर्ति छे ते मायिक वस्तु जमता हशे के केम ?

४ उ० जमाडनार भक्तने अतिशे भाव होय तो तेनो भाव जोइने भगवान ए मायिक वस्तुने

दिव्य निर्गुण करीने अंगीकार करे छे, माटे भगवानने जमाड्या विना कोइ वस्तु जमवी नहि.

५ प्र० [६/२ बीजा प्रश्नमां] ब्रह्मपुर नामे धाम कह्युं ते कियुं जाणवुं ?

५ उ० आ ठेकाणे अक्षरधामने ब्रह्मपुर नामे कह्युं छे.

६ प्र० राधिकादिक शक्तियोना पति अमे छीए एम कह्युं ते ए शक्तियोना पति श्रीजीमहाराजने केवी रीते समजवा ?

६ उ० मूळअक्षरथी लइने विधु, ब्रह्मा, शिव सुधी सर्वने विषे श्रीजीमहाराज अन्वयपणे रह्या छे माटे राधिकादिक सर्वे श्रीजीमहाराजनी पण शक्तियो कहेवाय ते [लो० १७ ना ३/७ पांचमा प्रश्नमां] अक्षर, पुरुष, काळ, मायादिकने पोतानी शक्तियो कही छे.

७ प्र० बीजा अवतार करतां अमे अतिशे त्यागी छीए एम कह्युं ते श्रीजीमहाराजने केवी रीते त्यागी समजवा ?

७ उ० श्रीजीमहाराज मनुष्यरूपे विचरता त्यारे त्यागीना आश्रममां रह्या हता अने स्त्रीनो गंध आवे तो उलटी करता ने मरचां ने मींढीआवळ जमता अने पछी पण पोताना भक्तोने राजी करवा ने तेमनां कल्याण करवा सारु, सारां सारां भोजन जमता, पण त्यागनी रुची सदाय हती ए त्याग कह्यो छे. ॥७४॥

संवत् १८७६ ना वैशाख वदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिर आगळ लिंबडाना वृक्ष हेठे ढोलिया उपर विराजमान हता अने पीळा पुष्पना हार कंठने विषे विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी सुराखाचरे प्रश्न पूछ्यो जे, (१) जेना कुळमां भगवाननो एक भक्त थाय तो तेना इकोतर परियां उघरे छे एम कह्युं छे. अने तेना गोत्रमां केटलाक तो संतनाने भगवानना द्वेषी पण होय त्यारे तेनो केइ रीते उद्धार छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेम कर्दमऋषिनो देवहूतिए पतिबुद्धिए करीने प्रसंग कर्यो हतो, तोपण कर्दमऋषिने विषे स्नेह हतो तो एनो उद्धार थयो, अने मान्धाता राजानी दिकरीयुं पचास ते सौभरीऋषिनुं रूप जोइने वरीयुं तेने कामनाए करीने सौभरीने विषे हेत हतुं, तो ते सर्वेनुं कल्याण ऋषिना जेवुंज थयुं, माटे जेना कुळमां भक्त थयो होय ने तेना कुटुंबी सर्वे एम माने जे, आपणुं मोटुं भाग्य छे जे, आपणा कुळमां भगवाननो भक्त थयो छे, एवी रीते भक्तनुं महात्म्य समजीने हेत राखे तो ते सर्वे कुटुंबीनुं कल्याण थाय अने मरीने पित्री जे स्वर्गमां गया होय ते पण जो एम जाणे जे, आपणा कुळमां भगवाननो भक्त थयो, ते आपणुं मोटुं भाग्य छे, एम समजीने भगवानना भक्तमां हेत राखे तोते पित्रीनुं पण कल्याण थाय, अने जे भगवानना भक्त संगाथे वैरबुद्धि राखे तेनुं तो कल्याण न थाय,

अने जेम जेम वैर करतो जाय तेम तेम तेनी बुद्धि भ्रष्ट थती जाय, अने देह मुके त्यारे पंच महापापना करनारा जे नरकना कुंडमां पडे ते पण तेज कुंडमां पडे छे, ते माटे भगवानना भक्तमां जेने हेत होय, तो संबंधी होय अथवा बीजो कोइ होय ते सर्वनुं कल्याण थाय छे. (१) १

२ पछी नाजे भक्ते प्रश्न पूछ्यो जे, (२) भगवाननो भक्त होय ते एक तो निश्चयवाळो होय, अने एकतो थोडा निश्चयवाळो होय, अने उपरथी तो बेय सारा देखाता होय ते बे केम ओळख्यामां आवे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने भगवानना स्वरूपनुं यथार्थ ज्ञान होय, अने दृढ वैराग्य होय, अने भक्ति ने स्वधर्म पण अति दृढ होय, तेने परिपूर्ण निश्चय जाणवो. अने एमांथी जो एके वातुं ओछुं होय तो निश्चय छे, तोपण महात्म्य विनानो छे अने ए चारवानां संपूर्ण होय ते महात्म्य सोतो भगवाननो निश्चय जाणवो. (२) इति वचनामृतम्. ॥७५॥ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे, तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, अमारा भक्त उपर हेत राखे तेनुं कल्याण थाय ने द्वेष करे ते नरके जाय. (१) बीजामां ज्ञान, वैराग्य, भक्ति ने स्वधर्म संपूर्ण होय तेने अमारो महात्म्ये सहित निश्चय थाय छे. (२) बातो छे.

१ प्र० बीजा प्रश्नमां ज्ञान, वैराग्य, भक्ति ने स्वधर्म कह्यां तेनां लक्षण शां हशे?

१ उ० श्रीजीमहाराजने सदा मुर्तिमान जाणे ने तेमद्वारे करीने क्षर, अक्षरना आधार, प्रेरक, ने नियंता जाणे अने ए तेजरूप शक्तिना पण आधार जाणे अने ए ब्रह्मरूप एवो जे पोतानो आत्मा तेने विषे श्रीजीमहाराजनी मुर्तिने देखे ते श्रीजीमहाराजना स्वरूपनुं ज्ञान कहेवाय. अने श्रीजीमहाराजनी मुर्ति विना बीजे क्यांइ प्रीति न रहे ते वैराग्य कहेवाय. अने महात्म्यज्ञाने सहित श्रीजीमहाराजनी मुर्तिमां प्रेमे करीने जोडावुं ते भक्ति कही छे. अने श्रीजीमहाराजनी मुर्तिने आत्माने विषे अखंड धारी रहेवुं ते आत्मानो धर्म जाणवो अने स्थूळ, सुक्ष्म देहे करीने सर्वे नियम पाळवा ए देहनो धर्म जाणवो ते स्वधर्म कहेवाय. ॥७५॥

संवत् १८७६ ना प्रथम ज्येष्ठ शुदि ११ एकादशीने दिवस श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां स्वामीश्री सहजानंदजी महाराज पोताना उतारा विषे विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मोटा मोटा साधु केटलाक बेठा हता.

१ तेमनी आगळ श्रीजीमहाराजे वार्ता करी जे, (१) क्रोधी, ईर्ष्यावाळो, कपटी ने मानी ए चार प्रकारना जे मनुष्य ते जो हरिभक्त होय तोयपण ते साथे अमारे बने नहि, अने क्रोध ने ईर्ष्या ए बेय मानने आशरे रहे छे. (१) अने कामीनो तो अमारे कोइ १ कांळे विश्वासज नथी, जे ए सत्संगी छे अने कामी तो सत्संगमां होय तोय विमुख जेवो छे. (२) अने जेने पंच वर्तमानमां कोइ वाते खोट न होय, अने गमे तेवा वचनना २

भीडामां लेइए ने एनुं गमतुं मुकावीने अमारा गमतामां राखीए तोपण कोइ रीते देह पर्यंत मुंझाय नहि एवा होय, ते पाको सत्संगी छे, अने एवा हरिभक्त उपर अमारे वगर कर्युं सहजेज हेत थाय छे अने एवा गुण न होय तो हेत करवा जाइए तोपण हेत थाय नहि, अने अमारी तो एज प्रकृति छे जे, जेना हृदयमां भगवाननी एवी परिपूर्ण भक्ति होय, ते उपरज हेत थाय छे. (३) इति वचनामृतम्. ॥७६॥ ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य [१] छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, क्रोध, मान, ईर्ष्या ने कपट राखे ते अमने गमतो नथी. (१) अने कामी तो विमुख छे [२] अने अमारा गमता प्रमाणे वर्त्तवामां मुंझाय नहि ते पाको सत्संगी छे. (३) बाबतो छे.

१ प्र० श्रीजी बाबतमां अमे गमे तेवा वचननां भीडामां लइए अने अमारा गमतामां वर्तावीए तो पण मुंझाय नहि तेने पाको सत्संगी कह्यो ते श्रीजीमहाराज मनुष्य रूपे विचरता ते वखते तो जेम कहे तेम वर्ते ते वर्त्यो कहेवाय पण आज केवी रीते वर्ते तो वचनना भीडामां तथा गमतामां वर्त्यो कहेवाय ?

१ उ० धर्मामृत, निष्कामशुद्धि, शिक्षापत्री आदिकमां त्यागी गृहीना धर्म श्रीजीमहाराजे कह्या छे ते प्रमाणे राजी थको वर्ते पण तेमां कांइ फेर पडवा दे नहि ने ते प्रमाणे वर्तवामां लेश-मात्र मुंझाय नहि ते वचनना भीडामां तथा गमतामां रह्यो कहेवाय. अने ते प्रमाणे यथार्थ वर्ते पण ए प्रमाणे न वर्तवानो मनमां संकल्प थइ जाय ते मुंझाणो कहेवाय. अने जे ए प्रमाणे न वर्ते ते स्वामिनारायणनो छेज नहि ए तो संप्रदायथी बहार छे ते (प्र० ३६ ना बीजा प्रश्नोत्तरमां) कह्युं छे. ॥७६॥

संवत् १८७६ ना द्वितीय ज्येष्ट वदि अमावास्याने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदिर आगळ आथमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, अने मुनि मांहो मांही प्रश्न उत्तर करता हता, ने पछी एक मुनिए अणसमजणे करीने भगवानना निश्चयनुं बळ लइने धर्मने खोटाज करवा मांडया.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) भगवानना ज्ञाननो ओथ लेइने जे धर्मने खोटा करी नाखे तेने असुर जाणवो, अने भगवानना स्वरूपमां तो कल्याणकारी अनंत गुण रह्या छे. ते श्रीमद्भागवतने विषे प्रथम स्कंधमां पृथ्वीए धर्म प्रत्ये कह्या छे, माटे जेने भगवाननो आशरो होय तेमां तो भगवानना कल्याणकारी गुण आवे छे, अने जेने भगवानना स्वरूपनो निश्चय होय तेमां तो एकादश स्कंधमां कह्यां एवां जे साधुनां बत्रीश लक्षण ते आवे छे, माटे जेमां बत्रीश लक्षण संतनां न होय तेने पुरो साधु न जाणवो, अने जेने भगवाननो निश्चय होय तेना हैयामां तो प्रभुना कल्याणकारी गुण जरूर आवे,

अने प्रभुना गुण संतमां आवे त्यारे ते साधु बत्रीश लक्षणे युक्त होय. (१) माटे आजथी १
जे कोइ पंचवर्त्तमानरूप जे धर्म तेने मुकीने ज्ञाननुं के भक्तिनुं बळ लेशे ते गुरुद्रोही,
वचनद्रोही छे. अने एवी धर्मभंग वात जे कोइ करतो होय, तेने विमुख कहेवो, अने एम
कहेवुं जे तमे तो असुरनो पक्ष लीधो छे, ते अमे नहि मानीए, एम कहीने ते अधर्मीनी
वातने खोटी करी नाखवी. (२) २

२ पछी संते प्रश्न पूछ्यो जे, (२) हे महाराज! कोइक भगवाननो अति दृढ भक्त होय ने देह मुकवा टाणे तेने पीडा थइ आवे छे ने बोल्यानुं पण कांइ ठेकाणुं रहेतुं नथी, अने कोइक तो कांइ पाको हरिभक्त जणातो न होय, ने ते देह मुकवा समे तो अति समर्थ जणाय छे, ने अतिशे भगवानना प्रतापने जाणीने ने भगवाननो महिमा मुखे कहीने, सुखीयो थको देह मुके छे एनुं शुं कारण छे, जे सारो होय तेनुं अंत समे सारुं न देखाय ने जेवो तेवो होय तेनुं अंत समे सारुं देखाय छे एनुं कारण कहो? ए प्रश्न छे. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, देश, काळ, क्रिया, संग, देवता, मंत्र, दिक्षा ने शास्त्र ए आठ जेवां होय तेवी पुरुषनी मति थाय छे, ते जो सारां होय तो सारी मति थाय छे, ने भुंडां होय तो भुंडी मति थाय छे, अने पुरुषना हृदयने विषे परमेश्वरनी मायाना प्रेर्या थका चारे युगना धर्म वाराफरती वर्त्तता होय, ते जो अंत समे सतयुगनो धर्म आवी जाय तो मृत्यु बहु शोभी उठे, अने त्रेता ने द्वापरनो धर्म आवे तो तेथी थोडुं शोभे अने कळिनो धर्म मृत्यु समे आवे तो अतिशे भुडुं देखाय, एम अंत समे सारुं नरसुं तेतो काळे करीने छे. अथवा जाग्रत, स्वप्न ने सुषुप्ति ए त्रण अवस्था छे तेमां जो अंत समे जाग्रत अवस्था वर्त्तति होय तो पापी होय ते पण बोलतां चालतां देह मुके छे. अने अंत समे स्वप्न अवस्था वर्त्तति होय तो झंख्या जेवुं कांइने कांइ बोलतो थको भगवाननो भक्त होय तोपण देह मुके, अने अंत समे सुषुप्ति अवस्था प्रधान वर्त्ते तो भगवाननो भक्त होय अथवा विमुख होय तोपण घेनमां ने घेनमां रहीने देह मुके, पण सारुं के नरसुं कांइ बोलाय नहि. (३) अने अंतकाळे ए त्रण अवस्था थकी पर ने ब्रह्म- ३
रूप एवो पोताना जीवात्माने साक्षात्कार मानतो थको जे देह मुके तेतो जेवी ईश्वरने सामर्थी होय, तेवी सामर्थी जणावीने देह मुके छे ने एम ब्रह्मरूप थइने ने सामर्थी जणाव-
वीने देह मुकवो ते भगवानना भक्तनेज थाय छे, पण बीजा विमुख जीवने एम थायज
नहि. (४) एवी रीते काळे करीने अंत समे सारुं नरसुं जणाय छे, अथवा अवस्थाओने ४
योगे करीने सारुं नरसुं जणाय छे, अने विमुख होय तेने अंतकाळे जाग्रत अवस्था वर्त्तती होय ने बोलतो बोलतो देह मुके तेणे करीने कांइ तेनुं कल्याण थातुं नथी. विमुखतो सारी रीते देह मुके अथवा भुंडी रीते देह मुके पण नरकेज जाय, अने भगवाननो

भक्त होय ते बोलतो बोलतो देह मुके अथवा झंख्या जेवुं बोलीने देह मूके, अथवा शून्य मुन्य रहीने देह मुके पण तेनुं कल्याणज छे, पण एमां कांइ संशय नथी, एम भगवानना भक्तने जाणवुं. अने भगवाननो भक्त होय तेने अंत समे स्वप्नादिकने योगे करीने उपरथी पीडा जेवुं जणातुं होय पण एने अंतरमां तो भगवानने प्रतापे करीने अति आनंद वर्ततो होय माटे नकि हरिभक्त होय ने अंत समे लावां झंखां करतो थको देह मुके पण एना कल्याणमां लेश मात्र संशय राखवो नहि. [५] इति वचनामृतम् ॥७७॥ ५

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलुं कृपावाक्य छे तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, अमारो आशरो ने निश्चय होय तेमां अमारा कल्याणकारी गुण ने साधुनां बत्रीस लक्षण आवे छे. (१) अने जे पंचवर्तमानने मुकीने ज्ञान, भक्तिनुं बळ ले ते गुरु द्रोही, वचनद्रोही ने असुर छे तेनी वात न मानवी. (२) बीजामां काळे करीने अवस्थाए करीने अंतसमे सारुं नरसुं जणाय छे. (३) अने ब्रह्मरूप थइने ने सामर्थी जणावीने तो अमारो भक्तज देह मुके. [४] ने विमुख सारी रीते देह मुके तोय नरके जाय ने अमारो भक्त शून्यसुन्य रहीने देह मुके, तो पण कल्याणज थाय. (५) बावतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां अमारे आशरे करीने कल्याणकारी गुण आवे छे एम कह्युं अने (प्र० ६२ ना पहेला प्रश्नमां] अमारा निश्चये करीनेज कल्याणकारी गुण आवे छे एम श्रीजी-महाराजे कह्युं छे ते केम समजवुं ?

१ उ० निश्चयमां ने आशरामां सरखी गौरवता छे, माटे कल्याणकारी गुण ए बेय वते आवे छे ते आमां आ प्रश्नमांज श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, अमारो निश्चय होय तेमां अमारा कल्याणकारी गुण जरुर आवे अने साधुनां लक्षण पण ए बेयथी आवे छे.

२ प्र० जे आशरे करीने श्रीजीमहाराजना कल्याणकारी गुण आवे ते आशरानुं शुं रूप छे ?

२ उ० श्रीजीमहाराज विना बीजा कोइने कर्त्ता जाणे नहि एक श्रीजीमहाराजनेज सर्वे कर्त्ता ने सर्वेना सुखदाता जाणे अने श्रीजीमहाराजनी मुर्तिना सुख विना बीजुं कांई सुख के ऐश्वर्य तेने इच्छेज नहि ने जेम श्रीजीमहाराजनी मरजी होय तेमज वर्ते ते आशरो कहेवाय.

३ प्र० साधुनां बत्रीश लक्षण कह्यां ते कियां जाणवां ?

३ उ० कृपाळु=परदु:खने सहन नहि करनारा. (१) अकृतद्रोह=सर्व प्राणीमां कोइनो द्रोह नहि करनारा. [२] तितिक्षु=क्षमावान. (३) सत्य=सत्य एज छे सार. [बळजेने]. (४) अनवद्यात्मा=असूयादि दोषे रहित. (५) सम=स्वपरमां समदृष्टिवाळा. [६] सर्वोपकारक=सर्वेने उपकार करनारा. (७) कामैरहतधी=विषयने विषे क्षोभ नहि पामनारा. [८] दान्त= श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, रसना घ्राण ए ज्ञान इंद्रियो तथा वाक्, पाणी, पाद, पायु ने उपस्थ ए कर्म इंद्रियो तेने श्रीजीमहाराजनी आज्ञामां यथार्थ वर्तावनारा. (९) मृदु=कोमळ चित्त-वाळा. (१०) शुचि=बाह्य शौच जे स्नानादिक क्रिया करवी तथा स्पर्श करवा योग्य नहि तेना स्पर्शे रहित अने अंतरमां श्रीजीमहाराजनी आज्ञा विरुद्ध संकल्पे रहित थइने मुर्तिनुं चिंतवन करनारा. (११) अकिंचन=धनादिक परिग्रह रहित (धन जे सुवर्ण, रुपुं, त्राम्र,

मुद्रा तथा नोट आदिक) द्रव्यनो संग्रह न करनार न करावनार एवा. (१२) अनीह=नहि करवा योग एवी श्रीजीमहाराजनी आज्ञा विरुद्ध क्रिया तेने नहि करनारा. (१३) मित-भुक्=उदरना चार विभाग पूर्वक बे भाग अन्ने करीने पूर्ण करनारा अने एक भाग जळे करीने पूर्ण करनारा अने एक भाग वायु प्रचारने अर्थे खाली राखीने एकज वार जमनारा. [१४] शान्त=मन, बुद्धि, चित्त ने अहंकार ए अंतःकरणोने श्रीजीमहाराजनी आज्ञामां वर्त्तावनारा. (१५) स्थिर= त्यागी, गृही पोतपोताना आश्रमना धर्म प्रमाणे यथार्थ वर्त्त-नारा. (१६) मच्छरण=साक्षात् स्वामीनारायण भगवान जे अमे ते अमेज छीए रक्षण करनार ने प्राप्य ते जेने. [१७] मुनि=श्रीजीमहाराजनी मुर्तिनुं मनन करनारा. (१८) अप्रमत्त=स्थूळ, सूक्ष्म देहे करीने पाळवाना जे धर्म तेने पाळवामां तत्पर. [१९] गभीरा-त्मा=जेनो अभिप्राय जाणी न शकाय तेवा. (२०) धृतिमान=आपत्काळमां पण धर्मनो त्याग नहि करनारा [२१] जितषड्गुण=भूख, तरस, शोक, मोह, जरा, मृत्यु ते जीत्या छे जेणे एवा. (२२) अमानी=माननी इच्छाए रहित. [२३] मानद=बीजाने मान आप-नारा. [२४] कल्प=बीजाने विषयनी आसक्ति टळावीने मोक्षने मार्गे चलाववारूपी ज्ञान बोध देवामां समर्थ. (२५) मैत्र=कोइने ठगनारा नहि. (२६) कारुणिक=भवाब्धिमां बुडेला जीवोना दुःखनी निवृत्ति करवारूपी कृपाए करीने छे विचरण जेनुं. [२७] कवि= जीव, माया, ईश्वर, ब्रह्म, अक्षर तथा परब्रह्म जे श्रीजीमहाराज तेमना स्वरूपने यथार्थ जाण-नारा. (२८) सत्तम=अमे उपदेश करेला आत्मनिष्ठारूप गुण जे पोताना आत्माने अमारा तेजरूप ब्रह्मने विषे एकता करीने, तेने विषे अमारी मुर्तिने धारीने आत्मानो तथा अमारो साक्षात्कार करवो अने दोष जे देहाभिमान तेने जाणीने सर्व धर्मना फळनो त्याग करीने अमने निष्काम भावे भजे ते उत्तम साधु छे. (साधुनुं उत्तम लक्षण छे). [२९] भक्ततम=अमने क्षर जे मूळ माया पर्यंत अने अक्षर जे मूळ अक्षर पर्यंत सर्वना नियंता, सर्वकारणना कारण, सर्वांतर्यामी, सर्वकर्ता, सर्वना सुखदाता, सर्व सुखमयमुर्ति, अतिशे तैजस्वी अने सौशिल्य, वात्सल्यादि स्वभाव युक्त तथा अनंत ऐश्वर्य संपन्न जाणीने अनन्य भावथी अमारी मुर्तिमां लुब्ध थइने, अमारा सुखने अनुभवे ते अति उत्तम भक्त कहेतां साधु छे. [ते साधुनुं अति उत्तम लक्षण छे.) (३०) अजातशत्रु=नथी उत्पन्न थयो शत्रु जेने. (३१) साधुभूषण=शिळ जे ब्रह्मचर्य तेज छे भूषण जेने (अष्ट प्रकारनुं ब्रह्मचर्य तेने पाळनारा) [३२] आ बत्रीश लक्षणे युक्त होय ते अमारा संत कहेवाय एम श्रीजी-महाराजे कह्युं छे. ॥ ७७ ॥

संवत् १८७७ ना अषाढ शुदि ३ त्रीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिर आगळ आथ-मणे बारणे ओरडानी ओसरीए विराजमान हता, ने श्वेत खेस पहेर्यो हतो ने श्वेत चादर ओढी हती, ने मस्तक उपर श्वेत पाघ विराजमान हती, ने कंठने विषे श्वेत पुष्पनो हार पहेर्यो हतो, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, सर्वे संत सांभळो एक प्रश्न पुछीए छैए. पछी संते कह्युं जे, पूछो महाराज ! पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, [१] देश, काळ, क्रिया, संग, मंत्र, देवता, शास्त्र, उपदेश ए आठ सारा होय तो पुरुषनी बुद्धि निर्मळ थाय छे ने ए आठ भुंडा होय तो पुरुषनी बुद्धि भ्रष्ट थाय छे, माटे ए आठेमां पूर्व कर्मनुं कांइ जोर छे के नथी ? पछी मुनि बोल्या जे, पूर्व कर्मनुं जोर जणाय छे तो खरुं, जो सारां कर्म होय तो पवित्र देशने विषे जन्म आवे ने भुंडां कर्म होय तो भुंडा देशने विषे जन्म आवे, तेमज काळादिक सात छे तेमांथी पण जेवां कर्म होय तेवानो योग बने छे, माटे सर्वेमां कर्मनुं प्रधानपणुं जणाय छे ने देशकाळादिक जे आठ तेनुं तो कोइक ठेकाणे प्रधानपणुं छे. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, देशकाळथी लइने देवता जे परमेश्वर त्यां पर्यंत सर्वने विषे कर्मने प्रधान कहो छो ते किया शास्त्रने मते कहो छो तेनुं कोइं वचन भणी देखाडो ? अने एक कर्मनुंज प्रधानपणुं तो जैनना शास्त्रमां छे पण बीजामां नथी बीजा शास्त्रमां तो परमेश्वरने परमेश्वरना भक्तनो संग तेनुंज प्रधानपणुं छे, माटे तमे कर्मनुं प्रतिपादन करो छो ते उपरथी सत्संगी छो ने छाना नास्तिक छो के शुं ? केमजे नास्तिक विना बीजो तो कोइ कर्मनुं प्रतिपादन करतो नथी, अने नास्तिक तो वेद, शास्त्र, पुराण ने इतिहास जे भारतादिक तेने खोटां जाणे छे ने पोताना मागधि भाषाना जे ग्रंथ तेनेज साचा माने छे, माटे मूर्खथका कर्मनुं प्रतिपादन करे छे अने जो कर्मे करीने देशादिक आठ फरता होय तो मारवाडने विषे केटलाक पुन्यवाळा राजा थया छे तेमने अर्थे सो हाथ उंडां पाणी हतां ते उपरछलां थयां नथी ने जो कर्मने वश देश होय तो पुन्यकर्मवाळाने अर्थे पाणी उंचां आव्यां जोइए ने पापीने अर्थे उंडां गयां जोइए पण एम तो थातुं नथी ने मारवाड देशमां तो पापी होय अथवा पुन्यवाळा होय, पण उंडां पाणी उपजे पण पोताना गुणनो त्याग करतो नथी माटे देशकाळादिक तो कर्मना फेरव्या फरे नहि ते माटे जे पोताना कल्याणने इच्छे तेने तो नास्तिकनी पेठे कर्मनुं बळ राखवुं नहि अने भुंडा देशकाळादिक आठ होय तेनो त्याग करीने, रुडा जे देश, काळादिक आठ तेनुं सेवन करवुं अने देश तो बारणे पण सारो नरसो होय अने पोताना देहमां पण होय ते ज्यारे देहरूप जे सारो देश तेने विषे जीव होय त्यारे शिळ, संतोष, दया, धर्म इत्यादिक जे कल्याणकारी गुण ते वर्त्तता होय अने ज्यारे आ देहरूप जे भुंडो देश तेने विषे जीव रह्यो होय त्यारे काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर इत्यादिक भुंडा गुण वृद्धि पामे छे अने सारो, भुंडो जे संग थाय छे तेनी विक्ति एम छे जे, जेनो संग थाय ते साथे कोइ रीते अंतर रहे नहि त्यारे तेनो संग थयो जाणवो अने उपरथी तो शत्रुने पण हैयामां घालीने मळे छे

पण अंतरमां तो ते साथे लाखो गाउनुं छेटुं छे, एवी रीते उपरथी संग होय ते संग न कहेवाय अने मन, कर्म, वचने करीने जे संग करे तेज संग कर्यो कहेवाय, माटे एवी रीते मन, कर्म, वचने संग तो परमेश्वर अथवा परमेश्वरना भक्त तेनोज करवो जेथी जीवनुं कल्याण थाय पण पापीनो संग तो क्यारेय न करवो (१) १

पछी मध्यान समे श्रीजीमहाराजे सर्वे नाना नाना विद्यार्थी साधुने पोताने समीपे बोलाव्या ने एम कह्युं जे, तमे सर्वे विद्यार्थी मुने प्रश्न पूछो. पछी मोटा शिवा-
२ नंदस्वामीए पूछ्युं जे, (२) जेने भगवाननो अचळ निश्चय होय ते केम ओळखाय ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने अचळ निश्चय होय तेने भगवान सारी क्रिया करे अथवा नरसी क्रिया करे ते सर्वे कल्याणकारी भासे अने भगवान जीते अथवा हारे अथवा कोइक ठेकाणे भागे अथवा क्यारेक राजी थाय, क्यारेक शोक करे इत्यादिक अनंत प्रकारनी भगवाननी क्रियाओ तेने जोइने निश्चयवाळो भक्त होय ते एम कहे जे, प्रभुनी सर्वे क्रिया कल्याणने अर्थे छे ते ज्यारे बोले त्यारे एवुं ने एवुं बोलतो होय तो तेने परिपक्व निश्चयवाळो जाणवो. (२) २

३ पछी निर्मानानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (३) भगवानने भगवानना संत तेने विषे दोषबुद्धि न आवे तेनो शो उपाय छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेवो प्रथम कह्यो एवो भगवाननो अचळ निश्चय होय तो तेने कोइ रीते भगवानने विषे दोषबुद्धि आवे नहि अने एवा मोटा जे भगवान तेना दासनो महिमा ज्यारे विचारे त्यारे भगवानना भक्तनो पण कोइ रीते अवगुण आवे नहि. (३) ३

४ पछी निर्मानानंदस्वामीने नानाप्रज्ञानंदस्वामी ए बेये मळीने पूछ्युं जे, (४) जाग्रत, स्वप्न ने सुषुप्ति ए त्रणे अवस्थाने विषे भगवाननी मूर्ति अखंड केम जणाय ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, पूर्व जन्मनो कोइक शुभ संस्कार बळिष्ठ होय तेने भगवाननी मूर्ति त्रणे अवस्थामां अखंड देखाय छे अथवा भय, काम ने स्नेह ए त्रण जेने विषे अखंड होय तेने भगवान विना बीजुं पदार्थ होय ते पण त्रणे अवस्थामां अखंड देखाय छे तो भगवान देखाय एमां शुं कहेवुं ? ए तो देखायज. (४) ४

५ पछी नाना शिवानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (५) सत्संगने विषे अचळ पायो जेनो ५
६ होय ते केम जणाय ? एक तो ए प्रश्न छे, अने बीजो प्रश्न ए छे जे, (६) मान, काम, क्रोध, लोभ, मद, मत्सर, ईर्ष्या इत्यादिक जे शत्रु ते किये प्रकारे करीने नाश पामे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने सत्संगनो अति दृढ पक्ष होय ते ज्यारे कोइ सत्संगनुं घसातुं बोले त्यारे खमी शकेज नहि, जेम पोताना कुटुंबी होय ने ते साथे कचवाण थइ होय तो पण ज्यारे तेनुं कोइ घसातुं बोले त्यारे खमाय नहि, एवी रीते जेवो देहना संबं-

थीनो पक्ष छे तेवो जेने सत्संगनो पक्ष होय तेनो पायो सत्संगने विषे अचळ छे. (५)
अने बीजा प्रश्ननो उत्तर ए छे जे, जेने एवो सत्संगनो पक्ष छे ते संत अथवा सत्संगी
ते संगाथे मान, मत्सर ईर्ष्या केम राखी शके ? माटे जेने सत्संगनो पक्ष होय तेना
मान, मद, मत्सर, ईर्ष्या आदिक सर्व शत्रुनो नाश थइ जाय छे. (६) अने जेने ६
सत्संगीनो पक्ष न होय अने सत्संगी ने कुसंगीने विषे समभाव होय तो गमे तेवो सत्संगमां
मोटो कहेवातो होय पण अंते जातां जरूर विमुख थाय. (७) ७

७ पछी नाना आत्मानंदस्वामीए पूछ्युं जे, [७] भगवान ने भगवानना संत ते
कोइकने तो निधडक थइने जेम कहेवुं घटे तेम कहे छे अने तेनी कोरनो एम भरूसो
आवे छे जे, आनुं मान करीशुं अथवा तिरस्कार करीशुं तोयपण कोइ रीते ए पाछो
नहि पडे एवो जे भरूसो ते भगवानने भगवानना संतने केम आवे ? एक तोए प्रश्न छे
८ अने बीजो प्रश्न ए छे जे, [८] जे संतने पासे रहेता होइए तेने जेवुं आपणा उपर
हेत होय तेवुं समग्र संतने केम रहे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेवो शिवानंद-
स्वामीना प्रश्ननो उत्तर कर्यो छे तेवो सत्संगनो जेने दृढ पक्ष होय तो तेने कहेतां सांभ-
ळतां भगवान ने भगवानना संतने संशय थाय नहि अने एनो कोइ रीते कुविश्वास
आवे नहि जे आने कहेशुं तो आ सत्संगमांथी जातो रहेशे तेनी कोरनो तो दृढ विश्वा-
सज होय जे एनो सत्संग तो अचळ छे, माटे एने कहेशुं तेनी कांइ फिकर नथी अने
बीजा प्रश्ननो उत्तर ए छे जे, जेने पासे पोते प्रथम रहेता होइए अने तेनी साथे पोताने
न बन्युं त्यारे बीजा पासे जइने रहे तो पण जेनी पासे प्रथम रह्यो होय तेनुं जो कोइक
घसातुं बोले तो खमी शके नहि त्यारे सर्वे संतने एम समजाय जे आ तो कृतघ्नी नथी,
जेने पासे चार अक्षर भण्यो छे तेनो गुण मुकतो नथी, माटे बहु रूडो साधु छे एम
जाणीने सर्वे संतने हेत रहे अने जेनी पासे प्रथम रह्यो होय तेने मुकीने बीजा पासे जाय
त्यारे प्रथम जेनी पासे रह्यो होय तेनी निंदा करे त्यारे सर्व संतने एम जणाय जे आ
कृतघ्नी पुरुष छे ते ज्यारे आपणी साथे नहि बने त्यारे आपणी पण निंदा करशे, पछी
ते उपर कोइने हेत रहे नहि. [८] ८

९ पछी दहरानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (९) भगवान तो अक्षरातीत छे, अने मन वाणी
थकी पर छे अने सर्वने अगोचर छे, ते सर्वने प्रत्यक्ष देखाय छे तेनो शो हेतु छे ? पछी
श्रीजीमहाराज बोल्या जे, अक्षरातीत ने मन वाणी थकी पर ने अगोचर एवा जे भग-
वान तेज पोते कृपा करीने एम धारे छे जे, ज्ञानी, अज्ञानी एवां जे मर्त्यलोकनां मनुष्य ते
सर्वे मुने देखो, एम धारीने सत्य संकल्प एवा जे आ भगवान ते कृपाए करीने मर्त्य-
लोकनां सर्वे मनुष्य देखे एवा थाय छे. (९) ९

१० पछी त्यागानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (१०) भगवान राजी केम थाय? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने भगवानने राजी करवा होय तेने तो देहना सुखने इच्छवुं नहि, अने दर्शननो पण लोभ राखवो नहि ने भगवान जेम कहे तेम करवुं, एज भगवानने राजी थयानुं साधन छे. (१०) १०

११ पछी लक्ष्मणानंदस्वामीए प्रश्न पूछयो जे, (११) भगवान ने भगवानना संतनो जे समागम ते आश्चर्य सरखो केम समझीए त्यारे जणाय? अने आठे पहोर अहो अहो सरखुं केम रहे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जे भक्त एम समझे जे, आ भगवान ने आ संत ते सर्वे वैकुंठ, गोलोक ने ब्रह्मपुर तेना निवासी छे. ते संतने परमेश्वर ज्यां विराजमान छे त्यांज ए सर्वे धाम छे, अने ए संत भेळो मारो निवास थयो छे, ते मारुं अति बडुं भाग्य छे, एवी रीते समझे तो आठेपहोर आश्चर्य सरखुं रहे अने आठेपहोर आनंदना समुद्रमां झीलतो रहे. (११) ११

१२ पछी परमात्मानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (१२) संतनां बत्रीश लक्षण कह्यां छे, ते शो उपाय करे तो आवे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जे बत्रीश लक्षणे युक्त संत होय तेने विषे गुरुबुद्धि ने देवबुद्धि राखीने मन, कर्म वचने एनो संग करे तो ए संगना करनाराने विषे पण ए बत्रीश लक्षण आवे छे. एवी रीते सर्वे शास्त्रमां कह्युं छे जे संतने सेवे त्यारे संत सरखो थाय छे. (१२) १२

१३ पछी शान्तानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (१३) एकतो अखंड भगवानना स्वरुपमां वृत्ति राखतो होय, अने बीजो तो भगवाननुं भजन स्मरण पण करे, अने कथा कीर्त्तन पण करे ने सांभळे, ए बे प्रकारना जे भगवानना भक्त तेमां कियो श्रेष्ठ छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने निर्विकल्प समाधि थाती होय, अने देहनी खबर रहे नहि एवो होय, तो ते कथा कीर्त्तन न करे तोपण श्रेष्ठ छे, अने जेने देहनी खबर रहेती होय, ने भजनमांथी पोतानी मेळे उठीने खावुं, पीवुं, देहनी क्रिया ते सर्वे करतो होय अने जो भगवाननी कथा कीर्त्तन न करे ने न सांभळे तो ते थकी तो भगवाननी कथा, कीर्त्तन करतो होय ने सांभळतो होय ते श्रेष्ठ छे. (१३) १३

१४ पछी आधारानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (१४) केवी रीते वर्त्तीए तो भगवान ने भगवानना संत प्रसन्न थाय? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, पंच वर्त्तमान संपूर्ण राखीए ने तेमां कोइ रीते खोटय आववा देइए नहि, तो भगवान ने भगवानना संत प्रसन्न थाय छे, एमां लेश मात्र संशय नहि. (१४) १४

१५ पछी वेदान्तानंदस्वामीए प्रश्न पूछयो जे, [१६] जेणे प्रथम कांइक गोबरुं वर्त्ताणुं होय, पछी ते शो उपाय करे त्यारे तेनी उपर भगवान ने भगवानना संत राजी थाय?

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जे पोतामां भुंडो स्वभाव होय, तेने देखीने भगवान ने भगवानना संत कुराजी थता होय, ते स्वभाव साथे ज्यारे वैर करीए, त्यारे जेने जे साथे वैर होय ते तो सर्वे जगत् जाणे एवुं होय, ते संतने पण खबर पडे. पछी संततो ते स्वभावना वैरी छे, ते आपणा पक्षमां भळीने आपणा उपर दया करे अने जे प्रकारे ते स्वभावने जीतीए एवो उपाय बतावे, माटे जे स्वभावे पोताने फजेत कर्यो होय ते स्वभाव साथे सुधुं दृढ वैर बांधीने तेनुं मूळ उखडी जाय एवो उपाय करवो, ने ज्यारे एवी रीते वर्तीए त्यारे भगवान ने भगवानना संत आपणा उपर पूर्ण दया करे, अने ज्यारे हरिनी ने हरिजननी ते उपर दया थाय, त्यारे तेने हैयामां अतिशे सुख वर्त्या करे, अने कल्याणने मार्गे चाल्यानी पण सामर्थी वधे अने पोताना शत्रु जे काम, क्रोध, लोभादिक तेनुं बळ घटी जाय छे, माटे जे पोताना हृदयने विषे अतिशे शत्रु पीडता होय, ते साथे अतिशे वैर करीए तो तेनी परमेश्वर सहाय करे छे, माटे पोताना शत्रु जे कामादिक ते साथे जरुर वैर करवुं घटे छे, ने पोताना अंतर शत्रु साथे वैर कर्यामां घणोज लाभ छे. [१५] १५

१६ पछी भगवदानंदस्वामीए पूछयुं जे, [१६] हे महाराज ! जेवी भगवाननी बीक, पासे बेठा होइए ने रहे छे, तेवीने तेवी बीक, छेटे जाइए तोपण रहे, ते केम समझीए तो रहे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेवी पासे भगवाननी मर्यादा रहे छे, तेवी छेटे जाय तोपण रहे, जो भगवाननुं पुरुं महात्म्य समझे तो, ते महात्म्य एम समझवुं जे, अक्षरातीत एवा जे पुरुषोत्तम भगवान तेनी इच्छाए करीने अनंत कोटी ब्रह्मांडनी उत्पत्ति थाय छे, अने ते ब्रह्मांडने पोतानी शक्तिए करीने धरी रह्या छे, अने ते भगवान व्यतिरेक थका सर्वेमां अन्वयपणे रह्या छे, अने अन्वय थका पण व्यतिरेक छे, अने ते भगवान जेवा प्रत्यक्ष प्रमाण छे, तेवाने तेवा अणु अणु प्रत्ये अंतर्यामीरूपे विराजमान छे. अने ते भगवानना डोलाव्या विना एक तृण पण डोलवाने समर्थ नथी, अने अनंतकोटी ब्रह्मांडने विषे जे उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय थाय छे, अने तेने विषे सुखदुःखनो जीवोने संबंध थाय छे, ते सर्वे पुरुषोत्तमना हाथमां छे; जेटलुं भगवान करे तेटलुंज थाय छे, एवा जे भगवान ते जीवोना कल्याणने अर्थे पृथ्वी उपर पधारे छे त्यारे पोते घोडे चडीने चाले त्यारे घोडो भगवानने उपाडी चाले छे, पण एतो घोडाना आधार छे. अने पृथ्वी उपर बेठा होय त्यारे एम जणाय जे पृथ्वी भगवानने धरी रही छे पण एतो स्थावर जंगम सोती समग्र पृथ्वीने धरी रह्या छे. अने ज्यारे रात्रि होय त्यारे चंद्रमा के दिवो के मशाल तेने अजवाळे करीने भगवानलुं दर्शन थाय, अने दिवसे सूर्यने अजवाळे करीने करीने दर्शन थाय पण आ भगवान तो सूर्य, चंद्रमा, अग्नि ए सर्वेने प्रकाशना दाता छे एवी अद्‌भूत सामर्थी छे, तोपण जीवोना कल्याणने अर्थे मनुष्य जेवा थइने छूने दर्शन

आपे छे, एवी रीते महात्म्य समझे तो जेवी पासे रह्ये मर्यादा रहे छे तेवीने तेवी छेटे जाय तोय पण रहे. [१६] १६

१७ पछी वळी भगवदानंदस्वामीए बीजो प्रश्न पूछयो जे, [१७] भगवानना कर्या विना कांइ थातुं नथी, सर्व भगवाननुंज कर्युं थाय छे, त्यारे भगवानने अथवा भगवानना भक्तने कांइक ज्यारे भुंडो देशकाळ आवे छे, त्यारे ते दुःखने केम भगवान टाळता नथी? अने तेने टाळवाना मनसुबा केम करे छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एतो ज्यारे भगवान मनुष्य देह धारण करे छे त्यारे भगवाननी एवी रीतज छे जे, मनुष्यनी पेठे सर्व व्यवहार करे पण अलौकिक सामर्थीने प्रगट करे नहि. एवी रीते सर्व शास्त्रमां भगवाननां चरित्र कह्यां छे, तेथी ज्यारे भगवान कांइ नवां चरित्र करे त्यारे संशय करज्यो पण ज्यां सुधी पूर्वे अवतार थया छे, तेना जेवां चरित्र करे त्यांसुधी तो संशय करवो नहि. [१७] १७

१८ पछी निर्मळानंदस्वामीए पूछयुं जे. (१८] केम समझीए त्यारे प्रभुना संतनो महिमा अतिशे जणाय? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, मच्छ, कच्छ, वराह, वामन, परशुराम अने रामकृष्णादिक ए जे भगवानना अनंत अवतार तेनो महिमा विचारे जे, जे भगवाने रामकृष्णादिक अवतारे करीने अनंत जीवनो उद्धार कर्यो छे, ते भगवानना आ संत छे, तेनो मारे समागम मळ्यो छे ते माटे हुं पण अति बडभागी छुं, एम समझे तो दिवसे दिवसे संतनो महिमा अतिशे जणातो जाय. [१८] १८

१९ पछी नारायणानंदस्वामीए प्रश्न पूछयो जे, [१९] स्थूळ, सूक्ष्म ने कारण ए त्रण देहने विषे जीव अन्वयपणे केम छे ने व्यतिरेकपणे केम छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ज्यारे देहने विषे सुखदुःखनो योग थाय छे त्यारे ते सुखदुःखने जीव पोताने विषे माने त्यारे ते जीव अन्वयपणे छे अने ज्यारे त्रण देहना सुखदुःखथी पोताने न्यारो समझे त्यारे ए जीव व्यतिरेक छे. [१९] १९

२० पछी शून्यातीतानंदस्वामीए प्रश्न पूछयो जे, (२०) ज्यारे सत्संग करे छे त्यारे तो संतमां ने सत्संगीमां अतिशे हेत होय अने पछी केम ओछुं थइ जाय छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, प्रथम तो एने संतने विषे अलौकिक मति होय ने पछी तो ते संतनो अल्प दोष जोइने पोतानी कुबुद्धिए करीने झाझो दोष परठे छे; पछी एनी असद्‌वासना थइ जाय छे तेणे करीने संतने विषे ओछो भाव थइ जाय छे ते जो विचारीने असद्‌वासनाने टाळे तो प्रथम हतो तेवो शुद्ध थाय अने जो असद्‌वासना न टाळे तो अंते जातां विमुख थइ जाय छे. [२०] २०

२१ पछी प्रसादानंदस्वामीए पूछयुं जे, (२१) जीवने मोक्षनो शो हेतु छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेम संत कहे तेमज संशय रहित थको करे एज जीवने मोक्षनो हेतु छे. (२१) २१

२२ पछी त्रिगुणातीतानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे, (२२) देश, काळ, क्रिया, संग एनुं विषमपणुं होय त्यारे त्यां शो उपाय करवो? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, देशादिक विषम होय त्यांतो उगर्यानो एज उपाय छे जे त्यांथी जेते प्रकारे करीने भागी छुटवुं.[२२]२२

२३ पछी नाना निर्विकारानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे, (२३) भगवाननो निश्चय छे तोपण असद्‌वासना केम टळती नथी? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, भगवाननुं महात्म्य यथार्थ जाण्युं नथी एटले असद्‌वासना टळती नथी. (२३) २३

२४ पछी मोटा योगानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (२४) भगवाननो निश्चय परिपूर्ण छे तो पण भगवानने विषे ने भगवाननी कथाने विषे हेत केम थतुं नथी? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, भगवाननुं जेवुं महात्म्य छे, तेवुं एने समज्यामां आव्युं नथी. अने जो यथार्थ भगवाननुं महात्म्य समजाय तो भगवान विना बीजामां हेत राखे तोपण रहे नहि, ने एक भगवान ने भगवानना संत अने भगवाननी कथा, कीर्तन तेने विषेज अचळ हेत थायछे.(२४)२४

२५ पछी मतोषानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (२५) भगवाननी भक्ति अचळ केम रहे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, अनिरुद्ध, प्रद्युम्न, संकर्षण ने वासुदेव ए जे चतुर्व्यूह तथा केशवादिक, जे चोवीश मूर्तिओ तथा वाराहादिक जे अवतार ए सर्वेना कारण एवा जे प्रत्यक्ष श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम भगवान तेनी महिमा अतिशेपणे करीने समजे, तो तेने भगवाननी श्रवणादिक जे नवधा भक्ति ते अचळ रहे. [२५] २५

एवी रीते सर्वे मुनिना प्रश्ननो उत्तर करीने पछी श्रीजीमहाराज सर्वेने पूछता हवा जे,
२६[२६] काम, क्रोध ने लोभ ए त्रण नरकना द्वार छे एमांथी जेने जे अतिशे जीत्यामां आव्यो होय ते सर्वे कहो? पछी जेने जे बातनी अतिशे दृढता हती ते तेवी रीते बोल्या. ते मुनिनां वचन सांभळीने श्रीजीमहाराज अतिशे राजी थया. [२६] अने आत्मानंदस्वामी तथा योगानंदस्वामी तथा भगवदानंदस्वामी तथा शिवानंदस्वामीए चार जणने राजी थइने हृदाने विषे चरणारविंद दीधां ने एम बोल्या जे, जेम महानुभावानंदस्वामी आदिक मोटेरा छे, ते भेळा आ चार पण छे, माटे एमनुं कोइने अपमान करवा देशो मां, एम मुक्तानंदस्वामी आदिक जे मोटेरा साधु तेमने भळामण करीने श्रीजीमहाराज जयसच्चिदानंद कहीने पोताने उतारे जमवा पधार्या. (२७) इति वचनामृतम् ॥७८॥ २७

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [२६] छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, कर्मनुं बळ राखवुं नहि ने रुडा देशादिक सेववा. [१] बीजामां अमारा प्राकृत चरित्रने कल्याणकारी जाणे तेनो परिपक्व निश्चय छे. (२) त्रीजामां एवा निश्चयवाळाने अमारे विषे ने अमारा मुक्तने विषे दोषबुद्धि न आवे. (३) चोथामां पूर्वनो बळिष्ट संस्कार अथवा भय, काम ने स्नेह अखंड होय तेने अमारी मुर्ति त्रणे अवस्थामां देखाय छे. (४) पांचमामां

सत्संगनो पक्ष होय तेनो अचळ पायो छे. (५) छठ्ठामां एवा पक्षवाळाना कामादिक शत्रु नाश पामे छे, (६) अने जेने सत्संगीने विषे ने कुसंगीने विषे समभाव होय ते विमुख छे. (७) सातमा ने आठमामां जेने सत्संगनो पक्ष होय तेनो अमने ने संतने भरुसो आवे छे ने तेना उपर हेत रहे छे. (८) नवमामां इंद्रियो, अंत:करण ने अगोचर अने अक्षरधामथी पर एवा अमोए दया करीने दर्शन आप्यां छे. (९) दशमामां पोताना राजीपानो उपाय बताव्यो छे. (१०) अगीआरमामां अमे ने अमारा मुक्त जेवा अक्षरधाममां दिव्य छीए तेवाज दिव्य जाणे अने ज्यां अमे ने अमारा मुक्त विराजता होइए ते स्थानने अक्षरधाम जाणे तो आठे पहोर आश्चर्यने आनंद रहे छे. [११] बारमामां अमारा मुक्तने विषे गुरुबुद्धि ने देवबुद्धि राखीने मन, कर्म, वचने समागम करे तो एमां संतनां लक्षण आवे छे. (१२) तेरमामां निर्विकल्प समाधि न थती होय तेणे कथा कीर्तन करवां. (१३) चौदमामां पंचवर्त्तमान संपूर्ण राखे तेना उपर अमे ने अमारा मुक्त प्रसन्न थइए. (१४) पंदरमामां कामादिक शत्रुनुं बळ घटवानो अने कल्याणने मार्गे चाल्यानी सामर्थी वधवानो उपाय बताव्यो छे. (१५) सोळमामां अमने अक्षरधामथी पर सर्वेना कर्त्ता, नियंता ने मूळअक्षरादिक सर्वेने अमारी शक्तिए करीने धरी रह्या छइए एवो अमारो महिमा जाणे अने अमने अणु अणु प्रत्ये सर्वत्र जाणे तो अमारी मर्यादा रहे छे, (१६) सत्तरमामां अमारां प्राकृत चरित्रमां संशय करवो नहि. (१७) अढारमामां अमे रामकृष्णादिक अवतारोमां अमारुं ऐश्वर्य मुकीने अनंत जीवोनो उद्धार कर्यो छे एवा जे अमे ते अमारा आ संत छे एम जाणे तो अमारा संतनो महिमा अतिशे जणाय छे. (१८) ओगणीशमामां जीवनुं अन्वय ने व्यतिरेकपणुं कह्युं छे. (१९) वीशमामां असद्वासना थवानो ने विमुख थवानो हेतु कह्यो छे. (२०) एकवीशमामां मोक्षनो उपाय बताव्यो छे. (२१) बावीशमामां मारकूट थाती होय, निराकारवादी, ने कर्मवादी, शक्तिपंथी, कुंडापंथी तेमनो योग थतो होय त्यांथी भागी छुटवुं. (२२) तेवीशमामां अमारुं महात्म्य यथार्थ जाणे नहि तेने असद्वासना रहे छे. [२३] चोवीशमामां यथार्थ महात्म्य जाणे तो अमारे विषे ने मुक्तने विषे ने अमारां कथा कीर्तनने विषे अचळ हेत थाय छे. (२४) पचीशमामां अमने सर्व अवतारोना कारण जाणे तो अमारी नवधाभक्ति अचळ रहे छे. (२५) छवीशमामां काम, क्रोध, लोभ ए त्रण नरकनां द्वार छे. (२६) अने आत्मानंदस्वामी आदिक चार सद्गुरुओ मोटेरा छे एम कह्युं छे. (२७) बावत्तो छे.

१ प्र० चोथा प्रश्नमां भय, कामने स्नेह ए त्रण वानां मायिक पदार्थमां होय तो ते अखंड देखाय तो भगवान देखाय एमां शुं कहेवुं एम कह्युं अने (सा० ३ ना $\frac{२}{३}$ बीजा प्रश्नमां) मायिक पदार्थ विसरी जाय छे तो भगवान क्यांथी सांभरे एम कह्युं छे ते केम समजवुं ?

१ उ० [illegible] तो मोटा मोटा अक्षरादिक सर्वेने अगम्य छे ने मोटा मोटा योगीयोने पण ध्यान करतां कोटी कल्प विती जाय तो पण देखाता नथी एवा अतिशे अगम्य छे, एवा श्रीहरि ते आज दया करीने जीवोने मायानां बंधनमांथी छोडावीने पोताना तेजरूप

दिव्य अक्षरधाममां लइ जइने पोतानुं अलौकिक सुख आपवा पधार्या छे, माटे दया करीने पोताना भक्तोने कह्युं छे जे, मायिक पदार्थमां जेने भय, काम, ने स्नेह होय तेने मायिक पदार्थ त्रणे अवस्थामां अखंड देखाय छे, तेम तमे जन्म मरण थकी भय पामीने अमारा सुखनी इच्छा राखीने बीजुं सर्वे विसारीने अति स्नेहे करीने अमारी मुर्तिनो आलोच राखो तो तमोने अखंड देखाशुं एम वरदान आप्युं छे, माटे बीजुं सर्वे विसारीने श्रीजी-महाराजनी मुर्तिमां अखंड वृत्ति राखवी.

२ प्र० अगीयारमा प्रश्नमां आ भगवानने आ संत वैकुंठ, गोलोक, ब्रह्मपुर धामना निवासी छे एम कह्युं अने (प्र० ३७/५ मां, लो० १३ ना बीजा प्रश्नमां, १४/२ मां, १८/३ मां, पं० २/६ मां, ७/६ मां, अ० ६ ना पहेला तथा २/३ बीजा प्रश्नमां, छे० ३७ मां, तथा ३८ ना पहेला प्रश्नमां) श्रीजीमहाराजने मुक्त ते अक्षरधामना निवासी छे एम कह्युं छे ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० आमां पोताने तथा पोताना मुक्तोने ब्रह्मपुर एटले अक्षरधामना निवासी कह्या छे अने वैकुंठ तथा गोलोकादिकमांथी पोताना आत्यंतिक कल्याणने अर्थे आवेला हता तेमने वैकुंठ, गोलोकना निवासी कह्या छे पण पोताने तथा पोताना मुक्तोने वैकुंठ, गोलोकना निवासी कह्या नथी, माटे जे भक्त एम समजे जे, वैकुंठ, गोलोकना निवासी पण पोताना आत्यंतिक कल्याणने अर्थे आव्या छे, एवा मोटा श्रीजीमहाराज तेमना आ संत छे, एवो महिमा श्रीजीमहाराजनो ने तेमना संतनो समजे तो तेने आठे पहोर आनंद वर्ते छे एम समजवुं.

३ प्र० चौदमामां पंचवर्तमान कह्यां ते त्यागी तथा गृहस्थ केवी रीते पाळे त्यारे यथार्थ वर्त्या कहेवाय ?

३ उ० त्यागीना निष्काम वर्तमाननुं लक्षण [प्र० ७३ ना पहेला प्रश्नोत्तरमां] कर्युं छे. (१) अने त्यागीना निर्लोभी वर्तमाननुं लक्षण कहीए छीए जे, धर्मामृतमां कह्या प्रमाणे वस्त्र राखे पण वधारे न राखे अने द्रव्य राखे रखावे नहि ते साधु ब्रह्मचारी पार्षदो कनिष्ठ निर्लोभी कहेवाय, अने अगीयारथी वधारे वस्त्र के द्रव्य राखवानो मनमां संकल्पज न थाय ते त्यागी वर्ग मध्यम निर्लोभी कहेवाय, अने अगीयारथी वधारे वस्त्र के द्रव्य राखवानो मनमां संकल्प न थाय अने मंड्वाडमां जोइती वस्तु न मळे तो पण कोइ प्रकारे मुंझवण थाय नहि ते त्यागी वर्ग उत्तम निर्लोभी कहेवाय. [२] अने निःस्वादी वर्तमाननुं लक्षण ए छे जे, त्यागी वर्ग श्रीजीमहाराजनी इच्छाथी जे मळे तेमां जळ नाखी मेळवीने श्रीजी-महाराजने संभारीने जमे पण कोइ वस्तु कोइनी पासेथी मागे नहि ते कनिष्ठ निःस्वादी कहेवाय, अने सहेजे मळवुं होय तेने पण प्रीतिए रहित उदास थको जमे ते मध्यम निःस्वादी कहेवाय, अने सारी वस्तुनो त्याग राखे तेनो पाछो संकल्पज न थाय ते उत्तम निःस्वादी कहेवाय. (३) अने निर्मानी वर्तमाननुं लक्षण ए छे जे, कोइ अपमान के ताडन करे तेने सहन करे ने तेना उपर धोखो न करे ने तेनुं भुंडुं थवानो संकल्प न

करे ए कनिष्ठ निर्मानी कहेवाय, अने मान, अपमान करनार बेय सम थइ जाय ते मध्यम निर्मानी कहेवाय, अने नाना बाळकनी पेठे मान अपमाननी मानिनता रहे नहि ते उत्तम निर्मानी कहेवाय. (४) अने निःस्नेही वर्तमाननुं लक्षण ए छे जे, त्रण देहथी पर एवो जे पोतानो आत्मा तेने ब्रह्म जे श्रीजीमहाराजनो प्रकाश ते रूप मानीने श्रीजीमहाराजनी अखंड स्मृति राखे तेमां बीजो संकल्प थाय तो तेनो नाश करी नाखे पण ते संकल्पने पुरो थवा दे नहि ते कनिष्ठ निःस्नेही कहेवाय, अने कोइक समे घाट थइ आवे तो जेम पंचामृत भोजन जमतो होय तेमां कोइ धूळ नाखे ने वसमुं लागे तेवुं वसमुं लागे ते मध्यम निःस्नेही कहेवाय, अने मुर्ति विना बीजो संकल्प थायज नहि ते उत्तम निःस्नेही कहेवाय. [५] आ साधु ब्रह्मचारी, पार्षदोनां उत्तम, मध्यम ने कनिष्ठ वर्तमान कह्यां तेमां कनिष्ठ वर्तमान दृढ राखे तेना उपर पण श्रीजीमहाराज ने संत राजी थाय छे तो मध्यम ने उत्तमवाळा उपर तो राजी थाय एमां शुं कहेवुं ? माटे ते दृढ करवां. हवे गृहस्थनां पंचवर्तमाननां लक्षण कहीए छीए जे, गृहस्थने त्रण प्रकारनी सुरा, अगीयार प्रकारनुं मद्य, गाळ्या विनानुं दुध, भांग, अफीण, तमाकु, गांजो, माजम, चहा (चा), डाक्टरी औषध तथा जेमां दारु आदिकनो संसर्ग होय एवुं अजाण्या वैद्यनुं औषध ते सर्वे दारु कहेवाय अने (१० ५५/६ मां) इंद्रियोने पातर्यु कही छे अने विषय ने मदिरा कहेल छे, माटे भांड, भवाया, सरकस, नाटक, नायका, जगतना मेळा, जुगटुं, चोपाट, गंजीफो ए सर्वे दारु तुल्य छे, माटे आटलानो त्याग करे तो दारुनो त्याग कर्यो कहेवाय. (१) अने प्रत्यक्ष मांस शोध्या विनानुं अन्न, गाळ्या विनानुं जळ, घी, तेल, लसण, डुंगळी, हींग, उंबरानां फळ, कठोळनुं उंधीयुं, डाक्टरी कोरी फाकी तथा मांसना संसर्गवाळी वस्तुओ आटलीनो त्याग करे तो मांसनो त्याग कर्यो कहेवाय. (२) अने कोइनी धणियाती वस्तु तथा मार्गमां ने अरण्यमां पडेली वस्तु न लेवी तथा कोइने दुःखावीने पराणे तेनी कांइ वस्तु न लेवी तथा कोइनी थापण न ओळववी तथा देवनी दशोंद, विशोंद देवने आपवी तो चोरी करी न कहेवाय. [३] हवे अवेरी एटले ब्रह्मचर्य कहीए छीए जे, परस्त्री मात्रनो संग न करवो ने मनमां तेने भोगववानो संकल्प न करवो अने एकांतमां तेनी साथे भाषण न करवुं अने मार्गमां तेनी साथे एकला चालवुं नहि अने कुदृष्टिए तेने जोवी नहि, एवी रीते परस्त्रीनो त्याग राखवो अने पोतानी स्त्रीनो पण आसक्तिए रहित ऋतुसमे संग करवो तेमां पण एकादशीओ तथा तेना आगल्या पाछल्या दिवसो तथा भगवाननी जन्म तिथियो तथा तेना आगल्या पाछल्या दिवसो, अमास, श्रावण मास, श्राद्ध, तीर्थ, व्रत, यज्ञादिकना दिवसोमां पोतानी स्त्रीनो त्याग राखवो अने समीप संबंध विनानी विधवानो स्पर्श न करवो आ गृहस्थनुं ब्रह्मचर्य कहेवाय. (४) अने न खपतुं होय तेनुं खावुं नहि अने जेने न खपे तेने खवरावबुं नहि. (५) ते पंचवर्तमान गृहस्थनां छे. आ कह्यां जे दारु मांसादिक गृहस्थनां वर्तमान ते त्यागीने तो पूर्व आगमां त्यागी थयां मोरनांज छे तेणे सहित निर्लोभादिक पांच वर्तमान जाणवां. आ कह्यां ते वर्तमान सर्वने पाळवां अने सधवा विधवाओए पण पुरुषवर्जनादिक धर्मो ते पोतपोताना आश्रम प्रमाणे जाणवा.

४ प्र० सोळमा प्रश्नमां भगवान व्यतिरेक थका अन्वय रह्या छे अने अन्वय थका व्यतिरेक छे अने आ प्रत्यक्ष प्रमाण छे तेवाने तेवाज अणु अणु प्रत्ये अंतर्यामीरूपे विराजमान छे एम कह्युं ते प्रमाणे तो श्रीजीमहाराज मुर्तिमान सर्वमां रह्या छे एम आव्युं अने [प्र० १३ ना त्रीजा प्रश्नोत्तरमां] अंतर्यामीरूपे तेजद्वारे रह्या छे एम कह्युं छे ते परस्पर विरोध आवे छे ते केवी रीते समजवुं ?

४ उ० श्रीजीमहाराज सर्वमां तेजद्वारे अंतर्यामीपणे रह्या छे पण जे सिद्धदशावाळा छे ते अणु अणु प्रत्ये मुर्तिनेज देखे छे, माटे तेमने तो व्यतिरेकज छे, तेवी समजण एकांतिक भक्त राखे तो मर्यादा रहे एम कह्युं छे. आनो विस्तार (४५ ना बीजा प्रश्नोत्तरमां) छे.

५ प्र० अढारमा प्रश्नमां श्रीजीमहाराजे कह्युं जे, रामकृष्णादिक अवतारोए करीने अनेक जीवोनो उद्धार कर्यो एवा जे अमे ते अमारा आ संत छे एम समजे तो अमारा संतनो महिमा अतिशे समजाय ते एम समजवाथी संतनो महिमा शो आव्यो ?

५ उ० जेम राजाना अमलदारोथी राणी मोटी कहेवाय, तेम अवतारोथी मुक्तने मोटा कह्या छे ते (म० २२ ना ५ बीजा प्रश्नमां) मुक्तने राणीने ठेकाणे एटले पोतानी तुल्य गण्या छे अने मच्छ, कच्छादिकथी लइने मूळअक्षरपर्यंत सर्व अवतार जाणवा.

इतिश्री कच्छदेशे वृषपुरनिवासी अनादिमुक्तराज श्रीअबजीभाइ-विरचित साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम भगवान श्रीस्वामिनारायण मुखकमळनिःसृत वचनामृत रहस्यार्थप्रदीपिकायां गढडा प्रथम प्रकरणं समाप्तम्.

॥ अथ वचनामृत सारंगपुर प्रकरणम् ॥

संवत् १८७७ ना श्रावण वदि ५ पंचमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्री सारंगपुर मध्ये जीवाखाचरना दरबारमां उत्तरादे बार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे, (१) ॥ जितंजगत् केन मनोहियेन ॥ ए श्लोकमां एम कह्युं छे जे, जेणे पोतानुं मन जित्युं तेणे सर्व जगत् जित्युं, ते मन जित्युं केम जणाय ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, शब्द, स्पर्श, रूप, रस ने गंध ए जे पंच विषय तेमांथी ज्यारे इंद्रियो पाछां हठे अने कोइ विषय पामवानी इच्छा रहे नहि, त्यारे सर्वे इंद्रियो वश थाय छे ने ज्यारे इंद्रियो विषयनो स्पर्शज न करे, त्यारे मन पण इंद्रियो लगण आवे नहि ने हैयामां ने हैयामां रहे, एवी रीते जेने पंच विषयनो त्याग अति दृढपणे करीने थयो, त्यारे तेनुं मन जित्युं जाणवुं अने जो विषय उपर कांइ प्रीति होय तो मन जित्युं होय तोपण जित्युं न जाणवुं. (१) १

२ पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (२) विषयनी निवृत्ति थयानुं कारण ते वैराग्य छे के परमेश्वरने विषे प्रीति छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एकतो विषयनी निवृत्तिनुं कारण आत्मनिष्ठा छे अने बीजुं महात्म्ये सहित जे भगवाननुं ज्ञान ते छे तेमां आत्मनिष्ठा तो एवी रीतनी जोइए जे, हुं चैतन्य छुं ने देह जड छे ने हुं शुद्ध छुं ने देह नरकरूप छे अने हुं अविनाशी छुं ने देह नाशवंत छे ने हुं आनंदरूप छुं ने देह दुःखरूप छे, एवी रीते ज्यारे देह थकी पोताना आत्माने सर्व प्रकारे अतिशे विलक्षण समझे त्यारे देहने पोतानुं रूप मानीने विषयमां प्रीति करेज नहि, एवी रीते आत्मज्ञाने करीने विषयनी निवृत्ति थाय छे. अने भगवाननो महिमा एम विचारे जे, हुं आत्मा छुं, अने जे प्रत्यक्ष भगवान मळ्या छे ते परमात्मा छे अने गोलोक, वैकुंठ, श्वेतद्वीप तथा ब्रह्मपुर तथा अनंत कोटी ब्रह्मांडना पति जे ब्रह्मादिक देव ए सर्वेना स्वामी जे श्री पुरुषोत्तम ते मुने प्रत्यक्ष मळ्या छे अने ते मारा आत्माने विषे पण अखंड विराजमान छे अने ते भगवाननुं जे एक निमिष मात्रनुं दर्शन ते उपर अनंत कोटी ब्रह्मांडनां जे विषय सुख छे ते सर्वेने वारी फेरीने नाखी देइए अने भगवानना एक रोममां जेटलुं सुख रह्युं छे तेटलुं सुख तो अनंत कोटी ब्रह्मांडनां विषय सुख मेळां करीए तोपण तेना कोटीमा भागनी बरोबर पण थाय नहि अने जे भगवाननुं अक्षर धाम छे तेनी आगळ बीजा जे

देवताना लोक छे तेने मोक्ष धर्मने विषे नरक तुल्य कह्या छे, एवा जे भगवान ते मुने प्रगट मळ्या छे तेने मुकीने नरकना कुंड जेवां जे विषयनां सुख तेने हुं शुं इच्छुं ? अने विषय सुख तो केवळ दुःखरूपज छे, एवी रीते भगवाननुं महात्म्य जाणवे करीने विषयनी निवृत्ति थाय छे. अने एवी रीते जे आत्मज्ञान ने परमात्मानुं ज्ञान तेमांथी जे वैराग्य प्रगटे ते वैराग्ये करीने सर्व विषय सुखनी वासनानी निवृत्ति थइ जाय छे अने जेणे एवी रीते समझीने विषय सुखनो त्याग कर्यो तेने पाछी विषयमां प्रीति थायज नहि ने एनुंज मन जीताणुं कहेवाय छे. (२) अने एवी समझण विना झाझुं हेत जणातुं होय पण ज्यारे २
कोइक सारा विषयनी प्राप्ति थाय, त्यारे भगवानने पड्या मुकीने विषयमां प्रीति करे अथवा पुत्रकलत्रादिकने विषे प्रीति करे अथवा रोगादिक संबंधी पीडा थाय अथवा पंच विषयनुं सुख होय ते मटी जाय, त्यारे भगवानने विषे प्रीति रहे नहि ने विकळ जेवो थइ जाय ने जेम कुतरानुं गलुरीयुं होय ते पण नानुं होय त्यारे सारुं दीसे तेम एवानी भक्ति प्रथम सारी दीसे पण अंते शोभे नहि. (३) इति वचनामृतम् ॥१॥ (७९) ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [२] छे.तेमां पहेलामां पंचविषयनो अतिशे त्याग थाय तोज मन जित्युं जाणवुं. (१) बीजामां त्रण देहथी पोताना आत्माने विलक्षण समजे अने प्रत्यक्ष श्रीस्वामिनारायण भगवान जे अमे ते अमने वैकुंठ, गोलोक, श्वेतद्वीप तथा ब्रह्मपुरादिक धामोना तथा अनंतकोटी ब्रह्मांडना पतियोना स्वामी जाणे अने अमने पोताना आत्माने विषे अखंड विराजमान जाणे अने अमारा एक रोमना सुख आगळ अनंत जीव, पुरुष, ब्रह्म, अक्षर तेमनी कोटीयोनां जे सुख तेने अतिशे तुच्छ जाणे, आवुं अमारा स्वरूपनुं ज्ञान थाय तेनेज सर्वे विषय सुखनी वासनानी निवृत्ति थइ जाय. [२] अने आवी समझण विनानुं झाझुं हेत जणातुं होय तो पण सारा विषयनी प्राप्ति थाय अथवा विषयनुं सुख मटी जाय त्यारे हेत रहे नहि अने विकळ जेवो थइ जाय, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. [३] बाबतो छे.

१ प्र० बीजा प्रश्नमां गोलोक, वैकुंठ, श्वेतद्वीप ने ब्रह्मपुर धाम कह्यां ते कोनां जाणवां ? अने अनंतकोटी ब्रह्मांडना पति ब्रह्मादिक देव कह्या ते किया जाणवा ?

१ उ० मूळपुरुषना धामने गोलोक कह्युं छे. विभुना धामने वैकुंठ कह्युं छे. वासुदेवब्रह्मना साधनिक मुक्तोना स्थानने श्वेतद्वीप कह्युं छे, अने ए वासुदेव ब्रह्मना मूळधामने ब्रह्मपुर कह्युं छे. अने मूळअक्षर सर्वेनी उत्पत्तिना मूळ कारण छे तेमने आ ठेकाणे ब्रह्मा कह्या छे अने आदि शब्दथी वासुदेवब्रह्म तथा मूळपुरुष जाणवा. ॥७९॥

संवत् १८७७ ना श्रावण वदि ६ छठने दिवस श्रीजीमहाराज गाम श्रीसारंगपुर मध्ये जीवाखाचरना ओरडानी ओसरी उपर ढोलियो बिछाव्यो हतो ते उपर उत्तरादे मुखारविंदे विराजमान हता अने श्वेत पाघ मस्तक उपर बांधी हती तथा श्वेत पछेडी

ओढी हती तथा श्वेत खेस पहेर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज मुनि प्रत्ये बोल्या जे, मांहोमांही प्रश्न उत्तर करो. पछी स्व-
१ यंप्रकाशानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे, [१] भगवानना भक्तने भगवाननी मूर्तिमां अतिशे हेत किये प्रकारे थाय ? पछी ते प्रश्ननो उत्तर मुनिए मांहोमांही करवा मांड्यो पण थयो नहि. पछी श्रीजीमहाराजे तेनो उत्तर करवा मांड्यो जे, स्नेहतो रूपे करीने पण थाय छे तथा कामे करीने पण थाय छे तथा लोभे करीने पण थाय छे, तथा स्वार्थे करीने पण थाय छे, तथा गुणे करीने पण थाय छे. तेमां रूपे करीने जे स्नेह थाय छे तेतो ज्यारे तेना देहमां पित्त निसरे अथवा कोढ निसरे त्यारे स्नेह थयो होय ते नाश पामे छे, तेमज लोभ, कामने स्वार्थे करीने जे हेत थयुं होय ते पण अंते नाश पामे छे अने जे गुणे करीने स्नेह थयो होय तेतो अंते रहे छे. [१] १
२ त्यारे श्रीजीमहाराज प्रत्ये सोमलोखाचर बोल्या जे, (२) ए ते गुण किया ? उपरला के मांहीला ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, उपरले गुणे शुं थाय ? एतो वचने करीने देहे करीने ने मने करीने जे गुण होय ने ते गुणे करीने जे हेत थयुं होय ते नथी नाश पामतुं. (२) अने तमे पुछो छो ते भक्तने भगवान उपर स्नेह थाय एमज केवळ २ पुछो छो ? के भगवानने भक्त उपर स्नेह थाय एम पण पुछो छो ? त्यारे स्वयंप्रकाशानंदस्वामी बोल्या जे, ए बेयने पुछीये छैए. पछी श्रीजीमहाराजे तेनी विस्तारे करीने वार्ता करवा मांडी जे, वचने करीने तो कोइ जीव, प्राणीमात्रने दुःखववा नहि अने परमेश्वर साथे अथवा मोटा संत साथे प्रश्न उत्तर करता होइए अने तेमां परस्पर वाद-विवाद थातो होय ने तेमां पोते जितीए एम जणाय तो पण जे मोटाथी नानो होय तेने मोटाने समीपे नमी देवुं अने आपण करतां मोटा संत होय ते सभामां प्रश्न उत्तरे करीने झुंठा पडे एम करवुं नहि मोटा संत आगे ने परमेश्वर आगे तो जरुर हारी जावुं अने परमेश्वर तथा मोटा संत ते पोताने कोइ वचन योग्य कहे अथवा अयोग्य कहे त्यारे ते वचनने तत्काळ स्नेहे सहित मानवुं तेमां योग्य वचन होय तेमां तो आशंका थाय नहि पण कोइ अयोग्य वचन कह्युं होय ने तेमां आशंका थाय एवुं होय तो पण ते समाने विषे ना पाडवी नहि ए तो हाज पाडवी अने एम कहेवुं जे, हे महाराज ! जेम तमे कहेशो तेम हुं करीश, अने ते वचन पोताने मनाय नहि एवुं होय तो परमेश्वर तथा मोटा संत तेनी मरजी होय तो तेमने हाथ जोडीने भक्तिए सहित एम कहेवुं जे, हे महाराज ! तमे जे वचन कह्युं ते तो ठीक छे पण आटली मुने तेमां आशंका थाय छे, ए प्रकारनुं दीन थइने वचन कहेवुं अने जो परमेश्वरनी मरजी न होय

तो तेमने समीपे रहेता होय जे मोटा संत तथा हरिभक्त तेमने आगे कहेलुं जे, आवी रीते परमेश्वरे वचन कह्यं छे ते तो मुने मान्यामां आवतुं नथी. पछी तेनुं मोटा संत समाधान करे तथा परमेश्वर आगे कहीने ए वचननुं समाधान करावे पण परमेश्वरे वचन अयोग्य के योग्य कह्युं होय ते समे ना पाडवी नहि, एवी रीतनी युक्तिए मोटाना वचनने पाछुं ठेलवुं पण कह्युं ने तत्काळ ना पाडवी नहि, एवी रीते तो वचनने गुणे करीने वर्तवुं. पछी ते भक्तने उपर परमेश्वर तथा मोटा संत तेने स्नेह थाय छे अने ते भक्तने पण भगवानने विषे दृढ स्नेह थाय छे. हवे देहने गुणे केम वर्तवुं तो पोताना देहमां जो कांइ उन्मत्तपणुं जणाय तो भजनमां बेसवे करीने अथवा चांद्रायण व्रते करीने देहने निर्बळ करी नाखवुं. पछी तेने देखीने तेना देहनी मोटा संत अथवा परमेश्वर खबर रखावे तो भले पण पोताने जाणे देहनुं यत्न करवुं नहि तथा देहे करीने भगवाननी ने भगवानना भक्तनी टेल चाकरी करवी, एवी रीते ज्यारे देहने गुणे करीने वर्ते त्यारे तेने देखीने ते उपर परमेश्वर ने मोटा संत तेने स्नेह थाय छे अने ए भक्तने पण भगवानने विषे प्रीति थाय छे. हवे मनने गुणे जेम वर्तवुं तेनी रीत कहीए छैए जे, परमेश्वरनां ज्यारे दर्शन करवां त्यारे मने सहित दृष्टिने एकाग्र राखीने करवां अने परमेश्वरनां दर्शन करतो होय ने त्यां कोइ मनुष्य आव्युं अथवा श्वान आव्युं के बीजुं कोइ पशु पक्षी आव्युं त्यारे परमेश्वरना दर्शनमांथी वृत्ति तोडीने आडी अवळी उंची नीची दृष्टि करीने तेनां पण भेळां दर्शन करतो जाय, पछी एवी फाटेल दृष्टिवाळाने परमेश्वर के मोटा संत देखीने राजी थाता नथी अने ए दर्शन करे छे ते केवां करे छे तो जेम अन्य मनुष्य करे छे तेम ते पण करे छे अने एवी लौकिक दृष्टिवाळो तो जेम खिलकोडी बोले छे ते भेळे पुंछडुं उंचुं करे छे तेवो जाणवो, शा साख जे परमेश्वर भेळे बीजां दर्शन करे छे अने एवां लौकिक दर्शन ज्यारे ए करवा मांडे त्यारे जेवो प्रथम सारो होय तेवो रहे नहि अने ते दिवसे दिवसे उतरतो जाय, ते माटे परमेश्वरनां दर्शन करतां करतां आडी अवळी दृष्टि करवी नहि. परमेश्वरनां दर्शन तो प्रथम पहेले नवीन थयां होय ने ते समयने विषे जेवुं अंतरमां अलौकिकपणुं होय, तेवुं ने तेवुं मनमां अलौकिकपणुं रहेतुं जाय ने एक दृष्टिए करीने मूर्तिने जोते जावुं ने दृष्टि पलटीने अंतरमां तेवी ने तेवी ते मूर्तिने उतारवी, जेम धर्मपुरमां कुशळकुंवरबाइ हतां ते अमारां दर्शन करतां जातां हतां अने दृष्टि पलटावीने मूर्तिने अंतरमां उतारतां, तेम दर्शन तो मने युक्त दृष्टिने एकाग्र राखीने करवां पण जेम बीजां दर्शन करे छे तेम न करवां; अने जो परमेश्वरनां दर्शन भेळे बीजां दर्शन मनुष्यनां के कुतरा विलाडानां करे छे तो तेने ज्यारे स्वप्न थाय त्यारे परमेश्वर पण देखाय ने ते अन्य पदार्थ पण भेळे देखाय, ते माटे परमेश्वरनां दर्शन तो एक दृष्टिए

करवां पण चपळ दृष्टिए न करवां अने परमेश्वरनां दर्शन दृष्टिने नियममां राखीने करे छे तेने ए दर्शन नवीननां नवीन रहे छे अने परमेश्वरे जे जे वचन कह्यां होय ते पण एने नवीननां नवीन रहे छे अने लौकिक बाह्य दृष्टिए करीने दर्शन कर्यां होय तेने परमेश्वरनां दर्शन तथा वचन ए सर्वे जुनां थइ जाय छे ते रोज दर्शन कर्यां करे पण एवाने तो जेम न थयां होय तेवां ने तेवां रहे छे ते ज्यारे भजनमां बेसे त्यारे तेनुं मन स्थिर रहे नहि बहुधाराए युक्त थाय अने परमेश्वरने धारे त्यारे ते भेळे बीजां दर्शन जे जे कर्यां छे ते पण वगर धार्यां आवीने हैयामां स्फूरे छे, ते माटे दर्शन तो एक परमेश्वरनांज करवां ने एम जे दर्शन करे छे तेनुं मन भजन, स्मरण करते एक परमेश्वरमांज रहे छे पण तेनी बहुधारा नथी रहेती एक रहे छे; अने जे चपळदृष्टिए दर्शन करे छे तेने हुं जाणुं छुं अने जेनां दृष्टि ने मन नियममां होय एवा जे मोटा संत ते पण जाणे जे, आतो लौकिक दर्शन करे छे. पछी ते लौकिक दर्शननो करनारो आ समागममांथी दिवसे दिवसे उतरतो जाय छे अने जेम कोइक कामी पुरुष होय तेनी रूपवंती स्त्रीमां एक मने करीने दृष्टि मोवाणी होय ते समे वचमां कोइक पशुपक्षी आवे जाय के बोले पण तेनी तेने खबर रहे नहि, एनी रीते एकाग्र दृष्टिए करीने परमेश्वरमां जोडावुं पण लौकिक दर्शन न करवां.

३ त्यारे निर्विकारानंदस्वामीए आशंका करी जे, (३) हे महाराज ! अमारे तो देशदेशमां मनुष्य आगळ वार्ता करवी पडे तेणे करीने मननुं एकाग्रपणुं रहेतुं नथी. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, मनुष्य आगळ वार्ता करवी तेनी तो अमे आज्ञा आपी छे पण आंही मूर्तिनां दर्शन मेलीने बीजां दर्शन करवां एवी के दिवस अमे आज्ञा आपी छे? एम कहीने वळी वार्ता करवा लाग्या जे, प्रथम ज्यारे मूर्तिनां दर्शन थाय छे, त्यारे एने केवुं अलौकिकपणुं रहे छे तेवुं ने तेवुं अलौकिकपणुं तो तो रहे जो मने सहित दृष्टि एक परमेश्वरमां राखे, एवी रीते मनने गुणे करीने वर्ते त्यारे ते भक्तने उपर नित्य प्रत्ये भगवानने नवीन ने नवीन हेत रहे छे. ने ते भक्तने पण भगवानने विषे नित्य प्रत्ये
नवीनने नवीन हेत रहे छे. [३] अने वळी नेत्र ने श्रोत्र ए बेने तो विशेषे ३
करीने नियममां राखवां, शा सारु जे ज्यां त्यां ग्राम्य वार्ता थाती होय ते तेने श्रोत्रनी वृत्तिद्वारे तणाइ जइने सांभळीए तो ते सर्वे ग्राम्य शब्द भजनमां बेसे त्यारे सांभरी आवे छे अने फाटेल नेत्रनी वृत्तिए करीने ने जे जे रूप जोयुं होय ते सर्वे भजन करतां सांभरी आवे छे, ते सारु ए बे इंद्रियोने तो अतिशे नियममां राखवां अने नेत्रनी ने श्रोत्रनी वृत्ति ज्यारे मूर्तिनां दर्शन करता होइए ने मूर्तिने मेलीने अन्यमां तणाय तो तेने एम उपदेश देवो जे, हे मूर्ख ! तुं भगवान विना अन्य रूपने जुवे छे के परमेश्वरनी

वार्त्ता विना अन्य वार्त्ताने सांभळे छे तेमां तुंने शुं प्राप्त थाशे ? अने हजी तुंने सिद्ध दशा तो आवी नथी जे जेवुं तुं चिंतव्य तेवुं तुंने तत्काळ मळे, शा सारु जे हजी तो तुं साधक छुं माटे जे विषयने तुं चिंतवीश ते विषय मळशे नहि अने ठालां वलखां करीने परमेश्वरने शा वास्ते मेल्ही दे छे ? अने कांइक जो तुंने अल्प विषय मळशे तो तेना पापमां यमपुरीनो मार खातां खातां अंत नहि आवे, एवी रीते नेत्रने ने श्रोत्रने उपदेश देवो अने वळी एम कहेवुं जे ज्यारे तुं भगवाननी मूर्तिमां एकाग्र थइश तो तेमांथी तुं सिद्ध दशाने पामीश पछी तुं जे जे ब्रह्मांडमां वार्त्ता थाय छे तेने सहेजे सांभळीश अने ब्रह्मा, विष्णु ने शिवना जेवा रूपने इच्छीश तो तेवा रूपने पामीश अने लक्ष्मी के राधिका जेवो भक्त थावा इच्छीश तो तेवो थाइश अने भगवाननुं भजन करतां करतां सिद्धदशाने देह छते नहि पाम्य तो देह पड्या पछी मुक्त थाइश त्यारे सिद्धदशा मळशे पण सिद्धदशा आव्या विना रूपने जोइ जोइने मरी जाइश तो पण ते रूप मळशे नहि अने ग्राम्य शब्दने पण सांभळी सांभळीने मरी जाइश तो तेणे करीने बुद्धितो अतिशे भ्रष्ट थइ जाशे पण तेमांथी कांइ प्राप्ति नहि थाय, एवी रीते नेत्रने ने श्रोत्रने उपदेश देइने एक भगवाननी मूर्तिमांज राखवां अने एवी रीते जे वर्ते तेने भगवाननी मूर्तिमां दिवसे दिवसे अधिक स्नेह थाय छे ने ते भक्त उपर परमेश्वरने ने मोटा साधुने स्नेह होय तेथी पण दिवसे दिवसे वधतो जाय छे. (४) इति वचनामृतम् ॥२॥ (८०) ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [३] छे. तेमां पहेलामां रूप, काम, लोभने स्वार्थे करीने अमारे विषे हेत करे ते अंते नाश पामे छे. (१) बीजामां वचने देहे ने मने करीने जे गुण तेणे करीने अमारे विषे हेत थयुं होय ते नाश नथी पामतुं. (२) अने ते गुणे करीने अमारे ने भक्तने परस्पर हेत थाय छे अने ते प्रमाणे वर्तवानी विक्ति कही छे. (३) त्रीजामां मनुष्य आगळ वात करवी पण अमारां दर्शन करनी वखते बीजां दर्शन करवा नहि अने नेत्रने ने श्रोत्रने विशेषे नियममां राखवां एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे.(४)वाक्यो छे.

१ प्र० आमां पहेला प्रश्नमां गुणे करीने हेत थाय ते अंते रहे छे एम कह्युं अने (प्र० ५७ ना बीजा प्रश्नमां) गुण विचारीने हेत करे ते हेतनो विश्वास नहि एम कह्युं छे, ते केम समजवुं ?

१ उ० आमां श्रीजीमहाराजनो दिव्यभावे सहित महिमा जाणीने हेत कर्युं होय ते हेत श्रीजीमहाराजनां मनुष्य चरित्र जोइने अथवा सांभळीने पण न टळे एम कह्युं छे अने (प्र० ५७ मां) तो देहबुद्धिए करीने हेत कर्युं होय ते ज्यारे श्रीजीमहाराजनां मनुष्य चरित्रने देखे अथवा सांभळे त्यारे अवगुण आवे ने हेत मटी जाय एम कह्युं छे.

२ प्र० ($\frac{१}{४}$ त्रीजा प्रश्नमां) सिद्धदशा पाम्या पछी जे जे जोवाने इच्छीश अने जेवो थावाने इच्छीश तेवो थइश, एम कह्युं अने (प्र० $\frac{४३}{१}$ मां) भगवानना भक्त चार प्रकारनी मुक्तिने नथी इच्छता एम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० आमां मायामां प्रीतिवाळा सकाम भक्तने लोभ बतावीने पगथीए चडाववा कह्यं छे. ॥८०॥

संवत् १८७७ना श्रावण वदि ७ सातमने दिवस सांझने समे श्रीजीमहाराज गाम श्री सारंगपुर मध्ये जीवाखाचरना ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने श्वेत पाघ मस्तके बांधी हती ने काळा छेडानो खेस ओढ्यो हतो ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए श्रीजीमहाराजने प्रश्न पुछयो जे, (१) हे महाराज! एक भक्त तो नाना प्रकारनी पूजा सामग्री लेइने प्रत्यक्ष भगवाननी पूजा करे छे अने एक भक्त तो नाना प्रकारना मानसिक उपचारे करीने भगवाननी मानसी पूजा करे छे ए बे भक्तमां श्रेष्ठ ते कोण छे? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, भगवानने विषे प्रेमे करीने अति रोमांचितगात्र थइने तथा गद्‌गद् कंठ थइने जो भगवाननी प्रत्यक्ष पूजा करे छे अथवा एवी रीते जे भगवाननी मानसी पूजा करे छे तो ए बेय श्रेष्ठ छे अने प्रेमे करीने रोमांचित गात्र ने गद्‌गद् कंठ थया विना केवळ शुष्क मने करीने प्रत्यक्ष भगवाननी पूजा करे छे तोय न्यून छे ने मानसी पूजा करे छे तोय न्यून छे. [१] १

२ त्यारे सोमलेखाचरे पुछयुं जे, [२] एवी रीते जे प्रेममग्न थइने प्रत्यक्ष भगवाननी पूजा करतो होय अथवा मानसी पूजा करतो होय ते भक्त किये लक्षणे करीने ओळखाय? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने भगवाननी पूजा सेवाने विषे तथा कथा, वार्ता, कीर्त्तनने विषे अतिशे श्रद्धा होय तथा भगवाननुं अतिशे महात्म्य समजतो होय ने ए बे वानां दिवसे दिवसे नवां ने नवांज रहेतां होय पण क्यारेय गौण न पडे, जेम मुक्तानंदस्वामीने अमे प्रथम लोजपुरमां दीठा हता ने जेवी श्रद्धा ने भगवाननुं महात्म्य हतुं तेवुं ने तेवुंज आज दिवस सुधी नवुं ने नवुं छे पण गौण पडयुं नथी, एवे लक्षणे करीने ते भक्तने ओळखवो अने एवी रीते महात्म्य ने श्रद्धा विनाना सर्वे यादव श्रीकृष्ण भगवान भेळाज रहेता ने जेम बीजा राजानी सेवा चाकरी करे तेम सेवा चाकरी करता तो पण तेनुं कोइ नाम जाणतुं नथी ने ते भक्त पण कहेवाया नथी अने उद्धवजी जो श्रीकृष्ण भगवाननी श्रद्धा महात्म्ये सहित सेवा चाकरी करता तो ते परम भागवत् कहेवाया ने तेनी शास्त्रमां तथा लोकमां अतिशे प्रसिद्धि छे. (२) २

३ पछी निर्विकारानंदस्वामीए प्रश्न पूछयो जे, [३] हे महाराज! श्रवण, मनन, निदिध्यास ने साक्षात्कार ते केने कहेवाय? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, श्रोत्रे करीने वार्ता सांभळवी तेने श्रवण कहीए, अने जे वार्ता श्रवण करी होय ते वार्तानो मने करीने

विचार करीने जेटली वार्ता त्याग कर्या योग्य होय तेटलीनो त्याग करे ने जेटली वार्ता ग्रहण कर्या योग्य होय तेटलीनुं ग्रहण करे तेने मनन कहीए, अने जे वार्ता निश्चय करीने मनने विषे ग्रहण करी होय तेने रातदिवस संभारवानो जे अभ्यास राखवो तेने निदिध्यास कहीए, अने जे वार्ता जेवी होय तेवीने तेवीज चिंतवन कर्या विना पण सर्वे मूर्तिमाननी पेठे इदं सांभरी आवे तेने साक्षात्कार कहीए. अने जो एवी रीते आत्माना स्वरूपनुं श्रवणादिक कर्युं होय तो आत्मस्वरूपनो एवी रीते साक्षात्कार थाय अने जो भगवाननो एवी रीते श्रवण, मनन, निदिध्यास कर्यो होय तो भगवाननो एवी रीते साक्षात्कार थाय छे पण मनन ने निदिध्यास ए बे कर्या विना केवळ श्रवणे करीने साक्षात्कार थातो नथी अने जो भगवानना स्वरूपनुं दर्शन करीने तेनुं मनन ने निदिध्यास ते न कर्यो होय तो लाख वर्ष सुधी दर्शन करे तो पण ते स्वरूपनो साक्षात्कार न थाय ने ते दर्शन तो केवळ श्रवण मात्र सरखुं कहेवाय अने जेणे भगवानना अंग अंगनुं दर्शन करीने पछी ते अंग अंगनुं मनन ने निदिध्यास ते कर्यो हशे तो ते अंग आज सहेजे सांभरी आवतुं हशे ने जे अंगनुं दर्शन मात्रज थयुं हशे तो ते अंगने संभारतो हशे तोपण नहि सांभरतुं होय अने केटलाक हरिभक्त कहे छे जे, अमे तो महाराजनी मूर्तिने ध्यानमां बेसीने घणाय संभारीए छैए तोपण एके अंग धार्यामां नथी आवतुं तो समग्र मूर्तितो क्यांथी आवे ? तेनुं पण एज कारण छे जे ए भगवाननी मूर्तिनां दर्शन मात्रज करे छे पण मनन ने निदिध्यास नथी करतो माटे केम धार्यामां आवे, कां जे जे मायिक पदार्थ छे ते पण केवळ दृष्टि मात्रे देख्युं होय ने केवळ श्रवण मात्रे सांभळ्युं होय ने तेने जो मनमां संभारी न राख्युं होय तो ते वीसरी जाय छे तो जे अमायिक ने दिव्य एवुं जे भगवाननुं स्वरूप तेतो मनन ने निदिध्यास कर्या विना क्यांथी सांभरे ? माटे भगवाननुं दर्शन करीने तथा वार्ता सांभळीने जो तेनुं मनन ने निदिध्यास निरंतर कर्या करे तो तेनो साक्षात्कार थाय, नहि तो आखी उमर दर्शन श्रवण करे तो पण साक्षात्कार थाय नहि. [३] इति वचनामृतम् ॥३॥ [८१] ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (३) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे प्रत्यक्ष पूजा अने मानसी पूजानुं सरखुं गौरव कह्युं छे ते बे प्रकारनी पूजा आत्मामां मूर्तिनो साक्षात्कार थाय तोपण देहनी स्मृति रहे त्यां सुधी करवी. (१) बीजामां प्रत्यक्ष पूजा ने मानसी पूजा करता होय तेमने अमारी पूजा, सेवा, कथा कीर्तनने विषे श्रद्धा ने अमारुं अतिशे महात्म्य होय ते परम भागवत् छे. (२) ने त्रीजामां, श्रवण, मनन, निदिध्यास ने साक्षात्कारनां लक्षण कह्यां छे. (३) बावतो छे. ॥ ८१ ॥

संवत् १८७७ ना श्रावण वदि ८ अष्टमीने दिवस श्रीजीमहाराज गाम श्री सारं-

गपुर मध्ये जीवाखाचरना ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर उत्तर मुखारविंदे विराज-
मान हता, ने मस्तके श्वेत पाघ बांधी हती, ने श्वेत पछेडी ओढी हती, ने श्वेत खेस पहेर्यो
हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे, [१] हे महाराज! आत्मा अना-
त्मानी चोखी जे विक्ति ते केम समझवी? जे समझवे करीने आत्मा अनात्मा एक सम-
झायज नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एक श्लोके करीने अथवा बे श्लोके करीने
अथवा पांच श्लोके करीने अथवा सो श्लोके करीने अथवा हजार श्लोके करीने जे
चोखुं समझाय ते ठीक छे जे समझाणा केडे आत्मा अनात्माना एकपणानो लोचो रहे
नहि अने चोखुं समझाइ जाय तेज समझण सुखदायी थाय छे अने गोबरी समझण
सुखदायी थाती नथी, माटे एम चोखुं समझे जे हुं आत्मा ते मारा जेवो गुण देहने
विषे एकेय आवतो नथी अने जड, दुःखने मिथ्यारूप जे देह तेना जे गुण ते हुं चैतन्य
ते मारे विषे एकेय आवतो नथी एवी विक्ति समझीने ने अत्यंत निर्वासनिक थइने
चैतन्यरूप थको पुरुषोत्तम भगवाननुं चिंतवन करे एवो जे जड चैतन्यनो विवेक तेने दृढ
विवेक जाणवो. (१) अने घडिक पोताने आत्मारूप माने ने घडिक देहरूप मानीने १
स्त्रीनुं चिंतवन करे एने गोबरो जाणवो माटे एना अंतरमां सुख न आवे, जेम सुंदर
अमृत सरखुं अन्न होय ने तेमां थोडुंक झेर नांख्युं होय तो ते अन्न सुखदायी न थाय
सामु दुःखदायी थाय छे, तेम आठे पहोर आत्मानो विचार करीने एक घडी
पोताने देहरूप मानीने स्त्रीनुं चिंतवन करे एटले एनो सर्वे विचार धूळमां मळी जाय
छे. (२) माटे अत्यंत निर्वासनिक थवाय एवो चोखो आत्मविचार करवो अने कोइ- २
कने एवो संशय थाय जे, अत्यंत निर्वासनिक नहि थवाय ने काचाने काचा मरी जाशुं
तो शा हवाल थाशे, तो एवो विचार भगवानना भक्तने करवो नहिं ने एम समझवुं जे,
मरशे तो देह मरशे पण हुं तो आत्मा छुं ने अजर अमर छुं माटे हुं मरुं नहि, एवुं सम-
झीने हइयामां हिंमत राखवी अने परमेश्वर विना सर्वे वासना त्याग करीने अचळ मति
करवी अने एम वासना टाळतां टाळतां जो कांइक थोडी घणी वासना रही गइ तो जेवा
मोक्षधर्ममां नरक कह्या छे तेवा नरकनी प्राप्ति थाशे ते नरकनी विगति जे भगवाननो
भक्त होय तेने कांइ जगत्‌नी वासना रहे तेने इंद्रादिक देवताना जे लोक तेनी प्राप्ति
थाय ने ते लोकने विषे जइने अप्सराओ तथा विमान तथा मणिमय मोहोलात्य ए आदि
दइने जे वैभव ते सर्वे परमेश्वरना धामनी आगळ नरक जेवा छे तेने भोगवे छे पण
विमुख जीवनी पेठे यमपुरीमां जाय नहिं अने चोराशीमां पण जाय नहिं, माटे जो सवा-
सनिक भगवानना भक्त हशो तोपण घणुं थाशे तो देवता थवुं पडशे ने देवतामांथी पडशो

तो मनुष्य थाशो ने मनुष्य थइने वळी पाछी भगवाननी भक्ति करीने ने निर्वासनिक थइने अंते भगवानना धामने पामशो पण विमुख जीवनी पेठे नरक चोराशीने नहि भोगवो, एवुं जाणीने भगवाननो भक्त होय तेने वासनानुं बळ देखीने हिंमत हारवी नहि ने आनंदमां भगवाननुं भजन कर्या करवुं अने वासना टाळ्याना उपायमां रहेवुं अने भगवानने भगवानना संतना वचनमां दृढ विश्वास राखवो. (३) इति वचनामृतम् ॥४॥[८२] ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [१] छे. तेमां पोताना चैतन्यने त्रण देहथी पृथक् मानीने अमारी मूर्तिनुं चिंतवन करे ते दृढ विवेकी छे. (१) अने देहरूप मानीने एक क्षणवार कीनुं चिंतवन करे ते गोबरो छे. (२) अने अत्यंत निर्वासनिक थाय त्यारेज अमारा धामने पामे; नहि तो इंद्रथी लइने प्रधान पुरुष सुधी जे देवता तेना लोकने पामे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (३) बाबतो छे.

१ प्र० आमां बीजी बाबतमां एक घडी एटले क्षणवार देहरूप मानीने कीनुं चिंतवन करे तो तेनो आठे पहोर करेलो जे आत्मानो विचार ते धूळमां मळी जाय एम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

१ उ० मायाना कार्यमांथी निर्वासनिक थयो नथी ते आत्मानो विचार करे पण दृढाव थइ शके नहि ने मायामय जे पंचभूतात्मक देह तेमां भळी जाय ने आत्मा संबंधी करेलो विचार निष्फळ थाय ते देहरूप धूळमां मळी गयो जाणवुं ॥ ८२ ॥

संवत् १८७७ ना श्रावण वदि ९ नवमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज गाम श्री सारंगपुर मध्ये जीवाखाचरना दरबारमां उत्तरादे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे, (१) वासनानी निवृत्ति थयानो एवो शो जबरो उपाय छे जे एक उपायने विषे सर्वे साधन आवी जाय ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने श्रद्धा तथा हरिने हरिजनना वचननेविषे विश्वास तथा भगवानने विषे प्रीति तथा भगवानना स्वरूपनुं महात्म्य ए चार वानां जेना हृदयमां होय तेनी वासना निवृत्ति थइ जाय छे. (१) तेमां पण जो एक महात्म्य अतिशे दृढ होय तो श्रद्धा तथा विश्वास तथा प्रीति ए त्रण दुबळां होय तो पण महा बळवान थाय छे अने महात्म्य विनानी भक्ति जो झाझी जणाती होय तो पण अंते नाश थइ जाय छे, जेम दश बार वर्षनी कन्या होय ने तेने क्षय रोग थाय पछी ते कन्या युवान थया मोरज मरी जाय पण युवान थाय नहि तेम जेने महात्म्य विनानी भक्ति होय ते पण परिपक थाती थाती नाश थइ जाय छे अने जेना हृदयमां महात्म्ये सहित भगवाननी भक्ति होय तो बीजा कल्याणकारी गुण न होय तो पण तेना हृदयमां सर्वे आवे छे अने जो महात्म्य सहित भक्ति जेना हृदयमां नथी तो शम दमादिक जे कल्याणकारी रुडा गुण ते तेना हृदयमां

छे तोयपण नहि जेवाज छे, केमके अंते नाश पामी जाशे माटे एक महात्म्ये सहित भक्ति होय तो तेनी वासना पण निवृत्त थइ जाय अने कल्याणकारी जे गुण ते सर्वे आवीने हृदयने विषे निवास करीने रहे, ते माटे महात्म्ये सहित भगवाननी भक्ति एज वासना टळ्यानुं महामोटुं अचळ साधन छे. (२) २

२ पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे, (२) जीव अन्वयपणे केम छे ? ने व्यतिरेकपणे केम छे ? अने ईश्वर अन्वयपणे केम छे ? ने व्यतिरेकपणे केम छे ? अने अक्षरब्रह्म अन्वयपणे केम छे ? ने व्यतिरेकपणे केम छे ? अने पुरुषोत्तम भगवानने अन्वयपणे केम जाणवा ? ने व्यतिरेकपणे केम जाणवा ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जन्ममरणनुं भोक्ता एवुं जे जीवनुं स्वरूप ते अन्वय जाणवुं अने अछेद्य अभेद्य अविनाशी एवुं जे जीवनुं स्वरूप ते व्यतिरेक जाणवुं, अने विराट्, सूत्रात्माने अव्याकृत ए त्रण शरीरमां एकरसपणे वर्ते ए ईश्वरनुं अन्वय स्वरूप जाणवुं अने पिंड-ब्रह्मांडथी पर सच्चिदानंदपणे करीने जे निरूपण कर्युं छे ते ईश्वरनुं व्यतिरेक स्वरूप जाणवुं, अने प्रकृति पुरुष तथा सूर्य, चंद्रादिक सर्वे देवता तेनुं जे प्रेरक ते अक्षरनुं अन्वय स्वरूप जाणवुं अने जे स्वरूपने विषे पुरुष प्रकृति आदि दइने कांइ उपाधि रहेती नथी एक पुरुषोत्तम भगवानज रहे छे ए अक्षरनुं व्यतिरेक स्वरूप छे, अने बद्धजीव तथा मुक्तजीव ए बेना हृदयमां साक्षीरूप थका रह्या छे अने बद्धपणुं ने मुक्तपणुं जेने अडतुं नथी तेमज ईश्वरना ने अक्षरना हृदयमां साक्षीरूपे रह्या छे अने ते ते उपाधियकी रहित छे ए पुरुषोत्तमनुं अन्वय स्वरूप छे अने जीव ईश्वर ने अक्षर ते थकी पर जे अक्षरातीत स्वरूप ए पुरुषोत्तमनुं व्यतिरेक स्वरूप जाणवुं, एवी रीते अन्वय व्यतिरेकपणुं छे.(३) ३

३ पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (३) भगवानना दर्शननो महिमा तथा भगवानना नामस्मरणनो जे महिमा तथा भगवानना स्पर्शनो जे महिमा ते भगवानना भक्तने अर्थे छे के सर्वे जीवने सारु छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, दर्शनादिकनो तो भेद जुदोज छे ते कहीए ते सांभळो जे, ज्यारे ए दर्शननो करनारो भगवाननां दर्शन करे छे त्यारे एवुं मन छे ते दृष्टिद्वारे आवीने मने सोती दृष्टि जो दर्शन करे तो ते दर्शन एवुं थाय छे जे विसारे तोय पण विसरे नहि एवी रीते मने सहवर्त्तमान त्वचा स्पर्श करे तो ते स्पर्श पण विसरे नहि, जेम गोपांगनाओनां भगवान प्रत्ये भागवतमां वचन छे जे, हे भगवन्! जे दिवसथी तमारा चरणनो स्पर्श थयो छे ते दिवस थकी तम विना जे जे संसारमां सुख छे ते अमने विष जेवां लागे छे, एवी रीते सर्वे ज्ञान इंद्रिये करीने मने सहवर्त्तमान जे दर्शन स्पर्श श्रवणादिक थाय छे ते कोइ काळे विसरी जातां नथी, जेम अज्ञानी जीव होय तेणे मने सहवर्त्तमान जे पंचज्ञान इंद्रियो तेणे करीने जे जे विषय

भोगव्या होय ते विसारे तोय पण विसरे नहि एवी रीते भगवाननुं पण मने सहवर्त्तमान जे दर्शनादिक करे छे तेनेज दर्शनादिक जाणवुं ने बीजाने तो दर्शन थयुं छे तोय पण न थया जेवुंज छे, कांजे जे समे एणे दर्शन कर्या ते समे एनुं मन तो क्यांइए फरतुं हतुं माटे ए दर्शन एने कांतो एक दिवसमां विसरी जाशे अथवा पांच दिवसमां अथवा पचास दिवसमां अथवा छ महिनामां अथवा वर्षमां अथवा पांच वर्षमां जरुर विसरी जाशे पण अंते रहेशे नहि, माटे जे महात्म्य जाणीने अति प्रीतिए करीने मने सहित दृष्टि आदिक ज्ञान इंद्रिये करीने दर्शन स्पर्शादिक करे छे तेनेज तेमनुं फळ छे अने बीजाने तो जे परमेश्वरनां दर्शनादिक थाय छे तेनुं बीज बळ थाय छे अने यथार्थ महिमा तो जे मने सहवर्त्तमान दर्शनादिक करे छे तेने अर्थे छे. (४) इतिवचनामृतम् ॥५॥ (८३) ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (३) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे श्रद्धा तथा अमारा ने संतना वचनमां विश्वास ने अमारे विषे प्रीति ने महात्म्य ए चार होय तेनी वासना टळी जाय छे. [१] तेमां एक महात्म्य अतिशे दृढ होय तोपण वासना टळी जाय छे ने कल्याणकारी गुण आवे छे. (२) बीजामां जीव, ईश्वर, अक्षर ने पोतानुं अन्वय व्यतिरेकपणुं कह्युं छे अने अमे जेम बद्धने मुक्त जीवोने विषे अंतर्यामीपणे रह्या छीए तेमज ईश्वर ने अक्षरने विषे रह्या छीए. (३) त्रीजामां अमारुं महात्म्य जाणीने मने सहित ज्ञान इंद्रियोए करीने दर्शन, स्पर्श, श्रवणादिक करे तेनेज दर्शनादिकनुं संपूर्ण फळ थाय छे अने बीजाने बीज बळ थाय छे. (४) बावतो छे.

१ प्र० [$\frac{२}{३}$ बीजा प्रश्नमां] बद्ध जीव, मुक्त जीव, ईश्वर ने अक्षर कह्या ते कोने जाणवा ?

१ उ० मूळमायाने विषे रह्या ते सर्वने बद्ध जीव कह्या छे. अने ते बद्ध जीवने विषे अंतर्यामीपणे रहीने कर्मफळ आपनारा ने तेमना उपरी जे मूळपुरुष तेमने ईश्वर कह्या छे. अने मूळपुरुष ईश्वरथी पर ब्रह्मकोटी ने तेथी पर मूळअक्षरना मुक्त ते सर्वेने मुक्त जीव कह्या छे. अने तेमना उपरि जे मूळअक्षर तेने अक्षर कह्या छे. अने ते अक्षरने विषे ने मुक्त जीवने विषे तथा मूळपुरुष ईश्वरने विषे तथा माया बद्ध जीवने विषे श्रीजीमहाराज तेजद्वारे अन्वयपणे रह्या छे अने बद्ध जीव तेथी पर जे ईश्वर ने तेथी पर मुक्तजीव अने तेथी पर अक्षर अने ते अक्षरथी पर जे पोताना तेजरूप ब्रह्मज्योति जे अक्षरधाम तेने विषे दिव्य मूर्तिमान पोताना मुक्तोए सहित विराजमान छे ते श्रीजीमहाराजनुं व्यतिरेक स्वरूप छे. अने ते व्यतिरेक मुर्ति जे श्रीजीमहाराज तेमनो संबंध पोताना मुक्तोने छे पण बीजा जे आगळ कह्या ते कोइने नथी एमने तो अन्वयस्वरूपनो संबंध छे.

२ प्र० जीव, ईश्वर ने अक्षरनुं अन्वय ने व्यतिरेक स्वरूप कह्युं ते ए बे स्वरूप जुदां जुदां हशे के केम ? अने जीवनुं एक स्वरूप जन्म मरण भोगवतुं हशे ने एकने नहि भोगववुं पडतुं होय ? अने ईश्वरना अन्वय स्वरूपनेज उत्पत्त्यादिक प्रवृत्तिनी उपाधि हशे अने व्यतिरेकने ए प्रवृत्तिनो संबंध नहि होय ? अने अक्षरना अन्वय स्वरूपनेज प्रेरणा करवी पडती हशे अने

व्यतिरेक स्वरूपने तेनो संबंध नहि होय ? ते कांइ समजातुं नथी माटे कृपा करीने समजावो.

२ उ० जीवने जन्म मरण भोगववुं पडे ते एवुं अन्वयपणुं कह्युं छे पण अन्वयने व्यतिरेक बे स्वरूप नथी. ते ज्यारे मायाना बंधनथी मुकाय, त्यारे जन्म मरणरूप उपाधि टळे, अने ईश्वरने उत्पत्त्यादिक करवां ते पोतानी सत्ताए करीने पोतेज करे छे ते सत्ताने अन्वय स्वरूप कहे छे ते ज्यारे उत्पत्त्यादिक प्रवृत्ति मुकी दे त्यारेज तेने उपाधि टळे, अने अक्षर पण पोताना तेजरूप सत्ताए करीने पोतेज प्रेरणा करे छे, माटे शक्तिमानने व्यतिरेक स्वरूप कहे छे अने शक्तिने अन्वय स्वरूप कहे छे पण बे स्वरूप जुदां नथी ते ज्यारे ए प्रेरकपणुं मुकीने ब्रह्म जे श्रीजीमहाराजनुं तेज ते रूप थइने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां जोडाय त्यारे श्रीजीमहाराजना परम एकांतिक मुक्त थाय, त्यारेज उपाधिथी रहित थाय. अने श्रीजीमहाराजने के तेजरूप शक्तिने उपाधि छेज नहि अने अक्षरना व्यतिरेक स्वरूपमां एक श्रीजीमहाराज रहे छे एम कह्युं छे ते अन्वयपणे साक्षीरूपे रह्या छे ते स्वरूप जाणवुं.

३ प्र० (३/पृ त्रीजा प्रश्नमां) श्रीजीमहाराजनुं महात्म्य जाणीने दर्शनादिक करे तेने दर्शननुं फळ छे एम कह्युं ते फळ कियुं जाणवुं ? ने बीजफळ शुं जाणवुं ?

३ उ० महिमा समजीने दर्शन स्पर्श श्रवणादिक करे ते कोइ काळे विसरी जाय नहि ते फळ कह्युं छे, अने देहने अंते तेनो मोक्ष थाय. अने महिमा जाण्या विना दर्शनादिक करे तेने दर्शनादिक करेलुं विसरी जाय पण ते जीव कल्याणने मार्गे चाले ने तेनुं जन्मांतरे कल्याण थाय ते बीजफळ जाणवुं.

४ प्र० जीवने विषे श्रीजीमहाराज विना बीजा अक्षरादिकनुं अंतर्यामीपणुं छे ते क्यारे टळे ?

४ उ० श्रीजीमहाराजनो आशरो करे पण [illegible] श्रीकृष्ण जेवा जाणे त्यां सुधी पोताने मूळपुरुषना तेजरूप माने तेथी पुरुषनुं अंतर्यामीपणुं टळे नहि, अने श्रीजीमहाराजने पुरुषथी पर जे ब्रह्म तेवा जाणे त्यां सुधी ब्रह्मना प्रकाशरूप पोताने माने त्यारे पुरुषनुं अंतर्यामीपणुं टळी जाय पण ब्रह्मनुं रहे, अने मूळअक्षर जेवा श्रीजीमहाराजने जाणे त्यारे अक्षरना तेजरूप पोताने माने त्यारे ब्रह्मनुं टळी जाय ने अक्षरनुं रहे, अने ज्यारे श्रीजीमहाराजने अक्षरथी पर समजे ने तेमनां तेजरूप पोताने माने त्यारे श्रीजीमहाराज विना बीजा कोइनुं अंतर्यामीपणुं रहेतुं नथी. ॥ ८३ ॥

संवत् १८७७ ना श्रावण वदि १० दशमीने दिवस श्रीजीमहाराज गाम श्रीसारंगपुर मध्ये जीवाखाचरना दरबारमां उत्तरादेद्वार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी [illegible] प्रश्न पुछ्यो जे, (१) एक एक अवस्थाने विषे बीजी बेबे अवस्थाओ केम रही छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, आ जीवात्मा जे ते येने विषे

रहीने विषय भोगने भोगवे छे तेने अवस्था कहीए ते अवस्था जाग्रत, स्वप्नने सुषुप्ति ए त्रण प्रकारनी छे. तेमां जे जाग्रत अवस्था छे ते वैराज पुरूषनी जे स्थिति अवस्था तेनुं कार्य छे ने सत्त्वगुणात्मक छे ने नेत्र स्थानकने विषे रही छे, एवी जे जाग्रत अवस्था तेने विषे विश्वाभिमानी नामे जे आ जीवात्मा ते जे ते स्थूळ देहना अभिमाने सहित थको दश इंद्रियोने चार अंतःकरणे करीने विवेके सहित यथार्थपणे पोताना पूर्व कर्मने अनुसारे बाह्य शब्दादिक पंच विषयना भोगने भोगवे छे तेने सत्त्वगुण प्रधान एवी जाग्रत अवस्था कहीए, अने ए जाग्रतने विषे जो ए जीवात्मा भ्रांतिए करीने अयथार्थपणे बाह्य विषय भोगने भोगवे छे तो तेने जाग्रतने विषे स्वप्न कहीए, अने ए जीवात्मा जे ते जाग्रतने विषे शोक तथा श्रमादिके करीने विवेके रहित थको जो बाह्य विषय भोगने भोगवे छे तो तेने जाग्रतने विषे सुषुप्ति कहीए. अने जे स्वप्न अवस्था छे ते हिरण्यगर्भनी जे उत्पत्ति अवस्था तेनुं कार्य छे ने रजोगुणात्मक छे ने कंठ स्थानकने विषे रही छे, एवी जे स्वप्न अवस्था तेने विषे तैजसाभिमानी नामे जे जीवात्मा ते सूक्ष्म देहना अभिमाने सहित रह्यो थको इंद्रियो अंतःकरणे करीने पूर्व कर्मने अनुसारे सुखदुःखरुप वासनामय भोगने भोगवे छे तेने रजोगुण प्रधान स्वप्न अवस्था कहीए, अने ए स्वप्नने विषे ए जीवात्मा जे ते ज्यारे जाग्रतनी पेठेज विवेके करीने जाणतो थको वासनामय भोगने भोगवे छे, त्यारे तेने स्वप्नने विषे जाग्रत अवस्था कहीए, अने ए स्वप्नने विषे जणाणा जे वासनामय भोग तेने ए जीवात्मा जे ते भोगवतो थको पण जो जडपणे करीने न जाणे तो तेने स्वप्नने विषे सुषुप्ति कहीए. अने सुषुप्ति अवस्था छे ते ईश्वरनी जे प्रलय अवस्था तेनुं कार्य छे ने तमोगुणात्मक छे ने हृदय स्थानकने विषे रही छे, एवी जे सुषुप्ति अवस्था ते ज्यारे ए जीवने आवेछे त्यारे इंद्रियो अंतःकरणनी जे वृत्तियो तथा विषय भोगनी वासना तथा ज्ञातापणुं ने कर्त्तापणुं ए सर्वे कारण देहने विषे लीन थइ जाय छे अने ते कारण देहनो अभिमानी जे प्राज्ञ नामे जीवात्मा तेनुं माया सबळ ब्रह्मना सुखलेशने विषे अतिशे लीनपणुं थइ जाय छे तेने तमोगुणप्रधान सुषुप्ति अवस्था कहीए, अने ए सुषुप्तिने विषे कर्म संस्कारे करीने कर्त्ता-वृत्तिनुं जे उत्पन्न थावुं तेने सुषुप्तिने विषे स्वप्न कहीए, अने जाग्रत ने स्वप्नने विषे जे पीडा तेना ताप थकी वळी ते सुषुप्तिना सुखने विषे प्रवेश करती जे कर्त्तावृत्ति तेना प्रतिलोमपणानुं जे ज्ञान तेने सुषुप्तिने विषे जाग्रत कहीए, एवी रीते एक एक अवस्थाने विषे बीजी बेबे अवस्थाओ रही छे. (१) अने ए जे अवस्थाना भेद तेनुं जे ज्ञान १ ते जीवात्माने जे थते थाय छे अने वळी तेते अवस्थाने विषे ए जीवने कर्मानुसारे जे फळना पमाडनारा छे तेने तुर्यपद कहे छे, अंतर्यामी कहे छे, दृष्टा कहे छे, ब्रह्म कहे छे, पर ब्रह्म कहे छे. (२) २

२ पछी वळी नित्यानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे, (२) परा, पश्यंती, मध्यमा ने वैखरी ए जे चार वाणी तेने केम समझवी ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ए वार्ता तो बहु मोटी छे ने अतिशे सूक्ष्म छे ने श्रीमद्भागवतना एकादश स्कंधने विषे श्रीकृष्ण भगवाने उद्धवजी प्रत्ये कही छे तेने संक्षेपे करीने कहीए ते सांभळो जे, प्रथम उत्पत्ति काळने विषे पुरुषोत्तम भगवान जे ते वैराज पुरुषना मस्तकने विषे रह्युं जे सहस्रदळ्युं कमळ तेने विषे प्रवेश करीने अक्षर ब्रह्मात्मक एवो जे नाद तेने करता हवा. पछी ते नाद जे ते सुषुम्णा मार्गे करीने ते विराट् पुरुषना नाभिकंद प्रत्ये व्यापीने महा प्राणे सहित थको त्यांथी उंचो वृद्धिने पामतो हवो तेणे करीने ते विराट् पुरुषनुं जे नाभिपद्म ते अधोमुख हतुं ते उर्ध्वमुख थातुं हवुं. एवी रीते ते विराट् पुरुषना नाभिकंदने विषे जे नाद थयो तेने परा वाणी कहीए. अने ते परावाणी जे ते वेदनी उत्पत्तिने अर्थे पोते भगवाने बीजरूपे करीने प्रकाशी छे ने तेजना प्रवाहरूप छे ने अर्धमात्रारूप छे. पछी ते परावाणी जे ते त्यां थकी ते विराट्ना हृदयाकाशने पामीने पश्यंती नामे थाती हवी. ने त्यांथी कंठ देशने पामीने मध्यमा नामे थाती हवी. ने त्यांथी ते विराट्ना मुखने पामीने वैखरी संज्ञाने पामती हवी. अने अकार उकार, ने मकार, ए त्रण वर्णरूपे थइने प्रणव रूपे थाती हवी ने पछी बावन अक्षररूपे थइने चार वेदरूपे थाती हवी. एवी रीते विराट् पुरुषने विषे परा, पश्यंती, मध्यमा ने वैखरी, ए चार वाणी समझवी. (३) ३
हवे आ जीवना देहने विषे पण चार वाणी कहीए ते सांभळो जे, एना ए पुरुषोत्तम भगवान ते जीवने विषे अंतर्यामीरूपे करीने रह्या छे. ने ए जीवनी जे त्रण अवस्था तेने विषे स्वतंत्र थका अनुस्यूत छे, एवा जे भगवान तेज जीवना कल्याणने अर्थे पृथ्वीने विषे अवतार धारे छे, त्यारे ए जीव जे ते भगवानना स्वरूपनुं जे प्रतिपादन करे तथा ते भगवाननां जे धाम गुण ने ऐश्वर्य तेनुं प्रतिपादन करे तथा तेना चरित्रनुं वर्णन करे तथा आत्मा अनात्मानो विवेक करी देखाडे तथा जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म परब्रह्म तेना भेदने पृथक् पृथक् कही देखाडे, एवी जे वाणी तेने परावाणी कहीए. अने जे मायिक पदार्थ तथा विषय तेमने विवेके सहित यथार्थ पणे कही देखाडे तेने वैखरी वाणी कहीए. अने पदार्थने ने विषयने भ्रांतिए सहित अयथार्थपणे कही देखाडे तेने मध्यमा वाणी कहीए. अने ए पदार्थने ने विषयने अंधधंध सरखुं कही देखाडे ने कांइ समझ्यामां न आवे तेने पश्यंती वाणी कहीए. एवी रीते जीवनी जाग्रत अवस्थाने विषे ए चार वाणीनुं रूप समझ्यामां आवे छे ने स्वप्नने सुषुप्ति ने विषे तो कोइक समाधिवाळाने ए चार वाणीनां रूप समझ्यामां आवे पण बीजाने समझ्यामां आवतां नथी. (४) इति वचनामृतम्. ॥ ६ ॥. ॥ ८४ ॥. ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे स्थूळ देहे विवेके सहित पूर्व कर्मानुसारे बाह्य पंच विषयना भोगने भोगवे ते सत्त्वगुण प्रधान जाग्रत अवस्था कही छेने तेमां भ्रांतिए करीने अयथार्थपणे भोग भोगवाय ते जाग्रतमां स्वप्न अवस्था कही छे, ने जाग्रतमां विवेक रहित भोग भोगवाय ते जाग्रतमां सुषुप्ति कही छे, आ स्थूळ देहनी विक्ति छे अने सूक्ष्म देहमां पूर्व कर्मानुसारे वासनामय भोग भोगवे ते रजोगुण प्रधान स्वप्न अवस्था छेने स्वप्नमां विवेके सहित वासनामय भोग भोगवे ते स्वप्नमां जाग्रत अवस्था छे ने स्वप्नना भोगने भोगवतो थको जाणे नहि ते स्वप्नमां सुषुप्ति अवस्था छे, अने इंद्रियो अंतःकरणनी वृत्तियो तथा वासना तथा ज्ञातापणुं ने कर्त्तापणुं ए सर्व कारण देहमां लीन थइ जाय ते तमोगुणप्रधान सुषुप्ति अवस्था छे अने ए सुषुप्तिने विषे कर्त्तावृत्ति उत्पन्न थाय ते सुषुप्तिमां स्वप्न छे अने जाग्रतने स्वप्ननी पीडाना तापनी वृत्ति सुषुप्तिना सुखमां प्रवेश करे तेना प्रतिलोमपणानुं ज्ञान थाय ते सुषुप्तिमां जाग्रत अवस्था छे. आ कारण देहनी विक्ति छे. (१) अने आ अवस्थाओना भेदनुं ज्ञान आपनारा अने आ अवस्थाओने विषे जीवोने कर्म फळने आपनारा मूळपुरुष द्वाराए अमे छीए. (२) बीजामां वैराज पुरुषनी चार वाणीनुं रूप कर्युं छे. (३) अने जीवनी चार वाणीनां रूप कर्यां छे. (४) आवतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां जीवनी जाग्रत अवस्थाने वैराजनी स्थिति अवस्थानुं कार्य कही, अने स्वप्न अवस्थाने हिरण्यगर्भनी उत्पत्ति अवस्थानुं कार्य कही अने सुषुप्ति अवस्थाने ईश्वरनी प्रलय अवस्थानुं कार्य कही ते वैराज, हिरण्यगर्भ अने ईश्वर किया जाणवा ?

१ उ० वैराजनी स्थिति अवस्थाने जीवनी जाग्रत अवस्था ते प्रद्युम्नने स्थिति अवस्थानुं कार्य छे, माटे आ ठेकाणे वैराज नामे प्रद्युम्नने कह्या छे. अने वैराजनी उत्पत्ति अवस्था अने जीवनी स्वप्न अवस्था ते अनिरुद्धनी उत्पत्ति अवस्थानुं कार्य छे, माटे आ ठेकाणे हिरण्यगर्भ नामे अनिरुद्धने कह्या छे. अने वैराजनी प्रलय अवस्थाने जीवनी सुषुप्ति अवस्था ते संकर्षणनी प्रलय अवस्थानुं कार्य छे माटे ईश्वर नामे संकर्षणने कह्या छे.

२ प्र० माया सबलित ब्रह्म कह्या ते कोने जाणवा ?

२ उ० प्रधानना पति पुरुषने माया सबलित ब्रह्म कह्या छे.

३ प्र० (२/१ पहेला प्रश्नमां) तुर्यपद, दृष्टा, अंतर्यामी, ब्रह्म तथा परब्रह्म कह्या ते कोने जाणवा ?

३ उ० ए सर्वे नामे मूळपुरुषने कह्या छे.

४ प्र० (२/१ बीजा प्रश्नमां) अक्षर ब्रह्मात्मक नाद कह्यो तेनो अर्थ शो समझवो ?

४ उ० श्रीजीमहाराजनी मूर्त्तिना तेजनो घोष थाय छे तेने नाद कह्यो छे. ते नाद श्रीजीमहाराजना तेजरूप अक्षरब्रह्ममांथी थाय छे, माटे अक्षरब्रह्मात्मक कह्यो छे ते नाद मूळअक्षर द्वारे मूळपुरुषमां आवे छे अने मूळपुरुष द्वारे वैराज पुरुषने विषे आवे छे. ॥८४॥

संवत् १८७७ ना श्रावण वदि ११ एकादशीने दिवस रात्रिने समे श्रीजीमहाराज गाम श्रीसारंगपुर मध्ये जीवाखाचरना दरबारमां उत्तरादे बार ओरडानी ओसरीए

ढोलिया उपर विराजमान हता. अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने श्रीजीमहाराजे श्रीमद्भागवत् पुराणना प्रथम स्कंधनी कथा वंचाववानो आरंभ कराव्यो हतो त्यारे तेमां एम वार्ता आवी जे ज्यां मनोमयचक्रनी धारा कुंठित थाय
१ त्यां नैमिषारण्य क्षेत्र जाणवुं. ए वार्ताने सांभळीने मुक्तानंदस्वामीए पुछयुं जे, (१) हे महाराज ! ए मनोमय चक्र ते शुं छे ? ने एनी धारा ते शी समजवी ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, मनोमय चक्र ते मनने जाणवुं. ने एनी धारा ते दश इंद्रियो छे,
एम जाणवुं. (१) अने ते इंद्रियो रूप जे मननी धारा ते जे ठेकाणे घसाइने बुंठी थइ १
जाय, तेने नैमिषारण्य क्षेत्र जाणवुं. ते ठेकाणे जप, तप, व्रत, ध्यान, पूजा ए आदिक जे सुकृत तेनो जे आरंभ करे, ते दिनदिन प्रत्ये वृद्धि पामे. एवुं जे नैमिषारण्य क्षेत्र ते जे ठेकाणे भगवानना एकांतिक साधु रहेता होय ते ठेकाणे जाणवुं, अने ज्यारे मनोमय चक्रनी इंद्रियो रूप जे धारा ते बुंठी थइ जाय त्यारे शब्द, स्पर्श, रूप, रस, ने गंध, ए पंच विषयने विषे क्यांइ प्रीति रहे नहि अने ज्यारे कोइ रूपवान स्त्री देखाय अथवा वस्त्र अलंकारादिक अति सुंदर पदार्थ देखाय त्यारे मूळगो तेना मनमां अतिशे अभाव आवे. पण तेमां इंद्रियोनी वृत्ति जइने चोटे नहि, जेम अति तीखी अणीवाळुं बाण होय ते जे पदार्थमां चोटाडे ते पदार्थने विंधीने मांही प्रवेश करी जाय छे, ते पाछुं काढयुं पण निसरे नहि अने तेना ते बाणमांथी फळ काढी लीधुं होय, ने पछी बोथुं रह्युं होय, तेनो भितमां घा करे तो त्यांथी उथडकीने पाछुं पडे छे. पण जेम फळ सोतुं भितने विषे चोंटी जाय छे तेम चोटे नहि, तेम ज्यारे मनोमय चक्रनी धारा जे इंद्रियो ते बुंठी थइ जाय त्यारे गमे तेवो श्रेष्ठ विषय होय, तेमां पण इंद्रियोनी वृत्ति चोटे नहि. अने बोथानी पेठे इंद्रियोनी वृत्तियो पाछी हठे एवुं वर्ताय त्यारे जाणीए जे मनोमय चक्रनी धारा कुंठित
थइ गइ. (२) एवुं संतना समागमरूपी नैमिषारण्य क्षेत्र ज्यां देखाय त्यां कल्याणने २
इच्छवुं ने त्यां अति दृढ मन करीने रहेवुं. (३) इति वचनामृतम्. ॥७॥. (८५) ३

रहस्यार्थ. प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के मनोमय चक्र ते मन छे. अने दश इंद्रियो ते एनी धारा छे. (१) अने ते धारा एकांतिक संतना समागमथी बुंठी थाय छे. एवा संत ज्यां रहेता होय ते नैमिषारण्य क्षेत्र छे. (२) अने त्यां कल्याणने इच्छवुं ने त्यांज दृढ मन करीने रहेवुं. (३) बाबतो छे. ॥ ८५ ॥

संवत् १८७७ ना श्रावण वदि १२ द्वादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीसारंगपुर मध्ये जीवाखाचरना उत्तरादे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी

आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी चैतन्यानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे, (१) हे महाराज ! ईर्ष्यानुं शुं रूप
छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेना हृदयमां मान होय ते मानमांथी ईर्ष्या प्रवर्त्ते
छे अने क्रोध, मत्सर ने असूया ते पण मानथी प्रवर्ते छे. ते ईर्ष्यानुं ए रूप छे जे, पोताथी
जे मोटा होय पण तेनुं ज्यारे सन्मान थाय त्यारे तेने देखी शके नहि एवो जेनो स्वभाव
होय तेने एम जाणवो जे आना हइयामां ईर्ष्या छे अने यथार्थ ईर्ष्यावाळो होय तेतो
कोइनी मोटाइने देखी शकेज नहि. (१) इति वचनामृतम् ॥८॥ ८६ ॥ १

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां ईर्ष्यानी ने क्रोध, मत्सर ने असूयानी
प्रवृत्तिनो हेतु कह्यो छे अने ईर्ष्यानुं रुप कर्युं छे. (१) बाबत छे. ॥ ८६ ॥

संवत् १८७७ ना श्रावण वदि १३ तेरशने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महा-
राज पोताना भक्तजनने सुख देवाने अर्थे सारंगपुरथी चाल्या ते गाम श्रीकुंडळ पधार्या
ने ते कुंडळ मध्ये अमरापटगरना आथमणा ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर उत्तर
मुखारविंदे विराजमान हता अने मस्तक उपर धोळी पाघ बांधी हती तथा धोळी पछेडी
ओढी हती तथा धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा
देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे, [१] हे महाराज ! जीवना हृदयमां युगना
धर्म प्रवर्ते छे तेनुं शुं कारण छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, युगना धर्म प्रवर्त्ते छे तेनुं
कारण तो गुण छे ते ज्यारे शुद्ध सत्त्वगुण वर्त्तता होय त्यारे तेना हइयामां सत्ययुगनी
प्रवृत्ति होय अने ज्यारे सत्त्व ने रज भेळा वर्त्तता होय त्यारे तेना हइयामां त्रेतायुगनी
प्रवृत्ति होय अने ज्यारे एकलो रजोगुण वर्त्ततो होय त्यारे तेना हइयामां द्वापरयुगनी प्रवृत्ति
होय अने ज्यारे एकलो तमोगुण वर्त्ततो होय त्यारे तेना हइयामां कळियुगनी प्रवृत्ति होय
एम गुणे करीने युगनी प्रवृत्ति छे. (१) १

२ पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे, (२) गुणनी प्रवृत्ति थयानो शो हेतु छे ?
पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, गुणनी प्रवृत्तिनुं कारण तो कर्म छे ते जेवां पूर्व कर्म होय
तेवा गुणनी प्रवृत्ति थाय छे. (२) माटे जेने रजोगुण ने तमोगुण वर्त्तता होय ने ते जो २
एकाग्र थइने भगवाननुं ध्यान करवा जाय तो थाय नहि माटे एवाने तो आत्मनिष्ठानुं
बळ राखवुं अने भगवानना महिमानुं बळ राखवुं ने एम समजवुं जे, हुं तो आत्मा छुं ते
मारे विषे मायाकृत उपाधि होय नहि अने हुं तो गुणातीत छुं अने भगवाननो महिमा
एम विचारवो जे, अजामेळ महा पापी हतो ने दिकराने योगे नारायण एवुं नाम लीधुं
ते सर्व पापथी छुटीने परमपदने पाम्यो, तो मुने तो ते भगवान प्रत्यक्ष मळ्या छे अने

रात दिवस ते भगवानतुं हुं नाम लउं छुं माटे हुंतो कृतार्थ थयो छुं एवी रीते विचारीने आनंदमां रहेवुं पण जेने तमोगुण रजोगुण वर्त्तता होय तेने ध्यान धारणाने अर्थे आग्रह करवो नहिं अने जेवुं बनी आवे तेवुं भजन स्मरण करवुं ने देहे करीने भगवाननी तथा संतनी परिचर्या श्रद्धाए सहित करवी ने पोत पोताना धर्ममां रहेवुं ने पोताने पूर्णकाम मानवुं. (३) ३

३ पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे, [३] जेने तामसि कर्म घणां होय तेना हृदयामां कळियुग वर्त्ते ते कोइ उपाये टळे के न टळे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जो एने संत तथा परमेश्वरना वचनने विषे अतिशे श्रद्धा होय अने अति दृढ विश्वास होय तो गमे तेवां तामसि कर्म होय पण तेनो नाश थइ जाय अने कळियुगना धर्म मटीने सत्ययुगना धर्म होय ते वर्त्ते, माटे अति साचे भावे करीने सत्संग करेतो तेने कोइ जातनो दोष हृदयामां रहे नहिं अने देह छतांज ब्रह्मरूप थइ जाय. (४) ४

४ पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए पुछ्युं जे, [४] स्थान ते केने कहीए ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, चारवर्ण ने चारआश्रम ते ने जे पोतपोतानो धर्म तेने स्थान जाणवुं अने तमे त्यागी छो ते तमथी जो त्यागनो पक्ष मुकीने गृहस्थने मार्गे चलाय तो ते स्थानथकी भ्रष्ट थवाणुं एम जाणवुं माटे गमे तेवो आपत्काळ पडे अथवा अमे आज्ञा करीए तो पण तमारे पोताना धर्ममांथी चळवुं नहि अने जेम गृहस्थ वस्त्र तथा अलंकारे करीने अमारी पूजा करवाने इच्छे, तेम तमारे इच्छवुं नहि तमारे तो पत्र पुष्प, फळने जळे करीने पूजा करवी ने एवी पूजाए करीनेज आनंद मानवो पण पोताना धर्मथी चळायमान थइने परमेश्वरनी पूजा करवी ए ठीक नहि माटे सर्वेने पोताना धर्ममां रह्या थका जेटली पूजा थाय तेटली करवी ए अमारी आज्ञा छे तेने दृढ करीने सर्वे राखज्यो. (५) ५

इति वचनामृतम् ॥९॥ [८७]

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (४) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के गुणे करीने युगनी प्रवृत्ति छे. (१) बीजामां कर्मे करीने गुणनी प्रवृत्ति छे. (२) अने ध्यान करवा न दे एवा गुण जेने वर्त्तता होय तेणे पोताने गुणातीत मानवुं अने अमारो महिमा समजवो जे, जेमनुं नाम लीधाथी सर्वे पाप बळी जाय एवा आ भगवान श्रीस्वामिनारायण ते मने प्रत्यक्ष मळ्या छे, एवो अमारो महिमा समजीने अमारी आज्ञामां रहीने पोताने पूर्णकाम मानवुं. (३) त्रीजामां अमारा संतनो समागम करेतो देह छतां ब्रह्मरूप थइ जाय. (४) चोथामां गृहस्थनी पेठे त्यागीए वस्त्र अलंकारे करीने अमारी पूजा करवी नहि. पत्र, पुष्प, फळ ने जळे करीनेज करवी पण पोताना स्थान एटले धर्मथी चळवुं नहि. (५) बाबतो छे.

१ प्र० ($\frac{३}{१}$ बीजा प्रश्नमां) पोताना आत्माने गुणातीत मानवानुं कह्युं ते गुणातीतनो अर्थ शो समजवो ?

१ उ० मायाना त्रण गुणथी पोताना जीवात्माने पर मानवो ते गुणातीत कह्यो छे.

२ प्र० अजामेळे नारायण नाम लीधुं ते भगवान मने प्रत्यक्ष मळ्या छे एम कह्युं ते अजामेळे तो परोक्ष नाम लीधुं हतुं तेमां श्रीजीमहाराजनो महिमा शो आव्यो ? अने ते परमपद पाम्यो ते किंयुं जाणवुं. ?

२ उ० नारायण आदि सर्व नाम श्रीजीमहाराजनां छे. ते परद्वारानी बीजी वातमां कह्यां छे ते पोतानां नाम सर्व अवतारोने आपेलां छे. ते नामना नामी श्रीजीमहाराज मने प्रत्यक्ष मळ्या छे एम महिमा समजे. अने अजामेळ यमयातनाना दुःखथी मुकाइने विष्णुना वैकुंठ धामने पाम्यो, ते इंद्रादिकना लोकथी पर छे, तेथी परमपद कह्युं छे.

३ प्र० (दुं चोथा प्रश्नमां) त्यागीए वस्त्र अलंकारे करीने अमारी पूजा न करवी, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते साधु हरिकृष्ण महाराजनी मूर्ति पूजवा राखे ते मूर्तिने जरीयानी वस्त्र घरेणां पहेरावाय के नहि ?

३ उ० हरिकृष्ण महाराजनी मूर्ति पोते पूजवा राखी होय तो ते मूर्तिने साचा खोटा तार विनानां वस्त्र धरावबां, पण जरीयानी वस्त्र के साचां के खोटां घरेणां पहेरावबां नहि अने काष्ट पात्रथी नवरावबा अने मंदिरोमां पूजा करवा रह्या होय ते मूर्तियोने वस्त्र घरेणां पहेरावे, तेनो बाध नहि. ॥ ८७ ॥

संवत् १८७७ ना श्रावण वदि १४ चौदशने दिवस श्रीजीमहाराज सर्वे संतनुं मंडळ लेइने गाम कुंडळथी चाल्या ते वाटमां गाम खांभडे आव्या ने त्यां पींपरना वृक्ष हेठे उतर्या. पछी ते गामना माणसे ढोलियो लावीने ते उपर पधराव्या अने ते समे श्रीजीमहाराजे सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. ने पोताने चारे कोरे साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. ने साधु कीर्त्तन गाता हता.

१ ते कीर्त्तन रखावीने श्रीजीमहाराजे ते गामना माणस आगळ वात करी जे, (१) आ संसारने विषे धर्मवाळा ने अधर्मी ए बे प्रकारनां माणस छे तेमां धर्मवाळा जे माणस होय तेतो चोरी तथा परस्त्रीनो संग तथा चाडीचुगली आदिक सर्वे पापनो त्याग करीने ने परमेश्वरथी डरीने धर्म मर्यादामां चाले छे तेनो संसारमां जे पोताना कुटुंबी होय अथवा कोइ बीजा होय, पण ते सर्वे विश्वास करे ने ते जे बोले ते वचन सौने सत्यज भासे अने एवा जे धर्मवाळा होय तेनेज साचा संतनो समागम गमे, अने जे अधर्मी माणस होय तेतो चोरी, परस्त्रीनो संग, मद्यमांसनुं भक्षण, वटलवुं वटलाववुं ए आदिक जे सर्वे कुकर्म तेने विषेज भरपुर होय ने तेनो संसारमां कोइ विश्वास करेज नहि ने एनां सगां होय ते पण कोइ एनो विश्वास न करे अने एवा जे अधर्मी होय तेने साचा संतनो समागमतो गमेज नहि. अने जो कोइ बीजो ते संतनो समागम करे तो तेनो पण द्रोह करे. [१] माटे जेने कल्याणने इच्छवुं तेने अधर्मीने मार्गे चालवुंज नहि. १
अने धर्मवाळाने मार्गे चालीने साचा संतनो समागम करवो तो निश्चेज ए जीवनुं कल्याण

थाय, एमां कांइ संशय नथी. एटली वार्ता करी तेने सांभळीने ते गामनां केटलांक माणसे श्रीजीमहाराजनो आश्रय कर्यो. (२) पछी त्यांथी श्रीजीमहाराज पाछा सारंगपुर पधार्या. पछी जीवाखाचरना दरबारमां उत्तरादे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान थया ने ते समे पोते सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

२ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, [२] गोलोक, वैकुंठ, श्वेतद्वीप, ब्रह्मपुर ए सर्वे जे भगवाननां धाम तेने बाह्यदृष्टिए करीने जोइए तो घणां छेटे छे अने आत्मदृष्टिए करीने जोइए तो एक अणु जेटलुं पण छेटुं नथी, माटे बाह्यदृष्टिवाळानी समझण छे ते मिथ्या छे. (३) अने आत्मदृष्टिवाळानी समझण छे ते सत्य छे अने जे साधु एम समझतो होय जे ३
मारा चैतन्यने विषे आ भगवान सदाय विराजमान छे ते जेम देहमां जीव होय तेम मारा जीवने विषे भगवान रह्या छे ने मारो जीव छे ते तो शरीर छे अने भगवान तो मारा जीवना शरीरी छे अने पोताना जीवात्माने स्थूळ, सूक्ष्म ने कारण ए त्रण शरीर थकी पृथक् माने अने तेने विषे अखंड भगवान विराजमान छे एम समझे तो ते संत थकी भगवान अथवा भगवानना धाम ते अणु मात्र छेटे नथी अने एवी रीतनो जे संत होय तेतो जेवा श्वेतद्वीपमां मुक्त छे ते सरखो छे अने एवा संतनुं दर्शन थयुं त्यारे एम जाणवुं जे मुने साक्षात्कार भगवाननुं दर्शन थयुं ने एवी समझणवाळो जे संत तेतो कृतार्थ छे. (४) अने जेने आवी समझण तो आवी शके नहि, ने जो ते संतना समागममां पडयो ४
रहे ने ते संत नित्य पांच खासडां मारे तो पण ते अपमाननुं सहन करे ने संतनो समागम मुकी शके नहि, जेम अफीणनो बंधाणी होय ते तेने मुकी शकतो नथी तेम ए पण कोइ रीते संतनो समागम तजी शके नहि तो जेवा प्रथम संत कह्या ते सरखो एने पण जाणवो अने जेवी प्राप्ति ते संतने थाय छे तेवीज जे संत समागममां पडयो रहे छे तेने पण थाय छे. (५) इति वचनामृतम्. ॥ १० ॥ (८८). ५

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (२) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे धर्मीने-अधर्मी ए बे प्रकारना माणसनां लक्षण कह्यां छे. (१) अने धर्मवाळाने मार्गे चालीने साचा संतनो समागम करवानुं कह्युं छे. (२) बीजामां बाह्यदृष्टिवाळानी समझण मिथ्या छे.(३) अने आत्मदृष्टिवाळानी समझण सत्य छे ने ए मुक्त छे ने एनुं दर्शन ते साक्षात् भगवान जे अमे ते अमारा जेवुंज छे. (४) ने जे एवा संतनुं अपमान सहन करीने एना समागममां पडयो रहे तेने पण ए संतना जेवो जाणवो अने ते संतना जेवीज एने प्राप्ति थाय छे. [५] बावतो छे.

१ प्र० ($\frac{२}{१}$ बीजा प्रश्नमां) गोलोक, वैकुंठ, श्वेतद्वीप, ब्रह्मपुर धाम कह्यां ते कोनां जाणवां ?
१ उ० मूळपुरुषना धामने गोलोक कह्युं छे ने विष्णुना धामने वैकुंठ कह्युं छे अने श्रीजीम-

हाराजना अक्षरधामने आ ठेकाणे श्वेतद्वीप नामे कह्युं छे अने वासुदेव ब्रह्मना धामने ब्रह्मपुर नामे कह्युं छे.

२ प्र० बाह्यदृष्टिवाळाने धाम घणां छेटे छे अने आत्मदृष्टिवाळाने अणु जेटलुं छेटुं नथी एम कह्युं, ते बाह्यदृष्टिवाळाने छेटे शी रीते हशे ?

२ उ० बाह्यदृष्टिवाळो पृथ्वी, जळ, तेज, वायु, आकाशादिक सर्वे आवरणथी पर भगवानतुं धाम छे ते देह मुकशुं ने श्रीजीमहाराज तेडवा आवशे त्यारे ए आवरण उल्लंघीने धाममां जवाशे एम समजे तेथी तेने भगवानतुं समीपपणुं रहेतुं नथी ए दोष छे, माटे एनी समजण मिथ्या कही छे; अने आत्मदृष्टिवाळो पोताना जीवात्माने अक्षरथी पर श्रीजीमहाराजना तेजरूप माने छे ने तेमां श्रीजीमहाराज रह्या छे एम माने छे तेथी एने श्रीजीमहाराजनुं समीपपणुं रहे छे पण आवरण रहेतुं नथी माटे एनी समजण सत्य छे.

३ प्र० (२/१ बीजा प्रश्नमां) आत्मदृष्टिवाळा संतने श्वेतद्वीपना मुक्त जेवो कह्यो ने एनुं दर्शन पोताना जेवुंज कह्युं अने तमे तो (सा० १ ना पहेला प्रश्नोत्तरमां) वासुदेवब्रह्मना साधनिक मुक्तो रह्या छे तेने श्वेतद्वीप कही गया छो ते श्वेतद्वीपना मुक्तनुं दर्शन तो श्रीजीमहाराजना दर्शन जेवुं न कहेवाय ते केवी रीते समजवुं ?

३ उ० श्वेत एवुं जे तेज तेनो द्वीप एटले समूह ते तेजना समूहने आ ठेकाणे श्वेतद्वीप कह्यो छे माटे श्वेतद्वीप एटले अक्षरधाम कह्युं छे ते अक्षरधाममां जेवा मुक्त छे तेवो एने कह्यो छे अने तेनुं दर्शन श्रीजीमहाराजे पोताना जेवुं कह्युं छे.

४ प्र० (३/१ बीजा प्रश्नमां) संत नित्य पांच खासडां मारे ने सहन करे एम कह्युं ते शुं समजवुं ?

४ उ० पंच विषयनुं खंडन करे ते खासडां मार्यां तुल्य वसमुं लागे ते खंडनरूपी खासडां कह्यां छे. ॥ ८८ ॥

संवत् १८७७ ना श्रावण वदि अमासने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजीमहाराज गाम श्री सारंगपुर मध्ये जीवाखाचरना दरबारमां उत्तरादे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे, [१] पुरुषप्रयत्न शास्त्रमां कह्युं छे ते पुरुषप्रयत्ने करीने केटलुं काम थाय छे ? अने परमेश्वरनी कृपाए करीने केटलुं काम थाय छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, सद्‌गुरु ने सत्शास्त्रने वचने करीने दृढ वैराग्यने पाम्यो होय अने दृढ श्रद्धावान होय अने अष्ट प्रकारनुं जे ब्रह्मचर्य तेने अति दृढ पाळतो होय अने अहिंसा धर्मने विषे दृढ प्रीतिवान होय अने आत्मनिष्ठा पण अति परिपक्व होय तो तेने मायेथी जन्ममरणनी निवृत्ति थइ जाय छे, जेम शाळने मायेथी फोतरुं उतर्युं ते शाळ पाछी उगे नहि तेम कह्या एवे गुणे करीने जे युक्त होय ते जन्ममरण थकी रहित थाय छे ने आत्मसत्ताने पामे छे आटलुं तो पुरुषप्रयत्ने करीने थाय

छे. [१] अने परमेश्वरनी कृपा पण जे एवे लक्षणे युक्त होय ते उपरज थाय छे ने १
ज्यारे परमेश्वरनी कृपा थाय त्यारे ए भगवाननो एकांतिक भक्त थाय छे अने श्रुतिए
कह्युं छे जे ॥ निरंजनः परमं साम्यमुपैति ॥ ए श्रुतिनो ए अर्थ छे जे अंजन जे माया
ते थकी जे रहित थयो ते भगवानना तुल्यपणाने पामे छे कहेतां जेम भगवान शुभ
अशुभ कर्मे करीने बंधाता नथी तेम ते मुक्त पण शुभ अशुभ कर्मे करीने बंधाय नहि,
अने जेम लक्ष्मीजी छे ते हेते करीने क्यारेक तो भगवानना स्वरूपमां लीन थइ जाय छे
ने क्यारेक तो नोखां रह्यां थकां भगवाननी सेवामां रहे छे, तेम ते भक्त पण अतिशे
हेते करीने भगवानने विषे क्यारेक तो लीन थइ जाय छे ने क्यारेक तो मूर्तिमान थको
भगवाननी सेवामां रहे छे अने जेम भगवान स्वतंत्र छे, तेम ए भगवाननो भक्त पण
स्वतंत्र थाय छे, आवी रीतनी जे सामर्थी ते तो भगवाननी कृपा थकी आवे छे. [२] २
२ पछी नित्यानंदस्वामीए पूछ्युं जे, [२] जेमां ए सर्वे अंग संपूर्ण होय तेनी उपर
तो भगवाननी कृपा थाय छे अने जो ए अंगमांथी कांइक न्यूनता होय तो तेनी शी
गति थाय छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, वैराग्य, ब्रह्मचर्य, श्रद्धा, अहिंसाधर्म ने
आत्मनिष्ठा एमांथी कोइ अंगमां न्यूनता होय तो आत्यंतिक मोक्ष जे भगवाननुं अक्षर-
धाम तेने तो न पामे अने ए विना बीजां जे भगवाननां धाम छे तेने पामे अथवा वधु
सवासनिक होय तो देवलोकने पामे जे देवलोकने भगवानना धाम आगळ मोक्षधर्मने
विषे नरक तुल्य कह्या छे. अने देवतामांथी मनुष्य थाय अने मनुष्यमांथी वळी देवता
थाय अने ॥ अनेक जन्मसंसिद्धस्ततो याति परांगतिम् ॥ ए श्लोकनो पण एज अर्थ
छे जे, जे भगवाननो भक्त सवासनिक होय ते नरक चोराशीमां तो न जाय अने देव-
तामां ने मनुष्यमां तो अनंत जन्म धरे पछी ज्यारे पूर्वे कह्यां एवां वैराग्यादिक लक्षणेयुक्त
थाय त्यारेज भगवाननी कृपानुं पात्र थाय ने पछी भगवाननो एकांतिक भक्त थइने गुणा-
तीत एवुं जे भगवाननुं अक्षरधाम तेने पामे छे माटे एक जन्मे अथवा अनंत जन्मे पण
जे दिवस प्रथम कह्यां एवे लक्षणे युक्त थइने अतिशे निर्वासनिक थाशे त्यारेज भगवाननी
कृपानुं पात्र थाशे ने आत्यंतिक मोक्षने पामशे पण ते विना तो नहिज पामे. [३] ३
३ पछी नृसिंहानंदस्वामीए पूछ्युं जे, (३) आ देहे करीनेज सर्व कसर मात्र मटी
जाय एवो कोइ उपाय छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जो खबरदार थइने मंडे तो
आ ने आ देहेज सर्वे कसर मटी जाय अथवा देह पर्यंत कसर न मटी होय ने अंत समेज
निर्वासनिक थाय ने भगवानने विषे अतिशे प्रीति थाय तो अंतकाळे पण भगवाननी
कृपा थाय ने भगवानना धामने पामे, माटे एक देहे अथवा अनंत देहे अथवा अंतसमे
एक घडी मृत्यु आडी रही होय त्यारे पण जो अतिशे भगवानने विषे वृत्ति

जोडाइ जाय तो ते भक्तने कोइ जातनी कसर रहेती नथी.[४]इति व० ॥११॥. [८९] ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [३] छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के, वैराग्य, श्रद्धा, ब्रह्मचर्य, अहिंसा ने आत्मनिष्ठा ए पांच साधन ते पुरुषप्रयत्न छे तेणे युक्त थाय ते जन्ममरणथी रहित थइने आत्मसत्ताने पामे छे एटले अमारा तेजरूप थाय छे. (१) ते उपरज्ञ अमारी कृपा थाय छे त्यारे अमारा तुल्यपणाने पामे छे ने अमारा जेवोज समर्थ थाय छे. (२) बीजामां ए अंगमां न्यूनता होय तो अमारा अक्षरधाम विना बीजा धामोने पामे छे ने वधु सवासनिक होय तो देवलोकने पामे छे. [३] त्रीजामां खबडदार थइने मंडे तो आ देहेज सर्वे कसर मटी जाय. (४) बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां वैराग्य, श्रद्धा, ब्रह्मचर्य, अहिंसा ने आत्मनिष्ठा ए पांच साधन कह्यां तेनां रूप शां हशे ?

१ उ० जीवकोटी तेथी पर मायाकोटी, तेथी पर इश्वरकोटी, तेथी पर ब्रह्मकोटी, तेथी पर अक्षरकोटी, तेथी पर ते सर्वेनुं आधार जे श्रीजीमहाराजनी मुर्तिनुं तेज तेमां पण प्रीति नहि एक श्रीजीमहाराज तथा मुक्तमांज प्रीति ए वैराग्यनुं रूप छे. अने श्रीजीमहाराज तथा मुक्तना वचनमां आस्तिक बुद्धि तेने आ ठेकाणे श्रद्धा कही छे. अने ब्रह्मचर्यनुं रूप (प्र० ७३ ना पहेला प्रश्नोत्तरमां) कर्युं छे. अने कोइ जीवप्राणीमात्रने मन, कर्म, वचने दुःखववो नहि ते अहिंसा जाणवी. ने पोताना जीवात्माने श्रीजीमहाराजना तेजरूप मानवो ते आत्मनिष्ठा जाणवी.

२ प्र० (³⁄₂ पहेला प्रश्नमां) शुभ अशुभ कर्मे करीने मुक्त बंधाता नथी एम कह्युं ते कर्म कियां जाणवां ?

२ उ० अशुभ एटले भुंडां पाप कर्म अने शुभ ते भगवानना संबंधे रहित सुकृत कर्म तेमां अशुभ कर्मे करीने नरकमां जवाय छे ने शुभ कर्मे करीने देवादिकना लोकमां जवाय छे, एवा कर्मवाळा जीव पोताने शरणे आवे तो ते जीवोने शुभ अशुभ कर्मनां फळ भोगवाव्या विनाज मुक्त करीने श्रीजीमहाराजने समीपे मुकी दे पण तेवा कर्मवाळा जीवोनो मोक्ष करवामां बंधाय एटले अटके नहि ते शुभ अशुभ कर्मे करीने नथी बंधाता एम जाणवुं.

३ प्र० क्यारेक मुक्त मुर्तिमां लीन रहे छे अने क्यारेक बहार रहे छे एम कह्युं ते केम समजवुं ?

३ उ० श्रीजीमहाराजनी मुर्तिमां रह्या थका सदा सुख भोगवे छे ते लीन समजवा ने सुखमां रह्या थकाज श्रीजीमहाराजना संकल्पथी अनंत जीवोना उद्धारने अर्थे अनंत ब्रह्मांडमां मनुष्य रूपे दर्शन आपीने श्रीजीमहाराजनी मुर्तिना सुखमां लइ जाय एवी सेवा करे छे ते बहार समजवा.

४ प्र० ज्यारे मुक्त श्रीजीमहाराजनी मुर्तिमां लीन थाय त्यारे तो मुर्ति व्याप्य थइ ने मुक्त व्यापक थया ते मोटो बाध आवे छे ते केवी रीते समजवुं ?

४ उ० पोताने विषे अतिशे प्रीतिवाळा भक्तने श्रीजीमहाराज दयाए करीने पोतानी मुर्तिने विषे राखे छे, पण मुक्त व्यापता नथी अने स्वामी होय ते पोताना सेवकने पोताने विषे लीन

करे एमां कांइ आश्चर्य नथी, जेम लक्ष्मीजी छे ते श्रीकृष्ण भगवाननां सेवक छे तेने श्रीकृष्ण भगवान पोताने विषे लीन करे छे तेणे करीने कांइ लक्ष्मीजी व्यापक न थयां ए तो उपरि होय ते पोताना सेवकने लीन करेज. ते (लो० १३ ना बीजा प्रश्नमां) मुक्तोने लीन करीए छीए एम कह्युं छे.

५ प्र० (३ बीजा प्रश्नमां) पांच अंगमांथी कोइक अंगमां न्यूनता होय तो अक्षरधाम विना बीजा धामने पामे ने वधु सवासनिक होय तो देवलोकने पामे एम कह्युं ते बीजां धाम कियां जाणवां ? अने देवलोक किया जाणवा ?

५ उ० बीजां धाम कह्यां ते बदरिकाश्रम तथा श्वेतद्वीप जाणवां अने देवलोक कह्या ते इंद्र ब्रह्मादिकना लोक जाणवा.

६ प्र० गुणातीत एवुं जे अक्षरधाम कह्युं ते गुणातीतनो अर्थ शो समजवो ?

६ उ० मायाना गुण थकी पर माटे गुणातीत कह्युं छे. आनो विशेष विस्तार (प्र० १२ ना सोळमा प्रश्नोत्तरमां) कर्यो छे. ॥८९॥

संवत् १८७७ ना भादरवा शुदि १ पडवाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीसारंगपुर मध्ये जीवाखाचरना दरबारमां उत्तरादे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर बिराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी निर्विकारानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे, (१) साधुने विषे किया गुण अखंड रहे छे ने किया गुण आवे जाय एवा छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एकतो आत्मनिष्ठा अने बीजो स्वधर्म ने त्रीजो भगवानना स्वरूपनो निश्चय ए त्रण गुणतो अखंड रहे छे अने बीजा गुणतो आवे खरा ने पाछा जाय पण खरा माटे बीजा गुणतो आव्या गया रहे छे अने ए त्रण गुणतो अखंड रहे छे. (१) १

२ पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे, (२) देहनीने आत्मानी नोखी विक्ति समझाणी होय तोय पण ते विक्तिने भुलीने पाछो देहाभिमानी केम थाय छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, देह आत्मानी विक्ति एकवार चोखी समझाणी होय तो पछी पाछी भुलाय नहि अने एम माने जे, हुं देह छुं तोपण देह पोतानुं रूप मनायज नहि अने भगवाननो निश्चय पण जो एकवार दृढ थयो होय तो पाछो टाळे तोपण टळे नहि अने एम जणाय छे जे आत्मबुद्धि मटीने देहबुद्धि आवी जाय छे एतो खोटो खोटो मनमां भ्रम पडे छे पण देहाभिमानतो आवतुंज नथी अने एवो जे परिपक्व ज्ञानी तेने तो आत्मानुंज अभिमान दृढ रहे छे. (२) ने ते पोताना आत्माने ब्रह्मरूप माने छे अने ते ब्रह्मने विषे २ परब्रह्म जे पुरुषोत्तम भगवान ते अखंड बिराजमान छे अने ते भगवानना स्वरूपनो निश्चय पण एने अखंड ने अखंड रहे छे. [३] ३

३ पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए पुछ्युं जे, (३) पोताना आत्मानो विचार केम करवो ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ज्यारे अंतःकरण सामुं दृष्टा एवो जे जीवात्मा ते जोइ रहे त्यारे बहार जे स्थूळ शरीर अने ते संबंधी जे विषय ते सर्वे विसरी जायछे अने अंतःकरणने दृष्टा ए बेना वचमां जे विचार ठरे छे ते विचारे करीने मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार ए सर्वेना रूपने जाणवां पछी विचारनी दृष्टिए ए अंतःकरणना घाट सामुं जोतां जोतां ज्यारे घाट बंध थइ जाय त्यारे भगवाननी मूर्त्तिनुं ध्यान करवुं अने ज्यां सुधी घाट संकल्पनुं बळ होय त्यां सुधी तो संकल्प सामुं जोइ रहेवुं पण ध्यान न करवुं अने जे बहार स्थूळ देहने विषे पंच ज्ञान इंद्रियो छे ते ज्यारे पोतपोताना विषय सामां जाय छे त्यारे विचारने बे प्रकारे करवो एकतो जे विषयने आकारे इंद्रियो थयां होय ते विषयने आकारे विचार करवो अने बीजो ते इंद्रियोना गोलकने विषे जे जोनारो दृष्टा छे ते दृष्टाने आकारे विचार करवो पछी विषयने आकारे ने दृष्टाने आकारे ए बे प्रकारे जे विचार छे ते एक थइ जाय छे पछी ते विषयमांथी वृत्ति अतिशे तुटी जाय छे, एम विचार्या विना जो बळात्कारे करीने विषयमांथी वृत्तिने तोडे तो ते वृत्तिने विषयमांथी प्रीति मटे नहि अने ज्यारे विचारीने वृत्तिने पाछी वाळे त्यारे ते वृत्ति पाछी विषयमां जोडायज नहि, माटे ज्यां सुधी इंद्रियोनी वृत्तिने विषय सन्मुख प्रीति होय त्यां सुधी भगवाननुं ध्यान करवुं नहि ने ज्यारे इंद्रियोनी वृत्ति स्थिर थाय त्यारे भगवाननुं ध्यान करवुं अने ज्यारे बहार स्थूळ देहमां दृष्टा वर्ततो होय त्यारे चोखो विभाग करी राखवो जे ज्यारे स्थूळ देहमां वर्त्तवुं त्यारे सूक्ष्म देहना घाट सामुं तो जोवुंज नहि अने ज्यारे अंतःकरण सन्मुख जोवुं त्यारे स्थूळ देहने विसारी देवुं अने दृष्टाने ने दृश्यनेमध्ये जे विचार छे ते विचारे करीने एम समजवुं जे दृष्टाने दृश्य ते अतिशे जुदांज छे, एम समजीने देहना भाव ते देहने विषे होमवा अने दृष्टा जे चैतन्य तेना भाव ते चैतन्यने विषे होमवा अने बाळ, यौवन, वृद्ध, स्थूळ, कृश, जीववुं, मरवुं ए सर्वे देहना भाव छे ते आत्माने विषे मानवाज नहि; अने अछेद्य, अभेद्य, अजर, अमर, ज्ञानरूप, सुखरूप, सत्तारूप ए जे सर्वे आत्माना भाव छे ते कोइ काळे देहने विषे समजवाज नहि ए गुणतो आत्माने विषेज समजवा, ने एवो जे विचार ते ज्यां सुधी घाट संकल्पनुं बळ होय त्यां सुधी मुकवो नहि, जेम राजा होय ते ज्यां सुधी शत्रुनुं बळ होय त्यां सुधी राजगादीए बेसिने सुख भोगवे नहि अने ज्यारे शत्रु मात्रनो नाश थइ जाय त्यारे पोताना राज्यमा जे वैभव छे तेने भोगवे छे, तेम जे भगवाननो भक्त होय तेने ज्यां सुधी मनने इंद्रियोरूपी शत्रु पीडता होय त्यां सुधी पूर्वे कह्यो एवो जे विचार ते दृढपणे राखवो, अने ज्यारे मन इंद्रियोना घाट सर्वे शमी जाय त्यारे परमेश्वरना स्वरूपनुं ध्यान करवुं. (४) ४

इति वचनामृतम्. ॥ १२ ॥. (९०)

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (३) छे. तेमां पहेलामां बीजा गुणतो आव्या गया रहे पण आत्मनिष्ठा, स्वधर्मने अमारो निश्चय ए त्रण गुण जेमां अखंड रहे तेज साधु छे. (१) बीजामां परिपक्व ज्ञानीने आत्मानुं अभिमान दृढ रहे छे. (२) ने ते ब्रह्मरूप आत्माने विषे अमे अखंड रह्या छीए एवो अमारो निश्चय पण अखंड रहे छे. (३) त्रीजामां संकल्पनुं बळ होय त्यारे आत्मा अनात्मानो विचार करवो ने घाट शमी जाय त्यारे अमारुं ध्यान करवुं एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (४) वाक्तो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां साधुने विषे आत्मनिष्ठा, स्वधर्म अने अमारो निश्चय ए त्रण गुण अखंड रहे छे एम कह्युं ते त्रणेनां लक्षण शां हशे ?

१ उ० साधुनां [३२] बत्रीश लक्षणने आ ठेकाणे स्वधर्म कह्यो छे ते (प्र० ७७ ना त्रीजा प्रश्नोत्तरमां) कह्यां छे. अने मूळ अक्षरथी पर सर्वेनुं आत्मा पणुं जे श्रीजीमहाराजनुं तेज जे ब्रह्म ते रूप आत्माने मानवो ते आत्मनिष्ठा कही छे. अने ए तेजमां श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने धारीने तेमनी उपासना करवी ते निश्चय कह्यो छे.

२ प्र० साधुने विषे बीजा गुण आव्या गया रहे छे एम कह्युं ते गुण किया जाणवा ?

२ उ० कोइना अंतरनुं जाणवुं के भूत भविष्यनुं जाणवुं के वचन सिद्ध थाय के भगवानना धाम देखवां ए गुण आवे ने श्रीजीमहाराजनी इच्छाथी जाय पण खरा.

३ प्र० (३/२ त्रीजा प्रश्नमां) विषयने आकारे ने दृष्टा ने आकारे विचार करवो एम कह्युं ते विषयने आकारे ने दृष्टाने आकारे केवी रीते विचार करवो ?

३ उ० विषयने विषे दोष, दुःखने नाशवंतपणुं विचारवुं अने आत्मानुं अजर, अमर, सुखरूप, सत्तारूप, अविनाशीपणुं विचारवुं एवी रीते विचार करे त्यारे इंद्रियोनी वृत्ति विषयमांथी पाछी वळीने स्थिर थाय त्यारे ध्यान करवुं.

४ प्र० स्थूळ देहमां वर्त्तवुं त्यारे सूक्ष्म देहना घाट सामुं जोवुं नहि अने अंतःकरण सन्मुख जोवुं त्यारे स्थूळ देहने विसारी देवुं एम कह्युं ते केवी रीते विसारवां ?

४ उ० स्थूळ देहे कथा वार्ता सांभळवी ते स्थूळ देहे वर्त्तवुं कहेवाय. ते वखते सूक्ष्म देहमां घाट संकल्प थता होय तेने संभारे जे मने आवा घाट थाय छे तो कथा वार्ता समजाय नहि, माटे ते टाणे तो कथा वार्ताज सांभळवी पण सूक्ष्म देहना घाट सामुं जोवुं नहि; अने ज्यारे अंतरवृत्ति करीने आत्मा सामुं जोवुं त्यारे पोताने आत्मारूपे मानवुं पण देहरूप न मानवुं ते स्थूळ देहने विसारी दीधुं कहेवाय. ॥ ९० ॥

संवत् १८७७ ना भादरवा शुदि २ बीजने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजीमहाराज गाम श्रीसारंगपुर मध्ये जीवाखाचरना दरबारमां उत्तरादे बार ओरडानी ओसरीए बिराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछयुं जे, (१) जेने भगवानना स्वरूपनो निश्चय प्रथम थइने पछी मटी जाय छे तेने ते प्रथम निश्चय थयो हतो के नहोतो थयो ? पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामी बोल्या जे, जेने पोताना जीवात्माने विषे निश्चय थयो होय ते तो कोइ रीते टळे नहि अने शास्त्रनी रीते जो निश्चय थयो होय तो शास्त्रमां न मळे एवुं चरित्र ज्यारे परमेश्वर करे त्यारे भगवाननो निश्चय होय ते टळी जाय छे. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, शास्त्रने विषे तो परमेश्वरनुं समर्थपणुं, असमर्थपणुं, कर्त्तापणुं, अकर्त्तापणुं एवी अनंत जातनी वात छे, माटे एवुं कियुं शास्त्र बहार चरित्र परमेश्वरे कर्युं हशे जेणे करीने एनो निश्चय टळी गयो ? ए प्रश्ननो उत्तर करो. पछी सर्वे मुनि बोल्या जे शास्त्र बहार तो कोइ चरित्र नथी, माटे हे महाराज ! ए जीवने निश्चय थइने पाछो टळी जाय छे तेनुं शुं कारण छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने भगवाननो निश्चय थाय छे तेने शास्त्रे करीनेज थाय छे, कां जे शास्त्रमां परमेश्वरनां पण लक्षण कह्यां होय अने संतनां पण कह्यां होय माटे शास्त्रे करीने निश्चय थाय तेज अचळ रहे छे. [१] अने शास्त्र विना पोताने मने १
करीने जे निश्चय कर्यो होय ते निश्चय टळी जाय छे अने वळी धर्मनी प्रवृत्तिनुं जे कारण छे ते पण शास्त्रज छे अने जेणे शास्त्र कोइ दिवस सांभळ्यांज नथी एवा जे अज्ञानी जीव तेमने विषे पण मा, बोन, दिकरी ने स्त्री तेनी विक्तिरूप जे धर्मनी मर्यादा ते आज सुधी चाली आवे छे तेनुं कारण पण शास्त्रज छे, केमजे शास्त्रमांथी कोइके प्रथम एवी वात सांभळी छे ते परंपराए करीने सर्व लोकमां प्रवर्ती छे, माटे जेने भगवाननो निश्चय थइने टळी जाय छे तेने तो शास्त्रना वचननी प्रतीतिज नथी ए तो केवळ मनमुखी छे ने नास्तिक छे. (२) ने जो शास्त्रनी प्रतीति होय तो कोइ काळे परमेश्वरथी २
विमुख थायज नहि, कां जे शास्त्रमां तो अनंत जातनां भगवाननां चरित्र छे माटे परमेश्वर गमे तेवां चरित्र करे पण शास्त्रथी बहार होयज नहि, माटे जेने शास्त्रना वचननो विश्वास होय तेनेज भगवानना स्वरूपनो निश्चय अडग थाय छे ने कल्याण पण तेनुंज थाय छे अने ते धर्ममांथी पण कोइ काळे डगेज नहि [३] इति वच० ॥१३॥ [९१] ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [१] छे. तेमां शास्त्रे करीने निश्चय थाय ते अचळ रहे छे. [१] अने मने करीने निश्चय कर्यो होय ते टळी जाय छे, ने जेने शास्त्रना वचननी प्रतीति न होय ते मनमुखीने नास्तिक छे. [२] अने शास्त्रे करीने जेने निश्चय थयो होय तेनुंज कल्याण थाय छे ने धर्म पण एनोज अडग रहे छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. [३] बाबतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां शास्त्रे करीने अमारो निश्चय थाय एम श्रीजीमहाराजे कह्युं अने

(म० ३१ ना ३/५ बीजा प्रश्नमां) शास्त्रना शब्द सांभळीने समझणमां ठा रहेतो नथी एम कह्युं छे. तथा [प्र० ३/५ मां] शास्त्रमां अध्यात्म वार्ता होय ते कोइने समजाती नथी भमि जवाय छे एम कह्युं छे अने (म० २/३ मां) सत्पुरुष प्रगट थाय छे त्यारेज शास्त्रनी वात समझाय छे एम कह्युं ते केम समजवुं ?

१ उ० आमां भगवानना योग्य अयोग्य चरित्रमां संशय न थाय एटलोज निश्चय कह्यो छे पण सर्वे अवतारोथी पर समजाय एम नथी कह्युं अने (प्र० ७ मां) शास्त्रमां अध्यात्म वार्ता समजाय एवी चोखी विधि नथी ते अमे समजावीए एम कह्युं छे ने पछीथी पोतानो सिद्धांत कह्यो छे. अने (म० ३१ मां) शास्त्रना शब्द सांभळीने अमारा सर्वोपरिपणामां संशय थाय एम कह्युं छे, पण यथार्थ निश्चयने यथार्थ महिमाने श्रीजीमहाराजनो साक्षात्कार तेतो सत्पुरुष थकी थाय छे ते जेने आत्मा परमात्मानो साक्षात्कार होय ने पोतानो संग करनारना मायिक घाट टाळीने मूर्तिने सुखे सुखीया करे ते सत्पुरुष जाणवा. ॥ ९१ ॥

संवत् १८७७ ना भादरवा शुदि ३ श्रीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीसारंगपुर मध्ये जीवाखाचरना ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने काळा छेडानो श्वेत खेस पहेर्यो हतो अने श्वेत चादर ओढी हती अने मस्तक उपर श्वेत पाघ बांधी हती ने कान उपर पीळा पुष्पना गुच्छ विराजमान हता अने पाघमां पीळा पुष्पनां छोगां धारण कर्यां हतां अने कंठने विषे पीळा पुष्पनो हार नाभि सुधी हिंदळतो विराजमान हतो अने आथमणुं मुखारविंदकरीने श्रीजीमहाराज विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे, (१) भगवाननो भक्त होय ते भगवाननां धाम जे वैकुंठादिक तेने पामीने शे दोषे करीने पाछोपडतो हशे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, कोण भगवानना धामने पामीने पाछो पड्यो छे एक तो बतावो ? पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए कह्युं जे, एक तो वैकुंठमांथी जय विजय भगवानना पार्षद पड्या अने गोलोकमांथी राधिकाजी ने श्रीदाम पड्या. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जय विजय पड्या एतो भगवाने पोताना संतनो महिमा देखाडवा सारु पाड्या जे सनकादिक जेवा संतनो द्रोह करेतो वैकुंठादिक जेवा धामने पाम्यो होय तोय पण पडी जाय छे अने जय विजयतो पाछा त्रीजे जन्मे भगवानना वैकुंठ धाममां पहोच्या, माटे ए कांइ पड्या न कहेवाय एतो भगवाननी इच्छाए थयुं अने पड्यो तो ते कहेवाय जे तेने पाछो भगवाननो संबंधज न रहे अने गोलोकथी राधिकाजी पड्यां ते पण भगवाननीज इच्छा हती अने पोताने पण मनुष्य देह धरीने अनंत जीवनो उद्धार करवो हतो अने पोतानां कल्याणकारी जे चरित्र तेने विस्तारवां हतां, माटे राधि-

काजीने कोइ पड्यां कहे तो भगवान पण ते भेळे पड्या कहेवाय, ते सारु भगवाननी इच्छाए जे गोलोकथी पृथ्वीने विषे आव्यां ए ते कांइ पड्यां न कहेवाय ए ठेकाणे तो भगवाननी इच्छा जाणवी ते भगवाननी इच्छाए तो अक्षरधाममांथी पण देह धरे अने जड होय ते चैतन्य थइ जाय अने चैतन्य होय ते जड थइ जाय, केम जे भगवानतो अति समर्थ छे ते जेम करे तेम थाय पण ते भगवाननी इच्छा विनातो भगवानना धामने पामीने कोइ पडेज नहि अने जे पडे छे ते तो आधुनिक भक्त होय ते साधन काळ-मांथीज पडे छे ते तो योगभ्रष्ट कहेवाय पण वैराग्य, आत्मनिष्ठा, भगवाननी भक्ति ने ब्रह्मचर्यादिक जे धर्म तेणे करीने जे सिद्ध थया ते तो जेवा श्वेतद्वीपने विषे मुक्त छे ते सरखा छे ते तो कोइ काळे पडता नथी. (१) १

एवी रीते श्रीजीमहाराज एटली वात करीने पछी बोल्या जे, ल्यो हवे अमे एक
२ प्रश्न पुछीए. पछी मुनिए कह्युं जे पुछो. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (२) महाभारतना उद्योग पर्वने विषे सनतसुजात ऋषिए धृतराष्ट्र प्रत्ये कह्युं छे जे, एक तो प्रमाद ने बीजो मोह ए बेयनो त्याग करे तो ते सर्वे प्रकारे भगवाननी मायाने तरी रह्यो छे अने प्रमाद ने मोह एनुंज नाम माया छे, माटे आपणे त्यागी एवा भगवानना भक्त कहेवाइए छीए ने तेमां जेने प्रमाद ने मोह वर्त्तता हशे ने भगवानना महिमानुं बळ लइने जे भक्त प्रमादने ने मोहने टाळ्यानो खटको नहि राखतो होय ते भक्तने देह छते केवुं सुख हशे अने मरीने ते केवा सुखने पामशे ? ए प्रश्न छे. पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामी बोल्या जे, जे भगवाननो भक्त होय ते भगवाननुं महात्म्य अतिशे विचारीने प्रमाद के मोह न टळे तो पण तेनी कांइ झाझी चिंता राखे नहि, पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, भगवाननो भक्त होय ने तेने प्रमाद ने मोह वर्त्तता होय ने तेने टाळ्यानो खटको राखे तेने खोट केटली छे अने जे टाळ्यानो खटको न राखे तेमां शो विशेष छे ? पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामी बोल्या जे, भगवाननुं बळ राखे अने साधननुं बळ न राखे माटे ए विशेषज छे तो. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने प्रमाद ने मोहरूप शत्रु रह्या छे तोय पण जे गाफल रहे छे तेने तो तमे श्रेष्ट कहो छो, जेम पतिव्रता स्त्री होय ने ते पोताना पतिनी बीके ने पतिव्रतानो धर्म राख्यानी बीके अतिशे मनमां खटको राखीने कोइ पुरुष साथे हसीने ताळी ले नहि ने तेने एम मनमां बीक रहे जे, जो हुं गाफलाइ राखीश तो मारो पति मुने व्यभिचारिणी जाणशे तो मारी सेवा अंगीकार नहि करे एटले मारे पतिव्रताना धर्ममां खोट पडशे, एवुं जाणीने मनमां खटको राखे छे, तेम जे भक्त ए पतिव्रताना जेवी भक्ति राखे ने प्रमादने ने मोहने टाळ्वानो खटको राखे तेने तो तमे मूळगी खोट बतावो छो, अने वळी जेम कोइक स्त्री पोताने मनमां

आवे ते पुरुष साथे ताळियो देती फरे ने पतिव्रताना धर्म पाळवानो खटको न राखे तेम जे भक्त प्रमादने ने मोहने टाळवानो खटको न राखे तेने ते तमे श्रेष्ठ बतावो छो ए ते शुं तमारी एवी अवळी समझण छे के केम छे? अने जे गाफलाइ राखशे ने ते भगवाननो भक्त हशे तो पण तेने प्रमाद ने मोह ए बे शत्रु नड्या विना नहिं रहे, जेम मदिरा पीए तथा भांग्य पीए तो जेम विमुखने केफ चडे छे तेमज भगवाननो भक्त होय तेने पण केफ चडे ने गांडो थाय तेम मदिरा ने भांग्यरूप जे प्रमाद ने मोह ते तो जेम विमुख जीवने नडे तेमज भगवानना भक्तने पण नडे अने विमुखमां ने हरिभक्तमां एटलोज फेर छे जे, विमुखने ए बे शत्रु टळे नहिं अने भगवाननो भक्त जो खटको राखीने टाळवानो उपाय करे तो ए बे शत्रु नाश पामी जाय एटलो भगवानना भक्तने विशेष छे अने जे गाफलाइ राखे ते तो भगवाननो भक्त होय तोय सारो नहिं. (२) २

३ पछी श्रीजीमहाराजे फरीने प्रश्न पुछ्यो जे, (३) स्थूळ शरीर ते केटला तत्त्वनुं छे ? अने सूक्ष्म शरीर ते केटला तत्त्वनुं छे ? अने स्थूळ देहमां ने सूक्ष्म देहमां बरोबर तत्त्व छे के कांइ ओछां अधिकां छे ए बे शरीरनुं रूप करो ? पछी स्वयंप्रकाशानंद-स्वामीए ए प्रश्ननो उत्तर करवा मांड्यो पण थयो नहिं, पछी सर्वे मुनि बोल्या जे, हे महाराज ! एनो उत्तर तमे कृपा करीने करो. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, पंदर तत्त्वनुं स्थूळ देह छे पण तेमां ज्यारे नव तत्त्वनुं जे सूक्ष्म देह ते वर्ते त्यारे विषयनुं ज्ञान यथार्थ थाय पण ते विना थाय नहि, माटे स्थूळ देहने विषे पण चोवीश तत्त्व छे ते तत्त्व कियां तो पंचभूत, पंचज्ञानइंद्रियो, पंचकर्म इंद्रियो ए पंदर तत्त्वनुं स्थूळ देह छे ने ते स्थूळ देह ने श्रोत्र इंद्रिय होय ने तेणे करीने वात सांभळतो होय ने जो मन बीजे ठेकाणे जाय तो ते वार्ता समझाय नहि एवी रीते दशे इंद्रियोने विषे जो मन वर्ते तोज ते इंद्रियो पोतपोताना विषयने ग्रहण करवा समर्थ थाय अने जो मन न वर्त्ततुं होय तो कोइ इंद्रियो पोताना विषयने ग्रहण करवाने समर्थ थाय नहिं अने मन, बुद्धि, चित्तने अहंकार ए तो भेळांज होय अने शब्द, स्पर्श, रूप रस ने गंध ए पंच तन्मात्रा पण ए अंतःकरण भेळीज होय, एवी रीते चार अंतःकरण ने पंच तन्मात्रा ए नव तत्त्वनुं सूक्ष्म देह छे ते स्थूळ देहने विषे वर्ते छे त्यारे विषयनुं यथार्थ ज्ञान थाय छे, तेमज सूक्ष्मदेहने विषे पण पंदर तत्त्वनुं जे स्थूळ देह ते एकत्वपणे वर्ते छे त्यारेज सूक्ष्म देहना भोग सिद्ध थाय छे अने सूक्ष्म देह नव तत्त्वनुं छे तेने विषे पंदर तत्त्वनुं स्थूळ देह भळे छे, माटे सूक्ष्म देह पण चोवीश तत्त्वनुं छे अने जो सूक्ष्म देहमां स्थूळ देह छे तो सूक्ष्म देहमां स्त्रीनो संग करे छे तेनो स्थूळ देहमां वीर्यपात थइ जाय छे, माटे स्थूळ देहने सूक्ष्मदेहनी जाग्रत अवस्थाने विषे ने स्वप्न अवस्थाने विषे एकता छे. (३) ३

४ पछी मुनिए प्रश्न पुछयो जे, (४) हे महाराज ! आतो जेवुं स्थूळ देह छे तेवुंज
सूक्ष्म देह थयुं त्यारे जेम स्थूळ देहमां कर्म लागे छे तेमज सूक्ष्म देहमां लागे छे के कांइ
फेर छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, स्थूळ देहने विषे जेवी दृढ पोतापणानी मानी-
नता छे तेवीज जो सूक्ष्म देहने विषे मानीनता होय तो जेवुं स्थूळ देहमां कर्म लागे छे
तेवुंज सूक्ष्म देहमां पण लागे अने जे सूक्ष्म देहना कर्मने अल्प कह्यां छे तेतो जीवने
हिंमत देवा सारुं छे. (४) अने जेने स्थूळ देहने विषे तथा सूक्ष्म देहने विषे अभिमान ४
नथी तेने तो स्थूळ देहनुं कर्म पण लागतुं नथी ने सूक्ष्म देहनुं पण लागतुं नथी, केमजे
एतो केवळ आत्मसत्तारूपेज वर्ते छे माटे एवा जे आत्मज्ञानी होय तेने तो स्थूळ देह
संबंधी तथा सूक्ष्म देह संबंधी कर्म लागे नहि अने ते आ देहे करीने अशुभ कर्मने तो
करेज नहिं ने प्रारब्धानुसारे जे सुख दुःख आवे तेने भोगवे ने भोगवतो थको एम
माने जे, हुं एनो भोक्ता नथी हुं तो आत्मा छुं. (५) अने जे अज्ञानी देहाभिमानी ५
होय तेने तो स्थूळ देह अथवा सूक्ष्म देह संबंधी सर्व कर्म लागे छे . अने ते कर्म प्रमाणे
सुख दुःखने पण भोगवे छे, केमजे जे अज्ञानी छे ते जे जे विषयने भोगवे ते भोगवतो
थको पोताने देहरूपे मानीने एम माने जे, हुं ए विषयनो भोक्ताछुं. (६) पछी ज्यारे ६
अंत समो आवे त्यारे ते अज्ञानी जीवने तो यमनादूत देखाय ने देहनी विस्मृति थइ
जाय ने मूर्छा अवस्था आवे छे पछी ते यमनादूत देहने मुकावीने जीवने जुदो करे छे
त्यारे ए जीवने प्रेतनो देह बंधाय छे पछी ते देहे करीने यमपुरीना कष्टने भोगवे छे.(७) ७
अने ज्ञानी एवो भगवाननो भक्त तेने तो अंतकाळे भगवान के भगवानना संत देखाय
छे ने एने पण देहनी विस्मृति थइ जाय ने मूर्छा अवस्था आवे छे पछी ए देहने मुकीने
जुदो थाय छे त्यारे ए भक्तने भगवान भागवतीतनु आपे छे ने ते देहे करीने ए भगवान-
ना धामने विषे रहे छे. (८) इति वचनामृतम्. ॥ १४ ॥ ९२ ॥ ८

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (४) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, वैराग्य, आत्मनिष्टा, प्रेमलक्षणाभक्ति ने ब्रह्मचर्यादिक धर्म ए चार साधन सिद्ध करे ते अमारा धाममांथी कोइ काळे पडे नहि अने अमारी इच्छाथी जीवोनां कल्याण करवा स्वतंत्रपणे आवे ने जाय. (१) बीजामां प्रमादने मोह ए बे शत्रुने अमारो भक्त खटको राखीने टाळे तोज टळे. (२) त्रीजामां स्थूळ, सूक्ष्म ए बे देहनी जाग्रत ने स्वप्न अवस्थाने विषे एकता छे. [३] चोथामां स्थूळ सूक्ष्म बे देहनुं कर्म सरखुं छे पण जीवने हिंमत देवा सारु सूक्ष्म देहनुं प्रायश्चित अल्प कह्युं छे पण जो अल्प प्रायश्चित न करे तो स्थूळ देहना जेटलुं कर्म लागे. (४) अने जेने स्थूळ तथा सूक्ष्म देहनुं अभिमान नथी एटले तेने देहनी विस्मृति छे ने केवळ आत्मसत्तारूप एटले पोताना आत्मानेज आकारे वृत्ति रहेती होय ने जगतनी कोरे उपशम रहेतुं होय तेने स्थूळ, सूक्ष्म देहनुं कर्म लागतुं नथी. (५) अने

देहाभिमानीने कर्म लागे छे. (६) अने अज्ञानी जीव यमपुरीमां जाय छे. (७) अने अमारो ज्ञानी भक्त भागवतीतनुए करीने अमारा धाममां रहे छे [८] बावतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां वैराग्य, आत्मनिष्ठा, अमारी भक्तिने ब्रह्मचर्यादिक धर्म तेणे करीने सिद्ध थाय ते श्वेतद्वीपना मुक्त सरखो छे एम कह्युं ते श्रीजीमहाराजनी भक्ति करीने सिद्ध थाय तेतो श्रीजीमहाराजना अक्षरधाममां मुक्त छे तेवो थावो जोइए ने श्वेतद्वीपना मुक्त जेवो कह्यो तेनुं शुं कारण हशे ?

१ उ० श्वेत एवुं तेज तेनो द्वीप कहेतां समूह ऐटले तेजनो समूह जे अक्षरधाम तेने आ ठेकाणे श्वेतद्वीप नामे कह्युं छे.

२ प्र० बीजा प्रश्नमां प्रमादने मोह कह्या तेनां रूप शां हशे ?

२ उ० भगवान भजवाने भगवाननी आज्ञा पाळवी ने संतनो समागम करवो ए करवानुं छे ते न थाय ने न करवानुं ते थाय ते प्रमाद जाणवो. अने करवा योग्य ने न करवा योग्य ते सुझे नहिं ने पंच विषयने विषे आसक्ति होय ए मोहनुं रूप छे.

३ प्र० प्रमाद ने मोह तेने टाळवानो उपाय शो हशे ?

३ उ० अतिशे मोटा संत जे श्रीजीमहाराजना धाममांथी जीवोनां कल्याण करवा ने अर्थे आवेला होय तेमनी अतिशे सेवा करे ने श्रीजीमहाराजनी आज्ञामां यथार्थ वर्ते तो श्रीजीमहाराज तथा मुक्त दया करीने प्रमादने मोहने टाळी नाखे.

४ प्र० (४/४ चोथा प्रश्नमां) आत्मसत्तारूपे वर्ते तेने स्थूळ, सूक्ष्म देहनुं कर्म लागतुं नथी एम कह्युं ते कर्म कियुं जाणवुं ?

४ उ० देहे करीने वर्तमान लोपाय एवुं अशुभ कर्म तो करेज नहि पण एने स्थूळ, सूक्ष्म देहनुं अभिमान घटले स्मृति न होय, तेथी नाया धोया विना तथा पूजा कर्या विना जमी जवाय तथा स्पर्श न करवा योग्य तेनो स्पर्श थइ जाय एवुं जे कर्म तेनुं प्रायश्चित न लागे अने जेने आत्मनिष्ठा होय पण जो देहनी स्मृति रहेती होय तेने तो उपर कह्यां ते कर्म लागे, तो पंच वर्तमान लोप्यानुं कर्म लागे तेमां शुं कहेवुं एतो लागेज.

५ प्र० [४/२ चोथा प्रश्नमां] भक्त देह मुके छे त्यारे तेने भागवतीतनु आपे छे एम कह्युं ते भागवतीतनु शुं समजवुं ?

५ उ० भक्तने देह मुकवा समे ज्यारे श्रीजीमहाराजनुं दर्शन थाय छे त्यारे एनो चैतन्य श्रीजीमहाराजना जेवोज मूर्तिमान थाय छे ते भागवतीतनु जाणवुं. ॥ ९२ ॥

संवत् १८७७ ना भादरवा शुदि ४ चोथने दिवस श्रीजीमहाराज गाम श्रीसारंगपुर मध्ये जीवाखाचरना ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ल्यो अमे प्रश्न करीए छीए जे, (१) बे प्रकारना भगवानना भक्त छे तेमां एकने तो भगवानने विषे अत्यंत प्रीति छे अने भगवानना

दर्शन विना क्षण मात्र पण रहेवातुं नथी अने तेनो प्रेम बहार पण घणो दीठामां आवे छे अने बीजो जे भगवाननो भक्त छे तेने तो आत्मनिष्ठा पण छे अने वैराग्य पण परिपूर्ण छे अने भगवानने विषे प्रीति पण छे तो पण तेनो प्रेम प्रथम कह्यो जे भक्त तेना जेवो जणातो नथी अने प्रथम कह्यो तेने तो आत्मनिष्ठा ने वैराग्य ए बेय नथी तो पण एनी भक्ति अतिशे शोभे छे अने आत्मनिष्ठा ने वैराग्ये युक्त छे, तो पण तेनी भक्ति तो प्रथम कह्यो जे भक्त तेना जेवी शोभती नथी ए बे प्रकारना भक्तमां केनी भक्ति श्रेष्ठ छे ने केनी भक्ति कनिष्ठ छे ? ए प्रश्न छे पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामी बोल्या जे, आत्मनिष्ठा ने वैराग्य नथी तो पण जेने भगवानमां अतिशे प्रेम छे तेज सरस छे. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने वैराग्य ने आत्मनिष्ठा नथी तेने श्रेष्ठ कहो छो ते शी समझणे कहो छो, केमजे ए तो देहाभिमानी छे माटे ज्यारे एना देहने सुख थाय एवा पंच विषयनो योग थाशे त्यारे एने विषयमां प्रीति थइ जाशे पछी भगवानने विषे एवी प्रीति नहि रहे तेने तमे श्रेष्ठ केम कहो छो ? पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामी बोल्या जे, जेने विषयमां प्रीति थइ जाय एने अमे प्रेमी कहेता नथी, अमे गोपियो जेवा प्रेमी भक्त होय तेने कहीए छीए. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, गोपियो कांइ भोळियो नहोती, ए तो आत्मनिष्ठा ने वैराग्ये युक्त होय तेनी समझणने उल्लंघी जाय एवी डाहियो हती जेम कोइक राजनीतिनो जाणनारो होय ने ते बोले तेना जेवुं तो गोपियोने बोल्यामां डहापण हतुं अने भगवानने पण जेम यथार्थपणे जाण्या जोइए तेम जाणती हती अने सर्वे यादवमां अतिशे डाह्या ने भगवानना चोवटिया एवा जे उद्धवजी ते गोपियोनी समझणने जोइने गद्‌गद् कंठ थइ गया अने ते उद्धवजी एम बोल्या जे, गोपियो पासे मुने ज्ञान कहेवा मोकल्यो ते तो भगवाने मारे उपर अतिशे अनुग्रह कर्यो अने पोते गोपियोने उपदेश करवा गया हता पण गोपियोनां वचन सांभळीने पोते सामो उपदेश ग्रहण कर्यो अने तमे कहेशो जे गोपियो तो एवी बुद्धिवान नहोती तो एमां तो मुग्धा, मध्या ने प्रौढा ए त्रण प्रकारना भेद हता तेमां मुग्धानुं एवुं लक्षण छे जे, एक तो भगवान उपर घोखो घणो करे अने एम बोले जे, अमे तमारे अर्थे करी करीने मरी गयां तो पण तमे नजरमां लावता नथी अने एम करतां जो वधु छेडे तो भगवान साथे रीस करे अने तोछडां तोछडां वचन बोले जे जाणीए इमणां विमुख थइ जाशे, एवी जातनां जेनां लक्षण विषे वचन होय ते गोपीने मुग्धा जाणवी. अने जे मध्या होय ते तो कोइ दिवस भगवान सामो क्रोध न करे अने तोछडुं वचन पण न कहे अने डहापणे करीने युक्तिए युक्तिए पोतानुं स्वार्थीपणुं बीजाने जणावा दे नहिं अने पोतानुं काम सापे ते भेळुं भगवाननुं गमतुं करे पण एकलुं भगवाननुं गमतुं करे नहि अने जो भगवाननुंज गमतुं

करवुं पडे तो पण कांइक पोतानुं गमतुं करवानी युक्ति जरुर राखे, एवां जेनां शास्त्रने विषे वचन होय ते गोपीने मध्या जाणवी. अने जे मोढा होय ते तो केवळ भगवानना गमता प्रमाणेज चाले अने कोइ रीते पोताना स्वार्थने अर्थे युक्ति करे नहि अने केवळ भगवानने राजी करवाने इच्छे अने जे रीते भगवान राजी थाय ते रीतेज पोते राजी रहे अने पोतानी बराबरनी जे बीजी गोपियो होय ते उपर ईर्ष्या, क्रोध करेज नहिं अने मान, मत्सर आदि सर्वे विकारनो त्याग करीने भगवाननी सेवामां सावधान रहे अने जेणे करीने भगवान कुराजी थाय तेवुं आचरण तो मन, कर्म, वचने करीने कोइकाळे करे नहिं, एवां जेनां शास्त्रमां वचन होय ते गोपीने मोढा जाणवी. एवी रीते मुग्धा, मध्याने मोढा एवा गोपियोना भेद छे, माटे गोपियोनी समजणमां तो अतिशे विवेक हतो ते माटे एनी प्रीति अणसमझणनी कहेवाय नहि ने गोपियो तो यथार्थ भगवानना महिमाने जाणती हती ने ते महिमाने प्रतापे करीने आत्मनिष्ठा ने वैराग्य सहेजे एना हइयामां वर्त्तता हता, माटे ए गोपियोने विषे तो आत्मनिष्ठाने वैराग्य आदिक अनंत जे कल्याणकारी गुण ते भगवानना महात्म्यने प्रतापे करीने सर्वे संपूर्ण हता अने एवा भक्तनी रीततो आम छे जे, शब्द, स्पर्श, रूप, रस ने गंध ए जे पंच विषय ते भगवान संबंधीज इच्छे पण बीजा कोइ संबंधी इच्छे नहि अने भगवानने विषे ए पंच विषये करीने जे अतिशे हेत ते हेते करीने वैराग्य ने आत्मनिष्ठा नथी तो पण भगवान विना बीजो कोइ जगतनो घाट हइयामां थाय नहि अने जेम वर्षाद न वरस्यो होय त्यारे नाना प्रकारना तृणनां जे बीज ते पृथ्वी उपर कांइए भासे नहि अने ज्यारे वर्षाद वरसे त्यारे पटळां तृण उगे जे पृथ्वीज देखाय नहि तेम जे आत्मनिष्ठा ने वैराग्ये करीने रहित छे तेने जो भगवान विना बीजा कोइ विषयना घाट जणाता नथी तोय पण ज्यारे एने कुसंगनो योग थाशे त्यारे विषयना घाट थावा लागशे ने बुद्धि भ्रष्ट थइ जाशे ने परमेश्वरनी तो हइयामां स्मृति पण नहि रहे ने अखंड विषयनुं ध्यान थाशे पछी ए जे वैराग्यने आत्मनिष्ठा विनानो प्रेमी तेने एम भासशे जे मारे भगवानमां लेश मात्र प्रीति नथी, माटे आत्मनिष्ठाने वैराग्य विनानो जे प्रेमी भक्त जणातो होय तेतो अतिशे न्यून छे. (१) अने जेने आत्मनिष्ठा छे ने वैराग्य छे ने भगवानमां प्रीति पण साधारण १
जेवी छे तेतो एम जाणे छे जे, मारा जीवात्माने विषेज आ भगवाननी मूर्ति अखंड विराजमान छे, एम जाणीने उपरथी तो भगवाननी मूर्तिनां दर्शन स्पर्शादिक ने विषे आतुरता जेवुं नथी जणातुं ने शान्तपणा जेवुं जणाय छे, तोपण एनी प्रीतिनां मूळ उंडां छे ते कोइ कुसंगने योगे करीने पण एनी प्रीति ओछी थाय एवी नथी माटे ए भक्त श्रेष्ट छे ने एकांतिक छे. (२) इति वचनामृतम्. ॥ १५ ॥ ९३ ॥ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे एकला प्रेमवाळा भक्तने कुसंगनो योग थाय तो तेनी बुद्धि भ्रष्ट थइ जाय छे माटे न्यून कह्यो छे. (१) अने आत्मनिष्ठा ने वैराग्यवाळा भक्तने अमारुं प्रत्यक्षपणुं रहे छे तेथी एने कुसंगनो योग लागेज नहि माटे ते श्रेष्ठ छे एम कह्युं छे. (२) वातो छे.

१ प्र० पहेली वातमां गोपियो श्रीकृष्णनो महिमा जाणती हती एम कह्युं अने (प्र० $\frac{४२}{१}$ मां) गोपियोए श्रीकृष्णने भगवान जाण्या नहि एम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

१ उ० आमां जे महिमा जाणती हती ते गोपियोनी वात कही छे अने (प्र० ना ४२ मां जे महिमा नहोती जाणती तेनी वात कही छे अने आमां त्रण प्रकारना भेद कह्या ते महिमा जाणनारी गोपियोना कह्या छे अने श्रीकृष्ण भगवान मायाना गुणथी पर छे तेने पामी माटे गुणातीत कही छे. ॥९३॥

संवत् १८७७ ना भादरवा शुदि ५ पंचमीने दिवस श्रीजीमहाराज गाम श्री-सारंगपुर मध्ये जीवाखाचरना ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश-देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी परमानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे, (१) श्रीमद्भागवतमां कह्युं छे जे श्री-नरनारायण ऋषि जे ते बदरिकाश्रममां रह्या थका आ भरतखंडना सर्वे मनुष्यना कल्याणने अर्थे ने सुखने अर्थे तपने करे छे त्यारे सर्वे मनुष्य कल्याणना मार्गने विषे केम नथी प्रवर्ततां ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेम सूर्य छे तेम नरनारायण भग-वाननुं तप छे ते सूर्य ज्यारे अजवाळुं करे त्यारे सर्व पदार्थ सुझे पछी जेने जेवा पदार्थने जोवानी इच्छा होय ते तेवा पदार्थने जुवे छे अने ते सूर्यना अजवाळामां जे पुन्यवाळा जीव छे ते पुन्यने मार्गे चाले छे तथा भगवानने भगवानना संतनां दर्शन करे छे अने जे पापी जीव छे ते पापने मार्गे चाले छे ने न घटे एवुं जोता फरे छे तेमज भगवानना तपने प्रतापे करीने केटलाक जे मुमुक्षु जीव छे ते मोक्षने मार्गे चालीने मोक्षने पामे छे अने जे मुमुक्षु नथी तेतो विषय सुखने मार्गे चालीने विषय सुखने पामे छे, माटे भग-वाननुं तप तो जे जीव जेवुं कार्य करवाने इच्छे छे तेने तेवुं कार्य करवाने अर्थे बुद्धिमां प्रकाश करी आपे छे, अने वळी जेम कोइ पुरुष मशाल ने भेळी लइने भगवानने भग-वानना संतनुं दर्शन करे तो तेने मशाल प्रकाश करी आपे अने पातर्योनुं मोढुं जोवाने इच्छे तो तेने पण मशाल प्रकाश करी आपे, तेम भगवाननुं तप छे ते जे जीव जेवुं कर्म करवाने इच्छे तेने तेवानो प्रकाश करी आपे छे तेमां जेनी अल्पबुद्धि छे ते अल्प एवुं जे विषय सुख तेने इच्छे छे अने जेनी मोटी बुद्धि छे ते कल्याणने इच्छे छे अने भग-वाननी तो सौ उपर समदृष्टि छे, माटे जे जीव जेवुं कर्म करे छे तेने तेवा फळने पमाडी

दे छे. (१) इति वचनामृतम्. ॥ १६ ॥ (९४).

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां जेम सूर्य सर्वने प्रकाश करी आपवा उदय थाय छे पण सूर्यथी विपरीत बुद्धिवाळा जे घुड तथा अंधने काम नथी आवतो तेम नरनारायण भगवान सर्व जीवना कल्याण सारु तप करे छे, पण भगवानथी विमुख घुड तुल्य जीवोने तथा अंधवत् अज्ञानी जीवोने उपयोगमां नथी आवतुं, भक्तनेज उपयोगमां आवे छे, अने जेम सूर्य तथा मशालना प्रकाशमां पापी पापने मार्गे चाले छे अने पुन्यवाळा पुन्यने मार्गे चाले छे तेने सूर्य तथा मशाल समदृष्टिए प्रकाश करी आपे छे, तेम नरनारायण भगवान समदृष्टिए सूर्य मशालवत् तप रूपी प्रकाश करी आपे छे पण प्रेरणा करता नथी, तेमां जे जीव जेवां कर्म करे छे तेने तेवा फळने पमाडे छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (१) बाबत छे. ॥९४॥

संवत् १८७७ ना भादरवा शुदि ६ छठने दिवस संध्या समे श्रीजीमहाराज गाम श्री सारंगपुर मध्ये जीवाखाचरना ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) भगवानना भजननो करनारो जे जीव तेनी दृष्टि जेम जेम सूक्ष्म थाती जाय छे तेम तेम एने परमेश्वरनुं परपणुं जणातुं जाय छे ने भगवाननो महिमा पण अधिक अधिक जणातो जाय छे ते ज्यारे ए भक्त पोताने देहरूपे मानतो होय त्यारे भगवानने जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्तिना साक्षी जाणे अने ज्यारे पोताने जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति थकी पर माने त्यारे भगवान ते थकी पर भासे छे, पछी जेम जेम सूक्ष्म दृष्टि थाती जाय तेम तेम भगवानने पोता थकी पर जाणतो जाय अने महिमा पण वधु वधु समजातो जाय अने पछी जेम जेम पोतानी वृत्ति हेते करीने भगवान संघाथे चोटती जाय तेम तेम उपासना सुधी दृढ थाती जाय, त्यां दृष्टांत छे, जेम समुद्र छे तेने विषे कीडी पण जइने पाणी पीए अने चरकलुं पण पीए अने मनुष्य, पशु, घोडा, हाथी तथा मोटा मोटा मगर मच्छ ए सर्वे समुद्रनुं जळ पीने वळिया थाय छे पण समुद्र लेश मात्र ओछो थातो नथी अने जे जे जीवनुं जेवुं जेवुं मोटुं गजुं होय ते ते जीव ते प्रमाणे समुद्रनो महिमा वधु जाणे छे, वळी बीजुं दृष्टांत छे, जेम आकाश छे तेने विषे मच्छर उडे ने चरकलुं उडे ने समळा उडे ने गरुड पण उडे ने अनळ पक्षी पण उडे ने गरुड पण उडे तो पण ए सर्वेने आकाश अपारनो अपार रहे छे अने जेने पांखने विषे वधु बळ होय ते आकाशनो महिमा वधु जाणे छे अने पोताने विषे न्यूनपणुं समजतो जाय छे तेम मच्छर जेवा जे मरीच्यादिक अने चरकला जेवा जे ब्रह्मादिक अने समळाने ठेकाणे जे विराट् पुरुषादिक अने गरुडने ठेकाणे जे प्रधान

पुरुष अने अनळ पक्षीने ठेकाणे जे शुद्ध प्रकृति पुरुष अने गरुडने ठेकाणे जे अक्षर
धाममां रहेनारा मुक्त तथा अक्षरधाम ए सर्वे जेम जेम वधु वधु सामर्थीने पाम्या छे
तेम तेम भगवाननो महिमा वधु वधु जाणता गया छे अने जेम जेम वधु सामर्थीने
पामता गया तेम तेम भगवानने विषे स्वामी सेवकपणानो भाव पण अति दृढ थातो गयो
छे. (१) अने ज्यारे भजननो करनारो जीव रूपे हतो त्यारे ए जीवमां खद्योत जेटलो १
प्रकाश हतो पछी जेम जेम भगवाननुं भजन करतां करतां आवरण टळतुं गयुं तेम तेम
दीवा जेवो थयो पछी मशाल जेवो थयो पछी अग्निनी ज्वाळा जेवो थयो पछी दावानळ
जेवो थयो पछी विजळी जेवो थयो पछी चंद्रमा जेवो थयो पछी सूर्य जेवो थयो पछी
प्रलयकाळना अग्नि जेवो थयो पछी महातेज जेवो थयो, एवी रीते प्रकाश पण वृद्धिने
पाम्यो अने सामर्थी पण वृद्धिने पामी अने सुख पण वृद्धिने पाम्युं, एवी रीते खद्योतथी
करीने महातेज पर्यंत आद्य, मध्य ने अंत जे भेद कह्या ते सर्वे मुक्तना भेद छे ते जेम
जेम अधिक स्थितिने पामता गया ने भगवाननो महिमा अधिक जाणता गया तेम तेम
मुक्तपणामां विशेषपणुं आवतुं गयुं, एम कहीने श्रीजीमहाराज जय सच्चिदानंद कहीने
उठ्या. पछी आंबलीनी डाळखीने झालीने उगमणे मुखारविंदे उभा रह्या थका बोल्या
जे, जेम पुन्यमना चंद्रमानुं मंडळ होय ते आंहींथी तो नानी थाळी जेवुं देखाय छे पण
जेम जेम एनी समीपे जाय तेम तेम मोटुं मोटुं जणातुं जाय पछी अतिशे ढुकडो जाय
त्यारे तो दृष्टि पण पहोंची शके नहि एवुं मोटुं जणाय, तेम मायारूपी अंतराय टळीने
जेम जेम भगवानने ढुकडुं थवाय छे तेम तेम भगवाननी पण अति अपार मोट्यप जणाती
जाय छे अने भगवानने विषे दासपणुं पण अति दृढ थातुं जाय छे. (२) इति वच- २
नामृतम्. ॥ १७ ॥. (९५)

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, अमारो भक्त पोताने देहरूप माने त्यारे अमने साक्षी जेवा एटले प्रधानना पति पुरुष जेवा जाणे अने पोताने साक्षीरूप माने त्यारे अमने साक्षीथी पर जे मूळपुरुष तेवा जाणे, त्यार पछी सूक्ष्मदृष्टि थावा मांडे ते जेम जेम सूक्ष्मदृष्टि थाती जाय तेम तेम अमने पोताथी पर जाणतो जाय अने अमारो महिमा वधु वधु समजातो जाय अने अमारी उपासना दृढ थाती जाय अने अमारी अति अपार मोटप जणाती जाय अने अमारे विषे दासपणुं अति दृढ थातुं जाय. (१) अने भजननो करनारो जीवरूपे हतो त्यारे एमां खद्योत जेटलो प्रकाश हतो पछी दीवा जेवो थाय छे पछी मशाल जेवो थाय छे पछी ज्वाळा जेवो थाय छे पछी दावानळ जेवो थाय छे पछी विजळी जेवो थाय छे पछी चंद्र जेवो थाय छे पछी सूर्य जेवो थाय छे पछी प्रलयकाळना अग्नि जेवो थाय छे पछी महातेज जेवो थाय छे, एवी रीते सुख सामर्थिने प्रकाश ते वृद्धि पामे छे त्यारे ए भक्तने अमारे विषे दासपणुं अति

दृढ थातुं जाय छे. (२) वातो छे.

१ प्र० पहेली वातमां श्रीजीमहाराजे समुद्र तथा आकाशनुं दृष्टांत दीधुं ते समुद्र तथा आकाशने ठेकाणे शुं समजवुं ? अने कीडी आदिकनां दृष्टांत दीधां तेनो सिद्धांत शो समजवो ?

१ उ० समुद्रने तथा आकाशने दृष्टांते श्रीजीमहाराजे पोताना महिमानुं अपारपणुं कह्युं छे जे, ऐश्वर्यार्थीयो अमारो महिमा केटलो जाणे छे तो कीडी समुद्रनो तथा मच्छर आकाशनो जाणी शके तेटलो मरीच्यादिक प्रजापति अमारो महिमा जाणी शके एटले जेटलो ब्रह्मानो महिमा छे तेटलोज जाणे छे. [१] अने चरकलुं समुद्रनो तथा आकाशनो जाणी शके तेटलो महिमा ब्रह्मा अमारो जाणी शके एटले जेटलो वैराज पुरुषनो महिमा छे तेटलोज जाणे छे. (२) अने मनुष्य समुद्रनो तथा समळा आकाशनो जाणी शके तेटलो वैराज पुरुष अमारो महिमा जाणी शके छे एटले जेटलो प्रधान पुरुषनो छे तेटलोज जाणे छे. (३) अने गाय, भेंस, बळद, घोडा, ए सर्वे पशु कहेवाय ते समुद्रनो तथा गरुड्य पक्षी आकाशनो जाणी शके तेटलो प्रधानपुरुष जाणी शके छे एटले जेटलो प्रकृतिपुरुषनो छे तेटलोज अमारो महिमा प्रधानपुरुष जाणी शके छे. (४) अने हाथी समुद्रनो तथा अनलपक्षी आकाशनो जाणी शके तेटलो प्रकृतिपुरुष अमारो जाणी शके छे. एटले जेटलो अक्षरनो महिमा छे तेटलोज अमारो प्रकृतिपुरुष जाणी शके छे. (५) अने मगरमच्छ समुद्रनो तथा गरुड आकाशनो जाणी शके तेटलो महिमा मूळअक्षर तथा तेना मुक्त अमारो जाणी शके छे पण ए कोइ अमारो महिमा यथार्थ जाणी शकता नथी. आ मूळअक्षरथी लइने मरीच्यादिक सर्वे श्रीजीमहाराजनो महिमा पोतपोताना गजा प्रमाणे जाणे छे, पण जेम मगरमच्छादिक सर्वे समुद्रनो तथा गरुडादिक सर्वे आकाशनो पार पामता नथी तेम मूळ अक्षरादिक कोइ श्रीजीमहाराजना महिमानो पार पामता नथी. ते (अ० ३ मां) गरुड पण उडी शक्यो नहि. एटले गरुडनी गति अटकी कहेतां त्यां पहोंची शक्यो नहि तेम मूळअक्षरनी गति पण अमे ज्यां मुक्तोए सहित रह्या छीए, त्यांसुधी पहोंची शके नहि एम गरुडना दृष्टांतथी सूचव्युं छे. पछी अमे एकलाज सर्वथी पर एवुं जे अमारुं धाम त्यां गया एम कह्युं छे. माटे मूळअक्षरादिक कोइ श्रीजीमहाराजना पारने पामता नथी अने मूळअक्षरपर्यंत सर्वे श्रीजीमहाराजने प्रतापे थया छे ते [का० १० ना ३ पहेला प्रश्नमां] अमारा भक्त अमने भजीने प्रकृति पुरुष तथा ब्रह्म तथा अक्षर जेवा अमारे प्रतापे थाय छे पण अमारा जेवो कोइ थतो नथी अने अक्षरादिक सर्वे अवतारोथी श्रीजीमहाराजना मुक्त पर छे ने ते श्रीजीमहाराजनो महिमा मूळअक्षरादिक सर्वेथी अतिशे जाणे छे, तो पण श्रीजीमहाराजना महिमानो यथार्थ पार पामी शकता नथी, एवा सर्वोपरि सर्वनियंता सर्वाधार सर्वकर्ता श्रीजीमहाराज एकज छे. (६)

२ प्र० अक्षरधाम अमारो महिमा जाणे छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे ते अक्षरधामने तमे पहेला प्रश्नोत्तरमां मूळअक्षर कह्या तेनुं शुं कारण छे ?

२ उ० मुर्तिमान मूळअक्षर छे तेने विषे श्रीजीमहाराज अन्वय स्वरूपे रह्या छे माटे अन्वय

स्वरूपनुं धाम कहेतां पात्र छे, तेथी मूळअक्षरने आ ठेकाणे अक्षरधाम नामे कह्या छे, आनो विस्तार [प्र० ६३ ना ३/६ त्रीजा प्रश्नमां तथा बारमा प्रश्नोत्तरमांथी] जाणवो.

३ प्र० बीजी बाबतमां खद्योतथी लइने महातेज पर्यंत मुक्तना भेद कह्या ते केवी रीते जाणवा ?

३ उ० मायाथी उत्पन्न थाय ने लय पामे ते मुक्त न कहेवाय माटे आ ठेकाणे मायाथी पर जे मूळपुरुष तेमना मुक्तने खद्योतने ठेकाणे कह्या छे (१) अने बदरिकाश्रममां रह्या जे नर-नारायण तेमना मुक्तने दीवाने ठेकाणे कह्या छे (२) अने मूळपुरुषने मशालने ठेकाणे कह्या छे (३) अने महाकाळने ज्वाळाने ठेकाणे कह्या छे (४) अने श्वेतद्वीपमां वासुदेवब्रह्मना निरन्न मुक्तने दावानळने ठेकाणे कह्या छे [५] अने नरनारायणने विजळीने ठेकाणे कह्या छे (६) अने वासुदेवने चंद्रने ठेकाणे कह्या छे [७] अने मूळअक्षरना मुक्तने सूर्यने ठेकाणे कह्या छे (८) अने मूळअक्षरने प्रलयकाळना अग्निने ठेकाणे कह्या छे (९) अने श्रीस्वामि-नारायण भगवानना मुक्तने महातेजने ठेकाणे कह्या छे. [१०] आ सर्वे श्रीजीमहाराजना भक्त छे ते (पं० २ मां) प्रकृति पुरुषादिक अमारा भक्त छे ने मोटा संतनी पेठे ध्यान करे छे माटे भगवानरूप छे एम कह्युं छे माटे सर्वे श्रीजीमहाराजना भक्तज छे.

४ प्र० मूळपुरुष, महाकाळ, नरनारायण ने वासुदेव ब्रह्म तेमने उत्तरोत्तर श्रेष्ठ कह्या ते किया वचनामृतमां कह्या छे ?

४ उ० [का० १० ना ३/२ पहेला प्रश्नमां) अमारा भक्त अमने भजीने प्रकृतिपुरुष जेवा थाय अने ब्रह्म जेवा तथा अक्षर जेवा थाय एम कह्युं छे, माटे ब्रह्मनो दरज्जो पुरुषथी पर छे ने तेथीपर अक्षरनो दरज्जो छे अने (म० ३१ ना पहेला प्रश्नमां) पण ए पुरुषने ब्रह्मने सुखे सुखीया कह्या छे. अने (लो० १२ मां) पण पहेला प्रश्नमां निर्विकल्प निश्चयना भेदमां श्रीकृष्ण जेवा श्रीजीमहाराजने जाणे तेने कनिष्ठ कह्या छे अने वासुदेव जेवा जाणे तेने मध्यम कह्या छे. अने (पं० ३/४ मां) पण श्वेतद्वीपपति वासुदेवने श्रीकृष्णना अवतारी कह्या छे, माटे वासुदेवब्रह्म उपरि छे. अने नरनारायणने श्रीकृष्णना अवतारी नथी कह्या, माटे नरनारायण वासुदेवथी न्यून छे. अने [का० १० ना ३/२ पहेला प्रश्नमां] देवलोकथी लइने वैकुंठादिक कहेतां गोलोक पर्यंत पंचविषय संबंधी भोग सुख ते नथी जोइता, देह छतां तथा देहनो त्याग करीने बदरिकाश्रम तथा श्वेतद्वीपमां जइने सहस्र जन्म सुधी तप करीने भगवानने राजी करवा एम कह्युं छे, माटे गोलोकथी बदरिकाश्रमने श्रेष्ठ कह्युं छे, माटे जेनुं धाम श्रेष्ठ छे तो तेना धामी श्रेष्ठ होयज तेमां शुं कहेवुं ते (लो० ३/४ मां) पण जेवा बदरिकाश्रमने श्वेतद्वीप गमे छे तेवा बीजा नथी गमता माटे श्रीकृष्णथी नरनारायण श्रेष्ठ छे. अने (लो० १७ ना ३/५ पांचमा प्रश्नमां) काळने श्रीजीमहाराजे पोतानी शक्ति कहेल छे अने [प्र० १२ ना बीजा प्रश्नमां]क्षोभकर्त्ता कह्यो छे. अने (प्र० ४६ मां) प्रलयकर्त्ता कह्यो छे तथा [छे० ३८ ना पहेला प्रश्नमां] मायामांथी थया जे आकार ते काळे करीने नाश पामे छे तथा (छे० ३७ मां) भगवान विना बीजा सर्वेने काळ भक्षण करी जाय छे एम कह्युं छे, माटे जेना उपजावेलानो नाश करे ते तेनाथी समर्थ होय तेथी मूळपुरुषथी महाकाळ श्रेष्ठ छे अने (का०

१ ना त्रीजा प्रश्नमां) मायादिक तत्त्वने नामरूपपणाने अने अरूपपणाने पमाडे छे तथा [व० ६ मां] प्रथम जीवनां देह, इंद्रियो, मन, प्राणने काळे करीने सृजीए छीए एम आ वे वचनामृतमां कर्त्ता पण कह्यो छे एम जोतां मूळपुरुषथी महाकाळ समर्थ छे अने (म० १८ मां) श्वेतद्वीपने विषे निरन्न मुक्त छे ते ब्रह्मस्वरूप छे ने काळना पण काळ छे एम कह्युं छे त्यां निरन्न मुक्तने महाकाळथी समर्थ कह्या छे, माटे निरन्नमुक्तथी महाकाळ न्यून छे. ॥ ९५ ॥

संवत् १८७७ ना भादरवा शुदि ८ आठमने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज गाम श्रीसारंगपुर मध्ये जीवाखाचरना उत्तरादे वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती अने मस्तक उपर श्वेत पाघ बांधी हती ने उत्तरादे मुखारविंदे विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१　पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) जे श्रद्धावान पुरुष होय ने तेने जो साचा संतनो संग मळे, ने ते संतना वचनने विषे श्रद्धावान थाय तो एना हृदयने विषे स्वधर्म, वैराग्य, विवेक, ज्ञान, भक्ति आदिक जे कल्याणकारी गुण ते सर्वे प्रगट थइ आवे छे ने काम क्रोधादिक जे विकार ते बळी जाय छे अने जो कुसंग मळे ने कुसंगीना वचनने विषे श्रद्धावान थाय तो वैराग्य विवेकादि जे गुण ते सर्वे नाश पामी जाय छे, जेम खार भूमि होय ने तेने विषे गमे तेटलो मेघ वरसे पण तेमां तृणादिक उगतां न होय ने तेज खार भूमिने विषे जो पाणीनी रेल आवे तो खार सर्वे धोवाइ जाय अने जे ठेकाणे खार हतो ते ठेकाणे कांप चडी जाय, पछी ते कांप भेळां वड पींपळा आदिक वृक्षनां बीज आव्यां होय ते बीज उगीने मोटां मोटां वृक्ष थाय छे, तेम जेना हृदयने विषे पूर्वे कह्या जे स्वधर्मादिक गुण ते दृढ होय ने जगत् संबंधी विषय सुखनो अंकुर पण उठे एम न होय ने तेने जो कुसंग थाय तो तेना हृदयने विषे कुसंगरूपी पाणीने वेगे करीने जगत् वार्तारूपियो आवीने कांप भराय पछी ते कांपमां काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सरादिक जे बीज रह्यां छे ते सर्वे उगीने मोटां मोटां वृक्ष थाय छे, माटे भगवानना भक्त होय तेने कोइ दिवस कुसंग न करवो. (१) अने वळी पोतामां कोइ स्वभाव १
होय ने तेने संतनो समागम करीने समझी विचारीने टाळे तो ते स्वभावनो नाश थइ जाय छे पण मूर्खाइए करीने गमे तेटला उपाय करे तोय भुंडो स्वभाव टळे नहि अने मूर्ख होय ते ज्यारे मुंझाय त्यारे कांतो मुइ रहे ने कांतो रुवे अने कांतो कोइक साथे वढे ने कांतो उपवास करे ए चार प्रकारे करीने मुंझवण टाळ्यानो उपाय करे अने एम करतां जो अतिशे मुंझाय तो छेली बाकी मरे पण खरो, एवी रीते मूर्खने शोक टाळ्याना .

ઉપાય છે પણ એમ કર્યા થકી દુઃખ પણ મટે નહિ ને સ્વભાવ પણ ટળે નહિ અને સમજીને ટાળે તો દુઃખને સ્વભાવ એ બેય ટળી જાય, માટે સમજુ હોય તેજ સુખી થાય છે, અને જેમ અગ્નિની મોટી જ્વાળા હોય ને જો ઉપરથી જળ વરસે તો તત્કાળ ઓલાઇ જાય અને વિજળીના અગ્નિનો તો થોડોક ઝબકારો થાતો હોય પણ તે અગ્નિ મેઘની ઘટામાં રહે છે તો પણ ઓલાતો નથી, તેમ સમજ્યા વિના ગમે તેટલો વૈરાગ્ય હોય અથવા ભગવાનમાં પ્રીતિ હોય તોપણ અગ્નિની જ્વાળાની પેઠે કુસંગ રૂપી જળે કરીને સર્વે નાશ થઇ જાય છે અને સમજીને જે વૈરાગ્યને પ્રીતિ હોય તે તો વિજળીના અગ્નિ જેવાં છે તે થોડાં હોય તોપણ નાશ ન પામે. (૨) ૨

૨ પછી નિર્વિકારાનંદસ્વામીએ પુછયું જે, (૨) હે મહારાજ ! કોઇક પુરુષમાં ક્રોધાદિક ભુંડા સ્વભાવ હોય તે ટળે કે ન ટળે ? પછી શ્રીજીમહારાજ બોલ્યા જે, જેમ વાણીયો હોય તે જેટલો વેપાર કરે તેનું નામું માંડી રાખે છે તેની પેઠે જે દિવસ થકી સત્સંગ થયો છે તે દિવસથી જેણે નામું માંડી રાખ્યું હોય તેનો સ્વભાવ ટળે છે અને તે એમ વિચારે જે, જ્યારે મારે સત્સંગ નહોતો ત્યારે મારે આટલો મલીન સ્વભાવ હતો અને સત્સંગ કર્યા પછી આટલો સ્વભાવ ઉત્તમ થયો છે અને વર્ષોવર્ષ પોતાનો વધારો થાતો હોય અથવા કાંઇ ફેર રહેતો હોય તે સર્વેને તપાસ્યા કરે પણ મૂર્ખ વાણીયો જેમ નામું માંડે નહિ તેની પેઠે ન કરે, એવી રીતે જે સત્સંગ કરીને પોતાનો જો તપાસ કરતો રહે તો તેના જે જે સ્વભાવ હોય તે સર્વે નાશ પામી જાય છે. (૩) ૩

૩ પછી મુક્તાનંદસ્વામીએ પુછયું જે, (૩) કુસંગ હોય ત્યારે તો ભુંડો સ્વભાવ હોયજ પણ સંતનો સમાગમ કરીને પછી મલીન સ્વભાવ આવી જાય છે તેનું શું કારણ છે? પછી શ્રીજીમહારાજ બોલ્યા જે, જ્યારે બાળ અવસ્થા હોય ત્યારે કામ, ક્રોધ, લોભાદિક શત્રુ હોય નહિ અને ભગવાનમાં પ્રીતિ પણ વિશેષ હોય પછી જ્યારે યુવાન અવસ્થા આવે ત્યારે કામાદિક શત્રુનો વધારો થાય અને દેહાભિમાન પણ વધે પછી તે જો જે સંતને વિષે કામાદિક શત્રુ ન હોય તથા દેહાભિમાને રહિત હોય, એવા સંતનો સમાગમ રાખે તો યુવાન અવસ્થારૂપી સમુદ્રને તરી જાય છે. [૪] અને જો એમ ન કરે તો કામાદિક શત્રુએ કરીને પરાભવ પામીને ભ્રષ્ટ થઇ જાય છે અને જેની મોટ અવસ્થા હોય અને ૪
તે સત્સંગ કરતાં થકાં બગડે છે તેનું તો કારણ એ છે જે, મોટા પુરુષ હોય તેને વિષે જે જે જાતના દોષ પરઠે તે તે જાતના દોષ પોતાના હૈયામાં આવીને નિવાસ કરે છે અને જો મોટા પુરુષના ગુણનું ગ્રહણ કરે અને એમ જાણે જે મોટા પુરુષ જે જે સ્વભાવ રાખે છે તે તો જીવના કલ્યાણને અર્થે છે અને મોટા પુરુષ તો નિર્દોષ છે અને મુને દોષ જણાણો તે તો મારી કુમતિએ કરીને જણાણો છે, એમ વિચારીને સત્પુરુષના ગુણને ગ્રહણ કરે અને પોતાના અપરાધને ક્ષમા કરાવે તો તે પુરુષની મલીનતા મટી જાય છે.[૫] ૫

४　　पछी महानुभावानंदस्वामीए पुछयुं जे, (४) राजसी, तामसी ने सात्त्विकी ए जे त्रण गुणना स्वभाव ते साधन करतां थकां टळे छे के नथी टळता ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ए सर्वे स्वभाव टाळ्या टळे छे. [६]　६

५　　पछी वळी महानुभावानंदस्वामीए पुछयुं जे, [५] दुर्वासादिक मुक्त थया छे तो पण ते तामसी केम रह्या छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, दुर्वासादिकमां जे तमोगुण आदिक गुण वर्ते छे ते तो पोताने ए गुण राखवा छे माटे रह्या छे ने ते एम जाणे छे जे कोइक अवळो चालतो होय तेने शिक्षा कर्या सारु आपणे तमोगुण छे ते बहु रुडो छे, एम गुण जाणीने राख्यो छे अने ज्यारे पोतामां जे स्वभाव वर्त्ततो होय ने ते उपर अभाव आवे जे, हुं भगवाननो भक्त छुं ते मारे आवो भुंडो स्वभाव जोइए नहि, एवी रीते दोषरूप जाणीने जे जे स्वभावने तजवाने इच्छे तो भगवानने प्रतापे करीने ते ते स्वभावनी निवृत्ति थइ जाय छे. [७] इतिवचनामृतम्. ॥१८॥ [९६]　७

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [५] छे. तेमां पहेलुं कृपावाक्य छे तेमां साचा संतना योगथी स्वधर्मादिक कल्याणकारी गुण प्रगट थाय छे ने कामादिक विकार बळी जाय छे ने कुसंगना योगथी वैराग्य विवेकादिक गुण नाश पामे छे माटे कुसंग न करवो. (१) अने अयोग्य स्वभाव संतना समागमथीज टळे छे [२] बीजामां सत्संग करे ने तपास करे तो सर्वे स्वभाव नाश पामे छे [३] त्रीजामां युवानी अवस्थामां कामादिक शत्रुए रहित एवा संतनो समागम राखे तो ते अवस्थाने तरी जाय. (४) अने मोटा पुरुषने विषे दोष परठे ते दोष तेने विषे आवे छे ने मोटा पुरुषना स्वभावने कल्याणकारी जाणीने पोताना अपराधने क्षमा करावे तो मलीनता मटी जाय छे. (५) चोथामां सर्वे स्वभाव टाळ्या टळे छे. [६] पांचमामां दोषने विषे गुण मान्यो होय तो ते टळे नहि अने दोषरूप जाणे तो टळे छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे (७) बाबतो छे.

१ प्र० (३/५ त्रीजा प्रश्नमां) मोटा पुरुष जे जे स्वभाव राखे छे ते जीवना कल्याणने अर्थे छे एम समझे तेनी मलीनता मटी जाय एम कह्युं ते स्वभाव किया जाणवा ?

१ उ० मोटा पुरुष होय ते धर्ममां राखवा सारु क्रोध करीने तेने वढे अथवा कोइकने वर्त्तमानमां चुक पडे तो तेने प्रायश्चित करावे अथवा कोइक अवळो चालतो होय तेने सत्संगमांथी काढी मुके, एवा स्वभाव कोइना हितने अर्थे जणावे ते स्वभाव कल्याणकारी कह्या छे पण श्रीजीमहाराजनी आज्ञा विरुद्ध स्वभाव न होय. ने जेमां पंच वर्त्तमान विरुद्ध स्वभाव होय तेने मोटा पुरुष न जाणवा. ॥९६॥

इतिश्री कच्छदेशे वृषपुरनिवासी अनादिमुक्तराज श्रीअबजीभाइविरचित साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम भगवान श्रीस्वामिनारायण मुखकमळनिःसृत वचनामृत रहस्यार्थप्रदीपिकायां सारंगपुर प्रकरणं समाप्तम्.

॥अथ वचनामृत कारीयाणी प्रकरणम्॥

संवत् १८७७ ना भादरवा शुदि १२ द्वादशीने दिवस गाम श्री कारीयाणी मध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उत्तरादे बार ओरडानी ओसरीए सुरतना हरिभक्त जादवजी छपरपलंग लाव्या हता ते ढाळ्यो हतो ने ते पलंग उपर रेशमनुं गादलुं धोळा ओछाडे सहित बीछाव्युं हतुं ने तेनी उपर धोळो तकियो तथा लाल मशरुनां ढींचणीयां मुक्यां हतां ने ते पलंगनी उपर चारे कोरे सोनेरी कसबना सेजबंध लटकता हता, एवी शोभाए युक्त जे पलंग तेनी उपर श्रीजीमहाराज उत्तरादे मुखारविंदे विराजमान हता अने सोनेरी छेडानो धोळो फेंटो मस्तके बांध्यो हतो अने सोनेरी छेडानुं शेलुं ओढ्युं हतुं ने काळा छेडानो धोळो खेस पहेर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने श्रीजीमहाराजना मुखारविंदरूप चंद्रमा सामा चकोरनी पेठे सर्वे भक्तजन जोइ रह्या हता.

पछी श्रीजीमहाराज परमहंस प्रत्ये बोल्या जे, मांहोमांही प्रश्न उत्तर करो त्यारे
१ भूधरानंदस्वामीए प्रश्न पुछयो जे, [१] भगवाननो निश्चय थाय छे ते अंतःकरणमां थाय छे के जीवमां थाय छे ? त्यारे तेनो उत्तर शिवानंदस्वामीए करवा मांड्यो पण थयो नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, आ जीव छे ते बुद्धिए करीने जाणे छे ने ते बुद्धि छे ते सर्वेनुं कारण छे ने सर्वथी मोटी छे माटे ते बुद्धि मनने विषे रही छे, चित्तने विषे रही छे, अहंकारने विषे रही छे, श्रोत्रने विषे रही छे, चक्षुने विषे रही छे, घ्राणने विषे रही छे, जिह्वाने विषे रही छे, वाणीने विषे रही छे, त्वचाने विषे रही छे, हाथने विषे रही छे, पगने विषे रही छे, शिश्नने विषे रही छे, गुदाने विषे रही छे, एवी रीते बुद्धि जे ते नखशिखा पर्यंत आ शरीरने विषे व्यापिने रही छे ने ते बुद्धिने विषे जीव रह्यो छे पण ते जीव जणातो नथी ने एकली बुद्धि जणाय छे, त्यां दृष्टांत छे, जेम अग्निनी ज्वाळा घटे छे ने वधे छे ते वायुए करीने वधे छे ने घटे छे ते अग्निनी ज्वाळा वधती घटती जणाय छे पण वायु जणातो नथी, अने जेम अग्नि लइने छाणामां मुकीए ने ते छाणामां सळगवा मांडे तेने लइने ज्यां वायु न होय त्यां मुकीए ते धुंवाडो उंचो चडवा मांडे ते धुंवाडो उंचो चडतो जणाय पण तेमां वायु जणातो नथी, अने जेम आकाशने विषे वादळां चाले छे ते वायुए करीने चाले छे ते वादळां चालतां जणाय छे पण तेमां रह्यो एवो जे वायु ते जणातो नथी, तेम ज्वाळा, धुंवाडो ने वादळां तेने ठेकाणे बुद्धि जाणवी ने वायुने ठेकाणे जीव जाणवो. ते जीव केवो छे तो बुद्धिए कर्यो जे निश्चय तेने जाणे छे ते बुद्धिमां निश्चयनी विगतिनो करनारो जे ब्रह्मा

तेने पण जाणे छे ने मनना संकल्पने जाणे छे अने ते मनना संकल्पनी विगतिनो कर-
नारो जे चंद्रमा तेने पण जाणे छे अने चित्तना चिंतवनने जाणे छे अने ते चित्तना
चिंतवननी विगतिना करनारा जे वासुदेव तेने पण जाणे छे अने अहंकारनी अहंमतिने
जाणे छे अने ते अहंमतिनी विगतिना करनारा जे रुद्र तेने पण जाणे छे, एवी रीते जे
चार अंतःकरणने दश इंद्रियो तेना जे विषय ने ते विषयनी विगतिना करनारा जे
देवता ए सर्वेने एककाळावच्छिन्न जाणे छे एवो जे जीव ते जीव जे ते एकदेशस्थ
जणाय छे अने बरछीनी अर्णी जेवो तीखो जणाय छे अने अतिशे सूक्ष्म जणाय छे ते
बुद्धिए सहित छे, माटे एवो सूक्ष्म जणाय छे पण ज्यारे ए जीवने देह, इंद्रियो, अंतः
करण, देवता ने विषय तेना प्रकाशकपणे जाणीए त्यारे तो जीव बहु मोटो जणाय छे
अने व्यापक जणाय छे ते बुद्धिए रहित छे ने अनुमाने करीने जणाय छे पण साक्षा-
त्कार नथी जणातो, त्यां दृष्टांत छे जेम कोइक दश मणनी तरवार होय तेने जोइने
माणस अनुमान करे जे, ए तरवारनो उपाडनारो बहु मोटो हशे, तेम ए सर्वे देह इंद्रि-
यादिक ने एक काळे प्रकाशे छे माटे ए जीव बहु मोटो छे, एवी रीते अनुमाने करीने
जणाय छे एवी रीते श्रीजीमहाराजे उत्तर कर्यो. त्यारे नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे, हे
महाराज ! एमां ते शुं उत्तर थयो ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एमां तो ए उत्तर
थयो जे, ज्यारे बुद्धिमां निश्चय थयो त्यारे जीवमां पण निश्चय थइ गयो एम जाणवुं ते
केवी रीते थाय छे तो प्रथम इंद्रियोमां निश्चय थाय छे पछी अहंकारमां निश्चय थाय छे
पछी चित्तमां निश्चय थाय छे पछी मनमां निश्चय थाय छे पछी बुद्धिमां निश्चय थाय
छे पछी जीवमां निश्चय थाय छे. (१) १

२ एम श्रीजीमहाराजे कह्युं त्यारे नित्यानंदस्वामीए वळी पुछ्युं जे, (२) हे महा-
राज ! इंद्रियोमां निश्चय होय ते केम जणाय ? ने अंतःकरणमां निश्चय होय ते केम
जणाय ? ने जीवमां निश्चय होय ते केम जणाय ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे,
इंद्रियोमां निश्चय ते एम जाणवो जे, आ जगत्‌ने विषे जे जे पदार्थ छे ते दीठामां सां-
भळ्यामां सुंघ्यामां अड्यामां आवे छे तेमां केटलांक शुभ छे ने केटलांक अशुभ छे
ने केटलांक सुखरूप छे ने केटलांक दुःखरूप छे ने केटलांक प्रिय छे ने केटलांक अप्रिय
छे ने केटलांक योग्य छे ने केटलांक अयोग्य छे ए सर्वे भगवानमां जणाय तेणे करीने
कांइ संशय न थाय तो एने इंद्रियोमां निश्चय जाणवो. अने सत्त्व, रज ने तम ए त्रण
गुणनां जे कार्य छे तेमां आळस निद्रादिक तमोगुणनुं कार्य छे ने काम क्रोधादिक रजो-
गुणनुं कार्य छे अने जेम नरनारायण पितृदेव कर्म करता हता ते शमदमादिक सत्त्वगु-
णनुं कार्य छे, ए सर्वे भगवानमां देखाय पण तेमां कांइ संशय न थाय तो एने अंतः-

करणमां भगवाननो निश्चय जाणवो. अने जेम ऋषभदेव भगवान निर्विकल्प समाधिए करीने उन्मत्त थका विचर्या ने मुखमां पाणो राख्यो ने पोतानो देह दावानळमां बळी गयो तोय खबर न रही, एवी रीते जे गुणातीत स्थिति ते भगवानमां जणाय ने तेमां कांइ संशय न थाय तो एने जीवने विषे निश्चय जाणवो, त्यां दृष्टांत छे, जेम समुद्रमां वहाण चाले छे तेमां जे लोढानां नांगळ होय तेने समुद्रमां नाखे ते तरत बुडी जाय पण जो तरत तेने ताणी लेतो झाझी महेनत न पडे ने तरत निसरी आवे पण जो तेने गाउ अर्धो गाउ जावा दइने ताणे तो घणी महेनते निसरे अने जो धीरे धीरे जावा दे ने धरतीमां खुते तो ते पाछो ताण्यो तणाय नहि ने निसरे पण नहि, एम जेने जीवने विषे निश्चय थाय तो तेनो निश्चय कोइ प्रकारे ताण्यो तणाय नहि, एवी रीते श्रीजीमहाराजे वार्त्ता घणीक करी पण आ तो दिशमात्र लखी छे, (२) २

३ पछी चैतन्यानंदस्वामीए पुछयुं जे, (३) हे महाराज! भगवान तो मनवाणी थकी पर छे ने गुणातीत छे तेने मायिक एवां जे अंतःकरण ते केम पामे? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, आ देह, इंद्रियोने अंतःकरण तेने जाणनारो जे जीव ते ज्यारे सुषुप्तिमां लीन थाय छे त्यारे एनां इंद्रियो अंतःकरण पण सुषुप्तिमां लीन थाय छे त्यारे ते समयमां ए जीवने भगवान प्रकाशे छे अने ज्यारे सुषुप्तिमांथी स्वप्नमां आवे छे त्यारे ते स्वप्न संबंधी जे स्थान, भोग, विषय ने जीव ए सर्वेने भगवान प्रकाशे छे अने जाग्रतमां पण भगवान प्रकाशे छे, एवी रीते रूपपणे ने अरूपपणे करीने रह्यो जे जीव तेने भगवान प्रकाशे छे अने प्रधानमांथी महत्तत्त्व थयुं अने महत्तत्त्वमांथी त्रण प्रकारनो अहंकार थयो ने ते अहंकारमांथी इंद्रियो, देवता, पंचभूत, पंचमात्रा ए सर्वे थयां तेमने पण जे भगवाने प्रकाश्यां छे अने ए सर्वे तत्त्वे मळीने रच्यो एवो जे विराट् तेने पण भगवान प्रकाशे छे अने ए सर्वे ज्यारे मायामां लीन थाय छे त्यारे ते मायाने पण भगवान प्रकाशे छे, एवी रीते जीव ने ईश्वर ए बेय ज्यारे रूपपणे थाय छे त्यारे जे भगवान प्रकाशे छे अने ज्यारे ए जीव ने ईश्वर बेय नामरूप रहित थका सुषुप्तिमां ने प्रधानमां रहे छे त्यारे पण जे भगवान प्रकाशे छे, ने जे काळ ए मायादिक तत्त्वने नामरूपपणाने पमाडे छे ने अरूपपणाने पमाडे छे, एवो जे काळ ते काळने पण जे भगवान प्रकाशे छे एवा जे भगवान ते जेते ए इंद्रियो अंतःकरणे करीने केम जाण्यामां आवे? ए तमारो प्रश्न छे के नहि? त्यारे सौए कह्युं जे, हे महाराज! एज प्रश्न छे. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एनो एम उत्तर छे जे, एवा जे भगवान तेने आ जगतनी उत्पत्ति ने स्थितिनुं करवुं छे ते कांइ पोताने अर्थे नथी कांजे श्रीमद्भागवतमां कह्युं छे जे, ॥ बुद्धीन्द्रियमनःप्राणान्जनानामसृजत्प्रभुः ॥ मात्रार्थं च भवार्थं च आत्मने

कल्पनायच ॥ ए श्लोकमां एम कह्युं छे जे, सर्वे जननां बुद्धि, इंद्रियो, मन ने प्राण तेने भगवान जे ते सृजता हवा ते जीवने विषयभोगने अर्थे तथा जन्मने अर्थे तथा लोकांतरमां जावाने अर्थे तथा मोक्षने अर्थे सृज्यां छे, माटे आ जगत्नी उत्पत्ति करे छे ते पण जीवना कल्याणने अर्थे करे छे अने स्थिति करे छे ते पण जीवना कल्याणने अर्थे करे छे अने प्रलय करे छे ते पण जीवने अर्थे करे छे, कांजे नाना प्रकारनी संसृतिए करीने थाक्या जे जीव तेना विश्रामने अर्थे प्रलय करे छे, एवी रीते सर्व प्रकारे जीवना हितने अर्थे प्रवर्त्या एवा जे भगवान ते जे ते ज्यारे कृपा करीने मनुष्य सरखा थाय छे त्यारे जे जीव ते भगवानना संतनो समागम करे छे ते जीवना जाण्यामां केम न आवे ? ए तो आवेज. (३) ३

४ एम श्रीजीमहाराजे कह्युं,त्यारे भजनानंदस्वामीए पुछ्युं जे,(४) हे महाराज ! आ श्रुतिमां एम केम कह्युं छे जे ॥ यतोवाचो निवर्त्तन्ते अप्राप्य मनसा सह ॥ त्यारे श्रीजीमहाराज प्रसन्न थका बोल्या जे एनुं एम छे जे, जेम पृथ्वी आकाशमां रही छे पण आकाशना भावने नथी पामती अने जळ आकाशने विषे रह्युं छे पण आकाशना भावने नथी पामतुं अने तेज आकाशने विषे रह्युं छे पण आकाशना भावने नथी पामतुं अने वायु आकाशने विषे रह्यो छे पण आकाशना भावने नथी पामतो एम मनवाणी भगवानने नथी पामतां (४) ४

५ त्यारे नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे, (५) हे महाराज ! श्रुति स्मृतिमां एम कह्युं छे जे ॥ निरंजनः परमं साम्यमुपैति बहवो ज्ञान तपसा पूता मद्भावमागताः ॥ त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ए तो अमे अभक्तनां मन इंद्रियोने कह्युं छे पण भक्तनां मन इंद्रियो तो भगवानने साक्षात्कारपणे पामे छे, जेम आकाशने विषे रही छे जे पृथ्वी ते प्रलयकाळने समे आकाशरूप थइ जाय छे अने जळ पण आकाशरूप थइ जाय छे अने तेज पण आकाशरूप थइ जाय छे अने वायु पण आकाशरूप थइ जाय छे, एम जे भगवानना भक्त होय तेमां जे देह, इंद्रियो, अंतःकरण ने प्राण ते सर्वे भगवानने ज्ञाने करीने भगवानने आकारे थइ जाय छे ने दिव्य थइ जाय छे, कांजे भगवान पोते दिव्यमूर्ति छे तेनां इंद्रियो, अंतःकरण, देह तेने आकारे ए भक्तनां देह, इंद्रियो अंतःकरण थाय छे माटे दिव्य थइ जाय छे, त्यां दृष्टांत छे, जेम भमरी इयळने झाली लावे छे ने तेने चटको लइने उपर गुंजारव करे छे तेणे करीने ते इयळ तेने ते देहे करीने तदाकार थइ जाय छे पण कोइ अंग इयळनुं रहेतुं नथी भमरी जेवीज भमरी थइ जाय छे, तेम भगवानना भक्त पण एने ए देहे करीने भगवानने आकारे थइ जाय छे अने आजे अमे वार्ता करी तेनुं हारद ए छे जे, आत्मज्ञाने सहित जे भक्तिनिष्ठावाळो छे तथा केवळ

भक्तिनिष्ठावाळो छे, ते बेयनी ए गति कही छे. (५) पण केवळ आत्मनिष्ठावाळो जे ५
कैवल्यार्थी तेनां देह, इंद्रियोने अंतःकरण तेनुं भगवाननी मूर्तिने तदाकारपणुं नथी थातुं,
एतो केवळ ब्रह्मसत्ताने पामे छे एम वार्ता करीने बोल्या जे, हवे एटली वार्ता राखो
अने सभा सर्वे शून्य थइ गइ छे माटे कोइक सारां कीर्त्तन बोलो, एम कहीने पोते
ध्यान करवा मंड्या ने संत कीर्त्तन गावा लाग्या. (६) इति वचनामृतम्. ॥१॥९७॥ ६

रहस्यार्थ. प्र०—आमां प्रश्न(५) छे.तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे,जीव, बुद्धिए सहित होय त्यारे अंतःकरण, इंद्रियो, विषय ने देवता तेमने एककाळावछिन्न जाणे छे अने बुद्धिए रहित होय त्यारे इंद्रियादिकनो प्रकाशकने व्यापक छे अने अमारो निश्चय प्रथम इंद्रियोमां पछे अहंकार, चित्त, मन, बुद्धि ने पछे जीवमां थाय छे. (१) बीजामां इंद्रियो, अंतःकरण ने जीवमां निश्चयनां रूप कर्यां छे. (२) त्रीजामां मन वाणीने अगोचर एवा अमे ते कृपा करीने मनुष्य रूपे दर्शन आपीए छीए त्यारे जे अमारा मुक्तनो समागम करे तेना जाण्यामां आवीए छीए. (३) चोथामां अभक्तनां मन वाणी अमने पामतां नथी. (४) पांचमामां अमारा भक्तनां देह, इंद्रियो, अंतःकरण ते अमारं ज्ञाने करीने अमारे आकारे थइ जाय छे. (५) अने कैवल्यार्थी केवळ ब्रह्मसत्ताने पामे छे (६) बावतो छे.

१ प्र० बीजा प्रश्नमां शुभ अशुभादिक पदार्थ कह्यां ते कियां जाणवां ?

१ उ० दुध, साकर, घी, गोळ, आदिक रस, तथा घउं, चोखा, तुवेर, बाजरी आदिक अनाज तथा दाडम, अंजीर,आदिक फळ तथा लवींग, एलची, सोपारी,तज, ए आदिक मुखवास तथा चंदन, तुळसी जाय, मोगरा, चंबेली, गुलाब, ए आदिक सुगंधीमान पुष्प ते शुभ, सुखदायी प्रियने योग्य छे. अने कसायलुं, उत्तरेलुं, सडेलुं,बगडेलु, एवां अनाज तथा अफीण, गांजो, माजम, भांग्य, तमाकु, मद्य, मांस, हिंग ए आदिक केफी वस्तुओ ते अशुभ, दुःखदायी, अप्रिय ने अयोग्य छे. ते सर्वे पदार्थेने भगवान अंगीकार करे तो पण संशय थाय नहि ते इंद्रियोमां निश्चय जाणवो, अने आलस, निद्रा, काम, क्रोधादिक स्वभाव भगवानमां देखाय तथा भगवान कोइक देवनी पूजा करता होय, त्यारे संशय न थाय जे भगवान हशे के नहिं होय ते अंतःकरणमां निश्चय जाणवो. अने पोताना देहनी खबर न राखे ने ऋषभदेवनी पेठे गुणातीत स्थितिमां वर्त्ते तो पण संशय न थाय जे भगवान तो स्वतंत्र होय ने आवुं परतंत्रपणुं जणाय छे माटे भगवान हशे के नहि ते जीवमां निश्चय जाणवो.

२ प्र० इंद्रियो अंतःकरण तो जड छे ने भगवाननो निश्चय तो चैतन्यमां थवो जोइए अने इंद्रियोमां थाय एम कह्युं ते शी रीते समजवुं ?

२ उ० चैतन्य एवो जीव ते हृदयने विषे रह्यो थको .इंद्रियो द्वारे आवीने विषयनुं तथा ज्ञाननुं गृहण करे छे एम (जे० २ ना बीजा प्रश्नमां) कह्युं छे, माटे सत्पुरुष थकी अथवा भगवान थकी वात सांभळीने अथवा भगवान थकी परचा चमत्कार समाधि

जोइने भगवान जाण्या होय पण तेनुं मनन ने निदिध्यास करीने भगवाननुं अन्वय व्यतिरेकपणुं, सगुण निर्गुणपणुं, कर्त्ता अकर्त्ता अन्यथाकर्त्तापणुं, अवतार अवतारीपणुं, निर्लेपपणुं, असंगीपणुं, निर्विकारपणुं, सर्वोपरिपणुं, एवुं यथार्थ ज्ञान थयुं न होय ते निश्चय इंद्रियोमां कहेवाय. अने भगवान अथवा सत्पुरुष थकी उपर कह्यो एवो यथार्थ महिमा जाणीने निश्चय कर्यो होय ने ध्यान करीने अंतरने विषे श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने देखे ते अंतःकरणमां निश्चय कहेवाय. अने एवो महिमा समझीने पोताना आत्माने विषे मूर्तिनो साक्षात्कार थयो होय ते जीवमां निश्चय कहेवाय, आ निश्चय कोइ रीते टगे नहि.

३ प्र० पांचमा प्रश्नमां अमारा भक्तनां इंद्रियो अंतःकरण सर्वे अमारे ज्ञाने करीने अमारे आकारे थइ जाय छे ने दिव्य थइ जाय छे, एम कह्युं ते श्रीजीमहाराजने आकारे केवी रीते थतां हशे ? अने दिव्य केवी रीते थतां हशे ? अने एने ए देहे करीने श्रीजीमहाराजने आकारे थइ जाय छे एम कह्युं ते एने ए देहे ते केवी रीते समजवुं ?

३ उ० जेवुं (लो० ७ ना $\frac{1}{8}$ पहेला प्रश्नमां) अनुभव ज्ञान कह्युं छे जे, भगवानने जाणे ने देखे एवुं स्थितिए सहित ज्ञान कह्युं छे ते ए भक्त श्रीजीमहाराजना स्वरूपने, संतना अथवा श्रीजीमहाराजना समागमे करीने, यथार्थ जाणीने ध्याने करीने मूर्त्तिनो साक्षात्कार करे त्यारे भगवानने आकारे थाय छे एटले भगवानना जेवोज दिव्य मूर्तिमान थाय छे, माटे एनां इंद्रियो पुरुषोत्तम रूप थइ जाय छे एम कह्युं, ते जेम पुरुषोत्तम भगवानने दिव्य अवयव छे तेम एनां अवयव जाणवां पण मायिक इंद्रियो दिव्य थइ जाय छे एम न जाणवुं, अने एने ए देहे करीने एटले जे देहमां रह्यो छे ते देहेज श्रीजीमहाराजने आकारे थइ जाय छे पण बीजो देह धरवो पडतो नथी.

४ प्र० इयळने दृष्टांते शुं जाणवुं ? ने भमरीना दृष्टांते शुं जाणवुं ? ने चटकाने दृष्टांते शुं जाणवुं ? ने गुंजारवने दृष्टांते शुं जाणवुं ?

४ उ० इयळने ठेकाणे जीव जाणवो, अने भमरीने ठेकाणे भगवान जाणवा, अने चटकाने ठेकाणे भगवाननुं ज्ञान जाणवुं, अने गुंजारवने ठेकाणे महिमा जाणवो एटले जीवने भगवान अथवा भगवानना संत मळे ते भगवाननुं ज्ञान आपीने वारंवार भगवाननो महिमा कहे ते महिमा समजाय त्यारे भगवाननुं ध्यान थाय तेणे करीने जीव भगवानना जेवो दिव्य साकार थइने श्रीजीमहाराजनी हजुर सेवामां रहे छे.

५ प्र० ($\frac{1}{8}$ पांचमा प्रश्नमां) केवळ आत्मनिष्ठ ब्रह्मसत्ताने पामे छे एम कह्युं ते ब्रह्मसत्ता कइ जाणवी ?

५ उ० ब्रह्म जे मूळपुरुषना तेजरूप अक्षरब्रह्म तेमां लीन थाय ते ब्रह्मसत्ता कही छे. ॥९७॥

संवत् १८७७ ना आसो शुदि २ द्वितीयाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीकारीयाणी मध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उत्तरादे बार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने श्रीजीमहाराजनी आज्ञाए करीने नाना नाना परमहंस आगळ आवीने प्रश्न उत्तर करता हता. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे एक प्रश्न पुछीए त्यारे
१ सर्वे बोल्या जे पुछो महाराज. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) एकनी बुद्धि तो एवी छे जे, जे दहाडाथी सत्संग कर्यो होय ते दहाडाथी भगवाननो तथा संतनो अवगुण आवे खरो पण रहे नहि, टळी जाय, पण एमने एम गुण अवगुण आव्या करे पण सत्संग मुकीने कोइ दिवस जाय नहि, शा माटे जे एने बुद्धि छे ते एम जाणे छे, आवा संत ब्रह्मांडमां क्यांइ नथी अने आ महाराज विना बीजो कोइ भगवान नथी, एम समझाणुं होय माटे सत्संगमां अडगपणे रहे छे अने एकनी तो एवी बुद्धि छे जे, संतनो अथवा भगवाननो कोइ दिवस अवगुणज आवतो नथी अने बुद्धि तो ए बेयनी सरखी छे अने भगवाननो निश्चय पण ए बेयने सरखो छे पण एकने अवगुण आव्या करे छे ने एकने नथी आवतो ते जेने अवगुण आवे छे तेनी बुद्धिमां शो दोष छे ? ए प्रश्न नाना शिवानंदस्वामीने पुछीए छइए. पछी ए शिवानंदस्वामीए एनो उत्तर करवा मांडयो पण उत्तर थयो नहि. पछी भगवदानंदस्वामी बोल्या जे, एनी बुद्धि शापित छे. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ए ठीक कहे छे, एनो उत्तर एज छे जे कोइ जगत्मां कहेता नथी जे, एने तो कोइकनो फटकार लाग्यो छे, एम मोटा संतने दुःखव्या होय अथवा कोइ गरीबने दुःखव्या होय अथवा माबापनी चाकरी न करी होय ते माटे एमणे शाप दीधो होय तेणे करीने एनी बुद्धि एवी छे. (१) १
२ पछी भगवदानंदस्वामीए पुछयुं जे, (२) हे महाराज ! एनी शापित बुद्धि छे ते केम सारी थाय ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एनुं तो एम छे जे एक तो अमे आ माथे बाँधी रह्या ए वस्त्रने धोवुं होय अने एक तो मोथ जेवुं जाडुं वस्त्र तेने धोवुं होय त्यारे ते कांइ सरखे दाखडे धोवाय नहि, कांजे झीणुं वस्त्र धोवुं होय त्यारे तेमां लगारेक साबु देइने धोइ नाखीए एटले तरत उजळुं थाय अने ज्यारे जाडा वस्त्रने धोवुं होय त्यारे तेने बे चार दिवस सुधी पाणीमां पलाळी मुके ने पछी अग्निए करीने बाफे ने पछी साबु दइने धुवे त्यारे उजळुं थाय, तेम जेनी बुद्धि शापित होय ते सर्वे पाळे एटलुंज पाळे तो ए दोष टळे नहि ने बीजा जेम निष्कामी रहे छे, निःस्वादी रहे छे, निर्लोभी रहे छे निःस्नेही रहे छे, निर्मानी रहे छे, तेमज एने न रहेवुं; बीजा निष्कामी रहेता होय तेथी एने विशेषे निष्कामी रहेवुं अने बीजा निर्लोभी रहेता होय तेथी एने विशेषे निर्लोभी रहेवुं अने बीजा निःस्वादी रहेता होय तेथी एने विशेषे निःस्वादी रहेवुं अने बीजा निःस्नेही रहेता होय तेथी एने विशेषे निःस्नेही रहेवुं अने बीजा निर्मानी रहेता होय तेथी एने विशेषे निर्मानी रहेवुं अने बीजा सुइ रहे ते केडे पछी

मोडुं एने सुवुं अने बीजा माळा फेरवे तेथी ए विशेषे माळा फेरवे अने बीजा उठे तेथी घडी वहेलो उठे, एम सर्वेथी विशेषे पाळे तो एनी बुद्धि शापित टळे, नहि तो टळे नहि. (२) २

३ पछी मोटा शिवानंदस्वामीए मोटा योगानंदस्वामीने प्रश्न पुछयुं जे, (३) कर्म मूर्त्तिमान छे के अमूर्त्त छे ? त्यारे मोटा योगानंदस्वामीए कह्युं जे एनो उत्तर तो मुने आवडे एवुं जणातुं नथी त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, वस्तुताए कर्म तो अमूर्त्त छे अने कर्ममांथी थयुं एवुं जे शुभ अथवा अशुभ एवुं फळ ते तो मूर्त्तिमान छे, अने जे कर्मने मूर्त्तिमान कहे छे ते तो नास्तिक कहे छे, कां जे कर्म जे क्रिया ते कांइ मूर्त्तिमान न होय एवी रीते श्रीजीमहाराजे घणीक वार्त्ता करी तेमांथी आतो दिशमात्र लखी छे. (३) इति वचनामृतम्. ॥ २ ॥ (९८) ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (३) छे. तेमां पहेलामां संत, गरीब ने मावाप तेने दुःखावे तेनी बुद्धि शापित थाय छे तेथी अमारो ने संतनो अवगुण आवे छे, (१) बीजामां ते विशेषे नियम पाळे तो शापित बुद्धि टळे छे. (२) त्रीजामां कर्म अमूर्त छे ने एवुं फळ मुर्तिमान छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (३) बाबतो छे.

१ प्र० (त्रीजा प्रश्नमां) कर्मनुं शुभ अशुभ एवुं फळ ते मुर्तिमान कह्युं ते फळ मुर्तिमान केवी रीते जाणवुं ?

१ उ० शुभ कर्म करीने देवादिकना लोकनी प्राप्ति थाय ने अनंत प्रकारना वैभव पामे मे अशुभ कर्मे करीने यमयातना ने नरकचोराशी आदिकनी प्राप्ति थाय, ए शुभ अशुभ कर्मनां फळ जे सुखने दुःख ते मूर्तिमान जाणवां. ॥९८॥

संवत् १८७७ ना आसो वदि ७ सातमने दिवस सायंकाळने समे श्रीजीमहाराज गाम श्रीकारीयाणी मध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उत्तरादा बारना ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता ने माथे श्वेत फेंटो बांध्यो हतो अने श्वेत खेस पहेर्यो हतो ने श्वेत चादर ओढी हती ने उत्तरादे मुखारविंदे विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) आ शुकमुनि बहु मोटा साधु छे अने जे दिवसथी अमारे पासे रह्या छे ते दिवसथी एनो चढतो ने चडतो रंग छे पण मंद तो पडतो नथी, माटे एतो मुक्तानंदस्वामी जेवा छे एम कहीने श्रीजीमहाराज बोल्या जे, मनुष्यने परस्पर हेत थाय छे ते गुणे करीने थाय छे ने अवगुण आवे छे ते दोषे करीने आवे छे ते गुण ने दोष तो माणसनी उपरनी प्रकृतिए करीने ओळखाता नथी, कांजे कोइक मनुष्य तो बिलाडानी पेठे हेठुं जोइने चालतो होय पण मांहितो अति कामी होय

तेने देखीने अणसमझु होय ते कहेजे, एतो बहु मोटो साधु छे अने कोइक तो फाटी दृष्टिए चालतो होय तेने जोइने अणसमझणवाळो होय ते एम कहेजे, आतो असाधु छे पण ते मांहितो महानिष्कामी होय, माटे शरीरनी उपरथी प्रकृति जोइने मनुष्यनी परीक्षा थाती नथी परीक्षा तो भेळे रहीथी थाय छे ने भेळो रहे त्यारे बोल्यामां जणाय, चाल्यामां जणाय, खाते जणाय, पीते जणाय, सुते जणाय, उठते जणाय, बेठते जणाय इत्यादिक क्रियाने विषे जणाय छे अने विशेषे करीने तो गुण अवगुण युवानी अवस्थामां जणाय छे पण बाळ अवस्थामां तथा वृद्ध अवस्थामां तो नथी जणाता, कांजे कोइक बाळ अवस्थामां ठीक न होय ने यौवनमां सरस थाय ने कोइक बाळ अवस्थामां सारो होय ने युवानी अवस्थामां बगडी जाय छे. (१) अने जेने खटको होय १ जे मुने आ घाट थयो ते ठीक नहिं ने ते घाटने टाळ्यानो यत्न कर्या करे ने ते ज्यां सुधी टळे नहिं त्यां सुधी खटको राखे, एवो जेनो स्वभाव होय ते युवानी अवस्थामां वधी जाय अने जेने खटको न होय ने प्रमादी होय ते वधे नहि ने एवो सारो होय तेतो बाळकपणामांथीज जणाय. ते उपर पोते पोताना बाळकपणाना त्यागी स्वभावनी घणीक वार्ता करीने बोल्या जे, सारो होय तेने तो बाळकपणामांथीज छोकरांनी सोबत गमे नहिं ने जिव्हानो स्वादियो होय नहि ने शरीरने दम्या करे, जुवोने मुने बाळपणामां स्वामीकार्तिकनी पेठे एवोज विचार उपन्यो जे, मारे मारा शरीरमां मातानो भाग जे रुधिर ने मांस ते रहेवा देवुं नथी माटे घणेक प्रयत्ने करीने शरीर एवुं सुकवी नाख्युं जे, शरीरमां कांइक वागे तो पाणीनुं टीपुं निसरे पण रुधिर तो निसरेज नहिं, एवी रीते जे सारो होय तेतो बाळपणामांथीज जणाय. (२) २

२ त्यारे भजनानंदस्वामीए पुछयुं जे, (३) हे महाराज ? एवो विचार ते मने करीने राखे ते ठीक के शरीरने दमे ते ठीक ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, केटलाक तो शरीरना दोष छे ते जाण्या जोइए ने केटलाक तो मनना दोष छे ते पण जाण्या जोइए तेमां शरीरना दोष ते शुं जे शिश्न इंद्रि वारंवार जाग्रत थाय तथा तेमां चळ थाय तथा ठेकडो भरवो तथा घडीएकमां सर्वेने जोइ बळ्युं तथा घडीएकमां घणा प्रकारना गंध सुंघी लेवा तथा बीश पचीश गाउनी मजल करवी तथा बळे करीने कोइकने मळीने तेनां हाडकां भांगी नाखवां तथा स्वप्नमां वीर्यपात थाय इत्यादिक जे दोष छे ते सर्वे देहना दोष छे पण मनना नथी ते ए शरीरना जे दोष ते अतिशे क्षीण थइ जाय तोय पण मनमां जे कामनो संकल्प तथा खाधानो तथा पीधानो तथा चाल्यानो तथा स्पर्शनो तथा गंधनो तथा शब्दनो तथा स्वादनो जे संकल्प ते रह्या करे ते मनना दोष जाणवा, एम मनना ने शरीरना दोष जाणीने शरीरना दोषने शरीरने दमवे करीने

टाळवा ने शरीर क्षीण थया पछी जे मनमां दोष रह्या तेने विचारे करीने टाळवा जे, हुं आत्मा छुं ने संकल्प थकी भिन्न छुं ने सुखरूप छुं. एवी रीते शरीरनुं दमनने विचार ए बे जेने होय ते मोटो साधु छे ने जेने एकलुं दमन छे ने विचार नथी तो ते ठीक नहिं तथा जेने एकलो विचार छे ने दमन नथी ते पण ठीक नहिं, माटे ए बे जेने होय ते श्रेष्ठ छे अने शरीरनुं दमन ने विचार ए बे वानां तो गृहस्थ सत्संगीने पण जरूर राख्यां जोइए, त्यारे त्यागीने तो जरूर राख्यांज जोइए. (३) ३

३ त्यारे निष्कुळानंदस्वामीए पुछयुं जे, [३] हे महाराज ! एम जे रहेवाय छे ते विचारे करीने रहेवाय छे के वैराग्ये करीने रहेवाय छे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एतो मोटा संतना समागमे करीने थाय छे अने जेने मोटा संतना समागमे करीने पण न थाय ते तो महा पापी छे. (४) एम कहीने वळी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ४ त्यागी थइने गृहस्थने भोगववा योग्य भोगनी इच्छा राखे छे ते खड खाय छे, कांजे एने ए भोग प्राप्त थानारा छे नहिं ने तेनी इच्छा राखे छे, माटे एना समझ्यामां ए वात आवी नथी, कांजे जे गाम जावुं नहि तेनुं नाम शुं पुछवुं ? तेम एणे जे पदार्थनो त्याग कर्यो छे ने तेनी पाछी अभिलाषा राखे छे ते शुं आ देहे करीने एने प्राप्त थवानुं छे? ते तो जो आ सत्संगमांथी विमुख थाय तो प्राप्त थाय पण सत्संगमां रह्ये थके तो थाय नहिं, माटे सत्संगमां रह्ये थके ते भोगनी जे इच्छा राखे छे ते मूर्ख छे. (५) केमजे ५ सत्संगमां जे रहेशे तेने तो जरूर पाळ्युं जोइशे, जेम कोइक सती थावाने निसरी ने पछी अग्नि जोइने पाछी वळे तो तेने शुं तेनां सगां पाछी वळ्वा दे ? एतो जोरे करीने बाळे, अने जेम कोइक ब्राह्मणी होय ने ते विधवा थइने ते जो सुवासणीना जेवो वेश राखे तो शुं तेनां सगां राखवा दे ? न राखवा दे. तेम जे सत्संगमां रहीने अयोग्य स्वभाव राखे छे तेने एवी रीते वात समझ्यामां आवी नथी ने जो आवी होय तो अ-योग्य स्वभाव रहे नहिं, एवी रीते वात करीने श्रीजीमहाराज जय स्वामिनारायण कहीने शयनने अर्थे पधारता हवा. [६] इति वचनामृतम्. ॥ ३ ॥ (९९) ६

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (३) छे. तेमां पहेलुं कृपावाक्य छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, गुणे करीने हेत थाय छे ने दोषे करीने अवगुण आवे छे ते दोष मेळुं रहेवाथी जाण्यामां आवे छे. (१) अने खटको राखे ते वधे ने प्रमादी वधे नहि. (२) बीजामां शरीरना ने मनना दोष ओळखाव्या छे. अने दमन ने विचार होय तेने मोटा साधु कह्या छे. (३) त्रीजामां मोटा संतने समागमे करीने दमनने विचार आवे छे अने एवा समागमे करीने दमन ने विचार न आवे ते महा पापी छे. [४] अने त्यागी थइने गृहस्थने भोगववा योग्य भोगनी इच्छा राखे ते खड खानारोने मूर्ख छे. (५)

अने त्यागी थइने अयोग्य स्वभाव राखे तेने त्यागीना धर्मनी वात समज्यामां आवी नथी [६] जाणवो छे. ॥९९॥

संवत् १८७७ ना आसो वदि ८ अष्टमीने दिवस दोढ पहोर दिवस चडते श्रीजीमहाराज गाम श्रीकारीयाणी मध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उत्तरादे वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे मांहोमांहि प्रश्न उत्तर करो.

१ त्यारे गोपाळानंदस्वामीए भजनानंदस्वामीने पुछ्युं जे, (१) आ देहने विषे जीवनुं जाणपणुं केटलुं छे ? ने साक्षीनुं जाणपणुं केटलुं छे ? पछी भजनानंदस्वामीए उत्तर करवा मांड्यो पण उत्तर थयो नहि. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, बुद्धि छे ते आ देहने विषे नखशिखा पर्यंत व्यापीने रही छे ते बुद्धि जे ते सर्व इंद्रियोनी क्रियाने एक काळावछिन्न जाणे छे ते बुद्धिने विषे जीव व्यापीने रह्यो छे ते बुद्धिना जाणपणाने कहेवे करीने जीवनुं जाणपणुं कहेवाणुं ने ते जीवना जाणपणाने विषे साक्षीनुं जाणपणुं रह्युं छे, माटे जीवना जाणपणाने कहेवे करीने साक्षीनुं जाणपणुं पण कहेवाणुं.(१) १

२ त्यारे श्रीजीमहाराजने नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे, (२) हे महाराज ! जे आ जीवने विषे साक्षी रह्या छे ते साक्षी जे होय ते तो मूर्तिमान होय ने जे मूर्तिमान होय ते व्यापक केम होय ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, मूर्तिमान होय ते शुं व्यापे नहि ? जुवोने ज्यारे स्वप्न आवे छे त्यारे स्वप्नमां चित्तने विषे जे आकृतियो जणाय छे ते मूर्तिमान छे के अरूप छे ? त्यारे नित्यानंदस्वामीए कह्युं जे एतो मूर्तिमान छे. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, चित्तमां जे आकृतियो रही छे ते चित्तने रह्यानुं स्थळ केवडुं छे ? त्यारे नित्यानंदस्वामीए कह्युं जे, दश आंगळनुं छे. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ते चित्त केवडुं छे ? त्यारे नित्यानंदस्वामीए कह्युं जे, चित्त तो अल्प छे. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, चित्तमां जे आकृतियो रही छे ते केवडी मोटी छे? त्यारे नित्यानंदस्वामीए कह्युं जे, चित्तमां तो बधुं ब्रह्मांड जणाय छे. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ए चित्त निर्मळ छे माटे जेम दर्पणने विषे बधी सभा जणाय छे तेम चित्तने विषे सर्वे आकृतियो जणाय छे एम ए जीव छे ते अति निर्मळ छे, माटे जीवने विषे भगवान जणाय छे ने भगवान पण अतिशे निर्मळ छे, माटे ते भगवानने विषे सर्व विश्व जणाय छे, एवी रीते विश्व भगवानमां रह्युं छे ने विश्वमां भगवान रह्या छे. [२] २

इति वचनामृतम्. ॥ ४ ॥ (१००).

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के देहने

विषे बुद्धि व्यापि रही छे ने बुद्धिने विषे जीव व्यापीने रह्यो छे ते बुद्धिना जाणपणाने कहेवे जीवनुं जाणपणुं कहेवाय छे अने जीवने विषे साक्षीनुं जाणपणुं रह्युं छे, माटे जीवना जाणपणाने कहेवाथी साक्षीनुं जाणपणुं कहेवाय छे. (१) बीजामां जेनो जीव अति निर्मळ एटले सर्व वासना टाळीने अमारा तेजरूप थाय ते पोताने विषे अमने देखे छे अने अमारे विषे एटले सर्वाधार एवुं अमारा तेजरूप अन्वय स्वरूप तेने विषे विश्व रह्युं छे तेने पण देखे छे. [२] बाबतो छे.

१ प्र० (बीजा प्रश्नमां) चित्तमां ब्रह्मांड जणाय छे एम कह्युं ते ब्रह्मांड तो चित्तमां नथी ने जणाय छे माटे जणावा मात्र छे, त्यारे भगवान पण तेमज जणाता हशे के साक्षात् जणाता हशे ?

१ उ० चित्त तो दर्पणवत् जड छे ते जेम दर्पणमां आभास पडे छे तेमज चित्तमां पण आभास पडे छे अने भगवान तो सर्वेने विषे अंतर्यामीपणे रह्या थका सर्वेने कर्मफळप्रदाता छे ने अतिशे समर्थ छे ने सर्वेदेशी छे ते पोताना अक्षरधाममां रह्या थका अन्वय स्वरूपे सर्वेने विषे रह्या छे अने चित्त तथा दर्पणनुं दृष्टांत तो एकदेशी छे, केमजे जडवस्तुने व्यापवानी गति नथी अने चैतन्य वस्तु तो पोतानी इच्छा होय त्यां व्यापी शके छे माटे सर्वत्र व्यापक ने चैतन्य मूर्ति एवा जे भगवान ते तो अन्वय स्वरूपे सर्वने विषे रह्याज छे अने जड वस्तुनुं दृष्टांत तो एकदेशीज होय पण चैतन्यवस्तुनी पेठे सर्वदेशी न होय, माटे ज्यां ज्यां जड वस्तुनुं दृष्टांत दीधुं होय ते चैतन्य वस्तुने मळतुं नज आवे, माटे श्रीजीमहाराज, जीव, ईश्वर, ब्रह्म, तथा अक्षर ते सर्वेने विषे अंतर्यामीपणे रह्या छे ने विश्व पण अन्वय स्वरूपमांज रह्युं छे ते (प्र० ७२ ना १/२ बीजा प्रश्नमां) अमारा एक एक रोमना छिद्रमां एटले किरणमां अनंतकोटी ब्रह्मांड परमाणुनी पेठे रह्यां छे पण मूर्तिमां विश्व रह्युं छे एवुं कोइ वचनामृतमां कह्युं नथी, माटे अन्वयस्वरूपमांज विश्व रह्युं छे अने विश्वमां पण भगवान अन्वय स्वरूपे रह्या छे,अने ज्यारे जीव श्रीजीमहाराजने भजने करीने निर्मळ एटले महातेज जेवो थाय त्यारे तेने विषे मुर्तिमान निवास करीने रहे छे.

२ प्र० आमां जीवने अति निर्मळ कह्यो अने [छे० ३१ मां]गुणमय कह्यो छे ते केम समजवुं ?

२ उ० जीवने तो (सा० ५ ना १/२ बीजा प्रश्नमां) बद्ध कह्यो छे माटे जीव तो मायाबद्ध छे पण ते जीव ज्यारे भगवानना भक्त थाय ने सत्पुरुषने योगे करीने श्रीजीमहाराजनुं तेज जे अक्षरधाम ते रूप पोताने समजे त्यारे अति निर्मळ थाय छे अने अति निर्मळ एवा भगवान तेमने विषे एटले भगवानना तेजने विषे विश्व जणाय छे माटे आमां अति निर्मळ जीवनी वात कही छे अने (छे० ३१ मां) पोताने जीवरूप मानतो होय तेनी वात छे.॥१००॥

संवत् १८७७ ना आसो वदि १४ चौदशने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीकारीयाणी मध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उत्तरादे बार ओरडानी ओसरीए छपरपलंग उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, अमे एक प्रश्न करीए छैए पछी मुनि बोल्या जे
१ पुछो महाराज ! पछी श्रीजीमहाराजे पुछयुं जे, (१) भगवान जीवना कल्याणने अर्थे पृथ्वी उपर अवतार धरे छे ते अवतार धर्या विना पोताना धाममां रह्या थका शुं कल्याण करवाने समर्थ नथी ? अने कल्याण तो भगवान जेम धारे तेम करे त्यारे अवतार धर्यानुं शुं प्रयोजन छे ? अने जो अवतार धरे त्यारेज भगवानमां कल्याण करवानी सामर्थी होय अने अवतार धर्या विना जीवनां कल्याण न करी शकता होय तो भगवानने विषे पण एटलुं असमर्थपणुं आवे माटे भगवान तो अवतार धरीने पण कल्याण करे ने अवतार न धरे तोपण जीवनां कल्याण करवा समर्थ छे माटे एवा जे भगवान तेने अवतार धर्यानुं शुं प्रयोजन छे ? ए प्रश्न छे. पछी मोटा मोटा संत हता तेमणे जेनी जेवी बुद्धि तेणे तेवो उत्तर कर्यो पण श्रीजीमहाराजना प्रश्ननुं कोइथी समाधान न थयुं अने श्रीजीमहाराजे आशंका करी ते सर्वना उत्तर खोटा थइ गया. पछी मुनि सर्वे हाथ जोडीने बोल्या जे, हे महाराज ! ए प्रश्ननो उत्तर तो तमेज करो तो थाय. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, भगवानने अवतार धर्यानुं एज प्रयोजन छे जे, भगवानने विषे अतिशे प्रीतिवाळा जे भक्त होय तेनी भक्तिने आधीन थइने ते भक्तने सुख देवाने अर्थे जेवी भक्तनी इच्छा होय तेवा रूपनुं धारण करे छे पछी जेवा जेवा पोताना भक्तना मनोरथ होय ते सर्वे पुरा करे छे अने ते भक्त होय ते स्थूळ भावे युक्त छे अने देहधारी छे, माटे भगवान पण स्थूळ भावने धारण करीने देहधारी जेवा थाय छे अने ते पोताना भक्तने लाड लडावे छे अने पोतानी सामर्थीने छपावीने ते भक्त संघाथे पुत्र भावे वर्ते छे अथवा सखा भावे वर्ते छे अथवा मित्र भावे वर्ते छे अथवा सगा संबंधीने भावे वर्ते छे तेणे करीने ए भक्तने भगवानमी झाझी मर्यादा रहेती नथी पछी जेवी ए भक्तने इच्छा होय तेवी रीते लाड लडावे छे, माटे पोताना जे प्रेमीभक्त तेना मनोरथ पुरा करवा एज भगवानने अवतार धर्यानुं प्रयोजन छे अने ते भेळुं असंख्य जीवनुं कल्याण पण करे छे ने धर्मनुं स्थापन पण करे छे, हवे एमां आशंका थाती होय तो बोलो, पछी मुनिए कह्युं जे, हे महाराज ! यथार्थ उत्तर थयो. (१) इति वचनामृतम्. ॥ ५ ॥. (१०१).

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [१] छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, अमारा प्रेमीभक्तोना मनोरथ पूर्ण करवा माटे अमे प्रगट थइए छीए ते भेळुं असंख्य जीवनुं कल्याण तथा धर्मनुं स्थापन करीए छीए. (१) बाबत छे. [आ छो हेतु मांहिलो पहेलो हेतु छे ते (म० ५८ ना पहेला प्रश्नोत्तरमां) कह्यो छे.]

१ प्र० अमे प्रेमीभक्तना मनोरथ पूर्ण करवा माटे प्रगट थइए छीए एम कह्युं ते प्रेमीभक्त केवा

हशे ? अने एमना मनोरथ शा हशे ?

१ ७० साधनदशावाळा एकांतिकने प्रेमीभक्त जाणवा. तेमने भगवानना संबंधवाळी क्रियाओना मनोरथ होय ते पुरा करवा माटे प्रगट थाय छे. ॥१०१॥

संवत् १८७७ ना आसो वदि अमास जे दिवाळी तेने दिवस गाम श्री कारीयाणी मध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उत्तरादे बार ओरडानी आगळ दीपमाळा पुरी हती अने ते दीपमाळा मध्ये मंच बांध्यो हतो ने ते मंच उपर छपरपलंग बिछाव्यो हतो ते उपर स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज विराजमान हता अने सोनेरी बुट्टादार राता किनखापनो सुरवाळ पेहेर्यो हतो अने नरनारायण स्वामिनारायण नामे अंकित एवा काळा किनखापनी डगली पहेरी हती अने माथा उपर सोनेरी तारना फरता छेडानी कुसुंबल पाघ बांधी हती अने असमानी रंगनो फैंटो कमरे कसीने बांध्यो हतो अने कंठने विषे पीळा पुष्पना हार धारण कर्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, पछी दीवबंदरना हरिभक्त आव्या हता तेणे श्रीजीमहाराजनी पूजा कर्याने अर्थे प्रार्थना करी, पछी श्रीजीमहाराज ते सिंहासन उपरथी उतरीने ते भक्तजन सामा जइने तेनी पूजा अंगीकार करी पछी तेनां आपेल वस्त्र तथा पीळुं छत्र तथा पादुका तेनुं ग्रहण करीने पाछा ते सिंहासन उपर विराजमान थता हवा.

१ पछी श्रीजीमहाराज एम बोल्या जे, (१) आटलां आटलां वर्ष थयां तेमां अमारे अर्थे केटलाक हरिभक्त वस्त्र तथा हजारो रुपैयाना अलंकार लावे छे पण अमे आवी रीते कोइ सामा जइने लेता नथी अने आवी रीते कोइनां वस्त्र घरेणां पहेरीने राजी थता नथी अने आजतो अमारे ए हरिभक्त उपर अतिशे राजीपो थयो. पछी मुनि बोल्या जे, एवाज ए प्रेमी हरिभक्त छे. एवा समामां दीनानाथ भट्ट आवीने श्रीजीमहाराजने पगे लागीने बेठा पछी श्रीजीमहाराजे भारे भारे वस्त्र हतां ते सर्वे दीनानाथ भट्टने आप्यां. (१) १

२ पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछयुं जे, [२] हे महाराज ! भगवान पोताना भक्त उपर किये गुणे करीने राजी थता हशे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जे भक्तजन काम, क्रोध, लोभ, कपट, मान, ईर्ष्या ने मत्सर एटलां वानांए रहित थइने भगवाननी भक्ति करे तेनी उपर भगवान राजी थाय छे. (२) तेमां पण मत्सर छे ते सर्वे विकार मात्रनो आधार छे माटे श्रीव्यासजीए श्रीमद्भागवतने विषे निर्मत्सर एवा जे संत तेनेज भागवत धर्मना अधिकारी कह्या छे, माटे मत्सर ते सर्वे विकारथी क्षीणो छे अने मत्सर टळवो ते पण घणो कठण छे. (३) २ ३

३ पछी ब्रह्मानंदस्वामीए पुछयुं जे, (३) मत्सर टळवानो शो उपाय छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, संतने मार्गे चाले ने जे संत होय तेनो तो मत्सर टळे ने बेने संतने

मार्गे न चाल्युं होय तेनो तो मत्सर न टळे. (४) ४

४ पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे, (४) मत्सर उपज्यानो शो हेतु छे ? पछी
श्रीजीमहाराज बोल्या जे एक स्त्री, धन अने सारुं सारुं भोजन ए त्रण मत्सरना हेतु छे
अने जेने ए त्रणवानां न होय तेमे मान छे ते मत्सरनो हेतु छे अने जे मत्सरवाळो हशे
तेने तो अमे आ भट्टने वस्त्र दीधां तेमां पण मत्सर आव्यो हशे पण मत्सरवाळाने
एवो विचार न आवे जे वस्त्र लाव्या हता तेने धन्य छे जे आवां भारे वस्त्र महाराजने
पहेराव्यां अने महाराजने पण धन्य छे जे तरत ब्राह्मणने देइ दीधां. एवो जे विचार ते
मत्सरवाळाना हृदयमां न आवे अने कोइक ले ने कोइक दे तो पण मत्सरवाळो होय ते
टाळोटाळो वचमां वळी मरे अने अमारे तो काम, क्रोध, लोभ, मान, मत्सर ईर्ष्या ए
सर्वेनो क्यारेय हइयामां लेश पण आवतो नथी अने शब्द, स्पर्श, रूप, रस ने गंध ए
जे पंच विषय तेनो तो हइयामां अतिशे अभाव वर्ते छे पण पंच विषयमांथी एकेने विषे
लेश मात्र भाव थातो नथी. [५] अने जेटलुं कांइक अन्नवस्त्रादिकनुं ग्रहण करता हशुं ५
तेतो भक्तनी भक्ति देखीने करता हशुं पण पोताना देहना सुखने अर्थे नथी करता. अ-
ने अमारे जे खावुं, पीवुं, ओढवुं, पहेरवुं छे ते सर्वे संत अने सत्संगीने अर्थे छे अने जो
एमने अर्थे न जणाय ने पोताने अर्थे जणाय तो अमे एनो तत्काळ त्याग करी दइए
अने अमे आ देह राखीए छीए ते पण सत्संगीने अर्थेज राखीए छइए पण बीजो कोइ
देह राख्यानो अर्थ नथी ते अमारा स्वभावने तो मुळजी ब्रह्मचारी ने सोमलोखाचर ए
आदिक जे हरिजन छे ते केटलाक वर्षथी अमारे पासे ने पासे रहे छे ते जाणे छे जे,
महाराजने एक प्रभुना भक्त विना कोइ संघाथे हेत संबंध नथी ने महाराज तो आकाश
सरखा निर्लेप छे एम निरंतर अमारे पासेना रहेनारा छे ते अमारा स्वभावने जाणे छे
अने अमे तो जे मन कर्म वचने परमेश्वरना भक्त छे तेने अर्थे अमारो देह पण श्रीकृष्णा-
र्पण करी राख्यो छे, माटे अमारे तो सर्व प्रकारे जे कोइ भगवानना भक्त छे ते संघाथे
संबंध छे अने भगवानना भक्त विना तो अमारे चौदलोकनी संपत्ति ते तरखला
जेवी छे. (६) अने जे भगवानना भक्त हशे ने भगवान संघाथेज दृढ प्रीति हशे तेने ६
पण रमणिक जे पंच विषय तेने विषे तो आनंद उपजेज नहि अने देहने राख्या सारु
तो जेवा तेवा जे शब्दादिक विषय तेणे करीने गुदराण करे पण रमणिक विषय थकी
तो तत्काळ उदास थइ जाय अने एवाजे होय तेज भगवानना परिपूर्ण भक्त कहेवाय [७] ७
इतिवचनामृतम्. ॥ ६ ॥१०२॥

रहस्यार्थ प्र०——आमां प्रश्न (४) छे. तेमां पहेलुं कृपावाक्य छे तेमां श्रीजीमहाराजे
वीवंबरना प्रेमीभक्तनी पुजा सामा जइने अंगीकार करीने ए भक्त उपर बहु राजीपो जणा-

व्यो छे. (१) बीजामां काम, क्रोध, लोभ, कपट, मान, ईर्ष्या ने मत्सरे रहित थइने अमारी भक्ति करे तेना उपर अमे राजी थइए छीए. (२) अने सर्वे विकारथी मत्सर झीणो विकार छे ने टळवो कठण छे. (२) त्रीजामां संतने मार्गे चाले तेनो मत्सर टळे छे. (४) चोथामां स्त्री, द्रव्य, सारुं भोजन ने मान ए चार मत्सर उपज्याना हेतु छे. (५) अने अमारो देह अमारा भक्तना सुखने अर्थे राख्यो छे. (६) अने जे रमणिक पदार्थथी उदास रहे ते अमारो परिपूर्ण भक्त छे एम कह्युं छे. [७] बातनो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां दीवबंदरना हरिभक्त एक पीळुं वस्त्र ने पीळुं छत्र ने पादुका ए त्रण वस्तुओ लाव्यां हतां एम कह्युं ते एटलामां श्रीजीमहाराज अतिशे राजी थया तेनुं शुं कारण हशे?

१ उ० एमनुं नाम प्रेमबाई हतुं तेणे पोताना घरमां जेटलुं द्रव्य हतुं तेनां वस्त्र घरेणां श्रीजीमहाराजने पहेरावा सारु कराव्यां हतां ते कोइक परजीया सोनीना जाण्यामां आव्युं ते सोनीए श्रीजीमहाराजनो वेश लइने रात्रिए ए बाइ पासे आवीने कह्युं जे, अमे स्वामिनारायण छीए माटे अमारे अर्थे वस्त्र घरेणां कराव्यां छे ते लावो पहेरीए पछी बाइए आपी दीधां ते लइने जतो रह्यो तेनी पाछळथी खबर पडी पछी ते बाइ हलकी वस्तु लाव्यां हतां पण श्रीजीमहाराजने अर्थे प्रथम करावेलां तेथी बहु राजी थया अने दीनानाथ भट्टने वस्त्र आप्यां ते बीजा कोइ हरिभक्ते प्रथम पूजा करी हती ते आप्यां हतां.

२ प्र० (६ चोथा प्रश्नमां) अमारा भक्तने अर्थे अमारो देह श्रीकृष्णार्पण करी राख्यो छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते अर्पण केवी रीते समजवो?

२ उ० श्रीजीमहाराजना मन कर्म वचने भक्त थाय एवा भक्तने श्रीजीमहाराज पोतानी मूर्तिने विषे राखे छे एम देह एटले मूर्ति अर्पण करी छे. ॥ १०२ ॥

संवत् १८७७ ना कार्तिक शुदि १ पडवाने दिवस रात्रिने समे गाम श्री कारीयाणी मध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उत्तरादे बार ओरडानी आगळ दीपमाळा पूरी हती अने ते दीपमाळा मध्ये मंच हतो ने ते उपर पलंग बिछाव्यो हतो ने ते पलंग उपर श्रीजीमहाराज विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ **पछी गाम बोचासण वाळा काशीदासे श्रीजीमहाराजने प्रश्न पुछ्यो जे, (१) हे महाराज! त्यागी होय ते तो निवृत्ति मार्गने अनुसर्या छे ते अखंड भगवानना स्वरूपमां वृत्ति राखे छे अने जे गृहस्थाश्रमी छे ते तो प्रवृत्ति मार्गने अनुसर्या छे माटे तेने तो संसारनी अनंत विटमणा वळगी छे माटे ते गृहस्थाश्रमी केम समजे तो अखंड भगवानना स्वरूपमां वृत्ति रहे छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, गृहस्थने तो एम समजवुं जे, जेम पूर्वे चोराशी लाख जातनां मारे माबाप तथा स्त्री छोकरां थयां हतां तेवांने तेवांज आ देहनां पण छे ने केटलाक जन्मनी मा बोन दीकरियो ते केटलीक रखळती हशे तेनी जेम मारे ममता नथी तेम आ देहनां संबंधी तेनी पण मारे ममता न राखवी,**

एवि रीते विचार करीने सर्वमांथी प्रीति तोडीने भगवानने विषे दृढ प्रीति करे ने साधुनो समागम राखे तो गृहस्थने पण त्यागीनी पेठे अखंड भगवानमां वृत्ति रहे. [१] १

पछी एवी रीते श्रीजीमहाराजनी वात सांभळीने जे गृहस्थ सर्वे सभामां बेठा
२ हता तेमणे हाथ जोडीने पुछ्युं जे, (२) हे महाराज ! जे गृहस्थने एवी रीते न वर्ताय तेना शा हाल थाशे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एतो जे भगवान विना अन्य पदार्थमांथी वासना मात्रने टाळीने भगवानमां अखंड वृत्ति राखे तेनी वात कही छे अने जे एवो बळियो नहोय तेने तो सत्संगनी धर्म मर्यादामां रहेवुं ने संतनो ने नरनारायणनो जे पोताने आश्ररो छे तेनुं बळ राखवुं जे, भगवान तो अधम उधारण ने पतितपावन छे ते मुने साक्षात् मळ्या छे. [२] २

पछी एवां श्रीजीमहाराजनां वचन सांभळीने सर्वे हरिजन अतिशे राजी थया.
३ पछी श्रीजीमहाराजे संतने प्रश्न पुछ्यो जे, [३] वैराग्य उदय थवानुं शुं कारण छे? पछी जेने जेवो भास्यो तेवो उत्तर कर्यो पण श्रीजीमहाराजना प्रश्नतुं समाधान थयुं नहि पछी सर्वे मुनि बोल्या जे, हे महाराज ! एनो उत्तर तमे करो पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, वैराग्यनुं कारण तो ए छे जे, सद्ग्रंथने सत्पुरुषना वचन तेने सांभळीने जेने चटकी लागे अने चटकी लागे ते पाछी मटेज नहि एवी जे चटकी तेज वैराग्यनो हेतु छे बीजो वैराग्यनो हेतु नथी अने जेने चटकी लागती होय ने ते तामसी होय तथा राजसी होय तथा सात्विकि होय ते सर्वेने वैराग्य उपजे अने जेने चटकी लागती न होय तेने वैराग्य न उपजे अने जेने चटकी लागी ने थोडा दिवस केडे टळी जाती होय तेने तो ए चटकीनो वैराग्य अतिशे ख्वार करे, केम जे ज्यारे चटकी लागे त्यारे घर मुकीने जातो रहे ने पछी भेख लीधा केडे जे चटकी लागी होय ते उतरी जाय अने पछवाडे घर तो धुळधाणी थइ गयुं होय, पछी जेम धोबीनो कुतरो वाटनो नहि ने घाटनो नहि तेम ते पुरुष उभय भ्रष्ट थाय छे अने जे दृढ वैराग्यवाळा होय छे ते परमपदने पामे छे.[३] ३

पछी श्रीजीमहाराज अति प्रसन्न थका बीजुं प्रश्न परमहंस प्रत्ये पुछता हवा जे,
४ [४] आत्यंतिक कल्याण ते केने कहिये ? अने आत्यंतिक कल्याणने पामीने जे सिद्धदशाने पाम्यो होय ते पुरुषनी सर्वे क्रियाने विषे केवी दशा वर्तती होय ? पछी जेने जेवो भास्यो तेवो सर्वे मुनिए उत्तर कर्यो पण श्रीजीमहाराजना प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि पछी सर्वे मुनि हाथ जोडीने श्रीजीमहाराज प्रत्ये बोल्या जे, हे महाराज ! एनो उत्तर तमे करो. पछे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ज्यारे ब्रह्मांडोनो प्रलय थाय छे त्यारे प्रकृतिनां कार्य जे चोवीस तत्त्व ते सर्वे प्रकृतिने विषे लीन थइ जाय छे अने ते प्रकृति पुरुष पण अक्षरब्रह्मना तेजमां अदृश्य थइ जाय छे अने पछी एकलुं सच्चिदानंद

चिद्‌घन जे तेज ते रहे छे अने ते तेजने विषे दिव्यमूर्ति एवा जे पुरुषोत्तम भगवान्
वासुदेव ते अखंड विराजमान रहे छे अने तेज पोते दिव्यमूर्ति थका जीवना कल्याणने
अर्थे रामकृष्णादिक अवतार धारण करे छे त्यारे जे जगत्‌मां अणसमझु मूर्ख जीव छे ते
भगवानने मायिक गुणे युक्त कहे छे पण ए मायिकगुणे युक्त नथी एतो सदा गुणातीत
दिव्य मूर्तिज छे अने तेनुं तेज भगवाननुं साकार दिव्य स्वरूप तेने जे वेदांत शास्त्र छे
ते निर्गुण, अछेद्य, अभेद्य, सर्वत्र व्यापक एवी रीते करीने प्रतिपादन करे छे ते जीवनी
बुद्धिमांथी मायिक भाव टाळवाने अर्थे निर्गुणपणे करीने प्रतिपादन करे छे अने ए
भगवान तो उत्पत्ति, स्थिति ने प्रलय ए सर्व काळने विषे एकरूपे करीनेज विराज-
मान छे, पण मायिक पदार्थनी पेठे विकारने पामता नथी सदा दिव्यरूपे करीने विरा-
जमान रहे छे, एवी रीते प्रत्यक्ष पुरुषोत्तमने विषे जे दृढ निष्ठा तेने आत्यंतिक कल्याण
कहीए (४) अने एवी निष्ठाने पामीने जे सिद्धदशाने पाम्यो होय तेनी आवी दशा ४
होय जे पिंड ब्रह्मांडनो तथा प्रकृतिपुरुषनो प्रलय थया पछी अक्षर धामने विषे जे
भगवाननी मूर्ति अखंड विराजमान रहे छे ते मूर्तिने स्थावर जंगम सर्वे आकारने विषे
ज्यां ज्यां दृष्टि जाय त्यां त्यां साक्षात्कार देखे ने ए मूर्ति विना बीजुं अणु मात्र पण
भासे नहि ए सिद्धदशानुं लक्षण छे. (५) इति वचनामृतम् ॥ ७ ॥. (१०२). ५

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [४] छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, देहनां संबंधीनी ममता न राखे अने अमारे विषे दृढ प्रीति करे अने अमारा संतनो समागम राखे तो गृहस्थने अमारी मूर्तिमां अखंड वृत्ति रहे (१) बीजामां जे निर्बळ भक्त होय तेमणे साक्षात् भगवान जे अमे ते अमारा आशरानुं बळ राखवुं (२) त्रीजामां घटकीनो वैराग्य टळी जाय ते खुवार थाय छे अने ए वैराग्य दृढ रहे तो परमपदने पामे छे. [३] चोथामां आत्यंतिक प्रलयने विषे अमे अमारा चिद्‌घन तेजमां सदा दिव्य मूर्तिमान् विराजमान छीए अने जीवोना कल्याणने अर्थे अमे रामकृष्णादिक अवतार धारण करीए छीए. ते अवतारोने मूर्ख जीव मायिक गुणेयुक्त कहे छे अने अमे आत्यंतिक कल्याण करवाने अर्थे मनुष्यरूपे विचरीए छीए ते अमने पण मूर्खजीव मायिक गुणे युक्त समजे छे पण अमे गुणातीत दिव्य मूर्तिज छीए एम कहीने पछी वेदांतना दृष्टांत पूर्वक पोतानुं दिव्य निर्गुणपणुंने साकारपणुं कह्युं छे जे अमे उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय सर्व काळने विषे एकरूपे सदा विराजमान छीए, एवी रीते प्रत्यक्ष जे अमे ते अमारे विषे दृढ निष्ठा एटले साक्षात्कार स्थिति एज आत्यंतिक कल्याण छे. (४) अने एवी निष्ठाने पामीने स्थावर जंगममां ज्यां ज्यां जुवे त्यां अमारी मुर्तिनेज देखे ते सिद्धदशानुं लक्षण छे. [५] बाबतो छे.

१ प्र० चोथा प्रश्नमां प्रकृति पुरुष अक्षरब्रह्मना तेजमां अदृश्य थइ जाय छे एम कह्युं ते अक्षर

प्रश्नकिया जाणवा ?

१ उ० चिद्घन तेज जे श्रीजीमहाराजनो प्रकाश तेने आ ठेकाणे अक्षरब्रह्म कह्या छे आ अक्षर ब्रह्मना तेजमां एटले किरणोमां मूर्तिमान अक्षरनी तथा ब्रह्मनी कोटीयो सदा अचळ रही छे अने पुरुष पण प्रकृतिने पोताने विषे लीन करीने पोते वासुदेव ब्रह्मना समीपे रहे छे पण जेम तारा चंद्रादि सूर्यना तेजमां रहे छे पण जे सूर्यना रथमां बेठा होय ते तारा चंद्रने देखे नहि तेम श्रीजीमहाराजने समीपे रह्या जे मुक्त तेनी दृष्टिमां आवता नथी एकलुं श्रीजीमहाराजनुं तेजने मूर्ति ए बेज रहे छे तेथी तेमने गण्या नथी अने पाधरुंज श्रीजीमहाराजनुं चिद्घन तेजने दिव्य मूर्ति एवा अमे रहीए छीए एम कह्युं छे.

२ प्र० आमां चोथा प्रश्नमां तथा (का० १ ना त्रीजा प्रश्नमां) श्रीजीमहाराजने गुणातीत कह्या अने (सा० ११ ना २/३ बीजा प्रश्नमां, म० ११/५ मां तथा छे. ३१ मां) श्रीजीमहाराजना तेजरूप अक्षरधामने गुणातीत कह्युं छे ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० गुणातीत शब्द घणे ठेकाणे वपराय छे भगवानने पण गुणातीत कहेवाय छे, अक्षर धामने पण गुणातीत कहेवाय छे अने ईश्वरने पण गुणातीत कहेवाय छे, तथा जे त्रण गुणथी पर होय ते सर्वेने गुणातीत कहेवाय छे. माटे आमां तथा (का० १ मां) श्रीजीमहाराजने गुणातीत कह्या छे ने (सा ११ ना २/३ बीजा प्रश्नमां, म. ११/६ मां तथा छे. ३१) ए प्रश्नमां अक्षरधामने गुणातीत कह्युं छे अने (प्र० ४२/३ मां) श्रीकृष्णने तथा गोपियोने पण गुणातीत कहेल छे अने (म० ४३ ना पहेला प्रश्नमां) भक्तनी स्थितिने पण गुणातीत कही छे ने [व० १ ना पहेला प्रश्नमां] निर्विकल्प समाधिने पण गुणातीत कही छे, माटे गुणातीत एवा नाम वडे करीने अक्षर धामज कह्युं छे एमज न जाणवुं जे मायाथी पर होय ते सर्वेने गुणातीत कहेवाय छे, माटे जे ठेकाणे जेवुं प्रकरण आवे तेने गुणातीत कह्या होय माटे गुणातीत शब्द ते विशेषण छे.

३ प्र० चिद्घन तेजने विषे दिव्य मूर्ति एवा श्रीजीमहाराज अखंड विराजमान रहे छे अने एवाने एवा दिव्यमूर्त्ति थका जीवना कल्याणने अर्थे मनुष्यरूपे देखाय छे अने सर्वे काळे एकरूपे विराजमान छे, एवी प्रत्यक्ष श्रीजीमहाराजने विषे दृढ निष्ठा तेने आत्यंतिक कल्याण कह्युं अने (सा० ११ ना पहेला प्रश्नमां) वैराग्यादिक पांच साधने युक्त थाय तो आत्यंतिक कल्याणने पामे एम कह्युं छे ते केवी रीते समजवुं ?

३ उ० जेने आमां कह्युं एवुं श्रीजीमहाराजना स्वरूपनुं यथार्थ ज्ञान थयुं होय ते श्रीजीमहाराजने सदाय सर्वत्र प्रत्यक्ष जाणे छे ने देखे छे तेणे करीने श्रीजीमहाराजनी मर्यादा यथार्थ रहे छे अने श्रीजीमहाराज विना मायिक विषय तथा ऐश्वर्य ते सर्वे तुच्छ जणाय छे माटे तेने विषे वैराग्यादिक सर्वे गुण सहजेज आवी जाय छे माटे जेमां आवुं ज्ञान होय तेमां एवा गुण होयज.

४ प्र० [४/५ चोथा प्रश्नमां] सिद्धदशानुं लक्षण कह्युं तेमां तो मुर्तिने सदाय देखे एम कह्युं अने (प्र० २४ ना पहेला प्रश्नमां) क्यारेक मुर्ति देखायने क्यारेक एकलुं तेज देखाय एम कह्युं छे तेनुं शुं कारण हशे ?

४ ह० (प्र० २४ मां) थती स्थितिवाळानी वात छे अने आमां परिपक्वसिद्धदशा वाळानी वात छे. ॥ १०३ ॥

संवत् १८७७ ना कार्तिक शुदि ४ चतुर्थीने दिवस श्रीजीमहाराज गाम श्री कारीयाणी मध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उत्तरादे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछयो जे, (१) हे महाराज ! वेद, शास्त्र, पुराण ने इतिहास तेने विषे भगवाननुं सगुण स्वरूप निरूपण कर्युं छे अने निर्गुण स्वरूप पण निरूपण कर्युं छे ते भगवान जे श्रीपुरुषोत्तम तेनुं निर्गुण स्वरूप केइ रीते समझवुं ? अने सगुण स्वरूप ते केइ रीते समझवुं ? अने ते भगवाननुं निर्गुण स्वरूप समझवे करीने भगवानना भक्तने केटलो समास छे ? अने ते भगवाननुं सगुण स्वरूप समझवे करीने केटलो समास छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, भगवाननुं निर्गुण स्वरूप छे ते तो सूक्ष्म थकी पण अति सूक्ष्म छे अने पृथ्वी आदिक जे सर्वे तत्त्व तेनुं आत्मा छे अने ते थकी पर जे प्रधानपुरुष तेनुं आत्मा छे अने ते प्रधानपुरुष थकी पर जे शुद्ध पुरुष ने प्रकृति तेनुं आत्मा छे अने तेथी पर जे अक्षर तेनुं पण आत्मा छे अने ए सर्वे भगवाननुं शरीर छे अने जेम देह थकी जीव छे ते सूक्ष्म छे ने शुद्ध छे ने घणो प्रकाशमान छे तेम ए सर्वे थकी भगवान अतिशे सूक्ष्म छे ने अतिशे शुद्ध छे अने अतिशे निर्लेप छे अने अति प्रकाशेयुक्त छे, अने जेम आकाश छे ते पृथ्वी आदिक चार भूतमां व्यापक छे ने पृथ्वी आदिक चार भूत थकी असंगी छे अने ए चार भूतनी उपाधि ते आकाशने अडती नथी आकाश तो अतिशे निर्लेप थको ए चार भूतने विषे रह्यो छे, तेम पुरुषोत्तम भगवान सर्वेना आत्मारूपे करीने सर्वेने विषे रह्या छे तो पण अतिशे निर्विकार छे ने असंगी छे ने पोते पोताने स्वभावे युक्त छे अने ते सरखो थावाने कोइ समर्थ नथी थातो, जेम आकाश चार भूतमां रह्यो छे पण चार भूत आकाश जेवां निर्लेप तथा असंगी थावाने समर्थ नथी थातां, तेमज पुरुषोत्तम भगवान सर्वेना आत्मा छे तो पण अक्षरपर्यंत कोइ पण पुरुषोत्तम भगवान जेवा समर्थ थावाने समर्थ नथी थाता, एवी रीते जे अतिशे सूक्ष्मपणुं अने अतिशे निर्लेपपणुं ने अतिशे शुद्धपणुं ने अतिशे असंगीपणुं अने अतिशे प्रकाशेयुक्तपणुं ने अतिशे ऐश्वर्ययुक्तपणुं ते ए भगवाननी मूर्तिने विषे निर्गुणपणुं छे. (१) अने जेम गिरनार पर्वत छे ते लोकालोक पर्वतनी पासे मुकीए त्यारे ते अतिशे नानो भासे पण गिरनार पर्वत कांइ नानो थयो नथी ए तो लोकालोकनी अतिशे मोटाइ आगळ नानो जणाय छे २

तेम पुरुषोत्तम भगवाननी मोटाइ आगळ अष्ट आवरणे युक्त जे अनंतकोटी ब्रह्मांड ते अणुनी पेठे अति सूक्ष्म भासे छे पण ते ब्रह्मांड कांइ नानां थइ गयां नथी, ए तो भगवाननी मोटप आगळ नानां जणाय छे, एवी रीते भगवाननी मूर्तिने विषे जे अतिशे मोटाइ ते भगवान्नुं सगुणपणुं छे. [२] त्यारे कोइकने एम आशंका थाय जे २
भगवान निर्गुणरूपे तो अति सूक्ष्म करतां पण सूक्ष्म छे अने सगुण रूपे तो अति स्थूळ करतां पण स्थूळ छे त्यारे ए बेय रूपनुं धरनारुं जे भगवाननुं मूळस्वरूप ते केवुं छे? तो तेनो उत्तर ए छे जे, जे प्रगट प्रमाण मनुष्याकारे देखाय छे, एज भगवाननुं सदाय मूळस्वरूप छे अने निर्गुणपणुं ने सगुणपणुं ए तो ए मूर्तिनुं कोइक अलौकिक ऐश्वर्य छे, जेम श्रीकृष्ण भगवान ब्राह्मणना पुत्रने लेवा सारु अर्जुन सोता रथे बेसीने चाल्या ते लोकालोक पर्वतने उल्लंघीने मार्गमां तम आव्युं तेने सुदर्शन चक्रे करीने कापीने तेथी पर जे ब्रह्मज्योति तेने विषे रह्या जे भूमापुरुष तेनी पासेथी ब्राह्मणना पुत्रने लेइ आव्या त्यारे ते रथने घोडा ते मायिक हता ने स्थूळभावे युक्त हता पण ते श्रीकृष्ण भगवानने योगे करीने अति सूक्ष्म ने चैतन्यरूप थइने भगवानना निर्गुण ब्रह्मधामने पाम्या, एवी रीते जे स्थूळ पदार्थने सूक्ष्मपणाने पमाडी देवुं ए श्रीकृष्ण भगवाननी मूर्तिने विषे निर्गुणपणुं छे अने एज श्रीकृष्ण भगवान तेणे पोतानी माता जे यशोदाजी तेने पोताना मुखने विषे अष्टावरणे युक्त समग्र ब्रह्मांड देखाडयुं अने वळी अर्जुनने पोतानी मूर्तिने विषे विश्वरूप देखाडयुं अने अर्जुन विना जे बीजा हता ते तो साडा त्रण हाथनी भगवाननी मूर्तिने देखता हता अने ज्यारे भगवाने वामनावतार धार्यो त्यारे प्रथम तो वामनरूपे दर्शन आप्युं अने त्रण पगलां धरती बळी पासे श्रीकृष्णार्पण कराव्या पछी एवुं पोताना स्वरूपने वधार्युं जे, सातपाताळनुं तो एक पगलुं कर्युं अने आकाशमां तो पोतानुं शरीर वधेय माइ रह्युं अने बीजुं पगलुं उंचु मेल्युं तेणे सात स्वर्गने वेंधीने इंडकटाह फोडयुं, एवुं जे भगवाननुं मोटुं स्वरूप थयुं तेने बळी राजाए दीठुं अने बळी विना जे बीजा हता तेणे तो जेवुं वामन स्वरूप भगवाने धारण कर्युं हतुं तेवुं ने तेवुं दीठुं, एवी रीते जे भगवानने विषे अतिशे मोटाइ थकी जे मोटाइ देखाय ए भगवाननी मूर्तिने विषे सगुणपणुं जाणवुं, जेम आकाश छे ते शीतकाळे तथा उष्णकाळे वादळांए रहित होय अने ज्यारे वर्षाऋतु आवे त्यारे असंख्य वादळांनी घटाए करीने भराइ जाय छे ते काळे करीने आकाशमां वादळां उपजे छे ने पाछां लीन थइ जाय छे तेम भगवान पोतानी इच्छाए करीने पोतामांथी निर्गुण ने सगुण रूप जे ऐश्वर्य तेने प्रगट करीने पाछुं पोताने विषे लीन करे छे अने एवा जे भगवान ते मनुष्य जेवा जणाता होय पण तेना महिमानो पार कोइ पामता नथी. (३) अने ३

जे भक्त एवी रीते भगवाननी मूर्तिमां निर्गुणपणुं ने सगुणपणुं समझे ते भक्तने काळ, कर्म ने माया ते बंधन करवाने समर्थ थातां नथी. (४) अने तेने आठेपहोर अंतरमां आश्चर्य रह्या करे छे. (५) इति वचनामृतम्. ॥ ८ ॥ (१०४) ५

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, अमारुं तेज अक्षरादिक सर्वेमां व्यापक छे अने अक्षरादिक सर्वेनुं आत्मा छे अने अक्षरादिक सर्वेथी अतिशे विलक्षण छे अने ए व्यापक तेज ते निर्गुण एटले सूक्ष्म छे. (१) अने एनुं ए तेज अक्षरादिक सर्वनुं आधार थइने बहार रह्युं छे ते सगुण एटले अतिशे अपार छे (२) अने ए ज्ञेय स्वरूप छे ते अमारां अलौकिक ऐश्वर्य छे (३) अने जे भक्त आवी रीते अमारुं निर्गुण स्वरूप समजे तेने काळ, कर्म, माया बंधन करवा समर्थ थतां नथी. [४] अने जे भक्त आवी रीते अमारुं सगुण स्वरूप समझे तेने आठे पहोर आश्चर्य रहे छे. (५) बाबतो छे.

१ प्र० मुक्तानंदस्वामीए परोक्ष शास्त्रमां भगवानना सगुण निर्गुण स्वरूप कह्यां ते पुछयां छे अने श्रीजीमहाराजे पोतानां कह्यां तेनुं शुं कारण हशे ?

१ उ० मुक्तानंदस्वामीए एम पुछयुं छे जे, परोक्ष शास्त्रमां तो परोक्ष भगवानना सगुण निर्गुण स्वरूप कह्यां छेज पण पुरुषोत्तम एवा जे तमे ते तमारां सगुण निर्गुण स्वरूप केवी रीते समझवां एम पुछयुं छे, ते उपर श्रीजीमहाराजे पोतानां सगुण निर्गुण स्वरूप कह्यां छे जे, अमारा तेजरूप अक्षरधामनां सगुण निर्गुण स्वरूप छे ते मूळअक्षरोनां आत्माने आधार छे एवी रीते उत्तर आप्यो छे, अने एवीज रीते मूळअक्षरना ब्रह्मज्योतिनां सगुण निर्गुण स्वरूप छे ते वासुदेवब्रह्मनां आत्माने आधार छे अने वासुदेवब्रह्मना ब्रह्मज्योतिनां सगुण निर्गुण स्वरूप मूळपुरुषोनां आत्माने आधार छे अने मूळपुरुषोना ब्रह्मज्योतिना सगुण निर्गुण स्वरूप ते प्रधानपुरुषादिक सर्वे जीवमात्रनां आत्माने आधार छे एम जाणवुं.

२ प्र० पहेली बाबतमां तमोगुणनुं कार्य जे आकाश तेने निर्विकार कह्यो अने [प्र० ४६ मां] ए आकाशने विकारवान कह्यो छे ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० आमां पृथ्वी आदिक चार भूतथी निर्लेप कह्यो छे पण तेथी पर निर्लेप कह्यो नथी अने (प्र० ४६ मां) पोताना तेजरूप चिदाकाश आगळ आ आकाशने विकारवान कह्यो छे.

३ प्र० श्रीजी बाबतमां सगुण निर्गुण स्वरूपने श्रीजीमहाराजे पोतानी मुर्तिनां ऐश्वर्य कह्यां छे, अने तमे रहस्यमां श्रीजीमहाराजना तेजरूप अक्षरधामनां ऐश्वर्य कह्यां अने जेम तमे कहुं तेमज (म० $\frac{४२}{६}$ मां) पण सगुण निर्गुण भेद अक्षरधामना कह्या छे माटे ते केवी रीते समजवुं ?

३ उ० [म० $\frac{४२}{६}$ मां] पोताना तेजरूप अक्षरधामना सगुण निर्गुण बे भेद कह्या छे अने आमां पण पोताना तेजरूप अक्षरधामनाज सगुण निर्गुण बे भेद कह्या छे ते दृष्टांतमां कह्युं छे जे, जेम आकाशमांथी वादळां उत्पन्न थाय छे ने लीन थाय छे तेम पोताना तेजने आकाशने दृष्टांते कह्युं छे ने ए तेजनां सगुण निर्गुण ऐश्वर्यने वादळांने ठेकाणे कह्यां छे माटे पोताना तेजना सगुण निर्गुण बे भेद कह्या छे पण आ ठेकाणे पोतानी मुर्तिने ने पोताना

तेजने अभेदपणे कह्युं छे, माटे मुर्तिमांथी ऐश्वर्य उत्पन्न थाय छे एम कह्युं छे तेथी शंका उत्पन्न थाय छे पण मुर्तिना तेजनांज ऐश्वर्य कह्यां छे ते [प्र० ६ मां] कह्युं छे जे अमारी आ मनुष्य मुर्तिने दर्शने करीनेज पोताने परिपूर्ण माने तेने अमे अमारा धामने विषे ऐश्वर्य छे ते बळात्कारे देखाडीए छीए एम कह्युं छे माटे ते ऐश्वर्य श्रीजीमहाराजना प्रकाशरूप धामनांज छे (आ व० नो, म० ४२ नो, तथा प्र० ६४ नो) एक सरखो भाव छे.

४ प्र० भूमापुरुष रह्या छे ते स्थानने ब्रह्मज्योति कही अने [प्र० ६ मां] मूळअक्षरथी पर ब्रह्मज्योति कही छे ते केवी रीते समजवुं ?

४ उ० सर्वना कारणने सर्वथी मोटा ने सर्वथी पर एवा श्रीजीमहाराज परब्रह्म छे तेमना तेजने (प्र० १ मां तथा छे. ३६ मां) ब्रह्मज्योति नामे कहेल छे ने प्रधानपुरुष छे ते माया सबलीत ब्रह्म छे ते भूमापुरुष छे ने अव्याकृत धामने विषे रहे छे तेना तेजने आ ठेकाणे ब्रह्मज्योति नामे कहेल छे आनो खुलासो (प्र० ६६ ना त्रीजा प्रश्नोत्तरमां) कर्यो छे. ॥१०४॥

संवत् १८७७ ना कार्तिक शुदि ५ पांचमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम ॰िकारीयाणी मध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उत्तरादा ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराजे नित्यानंदस्वामी तथा ब्रह्मानंदस्वामी प्रत्ये प्रश्न पुछयो जे,

१ (१) जेने एवी मलीन रीस होय जे, जेनी उपर आंटी पडे ते संघाथे आंटी मुकेज नहि पाडानी पेठे रीस राख्याज करे एवो जे होय तेने ते साधु कहीए के न कहीए? पछी ए बे बोल्या जे, जे एवो होय तेने तो साधु न कहेवाय. (१) १

२ पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछयो जे, हे महाराज ! जे भगवाननो भक्त होय ने तेने कोइ भगवदिनो हइयामां अवगुण आवतो होय अने तेणे करीने ते भगवानना भक्त उपर रीस चडती होय तो ते अवगुण टाळवानो शो उपाय छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेना हइयामां भगवाननी भक्ति होय ने भगवाननो महिमा जाणतो होय तेने भगवानना भक्तनो अवगुण आवे नहि अने भगवानना भक्त उपर रीसनी आंटी बंधाय ज नहि, जेम उद्धवजी जो भगवानना महिमाने समझता हता तो एम वर माग्यो जे आ गोपियोना चरणरजना अधिकारी एवां जे वृंदावनमें विषे लता तथा तृण तथा गुच्छ तेने विषे हुं पण कोइक थाउं अने श्रीकृष्ण भगवाने वृंदावनने विषे दृशने तथा पक्षीने तथा मृगलाने बळदेवजी आगळ अति मोटा भाग्यवाळां कह्यां छे अने ब्रह्माए पण श्रीकृष्ण भगवान पासे एम वर माग्यो छे जे हे प्रभो ! आ जन्मने विषे अथवा पशुपक्षीना जन्मने विषे हुं जे ते तमारा दासने विषे रहीने तमारा चरणारविंदने सेवुं एवुं मारुं मोटुं भाग्य थाओ माटे एवो ज्यारे भगवानना भक्तनो महिमा समझे त्यारे तेने भगवा-

नना भक्त उपर कोइ दिवस अवगुणनी गांठ न बंधाय अने पोताना इष्टदेव जे प्रत्यक्ष श्रीस्वामीनारायण तेनो जे भक्त तेने विषे जे कांइक अल्प दोष होय ते महिमाना समझनारानी दृष्टिमां आवेज नहि अने जे भगवानना महिमाने जाणतो होय ते तो भगवानना संबंधने पाम्यां एवां जे पशुपक्षी तथा वृक्षवेली आदिक तेने पण देव तुल्य जाणे तो जे मनुष्य होय अने भगवाननी भक्ति करता होय तथा वर्त्तमान पाळता होय तथा भगवाननुं नाम स्मरण करता होय ने तेने देव तुल्य जाणे ने अवगुण न ले तेमां शुं कहेवुं ? माटे भगवाननो महिमा समझे तेने भगवानना भक्त संघाथे वैर न बंधाय अने जे महात्म्य न समझे तेनेतो भगवानना भक्त संघाथे वैर बंधाय खरुं माटे जे भगवाननुं तथा भगवानना भक्तनुं महात्म्य न जाणतो होय तो ते सत्संगी छे तो पण तेने अर्धो सत्संगी जाणवो, माटे भगवाननो ने भगवानना भक्तनो महिमा समझे तो ते भक्तना हइयामां कोइ काळे हरिजन संघाथे वैर बंधाय नहि एनो ए उत्तर छे. (२) इतिवचनामृतम्. ॥९॥ (१०५) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे रीसनी आंटी मुके नहि ते साधु न कहेवाय (१) बीजामां प्रत्यक्ष भगवान एवा जे अमे ते अमारेने अमारा भक्तनो महिमा समजे तो अमारा भक्त साथे वैर बंधाय नहि. [२] बाबतो छे.

१ प्र० बीजामां प्रत्यक्ष श्रीजीमहाराजना भक्तने विषे अल्प दोष होय ते महिमाना समझनारानी दृष्टिमां आवे नहि एम कह्युं ते महिमा केवो जाणवो ? ने अल्प दोष कियो जाणवो ?

१ उ० [० १५ ना पहेला पश्नोत्तरमां] महिमानुं रूप कह्युं छे अने पंचवर्त्तमान सिवायनी दैहिक प्रकृति बोलवा चालवानी तथा पोतानुं धार्युं करवानी इत्यादिक प्रकृति होय ते अल्प दोष जाणवा.

२ प्र० भगवानना संबंधने पाम्यां एवां जे पशुपक्षी वृक्षवेली एमने देवतुल्य जाणवां एम कह्युं ते देव तुल्य एटले केवां जाणवां ?

२ उ० श्रीजीमहाराजना संबंध वडे करीने निर्गुण, तीर्थरूपने दर्शन करवा योग्य थाय छे माटे देवतुल्य एटले दर्शनीय जाणवां अने तेथी श्रीजीमहाराजनी आज्ञा पाळनारा भक्तने अधिक कह्या छे. ॥ १०५ ॥

संवत् १८७७ ना कार्तिक शुदि १० दशमीने दिवस रात्रिए स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीकारीयाणी मध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडामां विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु मोटेरा दशबार तथा पांच छो हरिभक्त बेठा हता अने श्रीजीने शरीरमां ताव जेवुं जणातुं हतुं अने आगळ सगडी मेलीने तापता हता.

१ पछी श्रीजीमहाराजे मुक्तानंदस्वामीने कह्युं जे [१] अमारी नाडी जुवो शरीरमां कसर छे ? पछी मुक्तानंदस्वामीए नाडी जोइने कह्युं जे हे महाराज ! कसरतो बहु छे पछी मुक्तानंदस्वामीए वळी एम कह्युं जे हे महाराज ! हमणां सत्संगमां कठण काळ वर्ते छे केमजे हे महाराज तमे तो सर्वे सत्संगीना जीवन प्राण छो ते महाराजने शरीरे कसर जेवुं छे एज सर्वे सत्संगीने कठण काळ छे. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, भगवानने प्रसन्न करवाने अर्थे नारदजीए केटलाक युग पर्यंत टाढ तडको तथा क्षुख तरसने सहन करीने महा तप कर्युं अने ते तपे करीने भगवानने राजी कर्या, एवी रीते जे विवेकी होय तेतो जाणीने पोताना देह इंद्रियोने दमीने तप करे छे अने आपणे तो शरीरमां जे कांइ सुख दुःख वर्त्ततुं हशे तेतो श्रीनरनारायणनी इच्छाए करीने वर्त्ततुं हशे माटे जे विवेकी साधु होय तेने तो जाणीने देह इंद्रियोने कष्ट थाय एम वर्त्युं जोइए तो इश्वर इच्छाए जे कांइ कष्ट आवे तेने शीद टाळवाने इच्छे ? अने वळी त्यागी साधुने तो पोताना मनमां एमज दृढ रुचि राखी जोइए जे, मारे तो देवलोक, ब्रह्मलोक ने वैकुंठादिक लोकनां जे पंच विषय संबंधी भोग सुख ते नथी जोइतां ने मारे तो हमणे देह छते तथा देहनो त्याग करीने बदरिकाश्रम तथा श्वेतद्वीपमां जाइने ने तप करीने भगवानने राजी करवा छे ते एक जन्म तथा बे जन्म तथा सहस्र जन्म सुधी पण तप करीनेज भगवानने राजी

करवा छे. (१) अने जीवनुं कल्याण तो आटलीज वातमां छे जे प्रगट प्रमाण एवा १
जे श्रीस्वामिनारायण तेनुंज कर्युं सर्वे थाय छे पण काळ,कर्म ने मायादिक कोइनुं कर्युं कांइ थातुं नथी, एवी रीते भगवानने विषेज एक कर्त्तापणुं समझवुं एज कल्याणनुं परम

कारण छे. (२) अने जे तप करवुं ते तो भगवाननी प्रसन्नतानुं कारण छे अने ते तपने २
विषे पण जेवो राधिकाजी तथा लक्ष्मीजी भगवानने विषे प्रेम लक्षणा भक्तिए करीने भाव राखे छे तेवो भाव राखवो अने जो तप न करे ने भगवाननेज सर्वकर्त्ता जाणे होय पण जन्म मरणना दुःखथी तो जीव तरी जाय पण तप कर्या विना ते जीव उपर भगवाननो राजीपो थाय नहि अने जो नारदजीए तप कर्यं तो नारद उपर श्रीनरनारायण प्रसन्न थया अने ज्यारे तपस्या नारदे अत्यंत करी त्यारे भगवाने एम धार्युं जे नारदजी ज्यां हो त्यांथी अमारी पासे आवो, पछी नारदजी मेरु पर्वत उपर हता त्यांथी उड्या ते गंधमादन पर्वत उपर आव्या अने ते गंधमादन पर्वतथी उड्या ते बदरिकाश्रमने विषे श्रीनरनारायणनी समीपे आवीने दर्शन करता हवा अने भगवाने पण नारदजी उपर प्रसन्न थइने घणुं सुख आप्युं अने जे जीव भगवानने सर्व कर्त्ता हर्त्ता नथी जाणतो तो तेथी बीजो कोइ पापी नथी अने गौ हत्या, ब्रह्महत्या, गुरुस्त्रीनो संग तथा ब्रह्मवेत्ता सद्गुरुनो द्रोह ते थकी पण एने बधु पापी जाणवो, कांजे भगवान विना

बीजा जे काळ कर्मादिक तेने ए कर्त्ता जाणे छे, माटे एवा जे नास्तिक चंडाळ होय तेनी तो छायामां पण उभुं रहेवुं नहि ने मूलमां पण तेना मुखनुं वचन सांभळवुं नहि. (३) अने जे भगवानना भक्त होय ते भगवानने प्रतापे करीने ब्रह्मा, शिव, शुकजी, ३
नारद ते जेवा पण थाय अने प्रकृति पुरुष जेवा पण थाय अने ब्रह्म तथा अक्षर जेवा पण थाय तो पण श्रीपुरुषोत्तमनारायण जेवा थवाने तो कोइ समर्थ नथी. (४) माटे ४
जेनो संग कर्या थकी तथा जे शास्त्र सांभळवा थकी भगवाननी उपासनानुं खंडन थइने स्वामी सेवक भाव टळी जातो होय तो ते संगनो तथा ते शास्त्रनो श्वपचनी पेठे तत्काळ त्याग करवो. (५) ५

२ पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछयुं जे, (२) हे महाराज ! जे भक्त सुंदर वस्त्र तथा अलंकार तथा नाना प्रकारनां भोजनादिक वस्तु तेणे करीने भगवाननी सेवा करे छे ते पण भगवानने राजी करवाने इच्छे छे अने तमे तो तपे करीनेज भगवान राजी थाय एम कहो छो ते तप विना एवी सेवाए करीने राजी करे तेमां शो बाध छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जे सारां सारां पदार्थे करीने भगवाननी भक्ति करे छे ते जो निष्काम भावे करीने केवळ भगवाननी प्रसन्नताने अर्थेज करतो होय तो तो ठीक छे पण जो पोते पण भगवाननी प्रसादी जाणीने ते पदार्थने विषे लोभाइने ने भगवानने पडथा मेलीने ते पदार्थने विषे प्रीति करे तो ते पदार्थने भोगवतो थको विषयी थइने भ्रष्ट थइ जाय छे ए बाध छे, माटे जे त्यागी भक्त होय तेने तो भगवानने सर्वकर्ता जाणीने तपे करीनेज भगवानने राजी करवा अने राधिकाजी तथा लक्ष्मीजी तेनी पेठे भगवानने प्रेमलक्षणा भक्तिए करीने भजवा ए अमारो सिद्धांत छे. [६] ६

३ पछी ब्रह्मानंदस्वामीए पुछयुं जे, (३) हे महाराज ! अमारुं आ लोकने विषे तथा परलोकने विषे सारुं थाय ते कहो ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, अमारो जे आ सिद्धांत छे तेज आ लोकने परलोकने विषे परम सुखनो हेतु छे. (७) ७

४ पछी गोपाळानंदस्वामीए पुछयुं जे, [४] हे महाराज ! त्यागनो अने तप करवानो मनमां इशक तो होय अने त्याग के तप करतां वचमां कोइक विघ्न आवी पडे तो तेनुं केम करवुं ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने जे वातनो इशक होय ने ते वचमां हजारो अंतराय आवे तो पण ते अंतरायनो रोक्यो रोकाय नहि, त्यारे तेनो साचो इशक जाणवो, जुवो अमे एकवीश वर्ष थयां श्रीरामानंदस्वामी पासे आव्या छइए तेमां अनंत भात्यनां वस्त्र तथा अलंकार तथा खानपानादिक तेणे करीने सेवाना करनारा अनंत भक्त मळ्या छे पण अमारुं मन कोइ पदार्थमां लोभाणुं नथी, शा माटे जे अमारे त्यागनोज इशक छे अने आ संसारने विषे केटलीक रांडुं छे ते धणी मरी गयो होय तो तेने वांसे

छाती कुटी कुटीने रोयाज करे छे अने केटलीक बाइयो छे ते पोताना परण्या धणीनो पण त्याग करीने भगवाननुं भजन करे छे अने केटलाक मूर्ख पुरुष होय छे ते पोतानी स्त्री मरी गइ होय तो तेने वांसे रोया करे छे अने बीजी स्त्रीने वास्ते हायवोय करता फरे छे अने केटलाक वैराग्यवान पुरुष होय ते घरमां परणेली स्त्री होय तेनो त्याग करीने परमेश्वरनुं भजन करे छे, एवी रीते सौ सौना इशक जुदी जुदी जातना छे अने अमारो तो एज इशक छे ने एज सिद्धांत छे जे, तपे करीने श्रीनरनारायणने राजी करवा. (८) ८
अने भगवानने सर्वेना कर्त्ता हर्त्ता जाणीने अने स्वामीसेवकने भावे करीने ते भगवाननी भक्ति करवी अने कोइ रीते ते भगवाननी उपासना खंडन थवा देवी नहि, माटे तमे पण सर्वे आ अमारा वचनने परम सिद्धांत करी मानजो अने आपणा स्वामी जे श्रीनरनारायण देव छे ते तो बदरिकाश्रमने विषे तप करे छे अने शियाळानी टाढ तथा उनाळानो तडको तथा चोमासाना वरसादनी धारा ए सर्वे पोताना शरीर उपर सहन करे छे माटे ए श्री नरनारायणना भक्त होय तेने पोताना स्वामी करतां कांइक विशेष राख्युं जोइए एज सेवकनो धर्म छे. (९) इतिवचनामृतम्. ॥१०॥ (१०६) ९

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (४) छे. तेमां पहेलुं कृपावाक्य छे तेमां श्रीजीमहाराजे तपे करीने पोतानी प्रसन्नता कही छे अने अमारी इच्छाए कष्ट आवे तेने टाळवा इच्छवुं नहि [१] अने अमने एकनेज कर्त्ता जाणवा ते कल्याणनुं परम कारण छे (२) अने अमने सर्व कर्त्ता हर्त्ता न जाणे अने बीजा काळ कर्मादिकने कर्त्ता जाणे ते पंचमहापापीथी बधु पापी, नास्तिक ने चंडाळ छे एनी पासे उभुं न रहेवुं ने तेनुं वचन पण सांभळवुं नहि (३) अने अमारा भक्त अमारे प्रतापे करीने ब्रह्मा, शिव, शुकजी, नारद जेवा थाय अने प्रकृति पुरुष, ब्रह्म तथा मूळअक्षर जेवा पण थाय पण अमारा जेवो थवाने कोइ समर्थ नथी. (४) ए सर्वे अमारा सेवक छे ने अमे ए सर्वेना स्वामी छीए. एवो भाव टळी जाय अने अमने ते बीजा मूळअक्षरादिक अवतारोने सरखा मनाय एवा संगनो तथा एवां शास्त्रनो श्वपचनी पेठे तत्काळ त्याग करवो. [५] बीजामां अमने सर्वे कर्त्ता हर्त्ता जाणवा अने तप करवुं अने प्रेमलक्षणा भक्तिए करीने अमने भजवा ए अमारो सिद्धांत छे [६] त्रीजामां ए सिद्धांत आ लोक तथा परलोकने विषे परम सुखनो हेतु छे [७] चोथामां जेने तप त्यागनो साचो इशक होय ते कोइ अंतरायनो रोक्यो रोकाय नहि (८) अने अमारा भक्तने अमारा करतां विशेष त्याग राखवो. (९) बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां देह छतां तथा देहनो त्याग करीने बदरिकाश्रम तथा श्वेतद्वीपमां जवानुं कह्युं ते देह मुकीने तो जवाय पण देह छतां शी रीते जवातुं हशे ?

१ उ० जे संतनी पासे रहेता होइए ते संत खाधा पीधानी आसक्तिवाळा होय तेनो त्याग करीने तपना अंगवाळा संतनी पासे रहेवुं ते देह छतां बदरिकाश्रम जाणवुं अने जे संत तप तथा ध्यान ए बे अंगे युक्त होय तेनो संग राखवो ने तेना जेवुं अंग करवुं ते देह छतां श्वेतद्वीपमां गया जाणवुं.

२ प्र० आमां (१/४ पहेला प्रश्नमां) अमारा भक्त अमारे प्रतापे करीने प्रकृतिपुरुष, ब्रह्म तथा अक्षर जेवा थाय एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते कोने जाणवा ?

२ उ० मूळमायाने मूळपुरुष छे तेमने प्रकृतिपुरुष कह्या छे अने तेमना उपरि श्वेतद्वीपपति वासुदेवब्रह्म छे तेमने ब्रह्म कह्या छे ने तेना उपरि मुर्तिमान मूळअक्षर छे तेने अक्षर कह्या छे ते श्रीजीमहाराजने भजीने अनंत थाय छे.

२ प्र० जे प्रकृतिपुरुषना उपरि ब्रह्मने कह्या ते ब्रह्मने आ विना बीजा कोइ वचनामृतमां पुरुषना उपरि कह्या हशे ?

३ उ० (लो० १२ ना पहेला प्रश्नमां) श्रीकृष्णनी उपासना करनाराने कनिष्ठ निर्विकल्प निश्चयवाळो कह्यो छे अने वासुदेवनी उपासना करनाराने मध्यम निर्विकल्प निश्चयवाळो कह्यो छे तथा (पं० ६/६ मां) वासुदेवने श्रीकृष्णना अवतारी कह्या छे तथा (म० ३१ ना पहेला प्रश्नमां) मूळपुरुषने ब्रह्म सुखे सुखीया कह्या छे ते ब्रह्म वासुदेवने कह्या छे. आ चारमां मूळपुरुषना उपरि वासुदेवने कह्या छे.

४ प्र० श्रीजीमहाराजने भजने करीने पुरुष, ब्रह्मने अक्षर जेवा थाय एम कह्युं ते एम अधिक न्यून थावानुं कारण शुं हशे ?

४ उ० श्रीजीमहाराजने वैराजपुरुष जेवा जाणीने ऐश्वर्यनी इच्छाथी भजन करे ते ब्रह्मा थाय अने अनिरुद्धादिक जेवा जाणीने भजे तो वैराज थाय ने महत्तत्त्व जेवा जाणीने भजे तो अनिरुद्धादि थाय अने प्रधानपुरुष जेवा जाणीने भजे ते महत्तत्त्व थाय अने मूळपुरुष जेवा जाणीने भजे ते प्रधानपुरुष थाय अने वासुदेवब्रह्म जेवा जाणीने भजे ते मूळपुरुष थाय अने मूळअक्षर जेवा जाणीने भजे ते वासुदेवब्रह्म थाय अने श्रीजीमहाराजने सर्वोपरि जाणीने ऐश्वर्यनी इच्छाथी भजे ते मूळअक्षर थाय माटे महिमानी तारतम्यताथी सामर्थीमां भेद पड्या छे अने निष्कामभावे जेने भजे ते तेना पार्षद थाय.

५ प्र० आमां भक्त छेवट अक्षर जेवो थाय एम कह्युं अने (प्र०५१, ६३ ना त्रीजा प्रश्नमां, का० १ ना पांचमा प्रश्नमां, म० ६६ ना सातमा प्रश्नमां, तथा ६७ मां) अमारो भक्त अमारा सरखो थाय छे एम कह्युं छे ते केवी रीते समजवुं ?

५ उ० आमां ऐश्वर्यनी इच्छावाळा सकाम भक्तनी वात कही छे जे ऐश्वर्यने इच्छे ते छेवट मूळअक्षर थाय एम कह्युं छे अने (प्र० ५१, ६३, का० १, म० ६६, तथा ६७ मां) मोक्षनी इच्छावाळा निष्काम भक्तनी वात कही छे ए निष्काम भक्त श्रीजीमहाराजना साधर्म्य पणाने पामे छे ने श्रीजीमहाराजनी हजुरमां अखंड सेवामां रहे छे.

६ प्र० श्रीजीमहाराजना भक्त होय अने एने श्रीजीमहाराजनी सेवामांज रहेवानी इच्छा होय पण पोताने श्रीजीमहाराजना तेजरूप मानवुं एवी समझण न होय ने साकार मूळअक्षर-रूप पोताने मानीने श्रीजीमहाराजने भजता होय तेने केवी प्राप्ति थाय ?

६ उ० ए भक्त निष्काम छे माटे एने श्रीजीमहाराज पोताना गुरुनो योग आपे ने एवा गुरुनो योग न होय तो बुद्धियोग आपे ते बुद्धिए करीने आ शास्त्रमांथी ए भक्त श्रीजीमहारा-

जनो महिमा जाणीने पोताने श्रीजीमहाराजना तेजरूप मानीने श्रीजीमहाराजने भजे ने एतुं श्रीजीमहाराज पुरुं करे अने जो निष्काम होय ने मुळअक्षररूप मानवुं एवी आंटी न मुके तो एने फेर जन्म धरावीने मोटा मुक्तनो योग आपीने तेनुं पुरुं करे.

७ प्र० प्रकृतिपुरुषोनां, ब्रह्मनां ने मूळअक्षरोनां धाम कियां हशे ?

७ उ० (प्र० ६ मां) गोलोक धाम कह्यां छे ते प्रकृतिपुरुषोनां छे अने ब्रह्मपुर कह्यां छे ते वासुदेवब्रह्मनां धाम छे अने असंख्य करोड भूमिकाओ कही छे ते मूळअक्षरोनां धाम छे.

८ प्र० (आमां ६ बीजा प्रश्नमां) अमने पड्या मेलीने पदार्थमां प्रीति करे तो पदार्थने भोगवतो थको विषयी थइने भ्रष्ट थइ जाय छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते केवी रीते भोगवे तो श्रीजीमहाराजने पड्या मेल्या कहेवाय ?

८ उ० श्रीजीमहाराजने जमाडेली वस्तुमां स्वाद मानीने तेने विषे मोह पामीने आसक्तिपूर्वक जमे ने श्रीजीमहाराजनी स्मृति भुली जाय ते श्रीजीमहाराजने पड्या मेलीने भोगव्युं कहेवाय अने श्रीजीमहाराजनी मुर्तिने धारी मुर्तिने जमाडुं छुं एवी स्मृति राखीने आसक्तिए रहित थको जमे ने श्रीजीमहाराजने भुले नहि ते श्रीजीमहाराजने पड्या मेल्या न कहेवाय अने एवी रीते न जमे ने श्रीजीमहाराजने भुलीने जमे ते विषयी थइने भ्रष्ट थाय.

९ प्र० (७ बीजा प्रश्नमां) श्रीजीमहाराजे कह्युं के नरनारायण भगवान बदरिकाश्रमने विषे तप करे छे ने शियाळानी टाढ्य तथा उनाळानो तडको तथा चोमासानो वर्षाद ते पोताना शरीर उपर सहन करे छे तेथी तेमना भक्तने विशेष राखवुं जोइए ते नरनारायण कोने जाणवा ने विशेष केवी रीते वर्त्तवुं ?

९ उ० श्रीजीमहाराजे पोताने नरनारायण कह्या छे ते वनमां विचर्या ने झाड हेठे तप कर्युं ते बदरिकाश्रम जाणवुं. एवी त्यागी तथा गृहस्थोए तप करवानी सदा रुची राखवी ने तप कर्या करवुं अने महाराज राजाधिराजपणे भेट सामग्रियो ग्रहण करता ते प्रमाणे त्यागी गृहीए पूजावा इच्छवुं नहि ने प्रतिमारूपे विराजता होय त्यारे भगवानने थाळ धरीने प्रसादी अन्न त्यागीए मेळावी पाणी नाखीने जमवुं ने गृहस्थोए पण थाळ धरीने महाराजनी स्मृति राखीने जमवुं. ॥१०६॥

संवत् १८७७ ना कार्तिक शुदि ११ एकादशीने दिवस श्रीजीमहाराज गाम श्री कारीयाणी मध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए रात्रि ने समे विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी छींटनी डगली पहेरी हती अने माथा उपर धोळी पाघ बांधी हती अने पीळां ने रातां जे गुलदावदीनां पुष्प तेना हार पहेर्या हता अने पाघमां पीळा पुष्पना तोरा लटकता हता अने पोताना आगळ बे कोरे बे बाळंद मशाल लइने उभा हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजने सच्चिदानंदस्वामीए प्रश्न पुछयो जे, (१) भगवानने विषे

प्रीति होय तेनां शां लक्षण छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने पोताना प्रितम जे
भगवान तेने विषे प्रीति होय ते पोताना प्रितमनी मरजीने लोपे नहि ए प्रीतिनुं लक्ष-
ण छे, जो गोपियोने श्रीकृष्ण भगवानने विषे प्रीति हती तो ज्यारे श्रीकृष्ण भगवान
मथुरां जावा तैयार थया त्यारे गोपियो सर्वे मळीने एम विचार कर्यो जे आपणे कुटुं-
बीनी तथा लोकनी लाजनो त्याग करीने भगवानने जोराइए राखशुं, पछी चालवा समे
श्रीकृष्ण भगवानना नेत्र सामुं जोयुं त्यारे भगवाननी रवानी मरजी देखी नहि त्यारे
सर्वे डरीने छेटे रही अने अंतरमां एम बीनी जे जो आपण भगवानना गमतामां नहि
रहीए तो भगवानने आपणा उपरथी हेत उतरी जाशे एम विचारीने कांइ करी शकी
नहि, पछी भगवान मथुरां पधार्या त्यारे पण त्रण गाउ उपर भगवान हता तो पण
गोपियो कोइ दिवस मरजी लोपीने दर्शने गइ नहि अने गोपियोए एम जाण्युं जे, भग-
वाननी मरजी विना जो आपण मथुरां जाशुं तो भगवानने आपणा उपर हेत छे ते
टळी जाशे माटे हेतनुं एज रूप छे जे, जेने जे साथे हेत होय तेनी मरजी प्रमाणे रहे
अने जो पोताना प्रितमने पासे रहे राजी जाणे तो पासे रहे अने जो पोताना प्रितमने
छेटे रहे राजी जाणे तो छेटे रहे पण कोइ रीते पोताना प्रितमनी आज्ञाने लोपे नहि ए
प्रेमनुं लक्षण छे. जो गोपियोने भगवानने विषे साचो प्रेम हतो तो आज्ञा विना भग-
वानने दर्शने गइ नहि अने ज्यारे भगवाने कुरुक्षेत्रमां तेडी त्यारे भगवाननुं दर्शन कर्युं
पण कोइ रीते भगवानना वचननो भंग कर्यो नहि. माटे जेने भगवानने विषे प्रीति होय
ते भगवाननी आज्ञा कोइ काळे लोपे नहि जेम भगवाननुं गमतुं होय तेमज रहे ए प्री-
तिनुं लक्षण छे. (१) १

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ल्यो एक अमे प्रश्न पुछीए पछी मुनिए कह्युं जे,
२ हे महाराज ! पुछो. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (२) जे भगवाननो भक्त होय ते
भगवाननी मूर्तिना संबंध विनाना जे अन्य संबंधी पंच विषय तेने हराम करी नाखे छे
अने पंचे प्रकारे एक भगवाननो संबंध राखे छे एवो जे भक्त तेने भगवान एम आज्ञा
करे जे, तमे अम थकी छेटे रहो त्यारे ते जो भगवानना दर्शननो लोभ राखे तो एने
आज्ञानो भंग थाय अने जो आज्ञा न पाळे तो भगवानने ए भक्त उपर हेत न रहे माटे
ए भक्ते जेम मायिक शब्दादिक पंच विषयनो त्याग कर्यो छे तेमज भगवान संबंधी जे
शब्द स्पर्श, रूप, रस ने गंध ए पंच विषय छे तेनो पण त्याग करे के न करे ? ए प्रश्न
छे. पछी सर्वे मुनि मळीने जेने जेवी बुद्धि हती तेणे तेवो उत्तर कर्यो पण ए प्रश्ननुं स-
माधान थयुं नहि. पछी श्रीजीमहाराजने कह्युं जे हे महाराज ! एनो उत्तर तमे करो.
पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने भगवानने विषे दृढ प्रीति छे अने भगवानने असंद

संबंधे रहित जे मायिक पंचविषय तेमे हराम करी नाख्या छे अने शब्दादिक पंचविषये करीने भगवान संघाथे दृढपणे जोडाणो छे ते भक्त भगवाननी आज्ञाए करीने ज्यां ज्यां जाय छे त्यां त्यां भगवाननी मूर्ति पण ए भक्त भेळीज जाय छे, ने जेम ए भक्तने भगवान विना रहेवातुं नथी तेमज भगवानने पण ए भक्त विना रहेवातुं नथी अने ए भक्तना हृदयमांथी आंखनुं मटकुं भरीए एटली वार छेटे रहेता नथी, माटे ए भक्तने पांचे प्रकारे भगवान संघाथे अखंड संबंध रहे छे, केमजे जे शब्दादिक पंचविषय विना जीव मात्रने रहेवातुं नथी ते शब्दादिक पंच विषयने एणे हराम कर्या छे ने पंचे प्रकारे करीने भगवानने विषे जोडाणो छे ते माटे ए भक्तने भगवान साथे अखंड संबंध रहे छे. (२) २
इति वचनामृतम्. ।। ११ ।। [१०७]

रहस्यार्थ. प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, अमारी मरजी एटले आज्ञा लोपे नहि ए प्रीतिनुं लक्षण छे. (१) बीजामां जगत संबंधी पंचविषयने हराम करीने पंचे प्रकारे अमारी मुर्तिमां जोडाणो होय ते भक्तना हृदयमां अमे सदाय मुर्तिमान रहीए छीए. (२) बातो छे.

[आ वात सच्चिदानंदस्वामीने श्रीजीमहाराजनो वियोग थाय त्यारे रोम रोम प्रत्ये रुधिर निसरतुं ने शरीरनुं भान रहेतुं नहि तेमना विरहनी निवृत्ति सारु करी छे जे ममारा जेवा प्रेमीभक्तने ज्यां मुकीए त्यां अमे तमारा भेळाज रहीए छीए पण क्षण मात्र छेटे रहेता नथी]. ।। १०७ ।।

संवत् १८७७ ना कार्तिक शुदि १५ पुन्यमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीकारीयाणी मध्ये वस्ताखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी छींटनी डगली पहेरी हती अने धोळो फेंटो बोकाना सहित बांध्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे (१) प्रश्न उत्तर करो पछी मुनिए मांहोमांहि घणीवार सुधी प्रश्न उत्तर कर्या तेमां स्थूळ, सूक्ष्म ने कारण ए त्रण शरीरनो विचार निसर्यो तथा विराट्, सूत्रात्माने अव्याकृत ए त्रणे शरीरनो विचार निसर्यो. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे सुषुप्ति छे ए जीवनी माया छे तेज सुषुप्ति, स्थूळ, सूक्ष्म ने कारणरूपे थाय छे माटे स्थूळ, सूक्ष्म ने कारण ए त्रण जीवनी माया छे तेमज विराट्, सूत्रात्मा ने अव्याकृत ए ईश्वरनी माया छे ते जीवनी कारण शरीररूप जे माया ते वज्रसार जेवी छे ते कोइ रीते जीवथी जुदी पडती नथी माटे ज्यारे ए जीवने संतनो समागम मळे ने ते संतने वचने करीने परमेश्वरनुं स्वरूप ओळख्यामां आवे ने ते परमे-

श्वरना स्वरूपनुं ध्यान करे ने ते परमेश्वरना वचनने हृदामां धारे तेणे कर्ीने पू कारण शरीर छे ते बळीने खोखा जेवुं थइ जाय छे जेम आंबळीनुं बीज होय ने ते बीजनी छाल बीज साथे अति दृढ चोटी होय पछी तेने ज्यारे अग्निमां शेके त्यारे ते छाल द्राक्षीने खोखा जेवी थइ जाय ने पछी हाथमां लेइने चोळे तो जुदी थइ जाय तेम भगवाननुं ध्यान ने भगवाननुं वचन तेणे करीने कारण शरीर शेकाइने आंबलीना फोतरानी पेठे जुदुं थइ जाय छे ने ते विना बीजा कोटी उपाय करे तोयपण कारण शरीररूप जे अज्ञान तेनो नाश थातो नथी एवी रीते श्रीजीमहाराजे वार्ता करी. (१)　　१

२　पछी श्रीजीमहाराजे मुनि प्रत्ये प्रश्न पुछयो जे, [२] जाग्रत अवस्थामां सत्त्वगुण वर्ते छे अने सर्वे पदार्थनुं यथार्थ ज्ञान वर्ते छे तो पण जाग्रत अवस्थामां जे श्रवण कर्युं होय तेने सूक्ष्मदेहमां ज्यारे मनन करे त्यारे जे सांभळ्युं होय ते पाकुं थाय छे अने सूक्ष्म देहमां तो रजोगुण वर्ते छे ते रजोगुणमां तो अयथार्थ ज्ञान रह्युं छे तो पण जे जाग्रतमां सांभळ्युं होय तेनुं सूक्ष्मदेहमां मनन करे त्यारे यथार्थ ज्ञान थाय छे तेनुं शुं कारण छे ? पछी मुनि सर्वे मळीने जेनी जेवी बुद्धि हती तेणे तेवो उत्तर कर्यो पण श्रीजीमहाराजना प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि, पछी मुनि सर्वे हाथ जोडीने बोल्या जे, हे महाराज ! आ प्रश्ननो उत्तर तो तमे करो तो थाय पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एनो उत्तर तो ए छे जे, हृदयने विषे क्षेत्रज्ञ जे जीव तेनो निवास छे ते क्षेत्रज्ञ चौद इंद्रियोनो प्रेरक छे तेमां अंतःकरण जे छे ते क्षेत्रज्ञने समीपे वर्ते छे माटे अंतःकरणमां मनन करे त्यारे दृढ थाय छे, कां जे क्षेत्रज्ञ छे ते सर्वे इंद्रियो अंतःकरणथकी समर्थ छे, माटे क्षेत्रज्ञ प्रमाण करे ए वात अति दृढ थाय छे, एवी रीते ए प्रश्ननो उत्तर कर्यो त्यारे सर्वे मुनिए कह्युं जे, हे महाराज यथार्थ उत्तर कर्यो एवो उत्तर बीजा कोइथी थाय नहि. (२)　　२

३　पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, [३] गमे तेवो कामी, क्रोधी, लोभी, लंपट जीव होय अने जो आवी रीतनी वातमां विश्वास राखीने प्रीतिए करीने सांभळे तो तेना सर्वे विकार टळी जाय छे, जेम कोइ पुरुषने प्रथम तो काचा चणा चावे एवुं दांतमां बळ होय ने ते जो काची केरी सारी पेठे खाय तो तेथी भात पण चवाय नहि, तेम गमे तेवो कामादिकने विषे आसक्त होय पण आवी रीतनी वातने आस्तिक थइने श्रद्धाए सहित सांभळे तो ते पुरुष विषयनां सुख भोगववाने समर्थ रहे नहि अने सम कृच्छ्र,चांद्रायणादिक व्रते करीने जो देहने सुकवी नाखे तो पण जेवुं आवी भगवद्वार्त्ता सांभळनारानुं मन निर्विषयी थाय छे तेवुं तेनुं थातुं नथी अने आवी वात सांभळीने जेवुं तमारुं सर्वेनुं मन निर्विकल्प थातुं हशे तेवुं ध्यान करता हशो तथा माळा फेरवता हशो

त्यारे नहि थातुं होय, माटे विश्वास राखीने प्रीतिए सहित जे भगवान पुरुषोत्तम नारायणनी वात सांभळवी एथी बीजुं मनने स्थिर थावानुं ने निर्विषयी थवानुं कोइ मोटुं साधन नथी. (३) इति वचनामृतम्. ॥१२॥ (१०८) ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (३) छे तेमां पहेलुं ने त्रीजुं कृपावाक्य छे अने (जेतलपुर १ ना पहेला प्रश्नमां) जेने सुषुप्ति कही छे ते प्रधान सुषुप्तिने आंही पहेला प्रश्नमां श्रीजीमहाराजे स्थूळ सूक्ष्मने कारण त्रण देहनुं कारण कही छे ने ए प्रधान सुषुप्तिने ने त्रण देहने जीवनी माया कही छे ने विराट् सूत्रात्माने अव्याकृत ए ईश्वरनी माया कही छे. अने जीवनी कारण शरीररूप मायाने वज्रसार जेवी कही छे. ने ते संतना समागमथी अमने ओळखीने अमारुं ध्यानने अमारा वचनमां वर्ततो कारण देह बळी जाय छे (१) बीजामां सूक्ष्म देहने ने क्षेत्रज्ञने समीपपणुं छे माटे जाग्रतमां सांभळेली वार्तानुं सूक्ष्म देहमां मनन करे तेनुं क्षेत्रज्ञ प्रमाण करे छे त्यारे दृढ थाय छे (२) त्रीजामां अमारो विश्वास राखीने प्रीतिए सहित अमारी वात सांभळवाथी मन स्थिरने निर्विषयी थाय छे तेवुं कोइ साधने करीने थतुं नथी एम कह्युं छे. (३) थावतो छे

१ प्र० आमां त्रीजा प्रश्नमां आवी वात सांभळीने जेवुं तमारुं मन निर्विकल्प थतुं हशे तेवुं ध्यान करता हशो माळा फेरवता हशो त्यारे नहि थातुं होय अने आवी वात सांभळवी एथी मनने स्थिर थवानुं ने निर्विषयी थवानुं कोइ मोटुं साधन नथी एम श्रीजीमहाराजे कह्युं एम जोतां तो सर्व साधनथी वात सांभळवी ते साधन अधिक थयुं त्यारे तो बीजां साधन करवानुं कांइ प्रयोजन रह्युं नहि माटे ते केम समजवुं ?

१ उ० सर्व साधनथी ध्यान करवुं ते उत्तम साधन छे पण श्रीजीमहाराजना स्वरूपनुं ज्ञान थया पछी ध्यान करे तथा माळा फेरवे तो विक्षेप न थाय अने जेने ज्ञान थयुं न होय तेने मायिक वासना टळी न होय ने पोताने शुद्ध आत्मारूप मानवुं ते पण समज्यो न होय तेथी तेने विक्षेप घणा आवे अने जो प्रथम आस्तिक थइने वात सांभळे तो श्रीजीमहाराजना स्वरूपनुं ज्ञान यथार्थ थाय ने महिमा जणाय त्यारे श्रीजीमहाराज विना बीजुं सर्व तुच्छ थइ जाय पछी ध्यान तथा माळा जे करे ते विक्षेपे रहित सुखे थाय माटे सर्व साधन करतां श्रीजीमहाराजनी ज्ञाने सहित वार्ता सांभळवी ते सर्वथी अधिक कही छे. ॥१०८॥

इतिश्री कच्छदेशे वृषपुरनिवासी अनादिमुक्तराज श्रीअबजीभाइविरचित साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम भगवान श्रीस्वामिनारायण मुखकमळनिःसृत वचनामृत रहस्यार्थप्रदीपिकायां कारीयाणी प्रकरणं समाप्तम्.

॥अथ वचनामृत लोया प्रकरणम्॥

संवत् १८७७ ना कार्तिक वदि १० दशमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज गाम श्री लोया मध्ये सुराभक्तना दरबारमां परमहंसना उतारा मध्ये होलिया उपर विराजमान हता अने रुनो भरेलो धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो अने धोळी छींटनी डगली पहेरी हती अने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज मुनि प्रत्ये बोल्या जे, [१] शंकर शब्दनो शो अर्थ छे ? पछी मुनि बोल्या जे, सुखने करे तेने शंकर कहीए. पछी ए वातने सांभळीने श्रीजी-महाराज बोल्या जे, आज पाछली चार घडी रात हती ते समे स्वप्नमां अमने शिवजीए दर्शन दीधां ते शिवजी मोटा जबरो नंदीश्वर ते उपर बेठा हता अने शरीरे बहु वृद्ध हता ने चाळीश वर्षनी अवस्था हती ने मोटी जबरी जटा हती ने ते शिवजी भेळे पार्वती हतां तेणे धोळां वस्त्र पहेर्यां हतां अने ते शिवजी मोटा संतनी पेठे शांत मूर्ति हता ने अमारे उपर तो शिवजीने घणुं हेत जणाणुं तोपण अमारे तो शिव उपर हेत न जणाणुं, केमजे अमे एम जाणीए छइए जे, शिव तो तमोगुणना देवता छे अने आपण तो शांत मूर्ति एवा जे श्रीनरनारायण तेना उपासक छइए ते माटे रजोगुणी तमोगुणी देव एवा जे ब्रह्मा, शिव ने इंद्रादिक देवता तेमनी उपर भाव बेसे नहि अने तेमां पण क्रोध उपर तो अमारे घणुं वैर छे ने क्रोधी जे माणस अथवा देवता ते मुने गमेज नहि तथापि जे शिवजीने अमे मानीए छइए तेनुं शुं कारण छे तो शिवजी तो त्यागी छे ने योगी छे ने भगवानना मोटा भक्त छे, माटे शिवने मानीए छइए अने क्रोध तो केवो छे तो जेवुं हडकायुं कुतरुं होय तेवो छे, जेम हडकाया कुतरानी जे लाळ ते ढोर अथवा मनुष्य जेने अडे ते हडकाया कुतरानी पेठे डाचियुं नाखीने मरी जाय, तेम क्रोधनी जेने लाळ अडे ते पण हडकाया कुतरानी पेठे डाचियुं नाखीने संतना मार्ग थकी पडी जाय अने वळी क्रोध केवो छे तो जेवा कसाइ, आरब, भावर, वाघ, दीपडो, काळो सर्प ते जेम सर्वने बीवरावे छे ने बीजाना प्राणने हरी ले छे, तेम क्रोध छे ते पण सौने बीवरावे छे ने बीजाना प्राणने हरी ले छे एवो जे क्रोध ते जो साधुमां आवे तो ते अति भुंडो लागे, केमजे साधु तो शांत होय पण ज्यारे तेमां क्रोध आवे त्यारे ते साधु बीजाने क्रूर लागे ने ते साधुनी आकृति पण फरी जाय, केमजे ए क्रोधनुं नाम विरूप छे माटे ए क्रोध जेना देहमां आवे तेना देहने विरूप करी नाखे. (१) १

२ त्यारे शुकमुनिए पुछ्युं जे, (२) हे महाराज ! जे लगारेक क्रोध चडी आवे ने पछी तेने टाळी नाखे एवो जे क्रोध ते कांइ नडतर करे के न करे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेम आ सभा बेठी छे तेमां जो इमणे सर्प निकळे ने कोइने करडे नहि तो पण उठीने सौने भागवुं पडे तथा सौना अंतरमां त्रास थाय, अने वळी जेम गामने झांपे आवीने वाघ हुंकारा करतो होय ने कोइने मारे नहि तो पण सौ माणसने अंतरमां भय लागे ने बारणे निकळाय नहि तेम थोडोक क्रोध उपजे ते पण अतिशे दुःखदायी छे. [२] २

३ पछी नाना निर्मानानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे, (३) कामने मूळमांथी उखेडी नाखवो तेनुं शुं साधन छे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एक तो आत्मनिष्ठा अति दृढ होय अने अष्ट प्रकारे ब्रह्मचर्य व्रत राखवुं ए आदिक जे पंचवर्त्तमान तेने दृढ करीने पाळे ने भगवानने महिमा अतिशे समझे ए उपाये करीने कामनुं मूळ उखडी जाय छे, अने कामनुं मूळ उखडी जाय तोय पण ब्रह्मचर्यादिक नियममांथी कोइ रीते डगवुं नहि अने अतिशे कामनुं मूळ उखडवानो तो उपाय ए छे जे भगवानने महिमा सारी पेठे समझवो. [३] ३

४ अने ते पछी भजनानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे, (४) हे महाराज ! कनिष्ठ वैराग्य मध्यम वैराग्य ने उत्तम वैराग्य ए त्रण प्रकारना वैराग्यनुं शुं रूप छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, कनिष्ठ वैराग्यवाळो जे होय ते तो धर्मशास्त्रमां कह्या जे स्त्रीना त्याग संबंधी नियम तेमां सारी पेठे वर्त्ते त्यां सुधी तो एने ठीक रहे पण जो कोइ स्त्रीना अंगने देखी जाय तो ते अंगमां एनुं चित्त चोटी जाय ने एनुं ठेकाणुं न रहे तेने कनिष्ठ वैराग्यवाळो कहीए, अने जे मध्यम वैराग्यवाळो होय ते तो कदाचित् जो स्त्रीने उघाडी थकी देखी जाय तोय पण जेम पशुने उघाडां देखीने क्षोभ थातो नथी तेम तेना मनमां क्षोभ न थाय ने ते स्त्रीना अंगमां चित्त चोटी जाय नहि तेने मध्यम वैराग्यवाळो कहीए, अने जे उत्तम वैराग्यवाळो होय तेने तो जो कदाचित् एकांतमां स्त्रियादिक पदार्थनो योग थाय तो पण ए डगे नहि तेने उत्तम वैराग्यवाळो कहीए. (४) ४

५ अने वळी भजनानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे, (५) कनिष्ठ, मध्यम ने उत्तम ए त्रण प्रकारे जे भगवाननुं ज्ञान तेनुं शुं स्वरूप छे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, कनिष्ठ ज्ञानवाळो ते तो प्रथम भगवाननो प्रताप देखीने निश्चय करे ने पछी तेवो प्रताप न देखाय ने भगवाननो कोइक दुष्ट जीव द्रोह करता होय तेनुं कांइ भुंडुं न थाय त्यारे तेने निश्चय रहे नहि एने कनिष्ठ ज्ञानवाळो कहीए, अने मध्यम ज्ञानवाळो जे होय ते तो ज्यारे भगवाननां शुभ अशुभ एवां मनुष्य चरित्रने देखे त्यारे तेमां मोह थाय ने

निश्चय रहे नहि तेने मध्यम ज्ञानवाळो कहीए; अने उत्तम ज्ञानवाळाने तो एम वर्त्ते जे, भगवानने गमे तेवी शुभ अशुभ क्रियाने करता देखीने पण तेमां मोह थाय नहि ने निश्चय जाय नहि तथा जेणे पोताने निश्चय कराव्यो होय ने तेज वळी कहे जे ए भगवान नथी त्यारे तेने एम जाणे जे, एनुं माथुं फर्युं छे एवो जे होय तेने उत्तम ज्ञानवाळो कहीए. अने तेमां जे कनिष्ट ज्ञानवाळो ते तो अनेक जन्मे करीने सिद्ध थाय अने मध्यम ज्ञानवाळो बे त्रण जन्मे करीने सिद्ध थाय ने उत्तम ज्ञानवाळो तेज जन्मे करीने सिद्ध थाय एवी रीते वार्ता करी. (५) ५

६ त्यार पछी मोटा शिवानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे, (६) भगवाननो निश्चय तो संपूर्ण होय तो पण अंतरमां कृतार्थपणुं मनातुं नथी तेनुं शुं कारण छे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, स्नेह, मान इत्यादिक जे शत्रु तेणे करीने जेनुं अंतःकरण दग्ध वर्त्ततुं होय ने तेने निश्चय होय तो पण पोताने कृतार्थ माने नहि.(६) ६

७ पछी नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे, (७) ए कामादिक शत्रुने टाळवानो शो उपाय छे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ए कामादिक शत्रु तो तो टळे जो एने उपर निर्दय थको दंड देवाने तत्पर रहे, जेम धर्मराजा छे ते पापीने मारवाने अर्थे दंड लेइने रात दिवस तैयार रहे छे तेम इंद्रियो कुमार्गे चाले तो इंद्रियोने दंड दे ने अंतःकरण कुमार्गे चाले तो अंतःकरणने दंड दे. तेमां इंद्रियोने कृछ्रचांद्रायणे करीने दंड दे ने अंतःकरणने विचारे करीने दंड दे तो ए कामादिक शत्रुनो नाश थइ जाय ने पोताने भगवानना निश्चये करीने संपूर्ण कृतार्थ माने. [७] ७

८ त्यार पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे, [८] संपूर्ण सत्संग थयो ते केने कहीए ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एक तो अतिशे दृढ आत्मनिष्ठा होय ने ते पोताना आत्माने देह, इंद्रियो, अंतःकरणथी अतिशे असंगी माने ने ए देह इंद्रियादिकनी क्रियाओ ते पोताने विषे न माने तो पण पंचवर्त्तमानना नियममां लेशमात्र फेर पडवा दे नहि अने पोते ब्रह्मस्वरूपे वर्त्ते तो पण परब्रह्म जे पुरुषोत्तम भगवान तेनुं दासपणुं मुके नहि स्वामीसेवकपणे करीने भगवाननी दृढ उपासना करे अने प्रत्यक्ष मूर्ति जे भगवान तेने आकाशनी पेठे अतिशे असंगी समझे, जेम आकाश छे ते चार भूतमां अनुस्यूतपणे व्यापीने रह्यो छे ने चार भूतनी जे क्रिया ते आकाशने विषे थाय छे तो पण आकाशने ए पृथ्वी आदिक चार भूतना विकार अडता नथी तेम प्रत्यक्ष जे श्रीकृष्ण नारायण ते शुभ अशुभ सर्वे क्रियाने करता थका आकाशनी पेठे निर्लेप छे एम जाणे अने ते भगवाननां जे असंख्यात ऐश्वर्य छे तेने समजे,जे आ भगवान जीवोना कल्याणने अर्थे मनुष्य जेवा जणाय छे तो पण अनंतकोटी ब्रह्मांडना कर्त्ता हर्त्ता

छे अने गोलोक, वैकुंठ, श्वेतद्वीप, ब्रह्मपुर इत्यादिक जे धाम ते सर्वेना स्वामी छे अने अनंतकोटी एवा जे अक्षररूप मुक्त ते सर्वेना स्वामी छे, एवो भगवाननो महिमा जाणीने विशेषे श्रवणादिक भक्तिने दृढ करीने राखे अने ते भगवानना भक्तनी सेवा चाकरी करे तेवी रीते जे वर्ते तेनो संपूर्ण सत्संग कहीए. [८] ८

९ पछी नानाशिवानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे, (९) क्यारेक तो भगवानना भक्तनो महिमा अतिशे समझाय छे ने क्यारेक तो अतिशे समझातो नथी तेनुं शुं कारण छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, संत छे तेतो धर्मवाळा छे ते ज्यारे कोइकने अधर्ममां चालतो देखे त्यारे तेने टोके पछी जे देहाभिमानी होय तेने सवळो विचार करीने शिक्षा ग्रहण करतां आवडे नहि ने सामो ते संतनो अवगुण ले, माटे ज्यां सुधी एने दुःखाडीने कहे नहि त्यां सुधी महात्म्य रहे ने ज्यारे हितनी वात पण दुःखाडीने कहे त्यारे अवगुण ले ने महात्म्य न जाणे अने जेने संतनो अवगुण आव्यो तेने कोइ रीते प्रायश्चित्ते करीने पण शुद्ध थवातुं नथी, जेम कामादिक दोषनां पाप निवारण छे तेम संतना द्रोहनुं पाप निवारण छे नहि, अने जेम कोइने क्षयरोग थाय तेने टाळ्यानुं कोई औषध नथी ते तो निश्चे मरे तेम जेने संतनो अवगुण आव्यो तेने तो क्षयरोग थयो जाणवो ते तो पांच दिवस मोडो वेलो निश्चे विमुख थाशे, अने वळी जेम मनुष्यना हाथ, पग, नाक,कान,आंख, आंगळीयो ए आदिक जे अंग ते कपाय तो पण ए मनुष्य मुवो कहेवाय नहि अने ज्यारे धडमांथी माथुं कपाइ जाय त्यारे तेने मुवो कहेवाय तेम हरिजनमो जेने अवगुण आवे तेनुं तो माथुं कपाणुं अने बीजा वर्त्तमानमां कदाचित् फेर पडे तो अंग कपाणुं कहेवाय पण ते जीवे खरो कहेतां ते सत्संगमां टके खरो ने जेने संतनो अवगुण आव्यो ते तो निश्चे सत्संगमांथी ज्यारे त्यारे विमुखज थाय ए एनुं माथुं कपाणुं जाणवुं. (९) ९

१० पछी भगवदानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे, (१०) हरिजननो अवगुण आव्यो होय तेने टाळ्यानो कोइ उपाय छे के नथी ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, उपाय तो छे पण अति कठण छे ते अतिशे श्रद्धावाळो होय तेथी थाय छे ते ज्यारे कोइ संतनो अवगुण आवे त्यारे एम विचार करे जे, में अति मोटुं पाप कर्युं जे ब्रह्मस्वरूप एवा जे भगवानना भक्त तेनो अवगुण लीधो, एवा विचारमांथी अतिशे दाझ हैयामां थाय ते दाझने मार्‍ये अन्न जमे तो तेना स्वादु कुस्वादुपणानी खबर पडे नहि तथा रात्रिने विषे निद्रा पण आवे नहिं अने ज्यां सुधी संतनो अवगुण हैयामांथी टळे नहि त्यां सुधी जेम जळ विनानुं माछलुं तडफडे तेम अति व्याकुळ थाय अने ज्यारे ए संतनो हैयामां अतिशे गुण आवे ने ते संत कोइ वाते दुःखाणा होय तो तेने अति

दीन थइने प्रसन्न करे, एवी जातनो जेना हृदयमां विचार रहेतो होय तो तेने संतनो अवगुण आव्यो होय ते पण टळी जाय ने सत्संगमांथी पण विमुख न थाय पण ए विना बीजो कोइ एवो उपाय नथी कह्यो एज एक उपाय छे.[१०]इति व०॥१॥ (१०९)१०

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [१०] छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, शान्त मुर्ति एवा जे अमे ते अमारा उपासकोए रजोगुणी तमोगुणी देवमां हेत न करवुंने क्रोधी मनुष्य तथा देवता ते अमने गमता नथी. (१) बीजामां थोडोक क्रोध पण दुःखदायी छे. (२) त्रीजामां आत्मनिष्ठा, ब्रह्मचर्यादिक पंचवर्त्तमान अने अमारो महिमा ए त्रण अतिशे दृढ थाय तो कामनुं मूळ उखडी जाय अने अतिशे कामनुं मूळ उखडवानो उपाय तो अमारो सारी पेठे महिमा समजवो तेज छे. (३) चोथामां त्यागीना त्रण प्रकारना वैराग्यनां लक्षण कह्यां छे. (४) पांचमामां उत्तम, मध्यम, कनिष्ठ ज्ञाननां लक्षण कह्यां छे. (५) छठ्ठामां अमारो निश्चय होय पण कामादिक विकार न टळ्या होय तो कृतार्थपणुं मनाय नहि. [६] सातमामां इंद्रियोने तपे करीने दमे अने अंतःकरणने विचारे करीने दमे तो विकार नाश पामे ने कृतार्थपणुं मनाय. (७) आठमामां आत्मनिष्ठा अति दृढ होय अने पंचवर्त्तमान पाळे अने अमारी स्वामीसेवकपणे दृढ उपासना करे अने प्रत्यक्ष भगवान जे अमे ते अमने अतिशे असंगी ने अतिशे निर्विकार ने सर्वेना स्वामी ने सर्वेना कर्त्ता हर्त्ता समजे अने अमारी नवधा भक्ति करे तथा अमारा भक्तनी सेवा करे तेमो संपूर्ण सत्संग कहेवाय. (८) नवमामां देहाभिमानीथी संतनी शिखामण ग्रहण न थाय ने सामो अवगुण ले ने विमुख थाय. (९) दशमामां अति दीन थइने ते संतने प्रसन्न करे तो अवगुण आव्यो होय ते टळी जाय छे. [१०] बाबतो छे.

१ प्र० त्रीजा प्रश्नमां कामनुं मूळ उखाडवानो उपाय अति दृढ आत्मनिष्ठा अने ब्रह्मचर्यादिक पंचवर्त्तमानने दृढ पाळे अने अमारो महिमा अतिशे समजे ए त्रण उपाय श्रीजीमहाराजे कह्या अने वळी कह्युं जे, अमारो सारी पेठे महिमा समजे तो अतिशे कामनुं मूळ उखडी जाय ते प्रथम अतिशे महिमा कह्यो तेमां ने सारी पेठे महिमा समजवानो कह्यो तेमां शुं न्यून अधिकपणुं आव्युं ते समजाणुं नहि माटे कृपा करीने समजावो ?

१ उ० प्रथम अतिशे महिमा कह्यो ते ज्ञाने करीने समजवानो कह्यो छे अने जे सारी पेठे महिमा समजवानो कह्यो ते महिमा आकारे वृत्ति थइ जाय तेणे करीने जगतनी विस्मृतिए युक्त वर्ते ने मुर्ति आकारे दृष्टि थइ जाय ए सारी पेठे महिमा कह्यो छे.

२ प्र० आठमा प्रश्नमां अक्षररूप अनंतकोटी मुक्त कह्या ते अक्षररूप एटले केवा जाणवा ?

२ उ० जे न क्षरे ते सर्वे चैतन्यवर्गने अक्षर कहेवाय छे अने आ ठेकाणे अक्षरनामे श्रीजीमहाराजने कह्या छे ते [पं० २ मां] भगवान अच्युत छे अक्षर छे असंड छे तथा (अ० ३ मां) भगवान अक्षररूप छे अंतर्यामी छे ने अनंतकोटी ब्रह्मांडना आधार छे एम कह्युं छे माटे अक्षर नामे श्रीजीमहाराजने जाणवा ने ते श्रीजीमहाराजरूप थयेला मुक्तने अक्षररूप कह्या छे आ अक्षररूपनो अर्थ (अ० ४ ना बीजा प्रश्नोत्तरमां) कर्यो छे. ॥१०९॥

संवत् १८७७ ना कार्त्तिक वदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीलोया मध्ये सुराभक्तना दरबारमां दक्षिणादे मुखारविंदे ढोलिया उपर विराजमान हता अने राता कीनखापनो सुरवाळ पहेर्यो हतो अने नरनारायण नामे अंकित एवो जे काळो कीनखाप तेनी डगली पहेरी हती अने माथे बुरानपुरी असमानी रंगनो रेटो सोनेरी तारना फरता छेडानो बांध्यो हतो अने कसुंबी रंगनो रेटो केडे बांध्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने मुक्तानंदस्वामी आदिक जे परमहंस ते दुकड, सरोदा, सतार, मंजीरादिक वाजींत्रने वजाडीने कीर्त्तननुं गान करता हता.

१ पछी कीर्त्तननी समाप्ति थइ रही त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, [१] सर्वे परमहंस सांभळो हुं तमने एक प्रश्न पुछुंछुं. त्यारे मुनि बोल्या जे, हे महाराज ! पुछो. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, आ सत्संगमां हरिभक्तने क्यारे मृत्युनो भय टळी जाय ? अने देह छतेज पोतानुं कल्याण मनाइ जाय ? पछी मुक्तानंदस्वामीए जेवो आवड्यो तेवो उत्तर कर्यो पण श्रीजीमहाराजना प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि. पछी बीजा परमहंस बोल्या जे, हे महाराज ! ए प्रश्ननो उत्तर तो तमेज करो. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, तमे ज्यां सुधी कीर्त्तन बोलया त्यां सुधी अमे एनो विचार कर्यो छे ते अमारी नजरमां तो एम आव्युं छे जे, चार प्रकारना हरिभक्त होय तेने मृत्युनो भय नाश पामे छे अने कृतार्थपणुं मनाय छे ते चार प्रकारना हरिभक्तनी विक्ति एक तो विश्वासी, बीजो ज्ञानी, त्रीजो शूरवीर, चोथो प्रीतिवाळो ए चार प्रकारना जे भक्त तेने तो मृत्युनो भय नथी रहेतो ने देह छते कृतार्थपणुं मनाय छे. हवे ए चार प्रकारना भक्तनां लक्षण कहीए छैए. तेमां जे विश्वासी होय तेतो भगवानना निश्चयना बळवडे करीने मृत्युनो भय राखे नहि ने एम जाणे जे, मुने प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवान मळ्या छे माटे हुं कृतार्थ छुं, अने ज्ञानीने तो आत्मज्ञाननुं बळ होय ते एम माने जे, हुं तो ब्रह्मस्वरूप एवो भगवाननो भक्त छुं माटे एने पण मृत्युनो भय होय नहि, अने शूरवीर होय ते थकी तो इंद्रियो तथा अंतःकरण ए सर्वे थरथर कंपतां रहे अने बीजा कोइथी पण डरे नहि माटे एने कोइ रीते परमेश्वरनी आज्ञामां भंग थाय नहि, माटे पोताने कृतार्थपणुं माने अने मृत्युनो त्रास तेना मनमां लेश मात्र पण होय नहि, अने चोथो जे प्रीतिवाळो तेने तो पतिव्रतानुं अंग छे, जेम पतिव्रता स्त्री होय तेने पोताना पति विना बीजे टेकाणे दृष्टि डोळे नहि ने एक पोताना पतिने विषेज प्रीति राखे तेम ते भगवाननो भक्त ते पतिव्रतानी पेठे पोताना पति एवा जे भगवान तेने विषेज प्रीति राखे, माटे पोताने कृतार्थपणुं माने अने तेने मृत्युनो भय पण लेशमात्र होय नहि. अने ए चार अंग मांयलुं एक प्रधान

होय ने बीजां त्रण गौण होय तोपण जन्म मृत्युना भय थकी तरे छे अने चार मांयलुं एक पण न होय तेने तो मृत्युनो भय टळे नहि, एटली वार्ता करीने पछी श्रीजीमहाराज सर्व परमहंस तथा हरिभक्त प्रत्ये बोल्या जे, ए चार मांयलां जेने जे अंग प्रधानपणे वर्ततां होय ते कहो ? पछी परमहंस समग्रने जे जे अंग वर्ततां हतां ते कह्यां अने हरिभक्तने पण जेने जे अंग वर्ततां हतां ते कह्यां ते सांभळीने श्रीजीमहाराज घणुं प्रसन्न थया. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ए चार अंगमांथी जेने शूरवीरनुं अंग होय ते सर्वे आवीने अमारे पगे लागो, पछी जेने जेने शूरवीरनां अंग वर्ततां हतां ते सर्वे श्रीजीमहाराजना चरणारविंदने छातीमां लइने पगे लाग्या. [१] १

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, वळी जेने प्रश्न पुछवो होय ते पुछो त्यारे ब्रह्मा-
२ नंदस्वामीए पुछ्युं जे, (२) कारण होय ते तो कार्यथी मोटुं जोइए त्यारे वडनुं बीज ते तो नानुं छे ने ते थकी मोटो वड केम थाय छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, कारण होय ते तो नानुं होय ने सूक्ष्म होय तो पण मोटा कार्यनी उत्पत्ति करवाने समर्थ छे एज कारणमां मोटाइ छे, जेम मूळ प्रकृतिनां कार्य एवां जे अनंत प्रधान तेनो मोटो विस्तार छे पण कारणरूप जे मूळ प्रकृति ते तो स्त्रीने आकारे छे तथा पृथ्वीनुं कारण जे गंध ते सूक्ष्म छे ने तेनुं कार्य जे पृथ्वी ते मोटी छे, एमज आकाश आदिक जे बीजां चार भूत तेनो मोटो विस्तार छे ने तेना कारण जे शब्दादिक ते सूक्ष्म छे अने जे कारण होय ते नानुं होय तोपण ते मोटा कार्यने उत्पन्न करवा समर्थ थाय एवी एमां कळा रही छे, जेम अग्निदेव छे तेतो मनुष्य जेवो मूर्तिमान छे अने माणस जेवडो छे अने तेनुं कार्य जे अग्निनी ज्वाळाओ तेतो अति मोटी छे, तथा जेम वरुणनी मूर्ति तेतो मनुष्य जेवडी छे अने तेनुं कार्यरूप जे जळ तेतो अति झाझुं छे, अने जेम सूर्यनी मूर्ति तो मनुष्यना जेवी रथमां बेठी छे अने तेनुं कार्य जे प्रकाश तेतो आखा ब्रह्मांडमां व्यापी रह्यो छे, तेम सर्वेना कारण एवा जे श्रीपुरुषोत्तम नारायण तेतो ऋषिरूपे मनुष्य जेवडा छे तो पण अनंतकोटी ब्रह्मांडना कारण छे अने जे मूर्ख होय तेतो एम समजे जे, जेनुं कार्य आवडुं मोटुं छे तो तेनुं कारण तो केवडुं मोटुं हशे ! एतो मूर्खनी समजण छे अने सर्वेना कारणरूप एवा भगवान ते मनुष्य जेवा छे तो पण पोताना अंगमांथी योगकळाए करीने अनंतकोटी ब्रह्मांडने उत्पन्न करवाने समर्थ छे ने पाछां पोताने विषे लय करवाने समर्थ छे जेम अग्नि, वरुण, सूर्य ते पोताना कार्यरूपे मोटा जणाय छे ने वळी कार्यने पोतामां लीन करीने एक पोतेज रहे छे तेम भगवानना एक एक रोममां अनंतकोटी ब्रह्मांड अणुनी पेठे रह्यां छे ते अष्टावरणने चौदलोक सुधां रह्यां छे, एवी रीते कारणमां अलौकिकपणुं छे ने मोटाइपणुं छे तेने समझु होय ते जाणे जे भगवान मनुष्य

जेवा जणाय छे तोपण आ भगवान सर्वना कारण छे अने सर्वना कर्ता छे ने समर्थ छे एम कहीने श्रीजीमहाराज शयन करवा पधार्या. (२) इति वचनामृतम्. ॥२॥. (११०) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, विश्वासी, ज्ञानी, शूरवीरने प्रीतिवाळो ए चार प्रकारना भक्तने मृत्युनो भय नथी रहेतो (१) बीजामां जेम मूळ प्रकृति की आकारे छे ने तेनुं कार्य मोटुं छे ने जेम चार भूतनो मोटो विस्तार छे ने तेना कारण गंधादिक सूक्ष्म छे अने जेम सूर्यादिकनी मूर्तियो मनुष्यना जेवडी छे ने तेनुं कार्य जे प्रकाशादिक ते अति विस्तारवान छे तेम अमे मनुष्य जेवडा देखाइए छीए तोपण सर्वना कारण छीए एवा प्रत्यक्ष भगवान जे अमे ते अमे मनुष्यना जेवडा छीए पण अनंत कोटी ब्रह्मांडने उत्पन्न करवा ने अमारे विषे लीन करवा समर्थ छीए अने अमारा एक एक रोममां एटले किरणोमां अनंत कोटी ब्रह्मांड अणुनी पेठे रह्यां छे एवुं अमारे विषे अलौकिकपणुं ने मोटाइपणुं छे [२] बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां चारप्रकारना भक्तने मृत्युनो भय टळी जाय छे एम कह्युं ते आ देहे मरवानी बीक टळी जती हशे के फेर जन्म धरवानी बीक टळी जती हशे ?

१ उ० एवा भक्तने फेर जन्म धरवानुं तो होयज नहि पण आ देहे कोइक प्लेग कोलेरा जेवो रोग आवे अथवा राज्यचक्र आवे तेमां मरी जवानी बीक न रहे एम कह्युं छे.

२ प्र० बीजा प्रश्नमां श्रीजीमहाराजना एक एक रोममां अष्ट आवरणे युक्त ब्रह्मांड रह्यां छे एम कह्युं ते अष्टावरणे युक्त ब्रह्मांड तो मूळपुरुषना रोममां रह्यां छे अने श्रीजीमहाराजना रोममां रह्यां छे एम केम कह्युं हशे ?

२ उ० अक्षरनुं तथा ब्रह्मनुं तथा मूळपुरुषनुं ए सर्वेनुं आधार तो श्रीजीमहाराजनुं तेज छे ते (का० ६ मां) कह्युं छे जे, पृथ्वी आदिक सर्व तत्त्वथी लइने अक्षर पर्यंत सर्वेनुं आत्मा अमारुं तेज छे माटे मूळपुरुषना तेजमां रह्यां होय ते पण श्रीजीमहाराजना तेजमांज कहेवाय. ॥ ११० ॥

संवत् १८७७ ना कार्तिक वदि १२ तेरशने दिवस श्रीजीमहाराज गाम श्रीलोया मध्ये सुराखाचरना दरबारमां रात्रिने समे ढोलिया उपर विराजमान हता ने धोळी छींटनी डगली पहेरी हती तथा रुनो भरेलो धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो ने मस्तक उपर धोळो फेंटो बांध्यो हतो तथा धोळी पछेडी ओढी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

ते समयने विषे श्रीजीमहाराजने भगवदानंदस्वामी तथा शिवानंदस्वामीए प्रश्न
१ पुछ्यो जे, (१) भगवान तथा संत तेनो जेने महात्म्य ज्ञाने सहित निश्चय होय तेनां शां लक्षण छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने भगवाननो ने संतनो महात्म्यज्ञाने सहित निश्चय होय तेथी भगवानने अर्थे ने संतने अर्थे शुं न थाय ? एने अर्थे कुटुंबनो त्याग करे, लोक लाजनो त्याग करे, राज्यनो त्याग करे, सुखनो त्याग करे, धननो

त्याग करे, स्त्रीनो त्याग करे अने स्त्री होय ते पुरुषनो त्याग करे, एम कहीने पछी आ सर्वे हरिभक्तनी वार्त्ताओ एक बीजा केडे करीः—गाम डडुसरवाळा रजपुत गलुजी तथा धरमपुरवाळां कुशळकुंवरबाइ तथा पर्वतभाइ तथा राजबाइ तथा जीवुबाइ तथा लाडुबाइ तथा मोटां रामबाइ तथा दादोखाचर तथा मांचोभक्त तथा मुळजी ब्रह्मचारी तथा भुजवाळां लाधीबाइ ने माताजी तथा मुक्तानंदस्वामी तथा वाळाक देशनो आहीर पटेल सामत तथा गाम मानकुवाना मुळजी तथा कृष्णजी तथा वाळाक देशमां गुंदाळी गामना वे काठि हरिभक्त इत्यादिक जे सत्संगी तेमणे भगवानने अर्थे ने संतने अर्थे जे जे कर्युं तेने विस्तारीने कहेता हवा. अने वळी एम कह्युं जे जेने भगवाननो निश्चय महात्म्य ज्ञाने सहित होय ते भगवानना वचनमां फेर पाडे नहि ने जेम कहे तेम करे ते उपर पोतानी वात करी जे, अमारो स्वभाव केवो हतो तो गोदोहन मात्र एक स्थानकमां रहेवाय पण वधु रहेवाय नहि एवा त्यागी हता ने वैराग्य अतिशे हतो ने श्रीरामानंदस्वामी उपर हेत पण असाधारण हतुं तोपण स्वामीए मुजनगरथी कहावी मोकल्युं जे, जो सत्संगमां रहानो खप होय तो थांभलाने बाथ लेइने पण रहेवुं पडशे, एम मयाराम भट्टे आवीने कह्युं त्यारे अमे थांभलाने बाथ लीधी. त्यार पछी तेमणे कह्युं जे, मुक्तानंदस्वामीनी आज्ञामां रहो. पछी अमे स्वामीनां दर्शन थया मोर नव महिना सुधी मुक्तानंदस्वामीनी आज्ञामां रह्या, एवे लक्षणे करीने जेने संतनो ने भगवाननो एवो निश्चय होय तेने निश्चय जाणीए. अने पछी सुंदरजी सुतार ने डोसा वाणियानी वात करी. अने वळी जेने भगवाननो ने संतनो एवो निश्चय होय तेने तेनी कोरनो फेक वर्त्ते एम कहीने राणा राजगरनी वार्त्ता करी अने प्रह्लादनी वार्ता करी जे, प्रह्लाद जे ते नृसिंहजी प्रत्ये बोल्या जे हे महाराज ! हुं आ तमारा विकराळ रूपथी नथी बीतो ने तमे जे मारी रक्षा करी तेने हुं रक्षा नथी मानतो ने तमे ज्यारे मारां इंद्रियो रूप शत्रुना गण थकी रक्षा करशो त्यारे हुं रक्षा मानीश, माटे जे भगवाननो भक्त होय ते दैहिक रक्षा भगवान करे तेणे करीने हर्ष न पामे ने रक्षा न करे तेणे करीने शोक न करे अने अलमस्त थको भगवानने भजे ने भगवान ने संत तेनुं महात्म्य बहु जाणे ते उपर गाम कठलालनी डोशीनी वात करी. (१) अने आवी रीतनो जे हरिभक्त होय तेनो देह पण १
घसीने पडे, वाघ खाइ जाय, सर्प करडे, शस्त्र वागे, पाणीमां बुडी जाय इत्यादिक गमे तेवी रीते अपमृत्युए करीने देह पडे तोपण एम समझो जे, भगवानना भक्तनी अवळी गति थायज नहि एतो भगवानना धामनेज पामे अने भगवानथी विमुख होय तेनो देह सुखी सारी पेठे पडे ने चंदनना लाकडामां संस्कारे युक्त बळे तोपण तेतो निश्चे यमपुरीमां जाय. ए बेनी व्यक्ति सारी पेठे समझे ए सर्वे प्रकारनी जेना हृदयमां दृढ गांठ

पडी होय तेने भगवाननो ने संतनो महात्म्ये सहित निश्चय छे एम जाणवुं (२) अने २
एवो निश्चय वाळो जे होय ते जरुर ब्रह्ममोहोलमांज पुगे पण बीजे क्यांइ कोइ धाममां
ओरो रहे नहि. (३) इति वचनामृतम्. ॥ ३ ॥. (१११).　　　　　　　　　　३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारो तथा अमारा संतनो एटले मुक्तनो महात्म्य ज्ञाने सहित निश्चय होय ते कुटुंबनो तथा लोकलाजनो, राज्यनो, सुखनो त्याग करे अने स्त्री होय ते पुरुषनो त्याग करे अने अमारा वचनमां फेर पडवा दे नहि अने दैहिक सुख दुःखमां हर्ष शोक पामे नहि (१) अने एवो जे अमारो भक्त तेनो देह अपमृत्युए करीने पडे तो पण ए भक्त अमारा धामनेज पामे अने विमुख यमपुरीमां जाय एम समझनाराने अमारो महात्म्य सहित निश्चय छे [२] अने एवा निश्चयवाळो अमारा धामनेज पामे. [३] बाबतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां जेने अमारोने अमारा संतनो महात्म्य ज्ञाने सहित निश्चय होय ते कुटुंब, लोकलाज ने राज्यादिकनो त्याग करे एम कहीने श्रीजीमहाराजे सर्वे हरिभक्तोनां नाम कह्यां तेमणे श्रीजीमहाराजने अर्थे शुं शुं कर्युं हशे ते कृपा करीने कहो ?

१ उ० श्रीजीमहाराज अरेरा गाममां पधार्या हता त्यांथी गलुजीने कहावी मोकल्युं जे, खावा बेठा हो ते पडयुं मुकीने धन, धान्य, माणस, पशु, सर्वस्व लेइने अहिं आवो. ते सांभळीने पोतानां मातुश्री मांदां हतां तेमने मुकीने बीजुं बधुं लइने रात्रिए गया, एवा वचनमां वर्तता हता अने तेमने घेर श्रीजीमहाराज संतोए सहित पधार्या हता अने पोतानी मातुश्रीए देह त्याग कर्यो हतो तो ण श्रीजीमहाराजने गाजते वाजते घेर पधरावीने बे दिवस प्रेमपुर्वक सेवा करीने कोइने ते वात जणावा दीधी नहि अने श्रीजीमहाराजने वळाववा सीमाडा सुधी गया त्यारे श्रीजीमहाराजे कह्युं जे, हवे जाओ तमारुं काम करो. पछी ते पाछा वळ्या, एवा महिमावाळा हता. (प्र०) गलुजी पासे सर्वस्व मगावेलुं ते श्रीजीमहाराजे बधुं राख्युं के केम कर्युं ? (उ०) गलुजीने घेर एज रात्रिए शत्रु आवीने सर्वस्व लुंटी जवाना हता अने गलुजीने तथा तेमनां मनुष्योने मारी नाखवाना हता एटला सारुं श्रीजीमहाराजे मंगाव्युं हतुं. ते शत्रुओ रात्रे गलुजीने घेर आवीने पाछा गया अने सवारमां श्रीजीमहाराजे गलुजीने सर्वस्व पाछुं आपीने उडुसर मोकल्या. एवी रीते महाराजे पोताना दृढ निश्चयवाळाने विश्वासवाळा भक्तनी रक्षा करी. ॥ १ ॥

अने कुशळकुंवरबाइए श्रीजीमहाराजने पोताने घेर तेडीने राज्य आपवा मांडयुं ने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने नखथी शिखा पर्यंत समग्र अंग नीरखीने अंतरमां उतारी लीधी अने जेवा धाममां दिव्य तेजोमय मूर्ति छे तेवी देखतां हवां ने देहनुं भान भुली गयां ने मूर्तिमां जोडाइ गयां ने पंदर दिवसे देह मुकीने अक्षर धाममां गयां एवां हतां. (प्र०) कुशळकुंवरबाइने सत्संग शी रीते थयो हतो अने तेमनो जन्म किया गाममां हतो ? (उ०) ए पूर्वजन्ममां संग्रामजीत राजानी बेन रुडबाइ नामे हतां. त्यां दिल्हीनो बादशाह

आवेल तेणे संग्रामजीतने मारी नाख्यो ने रुडबाइने लेइ जवानुं कर्यु त्यारे रुडबाइए पने समजाव्यो जे, मारे नामना करवी छे पछी ते गयो. अने रुडबाइए अहाळजनी वाव्य करावीने देह मेल्यो अने ते ओळक गाममां कुशळकुंवरबाइ नामे थयां. तेमणे पूर्व जन्ममां करावेली वाव्यमां श्रीजीमहाराज ने संतो नाह्या ने जळ पीधुं ने तेना उपर दया करीने परमचैतन्यानंदस्वामीने प्रेरणा करी ते धरमपुर जइने एमनी धर्मशाळामां उतर्या. अने एमने नियम हतुं जे, जे अतिथि आवे तेने नित्य जमाडे अने महिमा समजीने चरण स्पर्श करवा रात्रे आवतां. तेमने परमचैतन्यानंदस्वामीए स्पर्श करवा दीधो नहि तेथी तेमने स्वामीनो गुण आव्यो ने स्वामीए श्रीजीमहाराजना महिमानी ने प्रगटपणानी वातो कहीने सत्संग कराव्यो हतो अने परमचैतन्यानंदस्वामीने श्रीमुक्तानंदस्वामी गढडे तेडी गया पछी तेमणे श्रीजीमहाराजने धरमपुर तेडाव्या हता. ॥२॥

अने पर्वतभाइ पोतानो दिकरो कंठप्राण हतो तेने मुकीने श्रीजीमहाराजनां दर्शन करवा चाल्या ते गामने सीमाडे पहोंच्या एटलामां दिकरो मरी गयो ने मनुष्य तेडवा गयुं तो पण पाछा वळ्या नहि ने गढडे गया. त्यारे श्रीजीमहाराजे कह्युं जे, दिकरो मरी गयो ने पाछा केम वळया नहि ? त्यारे पर्वतभाइ बोल्या जे एमां शुं ? ए तो छाणमां जीवडा पडे ने मरी जाय एवुं छे एम बोल्या. अने त्यां सात दिवस सुधी जम्या नहि ने पाणी पण पीधुं नहि. तेमने श्रीजीमहाराजे कह्युं जे, तमे क्यां जमो छो ? त्यारे बोल्या जे आपनां दर्शन करुं छुं तेमां बधुं आवी जाय छे अने जे दाणा पाके ते बधा श्रीजीमहाराजना सदाव्रतमां आपी देता तेमने श्रीजीमहाराजे कह्युं जे थोडाक दाणा छोकराने खावा सारु राखता हो तो सारुं त्यारे कह्युं जे कणबीनां छोकरां तो जेम कुकडानां बच्चां उकरडामांथी दाणा खोतरी खाय तेम पृथ्वीमांथी पेदा करी खाय माटे एवी चिंता शुं करवा राखवी पडे एम बोल्या. अने श्रीजीमहाराजे संतोने खटरसनां वर्त्तमान आप्यां त्यारे पर्वतभाइ तथा तेमना घरनां सर्वे माणसोए पण ते व्रत राख्यां हतां एवो महिमा संतनो जाणता इत्यादिक घणी वातो छे ते लखे पार आवे तेम नथी. पर्वतभाइनो बहु समर्थ हता अने श्रीजीमहाराजे पण एमने घेर बहु लीळाओ करीने घणांक सुख आप्यां छे. (प्र०) पर्वतभाइमां शी सामर्थी हती अने श्रीजीमहाराजे एमने घेर शी शी लीळाओ करी हती ते कहो ? (उ०) श्रीजीमहाराज सर्वे संतोने तथा काठीयोने लेइने गढडेथी चाल्या ते फरता फरता अगत्राइ आव्या त्यां ताप गाळवा एक झाड तळे उतर्या त्यां हरिजनोए खाटलो लावीने पाथर्यो ते उपर श्रीजीमहाराज विराजमान थया अने संत ने हरिजनो खेतरमां पाथर्या विना एमने एम बेसी गया ते वखते श्रीजीमहाराज बोल्या जे, मारो व्हालीडो केम न आव्यो ? एम बे चार वार बोल्या, एटलाकमां पर्वतभाइ कपासनी सांठीयो खोदीने आव्या ने खभेथी कोदाळी नाखी दइने दंडवत् करवा मंड्या. त्यारे श्रीजीमहाराज उभा थइने बोल्या जे, मारो व्हालीडो आव्यो, एम बे चार फेरा बोलीने मळ्या ने पोतानी पासे महाराजनी गादी नाखीने बेसार्या. त्यारे सर्वे संत हरिजनोने संशय थयो जे

आपणे सर्व पृथ्वी उपर बेठा छीए अने आ कणबीने श्रीजीमहाराजे गादी उपर बेसार्या ए ठीक न कर्युं. पछी सांज वखते त्यांथी चाल्या ते बीजे गाम गया पछी फरता फरता ज्यारे पाछा आव्या त्यारे पण ए ठेकाणे आव्या ने बपोर थया एटले त्यांज उतर्या. एवामां पर्वतभाइ आव्या तेमनी केडे करोडो विमान आव्यां ते जोइने श्रीजीमहाराज बोल्या जे, पर्वतभाइ आ लश्कर क्यां फेरवो छो ? त्यारे पर्वतभाइ बोल्या जे ए तो मागण छे त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, क्यांथी आवेला छे ? त्यारे पर्वतभाइए कह्युं जे, ईश्वरकोटी, ब्रह्मकोटी ने अक्षरकोटी ए सर्वे नित्य मारी केडे फरे छे ने आत्यंतिक कल्याण मागे छे तेमने आपना धाममां मोकलुं छुं. त्यारे श्रीजीमहाराजे कह्युं, जे आमने धाममां मोकलो ते अमे जोइए.पछी पर्वतभाइ एमना सामुं जोइने बोल्या जे, "जाओ अक्षरधाममां" एटले बधां विमान जतां रह्यां ते जोइने सर्वे आश्चर्य पाम्या ने संशय टळी गयो. अने एक समे श्रीजी-महाराजनां दर्शन करवा सारु गढडे गया ने पोताना खेतरमां घउं पाकेला हता ते एक मुसलमानने सोंपी गया हता ते मुसलमाने रात्रे घउं कापवा मांड्या तेने पर्वतभाइए सोटीयो मारी ते दातरडुं ने घउं मुकीने जतो रह्यो. पछी ज्यारे पर्वतभाइ दर्शन करीने आव्या त्यारे ए मीयांने कह्युं जे तने सोटीयो अमे मारी हती त्यारे ते सिपाइ अति आश्चर्य पामी ने प्रार्थना करतो हवो. इत्यादिक घणीक वातो छे. हवे श्रीजीमहाराजे एमने घेर लीळा करी छे तेमांथी किंचित् कहीए छीए:—पर्वतभाइए पोताना दिकरा मेघजीभाइनो विवाह कर्यो त्यारे गढडेथी श्रीजीमहाराजने तथा संत हरिजनो बाइ भाइने अगत्राइ तेडी लाव्या ने श्रीजी-महाराजने ढोलीयो पाथरी आप्यो ते उपर श्रीजीमहाराज विराजमान थया. अने पर्वत-भाइ पण श्रीजीमहाराजना ढोलीया पासे बेसी गया पण कोइनी संभावना राखी नहि त्यारे काठीए श्रीजीमहाराजने कह्युं जे, तमे तो पर्वतभाइने बहु वखाणता हता पण हजु सुधी अमारी खबर लेता नथी. त्यारे श्रीजीमहाराजे पर्वतभाइने कह्युं जे, केम आ सर्वनी खबर लेता नथी ? त्यारे पर्वतभाइ बोल्या जे, महाराज हुं तो गुमास्तो छुं अने धणी तो आप छो, माटे हवे मारे शा उचाट ? पछी श्रीजीमहाराजे संतो पासे रसोइ करावीने अखंड धारे घी पीरसवा मांडयुं ते जोइने पर्वतभाइ बहु राजी थया ने बोल्या जे, मने न्याल कर्यो माटे पर्वतभाइए "न्यालकरण बापो" एवुं श्रीजीमहाराजनुं नाम पाडयुं पण घी बगाडयुं एवो संशय थयो नहि ते जोइने काठी तथा सर्वे संतो आश्चर्य पाम्या ने बोल्या जे, पर्वतभाइना जेवी आपणी समजण थइ नथी. पछी सर्वे जमी रह्या ने सर्वे सीधानां वासण उंधां वाळी मुक्यां ते बधां सवारे जुवे त्यारे सवळां दीठां अने घी गोळ आदिक सर्वे सामान भरेलो जोइने आश्चर्य पाम्या, एवी रीते नित्य खाली थाय ने नित्य भराइ जाय एम सोळ दिवस सुधी सर्वे जम्या अने सोनेरी साजे रोझो घोडो शणगारीने रात्रिए वर-घोडो फेरवीने मेघजीभाइने परणावीने घेर आव्या अने सवारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, अमारी आंख्यमां कणुं प-्युं छे ते कोइ काढे एवुं छे ? पछी मेघजीभाइनी पत्नीए जीभे करीने काढयुं. तेने श्रीजीमहाराजे वर दीधो जे, अमो तमने आ जन्मेज अमारा अक्षरधाममां

अखंड अमारी सेवामां राखीशुं, एवी अनंत लीलाओ करीने सुख आप्यां छे तेनो लखे पार आवे तेम नथी. ।। ३ ।।

अने श्रीजीमहाराजे अनंत जीवोना उद्धार करवाने अर्थे आंही प्रगट मनुष्यरूपे देखावानो संकल्प कर्यो त्यारे घणाक मुक्तोने आज्ञा करी जे, तमे सर्वे कोइक स्त्रीरूपे ने कोइक पुरुषरूपे देखाइने जीवनो उद्धार करो. ते आज्ञा मुक्तोए माथे चडावी ने ते प्रमाणे जुदा वर्णमां दर्शन आप्यां. ने जीवुबा, ने लाडुबा ने राजबाइने कह्युं जे, तमे काठीनी जात्यमां स्त्रीरूपे देखाओ. त्यारे तेमणे महाराजनी प्रार्थना करी जे, हे महाराज ! अमे स्त्री आकारे देखाइए तो ए लोकनी रीति प्रमाणे सभामां आपणी पासे संत तथा पुरुषो बेठा होय त्यां अमाराथी बेसाय नहि अने तमे जे वार्ताओ करो अने प्रश्न उत्तर थाय ते अमारा सांभळवामां आवे नहि अने अमारां माबाप अमने जीव साथे परणावे ते अमारे मोटुं लांच्छन आवे अने वळी आप देश विदेश विचरो त्यां अमाराथी साथे अवाय नहि अने तमे जे जे लीला करो ते अमारा जोयामां आवे नहि, माटे अमे स्त्री आकारे देखावामां खुशी नथी. त्यारे श्रीजीमहाराजे कह्युं जे, मर्त्यलोकमां तमे ने अमे भेळा एक स्थानमां रहीशुं अने तमने निरावरण राखशुं ते अमारी सर्वे लीला घेर बेठा थका देखशो अने तमने पुरुषनो स्पर्श थवा नहि दइए. पछी तेमणे ते आज्ञा माथे चडावी ने स्त्री आकारे देखायां अने महाराज पण एमने घेर रहेता हवा. अने राजबाइने एमनां मावापे पराणे परणाववानुं कर्युं ने खांडुं मोकल्युं त्यां राजबाइनुं स्वरूप सिंहना जेवुं देखीने पाछां वाळी मुक्यां पछी एमणे सर्वे संबंधीनो तथा देहनो अनादर करीने श्रीजीमहाराजनी प्रसन्नतानां साधन घणां कर्यां.।।४।।

अने जीवुबानुं पण कुंडळमां राइबाइना दिकरा मामैया पटगर साथे सगपण कर्युं हतुं. पछी जीवुबाए राइबाइने कह्युं के मारे तो व्यवहार करवो नथी भगवान भजवा छे. पछी राइबाइए राजी थइने रजा आपी ने गढडे मोकली दीधां. अने लाडुबाइनुं खांडुं एमने सासरे जतुं हतुं ते गाममां धाडुं पडयुं तेनी केडे वार चडी हती. तेमां जेनी साथे लाडुबाइनुं सगपण कर्युं हतुं ते वारे गयेल ते मराणो. पछी लाडुबाइ गढडे आवतां रह्यां, एवी रीते ए त्रणेनी श्रीजीमहाराजे रक्षा करी अने ए त्रणेए श्रीजीमहाराजना भेळां रहीने श्रीजीमहाराजनी प्रसन्नतानां साधन कर्यां. ।।५।।

अने मोटां रामबाइ वाळाना-जेतपुरनां हतां. तेमने पीयरीयांए तथा सासरीयांए व्यवहार कराववा बहु उपाधि करी. पछी भादर नदीना धराना कांठा उपर रात्रिए पोतानां वस्त्र मुकीने चाली निसर्यां ते श्रीजीमहाराजनी पासे गढडे जइने त्यागी थइने रह्यां.।।६।।

अने दादाखाचरे पोतानुं सर्वस्व श्रीजीमहाराजने अर्पण कर्युं ने जेम श्रीजीमहाराज कहे तेम करता पण कोइ प्रकारनो संशय करता नहि एमनी वातो तो अपार छे ते घणे ठेकाणे लखी छे. ।।७।।

अने मांचो भक्त प्रथम मार्गीना पंथमां हता पण ब्रह्मचर्यव्रतमां कुशळ हता. अने एक किमियावाळो पोताने घेर आवीने उतर्यो हतो तेणे तांबानुं रूपुं करी बताव्युं तेने लाकडी

लइने गाम बहार काढी मुक्यो पण रूपामां लोभाया नहि अने ज्यारे श्रीजीमहाराज मळ्या त्यारे एकांतिक भक्त थया. ते महाराजने दर्शने गया त्यारे पोतानो पांचसो वीघा कपास हतो ते सांभरशे एम जाणीने भेळावी दीधो. ॥८॥

अने मुळजी ब्रह्मचारी मछीयाव गामना ब्राह्मण हता. ते यजमानने दिकरीने तेडवा गया हता तेने तेडीने आवतां मार्गमां एक गाममां रात रह्या त्यां ए बाइनी नजर खोटी देखवामां आवी तेथी तेने त्यांने त्यां पडी मूकीने चाली निसर्या ने श्रीजीमहाराज पासे आवीने ब्रह्मचारी थया एवा निष्कामी हता तेमने श्रीजीमहाराजे जोडा पहेरवानी अने घी गोळ जमवानी बंधी करी अने पोताना सेवामांथी पण काढी मुक्या तो पण श्रीजीमहाराजने विषे जेवी प्रीति ने दिव्यभाव हतो ने जेवी दृढता हती तेवीने तेवीज रही पण तेमां फेर पड्यो नहि, एवी रीते श्रीजीमहाराजे घणीक परीक्षा लीधी तो पण ब्रह्मचारी डग्या नहि एवा परिपक्व निश्चयवाळा हता, एवी एमनी केटलीक वार्ताओ छे. ॥९॥

अने लाधीबा भुजनां कायस्थ हतां अने हाल भुजमां भोगीलालभाइ छे तेनां संबंधी हतां अने स्वतंत्र समाधिनिष्ठ हतां ने श्रीजीमहाराजनी मुर्तिने दिव्य तेजोमय तेजना समूहने विषे देखतां. तेमने एक खेतरमांथी कच्छी बार मण मठ आवता, तेमांथी निर्वाह चलावतां तेमने श्रीजीमहाराजे कहावी मोकल्युं जे, तमारी पासे माताजीने मोकल्यां छे तेमनुं पोषण करज्यो त्यारे राजी थयां पण शी रीते पोषण करीश एवो संकल्प पण थयो नहि, एवो श्रीजीमहाराजना वचनमां विश्वास हतो इत्यादिक घणी वातो छे. ॥१०॥

अने माताजी मारवाडमां एक महान राजानां राणी हतां. तेमनी कुंवरीनो विवाह हतो त्यां जान आवी हती तेमां इटर तथा माणसा आदिकना राजानी राणीओ गयां हतां ते राणीयोमा मुख थकी वात सांभळी जे, स्वामिनारायण भगवान प्रगट थया छे तेथी पोताना मनमां विचार थयो जे, भगवान प्रगट थया ने हुं रही जइश तो मारुं कल्याण नहि थाय, एम जाणीने रात्रिए बारीए दोरडुं बांधीने उतरीने चाली निसर्यां तेमने खोळयां पण जड्यां नहि. तेथी राणाए चारे दिशे अस्वार मोकल्या ते घोडानां डाबला वागता सांभळीने एक मरेला उंटना खोखामां पेसी गयां ने अस्वार पाछा वळ्या त्यारे निसरीने चाल्यां. ते वाटमां वणझारानी पोठ्य साथे वीसनगरना तळावमां उतर्यां त्यां रात्रिना छेल्ला पहोरे बाइओ गाममांथी न्हावा आव्यां तेमनो स्वामिनारायण स्वामिनारायण एवो शब्द सांभळीने तेमनी पासे आवीने सर्वे हकीकत कही पछी ते बाइयो गाममां लइ गयां पछी श्रीजीमहाराज पासे गढडे आव्यां. तेमने महाराजे माताजी नाम धरावीने लाधीबाइ पासे भूज मोकल्यां त्यां रहीने लाधीबानी सेवा करी ने लाधीबाने देह मुकवो हतो ते दिवसे माताजीने लख्युं के मारे आज धाममां जवुं छे. पछी माताजी उदास थइ गयां ने बोल्यां जे, मने साथे लइ जाओ. पछी तेमने देह मुकावीने पछी स्वतंत्रपणे पोते देहोत्सव करीने धाममां गयां. ॥११॥

अने मुक्तानंदस्वामीए बे वार गुरु कर्या पण गुरुने विषे निष्कामी वर्तमानमां खामी

देखीने पछवा मुक्या ने रामानंदस्वामी तथा तेमना साधुने दृढ निष्कामी देखीने त्यां रह्या अने मन कर्म वचने दास थइने सेवा करी पण गुरुमां ने अधिकारमां ने मिल्कतमां बंधाया नहि अने श्रीजीमहाराज रात्रिने दिवस कहे ने रुमालने तरवार कहे तो पण जीवमांथी हा पाडे पण संशय थतो नहि. ॥१२॥

अने सामत पटेल पना दिकरानी वीने तेडवा गया हता. तेणे मेणुं दीधुं जे, तारा दिकराने नो खप नथी ने जो तारे खप होय तो तुं लेइजा. ते सांभळीने विचार कर्यो जे हुं स्वामिनारायणनो भक्त छुं ने मने मेणुं आप्युं माटे इंद्रिय न राखवी, पम विचारीने भस्म करी नाखी. ॥१३॥

अने मुळजी तथा कृष्णजी कच्छ देशमां गाम मानकुवाना हता. ते श्रीजीमहाराज पासे त्यागी थवा गया हता तेमने महाराजे त्यागी न कर्या ने पाछा वाळी मुक्या. पछी तेमणे पोते भगवां लुगडां पहेरीने गाममां झोळी मागवा मांडी पछी तेमना संबंधीए रजा आपी पटले गढडे आव्या. तेमने श्रीजीमहाराजे विमुख करीने काढी मूक्या तो पण विमुखपणानी मानीनता राखी नहि अने घेला नदीना कांठे वेरीमां जइने कीर्तन बोलवा मांड्यां, पछी श्रीजीमहाराजे तेडावीने भेळा राख्या. (प्र०) तेमांथी भस्म कोणे कर्युं हतुं ? (उ०) कृष्णजीए कर्युं हतुं, तेमनुं घनश्यामानंदस्वामी नाम हतुं ने मूळजीनुं सर्वज्ञानंदस्वामी नाम हतुं. ॥ १४ ॥

अने गुंदाळी गामना बे काठी हरिभक्तने घेर साधु आव्या तेमने ए काठीनी माए रसोइ करावा मांडी तेनी गामना घरडेरा काठीने खबर पडी. तेणे साधुने रसोइ करवा दीधी नहि ने काढी मुक्या ते घरडेरा काठीने मारी नाख्यो ने पोते पण मराणा एवो पक्ष राख्यो. ॥ १५ ॥

अने सुंदरजी सुतार कच्छभुजना हता. तेमणे श्रीजीमहाराजनी घणी सेवा करी हती अने श्रीजीमहाराज एमने घरे बहु रह्या हता ने श्रीजीमहाराजनी कृपाथी दिव्य दृष्टि पामेला हता ते जानमां गया हता तेमने श्रीजीमहाराजे वख घरेणां थोभा उतरावीने कोपीन बळावीने तुंबडी आपीने काशीए मोकल्या तो पण एम न कह्युं जे हुं जान वळावीने पछी जाउं ने मनमां संकल्प पण थयो नहि, ए महिमा विना थाय नहि. ॥१६॥

अने गाम बंधीयाना डोसावाणीयानुं धन कुवामां नाखी देवराव्युं ने कोपीन पहेरावीने तुंबडी लइने काशीए मोकल्या. ते वडोदरे जातां श्रीमुक्तानंदस्वामी मळ्या तेमणे पाछा वाळ्या ने श्रीजीमहाराज पासे मोकल्या ते श्रीजीमहाराज पासे आव्या. त्यारे महाराजे कह्युं जे घेर जाओ ने घरनुं माणस घरमां होय त्यारे तमारे बहार रहेवुं अने ए बहार निकळे त्यारे तमारे घरमां जवुं ने जो बेय साथे घरमां जाओ तो उपवास करवो एम आज्ञा करी ते देह पर्यंत पाळी. ॥१७॥

अने राणो, राघव, वशराम ने भीम ए चार भाइ गोळीडा गामना राजगर ब्राह्मण हता. ते गाममां यम पेठा तेने देखीने तेमणे कह्युं के अमारा गाममां पेसशो नहि. पछी

यम सामा थया जे तमारां घर साचवो पण गाममां तो तमारा रोक्या नहि रहीए, पछी तेमने लडाइ थइ ते यमने मारीने काढी मुक्या एवा समर्थ हता. ते भीम देह मुकी गया. ने वशराम ने राघव ए साधु थया. ने राणे देह मुकती वखते पत्नी मातुश्रीने कह्युं जे, मारा बारमाने बीजे दिवसे तने तेडी जइश. ते प्रमाणे तेडी गया. ॥१८॥

अने कठलालनी डोसी कसळबा हतां तेमणे श्रीजीमहाराजनो अंगुठो पाणीना घडामां बोळावीने ते पाणी गामना कुवामां नांख्युं, जे गामना लोको पाणी पीशे ते बधानुं कल्याण थाशे एवो तेमने श्रीजीमहाराजनो महिमा हतो. ॥१९॥

अने प्रल्हादजीनी वात तो आ वचनामृतमां लखेली छे.

१ प्र० अमने रामानंदस्वामीए कही मोकल्युं जे सत्संगमां ज्ञाननो खप होय तो थांभलाने बाथ लइने पण रहेवुं पडशे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं तेनुं सिद्धांत शुं समजवुं ?

१ उ० रामानंदस्वामीए श्रीजीमहाराजने एम कह्युं जे तमे साक्षात् भगवान छो ने जीवोनां कल्याण करवा मनुष्यरूपे प्रगट थया छो ते तमारा आगळ तो सर्वे थांभला जेवा एटले मायिक ने असमर्थ छे तो पण तमे जीवोनां कल्याण करवा पधार्या छो तेथी आ लोकना मनुष्य भेळुं रहेवुं पडशे अने मुक्तानंदस्वामी आदिक मुक्तोने भेळा लाव्या छो ते मुक्तोनी आज्ञामां रहेजो एटले मुक्तो जेवा तेवा पामर ने अधम जीवोनो उद्धार करवानुं कहे ते करज्यो ने करवा देज्यो एम कह्युं छे. ॥१११॥

संवत् १८७७ ना कार्तिक वदि १४ चौदशने दिवस पहोर एक दिवस चडते स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीलोया मध्ये सुराभक्तना दरबारमां विराजमान हता अने धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो अने धोळी छींटनी डगली पहेरी हती अने मस्तक उपर श्वेत पाग बांधी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी अखंडानंदस्वामीए श्रीजीमहाराजने प्रश्न पूछ्यो जे, (१) अनंत कोटी ब्रह्मांड छे ते ब्रह्मांडोने विषे जेवी आ ब्रह्मांडमां वर्तमान काळे भगवाननी मूर्ति छे तेवी ने तेवीज छे के अंश कळाए करीने छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्याजे, जेम बिलोरी काचनुं एक मोटुं मंदिर होय ने तेने दशेदिशे अनंत बिलोरी काचनी नानी ओरडीयो होय पछी मध्यनुं जे काचनुं मंदिर तेमां एक पुरुष उभो होय ते एक ठेकाणे रह्यो थको सर्वे बीजी ओरडीयोमां भासे तेम भगवान पोते पोताना अक्षरधामने विषे सदा विराजमान छे अने मूळ मायामांथी उपज्या जे अनंत कोटी प्रधान पुरुष ते थकी अनंत कोटी ब्रह्मांड उपजे छे पछी ते भगवान पोताना अक्षरधाममां एक ठेकाणे रह्या थका पोतानी इच्छाए करीने अनंत कोटी ब्रह्मांडने विषे अनंत रूपे देखाय छे. (१) १

२ पछी वळी अखंडानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे, (२) श्रीकृष्णनारायण तो सदा

मनुष्याकृति छे ने ते भगवाननुं स्वरूप सर्वे काळे सत्य छे अने तेज भगवान क्यारेक मच्छ, कच्छ, वराह, नृसिंहादिक अनंतरूपे करीने भासे छे ते केम समजवुं ? अने वळी ब्रह्मांड ब्रह्मांड प्रत्ये कल्याणनी रीति तथा भगवाननी मूर्ति एक सरखी छे के जुदी जुदी छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, भगवाननी मूर्ति तो सदा एक सरखी छे, तो पण भगवान पोतानी मूर्तिने ज्यां जेवी देखाडी जोइए त्यां तेवी पोतानी इच्छाए करीने देखाडे छे अने ज्यां जेटलो प्रकाश करवो घटे त्यां तेटलो प्रकाश करे छे अने पोते तो सदा द्विभुज छे तोपण पोतानी इच्छाए करीने क्यांइ चार भुज, क्यांइ अष्ट भुज, क्यांइ अनंत भुजने देखाडे छे तथा मच्छ कच्छादिक रूपे करीने भासे छे, एवी रीते ज्यां जेवुं घटे त्यां तेवुं रूप प्रकाशे छे अने पोते तो सदा एक रूपेज विराजमान रहे छे (२) अने वळी एक ठेकाणे रह्या थका अनंत कोटी ब्रह्मांडने विषे अंतर्यामीरूपे २
व्यापीने रहे छे, जेम व्यासजी एक हता ते शुकजीने साद कर्यो त्यारे स्थावर जंगम सर्वे जीवमां रहीने साद कर्यो अने शुकजीए हुंकारो दीधो त्यारे पण स्थावर जंगम सर्वे सृष्टियां रहीने हुंकारो दीधो, एवी रीते शुकजी जेवा मोटा सिद्ध होय ते पण सर्वे जगत्मां व्यापवाने समर्थ थाय छे ते तो भगवानना भजनना प्रतापे करीने एवी योग कळाने पाम्या छे तो पोते भगवान पुरुषोत्तम ते तो योगेश्वर छे ने सर्वे योग कळाना निधि छे ते एक ठेकाणे रह्या थका अनंत कोटी ब्रह्मांडमां पोतानी इच्छाए करीने ज्यां जेम घटे त्यां तेम भासे छे तेमां शुं कहेवुं ? अने ए भगवानमां एम होय तेनुं शुं आश्चर्य छे ? केम जे कोइक गोडियो होय ते तुच्छ मायाने जाणे छे तेमां पण लोकोने केवुं आश्चर्य थाय छे ने तेनी यथार्थ खबर पडती नथी तो भगवानमां तो सर्वे योग कळाओ रही छे ते बहु आश्चर्य रूप छे तेने जीव केम जाणी शके ! [३] ३
माटे भगवत्मां कहुं छे जे आटला भगवाननी मायाने तर्या छे अने वळी एम कहुं जे कोइ भगवाननी मायाना बळने पार पाम्या नथी तेणे करीने एम जाणवुं जे, ए भगवाननी योगकळामां ब्रह्मादिक जेवाने कुतर्क थाय तो ए भगवाननी मायाना बळना पारने न पाम्या कहेवाय ते कुतर्क ते शुं तो जे ए भगवान ते केम एम करता हशे ? अने भगवानने एम समजे जे, एतो समर्थ छे ते जेम करता हशे ते ठीक करता हशे, एवी रीते भगवानने निर्दोष समजे तो मायाने तर्या कहेवाय. (४) अने कल्याणनी ४
रीत तो एक सरखी छे पण भजनारा जे पुरुष तेने विषे उत्तम, मध्यम ने कनिष्ट ए त्रण प्रकारना भेद छे ने तेमनी श्रद्धा अनंत प्रकारनी छे तेने योगे करीने कल्याणना मार्गमां पण अनंत भेद थया छे अने वस्तुगते तो कल्याणनो मार्ग एक छे अने भगवाननुं स्वरूप पण एकज छे. (५) ने ते भगवान अति समर्थ छे ने ते जेवो थवाने का- ५

जे अक्षर पर्यंत कोइ समर्थ थातो नथी ए सिद्धांत छे. [६] पछी मुक्तानंदस्वामीए श्री ६
जीमहाराजने कह्युं जे क्षीणोभाइ तो आज बहु दिलगीर थया अने एम बोल्या जे, ज्यारे महाराज अमारे घेर आव्या नहि त्यारे अमारे पण घरमां रहानुं शुं काम छे ? ए वात सांभळीने श्रीजीमहाराज बोल्या जे, मुंझाइने रीसे करीने जे प्रेम करे ते प्रेम अंते नभवानो नहि अने रीसवाळानी भक्ति तथा प्रेम ए सर्वे अंते खोटां थइ जाय छे, माटे मुंझाइने झांखुं मुख करवुं ते तो अति मोटी खोटय छे.

३ पछी क्षीणेभाइए पुछ्युं जे, (३) भगवान ने भगवानना संत ते पोताने घेर आवे त्यारे हृदय प्रफुल्लित थयुं जोइए अने ज्यारे भगवानने संत न आवे त्यारे तो मुख झांखुं थयुं जोइए अने हृदयामां शोक पण थयो जोइए, पछी ए वार्ता सांभळीने श्रीजीमहाराज बोल्या जे, भगवान ने संत ते आवे त्यारे राजी थावुं पण शोक तो क्यारेय पण करवो नहि अने जो शोक कर्यानो स्वभाव होय तो अंते जरुर कांइक भुंडुं थया विना रहे नहि, माटे पोतपोताना धर्ममां रहीने जे रीतनी भगवाननी आज्ञा होय तेने राजी थका पाळवी पण पोतानुं गमतुं करवा सारु कोइ रीते मुंझावुं नहि अने भगवान क्यांइक जावानी आज्ञा करे ने जो शोक करीने मुंझाय तो प्रथम जे भगवाने दर्शन आप्यां होय तथा प्रसाद आप्यो होय तथा अनंत प्रकारनी ज्ञान वार्ता करी होय इत्यादिक क्रियाए करीने जे पोताने सुख प्राप्त थयुं होय ते जातुं रहे अने मुंझवणे करीने बुद्धिमां एकलो तमोगुण छाइ जाय तेणे करीने केवळ दुःखियो थकोज ज्यां मुके त्यां जाय पछीए मुंझवणे करीने आज्ञा पण यथार्थ पळे नहि, माटे भगवानना भक्तने तो सदा अति प्रसन्न रहेवुं अने प्रसन्न मने करीने भगवाननुं भजन करवुं पण गमे तेवो भुंडो देशकाळ होय तो पण हृदयामां लेशमात्र मुंझवण आववा देवी नहि. (७) इति वचनामृतम्.।४।[११२] ७

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (३) छे तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमे अमारा धामने विषे रह्या थका अमारी इच्छाए करीने अनंत कोटी ब्रह्मांडने विषे अनंत रूपे दर्शन आपीए छीए (१) बीजामां अमारी मूर्ति सदाय एक सरखी छे पण ज्यां जेवी देखाडी जोइए त्यां तेवी अमारी इच्छाए करीने देखाडीए छीए अने ज्यां जेटलो प्रकाश करवो घटे त्यां तेटलो प्रकाश करीए छीए अने सदाय द्विभुज छीए तोपण अमारी इच्छाए करीने क्यांक चतुर्भुज, अष्टभुज, अनंत भुजने देखाडीए छीए तथा मच्छ कच्छादिक रूपे देखाडीए छीए (२) अने अनंतकोटी ब्रह्मांडने विषे अमे अंतर्यामीरूपे व्यापीने रह्या छीए (३) अने अमने निर्दोष समजे ते मायाने तर्या कहेवाय (४) अने कल्याणनी रीत एक सरखी छे पण भजनारा पुरुषना उत्तम, मध्यम, कनिष्ठ भेद छे ने तेमनी श्रद्धा अनंत प्रकारनी छे तेने योगे करीने कल्याणना मार्गमां पण अनंत भेद थाय छे (५) अने अमारा जेवो थवाने अक्षर पर्यंत कोइ समर्थ नथी [६] त्रीजामां अमारी

पासे तथा अमारा संतनी पासे पोतानुं धार्युं न कराववुं अने भुंडा देशकाळादिकमां मुंझा-वुं नहि. (७) बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां बीलोरी काचना मध्यना मंदिरमां पुरुष उभो होय ते पुरुष फरती ओर-डीयोमां भासे तेम अमे अक्षर धाममां रह्या थका सर्वे ब्रह्मांडोमां देखाइए छीए एम कह्युं ते पुरुषनुं तो प्रतिबिंब देखाय छे ते प्रतिबिंब तो देखावा मात्रज छे पण सत्य नथी तेम श्री-श्रीमहाराज पण प्रतिबिंबनी पेठे देखावा मात्रज ठर्या पण साक्षात् देखाता नथी एवुं थयुं माटे ते केम समजवुं ?

१ उ० पुरुषनो देह तो जड छे ते बीजे ठेकाणे देखावा समर्थ नथी अने भगवान तो चैत-न्य मूर्ति छे ने अति समर्थ छे ने सर्वत्र व्यापक छे माटे अनंत ब्रह्मांडमां पोतेज दर्शन आपे छे ने बोलवुं घटे तेनी साथे बोले ने चहाय तेवुं रूप धरे एमां कांइ आश्चर्य नथी. अने जड दृष्टांत तो एकदेशीज होय पण सर्वदेशी न होय माटे जड वस्तुना दृष्टांत प्र-माणेज सिद्धांत होवो जोइए एम न जाणवुं.

२ प्र० श्रीजीमहाराजे कह्युं जे अमे एक ठेकाणे रह्या थका अनंत ठेकाणे देखाइए छीए ते पने ए रूपे देखाता हशे के अनेकरूप धारवां पडतां हशे ?

२ उ० पोताना तेजरूपी अक्षरधाममां रह्या थकाज अनंत ठेकाणे संकल्पे करीने धाममां छे एज देखाय छे पण बीजुंरूप धारवुं पडतुं नथी एवी पोतामां योग कह्यो छे.

३ प्र० बीजा प्रश्नमां जे भगवान अक्षरधाममां रह्या छे तेज भगवान पोते चतुर्भुज, अष्टभुज अनंत भुजने देखाडे छे तथा मच्छ कच्छादिक अनंतरूपे भासे छे एम कह्युं अने (प्र० ४१, ४५, ५१, ५६ ना ३/४ त्रीजा प्रश्नमां, ६२ ना पहेला प्रश्नमां, ६३ ना त्रीजा प्रश्नमां, ६४/६ मां, ७२ ना २/४ बीजा प्रश्नमां, ७८ ना नवमा प्रश्नमां, सा० ५ ना २/३ बीजा प्रश्न-मां, १७/६२ मां, का ७ ना चोथा प्रश्नमां, ८/६३ मां, १० ना १/४ पहेला प्रश्नमां, लो० ७ ना ३/८ त्रीजा प्रश्नमां, १० ना ६/८ छठ्ठा प्रश्नमां, १२ ना पहेला प्रश्नमां, १३ ना बीजा प्रश्नमां, १४/६ मां, १७ ना ५/७ पांचमा प्रश्नमां, पं० ३/६ मां, २ मां, ४ मां, ६/६ मां, ७/६ मां, म० ९/६ मां, १३/६३ मां, ३१ ना पहेला प्रश्नमां, तथा २/५ बीजा प्रश्नमां, ५०/६ मां, ६७ मां अने अं० ७/६ मां) श्रीजीमहाराजने सर्वे अवतारोना कारणने सर्वेथी पर कह्या छे ते विरोध आव्यो ते केवी रीते समजवुं ?

३ उ० श्रीजीमहाराजमां ने बीजा अवतारोमां तो भेद अतिशे छे पण आ वचनामृतमां तो श्रीजीमहाराज घणाक मतवादीओने मच्छ कच्छादिक तथा रामकृष्णादिक अनंतरूपे तथा चतुर्भुज, अष्टभुज, अनंतभुजरूपे देखाया हता ते रूप कह्यां छे ते परथारामां लखमी वाव-तमां कह्युं छे जे मतवादीओने एमना इष्ट देव रूपे पोते देखाता हता ते स्वरूप जाणवां.

४ प्र० (२/३ बीजा प्रश्नमां) भजनारामां, श्रद्धामां ने कल्याणमां भेद कह्यो ते केवी रीते जाणवा ?

४ उ० श्रीजीमहाराजने अने पण मूळ अक्षरादिक सर्वे अवतारोना अवतारीने सर्वेना कार-णने सर्वेथी पर न जाणे ने बीजा अवतारो जेवा जाणे ते उपासनाना भेद समजवा ते

उपासनाने भेदे करीने भजनारामां भेद पडे छे एटले कोइक रामचंद्रजी जेवा, कोइक श्रीकृष्ण जेवा, ने कोइक वासुदेव जेवा, कोइक अक्षर जेवा, अने कोइकतो जेवा छे एवा जाणीने भजे छे एवी रीते भजनारामां भेद पडे छे अने श्रद्धा एटले आस्ता ते पण उपासना प्रमाणेज बेसे एटले आस्तामां पण भेद पडे छे. अने कल्याणनो मार्ग तो श्रीजीमहाराजना तेजरूप थइने श्रीजीमहाराजने भजे तो आत्यंतिक कल्याण थाय तेमां आत्यंतिक कल्याण एज एक कल्याणनो मार्ग छे पण बीजो नथी, ते ज्यारे श्रीजीमहाराजने सर्वोपरी जाणीने भजे त्यारेज आत्यंतिक कल्याण थाय एज कल्याण कहेवाय, पण ते विना बीजुं एके सर्वोपरि आत्यंतिक कल्याण न कहेवाय, माटे आत्यंतिक कल्याणनो ए एकज मार्ग छे. ॥११२॥

संवत् १८७७ ना कार्तिक वदि अमासने दिवस रात्रिने समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीलोया मध्ये सुराभक्तना दरबारमां विराजमान हता अने धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो अने धोळी छींटनी डगली पहेरी हती ने मस्तक उपर श्वेत पाघ बांधी हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे सर्वे परमहंसने प्रश्न पुछयो जे, (१) केटला संकल्प कहेवाय त्यारे निष्कपट कहेवाय ? ने केटला संकल्प न कहेवाय त्यारे कपटी कहेवाय ? पछी परमहंस वते एनो उत्तर न थयो त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे,पंच वर्त्तमान संबंधी पोतामां काच्यप होय ने ते पोतानी विचारे करीने टळती न होय तो ते काच्यप जेमां न होय एवा जे संत तेने आगळ कहेवुं अने कोइक संतनो अवगुण पोताने आव्यो होय तो ते कहेवो तथा भगवानना निश्चयमां अनिश्चयनो घाट थयो होय ते पणकहेवो त्यारे ते निष्कपट कहेवाय. अने ए मांहीलो संकल्प थयो होय ने तेने जे संतनी आगळ न कहे तेने कपटी जाणवो. (१) १

२ पछी वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे, (२) एवो कपटी होय ने ते डाह्यो होय तेने केवी बुद्धिए करीने ओळखीए ? त्यारे एनो उत्तर पण परमहंसने न आवडयो त्यारे श्रीजीमहाराजे कह्युं जे एतो एम ओळखाय जे, एनो सहवास होय ने त्यांघे पीधे बेठते ऊठते चालते हालते पोता भेळो रहेतो होय त्यारे पोते तेनी खबर राखे ने पोतानी नोलो पडे त्यारे पण बीजा माणस पासे तेनी छानो खबर रखावे त्यारे तेनुं कपट ओळख्यामां आवे. (२) २

३ पछी वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे, (३) दंभे करीने वर्त्तमान पाळे ने दंभे करीने भगवाननो निश्चय राखतो होय ने ते पोते बुद्धिवाळो होय ने मानी होय ते पोताना वर्त्तमानने ने पोताना निश्चयने बीजाना साचा वर्त्तमानने निश्चय तेनी आगळ

अधिक करी देखाडतो होय त्यारे तेने एम केम कळीए जे एनो दंभे करीने वर्तमान ने निश्चय छे ? त्यारे ए प्रश्ननो उत्तर पण परमहंस बते न थयो त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एनी प्रतिष्ठानो भंग थाय त्यारे एनो दंभ कळाय नहि तो न कळाय. (३) ३

४ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे, (४) भगवाननो निश्चय तथा वर्तमान ते बेमांथी केवो घाट होय ते पाडे ने केवो घाट होय तो पण न पाडे ? अने तेनो अवधि होय ते कहेवो जे क्यां सुधी ए घाट रहे ते धर्ममांथी पाडे ने भगवानना निश्चयमांथी पाडे ? त्यारे एनो उत्तर पण परमहंस बते थयो नहि त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जे घाटने टाळ्यानो यत्न करे तोपण टळे नहि एवो जे कांइक धर्म पाळ्यामां अयोग्य घाट रहेतो होय अने ते घाट पंदर दिवस तथा महिना सुधी न थाय ने वळी कोइक दिवस प्रगट थइ आवे एवो जे घाट ते धर्ममांथी पाडे अने एमज भगवानना निश्चयमां पण जाणवुं अने जे घाट थयो ने तेने विचारे करीने टाळी नाखे ने पाछो फरीने ते घाट थाय नहि एवो जे घाट ते ए बेमांथी पाडी शके नहि. (४) ४

५ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे, (५) सत्संगमां दृढ पायो केनो थाय ने केनो न थाय ? पछी एनो उत्तर पण परमहंसने न आवड्यो त्यारे श्रीजीमहाराजे कर्यो जे, जेम दत्तात्रेये पंचभूत, चंद्रमा, पशु, वेश्या, कुमारी, पोतानो देह इत्यादिक सर्वेमांथी पण गुण लीधा, एवी रीते संतमां जेने गुण ग्रहण कर्यानो स्वभाव होय तेनोज सत्संगमां दृढ पायो थाय छे अने जेने संतमां गुण लीधानो स्वभाव न होय ते सत्संगमां रह्यो छे तोपण एनो दृढ पायो नथी. (५) ५

६ पछी वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे, (६) संत तथा शास्त्र तथा पोतानो विचार ए त्रणे होय, त्यारे अतिशे इंद्रियो अंतःकरण जिताय के एमांथी एके वानुं होय तोपण जिताय ? अने जो एम कहेशो जे ए त्रणे वानां भेळां होय तो जिताय, त्यारे संत पासेथी केवी युक्ति शीखवी ? अने शास्त्रमांथी शी युक्ति शीखवी ? अने पोतानो विचार करीने शी युक्ति शीखवी ते कहो ? त्यारे एनो उत्तर पण परमहंसथी थयो नहि, त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे शास्त्रे करीने तो भगवान तथा संत तेनुं महात्म्य समजवुं. अने संतथी एम शीखवुं जे, जे रीते संत इंद्रियोने जित्यानी युक्ति बतावे जे आ रीते नेत्रनी दृष्टि नासिका उपर राखवी तथा ग्राम्य वार्ता न सांभळवी इत्यादिक जे युक्ति ते संतथी शीखवी. अने ते संते शीखावी जे युक्ति तेने पोताने विचारे करीने पोताना कल्याणने अर्थे सवळी समजीने मानवी ने तेम वर्तवा लागवुं, एम त्रणे वानाए करीने इंद्रियो अंतःकरण जिताय छे. (६) ६

७ अने ते पछी वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे, (७) इंद्रियोने जिते अंतः-

करण जिताय छे के अंतःकरणने जिते इंद्रियो जिताय छे ? पछी ए प्रश्ननो उत्तर पण परमहंसने न आवड्यो, त्यारे श्रीजीमहाराजे कर्यो जे, बाह्य इंद्रियोने देह दमने करीने जिते अने देह दमने करीने बाह्य इंद्रियो जिताणी होय तो पण पांच वर्तमानना नियममां दृढ थइने रहेतो होय तो बाह्य इंद्रियोने जितवे करीने अंतःकरण जिताय पण एकले अंतःकरणने जितवे करीने बाह्य इंद्रियो जिताय नहि अने बाह्य इंद्रियोने जितवे करीने तो अंतःकरण जिताय छे, केम जे जो बाह्य इंद्रियोने जिते ने विषयमां प्रवर्त्तवा दे नहि, त्यारे अंतःकरण मांहिली कोरथी निराश थइ जाय छे जे आ देहे करीने आ वात बनवानी नथी. (७) ७

८ अने ते पछी वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे, (८) बाह्य इंद्रियो शाणे करीने जिताय ने अंतःकरण शाणे करीने जिताय ? पछी एनो उत्तर पण परमहंसने न आवड्यो, त्यारे श्रीजीमहाराजे कर्यो जे, धर्मशास्त्रमां कह्या छे जे त्यागीना नियम तेने राखे तथा आहारने नियममां राखे तथा तप्तकृच्छ्र चांद्रायणादिक व्रत करे तथा जाणी जाणीने टाढ, तडको, भुख, तरस तेलुं सहन करे अने भगवाननां कथा कीर्तन वार्त्ता करे तथा भजन स्मरणमां बेसे तथा आसन जिते इत्यादिक साधने करीने बाह्य इंद्रियो जिताय छे अने भगवानना महात्म्यनो विचार ने भगवाननुं ध्यान तथा आत्मनिष्ठा एटले करीने अंतःकरण जिताय छे. (८) इतिवचनामृतम्. ।।५।। (११३) ८

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (८) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कपटी निष्कपटीनुं लक्षण कह्युं छे (१) बीजामां कपटीने ओळखवानो उपाय कह्यो छे (२) त्रीजामां दंभीनी प्रतिष्ठानो भंग थाय त्यारे एनो दंभ कळाय छे [३] चोथामां अयोग्य घाट फेर न थाय तो धर्ममांथी ने निश्चयमांथी पाडी शके नहि (४) पांचमामां संतनो गुण ग्रहण करवानो स्वभाव होय तेनो सत्संगमां दृढ पायो कह्यो छे (५) छठ्ठामां इंद्रियो अंतःकरणने जित्यानी त्रण प्रकारनी युक्ति बतावी छे[६]सातमामां इंद्रियो जिते अंतःकरण जीताय छे (७) आठमामां इंद्रियो अंतःकरणने जित्याना पृथक् पृथक् उपाय बताव्या छे. (८) बाबतो छे.

१ प्र० [४ चोथा प्रश्नमां] महिना सुधीमां घाट थाय ते धर्म ने निश्चयमांथी पाडे एम कह्युं ते घाट टाळवानो उपाय शो हशे ?

१ उ० मान मुकीने निष्कपट थइने दीनताए सहित भगवाननी अथवा मोटा पुरुषनी प्रार्थना करवी अने सेवाए करीने तेमने राजी करवा तो ते दया करीने घाटने टाळी नाखे.

२ प्र० (५ पांचमा प्रश्नमां) दत्तात्रेयना दृष्टांते करीने संतनो गुण ग्रहण करवानुं कह्युं ने (प्र० ५३ मां) पंच वर्त्तमानरूपी मर्यादानो भंग करे तेनो अवगुण लेवानुं कह्युं ते केम समजवुं ?

२ उ० श्रीजीमहाराजनी आज्ञा पाळता होय ते सर्वेनो गुण लेवानुं कह्युं छै गुण लेवे करीने वृद्धि पामवानो उपाय छे, माटे जे पंचवर्त्तमाने युक्त होय ते सर्वेनो गुण लेवो अने जे पंच-

वर्तमाननो भंग करता होय तेनो गुण ले तो तेने विषे सत्पुरुषनी बुद्धि रहे; तेथी तेनो त्याग करीने धर्मवाळानो समागम थइ शके नहि तेथी रुडा गुण न आवे. ने एवी नबळी सोबते करीने घटी जाय माटे तेनो गुण न लेवो एम कह्युं छे माटे जे श्रीजीमहाराजनी आज्ञा न पाळे तेनो संग कोइ प्रकारे भुले पण न करवो ए सिद्धांत वात छे. ॥११३॥

संवत् १८७७ ना मागशर शुदि १ पडवाने दिवस श्रीजीमहाराज गाम श्री लोया मध्ये सुराखाचरना दरबारमां रात्रिने समे विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा धोळी छींटनी डगली पहेरी हती तथा धोळो फेंटो माथे बांध्यो हतो तथा बीजे धोळे फेंटे करीने बोकानी वाळी हती ने ते धोळा फेंटानुं छोगलुं माथे लटकतुं हतुं ने चोफाळ ओढयो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे परमहंस प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे, (१) सत्संग थया पछी दुर्लभमां दुर्लभ ते शुं साधन मान्युं छे ? पछी ए प्रश्ननो उत्तर परमहंस बते न थयो, त्यारे श्रीजीमहाराजे कर्यो जे, एकांतिकपणुं एमां आवे ए अतिशे दुर्लभ छे ते एकांतिकपणुं ते शुं तो धर्म, ज्ञान ने वैराग्य ए त्रणे युक्त जे भगवाननी भक्ति करवी तेने एकांतिक पणुं कहीए. (१) १

२ पछी वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे, [२] धर्म संबंधी साधनमां एवुं कियुं साधन छे जे एक राखवे करीने सर्वे धर्म रहे अने भगवान संबंधी जे भजन, स्मरण कीर्तन, वार्ता ए आदिक साधन छे तेमां एवुं एक साधन कियुं छे जे आपत्काळ होय ने सर्वे जाय ने जो एक रहे तो सर्वे रहे ? पछी तेनो उत्तर पण पोते कर्यो जे, धर्म संबंधी साधनमां तो एक निष्कामपणुं होय तो सर्वे साधन आवे.[२]अने भगवान संबंधी २
तो ए साधन छे जे निश्चय रहेतो सर्वे आवे. (३) ३

३ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे, (३) केवी मति एक प्रकारनी राख्ये रुडुं थाय ने तेने जो फेरवीए तो भुंडुं थाय ने केवी मतिने वारंवार फेरवीए तो रुडुं थाय ने न फेरवीए तो भुंडुं थाय ? पछी तेनो उत्तर पण पोते कर्यो जे, भगवानना निश्चयरूप जे मति तेने तो फरवाज देवी नहि ने भगवाननुं महात्म्य सांभळीने तेनी पुष्टि वारंवार कर्या करवी तो रुडुं थाय ने ए मतिने वारंवार फेरवे तो भुंडुं थाय अने पोते पोताना मनने जाणे जे मतिमां निश्चय कर्यो होय जे, मारे आम करवुं छे ते मतिने संतने वचने करीने वारंवार फेरववी ने संत कहे जे आंहि बेसवुं नहि ने आ करवुं नहि तो ते ठेकाणे बेसवुं नहि ने ते करवुं नहि, एवी रीते मतिने फेरवे तो रुडुं थाय ने ए मतिने फेरवे नहि ने पोतानुं धार्युं करे तो भुंडुं थाय. (४) ४

४ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे, [४] केवी जातनो सत्संगी अथवा
परमहंस होय ने धर्ममां संपूर्ण रहेतो होय ने तेने पासे बेसीए ने वात सांभळीए तो
दोष लागे ? त्यारे तेनो उत्तर पण पोते कर्यो जे, जेने भगवाननो निश्चय होय ने धर्म-
मां पण पोते रहेतो होय तोपण जो तेने व्यवहारमां आसक्ति होय तथा देहाभिमान होय
तथा मान होय ने तेने भगवान तथा संत ते खोदे तो ते भगवाननो ने संतनो अ-
वगुण जरुर ले, पछी बीजाने आगळ पण भगवानना तथा संतना अवगुणनी वात
करीने तेने विमुख जेवो करे, एवो जे होय तेनो कोइ रीते संबंध न राखवो ने राखे
तो भुंडु थाय. (५) ५
५ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे, (५) केवो साधु होय ने ते धर्ममां रहे-
तो होय ने निश्चय पण होय तो पण तेने भेळे नावा जावुं नहि ने पासे पथारी करवी
नहि ने तेनी वात पण न सांभळवी ? पछी तेनो उत्तर पण पोते कर्यो जे, जे संत
हिंमत रहित वात करतो होय जे शुं एक जन्मे करीने निष्कामादिक गुण आवे छे? ए
तो भगवान कृपा करे तो आवे, नहि तो अनेक जन्मे करीने कल्याण थाय, पण आ
ज देहे करीने शुं कल्याण थाय छे ? एवी रीते जे हिंमत रहित वात करतो होय तेना
संगनो सर्व प्रकारे त्याग करवो. (६) अने जे एम कहेतो होय जे, आने आ देहे ६
करीने कृतार्थ थया छीए ने काम, क्रोध, मद, मत्सर, मान इत्यादिक दोषनो शो भार
छे ? भगवान ने संतना प्रतापे करीने ए सर्वेनो नाश करी नाखशुं, एम जे कहेतो होय
ने कामादिक दोषने नाश करवाना उपायमां तत्पर थइने मंड्यो होय तेनो संग सर्वे
प्रकारे करवो. [७] ७
६ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे, (६) केवो साधु हिंमत सहित वात
करतो होय तो पण तेनो त्याग करवो ? पछी तेनो उत्तर पण पोते कर्यो जे, जे पोताना
पुरुषार्थनेज अधिक कहेतो होय ने पुरुषार्थे करीनेज पोताने कृतार्थ मानतो होय पण
भगवाननुं बळ न राखे ने एम समजे जे, आ साधने करीने भगवानने राजी करवा
छे तो तेनो पण त्याग करवो. [८] ८
७ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे, (७) केवो साधु होय तेनो संग करवो ने
केवानो न करवो ? त्यारे तेनो उत्तर पण पोते कर्यो जे, वर्तमान पण सुधां सारां पा-
ळतो होय ने निश्चय सुधो होय ने ते पासे आपण रहेता होइए ने आपणने टोके नहि
ने पंपोळीने राखे ने जापरो राखे तो ते मुक्तानंदस्वामी जेवो लोक व्यवहारे मोटो क-
हेवातो होय तेनो पण संग न करवो अने जे संत पोताने टोक्या करे ने जे स्वभावदेखे
ते उपर खटको राखे ने ते न टळे त्यां सुधी वात कर्या करे ने खळोचपो राखे नहि ते

ते लोक व्यवहारे मोटो न कहेवातो होय तो पण तेनो संग करवो. (९) ९

८ पछी वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे, (८) जे संतमां बधा गुण सारा मोटा मोटा भक्तिज्ञानादिक होय पण तेमां एक एवो कियो भुंडो दोष होय जेणे करीने तेनो संग न करीए ? त्यारे तेनो उत्तर पण पोते कर्यो जे, जेने आळस बहु होय ने निद्रा बहु होय ने स्नान ध्यानादिक जे नियम तेने पाळवानुं कोइक कहे तो कहे जे, हमणां करशुं शी उतावळ छे धीरेधीरे थाशे एम बोले ते सुधो सारो होय तो पण तेनो संग न करवो. [१०] १०

९ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे, (९) सुधी सारी वात करतो होय तो पण तेनी वात न सांभळीए एवो एनी वाणीमां शो दोष जाणवो ? त्यारे तेनो उत्तर पण पोते कर्यो जे, वात करवामां पोताने विषे जे भक्ति, ज्ञान, वैराग्यने धर्म तेनीज अहंकारे करीने पोते सरसाइ देखाडे ने बीजा संतमां जे ज्ञान भक्ति आदिक गुण तेनी कांइक न्यूनता देखाडे, एवो जेनी वाणीमां दोष होय तेनी वात न सांभळवी. (११) ११

१० अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे (१०) जेनी वाणीमां कुत्सितपणुं होय तो पण ते वाणीने अमृतनी पेठे पान करीए एवी ते केइ वाणी छे ? पछी तेनो पण पोते उत्तर कर्यो जे, जे संत वात करे त्यारे पोते पोताना संबंधी मा, बाप, बोन, भाइ तथा पोतानी जाती तेनी कुत्सित शब्दे करीने निंदा करतो होय तो ते वाणी सारी जाणवी, शा सारु जे ते वाणीने जे सांभळे तेने ते संतनी कोरनो एम गुण आवे जे, आ संतने तो कोइ रीते पोताना देह संबंधी आदिकमां हेत नथी माटे ते वाणीने अमृतनी पेठे पान करवी. [१२] १२

११ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे, [११] किये ठेकाणे मान राखवुं ने किये ठेकाणे मान न राखवुं ? पछी तेनो उत्तर पण पोते कर्यो जे, भगवानना दृढ आश्रित होय ने ते जेवो तेवो गरीब हरिभक्त होय तो पण ते आगळ मान न राखवुं अने जेने सत्संग थकी कांइक पाछो पग पडी गयो होय तेने आगळ तो मान राखवुं पण तेथी दबाइ जावुं नहि ने प्रश्न उत्तरमां तेना वेण उपर वेण लाववुं. [१३] १३

१२ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे, [१२] किये ठेकाणे हेत राखवुं ने किये ठेकाणे न राखवुं ? त्यारे तेनो उत्तर पण पोते कर्यो जे, अमे सर्वे संतने साधारणपणे कहेता होइए जे बुरानपुर तथा काशीए कोण जाशे ? त्यारे कोइ बोले नहि त्यारे ते सभामांथी पोते उठीने अमने एम कहेवुं जे कहो तो महाराज हुं जाउं, एम कहीने अमारी आज्ञा लेइने त्यां जवुं एवे ठेकाणे अमारी प्रसन्नताने अर्थे अमारा दर्शनादिकनुं हेत पण न राखवुं. [१४] अने अमे तथा संत तेजेने कचवाणा होइए ने वढीने १४

तिरस्कार करीने बहार काढी मुक्यो होय ने ते शोके करीने रोतो होय ने ते पासे को-इक एकडमल विमुख जेवो आवीने संतनो अथवा अमारो अवगुण कहेवा लागे, त्यारे तेनी आगळ ते संतनी कोरनुं ने भगवाननी कोरनुं बहु हेत जणावे ने एम कहे जे हुं तो एनो वेचाण छुं अने मारा कटका करी नाखे तो पण मारे एमनो अवगुण न आवे ए तो मारा कल्याणना करतल छे, एवी रीते ते ठेकाणे अतिशे हेत जणववुं. (१५) १५

१३ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे, [१३] जेणे करीने भगवान राजी थाता होय तो पण ते करवुं नहि अने जेणे करीने भगवान कुराजी थाय तो पण ते करवुं एवुं ते शुं छे ? पछी एनो उत्तर पण पोते कर्यो जे, अमे कोइक वचन कहीए ने तेमां जो अधर्म जेवुं होय तो तेने विषे चिरकारी थवुं कहेतां तेमां घणीक वार लगाडवी पण तुरत मानवुं नहि, जेम श्रीकृष्ण भगवाने अर्जुनने कह्युं जे अश्वत्थामानुं माथुं कापी नाखो, पछी ते वचन अर्जुने न मान्युं, तेम एवी रीतनुं जे वचन तेमां अमे राजी थाता होइए तो पण न मानवुं तथा पंचवर्त्तमान संबंधी जे नियम कह्या छे तेमांथी जेणे करीने भंग थतो होय एवुं जे वचन ते न मानवुं अने ए वे वचन न मानीए ने भगवान कच-वाता होय तो सारी पेठे कचवाववा पण तेमां राजी न करवा. [१६] १६

१४ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे, [१४] भगवाननुं ध्यान करते थके मनने विषे अनेक प्रकारना भुंडा घाटना तरंग उठवा मांडे, जेम समुद्रना मोटा मोटा तरंग उठे तेम भुंडा घाट उठवा लागे त्यारे ते घाट केम टाळवा ? पछी एनो उत्तर पण पोते कर्यो जे, ज्यारे एवा भुंडा घाट थावा मांडे त्यारे ध्यानने पडयुं मुकीने जीभे करीने उंचे स्वरे निर्लज्ज थइने ताळी वजाडीने स्वामिनारायण स्वामिनारायण भजन करवुं ने हे दीनबंधो ! हे दयासिंधो ! एवी रीते भगवाननी प्रार्थना करवी तथा भग-वानना संत जे मुक्तानंदस्वामी जेवा मोटा होय तेनां नाम लइने तेनी प्रार्थना करवी तो घाट सर्वे टळी जाय ने निरांत थाय पण ए विना बीजो एवो घाट टाळवानो उपाय नथी. [१७] १७

१५ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे, [१५] आ सत्संगमां जे अति मोटो गुण जणातो होय ने ते गुणना सर्वे वखाण करता होय तो पण ते त्याग करवा यो-ग्य होय एवो कियो गुण छे ? अने दोष होय ने ते ग्रहण करवा योग्य होय एवो कियो दोष छे ? त्यारे तेनो उत्तर पण पोते कर्यो जे, मुक्तानंदस्वामी जेवा होय ते स-र्वेथी सरस वर्त्तमान पाळता होय ने तेणे करीने बीजा संतने उद्वेग थाय,केमजे एमनी बरोबर वर्ताय नहि ते सारु ए गुण यद्यपि मोटो छे तो पण तेनो त्याग करीने सर्वे संतने बरोबर वर्तवुं अने बरोबर वर्तवारूप दोष छे तो पण एवुं ग्रहण करवुं. (१८) १८

१६ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे, [१६] आ संतमां एवो कियो एक दोष छे जे जेनो त्याग करे त्यारे सर्व दोष मात्रनो त्याग थइ जाय ? अने एवो कियो एक गुण छे जे एक आवे सर्वे गुण आवे ? त्यारे तेनो उत्तर पण पोते कर्यो जे,देहाभिमान-रूप दोष छे तेमां सर्वे दोष रह्या छे ने तेनो त्याग करे तो सर्वे दोषनो त्याग थइ जाय छे अने हुं तो देहथी नोखो जे आत्मा ते छुं, एवो जे आत्मनिष्ठारूप एक गुण ते आवे तो सर्वे गुण मात्र आवे छे. (१९) १९

१७ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे, (१७) केवा पंच विषयने सेववे करीने बुद्धिमां प्रकाश थाय छे ? अने केवा पंचविषयने सेववे करीने बुद्धिमां अंधकार थइ जाय छे ? त्यारे तेनो उत्तर पण पोते कर्यो जे, भगवान संबंधी जे पंचविषय तेने सेवे तो बुद्धिमां प्रकाश थाय छे अने जगत् संबंधी पंचविषयने सेवे तो बुद्धिमां अंधकार थइ जाय छे. [२०] २०

१८ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे, (१८) केवो देश, केवो काळ, केवो संग, केवी क्रिया तेनो संबंध भगवाननी आज्ञाए करीने पण न करवो ? त्यारे तेनो उत्तर पण पोते कर्यो जे,जे देशमां रहे थके पोताना देहना संबंधीनो वारंवार बेठा उठवा-नो योग थतो होय तो ते देशमां भगवाननी आज्ञाए करीने पण न रहेवुं अने अमारां दर्शन थातां होय ने ते भेळे स्त्रियोनां दर्शन थातां होय, एवो संग तथा क्रिया होय त्यां अमे बेसारीए ने कहीए जे, अमारां दर्शन करो तोपण ते ठेकाणे बेसवुं नहि ने कोइक मिष लेइने उठी जवुं अने जे काळमां विषमपणुं वर्त्ततुं होय ने मारकुट थाती होय ने जो भगवाननी आज्ञा होय तोपण त्यांथी चाली निकळवुं पण तेज ठेकाणे रहीने मार न खावो. [२१] २१

१९ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे, (१९) कियां शास्त्रने सांभळवां ने भ-णवां ने कियां शास्त्रने न सांभळवां ने न भणवां ? पछी तेनो उत्तर पण पोते कर्यो जे, जे शास्त्रमां भगवाननुं साकारपणुं प्रतिपादन न कर्युं होय तथा भगवानना अवतारनुं निरुपण न होय ने ते ग्रंथ जो शुद्ध वेदांतना होय ने एक अद्वितीय निराकारनुं प्रति-पादन करता होय ने ते ग्रंथ सुधा बुद्धिवानना करेला होय तो पण ते ग्रंथने कोइ दिवस भणवा नहि ने सांभळवा पण नहि अने जो रणछोड भक्तना जेवां कीर्त्तनज होय ने तेमां भगवाननी मूर्त्तिनुं वर्णन होय तेने गाववां ने सांभळवां तथा एवी रीतना जे ग्रंथ होय तेने भणवाने सांभळवा. [२२] इति वचनामृतम् ॥६॥ [११४]. २२

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [१९] छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के एकांतिकपणुं आवे ते दुर्लभमां दुर्लभ साधन छे (१) बीजामां निष्कामपणुं होय तो

सर्वे धर्म रहे छे (२) अने निश्चय रहे तो भक्ति आदिक सर्वे साधन रहे छे (३) त्रीजामां अमारा निश्चयरूपी मति फरवा दे नहि तो रुडुं थाय अने तुच्छ स्वभावनी आंटी संतने वचने करीने मुकी देवी (४) चोथामां अमारो निश्चय ने धर्म होय पण व्यवहारमां आसक्ति ने देहाभिमान तथा मान होय तेनो संबंध राखे तो भुंडुं थाय छे (५) पांचमामां धर्म ने निश्चय बेय होय पण हिंमत रहित वात करतो होय तेनो त्याग करवो [६] अने कामादिक दोषने नाश करवाना उपायमां तत्पर थइने मंडयो होय तेनो संग करवो (७) छठ्ठामां अमारुं बळ न राखे ने पोताना पुरुषार्थनुंज बळ राखे तेनो त्याग करवो (८) सातमामां निश्चय ने वर्त्तमान होय पण टोके नहि तो तेनो संग न करवो ने जे टोके ते लोक व्यवहारे मोटो न होय तो पण तेनो संग करवो (९) आठमामां भक्ति ज्ञानादिक गुण होय पण ते आळसु होय तो तेनो संग न करवो [१०] नवमामां अहंकारे करीने पोतानी सरसाइ देखाडे ने बीजा संतना भक्ति ज्ञानादिक गुणनी न्यूनता देखाडे तेनी वात न सांभळवी [११] दशमामां पोताना संबंधीनी निंदा करतो होय तेनी वाणी सांभळवी (१२) अगीयारमामां अमारा गरीब भक्त आगळ मान न राखवुं ने सत्संगमांथी पाछो पडी गयो होय तेनी आगळ राखवुं (१३) बारमामां अमे ज्यां मुकिए त्यां जवुं पण अमारा दर्शनादिकनुं हेत न राखवुं (१४) अने विमुख अमारो के संतनो अवगुण कहे तेना आगळ अमारुं ने संतनुं हेत जणाववुं पण अमारो अवगुण लेवो नहि (१५) तेरमामां अधर्म जेवुं ने नियम भंग जेवुं अमारुं वचन न मानवुं (१६) चौदमामां अमारुं ध्यान करतां घाट थाय तो अमारीने मुक्तनी प्रार्थना करवी तो घाट टळी जाय [१७] पंदरमामां सर्वथी सरस वर्तवारूप गुणनो त्याग करीने बरोबर वर्तवुं (१८) सोळमामां देहाभिमानमां सर्वे दोष रह्या छे अने आत्मनिष्ठामां सर्वे गुण रह्या छे (१९) सत्तरमामां अमारा संबंधी पंच विषयने सेवे तो बुद्धिमां प्रकाश थाय ने जगत संबंधी पंचविषयने सेवे तो अंधकार थाय छे (२०) अढारमामां देहना संबंधीनो योग तथा अमारा मेळा वियोगनां दर्शन थतां होय एवो संग तथा क्रिया होय ने मारकुट थाती होय त्यां अमारी आज्ञाए पण न रहेवुं (२१) ओगणीसमामां अमारुं साकारपणुं प्रतिपादन करतां होय ते शास्त्र वांचवां ने सांभळवां पण निराकारनुं प्रतिपादन करतां होय ते वांचवां सांभळवां नहि. (२२) बाबतो छे.

१ प्र० (११/१२ अगीयारमा प्रश्नमां) सत्संगथी पाछो पडी गयो होय तेना आगळ मान राखवुं ने तेना वेण उपर वेण लाववुं एम कह्युं ते पाछो पग पडी गयो ते केम जाणवो ?

१ उ० निष्कामादिक वर्त्तमानमां चुक पडी गइ होय तथा संतनो ने सत्संगनो अवगुण लेतो होय ते सत्संगथी पाछो पडी गयो कहेवाय एवानी म्होवतमां न लेवावुं.

२ प्र० (१३/१४ तेरमा प्रश्नमां) अमे अयोग्य वचन कहीए ते न मानवुं एम कह्युं अने (स्वा० २ ना २/३ बीजा प्रश्नमां) अमारुं वचन अयोग्य होय तो पण तत्काळ मानवुं एम कह्युं छे ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० (सा० २ मां) श्रीजीमहाराज मनुष्यरूपे विचरता होय त्यारे कहे जे न्हाया विना जमो ने एकादशीने दिवसे अन्न जमो एवुं कोइक वचन शास्त्र विरुद्ध कहे तो तेमां आशंका थाय पण ते समे हा पाडवी अने श्रीजीमहाराजनो आग्रह होय तो ते वचन मानवुं एम कह्युं छे ने आ वचनामृतमां निष्कामादिक वर्त्तमानमां फेर पडतो होय एवुं अमारुं वचन न मानवुं एम कह्युं छे अने न्हाया धोया विना खावानुं के एकादशीने दिवस अन्न जमवानुं आज कोइक मोटा मुक्त होय ने ते कहे तो पण ते वचन न मानवुं तो वर्तमानभंग वचन तो मनायज केम ? एनो तो संग पण न रखाय.

३ प्र० (३/१८ पंदरमा प्रश्नमां) अधिक वर्त्तवारूपी गुणनो त्याग करीने बरोबर वर्त्तवारूपी दोषनुं ग्रहण करवानुं कह्युं तेनुं शुं कारण हशे ?

३ उ० अगनोतेरनी सालमां गढडेथी श्रीजीमहाराजे चारसें संतोने आज्ञा करीजे, पूर्व देशमां चाल्या जाओ ने अषाडी पांचमनी विजळी थाय त्यांथी पाछा वळजो. पछी संत चाल्या ते बुरानपुर तरफ जातां विजळी थइ त्यांथी पाछा वळ्या ते वडोदरा पासे एक गाम आव्युं त्यां वाणीआनी वखारमां रात रह्या. त्यां चार दिवस लागठ वरसाद बहु थयो ते झोळीए पण जवाय नहि त्यारे वाणीए कह्युं जे तमे मारुं अन्न जमो कां मारा उतारामांथी जता रहो पण हुं तमने भुख्या नहि रहेवा दउं. पछी एक जणानुं चार दिवस लागठ अन्न लेवानी महाराजे ना पाडी हती तेथी संतोए ना पाडी. पछी मुक्तानंदस्वामीए संतोने कह्युं जे, आ वरसादमां क्यां जइशुं माटे महाराजनी हुं प्रार्थना करीश अने तमे जमो, पछी सर्वे संत जम्या पण आत्मानंदस्वामी न जम्या. पछी त्यांथी चाल्या ते एक गाम आव्युं त्यां बारसनो दिवस हतो ते पारणुं करावा एक सत्संगीए रोक्या अने खीचडीमां चडतां छानुं घी नखाव्युं. पछी पंक्ति थइ त्यारे घीनो सुगंध आव्यो तेथी संते जमवानी ना पाडी. पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे,बारसनो दिवस छे ने भाल सोंसरुं जवुं छे ते भूख नहि वेठाय माटे जमो. पछी संत सर्वे मुक्तानंदस्वामीनी आज्ञाथी जम्या पण आत्मानंदस्वामी तो न जम्या. पछी संत सर्वे महाराज पासे आव्या ने मुक्तानंदस्वामीए श्रीजीमहाराजने कह्युं जे, हे महाराज आपनां बे वचन लोप्यां छे. पछी श्रीजीमहाराज बहु राजी थइने बोल्या जे, स्वामी तमे बहु सारुं कर्युं, एवा आपत् काळमां एमज करवुं एमां अमे राजी छीए,एम कहीने पछी आत्मानंदस्वामीने श्रीजीमहाराज वढ्या जे तमारा करतां मुक्तानंदस्वामीने दशगणो वैराग्य छे ने एमने साधुने राखतां आवडे छे ने तमारी साथे साधुने मोकल्या होय तो तमे तो रेलण छेलण करी मुको ने साधुने विखी नाखो एम वढ्या, माटे आवो आपत्काळ आव्यो होय ते वखते बरोबर वर्तवानुं कह्युं छे पण निष्कामशुद्धिने धर्मामृतनी आज्ञा लोपता होय तेनी बरोबर वर्तवानुं कह्युं नथी तेनो तो संगज न करवो. ॥११४॥

संवत् १८७७ ना मागशर शुदि ३ त्रीजने दिवसे श्रीजीमहाराज गाम श्री लोया मध्ये सुराखाचरना दरबारमां ढोलिया उपर बिराजमान हता अने माथे

धोळी पाघनुं छोगलुं विराजमान हतुं तथा धोळी छींटनी डगली पहेरी हती अने रुनो भरेलो धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो अने धोळी पछेडी ओढी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ्य मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने ते समयमां वचनामृतनुं पुस्तक नित्यानंदस्वामीए लावीने श्रीजीमहाराजने आप्युं पछी ते पुस्तकने जोइने बहु राजी थया अने परमहंस प्रत्ये बोल्या जे आज तो भारे भारे प्रश्न पुछो तो वात करीए.

१ त्यारे मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछयो जे, (१) श्रुतिमां कह्युं छे जे, ॥ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ॥ ए श्रुतिमां एम कह्युं छे जे, भगवाननुं साक्षात् ज्ञान थाय त्यारे जीवनुं कल्याण थाय छे त्यारे शास्त्रमां जे बीजां साधन कल्याणने अर्थे बताव्यां छे तेनुं शुं प्रयोजन छे ? केमजे कल्याण तो ज्ञाने करीनेज थाय छे, एवा प्रश्नने सांभळीने श्रीजीमहाराज बोल्या जे,ज्ञान ते जाणवानुं नाम छे. त्यारे नित्यानंदस्वामीए आशंका करीजे जाणवुं एज ज्ञान होय तो शास्त्रे करीने भगवानने सर्वे जगत् जाणे छे तेणे करीने सर्वेनुं कल्याण थातुं नथी त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे शास्त्रे करीने परोक्षपणे भगवानने जाण्या तेणे करीने जेम कल्याण नथी तेमज रामकृष्णादिक भगवानना अवतार हता त्यारे तेमने सर्वे मनुष्ये प्रत्यक्ष दीठा हता तो तेणे करीने पण शुं कल्याण थयुं छे ? त्यारे मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे, जेणे भगवानने प्रत्यक्ष दीठा होय तेनुं तो जन्मांतरे कल्याण थाय छे. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेणे शास्त्रे करीने भगवानने जाण्या तेणे करीने पण जन्मांतरे कल्याण थाय छे, कां जे जेने शास्त्रे करीने जाण्या छे तेनेज नेत्रे करीने देखे छे अने जेने नेत्रे करीने देखे छे तेनेज शास्त्रे करीने जाणे छे, माटे बेनुं बीजबळ बरोबर थाय छे ने बेनुं जन्मांतरे कल्याण पण बरोबर छे, केम जे श्रवणे करीने भगवानने सांभळ्या तेमां शुं ज्ञान नथी ? पण तेने ते सांभळ्याज कहेवाय, अने त्वचाए करीने स्पर्श कर्यो तेमां शुं ज्ञान नथी ? पण तेने ते स्पर्श कर्योज कहेवाय, अने नेत्रे करीने जोया तेमां शुं ज्ञान नथी ? पण तेने ते जोयाज कहेवाय, अने नासिकाए करीने सुंघ्या तेमां शुं ज्ञान नथी ? पण तेने ते सुंघ्याज कहेवाय, अने जिव्हाए करीने वर्णन कर्या तेमां शुं ज्ञान नथी ? पण तेने ते वर्णन कर्याज कहेवाय, एवी रीते बाह्य इंद्रियोए करीने ज्ञान छे. (१) तथा अंतःकरणे करीने जे ज्ञान १
छे,अने अंतःकरण इंद्रियोपर जे जीवसत्ता तदाश्रित जे अनुभव ज्ञान छे,तेमांथी तमे किया ज्ञानने कहो छो ? अने जे भगवान छे तेणे तो आ जगतनी उत्पत्तिने अर्थे अनिरुद्ध एवुं स्वरूप धार्युं छे, जेने विषे स्थावर जंगमरूप जे विश्व ते सावकाशे करीने रह्युं छे अने सं-

कर्षणरूपे करीने जगत्नो संहार करे छे अने प्रद्युम्नरूपे करीने जगत्नी स्थिति करे
छे. तथा मच्छ कच्छादिक अवतारनुं धारण करे छे. (२) एवी रीते ज्यां जेवुं २
कार्य त्यां तेवा कार्यनी सिद्धिने अर्थे तेवा रूपनुं ग्रहण करे छे तेमां कोइ कार्य
तो एवुं छे जे, जेमां अंतःकरण इंद्रियो नथी पुगतां केवळ अनुभव ज्ञाने करी-
नेज जणाय छे त्यारे तेवा कार्यनी सिद्धिने अर्थे भगवान पण तेवा स्वरूपनुं धारण करे
छे अने कोइ कार्य एवुं छे जे, इंद्रियो अंतःकरणे करीने जाण्यामां आवे छे त्यारे ते
कार्यनी सिद्धिने अर्थे भगवान पण तेवाज थाय छे, माटे तमे किया भगवानना स्वरूपने
ज्ञाने करीने कल्याण थाय एम पुछो छो ? त्यारे नित्यानंदस्वामीए कह्युं जे, जे भगवा-
नना स्वरूपने विषे इंद्रियो अंतःकरण ने अनुभव ए त्रणे पुगे एवा भगवानना स्वरूपने
ज्ञाने करिने मोक्ष थाय एम कहीए छइए त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एवा जे भग-
वान तेतो श्रीकृष्ण छे तेतो पोते पोताने एम कहे छे जे, ।। यस्मात् क्षरमतीतोऽहमक्षरा-
दपि चोत्तमः विष्टभ्याहमिदंकृत्स्नमेकांशेनस्थितोजगत् ।। मयिसर्वमिदंप्रोतं सूत्रे मणि
गणाइव ।। मत्तः परतरं नान्यत्किंचिदस्ति धनंजय ।। पश्यमे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सह-
स्रशः ।। इत्यादिक वचने करीने पोते पोताने इंद्रियो अंतःकरण थकी अगोचर कहे छे,
माटे भगवानने तत्वे करीने समजवा तेतो एम छे जे, इंद्रियो अंतःकरण तथा अनुभव
ए त्रणे करीने यथार्थपणे प्रत्यक्ष भगवानने जाणे त्यारे पुरो ज्ञानी कहेवाय अने ए
त्रण प्रकारमांथी जो एके ओछो होय तो तेने आत्यंतिक ज्ञान न कहेवाय ने तेणे करीने
जन्ममृत्युने पण न तरे. (३) ३

२ त्यारे नित्यानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे (२) इंद्रियो अंतःकरण ने अनुभव ए त्रणे
करीने जेने प्रत्यक्ष भगवान जाण्यामां न आव्या तेने जन्ममृत्यु थाय एतो ठीक छे पण
जेने ब्रह्मस्वरूपनो साक्षात्कार थयो होय तेने जन्म मृत्यु ते केम छे ? त्यारे श्रीजीमहाराज
बोल्या जे ।। भूमिरापोनलोवायुः खंमनोबुद्धिरेवच । अहंकार इतीयंमे भिन्नाप्रकृतिरष्टधा ।।
ए जड प्रकृति छे अने ।। अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिंविद्धिमेपरां । जीवभूतां महाबाहो ययेदं
धार्यतेजगत् ।। ए चैतन्य प्रकृति छे अने ए बेय प्रकृति भगवानने सृज्य छे कहेतां ए जड
प्रकृति मेळे ए चैतन्यरूप प्रकृति पण सृजाय छे, माटे ए चैतन्य प्रकृतिने पाम्यो एवो जे
कैवल्यार्थी ते पण आत्यंतिक कल्याणने पाम्यो न कहेवाय, माटे श्रीमद् भागवतमां कह्युं
छे जे ।। नैष्कर्म्यमप्यच्युत भाववर्जितं नशोभतेज्ञानमलं निरंजनं ।। तथा गीतामां कह्युं छे
जे ।। कर्मणोह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः । अकर्मण श्चबोद्धव्यं गहनाकर्मणोगतिः ।।
अकर्म जे ज्ञान तेने विषे पण जाणवुं रह्युं छे ते शुं तो जे ब्रह्मरूप थयो तेनेपण परब्रह्म
पुरुषोत्तम ते जाणवा रह्या छे अने जे ब्रह्मरूप थयो तेनेज पुरुषोत्तमनी भक्तिनो अधि-

कार छे ते भक्ति ते शुं तो, जेम श्वेतद्वीपवासी जे निरन्न मुक्त छे ते ब्रह्मरूप थका चंदन पुष्पादिक नाना प्रकारनी पूजा सामग्रीए करीने परब्रह्म जे वासुदेव तेने पूजे छे, तेम ए पण ब्रह्मरूप थका प्रत्यक्ष भगवाननी भक्ति चंदन, पुष्प, श्रवण, मननादिके करीने करे,ते भगवाने गीतामां कह्युं छे जे ।। ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा नशोचति नकांक्षति। समः सर्वेषु भूतेषुमद्भक्तिं लभते पराम् ।। माटे ब्रह्मरूप थइने जे परब्रह्मनी भक्ति न करे तो ते कैवल्यार्थीने पण आत्यंतिक कल्याण न कहेवाय. (४) अने जे प्रत्यक्ष ४
भगवान छे ते केवा छे तो अष्ट प्रकारनी जे व्याप्य प्रकृति अने तेने विषे व्यापक एवी जे चैतन्य प्रकृति ते बेयना आधार छे, जेम आकाश छे ते पृथिव्यादिक चार तत्वनो आधार छे. (५) ने पृथ्वीनी ज्यारे संकोच अवस्था थाय छे ते भेळो आकाश पण सं- ५
कोचने पामे छे ने पृथ्वीनी विकास अवस्था थाय ते भेळी आकाशनी पण विकास अवस्था छे तथा जळ, तेज ने वायुनी संकोच विकास अवस्था भेळी आकाशनी पण संकोच विकास अवस्था छे अने पृथिव्यादिक तत्त्वनी संकोच विकास अवस्था ते बेय आकाशने विषे थाय छे तेम ए बे प्रकृतिनी संकोच विकास अवस्था भेळी भगवाननी पण संकोच विकास अवस्था छे ने ए बे प्रकृतिनी संकोच विकास अवस्था ते भगवानने विषे छे एवा जे भगवान ते सर्वना आत्मा छे त्यां श्रुतियो छे ।। यस्याक्षरं शरीरं यस्यात्माशरीरं यस्यपृथ्वीशरीरं ।। इत्यादिक श्रुतियो छे तथा अन्नमय ब्रह्म कह्यो छे, मनोमय ब्रह्म कह्यो छे, विज्ञानमय ब्रह्म कह्यो छे, आनंदमय ब्रह्म कह्यो छे इत्यादिक घणीक प्रकारनी ब्रह्मविद्या कही छे तेनुं शुं तात्पर्य छे जे भगवान सर्वना कारण छे ने सर्वना आधार छे, माटे ए सर्वेने ब्रह्म कह्या छे पण ए सर्वे शरीर छे ने ए सर्वेना शरीरी ते भगवान श्रीकृष्ण प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम छे. (६) ते भगवानने विषे ए जड चैत- ६
न्यरूप जे बे प्रकृति ते संकोच विकास अवस्थाए करीने पोताना कार्य सोती सुखे करीने रही छे अने ए सर्वेने विषे भगवान जे ते अंतर्यामीरूपे कारणपणे करीने रह्या छे अने पोते तो अर्जुनना रथनी पाटली उपर बेठा छे तेने विषे अर्जुने समग्र विश्व, नदी, पर्वत, समुद्र तेने विकासे सहित देख्यां, एवी रीते महिमाए सहित जे भगवानने जाणे ने देखे तेने परिपूर्ण ज्ञान कहीए. (७) ७

३ त्यारे मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे, (३) एवी रीते देखातुं तो न होय ने अंतःकरणमां तो एवी रीतनी दृढ आंटी होय तेने परिपूर्ण ज्ञान कहेवाय के नहि ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेम अंधारुं घर होय ने तेमां कोठी तथा थांभला रह्या होय तेने देखे छे तो पण यथार्थ देख्या न कहेवाय, तेम पुरुषोत्तम भगवानने विषे जड चित् प्रकृति रही छे ने ए प्रकृतिने विषे पोते रह्या छे तेने अनुमाने करीने जाणे छे पण जो

देख्यामां नथी आवतुं तो परिपूर्ण ज्ञानी न कहेवाय, अने जो एने एवी आंटी ठावकी छे तो कांइक एने अलौकिकपणुं जणाणुं जोइए नहिं तो जणाशे अने निःसंदेह एवी आंटी छे ने जणातुं नथी तो एम समझे जे, आ भगवानने विषे तो सर्वे छे पण मुने देखाडता नथी एवीज एनी इच्छा छे, एम समझीने भगवाननी भक्ति करतो थको पोताने कृतार्थ माने छे तो ए परिपूर्ण ज्ञानी छे, माटे इंद्रियो अंतःकरण ने अनुभव ए त्रणे प्रकारे करीने जे भगवानने यथार्थपणे जाणतो होय तेने ज्ञानी कहीए.ने तेवा ज्ञानीने भगवाने गीतामां श्रेष्ठपणे कह्यो छे ॥ आर्त्तोजिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥ तेषां-ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते ॥ एवो जे ज्ञानी ते तो सदा साकार मूर्ति एवा जे आ प्रत्यक्ष भगवान तेने प्रकृतिपुरुष ने अक्षर ते थकी पर ने सर्वना कारण सर्वना आधार जाणीने अनन्यपणे सेवे छे, एवी रीते जे समझवुं तेने ज्ञान कहीए, अने ए ज्ञाने करीने आत्यंतिक मोक्ष थाय छे. (८) अने जे एम नथी समझता ने केवळ शास्त्रे करीने ८
॥ अहं ब्रह्मास्मि ॥ थइ बेसे छे ने कहे छे जे, रामकृष्णादिक तो ब्रह्मरूप एवो जे हुं ते मारी लहेरी छे एवा जे ब्रह्मकुदाळ आधुनिक वेदांती ते तो अति दुष्ट छे ने महा पापी छे अने मरीने नरकमां पडे छे ते कोइ दिवस एनो छुटको थातो थयी (९) ९
इति वचनामृतम् ॥ ७ ॥ (११५)

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, अमने भगवान जाण्या विना प्रत्यक्ष देखे तेनुं ने शास्त्रे करीने जाणे ते बेयनुं कल्याण सरखुं छे. (१) अने अमे अनिरुद्धरूपे उत्पत्ति करीए छीए ते अनिरुद्धने विषे स्थावर ने जंगम विश्व सावकाशे करीने रह्युं छे, अने संकर्षणरूपे संहार करीए छीए ने प्रद्युम्न रूपे स्थिति करीए छीए अने मच्छादिक अवतारोनुं धारण करीए छीए. (२) अने इंद्रियो अंतःकरण ने अनुभव ए त्रण प्रकारे करीने जाण्यामां आवे एवां त्रण प्रकारनां कार्य छे. ते ते कार्यने अर्थे तेवा तेवा रूपनुं धारण करीए छीए एवा अमे प्रत्यक्ष भगवान ते अमने इंद्रियो अंतःकरण ने अनुभव ए त्रणे करीने जाणे त्यारे ते पुरो ज्ञानी कहेवाय. अने एमांथी एकेय ओछुं होय तो ते ज्ञानी न कहेवाय ने ते जन्म मृत्युने न तरे. (३) बीजामां कैवल्यार्थीनुं आत्यंतिक कल्याण न थाय पण ते अमारी भक्तिनो अधिकारी थयो कहेवाय. [४] अने प्रत्यक्ष भगवान जे अमे ते अमे व्याप्य ने व्यापक बेय प्रकृतिना आधार छीए. (५) अने व्याप्य ने व्यापक बेय प्रकृतिनी संकोचने विकास अवस्था भेळी अमारी एटले अमारा अन्वय स्वरूपनी संकोच विकास अवस्था छे. अने ए बे प्रकृतिनी संकोच विकास अवस्था ते अमारुं अन्वय स्वरूप जे तेज तेने विषे छे अने प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवान जे अमे ते अमे सर्वेना आत्मा ने कारण ने आधार ने शरीरी छीए (६) अने जड चैतन्य प्रकृति ते पोताना कार्य सोती अमारे विषे एटले अमारा

तेओने विषे रही छे. अने ए सर्वेने विषे अमे अंतर्यामीरूपे कारणपणे रह्या छीए एम जाणे ने देखे ते परिपूर्ण ज्ञानी छे ने तेनुं कल्याण देह छतांज छे. (७) त्रीजामां एवी रीते जाणे पण देखे नहि ते परिपूर्ण ज्ञानी नथी अने जो निःसंदेह आंटी राखीने कृतार्थ माने तो ते पण परिपूर्ण ज्ञानी छे ने तेनो देहांते मोक्ष थाय छे. [८] अने ब्रह्म-कुदाळ आधुनिक वेदांती ते अति दुष्ट ने महा पापी छे तेनो नरकमांथी छुटको थतो नथी. [९] बावतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां श्रीजीमहाराजे शास्त्र करीने जाणे ने देखे तेनुं जन्मांतरे कल्याण थाय एम कह्युं ते जेवुं परोक्ष अवतारोने जाणवे ने देखवे करीने कल्याण थाय तेवुंज श्रीजीमहाराजने शास्त्रमांथी जाणवे करीने ने नेत्रे करीने देखवे करीने कल्याण थातुं हशे के कांइ अधिक न्यून थतुं हशे ?

१ उ० जे अवतारने तेना संबंधवाळां शास्त्रमांथी जाणे जे भगवान छे, पण केवा छे एवो महिमा न जाणे अने नेत्रे देखे ते पण ओळख्याविना देखे ते जन्मांतरे तेमना धाममां जाय; अने श्रीजीमहाराजने तेमना संबंधवाळां शास्त्रमांथी भगवान छे एम जाणे पण महिमा न जाणे, अने देखे पण बीजा मनुष्यनी पेठे मनुष्य जाणे पण भगवान छे एम ओळखे नहि ते जन्मांतरे श्रीजीमहाराजना धामने पामे. ने शास्त्रमांथी जेवा छे एवा तो सत्पुरुष थकीज जणाय छे, माटे सत्पुरुष थकी जेवा छे एवा श्रीजीमहाराजने जाणे तो देहने अंते श्रीजीमहा-राजना धामने पामे, अने जेवा छे एवा जाणे ने देखे तो छते देहेज अक्षरधामने पामी रह्यो छे.

२ प्र० एकतो भगवान मनुष्यरूपे विचरता होय ते समे सत्पुरुष थकी वा शास्त्रमांथी सत्पुरुष द्वाराए यथार्थ भगवानने जाणे अने एकने तो भगवाने मनुष्यरूप अदृश्य कर्युं होय ने सत्पुरुष थकी वा शास्त्रमांथी सत्पुरुष द्वाराए भगवाननुं ज्ञान यथार्थ थाय ते बेनुं सरखुं कल्याण थाय के कांइ अधिक न्यून रहे ?

२ उ० प्रतिमा तथा मनुष्यरूप तथा धाममां जे मूर्ति छे ते एकज छे माटे श्रीजीमहाराज सदाय एकज रूपे विराजमान छे ने सदाय साक्षात् छे माटे बेयनुं सरखुं कल्याण थाय छे.

३ प्र० त्यारे आगळ थयेला अवतारो साक्षात् छे के नथी ?

३ उ० जे अवतार थयो होय तेना उपरि पृथ्वी उपर न आव्या होय त्यां सुधी एने प्रत्यक्ष कहेवाय ने एना भक्तो एना धाममां जाय अने ज्यारे एना अवतारी प्रगट थाय त्यारे ते अवतार परोक्ष कहेवाय ने एनी भक्ति करी होय तेनुं फळ अवतारी आपे ते पोताना संप्रदायमां लावीने मोक्ष करे, माटे सर्व अवतारोना अवतारी साक्षात् श्रीस्वामिनारायण भगवान छे ते अवतारोनुं तथा तेमना भक्तोनुं आत्यंतिक कल्याण करवा प्रगट थया छे ने सदाय प्रत्यक्ष छे. अने आगळ थइ गया ने हवे थशे ते सर्वेना उपरि छे ते (म० ५८ ना पहेला पश्नोत्तरमां) चोथा हेतुमां कह्युं छे.

४ प्र० (३/१ पहेला प्रश्नमां) अनिरुद्ध प्रद्युम्न ने संकर्षण कह्या ते कोने कह्या हशे ?

४ उ० आ ठेकाणे मूळ अक्षरने अनिरुद्ध कह्या छे ते अनिरुद्धने विषे स्थावर एटले सदा स्थिर

जे चळे नहिं ते अने जंगम एटले जेनी स्थिरता नहिं अर्थात् जेनो नाश छे एवुं विश्व कह्युं ते माया सुधी चळ विश्व जाणवुं अने मूळ मायाथी पर मूळअक्षरनुं कार्य जे ब्रह्मकोटी ते सर्वे अचळ विश्व जाणवुं, ते चळ अचळ विश्व सावकाशे करीने मूळअक्षररूप अनिरुद्धने विषे रह्युं छे, अने वासुदेव ब्रह्मने प्रद्युम्न कह्या छे ते प्रद्युम्न पोताथी नीचा रह्या ते सर्वेनुं पोषण करे छे, अने महाकाळने संकर्षण कह्या छे ते महाकाळ मूळपुरुषना कार्यनो संहार करे छे. आ अनिरुद्ध, प्रद्युम्न ने संकर्षण ते अविनाशी छे अने दिव्य छे ने मूळपुरुषथी पर छे ते (पं० २ मां) कह्युं छे जे सांख्य ज्ञाने करीने प्रकृति पुरुषथी उपन्युं तेने मिथ्या कहेवुं पण संकर्षण, प्रद्युम्न ने अनिरुद्ध एमना रूपने मिथ्या न कहेवां ते आ संकर्षणादिक त्रणने कह्या छे अने ते त्रणथी पर जे पोतानुं तेज ए तेजने निर्गुण वासुदेव कह्या छे ए निर्गुण वासुदेव ते अनिरुद्ध जे मूळअक्षरादिक सर्वे तेना आधार ने आत्मा ने नियंता ने प्रेरक छे, अने ए निर्गुण वासुदेवना आधारने आत्मा ते श्रीजीमहाराज मूर्तिमान छे.

५ प्र० (१/३ पहेला प्रश्नमां) इंद्रियो अंतःकरणने अनुभवे करीने जाण्यामां आवे ते कार्यनी सिद्धिने अर्थे तेवा रूपनुं धारण करीए छीए एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते इंद्रिये करीने ग्रहण करवामां आवे एवुं कार्य शुं हशे ? अने ए कार्यने माटे केवुं रूप धरता हशे ? अने अंतःकरणे करीने ग्रहण कर्यामां एटले जाण्यामां आवे ते कार्य शुं हशे ? अने ते कार्यने माटे केवुं रूप धरता हशे ? अने अनुभवे करीने जाण्यामां आवे ते कार्य शुं हशे ? अने ते कार्यने माटे केवुं रूप धरता हशे ?

५ उ० श्रीजीमहाराज मच्छ कच्छादिक तथा रामकृष्णादिक अवतारो रूपे प्रगट थाय छे ते रूप जाणवां अने तेमणे आ लोकने विषे आश्चर्य रूपी कार्य कर्यां ते कार्य जाणवां ते (प्र० २७ मां) थइ गएला अने थाय छे अने थाशे ते सर्वे आश्चर्य अमारां जाणवां, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे ते कार्य इंद्रिये करीने दीठामां आव्यां छे अने मूळअक्षर रूपी अनिरुद्ध तथा वासुदेव ब्रह्म रूपी प्रद्युम्न तथा महाकाळ रूपी संकर्षण तेमनी पासे उत्पत्ति, स्थिति ने प्रलय करावे छे ते रूप कह्यां छे अने उत्पत्त्यादि कार्य कह्यां छे अने ते अंतःकरणे करीने जाण्यामां आवे छे. अने पोताना भक्तोने मूर्तिनुं सुख आपवुं ते कार्य जाणवुं अने ते सुख आत्मसत्ताथी अनुभवाय छे अने ते सुख आपवाने अर्थे भक्तना आत्माने विषे साक्षात् देखाय ते रूप जाणवुं.

६ प्र० इंद्रियो अंतःकरण ने अनुभव ए त्रणे पहोंचे एवा भगवानने ज्ञाने करीने मोक्ष थाय एम कह्युं ते भगवान किया हशे अने ए त्रणे पहोंच्यां क्यारे कहेवाय ?

६ उ० एवा आ प्रत्यक्ष भगवान श्रीस्वामिनारायण छे ते भगवान दया करीने मनुष्य रूपे दर्शन आपे तेनां दर्शन करे ते इंद्रियो पहोंच्यां कहेवाय. अने ते प्रत्यक्ष श्रीस्वामीनारायणनो महिमा समजे जे, आ प्रत्यक्ष श्रीस्वामीनारायण छे ते क्षर जे माया ने अक्षर जे मूळअक्षरादिक सर्वेना अंतर्यामी ने आधार ने कारण छे ते सर्वेने विषे अंतर्यामी रूपे रह्या थका मूर्तिमान न्यारा छे ते आ प्रत्यक्ष मुने मळया तेज छे, एवो महिमा समजीने श्रीजीमहाराजने हृदयने विषे देखे त्यारे अंतःकरण पोहोच्यां कहेवाय. अने ए मूर्तिने ब्रह्मरूप जे पोतानो

आत्मा तेने विषे दिव्य तेजोमय अखंड देखे त्यारे त्रणे पूर्ण्यां कहेवाय. अने तेमनी प्रतिमानो पण एवी रीते महिमा जाणीने पोताना आत्माने विषे ध्याने करीने साक्षात्कार करे तो इन्द्रियो अंत:करण ने अनुभव पहोंच्यां कहेवाय.

७ प्र० (३/६ पहेला प्रश्नमां) इंद्रियो अंत:करणने अनुभव ए त्रणे पुगे एवा श्रीकृष्णने कह्या छे अने समे श्रीजीमहाराजने कह्या तेनुं शुं कारण छे ?

७ उ० एतो श्रीजीमहाराजे परोक्षना दृष्टांते करीने पोताने कह्या छे, केम जे आ बाबतमांज ए त्रणे करीने यथार्थपणे प्रत्यक्ष भगवानने जाणे त्यारे पूरो ज्ञानी कहेवाय एम कह्युं छे माटे प्रत्यक्ष भगवान पोतानेज कह्या छे.

८ प्र० (३/६ बीजा प्रश्नमां) भगवाननी संकोच विकास अवस्था कही ते केवी रीते समजवुं ?

८ उ० ज्यारे विश्व सृजाय छे त्यारे पुरुषद्वारे अंतर्यामी शक्ति व्यापे छे ते विकासने पामी कहेवाय अने ज्यारे प्रलय थाय छे त्यारे अंतर्यामी शक्ति संकोच पामे छे ने पुरुष पोताने स्वरूपे रहे छे ते संकोच अवस्था कही छे, माटे पुरुषद्वारे संकोच विकासपणुं छे ते (प्र० ४६ मां) कह्युं छे.

९ प्र० अन्नमय, मनोमय, विज्ञानमय, तथा आनंदमय ब्रह्म कह्यो तेनो अर्थ शो समजवो ?

९ उ० अन्नमय ब्रह्म ते देह जाणवो अने मनोमय ब्रह्म ते मन जाणवुं अने विज्ञानमय ब्रह्म ते आत्मा जाणवो अने आनंदमय ब्रह्म ते परमात्मा परब्रह्म पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान जाणवा. ॥११५॥

संवत् १८७७ ना मागशर शुदि ५ पंचमीने दिवस रात्रिने समे श्रीजीमहाराज गाम श्रीलोया मध्ये सुराखाचरना दरबारमां विराजमान हता अने धोळो फेंटो मस्तके बांध्यो हतो ने धोळी छींटनी डगली पहेरी हती ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ ते समयने विषे श्रीजीमहाराजने मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछयो जे,(१) जे भोळो होय तेने तो कोइ स्वभाव देखीने संतनो अवगुण आवे पण जे डाह्यो होय तेने संतनो अवगुण केम आवे छे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जे डाह्यो होय तेने पोतामां जे कोइ अयोग्य स्वभाव देखवामां आव्यो ने तेनी उपर पोते अति दोषबुद्धि राखीने द्वेषे सहित ते स्वभावने टाळयानो दाखडो करतो होय अने ते स्वभाव उपर पोताने अति खार होय अने तेनो ते स्वभाव कोइ बीजा संतमां देखाय त्यारे तेनो अभाव आवे छे, अने जे मूर्ख होय ते तो पोताना स्वभावने टाळे नहि ने बीजा संतमां कांइक ते स्वभाव देखे तो तेनो अवगुण ले छे तेने मूर्ख कहीए. (१) १

त्यार पछी श्रीजीमहाराज नाना नाना परमहंसने तेडावीने पोते प्रश्न शिखववा

२ लाग्या ने पोते उत्तर करवा लाग्या तेमां प्रथम तो पोते एम प्रश्न पुछयो जे, (२) काम,

क्रोध ने लोभादिक शत्रुनो जे वेग तेनुं जे तीव्रपणुं ने मंदपणुं ते बाळ यौवन ने वृद्ध तेणे करीने छे, ते केवी रीते तो बाळपणामां मंद वेग होय अने यौवन अवस्थामां तीव्र वेग होय ने वळी पाछुं वृद्धपणामां मंदपणुं थाय, एम कामादिकनुं तीव्र मंदपणुं छे ते तो जणाय छे पण विचारे करीने एनुं मंदपणुं छे के नहि ? त्यारे तेनो उत्तर पोतेज कर्यो जे, विचारे करीने पण कामादिकनुं मंदपणुं छे ते विचार केम करे तो बाळक अवस्थामां मंदपणुं छे ने यौवन अवस्थामां तीव्रपणुं छे ने वृद्ध अवस्थामां पाछुं मंदपणुं छे ते तो आहारे करीने छे जे बाळ अवस्थाने विषे पण आहार थोडो छे माटे काम पण ओछो छे ने वृद्ध अवस्थामां पण आहार ओछो होय एटले काम पण ओछो होय, अने यौवन अवस्थामां आहारनी वृद्धि होय एटले कामनी पण वृद्धि होय, ते माटे जो यौवन अवस्थामां आहार ओछो करे ने देहे करीने शीत, उष्ण, वर्षात, भुख तेनुं जाणी जाणीने सहन करे एवो जे विचार राखे अने मोटा साधुनो समागम राखे तो तेने यौवन अवस्थामां पण काम मंद पडी जाय. (२) २

३ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे, (३) जीवने नाना प्रकारनां व्यसन पडे छे ते कोइकने मांगनुं, अफीणनुं, दारुनुं, गांजानुं इत्यादिक अनेक प्रकारनां पडे छे ते व्यसन क्रियमाण छे के प्रारब्धे करीने छे ? त्यारे तेनो उत्तर पण पोतेज कर्यो जे, ए व्यसन तो कर्या थाय छे पण प्रारब्धे करीने नथी, माटे जो ए व्यसनने टाळयानो श्रद्धा सहित आग्रह करे ने शूरवीरपणुं होय तो ते टळी जाय ने श्रद्धा न होय ने फोशी होय तेथी ए स्वभाव टळे नहि. (३) ३

४ पछी वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे, [४] केटलाक बाळकने तो वृद्धना सरखी प्रकृति होय छे ने केटलाकने तो अति चंचळ प्रकृति होय छे ते संगे करीने थाय छे के एना जीवमांज एवी प्रकृति रही छे ? त्यारे तेनो उत्तर पण पोतेज कर्यो जे बहुधा तो संगे करीनेज सारी नरसी प्रकृति थाय छे ने केटलाकने पूर्व कर्मानुसारे पण थाय छे. [४] ४

५ पछी कपिलेश्वरानंदस्वामीए पुछयुं जे, (५) हे महाराज ! पूर्वनो स्वभाव होय ते केम जाणवो ? ने हमणानो स्वभाव होय ते केम जाणवो ? त्यारे श्रीजीमहाराजे तेनो उत्तर कर्यो जे, जे स्वभाव हमणानो होय ते तो जो रुडा संतने संगे रहीने थोडोक तेने टाळयानो उपाय करे तो टळी जाय, जेम वंडी उपर तृण उग्यां होय ते पांच दहाडा मेघ न वरसे तो सुकाइ जाय, तेम हमणांनो जे स्वभाव ते तो थोडाक दिवसमां टळी जाय छे अने जे पूर्वनो स्वभाव होय तेने टाळयानो तो अति दाखडो करे त्यारे मांड मांड टळे, जेम खरतीमां द्रोनो छोड होय अथवा बोरडीनां झाड होय तेने तो खेडु अग्नि

लगाडीने बाळे तो पण पाछो फुटी आवे ने जो कोदाळी लेइने मूळमांथी खोदी नाखे तो जाय तेम जे पूर्वनो स्वभाव होय तेने रुडा संतना समागममां रहीने अति प्रयासे करीने टाळे तो मांड मांड टळे. (५) ५

६ अने त्यार पछी वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे, (६) जेनां इंद्रियो चंचळ होय ते चंचळताने टाळ्याना पृथक् पृथक् किया उपाय छे ? त्यारे तेनो उत्तर पण पोतेज कर्यो जे, चक्षु इंद्रियनी चंचळ्ताटाळयानो ए उपाय छेजे,नासिकाग्र दृष्टि राखे ने आडुं अवळुं जुवे नहि ने भणवुं होय तो भण्या करे तथा भजन स्मरण कर्या करे अने एम करतां स्त्री आदिक देखाइ जाय अने अयोग्य घाट न थयो होय तोपण नेत्रने उघाडां राखीने मेषोन्मेष रहित करीने ज्यां सुधी नेत्र सारी पेठे बळेने आंसु चाले त्यां सुधी घडी बे घडी पर्यंत जोइ रहे त्यारे तेनी दृष्टि चंचळ होय तो पण वश थइ जाय छे, अने नासिका इंद्रिय छे ते कोइनुं शरीर अथवा पुष्प के वस्त्र ते गंधातुं होय तेनो गंध ले त्यारे ते न गमे त्यारे तेनो एम विचार करे जे, मारो देह पण उपरथी सारो छे पण मांही तो रुधीर, मांस हाडकां छे तथा पेटमां मळमूत्र आंतरडां छे, एम विचारे तो नासिकानी चंचळता टळे, अने काननी चंचळता एम टळे जे, कोइ रमुज थाती होय अथवा भवाइ थाती होय तो तेने सांभळ्यामां हेत थाय ने भगवाननी कथा कीर्तन सांभळयामां निद्रा आवे त्यारे उभा थवुं ने निद्रा आळसने टाळवुं ने भगवाननी कथा सांभळ्यामां श्रद्धा राखवी ने हेत राखवुं तो कान जिताय, अने त्वचा इंद्रियने एम जीते जे, जाणी जाणीने टाढ, तडको, वर्षात तेने खमवो ने गोदडी होय ते उशीके मुकी राखवी ने सारी पेठे टाढ वाय त्यारे ओढवी, तथा ज्यां त्यां पडी रहेवुं एम करीने त्वचाने बाळी नाखे एव करे तो त्वचा इंद्रियनी चंचळ्ता टळे, अने हाथनी चंचळता एम टळे जे, ज्यारे हाथ नवरा होय त्यारे हाथमां माळा राखीने श्वासोश्वासे भगवाननुं नाम लेइने ते माळा फेरववी पण उतावळी लहरके माळा न फेरववी ने केटलाक एम कहे छे जे, मनेकरीने तो नाम वधु लेवाय ए वात खोटी छे, जेटलां जीभे लेवाय तेटलांज मने करीने लेवाय छे एम करे तो हाथनी चंचळता टळे, अने पग चंचळ होय तो आसनने जितवुं तोपग जिताय, अने शिश्न चंचळ होय तो जेम क्षीणो खस होय के राती दादर होय तेने खंजोळीए तो लोही नीकळे त्यां सुधी खरज टळे नहि अने जा न खंजोळीए तो ते एमने एम वळी जाय तेम शिश्न इंद्रियमां चळ आवे तोपण तेने हाथे करीने अडेज नहि अने जो शिश्नमां वायु भरातो होय तो आहार थोडो करे ने उपवास कर्या करे ने देहने बळहीन करी नाखे तो शिश्न जिताय,अने जिह्वा इंद्रियने जितवां होय ता जे वस्तु जीभने गमती होय ते वस्तु न आपवी अने आहार युक्त करवो तो जिह्वानी चंचळता टळे छे, अने वाणी चंचळ होय

तो एम टळे जे, मुक्तानंदस्वामी जेवा वार्ता करता होय तथा कथा वांचता होय ते वचमां पोते डहापण करीने बोलवुं नहि अने जो वचमां बोलाइ जाय तो पचवीश माळा फेरववी तो वाणीनी चंचळता टळी जाय. (६) ६

७ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे, [७] ए सर्व इंद्रियो छे तेमांथी एकने परिपक्व जिते तो सर्व इंद्रियो जिताय एवी एक केइ इंद्रिय छे ? त्यारे तेनो उत्तर पण पोतेज कर्यो जे, एक जिह्वाने परिपक्व जिते तो बीजी सर्वे इंद्रियो जिताय छे. (७) ७

८ त्यार पछी वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे, (८) जे पुरुषने अंतरमां काम व्याप्यो होय तेने बाहेरथी केम जाणीए जे एने काम व्याप्यो छे अने एवुं जे अंग ते तो वस्त्रमां ढांक्युं होय छे ? त्यारे एनो उत्तर पण पोतेज कर्यो जे जेने काम व्यापे तेनां नेत्र आदिक जे सर्वे इंद्रियो ते चंचळ थाय त्यारे जाणवुं जे ए कामे व्याकुळ थयो छे. [८] ८

९ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे, (९) जेनो चंचळ स्वभाव होय तेने शांत थावुं अने जेनो शांत स्वभाव होय तेने चंचळ थावुं ते किया विचारे करीने थाय छे ? त्यारे तेनो उत्तर पण पोतेज कर्यो जे, जे चंचळ होय ते एम विचारे जे हुं आत्मा छुं, ब्रह्म छुं, अलिंग छुं ने आकाशनी पेठे स्थिर छुं, एवे विचारे करीने उपशम अवस्थाने पामे तो चंचळ होय ते शांत थाय अने शांतनेचंचळ थावुं होय तेने तो भगवान ने भगवानना भक्तनुं महात्म्य जाणवुं ने महात्म्य जाणे त्यारे भगवाननी नव प्रकारे भक्ति करे तथा भगवानना भक्तनी सेवा चाकरी करे तेणे करीनेएनो चंचळस्वभावथायछे.(९) ९

१० अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे, (१०) श्रीमद्भागवतादिक जे आठ सतशास्त्र तेमांथी कोइ त्याग करवा योग्य छे के सर्वे ग्रहण करवा योग्य छे ? त्यारे तेनो उत्तर पण पोतेज कर्यो जे ए सर्वे ग्रंथमां पण अनेक प्रकारनां प्रकरण छे ते सर्वे प्रकरणे करीने भगवानने पाम्या जे भक्त तेमनां अंग कह्यां छे माटे ए सर्वे ग्रहण करवा योग्य छे, पण सर्वे प्रकरणमांथी जे प्रकरण पोताना अंगमां मळतुं आवतुं होय तेने ग्रहण करवुं ने बीजानो त्याग करवो ने एम जाणवुं जे ए छे तो साचुं पण ए बीजा भक्तने अर्थे छे पण मारे अर्थे नथी. (१०) १०

११ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे, (११) आ तमे सर्वे नाना छोकरा बेठा छो तेमांथी कोइकने तो आ सर्वे संत प्रमाण करे छे ने कोइकनुं तो नथी करता अने सर्वेनी अवस्था सरखी छे ने संग पण एक सरखो छे अने भोजन, वस्त्र, उपासना, शास्त्र, उपदेश मंत्र ते सर्वेने एक सरखां छे तो पण जे न्यूनाधिकपणुं रही गयुं छे तेनुं शुं कारण छे ? अने जे संत छे ते तो समदृष्टिवाळा छे ने निर्पक्ष छे ने धर्म-

वाळा छे ते तो जे जेवो होय तेने तेमज कहे माटे एनो उत्तर कहो ? पछी पोतेज एनो उत्तर कर्यो जे जेनां संत वखाण करे छे तेने श्रद्धा छे माटे धर्म पाळवाने विषे तेनो वधारो छे ने तेने संतनी सेवा करवाने विषे तथा भगवाननी वात सांभळवाने विषे पण श्रद्धा छे ने संतनो विश्वास छे माटे ए वधी गयो; अने जे आवा समागममां रह्यो थको वध्यो नहि ते श्रद्धा रहित छे एम जाणवुं. (११) इतिवचनामृतम्. ॥८॥ (११६) ११

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (११) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, जेने पोताना अयोग्य स्वभाव उपर अभाव होय ने ते स्वभाव बीजा संतने विषे देखीने ते स्वभावनो अभाव आवे ते डाह्यो छे ने जे पोताना स्वभावने टाळे नहि ने बीजा संतना स्वभावने देखीने अवगुण ले ते मूर्ख छे. (१) बीजामां यौवन अवस्थामां आहार ओछो करे तथा मोटा साधुनो समागम राखे तो कामादिक मंद पडी जाय छे. (२) त्रीजामां व्यसन कर्यां थाय छे ने श्रद्धावानथी टळे छे (३) चोथामां सारी नरसी प्रकृति संगे करीने तथा पूर्व कर्मानुसारे थाय छे. (४) पांचमामां जे स्वभाव संतने संगे थोडा उपाये टळी जाय ते हमणानो जाणवो अने घणे दाखडे टळे ते पूर्वनो जाणवो. (५) छठ्ठामां इंद्रियोनी चंचळता टाळवाना पृथक् पृथक् उपाय बताव्या छे. (६) सातमामां जिह्वा इन्द्रियने जित्ये सर्वे इंद्रियो जिताय छे. (७) आठमामां सर्वे इंद्रियो चंचळ थाय त्यारे काम व्याप्यो जणाय. (८) नवमामां चंचळने शांत ने शांतने चंचळ थवानो उपाय बताव्यो छे. (९) दशमामां परोक्ष आठ शास्त्रमांथी जे प्रकरण पोताना अंगमां मळतुं आवतुं होय तेनुंज ग्रहण करवुं. (१०) अगीयारमामां श्रद्धावाळो वृद्धि पामेछे. (११) वातो छे.

१ प्र० नवमा प्रश्नमां आत्मारूप ने ब्रह्मरूप छुं एम विचारवाथी उपशम थाय छे एम कह्युं, अने (अ० ३ ना पहेला प्रश्नमां) श्रीजीमहाराजनी मूर्तिना चिंतवनने बळे करीने उपशम अवस्था थाय छे एम कह्युं ते उपशमना बे प्रकार कह्या तेमां न्यूनाधिक भाव हशे के नहि होय ?

१ उ० (अ० ३ मां) मूर्तिना चिंतवने करीने उपशमने पामे त्यारे पंच विषय जन्म मरणना हेतु थता नथी एम कह्युं ने आमां चंचळ प्रकृति टळी जाय एटलुंज उपशम कह्युं छे. तेमां (अ० ३ मां) कह्युं तेथी आ न्यून छे.

२ प्र० दशमा प्रश्नमां आठ सतशास्त्रनुं वचन पोताना अंगमां मळतुं आवे एटलुंज ग्रहण करवुं एम कह्युं ते अंग कियुं जाणवुं ?

२ उ० स्वरूपनिष्ठा, धर्मनिष्ठा, आत्मनिष्ठा, भक्तिनिष्ठा, त्याग, तप, वैराग्य, ए आदिक अंग छे तेमांनुं जे अंग पोताने विषे मुख्य होय ते अंगने मळतुं आवतुं होय ते वचन ग्रहण करवुं एम कह्युं छे ॥ ११६ ॥

संवत् १८७७ ना मागशर शुदि ६ छठने दिवस श्रीजीमहाराज गाम श्रीलोया मध्ये सुराभक्तना दरबारमां विराजमान हता ने धोळी छींटनी डगली पहेरी हती तथा धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो तथा धोळो फेंटो मस्तके बांध्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, सर्वे परमहंस परस्पर प्रश्न उत्तर करो. त्यारे
१ आत्मानंदस्वामीए अखंडानंदस्वामीने प्रश्न पुछयो जे, (१) वैराग्य, ज्ञान, भक्ति ने धर्म ए चारने उपज्यानो हेतु शो छे? पछी तेनो उत्तर श्रीजीमहाराजे कर्यो जे वैराग्य तो एम उपजे जे, जो काळनुं स्वरूप जाण्यामां आवे,ते काळनुं स्वरूप ते शुं तो नित्य प्रलयने जाणे, नैमित्तिक प्रलयने जाणे, प्राकृत प्रलयने जाणे, अने आत्यंतिक प्रलयने जाणे तथा ब्रह्मादिक स्तंब पर्यंत सर्व जीवना आयुष्यने जाणे ने एम जाणीने पिंडब्रह्मांड सर्व पदार्थने काळनुं भक्ष समझे त्यारे वैराग्य उपजे. अने ज्ञान तो एम थाय जे जो बृहदारण्य, छांदोग्य, कठवल्ली आदिक जे उपनिषद् तथा भगवद्गीता तथा वासुदेव महात्म्य तथा व्याससूत्र इत्यादिक ग्रंथनुं सद्गुरु थकी श्रवण करे तो ज्ञान उपजे. अने धर्म तो एम उपजे जे, जो याज्ञवल्क्य स्मृति, मनुस्मृति, पराशर स्मृति, शंखलिखित स्मृति इत्यादिक स्मृतिनुं श्रवण करे तो धर्म उपजे ने तेमां निष्ठा आवे. अने भक्ति एम उपजे जे, जो भगवाननी जे विभूतियो छे तेने जाणे ते केम जाणे तो खंडखंड प्रत्ये भगवाननी मूर्तियो जे रही छे तेनुं श्रवण करे तथा भगवानना गोलोक, वैकुंठ, ब्रह्मपुर, श्वेतद्वीपादिक धाम छे तेने सांभळे,तथा जगत्नी उत्पत्ति स्थिति प्रलय रूप जे भगवाननी लीला तेने महात्म्ये सहित सांभळे तथा राम कृष्णादिक जे भगवानना अवतार तेनी जे कथाओ तेने हेते सहित सांभळे तो भगवानने विषे भक्ति उपजे. अने ए चारमां जे धर्म छे तेतो काची बुद्धि होय ने प्रथमज कर्म कांडरूप जे स्मृतियो तेनुं श्रवण करे तो उपजे. अने ज्यारे धर्मने विषे दृढता थाय त्यार पछी उपासनाना ग्रंथनुं श्रवण करे त्यारे एने ज्ञान, भक्ति, वैराग्य ए त्रणे उपजे, एवी रीते ए चारने उपज्याना हेतु छे. (१) इति वचनामृतम् ॥९॥ (११७) १

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे वैराग्य, ज्ञान, भक्ति ने धर्म ए चारने उपजवाना हेतु बताव्या छे. आमां श्रीजीमहाराजे परोक्षना दृष्टांते करीने वात करी छे, माटे प्रत्यक्ष श्रीस्वामीनारायणना उपासकने वचनामृत, सत्संगीजीवन, सत्संगीभूषण, हरिलीलाकल्पतरु आदिक पोताना सांप्रदायिक ग्रंथोनुं श्रवण करवाथी ए चारे उपजे छे माटे प्रत्यक्षना ग्रंथनुं श्रवण करवुं. (१) बाबत छे.

१ प्र० श्रीजीमहाराजे वैराग्य, ज्ञान, भक्ति ने धर्म तेने उपजवाना हेतु कह्या पण ए चारेमां

स्वरूप तथा फळ शां हशे ?

१ उ० सत्पुरुषना प्रसंगथी मायिक विषय तथा ईश्वर कोटी, ब्रह्म कोटी ने अक्षरकोटीनां सुख तथा ऐश्वर्यनी अरुचि थाय ने श्रीजीमहाराजना सुखने सर्वथी अधिक जाणीने श्रीजीमहाराजने विषे हेत थाय ते वैराग्यनुं स्वरूप छे, अने श्रीजीमहाराजना सुखथी ओरां जे समग्र सुख, ऐश्वर्य ते प्राप्त थाय तेने भोगववानो संकल्प न थाय ते वैराग्यनुं फळ छे. (१) अने श्रीजीमहाराजने सर्वत्र व्यापक कर्त्ता थका अकर्त्ता, संगी थका असंगी, निर्लेप ने निर्विकारी जाणवा ने पोताना आत्माने मूळअक्षरादिक सर्वथी पर श्रीजीमहाराजना तेजरूप जे ब्रह्म ते रूप मानवुं ते ज्ञाननुं स्वरूप छे, अने श्रीजीमहाराजनो साक्षात्कार करीने जेम जळथी मीन जुदुं पडतुं नथी तेम मूर्तिना सुखमां निमग्न रहेवुं ते ज्ञाननुं फळ छे. (२) अने श्रीजीमहाराजनां प्राकृत चरित्र तेने दिव्य जाणवां, ने सर्व प्रकारे निर्दोष जाणवा, ने सर्व सुखना धाम ने कल्याणकारी गुणे युक्त जाणीने अतिशे प्रीतिए करीने आश्रय करवो ते भक्तिनुं स्वरूप छे, अने श्रीजीमहाराज सदाय अतिशे वश वर्ते ते भक्तिनुं फळ छे. (३) अने स्थूळ ने सूक्ष्म देहे यथार्थ नियम पळे ते धर्मनुं स्वरूप छे, अने ब्रह्मरूप जे पोतानो आत्मा तेमां श्रीजीमहाराजने अखंड धारी रहेवुं ते धर्मनुं फळ छे. (४) ॥ ११७ ॥

संवत् १८७७ ना मागशर शुदि ८ आठमने दिवस श्रीजीमहाराज गाम श्रीलोया मध्ये सुराखाचरना दरबारमां ढोलिया उपर प्रातःकाळने समे विराजमान हता ने धोळी छींटनी डगली पहेरी हती तथा धोळो सुरवाळ पहेर्यो हतो तथा धोळो फेंटो मस्तक उपर बांध्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

३ ते समयमां नित्यानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे, (१) आ जगत्मां केटलाक मनुष्यने स्त्री आदिक पदार्थमां एवुं हेत थाय छे जे तेनो वियोग थयो होय तो प्राणनो त्याग थइ जाय अने केटलाकने स्त्री आदिक पदार्थमां हेत छे पण साधारण छे माटे तेना वियोगे करीने प्राणनो त्याग न थाय ने ए बे प्रकारना जीव छे ते जेम संसारमां हेते करीने जोडाय छे तेम ते हेतवाळाने जो भगवान मळे तो तेमां पण एमज जोडाय जे भगवाननो वियोग थाय तो प्राण जाय अने जेने संसारमां साधारण हेत छे ने तेने भगवान मळे तो भगवानमां पण साधारण हेत थाय, ते ए बे प्रकारना जे मनुष्य तेने विषे कर्मे करीने एवो भेद छे के ए बे प्रकारना जीव अनादिनाज छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ए भेद जीवमां स्वाभाविक नथी एतो कर्मे करीने थाय छे. [१] ते १
केवी रीते थाय छे तो ज्यारे जीव कर्म करे छे त्यारे जीवनी वृत्तिनो वेग त्रण प्रकारे थाय छे एक मंद वेग बीजो मध्य वेग ने त्रीजो तीव्र वेग. तेमां जेवे वेगे वृत्ति पदार्थमां

चोटे त्यारे तेने तेवी जातनुं कर्म लागे छे ते कर्मे करीने स्नेहमां पण त्रण प्रकार छे.(२) २

२ पछी वळी नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे, [२] वृत्तिना वेगमां ए त्रण प्रकार थया ते गुणे करीने थया के कोइ बीजा हेतुए करीने थया? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ए त्रण प्रकारना जे भेद ते गुणे करीने नथी ए तो जे पदार्थमां केवळ इंद्रियोज प्रवर्ते त्यारे मंदवेग थाय छे, अने ज्यारे मने सहित इंद्रियो पदार्थमां जाय त्यारे मध्यवेग थाय छे, अने ज्यारे इंद्रियो मन ने जीव ए त्रणे भेगां थइने पदार्थमां प्रवर्ते छे त्यारे ते वृत्तिनो तीव्रवेग थाय छे. अने ते तीव्रवेग एक चक्षु इंद्रियने विषे लाग्यो होय तो बीजी इंद्रियो तेने अनुवर्ती थइने सर्वे इंद्रियोमां लागे छे, एवी रीते जे जे इंद्रियमां मुख्यपणे तीव्र वेग लाग्यो होय त्यारे बीजी इंद्रियो तेने अनुवर्ती थइ रहे छे अने ए जे तीव्र वेग ते रजोगुणी सत्त्वगुणीने तमोगुणी ए त्रणेने लागे छे, अने एक एक इंद्रियमां तो सर्वेने तीव्रवेग होय छे अने तदनुसारे पदार्थमां हेत थाय छे. (३) ३

३ त्यारे वळी नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे, [३] एने भगवानमां केम तीव्र वेगे करीने हेत थातुं नथी? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, देश, काळ, क्रिया, संग, मंत्र दीक्षा, उपदेश ने देवता एटलाने योगे करीने शुभ अथवा अशुभ आचरण थाय छे ते जो रुडा, देश, काळ, संगादिक प्राप्त थया होय तो भगवानने विषे पण तीव्र वेगे करीने स्नेह थाय छे अने जो भुंडा देशादिकनो योग थाय तो भगवान विना अन्य पदार्थमां प्रीति थाय छे. (४) ४

४ त्यारे चैतन्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे, [४] काळ विषम होय त्यारे केम करवुं? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ज्यारे जे स्थळमां काळनुं विषमपणुं होय त्यारे ते ठेकाणेथी अन्य स्थळमां भागी जावुं पण विषम काळमां रहेवुं नहि. (५) ते काळ सत्य- ५
युग, त्रेता, द्वापरने कळीरूपे करीने बहार वर्ते छे ने पोताना अंतरमां पण वर्ते छे,ते ज्यारे हइयामां कळी वर्ततो होय त्यारे भगवाननी मूर्ति हइयामां धारवी नहि, बाहेर नेत्रने आगळ धारवी. [६] ६

५ पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे, (५) जेना हृदयमां मंदवेग, मध्यवेग ने तीव्रवेग वर्ततो होय ते केम जाणवो? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ज्यारे मंदवेग वर्ततो होय त्यारे नानी बाळकी तथा नव यौवनवाळी स्त्री तथा वृद्ध स्त्री ए त्रणेने देखीने सरखो भाव रहे, केम जे त्यां एकली इंद्रियनीज वृत्ति गइ छे माटे तेमां मंद वेग छे. अने ज्यारे इंद्रियने विषे मन भळे छे ने ए त्रण प्रकारनी स्त्रीने देखे छे त्यारे बाळकी ने वृद्ध स्त्री तेनो तो भुंडो घाट नथी थातो अने युवान स्त्रीने विषे भुंडो घाट थाय छे ने विकारने पामी जाय छे एने मध्यवेग जाणवो. अने ज्यारे इंद्रियने विषे मनने जीव ए त्रेय प्र-

क्षीने ए त्रण प्रकारनी स्त्रीने देखे छे त्यारे तो ए त्रणे प्रकारनी स्त्रीने विषे भुंडा घाट थाय छे ने विकारने पामे छे अने पोतानी मा बोन होय तो तेने देखीने पण विकारने पामे एने तीव्रवेग जाणवो. (७) ७

६ पछी ब्रह्मानंदस्वामीए प्रश्न पुछयो जे [६] ए त्रण प्रकारनी जे स्त्रियो तेने देखीने व्यक्ति जणाय तथा रूप कुरूप पण जणाय अने विकार तो थाय नहि त्यारे तेने कियो वेग जाणवो? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जे पदार्थने अत्यंत दुःखदायी जाणीने मनन थयुं होय पछी ते मनने करीने ते पदार्थने विषे अत्यंत दोष जणाय छे ते दोषनो मनमां विचार थइने जीवमां ते दोष प्रवेश करे छे अने जीवथी पर जे साक्षी तेणे पण ते दोषनुं प्रमाण कर्युं छे तेणे करीने ए दोषनी अति दृढता थइ छे, माटे पदार्थने विषे ज्यारे इंद्रियोनी वृत्ति जाय छे त्यारे ते वृत्ति भेळे मन तथा जीव ए बेय आवे छे पण जीवमां जे अतिशे दोषनी दृढता छे ते दोषनी सेव्य मन इंद्रियोने विषे सोंसरी निसरे छे, माटे ते पदार्थ यथार्थ देखाय ने जाण्यामां आवे पण तेने विषे अत्यंत अभाव आवी जाय छे, जेम दुध साकरनुं पात्र भर्युं होय ने तेमां सर्पे लाळ नाखी होय ने तेने नाखतां दीठी होय पछी ते दुध जेवुं पूर्वे देखातुं हतुं तेवुं ने तेवुंज देखाय पण तेनो अति अभाव थइयामां वर्ते छे, केम जे एणे एम जाण्युं छे, जे एने पीए तो तत्काळ प्राण जाय, तेम जेने एम समझाणुं जे, आ रूपवान स्त्री छे ते कल्याणना मार्गमां विरोधी छे अने आ लोक परलोकने विषे परम दुःखदायी छे ने स्त्रीनी प्राप्ति तो शुने सर्वे पशु आदिकना जन्मने विषे अनंतवार थइ छे अने हजी जो परमेश्वरने नहि भजुं तो अनंत स्त्रीनी प्राप्ति थाशे माटे ए वात दुर्लभ नथी, अने भगवानने भगवानना संतनो संग तेतो महा दुर्लभ छे अने ए दुर्लभ वस्तुनी प्राप्तिने विषे ए स्त्रीज परम विघ्नरूप छे, एवुं जाणीने जे हइयामां दोषनी दृढता थइ छे तेणे करीने गमे तेवी रूपवान स्त्री देखाइ जाय तो पण विकार थाय नहि. अने वळी एने विषे अविकारी रह्यानुं बीजुं पण कारण छे, जेम जनक विदेही जेवा जे मोटा भगवानना भक्त राजा हता ते राज्यमां रह्या हता ने रमणिक एवा जे शब्दादिक पंच विषय तेने भोगवता थका पण ज्ञाननी दृढताए करीने निर्विकारपणे रह्या अने ए जनक जेवा जे ज्ञानी होय ते एम विचारे जे, हुं आत्मा छुं, शुद्ध छुं, चैतन्य छुं, निर्विकार छुं, सुखरूप छुं, अविनाशी छुं अने स्त्री आदिक जे विषय छे तेतो दुःखरूप छे, तुच्छ छे, जड छे ने नाशवंत छे, एम विचारीने केवळ पोताना आत्म स्वरूपनेज सुखरूप जाणे छे अने शब्दादिक विषयमां जे सुख जेवुं जणाय छे ने सारा जेवुं जणाय छे ते आत्मावते जणाय छे ने आत्मा देहमांथी निकळी जाय त्यारे सुखरूप होय ते भुंडुं थइ जाय छे, एवी रीते पोताना आत्माने विचारे अने आत्मा

थकी पर जे परमात्मा तेनो विचार करे छे, आवुं जे माया थकी पर शुद्ध आत्मानुं ज्ञान तेने हुं पाम्यो ते संतने प्रतापे पाम्यो छुं अने ते संत परमेश्वरना भक्त छे अने परमेश्वर छे ते तो सर्वात्मा एवा जे ब्रह्म तेना पण आत्मा छे अने अक्षरना पण आत्मा छे अने अनंतकोटी जे मुक्त तेना पण आत्मा छे, एवा जे परब्रह्म परमात्मानारायण तेनो हुं ब्रह्मरूप थवो दास छुं, अने ते भगवाननो महिमा तो एम समझे जे ।। द्युपतयएवतेनययुरंतमनंततया ।। इत्यादिक श्रुतिए भगवाननो महिमा अतिशे प्रतिपादन कर्यो छे, एवी रीते पोताना स्वरूपनुं तथा परब्रह्मना स्वरूपनुं जेने ज्ञान छे तेने गमे तेवा सुंदर विषय प्राप्त थाय पण तेणे करीने कांइ लेशमात्र पण तेनुं मन विकारने पामे नहि अने अवश्य जे शब्दादिक विषय ग्रहण कर्या जोइता होय तेने ग्रहण करे पण ते विषयने आधीन थइ जाय नहि स्वतंत्र पणे ग्रहण करे, जेम करोळियो पोतानी लाळने विस्तारीने पाछी स्वतंत्रपणे गळवी घटे त्यारे गळी ले छे तेम एवो जे ज्ञानी ते पोतानां इंद्रियोनी वृत्तिने विषयमां प्रसारीने पाछो स्वतंत्र थको संकेली ले छे अने एवो जे होय ते राज्यमां होय तो पण वनमां छे अने वनमां होय तो पण तेने राज्य करतां वधतो आनंद छे अने एवो जे ज्ञानी ते राज्यमां रह्यो होय अने हजारो मनुष्य पोतानी आज्ञामां रहेतां होय ने समृद्धिए युक्त होय तेणे करीने पोताने कांइ एम न माने जे, हुं बहु मोटो थइ गयो अने ते राज्यनो नाश थइ जाय अने हाथमां मृतिकानुं पात्र लेइने घरोघर मागी खाय तेणे करीने एम न माने जे, हुं तो हवे गरीब थइ गयो, केम जे तेतो पोताना केफमां महा अलमस्त रहे तथा तेणे पोताना स्वरूपनो तथा भगवानना स्वरूपनो महिमा जाण्यो छे ते माटे एने सोनुं, कुचो, लोढुं, पाषाण ए सर्वेने विषे समबुद्धि वर्ते छे तथा मान अपमानने विषे समबुद्धि वर्ते छे अने एवो जे ज्ञानी तेने कोइ पदार्थ बंधन करवा समर्थ नथी, केमजे एनी दृष्टि तो अति मोटी थइ गइ छे ने मायिक सर्वे पदार्थने तुच्छ जाण्यां छे, जेम कोइक पुरुष प्रथम कंगाळ होय ने पछी तेने राज्य मळे त्यारे तेनी दृष्टि मोटी थाय छे ने प्रथम लाकडाना भारा वेचतो होय तथा बीजां तुच्छ तुच्छ काम करतो होय ते सर्वे एने विसरी जाय ने मोटां मोटां राज्य संबंधी कार्य करवा लागे, तेम एवा ज्ञानीने सर्व पदार्थ मात्र तुच्छ थइ जाय छे ने एवा ज्ञानने विषे एनी विशाळ दृष्टि थाय छे अने एवी रीते जे समझ्यो छे ते सुखीयो छे.तथा जे विश्वासी होय कहेतां एम समझतो होय जे, आवा मोटा संत तथा भगवान जे वात कहे छे ते एमज छे पण एमां कांइ संशय नथी, एम समझीने ते भगवान तथा संत जेम कहे तेम करवा लागे ए बे जण सुखीया छे ने ए विना जे बीजा छे ते सुखीया नथी त्यां श्लोक छे ।। यश्च मूढतमो लोके यश्च बुद्धेः परंगतः ।। तावुभौ सुखमेधेते क्लिश्यत्यंतरितोजनः ।। तथा

भगवद्गीतामां कह्युं छे जे ॥ विषया विनिवर्त्तंते निराहारस्यदेहिनः ॥ रसवर्ज्जं रसोप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्त्तते ॥ एवी रीते जेनी अलौकिक दृष्टि थाय छे तेने परमेश्वर विना सर्वे पदार्थ तुच्छ थइ जाय छे अने आ बे श्लोक छे तेनो पण एक सरखो भाव छे. (८) ८

पछी मुक्तानंदस्वामीए श्रीजीमहाराजने कह्युं जे, हे महाराज ! हवे तमे जे प्रश्न
७ पुछता हता ते पुछो, त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (७) मायामां ते केवळ दुःख छे के सुखपण कांइक छे ? ए प्रश्न छे, पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे, माया तो केवळ दुःखदायी छे, पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, मायामांथी उपन्या एवा जे सत्त्व, रज ने तम ए त्रण गुण तेमां जे सत्त्व छे तेतो सुखरूप कहेवाय छे तथा श्रीमद्भागवतमां कह्युं छे जे ॥ सत्त्वं यद् ब्रह्मदर्शनम् ॥ तथा सत्त्वगुणनी संपत्ति ते ज्ञान, वैराग्य, विवेक, शम, दमादिक छे एवी जे माया ते केइ रीते दुःखरूप छे ? अने वळी एकादशस्कंधमां कह्युं छे जे ॥ विद्याविद्ये ममतनू विध्युद्धवशरीरिणाम् । बंधमोक्षकरी आद्ये मायया मे विनिर्मिते ॥ माटे मोक्षने करे एवी जे विद्यारूप माया ते केइ रीते दुःखदायी छे ? पछी ए प्रश्नने सांभळीने मुक्तानंदस्वामी आदिक सर्वे परमहंस बोल्या जे, हे महाराज ! एनो उत्तर अमथी थाय नहि एनो उत्तरतो कृपा करीने तमेज करो. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेम यमराजानुं जे रूप ते पापी जीवने अति भयानक विकराळ जणाय छे तथा मोटा मोटा दांत ने मोटुं मुख भयानक देखाय छे तथा काजळ जेवुं काळुं ने पर्वत जेवुं मोटुं ने काळ जेवुं भयानक एवुं दुःखरूप देखाय छे; अने पुन्यवाळा जे जीव तेने तो ते यमराजानुं रूप अतिशे सुखदायी विष्णुना जेवुं जणाय छे, तेम माया छे ते जे भगवानथी विमुख छे तेने तो अति बंधन करनारी छे ने अति दुःखदायी छे अने जे भगवानना भक्त छे तेने तो ए माया अतिशे सुखदायी छे अने मायानां कार्य जे इंद्रियो अंतःकरण ने देवता ते सर्वे भगवाननी भक्तिने अति पुष्ट करे छे, माटे भगवानना भक्तने तो माया दुःखदायी नथी परम सुखदायी छे. (९) ९

८ पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे (८) ज्यारे माया सुखदायी छे त्यारे परमेश्वरनो भक्त होय ते भगवाननी मूर्तिने हृदयमां धारीने भजन करवा बेसे छे, त्यारे एने अंतःकरणरूप माया ते संकल्प विकल्परूपे करीने केम दुःख आपे छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने भगवाननुं महात्म्य सारी पेठे समजीने अतिशे दृढ भगवाननो आश्रय होय तेने तो [illegible] माया छे ते दुःख देती नथी अने जेने एवा आश्रय मां फेर होय तेने दुःख दे छे, जेम काचो पोचो सत्संगी होय तो तेने कुसंगी होय ते डगाववानो आग्रह करे, पण जे पाको सत्संगी होय तेने डगाव्यानी कोइ लालच राखे

नहि अने तेने सांभळतां कोइ सत्संगनुं घसातुं बोली शके नहि, तेम जेने एवो परिपक्व परमेश्वरनो आशरो थयो छे तेने डगाव्यानी लालच अंतःकरणरूप माया राखे नहि अने सामी तेनी भक्तिमां पुष्टि करवा लागे; अने जेना जीवने विषे एवा आशरामां कांइ काच्यप होय तेने ए माया डगावे छे ने दुःख दे छे अने ज्यारे एनो ए जीव एवी रीते भगवाननो परिपक्व आश्रय करशे त्यारे एने डगाव्याने अर्थे ने पीडवाने अर्थे माया समर्थ नहि थाय माटे एनो उत्तर एज छे जे, जेने भगवाननो एवो परिपक्व निश्चय छे तेने कोइ रीते माया दुःख देवाने अर्थे समर्थ थातीज नथी. (१०) इति वचना-१० मृतम् ॥१०॥ (११८)

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [८] छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे असाधारण ने साधारण हेत थयाना भेद कर्मे करीने कह्या छे. (१) अने त्रण प्रकारना वेगमां जेवे वेगे वृत्ति पदार्थमां चोटे तेवुं कर्म लागे छे अने कर्मे करीने स्नेहमां त्रण प्रकार कह्या छे. [२] बीजामां इंद्रियो, मन ने जीव भळवाथी मंद मध्यम ने तीव्र वेग थाय छे ते तीव्र वेग त्रणे गुणवाळाने लागे छे. (३) त्रीजामां तीव्र वेगवाळाने रुडा देशादिक प्राप्त थाय तो अमारे विषे स्नेह थाय छे अने भुंडा देशादिकनो योग थाय तो अमारा विना बीजा पदार्थमां प्रीति थाय छे. [४] चोथामां विषम देश काळमां न रहेवुं. [५] अने हृदयमां कळि वर्ततो होय त्यारे अमारी मूर्तिने बहार धारवी. [६] पांचमामां मंद, मध्यम ने तीव्र वेग जाणवाना उपाय बताव्या छे. [७] छठ्ठामां जीने कल्याणना मार्गमां विरोधी ने दुःखदायी जाणे तेने विकार न थाय अने बीजुं पोताने आत्मारूप माने अने सर्वात्मा एवा जे ब्रह्म तथा अक्षर तथा मुक्तो ए सर्वेना आत्मा एवा परब्रह्म परमात्मा जे अमे ते अमारो महिमा जाणे तेने सर्वे पदार्थ तुच्छ थइ जाय. ते तथा विश्वासी ते सुखीया छे, ते विना सर्वे दुःखीया छे. [८] सातमामां अमारा खरा भक्तने माया परम सुखदायी छे. [९] आठमामां अमारो अतिशे दृढ आशरो होय तेने अंतःकरणरूप माया दुःख देवा समर्थ नथी ने एवा आशरामां फेर होय तेने दुःख दे छे. [१०] बाबतो छे.

१ प्र० [४/५ चोथा प्रश्नमां] हृदयमां कळि वर्ततो होय त्यारे श्रीजीमहाराजनी मूर्ति नेत्र आगळ धारवी अने बहार कळि वर्ततो होय त्यारे अन्य स्थळमां भागी जावुं एम कह्युं ते अन्य स्थळ कियुं जाणवुं ?

१ उ० मारकुट थती होय अथवा निराकारवादी, कर्मवादी, शक्तिपंथी तथा कुंडा पंथी एवा दुष्ट जनो रहेता होय ते स्थळ कह्युं छे त्यांथी बीजे ठेकाणे जतुं रहेवुं पण ते स्थळमां न रहेवुं.

२ प्र० [६/८ छठ्ठा प्रश्नमां] श्रीजीमहाराजे सर्वात्मा ब्रह्म, अक्षर तथा अनंतकोटी मुक्तोना आत्मा पोताने कह्या ते सर्वात्मा ब्रह्म कोने जाणवा अने अक्षर कोने जाणवा ? अने मुक्त कोने जाणवा ?

२ छ० श्रीजीमहाराजनुं तेज अनंत मूळअक्षरादिक सर्वेनुं आत्मा छे तेने आ ठेकाणे सर्वात्मब्रह्म कह्या छे. अने ए तेजमां रह्या जे श्रीजीमहाराजना साधर्म्यपणाने पामेला मुक्तो तेमने मुक्त कह्या छे. अने तेथी ओरा श्रीजीमहाराजना प्रकाशरूप ब्रह्मज्योतिनी किरणोमां मूळअक्षरनी कोटियो रही छे तेने अक्षर कह्या छे ते अक्षरना आत्मा पोताना तेज द्वारे छे. अने मुक्तोना तथा ए तेजना आत्मा मूर्तिमान पोते छे. ॥११८॥

संवत् १८७७ ना मागशर वदि ८ आठमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजीमहाराज गाम श्री लोया मध्ये सुराखाचरना दरबारमां प्रातःकाळने समे विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१　पछी श्रीजीमहाराजने शुकमुनिए प्रश्न पुछ्यो जे, (१) श्रीमद्भागवत् तथा भगवद्गीता ए आदिक जे सत्शास्त्र ते थकी असत्पुरुष जे ते केवी समझणनुं ग्रहण करे छे? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एनो उत्तर करीए छइए जे असत्पुरुषनी एम समझण छे जे, आ विश्वने विषे स्थावर जंगम रूप एवी जे स्त्री पुरुषनी सर्वे आकृतियो ते जे ते विराट्रूप एवा जे आदि पुरुष नारायण ते थकी मायाए करीने उपजी छे, माटे ए सर्वे आकृतियो ते नारायणनीज छे, ते सारु जे मुमुक्षु कल्याणने इच्छतो होय तेने प्रथम पोतानुं मन वश करवुं ते मन जे ते स्त्रियो तथा पुरुषरूप एवी उत्तम नीच जे जे आकृतियो तेने विषे आसक्त थाय त्यारे तेने तेज आकृतिनुं मनने विषे ध्यान करवुं तो एने सद्यसमाधि थाय;अने ते आकृतिने विषे जो मन दोषने कल्पे तो तेमां ब्रह्मनी भावना लाववी जे समग्र जगत् ते ब्रह्म छे एम विचार करीने ते संकल्पने खोटो करवो, एवी रीते जे सत्शास्त्रमांथी अनुभवनुं ग्रहण करवुं ते असत्पुरुषनी समझण्य छे, अने एम समझवुं ए एना मननो अति दुष्ट भाव छे अने एनुं फळ अंतकाळे घोरतम नरक छे ने संसृति छे. (१)　१

२　त्यारे वळी श्रीजीमहाराजने शुकमुनिए प्रश्न कर्यो जे, [२] ए सत्शास्त्र थकी सत्पुरुष जे ते केवी समझणनुं ग्रहण करे छे ते कहो ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ए सत्शास्त्रने विषेज ए प्रश्ननो उत्तर कर्यो छे जे, एक पुरुषोत्तम नारायण विना बीजा जे शिव ब्रह्मादिक देवता तेनुं ध्यान जे मोक्षने इच्छतो होय तेने करवुं नहि अने मनुष्यने विषे तथा देवताने विषे जे पुरुषोत्तमनारायणनी रामकृष्णादिकमूर्तियो तेनुं ध्यान करवुं ने तेने विषे पण जे डाह्या छे ते जे ते जे स्थानकमां ए रामकृष्णादिक भगवाननी मनुष्यरूप मूर्तियो रही छे ते स्थानकने विषे वैकुंठ, गोलोक, श्वेतद्वीप, ब्रह्मपुर ए लोकनी भावना करे छे अने ते लोकोने विषे रह्या जे पार्षद तेनी भावना रामकृष्णादिकना पार्षद जे हनुमान उद्धवादिक तेने विषे करे छे अने कोटी कोटी सूर्य, चंद्रमा,

अग्नि तेना प्रकाश जेवी प्रकाशमान एवी ते लोकोने विषे रही जे पुरुषोत्तम नारायणनी दिव्य मूर्तियो तेनी भावना ते रामकृष्णादिकने विषे करे छे, एवी रीते जे सत्शास्त्र थकी समजणनुं ग्रहण करीने दिव्यभावे सहित मनुष्यरूप भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान करे छे तेने भगवानना अवतारनी जे मूर्तियो तथा ते विनाना जे अन्य आकार ते बेयने विषे समपणुं थायज नहि. (२) अने भगवानना अवतारनी जे मूर्तियो ते छे ते द्विभुज २
अने तेने विषे चार भुजानी भावना अष्ट भुजानी भावना कही छे ते पण भगवाननी मूर्ति ने ते विनाना अन्य आकार ते बेमां जे अविवेकी पुरुषने समभाव थाय छे तेनी निवृत्तिने अर्थे कही छे. (३) अने जेवी भगवाननी मूर्ति पोताने मळी होय तेनुंज ध्यान ३
करवुं अने पूर्वे भगवानना अवतार थइ गया ते मूर्तिनुं ध्यान न करवुं अने पोताने भगवाननी जे मूर्ति मळी होय तेने विषेज पतिव्रतानी पेठे टेक राखवी, जेम पार्वतीए कयुं छे जे 'कोटी जन्म लगरगड हमारी वरुं शंभु के रहुं कुमारी' एवी रीते पतिव्रतापणानी टेक ते पण भगवाननुं रूप ने अन्य जीवनुं रूप ते बेने विषे अविवेकी पुरुषने समभाव थाय छे तेनी निवृत्तिने अर्थे कही छे, केमजे पोताने मळी जे मूर्ति तेने मुकीने तेनाज परोक्ष अवतार थया छे तेनुं जो ध्यान करे तो ते भगवान विना बीजा जे देव मनुष्यादिक आकार छे तेनुं पण ध्यान करे माटे पतिव्रताना जेवी टेक कही छे पण भगवाननी मूर्तियोने विषे भेद नथी, आवी रीते सत्पुरुषनी समजण छे. (४) माटे ४
सत्शास्त्रनुं श्रवण करवुं ते सत्पुरुषथकीज करवुं पण असत्पुरुष थकी सत्शास्त्रनुं कोइ दिवस श्रवण करवुं नहि. [५] इति वचनामृतम्. ॥११॥ (११९) ५

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, सत्शास्त्र थकी अवळुं समजे ते असत्पुरुष छे ने अति दुष्ट छे ने एनुं फळ घोरतम नरकने संसृति छे. (१) बीजामां जे जे स्थानोमां जे जे अवतारोनी मुर्तियो मनुष्यरूपे रही होय ते ते स्थानोने ते ते अवतारोनां धाम जाणवां एटले वैकुंठनाथनी मुर्ति जे स्थानमां मनुष्यरूपे विराजती होय ते स्थानने वैकुंठतुल्य जाणवुं अने तेना पार्षदोने वैकुंठना पार्षदो तुल्य जाणवा अने ते मुर्तिने जेवी वैकुंठमां छे तेवी जाणवी, तेमज गोलोकवासीनी मुर्ति जे स्थानमां मनुष्यरूपे देखाती होय ते स्थानने गोलोक तुल्य जाणवुं अने ते मुर्तिने गोलोकमां छे तेवी जाणवी अने तेना पार्षदोने गोलोकना पार्षदो तुल्य जाणवा, तेमज अक्षरधामवासी अमे छुपैया धामने विषे प्रगट थइने मनुष्यरूपे देखाया छीए, माटे अमे जेवा अक्षरधाममां छीए तेवा जाणवा पण कांइ फेर जाणवो नहि, अने प्रथम आविर्भाव स्थान एवुं जे छुपैयापुर ते तो अक्षरधामज छे तेमां तो शुं कहेवुं ? पण बीजां जे जे स्थानोमां अमे विचर्या ते ते स्थानोने पण अक्षरधाम तुल्य जाणवां अने अमारा भक्तोने अक्षरधाममां मुक्तो छे तेवा जाणवा. (२) अने अमारा अवतारनी मुर्तियो द्विभुज छे अने

जे चतुर्भुज अष्टभुजनी भावना कही छे ते तो मनुष्यरूप मुर्तिने विषे अने अन्य आकारोने विषे अविवेकी मनुष्योने समभाव न थाय माटे कही छे. (३) अने तमने मळ्या जे अमे ते तमारे अमारी मुर्तिनुं ध्यान करवुं पण बीजा अमारा अवतारो थइ गया तेमनुं ध्यान करवुं नहि. (४) अने सतशास्त्रनुं श्रवण सत्पुरुष थकीज करवुं पण असत्पुरुषथकी न करवुं. [५] बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां सर्वे आकृतियो नारायण थकीज थइ छे तेने विषे ब्रह्मनी भावना लावीने ते आकृतिनुं ध्यान करे तेने श्रीजीमहाराजे असत्पुरुष कह्या ने अति दुष्ट कह्या ने एने घोरतम नरकने संसृतिनी प्राप्ति कही ते एमां एवुं शुं दूषण आव्युं ते एने असत्पुरुष कह्या ?

१ उ० पोताना देहने दिव्य मानीने अथवा बीजा कोइकने दिव्य मानीने ध्यान करे तो ते देह तो मायानो छे ते कांइ दिव्य मानवे करीने दिव्य थइ जातो नथी, जेम कोडी होय तेने कोडी छेज नहि होंगे छे एम मानवाथी कोडीनो होंगे थतो नथी, तेम मायाना तत्त्वनो बंधायेलो जड देह छे तेने दिव्य मानवाथी दिव्य थइ जाय नहि, माटे एवी समजणवाळो नरकेज जाय ने जन्म मृत्युने वारंवार पामे पण तेनुं कल्याण कोटी कल्पे थाय नहि, माटे आ देह तो मायिक ने जड छे तेने दिव्य न मानवो.

२ प्र० आ देहनो ज्ञाने करीने प्रलय करी नाखे जे देह छेज नहि पुरुषोत्तमज छे तो जेम पृथ्वी आदिक चार भूत ते प्रलय समे आकाशरूप थइ जाय छे तेम आ देह पुरुषोत्तम रूप थाय के नहि ?

२ उ० पृथ्वी, जळ, तेज, वायु ने आकाश ते सजाति छे ने मायानां छे ते एक बीजामां प्रलय समे मळी जाय छे अने पुरुषोत्तम तो दिव्य छे माटे विजाती छे ते विजाति एवा जे पुरुषोत्तम तेमने विषे देह लीन थइ जाय नहि, माटे एवी रीते समजनारानो अति दुष्ट भाव छे अने ते भूलो पड्यो छे माटे देहने दिव्य मानवो नहि.

३ प्र० (३/१ बीजा प्रश्नमां) श्रीजीमहाराजे बीजा अवतारोनुं ध्यान करवानी ना पाडी अने आ तमने मळी जे मुर्ति तेनुं ध्यान करवुं एम कह्युं ते ज्यारे श्रीजीमहाराजे वात करी त्यारे तो श्रीजीमहाराजनी मुर्ति मळी हती पण ए मनुष्यरूप मुर्ति आजतो दष्टिगोचर नथी माटे आज कइ मुर्ति जाणवी ?

३ उ० जे मुर्ति मनुष्यरूपे हती तेज मुर्ति आज प्रतिमारूपे छे माटे प्रतिमानुं ध्यान करवुं. आनो विशेष विस्तार (प्र० १४ना पांचमा प्रश्नोत्तरमां तथा ५९ ना पहेला प्रश्नोत्तरमां)छे.

४ प्र० श्रीजीमहाराजनुं ध्यान केवी रीते करवुं ?

४ उ० पोताने श्रीजीमहाराजनुं तेज जे अक्षरधाम ते रूप मानीने ते तेजमां मुर्ति धारवी ते परम एकांतिकनी स्थिति पामवानुं ध्यान छे; अने श्रीजीमहाराजनी मुर्तिमां रहीने श्रीजीमहाराजनी मुर्तिने धारे ते अनादि मुक्तनी स्थिति पामवानुं ध्यान छे.

५ प्र० पार्वतीनी पेठे टेक राखवी एम कह्युं ते परोक्ष अवतारोने विषे एवी टेक राखी होय

ते श्रीजीमहाराजने विषे पतिव्रतापणुं करे तो तेने खोट्य आवे के लाभ मळे ?

५ उ० श्रेष्ठ इष्टदेव मळे तो न्यून इष्टदेवनी उपासना मुकी दइने श्रेष्ठ इष्टदेवनी उपासना करवी ने तेमां पतिव्रतापणानी टेक राखवी तेमां तो लाभ छे. आमां एम समजवानुं छे जे,पार्वतीए जेम पतिव्रतापणुं न मुक्युं तो अमे तो सर्वोपरि मळया छीए तो अमारे विषे तो अति दृढ पतिव्रतापणुं राखवुंज एम सुचव्युं छे.॥११९॥

संवत् १८७७ ना मागशर वदि ९ नवमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज गाम श्री लोया मध्ये सुराभक्तना दरबारमां रात्रिने समे विराजमान हता ने गरम पोसनी राती डगली पहेरी हती ने बीजां सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी सभा तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे प्रश्न कर्यो जे, (१) भगवाननो निश्चय बे प्रकारनो छे एक सविकल्प ने बीजो निर्विकल्प ने ते बेयां पण उत्तम, मध्यम ने कनिष्ठ ए त्रण प्रकारना भेद छे ते बे मळीने छो भेद थया तेनां लक्षण पृथक् पृथक् करीने कहो ? पछी तेनो उत्तर परमहंस वते थयो नहि त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, सविकल्प निश्चयमां कनिष्ठ भेद तो ए जे, भगवान जे ते अन्य मनुष्यनी बरोबर काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, मान ए आदिकने विषे प्रवर्ते त्यां सुधी तो भगवाननो निश्चय रहे पण जो वधारो करे तो न रहे, अने मध्यम भेद तो ए जे, मनुष्य थकी बमणा कामादिकने विषे अधिक प्रवर्ते त्यां सुधी पण निश्चय रहे, अने उत्तम भेद तो ए जे, भगवान गमे तेवुं नीच जातिनी पेठे आचरण करे तथा मद्य, मांस, परस्त्री, क्रोध, हिंसा इत्यादिक गमे तेवुं आचरण करे तोपण संशय थाय नहि, केमजे ए भक्त भगवानने एम जाणे छे जे, भगवान तो सर्वना कर्त्ता छे ने परमेश्वर छे ने सर्वना भोक्ता छे माटे जे जे क्रिया प्रवर्त्ते छे ते अन्वयपणे नियंता रूपे करीने सर्वने विषे रह्या जे भगवान ते थकीज प्रवर्त्ते छे, तो ए तो कांइक थोडीक एवी नीच जेवी क्रिया करी तेणे करीने कांइ बाध नथी, केमजे ए तो सर्व कर्त्ता छे, एवी रीते भगवानने विषे सर्वेश्वरपणुं जाणे माटे एने उत्तम सविकल्प निश्चयवाळो भगवद्भक्त कहीए. अने हवे निर्विकल्पमां कनिष्ठ भक्त कियो तो भगवानने सर्व शुभ अशुभ क्रिया करतां देखे तो पण एम समझे जे, सर्व क्रियाने करे छे तो पण अकर्त्ता छे, केमजे ए भगवान तो ब्रह्मरूप छे ते ब्रह्म केवुं छे तो आकाशनी पेठे सर्वने विषे रह्युं छे ने सर्वनी क्रियाओ तेने विषेज थाय छे एवुं जे ब्रह्मपणुं ते भगवानने विषे जाणे, जेम रासपंचाध्यायीमां शुकजी प्रत्ये परीक्षित् राजाए प्रश्न पुछयो जे, धर्मरक्षक भगवाननो अवतार तेणे परदारानो संग केम कर्यो ? त्यारे

तेनो उत्तर शुकजीए कर्यो जे, श्रीकृष्ण तो अग्निनी पेठे तेजस्वी छे ते जे जे शुभ अशुभ क्रियाने करे छे ते सर्वे भस्म थइ जाय छे, एवी रीते भगवानने निर्लेप एवा ब्रह्मरूप जाणे तेने कनिष्ट निर्विकल्प निश्चयवाळो कहीए, अने श्वेतद्वीपने विषे रह्या जे षड्ऊर्मिए रहित एवा निरन्नमुक्त ते जेवो पोते थइने वासुदेवनी उपासना करे तेने मध्यम निर्विकल्प निश्चयवाळो कहीए, अने अष्टावरणे युक्त एवां जे कोटी कोटी ब्रह्मांड ते जे अक्षरने विषे अणुनी पेठे जणाय छे एवुं जे पुरुषोत्तमनारायणनुं धामरूप अक्षर तेने विषे रह्यो थको पुरुषोत्तमनी उपासना करे तेने उत्तम निर्विकल्प निश्चयवाळो कहीए. (१) १

२ त्यारे चैतन्यानंदस्वामीए पुछयुं जे, [२] हे महाराज ! एवी रीते निश्चयना भेद ते शाणे करीने थया छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ज्यारे मुमुक्षु प्रथम गुरु पासे आवे त्यारे वक्ता जे गुरु तेने विषे देश,काळ, संग, दीक्षा, क्रिया, मंत्र शास्त्रादिकनुं जे शुभ अशुभपणुं तथा पोतानी जे श्रद्धा तेनुं जे मंद तीक्ष्णपणुं तेणे करीने एवा भेद पडी जाय छे, माटे सारा देशादिकने सेववा तथा वक्ता पण सुधो शान्त होय ने तेमां कोइ दोष न होय ते समे ते थकी ज्ञान सांभळवुं. (२) २

३ त्यारे वळी चैतन्यानंदस्वामीए पुछयुं जे, (३) कदाचित् कोइक योगे करीने कनिष्ट निश्चय थयो होय तेने पाछो वळी उत्कृष्ट निश्चय थाय के नहि ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जो श्रोताने उत्कृष्ट श्रद्धा उपजे तथा रुडा देशादिक प्राप्त थाय तथा उत्कृष्ट ज्ञानवाळो वक्ता मळे तो सर्वोत्कृष्ट निश्चय थाय, नहि तो जन्मांतरे करीने उत्कृष्ट निश्चयने पामे. [३] इतिवचनामृतम्. ॥१२॥ (१३०) ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (३) छे तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे सविकल्प ने निर्विकल्प निश्चयना उत्तम, मध्यम ने कनिष्ट भेदनां लक्षण कह्यां छे. (१) बीजामां वक्ताने विषे देशादिकनुं शुभ अशुभपणुं अने श्रोताने विषे आस्तानुं मंदतीक्ष्णपणुं तेणे करीने निश्चयना भेद पडे छे. (२) त्रीजामां उत्कृष्ट ज्ञानवाळो वक्ता तथा रुडा देशादिक होय तथा श्रोताने उत्कृष्ट श्रद्धा होय तो सर्वोत्कृष्ट निश्चय थाय एम कह्युं छे. (३) बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां छ प्रकारनो निश्चय कह्यो ते छ प्रकारना निश्चयवाळा श्रीजीमहाराजने केवा जाणता हशे ?

१ उ० विष्णु तथा वैराजना जेवा श्रीजीमहाराजने जाणीने भजे तेने सविकल्पमां कनिष्ट जाणवा. (१) अने अनिरुद्ध, प्रद्युम्न, संकर्षण ने महत्तत्त्व जेवा जाणीने श्रीजीमहाराजने भजे तेने सविकल्पमां मध्यम जाणवा. (२) अने प्रधानपुरुष जेवा जाणीने श्रीजीमहाराजने भजे तेने सविकल्पमां उत्तम जाणवा. (३) अने मूळपुरुष तथा नरनारायण जेवा जाणीने श्रीजीमहाराजने भजे तेने निर्विकल्पमां कनिष्ट जाणवा [४] अने वासुदेव तथा मूळअक्षर जेवा जाणीने भजे तेने निर्विकल्पमां मध्यम जाणवा. (५) अने श्रीजीमहाराजना तेजरूप जे अक्षरधाम तेने विषे

रह्यो थको श्रीजीमहाराजनी उपासना करे तेने निर्विकल्पमां उत्तम जाणवा. (६) आ उत्तम निर्विकल्प निश्चयवाळा ते सिद्धदशावाळा परमएकांतिक मुक्त जाणवा अने जे श्रीजीमहाराजनी मुर्तिमां सळंग रह्या थका मुर्तिनां रोम रोमनां नवीन नवीन सुख भोक्ता एवा जे अनादिमुक्त तेमने निर्विकल्पमां अति उत्तम निश्चयवाळा जाणवा.

२ प्र० उत्तम निर्विकल्प निश्चयवाळा पोते धामरूप थइने धाममां रहीने उपासना करे त्यारे मध्यम ने कनिष्ठ निश्चयवाळा पोतानुं स्वरूप केवुं समजता हशे ?

२ उ० मध्यम निश्चयवाळा श्रीजीमहाराजने वासुदेव तथा मूळअक्षर जेवा जाणे तेथी तेमना तेजरूप जे अक्षरब्रह्म ते रूप पोताने माने अने कनिष्ठ निश्चयवाळा श्रीजीमहाराजने मूळ-पुरुष तथा नरनारायण जेवा जाणे तेथी तेमना तेजरूप पोताने माने. तेमना तेजने पूर्वे शास्त्रोमां तथा वेद तथा उपनिषदोमां ब्रह्म तथा अक्षर शब्दे करीने कहेल छे ते रूप माने तेणे करीने निश्चयमां न्यूनता रहे छे, कारण के श्रीजीमहाराजना नखनी कान्तिमां अनंत मूळ अक्षरोनुं तथा वासुदेव ब्रह्मनुं तेज लीन थइ जाय छे अने अक्षर तथा वासुदेवना किंचित् तेजमां नरनारायण तथा मूळपुरुषोनां तेज लीन थइ जाय छे, आ तेजना भेद (लो० १५ ना पांचमा प्रश्नमां) कह्या छे तेने श्रीजीमहाराजना परम एकांतिक तथा अनादि देखे छे ने जेना उपर एवा मुक्तनी कृपा थाय ते पण जाणे ने देखे.

३ प्र० अक्षरधामने विषे अष्टावरणे युक्त कोटी कोटी ब्रह्मांड अणुनी पेठे जणाय छे एम कह्युं ते ब्रह्मांड तो मूळपुरुषना तेजरूप अक्षरब्रह्ममां रह्यां छे अने अक्षरधाममां रह्यां छे एम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

३ उ० अक्षरकोटी, ब्रह्मकोटी, पुरुषकोटी ए सर्वेनुं आधार श्रीजीमहाराजनुं तेज छे, माटे मूळपुरुषना तेजमां रह्यां होय तो पण श्रीजीमहाराजना तेजमां रह्यां छे एम कहेवाय, केमजे सर्वाधार तो श्रीजीमहाराजनुं तेज छे, माटे सुझे तेने विषे रह्यां होय तो पण सर्वाधारने विषेज रह्यां छे एम कहेवाय.

४ प्र० बीजा प्रश्नमां वक्ताने विषे देश, काळ, दीक्षा, क्रिया, मंत्र, शास्त्रादिकनुं शुभ अशुभपणुं कह्युं ते केवी रीते जाणवुं ?

४ उ० जे देशमां भगवानना अवतार प्रगट थता होय तथा ते अवतारो जे देशमां विचरता होय ने प्रगट भगवाननी उपासनावाळा सत्पुरुष रहेता होय ने स्वधर्मनिष्ठजनो रहेता होय ते शुभ देश जाणवो. (१) अने जे स्थानमां कोइ प्रकारना रोगादिकनी प्रवृत्ति न होय तथा मारकुट न थती होय तथा अधर्मी माणसनो प्रसंग न होय ते शुभ काळ जाणवो. (२) अने वक्ता पण श्रीजीमहाराजना सर्वोपरि निश्चयवाळा अने पंचवर्त्तमानेयुक्त ने श्रीजीमहाराजने विषे प्रीतिवाळा मुक्तनो योग करीने तेवा गुण सिद्ध करेला होय ते शुभ संग जाणवो. (३) अने उद्धवसंप्रदायनी दीक्षा होय ते शुभ दीक्षा जाणवी. (४) अने कथा, वार्त्ता, ध्यान, भजन, भक्ति, सेवा, नियम, धर्म, आदिक क्रिया श्रीजीमहाराज संबंधी होय ते शुभ क्रिया जाणवी. [५] अने श्रीजीमहाराजना तेजरूप पोताने मानीने

स्वामिनारायण नामनो मंत्र जपतो होय ते शुभ मंत्र जाणवो. (६) अने जेमां श्रीजीमहाराज तथा एमना मुक्तोना स्वरूपनुं ज्ञान तथा दिव्य साकारपणुं तथा महिमा तथा चरित्र लीला वर्णन करेलां होय तेवां शास्त्रने शुभ शास्त्र जाणवां. (७) अने पोताने श्रीजीमहाराजना तेजरूप मानीने श्रीजीमहाराजनुं ध्यान करवुं तथा श्रीजीमहाराजनी मुर्तिमां एकता करीने श्रीजीमहाराजनुं ध्यान करवुं ते शुभ ध्यान जाणवुं. (८) आ कह्या ते सर्वे शुभ देशकाळादिक जाणवा.तेवा देशादिक जे गुरुमां होय तेना संगथी उत्कृष्ट निश्चय थाय छे.॥१२०॥

संवत् १८७७ ना मागशर वदि १० दशमने दिवस प्रातःकाळने समे श्रीजीमहाराज गाम श्रीलोया मध्ये सुराखाचरना दरबारमां ढोलिया उपर विराजमान हता अने धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने बीजा धोळा फेंटानी बोकानी वाळी हती ने गरम पोसनी राती डगली पहेरी हती ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने चोफाळ ओढयो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी सभा तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराजे कह्युं जे मोटेरा मोटेरा परमहंस परस्पर प्रश्न उत्तर करो.
१ त्यारे गोपाळानंदस्वामीए ब्रह्मानंदस्वामीने प्रश्न पुछयो जे, [१] केवो पुरुष होय तेने देश, काळ, क्रिया, संगादिके करीने पराभव न थाय ? ने केवो होय तेने थाय ? अने सांभळवामां तो एम आवे छे जे ब्रह्माने पण सरस्वतीने देखीने मोह थयो ने शिवजीने पण मोहनीने दर्शने करीने मोह थयो माटे विचारीने उत्तर करो, केमजे एवा मोटाने पण देशकाळादिके करीने पराभव थयो छे. पछी तेनो उत्तर ब्रह्मानंदस्वामीए करवा मांडयो पण थयो नहि त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एनो तो उत्तर ए छे जे नाडी प्राण संकेलाइने निर्विकल्प स्थितिए करीने श्रीनारायणना चरणारविंदमां रह्यो होय तो तुच्छ जेवो जीव होय तेने पण देश, काळ, संगादिके करीने पराभव न थाय ने एवी रीते ब्रह्मादिक रह्या होय तो तेने पण पराभव न थाय, अने एवी रीते स्थिति न थइ होय ने देहमां वर्तता होय तो बीजा जीवने पराभव थाय ने एवा मोटा जे ब्रह्मादिक तेने पण थाय अने एम न होय तो ॥ तत्रृष्टस्त्रष्टस्त्रष्टेषु कोन्व खंडितधीः पुमान् । ऋषिंनारायणमृतेयोषिन्मय्येह मायया ॥ ए श्लोकनो अर्थ ठीक बेसे नहिं, माटे एने विषे रह्या थका तो एक नारायण ऋषिने पराभव न थाय ने बीजो तो गमे एवो मोटो होय ने ते जो नारायणना चरणारविंदने विषे निमग्न न रहे तो तेने पराभव थाय अने जो निमग्न रहे तो न थाय, एवी रीते अमे अमारा अंतरमां अचळ सिद्धांत करी राख्यो छे अने ते भागवत्मां कह्युं छे जे ॥ एतदीशनमीशस्य प्रकृतिस्थापितद्गुणैः ॥ नयुज्यते सदात्मस्थैर्यथाबुद्धिस्तदाश्रया ॥ तथा भगवाने कह्युं

छे जे ॥ दैवीह्येषागुणमयी ममममायादुरत्यया । मामेव ये प्रपद्यंते मायामेतांतरंतिते ॥ एवी रीते मायाए करीने निर्लेपपणुं ते एक नारायणनेज छे अथवा ते नारायणने निर्विकल्प पणे पाम्यो होय तेने पण पराभव न थाय अने सविकल्पपणे जो नारायणने पाम्यो होय तो ते गमे तेवो मोटो होय तेने पण पराभव थाय. (१) १

२ अने त्यार पछी नित्यानंदस्वामीए प्रश्न पुछयो जे, (२) हे महाराज ! ज्यां सुधी ए मुमुक्षुने गुणनो संबंध छे त्यां सुधी तो तेने देशकाळादिके करीने विपर्ययपणुं थाय अने नारायण छे ते तो गुणमां रह्या थका देशकाळादिके करीने पराभवने न पामे ए तो ठीक, पण ज्यारे सर्वे मुक्तने गुणनो संबंध न होय ने निर्गुणपणे करीने अक्षरधामने विषे रह्या होय अने नारायण पण त्यां तेवीज रीते रह्या होय ते वारे ए सर्वे चैतन्यमय छे ने निर्गुण छे ने ॥ ममसाधर्म्यमागताः ॥ एवी रीते नारायणना साधर्म्यपणाने पाम्या छे एवा जे मुक्त अने नारायण तेमने विषे केम भेद समजवो ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेम चंद्रमा छे ने तारा छे तेमां भेद छे के नहि ? जुवो ने प्रकाशपणे करीने सरखा नथी अने बिंबमां पण घणो भेद छे अने सर्व औषधीनुं पोषण ते पण चंद्रमा वतेज थाय पण बीजे तारे न थाय अने रात्रिनो अंधकार ते पण चंद्रमाए करीने टळे पण ताराए करीने टळे नहि, तेम नारायण तथा मुक्तोमां भेद छे अने वळी जेम राजाने राजाना चाकर ते मनुष्य जातिए करीने सरखा छे पण राजानुं सामर्थ्य, ऐश्वर्य, रूप, लावण्यता ते सर्वोपरि छे अने जे राजावते थाय ते चाकर वते थाय नहि मुझे एवडो मोटो होय तोपण न थाय, तेम पुरुषोत्तम नारायण ते सर्वकर्त्ता छे, सर्वकारण छे, सर्वनियंता छे अने अति रूपवान छे, अति तेजस्वी छे अने अति समर्थ छे ने कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं छे ते जो पोतानी इच्छामां आवे तो ए अक्षरधामने विषे रह्या जे मुक्त ते सर्वेने पोताना तेजने विषे लीन करीने पोते एकज विराजमान रहे ने मुझे तो ए सर्व मुक्त तेमणे सेव्या थका एमनी भक्तिने अंगीकार करे ने ए सोता विराजमान रहे अने जे अक्षरधामने विषे पोते रह्या छे ते अक्षरने पण लीन करीने पोते स्वराट्थका एकलाज विराजमान रहे अने पोताने मनमां आवे तो ए अक्षरधाम विना पण अनंतकोटी मुक्तोने पोताने ऐश्वर्ये करीने धारवाने समर्थ छे. जेम पृथु भगवाने पृथ्वीने कह्युं जे, मारा धनुषथकी निसर्या जे बाण तेणे करीने तने मारीने मारा सामर्थ्ये करीने आ सर्व जगतने धारवाने हुं समर्थ छुं, तेम ए नारायण पोताने ऐश्वर्ये करीने सर्वोपरि वर्त्ते छे ते एने ने बीजा अक्षरादिक मुक्तोने सरखा कहे छे ते दुष्टमतवाळा जाणवा ने तेने अति पापी जाणवा अने एनां दर्शन पण करवां नहि ने एवी रीतनी समजणवाळानां दर्शन करीए तो पंचमहापाप जेवुं पाप थाय अने ए नारायणने लइने

तो जेने विषे मोट्यप कहीए तेने विषे संभवे अने एने लइने विश्नु,ब्रह्मा,शिव,नारद,सनकादिक ए सर्वेने भगवान कहेवाय छे अने उद्धवजीने विषे ए नारायणने लइने उद्धवने भगवान कहेवाय अने हमणां आ मुक्तानंदस्वामी जेवा संतने विषे ए नारायणने लइए तो एमने पण भगवान जेवा कहेवाय अने ए नारायणने लीधा विना तो अक्षरने पण भगवान न कहेवाय तो बीजानी शी वार्त्ता कहेवी ? अने ॥ अपरिमिताध्रुवास्तनुभृतो यदि सर्वगताः ॥ ए वेदस्तुतिना गद्यनो पण एज अर्थ छे अने जो एम न होय तो आ आपण सर्वे छइए ते आ देहथकी नोखो जे आत्मा तेने ब्रह्मरूप जाणीए छइए अने ज्ञानवैराग्यादिक साधनेयुक्त छइए तो पण ए नारायणने प्रसन्न करवाने अर्थे रातदिवस उजागरा करीए छइए ने कीर्त्तन नाम स्मरण ते ताळियो वजाडी वजाडीने हाथनी आंगळीयो फाटी जाय एम करीए छइए तथा कथा वार्ता रातदिवस करीए करावीए छइए ते जो ए नारायण सरखा थइ जवातुं होय तो एवडो दाखडो शुं करवा करीए ? माटे ए नारायण जेवा तो एक नारायणज छे पण बीजो कोइए जेवो थातो नथी अने ॥ एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म ॥ ए श्रुतिनो पण एज अर्थ छे जे, ए नारायण जेवा तो एक नारायणज छे एम सर्व शास्त्रनो सिद्धांत छे, एवी रीते भक्तजननी शिक्षाने अर्थे श्रीजी-महाराजे वार्ता करी ने पोते तो साक्षात् पुरुषोत्तम नारायण छे.(२) इति व०॥१३॥(१२१) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे, तेमां पहेलामां अमारे विषे निमग्न रहे तेने देशकाळादिक पराभव पमाडी शके नहि ने देहमां वर्त्ते एवा मुमुक्षुने देशकाळादिक पराभव पमाडे. बीजामां जेम आकाशमां तारा ने चंद्र रह्या छे तेम अमारा तेजरूप अक्षर-धामनेविषे अमे चंद्रने ठेकाणे छीए अने ताराने ठेकाणे अमारा मुक्त छे एवी रीते अमारे विषे ने अमारा मुक्तने विषे भेद छे अने जेम राजाने राजाना चाकरोमां भेद छे तेम अमारे विषे ने अक्षरादिक अवतारोने विषे भेद छे, अने अमारा तेजरूप अक्षरधामने विषे अमारा समीपमां अमारा मुक्त रह्या छे तेमने ए अक्षरधामरूप जे अमारुं तेज तेने विषे लीन करीए, अर्थात् ए मुक्त एक बीजाने देखे नहि एवी विस्मृति करावीए ते अमारुं कर्त्तापणुं छे. अने ए अमारा तेजरूप धामने विषे मुक्तनी सेवाने अंगीकार करीए अर्थात् सेवकने आधीनपणानो भाव जणावीए ते अमारुं अकर्त्तापणुं छे. अने ए अमारा तेजने पण अमारे विषे लीन करीने स्वराट् थका रहीए अने ए अमारा तेजमां रहेला मुक्तोने अमारा ऐश्वर्यवडे धारण करीए अर्थात् अमारी मुर्तिमां राखीए ते अमारुं अन्य-थाकर्त्तापणुं छे. अने अमने ने अमारा अक्षरादिक अवतारोने तथा अमारा साधर्म्यपणाने पामेला अमारा मुक्तोने पण सरखा कहे ते दुष्ट मतवाळाने अति पापी छे ने तेनां दर्शन पण करवां नहि, अने अमारी सत्ताना प्रभाववडे करीने मूळअक्षरादिकथी लइने विश्नु पर्यंत सर्वेने भगवान कहेवाय छे, अने अमने लइने आ मुक्तानंदस्वामिने तो भगवान जेवा एटले जेवा अमे छीए तेवाज कहेतां अमारा तुल्य कहेवाय अने अक्षर पर्यंत कोइ अमारा

जेवो थवा समर्थ नथी अमे एकज भगवान छीए एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे (२) वातनो छे.

१ प्र० अमारे विषे निमग्न रहे तो तुच्छ जेवो जीव होय ते पण पराभव न पामे एम कह्युं ते जे श्रीजीमहाराजने विषे निमग्न रहे तेने तुच्छ केम कहेवाय ?

१ उ० आ लोकमां साधनकाळमां मायाबद्ध जीव होय तेने आ लोकनी अपेक्षाए तुच्छ कहेवाय पण ते जीवने श्रीजीमहाराज अथवा सत्पुरुष मळे तेमना समागमे करीने श्रीजीमहाराजनो यथार्थ महिमा जाणीने श्रीजीमहाराजने ध्याने करीने मूर्तिने विषे निमग्न रहे तेने पराभव न थाय माटे आ लोकनी अपेक्षाए तुच्छ कह्या छे अने आ लोकनी अपेक्षाए अधिकारने लइने ब्रह्मादिकनी मोटप कहेवाय.

२ प्र० बीजा प्रश्नमां अक्षरधाममां मुक्त रह्या छे तेमने अमारा तेजमां लीन करीए ते अमारुं कर्त्तापणुं छे एम कह्युं ते अक्षरधाम कियुं जाणवुं ? अने श्रीजीमहाराजनुं तेज कह्युं ते कियुं जाणवुं ? अने कर्त्तापणुं तो पोते क्रिया करे ते कहेवाय. अने बीजा पासे करावे ते अकर्त्ता कहेवाय. अने साहित्य विना पण करी शके ते अन्यथा कर्त्ता कहेवाय. माटे ते कांइ समजातुं नथी ते कृपा करीने समजावो ?

२ उ० अक्षरधामने अने तेजने जुदुं कह्युं नथी. एकवार अक्षरधाम कह्युं तेनेज बीजीवारे तेज नामे कह्युं छे, केमके पोतानुं तेज छे तेज अक्षरधाम छे ते (पं० १ मां) कह्युं छे माटे आ ठेकाणे तेजनेज अक्षरधाम कह्युं छे पण तेज अने अक्षरधाम जुदुं नथी. अने मूळ अक्षरादिक अवतारो द्वारे उत्पत्त्यादिक करावे छे ते पोते प्रेरणा करी माटे कर्त्तापणुं कहेवाय. अने बीजा पासे करावे छे पण पोते नथी करता माटे अकर्त्तापणुं कहेवाय अने साहित्य विना पण जे धारे ते करी शके ते अन्यथाकर्त्तापणुं कहेवाय, पण एवी रीतनुं कर्त्ता, अकर्त्ता अने अन्यथा कर्त्तापणुं ते अन्वय स्वरूपनुं छे. अने आमां तो कर्त्ता, अकर्त्ताने अन्यथाकर्त्तापणुं ते पोताना व्यतिरेक स्वरूपनुं कह्युं छे जे, मुक्तने धामरूप तेजमां लीन करे ते कर्त्तापणुं छे, अने सेवा अंगीकार करीने सेवकने आधीनपणुं बतावे ते अकर्त्तापणुं छे, अने धाम विना पोतानी मूर्तिमां सर्वे मुक्तने राखे ते अन्यथाकर्त्तापणुं कह्युं छे, माटे आ कर्त्ता, अकर्त्ता, ने अन्यथाकर्त्तापणुं ते व्यतिरेक स्वरूपनुंज कह्युं छे. एटले आमां पोतानी ने पोताना तेजरूप धामनी ने पोताना मुक्तनीज वात छे पण अन्वय स्वरूपना कर्त्ता, अकर्त्ता ने अन्यथाकर्त्तापणानी वात कही नथी.

३ प्र० चंद्र, तारा ने औषधीने दृष्टांते शुं समजवुं ?

३ उ० चंद्रने ठेकाणे श्रीजीमहाराजने जाणवा अने ताराने ठेकाणे मुक्तने जाणवा अने औषधीयोने ठेकाणे मुमुक्षुओने जाणवा ने श्रीजीमहाराजनुं सुख आपवुं ते पोषण जाणवुं, ते सुख श्रीजीमहाराज मुक्तद्वारे आपे छे ते मुक्तो श्रीजीमहाराजने लीधा विना स्वतंत्रपणे सुख आपवा कोइ समर्थ नथी.

४ प्र० राजा अने चाकरने दृष्टांते शुं समजवुं ? अने करवानुं शुं जाणवुं ?

४ उ० राजाने ठेकाणे श्रीजीमहाराजने जाणवा, अने चाकरने ठेकाणे मूळअक्षरकोटीथी लइने

सर्वे अवतारो जाणवा ते सर्वेने विषे श्रीजीमहाराजनी सत्ता आवे छे त्यारे ए ऐश्वर्यार्थीओ उत्पत्त्यादिक करवा तथा कर्मफळ आपवा समर्थ थाय छे पण श्रीजीमहाराजनी सत्ताने मुकीने स्वतंत्रपणे उत्पत्त्यादिक करवा के कर्मफळ आपवा कोइ समर्थ नथी एम कह्युं छे.

५ प्र० चंद्रनुं ने राजानुं बे दृष्टांत देवानुं शुं कारण हशे ?

५ उ० मोक्ष करवारूपी अने उत्पत्त्यादिक करवारूपी ए बेय कार्य जुदां जुदां छे तेमां मोक्ष करनारा मुक्त छे अने उत्पत्त्यादिक करनारा मूळअक्षरादिक छे ते माटे बे दृष्टांत दीधां छे.॥१२१॥

संवत् १८७७ ना मागशर वदि ११ एकादशीने दिवस श्रीजीमहाराज गामश्री ढ्ढोआ मध्ये सुराभक्तना दरबारमां ढोलिया उपर विराजमान हता ने माथे धोळो फेंटो धारण कर्यो हतो तथा धोळी चादर ओढी हती तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी सभा तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१　　पछी श्रीजीमहाराज परमहंस प्रत्ये बोल्याजे, (१) मोटे आचार्य थइ गया छे तेनी पृथक् पृथक् रुचि छे तेमां शंकरस्वामीने अद्वैतज्ञाननांज प्रधान जणाय छे, तथा रामानुजनो एम मत छे जे, जीव, माया ने पुरुषोत्तम ए त्रणे नित्य छे ने पुरुषोत्तम छे ते जीव मायाना नियंता छे ने सर्वना कारण छे ने पोताना अक्षरधामने विषे सदा दिव्याकार थका विराजमान छे ने सर्वे जे अवतार ते तेना छे, एवा जे पुरुषोत्तम नारायण तेनी उपासना जीवने करवी एवी रीते रामानुजनी समजण जणाय छे, तथा वल्लभाचार्यने केवळ भक्ति उपर निष्ठा बहु जणाय छे, अने ए सर्वे आचार्य पोताना ग्रंथोमां प्रसंगे करीने बीजी वार्ताओ लखी छे पण गमे तेवी रीते करीने अंते पोतानी रुचि उपर जाय एम तेमना ग्रंथोने विषे तेमनां वचन छे तेणे करीने तेमनो अभिप्राय यथार्थ जाण्यामां आवे छे, तेम अमारी वार्ता सांभळीने तमने सर्वेने अमारी केवी रुचि जणाय छे ने जेम सोय केडे दोरो चाल्यो जाय छे ने वळी जेम माळाना मणकाने विषे दोरो सुंसरो छे, तेम अमारी जे सर्वे वार्ता तेमां शो अभिप्राय निरंतर सुंसरो चाल्यो आवे छे ते जेने जेम जणातो होय ते तेम कहो ? त्यारे सर्वे मोटेरा परमहंसे जेने जेम जणाणुं तेणे तेम कह्युं. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ल्यो अमे अमारो अभिप्राय तथा रुचि ते कहीए.एक तो अमने ए गमे छे जे,ऋषभदेव भगवान वासुदेव संघाथे एकात्मताने पाम्या हता तो पण ज्यारे सिद्धियो आवीने प्राप्त थइ त्यारे पोते भगवान हता तोपण बीजा त्यागीनी शिक्षाने अर्थे ते सिद्धियोने ग्रहण न करता हवा ने एम बोल्या जे, योगी सिद्ध थयो होय ने पोतानुं मन वश थयुं होय तोपण ते मननो विश्वास न करवो ते श्रीमद्भागवतमां कह्युं छे ॥ नकुर्यात्कर्हिचित्सख्यं मनसिह्यनवस्थिते। यद्विश्रंभाच्चिरा-

चीर्णं चरक्कंदतपऐश्वरम् ॥ नित्यंददाति कामस्य छिद्रंतमनुवेऽरयः । योगिनः कृतमैत्र-स्यपत्युर्जायेवपुंश्चली॥ एवी रीते जे मननो विश्वास न करे तेवो त्याग अमने गमे छे, तथा अमारा मनमां श्वेतद्वीप तथा बदरिकाश्रम जेवा गमे छे तेवा बीजा लोक गमता नथी ने एम मनमां रहे छे जे, श्वेतद्वीपने विषे तथा बदरिकाश्रमने विषे जइने निरअपणे रह्या थका तप करीए ते बहु सारुं लागे पण बीजा लोकमां अनेक प्रकारना वैभव भोग-ववा ते नथी गमता.(१) तथा भगवानना जे घणाक अवतार थया छे तेने एम जाणीए १
छइए जे, ए सर्वे अवतार नारायणना छे तोपण ते अवतारमां ऋषभदेवजी बहु गमे तथा तेथी उतरता कपिलजी तथा दत्तात्रेय ए बेय सरखा जणाय छे अने ए त्रणे अवतार करतां कोटीगणुं श्रीकृष्णने विषे अमारे हेत छे ने एम जाणीए छइए जे बीजा सर्वे अवतार करतां आ अवतार बहु मोटो थयो ने बहु समर्थ छे अने आमां अवतार अवतारी एवो भेद नथी जणातो अने बीजा जे मच्छ कच्छादिक ते भगवाननाज अवतार छे पण तेमां अमारी अति रुचि नथी. अने आवी रीते तो अमारे उपासना छे जे, सर्वेथी पर एक मोटो तेजनो समूह छे ते तेजनो समूह अधोऊर्ध्वे तथा चारे कोरे प्रमाणे रहित छे ने अनंत छे ने ते तेजना समूहना मध्य भागने विषे एक मोटुं सिंहासन छे, ने तेनी उ-पर दिव्यमूर्ति एवा जे श्रीनारायण पुरुषोत्तम भगवान ते विराजमान छे ने ते सिंहास-नने चारे कोरे अनंत कोटी मुक्त बेठा थका ते नारायणनां दर्शन करे छे, एवा जे मुक्ते सहित श्रीनारायण तेने अमे निरंतर देखीए छइए अने ते भगवानने विषे तेजनुं अतिशेपणुं छे तेणे करीने ज्यारेए सभा सहित ते भगवाननां दर्शन नथी थातां त्यारे अमने अतिशे कष्ट थाय छे अने ते तेजनो समूह तो निरंतर देखाय छे तो पण एने विषे रु-चि नथी अने भगवाननी मूर्तिनां दर्शने करीनेज अति सुख थाय छे, अमारे एवी रीते उपासना छे. अने ए भगवानने विषे भक्ति तो जेवी गोपियोने हती तेवी गमे छे.ते सारु अमे सौ माणसने जोता रहीए छइए जे, कोइक कामी स्त्री होय तेने पुरुषने विषे जेवुं हेत होय तथा कामीपुरुषने स्त्रीने विषे जेवुं हेत होय तेने देखीने एम थाय छे, एवुं हेत आपणे भगवानमां होय तो ठीक, तथा कोइकने पुत्रमां धनमां बहु हेत जणाय तेने दे-खीने एम थाय छे, एवुं हेत आपणे भगवानमां होय तो ठीक, तथा कोइक गातो होय तो तेने सांभळीने तेने पासे कोइ माणसने मोकलीए अथवा अमे पंडे एनी पासे जाइए ने जाणीए जे ए बहु ठीक करे छे. (२) अने अमारे सुवाण तो एवा साथे थाय छे २
जे, जेमां काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, स्नेह, मान, ईर्ष्या, दंभ, कपट इत्यादिक दोष न होय ने धर्मशास्त्रमां कह्युं छे एवी रीते धर्म पाळतो होय ने भगवाननी भक्तिये युक्त होय ते साथेज अमारे बेठ्या उठ्यानी सुवाण थाय छे अने एवो न होय ने ते अमारे प्रेमो

रहेतो होय तोपण तेनी साथे सुवाण थाय नहि तेनी तो उपेक्षा रहे छे. (३) अने मोरे ३
तो अमारे कामी उपर बहु अभाव रहेतो अने हवे तो क्रोध, मान, ईर्ष्या ए त्रण जेमां
होय ते उपर बहु अभाव रहे छे, कांजे कामी होय तेतो गृहस्थनी पेठे निर्मानी थइने सत्संगमां
पड्यो रहे छे अने जेमां क्रोध, मान ने ईर्ष्या होय छे ते तो सत्संगमांथी जरुर पाछा
पडी जाता देखाय छे, माटे ए त्रण उपर बहु खेद रहे छे, ते मान ते शुं तो जे मानी होय
तेने पोताथी मोटो होय तेनी आगळ पण स्तब्धपणुं रहे पण तेनी आगळ हलको थइने
तेनी सेवामां वर्ताय नहि. (४) अने ए सर्वे जे अमारो अभिप्राय ते थोडाकमां क्यो ४
कहीए जे; जेवी रीते शंकरस्वामीए अद्वैत ब्रह्मनुं प्रतिपादन कर्युं छे ते ब्रह्मने अमे पोता-
नुं स्वरूप जाणीए छइए, तथा रामानुज स्वामीए जेवी रीते क्षर अक्षरथी पर जे पुरुषोत्तम
भगवान तेनुं निरुपण कर्युं छे ते पुरुषोत्तम भगवानने विषे तो अमारे उपासना छे, तथा
गोपियोना जेवी तो ए पुरुषोत्तम भगवानने विषे अमारे भक्ति छे, तथा शुकजीना जेवो
तथा जडभरतना जेवो तो अमारे वैराग्य छे ने आत्मनिष्ठा छे, एवी रीते अमारो अभि-
प्राय तथा रुचि छे ते अमारी वार्ताए करीने तथा अमे मान्या जे अमारा संप्रदायना
ग्रंथ तेणे करीने जो पूर्वापर विचारीने जुवे तो जे बुद्धिवान होय तेना जाण्यामां आवे
छे, एवी रीते पोताना भक्तजननी शिखाने अर्थे श्रीजीमहाराजे वार्ता करी अने पोते
तो साक्षात् पुरुषोत्तम नारायण छे. (५) इतिवचनामृतम्. ॥१४॥ (१२२)　　　　५

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, अ-
मने त्याग गमे छे पण वैभव भोगववा गमता नथी. (१) अने अमारा घणा अवतार
थया छे तेमां दत्त कपिलथी ऋषभदेव अधिक छे अने तेथी श्रीकृष्ण कोटीगणा अधिक
छे अने आ अवतार एटले अमे बहु समर्थ छीए ने अमारे विषे अवतार अवतारी भेद
नथी सर्वेना उपरि छीए, अने सर्वेथी पर परिमाणे रहित ने अनंत एवो तेजनो समूह छे
तेना मध्य भागने विषे दिव्य सिंहासन उपर अमे दिव्य मूर्ति विराजमान छीए अने
चारे कोरे अनंत कोटी मुक्त अमारां दर्शन करे छे ते मुक्ते सहित अमारां दर्शन थाय
त्यारेज सुख मानवुं ने अमारुं तेज एकलुं देखाय तो कष्ट पामवुं, एवी रीते अमारी उ-
पासनाने भक्ति करवी. (२) अने कामादिक दोष न होय ने धर्मशास्त्र जे सत्संगीजी-
वन तेमां कह्या ते प्रमाणे धर्म पाळतो होय ने अमारी भक्तिए युक्त होय तेनो संग
राखवो ने एवो न होय तेनी उपेक्षा राखवी (३) अने कामी करतां क्रोध, मान, ईर्ष्या
होय तेना उपर अमारे बहु अभाव रहे छे. (४) अने शंकरस्वामी अद्वैत ब्रह्मनुं
प्रतिपादन करे छे ते मूळपुरूषनुं तेज छे ने तेथी पर वासुदेव ब्रह्मनुं तेज छे ने तेथी पर मूळ-
अक्षरनुं तेज छे, ने तेथी पर ने सर्वेनुं आधार, सर्वेनुं कारण ने अद्वैत एवुं जे अमारा तेजरूप
ब्रह्म तेने पोतानुं स्वरूप मानवुं. ने क्षर अक्षरथी पर पुरुषोत्तम भगवान जे अमे ते अ-
मारी साकारपणे उपासना ने भक्ति करवी, ने अमारा विना बीजेथी वैराग्य ने आत्म-

निष्ठा राखवी एम कह्युं छे. (५) बाबतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां श्वेतद्वीप तथा बदरिकाश्रममां तप करवुं ते सारुं लागे छे पण बीजा लोकना वैभव नथी गमता एम कह्युं ते लोक ने वैभव किया जाणवा ?

१ उ० इंद्रथी लइने प्रकृति पुरुषना स्थान सुधी सर्वे लोक जाणवा, ते लोकोमां जे मायिक सुख छे ते वैभव जाणवा, ते गमता नथी एम कह्युं छे.

२ प्र० बीजी बाबतमां ऋषभदेव वासुदेव संघाथे एकात्मताने पाम्या हता, एम कह्युं ते वासुदेव किया जाणवा ?

२ उ० आ ठेकाणे मूळपुरुषने वासुदेव कह्या छे तेना ऋषभदेव अवतार हता ने एने विषे एकात्मताने पाम्या हता.

३ प्र० ऋषभदेव करतां श्रीकृष्णने विषे अधिक हेत कह्युं तेनुं शुं कारण हशे ?

३ उ० जे सर्वेथी मोटा होय तेमने विषे हेत करवुं एम कह्युं छे ते दत्तकपिलथी ऋषभदेव मोटा छे ने तेथी श्रीकृष्ण अति मोटा छे अने पोते तो सर्वेथी अतिशय मोटा छे ते सर्वे अवतार करतां आ अवतार बहु मोटो ने बहु समर्थ छे एम पोताने सर्वेथी अत्यंत मोटा कह्या छे ते माटे पोताने विषेज हेत करवुं एम सूचव्युं छे.

४ प्र० अमारे विषे अवतार अवतारी एवो भेद नथी एम श्रीजीमहाराजे कह्युं तेमां शुं समजवानुं हशे ?

४ उ० जेम बीजा अवतारो छे ते पोताना उपरिना अवतार छे पोताना नीचेना जे अवतार तेना अवतारी छे, तेम अमे अवतार नथी अमे तो अवतारीज छीए पण अवतार अवतारी एवा बे भेद अमारे विषे नथी एम कह्युं छे. ते मच्छकच्छादिकथी लइने मूळअक्षर सुधी सर्वे अवतार कहेवाय अने अवतारी पण कहेवाय, तेमां मच्छथी लइने रामावतार सुधी सर्वे श्रीकृष्णना अवतार कहेवाय ने श्रीकृष्ण एमना अवतारी कहेवाय अने वासुदेव ब्रह्मना श्रीकृष्ण अवतार कहेवाय अने वासुदेव ब्रह्म ते श्रीकृष्णना अवतारी कहेवाय अने मूळअक्षरना अवतार वासुदेवने कहेवाय, ने मूर्तिमान मूळअक्षरने वासुदेव ब्रह्मना अवतारी कहेवाय अने श्रीजीमहाराजना अवतार मूळअक्षरने कहेवाय, ने श्रीजीमहाराज सर्वेना अवतारी कहेवाय, पण कोइना अवतार नथी एटले कोइ अमारो उपरी नथी एम कह्युं छे.

५ प्र० अक्षर धाममां सिंहासन कह्युं ते शी वस्तु हशे ?

५ उ० श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनुं तेज छे ते सिंहासनरूपे शोभा आपे छे.

६ प्र० चोथी बाबतमां काम करतां क्रोध, मान ने ईर्ष्या ए त्रणने भुंडां कह्यां ने [प्र० ७६ मां] ए त्रणे करतां कामने भुंडो कह्यो तेनुं शुं कारण हशे ?

६ उ० सत्संगमां क्रोध, मानादिक न राखे ते करतां कामीने भुंडो कह्यो छे अने श्रीजीमहाराजना भक्त आगळ मान, क्रोध ने ईर्ष्या राखे तेथी कामी सारो कह्यो छे, केमजे मानीथी श्रीजीमहाराज तथा एमना भक्तनो द्रोह थइ जाय एवा मानीने कामी करतां, भुंडो कह्यो छे.

७ प्र० पांचमी बाबतमां शंकरस्वामीए अद्वैत ब्रह्मनुं प्रतिपादन कर्युं छे ते ब्रह्मने श्रीजीमहाराजे पोतानुं स्वरूप मानवानुं कह्युं ने रामानुजे क्षर अक्षरथी पर पुरुषोत्तम कह्या ते पुरुषोत्तमनी

उपासना करवानी कही ते शंकरस्वामीए जे ब्रह्मनुं प्रतिपादन कर्युं छे ते ब्रह्म तो मूळपुरुषनुं तेज छे अने रामानुजाचार्ये पण मूळपुरुषनेज पुरुषोत्तम कह्या छे अने श्रीजीमहाराजे ते अद्वैत ब्रह्मने पोतानुं स्वरूप मानवानुं कह्युं ने रामानुजाचार्ये जेने पुरुषोत्तम कह्या तेनी उपासना करवी एम कह्युं ते केम समजवुं ?

७ उ० जेम शंकरस्वामीए अद्वैत ब्रह्मथी पर कोइ नथी एम जाणीने तेनुं प्रतिपादन कर्युं छे अने रामानुजाचार्ये मूळपुरुषथी पर कोइ नथी एम जाणीने एमने पुरुषोत्तम मानीने एमनी उपासना करवानुं कह्युं छे, तेम अमारा भक्तोए अमारा तेजरूप ब्रह्मने मूळअक्षरादिक सर्वेथी पर जाणीने ते ब्रह्मरूप पोताने मानवुं अने अमने ए ब्रह्मथी पर ने ए ब्रह्मना कारण परब्रह्म पुरुषोत्तम जाणीने अमारी उपासना करवी. अने जेम गोपियोने श्रीकृष्णने विषे प्रीति हती तेवी प्रीति अमारे विषे करवी, अने जडभरत तथा शुकजीए सर्वेथी पर श्रीकृष्णने जाणीने ते विना बीजेथी वैराग्य पामीने प्रीति टाळी नाखी हती अने आत्मारूपे वर्त्तता हता, तेम अमारा भक्तोए अमने सर्वेथी पर ने सुखदायी जाणीने अमारा विना बीजेथी प्रीति टाळीने वैराग्य दृढ करवो. ॥ १२२ ॥

संवत् १८७७ ना मागशर वदि १३ तेरसने दिवस रात्रिने समे श्रीजीमहाराज गाम श्रीलोया मध्ये सुराभक्तना दरबारमां विराजमान हता अने धोळो फेंटो माथे बांध्यो हतो तथा बीजे धोळे फेंटे बोकानी वाळी हती तथा गरम पोषनी राती डगली पहेरी हती तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा धोळो चोफाळने धोळी पछेडी ते बेगां करीने ओढ्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ देश देशना हरिभक्तनी सभा तथा परमहंसनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज कृपा करीने बोल्या जे, (१) आ जीव छे ते अध्यात्म, अधिभूत ने अधिदैवपणे करीने सर्व देहमां नखशिखा पर्यंत व्यापीने रह्यो छे अने देवता ने इंद्रियोरूपे करीने जीवनुं भोक्तापणुं छे पण देवता इंद्रियोथी पृथक्पणे भोक्तानथी.(१) १

२ त्यारे नित्यानंदस्वामीए आशंका करी जे, (२) हे महाराज ! त्यारे एम कहेवाय छे जे, जीव जे ते सामान्यपणे सर्व देहमां व्यापीने विशेषपणे हृदयाकाशमां रह्यो छे त्यारे सर्व ठेकाणे सरखुं जाणपणुं नथी जणातुं तेनुं केम समजवुं ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेम सूर्य छे ते किरणे करीने सर्व पदार्थमां व्यापीने रह्यो छेपण आगळ जेवुं पदार्थ छे त्यां तेवो सूर्यनो प्रकाश जणाय छे, केमजे काचनी भूमि होय तथा स्वच्छ निर्मळ पाणी होय त्यां जेवी रीते सूर्यनो शुद्ध प्रकाश जणाय छे तेवी रीते पाणानी भूमि, रेतनी भूमि तथा डोळाएलुं पाणी तेमां जणातो नथी. एवी रीते सूर्यना प्रकाशमां न्यून अधिकपणुं जणाय छे, तेम ए जीव, इंद्रियो, अंतःकरण, गोलक ए सर्वेने विषे समानपणे रह्यो छे पण इंद्रियोने विषे स्वच्छपणुं छे माटे तेने विषे विशेष प्रकाश जणाय

छे. जुवोने नेत्रमां जेवुं तेज जणाय छे तेवुं नाक कानमां कोइ दिवस जणाय छे ? नथी जणातुं. अने चार अंतःकरणनुं अति स्वच्छपणुं छे तो त्यां जीवनो अधिक प्रकाश जणाय छे अने बीजी इंद्रियोमां न्यून जणाय छे पण जीव तो सर्व देहने विषे समानपणे रह्यो छे. (२) २

३ त्यारे ब्रह्मानंदस्वामीए प्रश्न पुछयो जे, (३) ए जीवने केटलाक तो तारा जेवो देखे छे तथा दिवानी जोत्य जेवो देखे छे तथा बपोरीआ जेवो देखे छे ते केम समजवुं ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एतो एम छे जे, जेम जेने अक्षि विद्या छे तेने नेत्रद्वाराए जीवनुं दर्शन थाय छे ने तेने विषे भगवाननी मूर्तिने पण देखे छे, तेम जेने जे इंद्रियद्वारा लक्ष थयो ते तेवो आत्माने देखे छे, जेम काचनुं पुतळुं मनुष्यने आकारे कर्युं होय तेने जे जे अवयव तथा मुवाळा तथा नाडियो ते सर्वे काचनां होय ने ते पूतळानी मांहिली कोरे तेज भर्युं होय ते तेज देखाय ते जेवो अंगळीनो अवकाश होय ते प्रमाणे देखाय छे पण समग्र नथी देखातुं, तेम ए जीवनुं स्वरूप जेणे जेवुं दीठुं छे ते तेवुं कहे छे पण एनी निरावरण दृष्टि नथी थइ माटे एने जेवो आत्मा छे तेवो नथी देखातो; अने ज्यारे एनी निरावरण दृष्टि थइने आत्माकारे थाय छे त्यारे इंद्रियोना गोळकना जे विभाग ते एनी दृष्टिमां नथी आवता ने जेवो आत्मा छे तेवो जणाय छे, जेम जे आकाशनी दृष्टिने पाम्यो होय तेनी दृष्टिमां बीजां चार भूत नथी आवतां, तेम जेनी निरावरण दृष्टि थाय छे तेने गोळक, इंद्रियो, देवता, अंतःकरण तेणे करीने जणाता जे जीवना प्रकाशना भेद ते दृष्टिमां नथी आवता ने जेवो जीव छे तेवो यथार्थ जणाय छे अने भेद दृष्टिवाळाने जेवो छे तेवो नथी जणातो, जेम कोइके गायनुं पुंछडुं दीठुं, कोइके मुख दीठुं, खुर दीठो, पेट दीठुं, स्तन दीठो ते जेणे जे जे अंग दीठुं ते गायनुंज दीठुं छे पण जेवी गाय छे तेवी कोइए दीठी नथी ने एक अंग दीठुं माटे गाय दीठी पण कहेवाय तेम ए आत्माना प्रकाशनुं दर्शन जेटलुं जेने इंद्रियोद्वारा अथवा अंतःकरणद्वारा थयुं तेटलो ते आत्मदर्शी कहेवाय पण सम्यक् आत्मदर्शन एने कहेवाय नहि. माटे अमे तो ए जीवने विषे एवी रीते सामान्य विशेषपणुं कहीए छीए. [३] ३

४ त्यारे नित्यानंदस्वामीए प्रश्न पुछयो जे [४] हे महाराज ! तमे जीवने तो निराकार कह्यो त्यारे ते जीवने विषे भगवान रह्या छे ते पण अलिंगपणे रह्या छे के मूर्तिमान रह्या छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, भगवान तो इंद्रियो, देवता, अंतःकरण ने जीव ए सर्वेना आश्रयपणे रह्या छे ते श्रीकृष्ण भगवाने उद्धव भेळे गोपियोने कहेवराव्युं छे जे, इंद्रियो, अंतःकरण देवता ने जीव तेना आश्रयपणे करीने तमारे समीपे हुं रह्यो छुं, जेम पंचमहाभूत ब्रह्मांडने विषे रह्यां छे ने तेनां तेज सर्वना देहमां रह्यां छे तेम जे हुं आ मथुरामां रह्यो छुं ते तो जेम महाभूत विशेषपणे करीने ब्रह्मांडने विषे रह्यां छे तेम रह्यो

छुं ने जेम ए भूत जीवोना देहमां सामान्यपणे रह्यां छे तेम हुं तमारे पासे रह्यो छुं अने जे
हुं देखातो नथी ते तो तमारा चित्तनी वृत्तिनो मारे विषे निरोध थाय तेने अर्थे नथी
देखातो पण रह्यो तो मूर्तिमान छुं. [४] ४

५ त्यारे वळी नित्यानंदस्वामीए पूछयुं जे, (५) हे महाराज ! ए भगवान इंद्रिया-
दिकना आश्रयपणे रह्या छे ते पुरुषरूपे करीने रह्या छे के अक्षररूपे रह्या छे के पोते
स्वयं पुरुषोत्तमपणे रह्या छे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जीव, पुरुष, अक्षर ने
पुरुषोत्तम ए सर्वेनुं तेज प्रकाशपणे तो सजाति छे, माटे एमना प्रकाशना भेद पाडवाने
तो कोइ समर्थ छे नहि ने भेद तो अतिशे छे पण ते भेदने देखवाने कोइ समर्थ नथी,
अने जेने आ भगवान कृपा करे छे तेणे करीने तेने प्रकाशमय एवो दिव्य देह बंधाय
छे पछी ते एम जाणे छे जे, आ हुं छुं ने आ पुरुष छे ने आ अक्षर छे ने ए सर्वेथी
विलक्षण एवा आ पुरुषोत्तम छे, एवी रीते ए सर्वेने पृथक्पणे देखे छे ने एमना प्रकाशने
पण विलक्षणपणे देखे छे पण बीजा तो कोइ पृथक् देखवाने अर्थे समर्थ थाय नहि. [५] ५
माटे भगवान सुझे ए रूपे करीने रह्या छे पण पोतेज रह्या छे. (६) ६

अने वेदांत जे उपनिषद् तथा योग तथा सांख्य ए त्रण शास्त्र सनातन छे ते ए
श्रीकृष्ण परमात्मानुंज वर्णन करे छे ते ए त्रण शास्त्रना मत ते तमने अमे पृथक् पृथक्
६ पणे करीने कहीए ते सांभळो, (६) तेमां जे सांख्यवाळा छे ते तो चोवीश तत्त्वने कहीने
तेथीपर पचवीशमा परमात्माने कहे छे पण जीव ईश्वरने पृथक्पणे नथी कहेता तेनो ए
अभिप्राय छे जे तत्त्व छे ते जीव विनानां होय नहि, माटे तत्त्व भेळो तदात्मकपणे रह्यो
जे जीव तेने तत्त्वरूपज कहे छे,पण तत्त्व थकी पृथक् नथी कहेता अने जेम जीवने चोवीश
तत्त्वरूप माने छे तेम ब्रह्मांडाभिमानी जे ईश्वर तेने पण चोवीश तत्त्वरूप माने छे एवी रीते
जीव ईश्वर ए बेयने तत्त्वरूप मानीने तत्त्व भेळेज एने गणे छे पण तत्त्वथी नोखा नथी
गणता ने पचवीशमा परमात्माने कहे छे ए सांख्यनो मत छे पण एम न समझवुं जे जीव
नथी, कांजे सांख्यवाळे षट् संपत्ति, श्रवण, मनन, निदिध्यासनादिक साधन कह्यां छे ते
जीवनेज करवानां कह्यां छे पछी ते साधने करीने विचारने पामे ने ते विचारे करीने तत्त्व
थकी पोते नोखो पडे ने पोताने ब्रह्मरूप माने ने परमात्माने भजे एवी रीते सांख्य मत
छे ते मोक्ष धर्ममां शुकजी प्रत्ये नारदजीए कह्युं छे जे ।।त्यजधर्ममधर्मंच उभेसत्यानृतेत्यज। उभे-
सत्यानृतेत्यक्त्वा येनत्यजसितंत्यज।।एनो एम अर्थ छे जे,ज्यारे मुमुक्षु आत्मविचार करवा बेसे
त्यारे तेने आडा जे धर्मरूप अथवा अधर्मरूप,सत्यरूप,असत्यरूप जे जे संकल्प आवे तेनो त्याग
करीनेजे विचारे करीने एने तजे छे ते विचारनो पण त्याग करीने ब्रह्मरूपे रहेवुं पण देहे
करीने धर्मरूप नियमनो त्याग करवो कह्यो नथी ए श्लोकनो ए अर्थ छे, अने योगवाळा

छे ते चोवीश तत्त्वने पृथक् गणे छे ने जीव ईश्वरने पचवीशमा कहे छे ने परमात्माने छवीशमा कहे छे अने विवेके करीने पचवीशमाने तत्त्वथकी पृथक् समजीने तेने विषे पोतापणानी दृढता मानीने चोवीश तत्त्वनी जे वृत्तियो तेनो पिंडीभाव करीने बळात्कारे छवीशमाने विषे राखे पण विषय सन्मुख जावा दे नहि ने एम समजे जे, मारी वृत्ति भगवानने मुकीने बीजे ठेकाणे जाशे तो मुने संसृति थाशे, माटे अति आग्रह करीने इंद्रियो अंतःकरणनी जे वृत्तियो तेने भगवानने विषे राखे, अने जे सांख्यवाळो छे ते तो एम समजे जे, मारे इंद्रियो अंतःकरणज नथी तो जाशे क्यां ? माटे पोताने ब्रह्मरूप मानीने निर्भय रहे छे, अने योगवाळो छे ते तो डरतोज रहे छे, जेम कोइक पुरुषना हाथमां तेलनुं माथाळगण भरेलुं पात्र होय ने ते पुरुषने पगथीयाने उपर उंचुं चढवुं होय ने बे कोरेथी उघाडी तरवारवाळा पुरुष डराववाने उभा रह्या होय ने ते तेलने ढळवा देवुं न होय ने ते पुरुष जेवो भयने पामे तेम योगवाळो विषयथकी बीने भगवानने विषे वृत्तियोने राखे छे ए योगनो मत छे. अने वेदांत जे उपनिषद् तेनो मत ए छे जे, सर्वना अतिशे मोटा कारण एवा जे पुरुषोत्तम नारायण ब्रह्म तेनुंज ग्रहण करीने बीजा सर्वेने मिथ्या माने छे, जेम आकाशनी दृष्टिने जे पाम्यो होय ते बीजा तत्त्वने देखे नहि, तेम ए ब्रह्मने जे देखतो होय ते बीजा कोइने देखे नहि, एवी रीते वेदांतनो मत छे. [७] ७
इति वचनामृतम्. ॥१५॥ (१२३)

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (६) छे. तेमां पहेलुं ने छठुं कृपावाक्य छे, तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे देवताने इंद्रियो द्वारे करीने जीवनुं भोक्तापणुं कह्युं छे. (१) बीजामां इंद्रियो करतां अंतःकरण स्वच्छ छे तेथी तेमां अधिक प्रकाश जणाय छे. [२] त्रीजामां जेने इंद्रियो द्वारे लक्ष थाय तेने समग्र आत्मा नथी देखातो, ज्यारे निरावरण दृष्टि थाय त्यारे यथार्थ आत्माने देखे छे. [३] चोथामां श्रीकृष्णने गोपियोना दृष्टांते कह्युं छे के एवा भक्तने विषे अमे मूर्तिमान् रह्या छीए पण एनी चित्तवृत्तिना निरोध माटे देखाता नथी. (४) पांचमामां जीव पुरुष अक्षर ने अमारुं तेज सजाति छे ने जे जीवने अमे कृपा करीने मूर्तिमान करीए त्यारे ते मुक्त पोताने तथा पुरुषने तथा अक्षरने तथा अमने मूर्तिमान देखे छे अने ए सर्वना प्रकाशने पण पृथक् पृथक् देखे छे. [५] अने जीवने विषे मुझे ए रूपे करीने एटले मूळपुरुष द्वारे रह्या छीए. पण मूळअक्षरादिकथी लेइने सर्वने विषे अमारी शक्ति रही छे, माटे अमे रह्या छीए एम जाणवुं. (६) छठ्ठामां उपनिषद्, योग ने सांख्य तेना मतने कहेवा पूर्वक पोताना स्वरूपनुं प्रतिपादन कर्युं छे. (७) बाबतो छे.

१ प्र० त्रीजा प्रश्नमां इंद्रियो द्वारे लक्ष थाय तो समग्र आत्मा देखातो नथी एम कह्युं; अने वळी नेत्र द्वारे जीवनुं दर्शन थाय छे ने तेने विषे श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने पण देखे छे एम

कह्युं ते नेत्र द्वारे जीवनुं दर्शन सम्यक् प्रकारे तो नथी त्यारे मूर्ति केवी देखाती हशे ?

१ उ० इंद्रियोना अवकाश प्रमाणे जीवनुं दर्शन थाय छे अने मूर्ति पण इंद्रियोनी वृत्ति द्वाराए समग्र देखाती नथी; जीवसत्ताए जुवे त्यारेज जीवात्माने तथा श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने समग्र देखे पण आवरण टळ्या विना इंद्रियो तथा अंतःकरण द्वारे जुवे त्यां सुधी जीव तथा श्रीजीमहाराजनी मूर्ति समग्र देखाय नहिं.

२ प्र० चोथा प्रश्नमां निराकार जीवने विषे तमे तेजरूपे रह्या छो के मूर्तिमान रह्या छो ? एम नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं तेना उत्तरमां श्रीजीमहाराजे श्रीकृष्णनुं दृष्टांत दीधुं तेमां तो मूर्तिमान रह्या छे एम कह्युं ते जीवमां तो तेज द्वारे रह्या छे एम (प्र० ४१ मां तथा सा० ५ ना ३/२ बीजा प्रश्नमां) कह्युं छे, माटे ते परस्पर विरोध आवे छे ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० श्रीजीमहाराज मायाबद्ध जीवो तथा ते जीवोना उपरि मूळपुरुष ईश्वर ने तेथी पर मुक्त जीव ने मुक्त जीवना उपरि मूळअक्षर ते सर्वेने विषे अंतर्यामी रूपे पोताना प्रकाश द्वारे रह्या छे अने आमां तो पोताना एकांतिक भक्तने विषे मुर्तिमान रह्या छे एम कह्युं छे माटे विरोध नथी.

३ प्र० पांचमा प्रश्नमां जीवने विषे पुरुष, अक्षर तथा अमे त्रणे प्रकाश द्वारे रह्या छीए ने जीव, पुरुष, अक्षर तथा अमारा प्रकाशमां भेद अतिशे छे ते भेदने देखवाने कोइ समर्थ नथी, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते जीवने विषे त्रणे रह्या हशे के केम ?

३ उ० मूळअक्षरने विषे श्रीजीमहाराज तेज द्वारे रह्या छे अने मूळपुरुषने विषे श्रीजीमहाराज, मूळअक्षर ने ब्रह्म ए त्रणे तेज द्वारे रह्या छे अने जीवने विषे श्रीजीमहाराज, मूळअक्षर, ब्रह्मने मूळपुरुष ए चारे तेज द्वारे रह्या छे तेमां श्रीजीमहाराजनुं तेज ते सर्वेनुं आधार छे ने ए तेजने सच्चिदानंद, चिदाकाश, महातेज, अक्षरधाम, अक्षरब्रह्म, कांति तथा शक्ति एवे घणे नामे कहेल छे. ते (प्र० ४५ ना बीजा प्रश्नोत्तरमां) छे.

४ प्र० ज्यारे श्रीजीमहाराज कृपा करीने दिव्य देह आपे त्यारे ते भक्त पोताने, पुरुषने, अक्षरने तथा श्रीजीमहाराजने पृथक्पणे देखे अने ए सर्वेना प्रकाशने विलक्षणपणे देखे छे, एम कह्युं ते दिव्य देह आप्या पछी तो एने विषे श्रीजीमहाराज विना बीजा कोइनुं अंतर्यामीपणुं घटतुं नथी त्यारे ए सर्वेने शी रीते देखे ?

४ उ० ज्यारे दिव्य देह बंधाय एटले मूर्तिमान थाय त्यारे तेने आवरण रहेतुं नथी तेथी ते सर्वेने तेना तेना धामोने विषे श्रीजीमहाराजनी पेठेज देखे छे. ॥ १२३ ॥

संवत् १८७७ ना मागशर वदि १४ चौदशने दिवस संध्या आरती थया केडे श्रीजीमहाराज गाम श्रीलोया मध्ये सुराभक्तना दरबारमां ढोलिया उपर विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा गरम पोसनी राती डगली पहेरी हती तथा माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने बीजे धोळे फेंटे करीने बोकानी वाळी हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे सर्वे परमहंस परस्पर प्रश्न उत्तर करो. एम कहीने
१ पोतेज प्रश्न पुछयो जे, (१) जेने वासना कुंठित न थइ होय ने जेने वासना कुंठित थइ
गइ होय ने जेने वासना निर्मूळ थइ गइ होय तेनां शां लक्षण छे? पछी मुक्तानंदस्वा-
मीए ए प्रश्ननो उत्तर करवा मांड्यो पण थयो नहि, त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे,
जेनी वासना कुंठित न थइ होय, तेनां इंद्रियोनी वृत्ति विषयमां चोटी जाय, ते पाछी
विचारे करीने पण निसरे नहि, अने जेने कुंठित वासना थइ गइ होय तेनी वृत्ति विष-
यमां तत्काळ प्रवेश करे नहि अने कदाचित् वृत्ति विषयमां प्रवेश करी जाय ने ते
वृत्तिने पाछी वाळे तो तरत पाछी वळे पण विषयमां आसक्त थाय नहि, अने जेने वा-
सना निर्मूळ थइ गइ होय तेने तो जाग्रतने विषे सुषुप्तिनी पेठे विषयनो अभाव वर्त्ते ने
सारा नरसा जे विषय ते बेय समानपणे जणाय ने पोते गुणातीतपणे वर्त्ते. (१) १
२ त्यारे गोपाळानंदस्वामीए पुछ्युं जे, (२) वासना कुंठित तो होय पण ते मूळ-
मांथी टळी नथी जाती तेनुं शुं कारण छे? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एनो उत्तर
ए छे जे, आत्मनिष्ठारूप एवुं जे ज्ञान तथा प्रकृतिनां कार्य एवां जे पदार्थमात्र तेने विषे
अनासक्तिरूप एवो जे वैराग्य तथा ब्रह्मचर्यादिकरूप जे धर्म तथा महात्म्येसहित एवी
जे भगवाननी भक्ति ए चार वानां जेमां संपूर्ण होय तेनी वासना निर्मूळ थइ जाय छे
अने ए चारमां जेटली न्यूनता रहे छे तेटली वासना निर्मूळ थाती नथी. (२) २
३ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे प्रश्न पुछीए जे, (३) मुमुक्षुने भग-
वाननी प्राप्तिने अर्थे अनंत साधन करवानां कह्यां छे तेमां एक एवुं मोटुं कियुं साधन
छे जेणे करीने सर्वे दोष टळी जाय ने तेमां सर्वे गुण आवे? त्यारे ए प्रश्ननो उत्तर
परमहंस वते थयो नहिं, पछी श्रीजीमहाराजे एनो उत्तर कर्यो जे, भगवाननुं महात्म्य
जेम कपिलदेवजीए देवहूति प्रत्ये कह्युं छे जे ॥ मद्भयाद्वातिवातोयं सूर्यस्तपतिमद्भयात् ॥
एवी रीते अनंत प्रकारना महात्म्ये सहित एवी जे भगवाननी भक्ति ते जेने होय तेना
दोष मात्र टळी जाय छे ने तेने ज्ञान वैराग्य धर्म ए न होय तो पण ए सर्वे आवे छे
माटे ए साधन सर्वमां मोटुं छे. (३) ३
४ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे, (४) जे कपटी होय ने ते बुद्धिवाळो
होय माटे पोताना कपटने जणावा दे नहि तेनुं कपट केइ रीते कळाय ते कहो? त्यारे
एनो उत्तर [illegible]नंदस्वामीए कर्यो जे, जेनी मेव्यक, उव्यक ते जे सत्संगनो द्वेषी होय
ने संतनुं ने भगवाननुं घसातुं बोलतो होय ते पासे होय तेणे करीने ते ओळखाय पण
बीजी रीते तो न ओळखाय पछी ए उत्तरने श्रीजीमहाराजे मान्यो.
५ ने पछी पोते बोल्या जे, [५] एवानो संग न करतो होय तो केम कळीए? त्यारे

मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे, कोइक देशकाळनुं विषमपणुं आवे त्यारे एनुं कपट कळाइ जाय
त्यारे श्रीजीमहाराजे कह्युं जे ए ठीक उत्तर कर्यो. [४] ४

६ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे, [६] एवो कियो एक अवगुण छे जेणे
करीने सर्वे गुणमात्र ते दोषरूप थइ जाय छे ते कहो? त्यारे श्रीपातदेवानंदस्वामी बोल्या
जे, भगवानना भक्तनो जे द्रोह करे तेना जे सर्वे गुण ते दोषरूप थइ जाय छे. पछी
श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ए उत्तर पण खरो, पण अमे तो एनो उत्तर बीजो धार्यो छे
जे, सर्वे गुणे संपन्न होय ने जो भगवानने अलिंग समझतो होय पण मूर्तिमान न
समझे ए मोटो दोष छे एणे करीने एना बीजा सर्व गुण दोषरूप थइ जाय छे. [५] ५

७ अने वळी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे, (७) संतनो अभाव शाणे करीने आवे
छे ते कहो? पछी एनो उत्तर परमहंसे करवा मांडयो पण थयो नहि त्यारे श्रीजीमहा-
राजे एनो उत्तर कर्यो जे जेने मान होय तेने संतनो अभाव आवे छे, केमजे जे
मानी होय तेनो एवो स्वभाव होय जे, जे पोताने वखाणे तेमां सो अवगुण होय ते
सर्वेने पड्या मुकीने तेमां एक गुण होय तेने बहु माने ने जे पोताने वखाणतो न होय
ने तेमां सो गुण होय ते सर्वेने पड्या मुकीने तेमां कोइक जेवो तेवो एक अवगुण होय
तेने बहु मानीने तेनो प्रथम तो मन तथा वचन तेणे करीने द्रोह करे ने पछी देहे करीने
पण द्रोह करे, माटे ए मानरूप मोटो दोष छे अने ते मान समझुमांज होय ने भोळामां
न होय एम जाणवुं नहिं भोळामां तो समझु करतांय झाझुं होय छे. [६] ६

८ पछी मुक्तानंदस्वामीए श्रीजीमहाराजने प्रश्न पुछयो जे, (८) हे महाराज!
ए मान केम टळे? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जे भगवाननुं महात्म्य अतिशे सम-
झतो होय तेने मान न आवे, केमजे जुवोने उद्धवजी केवा डाह्या हता ने नीतिशास्त्रमां
कुशळ हता ने देहे करीने राजा जेवा हता पण जो भगवाननुं महात्म्य समझता हता तो
गोपियोने विषे भगवाननो स्नेह जोइने तेने आगळ पोतानुं मान न रह्युं ने एम बोल्या
जे, ए गोपियोना चरणनी रज जेने अडती होय एवां जे वृक्ष, लता, तृण, गुच्छ ते
मांहेलो हुं कोइक थाउं अने तुलसीदासजीए कह्युं छे जे, ॥ तुलसी ज्याके मुखनसे
भुलेइ निकसे राम ताके पगकी पहेनीयां मेरे तनकी चाम ॥ एम जेने भुले पण भग-
वाननुं नाम मुखथी निसरे तेने अर्थे पोताना शरीरना चर्मना जोडा कराबी आपे, तो
जे भगवानना भक्त होय ने भगवाननुं निरंतर नाम स्मरण, भजन, कीर्त्तन, वंदन करता
होय ने जो भगवाननुं महात्म्य समझतो होय तो तेने आगळ शुं मान रहे ? नज रहे.
माटे महात्म्य समझे त्यारे मान जाय छे पण महात्म्य समझ्या विना तो मान जातुं
नथी ते सारु जेने मान टाळवुं होय तेने भगवाननुं ने संतनुं महात्म्य समझवुं. (७) ७

इति वचनामृतम्. ॥१६॥ [१२४]

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [८] छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे अकुंठित, कुंठित ने निर्मूळ वासनानां लक्षण कह्यां छे. [१] बीजामां आत्मनिष्ठा, वैराग्य, ब्रह्मचर्य अने महात्म्ये सहित अमारी भक्ति ए चार वानां संपूर्ण होय तो वासना निर्मूळ थइ जाय छे. [२] त्रीजामां अमारी महात्म्ये सहित भक्ति होय तो दोष मात्र टळी जाय अने ज्ञान, वैराग्य, धर्म ते आवे. [३] चोथा ने पांचमामां कपटीनुं कपट जाणवानो उपाय कह्यो छे. (४) छट्टामां अमने मूर्तिमान न समजे तेना सर्व गुण दोष रूप थइ जाय छे. [५] सातमामां माने करीने संतनो अभाव आवे छे ते मान डाह्याथी भोळामां झाझुं होय छे. [६] आठमामां अमारुं ने संतनुं महात्म्य समजे त्यारे मान जाय एम कह्युं छे. [७] बावतो छे. १२४

संवत् १८७७ ना मागशर वदि अमासने दिवस श्रीजीमहाराज गाम श्रीलोया मध्ये सुराभक्तना दरबारमां ढोलिया उपर विराजमान हता अने मस्तक उपर धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने बीजे धोळे फेंटे करीने बोकानी वाळी हती तथा गरम पोषनी राती डगली मांहेली कोर धोळे अंगरखे सहित पहेरी हती तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा चोफाळ ओढीने ते उपर पीळी रजाइ ओढी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिनी सभा तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, एवी रीते श्रीजीमहाराज प्रसन्न थका रात्रिने समे विराजमान हता.

१ पछी श्रीजीमहाराज पोतानी मेळे बोल्या जे, (१) जुवोने भगवाननी मायानुं बळ केवुं छे जेणे करीने विपरीतपणुं घणुं थाय छे, केमजे प्रथम केवो सारो जणातो होय ने पछी अतिशे भुंडो थइ जाय छे. [१] १

एम कहीने पछी वळी परमहंस प्रत्ये बोल्या जे, आज तो प्रश्न पुछो तो वार्ता
२ करीए त्यारे नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे, (२) हे महाराज ! प्रथम सारो होय ने स्तुति करतो होय ने ते नो ते पाछो निंदा करवा मांडे छे, माटे मुझे एवो देश, काळ, क्रिया, संग विषम थाय तो पण सारोने सारोज रहे पण कोइ रीते विपरीत मति थाय नहि ते शाणे करीने थाय ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने देहनो अनादर होय अने दृढ आत्मनिष्ठा होय ने पंच विषयमां वैराग्य होय अने भगवाननो महात्म्ये सहित यथार्थ निश्चय होय एवाने मुझे एवुं देशकाळादिकनुं विषमपणुं थाय तो पण एनी मति अवळी
थाय नहि. [२] अने जे देहाभिमानी होय ने पंच विषयनो अतिशे अभाव न थयो होय २
तेने ज्यारे संत ए विषयनुं खंडन करे त्यारे ते संत मोटेरा होय तेनो पण अभाव आवे ने भगवाननो पण अभाव आवे अने भगवाननो तो यथार्थ निश्चय होय तो पण जो पंच विषयनो अत्यंत अभाव न थइ गयो होय ने तेनी आसक्ति होय ने ते विषयनुं खु-

क्तानंदस्वामी जेवा खंडन करे तो तेनुं माथुं शस्त्रे करीने मुकावी दे एवो द्रोह करे. (३) ३

३ पछी वळी नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे, (३) कोइकने देहाभिमान तथा पंचविषयनी आसक्ति होय तो पण ते सत्संगमां नभ्यो जाय छे ते:केम समझवुं ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एने ज्यां सुधी कोइक धक्को नथी लाग्यो त्यां सुधी नभ्यो जाय छे पण ज्यारे कोइक मोटा संत अथवा भगवान ते मानने खोदशे तथा स्वाद, देहाभिमान, लोभ, काम, क्रोध एने खोदशे त्यारे एने जरुर ते संतनो अभाव आवशे त्यारे ए जरूर संतनो द्रोह करशे ने सत्संगमांथी विमुख थाशे, जेम सर्पे लाळ नाखी होय एवुं जे दुध साकर तेने जेणे पीधुं होय ने ते जीवे छे तो पण ते घडी बे घडीमां:सांज सवारे, आज काल जरुर मरनारो छे,तेम जे देहाभिमानी छे ते महिने,बे महिने,वरसे,बे वरसे, दश वरसे देह मुक्या समे,देह मुकीने ज्यारे त्यारे पण ए जरुर संतनो अभाव लइने पडी जाशे.[४] ४ अने जेने देहाभिमान न होय ने एम समझतो होय जे, अंतःकरण इंद्रियोनो प्रकाशक ने जेणे करीने देह चाले हाले छे एवो जे सत्तारूप आत्मा ते हुं छुं ते हुं घन स्त्रीआदिक कोइ पदार्थे करीने सुखी थाउं एवो नथी ने ए पदार्थ न मळे तेणे करीने दुःखी थाउं एवो नथी एम दृढ समझण जेने होय तेने संत गमे तेवी रीते पंच विषयनुं खंडन करे तथा देहाभिमाननुं खंडन करे तो पण ते संतनो अभाव कोइ रीते आवे नहि ने तुच्छ पदार्थ सारु संत साथे बखेडो थाय नहि ने आंटी पण पडे नहि. (५) ५

४ पछी वळी नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे, (४) जेने पंचविषयनो अभाव होय ते केम जणाय ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने विषयनो अभाव होय ते एम जणाय जे, ज्यारे कांइ सारुं खावानुं आवे त्यारे तेने खाय पण जेम जेवुं तेवुं खातो होय ने तेमां आनंद होय तेवो आनंद रहे नहि,मुंझाइ जाय अने लुगडां जेवां तेवां जाडां पहेरतो होय तेमां आनंद होय तेवो झीणां लुगडां पहेरवां पडे तेमां आनंद न रहे ने मन मुंझाय, तेमज सारी पथारी होय अथवा कोइक मान दे इत्यादिक जेजे सारा पदार्थनो योग थाय त्यारे तेमां तेनुं मन मुंझाय पण तेमां कोइ रीते आनंद पामेज नहि त्यारे तेने एम जाणीए जे एने विषयने विषे अभाव छे. [६] ६

५ पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे, (५) हे महाराज ! ए पंच विषयनो अभाव केम थाय ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, विषयनो अभाव थवानुं मुख्य साधन तो परमेश्वरनुं महात्म्य छे ने ते पछी आत्मनिष्ठा ने वैराग्य छे ते महात्म्य ते शुं तो जे भगवाननी बीके करीने इंद्र वरसे छे, सूर्य, अग्नि, चंद्रमा प्रकाश करे छे, पृथ्वी सर्वने धारी रही छे, समुद्र मर्यादा नथी लोपता, औषधियो ऋतुने पामीने फळे छे अने जे भगवान

जगत्नी उत्पत्ति, स्थिति प्रलयने करे छे अने जेनी शक्ति काळ छे, माया छे, पुरुष छे, अक्षर छे, एवी रीते जे भगवाननी मोटपने समझतो होय तेने जगत्मां एवुं शुं पदार्थ छे ते बंधन करे ? ते काम, लोभ, क्रोध, मान, ईर्ष्या स्वाद, सूक्ष्म वस्त्र, धन, स्त्री तथा जे जे पंच विषय संबंधी पदार्थ ते एने कोइ बंधन करे नहि, कांजे एणे तो सर्वेनुं परिमाण करी राख्युं छे जे, भगवान ते आवा छे ने आवो ए भगवानना भजन स्मरण, कथा वार्ताने विषे माल छे,ने अक्षर ते आवा छे ने आवुं ए अक्षर संबंधी सुख छे, तथा गोलोक, वैकुंठ, श्वेतद्वीप संबंधी सुख ते आवुं छे, तथा प्रकृति पुरुष संबंधी सुख ते आवुं छे अने ब्रह्मलोक संबंधी सुख ते आवुं छे ने स्वर्गनुं सुख ते आवुं छे तथा राज्यादिकनुं सुख ते आवुं छे, एवी रीते ए सर्वेना सुखनुं अनुमान करीने, अने भगवानना सुखने सर्वथी अधिक मानीने, जे भगवानने विषे जोडाणो होय तेने एवो कियो पदार्थ छे ते भगवानना चरणारविंदथी पाडे ? कोइ न पाडे, जेम पारसमणि होय ते कोइक लोहाने अडीने तेनुं सोनुं थयुं ते सोनुं पाछुं पारसमणिनुं कर्युं पण लोढुं थाय नहि तेम एवुं जेणे भगवाननुं महात्म्य जाण्युं छे ते भगवाननो पाछ्यो पण ते भगवानना चरणारविंदथी पडे नहि तो शुं बीजे पदार्थे करीने ए पडे ? न पडे.अने ए भगवानने भजता होय एवा जे संत तेनुं पण ए बहु महात्म्य समझे जे, एवा मोटा जे भगवान तेना साक्षात् उपासक ए संत छे माटे ए बहु मोटा छे, जेम उद्धव पोते केवा मोटा हता पण जो आवी रीते भगवाननुं महात्म्य समजता हता तो पोताने कांइ डहापणनुं मान न राख्युं ने गोपियोना चरणनी रजने पामवाने इच्छया ने तृणवेलीनो अवतार माग्यो, केमजे एवा मोटा भगवान,जेना मार्गने वेदनी श्रुति खोळे छे ते भगवानने विषे ए गोपियोनी प्रीति अतिशे थाळी,तेम एवा भगवानना संत होय तेने आगळ मान केम रहे ? ने तेने नमाय केम नहि ? तेने आगळ तो दासानुदास थइने रहेवाय ने पांच पांच खासडां मारे तो पण खमे ने एम समझे जे, मारां मोटां भाग्य थयां जे एवा संतनो हुं तिरस्कार सहुं छुं, नहि तो प्रारब्धवश थइने बायडी छोकरांना तिरस्कार सहेवा पडत तथा मावापना तथा राजाना तिरस्कार सहेवा पडत अने प्रारब्धवश थइने डोडीनी भाजी खावी पडत तथा मोध्य खोदीने खावी पडत, ते करतां आ संतने संगे रहीने हुं निःस्वादी वर्त्तमान पाळुं छुं ते मारां मोटां भाग्य छे ! अने प्रारब्धवश थइने जेवां तेवां वस्त्र तथा चींथरां पहेरवां पडत ते करतां आ संतने संगे रहीने हुं गोदडी ओढुं छुं ते मारां मोटां भाग्य छे !(७) ७
अने संतनी सभामां जाय छे ने पोताने मान जडतुं नथी त्यारे ए संतनो अवगुण ले छे त्यारे एने संतनी मोटप जाण्यामां आवी नथी नहि तो अवगुण लेत नहि, जेम मुंबइनो गवर्नर साहेब खुरसी नाखीने बेठो होय ने तेनी सभामां कोइ गरीब मा-

जस जाय ने तेने खुरसी न नाखी दे ने आदर कोइ न करे त्यारे कांइ एने ते इंग्रेज उपर धोखो थाय छे ? ने कांइ तेने गाळ दीधानुं मनमां थाय छे ? लेशमात्र पण थातुं नथी.आ माटे जे ए इंग्रेजनी मोटाइ जाणी छे जे,ए तो मुलकनो बादशाह छे ने हुं तो कंगाल छुं,एवुं जाणीने धोखो थाय नहि तेम जो संतनी मोटाइ जाणी होय तो ते संत गमे तेवो तिरस्कार करे तो पण धोखो थाय नहि ने जेटलो ले एटलो पोतानो अवगुण छे पण संतनो अवगुण तो कोइ रीते लेज नहि, माटे जेने भगवाननुं ने संतनुं महात्म्य समझाणुं छे तेनो पायो सत्संगमां अचळ छे. (८) अने जेने महात्म्य नथी समझाणुं ८
तेनो विश्वास नहि. (९) इति वचनामृतम्. ॥१७॥ (१२५) ९

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (५) छे. तेमां पहेलुं कृपावाक्य छे तेमां श्रीजीमहाराजे मायाने विपरीतपणामां हेतु कही छे. (१) बीजामां देहनो अनादर, आत्मनिष्ठा, वैराग्य अने महात्म्ये सहित अमारो निश्चय होय तो देशकाळना अति विषमपणामां पण मति अवळी थाय नहि. (२) अने देहाभिमानीने अमारो निश्चय यथार्थ होय तोपण पंच विषयनो अभाव न थयो होय तेनुं अमे के संत खंडन करीए तो अभाव ले ने शस्त्रे करीने माथुं मुकावी दे एवो द्रोह करे, (३) त्रीजामां विषयनी आसक्तिवाळाना विषयनुं खंडन करीए नहि त्यां सुधी सत्संगमां रहे अने खंडन करीए त्यारे अभाव लइने विमुख थाय. (४) अने जे पोताने आत्मसत्तारूप माने तेना विषयनुं खंडन करीए तोय तेने अमारो ने संतनो अभाव न आवे.(५) चोथामां जेवी तेवी वस्तुमां आनंद होय तेवो सारीमां न रहे ने मन मुंझाय तेने विषयनो अभाव छे. (६) पांचमामां आत्मनिष्ठा ने वैराग्य होय तथा सर्वना सुखथी अमारा सुखने अधिक जाणीने अमारे विषे जोडाय ते अमारो पाडयो पण पडे नहि ने अमारा संतनुं पण महात्म्य बहु समझे अने तेने मान पण रहे नहिं. (७) अने जेने आवो महिमा जाण्यामां न आव्यो होय तेने संतनी आगळ मान आवे छे. (८) अने जेने अमारुं ने संतनुं महात्म्य नथी समजाणुं तेनो विश्वास नहि एम कह्युं छे. (९) बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां मायाथी विपरीतपणुं थाय छे एम कह्युं ते केवी रीते थतुं हशे ?

१ उ० मायाना गुण जे काम, क्रोध, लोभ, मान, आदिक छे ते दोष जेमां रह्या होय ते दोषनुं भगवान के संत खंडन करे त्यारे पोताना दोषनो अभाव न ले ने भगवाननो ने संतनो अवगुण लइने पडी जाय अथवा श्रीजीमहाराजना द्वेषीनो योग थाय तो ते श्रीजीमहाराजना ने संतना अवगुण घाले तेणे करीने विमुख थाय अथवा कुसंगनो योग थाय तो सत्संग मुकी दे ए विपरीतपणुं जाणवुं.

२ प्र० (३ त्रीजा प्रश्नमां) देहाभिमानी देह मुकीने पण संतनो अवगुण लइने पडी जाय एम कह्युं ते देह मुक्या पछी अवगुण शी रीते लेवातो हशे ?

२ उ० देहाभिमानीनुं कल्याण थाय नहि माटे तेने फेर जन्म धरवो पडे ते फरीने जन्म धरे

त्यारे पण संतनो अवगुण ले मे पडी जाय.

३ प्र० (❝ पांचमा प्रश्नमां) पुरुष, काळ ने अक्षर कह्या ते कोने कोने जाणवा ?

३ उ० मूळपुरुषने पुरुष कह्या छे. ते पुरुषना कार्य ने नाश करी नाखे तेने काळ कह्या छे. अने मूळअक्षरने अक्षर कह्या छे.

४ प्र० गोलोकनुं ने प्रकृति पुरुषनुं सुख जुदुं जुदुं कह्युं ते गोलोकनुं सुख कियुं जाणवुं ? अने प्रकृति पुरुषनुं सुख कियुं जाणवुं ?

४ उ० गोलोकने विषे गोप गोपिका आदिक पार्षदोना सुखने गोलोकनुं सुख कह्युं छे. अने मूळमाया ने मूळपुरुषना सुखने प्रकृति पुरुषनुं सुख कह्युं छे पण ए बे लोक जुदा नथी, जेम नगरमां वस्ती होय ने राजानो दरबार होय तेम छे.

५ प्र० आमां अक्षरने पोतानी शक्ति कही अने (प्र० ७२ ना ❝ बीजा प्रश्नमां) अक्षरने पोतानी शक्तिए करीने धरी रह्या छीए एम कह्युं छे ते धरी रह्या छे ते शक्ति कइ जाणवी ? अने अक्षरने शक्ति कही ते कइ जाणवी ?

५ उ० आमां उपकरण शक्ति जे मूळअक्षर तेने शक्ति कही छे.अने (प्र० ७२ मां) पोताना तेजरूप अभेद शक्तिने कही छे ते अभेद शक्तिवडे करीने भेद शक्ति जे मूळ अक्षरादिक ते सर्वेने धरी रह्या छे अने पोते तो ते अभेद शक्ति जे पोतानुं तेज तेना पण आधार छे.

६ प्र० (❝ पांचमा प्रश्नमां) श्रीजीमहाराजनुं माहात्म्य समजतो होय ते श्रीजीमहाराजनो पाडयो पण श्रीजीमहाराजना चरणारविंदथी पडे नहि एम कह्युं ते श्रीजीमहाराज केवी रीते पाडे तोपण न पडे ?

६ उ० श्रीजीमहाराज पोतामे विषे दीर्घरोग बतावे तथा हारे, भागे, बीए, तथा अयोग्य क्रिया करे, एवां चरित्र करे तोपण मनुष्यभाव न आवे तथा अमे तो साधु के सत्पुरुष के मुक्त छीए ने भगवाननी मूर्तिने देखीए छीए पण भगवान नथी एम कहे तोपण लेशमात्र संशय थाय नहि ते भगवाननो पाडयो पण न पडयो कहेवाय.

७ प्र० एवा मोटा जे भगवान तेना साक्षात् उपासक ए संत छे एवो महिमा समजे भजता होय एवा संतनो जाणवो, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते साक्षात् उपासक एटले केवा जाणवा?

७ उ० साक्षात् भगवान जे श्रीस्वामिनारायण तेमना समीपमां सदाय रहेनारा ने एक क्षण वार पण मूर्तिनो वियोग न होय एवा संतने साक्षात् उपासक जाणवा. ।। १२५ ।।

संवत् १८७७ ना पोष शुदि १ पडवाने दिवस रात्रिने समे स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज गाम श्री लोया मध्ये सुराभक्तना दरबारमां ढोलिया उपर विराजमान हता अने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने बोकानी वाळी हती तथा गरम पोसनी राती डगली पहेरी हती तथा चोफाळे सहित रजाइ ओढी हती तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी सभा तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

ते समयमां संध्या आरती तथा स्तुति परमहंस करी रह्या पछी श्रीजीमहाराजे कह्युं जे कीर्तन गाओ पछी वाजींत्र वजाडीने मुक्तानंदस्वामी आदिक परमहंसे कीर्तन गायां ने पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, हवे कीर्तन राखो हवे तो अमे वार्ता करशुं ने
१ अमे आ वात करीए तेमां जेने आशंका उपजे ते पुछज्यो, एम कहीने बोल्या जे, (१) भगवाननो निश्चय थावो ते सौथी महा कठण छे ने निश्चयनी वार्ता अति अटपटी छे माटे कहेते बीक लागे छे जे शुं जाणीए वात करीए ने तेमांथी कोइने अवळुं पडे ने तेणे जे पोताना अंगनी दृढता करी होय ते अंग आ वाते करीने तुटी जाय तो ते मूळगेथी जाय ने ए वात कर्या विना पण चालतुं नथी अने ए वात जो समजतां न आवडे तो दूषण पण घणां आवे अने आ वात समजे नहि त्यां लगण तेना निश्चयमां पण काच्यप घणी रहे छे. (१) ते सारु वात करीए छइए जे भगवाने वाराहनो देह धार्यो ते भुंडनुं १ रूप ते अति कुरूप कहेवाय तथा मच्छावतार धार्यो त्यारे माछळा जेवुंज रूप हतुं तथा कच्छावतार धार्यो त्यारे धीजा काचवा जेवुंज रूप हतुं तथा नृसिंहावतार धार्यो त्यारे वाघना जेवुं भयानक रूप हतुं तथा वामनावतार धार्यो त्यारे ते वामन रूपना हाथ पग टुंका ने केड्य भिंगी ने शरीर भिंगुं एवा टुंकडा हता तथा व्यासावतार धार्यो त्यारे ते व्यास काळा हता ने शरीरमां सुवाळा घणा हता ने शरीर गंधातुं हतुं इत्यादिक जे भगवाने आकृतियो धारण करी हती त्यारे तैने ते काळे जे जे मळ्या तेमणे तेवा तेवा रूपनुं ध्यान कर्युं छे अने ते ध्याने करीने ते ते भगवानना रूपने पाम्या छे. तेमां जे वाराहने मळ्या ते शुं धामने विषे भगवानने वाराह रूपज देखे छे ? अने मच्छजीने मळ्या ते शुं धामने विषे मच्छ रूपज देखे छे ? अने कूर्मने मळ्या ते शुं धामने विषे कूर्म रूपज देखे छे ? अने नृसिंहने मळ्या ते शुं धामने विषे नृसिंह रूपज देखे छे?अने हयग्रीवने मळ्या ते शुं धामने विषे घोडा रूपज देखे छे? अने जेणे वाराहने पतिभावे भज्या ते शुं भुंडण थइ ? अने सखा भावे भज्या ते शुं भुंड थयो ? अने मच्छने पति भावे भज्या ते शुं माछळी थइ ? ने सखा भावे भज्या ते शुं माछळो थयो ? ने कूर्मने पतिभावे भज्या ते शुं काचबी थइ ? ने सखा भावे भज्या ते शुं काचबो थयो ? अने नृसिंहने पतिभावे भज्या ते शुं सिंहण थइ ? अने सखा भावे भज्या ते शुं वाघ थयो? ने हयग्रीवने पतिभावे भज्या ते शुं घोडी थइ ? ने सखा भावे भज्या ते शुं घोडो थयो? माटे जो भगवाननुं मूळरूप वाराहादिक जेवुंज होय तो तो ते ते अवतारना भक्तोने तेना ध्याने करीने तदाकारपणुं थाय त्यारे तो कह्युं तेमज थयुं जोइए पण ए वात एम नथी त्यारे तमे कहेशो जे ते भगवाननुं केवुं रूप छे ? तो कहीए छइए जे भगवान तो सच्चिदानंदरूप छे ने तेजोमय मूर्ति छे अने जेना एक एक रोमने विषे

कोटी कोटी सूर्य जेवा प्रकाश छे ने कोटी कामदेवने पण लज्जा पमाडे एवा ते भगवान रूपाळा छे ने अनंत कोटी ब्रह्मांडना पति छे, राजाधिराज छे, सर्वेना नियंता छे, सर्वेना अंतर्यामी छे अने अतिशे सुखरूप छे ने जेना सुखनी आगळ अनंत रूपवान स्त्रियोने जोयानुं जे सुख ते तुच्छ थइ जाय छे अने आ लोक परलोक संबंधी जे पंच विषयनां सुख ते भगवाननी मूर्तिना सुख आगळ तुच्छ थइ जाय छे, एवुं भगवाननुं स्वरूप छे ते स्वरूप सदा द्विभुजज छे ने पोतानी इच्छाए करीने क्यारेक चतुर्भुज पण जणाय छे, अष्टभुज पण जणाय छे ने सहस्रभुज पण देखाय छे ने तेज भगवान मच्छ, कच्छ वाराहादिक रूपने तथा रामकृष्णादिक रूपने कोइक कार्यने अर्थे धारण करे छे पण जे पोतानुं मूळरूप छे तेने तजीने ए अवतारनुं धारण नथी करता तेज भगवान पोते अनंत ऐश्वर्य ने अनंत शक्ति सोताज मच्छ कच्छादिक रूपने धारण करे छे अने जे कार्य निमित्त जे देहनुं धारण कर्युं होय ते कार्य थइ रहे छे त्यारे ते देहनो त्याग पण करे छे ते भागवतमां कह्युं छे ।। भूभारः क्षपितो येन तां तनुं विजहावजः । कंटकं कंटकेनैवद्वयं चापीशितुः समम् ।। जे, जे देहे करीने भगवाने पृथ्वीनो भार उतार्यो तथा जीवोने देहाभिमानरूपी जे चैतन्यमां कांटो खुंची रह्यो हतो तेने काढीने ने काढवाना कांटा रूप जे पोतानो देह तेने पण त्याग कर्यो अने राक्षसने मारवाने अर्थे भगवाने नृसिंहरूप धार्युं अने पछी ते कार्यने करीने पछी ते देहनो त्याग करवाने इच्छया पण ते सिंहने कोण मारे? पछी पोतानी इच्छाए करीने काळरूप शिव ते शरभनुं रूप धारीने आव्या ने नृसिंहने ने शरभने युद्ध थयो पछी बेय जणे देह मुक्यो तेणे करीने शिव शरभेश्वर महादेव थया ने नृसिंहजीए देह मुक्यो ते नारसिंही शिला थइ, माटे चित्रामणमां ज्यां ज्यां मच्छ कूर्मादिक भगवानना अवतारनां चित्रामण करे छे त्यां त्यां थोडोक मच्छ कच्छादिकनो आकार करीने पछी ते उपर शंख, चक्र, गदा, पद्म, वैजयंती माळा पीतांबर, वस्त्र, किरीट, मुगट, श्री वच्छनुं चिन्ह इत्यादिक चिन्हे सहित भगवाननी मूर्तिने लखे छे तो जो भगवाननुं रूप अनादि एवुंज छे अने श्रीकृष्ण भगवाने प्रथम जन्म समयमां वसुदेव देवकीने चतुर्भुजरूपे दर्शन दीधुं ने अक्रूर ने चतुर्भुज रूपे दर्शन जळने विषे दीधुं तथा रुक्मणीने मूर्छा आवी त्यारे पण चतुर्भुज रूपे दर्शन दीधुं अने अर्जुने पण एम कह्युं जे ।। तेनैवरूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते ।। माटे अर्जुन पण चतुर्भुज रूपे देखता अने यादवास्थळी करीने पींपळानी हेठे श्रीकृष्ण भगवान बेठा हता ते समयमां उद्धवजीए तथा मैत्रेयऋषिए भगवाननुं स्वरूप शंख, चक्र, गदा, पद्म, पीतांबर सहित दीठुं अने श्रीकृष्ण भगवान तो श्याम हता ने तेनुं रूप तो कोटी कामने लज्जा पमाडे एवुं कह्युं छे, माटे एवा मनुष्य जेवा जणाय छे तेने विषे

ज पूर्वे कह्यो एवो प्रकाश ने सुख ते सर्वे रह्यां छे ते जेने ध्यान धारणा समाधिनुं अंग
होय तेने एनीए मूर्ति छे तेज कोटी कोटी सूर्यना प्रकाशे युक्त देखाय छे पण मशाल
दीवानुं काम पडतुं नथी अने एवो प्रकाश ए भगवानने विषे छे ने ते नथी देखातो ते तो
ए भगवाननी एवी इच्छा छे अने ए भगवान इच्छे जे, एवो प्रकाशवान हुं आ भक्तने
देखाडुं तो ते प्रकाशे युक्त एवी एज मूर्तिने देखे छे, माटे जेने भगवाननो निश्चय होय
ते तो एम समजे जे, गोलोक, वैकुंठ, श्वेतद्वीप, ब्रह्मपुर ए धामनां जे ऐश्वर्य, समृद्धि
तथा पार्षद तेणे सहित ए भगवान छे ने एमनी सेवाना करतल तो राधिका, लक्ष्मी
आदिक छे, एवा परम भावे सहित भगवानने देखे छे ने जे मूढ छे ते माणस जेवा
देखे छे ते श्रीकृष्ण भगवाने गीतामां कह्युं छे ॥ अवजानंति मां मूढा मानुषींतनुमाश्रि-
तं । परंभावमजानंतो ममभूतमहेश्वरम् ॥ माटे जे मूढ छे ते भगवानना एवा परम भावने
जाण्या विना भगवानने विषे पोताना जेवा मनुष्यना भावने परठे छे ते मनुष्य भाव
ते शुं तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, आशा तृष्णा इत्यादिक अंतःकरणना
भाव छे तथा हाड, चाम, मळमूत्रादिक तथा जन्म, मरण, बाळ, यौवन वृद्ध ए सर्वे
देहना भाव छे इत्यादिक जे मनुष्य भाव ते सर्वे भावने भगवानने विषे परठे छे, माटे
एवा भावनो परठनारो जे होय तेने भगवानना निश्चय जेवुं जणाय छे तोपण तेनो नि-
श्चय काचो छे ने ए जरूर सत्संगमांथी पडशे अने ए भगवान तो परम दिव्य मूर्ति छे
ने भगवानने विषे तो मनुष्य भावनो लेश नथी, माटे ए भगवानमांथी मनुष्य भावने टाळीने
देव भाव लाववो, पछी ब्रह्मादिकनो भाव लाववो, पछी प्रधान पुरुषनो भाव आवे,
पछी प्रकृतिपुरुषनो भाव आवे, पछी अक्षरनो भाव आवे, पछी अक्षरातीत
एवा पुरुषोत्तम तेमनो भाव आवे छे, जेम व्रजना गोपने आश्चर्यरूप श्रीकृष्ण भगवा-
ननां चरित्र देखीने प्रथम तो देव भाव आव्यो पछी गर्गाचार्यना वचनने संभारीने
नारायणनो भाव आव्यो, पछी एम कह्युं जे, तमे तो नारायण छो, माटे अमने तमारुं
धाम देखाडो त्यारे अक्षरधाम देखाड्युं, एवी रीते आ भगवानने विषे जेने दिव्य भाव छे
तेने पुरो निश्चय जाणवो. (२) अने एम कहे छे जे, आने प्रथम भगवाननो निश्चय न २
होतो ने हवे थयो ते शुं ए प्रथम भगवानने नहोतो देखतो? देखतो तो हतो पण मनुष्य
भावे सहित देखतो हतो ने पछी ज्यारे निश्चय थयो त्यारे दिव्य भावे सहित दर्शन
कर्युं त्यारे एने निश्चय थयो जाणवो. अने ज्यारे भगवानने विषे एवो दिव्य भाव न समजे
त्यारे एने वाते वाते घोखो थाय ने गुण अवगुण लीधा करे छे जे, आनी कोरनो पक्ष
राखे छे ने अमारो पक्ष राखता नथी तथा आने बहु बोलावे छे ने अमने नथी बोला-
वता ने आने उपर बहु हेत छे ने अमारी उपर नथी. एवी रीते गुण अवगुण परठ्या
करे छे तेणे करीने एवुं अंतर दिवसे दिवसे पाडुं पडीने अंते ते विमुख थाय छे, माटे

भगवानने विषे तो मनुष्य भाव नज परठवो अने भगवानना भक्तने विषे पण मनुष्य भाव न परठवो, कांजे देहे करीने तो भगवानना भक्तमां कोइक आंधळो होय, लुलो होय,कोडियो होय,बहेरो होय, वृद्ध होय,कुरूप होय, ने ते ज्यारे देह मुके छे त्यारे शुं भगवानना धाममां एवा आंधळा लुलाज रहे छे? नथी रहेता.एतो सर्वे मनुष्यपणाना भाव छे तेने मुकीने दिव्यरूप थाय छे,ब्रह्मरूप थाय छे,माटे हरिना भक्तने विषे मनुष्य भाव न परठाय तो परमेश्वरने विषे केम परठाय?अने आ जे वात छे ते सुझेतो आज समझो तो एटली समझवी छे ने सुझे तो सो वर्षे करीने समझो तो पण एटली समझवी छे अने आ वात समझीने एनी दृढतानी गांठ पड्या विना छुटको नथी, माटे आ अमारी वात छे ते सर्वे हरिभक्तने याद राखीने परस्पर करवी ने ज्यारे कोइने अणसमझणे करीने धोखो थाय त्यारे तेने आ वाते करीने चेतावी देवो अने आ जे अमारी वार्ता छे तेने नित्य प्रत्ये दिवसमां एकवार करवी एम अमारी आज्ञा छे तेने भुलशो मां, जरुर भुलशो मां, एम कहीने श्रीजीमहाराज सर्व भक्तने जय स्वामीनारायण कहीने हसता थका पोताने उतारे पधार्या, (३) इतिवचनामृतम्. ॥१८॥ [१२६] ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य [१] छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे निश्चयनी वात समजतां न आवडे तो अमारे विषे मनुष्यभाव रही जाय ने अमने बीजा अवतारना जेवा जाणे तो दूषण आवे. (१) ने मच्छादिकना दृष्टांत पूर्वक पोतानो दिव्य भाव कह्यो छे जे अमे मनुष्य जेवा देखाइए छीए पण अमारा धामने विषे सच्चिदानंद प्रकाशमय मूर्ति छीए अने अनंत कोटी ब्रह्मांडना पति राजाधिराज, सर्वनियंता, सर्वांतर्यामी, अतिशे सुखरूपने सदा द्विभुज छीए ने अमारी इच्छाए क्यारेक चतुर्भुजादिक तथा रामकृष्णादिक रूप धारण करीए छीए अने कार्य थइ रह्या पछी अदृश्य करीए छीए अने श्रीकृष्ण भगवान चतुर्भुज छे अने मच्छादिक सर्व चतुर्भुज अवतारोना नियंता छे अने श्रीकृष्णने दृष्टांते पोतानुं दिव्यपणुं कह्युं छे जे,अमे मनुष्य जेवा जणाइए छीए पण अमारे विषे अति प्रकाश ने सर्व सुख रह्यां छे ते ध्यान धारणा ने समाधिवान अमने प्रकाशे युक्त देखे छे अथवा अमारी इच्छाथी पण अमे तेजोमय देखाइए छीए अने श्रीकृष्ण भगवानने दृष्टांते कह्युं छे के मूढ जीव अमने मनुष्य जेवा जाणे छे तेमने अमारो निश्चय नथी अने ते जरुर सत्संगमांथी पडशे ने अमारे विषेथी मनुष्य भाव टाळीने दिव्य भाव करे तोज पुरो निश्चय कहेवाय. [२] अने अमने दिव्य जाणीने दर्शन करे तेनेज अमारो निश्चय जाणवो ने त्यारेज एने धोखो न थाय ने गुण अवगुण न आवे ने विमुख न थाय माटे अमने ने पंच वर्तमाने युक्त अमारा भक्तने दिव्य जाणवा, एवी रीते पोतानुं दिव्य ने सर्वोपरिपणुं प्रतिपादन कर्युं छे. ने दिवसमां एक वार ए वात करवानी आज्ञा करी छे. (३) वाक्यो छे.

१ प्र० बीजी वाक्यमां अमारी इच्छाए चतुर्भुजादिक देखाडीए छीए अने मच्छ, कूर्म, राम-

कृष्णादिक रूप धारण करीए छीए एम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

१ उ० पोताने विषे भगवानपणानो निश्चय कराववा सारु श्रीजीमहाराज चतुर्भुज, अष्टभुज, सहस्रभुज रूपे तथा रामकृष्णादिक अवतारोरूपे देखाय ने निश्चय रूप कार्य कर्या पछी ते रूप अदृश्य करे अने रामकृष्णादिक जे पोताना आविर्भाव ते द्वारे प्रगट थाय त्यारे ते अवतारो पण तेमनो निश्चय कराववा सारु चतुर्भुजादिक रूपे ने मच्छ कच्छादिकरूपे दर्शन आपे ने पछी ते रूप अदृश्य करे ते सर्वे अवतारोने विषे पोतानी सत्ता रही छे, माटे रामकृष्णादिक रूपे प्रगट थइए छीए एम कह्युं छे अने पोते तो पोताना तेजरूप अक्षरधाममां सदा द्विभुजरूपे अखंड विराजमान रहे छे.

२ प्र० प्रथम अनादि द्विभुज कह्या अने पछीथी अनादि चतुर्भुज कह्या ते केम समजवुं ?

२ उ० अनादि द्विभुज श्रीजीमहाराजे पोताने कह्या छे अने पछीथी अनादि चतुर्भुज कह्या ते श्रीकृष्ण भगवानने कह्या छे ते एज वातमां कह्युं छे जे, श्रीकृष्ण भगवाने वसुदेव, देवकी,अक्रूर अने रुक्मिणीने चतुर्भुजपणे दर्शन आप्युं ने अर्जुन सहाय चतुर्भुजरूपे देखता ने उद्धवजीए ने मैत्रेय ऋषिए पण चतुर्भुज रूपे दीठा एम कह्युं ते मच्छ, कच्छ, वामन, राम,दत्त,कपिलादिक सर्वे चतुर्भुज अवतारोना अवतारी अनादि चतुर्भुज श्रीकृष्ण छे एटला माटे मच्छ कूर्मादिकनां चतुर्भुजरूपे चित्रामण करे छे ते चतुर्भुज श्रीकृष्णना अने वासुदेव ब्रह्म तथा मूळअक्षर ए द्विभुज अवतारोना अवतारी अनादि द्विभुज श्रीजीमहाराज छे.

३ प्र० जेने अमारो निश्चय होय ते अमने गोलोक, वैकुंठ, श्वेतद्वीप, ब्रह्मपुर ए धामनां ऐश्वर्य, समृद्धि तथा पार्षद तेणे सहित समझे अने राधिका, लक्ष्मी आदिक सेवा करे छे एवा परम भावे सहित देखे छे एम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

३ उ० श्रीजीमहाराज जीवोना आत्यंतिक कल्याणने अर्थे आंही मनुष्य रूपे दर्शन आपे छे तेमना भेळा गोलोक, वैकुंठ श्वेतद्वीप तथा ब्रह्मपुरादिक सर्वे धामोना अधिपति ते पार्षदो तथा समृद्धि ऐश्वर्य सहित भावे छे ते सर्वे श्रीजीमहाराजनी सेवा करे छे एवा श्रीजीमहाराजने दिव्यभावे सहित सर्वोपरी जाणवा ते परम भावे सहित जाण्या कहेवाय ते (म० ५८ ना पहेला प्रश्नोत्तरमां) छे.

४ प्र० अमारां दिव्य चरित्र देखीने अमारे विषे दिव्य भाव आवे छे, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते केवां चरित्रथी दिव्य भाव आवतो हशे ?

४ उ० श्रीजीमहाराजे समाधियो करावीने सर्वे अवतारोने पोतानी स्तुति करता देखाड्या तथा ते अवतारोने पोताने विषे लीन करी देखाड्या, एवां आश्चर्य जोइने सर्वे अवतारोना अवतारी जाण्यामां आवे अने ज्यारे मुक्तनो समागम करे त्यारे ब्रह्मकोटी, मूळअक्षर कोटी ए सर्वेथी पर अक्षरातीत पुरुषोत्तम छे एम जाण्यामां आवे छे.

५ प्र० श्रीकृष्ण भगवाने पोतानुं अक्षरधाम देखाड्युं एम कह्युं ते अक्षरधाम कियुं समजवुं ?

५ उ० एमणे पोतानुं गोलोक धाम देखाड्युं हतुं तेने आ ठेकाणे अक्षरधाम नामे कह्युं छे.

६ प्र० श्रीजी वातमां दिव्यभावे सहित दर्शन करे त्यारे निश्चय थयो जाणवो, एम कह्युं ते

भगवानने दिव्य तेजोमय देखता हशे के मनुष्य रूपेज देखता हशे ?

६ उ० पोतानी समजणमां दिव्य भाव लावीने दर्शन करे तेनो निश्चय परिपक्व जाणवो ने मनुष्यभावे तथा प्रतिमा भावे दर्शन करेतो तेनो निश्चय काचो कहेवाय, माटे भगवान तो मनुष्य रूपे तथा प्रतिमा रूपे जेवा देखाता होय तेवाज देखाय पण समजणमां दिव्य भाव लाववो तो पाको निश्चय कहेवाय, अने ज्यारे पोताना आत्मानी श्रीजीमहाराजना तेज साथे एकता करीने श्रीजीमहाराजनुं ध्यान करे, त्यारे महा तेज जेवो थाय त्यारे ते मूर्तिने सर्वत्र ज्यां जुवे त्यां तेजोमय देखे.

७ प्र० आ अमारी वार्ता नित्य प्रत्ये दिवसमां एकवार करवी एम श्रीजीमहाराजे आज्ञा करी ते वात कइ जाणवी ? अने जय स्वामिनारायण कहीने हसता थका पोताने उतारे पधार्या ते हसवानुं कारण शुं हशे ?

७ उ० श्रीजीमहाराज तथा तेमना भक्त मनुष्यरूपे जणाय छे तेमने जेवा अक्षरधाममां दिव्य तेजोमय छे तेवा समजाववा एम आज्ञा करी छे. अने पोताने विषेथी तथा पोताना भक्तोने विषेथी मनुष्य भाव टळावीने दिव्य भाव ने सर्वोपरिपणुं समजाव्युं तेथी बहु प्रसन्न थइने हस्या छे. ॥ १२६ ॥

इतिश्रीकच्छदेशे वृषपुरनिवासी अनादिमुक्तराज श्रीअबजीभाइविरचित साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम भगवान श्रीस्वामिनारायण मुखकमळनिःसृत वचनामृत रहस्यार्थप्रदीपिकायां लोया प्रकरणं समाप्तम्.

॥ अथ वचनामृत पंचाळा प्रकरणम् ॥

संवत् १८७७ ना फागण शुदि ४ चोथने दिवस श्रीजीमहाराज गाम श्री पंचाळा मध्ये झीणाभाइना दरबारमां ओटा उपर ढोलियो ढळावीने विराजमान हता ने मस्तक उपर धोळो फेंटो बांध्यो हतो तथा धोळो अंगरखो पहेर्यो हतो तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा धोळी पछेडी ओढी हती अने माथाना फेंटानो पेच जमणी कोरे छुटो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

ते समयमां संध्या आरती थइ रही ते केडे श्रीजीमहाराज तकिया उपर विराजमान थइने बोल्या जे अमे आ सर्वे मोटा परमहंस तथा मोटा हरिभक्तने प्रश्न पूछीए छ-
१ इए जे, (१) भगवानमां हेत होय तथा धर्ममां निष्ठा होय तो पण जो विचारने न पाम्यो होय तो अति सारा जे शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध ए पंच विषय ते अतिशे भुंडा

जे शब्दादिक पंच विषय ते सरखा थाय नहि अथवा तेथी अतिशे उतरता पण थाय नहि, माटे किया विचारने पामे त्यारे अति सारा जे पंच विषय ते अतिशे भुंडा जे पंच विषय ते सरखा थइ जाय अथवा ते करतां पण अतिशे भुंडा थइ जाय ? ए प्रश्न सर्वे मोटेरा परमहंस तथा सर्वे मोटेरा हरिभक्तने अमे पुछीए छइए ते जेणे जे विचारे करीने ए सारा पंच विषयने भुंडा पंच विषय जेवा जाण्या होय अथवा भुंडाथी पण अतिशे भुंडा जाण्या होय ते जे पोतपोतानो विचार ते कहो? पछी ते सर्वे परमहंसे तथा सर्वे हरिभक्ते पोतपोतानो विचार कही देखाडयो, त्यार पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे तमारो सर्वेनो तो ए विचार सांभळ्यो पण हवे अमे जे विचार कर्यो छे ते कहीए छइए जे, जेम कोइकनो कागळ परदेशथी आव्यो होय तेने वांचीने ते कागळना लखनारानी जेवी बुद्धि होय तेवी जणाइ आवे छे, तथा जेम पांच पांडव, द्रौपदी, कुंताजी तथा रुक्मणी, सत्यभामा, जांबुवती आदिक भगवाननी पटराणीयो तथा सांब जे भगवाननो पुत्र इत्यादिक भक्तनां रूप तथा वचन ते शास्त्रमां लख्यां छे ते शास्त्रने श्रवणे करीने तेमना रूपनुं प्रमाण ते दर्शन जेवुंज थाय छे तथा तेमने वचने करीने तेमनी बुद्धिनुं प्रमाण थाय छे, तेम पुराण भारतादिक ग्रंथे करीने एम सांभळवामां आवे छे जे, भगवान जे ते आ जगतनी जे उत्पत्ति, स्थिति ने प्रलय तेना कर्त्ता छे ने सदा साकार छे, अने जो साकार न होय तो तेने विषे कर्त्तापणुं कहेवाय नहि, अने जे अक्षरब्रह्म छे ते तो ए भगवानना अंगनो प्रकाश छे अथवा एमने रहेवानुं धाम छे, एवा दिव्य मूर्ति प्रकाशमय ने सुख रूप जे भगवान ते जे ते माया थकी जीवोने सृजिने तेने बुद्धि,इंद्रियो, मन, प्राण ते आपे छे ते शाने अर्थे आपे छे तो उत्तम, मध्यम ने कनिष्ठ जे विषय तेना भोगने अर्थे ने मोक्षने अर्थे आपे छे अने ए जीवोने अर्थे भोग ने भोगनां स्थानक ते भगवाने रच्यां छे तेमां जे उत्तम पंच विषय कर्या छे ते भुंडा पंच विषयना दुःखनी निवृत्तिने अर्थे कर्या छे, जेम कोइक मोटे शाहुकार होय ते रस्ताने बेय कोरे छायाने अर्थे झाड रोपावेछे तथा पाणीनी परब बंधावेछे तथा सदाव्रत करावेछे तथा धर्मशाळा करावे छे ते गरीब सारु करावे छे, तेम ब्रह्मा, शिव ने इंद्रादिक देव छे ते तो ए भगवाननी आगळ जेवा सडताळानां रांक होय ने पीपरनी टेटी वाफीने खाता होय ते जेवा गरीब छे ते ब्रह्मादिक देव मनुष्यना सुखने अर्थे उत्तम एवा पंचविषय ते भगवाने रच्या छे ने जेम शाहुकारे सदाव्रत, धर्मशाळादिकमां सुख जेवां रांकने अर्थे रच्यांछे ते करतां ते शाहुकारना घरमां सुख ते अतिशे उत्तम हशे एम जणाय छे, तेम ए भगवाने ब्रह्मादिकने अर्थे एवां सुख रच्यांछे तो पोताना धाममां तो ए करतां अति उत्तम सुख हशे एम बुद्धिवाळो होय तेने जाण्यामां आवेछे, माटे ए भगवानना धामना

सुखनुं अतिशेपणुं बुद्धिवानने जाण्यामां आवे छे तेणे करीने सारा विषय ते भुंडा थइ जायछे अने संसारमां जे पशु, मनुष्य, देवता, भूत इत्यादिक ज्यां ज्यां पंच विषय संबंधी सुख जणाय छे ते धर्मे सहित जे किंचित् भगवाननो संबंध तेणे करीने छे पण पंडे भगवानमां जेवुं सुख छे तेवुं कोइने विषे नथी, जेम आ मशाल बळे छे ते मशालने समीपे जेवो प्रकाश छे तेवो थोडेक छेटे नथी अने तेथी घणे छेटे तो मूळगो नथी, तेम बीजे ठेकाणे तो किंचित् सुख छे ने संपूर्ण सुखतो भगवानना समीपमां रह्युं छे अने जेटलुं भगवानथी छेटे थवाय छे तेटला सुखमां न्यूनता थाय छे, माटे जे मुमुक्षु होय ते पोताना हृदयमां एम विचारे जे, जेटलुं मारे भगवानथी छेटुं थाशे तेटलुं दुःख थाशे ने महादुःखीयो थाइश ने थोडेक भगवानने संबंधे करीने एवुं सुख थाय छे, माटे मारे भगवाननो संबंध अतिशे राखवो छे ने हुं अति संबंध राखीश तो मारे उत्कृष्ट सुखनी प्राप्ति थाशे एम विचारीने, ने भगवानना सुखनो लोभ राखीने, जेम भगवाननो संबंध अतिशे रहे तेम उपाय करे तेने बुद्धिवान कहीए. अने पशुना सुखथी मनुष्यमां अधिक सुख छे ने ते करतां राजानुं सुख अधिक छे ने तेथी देवतानुं सुख अधिक छे ने तेथी इंद्रनुं अधिक छे ने तेथी बृहस्पतिनुं ने तेथी ब्रह्मानुं ने तेथी वैकुंठ लोकनुं ने तेथी गोलोकनुं सुख ते अधिक छे ने तेथी भगवानना अक्षरधामनुं सुख अति अधिक छे, एवी रीते भगवानना सुखने अतिशे जाणीने बीजां जे जे पंच विषयनां सुख तेने विषे बुद्धिवानने तुच्छता थइ जाय छे ने ते भगवानना सुख आगळ ब्रह्मादिकनुं सुख तो जेवुं भारे गृहस्थने बारणे कोइक रांक टीकरुं लेइने मागवा आव्यो होय तेना जेवुं छे अने ए भगवानना धामना सुखनो ज्यारे विचार करीए छइए त्यारे सर्व जे बीजां सुख तेथी उदास थइने मनमां एम थाय छे जे, आ देह मुकीने ए सुखने क्यारे पामीए ? अने स्वाभाविकपणे पंच विषयनुं ग्रहण करता होइए तेमां तो कांइ शाश्रो विचार थातो नथी पण जो ते विषयमां कांइक सारप्य मनाय छे त्यारे तुरत ए भगवानना सुखमां दृष्टि पुगी जाय छे ने मन अति उदासी थइ जाय छे. अने आ जे सर्वे वात छे ते जे बुद्धिवाळो होय तेने जाण्यामां आवे छे माटे बुद्धिवाळा उपर अमारे हेत छे. केम जे अमे बुद्धिवाळा छइए तो एवी रीते अमारी दृष्टि पुगे छे माटे बुद्धिवाळो जे होय तेनी पण दृष्टि पुगे खरी, अने आवी रीते अमारो विचार ते तमारा सर्वेना विचार करतां अमने अधिक जणाणो छे ते सारु आ अमारा विचारने अति दृढपणे करीने हैयामां सौ राखज्यो.(१) १
अने आ विचार विना तो जो रमणीक पंच विषयमां वृत्ति चोटी होय तेने अति बळे करीने उखेडे त्यारे मांड मांड उखडे अने जो आ विचारने पाम्यो होय तो ते वृत्तिने खेंच्यामां लेश मात्र प्रयास पडे नहिं, सहेजेज विषयनी तुच्छता जणाइ जाय छे अने

आ बे वार्ता छे ते जेने झाझी बुद्धि होय ने झाझा सुखना लोभने इच्छे तेने समझाय छे, जेम कोडी करतां पैसामां वधु माल छे ने तेथी रुपैयामां वधु माल छे ने तेथी सोनामोरमां वधु माल छे ने तेथी चिंतामणिमां वधु माल छे, तेम ज्यां ज्यां पंच विषयनुं सुख छे तेथी भगवानना धाममां भगवाननुं सुख अति अधिक छे, माटे जे बुद्धिवाळो होय ने जेनी दृष्टि पुगे तेने आ विचार हृदयमां ठरे छे. अने आ विचार जेना हृदयमां दृढ ठर्यो होय ने तेजो स्मशानमां बेठो होय तो पोताने एम जाणे जे हुं अनंत माणस तथा राज्य समृद्धिए विटाणो छुं, एम समजे पण दुःखियो न माने अने इंद्रना लोकमां होय तो जाणे जे वनमां बेठो छुं पण ते इंद्रना लोकना सुखे करीने सुखियो न माने ने ते सुखने तुच्छ जाणे ते सारु आ विचारने राखीने एम सर्वे निश्चय राखज्यो जे, हवे तो भगवानना धाममांज ठेठ पुगवुं छे पण वचमां कोइ ठेकाणे तुच्छ जे पंच विषय संबंधी सुख तेमां लोभावुं नथी, एवी रीते सौ दृढ निश्चय राखज्यो अने आतो जे अमारो सिद्धांत छे ते तमने सर्वेने कह्यो छे माटे दृढ करीने राखज्यो. (२) इतिवचनामृतम्. ॥१॥. (१२७) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के अमारे विषे हेतने धर्ममां निष्ठा होय तो पण अमारा महिमा रूपी विचारने न पाम्यो होय तो सारा ने भुंडा विषय सरखा न थाय अने सारा विषय भुंडाथी पण भुंडा न थाय. अने अमारा अंगनो एटले अमारो प्रकाश तेज अक्षर ब्रह्म छे तथा अमारे रह्यानुं धाम छे अने अमने सर्वकर्त्ता सदा साकार दिव्य मूर्तिमान जाणे ने सर्वना सुखथी अमारा सुखने अतिशे अधिक जाणे ने सर्वने सुखना दाता जाणे तो अमारा सुख विना बीजां सर्वे सुख अतिशे तुच्छ थइ जाय (१) अने आवो महिमा न जाणे तो रमणिक विषयमांथी वृत्ति मांडमांड उखडे अने आवो महिमा समजे तो विषयनी तुच्छता थइ जाय. (२) बाबतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां सारा अने भुंडा अने भुंडाथी भुंडा विषय कह्या ते किया जाणवा? अने सारा विषय ते भुंडाथी भुंडा केवी समजणे जणाय?

१ उ० प्रकृति पुरुष तथा प्रधान पुरुषना विषय सारा जाणवा अने वैराट् ने ब्रह्माना भुंडा एटले उतरता जाणवा अने इंद्र तथा मनुष्यादिकना भुंडाथी भुंडा जाणवा. अने जेनी श्रीजीमहाराजना सुखमां दृष्टि पहोंची होय ते वैराटादिकनी आयुष्य आ लोकथी लांबी जाणे तेथी आ लोकना विषयथी वैराटादिकना विषयने वधारे बंधनकारी जाणे तेथी भुंडा लागे ने तेथी प्रधानपुरुष तथा प्रकृति पुरुषना लोकमां घणी लांबी आयुष्य छे, माटे तेना वैभवने अतिशे बंधनकारी जाणे तेथी ते विषय आ लोकना विषयथी अतिशे भुंडा लागे अने ब्रह्मकोटी ने अक्षर कोटीनां ऐश्वर्य छे ते पण श्रीजीमहाराजनुं सुख पामवामां बंधनकारी छे, माटे ते ऐश्वर्यनी पण सारप्य न राखवी.

२ प्र० देवलाथी भूतनां सुख अधिक कह्यां ते भूत कियां जाणवां?

२ उ० प्रजापति, ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा वैराज पुरुष ते सर्वे देवता छे ते पृथ्वीना आवरणनी अंदर रह्या छे. तेमना करतां पृथ्वी, जळ, तेज, वायु, आकाश ए पांच भूत छे ते वैराजथी पर छे ने तेमना लोकमां ते सर्वे मूर्तिमान छे तेमनां सुख अधिक छे.

३ प्र० मशालने दृष्टांते करीने बीजा देवता आदिकना लोकमां सुख छे तेथी अमारा धाममां अति अधिक सुख छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

३ उ० श्रीजीमहाराजने समीपे एटले पासे सुख अधिक छे अने थोडेक छेटे एटले मूळअक्षरादिकना लोकमां श्रीजीमहाराजना सुखथी ओछुं सुख छे, पण जेम प्रकाश एनोए छे तेम जे श्रीजीमहाराजनुं सुख छे तेनुं ते सुख अक्षरादिकमां छे एम नथी कह्युं अने घणे छेटे एटले मायामां तो सुख छेज नहि, एम कह्युं छे. ते सर्वेना सुखनी तारतम्यता (लो० १७ ना ४ पांचमा प्रश्नमां) कही छे.

४ प्र० बीजी बाबतमां कोडी आदिकने दृष्टांते सुख कह्यां ते कोनां कोनां जाणवां ?

४ उ० कोडीने दृष्टांते मायिक सुख जाणवुं अने पैसाने दृष्टांते मूळपुरुषादिक इश्वरनां सुख जाणवां ने रुपैयाने दृष्टांते ब्रह्मकोटीनां सुख जाणवां अने सोनामोरने दृष्टांते अक्षरकोटीनां सुख जाणवां अने चिंतामणिने दृष्टांते श्रीजीमहाराजनुं सुख जाणवुं. (१२७)

संवत् १८७७ ना फागण सुदि ७ सातमने दिवस गाम श्री पंचाळा मध्ये झीणाभाइना दरबारमां ओटा उपर ढोलियो ढाळ्यो हतो ते उपर श्रीजीमहाराज विराजमान हता अने धोळो फेंटो मस्तक उपर बांध्यो हतो तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा धोळी पछेडी ओढी हती अने परमहंसनी सभा तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने श्रीजीमहाराजना मुखारविंदनी आगळ बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, मोक्षधर्मनुं पुस्तक मगावो तो सांख्यना अध्यायनी तथा योगना अध्यायनी कथा करावीए, ए वचनने सांभळीने पुस्तक मगाव्युं पछी

१ नित्यानंदस्वामीए कथा करवानो आरंभ कर्यो. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) योगवाळा छे ते पचवीशमा जीव ईश्वरने कहे छे ने छवीशमा परमात्माने कहे छे अने सांख्यवाळा छे ते चोवीश तत्त्वने अवांतर जीव ईश्वरने कहीने पचवीशमा परमात्माने कहे छे तेमां जे योगवाळा छे तेनो एम मत छे जे, सुखे एवो आत्मा अनात्मानो विचार करो साधन करो पण प्रत्यक्ष भगवानना आश्रय विना मोक्ष न थाय. अने सांख्यवाळानो एम मत छे जे, सर्वे देव मनुष्यादिकनी जे गतियो तेने जाणीने ने विषयने विषे वैराग्यने पामीने त्रण देह थकी पर एवो जे आत्मा तेने जाणे त्यारे मुक्त थाय. अने ए बे प्रकारना जे मत छे तेने पोतपोताना मतमां बे दूषण छे तेना निवारणने अर्थे युक्तिनुं ग्रहण करवुं. तेमां योग मतमां ए दूषण छे जे, जीवने पचवीशमो कह्यो तथा ईश्वरने पचवीशमो कह्यो ने जीवनो चोवीश तत्त्वनो देह कह्यो ने ईश्वरनो पण चोवीश तत्त्वनो देह कह्यो, माटे ए बेने विषे तुल्य भाव आवी जाय जे स्थूळ ने विराट ते तुल्य छे तथा

सूक्ष्म ने सूत्रात्मा ते तुल्य छे ने कारण ने अव्याकृत ते तुल्य छे तथा जाग्रत ने स्थिति अवस्था ते तुल्य छे तथा स्वप्न ने उत्पत्ति अवस्था ते तुल्य छे तथा सुषुप्ति ने प्रलय अवस्था ते तुल्य छे अने विश्व तैजस ने प्राज्ञ ने विष्नु, ब्रह्माने शिव ते तुल्य छे एम समजीने छवीशपाने भजे छे, एवी रीते जीव ईश्वरने विषे जे तुल्य मात्ररूप दोष छे तेने टाळ-वाने अर्थे कोइक मोटा पासेथी युक्ति शिखवी जे, ईश्वरना देहमां जे पंचभूत रह्यां छे तेनी महाभूत एवी संज्ञा छे ने ते भूत सर्वे व्यष्टि देहोने धारी रह्यां छे अने जीवना देहमां जे पंचभूत छे ते अल्प छे ने बीजाने धारवाने समर्थ नथी ने जीव छे ते अल्पज्ञ छे ने ईश्वर छे ते सर्वज्ञ छे, एवी रीते युक्ति शिखीने जीव ईश्वरने विषे समपणुं न सम-जवुं अने जो एवी युक्ति न शिख्यो होय ने कोइ प्रतिवादी प्रश्न पुछे तो तेनो उत्तर करवो कठण पडे ने समजण चुंथाइ जाय अने कोइक प्रश्न करे ते तो जीव ईश्वरने विषे समपणुं रहेवा दे नहि, माटे जीव ईश्वरने विषे समपणुं न आवे एवी रीत्यनी युक्ति शिखवी ने एवी रीत्यनां जे वचन तेने सांभळवां. अने सांख्यवाळाने ए दुषण छे जे, चोवीश तत्त्व कह्यां छे ने पचवीशमा परमात्मा कह्या छे ने ते चोवीश तत्त्वने मिथ्या कह्यां छे ने परमात्माने सत्य कह्या छे त्यारे ते परमात्माने पामे छे कोण ? केमजे पामनारा जीवने तत्त्वथी भिन्न कह्यो नथी, माटे ए जे दूषण छे तेने टाळवाने अर्थे मोटाओ थकी एम युक्ति शिखवी जे, ए चोवीश तत्त्व कह्यां ते जीव विनानां होय नहि माटे ए तत्त्व भेळाज जीव ईश्वरने कह्या छे ते जीव ईश्वर ए तत्त्व थकी पृथक् छे ने परमात्माने पामे छे, एवी रीतनी युक्ति शिखवी ने आ युक्ति न शिखी होय ने कोइ प्रतिपक्षी प्रश्न पुछेतो संशय थाय जे, तत्त्व तो मिथ्या छे त्यारे ते परमात्माने पाम्याने अर्थे ब्रह्मचर्यादिक धर्म कह्या छे तथा श्रवण, मनन, निदिध्यासादिक साधन कह्यां छे ते शाने अर्थे कह्यां छे ? माटे तत्त्वना तदात्मकपणाने पाम्या जे जीव ईश्वर तेने तत्त्वरूपे करीने कह्या छे ते ए तत्त्व थकी अति विलक्षण छे ते परमात्माने पामे छे इत्यादिक जे युक्तियो तेने मोटा संत थकी सांख्यवाळाने शिखवी अने योगवाळा जे छे ते प्रत्यक्ष मूर्ति एवा जे मच्छ, कच्छ, वाराह, नृसिंह,वामन, रामकृष्णादिक भगवानना अवतार तेने ध्याने करीने मोक्ष थाय एवी युक्तिनुं ग्रहण करे छे अने जे सांख्यवाळा छे ते जे ते ॥ यतोवाचोनिवर्त्तते अप्राप्य मनसासह ॥ इत्यादिक श्रुतिशास्त्रे करीने कह्युं जे भगवाननुं स्वरूप तेने अ-नुभवे करीने यथार्थ जाणे त्यारे मोक्ष थाय एवि युक्तिनुं ग्रहण करे छे अने ए बेय मत छे ते सारा छे ने मोटाए मान्या छे ने ए बेयनुं यथार्थ जो आचरण करे तो ते परम गतिने पामे छे अने ए बे मत छे तेमां साधन सरखां कह्यां छे पण उपासनानी जे रीत ते सरखी नथी घणी पृथक् छे, एवी रीते वार्ता करीने श्रीजीमहाराज परमहंस प्रत्ये

बोल्या जे हवे तो कीर्तन गाओ, पछी मुक्तानंदस्वामी आदिक जे परमहंस ते वाजित्र लेइने कीर्तन गावा लाग्या ते पछी वळी श्रीजीमहाराज बोल्या जे हवे कीर्तन राखो अने ए सांख्य ने योग ए बेयनो सिद्धांत तमे कीर्तन गायां त्यां सुधी अमे विचार्यो छे ते कहीए ते सांभळो जे योगवाळा छे तेने आत्यंतिक प्रलयने विषे जे अक्षरधाममां तेजोमय एवी दिव्यरूप भगवाननी मूर्ति रही छे ते ध्यान करवा योग्य छे नेतेथीओरा प्रकृति पुरुषरूप भगवान ध्यान करवा योग्य छे ने तेथी ओरा प्रकृति पुरुषनां कार्य जे चोवीश तत्त्व ते रूप भगवान ध्यान करवा योग्य छे ने तेथी ओरा हिरण्यगर्भ ने तेथी ओरा चोवीश तत्त्वथी उपज्यो जे विराट् ते ध्यान करवा योग्य छे ने तेथी ओरा ब्रह्मा, विष्णु, शिव, तथा पृथ्वीने विषे जे मच्छ, कूर्म, नृसिंह वाराहादिक भगवानना अवतार तथा शालग्रामादिक प्रतिमाओ ए सर्वे ध्यान करवा योग्य छे, एवुं योगवाळानुं तात्पर्य जणाणुं पछी सांख्यनो विचार उपज्यो त्यारे तेणे ए आकार मात्रनुं निराकरण करी नाख्युं ने एम जणाणुं जे ए सर्वना विचारनो करतल जे जीव छे ते जेवो शुद्ध कोइ नथी, माटे जीवनुं ध्यान करवुं ए ठीक छे एवो जे सांख्यनो विचार तेने जोवाने अर्थे वळी योगनो विचार थयो जे ए परात्पर एवा जे पुरुषोत्तम भगवान तेनुं ए प्रकृति पुरुषादिक सर्वेने विषे अन्वयपणुं छे माटे ए सर्वे भगवानज छे ने दिव्यरूप छे ने सत्य छे ने ध्येय छे ने ए वातने दृढ करवाने अर्थे श्रुति छे जे॥सर्वंखल्विदंब्रह्म नेह नानास्तिकिंचन॥ तथा ॥इदंहि विश्वं भगवानिवेतरो यतोजगत्स्थाननिरोधसंभवाः॥ एवी रीतनो योग मार्ग छे तेने विषे प्रवर्त्यो जे मुमुक्षु तेने कोइ विघ्न नथी.शा माटे जे ए मार्ग स्थूळ छे ने एने विषे प्रत्यक्ष मूर्ति भगवाननुं आलंबन छे ते सारु जेवो तेवो होय ते पण ए मार्गे करीने निर्विघ्न थको मोक्षने पामे छे पण ए मार्गमां एक दोष छे जे, ए सर्वेथी पर जे पुरुषोत्तम भगवान तेने अने प्रकृति पुरुषादिकने अंशअंशी भाव आवी जाय छे जे, भगवानना अंश प्रकृति पुरुष छे ने तेना अंश हिरण्यगर्भ विराटादिक छे एवी रीते समजाय तो मोटो दोष आवे कांजे भगवान अच्युत छे, निरंश छे, निर्विकार छे, अक्षर छे, अखंड छे तेने विषे च्युत भाव आवे छे ने अंशअंशी भाव आवे छे माटे एवो दोष आववा देवो नहि अने एम समजवुं जे, ए भगवान जेवा तो भगवानज छे ने बीजा जे प्रकृति पुरुषादिक छे ते तो एना भक्त छे ने एनुंध्यान करे छे माटे ए भगवान रूप छे,जेम कोइ मोटा संत होय ने ते भगवाननुं ध्यान करता होय ने तेने भगवान रूप जाणे छे तेम ए प्रकृति पुरुषादिक पण भगवान रूप छे अनेए सर्वेथी पर जे पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण तेज वासुदेव संकर्षण,प्रद्युम्न,अनिरुद्ध रूपे थाय छे तथा रामकृष्णादिक अवतारनुं ग्रहण करे छे ते ध्यान करवा योग्य छे एम समजे तो ए योग मार्ग ते अतिशे निर्विघ्न छे ने श्रेष्ठ छे,ने सांख्यवाळा छे तेमां ए दोष छे जे

सांख्यवाळा होय ते एम कहे छे जे,अंतःकरणे करीने तथा इंद्रिये करीने जे जे ग्रहण कर्यामां आवे छे ते सर्वे मिथ्या छे ने अनुभवे करीने जे ग्रहण कर्यामां आवे छे ते सत्य छे, एवी रीते आकार मात्रने मिथ्या करे छे ते मेळे जीवना कल्याणने अर्थे प्रगट थया जे भगवान तेमना रूपने पण मिथ्या करे छे तथा अनिरुद्ध,प्रद्युम्न,संकर्षण एमना रूपने पण मिथ्या करे छे ने निर्गुण एवा जे वासुदेव तेनुंज ग्रहण करे छे एवो ए मोटा दोष छे माटे ए सांख्यवाळा एम समझे तो ठीक जे सांख्य विचारनुं ग्रहण करीने प्रकृति पुरुषथी जे जे उपज्युं तेने मिथ्या करीने, ने पोताना आत्माने सर्वेथी पृथक् शुद्ध ब्रह्मरूप मानीने, ते पछी जीवना कल्याणने अर्थे प्रगट थया जे भगवान तेना रूपने सत्य जाणीने तेनुं ध्यान करवुं, एवी रीते ए बे प्रकारना जे विचार छे ते कोइक अम जेवा मोटा पासेथी शिखे त्यारे आवडे, नहि तो शास्त्रने भणे सांभळे पण आवडे नहिं अने छे तो एम जे प्रथम सांख्य विचारे करीने जे ब्रह्मरूप थयो होय तेने अर्थे योगनो उपदेश छे ते कह्युं छे जे ।। ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा नशोचतिनकांक्षति । समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिंलभतेपरां ।। तथा ।। आत्मारामाश्चमुनयो निर्ग्रंथा अप्युरुक्रमे । कुर्वंत्यहैतुकींभक्तिमित्थंभूतगुणोहरिः।।परिनिष्ठितोपिनैर्गुण्ये उत्तमश्लोकलीलया ।। गृहीतचेताराजर्षे आख्यानं यद धीतवान् ।। एवी रीते सांख्यवाळाने योगनी अपेक्षा छे, कांजे ए सांख्यवाळे विचारे करीने पोताना आत्माथी व्यतिरिक्त जे जे कांइ पांच इंद्रियो ने चार अंतःकरणे करीने भोगववामां आवे एवा विषयभोग छे तेने अतिशे तुच्छ जाण्या छे, माटे ए कोइ पदार्थने विषे आश्चर्य पामे नहि तथा बंधाय नहि अने एने पासे कोइ आवीने एम कहे जे, आ पदार्थ तो बहुज रुडुं छे त्यारे तेने एम विचारे जे गमे तेवुं सारुं हशे पण इंद्रियो अंतःकरणे करीने ग्रहण कर्यामां आवे एवुं हशे ने इंद्रियो अंतःकरणना ग्रहणमां जे आवे ते तो असत्य छे, नाशवंत छे, एवी ए सांख्यवाळाने दृढ समझण रहे छे ने पोताना आत्माने शुद्ध जाणे छे एवो जे सांख्यवाळो तेने योग मार्गे करीने भगवाननी जे उपासना ध्यान भक्ति ते करवां अने एम न करे तो एने विषे अतिन्यूनता कहेवाय छे, एवी रीते सांख्यशास्त्र तथा योगशास्त्र तेनो जे सनातन सिद्धांत छे ते अमे यथार्थ विचारीने कह्यो छे अने जे आधुनिक योगवाळा ने सांख्यवाळा छे तेमणे तो ए बेय मार्गने बगाडी नाख्या छे, जे योगवाळा छे ते आकारनुं स्थापन करवा जाय छे त्यारे बीजा जीवना आकार तथा ब्रह्मा, विष्णु, शिवना आकार तथा रामकृष्णादिक अवतारना आकार ते सर्वेने तुल्यपणे जाणे छे अने सांख्यवाळा छे ते आकारनुं खंडन करे छे ते मेळे तीर्थ, व्रत, प्रतिमा, यम, नियम, ब्रह्मचर्यादिक धर्म, ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा रामकृष्णादिक अवतार ए सर्वेनुं खंडन करे छे, माटे आधुनिक जे सांख्य-

वाळा ने योगवाळा ते बेय मार्गने मुकीने कुमार्गे चाल्या छे ते नारकी थाय छे. (१) १

इति वचनामृतम्. ॥२॥ (१२८)

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के योगवाळा जीव ईश्वरने सम कहे छे ने अक्षरधामने विषे रह्युं एवुं जे भगवाननुं स्वरूप तथा प्रकृति पुरुषादिक तथा मच्छ कच्छादिक अवतार ते सर्वेने ध्यान करवा योग्य कहे छे ने एमां अंश अंशी भाव कल्पे छे ए दोष छे; अने प्रत्यक्ष भगवानना आश्रये करीने मोक्ष थाय एम कहे छे, तेमणे जीवथी ईश्वरने भिन्न ने सर्वज्ञ समजवा ने प्रकृति पुरुषथी लइने ब्रह्मा, विष्णु, शिवादिक सर्वेने भगवानना भक्त समजवा ने अंशअंशी भाव टाळवो अने आत्यंतिक प्रलयने विषे अक्षरधाममां पुरुषोत्तम भगवान रहे छे ते पृथ्वीने विषे प्रगट थाय तेमनुंज ध्यान करवुं. अने सांख्यवाळा परमात्माने पामनारा जीव ईश्वरने तत्त्वथी भिन्न कहेता नथी ने जीवनेज ध्यान करवा योग्य माने छे ते दोष छे, तेमणे तत्त्वथी जीव ईश्वरने भिन्न समजवा अने प्रकृति पुरुषथी थयुं तेने मिथ्या कहेवुं ने भगवानना अवतारने सत्य जाणवा. आ योग तथा सांख्यवाळाए जेने अक्षरधाम शब्दथी कह्युं छे तेने मूळपुरुषनुं तेज जाणवुं अने जेने पुरुषोत्तम शब्दथी वर्णन कर्या छे तेने मूळपुरुष जाणवा अने निर्गुण वासुदेव पण एना तेजनेज कहे छे अने प्रधान पुरुषने प्रकृतिपुरुष शब्दथी कह्या छे. ते योगवाळा जेम प्रत्यक्षने आश्रये करीने मोक्ष कहे छे तेम अमारा भक्तोए प्रत्यक्ष भगवान जे अमे ते अमने ब्रह्मादिकथी लइने मूळ अक्षर पर्यंत सर्वेथी पर जाणवा ने ए सर्वेने अमारा भक्त जाणवा अने अमे अनिरुद्ध जे मूळ अक्षर अने प्रद्युम्न जे वासुदेव ब्रह्म अने संकर्षण जे महाकाळ तेमने विषे निर्गुण वासुदेव जे अमारुं तेज ते द्वारे प्रवेश करीने तेते रूपे थइए छीए तथा रामकृष्णादिक अवतारनुं ग्रहण करीए छीए ते सर्वेने सत्य जाणवा अने प्रकृति पुरुषथी थयुं तेने मिथ्या मानवुं अने ए सर्वेथी पर निर्गुण वासुदेव जे अमारा तेजरूप अक्षरधाम ते रूप पोताना आत्माने मानीने योग मार्गे करीने अमारी उपासना ध्यान भक्ति करवां पण अमारा विना बीजा कोइनुं करवुं नहि. (१) बाबत छे.

१ प्र० विश्व, तैजस ने प्राज्ञ ने ब्रह्मा, विष्णु ने शिव ते तुल्य कह्या ते केवी रीते समजवा ?

१ उ० वैराज पुरुष पोताना उपरि जे अनिरुद्ध, प्रद्युम्न ने संकर्षण थकी उत्पत्ति, स्थिति ने प्रलय करवानी सामर्थी पामीने ब्रह्मा पासे उत्पत्ति करावे छे ते उत्पत्तिना अभिमाने करीने ब्रह्मा नामे कहेवाय छे अने विष्णु पासे स्थिति करावे छे ते स्थितिने अभिमाने करीने विष्णु नामे कहेवाय छे अने शिव पासे प्रलय करावे छे ते प्रलयना अभिमाने करीने शिव नामे कहेवाय छे ते ए त्रण देवो द्वारे उत्पत्ति स्थिति ने प्रलय करे छे ते क्रियाना अभिमाने करीने ब्रह्मा, विष्णु ने शिव नामे कहेवाय छे पण जेम जीवनां पोतानां विश्व, तैजस ने प्राज्ञ नाम कहेवाय छे तेम वैराजनां पोताना ए नाम नथी. ए तो ब्रह्मा, विष्णुने शिव द्वारे उत्पत्ति स्थिति ने प्रलय करे छे ते माटे ब्रह्मा, विष्णु ने शिवनी तुल्यता कही छे

२ प्र० (आमां तथा अ० ६ मां) भगवानने अक्षर कह्या छे ने (प्र० ६ मां, खा० ५ना त्रीजा

प्रश्नमां, का० ६ मां तथा प्र० ४१ ए आदिकमां) अक्षरथी पर कह्या छे, माटे प्रत्यक्ष भगवान जे श्रीस्वामिनारायण तेतो अक्षरथी पर छे तेमने अक्षर कहेवानुं शुं कारण हशे ?

२ उ० श्रीजीमहाराजने अच्युत छे, निरंश छे, निर्विकार छे, अक्षर छे, अखंड छे एवां विशेषण आप्यां छे पण अक्षर तेज श्रीजीमहाराज छे एम नथी कह्युं.

३ प्र० अनिरुद्ध, प्रद्युम्न ने संकर्षण तेमने मिथ्या न करवा एम कह्युं अने पछीथी प्रकृतिपुरुषना कार्यने मिथ्या करवुं एम कह्युं ते अनिरुद्धादिक तो प्रकृति पुरुषना कार्यमां आवी गया माटे तेने तो मिथ्या कहेवा जोइएज ने मिथ्या करवा नहि एम कह्युं तेनुं शुं कारण हशे ?

३ उ० आ ठेकाणे अनिरुद्ध, प्रद्युम्न ने संकर्षण कह्या ते मूळपुरुषथी पर छे तेमां मूळअक्षरने अनिरुद्ध कह्या छे ते (लो० ७ ना ½ पहेला प्रश्नमां) जगतनी उत्पत्तिने अर्थे अमे अनिरुद्ध रूपे थइए छीए. एटले ए मूळअक्षर जे अनिरुद्ध तेने विषे निर्गुण वासुदेव जे अमारुं तेज ते तेज द्वारे रह्या छीए एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे, माटे अनिरुद्ध नामे मूळअक्षरने कह्या छे अने माया सुधी जंगम एटले चळ विश्व अने मूळपुरुषथी लइने ब्रह्मकोटी तथा, मूळअक्षरना मुक्त त्यां सुधी सर्व स्थावर एटले अचळ विश्व ए बेय विश्व मूर्तिमान मूळअक्षर जे अनिरुद्ध तेना तेजने विषे सावकाशे करीने रह्यां छे. अने श्वेतद्वीप पति वासुदेव ने प्रद्युम्न कह्या छे. अने महाकाळने संकर्षण नामे कह्या छे, माटे आ संकर्षणादि त्रण ते मूळपुरुषथी पर छे तेथी एमने सत्य कह्या छे अने प्रकृतिमांथी जे संकर्षणादिक उत्पन्न थाय छे ते तो प्रलय समे लय पामे छे माटे मिथ्या कहेवाय.

४ प्र० वासुदेव कोने कोने कहेवाता हशे ?

४ उ० श्रीजीमहाराज मूळ अक्षरने विषे पोताना तेजद्वारे वास करे छे माटे श्रीजीमहाराजने वासुदेव कहेवाय, अने वासुदेव ब्रह्मने विषे मूळ अक्षर पोताना तेजद्वारे वास करे छे माटे मूळ अक्षरने वासुदेव कहेवाय, अने मूळ पुरुषने विषे वासुदेव ब्रह्म पोताना तेजद्वारे वास करे छे माटे वासुदेव ब्रह्मने वासुदेव कहेवाय, अने मायाबद्ध जीवोने विषे मूळपुरुष पोताना तेजद्वारे वास करे छे माटे मूळ पुरुषने वासुदेव कहेवाय अने ते मूळपुरुष वसुदेवना पुत्र थया माटे वासुदेव कहेवाय अने ते मूळपुरुष द्वाराए मायामांथी अनंत प्रधान पुरुष थाय छे अने ते थकी महत्तत्त्व थाय छे ने ते थकी राजसाहंकार (अनिरुद्ध), सात्त्विकाहंकार (प्रद्युम्न), तामसाहंकार (संकर्षण) ए त्रण प्रकारनो अहंकार थाय छे अने तेमांथी चोवीश तत्त्व थाय छे ने ते थकी विराट् थाय छे ने ते थकी ब्रह्मा, विष्णु ने शिव थाय छे, ते प्रधान पुरुष, महत्तत्त्व, प्रद्युम्न, वैराज अने विश्व ते पण सौ सौना कार्यमां वास करे छे माटे तेमने पण वासुदेव कहेवाय, अने मूळपुरुषने मूळ मायाथी थइ ते सृष्टिने [लो ७ ना ½ पहेला प्रश्नमां] जंगम एटले प्रलयमां नाश पामती एवी चळ सृष्टि कही छे, आ चळ विश्वना वासुदेव मूळपुरुष छे, अने जे महत्तत्त्वमांथी अनिरुद्धादिक थाय छे ते तथा महत्तत्त्व, प्रधान पुरुष ते सर्वे महामायाने विषे लय पामे छे अने महामाया मूळपुरुषमां लय पामे छे त्यारे मूळ पुरुष जे ते वासुदेव ब्रह्मना ब्रह्मपुरुधामने विषे वासुदेव ब्रह्मने समीपे रहे छे.

५ प्र० पोताना आत्माने सर्वेथी पृथक् शुद्ध ब्रह्मरूप मानीने अमारा रूपने सत्य जाणीने अमारुं ध्यान करवुं एवो जे विचार ते तो अम जेवा मोटा पासेथी शिखे तोज आवडे पण शास्त्रने भणवे सांभळवे करीने आवडे नहि एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते अम जेवा मोटा कोने कह्या हशे?

५ उ० श्रीजीमहाराजे पोताना साधर्म्यपणाने पामेला मुक्तने पोता जेवा कह्या छे, माटे श्रीजीमहाराज तथा तेवा मुक्त थकीज आ विचार आवडे ने श्रीजीमहाराजनुं ज्ञान, ध्यान ने कल्याण थाय छे पण केवळ शास्त्र थकी यथार्थ समजातुं नथी. [१२८]

संवत् १८७७ ना फागण शुदि ८ अष्टमीने दिवस श्रीजीमहाराज गाम श्री पंचाळा मध्ये झीणाभाइना दरबारमां ढोलिया उपर विराजमान हता अने धोळो फेंटो माथे बांध्यो हतो तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा धोळी पछेडी ओढी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी सभा तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, सर्वे परमहंस मांहोमांही प्रश्न उत्तर करो. त्यारे १ मुनिबावे ब्रह्मानंदस्वामीने प्रश्न पुछयो जे, (१) आवो सत्संगनो ने भगवाननो योग मळयो छे ने बीजा विकार सर्वे टळी गया छे तथा सत्संगनो खप छे, तो पण मान ईर्ष्या केम रही जाय छे? पछी एनो उत्तर ब्रह्मानंदस्वामीए करवा मांड्यो पण थयो नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एवो जे छे तेमां बुद्धि नथी अने जे बुद्धिवाळो छे ते तो पोतामां जेटला अवगुण होय तेने जाणे तथा जेटला गुण होय तेने पण जाणे, अने बीजामां जे गुण तथा अवगुण होय तेने पण जाणे अने जे बुद्धिवाळो न होय ते तो पोतामां गुणज जाणे पण अवगुण होय तेने तो जाणे नहि ने पोताने सनकादिक जेवो मोटो जाणे ने बीजा मोटा होय तेने पण पोताथी उतरता जाणे;अने जे बुद्धिवाळो होय ते पोताना अवगुणने जाणतो होय जे मुमां आटलो अवगुण छे पछी तेनी उपर वाक्य राखीने ते अवगुणने टाळी नाखे तथा ते अवगुणने टाळवानी बीजा संत वार्त्ता करता होय तेने हितकारी माने माटे एमां मान ईर्ष्यादिक कोइ अवगुण रहे नहि. अने कोइकमां मोटी बुद्धि जणाती होय ने ते जो पोताना अवगुणने न विचारतो होय तो तेनी व्यवहारिक बुद्धि जाणवी ने ते बुद्धि उपरथी तो बहु चोखाळि जणाय पण एने बुद्धिवाळो न कहेवाय तेने तो अति मूर्ख जाणवो ने एनी ए बुद्धि पोताना मोक्षना कामां आवे नहि अने थोडीक बुद्धि होय ने जो पोतामां अवगुण होय तेने जाणीने तेने टाळ्यानो उपाय करे तो एनी थोडी बुद्धि पण मोक्षने उपयोगी थाय छे ने एनेज बुद्धिवाळो कहीए अने जे पोतामां तो कोइवारे अवगुण परठे नहि ने गुणज परठे तेने मूर्ख कहीए ने पोतामां अवगुण परठे तेने बुद्धिवाळो कहीए. पछी श्रीजीमहाराजे आज्ञा

करी जे कीर्त्तन गाओ पछी ॥ सखी आज मोहन दीठारे शेरीए आवतारे ॥ ए कीर्त्तन परमहंस गाववा लाग्या. (१) १

२ त्यारे वळी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, [२] हवे कीर्त्तन राखो अने आ कीर्त्तन गायां तेमां हेत बहु छे ते हेतनो अमे विचार कर्यो जे हेत मोटी वात छे ने हेते करीने भगवानने भजवा ए ठीक छे पण सारी पेठे विचारीने जोयुं त्यारे एम जणाणुं जे, हेत छे तेज भगवाननी माया छे,केम जे स्त्रियो परस्पर बोलती होय जोती होय स्पर्श करती होय तेमां बीजी रीतनुं हेत छे अने पुरुष होय ने परस्पर बोले जुवे स्पर्श करे तेमां पण बीजी रीतनुं हेत छे, अने पुरुष जे ते स्त्रीने जोतो होय ने आलिंगन करतो होय तेनी वार्त्ता सांभळतो होय तेनो सुगंध लेतो होय ने तेनी वार्त्ता करतो होय तेने विषे जेवुं हेत थाय छे ने ते स्त्रीमां पुरुषनुं मन आकर्षण थई जाय छे तेवुं पुरुष पुरुषमां नथी थातुं, तथा स्त्री होय ने पुरुषने जोती होय, आलिंगन करती होय इत्यादिक पुरुषना संबंधे करीने स्त्रीने हेत जेवुं पुरुषमां थाय छे ने तेनुं मन पुरुषमां सम्यपणे खेंचाइ जाय छे तेवुं स्त्रीने स्त्रीमां नथी थातुं, माटे जे थकी जगत्‌नो प्रवाह छे ने जे जीवने संसृतिने बंधननी करनारी छे एवी जे भगवाननी माया तेज हेतरूपे छे, पछी एम विचार थयो जे, शब्द, स्पर्श, रूप,रस ने गंध ए जे पंचविषय छे ते बीजे ठेकाणेथी मिथ्या करीने एक भगवानमांज आत्यंतिक सुख जाणीने जोड्यां होय तो तो ठीक छे,ते माया नथी. पछी वळी तेमां पण विचार थयो जे, ए पण ठीक नहि, कां जे भगवानना रूप करतां अधिकरूप, अधिक स्पर्श, अधिक रस, अधिक गंध, अधिक शब्द, ते बीजाने विषे जणाय तो भगवानने मुकीने तेने विषे हेत थई जाय, जेम सोळ हजार ने एकसो, जे श्रीकृष्ण भगवाननी स्त्रियो हती ते जन्मान्तरे अप्सराओ हती तेमणे ब्रह्मा पासे वर माग्यो जे, हे महाराज ! अमे देव, दैत्यने मनुष्य ए सर्वेनो स्पर्श कर्यो छे पण जे नारायण पुरुष छे तेनो पतिभावे स्पर्श नथी कर्यो, माटे एवी कृपा करो जे ए अमारा पति थाय. पछी ब्रह्माए कह्युं जे, तमे तप करो तमारा पति नारायण थाशे. त्यारे तेमणे घणुं तप कर्युं पछी तेमनी उपर अष्टावक्रऋषि तथा नारद मुनि ते पण प्रसन्न थया ने वर आप्यो जे, तमारा पति नारायण थाशे, एवी रीते जन्मान्तरे घणुंक तप करीने श्रीकृष्ण भगवानने पामी हती पण जो भगवान करतां सांबने विषे अधिक रूप दीठुं तो तेमां मोह पामी माटे जेनी एक मति रहेती न होय तेने पंच इंद्रियोना विषयना सुख संबंधे करीने भगवानमां प्रीति करवी ते ठीक नहि ने जेनी मति एकनीएक निस्तर्कपणे रह्या करे तेने तो ठीक छे अने जेने बुद्धि होय तेने भगवानमां हेत केम करवुं तो जे चोवीश तत्त्व छे ते थकी पोताना जीवने पृथक् जाणवो ने ते जीवने विषे लुंलीने रही

जे पंच इंद्रियोनी वृत्तियो तेने उखाडी नाखीने इंद्रियोनी वृत्ति विना जीव सत्तापणे रह्या थका निर्गुणपणे करीने जेटलुं भगवानमां हेत थाय तेटलुं करवुं ते निर्गुणपणुं ते शुं जे,दश इंद्रियो ते रजोगुणनी संपत्ति छे अने अंतःकरण ने देवता ते सत्त्वगुणनी संपत्ति छे, अने पंचभूत ने पंचविषय ते तमोगुणनी संपत्ति छे ते ए त्रण गुणनी संपत्तियो ने त्रण गुण तेने पृथक् मानीने केवळ जीवसत्ताए करीने रहे तेने निर्गुण कहीए. एवो निर्गुण थइने भगवानमां हेत करवुं ते कह्युं छे जे॥नैर्गुण्यस्थारमंतेस्म गुणानुकथने हरेः॥तथा॥परिनिष्ठितोपिनैर्गुण्ये उत्तमश्लोकलीलया॥गृहीतचेता राजर्षे आख्यानंयदधीतवान्॥ अने एवी रीतना जे ज्ञानी छे ते क्षेत्र ने क्षेत्रज्ञना रूपने जाणीने पोते क्षेत्रज्ञरूपे थइने भगवानमां प्रीति करे छे ते क्षेत्र ते शुं तो स्थूळ, सूक्ष्म ने कारण ए त्रण देह तथा जाग्रत, स्वप्न ने सुषुप्ति ए त्रण अवस्था ए सर्वे क्षेत्र छे ते क्षेत्रने पोताना आत्माथी पृथक् जाणे छे जे, ए मारे विषे कोइ दिवस होय नहि, हुं तो एनो जाणनारो छुं ने अति शुद्ध छुं, अरूप छुं, अलिंग छुं,चैतन्य छुं अने ए क्षेत्र तो अति मलिन छे, जड छे, नाशवंत छे एम दृढपणे समजीने, ने ए सर्वथी वैराग्यने पामीने स्वधर्मे सहित जे भगवानने विषे भक्ति करवी तेने एकांतिकनी भक्ति कहीए अने एने ज्ञानी कहीए अने ए जे ज्ञानी ते सर्वथी श्रेष्ठ छे ते भगवाने कह्युं छे जे ॥ तेषांज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते । उदाराः सर्वएवैते ज्ञानी त्वात्मैवमेमतम् ॥ एम समजीने इंद्रियो अंतःकरण विषय ए सर्वेनां जे मूळ ते जीवमांथी उखेडी नाखीने भगवानने विषे हेत करवुं एज ठीक छे. [२] अने ज्यां सुधी एनां मूळ व उखाडी नाख्यां न होय त्यां सुधी ए इंद्रियो अंतःकरणे करीने भगवानना दर्शन स्पर्शनादिक रूप जे काम ते लेवुं पण एने पोतानां हेतु न मानवां, वैरी मानवां ने एनो गुण न लेवो जे, ए भगवाननी भक्तिने विषे उपकार करे छे, केमजे नेत्रे करीने भगवाननां दर्शन थाय छे, श्रवणे करीने भगवाननी कथा संभळाय छे, त्वचाए करीने भगवाननो स्पर्श थाय छे, नासिकाए करीने भगवाननी माळा ने तुळसीनो सुगंध लेवाय छे ने मुखे करीने भगवानना कथा कीर्तन कहेवाय छे तथा जिव्हाए करीने भगवाननी प्रसादीनो रस लेवाय छे इत्यादिक भगवाननी भक्तिने विषे उपयोगी छे एम समजीने एनो गुण न लेवो ने एनो विश्वास न करवो एने तो वैरीज जाणवां कां जे शुं जाणीए ए भगवानना दर्शन स्पर्शनादिके करीने सुख मानता थका स्त्रियादिकना दर्शन स्पर्शनादिके करीनेज सुख मनावी दे तो शुंडुं थाय माटे ए पंच इंद्रियो रूप शत्रुने केदमां राखीने भगवाननी भक्तिरूप काम लेवुं, जेम कोइ राजाए पोतानो शत्रुने पकड्यो होय तेने बेडीमां बांधी राखीने काम करावे पण छुटो मेले नहि ने विश्वास पण करे नहि अने जो तेने छुटो मेले ने विश्वास करे तो ते राजाने ते वैरी निश्चे मारे तेम जो इंद्रि-

यो रूप वैरीनो विश्वास करे ने छुटा मुके ने केदमां न राखे तो एने निश्चे भगवानना मार्ग थकी पाडी नाखे छे, माटे एनो विश्वास न करवो, अने वळी जेम इंग्रेज कोइक गुनेगारने पकडे छे त्यारे तेने पांजरामां उभो राखीने मुके छे पण छुटो मुकतो नथी ने तेनो विश्वास करतो नथी,तेम ए इंद्रियो अंत:करणने पंचवर्त्तमानना नियमरूप जे पांजरुं तथा बेडी तेमां राखीने भगवाननी भक्ति कराववी पण एने विषे गुण न लेवो शत्रुभावज राखवो अने जो एमने भक्तिमां उपयोगी मानीने हेतु माने ने एनो गुण ले तो भगवाननां दर्शन स्पर्शनादिकने विषे सुख मनावते थके जो स्त्रियादिकने विषे कांइक सुख मनावी दे तो एनुं कर्युं कारव्युं सर्व व्यर्थ थइ जाय,जेम झाझो दारुनो ढगलो होय ने तेमां एक अग्निनो तणखो पड्यो होय तो ते दारु सर्वे भस्म थइ जाय छे तेम एनुं कांइ ठेकाणुं रहेतुं नथी माटे केवळ आत्मारूप थये थके जे भगवानने विषे हेत थाय ते ठीक छे एम अमारो सिद्धांत छे ने एवी रीते जे भगवानमां हेत करे छे ते अमने गमे छे.अने एम पण विचार करवो जे,भगवानमां जेवुं रूप छे तेवुं बीजे नथी अने जेवो भगवाननो स्पर्श छे तेवो बीजे नथी अने जेवो भगवानमां सुगंध छे तेवो बीजे नथी अने भगवानना श्रवणमां जेवुं सुख छे तेवुं बीजे नथी अने जेवो भगवानमां रस छे तेवो बीजे नथी,एम ए इंद्रियो,अंत: करणने दोष देखाडीने बीजा विषयथी पाछां वाळवां ए पण समजण ठीक छे. (३) ३

३ त्यारे स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे, (३) हे महाराज ! आ जे सर्वे विचार ते किया स्थानके रहीने करवो ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एम विचार करे जे स्थूळ देह, सूक्ष्म देह, कारण देह ए हुं नहि ने जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति ए त्रण अवस्था ते हुं नहि ने पंचज्ञान इंद्रियो ने पंचकर्म इंद्रियो ने चार अंत:करण ने एमना देवता ए सर्वे हुं नहि, हुंतो ए सर्वेथी पृथक् छुं, चैतन्य छुं, ने भगवाननो भक्त छुं ने ए इंद्रियो अंत:करण कांइक चाळा करे तो एने कहेवुं जे केम तारे ते एक भगवाननुंज रूप जोवुं छे के बीजानुं पण जोवुं छे ? ने केवळ भगवाननो शब्द सांभळवो छे तथा गंध लेवो छे के बीजानो पण शब्द सांभळवो छे ने गंध लेवो छे ? अने जो भगवान विना बीजा विषयमां तुं जाइश तो तारे मारे शुं छे माइ ? तुं कोण ने हुं कोण ? तारे मारे लेवुं देवुं नथी. तमे करशो ते तमे भोगवशो, एम ए इंद्रियो अंत:करणने कहीने पछी भगवाननी प्रार्थना करवी जे, हे महाराज ! हे स्वामिन ! हे भक्तवत्सल ! हे दया निधे ! आ इन्द्रियो अंत:करणनो वांक छे ने हुं तो एथी ओखो छुं ने ए तो मारा शत्रु छे माटे ए थकी मारी रक्षा करज्यो, एम निरंतर प्रार्थना कर्या करवी ने पोताने क्षेत्रज्ञ चैतन्य जीवरूप मानीने भगवानने विषे हेत भक्ति करवी. (४) इति व० ॥३॥[१२९] ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (३) छे.तेमां बीजुं कृपावाक्य छे, तेमां पहेलामां जे भक्त

पोताना अवगुण ओळखीने टाळवानो उपाय करे ने बीजाना अवगुण ले नहि ते बुद्धिवाळो छे अने माने करीने पोताथी मोटाने न्यून माने ते मूर्ख छे. (१) बीजामां निर्गुणसत्ता जे अमारुं तेज ते रूप थइने अमारे विषे हेत करवुं ने सेवा करवी पण विषयना सुख संबंधे करीने अमारे विषे हेत करवुं नहि. (२) अने इंद्रियो अंतःकरणने पंचवर्त्तमानना नियममां राखवां. [३] त्रीजामां त्रण देह ने त्रण अवस्थाथी पोताना चैतन्यने पृथक् मानवो एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (४) बाबतो छे.

१ प्र० [पहेला प्रश्नमां] बीजा विकार टळी गया छे ने मान ईर्ष्या केम रहे छे एम पुछ्युं ते बीजा विकार किया टळ्या हशे ?

१ उ० काम, लोभ, स्वाद, स्नेह ते विकार टळी गया होय एम जाणवुं.

२ प्र० [बीजा प्रश्नमां] निस्तर्कपणे एक मति रहेती होय तेने पंचइंद्रियोना विषय सुख संबंधे करीने अमारे विषे हेत करवुं एम कह्युं ते केवी रीते करवुं ?

२ उ० श्रीजीमहाराजनी मूर्ति विना बीजो कोइ आकार दीठोज गमे नहि ने श्रीजीमहाराजना शब्द विना बीजो शब्द गमे नहि, तथा श्रीजीमहाराजना स्पर्श विना बीजो स्पर्श गमे नहि अने श्रीजीमहाराजना महाप्रसाद विना बीजो रस गमे नहि ने महाराजने चडयां जे तुळसी पुष्प ते विना बीजो गंध गमे नहि, एवी रीते श्रीजीमहाराज संबंधी पंचविषयमां आनंद वर्ते ने ते विना बीजा मायिक विषयने विषे अभाव वर्ते अने श्रीजीमहाराजने विषे मायिकपणानो संकल्प न थाय एवी रीते श्रीजीमहाराजने विषे हेत कर्युं होय तो कल्याण थाय.

३ प्र० (३ त्रीजा प्रश्नमां) तमे करशो ते तमे भोगवशो एम इंद्रियो अंतःकरणने कहेवुं एम कह्युं अने [जे० २ ना बीजा प्रश्नमां] इंद्रियोद्वारे विषयनुं ग्रहण जीव करे छे त्यां जीवनेज भोक्ता कह्यो छे ते केवी रीते समजवुं ?

३ उ० इंद्रियो अंतःकरण भोक्ता नथी, कर्त्ता भोक्ता तो जीवज छे, पण जीव इंद्रियादिक मेळो भळी गयो छे तेने जुदो पडवानो तथा इंद्रियो अंतःकरणद्वारे घाट करतो होय ते घाटने खोटा करी नाखवानो उपाय बताव्यो छे. ॥ १२९ ॥

संवत् १८७७ना फागण वदि ३ श्रीजने दिवस श्रीजीमहाराज गाम श्री पंचाळा मध्ये झीणाभाइना दरबारमां ओटा उपर ढोलियो ढळावीने बिराजमान हता अने धोळो फेंटो मस्तक उपर बांध्यो हतो तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा झीणी धोळी पछेडी ओढी हती ने हस्तकमळने विषे तुळसीनी माळा फेरवता हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी सभा तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, सर्वे परमहंस परस्पर प्रश्न उत्तर करो. त्यारे

१ मुक्तानंदस्वामीने प्रश्न पुछ्यो जे, (१) प्रथम तो भगवाननो निश्चय होय ने भजन स्मरण करतो होय ने पछी भगवानना मनुष्य चरित्र देखीने ते निश्चयमां संशय थइ जाय छे तेनुं शुं कारण छे ? पछी ए प्रश्ननो उत्तर ब्रह्मानंदस्वामी करवा लाग्या

पण थयो नहि, त्यारे श्रीजीमहाराज झाझीवार सुधी विचारी रह्या ने पछी बोल्या जे ए प्रश्ननो उत्तर अमे करीए छइए जे, वेद, पुराण, महाभारत, स्मृतियो इत्यादिक जे शास्त्र तेने विषे भगवाननुं सनातन अनादि दिव्य एवुं जे मूळरूप पोताना अक्षरधाममां रह्युं छे ते कह्युं छे. ते भगवान केवा छे तो आ चक्षुइन्द्रिये करीने दीठामां आवे छे जे यत्किंचित्‌रूप ते जेवुं तेमनुं रूप नथी अने श्रवणे करीने सांभळ्यामां आवे छे जे कोइ शब्दमात्र ते जेवो ए भगवाननो शब्द नथी अने त्वचाए करीने स्पर्शमां आवे छे जे स्पर्श ते जेवो एमनो स्पर्श नथी अने नासिकाए करीने सुंघ्यामां आवे छे जे सुगंध ते जेवो एमनो सुगंध नथी अने जिव्हाए करीने वर्णन कर्यामां आवे एवा पण ए भगवान नथी अने मनना संकल्पमां आवे एवा नथी तथा चित्तना चिंतवनमां आवे एवा नथी तथा बुद्धिना निश्चयमां आवे एवा नथी तथा अहंकारे करीने अहंपणुं धराय एवा नथी जे ए भगवाननो हुं छुं ने ए मारा छे, एवी रीते इन्द्रियो, अंतःकरण ने अगोचर ए भगवान रह्या छे अने ए भगवाननुं जेवुं रूप छे तेवुं आ ब्रह्मांडमां ब्रह्मादिक स्तंब पर्यंत कोइनुं रूप नथी जे जेनी एने उपमा देइए तथा एनो जेवो शब्द छे तेवो बीजो आ ब्रह्मांडमां कोइनो शब्द नथी जे जेनी एने उपमा देइए अने ए भगवाननो जेवो सुगंध छे तेवो आ ब्रह्मांडमां कोइनो सुगंध नथी जे जेनी एने उपमा देइए, तथा ए भगवाननो जेवो स्पर्श छे तेवो आ ब्रह्मांडमां कोइनो स्पर्श नथी जे जेनी एने उपमा देइए तथा ए भगवानमां जेवो रस छे तेवो आ ब्रह्मांडमां कोइनो रस नथी जे जेनी एने उपमा देइए अने ए भगवानन्नुं जेवुं धाम छे तेवुं स्थानक आ ब्रह्मांडमां कोइ नथी जे जेनी एने उपमा देइए ते सप्तद्वीप ने नवखंडमां जे जे स्थानक छे तथा मेरु उपर घणीक शोभाये युक्त ब्रह्मादिकनां स्थानक छे तथा लोकालोकाचळने विषे घणांक स्थानक छे तथा इंद्र,वरुण,कुबेर,शिव,ब्रह्मा एनां जे स्थानक छे तथा बीजां पण घणांक स्थानक छे ए सर्वे मांहेलुं एवुं एके स्थानक नथी जे जेनी भगवानना धामने उपमा थाय अने ए भगवानना धामने विषे रह्या जे भगवानना भक्त तेने जेवुं सुख छे तेवुं आ ब्रह्मांडमां कोइ सुख छे नहि जेनी एने उपमा देइए अने ए भगवाननो जेवो आकार छे तेवो आ ब्रह्मांडमां कोइनो आकार नथी जेनी एने उपमा देइये, केमजे आ ब्रह्मांडमां जेटला पुरुष प्रकृति थकी उत्पन्न थया जे आकार ते सर्वे मायिक छे अने भगवान छे ते दिव्य छे ने अमायिक छे, माटे ए बेयने विषे अतिशे विलक्षणपणुं छे ते सारु एने ने एने सादृश्यपणुं केम थाय ? जेम मनुष्यने कहीए जे आ माणस मेंढा जेवो छे, सर्प जेवो छे, चरकला जेवो छे, गधेडा जेवो छे, कुतरा जेवो छे, कागडा जेवो छे, हाथी जेवो छे, एवी उपमा मनुष्यने संभवे नहि, केमजे मनुष्यथकी ए बीजा

जे सर्वे ते विजाति छे; अने मनुष्य मनुष्यमां पण अतिशे साद्दश्यपणुं नथी जे जेनी उपमा एम देइये, जे आते आ जेवोज छे अने जो ते ते जेवोज होय तो तेनी ओळखाण केम थाय ? माटे मनुष्य मनुष्य सजाति छे तेने विषे पण साद्दश्यपणुं अत्यंत छे नहि, जुवोने आ भगो मुळो बे सरखा कहेवाय छे पण झाझा दिवस भेगा रहीए तो ओळखाइ जाय जे आ भगो छे ने आ मुळो छे, माटे जो विलक्षणता न होय तो ओळखाय केम ? माटे मनुष्य मनुष्यमां पण अति साद्दश्यपणुं नथी तो मायिक अमायिकने विषे साद्दश्यपणुं केम आवे जेनी उपमा भगवानने देइये तथा भगवानना धामने देइये, कांजे ए भगवान छे ते इन्द्रियो, अंतःकरणने अगोचर छे एम सर्व शास्त्रमां कह्युं छे जे ए भगवान ज्यारे जीवने पोतानुं दर्शन देवाने न इच्छे त्यारे तो आवी रीते दिव्य रूप अगोचर थका पोताना अक्षरधामने विषे रह्या छे अने ए भगवान महाराजाधिराज छे ने दिव्यरूप एवी जे असंख्य समृद्धि तथा असंख्य पार्षद तेणे युक्त छे ने अनंतकोटी ब्रह्मांडना पति छे,जेम आ लोकमां कोइक मोटो चक्रवर्ती राजा होय तेनुं सूर्यना उदय अस्त सुधी राज्य होय अने तेज राजा पोताना तपने बळे करीने देवताना जेवा गन्धर्वने पाम्यो होय ने स्वर्ग, मृत्यु ने पाताळ ए त्रिलोकीना राज्यने करतो होय, जेम अर्जुन हता ते एने ए देहे करीने स्वर्गने विषे इंद्रासनने उपर केटलाक वर्ष सुधी रह्या तथा नहुष राजा पण इंद्र थयो हतो एवो जे प्रतापी चक्रवर्ती राजा तेने घेर जेटलां गाम छे तेनी गणती थाय नहिं ए तो असंख्य छे तथा गाम गामना जे पटेल तेनी पण गणती नथी अने ते गाम गामना असंख्य पटेल ते एना दरबारमां अरज करवा आवता होय अने ते राजाना धन, माल, भोग, स्थानक, समृद्धि ते पण गणतीमां आवे नहि, तेम ए भगवान असंख्य कोटी जे ब्रह्मांडरूप गाम तेना राजाधिराज छे अने ए ब्रह्मांडरूप जे गाम तेना मुख्य पटेल तो ब्रह्मा, विष्णु ने शिव छे, जेम एक गाममां एक पटेल मोटो होय तेने ते गामनी सर्वे प्रजा ते आवीने नमे ने आज्ञामां रहे ने ते पटेल राजाने नमे तेम ब्रह्मांड ब्रह्मांड प्रत्ये ब्रह्मा, विष्णु, शिव छे ते मोटेरा छे ने बीजा जे ब्रह्मांडमां देव, दैत्य, मनुष्य, ऋषि, प्रजापति ते एने भजे छे ने आज्ञामां रहे छे ने ए ब्रह्मा, विष्णु, शिव ते भगवान पुरुषोत्तमने भजे छे ने आज्ञामां वर्त्ते छे ते ए ब्रह्मांड ब्रह्मांडना जे ब्रह्मा, विष्णु ने शिव ते भगवाननी प्रार्थना करे छे जे, हे महाराज ! कृपा करीने तमे अमारा ब्रह्मांडमां पधारो, जेम कोइक गामनो पटेल होय ते चक्रवर्ती राजा आगळ जइने प्रार्थना करे जे, हे महाराज ! हुं गरीब छुं ते तमे मारे घेर पधारो ने हुंथी जेवी तमारी चाकरी बणी आवशे तेवी करीश, तेम ब्रह्मा, विष्णु, शिव ते ए भगवाननी प्रार्थना करे छे जे हे महाराज ! तमे अ-

मने दया करीने दर्शन द्यो ने अमारा ब्रह्मांडमां पधारो,त्यारे ए के भगवान ते ब्रह्मांड-मां देहनुं धारण करे छे ते ज्यां जेवुं कार्य त्यां तेवा देहनुं धारण करे छे ने तेवी रीतेज वर्ते छे. जो देवमां देह धारण करे छे तो देवना जेवीज चेष्टा करे छे तथा पशुना देहनुं धारण करे छे त्यारे ते पशुनी पेठेज वर्ते छे, जेम वाराहरूप भगवाने धार्युं त्यारे सुंघीने पृथ्वीने खोळी काढी तथा हयग्रीव रूपे थया त्यारे घोडानी पेठे फुंफाडा मारवा मांड्या तथा मच्छ कच्छादिक जळजंतुनो देह धारण कर्यो त्यारे जळमांज फर्या पण पृथ्वीमां न फर्या तथा नृसिंहरूपे थया त्यारे सिंहनी पेठेज मर्या पण मनुष्यना जेवी चेष्टा न करी अने ए भगवान मनुष्यना देहने धारण करे छे त्यारे मनुष्यना जेवीज क्रिया करे छे ते ज्यारे सत्ययुग होय त्यारे मनुष्यने लाख वर्षनी आवरदा होय त्यारे ए भगवान पण लाख वर्षज देह राखे अने ते सत्ययुगना माणस मनोवांछित भोगने भोगवे त्यारे भगवान पण तेमज भोगने भोगवे पण अधिकपणे न वर्ते अने त्रेतायुगमां देह धारण करे त्यारे माणसने दशहजार वर्षनी आवरदा होय त्यारे भगवान पण तेटला वर्ष देह राखे ने द्वापरयुगमां हजार वर्षनी आवरदा होय ने दशहजार हाथीनुं बळ माणसमां होय छे त्यारे भगवाननुं पण एटलुं बळ ने एटली आवरदा होय छे अने कळिमां देह धारण करे त्यारे कळि प्रमाणे आयुष्य ने बळ तेनुं भगवान धारण करे छे, अने जेम बाळक गर्भमां आवे ने ते गर्भ वृद्धिने पामे पछी जन्मेछे ने बाळ, यौवन, वृद्ध अवस्था थाय छे ने मृत्युने पामे छे तेमज भगवान पण एवीज मनुष्यनी चेष्टा करे छे, अने जेम मनुष्यमां काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, मान, स्नेह, मद, मत्सर, ईर्ष्या, द्वेष, राग, मोह, सुख, दुःख, भय, निर्भय, शूरता, कायरता, भूख, तरस, आशा, तृष्णा, निद्रा, पक्षपात, पारकुं, पोतानुं, त्याग,वैराग्य इत्यादिक स्वभाव छे तेम तेवाज ए सर्वे स्वभाव मनुष्य देहने भ-गवान धारे त्यारे तेमां जणाय छे ते ए मनुष्य स्वरूप पण भगवाननुं सर्व शास्त्रमां वर्णन कर्युं छे अने मूळ जे दिव्यरूप छे तेनुं पण वर्णन कर्युं छे; ते ए बेय रूपनुं जेणे यथार्थ श्रवण, मनन, करीने दृढ निश्चय कर्यो होय तेने तो कोई रीते संशय थाय नहि अने जेने आवी रीतनी समझणमां कसर होय तेने भगवानमां संशय थाय छे अने एज दिव्यरूप एवा भगवान मनुष्यना देहनुं धारण करे छे त्यारे मनुष्यना जेवा स्वभावे युक्त वर्त्तता होय पण जे बुद्धिवान होय तेने एम जणाय खरुं जे एमां काम छे ते बीजा मनुष्य जेवो नथी तथा क्रोध, लोभ, स्वाद, मान इत्यादिक मनुष्यना स्वभाव ते ए भगवानमां छे पण बीजा माणस जेवा तो नथी एमां कांइक दिव्य भाव छे ते बुद्धिवानना जाणवामां आवे छे तेणे करीने भगवानपणानो निश्चय करे छे; जेम शंकराचार्ये शृंगार रसनी वार्त्ता जाणवाने अर्थे राजाना देहमां प्रवेश कर्यो हतो त्यारे ते राजाना जेवाज सर्वे शृंगारादिक

थावने देहनी चेष्टा ते हती पण ते राजानी राणी बुद्धिवाळी हती तेणे एम जाण्युं जे, मारा धणीमां आवो चमत्कार नहोतो माटे आ देहने विषे कोइक बीजे जीवे प्रवेश कर्यो छे, तेम मनुष्यरूप एवा जे ते भगवान तेने विषे दिव्यभाव जणाय छे तेणे करीने भगवानपणानो निश्चय थाय छे त्यारे तमे कहेशो जे, कांइक दिव्यभाव जाण्यामां आव्यो तेणे करीने मनुष्यने भगवानपणानो निश्चय थयो त्यारे घणो दिव्यभाव जणावे तो तो बहु माणसने निश्चय थाय तो एनुं तो एम छे जे आ सूर्य छे तेने सर्व शास्त्रमां कह्या छे जे ए नारायण छे ने ते सूर्य सर्व मनुष्यने दृष्टिगोचर पण छे ने नित्ये एनुं दर्शन मनुष्यमात्र करे छे तो पण एने दर्शने करीने मनुष्यने पोताना कल्याणनो निश्चय नथी थातो जे मारुं कल्याण थयुं अने मनुष्यपणे रह्या जे रामकृष्णादिक अवतार तथा नारद शुकादिक संत तेनां दर्शन करीने मनुष्यने एम निश्चय थाय छे जे, मारुं कल्याण निश्चे थयुं ने हुं कृतार्थ थयो छुं ने ते भगवान ने संत तेमां तो कांइ प्रकाश छे नहि दीवो करीए त्यारे तेनां दर्शन थाय छे ता पण एवो कल्याणनो निश्चय थाय छे तथा अग्नि छे ते पग साक्षात् भगवान छे, कांजे भगवाने कह्युं छे जे ।। अहं वैश्वानरोभूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः । प्राणापान समायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधं ।। एवो जे अग्नि तेनां पण सर्वने दर्शन छे पण मनुष्यने कल्याणनो निश्चय थातो नथी अने भगवानने ने संतने दर्शने करीने थाय छे तेनुं शुं कारण छे जे मनुष्यने ने सूर्य अग्निने विजातिपणुं छे माटे एने दर्शने करीने कल्याणनो निश्चय नथी थातो,कांजे ए अग्निनो स्पर्श करे तो बळी मरे तथा सूर्य छे तेने कुंताजीए दुर्वासाना आपेल मंत्रे करीने तेड्या त्यारे ते सूर्य कुंताजी पासे आव्या ते मनुष्यरूपे जेवां कुंताजी हतां तेवाज सूर्य थइने आव्या त्यारे तेना अंगसंगनुं सुख आव्युं ने कर्णरूप गर्भ रह्यो पण जेवा सूर्य प्रकाशवान छे तेवा प्रकाश सोता आव्या हात तो कुंताजी बळी मरत ने स्पर्शनुं सुख पण न आवत तथा सत्राजित् यादव पासे सूर्य आवता ते पण माणस जेवा थइने आवता अने ज्यारे ए सूर्य कुंताजी पासे तथा सत्राजित् पासे आव्या त्यारे शुं आकाशमां नहोता ? आकाशमां पण हता ने बीजे रूपे एना एज सूर्य कुंताजी ने सत्राजित् पासे आव्या अने जेवो सूर्यनो प्रकाश छे ते सर्व एमां छे खरो पण तेनो संकोच करीने माणस जेवा थइने आव्या छे तेम ए जे भगवान छे ते पोते पोताना दिव्यभाव सोताज जीवने जो दर्शन आपे तो मनुष्यने ठीक न पडे ने एम जाणे जे आते शुं भूत हशे के शुं हशे ? माटे ए भगवान पोताना ऐश्वर्यनो संकोच करीने मनुष्य जेवाज थइने दर्शन आपे छे ने पोते पोताना धाममां पण विराजमान छे त्यारे ते मनुष्यने दर्शनमां स्पर्शमां तथा नव प्रकारनी भक्ति कर्यामां आवे छे अने जो भगवान मनुष्य जेवा न थाय ने दिव्य

भावे वर्ते तो मनुष्यने पोतामां हेत थाय नहि ने सुवाण न पडे शा माटे तो मनुष्य मनुष्यने विषे हेत थाय छे ने सुवाण थाय छे पण पशुने ने मनुष्यने हेत सुवाण थाती नथी अने पशु पशुने परस्पर हेत ने सुवाण थाय छे, केमजे सजाति सजातिमां हेत थाय पण विजातिमां थाय नहिं, तेम भगवान पोताना दिव्य भावनो संकोच करीने पोताना भक्तने पोतामां हेत थाय ते सारु माणस जेवाज भगवान थाय छे पण दिव्य भाव जणावता नथी ने दिव्यभाव जणावे तो विजातिपणुं थाय माटे भक्तने पोतामां हेत ने सुवाण थाय नहि ते सारु मनुष्यरूपे ए भगवान थाय छे त्यारे पोतानो दिव्य भाव छे तेने छपावी राखवो ते उपरज पोतानी दृष्टि रहे छे. अने छपावते छपावते कदाचित् पोते कोइक कार्यमां उतावळा थइ जाय छे त्यारे दिव्यभाव जणाइ आवे छे ने क्यारेक पोते पोतानी इच्छाए करीने पण पोताना कोइक भक्तने जणावे छे, जेम श्रीकृष्ण भगवान् भीष्मने मारवाने उतावळा थया त्यारे मनुष्यभाव भुली गया ने पोतामां दिव्यभाव आव्यो तेणे करीने पोताना भारने पृथ्वी सहन करवा समर्थ न थइ तथा अर्जुनने दिव्यभाव देखाड्यो ते पोतानी इच्छाए देखाड्यो पण ते दिव्यभावे करीने अर्जुनने सुख न थयुं ने बहु व्याकुळ थइ गया, त्यारे कह्युं जे ॥ तेनैवरूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते ॥ पछी श्रीकृष्ण भगवाने पोतानुं मनुष्यपणे दर्शन अर्जुनने आप्युं त्यारे अर्जुनने सुख थयुं, माटे मनुष्यपणे करीने भगवान वर्ते तोज जीवने सानुकूळ पडे, नहि तो न पडे ते सारु ए भगवान मनुष्यपणे वर्ते छे त्यारे जे आवी रीते नथी समझतो तेने मनुष्यभाव देखीने अवळुं पडे छे; अने जो ए भगवान दिव्यभावेज वर्ते तो मन वाणीने अगोचर होय ते कोइना जाण्यामां आवे नहि. माटे ए बे प्रकारे भगवानने शास्त्रमां कह्या छे तेवी रीते जेणे यथार्थ जाण्या होय तेने संशय न थाय अने जो एम न समझे तो संशय जरुर थाय अने जे एम कहे छे जे में भगवानने जाण्या छे ने मुने निश्चय छे ने जो ते आ वातने समझ्यो नथी तो तेनो निश्चय काचो छे,जेम कोइक पुरुष श्लोक शिख्यो होय तथा कीर्तन शिख्यो होय ने तेने पुछीए जे तुने आ श्लोक तथा कीर्तन आवडयां ? त्यारे कहे जे आवडयां ने कंठथी मुखपाठे कही देखाडे पण पछी थोडाक दिवस थाय त्यारे ते श्लोक कीर्तनने भुली जाय, त्यारे ए ते छुं जे ए ज्यारे शिख्यो हतो त्यारेज एने एटलां आवडयां नहोतां,केमजे श्रवण मनने करीने एनो दृढ अभ्यास थइने एना जीवमां ए श्लोक कीर्तन चोंटी नहोतां गयां. अने कोइक वातनो बाळकपणामांज एवो अभ्यास थयो होय छे तो ए युवान थाय वृद्ध थाय तो पण ते वातनुं ज्यारे काम पडे त्यारे सांभरी आवे छे, तेम एणे भगवाननो निश्चय कर्यो हतो त्यारेज एना निश्चयमां कसर रही गइ हती अने जो

कसर न रही होत ने आवी रीते प्रथमथीज श्रवण करीने ने तेनुं मनन करीने तेनो दृढ अध्यास एना जीवमां थयो होत तो एने कोइ दिवस संशय थातज नहिं. (१) १ इति वचनामृतम्. ॥४॥ (१३०)

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [१] छे. तेमां श्रीजीमहाराजे वेदादिकने दृष्टांते पोतानुं सनातन अनादि दिव्य स्वरूप अक्षरधाममां रह्युं छे तेनुं अवर्णनीयपणुं तथा अगोचरपणुं कह्युं छे जे, मायिक आकार मात्रमां अमारा तुल्य कोइमां रूपआदिक नथी अने अमारा धाम जेवुं कोइनुं स्थानक नथी अने अमारा धामने विषे अमारा भक्तोने जेवुं सुख छे तेवुं कोइने सुख नथी अने अमारा जेवो कोइनो आकार नथी अने प्रकृति थकी थया जे आकार ते मायिक छे अने अमे ने अमारा मुक्त दिव्य छीए. अने जेम मनुष्यने मेश आदिकनी उपमा देवी ते अघटित छे तेवी रीते अमने प्रकृतिना कार्यनी उपमा देवी ते अतिशे अघटित छे, अने जेम मनुष्यो सजाति छे तेमां पण सादृश्यपणुं नथी, तेम माया-थी पर ईश्वरकोटी, ब्रह्मकोटी ने अक्षरकोटी ते दिव्य, सजाति ने चैतन्य छे तो पण तेमां ने अमारामां कांइ सादृश्यपणुं नथी, अने जेम अगो मुक्तो सरखा छे तेम अमारा धाममां अमारा मुक्त अमारा सरखा छे तेमां पण अत्यंत सादृश्यपणुं नथी तो उपर कह्या जे ऐश्वर्यार्थीओ तेमां सादृश्यपणुं न होय तेमां शुं कहेवुं ? अने मायिक आकारमां तो सादृश्यपणुं होयज क्यांथी ? एवा दिव्य ने सर्वने अगोचर अमे अक्षरधाममां रह्या छीए अने राजाधिराजने असंख्य समृद्धि तथा पार्षदो तेमणे युक्त ने अनंतकोटी ब्रह्मांडना पति छीए अने ते ब्रह्मांडोना पतियो ते अमने भजे छे ने अमारी आज्ञामां वर्ते छे ने प्रार्थना करे छे, त्यारे अमे ज्यां जेम घटे त्यां तेम अमारी इच्छाथी दर्शन आपीए छीए अने युगानुरूप आचरण करीए छीए आवो अमारो दिव्य भाव ने मनुष्य भाव यथार्थ जाण्यो होय तेने अमारा निश्चयमां संशय थाय नहि अने दिव्यरूप एवा अमे ते मनुष्यरूप धारीए छीए त्यारे मनुष्यना जेवा स्वभावे युक्त वर्तीए ते अमारो मनुष्य भाव ने दिव्यभाव ते बुद्धिवानना जाण्यामां आवे छे ने तेनेज अमारो निश्चय थाय छे; अने अमे दिव्यभावे सहित दर्शन आपीए तो मनुष्यने दर्शन स्पर्शादिकनुं सुख न आवे ने कल्याणनो निश्चय न थाय, जेम सूर्य ने अग्निने दर्शने सुख नथी थतुं तेम, माटे अमे तमारा कल्याणने अर्थे दिव्य भाव छुपावीने मनुष्य जेवा देखाइए छीए, अने कोइक स्थळमां दिव्यभाव जणावीए छीए, जेम श्रीकृष्ण भगवाने भीष्मने जणाव्यो तेम. माटे अमारो दिव्य भाव ने मनुष्य भाव जाण्यो होय तेने अमारा चरित्रमां संशय थाय नहि ने निश्चय टळे नहि, नहितो टळी जाय. (१) बाबत छे.

१ प्र० ब्रह्मादिक भगवाननी प्रार्थना करे छे एम कह्युं ते एमनी गतितो श्रीजीमहाराज सुधी छे नहि त्यारे ते केवी रीते प्रार्थना करता हशे ?

१ उ० पोताना उपरिनी प्रार्थना करे छे तेमां श्रीजीमहाराजनो आविर्भाव छे ते द्वारे जेवुं कार्य करवुं होय तेवुं रूप धारण करीने ते कार्य करावे छे अने ब्रह्मा, विष्णु, शिव अमने

भजे छे एम कह्युं छे, ते पण एमना उपरि द्वारे श्रीजीमहाराजने भजे छे एम जाणवुं अने आजती श्रीजीमहाराज केवळ कृपा करीने जीवोनुं आत्यंतिक कल्याण करवा साऱुंज पधार्या छे ते (प्र० ७८ ना नवमा प्रश्नमां) अमे कृपा करीने मर्त्य लोकनां मनुष्य देखे एवा थया छीए एम कह्युं छे माटे आजतो कृपा करीनेज दर्शन आप्यां छे अने देवमां देह धारण करे छे ते पण वामनादिक अवतारो द्वारेज दर्शन आपे छे.

१ प्र० देवमां अवतार धारवानुं भगवानने शुं प्रयोजन हशे ?

१ उ० देवने कोइक दैत्य थकी कष्ट आव्युं होय ते कष्ट विष्णु आदिक अवतारो द्वारे निवारण करे छे.

१ प्र० भगवान भीष्मने मारवा उतावळा थया त्यारे मनुष्य भाव भुली गया एम कह्युं ते भगवान तो स्वतंत्र होय ते भुली केम जाय ?

१ उ० मनुष्य भाव भुली गया एटले मुकी दीधो ने दिव्य भाव देखाड्यो एम कह्युं छे पण भुली गया एटले तेनी विस्मृति थइ एम नथी कह्युं. ॥१३०॥

संवत् १८७७ ना फागण वदि ८ अष्टमीने दिवस श्रीजीमहाराज गाम श्री पंचाळा मध्ये झीणाभाइना दरबारमां आटाने विषे ढोलिया उपर बिराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने गरम पोसनी रातो डगली पहेरी हती ने मस्तक उपर धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने धोळो चादर ओढी हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे, (१) किये ठेकाणे मान साऱुं छे ने किये ठेकाणे साऱुं नथी ? ने किये ठेकाणे निर्मानीपणुं साऱुं छे ने किये ठेकाणे साऱुं नथी ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जे सत्संगनो द्रोही होय ने परमेश्वरनुं ने मोटा संतनुं घसातुं बोलतो होय तेनी आगळ तो मान राखवुं तेज साऱुं छे अने ते घसातुं बोले त्यारे तेने तीखा बाण जेवुं वचन मारवुं पण विमुखनी आगळ निर्मानी थावुं नहि तेज रुडुं छे; अने भगवानने भगवानना संतनी आगळ तो जे मान राखवुं ते साऱुं नथी ने तेनी आगळ तो मानने मुकीने दासानुदास थइने निर्मानीपणे वर्तवुं तेज रुडुं छे. (१) इति वचनामृतम्. ॥५॥ (१३१) १

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां अमारा तथा अमारा भक्तनी आगळ निर्मानी रहेवुं अने विमुख जे सत्संगनो द्रोही होय अने अमारुं तथा अमारी मुर्तिमां निमग्न एवा संतनुं घसातुं बोलतो होय तेना आगळ मान राखवुं एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (१) वाक्य छे. ॥ १३१ ॥

संवत् १८७७ ना फागण वदि ९ नवमीने दिवस रात्रिने समे श्रीजीमहाराज गाम श्री पंचाळा मध्ये झीणाभाइना दरबारमां ओटा उपर ढोलियो ढळावीने बिराज-

मान हता ने मस्तक उपर धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने धोळे अंगरखे सहित गरम पोसनी
राती डगली पहेरी हती ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी पछेडी ओढी हती ने पोताना
मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.
१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) अमे शास्त्रीआर सुधी विचार कर्यो ने सर्वे
शास्त्रमां नजर फेरवीने जोयुं त्यारे एम जणाणुं जे, श्रीकृष्ण जेवो अवतार सर्व शक्तिए
युक्त बीजो कोइ नथी थयो, केमजे बीजी जे सर्वे पोतानी अनंत मूर्तियो भिन्न भिन्न-
पणे रही छे ते सर्वेनो भाव श्रीकृष्ण भगवाने पोताने विषे देखाड्यो ते केवी रीते तो
प्रथम पोते देवकी थकी जन्म्या त्यारे शंख, चक्र, गदा, पद्म, धारीने चतुर्भुज रूपे
दर्शन दीधुं तेणे करीने लक्ष्मीपति जे वैकुंठनाथ तेनो भाव पोतामां जणाव्यो तथा माता
यशोदाने पोताना मुखमां विश्वरूप देखाड्युं तेणे करीने सहस्रशीर्षापणे करीने अनि-
रुद्धपणुं पोतामां जणाव्युं तथा अक्रूरने यमुनाना धरामां दर्शन दीधां तेणे करीने शेष-
शायीपणुं जणव्युं तथा अर्जुनने रणसंग्राममां विश्वरूप देखाड्युं जे ॥ पश्यमे पार्थरूपाणि
शतशोयसहस्रशः ॥ एवी रीते अनंत ब्रह्मांड देखाडीने पुरुषोत्तमपणुं जणव्युं तथा पोते
श्रीकृष्णे कह्युं जे ॥ यस्मात् क्षरमतीतोऽहमक्षरादपिचोत्तमः । अतोस्मिल्लोकेवेदेच प्रथितः
पुरुषोत्तमः ॥ एवी रीते पोते पोतानुं पुरुषोत्तमपणुं जणव्युं तथा गोलोकवासी जे राधिका
सहित श्रीकृष्ण ते तो पोतेज हता अने ब्राह्मणना बाळकने लेवा गया त्यारे अर्जुनने
पोतानुं भूमापुरुष रूपे दर्शन कराव्युं तथा श्वेतद्वीपवासी वासुदेव तेणे तो पोतेज ए अव-
तार धर्यो हतो तथा नरनारायण तो समग्र भारतने विषे तथा भागवतमां ए श्रीकृष्णने ज
कह्या छे ते माटे ए श्रीकृष्णना अवतारने विषे तो भिन्न भिन्नपणे रही जे एज भगवाननी
मूर्तियो तथा शक्तियो ऐश्वर्य ते समग्र छे,माटे ए अवतार ते बहु मोटा थयो छे अने बी-
जी मूर्तिने विषे थोडुं ऐश्वर्य छे,ने एने विषे संपूर्ण ऐश्वर्य छे, माटे कृष्णावतार जेवो कोइ
अवतार नथी अने ए अवतार सर्वोपरि वर्त्ते छे. (१) अने बीजा अवतारे करीने थोडी १
शक्ति जणवी छे ने आ अवतारे करीने संपूर्ण ऐश्वर्य शक्तियो जणवी, माटे आ अवतार
सर्वोत्कर्षपणे वर्त्ते छे,एवी रीते जेनी प्रत्यक्ष श्रीकृष्णना स्वरूपमां अचळमति होय ने ए मति
कोइ दिवस व्यभिचारने न पामती होय ने तेनी वते कोइ कुसंगे करीने कदाचित् कांइक
अवळुं सवळुं वर्त्ताइ गयुं होय तो पण ते कल्याणना मार्गथांथी पडे नहिं एनुं कल्याणज
थाय, माटे तमे सर्वे परमहंस हरिभक्त छो ते पण एवी रीते जो उपासनानी दृढता आ
भगवानने विषे राखशो तो कदाचित् कांइक अवळुं वर्त्ताइ जाशे तो पण अंत्ये कल्याण
थाशे, एवी रीतनी वार्ताने सांभळीने सर्वे साधु तथा हरिभक्त ते श्रीजीमहाराजने विषे
सर्व कारणपणुं जाणीने उपासनानी दृढता करता हवा. (२) इति व० ॥६॥ (१३२) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य [१] छे. तेमां श्रीजीमहाराजे वैकुंठनाथ जे रामचंद्रजी तथा सहस्रशीर्षा जे अनिरुद्ध तथा शेषशायी जे वैराजनारायण तथा भूमापुरुष तेमना कारण,अवतारी ने पुरुषोत्तम ते श्रीकृष्णने कह्या छे अने ते श्रीकृष्णने गोलोकवासी कह्या छे अने श्वेतद्वीपपति वासुदेव ब्रह्मना अवतार कह्या छे ने वासुदेव ब्रह्मने श्रीकृष्णना अवतारी कह्या छे अने भारतमां ने भागवतमां श्रीकृष्णने नरनारायण नामे कह्या छे. (१) अने आ अवतार एटले अमे वासुदेवादिक सर्वे अवतारोना कारण छीए एवा सर्वोपरि अमने जाणीने, अमारी दृढ उपासना करवी ने आवी रीतनी अमारे विषे उपासनानी दृढता होय तेनाथी कांइक अवळुं वर्ताइ गयुं होय तोपण अंते तेनुं कल्याण थाय. [२] बाबतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां श्वेतद्वीपपति वासुदेव तेणेज कृष्णावतार धर्यो हतो एम कह्युं अने तमे भावार्थमां वासुदेवने श्रीकृष्णना अवतारी केम कह्या ?

१ उ० श्वेतद्वीपपति वासुदेवे कृष्णावतार धर्यो हतो एम कहेवाथीज श्रीकृष्ण वासुदेवना अवतार थया ने वासुदेव अवतारी थया ते (का० १० ना $\frac{१}{४}$ पहेला प्रश्नमां) प्रकृति पुरुषथी पर ब्रह्म कह्या छे ते आ वासुदेव ब्रह्मने कह्या छे अने (लो० १२ ना पहेला प्रश्नमां) शुकजी तथा निरन्न मुक्तने दृष्टांते श्रीकृष्ण जेवा जाणनाराने निर्विकल्प निश्चयमां कनिष्ठ कह्या छे अने वासुदेवनी उपासना करनाराने मध्यम कह्या छे माटे एमां शंकानो माग नथी.

२ प्र० भारतने भागवतमां श्रीकृष्णने नरनारायण नामे कह्या छे एम कह्युं ते श्रीकृष्ण तेज नरनारायण हशे के जुदा हशे ?

२ उ० श्रीकृष्णने नरनारायण एवुं विशेषण आप्युं छे, जेम रामचंद्रजीने नारायण, वासुदेव, परमात्मा, पुरुषोत्तम, कृष्ण एवां विशेषणो आप्यां होय तेणे करीने ते कांइ वैराज नारायण के श्वेतद्वीपपति वासुदेव के गोलोकवासी श्रीकृष्ण कहेवाय नहि; एमनुं मुख्य नाम जे रामचंद्रजी छे तेज कहेवाय, अने श्रीजीमहाराजने पण वासुदेव, श्रीकृष्ण, नरनारायण, एवां विशेषणो आप्यां होय पण मुख्य नाम स्वामिनारायण छे ने बीजां सर्व विशेषणो छे, तेमज श्रीकृष्णने नरनारायण, वासुदेव, राम, पुरुषोत्तम, परमात्मा एवां विशेषणो आप्यां होय पण मुख्य नाम श्रीकृष्ण छे माटे शास्त्रोमां सर्वे अवतारोने एवां विशेषणो आप्यां होय छे एम जाणवुं अने रामचंद्रजी, श्रीकृष्ण, नरनारायण, वासुदेव, मूळअक्षर तथा सर्वना अवतारी एवा श्रीजीमहाराज ते सर्वे जुदाज छे अने (लो० $\frac{१-४}{६}$ मां) वैकुंठ अने आदि शब्दथी गोलोक ते करतां बदरिकाश्रम तथा श्वेतद्वीपने श्रेष्ठ कह्या छे तो जेनां धाम श्रेष्ठ होय तेना धामी तो श्रेष्ठ होयज तेमां शुं कहेवुं ? माटे श्रीकृष्णथी नरनारायण श्रेष्ठ छे अने तेथी वासुदेव ब्रह्म श्रेष्ठ छे, अने शास्त्रमां श्रीकृष्णने विषे वासुदेव के नरनारायण लीन थया एम कह्युं होय त्यारे ते श्रीकृष्णथी ओरा जे प्रधान पुरुष तथा महत्तत्त्व रूपी वासुदेव तथा नर कहेतां अर्जुन अने नारायण कहेतां वैराज नारायण तथा शेषनारायण ते जाणवा.

३ प्र० बीजी बाबतमां अवळुं वर्त्ताइ जशे तोपण अंते कल्याण थशे एम कह्यं ते अवळुं शुं जाणवुं?
३ उ० भुंडा देशकाळादिकने योगे करीने वर्त्तमानमां एकाद वखत फेर पडी जाय तेनुं प्रायश्चित्त करे तो कल्याण थाय; अने प्रायश्चित्त न करे तो तेने बीजो जन्म धरावीने दंड भोगवावीने कल्याण करे अने जे जाणीने वर्त्तमान लोपे ते तो जीवतोज ब्रह्म राक्षस छे ने मरीने नरकमां पडे छे. ॥ १३२ ॥

संवत् १८७७ ना फागण वदि ११ एकादशीने दिवस छो घडी दिवस चढते श्रीजीमहाराज गाम श्रीपंचाळा मध्ये झीणाभाइना दरबारमां ओटा उपर ढोलियो ढळावीने विराजमान हता ने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो तथा गरम पोसनी राती डगली पहेरी हती तथा धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा धोळी झीणी पछेडी ओढी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंसनी सभा तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने श्रीजीमहाराज नित्यानंदस्वामी पासे श्रीमद्भागवतना प्रथम स्कंधना त्रीजा अध्यायनी कथा करावता हता. तेमां आ श्लोक आव्यो जे ।।स वेद धातुः पदवीं परस्यदुरंतवीर्यस्य रथांगपाणेः । योऽमायया संततयानुवृत्त्या भजेत तत्पाद सरोजगंधम्।। ए श्लोकनो अर्थ कर्यो त्यारे।।अमायया।।एवुं जे ए श्लोकनुं पद तेनो अर्थ पोते श्रीजी-
१ महाराज करवा लाग्या जे, (१) भगवाननुं स्वरूप मायाये रहित समझीने जे भगवानना चरणकमळने भजे ते भगवाननी पदवीने जाणे. ते माया ते शुं तो जे पंचभूत इंद्रियो, अंतःकरण ने देवता ए माया छे ते माया भगवानना स्वरूपने विषे त्रिकाळमां छेज नहि, एम समझे तथा भागवतना ।। जन्माद्यस्य ।। ए श्लोकनुं पद जे ।। यत्र त्रिसर्गो मृषा ।। तेनो ए अर्थ छे जे, ए भगवानने विषे त्रणगुणनो सर्ग जे पंचभूत इंद्रियो, अंतःकरण ने देवता ते खोटा छे अने ।। धाम्ना स्वेन सदा निरस्त कुहकम् ।। कहेतां धाम जे पोतानुं स्वरूप तेणे करीने टाळ्युं छे ए मायारूप कपट जेणे एवुं भगवाननुं परम सत्य स्वरूप छे ते आत्यंतिक प्रळय ने अंते अक्षर धामने विषे जेवुं भगवाननुं स्वरूप अनंत ऐश्वर्य तेजे युक्त छे तेवुं ने तेवुंज जे प्रत्यक्ष मनुष्य रूप भगवानने विषे जाणवुं तेणे तत्त्वे करीने भगवानने जाण्या कहेवाय; अने एज प्रत्यक्ष भगवानने मूढ जीव छे ते मायिक दृष्टिए करीने जुवे छे त्यारे पोता जेवा मनुष्य देखे छे, ने जेम पोते जन्म्यो होय बाळक थाय, युवान थाय, वृद्ध थाय ने मरी जाय, तेमज भगवानने पण जाणे छे अने ज्यारे एनी मायिक दृष्टि मटे त्यारे एनी ए जे भगवाननी मूर्ति तेने परम चैतन्य सत् चित् आनंदमय जाणे अने ए भगवानने विषे जे बाळक युवान वृद्धपणुं देखाय छे तथा जन्म मरणपणुं देखाय छे ते तो एनी योगमायाये करीने देखाय छे पण वस्तुगते

तो भगवान जेवा छे तेवाने तेवाज छे, जेम नट विद्यावाळो होय ते शस्त्र बांधीने आकाशमां इंद्रना योद्धा साथे वढवा जाय पछी कटका थइने हेठा पडे ने ते पछी ते कटकाने भेगा करीने ते नटनी स्त्री बळी मरे, पछी थोडीक वारे ते नट पाछो आकाशमांथी हथियार बांधीने जेवो हतो तेवोने तेवोज आवे ने राजा पासे मोज मागे ने कहे जे मारी स्त्री लावो, एवी रीतनी जे नटनी माया ते पण कळ्यामां कोइने आवती नथी तो भगवाननी योग माया कळ्यामां केम आवे ? अने जे नटनी मायाने जाणतो होय तेतो एम जाणे जे, ए नट मर्यो पण नथी ने बळ्यो पण नथी जेवो छे तेवोने तेवोज छे, तेम भगवानना स्वरूपने जे तत्त्वे करीने समझतो होय ते तो भगवानने अखंड अविनाशी जेवा छे तेवाज समझे, जेम श्रीकृष्ण भगवाने देह मुक्यो त्यारे ए भगवाननी पत्नियो जे रुक्मणी आदिक हती ते ए भगवानना देहने लइने बळी मरी, त्यारे अज्ञानी हता तेणे तो एम जाण्युं जे हवे ए नाश थइ गया ने जे ज्ञानी हता तेणे तो एम जाण्युं जे आंहीथी अंतर्धान थइने बीजे ठेकाणे जणाणा छे, एम भगवानने अखंड समझे ते पोते श्रीकृष्णे कह्युं छे जे ॥ अवजानंतिमां मूढा मानुषींतनुमाश्रितम्। परंभाव मजानंतो मम भूत महेश्वरम् ॥ माटे मूर्ख होय ते जो भगवानने साकार समझे तो केवळ मनुष्य जेवाज समझे ने जो निराकार समझे तो बीजा आकारने जेम मायिक जाणे तेम भगवानना आकारने पण मायिक जाणे ने अरूप एवुं भगवाननुं स्वरूप कल्पे माटे ए बे प्रकारे मूर्खने तो अवळुं पडे छे. अने जो भगवानने आकार न होय तो ज्यारे आत्यंतिक प्रलय हतो त्यारे श्रुतिए एम कह्युं जे ॥ सईक्षत ॥ कहेतां ते भगवान जे ते जोता हवा त्यारे जो जोयुं तो ए भगवाननुं नेत्र श्रोत्रादिक अवयवे सहित साकार एवुं दिव्य स्वरूप हतुंज, अने वळी एम पण कह्युं छे जे ॥ पुरुषेणात्मभूतेन वीर्य माधत्त वीर्यवान्॥ एवी रीते पुरुष रूपे थइने ए पुरुषोत्तम तेणे मायाने विषे वीर्यने धारण कर्युं त्यारे ए भगवान प्रथमज साकार हता. [१] अने ए जे पुरुषोत्तम नारायण ते कोइक कार्यने १
अर्थे पुरुषरूपे थाय छे, त्यारे ए पुरुष छे ते पुरुषोत्तमना प्रकाशमां लीन थइ जाय छे ने पुरुषोत्तमज रहे छे तेमज मायारूपे थाय छे त्यारे मायापणुं पण पुरुषोत्तमना तेजमां लीन थइ जाय छे ने ते रूपे भगवानज रहे छे अने पछी ए भगवान महत्तत्त्व रूपे थाय छे ने तेमज महत्तत्त्वमांथी थयां जे बीजां तत्त्व ते रूपे थाय छे अने पछी ते तत्त्वनुं कार्य जे विराट् ते रूपे थाय छे तथा ते विराट् पुरुषथी थया जे ब्रह्मादिक ते रूपे थाय छे तथा नारद सनकादिक रूपे थाय छे, एवी रीते अनेक प्रकारना कार्यने अर्थे जेने जेने विषे ए पुरुषोत्तमनो प्रवेश थाय छे तेने तेने पोताना प्रकाशे करीने लीन करी नाखीने पोतेज ते रूपे करीने सर्वोत्कर्षपणे विराजमान थका रहे छे अने जेने विषे पोते विराजमान रहे छे तेना प्रकाशने पोते ढांकीने पोतानो प्रकाश प्रगट करे छे, जेम अग्नि लो-

डाने विषे आवे छे त्यारे लोढानो जे शीतळ गुण ने काळो वर्ण तेने टाळीने पोते पोताना गुणने प्रकाश करे छे, तथा जेम सूर्य उदय थाय छे त्यारे तेना प्रकाशमां सर्वे तारा चंद्रमादिकनां तेज ते लीन थइ जाय छे ने एक सूर्यनोज प्रकाश रहे छे तेम ए भगवान जेने जेने विषे आवे छे त्यारे तेना तेजनो पराभव करीने पोताना प्रकाशने अधिकपणे जणावे छे अने जे कार्यने अर्थे पोते जेमां प्रवेश कर्यो हतो ते कार्य करी रह्या केडे तेमांथी पोते नोखा निसरी जाय छे त्यारे तो ते पंडे जेवो होय तेवो रहे छे ने तेमां जे अधिक दैवत जणातुं हतुं ते तो पुरुषोत्तम भगवाननुं हतुं एम जाणवुं, एवी रीते सर्वना कारण ने सदा दिव्य साकार एवा जे प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम नारायण तेमनी मूर्तिने विषे साकरना नाळियेरनी पेठे त्याग भाग समजवो नहि ने जेवी मूर्ति दीठी होय तेनुंज ध्यान उपासना भक्ति करवी पण तेथी कांइ पृथक् न समजवुं अने जे भगवानमां जे देह भाव जणाय छे ते तो नटनी मायानी पेठे समजवो ने जे आवी रीते समजे तेने ते भगवानने विषे कोइ रीते मोह थातो नथी. अने आ वार्ता छे ते केने समज्यामां आवे छे तो जेने एवी दृढ प्रतीति होय जे, आत्यंतिक प्रलय थाय छे त्यारे पण भगवान ने भगवानना भक्त ते दिव्य साकार रूपे करीने अक्षरधामने विषे दिव्य भोगने भोगवता थका रहे छे अने ते भगवाननुं रूप ने भगवानना भक्तनां रूप ते अनंत सूर्य चंद्रना प्रकाश सरखा प्रकाशे युक्त छे, एवी जातनी जेने दृढ मति होय तेज आ वार्ताने समजी शके. अने एवा तेजोमय दिव्यमूर्ति जे भगवान ते जीवोना कल्याणने अर्थे ने पोताने विषे नव प्रकारनी भक्ति जीवोने कराववाने अर्थे कृपा करीने पोतानी जे सर्व शक्तियो ऐश्वर्य पार्षद तेणे सहित प्रकाज मनुष्य जेवा थाय छे त्यारे पण जे एना मर्मना जाणनारा छे ते आ भगवाननुं स्वरूप अक्षरधामने विषे जेवुं रह्युं छे तेवुंज पृथ्वीने विषे जे भगवाननुं मनुष्य स्वरूप रह्युं छे तेने समजे छे पण ते स्वरूपने विषे ने आ स्वरूपने विषे लेशमात्र फेर समजता नथी अने आवी रीते जेणे भगवानने जाण्या तेणे तत्वे करीने भगवानने जाण्या कहेवाय ने तेने मायानी निवृत्ति थइ कहेवाय ने एम जे जाणे तेने ज्ञानी भक्त कहीए ने तेने एकांतिक भक्त
कहीए. [२] अने आवी रीते जेने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनी दृढ उपासना होय ने २
भगवानना स्वरूपमां कोइ दिवस मायिकपणानो संशय न थातो होय ने तेने कदाचित् कोइ कुसंगने योगे करीने अथवा प्रारब्ध कर्मने योगे करीने कांइ अवळुं वर्ताइ जाय तो पण तेनुं कल्याण थाय; अने जो आवी रीने भगवानने जाण्यामां जेने संशय होय ने ते जो ऊर्ध्वरेता नैष्ठिक ब्रह्मचारी होय ने महा त्यागी होय तो पण तेनुं कल्याण थावुं अति कठण छे. अने जेणे प्रथम एवो दृढ निश्चय कर्यो होय जे, ज्यारे आत्यंतिक

मळय थाय छे तेने अंते पण आ भगवान साकार छे एवी दृढ ग्रंथी हृदयमां पडी होय ने पछी जो तेने तेजोमय अलिंगपणुं जे शास्त्रमां कह्युं होय तेनुं श्रवण थाय तथा एवी वार्ता कोइक थकी सांभळे तो पण तेने संशय थाय नहि, केमजे ए तो एम समज्यो छे जे भगवान तो सदा साकारज छे पण निराकार नथी अने तेज भगवान रामकृष्णादिक मूर्तियोने धारण करे छे, एवी रीते जेनी दृढपणे समझण होय तेनी परिपक्व निष्ठा जाणवी, एवी रीते श्रीजीमहाराजे पोताना भक्तजननी शिक्षाने अर्थे पोताना स्वरूपनी जे अनन्य निष्ठा ते संबंधी वार्ता करी तेने सांभळीने सर्वे परमहंस तथा हरिभक्त ते श्रीजीमहाराजना स्वरूपनी एवीज रीते विशेषे दृढता करता हवा. (३) ३

इति वचनामृतम्. ॥७॥ (१३३)

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे धाम जे पोतानुं स्वरूप कहेतां पोताने धाम शब्दथी कह्या छे अने ते सत्य स्वरूप जेवुं अक्षरधामने विषे छे तेवुंज मनुष्यरूपे देखाय छे एम समझे तेनुं मायारूपीकपट रहेतुं नथी. अने अज्ञानी जीव अमने मनुष्य जेवा देखे छे ने पोतानी पेठेज अमारे विषे जन्म मरण भाव कल्पे छे ते ज्यारे एनी मायिक दृष्टि मटे त्यारे अमने परम चैतन्य सत् चित् आनंदमय जाणे छे अने अमे मनुष्य भाव देखाडीए छीए तेतो नटनी पेठे अमारी योगमाया छे, अने जेम श्रीकृष्ण भगवानना देहत्यागादिक जोइने ज्ञानी भक्तने मोह न थयो, तेम अमने यथार्थपणे समझनारा भक्त अमे जेवा अक्षरधाममां छीए तेवाज समझे छे ने मूर्ख अमने साकार समझे तो मनुष्य जेवाज समझे अने निराकार समझे तो ते देहदेही भाव समजे, जेम देहमां जीव रह्यो छे तेम भगवान मायिक देहमां रह्या छे पण स्वरूपे निराकार छे एम समजे पण अमे तो सदा दिव्य साकार छीए ते साकारपणुं श्रुति स्मृतिए पण प्रतिपादन कर्युं छे. (१) अने जेम अग्नि ज्वाळा रूपे लोढाने विषे आवे छे, त्यारे लोढाना गुण दाबीने पोताना गुणने प्रकाश करे छे, तेम अमे पुरुषमां अमारा प्रकाश द्वारे प्रवेश करीए छीए त्यारे जेम सूर्यना प्रकाशमां तारा चंद्रनां तेज लीन थइ जाय छे, तेम पुरुषनो प्रकाश, ऐश्वर्य, सामर्थी ते अमारा प्रकाशमां लीन थइ जाय छे अने प्रकाश द्वारे पुरुषमां रहीने अमे उत्पत्ति करीए छीए अने तेमज मायामां प्रकाश द्वारे प्रवेश करीए छीए त्यारे मायाना जडपणादिक गुणने दाबी दइए छीए त्यारे ते मायाथकी अनंत कोटी ब्रह्मांडने उत्पन्न करे तथा प्रधान पुरुषादिक उत्पन्न थाय छे ते मायापणुं ढंकाइ गयुं जाणवुं एवीज रीते चोवीश तत्त्व तथा वैराजादिकने विषे पण उत्पत्त्यादिक कार्य अमारा प्रकाश द्वारे करीने करीए छीए अने नारद सनकादिक रूपे एटले मुक्तने विषे अमे प्रगट विराजीने मोक्षरूपी कार्य करीए छीए अने जेम लोढामां अग्नि रह्योज छे पण विशेष प्रवेश कर्यो होय ते निकळी जाय छे त्यारे ते लोढुं हतुं तेवुं रहे छे तेम अमे उत्पत्त्यादिक कार्य करी रह्या पछे विशेष प्रवेश करेलो ते प्रकाश धर्मांथी निकळी जाय छे, त्यारे तो ते सर्वे जेवा छे तेवाज रहे छे अने तेमां अधिक

दैवत जणातुं हतुं ते अमारुं हतुं अने अमे अमारा अक्षरधामने विषे सदा साकार मूर्ति छीए अने अमारी आ मूर्तिमां त्याग भाग नथी माटे आ मूर्तिनुंज ध्यान उपासना भक्ति करवी पण धाममां बीजुं स्वरूप हशे अने आ बीजुं स्वरूप छे एम न समजवुं, अने आत्यंतिक प्रलय थाय छे, त्यारे पण अमे ने अमारा भक्त दिव्य साकाररूपे अतिशे प्रकाशे युक्त अक्षर धाममां रहीए छीए अने अमे ने अमारा भक्त अतिशे प्रकाशे युक्त छीए ने तमारा कल्याणने अर्थे कृपा करीने सर्व शक्ति पार्षदोए सहित मनुष्य जेवा देखाइए छीए, आवी रीते समझे तेणेज अमने यथार्थ जाण्या कहेवाय ने तेनीज माया निवृत्त थाय छे ने तेज ज्ञानी ने एकांतिक भक्त छे. (२) आवी अमारी दृढ उपासनावाळाने कुसंगने योगे अथवा प्रारब्धे करीने अवळुं वर्ताइ जाय तोपण तेनुं कल्याण थाय पण ते विना उर्ध्वरेता ने महा-त्यागीनुं पण न थाय; अने आवी समझणवाळाने निराकार प्रतिपादन करनारां शास्त्र सांभ-ळीने पण साकारपणामां संशय थायज नहि तेनीज परिपक्व निष्ठा जाणवी. (३) बाबतो छे.

१ प्र० आमां मूर्तिने धाम नामे कही अने (पं० १ मां) मूर्तिना प्रकाशने धाम नामे कहेल छे ते केम समजवुं. ?

१ उ० धाम शब्द मूर्ति, तेज अने स्थान वाचक छे अने आ वचनामृतमां मूर्तिने धाम नामे कही छे ते आमांज कह्युं छे जे धाम जे पोतानुं स्वरूप तेणे करीने टाळ्युं छे मायाना सर्गरूपी कपट जेणे एवुं भगवाननुं सत्य स्वरूप छे ते स्वरूप आत्यंतिक प्रलयने अंते अक्षर धामने विषे अनंत ऐश्वर्य तेजे युक्त छे तेज आ प्रत्यक्ष मनुष्य रूप जाणवुं एम कह्युं छे माटे आ ठेकाणे पोतानेज धाम नामे कह्या छे. ॥ ११३ ॥

इतिश्रीकच्छदेशे वृषपुरनिवासी अनादिमुक्तराज श्रीअबजीभाइ विरचित साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम भगवान श्रीस्वामिनारायण मुखकमळनिःसृत वचनामृत रहस्यार्थप्रदीपिकायां पंचाळा प्रकरणं समाप्तम्.



पंचळा प्रकरणं

समाप्तम्.

॥ अथ वचनामृत गढडा मध्य प्रकरणम् ॥

संवत् १८७७ ना जेष्ठ शुदि १५ पूर्णमासीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ आथमणे बार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो अने धोळी चादर ओढी हती अने माथे धोळी पाघ बांधी हती अने धोळा पुष्पनो हार पहेर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने पोतानी आगळ परमहंस झांझ मृदंग लेइने गावता हता. पछी श्रीजीमहाराजे कीर्तनियाने कह्युं जे हमणां कीर्तन राखो ने प्रश्न उत्तर करो. पछी मुक्तानंदस्वामीए
१ हाथ जोडीने नमस्कार करीने श्रीजीमहाराजने प्रश्न पुछयो जे, (१) हे महाराज ! मोहनुं शुं रूप छे ? अने मोहनी निवृत्ति थयानो शो उपाय छे ? पछी श्रीजीमहाराज थोडीकवार विचारी रहीने पछी बोल्या जे, मोहनुं रूप तो मनने विषे विभ्रांति जेवुं थइ जाय एज जणाय छे. अने ज्यारे पुरुषना हृदयमां मोह वृद्धि पामे छे त्यारे मनमां विभ्रांति विशेष थाय छे. पछी आ करवा योग्य अने आ न करवा योग्य एवो विवेक रहेतो नथी, ने ते मोह थयानुं कारण तो आजज अमे विचार्युं छे जे आज अर्ध रात्य हती त्यारे अमारे निद्रा उडी गइ हती पछी अमे उत्तरादिदिश सामुं मुख करीने सुता हता पछी ध्रुनो तारो दीठो त्यारे एम विचार थयो जे आ तो उत्तर ध्रु छे पण शास्त्रमां दक्षिण ध्रु कह्यो छे ते क्यां हशे ? पछी अमे दक्षिण ध्रु जोयो त्यारे ते पण दीठो, अने जेम कुवा उपर पाणी सिंचवानो फाळ्को होय तेवी रीते बे ध्रुने वच्चे मोटो फाळको दीठो ने ते फाळकाना मेरनां बे ठेकां ते बे कोरे ध्रुने अडी रह्यां छे, जेम लाकडाना स्थंभ होय ने तेमां लोढानी आरुं खुतीने रही होय तेम छे अने ते फाळका उपर जेम सुतरनी फेल्य वींटी होय ने ते फाळका संघाथे जेम पित्तळनी फुदडीयो जडी होय तेम सर्वे तारा ने देवता ने नवग्रहादिक तेनां जे स्थानक ते फाळका संघाथे जडाणां छे ते सर्वेने जोयां ने पछी सूर्य ने चंद्रमानो उदय ने अस्त ते एकज ठेकाणेथी थाय छे ते पण जोयां पछी अंतर्दृष्टि करीने जोयुं त्यारे जेटलुं ध्रुआदि दइने ब्रह्मांडमां छे तेटलुं सर्वे पिंडमां पण दीठुं पछी आ देहने विषे जे क्षेत्रज्ञ छे तेने पण दीठो पछी ते क्षेत्रज्ञमां पुरुषोत्तम भगवान रह्या छे तेने पण दीठा ते भगवानने जोइने भगवानना स्वरूपने विषे अतिशे वृत्ति जोडाइ गइ पछी समाधिमांथी कोइ प्रकारे निकळाणुं नहि पछी तो कोइक भक्तजने आवीने अमारी स्तुति बहु करी तेनी दयाये करीने अमारे पाछुं देहमां

अवाणुं. (१) पछी अमारा हृदयमां विचार थयो जे अमारे जे समाधिमांथी निस- १
राणुं ते तो दयाये करीने निसराणुं पण बीजाने समाधिमांथी निसरातुं हशे तेनुं शुं का-
रण हशे ? पछी अमने एम जणाणुं जे एने कोइक विषयमां आसक्ति रहे छे तेणे करीने
पाछुं निकळाय छे. अने मोहनुं जे कारण ते पण पंच विषयज छे ते विषय पण उत्तम,
मध्यम ने कनिष्ठ ए त्रण प्रकारना छे तेमां ज्यारे उत्तम विषयनी प्राप्ति थाय अने तेमां-
थी कोइ अंतराय करनारो आवे त्यारे ते उपर क्रोध थाय पछी क्रोध थकी मोह थायछे
अने सामान्यपणे तो श्रोत्रने ने शब्दने सदा संबंध छे अने त्वचाने ने स्पर्शने सदा
संबंध छे एवी रीते पंचज्ञान इंद्रियोने पंच विषयनो संबंध छे माटे जे पदार्थने सामान्यपणे
जोयुं होय ने ते पदार्थमांथी वृत्तिने तोडीने भगवानना स्वरूपमां राखवी होय तो तेमां
कांइ दाखडो पडे नहि सहेजेज ते रूप विषयमांथी वृत्ति तुटीने भगवानना स्वरूपमां रहे
अने जो स्त्री आदिकनुं अतिशे रमणिकरूप दीठामां आव्यं गयुं होय ने तेमां वृत्ति जो-
डाणी होय ने पछी जो भगवानना स्वरूपमां वृत्ति राखवा जाय तो रहे नहि अने चित्त
पण एक ठेकाणे रहे नहि, माटे ज्यां सुधी रमणिक पंचविषयमां चित्त लोभाय छे त्यां
सुधी मोह टळे नहि अने ज्यारे एने गमतो विषय होय ने तेमां चित्त तणाणुं होय ने संत
तथा गुरु तथा पोताना इष्टदेव जे भगवान ते जो निषेध करे तो ते उपर रीस चडे अने
तेनो द्रोह थाय पण तेनुं वचन मनाय नहि, एवुं जेना अंतरमां वर्त्ततुं होय तेने मोह
कहीए. ते भगवाने गीतामां कह्युं छे जे ॥ विषयान् ध्यायतःपुंसः संगस्तेषूपजायते ।
संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोभिजायते ॥ क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृति विभ्र-
मः । स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥ माटे आ वचन जे श्रीकृष्ण भग-
वाने कह्यां छे ते परम सिद्धांत छे जे ज्यारे शब्दादिक कोइ विषयमां चित्त लोभाणुं त्यारे
गमे तेवो बुद्धिवान होय पण तेनी बुद्धिनुं कांइ ठेकाणुं रहे नहि ने पशु जेवो थइ जाय
छे माटे मोहने उदय थवानुं कारण ते विषयमां आसक्ति तेज छे. [२] अने जेने ए २
विषयमांथी चित्तने उखेडवुं होय तेने प्रथम तो आत्मनिष्ठा अति दृढ करीने राखवी जे
हुं आत्मा छुं पण देह ते हुं नहि एक तो ए विचार दृढ करवो, अने बीजुं जे प्रकारे
जगतनी उत्पत्ति स्थिति ने प्रळय थाय छे ते वार्ता पण सारी पेठे समझवी, अने त्रीजुं
भगवानना स्वरूपनुं महात्म्य अतिशेपणे समझवुं, ते एम विचारवुं जे, पंच विषय छे ते
तो भगवानना कर्या थया छे माटे भगवानमां तो एवी अति झाझुं सुख छे, शामाटे जे
शब्द होय तेमां एकलुं शब्द संबंधीज सुख होय पण बीजा जे चार विषय रह्या तेनुं सुख
शब्दमां न होय, एवीज रीते स्पर्शमां स्पर्शनुंज सुख होय पण बीजुं न होय, तेमज रूपमां
रूप संबंधीज सुख होय, तेमज रस ने गंध तेमां पण पोतपोता संबंधीज सुख होय पण

एक विषयमां पंच विषयनुं सुख मेळुं न आवे अने भगवाननुं जे स्वरूप छे तेमां तो सर्वे सुख भेळां रह्यां छे ते एक दर्शन करे तो पण ते भक्त पूर्णकाम थइ जाय, एवी रीते भगवानना स्पर्शादिक पण पोताना भक्तने पूर्णकाम करे छे अने मायिक जे विषय संबंधी सुख छे तेतो सर्वे नाशवंत छे अने भगवान संबंधी सुख छे तेतो अखंड छे. एवो जे भगवानना स्वरूपना महात्म्यनो विचार ते पण अति दृढ करवो ए जे त्रण विचार कह्या तेणे करीने विषयमांथी आसक्ति टळी जाय छे. अने ज्यारे विषयमांथी आसक्ति टळे त्यारे विषय सारा के नरसा तेनो भेद रहे नहि जेवी रूपवान स्त्री तेवीज कुरूपवान स्त्री भासे अने तेवीज रीते पशुपक्षी लाकडां छाणां पथरा सुवर्ण ए सर्वने तुल्यपणे जुवे पण सारुं पदार्थ देखीने तेमां मोह न पामे, एवी रीते पंच विषयने विषे वर्त्ते पण सारो के नरसो एवो बुद्धिने विषे भेद रहे नहि एवुं जेने वर्त्ते तेने निर्मोही कहीए ते श्रीकृष्ण भगवाने पण गीतामां कह्युं छे जे ॥ समलोष्टाश्म कांचन: ॥ एवां जेनां लक्षण होय तेणे भगवाननुं स्वरूप तत्त्वे करीने जाण्युं छे, अने एनेज अनन्य भक्त कहीए अने पतिव्रतानुं अंग पण तेनुंज जाणवुं अने ज्ञानी पण तेनेज जाणवो अने भगवान पण तेनी उपरज राजी थाय छे अने भगवानने एवो भक्त अतिशे व्हालो छे ते भगवाने गीतामां कह्युं छे जे ॥ प्रियोहि ज्ञानिनोत्यर्थ महं सचममप्रिय: ॥ माटे एवा जे पतिव्रताना अंगवाळा भगवानना भक्त छे तेज भगवानने अतिशे वाला छे. अने ते पतिव्रतानुं अंग डाह्यानेज आवे एम नथी जेने खप होय तेने सौने आवे,जेम आ संसारमां भोळी स्त्रियो होय ने ते पतिव्रता होय अने डाही स्त्रियो होय ने ते व्यभिचारिणी होय माटे डाह्या भोळानो कांइ मेळ नथी ए तो जेने कल्याणनो खप होय ते पतिव्रतानुं अंग राखीने भगवानना भक्ति करे छे अने जे एवी रीते सारा नरसा विषयमां समानबुद्धि थावी तेतो जाणे जे एक दिवसेज एम करी लेउं ने निर्मोही थाउं एम उतावळे ए काम थातुं नथी एतो हळवे हळवे आदर राखे तेने थाय छे, जेम कुवाना कांठा उपर पथरो नाख्यो होय तेमां पाणी सिंचतां सिंचतां दोरडी नरम होय तोपण घणे काळे करीने ते पाणामां कापा पडे छे अने जो लोढानी सांकळे करीने सिंचे तोपण उतावळो एवो कापो न पडे माटे कल्याणने अर्थे जेने यत्न करवुं होय तेने विषयमांथी आसक्ति टाळवी एने विषे आकळा थइने अकळाइ जावुं नहि, एवी रीते गीतामां पण कह्युं छे जे ॥ अनेक जन्म संसिद्धस्ततो याति परांगतिम् ॥ माटे एम विचारवुं जे, आ जन्मे जेटली विषयमांथी आसक्ति टळशे तेटली टाळवी छे अने एम करतां जो कांइक रही गइ तो बीजे जन्मे करी ने टाळवी छे पण भगवानना भक्त छइए ते नरक चोराशीमां तो जावुं नथी, एवी रीते भगवानना भक्तने हिंमत राखीने धीरे धीरे मोहनुं मूळ उखाड्यानो आदर राखवो.

अने ज्यां सुधी सारा ने नरसा ए बे विषय तुल्य न जणाय त्यां सुधी ए भगवाननो भक्त साधन दशामां कहेवाय अने ज्यारे सारा नरसा विषय तुल्य भासे त्यारे ए भक्त सिद्धदशाने पाम्यो जाणवो अने ज्यारे विषयमांथी आसक्ति मुकीने सिद्धदशाने पामे छे त्यारे एने कृतार्थ थयो जाणवो अने वेदशास्त्र पुराण इतिहास ए सर्वे ग्रंथोनो एज गलितार्थ छे. आ जे अमे वात करी छे ते सर्वे शास्त्रनुं रहस्य छे माटे आ वार्ताने सर्वे हरिभक्त दृढ करीने राखज्यो.(३) इति वचनामृतम् ॥ १ ॥ [१३४] ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां विषयनी आसक्ति ने दयाये करीने समाधिमांथी पाछुं अवाय छे, (१) अने रमणिक विषयमां आसक्ति ए मोह थवानो हेतु छे, तेने संत, गुरु तथा इष्टदेव पाछो वाळे तो द्रोह करे पण वळे नहि (२) अने आत्मनिष्ठा, वैराग्य अने अमारुं महात्म्य जाणवाथी मोह टळे त्यारे सिद्धदशा आवी जाणवी ने कृतार्थ मानवुं एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (३) वातो छे.

१ प्र० पहेली वातमां जेनी स्तुति सांभळीने तेना उपर दया करीने श्रीजीमहाराज समाधिमांथी पाछा पधार्या ते एवा बळवान हरिभक्त कोण हशे ? अने श्रीजीमहाराज तो साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान छे तेमने समाधि करीने शुं जोवालुं हशे ?

१ उ० स्तुति पर्वतभाइए करी हती. अने श्रीजीमहाराजने समाधि कही तेतो कथन मात्रज छे एतो पोताना भक्तने शिखववा सारुं एवुं बनाव्युं हतुं पण साधनिकनी पेठे समाधि नहोती. देखावा मात्रज छे.

२ प्र० संत गुरु ने इष्टदेव कह्या ते कोने जाणवा ?

२ उ० (छे० ३५ ना पांचमा प्रश्नमां) छो लक्षण संतनां कह्यां छे तेणे युक्त होय एवा एकांतिकने संत जाणवा. अने श्रीजीमहाराजना धाममांथी आवेला परम एकांतिक तथा मूर्तिमां रहेला अनादि मुक्तने गुरु जाणवा. तेमनां लक्षण (व० ३ ना त्रीजा प्रश्नोत्तरमां तथा जे० १ ना आठमा प्रश्नोत्तरमां) कह्यां छे. अने श्रीजीमहाराजने इष्टदेव जाणवा. ॥१३४॥

संवत् १८७८ ना श्रावण शुदि ३ त्रीजने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ रेशमना चाकळा उपर बिराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने मुनि झांझ मृदंग लेइने कीर्तन गाता हता.

पछी श्रीजीमहाराजे कह्युं जे कीर्त्तन राखो अमे वात करीए छइए, एम कहीने
१ श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) जेने आत्यंतिक कल्याण पामवुं होय ने नारदसनकादिक जेवा साधु थावुं होय तेने एम विचार करवो जे आ देह छे तेने विषे जीव रह्यो छे अने इन्द्रियो अंतःकरण छे ते जीव साथे वळगी रह्यां छे अने बाहेर पण पंचविषयमां

वळगी रह्यां छे ते अज्ञाने करीने जीव इन्द्रियो अंतःकरणने पोतानुं रूप माने छे पण वस्तुगते जीव इन्द्रियो अंतःकरणथी नोखो छे अने पंचविषय छे ते अंतःकरणथकी नोखा छे पण ए तो विषयने अभ्यासे करीने अंतःकरणने विषे पंचविषयनी एकता जणाय छे अने विषयनी जे उत्पत्ति ते तो इन्द्रियो थकी थाय छे पण अंतःकरणमांथी नथी थाती, जेम अतिशे तडको होय अथवा टाढ्य होय तेनो प्रथम बहार इन्द्रियोने संबंध थाय छे पछी इन्द्रियोद्वारे करीने शरीरने माहिली कोरे तेनो प्रवेश थाय छे पण एनी उत्पत्ति माहिली कोरेथी नथी ए तो बहारथी उत्पन्न थइने माहिली कोरे प्रवेश करे छे तेम पंचविषय छे ते प्रथम अंतःकरणमांथी उपजता नथी ए तो प्रथम इन्द्रियोने बहार विषयनो संबंध थाय छे ने पछी अंतःकरणमां प्रवेश करे छे, माटे जेम बहार गुंबडुं थयुं होय तेने औषध चोपडे त्यारेज कराय थाय पण केवळ वार्ता सांभळे करार थाय नहि, अने जेम क्षुधा पिपासा लागी होय ते खाधे पीधेज निवृत्ति थाय पण अन्न-जळनी वात कर्ये निवृत्ति न थाय तेम पंचविषयरूपी जे रोग छे ते तो तेनुं ज्यारे औषध करीए त्यारेज निवृत्ति थाय ते औषधनी रीत एम छे जे, ज्यारे त्वचाने स्त्रियादिक विषयनो स्पर्श थाय छे त्यारे त्वचाद्वारे थइने अंतःकरणमां तेनो प्रवेश थाय छे ने अंतःकरणद्वारे थइने जीवमां प्रवेश करे छे पण मूळ थकी विषयनी उत्पत्ति जीवमांथी पण नथी अने अंतःकरणमांथी पण नथी अने जे जे विषय अंतःकरणमांथी स्फुरता हशे ते पण पूर्वे जन्मने विषे बहारथीज इन्द्रियोद्वारे करीने आव्या छे माटे विषय टाळ्यानुं एज औषध छे जे,त्वचाए करीने स्त्रियादिक पदार्थनो स्पर्श तजवो ने नेत्रे करीने तेनुं रूप न जोवुं अने जिव्हाए करीने तेनी वात न करवी अने काने करीने तेनी वात न सांभळवी अने नासिकाए करीने तेनो गंध न लेवो, एवी रीते पंचइन्द्रियोद्वारे विषयनो त्याग दृढ राखे तो बहारथी विषयनो प्रवाह माहिली कोरे प्रवेश करे नहि, जेम कुवामां पाणीनी सेरय आवती होय पछी तेने गोदडाना गाभा भरीने बंध करे त्यारे ते कुवो गळाय तेम बाह्य इन्द्रियोने नियममां राखवे करीने बाह्य विषयनो अंतःकरणमां प्रवेश न थाय, अने जेम उदरमां रोग थयो होय ते तो उदरमां औषध जाय त्यारेज टळे तेम प्रथमथी जे इन्द्रियद्वारे करीने विषय अंतःकरणमां भराणा होय ते तो आत्म-विचारे करीने टाळवा ते आत्मविचार एम करवो जे, हुं आत्मा छुं ने मारे विषे इन्द्रियो अंतःकरणनो संबंधज नथी,एम दृढ विचार करीने अने ते चैतन्यने विषे भगवाननी मूर्ति धारीने अने पोताना आत्मसुख वते करीने पूर्ण रहेवुं,जेम कुवो जळे करीने पूर्ण भराणो होय त्यारे जे बहारथी पोतामां सेरयो आवती होय तेने पोतानुं पाणी ठेली राखे छे पण माहिली कोरे ते सेरयना पाणीनो प्रवेश करवा दे नहि अने जो उलेचाइने ठालो

थाय तो सेरथनुं पाणी बहारथी मांही आवे एवी रीते आत्मसुखे करीने माहिली कोरे पूर्ण रहेवुं अने बहार पंच इन्द्रियाद्वारे विषयनो मार्ग बंध राखवो एज कामादिकने जित्यानो दृढ उपाय छे पण ए विना एकला उपवासे करीने कामादिकनो पराजय थातो नथी माटे आ विचार दृढ करीने राखज्यो. [१] इति वच० ॥२॥ (१३५) १

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के जेने आत्यंतिक कल्याण पामवुं होय ने मुक्त थवुं होय तेने इंद्रियो द्वारे विषयनो मार्ग बंध राखवो अने आत्मसुख वते पूर्ण रहेवुं ने पोताने ब्रह्म जे अमारुं तेज ते रूप मानीने ते चैतन्यने विषे अमारी मूर्ति धारवी तो इंद्रियो द्वारे थइने अंतःकरणमां आवेला विषय निवृत्त थाय छे ने तेनुं कल्याण थाय छे. आमां नारदसनकादिक नामे पोताना मुक्तोने कह्या छे (१) बाबत छे ॥ १३५ ॥

संवत् १८७८ना श्रावण शुदि ४ चोथने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ चाकळा उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने पोतानी आगळ परमहंस झांझ मृदंग लेइने कीर्त्तन गाता हता.

पछी श्रीजीमहाराज नेत्रकमळनी साने करीने सौने छाना राखीने बोल्या जे, मोटेरा मोटेरा परमहंस हो ते आगळ आवो वात करवी छे. एम कहीने श्रीजीम-
१ हाराज बोल्या जे, [१] जे भगवानने भजता होय तेने मोटी पदवी पाम्याना बे उपाय छे अने पडयाना पण बे उपाय छे ते कहीए छइए जे, एक तो रसिक मार्गे करीने भगवाननी भक्ति करवी अने बीजो आत्मज्ञान ए बे मोटयप पाम्याना पण मार्ग छे अने पड्याना पण छे. तेमां रसिक मार्गे तो हजारो ने लाखो पडी गया छे अने भगवानने तो कोइक पाम्यो हशे अने मोटा मोटा आचार्य थया तेणे पण रसिक मार्गे करीने भक्ति करावी छे पण तेमां बगाड घणाने थयो छे ने सारुं तो कोइकनुं थयुं छे, कांजे रसिकपणे करीने ज्यारे भगवाननुं वर्णन करे त्यारे भगवान भेळे राधिकाजी तथा लक्ष्मीजी तथा तेनी सखियो तेनुं पण वर्णन आवे अने ज्यारे स्त्रियोनुं वर्णन आवे त्यारे तो तेना अंगोअंगनुं वर्णन थाय त्यारे वर्णनना करनारानुं मन निर्विकार केम रहे? अने इन्द्रियोनो तो एज स्वभाव छे जे, सारो विषय होय ते उपर प्रीति होय अने राधिकाजी ने लक्ष्मीजी तेना जेवुं तो त्रिलोकीमां कोइ स्त्रीनुं रूप होय नहि अने एना जेवी कोइनी बोली पण मीठी न होय अने एना देहनो सुगंध पण अतिशे होय माटे एवा रूपने देखीने अथवा सांभळीने किये प्रकारे मोह न थाय? ए तो थायज. अने लेश मात्र जो मन विकार पामे तो ते कल्याणना मार्गमांथी

पड्यो माटे रसिकनी रीते जे भगवानने भजे तेने ए मोटुं विघ्न छे, अने ब्रह्मज्ञानमां तो आवी रीते अवळुं समजाय छे जे,जे ब्रह्म छे तेज प्रकृति पुरुषरूपे थाय छे,अने पछी तेज ब्रह्म ब्रह्मा, विष्णु, शिवरूपे थाय छे, ने पछी तेज ब्रह्म स्थावर जंगमरूपे थाय छे, अने ते स्थावरजंगमरूप जे आकार तेने विषे रह्या जे जीव ते रूपे पण ब्रह्म थाय छे, एवी रीते ब्रह्मज्ञानने अवळुं समजीने पछी समझनारो पोताना जीवने पण भगवान जाणे छे. त्यारे एम समझनाराने उपासनानो भंग थयो माटे ए पण भगवानना मार्गथकी पड्यो,एवी रीते ब्रह्मज्ञानमां पण उपासनानुं खंडन थाय ए मोटुं विघ्न छे, कां जे समझी समझीने सर्वना कारण अने सर्वना स्वामी एवा जे भगवान तेनुंज खंडन थयुं, माटे एम समझनारो पण कल्याणना मार्गथकी पड्यो जाणवो, अने ए बे मार्ग छे ते कल्याणना छे अने ए बेमां विघ्न पण अति मोटां छे माटे जे कल्याणने इच्छतो होय तेने केम करवुं ? ए प्रश्न छे तेनो उत्तर करो. पछी सर्व परमहंस विचारी रह्या पण कोइयी उत्तर न थयो. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एनो उत्तर तो ए छे जे, जेम पोतानी माता होय अथवा बेन होय तथा दिकरी होय ते घणी रूपवान होय तो पण तेने देखीने मनने विषे विकार थातो नथी, तेमज तेनी साथे बोले छे स्पर्श करे छे तो पण मनने विषे लेशमात्र विकार थातो नथी, एवी रीते भगवानना भक्त जे बाइयो होय तेने विषे मा बेन ने दिकरी तेनी बुद्धि रहे तो कोइ रीते विकार थाय नहि अने रसिक मार्गे करीने भगवानने भजीने अभयपदने पामे; अने ज्यारे एम न समझे अने कोइ मोटा भगवानना भक्त बाइयो होय तेने देखीने अवळुं समझे त्यारे एने मोटो दोष लागे अने जे अन्य स्त्रीने देखवे करीने दोष लाग्यो होय ते तो भगवानना भक्तने दर्शने करीने टळे छे अने भगवानना भक्तने जोइने जे दोष लाग्यो होय तेने टाळवानो उपाय शास्त्रमां कह्योज नथी तेमज भगवाननो भक्त जे पुरुष होय तेने देखीने जे स्त्री अवळुं समझे तेने पण ए पाप थकी कोइ काळे छुटाय नहि त्यां श्लोक ॥ अन्य क्षेत्रे कृतं पापं तीर्थक्षेत्रे विनश्यति। तीर्थक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति ॥ ए श्लोकनो अर्थ ए छे जे बीजे ठेकाणे पाप कर्युं होय ते तो भगवान के भगवानना भक्त पासे गये छुटे अने भगवानने भगवानना भक्त पासे जइने जे पाप करे ते तो तीर्थक्षेत्रनुं पाप छे ते वज्रलेप थाय छे. माटे जेने रसिक मार्गे करीने भगवानने भजवा होय तेने तो जे रीते अमे वात करी तेवी रीते निर्दोष बुद्धि राखवी.

[१] हवे जे ब्रह्मज्ञाननो मार्ग छे तेमां तो एम समझवुं जे, जे ब्रह्म छे ते तो निर्विकार छे ने निरंश छे माटे ए विकारने पामे नहि ने एना अंश पण थाय नहि, अने ब्रह्मने जे सर्वरूपे कहे छे तेनुं तो एम छे जे, ए ब्रह्म जे ते प्रकृति पुरुष आदिक सर्वेनुं कारण छे ने आधार छे. माटे जे कारण ने आधार होय ते कार्य थकी पृथक् होय नहि ए १

समझणने लेइने ए ब्रह्मने शास्त्र जे ते सर्वरूप कहे छे, पण ए ब्रह्मज विकार पामीने चराचर जीवरूपे थइ गयुं एम न समझवुं. अने ए ब्रह्मथकी परब्रह्म जे पुरुषोत्तम नारायण ते नोखा छे ने ए ब्रह्मना पण कारण छे ने आधार छे ने प्रेरक छे एमसमझीने पोताना जीवात्माने ए ब्रह्म संघाथे एकता करीने परब्रह्मनी स्वामीसेवकभावे उपासना करवी, एवी रीते समझे त्यारे ब्रह्मज्ञान छेते पण परमपदने पाम्यानो निर्विघ्न मार्ग छे. [२] इति वचनामृतम्. ॥३॥ (१३६) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, रसिक मार्गवाळो भक्त बाइयोने विषे मा, बेन, दिकरीनो भाव राखे तो विकार न थाय अने अमने भजीने मोक्ष पामे अने अवळुं समजे तो मोक्षना मार्ग थकी पडी जाय छे (१) अने प्रकृति पुरुषादिक सर्वेनुं कारण ने आधार ने निर्विकार ने निरंश ने व्यापक एवुं जे ब्रह्म ते अमारुं तेज छे एम समजे अने ए ब्रह्मना पण कारण ने आधार ने मूर्तिमान अमने समजे अने ए ब्रह्मरूप थइने अमारी स्वामी सेवकभावे उपासना करे तो निर्विघ्न थको परमपद जे अमारी हजुर सेवा तेने पामे. (२) बाबतो छे.

प्र० पहेली बाबतमां बाइयोने विषे मा बेन दिकरीनो भाव राखे तो विकार न थाय एम कह्युं अने (लो. १० ना ५/६ पांचमा प्रश्नमां) पोतानी मा बेनने विषे विकार पामे एम कह्युं छे ते केम समजवुं ?

उ० (लो. १० मां) अशुभ देश,काळ, क्रिया, संग, मंत्र, दीक्षा, उपदेश ने देवता तेने योगे मलीन बुद्धि थइ गइ होय तेनां इंद्रियो अंतःकरण ने जीव ए त्रणे भळे त्यारे ते पोतानी मा बेन दिकरीने विषे विकार पामे एम कह्युं छे, अने आमां तो ज्ञानीनी वात छे माटे विरोध नथी एम समजवुं.

प्र० बीजी बाबतमां परब्रह्मने ब्रह्मथी पर ने नोखा कह्या ते ब्रह्मतो परब्रह्मनुं तेज छे ते तेजथी परब्रह्मने नोखा शी रीते समजवा ?

उ. (प्र. ४१ मां) श्रीजीमहाराजे पोताना तेजने सच्चिदानंद ब्रह्म नामे कह्युं छे तथा (म. १० मां) ब्रह्म छे तेतो पुरुषोत्तम भगवाननी किरण छे तथा (१३/६ मां) पोताना तेजने ब्रह्म नामे कह्युं छे अने (प्र. ६४/६ मां) अशरीरी जे प्रकाश तेना सूर्य अग्नि जेम आत्मा छे तेम अशरीरी जे ब्रह्म तेना पुरुषोत्तम भगवान आत्मा छे, तथा (प्र. ६६/६ मां) ब्रह्मसत्तारूप कोटी सूर्य जेवो प्रकाश छे तेतो पुरुषोत्तम भगवाननी मूर्तिनो छे तथा (पं. १/६ मां) पोताना अंग एटले मूर्तिना प्रकाशने अक्षरब्रह्मनामे कह्युं छे माटे पोतानोज प्रकाश छे पण शरीर शरीरी, आधार आधेय ने कार्यकारण भावे नोखा कह्या छे. ॥ १३६ ॥

संवत् १८७७ ना श्रावण शुदि ५ पंचमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार मेडीनी ओसरीए

विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइ बेठी हती ने परमहंस दुकड सरोदा सतार वजाडीने मलार रागनां कीर्त्तन गाता हता.

पछी श्रीजीमहाराजे कह्युं जे कीर्त्तन गाववां रेवा द्यो हवे तो परमेश्वरनी वार्त्ता
१ करीए. पछी परमहंसे कह्युं जे सारु महाराज, पछी श्रीजीमहाराजे प्रश्न कर्यो जे, (१) शास्त्रमां कह्या एवा धर्म पाळतो होय अने भगवाननी भक्ति पण करतो होय ने तेने एवो आपत्काळ आवे जे भक्ति राखवा जाय तो धर्म जाय ने धर्म राखवा जाय तो भक्ति जाय त्यारे केने राखवो ने केनो त्याग करवो? पछी ब्रह्मानंदस्वामी बोल्या जे, जो भगवान भक्ति राख्ये राजी होय तो भक्ति राखवी अने जो धर्म राख्ये राजी होय तो धर्म राखवो. त्यारे श्रीजीमहाराजे कह्युं जे, जेने प्रगट भगवान मळ्या होय तेने तो जेम भगवान राजी होय तेमज करवुं ए ठीक छे पण ज्यारे भगवाननुं परोक्षपणुं होय त्यारे केम करवुं? पछी मुक्तानंदस्वामी एनो उत्तर करवा लाग्या पण थयो नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ज्यारे भगवान परोक्ष होय ने आपत्काळ पडे ने कांइ न रहे त्यारे तो भगवाननुं एक अखंड चिंतवन करवुं तो ए भगवानना मार्गे थकी पडे नहि. [१] १

२ पछी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे, (२) जे भगवाननो महिमा अतिशे समझतो होय तेणे करीने एम जाणे जे गमे तेटलां पाप कर्यां होय ने जो भगवाननुं एक नाम लीधुं होय तो सर्वे पाप बळीने भस्म थइ जाय एवुं महात्म्य समझतो होय तेने केइ रीते समजे त्यारे धर्ममांथी डगाय नहि? पछी मुक्तानंदस्वामीए ए प्रश्ननो उत्तर करवा मांड्यो पण थयो नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जे भगवाननो महिमा अतिशे जाणतो होय तेने तो आवी रीते समझाय त्यारे धर्ममां रहेवाय जे मारे तो अखंड भगवाननुं चिंतवन करीने एकांतिक भक्त थावुं छे अने जो काम क्रोध, लोभादिक विकारने विषे मारी वृत्ति जाशे तो मारे भगवानना चिंतवनमां एटलो विक्षेप थाशे एम जाणीने कुमार्ग थकी अतिशेज डरतो रहे अने अधर्मने विषे कोइ काळे प्रवर्तेज नहि, एवी रीते समजे तो भगवाननुं महात्म्य अतिशे समजतो होय तोपण धर्ममांथी कोइ काळे पडे नहि अने भगवाननुं जे अखंड चिंतवन थावुं ते कांइ थोडी वात नथी ने भगवाननुं चिंतवन करतां करतां जो देह मूके तो ते अति मोटी पदवीने पामे छे. (२) २

३ पछी ब्रह्मानंदस्वामीए पुछयुं जे, (३) एम जाणीए छइए तो पण अखंड चिंतवन रहेतुं नथी एवुं शुं कारण छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एक तो अखंड चिंतवन थाय एवी श्रद्धा जोइए अने ज्यारे एवी श्रद्धा न होय त्यारे तेटलुं महात्म्य जाण्यामां पण ओछप छे अने ज्यारे महात्म्य जाण्यामां ओछप छे त्यारे भगवानना स्वरूपना

निश्चयमां पण एटली ओछप छे माटे जो भगवानना स्वरूपनुं महात्म्य तथा श्रद्धा होय तो अखंड चिंतवन थाय. ते महात्म्य एम जाणवुं जे, भगवान तो जेवा प्रकृति पुरुषथकी पर छे तेवाने तेवाज प्रकृति पुरुषमां आव्या छे तो पण प्रतापे युक्त छे अने प्रकृतिपुरुषनुं कार्य जे ब्रह्मांड तेने विषे आव्या छे तोपण भगवान तेवाने तेवा प्रतापे युक्त छे पण भगवाननी मूर्तिने विषे कोइ रीते मायानो लेश अडतो नथी, जेम अन्य धातु छे ने सोनुं पण छे तेने भेळां करीने पृथ्वीमां दाटे तो सोना विना अन्य धातु छे ते सर्वे घणे काळे करीने धुड्य भेळां धुड्य थइ जाय अने सोनुं होय ते तो जेम पृथ्वीमां रहे तेम वृद्धि पामे पण घटे नहि तेम भगवान अने बीजा जे ब्रह्मादिक देव तथा मुनि ते कांइ सरखा नथी, केमजे ज्यारे विषयरूपी धुडयनो योग थाय त्यारे भगवान विना बीजा गमे तेवा मोटा होय तो पण विषयमां एकरस थइ जाय अने भगवान तो मनुष्य जेवा जणाता होय तो पण एने मायिक पदार्थ बाध करवा समर्थ थाय नहि अने गमे तेवा विषय होय तो तेमां कोइ दिवस लोपाय नहि एवुं भगवाननुं अलौकिक सामर्थ्य छे, एम भगवाननुं महात्म्य जाणे तो तेने भगवाननुं अखंड चिंतवन थाय अने ज्यां सुधी विषयनो लीधो लेवाय त्यां सुधी ए भक्ते भगवाननो अलौकिक महिमा जाण्यो नथी अने जो उद्धवजी हता तेने भगवाने एम कह्युं जे, उद्धव हुं थकी अणु मात्र न्यून नथी ते शामाटे जे उद्धवजीए अलौकिक भगवाननुं महात्म्य जाण्युं हतुं ने पंच विषयना लीधा लेवाता नहोता अने जेने भगवाननो महिमा समझाय छे तेने राज्य होय अथवा भिक्ष मागी खाय ते बेय सरखुं वर्ते अने बाळक स्त्री अने सोळ वर्षनी स्त्री अने एशी वर्षनी स्त्री ते सर्वेमां सरखो भाव वर्ते अने जे जे संसारमां सारुं नरसुं पदार्थ होय ते सर्वेमां सरखी भावना रहे पण सारा पदार्थमां पतंगीयानी पेठे अंजाइ जाय नहि अने भगवान विना बीजा कोइ पदार्थमां लोभाय नहि एक भगवान-नी मूर्तिमांज लोभाय ने एवी रीते वर्ततो होय ते भक्त गमे तेवा मोटा विषय होय तेमां बंधाय नहि अने जो एवो मर्म न समजाणो होय तो फाटेल गोदडी तथा तुंबडी तेमांथी पण मनने उखेडवुं महा मुशकेल छे, माटे आवी रीते भगवाननी मूर्तिनुं महात्म्य जाण्या विना बीजां कोटी साधन करे तो पण भगवाननी मूर्तिनुं अखंड चिंतवन थातुं नथी अने जे भगवानना स्वरूपनो महिमा जाणे छे तेनेज भगवाननुं अखंड चिंतवन थाय छे (३) ३
इति वचनामृतम् ॥४॥ १३७॥

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (३) छे, तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, अमे प्रत्यक्ष होइए त्यारे अमे भक्ति राखीये राजी होइए तो भक्ति राखवी अने धर्म राखीये राजी होइए तो धर्म राखवो अने अमे मनुष्य रूपे विचरता न होइए ने आपत्काळ पडे त्यारे

अमारुं अखंड चिंतवन करवुं. तो मोक्षना मार्गमांथी पडाय नहि (१) बीजामां अमारुं स्वामिनारायण एवुं नाम एकवार लीधुं होय तो सर्वे पाप बळीने भस्म थइ जाय एवुं अतिशे महात्म्य जाणतो होय ते एम विचारे जे हुं कामादिकमां प्रवर्तीश तो मारे श्रीजी-महाराजना चिंतवनमां विक्षेप थशे अने तेथी एकांतिक नहि थवाय एम डरतो रहे तो ते धर्ममांथी पडे नहि अने मोक्षने पामे. (२) त्रीजामां अमारुं महात्म्य ने श्रद्धा ए बे होय तो अमारुं अखंड चिंतवन थाय ने विषयमां लेवाय नहि ने जेटलो अमारो महिमा जणाय तेटलोज निश्चय थाय छे. (३) बाधतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां भक्ति राखवा जाय तो धर्म जाय ने धर्म राखवा जाय तो भक्ति जाय एम कह्युं ते एवो आपत्काळ शो हशे ?

१ उ० शरीरमां रोगादिक उपद्रव होय, तथा वृद्धावस्था होय, तथा आंखे थोडुं देखातुं होय ए आपत्काळ कहेवाय. ते आपत्काळमां वहेलुं उठीने नावा धोवानुं बनी शके नहि, ने मोडुं नवाय, ते वखते कथा थाती होय ने पूजा करवी होय ते पूजा करवा रहे तो कथा जाती रहे ने कथा सांभळवा जायतो पूजा रही जाय, त्यारे पहेली कथारूपी श्रवण भक्ति करवी अने पछी पूजा मंत्र जप ते करवां तो थेय रहे;अने दीर्घरोग आवे के राजा बंधीखाने नाखे त्यारे कर्मकांड रूपी धर्म तथा सेवा श्रवण रूपी भक्ति ए कांइ न रहे त्यारे श्रीजीमहाराजनुं अखंड चिंतवन करवुं तो कल्याणना मार्गेथी पडे नहि.

२ प्र० त्रीजा प्रश्नमां महात्म्य कह्युं तेमां जेवा प्रकृति पुरुषथी पर छीए तेवाने तेवाज प्रकृति पुरुषमां आव्या छीए तोपण प्रतापे युक्त छीए, ने तेवाने तेवाज ब्रह्मांडने विषे आव्या छीए तोपण प्रतापे युक्त छीए, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते प्रकृति पुरुषमां केवी रीते आव्या छे ? अने ब्रह्मांडमां केवी रीते आव्या छे ?

२ उ० प्रकृति पुरुषादिकने विषे अंतर्यामीपणे अन्वयस्वरूपे रह्या छे तोपण ते ते उपाधिए रहित छे पण कोइनी उपाधि अडती नथी, अने ब्रह्मांडने विषे कल्याण करवा मनुष्यने रूपे दर्शन आपे छे तोपण जेवा अक्षरधाममां दिव्य छे तेवाने तेवा दिव्य छे पण मायिक विकार कोइ अडतो नथी एम समजवुं.

३ प्र० त्रीजा प्रश्नमां अमारुं महात्म्य तथा निश्चय जाणवामां ओछपप छे तेथी अमारुं चिंतवन थतुं नथी एम श्रीजीमहाराजे कह्युं तेमां ओछपप शी हशे ?

३ उ० मनुष्य भावे सहित महिमा जाण्यो छे पण दिव्य भावे सहित महिमा जाण्यामां आव्यो नथी ए कसर छे, तेथी अखंड चिंतवन थतुं नथी.

४ प्र० दिव्य भावे सहित महिमा न जाण्यो होय तेनुं आ देहे कल्याण थाय के जन्म धरवो पडे?

४ उ० ज्यां सुधी दिव्य भावे सहित महिमा न समजाय त्यां सुधी जन्म धरवो पडे खरो.॥१३७॥

संवत् १८७८ ना श्रावण शुदि ७ सातमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महा-राज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिर आगळ ओटा उपर चाकळो नखावीने विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां

अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरि भक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने मुनि ताळ मृदंग लेइने कीर्त्तन गावता हता.

पछी श्री जीमहाराज नेत्रकमळनी साने करीने ते कीर्त्तन रखावीने बोल्या जे,
१ (१) सर्वे सांभळो एक वात करीए छइए जे, जे भगवानना भक्त होय तेने एक पतिव्रतानो धर्म राखवो अने बीजुं शूरवीरपणुं राखवुं, जेम पतिव्रता स्त्री होय तेने पोतानो पति वृद्ध होय तथा रोगी होय तथा निर्धन होय तथा कुरूप होय पण पतिव्रता स्त्रीनुं मन कोइ बीजा पुरुषना रूडा गुण देखीने डोलेज नहि अने जो रांकनी स्त्री होय ने ते जो पतिव्रता होय तो मोटा राजा होय तो पण तेने देखीने ते पतिव्रतानुं मन चळेज नहि, एवी रीते भगवानना भक्तने पतिव्रतानो धर्म भगवानने विषे राखवो अने पोताना पतिनुं कोइ घसातुं बोले तो ठेकाणे कायर थइने गळी जावुं नहि अतिशे शूरवीर थइने जवाब देवो पण पाछीपळावनी छायामां भगवानना भक्तने दबावुं नहि एवी रीते शूरवीरपणुं राखवुं.(१)अने लोकमां एम कहे छे जे,साधुने तो समदृष्टि जोइए पण ए शास्त्रनो मत १
नथी केमजे नारद सनकादिक ने ध्रुव प्रह्लादादिक तेमणे भगवाननो ने भगवानना भक्तनोज पक्ष राख्यो छे पण विमुखनो पक्ष कोइए राख्यो नथी अने जे विमुखनो पक्ष राखतो हशे ते आ जन्मे अथवा बीजे जन्मे जातो जरुर विमुख थाशे, माटे जे भगवानना भक्त होय तेने जरुर भगवदिनो पक्ष राख्यो जोइए अने विमुखनो पक्ष त्याग्यो जोइए आ अमारी वार्ताने सर्वे अति दृढ करीने राखज्यो (२) इति वचनामृतम् ॥५॥१३८॥ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां अमारे विषे पतिव्रतापणुं ने शूरवीरपणुं राखवुं ने तमारा पति एवा जे अमे ते अमारुं कोइ घसातुं बोले एवा पाछीपळावनी छायामां दबावुं नहि. (१) अने अमारो ने अमारा भक्तनो पक्ष राखवो ने विमुखनो पक्ष राखे ते विमुख थाय एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (२) बावतो छे. ॥ १३८ ॥

संवत १८७८ ना श्रावण शुदि ८ अष्टमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिर आगळ वेदी उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने परमहंस ताळ, मृदंग लेइने कीर्त्तन गाता हता.

पछी श्रीजीमहाराजे कह्युं जे कीर्त्तन राखो हवे भगवद्वार्त्ता करीए. पछी सर्वे मुनि
१ हाथ जोडीने बेठा. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे (१) आ संसारमां केटलाक यवन सरखा जीव होय ते एम कहे छे जे, गंगाजीनुं पाणी ने बीजुं पाणी ए बेय सरखां जणाय छे ने शालग्रामने बीजा पाणा ते सरखा जणाय छे ने तेमज तुळसीने बीजां झाड

ते सरखां जणाय छे ने ब्राह्मण ने शूद्र छे ते पण सरखा जणाय छे अने ठाकोरजीनी प्रसादी अन्न ने बीजुं अन्न ते बेय सरखां जणाय छे ने एकादशीने दिवस भुख्या रह्या ने बीजे दिवस भुख्या रह्या ते बेय सरखां जणाय छे ने साधु ने असाधु बेय सरखा जणाय छे, ते माटे आ विधि निषेधनो जे विभाग ते मोटा पुरुष कहेवाणा तेणे शा-सारु शास्त्रमां कह्यो हशे ? एम दुष्टमतिवाळा जे जीव छे ते कहे छे माटे सर्वे संतने अमे आ प्रश्न पुछीए छइए जे, ए विधि निषेधनो विभाग मोटा पुरुषे शास्त्रमां कह्यो छे ते साचो छे के कल्पित छे ? ते प्रश्ननो उत्तर नाना नाना परमहंस होय ते करो. पछी नाना नाना परमहंस हता ते बोल्या जे, विधि निषेधनो भेद तो सत्य छे ने एम न होय तो स्वर्ग, नरक केने माथे कहेवाय ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, नाना छे पण सारी दिश उपर समझे छे, एम कहीने श्रीजीमहाराजे एनो उत्तर करवा मांड्यो जे, मोटापुरुषे जे शास्त्रमां प्रतिपादन कर्युं छे ते सर्वे सत्य छे त्यां दृष्टांत छे जे जेम कोइक मोटो शाहुकार होय ने ते कोइने हुंडी लखी आपे त्यारे कागळमां तो एके रुपैयो जणातो नथी पण रुपैया साचा छे ते ज्यारे ए हुंडी जे शाहुकार उपर लखी होय तेने आपे त्यारे ए हुंडीमांथीज रुपैयानो ढगलो थाय छे तेम मोटा पुरुषनी आज्ञाए करीने जे धर्म पाळे त्यारे हमणां तो कांइ विधि निषेधमां विशेष जणातुं नथी पण अंते मोटा पुरुष-नी आज्ञा पाळनारानुं कल्याण थाय छे, जेम हुंडीमांथी रुपैया निसरे छे तेम. अने जे समर्थ शाहुकारे हुंडी लखी होय अने तेनो विश्वास न करे तेने मूर्ख जाणवो अने तेने ते शाहुकारना प्रतापनी खबरज नथी तेम नारद, सनकादिक, व्यास, वाल्मिक इत्यादिक जे मोटा पुरुष तेना वचननो जेने विश्वास नथी तेने नास्तिक जाणवो ने महा पापीष्ट जाणवो अने वळी जे नास्तिक मतिवाळा होय तेने एम समझाय छे जे बीजा पाणामां ने ठाकोरजीनी मूर्तिमां शो फेर छे ? सर्वे पाणा एक सरखा छे, ने परणेल स्त्री ने न परणेल स्त्री तेमां शो फेर छे, ? सर्वे स्त्री सरखी छे, अने घरनी स्त्रीने मा बेन तेमां शो फेर छे ? सर्वेनो सरखोज आकार छे, अने रामकृष्णादिक जे भगवा-ननी मूर्तियो ते पण सर्वे मनुष्य जेवी छे माटे अधिक न्यून भावतो माणसे कल्पीने उभो कर्यो छे पण हुं करीए माणस मेलुं रहेवुं ते माणसनी हाए हा कही जोइए पण विधि निषेधनो मार्ग छे ते खोटो छे एम पापी एवा जे नास्तिक ते पोताना मनमां समझे छे माटे जेनी आवी जात्यनी बोली सांभळीए तेने पापीष्ट जाणवो ने नास्तिक जाणवो अने एने चांडाळ जाणीने एनो कोइ प्रकारे संग राखवो नहि. (१) १

२ अने वळी श्रीजीमहाराजे बीजी वार्त्ता करी जे, (२) मनुष्य मात्रनुं चित्त केवुं छे तो, जेम वघ होय अथवा गोळ साकर खांड तेनुं पाइं पाणी होय ते सरखुं छे ते

मधमां के गोळ, साकर, खांडना पाणीमां माखी, कीडी, मकोडो जे आवे ते चोटी रहे अने मनुष्य जो हाथ अडाडे तो माणसनी आंगळीए पण चोटी जाय, तेम चित्त नो स्वभाव एवो छे जे, जे जे पदार्थ सांभरे ते ते पदार्थमां चोटी जाय छे ते जो पथरो तथा कचरो तथा कुतरानो मळ ए आदिक जे नकारी वस्तु होय तेमां तो लेश मात्र सुख नथी तोपण ए नकारी वस्तुमां पण चित्त वळगे छे अने ते सांभरी आव्युं होय तो तेनुं पण चिंतवन करे छे एवो एनो वळगवानो स्वभाव छे, जेम मोटुं काचनुं दर्पण होय तेमां मोटा साधु आवे तो तेनुं पण प्रतिबिंब देखाय तथा कुतरां,गधेडां,चंडाळादिक जे जे आव्या होय तो तेनुं पण प्रतिबिंब तेमज देखाय तेम चित्तने विषे अति निर्मळपणुं छे ते जे पदार्थ सांभरे ते देखाइ आवे छे एमां सारा नरसानो कांइ मेळ नथी माटे जे मुमुक्षु होय तेने एम न विचारवुं जे मारे वैराग्य नथी ते माटे स्त्रियादिक पदार्थ मारा चित्तमां स्फुरे छे ए तो जे वैराग्यवान होय तेना चित्तमां पण जे समे जे पदार्थ आव्युं ते सहेजे स्फूरी आवे छे माटे वैराग्य अवैराग्यनुं कांइ कारण नथी ए तो चित्तनो स्वभावज एवो छे जे, भलुं अथवा भुंडुं जे सांभर्युं तेने चिंतवे अने ज्यारे जे पदार्थनुं चिंतवन करे त्यारे ते पदार्थ जेम दर्पणमां देखाय तेम देखाइ आवे ते माटे एम जाणवुं जे, हुं तो ए चित्त थकी जुदो छुं अने हुं तो एनो जोनारो आत्मा छुं,एम जाणीने चित्तना सारा भुंडा घाटे करीने ग्लानि पामवी नहि पोताने चित्त थकी जुदो जाणीने भगवाननुं भजन करवुं अने सदाय आनंदमां रहेवुं.[२]इ० व० ॥६॥१३९॥ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां बीजुं कृपावाक्य छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के विधि निषेध सत्य छे अने मोटा पुरुषनी आज्ञा पाळनारानुं कल्याण थाय छे ने मोटा पुरुषना वचननो विश्वास न होय ने विधि निषेधने खोटा कहे ते पापीष्ट, नास्तिक ने चंडाळ छे ने एनो संग राखवो नहि. (१) बीजामां घाट संकल्पमां चित्तथी पोताना जीवात्माने जुदो मानीने अमारुं भजन करवुं एम नवा आदरवाळाने हिंमत आपी छे. (२) बाबतो छे. ॥१३९॥

संवत् १८७८ ना श्रावण शुदि ११ एकादशीने दिवस रात्रिने समे स्वामी श्री सहजानंदजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेवनारायणना मंदिर आगळ विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी मुक्तानंदस्वामीए श्रीजीमहाराजने प्रश्न पुछ्यो जे, (१) भगवाननो भक्त होय तेना मनमां तो एम होय जे भगवानना भजनमां अंतराय करे एवो एके स्वभाव राखवो नथी, तोय पण अयोग्य स्वभाव रही जाय तेनुं शुं कारण छे ? पछी श्रीजी-

महाराज बोल्या जे जेने वैराग्यनी दुर्बलता होय तेने टाळवानी श्रद्धा होय तोय स्वभाव टळे नहि, जेम दरिद्री होय ते घणो सारां सारां भोजन ने सारां सारां वस्त्रने इच्छे पण ते क्यांथी मळे ? तेम वैराग्यहीन होय तेना हृदयमां इच्छा तो होय पण साधुताना गुण आववा घणा दुर्लभ छे. (१) १

२ पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पुछयुं जे (२) जेने वैराग्य न होय ते शो उपाय करे त्यारे विकार टळे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जे वैराग्यहीन होय ते तो कोइ मोटा संत होय तेनी अतिशे सेवा करे अने परमेश्वरनी आज्ञामां जेम कहे तेम मंड्यो रहे पछी परमेश्वर तेने कृपादृष्टिए करीने जुवे जे, आ बचारो वैराग्य रहित छे तेने काम क्रोधादिक बहु पीडे छे, माटे एना ए सर्वे विकार टळो, तो तत्काळ टळी जाय अने साधने करीने तो बहु काळ महेनत करतां करतां आ जन्मे टळे अथवा बीजे जन्मे टळे अने तरत जे विकार मात्र टळे ते तो परमेश्वरनी कृपाए करीने टळे. (२) इति २ वचनामृतम् ॥ ७ ॥ (१४०)

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलामां वैराग्य न होय तो अयोग्य स्वभाव टळे नहि. (१) बीजामां अमारी आज्ञामां वर्तनारा अने अमारी मूर्तिमां निमग्न एवा संतनी सेवा करे ने अमारी आज्ञामां वर्ते तो अमारी कृपा थाय ने तत्काळ विकार टळी जाय अने साधने करीने तो बहु काळे टळे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (२) बावतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां वैराग्य नथी तेथी विकार टळता नथी एम कह्युं अने (म० ६ ना बीजा प्रश्नमां) वैराग्य होय तोपण पदार्थ स्फुरी आवे छे एम कह्युं छे ते केवी रीते समजवुं?

१ उ० (म० ६ मां) नवा आदरवाळाने हिंमत देवा सारुं एम कह्युं छे पण वैराग्य होय तो बीजां पदार्थ सांभरेज नहि. ॥ १४० ॥

संवत् १८७८ ना श्रावण शुदि १२ द्वादशीने दिवस प्रातःकाळने समे स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर आगळ चाकळा उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. ने परमहंस ताळ, मृदंग लेइने कीर्त्तन गाता हता.

१ पछी श्रीजीमहाराज संतो प्रत्ये बोल्या जे (१) एकादशीनुं व्रत करवुं तेनी तो एम विगति छे जे, पूर्वे भगवान दश इन्द्रियो ने अगियारमुं मन तेने अंतर सन्मुख करीने पोढ्या हता ते समयमां नाडिजंघनो दिकरो जे मुरदानव ते युद्ध करवा आव्यो पछी भगवानना एकादश इन्द्रियोना तेजमांथी एक कन्या उत्पन्न थइ त्यारे मुरदा-

नव कन्या मत्ये बोल्यो जे, तुं मने वरय. पछी कन्या बोल्यां जे मारे तो एवी प्रतिज्ञा छे जे, जे मुने युद्धमां जीते तेने हुं वरूं. पछी मुरदानवने ने कन्याने युद्ध थयो त्यारे कन्याए मुरदानवनुं मस्तक खडगे करीने कापी नाख्युं, पछी भगवाने प्रसन्न थइने ते कन्याने कह्युं जे, तुं वर माग्य. त्यारे ते कन्याए वर माग्यो जे, मारा व्रतने दिवस कोइ अन्न न खाय अने हुं तमारा एकादश इन्द्रियोना तेजमांथी प्रगट थइ माटे मारुं नाम एकादशी छे अने हुं तपस्वी छुं माटे मारा व्रतने दिवस मन आदिक जे अगियार इन्द्रियो तेनो जे आहार ते कोइ करे नहि, एवुं एकादशीनुं वचन सांभळीने भगवाने ते वर आप्यो एवी रीते पुराणनी कथा छे. अने वळी धर्मशास्त्रमां पण एम कह्युं छे जे, एकादशीनुं व्रत करवुं ते दिवस काम, क्रोध, लोभादिक संबंधी भुंडा घाट मनमां थावा देवा नहि अने देहे करीने कांइ भुंडुं आचरण करवुं नहि एम शास्त्रमां वचन छे अने ते शास्त्र प्रमाणेज अमे पण कहीए छइए जे, एकादशीने दिवस ढोर लांघण करवी नहि अने एकादश इन्द्रियोना आहारनो त्याग करे त्यारे ते एकादशी साची ने ते विना तो ढोर लांघण कहेवाय, अने जेम प्राणने अन्ननो आहार छे तेमज श्रोत्रने शब्दनो आहार छे अने त्वचाने स्पर्शनो आहार छे अने नेत्रने रूपनो आहार छे अने जिव्हाने रसनो आहार छे ने नासिकाने गंधनो आहार छे अने मनने संकल्प विकल्पनो आहार छे, एवी रीते अगियारे इन्द्रियोना जुदा जुदा आहार छे ते सर्वे आहारनो त्याग करे तेनुं नाम एकादशी व्रत कहेवाय पण अगियारे इन्द्रियो कुमार्गे दोडे अने पोत पोताना अन्नने खाय ते एकादशीनुं व्रत शास्त्र प्रमाणे न कहेवाय. माटे एकादशीनुं व्रत करवुं त्यारे तो अगियारे इन्द्रियोने आहार करवा देवा नहि एवुं व्रत पंदर दिवसमां एकवार आवे छे ते खबरदार थइने करवुं तो तेने उपर भगवान प्रसन्न थाय छे पण ते विना जे ढोर लांघण तेणे करीने भगवान प्रसन्न थाता नथी अने श्वेतद्वीपमां जे निरन्नमुक्त कहेवाय छे ते तो सदाय ए व्रत राखे छे क्यारेय पण ए व्रतनो भंग थावा देता नथी माटे निरन्न कहेवाय छे अने आपणे पण इच्छा तो एम राखवी जे जेवा श्वेतद्वीपमां निरन्नमुक्त छे तेवुंज थावुं छे पण ए वातमां हिंमत हारवी नहि, एवा रीते जे हिंमत राखीने जेवुं मोरे कह्युं तेवुं एकादशीनुं व्रत करे अने भगवानना कथाकीर्त्तनादिकने करे ने सांभळे ने रात्रिए जागरण करे तो ते व्रत सांचुं छे अने शास्त्रमां एनुंज नाम एकादशी कही छे. [१] १

एटली वात करीने श्रीजीमहाराज मौन रह्या ने संते कीर्त्तन गावा मांड्यां. पछी
२ वळी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (२) ज्यारे ब्रह्माए प्रथम सृष्टि करी त्यारे सर्वे प्रजाने कह्युं
जे, तमो सर्वे यज्ञ करज्यो ने ते यज्ञे करीने तमारे सर्वे पुरुषार्थनी सिद्धि थाशे अने

सृष्टिनी पण वृद्धि थाशे माटे यज्ञ तो जरूर करव्या. पछी वेदमां बहु प्रकारना जे यज्ञ हता ते सर्वे ब्रह्माए विधि सोता बताव्या तेमां जे प्रवृत्तिमार्गवाळा हता तेने तो राजसी तामसी एवा प्रवृत्तिमार्गना यज्ञ बताव्या अने जे निवृत्तिमार्गवाळा हता तेने तो सात्त्विक यज्ञ बताव्या ते यज्ञ श्रीकृष्ण भगवाने भगवद्गीताने विषे पण कह्या छे माटे आपणे तो निवृत्तिमार्गवाळा छइए ते आपणे तो सात्त्विक यज्ञ करवा पण जेमां पशु मरतां होय एवा जे राजसी तामसी यज्ञ ते आपणे करवा नहि. ते सात्त्विकयज्ञनी रीत जे दश इन्द्रियो ने अगियारमुं मन ए सर्वे जे जे विषयमां चोटे त्यांथी पाछां खेंचीने ब्रह्मअग्निने विषे होमवां एनुं नाम योग यज्ञ कहेवाय, अने एवी रीते होमतां होमतां जेम यज्ञ करनाराने भगवान दर्शन आपे छे, तेमज ए योग यज्ञना करनाराना अंतरने विषे पोतानुं स्वरूप जे ब्रह्म तेने विषे परब्रह्म जे श्रीपुरुषोत्तम ते प्रगट थइ आवे छे ए योगयज्ञनुं फळ छे. [२] अने अंतर्दृष्टिए करीने जे भगवानना भक्तने वर्तवुं २
ते ज्ञानयज्ञ कहेवाय छे. हवे कोइ एम पुछे जे अंतर्दृष्टि ते शुं ? तो तेनो उत्तर ए छे जे बाहेर अथवा मांहिली कोरे भगवाननी मूर्त्ति सामी जे वृत्ति करवी एज अंतर्दृष्टि छे अने ते विना तो अंतर्दृष्टि करीने बेठो छे पण बाह्यदृष्टिज छे, माटे बाहेर भगवाननुं दर्शन तथा पूजन तथा भगवाननां कथा कीर्त्तन ए आदिक जे जे भगवान संबंधी क्रियाओ होय ते सर्वे अंतर्दृष्टि छे अने ए सर्वे ज्ञानयज्ञ थाय छे अने तेज भगवाननी मूर्त्तिने अंतरमां धारीने तेनुं पूजनवंदनादिक जे जे करवुं ते पण अंतर्दृष्टि छे ने ज्ञानयज्ञ छे, माटे सत्संगीमात्रने तो एवो अखंड ज्ञानयज्ञ थाय छे अने समाधि तो कोइकने थाय छे ने कोइकने नथी थाती ते तो परमेश्वरनी इच्छाये करीने एम रह्युं छे अथवा कोइक ठेकाणे भक्तनी कचाइ वते करीने एम रह्युं छे अने कोइक मूर्ख लोक छे ते एम कहे छे जे, गोपिकाना अंगनां कीर्त्तन होय ते रहेवा द्यो ने निर्गुण कीर्त्तन होय ते गाओ तथा जे उघाडा थइने फरता होय तेने मूर्ख होय ते निर्गुण पुरुष कहे छे पण जो उघाडा चाले निर्गुण थवातुं होय तो कुतरां, गधेडां इत्यादिक सर्वे निर्गुण कहेवाय, माटे ए तो मूर्खनी समझण छे, अने ज्ञानी भक्त होय ते तो एम जाणे जे, भगवाननुं स्वरूप छे तेज निर्गुण छे अने जेने जेने ते भगवाननो संबंध थयो ते सर्वे निर्गुण मार्गवाळा छे अने जे जे कथा कीर्तनने विषे भगवानना स्वरूपनो संबंध छे ते सर्वे निर्गुण कहेवाय अने जे कथा कीर्त्तनने विषे भगवाननो संबंध न होय ते मायिक गुणे युक्त छे, माटे सगुण कहेवाय अने जो भगवाननी प्राप्ति न थइ होय ने ते उघाडा फरे तो पण निर्गुण न कहेवाय अने जेने भगवाननी प्राप्ति थइ छे अने गृहस्थाश्रमी छे तो पण ते निर्गुण कहेवाय अने त्यागी होय ते पण निर्गुण कहेवाय, माटे भगवा-

अने पामवानो जे मार्ग तेज निर्गुण मार्ग छे अने ते जे जे भगवान संबंधी क्रिया करे ते सर्वे निर्गुण छे. अने जेने भगवाननो संबंध थयो छे तेना भाग्यनो पार आवे नहि अने ते भगवाननो संबंध एक जन्मने पुन्ये करीने थातो नथी ए तो श्रीकृष्ण भगवाने गीतामां कह्युं छे जे ।। अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो यातिपरांगतिम् ।। ए श्लोकनो ए अर्थ छे जे अनेक जन्मनुं सुकृत भेळुं थाय छे तेणे करीने जे संसिद्ध थयो ते परमपदने पामे छे ते परमपद ते शुं जे प्रत्यक्ष भगवाननी प्राप्ति तेज परमपद छे. अने वळी श्रीकृष्ण भगवाने एम पण कह्युं छे जे ।। ममैवांशो जीवलोके जीवभूत: सनातन: । मन: षष्ठानींद्रियाणि प्रकृतिस्थानिकर्षति ।। ए श्लोकनो अर्थ ए छे जे आ संसारने विषे भगवानना अंश जे जीव छे ते तो मने सहित जे पंचज्ञान इन्द्रियो तेने पंचविषय थकी खेंचीने पोताने वश राखे छे अने जे भगवानना अंश नथी तेने तो इन्द्रियो खेंचीने ज्यां पोतानी इच्छा होय त्यां लेइ जाय छे, माटे आपण सर्वे इन्द्रियोना दोर्या दोराता नथी तो जो भगवानना अंश छइए, एवुं जाणीने अतिशे आनंदमां रहीने भगवाननुं भजन करवुं अने सर्वे इन्द्रियोनी वृत्तियोने भगवानना स्वरूपमां होमवी अने सदा ज्ञानयज्ञ कर्या करवो अने यज्ञ रहितनुं कोइ रीते कल्याण थातुं नथी; अने चार वेद, सांख्यशास्त्र, योगशास्त्र, धर्मशास्त्र, अढार पुराण, भारत, रामायण ने नारद पंचरात्र ए आदिक सर्व सत्शास्त्रनो एज सिद्धांत छे जे, यज्ञ रहितनुं कल्याण थातुं नथी, माटे अमारी पण एज आज्ञा छे जे सर्वे परमहंस तथा सर्वे सत्संगी ज्ञानयज्ञ करता रहेज्यो अने एमने एम ज्ञानयज्ञ करतां करतां ज्यारे पोतानुं स्वरूप जे ब्रह्म तेने विषे परब्रह्म भगवान साक्षात्कार देखाय एज ज्ञानयज्ञनुं फळ छे, एवी रीते ज्ञानयज्ञ करतां करतां ज्यारे म्येतद्वीपमां निरन्नमुक्त छे एवुं थवाय त्यारे ज्ञानयज्ञना विधिनो अवधि आवी रह्यो; अने ज्यां सुधी एवुं न थवाय त्यां सुधी एटलुं अधुरुं जाणवुं. अने निरन्न मुक्त जेवा थवानी अतिशे इच्छा राखवी पण श्रद्धा रहित थावुं नहि अने पोताने विषे अपूर्णपणुं मानवुं नहि ने भगवाननी प्राप्ति थइ छे तेणे करीने पोताने कृतार्थ मानीने ने सावधान थइने ज्ञानयज्ञ कर्या करवो. (३) इति वचनामृतम्. ।। ८ ।। (१४१)

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (२) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे एकादशीनुं व्रत करवानी विधि कही छे. [१] बीजामां इंद्रियोने पाछां वाळीने आत्माने विषे राखे ते योगयज्ञ छे अने आत्मामां मूर्ति देखाय ए योगयज्ञनुं फळ छे. (२) अने ब्रह्मरूप जे पोतानो आत्मा तेने विषे परब्रह्म एवा जे अमे ते अमारो साक्षात्कार थाय ते ज्ञानयज्ञनुं फळ छे अने पोताना आत्माने विषे अमारुं दर्शन थाय त्यारेज ज्ञानयज्ञना विधिनो अवधि पुरो जाणवो एम कह्युंछे. [१] वातनो छे.

१ प्र० [२/३ बीजा प्रश्नमां] अमारी मूर्ति धार्या विना अंतर्दृष्टि करीने बेठो छे तोपण बाह्यदृष्टिज छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते मूर्ति विना अंतर्वृत्तिए बीजुं शुं जोतो हशे ? अने बहार अथवा मांही मूर्ति सामुं जोइ रहेवुं ए अंतर्दृष्टि कही ते बहार मांही केवी रीते मूर्ति जोवी ?

१ उ० उपासना विनानो केवळ आत्मनिष्ठ होय ते आत्माने जोवानी इच्छाथी ध्यान करतो होय तेपण बाह्यदृष्टिवाळो छे, केम जे मूर्तिनी उपासना विना आत्मा पण देखाय नहि अने मूर्तिथी बहार रहीने मूर्ति जोवी अथवा मूर्तिने अंदर रहीने जोवी ए परभावनी अंतर्दृष्टि छे अने आत्माने मांही ने आत्माथी बहार मूर्ति जोवी ते अवर भावनी अंतर्दृष्टि छे.

२ प्र० इंद्रियोना दोर्या न दोराय तेने भगवानना अंश कह्या ते अंश केवी रीते जाणवा ?

२ उ० भगवान स्वतंत्र छे ते स्वतंत्रपणानो अंश जेमां आवे ते इंद्रियो अंतःकरणने वश राखे एवा भक्त थाय माटे अंश कह्या छे.

३ प्र० ज्ञानयज्ञ करतां करतां ज्यारे श्वेतद्वीपमां निरन्न मुक्त छे तेवुं थवाय त्यारे ज्ञानयज्ञना विधिनो अवधि आवी रह्यो एम कह्युं अने वळी निरन्न मुक्त जेवा थवानी इच्छा राखवी एम कह्युं ते निरन्न मुक्ततो वासुदेवना भक्त छे अने आपणे तो तेथी पर जे अक्षरकोटी ने तेथी पर जे श्रीजीमहाराजना मुक्त छे तेवुं थावुं छे अने श्वेतद्वीपना मुक्त जेवुं थावुं एम कह्युं ते केम समजवुं ?

३ उ० जेम श्वेतद्वीपना मुक्त वासुदेव भगवाननी मूर्तिने सदाय देखे छे तेम तमे सर्वे तमारा आत्माने विषे अमारी मूर्ति देखो त्यारे तमारुं पुरुं थयुं एम मानज्यो एम कह्युं छे. ॥१४१॥

संवत् १८७८ ना श्रावण शुदि १४ चौदशने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिर आगळ मशरुना चाकळा उपर विराजमान हता ने ते समे आनंदानंदस्वामीए पूजा करी हती ते राता किनखापनो सुरवाळ पहेर्यो हतो तथा राता कीनखापनी डगली पहेरी हती तथा मस्तक उपर सोनेरी फरता छेडानो कसुंबी रेटो बांध्यो हतो तथा कमरे जरकशी शेलुं बांध्युं हतुं तथा गुढो असमानी रंगनो रेटो खभा उपर नाख्यो हतो अने हाथे राखडीओ बांधी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे कीर्त्तन बोलीए. पछी श्रीजीमहाराजे कह्युं जे त्यो
१ परमेश्वरनी वार्ता करीए. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) ज्ञानमार्गतो एवो समजवो जे, कोइ रीते भगवानना स्वरूपनो द्रोह थाय नहि ने कोइक काळे भगवानना वचननो लोप थातो होय तो तेनी चिंता नहि पण भगवानना स्वरूपनो द्रोह थावा देवो नहि ने जो भगवाननुं वचन कांइक लोपाणुं होय तो ते भगवाननी प्रार्थना करीने पण छूटको थाय पण भगवानना स्वरूपनो द्रोह कर्यो होय तो तेनो कोइ रीते छुटको

थाय नहि, माटे जे समजु होय तेने भगवानना वचनमां तो जेटलुं पोतानी सामर्थ्य प्रमाणे रहेवाय तेटलुं अवश्य रहेवुं पण भगवाननी मूर्तिनुं बळ अतिशे राखवुं जे, सर्वोपरि जे भगवाननुं स्वरूप छे तेज मुने प्राप्त थयुं छे अने जे एम जाणतो होय ने तेथी जो कदाचित् सत्संगथी बाहेर निसरी जवाणुं तोय पण तेने भगवाननी मूर्तिमांथी हेत टळतुं नथी ने ते हमणां तो सत्संगथी बहार छे पण देह मुकीने तो अंते भगवाननुं जे अक्षर
धाम तेने विषे भगवानने समीपे जाशे.(१)अने हमणे सत्संगमां रहेतो हशे अने शास्त्र- १
ना वचनमां पण रहेतो हशे ने तेने जो भगवत्स्वरूपनी निष्ठा पाकी नहि होय तो ते ज्यारे देह मुकशे त्यारे कांतो ब्रह्माना लोकमां जाशे ने कांतो कोइक बीजा देवताना
लोकमां जाशे पण ते पुरुषोत्तम भगवानना धामने विषे नहि जाय. (२) अने जेम २
अर्जुन हता तेने तो भगवत्स्वरूपनुं बळ हतुं अने युधिष्ठिर राजाने तो शास्त्रना वचननुं बळ हतुं पछी ज्यारे भारतनी लडाइ थइ त्यारे श्रीकृष्ण भगवाने अर्जुनने कह्युं जे ॥ सर्व धर्मान्परित्यज्य मामेकंशरणं व्रज । अहं त्वां सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि माशुचः ॥ ए श्लोकनो ए अर्थ छे जे हे अर्जुन ! सर्व धर्मने तजीने तुं एक मारा शरणने पाम्य, तो हुं तुने सर्व पाप थकी मुकावीश तुं कांइ शोक करीशमां, ए वचनने मानीने अर्जुन जे ते लडाइने विषे अनंत दोष थया तोपण लेश मात्र मनमां झांखा थया नहि अने भगवानना आश्रयनुं बळ राखी रह्या, अने युधिष्ठिरे कांइ पाप कर्युं नहि तोपण शास्त्रना वचमनो विश्वास हतो तेणे करीने एम जाण्युं जे, मारुं कोइ काळे कल्याण नहि थाय. पछी सर्वे ऋषिये समझाव्या तथा व्यासजीए समझाव्या तथा श्रीकृष्ण भगवाने पोते समझाव्या तोय पण शोक मुक्यो नहि. पछी श्रीकृष्ण भगवाने भीष्म पासे लेइ जाइने शास्त्र संबंधी कथा संभळावी त्यारे कांइक विश्वास आव्यो तोय पण अर्जुन जेवा निःसंशय थया नहि, माटे बुद्धिमानने तो भगवत्स्वरूपनुं बळ अतिशे राख्युं जोइए ए बळ जो लेश मात्र पण होय तो मोटा भयथी रक्षा करे ते पण श्रीकृष्ण भगवाने कह्युं छे जे ॥ स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ॥ ए श्लोकनो ए अर्थ छे जे भगवत्स्वरूपना बळनो लेश मात्र होय ते पण मोटा भय थकी रक्षाने करे छे, जेम अर्जुने भारतनी लडाइ करी त्यारे तेने विषे केटलीक जातना अधर्मरूपी मोटा मोटा भय आव्या पण ते भय थकी जे अर्जुननी रक्षा थइ ते भगवत्स्वरूपना बळने प्रतापे थइ, माटे जेने सर्वथी भगवत्स्वरूपनुं बळ अधिक होय एज एकांतिक भक्त कहेवाय ने तेज पाको सत्संगी कहेवाय. अने श्रीमद्भागवतमां पण एज वात प्रधान छे जे, श्रुति स्मृतिना धर्मने कांइक तजाय तो तेनी चिंता नहि पण भगवाननो आश्रय तजवो नहि अने कोइक एम जाणे जे, आवी वात करीए तो धर्म खोटा थइ जाय पण आ

वार्ता कांइ धर्मने खोटा कर्या सारु नथी आतो एटला सारु छे जे देश, काळ, क्रिया,
संग,मंत्र, शास्त्र उपदेश ने देवता एटलां वानां शुभ ने अशुभ ए बे प्रकारनां छे तेमां-
थी जो अशुभनो योग थाय ने एने कांइक विघ्न पडे तोपण जो भगवानना स्वरूपमां
निष्ठा पाकी होय तो ते कल्याणना मार्गमांथी कोइ काळे पडेनहि. (३) अने जो भग- ३
वत्स्वरूपनी निष्ठामां काच्यप होय तो जे दिवसे धर्ममांथी चळी जवाय ते दिवसे ते
एम जाणे जे हुं नरकमां पडी चुक्यो, माटे जेने भगवत्स्वरूपनुं बळ तेज पाको सत्संगी
छे अने ए विना बीजा तो गुणबुद्धिवाळा कहेवाय अने जेने भगवत्स्वरूपनो निष्ठा
पाकी होय तेनेज शास्त्रमां पण एकांतिक भक्त कह्यो छे. (४) अने आ सभामां जेवी ४
सत्संगमां वार्ता थाय छे तेने जो नारद सनकादिकने ब्रह्मादिक देवता सांभळे तो सां-
भळीने एम कहे जे आवी वार्ता कोइ काळे सांभळी पण नथी अने सांभळशुं पण नहि
आ वार्ता तो ॥ न भूतो न भविष्यति ॥ एवी छे अने अतिशे झीणी वार्ता थाय छे तो
पण अतिशे स्थूळबुद्धिवाळा होय तेने पण समजाय छे एवी मूर्तिमान वार्ता थाय छे
माटे आ समे जेने सत्संगमां प्रतीति आवी छे तेना पुन्यनो पार आवे एम नथी, एवुं
जाणीने सत्संगी होय तेने पोताने विषे कृतार्थपणुं मान्युं जोइए अने जेने भगवानने
विषे अतिशे प्रीति होय तेने तो आ वार्ता समजाय अथवा न समजाय तोपण तेने तो
कांइ करवुं रह्युं नथी पण जेने परमेश्वरने विषे अतिशे प्रीति तो न होय तेने तो जरूर
भगवानना स्वरूपनो महिमा समज्यो जोइए, माटे जे डाह्यो होय तेने तो आ वार्ता
समजी विचारीने अति दृढ भगवाननो आशरो करवो एज मत अति सारमां सार छे.
(५) इति वचनामृतम् (९) ॥ १४२ ५

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य [१] छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे सर्वेथी पर एवा जे अमे ते तमने मळ्या छीए माटे अमारी मूर्तिनुं बळ अतिशे राखवुं अने अमारुं सर्वोपरिपणानुं बळ होय तो तेथी सत्संग बहार जवाणुं होय तोपण अमारे विषेथी हेत टळे नहि ने ते अंते अक्षरधामने विषे अमारे समीपे रहेशे. (१) अने हमणां सत्संगमां रहेतो होय ने शास्त्रना वचनमां पण रहेतो होय तोपण अमारा स्वरूपनी पाकी निष्ठा न होय तो ते अमारा धाम विना बीजा लोकमां जाय. [२] अने जेने अमारा स्वरूपनुं बळ होय तेज एकांतिक ने पाको सत्संगी छे. अने ए अशुभ देशकाळादिकने योगे कदापि धर्ममांथी चळी जाय तो प्रायश्चित्त करीने शुद्ध थाय पण कल्याणना मार्गथी पडे नहि. [३] अने अमारा स्वरूपनी निष्ठामां काच्यप होय ने धर्मथी चळी जाय तो नरकमां पडी चुक्यो एम जाणीने कल्याणने मार्गे चाली शके नहि. [४] अने जेने अमारे विषे अतिशे प्रीति होय तेने कांइ करवुं रह्युं नथी अने जेने अमारे विषे अतिशे प्रीति न होय तेने तो अमारो महिमा समजवो. [५] वाक्यो छे.

१ प्र० पहेली वाक्यमां जे अमने सर्वोपरि जाणे तेने कदाचित् सत्संग बहार जवुं पडे तोपण

तेनुं कल्याण थाय एम कह्युं ते एने शा कारणथी सत्संग बहार अवुं पडतुं हशे ? अने त्यागीमांथी नीकळीने गृहस्थाश्रममां जाय ते सत्संग बहार कहेवाय के त्यागीना वेशे एकलो फरे ने मागी खाय ते सत्संग बहार कहेवाय ? अने ते शास्त्रनुं केटलुं वचन लोपे तोपण अक्षरधामने पामे ?

१ उ० श्रीजीमहाराजने सदा साकार दिव्य मूर्तिने सर्व अवतारना अवतारी ने सर्वेना कारण जाणे पण मुमवणीयो स्वभाव होय ते सत्संगमां रहेवा दे नहि तेणे करीने सत्संग बहार आवुं पडे पण श्रीजीमहाराजनो निश्चय सर्वोपरि होय ने श्रीजीमहाराजने विषे अचळ हेत होय ने श्रीजीमहाराजने तथा संतने कल्याणना दाता जाणे अने तेमना गुण ग्रहण करे ने पोताने विषे दोष परठे ने मागी खाइने पोतानुं गुजरान चलवे ने श्रीजीमहाराजनी बांधेली मर्यादा प्रमाणे वर्ते ने नियममां कुशळ रहे ते अक्षरधामने पामे. अने त्यागीमांथी गृहस्थमां जाय ते सत्संग बहार न कहेवाय.जे एकढमल थइ जाय ते सत्संग बहार कहेवाय.ते एकलो होय माटे ते भिक्षा मागवा जाय त्यारे बाइओ साथे बोलवुं पडे एटलुंज शास्त्रनुं वचन लोपाय पण तेथी अधिक न लोपे तो अक्षरधाममां जाय अने बोलवा सिवायनी बीजी आज्ञा लोपे तो अक्षरधामने न पामे अने गृहस्थने अशुभ देशकाळादिकने योगे सत्संगना नियम धर्म पळी शके नहि ते सत्संग बहार कहेवाय तोपण श्रीजीमहाराजना स्वरूपनी निष्ठा पाकी होय तो तेनुं जन्मांतरे कल्याण थाय एटले कल्याणना मार्गमां रहे पण कल्याणनो मार्ग बंध थाय नहि.

२ प्र० बीजी बाबतमां अमारा स्वरूपनी निष्ठा पाकी न होय तोते ब्रह्माना तथा बीजा देवताना लोकमां जाशे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं, ते निष्ठा केवी जाणवी ? ने ब्रह्मा तथा देवता किया जाणवा ?

२ उ० छुपैया धामने विषे मनुष्य रूपे प्रगट थइने मळ्या जे साक्षात् श्रीजीमहाराज तेमने दिव्य साकार मूर्ति ने सर्वे अवतारना कारण ने अवतारी जाणे ते पाकी निष्ठा कहेवाय अने निराकार के बीजा अवतार जेवा जाणे तो द्रोह कर्यो कहेवाय. अने ब्रह्मा एटले मूळ पुरुष जाणवा अने प्रधान पुरुषने देवता कह्या छे ते लोकने पामे.

३ प्र० त्रीजी बाबतमां अर्जुने शास्त्रनुं वचन न मान्युं तेने वखाण्या ने युधिष्ठिरने न्यून कह्या तेनुं शुं कारण हशे ? केम जे (प्र० ७८ ना ओगणीसमा प्रश्नमां) पंच वर्तमान संपूर्ण राखे तो अमे प्रसन्न थइए एम कह्युं छे तथा (लो० ६ ना $\frac{१}{६८}$ तेरमा प्रश्नमां) अमारुं वचन अधर्म जेवुं जणायतो न मानवुं तथा (छे० २७ ना बीजा प्रश्नमां) वर्तमाननी आंटी मुकवी नहि एम कह्युं छे. ते प्रमाणे तो युधिष्ठिरने वखाणया जोइए माटे ते केवी रीते समजवुं ? अने स्वरूपनिष्ठा शी समजवी ?

३ उ० जेम अर्जुने श्रीकृष्णना वचननी प्रतीति राखी अने शास्त्रना वचननी साख्य न कीधी तेम अमे सर्वोपरि सर्वेना कारण सर्वनियंता सर्वोपास्य कीधा पण आमाथी ते भगवान कृष्णथीज जाणज्यो पण तेमां शास्त्रनी साख्य लेशो नहि एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे (म०

११ ना ६ बीजा प्रश्नमां) आवी वात अमे घणीकवार करी छे पण शास्त्रनां वचन सांभळीने समजणमां ठा रहेतो नथी एम कह्युं छे, माटे श्रीजीमहाराजने सर्वोपरि समजवा तेमां बीजा शास्त्रनी वा श्रीजीमहाराजने सर्वोपरि न कहेलां होय तेवां वाक्योनी साख्य देखा जाय तेने युधिष्ठिरनी पेठे संशयात्मक जाणवो अने जे श्रीजीमहाराजना स्वरूपने जाणवामां बीजी साख्य न गोते तेनो अर्जुननी पेठे परिपक्व निश्चय जाणवो अने जेम अर्जुनने श्रीकृष्ण भगवानने विषेज निष्ठा हती तेमज श्रीजीमहाराजने विषेज निष्ठा होय तेज स्वरूपनिष्ठा जाणवी पण स्वरूप स्वरूपी भाव जुदो न समजवो अने वचनामृतमां ज्यां संत के अवतार अमारुं स्वरुप छे एम कह्युं होय त्यांज स्वरूप स्वरूपी जुदा समजवा पण ते विना न समजवा. ॥ १४२ ॥

संवत् १८७८ ना श्रावण वदि ३ तृतियाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराजश्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमांथी घोडीए अस्वार थइने श्रीलक्ष्मीवाडीए पधार्या हता पछी ते फुलवाडीने मध्ये आंबाना हसनी हेठे वेदी छे ते उपर उत्तरादुं मुखारविंद करीने विराजमान हता ने श्रीजीमहाराजे सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां तथा पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, [१] श्रीमद्भागवतमां साकार ब्रह्मनुं प्रतिपादन छे पण जे वांचनारा होय तेने जो परमेश्वरनी भक्ति न होय तो भगवाननुं स्वरूप श्रीमद्भागवतमांथी पण निराकार समजाय छे अने द्वितीय स्कंधमां ज्यां आश्रयनुं रूप कर्युं छे त्यां पण भगवाननुं स्वरूप भक्तिहीन होय तेने निराकार समजाय छे पण भगवाननुं स्वरूप निराकार नथी, कांजे भगवान थकीज सर्वे स्थावर जंगम सृष्टि थाय छे ते जो भगवान निराकार होय तो ते थकी साकार सृष्टि केम थाय ? जेम आकाश निराकार छे तो ते थकी जेवा पृथ्वीथकी घटादिक आकार थाय छे तेवा थाता नथी तेम ब्रह्मादिक जे सृष्टि ते साकार छे तो तेना करनारा जे परमेश्वर ते पण साकार छे अने भागवतमां अध्यात्म, अधिभूत ने अधिदैव ए त्रणनो जे आधार छे ते भगवाननुं स्वरूप छे एम कह्युं छे तेनी वात करुं ए ते सांभळो, अध्यात्म जे विराट्पुरुषनां इन्द्रियो ने अधिभूत जे तेनां पंच महाभूत अने अधिदैव जे विराट्नां इन्द्रियोना देवता ए सर्वे विराटने विषे आव्या तो पण विराट् उभो न थयो पछी वासुदेव भगवाने पुरुष रूपे थइने ज्यारे विराट् पुरुषने विषे प्रवेश कर्यो त्यारे विराट् पुरुष उभा थया ते भगवान विराट् पुरुषनां जे अध्यात्म, अधिभूत ने अधिदैव तेने विषे तदात्मकपणे करीने वर्ते छे ने स्वरूपे तो विराट्थकी न्यारा छे तेनेज आश्रय करवा योग्य स्वरूप कह्युं छे, अने जेम अग्नि छे ते प्रकाश स्वरूपे तो अरूप छे ने अग्नि पोते तो मूर्तिमान छे ज्यारे अग्निने अजीर्ण थयुं हतुं त्यारे मूर्तिमान अग्नि श्रीकृष्ण भगवान ने अर्जुन

पासे आव्यो हतो पछी ज्यारे इन्द्रनुं खांडव वन बाळवा गयो त्यारे तेज अग्नि ज्वाळा रूप थइने समग्र वनमां व्याप्यो तेमज पुरुषोत्तम भगवान छे ते ब्रह्मरूप जे पोतानी शक्ति तेणे करीने सर्वेने विषे व्यापक छे ने मूर्तिमान थका सर्वथी जुदा छे अने ब्रह्म छे ते तो पुरुषोत्तम भगवाननी किरण छे ने पोते भगवान तो सदा साकार मूर्तिज छे, माटे जेने कल्याणने इच्छवुं तेने तो भगवानने मूर्तिमान समझीने तेनो आश्रय दृढ राखवो अने वात पण एवी करवी जे, कोइने भगवाननो आश्रय होय ते टळे नहि, अने जेम स्त्रीना उदरमां गर्भ होय पछी तेमांथी पुत्ररूप फळ उदय थाय छे तेम जेने भगवानना स्वरूपनो निश्चयरूप गर्भ होय तेने भगवाननुं जे अक्षरधाम ते रूप फळनी प्राप्ति थाय छे माटे एवो उपाय करवो जेणे करीने ए गर्भने विघ्न न थाय ने बीजाने पण एवी वात करवी जेणे करीने भगवानना निश्चयरूप गर्भनो पात न थाय. [१] १

पछी श्रीजीमहाराज वाडी थकी दादाखाचरना दरबारमां पधार्या ने उगमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. पछी श्रीजीमहाराजे नाना नाना परमहंसने बोलावीने परस्पर चर्चा करावी पछी अचिंत्यानंदस्वा-
२ मीए प्रश्न पुछ्यो जे, (२) ज्ञान, वैराग्य, ने भक्तिए त्रणने विषे भगवानना स्वरूपमां प्रीति थयानुं विशेष कारण कोण छे ? पछी ए प्रश्ननो उत्तर तो कोइथी थयो नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ल्यो ए प्रश्ननो उत्तर अमे करीए. ने ज्ञान वैराग्य ने भक्ति तेनुं रूप जुदुं जुदुं करीए जे, जीवमात्रनो एवो स्वभाव छे जे, सारुं पदार्थ देखे त्यारे तेथी उतरतुं जे पदार्थ होय तेमांथी सहेजेज प्रीति टळी जाय छे माटे भगवाननुं जे अक्षरधामछे ने तेने विषे जे सुख छे तेनी आगळ जे आ मायिक सुख छे ते तो नकळ जेवुं छे ने अचळ सुख तो भगवानना धामने विषेज छे, माटे परमेश्वरनी वात सांभळतां सांभळतां जो भगवान संबंधी सुख ओळखाय तो जेटलुं मायाथकी उत्पन्न थयुं छे ते सर्वे तुच्छ जणाय, जेम त्रांबानो पैसो कोइक पुरुषना हाथमां होय तेने ज्यारे ते पैसा साटे सोनामोर कोइ आले त्यारे त्रांबाना पैसामांथी हेत उतरी जायछे. एवी रीते ज्यारे भगवान संबंधी सुखमां दृष्टि पहोंचे त्यारे जेटलुं मायिक सुख छे ते सर्वे थकी वैराग्यपामे छे,ने एक भगवाननी मूर्तिमांज हेत थाय छे ए वैराग्यनुं स्वरूप कह्युं छे.हवे ज्ञाननुं स्वरूप कहीए छइए जे, ज्ञान निरूपणने विषे बे शास्त्र छे,एक सांख्य शास्त्र ने बीजुं योगशास्त्र. तेमां सांख्य शास्त्रनो मत ए छे जे, जेम आकाश जे ते पृथ्वी, जळ, तेज, वायु, तेमां व्यापक छे अने आकाश विना एक अणु पण क्यांइ खाली नथी तो पण पृथ्वी आदिकना जे विकार ते आकाशने अडताज नथी तेम पुरुषोत्तम भगवान

छे तेने आकाशनी पेठे मायिक विकार कोइ अडतोज नथी. ए वार्ता कृष्णतापनी उपनिषद्‌मां कही छे जे, ज्यारे दुर्वासाऋषि वृन्दावनने विषे आव्या त्यारे श्रीकृष्णभगवाने गोपियोने कह्युं जे, दुर्वासा भुख्या छे माटे सर्वे थाळ लइने जाओ. पछी गोपियोए पुछयुं जे, आडां यमुनाजी छे ते केम उतराशे ? त्यारे श्रीकृष्ण भगवाने कह्युं जे यमुनाजीने तमे एम कहेजो जे, श्रीकृष्ण सदा बाळ ब्रह्मचारी होय तो माग देजो. पछी गोपियो हसती हसती यमुनाजोने कांठे जइने एम कह्युं त्यारे यमुनाजीए तत्काळ माग दीधो पछी गोपियोए ऋषिने जमाड्या ते ऋषि सर्वेना थाळ जमी गया. पछी गोपियोए कह्युं जे, अमे घेर केम करीने जइए ? आडां यमुनाजी छे. त्यारे ऋषिए पुछयुं जे, आव्यां त्यारे केम करीने आव्यां हतां ? पछी गोपियोए कह्युं जे, श्रीकृष्णे एम कह्युं हतुं जे, अमे सदा बाळ ब्रह्मचारी होइए तो यमुनाजीने कहेज्यो जे माग देज्यो. पछी यमुनाजीए माग दीधो ते तम पासे आव्यां छइए, ए वात सांभळीने ऋषि बोल्या जे हवे यमुनाजीने एम कहेज्यो जे, दुर्वासा सदा उपवासी होय तो माग देज्यो.पछी गोपियो हसती हसती जइने एम कह्युं त्यारे यमुनाजीए तत्काळ माग दीधो.त्यारे गोपियो सर्वे ए बे वात जोइने अतिशे आश्चर्य पामी, माटे भगवाननुं स्वरूप तो एवुं आकाशनी पेठे निर्लेप छे ने सर्व क्रियाओने करता थका भगवान अकर्त्ता छे अने सर्वना संगी थका पण अत्यंत असंगी छे,एवी रीते सांख्य शास्त्र भगवानना स्वरूपने निर्लेपपणे करीने कहे छे एवुं समजवुं ए सांख्यने मते ज्ञान छे. हवे योगशास्त्रनो मत कहीए ते सांभळो, योगनो मत एम छे जे, जेने भगवाननुं ध्यान करवुं होय तेने प्रथम दृष्टि स्थिर करवी ते दृष्टि स्थिर करवा सारु भगवाननी प्रतिमा अथवा बीजुं कांइ पदार्थ होय तेमां प्रथम दृष्टिने ठरावबी. पछी एकने एक आकार जोतां थकां दृष्टि स्थिर थइ जाय त्यारे ते भेळुं अंतःकरण पण स्थिर थाय छे, ने ज्यारे अंतःकरण स्थिर थाय त्यारे भगवाननी मूर्ति हृदयमां धारवी. तेमां धारणा करनारा योगीने प्रयास न पडे सुखे धराय छे,अने जो प्रथमथी अभ्यास करीने अंतःकरण स्थिर न करे तो ज्यारे भगवाननुं ध्यान करे त्यारे बीजां पण केटलांक टींखळ आडां आवीने उभां रहे,माटे योगशास्त्रनो ए सिद्धांत छे जे, प्रथम अभ्यास करीने वृत्ति स्थिर करवी, ने पछी भगवान संघाथे जोडवी एम जाणवुं, ए योगशास्त्र संबंधी ज्ञान छे.एवी रीते ए बे शास्त्रने मते करीने जे समजण दृढ करवी तेनुंज नाम ज्ञान छे. हवे भक्तिनी रीततो एम छे जे ज्यारे समुद्र मंथन कर्युं त्यारे समुद्रमांथी लक्ष्मीजी निसर्यां पछी लक्ष्मीजीए हाथमां वरमाळा लेइने विचार कर्यो जे, वरवा योग्य कोण छे, तेने हुं वरुं. पछी ज्यां तपासीने जोयुं त्यां तो जेमां रूप तेमां बहु गुण नहि ने जेमां कांइक गुण तेमां रूप नहि एवी रीते घणाकने विषे

मोटां मोटां कलंक दीठां. पछी देवता मात्र तथा दैत्य मात्र तेने कलंकना भर्या देखीने सर्वे गुणे करीने संपूर्ण अने सर्वे दोषे रहित ने सर्व सुखना निधान एवा एक भगवाननेज दीठा, त्यारे लक्ष्मीजीने भगवानने विषे दृढ भक्ति थइ, पछी अति प्रेमे करीने भगवानने वरमाळा पहेरावी ने भगवानने वर्या, माटे एवा कल्याणकारी गुणने जे जाणवा ने परमेश्वरनो दृढ आश्रय करवो तेनुंज नाम भक्ति छे.(२) २

३ ए वार्ता सांभळीने मुक्तानंदस्वामीए श्रीजीमहाराजने पुछ्युं जे, [३] हे महाराज ! ज्ञान, वैराग्यने भक्ति ए त्रणमांथी परमेश्वरने विषे प्रीति थावानुं केने विषे अधिक दैवत आव्युं ते समझाणुं नहि ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, भक्तिने विषे दैवत घणुं छे. ने ज्ञान वैराग्यमां दैवत तो छे पण भक्ति जेटलुं नथी, अने भक्ति तो अति दुर्लभ छे, ते भक्तिवाळानां लक्षण आवां होय छे जे, ज्यारे जीवना कल्याणने अर्थे भगवान मनुष्य जेवी मूर्ति धरीने पृथ्वीने विषे विचरे छे त्यारे भगवानना केटलांक चरित्र तो दिव्य होय ने केटलांक चरित्र तो मायिक जेवां होय ते ज्यारे भगवाने कृष्णावतार धार्यो त्यारे देवकी वसुदेवने चतुर्भुज दर्शन दीधुं तथा गोवर्धन तोळ्यो, तथा काळी नागने काढीने यमुनाजीनु जळ निर्विष कर्युं, तथा ब्रह्मानो मोह निवारण कर्यो, तथा अक्रुरजीने यमुनाना जळने विषे दर्शन दीधुं, तथा मल्ल, हस्ती, कंसादिक ने मारीने सर्व यादवनुं कष्ट निवारण कर्युं, तेमज रामावतारने विषे धनुष भाग्युं, तथा रावणादिक दुष्टने मारीने सर्वे देवतानुं कष्ट निवारण कर्युं, इत्यादिक जे पराक्रम ते भगवानना दिव्य चरित्र कहेवाय. अने सीताहरण थयुं त्यारे रघुनाथजी रोता रोता घेला जेवा थइ गया, तथा कृष्णावतारमां काळयवननी आगळ भाग्या तथा जरासंधनी आगळ हार्या, ने पोतानी राजधानी जे मथुरां तेने तजीने समुद्रना बेटमां जइ वस्या, इत्यादिक जे भगवानना चरित्र ते प्राकृत जेवां जणाय छे. माटे दिव्य चरित्र होय तेमां तो पापी होय तेने पण दिव्यपणुं जणाय. पण ज्यारे भगवान प्राकृत चरित्र करे तेने विषे पण जेने दिव्यपणुं जणाय,त्यारे ते परमेश्वरनो भक्त साचो.अने भगवाने गीतामां कह्युं छे जे, ।। जन्म कर्म च मे दिव्य मेवं योवेत्ति तत्वतः । त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेतिसोऽर्जुन ।। ए श्लोकनो एम अर्थ छे जे, हे अर्जुन ! मारा जन्म ने कर्म ते दिव्य छे तेने जे दिव्य जाणे ते देहने मुकीने फरी जन्मने नथी पामतो मुनेज पामे छे, माटे जे भगवान दिव्य चरित्र करे ते तो भक्त ने अभक्त बेयने दिव्य जणाय पण ज्यारे भगवान मनुष्यना जेवां प्राकृत चरित्र करे तो पण तेने विषे जेने दिव्यपणुंज जणाय, पण कोइ रीते भगवानना ते चरित्रमां अभाव आवे नहि, एवी जेनी बुद्धि होय तेने परमेश्वरनी भक्ति कहेवाय ने एवी भक्ति करे तेज भक्त कहेवाय. अने ए श्लोकमां

कह्युं जे फळ ते आवा भक्तनेज थाय छे अने जेम गोपियो भगवानना भक्त हतां तो कोइ रीते भगवाननो अवगुण लीधोज नहि, अने राजा परीक्षिते तो गोपियोनी वात सांभळी एटलामांज भगवाननो अवगुण लीधो. पछी शुकजीए भगवाननुं समर्थपणुं देखाडीने ते अवगुणने खोटो करी नाख्यो माटे जे जे भगवान चरित्र करे ते सर्वेने गोपियोनी पेठे दिव्य जाणे पण कोइ रीते प्राकृत जाणीने अभाव तो आवेज नहि, एवी जे भक्ति ते तो महा दुर्लभ छे अने एक बे जन्मने सुकृते करीने एवी भक्ति न आवे, ए तो अनेक जन्मना ज्यारे शुभ संस्कार भेळा थाय छे त्यारे तेने गोपियोना सरखी भक्ति उदय थाय छे. अने एवी भक्ति छे तेज परमपद छे, माटे आवी रीतनी जे भक्ति ते ज्ञान वैराग्य थकी अधिक छे अने जेना हृदयने विषे आवी रीतनी भक्ति होय तेने भगवानने विषे प्रीतिमां शुं बाकी छे ? कांइ बाकी नथी.(३)इति वच० ॥१०॥१४३॥ ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [३] छे. तेमां पहेलुं कृपावाक्य छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के ब्रह्मरूप जे अमारी शक्ति तेणे करीने अमे मूळ अक्षरादिक सर्वेने विषे व्यापक छीए अने ते ब्रह्म अमारी किरण छे अने मूर्तिमान सर्वेथी जुदा छीए एवा अमने जाणीने अमारो आश्रय करे ते आत्यंतिक कल्याणने पामे छे. (१) बीजामां अमारा सुखने सर्वेथी अधिक जाणे ते वैराग्यनुं स्वरूप छे,अने अमने सर्व क्रियाने करता थका अकर्त्ता ने निर्लेप जाणे ते सांख्य संबंधी ज्ञान छे, अने वृत्तियो स्थिर करीने अमारे विषे जोडे ते योग संबंधी ज्ञान छे, अने अमारां मनुष्य चरित्रने दिव्य ने कल्याणकारी जाणीने दृढ आश्रय करे ते भक्तिनुं स्वरूप छे. (२) त्रीजामां ज्ञान वैराग्यथी अमारे विषे प्रीति थवानुं दैवत भक्तिने विषे अधिक छे. (३) आवतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां वासुदेव भगवाने पुरुषरूपे थइने वैराज पुरुषने विषे प्रवेश कर्यो त्यारे वैराज उभा थया एम कह्युं ते वासुदेव कोने कह्या हशे ? अने प्रवेश केवी रीते जाणवो ?

१ उ० वैराजने विषे मूळपुरुष द्वाराए वासुदेवे प्रवेश कर्यो छे ते श्वेतद्वीपपति वासुदेव ब्रह्मने आ ठेकाणे वासुदेव नामे कह्या छे.

२ प्र० गोपियो अने दुर्वासाने दृष्टांते सिद्धांत शो समजवो ?

२ उ० जेम दुर्वासा श्रीकृष्ण भगवानने विषे एकात्मताने पाम्या हता तेनी सेवाथी गोपियोमे यमुनानुं आवरण टळी गयुं तेम श्रीजीमहाराजने विषे एकात्मताने पाम्या होय एवा सत्पुरुषनी सेवाथी मायारूपी आवरण टळी जाय छे, अने जेम श्रीकृष्ण भगवाने गोपियोने आज्ञा करी हती तेम श्रीजीमहाराजे मुमुक्षुओने एवा सत्पुरुषनी सेवा करवी एम आज्ञा करी छे अने तेमनी सेवाथी अमारी सेवा थाय छे एम जणाव्युं छे अने अमे तथा एवा सत्पुरुष अकर्त्ता, निर्लेप, असंगी ने निर्विकार छीए एम जणाव्युं छे.

३ प्र० त्रीजा प्रश्नमां ज्ञान वैराग्यथी भक्तिमां अधिक दैवत कह्युं तेनुं शुं कारण हशे ?

३ उ० श्रीजीमहाराज मनुष्य चरित्र करे ते चरित्र जोइने पण कांइ संशय थाय नहि ने सदा निर्दोष बुद्धि ने दिव्य बुद्धि रहे तेनेज भक्ति कही छे. ए भक्ति ज्ञान वैराग्यथी अधिक छे. आ भक्ति असाधारण कही छे.

४ प्र० आमां ज्ञानथी भक्ति अधिक कही अने (लो० ७ ना पहेला प्रश्नमां) अमारुं साक्षात् ज्ञान थाय त्यारेज कल्याण थाय एम जोतांतो ज्ञान अधिक थयुं ते केवी रीते समजवुं?

४ उ० आमां श्रीजीमहाराजना मनुष्य स्वरूपने विषे दिव्य बुद्धि थाय अने कोइ काळे श्रीजीमहाराजना प्राकृत चरित्रमां संशय थायज नहि एवी निर्दोष भक्ति कही छे, माटे आ भक्ति ज्ञाने सहित ने असाधारण छे माटे आ भक्तिनी ने साक्षात् ज्ञाननी सरखी गौरवता छे. ॥ १४३ ॥

संवत् १८७८ ना श्रावण वदि ५ पंचमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिर आगळ लिंबडाना वृक्ष हेठे ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) जेटला ग्रंथ छे ते सर्वे ग्रंथोने सांभळीने
केटलाक जे जीव छे ते ए ग्रंथोने धर्म अर्थ ने काम पर जाणे छे पछी एम जाणीने पोते
पण धर्म अर्थ ने काम तेनेज अर्थे यज्ञ व्रतादिक शुभ कर्म करे छे. पछी ते कर्मनुं फळ
देवलोक अथवा ब्रह्मलोक अथवा मर्त्यलोक तेने विषे भोगवीने पछी त्यांथी पडे छे ने
नरक चोराशीमां जाय छे, माटे जे जीव धर्म अर्थ ने कामने विषे प्रीति राखीने जे
जे सुकृत करे छे ते सर्वे सात्त्विकी, राजसी ने तामसी थाय छे. ने ते कर्मनुं फळ स्वर्ग
मृत्यु ने पाताळ ए त्रण लोकमां रहीने भोगवाय छे, पण गुणातीत जे भगवाननुं धाम
तेने पामे नहि अने ज्यारे मोक्ष न थाय त्यारे जन्म मरण ने नरकनुं दुःख ते मटे नहि.
(१) अने जो धर्म अर्थ ने काम संबंधी जे फळनी इच्छा तेनो त्याग करीने तेनां ते १
शुभ कर्म जो भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे करे, तो एज शुभ कर्म छे ते भक्ति रूप थइने
कैवल्य मोक्षने अर्थे थाय छे. त्यां श्लोक छे जे ॥ आमयोयेन भूतानां जायतेयश्चसुव्रत।
तदेवह्यामयंद्रव्यं नपुनातिचिकित्सितं ॥ एवं नृणां क्रिया योगाः सर्वेसंसृतिहेतवः । त
एवात्मविनाशाय कल्पंते कल्पिताः परे ॥ ए श्लोकनो पूर्वे वात करी एज भाव छे, माटे
ए वार्ता छे ते ज्यां सुधी अटपटी छे ते जो पुरी समजाणी न होय तो भगवानना भक्त होय
तेनो पण सर्वे अज्ञानी जीवना सरखो देहनो व्यवहार जोइने भगवानना भक्तनो
अवगुण ले तेणे करीने अवगुणनो लेनारो नारकी थाय छे. [२] ने भगवानना भक्तनी २
ने विमुख जीवनी क्रियामां तो घणो फेर छे, केमके विमुख जे जे क्रिया करे छे ते

पोतानां इन्द्रियोने कढाववाने अर्थे करे छे ने भगवाननो भक्त जे जे क्रिया करे छे ते तो केवळ भगवानने भगवानना भक्त तेनी सेवाने अर्थे करे छे माटे हरिजननी जे सर्वे क्रिया ते तो भक्तिरूप छे ने जे भक्ति छे ते तो नैष्कर्म्य जे ज्ञान ते रूप छे माटे हरिजननी क्रिया छे ते तो सर्वे नैष्कर्म्यरूप छे. त्यां श्लोक भगवद्गीतानो छे ॥ कर्मण्यकर्मयः पश्येदकर्मणिच कर्म यः। सबुद्धिमान्मनुष्येषु सयुक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ॥ ए श्लोकनो एम अर्थ छे जे भगवाननो भक्त होय ते भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे जे जे कर्म करे छे ते कर्मने विषे अकर्म जे ज्ञान तेने जे देखे छे ने विमुख होय ते निवृत्ति मार्ग पकडीने अकर्मपणे रहेतो होय तो पण तेने कर्ममां बुड्यो छे एम जे देखे छे ते देखनारो सर्वे मनुष्यने विषे बुद्धिमान छे ने ज्ञानी छे. (३) माटे भगवाननी आज्ञाए करीने भगवा- ३
ननी प्रसन्नताने अर्थे भगवानना भक्त जे जे कर्म करे छे तेनो कोइ रीते अवगुण जो ले तो तेना हृदयने विषे कुटुंबे सहित अधर्म आवीने निवास करे छे. (४) इति ४
वचनामृतम् ॥ ११ ॥ (१४४)

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, धर्म, अर्थ ने कामने विषे प्रीति राखीने सुकृत करे तेनुं फळ स्वर्ग, मृत्यु ने पाताळमां भोगवीने नरक चोराशीमां जाय छे. [१] अने तेनां ते कर्म अमारी प्रसन्नताने अर्थे करेतो भक्तिरूप थइने मोक्षने अर्थे थाय छे अने अमारा भक्तना देहनो व्यवहार अज्ञानी जीवना जेवो जोइने अवगुण लेनारो नारकी थाय छे. (२) अने अमारा भक्तनी क्रिया अमारी तथा अमारा भक्तनी सेवाने अर्थे छे माटे ते नैष्कर्म्यरूप ने भक्तिरूप छे एम जाणे ते ज्ञानी छे. (३) अने अमारा भक्तनी सेवारूप क्रियामां अवगुण ले तेने विषे अधर्म निवास करे छे. [४] बाबतो छे. [पहेली बाबतमां गुणातीत धाम कह्युं ते धामनो खुलासो (प्र० १२ ना १६ मा प्रश्नोत्तरमां) छे.] ॥ १४४ ॥

संवत् १८७८ ना श्रावण वदि ६ छठ्ने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बारणे ओरडानी ओसरीए श्री वासुदेव नारायणना मंदिरनी आगळ विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) एक वात करीए छइए ते सर्वे सांभळो अने आजे वार्ता कहेशुं तेमां एकज साधन कल्याणने अर्थे कहेशुं ते एकने विषे सर्वे साधन आवी जाय एवुं एक बळवान कल्याणनुं साधन छे, ते कहीए छइए जे, देहने

विषे जे जीव छे ते एम जाणे छे जे काम क्रोधादिक भुंडी प्रकृतियो छे ते मारा जीव साथे जडाणी छे, एवी रीते कामादिक जे जे प्रकृति जेने विषे मुख्य होय ते प्रकृतिने योगे करीने पोताना जीवने कामी, क्रोधी, लोभी इत्यादिक कुलक्षणे युक्त माने छे पण जीवने विषे तो ए एके कुलक्षण छे नहि, ए तो जीवे मूर्खाइए करीने पोताने विषे मानी लीधां छे, माटे जेने परमपद पामवा इच्छवुं तेने कांइक पोताने विषे पुरुषातन राखवुं पण छेक नादार थइने बेसवुं नहि. ने एम विचार करवो जे, जेम आ देहमां चार अंतःकरण छे दश इन्द्रियो छे पंच प्राण छे, तेम हुं जीवात्मा छुं ते पण आ देहने विषे छुं ते ए सर्वेथी अधिक छुं ने ए सर्वेनो नियंता छुं. पण एम न मानवुं जे, हुं तो तुच्छ छुं ने अंतःकरण इन्द्रियो तो बळवान छे, जेम कोइक राजा होय ने ते बुद्धिहीन होय पछी एना घरना मनुष्य होय ते पण तेनुं वचन माने नहि,पछी ए वार्त्तानी ज्यारे गामना मनुष्यने खबर पडे त्यारे गाममां पण कोइ हुकम माने नहि, पछी देशना मनुष्य ए वात सांभळे त्यारे देशना मनुष्य पण कोइ एनो हुकम माने नहि, पछी ते राजा ग्लानि पामीने असमर्थ थइने बेसी रहे; अने कोइ उपर हुकम चलावे नहि. तेम राजाने ठेकाणे जीव छे अने घरना मनुष्यने ठेकाणे अंतःकरण छे. ने गामनां ने देशनां मनुष्यने ठेकाणे इंद्रियो छे ते ज्यारे ए जीव नादार थइने बेसे, ने पछी अंतःकरण उपर हुकम करीने परमेश्वर सन्मुख राखवाने इच्छे त्यारे अंतःकरण एनुं कह्युं करे नहि, ने इंद्रियोने वश राखवा इच्छे तो इंद्रियो पण एने वश रहे नहि, पछी ए जीव काया नगरने विषे राजा छे तोपण रांकनी पेठे ओशियाळो थइ रहे छे. अने ज्यारे राजा नादार थाय त्यारे तेना नगरने विषे मनुष्य होय ते सांढ थइने बेसे छे, ने राजानुं लेश मात्र चालवा दे नहि, तेम आ जीवना काया नगरने विषे पण जे कामादिक राजा नथी ते राजा थइने बेसे छे, अने ए जीवनुं लेश मात्र चालवा देता नथी, माटे जेने कल्याणने इच्छवुं तेने एवुं नादारपणुं राखवुं नहि. ने जे प्रकारे पोतानां इंद्रियो ने अंतःकरण ते सर्व पोताना हुकममां वर्त्ते एवो उपाय करवो, जेम राजा होय ते राजनीतिना ग्रंथ भणीने पोताना राज्यमां पोतानो हुकम चलावे,पण रैयतनो दाब्यो दबाय नहि, अने जो राजनीति न जाणतो होय तो ते वस्ति हुकम न माने ने तेने मारवाज मांडे, पछी पोतानो देश होय ते उजड थइ जाय अने कांतो कोइ हुकमज माने नहि, तेणे करीने पोते दुःखीयो थको वर्त्ते एवी रीते राजनीति जाण्या विना बे वाते बगाड थाय छे तेम जीव पण जो राजनीतिने जाण्या विना काया नगरमां हुकम करवा जाय तो एमांथी सुख थाय नहि. [१] १

२ पछी मुक्तानंदस्वामीए श्रीजीमहाराजने पुछ्युं जे, [२] कल्याणने इच्छे तेने

केम राजनीति भणवी ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, राजनीति एम भणवी जे, प्रथम तो भगवाननुं महात्म्य सारी पेठे जाणवुं. पछी भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान करीने मनने वश करवुं, ने भगवाननी कथा सांभळीने श्रोत्रने वश करवा, पण ग्राम्य वार्ता होय ते सांभळवा देवी नहि, तेमज त्वचा ते भगवान ने भगवानना जन तेनोज स्पर्श करे, ने नेत्र ते परमेश्वर ने तेना दास तेनुंज दर्शन करे, ने रसना ते अखंड भगवद्गुणनेज गाय- ने भगवाननो प्रसाद होय तेनोज स्वाद ले, ने नासिका ते भगवानना प्रसादि जे पुष्पादिक तेनोज सुगंध ले पण कुमार्गे कोइ इंद्रियने चालवा दे नहि, एवी रीते जे वर्त्ते तेनो देह रूपी नगरने विषे हुकम कोइ फेरवे नहि अने एवी रीते पुरुषप्रयत्ने युक्त जे वर्ते ने नादारपणानो सारी पेठे त्याग करे एज कल्याणने मार्गे चाल्यो तेने स्वभाव जीत्यानो अतिशे मोटो उपाय छे ने ए पुरुषप्रयत्न रूप जे उपाय छे तेने सावधान थइने करे तो जेटलां कल्याणने अर्थे साधन छे ते सर्वे पुरुषप्रयत्न रूपी साधनने विषे आवे छे माटे पुरुषप्रयत्न छे तेज कल्याणने अर्थे सर्वे साधन थकी मोटुं साधन छे. (२) इति वचनामृतम् ॥ १२ ॥ [१४५] २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [२] छे. तेमां पहेलुं कृपावाक्य छे, तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे इंद्रियो अंतःकरणने दाबीने वर्तवुं पण तेथी दबावुं नहि. (१) बीजामां अमारुं महात्म्य जाणीने ध्यान करे अने इंद्रियोने नियममां राखीने वश करे तेनुं आत्यंतिक कल्याण थाय छे. [२] बाबतो छे. ॥ १४५ ॥

संवत् १८७८ना श्रावण वदि अमावास्याने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी ओसरीए चाकळा उपर विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा धोळी चादर ओढी हती ने मस्तक उपर श्वेतपाघ बांधी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराजे पोताना बे भुज उंचा उपाडीने सर्वेने छाना राख्या ने पछी पोताना मुखारविंदनी आगळ स्तुति करीने बेठा एवा जे संत ते प्रत्ये श्रीजीमहाराज
१ एम बोलता हवा जे, [१] हे संतो ! जे मोटेरा हो ने वातमां समझता हो ते आगळ बेसो ने आ एक वात करुं छुं ते सर्वे चित्त दइने सांभळज्यो, अने आजे मारे वात करवी छे ते कांइ दंभे करीने नथी करवी तथा माने करीने नथी करवी तथा पोतानी मोटप वधार्या सारुं नथी करवी, ए तो एम जाणीए छइए जे, आ सर्वे संत तथा हरिभक्त छे तेमांथी ए वात कोइने समझाइ जाय तो तेना जीवनुं अति रुडुं थाय ते सारु करीए छइए, अने आ जे वात छे ते मारी दीठेल छे ने मारा अनुभवे करीने पण में

सिद्ध करी छे अने सर्व शास्त्रमां पण मळती आवे छे, ने ए वात सभामां कर्या जेवी नथी; तोपण सभामां करीए छइए जे, मारे सहज स्वभावे एम वर्ते छे जे, आ संसारने विषे जे अति रुडो शब्द तथा अति रुडो स्पर्श तथा अति रुडो गंध तथा अति रुडो रस तथा अति रुडुं रूप ए जे पंच विषय तेमां हुं मारा जीवने बांधवाने इच्छुं तोपण नथी बंधातो ने एमां अतिशे उदास रहे छे. अने ए जे सारा पंच विषय तथा नरसा पंच विषय ते बेय सम वर्ते छे, अने राजा तथा रंक ते पण सम वर्ते छे, अने त्रिलोकीनुं राज्य करवुं तथा ठीकरुं लेइने मागी खावुं ते पण सम वर्त्ते छे, अने हाथीने होदे बेसवुं तथा पगपाळा चालवुं ते पण सम वर्ते छे, ने कोइक चंदन तथा पुष्प तथा सारां वस्त्र तथा घरेणां चडावे तथा धूळ नाखे ते बेय सम वर्ते छे, ने कोइक मान आपे तथा कोइक अपमान करे ते बे पण सम वर्ते छे, तथा सोनुं रुपुं हीरो तथा कचरो ते बेय सम वर्ते छे, अने आ हरिभक्त बहु मोटो छे ने आ हरिभक्त नानो छे एम पण नथी जणातुं बधाय हरिभक्त सरखा जणाय छे, अने मारा अंतःकरणने विषे अति तीव्र वैराग्य वर्ते छे तेनो पण भार नथी जणातो, जेम कोइके माथे पाणो उपाड्यो होय तथा रुपैया ने सोनामहोरनी वांसळी केडे बांधी होय तेनो भार जणाय छे तेम भार नथी जणातो, ने मारे विषे सद्धर्म छे तेनो पण भार नथी जणातो, तथा मारे विषे ज्ञान छे जे, हुं ब्रह्म छुं, कोइ दिवस जीव नथी तेनो पण भार नथी जणातो, अने आजे हुं उपर थकी कोइक पदार्थने वखाणुं छुं ने कोइक पदार्थने कुवखाणुं छुं ते तो जाणी जाणी- ने करुं छुं, अने जे जे पदार्थने विषे इंद्रियोनी वृत्तिने बळात्कारे जोडुं छुं ते मांड मांड ते पदार्थ सन्मुख रहे छे, अने ज्यारे ढीली मेलुं छुं त्यारे तरत पाछी वळी आवे छे, जेम आकाशने विषे पथरो फगावीए ते ज्यां सुधी हाथने जोरे करीने ठेलाय त्यां सुधीज आकाशने विषे रहे ने पछी पाछो पृथ्वीने विषे आवीने पडे छे, अने जेम पुंछलेक होर होय तेने माणस बळात्कारे करीने ज्यां सुधी उंचु झाली राखे त्यां सुधी रहे ने ज्यारे मुकी दे त्यारे धब लेइने पडी जाय, अने जेम कोइक पुरुष सुझे एटलो बळीयो होय ने दांते आखी सोपारी मांगी नाखतो होय, अने ते पुरुषने दशवीश कागदी लींबु चु- साव्यां होय पछी ते शेकेल चणा पण मांड मांड चावे, तेम विषय सन्मुख बळात्कारे वृत्तिने जोडीए छइए तो मांड मांड जोडाय छे,ते आ जे एम मुने वर्ते छे तेनुं शुं कारण छे, तो मारी इंद्रियोनी जे वृत्ति छे ते पाछी वळीने सदा हृदयने विषे जे आकाश छे तेने विषे वर्ते छे. अने ते हृदाकाशने विषे अतिशे तेज देखाय छे, जेम चोमासाने विषे आकाशमां वादळां छाई रह्यां होय तेम मारा हृदयने विषे एकलुं तेज व्यापी रह्युं छे, अने ते तेजने विषे एक भगवाननी मूर्ति देखाय छे. ने अति प्रका-

शमय छे ने ते मूर्ति घनश्याम छे तो पण अतिशे तेजे करीने श्याम नथी जणाती, अतिशे श्वेत जणाय छे, ने ते मूर्ति द्विभुज छे, अने ते मूर्तिने बे चरण छे अने अतिशे मनोहर छे पण चार भुजा के अष्ट भुजा के सहस्र भुजा ते ए मूर्तिने नथी ए मूर्ति तो अति सौम्य छे अने मनुष्यना जेवी आकृति छे ने किशोर छे, ते मूर्ति क्यारेक तो ए तेजमां उभी देखाय छे ने क्यारेक बेठी देखाय छे ने क्यारेक हरती फरती देखाय छे ने ए मूर्तिने चारे कोरे मुक्तनां मंडळ भराइने बेठां छे ते सर्वे मुक्त छे ते एक नजरे ते भगवाननी मूर्ति सामुं जोइ रह्या छे, ते मूर्तिने अमे प्रगट प्रमाण हमणां पण देखीए छइए अने सत्संगमां नहोता आव्या त्यारे पण देखता अने मातानां गर्भमां हता ते दिवस पण देखता अने गर्भमां आव्या मोरे पण देखता, अने अमे बोलीए छइए ते पण त्यांज बेठा थका बोलीए छइए, अने तमे पण सर्वे त्यांज बेठा छो एम हुं देखुं छुं, पण आ गढडुं शहेर के आ ओसरी ए कांइ देखातुं नथी. अने ज्यारे ए स्वरूप जेने जाण्यामां आवे तेने जेम अमने कोइ विषय संबंधी सुखमां आसक्ति नथी तेम ते पुरुषने पण क्यांइ आसक्ति रहेज नहि अने ते स्वरूपने तो तमे पण देखो छो पण तमारा समझ्यामां परिपूर्ण आवतुं नथी अने ज्यारे ए वार्ता समझ्यामां आवशे त्यारे पंचविषय के काम क्रोधादिक स्वभाव ते जित्यामां प्रयास थाशे नहि सहेजे जिताइ जशे. (१) अने १
ए जे एकरस तेज छे तेने आत्मा कहीए, तथा ब्रह्म कहीए, ने अक्षरधाम कहीए. अने ए प्रकाशने विषे जे भगवाननी मूर्ति छे, तेने आत्मानुं तत्त्व कहीए, तथा परब्रह्म कहीए, तथा पुरुषोत्तम कहीए. तेज भगवान रामकृष्णादिक रूपे करीने पोतानी इच्छाए जीवोना कल्याणने अर्थे युग युगने विषे प्रगट थाय छे. ते भगवान क्यारेक तो बे तत्त्वने ग्रहण करीने प्रगट थाय छे ने क्यारेक चार तत्त्वने ग्रहण करीने प्रगट थाय छे अने क्यारेक पांच तत्त्वने ग्रहण करीने प्रगट थाय छे, अने क्यारेक चोवीश तत्त्वने ग्रहण करीने प्रगट थाय छे, ने क्यारेक तो कैवल्यपणे प्रगट थाय छे, माटे आ लोकने विषे मनुष्य जेवा जणाय छे तो पण मनुष्य जेवा नथी ने अक्षरधामना पति छे ते श्रीकृष्ण भगवाने गीतामां कह्युं छे जे ॥ नतद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः ॥ यद्गत्वा न निवर्त्तंते तद्धाम परमं मम ॥ माटे श्रीकृष्ण भगवान मनुष्य जेवा जणाता हता तो पण अक्षरातीत कैवल्य मूर्तिज छे अने भगवान जे मनुष्य देह धरे छे ते भगवाननी मूर्तिनुं जे ध्यान करे त्यारे ए ध्यानना करनाराने ए मूर्ति तेजोमय एवी अक्षरधामने विषे कैवल्यस्वरूपे भासे छे ने ध्यानना करनारानो जे जीव ते मायाने तरे छे अने परमपदने पामे छे, माटे भगवान तो मनुष्यदेह धारण करे छे तो पण कैवल्यरूपेज छे अने ते भगवान जे जग्यामां विराजता होय ते जग्या पण निर्गुण छे अने ते भगवाननां वस्त्र अलंकार तथा वाहन तथा परिचर्याना करनारा

सेवक तथा खानपानादिक जे जे पदार्थ भगवानना संबंधने पामे छे ते सर्वे निर्गुण छे. एवी रीते जेणे भगवाननुं स्वरूप जाण्युं तेने अमारी पेठेज पंचविषयमां क्यांइ प्रीति रहेती नथी ने ते स्वतंत्र थाय छे. अने ए अक्षरातीत जे पुरुषोत्तम भगवान छे तेज सर्व अवतारनुं कारण छे अने सर्वे अवतार पुरुषोत्तममांथी प्रगट थाय छे अने पाछा पुरुषोत्तमने विषे लीन थाय छे; ते ज्यारे भगवान मूर्ति धरीने पाछा अंतर्धान थाय छे त्यारे ते जे भगवाननी मूर्ति ते क्यारेक तो मनुष्यनी पेठे आ पृथ्वीने विषे पडी रहे छे, ते जेम श्रीकृष्णनी मूर्तिने खोळामां लेइने रुक्मणीजी बळी मुवां, तथा ऋषभदेवनो देह हतो ते दावानळने विषे बळी गयो, एम पण थाय. अने क्यारेक तो हाड मांस सहित दिव्य भाव पामीने कांइ रहे नहिं अंतर्धान थइ जाय.अने ज्यारे प्रगट थाय त्यारे पण क्यारेक तो स्त्री थकी जन्म धरे, ने क्यारेक तो पोतानी इच्छामां आवे त्यां थकी प्रगट थइ आवे छे, एम ए भगवानना जन्म ने देह मुकयानी रीति तो अलौकिक छे. अने ज्यारे एवुं भगवाननुं स्वरूप छे तेने दृढ करीने समजशो त्यारे तमने कोइ प्रकारनुं विघ्न कल्याणना मार्गने विषे नहि थाय. (२) ने ए भगवानना स्वरूपनी दृढता विना तो २
गमे तेटलो त्याग राखो ने गमे तेटला उपवास करो पण कोइ रीते खामी भागशे नहि अने तमे एम कहेशो जे, अमने तो ए स्वरूपनी तमे जेम कहो छो तेम दृढता छे तोपण प्राण इंद्रियो केम लीन नथी थातां ? तो ए तो परमेश्वरनी इच्छाए करीने एम रह्युं छे एम समजवुं, पण तेने कांइ करवुं रह्युं नथी ए तो कृतार्थ छे अने ए तो सर्व साधनना अंतने पाम्यो छे अने जो भगवानना स्वरूपनी आवी रीते दृढता होय ने कदाचित् जो निर्मान, निर्लोभ, निष्काम, निःस्वाद ने निःस्नेह एमां कांइक थोडी घणी काच्यप रही जाय तो तेनी कांइ चिंता नथी, पण भगवानना स्वरूपमां जो कोइ रीतनी समज्यामां कसर रही तो कोइ रीते बांधो भागशे नहि. माटे देह छते जे प्रकारे आवुं रहस्य समजाय तेवो उपाय करवो ने आ वार्ता यथार्थ समजाणी होय ने कोइक प्रारब्ध कर्मने वश थइने जो कोइक नीच उंच देहनी प्राप्ति थाय तोपण वृत्रासुरनी पेठे ज्ञान जाय नहि, तथा जेम भरतजीने मृगनो देह आव्यो तोपण पूर्व जन्मनुं ज्ञान टळ्युं नहिं एवुं आ ज्ञाननुं अविशे महात्म्य छे. अने नारद सनकादिक ने ब्रह्मादिक देव तेमनी सभामां पण निरंतर आज वार्ता थाय छे अने आवी भगवत्स्वरूप संबंधी जे वार्ता ते तो शास्त्रमांथी पण पोतानी मेळे समजाय नहि, अने सद्‌ग्रंथोमां आवी वार्ता तो होय पण ज्यारे सत्पुरुष प्रगट थाय छे त्यारे तेमना मुख थकीज आ वात समज्यामां आवे छे, पण पोतानी बुद्धि बळे करीने सद्‌ग्रंथोमांथी पण समजाती नथी अने जेने आवी रीते यथार्थ भगवाननुं स्वरूप समज्यामां आव्युं छे तेने जो भूत, भविष्य ने वर्त्तमान ए त्रणे काळने विषे दृष्टि पहोंचती होय तोपण तेने ए वातनो कांइ गर्व होय

नहि, अने कोइने वर के शाप दे नहि ने कोइ ठेकाणे वर के शाप दे पण खरा, ने कोइ ठेकाणे निर्भय रहे ने कोइ ठेकाणे बीये पण खरा, पण तेणे करीने पोते कांइ हर्ष शोक मनमां लावे नहि. अने जेने भगवाननो आ कह्यो एवी रीते दृढ आश्रय होय ते जाणीने तो भुंडुं कर्म करेज नहि पण कदाचित् भुंडा देश काळादिकने योगे करीने जो कांइक अवळुं कर्म थइ जाय, तोपण ते दृढ आश्रयवाळो कल्याणना मार्ग थकी पडी जाय नहि, माटे ए जे भगवाननो दृढ आश्रय छे एवो निर्विघ्न मार्ग कोइ नथी. ए वात जेने समझाणी होय तेने तो अति मोटो आशय होय, जुवोने अमारे परमहंस तथा सत्संगी समस्त पासेथी कांइ स्वार्थ साधवो नथी, तोपण कोइने बोलावीए छइए कोइने वढीए छइए ने कोइने काढी मुकीए छइए,तेनुं एज प्रयोजन छे जे कोइ रीते आ वात समझाय तो बहु सारुं थाय, माटे आ वार्ता छे ते सर्वे दृढ करीने राखज्यो. अने जे तेजने विषे मूर्ति छे तेज आ प्रत्यक्ष महाराज छे एम जाणज्यो, ने जो एम न जणाय तो एटलुं तो जरुर जाणज्यो जे अक्षररूप जे तेज तेने विषे जे मूर्ति छे तेने महाराज देखे छे एम जाणशो, तोपण तमारे मारे विषे हेत रहेशे तेणे करीने तमारुं परम कल्याण थाशे अने आ वातने नित्ये नवीने नवी राखज्यो पण गाफलपणे करीने विसारी देशोमां. आज छे तेवीज काल नवीने नवी राखज्यो, अने तेवीज देहनो अंत थाय त्यां सुधी पण दिन दिन मत्ये नवीने नवी राखज्यो, अने जे जे भगवाननी वात करो ते ते वातने विषे आ वातनुं बीज लावज्यो, एम अमारी आज्ञा छे, अने आ वार्ता एवी जीवनदार छे जे देह रहे त्यां सुधी पण नित्य प्रत्ये करवी, अने देह मुकीने भागवती तनुये करीने पण आज वार्ता करवी छे, ने आजे अमे तमने वात कही ते सर्वे शास्त्रनो सिद्धांत छे, ने अनुभवमां पण एमज दृढ छे, अने अमे प्रत्यक्ष नजरे जोइने तमने आ वात कही छे. ने जो प्रत्यक्ष जोइने न कही होय तो अमने सर्वे परमहंसना सम छे, एवी रीते श्रीजीमहाराजे पोताना भक्तजननी शिक्षाने अर्थे परोक्ष पणे पोताना पुरुषोत्तमपणानी वार्ता करी तेने सांभळीने सर्वे साधु तथा हरिभक्त ते एमज मानता हवा जे, जे तेजने विषे मूर्ति कही तेज आ श्रीजीमहाराज प्रत्यक्ष प्रमाण छे. (३) ३

इति वचनामृतम्. ॥ १३ ॥ (१४६)

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे पोताने मिषे पोताना मुक्तनी स्थिति कही छे जे अमारा मुक्तने सारा नरसा विषय, मान, अपमान, कचरो कंचन सम वर्ते छे अने वैराग्यादिक साधननो भार नथी रहेतो अने बळात्कारे वृत्तिने विषय सन्मुख जोडे तो मांडमांड जोडाइने पाछी वळी आवे छे तेनुं कारण ए छे जे, अमारा तेजमां दिव्य तेजोमय द्विभुज मूर्ति, सौम्य ने किशोर एवा अमने सदाय देखे छे, एवी रीते अमने जाणे ने देखे तेने पण क्यांइ आसक्ति रहे नहि. (१) अने ए अमारा प्रकाशनां

आत्मा, ब्रह्म ने अक्षरधाम ए त्रण नाम छे अने अमारां परमात्मा, परब्रह्म ने पुरुषोत्तम ए त्रण नाम छे, अने अमे जीवोना कल्याणने अर्थे प्रगट थया छीए, अने क्यारेक तत्त्वने ग्रहण करीने प्रगट थइए छीए अने क्यारेक कैवल्यपणे प्रगट थइए छीए, अने आ लोकने विषे मनुष्य जेवा देखाइए छीए, पण अक्षरधामना पति छीए, अने श्रीकृष्णने दृष्टांते कह्युं छे के अमे अक्षरातीत कहेतां अमारा तेजरूप अक्षरधाम तेथी अतीत पटले पर छीए ने कैवल्य मूर्ति छीए ने अमारुं ध्यान करनाराने कैवल्यरूपे दर्शन आपीए छीए ने ते परमपदने पामे छे अने अमारां संबंधने पामे ते जग्या,पदार्थ ने सेवक ते सर्वे निर्गुण थाय छे, अमने आवा जाणे छे ते स्वतंत्र थाय छे. अने अमे सर्व अवतारना कारण छीए, ने सर्व अवतार अमारामांथी प्रगट ने अमारामां लीन थाय छे. अने अमारी प्रगट थवानी तथा अंतर्धान थवानी रीत अलौकिक छे. त्यां श्रीकृष्ण भगवानना देह त्याग कर्यानुं दृष्टांत आप्युं छे अने आवा अमने समजे तेने कल्याणना मार्गमां विघ्न थाय नहिं. (२) अने आ वार्ता सद्ग्रंथोमां होय पण अमारा धाममांथी आवेला मुक्तना मुख थकीज समजाय छे अने आवुं अमारुं स्वरूप समज्यामां आवे तेने त्रिकाळदृष्टिनो गर्व के हर्ष शोक होय नहि ने आवो निर्विघ्न मार्ग बीजो नथी, माटे आ वार्ता दृढ करीने राखज्यो. अने तेजमां मूर्ति कही ते अमे पोतेज छीए एम जाणज्यो ने आ वातनुं बीज लावजो, एटले जे जे वात करो तेमां अमे सर्वेथी पर ने सर्वेना कारण छीए अने अमारा तेजरूप अक्षरधाममां सदाय बिराजमान छीए ए वात लावज्यो. [३] बाबतो छे.

१ प्र० मोटेरा हो ते आगळ बेसो एम कह्युं ते मोटेरा कोने जाणवा ?

१ उ० पोताना सिद्ध मुक्तो जे आ वातमां समजे छे तेमने आ ठेकाणे मोटेरा कह्या छे.

२ प्र० पहेली बाबतमां आ वात सभामां कर्या जेवी नथी एम कह्युं तेनुं शुं कारण हशे ?

२ उ० पोते पोतानां वखाण सभामां न करवां एम पोताना आश्रितोने सुचव्युं छे.

३ प्र० अमारा जीवने बांधवाने इच्छीए तोपण नथी बंधातो एम कह्युं ते श्रीजीमहाराज तो साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान छे तेमणे पोताने जीव केम कह्या हशे ?

३ उ० जे आधार, व्यापक ने प्रकाशक होय ते जीव कहेवाय ते जेम आ देहनो प्रकाशक ने हलावनार चलावनार चैतन्य छे तेने जीव कहेवाय छे, तेम श्रीजीमहाराज जीव, ईश्वर, ब्रह्म, अक्षरादिक सर्वेना आधार, आत्मा, व्यापक ने प्रकाशक छे, एवी रीते सर्वेने जीवाडनारा होवाथी जीव कह्या छे.

४ प्र० सर्वे हरिभक्त सरखा जणाय छे पण नाना मोटा नथी जणाता एम कह्युं तेनुं शुं कारण हशे ?

४ उ० जे भक्त अंतरवृत्ति करीने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने देखे त्यारे ते भक्तने सारा नरसा विषय तथा नाना, मोटा, राजा,रंक,मान, अपमान, कचरो, कंचन ए सर्वे सम थइ जाय छे ते एवा भक्तने भेद रहेतो नथी एम कह्युं छे पण नाना मोटा एवो भेद नथी एम नथी कह्युं भेद तो सदाय छेज अने ज्ञान वैराग्यादिक साधननो भार एटले महत्ता रहेती नथी पण साधन मुकी दे छे एम न जाणवुं.

५ प्र० ज्ञान वैराग्यादिकनां रूप शां हशे ?

५ उ० श्रीजीमहाराजनी मूर्ति विना श्रीजीमहाराजना तेजरूप अक्षरधामने विषे पण प्रीति नहि ते वैराग्यनुं रूप छे. अने स्थूळ देहे करीने श्रीजीमहाराजनां नानां मोटां वचन पाळवां तथा अंतःकरणमां श्रीजीमहाराजनी आज्ञा विरुद्ध संकल्प न थाय ते सद्धर्मनुं रूप छे. अने श्रीजीमहाराजना तेजरूप जे ब्रह्म ते रूप पोताने मानवुं ते आंही ज्ञाननुं स्वरूप छे.

६ प्र० मूर्ति घनश्याम छे पण अतिशे तेजे करीने श्वेत जणाय छे एम कह्युं ते मूर्तिने घनश्याम कहीने तेजने श्वेत कह्युं ते घनश्याम मूर्तिनुं तेज श्वेत शी रीते होवुं जोइए ?

६ उ० अमे आंही मनुष्य भावे घनश्याम देखाइए छीए पण जेने अमारे विषे स्थिति थाय छे ते अमने अमारा तेजमां जेवा श्वेतमूर्ति छीए तेवाज देखे छे, माटे मनुष्यभावे श्याम जणाइए छीए एम कह्युं छे.

७ प्र० अमे मायाना उदरने विषे भगवाननी मूर्ति देखता एम कह्युं अने (अ० २ मां) अमे एकज भगवान छीए एम कह्युं छे ते परस्पर विरोध आवे छे ते केवी रीते समजवुं ?

७ उ० आ ठेकाणे श्रीजीमहाराजे पोताना मुक्तनी स्थिति कही छे जे अमारा मुक्त होय ते अमारी मूर्तिने सदाय देखे छे एम कह्युं छे.

८ प्र० बीजी बाबतमां रामकृष्णादिक रूपे अमे प्रगट थइए छीए एम कह्युं ते रामकृष्णादिक रूपे केवी रीते प्रगट थाता हशे ?

८ उ० रामकृष्णादिक अवतारोने विषे पोतानी अंतर्यामी शक्तिद्वारे रह्या छे तेथी ए रूपे थाय छे एम जाणवुं ते (प्र० १३ ना सातमा प्रश्नोत्तरमां) कह्युं छे अने ते अवतारो तेमना धाममां लइ जाय एटलुं कल्याण करे छे पण आत्यंतिक कल्याण तो श्रीजीमहाराज तथा एमना मुक्तज करे पण बीजाथी न थाय.

९ प्र० क्यारेक बे तत्त्वनुं, क्यारेक चार तत्त्वनुं, क्यारेक पांच तत्त्वनुं ने क्यारेक चोवीश तत्त्वनुं ग्रहण करीने प्रगट थइए छीए अने क्यारेक केवलपणे प्रगट थइए छीए एम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

९ उ० श्रीजीमहाराज प्रकृतिपुरुष थकी सृष्टि करे छे ते सृष्टिमां अनुक्रमे तथा कैवल्यपणे अवतार धारे छे एम (प्र० ६३ ना चोथा प्रश्नमां) कह्युं छे ते ज्यारे अनुक्रमे अवतार धारे छे त्यारे प्रकृतिपुरुषद्वारे धारे छे ते एक तत्त्व पुरुष ने बीजुं तत्त्व प्रकृति एम बे तत्त्व कह्यां छे अने प्रधान पुरुष द्वारे धारे त्यारे ते प्रधान पुरुषमां प्रकृति अने पुरुष बेनो प्रवेश होय छे,माटे ए बे तत्त्व ने प्रधान ने पुरुष ए बे तत्त्व मळीने चार तत्त्व कह्यां छे अने महत्तत्त्वद्वारे अवतार धारे त्यारे ते महत्तत्त्व मळीने पांच कह्यां छे अने वैराज रूपे धारे त्यारे चोवीश तत्त्वनुं ग्रहण करीने प्रगट थाय छे एम कह्युं छे एवी रीते तत्त्वनुं ग्रहण करे छे एम जाणवुं, अने जीवोनां आत्यंतिक कल्याण करवा सारु पोते आवे ते केवलयरूपे प्रगट थाय छे एम कह्युं छे.

१०प्र० सर्वे अवतार अमारे विषेथी प्रगट थाय छे ने पाछा अमारे विषे लीन थाय छे एम

कह्युं ते प्रगट ने लीन केवी रीते थाता हशे ?

१०उ० श्रीजीमहाराजनी मुर्तिमां अनादि मुक्तो रह्या छे ते मुक्तो जीवोना मोक्ष करवा श्रीजी-महाराजना संकल्पथी आंही दर्शन आपे छे अने जीवोनो उद्धार करीने अंतर्धान थइने श्रीजीमहाराजनी मुर्तिमां लीन थइ जाय छे एवी रीते मुक्तद्वारे प्रगट थाय छे. अने जेम लोढामां अग्नि ज्वाळाद्वारे आवे छे ने पाछो निकळी जाय छे तेम बीजा अवतारोमां पोतानुं ऐश्वर्य मुके छे ने पाछुं लइ ले छे एम प्रगट ने लीन समजवुं.

११प्र० आवी रीते अमारा स्वरूपनी दृढता होय तेने कदाचित् निर्लोभ, निष्काम, निःस्वाद, निःस्नेह एमां थोडी घणी काच्यप रही जाय तेनी कांइ चिंता नथी एम कह्युं ते काच्यप केटली होय तो बांधो न रहे ?

११उ० श्रीजीमहाराजने सर्वेना कारण ने अवतारी ने सदा दिव्य तेजोमय साकार मूर्ति समजे ते स्थूळ देहे तो नानां मोटां वचन शिक्षापत्री, निष्कामशुद्धि तथा धर्मामृतमां कह्या प्रमाणे यथार्थ पाळे पण संकल्प टाळी नाख्या न होय ते काच्यप कही छे ते काच्यप हशे तो पण तेनुं अंते पुरुं करीशुं एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे.

१२प्र० श्रीजी बाबतमां नारद सनकादिक ने ब्रह्मादिकनी सभामां निरंतर आ वार्ता थाय छे एम कह्युं अने (म० ९ मां) नारद सनकादिकने ब्रह्मादिक ते आ वार्ता सांभळे तो एम कहे जे आवी वार्ता अमे कोइ दिवस सांभळी नथी एम कह्युं छे ते परस्पर विरोध आव्यो ते केम समजवुं ?

१२उ० (म० ९ मां) श्रीजीमहाराज तथा मुक्त पधार्या पहेलांनी वात करी छे जे अमे मनुष्यरूपे दर्शन नहोतां आप्यां त्यारे एमणे आ वात सांभळी नहोती अने आज अमे ने अमारा मुक्त पधार्या त्यारथी निरंतर एमनी सभामां आ वार्ता थाय छे ते (जे० ३ मां) अमारां ने आ सभानां दर्शन करवा निरंतर आवे छे ते श्रीजीमहाराज तथा मुक्त पधार्या त्यारथी निरंतर समजवुं, माटे नवमामां पोते पधार्या पहेलांनी वात छे ने आमां पोते पधार्या पछीनी वात कही छे.

१३प्र० सद्ग्रंथमां वात होय ते सत्पुरुषना मुख थकी समजाय छे एम कह्युं ने तमे धाममांथी आवेला मुक्तथी समजाय छे एम केम कह्युं ?

१३उ० सत्पुरुष 'प्रगट थाय छे' त्यारे समजाय छे एम कह्युं, ते साधनिकने 'प्रगट थाय' एम कहेवाय नहि धाममां रहेता होय तेनेज 'प्रगट थाय' एम कहेवाय. माटे प्रगट थाय एम कहेवाथीज मुक्तनेज कह्या छे एम जाणवुं माटे महाप्रभु विना के तेमना मुक्त विना आ वात समजाती नथी.

१४प्र० तेजमां मूर्ति छे तेने अमे देखीए छीए एम जाणशो तोपण तमारुं परम कल्याण थाशे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते एम जाणवाथी परम कल्याण शी रीते थाय ?

१४उ० श्रीजीमहाराजे अमे भगवान छीए एम कह्युं तेमां केटलाकने संशय थयो, तेथी श्रीजीमहाराजे कह्युं जे अमने भगवान न जाणो तो मुक्त जाणज्यो पटले तमारे मुक्तप-

णानुं हेत थशे तेणे करीने विश्वास आवशे त्यारे अमारे विषे भगवानपणानी दृढता थाशे ने तमारुं परम कल्याण थाशे एम समजवानुं छे.

१५प्र० दृढ आश्रयवाळाने भुंडा देशकाळादिकने योगे करीने अवळुं कर्म थइ जाय तोपण कल्याणना मार्गथी पडी जाय नही एम कह्युं ते अवळुं कर्म कियुं जाणवुं ?

१५उ० पंचवर्त्तमान मांहिलुं कोइक वर्त्तमान लोपाइ जवाय अथवा कांइक पाप थइ जाय, ए कर्म अवळुं जाणवुं. तोपण श्रीजीमहाराजनो दृढ आशरो होय तो कल्याणना मार्गमां रहे पण पडी जाय नहि पण पापनो दंड भोगवावीने मोक्ष करे ने आ देहे प्रायश्चित्त न करे तो बीजे देहे पण दंड भोगवावीने मोक्ष करे पण दंड भोगवाव्या विना मोक्ष न थाय. ।१४६।

संवत् १८७८ना भादरवा शुदि १ प्रतिपदाने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी-महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिर पासे उत्तरादे बारणे ओरडानी ओसरी उपर विराजमान हता ने श्वेत खेस पहेर्यो हतो ने श्वेत चादर ओढी हती ने मस्तक उपर श्वेत फेंटो बांध्यो हतो ने ते फेंटा उपर राता कर्णि-कारना पुष्पनुं छोगुं विराजमान हतुं अने सुंदर कुंकुमनो चांदलो भालने विषे विराजमान हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछयुं जे, (१) भगवानना स्वरूपने विषे जे संत तदा-त्मकपणाने पामे छे ते समाधिए करीने पामे छे के एनो कोइ बीजो पण प्रकार छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेणे भगवाननुं स्वरूप जेवुं काल्ये अमे कह्युं तेवुं यथार्थ जाण्युं होय ने तेमां कोइ जातनुं उत्थान रह्युं न होय, जेम आ लिंबडानुं वृक्ष छे ते एकवार जाणी लीधुं छे पछी कोइ रीते मनमां संकल्प थातो नथी जे लिंबडो हशे के नहि होय ? एवी रीते गमे तेनो संग थाय अने गमे तेवां शास्त्र सांभळे पण कोइ रीते करीने भगवानना स्वरूपनो जे निश्चय कर्यो होय तेमांथी मन डगमगे नहि एवो जे निरुत्थानपणे भगवाननो निश्चय एने अमे तदात्मकपणुं कहीए छइए; अने एनेज निर्विकल्प समाधि कहीए छइए, ने एवी जातनी जेने निर्विकल्प समाधि थइ होय ते संतनुं स्वरूप पण निर्गुण ब्रह्मज छे, अने एवा अडग निश्चयवाळा जे संत ते निवृत्ति मार्गने विषे वर्त्ते अथवा प्रवृत्ति मार्गने विषे वर्त्ते तो पण एनुं निर्गुणज स्वरूप छे.जेम नारद ने सनकादिक ए सर्वे निवृत्तिमार्गने विषे प्रवर्त्या अने सप्तऋषि तथा जनका-दिक राजा ए सर्वे प्रवृत्तिमार्गने विषे प्रवर्त्या पण ए सर्वेने भगवानना निश्चये करीने निर्गुण जाणवा. (१) अने जे निवृत्तिमार्गने विषे प्रवर्त्या होय ने जो भगवाननो निश्चय १
न होय तो तेने मायिकगुणे करीने सगुण जाणवा, अने एम जाणवुं जे, आ अतिशे

त्यागी जणाय छे पण एने भगवाननो निश्चय नथी माटे ए अज्ञानी छे ते जरूर नरकमां जाशे; अने जेने भगवानना स्वरूपनो एवो निश्चय छे ने जो तेमां कांइक थोडी घणी खोट रही गइ हशे तो पण ते भुंडी गतिने नहि पामे; तेतो अंते जातो निर्गुणपणानेज पामशे. अने जेने भगवानना स्वरूपनो तो एवो निश्चय नथी ने ते सुधो त्यागी रहेतो होय, ने काम, क्रोध,लाभादिकने टाळ्यामां सावधान वर्त्ततो होय, तो पण एना टाळ्या कामादिक नहि टळे अने ते अंते खराब थइने नरकमांज जाशे, अने आवुं जे भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान ते जेने थयुं होय ने तेने थोडी बुद्धि होय तो पण एने मोटी बुद्धिवाळो जाणवो. अने आवुं भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान जेने न होय ने तेने जो झाझी बुद्धि होय तो पण तेने बुद्धिहीन जाणवो.(२)इति व०॥१४॥(१४७) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे, तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, निरुत्थानपणे अमारो निश्चय होय तेज तदात्मकपणुं छे ने एज निर्विकल्प समाधि छे, ने ए संतनुं स्वरूप पण निर्गुण ब्रह्मज छे,ने एवा अडग निश्चयवाळा निवृत्ति मार्गने विषे अथवा प्रवृत्ति मार्गने विषे वर्त्ते तोपण ते निर्गुणज छे. (१) अने जेने आवो निश्चय न होय ने ते निवृत्ति मार्गमां प्रवर्त्या होय तोपण ते सगुण ने अज्ञानी छे ने नरकमां जाशे. (२) बाबतो छे.

१ प्र० अमारा स्वरूपनो निश्चय कर्यो होय तेमांथी मन डगे नहि तेने श्रीजीए तदात्मकपणुं कह्युं ते निश्चय केवी रीतनो जाणवो ?

१ उ० (म० १३ मां) श्रीजीमहाराजे वात करी हती एवी रीते जेनी इंद्रियोनी वृत्ति पाछी वळीने हृदयने विषे तेजमां श्रीजीमहाराजनी मूर्ति देखे, एवा निश्चयने तदात्मक पणुं कह्युं छे; ने तेनेज निर्विकल्प समाधि कही छे. अने एवी रीते महातेज रूप थइने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने देखे ते संतने निर्गुण ब्रह्म कह्या छे. ते मुक्त आ पृथ्वीने विषे निवृत्ति मार्गमां एटले त्यागीना आश्रममां अने प्रवृत्ति मार्गमां एटले गृहस्थाश्रममां रह्या होय तोपण निर्गुणज छे.

२ प्र० पहेली बाबतमां ए संतनुं स्वरूप निर्गुण ब्रह्मज छे एम कह्युं ने बीजीमां अंते निर्गुणपणाने पामशे एम कह्युं तेनुं शुं कारण हशे ? अने भुंडी गति नहि थाय ते शुं समजवुं ?

२ उ० पहेली बाबतमां स्थितिए सहित निश्चयवाळाने निर्गुण ब्रह्म कह्या छे, अने बीजी बाबतमां ज्ञाने करीने निश्चय कर्यो होय पण स्थिति न थइ होय तेनी वात कही छे ते जेने स्थितिए सहित निश्चय न होय तेने खोट रही जाय ते खोट कइ तो महातेज रूप मानीने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने धारतो होय तेमां मायिक संकल्प कोइक वखते स्फुरी आवे ने विक्षेप करे एटलीज खोट कही छे. एने श्रीजीमहाराजनो वियोग थाय ने फेर जन्म धरवो पडे तेवी भुंडी गति नहि थाय एवुं देहने अंते कल्याण थाशे. एम कह्युं छे. ॥१४०॥

संवत् १८७८ ना भादरवा शुदि २ बीजने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी

महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिर नी ओसरीए चाकळो नखावीने विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे सर्वे परमहंसने प्रश्न पुछयो जे,[१] गमे तेवो कउण स्वभाव होय ने जो एक विचार करीए तो ते स्वभावनो नाश थइ जाय अने ए विचारने मुकीने बीजा हजारो विचार करे तोय पण ते भुंडा स्वभाव होय ते टळे नहि एवो ते कियो विचार छे ते जेने जेम समझातुं होय ते तेम कहो ? पछी परमहंसमां जेम जेने समझातुं हतुं तेम तेणे कह्युं पण यथार्थ कोइथी कहेवाणुं नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे कहीए जे, जेम बहार कोइक पोतानो शत्रु होय ते आपणुं कांइक काम थातुं होय तेने बगाडी दे अथवा पोतानी मा बोन सामी गाळो दे पछी तेनो जेम अतिशे अभाव आवे छे, अने जे उपाये करीने तेनुं भुंडुं थाय ते उपाय कराय छे अथवा कोइक बीजो ते शत्रुनुं भुंडुं करे तो पण अतिशे राजी थवाय छे, तेम जे मोक्षने अर्थे यत्न करता होय ने तेमां जे काम, क्रोधादिक मांहेला शत्रु विघ्न करे तो तेनी उपर पण तेवीज वैरबुद्धि थाय,अने तेनो खटको क्यारेय पण टळे नहिं,एवो विचार जेने हाथ आवे ते ए विचारे करीने शत्रु मात्रने टाळे. अने ज्यारे कोइक संत ए कामादिक शत्रुनी निंदा करे तथा ते शत्रुने खोदे तेमां जेने मोरे कह्यो एवो विचार होय तेने ते साधुनो अभाव आवे नहि ने सामो ते साधुनो अतिशे गुण ले ने एम जाणे जे, आ साधु मारा शत्रुने मार्यानो उपाय करे छे माटे मारा परमहेतु छे. आवी जातनो विचार जेना हृदयने विषे प्राप्त थयो होय ते शत्रु मात्रनो नाश करी नाखे अने कोइ भुंडो स्वभाव तेना हृदयने विषे रही शके नहि. अने ए विना बीजा गमे तेटली जातना विचार करे पण कामादिक स्वभावरूपी शत्रु नाश पामे नहि, माटे ए स्वभाव उपर जे शत्रुपणुं राखवुं एज सर्व विचारमां श्रेष्ठ विचार छे. [१] १

२ पछी श्रीजीमहाराजे वळी प्रश्न कर्यो जे, (२) धर्म, वैराग्य आत्मज्ञान ने महात्म्ये सहित परमेश्वरनी भक्ति ए चार वानामांथी कोइ काळे पडे नहि एवो जे होय तेने शे लक्षणे करीने ओळखवो ? पछी सर्वे संते जेवुं जेने समझाणुं तेमणे तेवुं कह्युं पण कोइथी यथार्थ कहेवाणुं नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेनो बाळकपणाथीज एवो स्वभाव होय जे कोइनी छायामां तो दबायज नहि, अने ए ज्यां बेठो होय त्यां कोणेय हांसी मश्करी थाय नहि, अने तेने कोणेय हळवुं वेण पण कहेवाय नहि, एवां जेनां लक्षण होय ते कोइ दिवस धर्म, वैराग्य ज्ञान ने भगवाननी भक्ति तेमांथी

पडेज नहि. अने तेनो मानीना जेवो स्वभाव होय तो पण तेने कल्याणनो खप होय माटे ते सत्संगमांथी कोइ प्रकारे जाय नहि. [२] इति वचनामृतम्. ॥१५॥(१४८) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलामां स्वभाव उपर शत्रुपणुं राखे अने स्वभावने ख्रोदे तेनो गुण ले तो सर्वे शत्रु नाश पामे.(१) बीजामां कोइनी छाया-मां दबाय नहि एवो होय ते धर्म, ज्ञान, वैराग्य ने भक्तिमांथी पडे नहि एम श्रीजीम-हाराजे कह्युं छे. (२) वाक्यो छे. ॥ १४८ ॥

संवत् १८७८ ना भादरवा शुदि १० दशमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजीमहा-राज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेवनारायणना मंदिर पासे पाट उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखा-रविंदनी आगळ मुनि मंडळ तथा देशदेशना हरिभक्तनो सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे, (१) एक तो अर्जुननी पेठे जे स्वरूप निष्ठा अने बीजी युधिष्ठिर राजानी पेठे जे धर्मनिष्ठा ए बे निष्ठा छे तेमांथी जे स्वरूप निष्ठानुं बळ राखे तेने धर्मनिष्ठा मोळी पडी जाय छे अने जे धर्मनिष्ठानुं बळ राखे तेने स्वरूपनिष्ठा मोळी पडी जाय छे माटे एवो शो उपाय छे जे, जेणे करीने ए बेमांथी एके निष्ठा मोळी न पडे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, पृथ्वीनो ने धर्मनो श्रीमद्भागवतना प्रथम स्कंधने विषे संवाद छे तेमां एम कह्युं छे जे, सत्य शौचादिक जे कल्याणकारी एवा ओगणचाळीश गुण तेणे युक्त भगवाननुं स्वरूप छे माटे सर्वे धर्म भगवाननी मूर्तिने आधारे रहे छे ते सारु भगवानने धर्मधुरंधर कह्या छे. अने वळी श्रीमद्भागवतना प्रथम स्कंधने विषे शौनकादिक ऋषिए सुतपुराणीने पुछयुं छे जे, धर्मना बक्तररूप एवा जे श्रीकृष्ण भगवान ते अंतर्धान थया पछी धर्म केने शरणे रह्यो? माटे धर्म ते भगवाननी मूर्तिनेज आश्रे रहे छे, ते सारु जे भगवाननी मूर्तिने विषे निष्ठा राखे तेने भगवाननुं स्वरूप हृदयमां रहे एटले तेना हृदयमां धर्म पण रहे माटे जे स्वरूपनिष्ठा राखे तेने धर्मनिष्ठा सहेजेज रहे अने एकली धर्मनिष्ठा राखे तो स्वरूप निष्ठा मोळी पडी जाय छे, ते कारणपणा माटे बुद्धिवान होय तेने स्वरूपनिष्ठाज दृढ करीने राखवी तो ते भेळी धर्मनिष्ठा पण दृढपणे रहेशे. [१] १

२ पछी मुक्तानंदस्वामीए बीजो प्रश्न पुछ्यो जे, [२] पंचविषय जिताय ते वैरा-ग्ये करीने जिताय छे के कोइ बीजो उपाय छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, वैरा-ग्य होय अथवा न होय पण जो परमेश्वरे कह्या एवा जे नियम तेने विषे खबडदार रहे तो पंचविषय जिताय छे अने जो शब्दथकी वैराग्ये करीने वृत्ति पाछी वाळे तो घणो प्रयास करे तो पण शब्द सँभळाय खरो अने कानने बीडी ले तो सहेजे शब्द संभ-

ळाय नहि, तेमज अयोग्य पदार्थने त्वचाए करीने अडे नहि तो सहेजे स्पर्श जिताय, तेमज अयोग्य वस्तु होय तेने नेत्रे करीने जुवे नहि तो सहेजे रूप जिताय, तेमज जे स्वादु भोजन होय तेने मेळावी पाणी नाखीने जमे तथा युक्त आहार करे एटले सहेजे ज रस जिताय, तेमज अयोग्य गंध होय त्यां नाकने चीढी ले तो सहेजे गंध जिताय, एवी रीते नियमे करीने पंच विषय जिताय छे अने जो नियममां न रहे तो गमे तेवो वैराग्यवान होय तथा ज्ञानी होय पण तेनो टा रहे नहि, माटे विषय जित्यानुं कारण तो परमेश्वरना बांधेल जे नियम तेज छे, तेमां पण मंद वैराग्यवाळाने तो नियममां रहेवुं एज उगर्यानो उपाय छे, जेम मांदो होय ते करी पाळीने औषध खाय तेज निरोगी थाय. (२) २

३ पछी अखंडानंद स्वामीए पुछयुं जे, (३) सांदाने तो करीनो नियम होय जे आटला दिवसज करी राखवी तेम कल्याणना साधननो कोइ नियम छे के नथी ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने श्रद्धा मंद होय तेने तो घणेक जन्मे करीने साधननी समाप्ति थाय छे ते भगवद्गीतामां कह्युं छे जे, ॥ अनेक जन्म संसिद्धस्ततो याति परांगतिम् ॥ ए श्लोकमां एम कह्युं छे जे अनेक जन्मे करीने संसिद्ध थयो जे योगी ते जे ते परमपदने पामे छे ए मंद श्रद्धावाळानो पक्ष छे. अने जेने बळवान श्रद्धा होय ते तो तत्काळ सिद्ध थाय छे. तेपण गीतामां कह्युं छे जे, ॥ श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेंद्रियः । ज्ञानं लब्ध्वा परां शांतिमचिरेणाधिगच्छति ॥ ए श्लोकनो एम अर्थ छे जे, नियममां छे इंद्रियो जेनां ने श्रद्धावान एवो जे पुरुष ते ज्ञानने पामे छे ने ज्ञानने पामीने तत्काळ परमपदने पामे छे. माटे जे अतिशे श्रद्धावान होय तेने वहेली साधननी समाप्ति थाय छे. अने जेने मंद श्रद्धा होय तेने तो अनेक जन्मे करीने साधननी समाप्ति थाय छे, जेम कोइ पुरुष काशीए जातो होय ने ते आखा दिवसमां बे डगलां चालतो होय तेने तो काशीए जातां बहु दिवस लागे अने जे वीशवीश गाउ चालवा मांडे तेतो आंहीथी काशीए थोडा दिवसमां पहोंचे तेम जेने श्रद्धा बळवान छे तेतो हमणां तरत सत्संगी थयो होय तोपण अतिशे सरस थइ जाय छे अने जेने श्रद्धा मंद होय ते तो घणाकाळ थयां सत्संगी थयो होय तोय पण लोचो पोचो रहे छे.(३) ३

४ पछी श्रीगुरुचरणरतानंदस्वामीए पुछयुं जे, [४] ज्यारे मंद श्रद्धावाळानुं अनेक जन्मे कल्याण थाय त्यारे त्यां सुधी ते क्यां रहेतो हशे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, सुंदर देवलोक होय त्यां जइने रहे छे. अने ज्यारे ए भगवाननुं ध्यान करतो त्यारे ए भक्त भगवान सामुं जोतो त्यारे भगवान पण ते भक्त सामुं जोता, पछी भगवाननुं ध्यान करतां थकां जे जे विषयनुं एणे चिंतवन कर्युं हतुं अने जे जे विषयमां

ए भक्तने हेत हतुं, ते भगवान सर्वे नजरे जोइने अने ए देह मुके त्यारे एने जेवा भोग-
वाला छे तेवा भोग जे लोकमां छे ते लोकमां ए भक्तने पहोंचाडे छे, अने काळने एम
आज्ञा करे छे जे, ए भक्तना भोगने तुं खंडन करीशमां, माटे ते निरंतर देवलोकमां रह्यो
थको भोगने भोगवे छे पछी मर्त्यलोकमां आवीने अनेक जन्मे करीने मोक्षने पामेछे.(४) ४
५ पछी अखंडानंदस्वामीए बीजा प्रश्न पुछ्यो जे, (५) तीव्र श्रद्धावान पुरुषनां
लक्षण शां छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जेने तीव्र श्रद्धा होय तेने ज्यारे भगवा-
नने दर्शने आववुं होय अथवा भगवत्कथा वार्ता सांभळवी होय तथा भगवानने मान-
सी पूजा करवी होय इत्यादिक जे जे भगवान संबंधी क्रिया तेने कर्या सारु स्नाना-
दिक जे पोतानी देह क्रिया तेने अतिशे उतावळो थइने करे; अने कागळ लखीने अथे
कोइक वर्त्तमान फेरववुं होय तो तेने करवाने अर्थे पण आकळो थइ जाय अने मोटुं
माणस होय तोपण भगवाननां दर्शन सारु बाळकनी पेठे आकळाइ करवा मांडे; एवां
जेनां लक्षण होय तेने तीव्र श्रद्धावान जाणवो. अने जे एवी श्रद्धावाळो होय ते सर्वे
इंद्रियोने पण तत्काळ वश करे छे. अने जेने भगवानना मार्गमां मंद श्रद्धा होय तेनां
इंद्रियो विषय सन्मुख अति तीक्ष्णपणे युक्त होय ते गमे तेटलो संताडवा जाय पण
सौने जणाइ जाय जे आनी इंद्रियोनो विषय सन्मुख तीक्ष्ण वेग छे, अने इंद्रियोनुं
रूप तो वायुना वेग जेवुं छे; जेम वायु देखाय नहि पण वृक्षने हलावे तेणे करीने जणा-
य छे जे वायु वाय छे; तेम इंद्रियोनी वृत्तियो देखाती नथी पण विषय सन्मुख दोडे ते
सौने जणाय छे; अने जो कपटे करीने ते ढांकवा जाय तो कपटी जाणीने तेनो सौने
अतिशे अवगुण आवे छे; माटे जेनां इंद्रियोमां विषय भोगव्यानी तीक्ष्णता होय ते कोइ
प्रकारे छानी रहे नहि. (५) ५
६ पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे, (६) विषय सन्मुख इन्द्रियोनी जे तीक्ष्णता
तेने टाळवानो शो उपाय छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे इन्द्रियोनी तीक्ष्णताने
मट्यानो एज उपाय छे जे, परमेश्वरे त्यागीना ने गृहस्थना जे नियम बांध्या छे तेमां
सर्वे इन्द्रियोने मरडीने राखे तो सहेजेज इन्द्रियोनी तीक्ष्णता मटी जाय अने श्रोत्र,
त्वक्, चक्षु रसना ने घ्राण ए पांचे इन्द्रियोने ज्यारे कुमार्गमां न जावा दे त्यारे इन्द्रियोना
आहार शुद्ध थाय छे, ते केडे अंतःकरण पण शुद्ध थाय छे; माटे वैराग्यनुं बळ होय
अथवा न होय तो पण जो इन्द्रियोने वश करीने परमेश्वरना नियममां राखे तो जेम
तीव्र वैराग्ये करीने विषय जिताय छे ते थकी पण ते नियमवाळाने विशेषे विषय जि-
ताय छे माटे परमेश्वरना बांधेल जे नियम छे तेने अति दृढ करीने राखवा. (६) ६
७ पछी वळी अखंडानंदस्वामीए पूछ्युं जे; (७) जेने मंद श्रद्धा होय तेने श्रद्धा

वृद्धि केम पामे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जो भगवाननुं महात्म्य जणाय तो मंद श्रद्धा होय ते पण वृद्धिने पामे, जेम पाणी पीवानुं वासण मृत्तिकानुं होय तेमां सहेजेज प्रीति थाय नहि अने ते पात्र जो सुवर्णनुं होय तो तेमां सहजेज प्रीति थाय, तेम भगवाननुं तथा भगवाननी कथा कीर्तनादिकनुं महात्म्य जणाय तो सहज स्वभावेज भगवानमां तथा कथा कीर्तनादिकमां श्रद्धा वृद्धि पामे छे, माटे जे प्रकारे भगवाननुं महात्म्य समजाय ते उपाय करवो ने जो ए उपाय करे तो श्रद्धा न होय तो पण श्रद्धा थाय छे अने जो मंद श्रद्धा होय तो ते वृध्धिने पामे छे. (७) इति वचनामृतम् ॥१६॥ (१४९) ७

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (७) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारा स्वरूपनी दृढ निष्ठा होय तो ते भेळी धर्मनिष्ठा रहे. (१) बीजामां नियमे करीने विषय जिताय छे. (२) त्रीजामां अतिशे श्रद्धावान होय तेने वहेली साधननी समाप्ति थाय छे. (३) चोथामां मंद श्रद्धावाळो अनेक जन्मे मोक्षने पामे. (४) पांचमामां तीव्र श्रद्धावान पुरुषनां लक्षण कह्यां छे. (५) छठ्ठामां इंद्रियोने वश करीने अमे कहेला नियममां राखे तो विषय जिताय छे. (६) सातमामां अमारुं महात्म्य जाणे तो श्रद्धा वृद्धि पामे एम कह्युं छे. (७) वातो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां स्वरूपनिष्ठा कही ते स्वरूपनिष्ठानुं शुं रूप हशे ? अने धर्मनिष्ठानुं शुं रूप हशे ?

१ उ० पोते अक्षरधाम रूप थइने तेने विषे श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनो अखंड साक्षात्कार थाय ते स्वरूपनिष्ठा जाणवी. अने श्रीजीमहाराजे त्यागी, गृहीना जेजे धर्म कह्या छे तेने आपत्काळमां पण स्थूळ सूक्ष्म देहे करीने यथार्थ पाळे ते धर्मनिष्ठा जाणवी.

२ प्र० चोथा प्रश्नमां सुंदर देवलोक कह्या ते किया जाणवा ?

२ उ० प्रधान पुरुष तथा प्रकृति पुरुषना लोकने आ ठेकाणे सुंदर देवलोक कह्या छे.

३ प्र० जेवा भोग वाळा छे ते लोकमां ए भक्तने पहोंचाडे छे एम कह्युं ते ध्यानमां घाटतो थाय पण जे भोगना घाट थता होय ते भोगनी इच्छा न होय ने तेनी दाझ्य थती होय ने टाळवानी इच्छा होय तेनी शी गति थाय ?

३ उ० आवी समझणवाळो योगभ्रष्ट कहेवाय माटे तेने एकादो जन्म धरवो पडे अथवा श्रीजीमहाराज कृपा करे तो अंते निर्वासनिक करीने धाममां लइ जाय. ॥ १४९ ॥

संवत् १८७८ ना आसो वदि ११ एकादशीने दिवस रात्रिने समे स्वामी श्रीसहजानंदजीमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी समीपे ओरडानी ओसरीए सिंहासन उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोतानी आगळ मशाल बे बळती हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती. ने कीर्तन गवातां हतां.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, कीर्तन गावां रहेवा द्यो प्रश्न उत्तर करीए.
१ पछी सर्वे मुनि बोल्या जे घणुं सारुं महाराज, पछी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पूछ्यो जे, (१) भगवाननुं स्वरूप छे तेने कोइक भक्त तो मायानां चोवीश तत्त्वे सहित समजे छे अने कोइक भक्त तो मायाना तत्त्वे रहित केवळ चैतन्यमय भगवाननुं स्वरूप समजे छे ए बे प्रकारना भक्त छे तेमां केनी समजण ठीक छे ने केनी समजण ठीक नथी ? पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे, जे भगवानने विषे मायिक चोवीश तत्त्व समजे एनी समजण ठीक नथी अने भगवाननुं स्वरूप मायाना तत्त्वे करीने रहित केवळ चैतन्यमय समजे तेनी समजण ठीक छे. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, सांख्यवाळे चोवीशज तत्त्व कह्यां छे ते सांख्यने मते त्रेवीश तत्त्वने चोवीशमो क्षेत्रज्ञ जे जीव ईश्वर रूप चैतन्य ते छे ए रीते चोवीश तत्त्व कह्यां छे, केमजे क्षेत्र क्षेत्रज्ञने तो अन्योअन्य आश्रयपणुं छे ते क्षेत्रज्ञ विना क्षेत्र कहेवाय नहि ने क्षेत्र विना क्षेत्रज्ञ कहेवाय नहि ते माटे तत्त्व भेळाज जीव ईश्वरने कह्या छे अने भगवान छे ते तो क्षेत्र अने क्षेत्रज्ञ ए बेयना आश्रय छे माटे भगवान थकी मायिक तत्त्व जुदां केम कहेवाय ? अने जेम आकाश छे तेने विषे चार तत्त्व रह्यां छे तो पण आकाशने कोइनो दोष अडतो नथी तेम परमेश्वरना स्वरूपने पण मायिक तत्त्वनो एकेय दोष अडतो नथी एवुंज भगवाननुं स्वरूप छे तेमां चोवीश तत्त्व कहीए तेमां शो बाध छे ? अने तत्त्वे रहित कहेवुं तेमां शुं निर्बाधपणुं आवी गयुं ? [१] १

२ पछी दीनानाथ भट्टे पुछ्युं जे, (२) जेने भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान करवुं होय तेने भगवाननुं स्वरूप तत्त्वे सहित समजवुं के तत्त्वे रहित समजवुं ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, भगवानना स्वरूपने जे तत्त्वे सहित समझे छे ते पण पापी छे अने जे तत्त्वे रहित भगवानना स्वरूपने समझे छे ते पण पापी छे. भगवानना स्वरूपमां तो भगवानना भक्त होय तेने तत्त्व छे के नथी एवुं चुंथणुं करवुं गमेज नहि, भक्त होय ते तो एम जाणे जे, भगवान ते भगवान एने विषे भाग त्याग कर्यानो माग नथी. ए भगवान तो अनंत ब्रह्मांडना आत्मा छे अने जेने भगवानना स्वरूपमां कोइ रीतनुं उत्थान नथी तेने निर्विकल्प स्थितिवाळो जाणवो. अने जेने एवो एक मति होय तेने स्थित प्रज्ञ जाणवो, अने जे पुरुषने भगवानने विषे एवी दृढ मति छे तेने भगवान सर्वे पाप थकी मुकावे छे, ते भगवाने भगवद्गीतामां अर्जुन प्रत्ये कह्युं छे जे, ॥ सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज । अहंत्वां सर्वे पापेभ्यो मोक्षयिष्यामिमाशुच ॥ अने आ संसारमां पण ए रीत छे जे, जे थकी पोतानो मोटो स्वार्थ सरतो होय तेनो बुद्धिवान होय ते दोष ग्रहण करे नहि, जेम स्त्री होय ते पोताना स्वार्थ सारु पतिनो दोष ग्रहण करती नथी तथा बीजा पण गृहस्थ होय ते पोताना भाइ भत्रिजा दिकरा इत्यादिक

जे संबंधी तेने विषे जो पोतानो अतिशे स्वार्थ होय तो दोषनुं ग्रहण नथी करता तेम भगवान थकी जेणे मोटो स्वार्थ जाण्यो होय जे भगवान तो पाप थकी ने अज्ञानथकी छुकावीने पोताना भक्तने अभयपद आपे छे एवो मोटोस्वार्थ जाण्यो होय तो कोइ रीते भगवाननो अवगुण आवेज नहि, जेम शुकजीए रासपंचाध्यायीनुं वर्णन कर्युं त्यारे राजा परीक्षितने संशय थयो जे भगवाने परस्त्रीनो संग केम कर्यो ? पण शुकजीने लेशमात्र संशय थयो नहि अने जे गोपियो संगे भगवाने विहार कर्यो ते गोपियोने पण संशय न थयो जे, भगवान होय तो आम केम करे ? एवो कोइ रीते संशय थयो नहि. अने ज्यारे भगवान कुबज्याने घेर गया त्यारे उद्धवजीने भेळा तेडी गया हता तो पण उध्धवजीने कोइ रीते संशय थयो नहि, अने ज्यारे उद्धवजीने व्रजमां मोकल्या त्यारे गोपियोनी वाणी सांभळीने पण कोइ रीते संशय न थयो, अने सामुं गोपियोनुं महात्म्य अतिशे समज्या, माटे जेने भगवाननो अचळ आश्रय थयो होय ने ते अतिशे शास्त्रवेत्ता होय अथवा भोळोज होय पण तेनी मति भमे नहि, अने भगवानना जे दृढ भक्त होय तेनुं जे महात्म्य ते पण भगवाननो भक्त होय तेज जाणे पछी शास्त्रवेत्ता होय अथवा भोळो होय पण जेनी भगवानने विषे दृढ मति होय तेज भगवानना भक्तनुं महात्म्य जाणे, अने दृढ मतिवाळा भक्त होय तेने ओळखे पण खरा. अने ते विना जे जगतना विमुख जीव होय ते तो पंडित होय अथवा मूर्ख होय पण भगवानने विषे दृढ मति पण करी शके नहि अने जे दृढ मतिवाळा भक्त होय तेने पण ओळखे नहि अने हरिजननुं महात्म्य पण जाणे नहि, माटे भगवाननो भक्त होय तेज भगवानना भक्तने ओळखे अने महात्म्य पण तेज जाणे, जेम उध्धवजीए गोपियोनुं अतिशे महात्म्य जाण्युं तेम गोपियोए पण उध्धवजीनुं महात्म्य जाण्युं. अने पुरुषोत्तम भगवान छे ते सर्वे क्षेत्रज्ञना क्षेत्रज्ञ छे तो पण निर्विकार छे अने माया आदिक जे विकारवान पदार्थ तेनो विकार पुरुषोत्तम भगवानने अडतो नथी अने जे आत्मनिष्ठ पुरुष छे तेने पण स्थूळ सूक्ष्म ने कारणना विकार नथी अडता तो पुरुषोत्तम भगवानने न अडे एमां शुं कहेवुं ? भगवान तो निर्विकारी ने निर्लेपज छे, एवी रीते जे भगवानना स्वरूपने समझे ते भगवाननो भक्त स्थितप्रज्ञ जाणवो, जेम पोताना आत्माने विषे जेने स्थिति होय ते पण स्थितप्रज्ञ कहेवाय छे, तेम जेने भगवानना स्वरूपने विषे कोइ जातनो घाट न होय अने जेम भगवाननुं समर्थपणुं होय तेनुं गान करे तेमज असमर्थपणुं होय तेनुं पण गान करे, अने जेम भगवाननुं योग्य चरित्र होय तेनुं गान करे तेमज जे अयोग्य जेवुं चरित्र जणातुं होय तेनुं पण गान करे, पण भगवानना चरित्रने विषे योग्य अयोग्य एवो घाट घडे नहि, एवो जे भगवाननो भक्त होय तेने पुरुषोत्तमना

स्वरूपने विषे स्थितप्रज्ञ जाणवो. अने जेने एवी पुरुषोत्तमना स्वरूपने विषे दृढनिष्ठा थइ तेने एथी उपरांत बीजुं कांइ समजवानुं रह्यं नथी. [२] इति व० ॥१७॥ (१५०) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे सांख्यमत कहेवापूर्वक पोतानो सिद्धांत कह्यो छे जे, अमे सर्वने विषे अंतर्यामीपणे रह्या छीए पण आकाशनी पेठे निर्लेप छीए. (१) बीजामां अमने तत्त्वे सहित अने रहित समजनार पापी छे अने अमारे विषे भाग त्याग नथी ने अनंत ब्रह्मांडना आत्मा छीए अने अमारा स्वरूपने विषे उत्थाने रहित भक्त निर्विकल्प समाधिवाळो ते स्थितप्रज्ञ छे. एवो अमे सर्व पाप थकी मुकावीए छीए, जेम श्रीकृष्ण भगवाने अर्जुनने मुकाव्या तेम अने जेम संसारिक स्वार्थवाळा संबंधीनो अवगुण लेवा नथी, तेम अमारा थकी अभयपद रूपी स्वार्थ जाण्यो होय तेने अमारो अवगुण आवे नहि, जेम शुकजी आदिकने न आव्यो तेम. अने जेने अमारो अचळ आश्रय होय तेनी मति भ्रमे नहि ने अमारा दृढ भक्तने ओळखे ने परस्पर महात्म्य जाणे, जेम उद्धवजी तथा गोपियोए जाण्युं तेम. अने मूळ अक्षरादिक सर्वे क्षेत्रज्ञना क्षेत्रज्ञ छीए तोपण निर्विकार छीए अने आत्मनिष्ठने विकार नथी अडतो तो पुरुषोत्तम एवा जे अमे ते अमने तो अडेज केम ? एम समजनार भक्तने स्थितप्रज्ञ जाणवो अने आत्माने विषे स्थितिवाळो स्थितप्रज्ञ कहेवाय तेम अमारा योग्य अयोग्य चरित्रमां संशय न करे तेने अमारे विषे स्थितप्रज्ञ जाणवो. [२] वाक्तो छे.

१ प्र० बीजा प्रश्नमां तत्त्वे सहित ने तत्त्वे रहित समजे ते बेयने पापी कहेवानो शो हेतु हशे ?

१ उ० तत्त्वे सहित समजनारा श्रीजीमहाराजने मायिक समजे अने तत्त्वे रहित समजनारा निराकार समजे, पण श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने विषे भाग त्याग नथी, सदाय दिव्य मूर्ति ज छे, एम न समजे तेथी पापी कह्या छे.

२ प्र० आमां आत्मनिष्ठ पुरुषने विकार अडता नथी एम कह्युं ते आत्मनिष्ठा केवी जाणवी ? अने विकार केवी रीते नहि अडता होय ?

२ उ० त्रण देहथी जोखो जे पोतानो आत्मा तेमां स्थिति ते आत्मनिष्ठा आ ठेकाणे कही छे. अने विकार अडता नथी एटले एना विकार टळी जाय छे एम जाणवुं, पण आज्ञा विरुद्ध क्रिया करे ने पाप न लागे तथा विकार न उपजे एम कह्युं नथी, माटे आत्मनिष्ठ पुरुष तो आज्ञा प्रमाणे वर्ते तेनेज (म० ५१ ना बीजा प्रश्नमां) कह्यो छे माटे आज्ञा विरुद्ध वर्ते तेने आत्मनिष्ठ न जाणवो. ॥ १५० ॥

संवत् १८७८ ना मागशर वदि ६ छठने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उताराने विषे गादी तकिया नखावीने विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो अने धोळी चादर ओढीने ते उपर बुट्टादार रजाइ ओढी हती अने मस्तक उपर धोळो फेंटो विराजमान हतो.

अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने पोतानी आगळ मागजी दवे कथा करता हता, पछी श्रीजीमहाराज बोल्या
१ जे (१) अमे तो सर्व प्रकारे विचारीने जोयुं जे, आ संसारमां जेटला कुसंग कहेवाय छे ते सर्व कुसंगथी अधिक कुसंग ते कियो छे तो जेने परमेश्वरनी भक्ति नहि ने भगवान सर्वेना स्वामी छे, भक्त वत्सल छे, पतित पावन छे, अधम उध्धारण छे, एवो पण भगवाननो कोरनो जेना हृदयमां विश्वास नहि, ते एवा तो आ संसारमां बे मत छे एक तो नास्तिकनो ने बीजो वेदांतीनो ए बे अति कुसंग छे. अने पंच महापापे युक्त होय ने तेने जो भगवाननो विश्वास होय तो तेनो कोइ काळे छुटको थाय तथा बाळहत्या, गौहत्या, स्त्रीहत्या इत्यादिक जे मोटां पाप तेना करनारानो पण कोइकाळे छुटको थाय खरो पण ए बे मतनी जेने प्रतीति आवी तेनो कोइ काळे छुटको थाय नहि, शामाटे जे एनी समजण वेदशास्त्र ने पुराण ते थकी उंधी छे. तेमां नास्तिक तो एम समजे छे जे, रामचंद्रजी ने श्रीकृष्ण भगवान ए तो राजा हता ने श्रीकृष्णे दैत्य मार्या तथा परस्त्रीना संग कीधा माटे त्रीजा नरकमां पड्या छे, एवी रीते अधम उध्धारण ने पतित पावन एवा जे श्रीकृष्ण भगवान तेने विषे परमेश्वरनी बुध्धिज नथी अने कर्मे करीने पोतानुं कल्याण मान्युं छे जे, ज्यारे कर्म करतां करतां केवळ ज्ञान प्रगटे त्यारे ते भगवान थाय, एवी रीते अनंत भगवान मान्या छे पण अनादि परमेश्वर नास्तिकने मते कोइ नथी जेने भजने करीने जीव भवना बंधन थकी छुटे, माटे ए मत छे ते अति भुंडो छे अने वेदांती छे ते तो एम समजे छे जे, ब्रह्म छे तेज जीव रूप थया छे, ने जेम सूर्यनुं प्रतिबिंब छे तेम ब्रह्म ते जीव रूप छे माटे ज्यारे एम समज्या जे हुं ब्रह्म छुं त्यारे एने कांइ साधन करवुं रह्युं नहि, अने ज्यारे पोते परमेश्वर थया त्यारे हवे भजन पण कोइनुं करवुं रह्युं नहि, एम मानीने पछी पाप करतां पण बीए नहि अने मनमां एम समजे जे, आपण निर्गुण मार्गने पाम्या छइए माटे आपणे फरीने जन्म नहि धरवो पडे पण मूर्खा वेदांती एटलो तपास करता नथी जे, माया पर जे निर्गुण ब्रह्म तेने पण एनी समजणे करीने जन्म मरण ठेराणुं, केमजे ए मूर्खा एम कहे छे जे, ब्रह्म छे तेज स्थावर जंगम रूप थया छे त्यारे जे जीव होय तेने माथे तो जन्म मरण होय ते जन्म मरण ब्रह्मने माथे आव्युं ने ए मूर्खा तो एम जाणे छे जे अमे जन्म मरणथी छुटशुं पण एम विचारता नथी जे आपणे मते करीने ब्रह्मने माथे जन्म मरण साचुं थयुं, त्यारे आपण पण थयुं समजशुं तो पोताने ब्रह्मस्वरूप मानशुं तो पण जन्म मरण नहि टळे, माटे एमेज मते करीने एणे जे मोक्ष मान्यो छे ते खोटो थइ जाय छे तोपण कांइ

तपासीने जोता नथी अने ओमे तो एम बके छे जे आपण तो ब्रह्म स्वरूप छइए ते केनुं भजन करीए? अने केने नमस्कार करीए? एम मानीने अतिशे अहंकारी थइ जाय छे अने समइयामां तो कांइ आव्युं नथी ने मूर्ख छे माटे ज्ञानीनुं मान लइने बेठा छे पण एम विचारता नथी जे, पोताने मते करीनेज पोतानो मोक्ष खोटो थइ गयो अने जे एनो संग करे तेने पण एवाने एवा मूर्ख करीने मुके छे; अने साचा ज्ञानी जे नारद सनकादिक शुकजी ते तो निरंतर भगवाननुं ध्यान नाम रटन ने कीर्त्तन तेने करे छे अने श्वेतद्वीपने विषे जे निरन्न मुक्त छे ते तो ब्रह्म स्वरूप छे अने काळना पण काळ छे तोय पण परमेश्वरनुं ध्यान, नाम रटन, कीर्त्तन, पूजन, अर्चन, वंदन तेने करता रहे छे अने पोते अक्षर स्वरूप छे तो पण अक्षरातीत जे पुरुषोत्तम भगवान तेना दास थइने वर्ते छे अने बदरिकाश्रमने विषे जे उद्धवने तत्तु ऋषि आदिक मुनि रह्या छे ते पण तप करे छे ने निरंतर भगवानननी भक्ति कर्या करे छे अने ए वेदांती तो केवळ देहाभिमानी जीव छे तोपण भगवाननुं ध्यान स्मरण के वंदन करता नथी अने नारद सनकादिक ने शुकजी तेमनी जेवी सामर्थि छे ने जेवुं ज्ञान छे तथा श्वेतद्वीपवासी जे निरन्नमुक्त तेने विषे जेवी सामर्थि छे ने जेवुं ज्ञान छे तथा बदरिकाश्रमवासी जे ऋषि तेमां जेवी सामर्थि छे ने जेवुं ज्ञान छे तेना कोटीमा भागनी पण ए वेदांतीने विषे सामर्थि पण नथी ने ज्ञान पण नथी तो पण परमेश्वरना सामावडिया थइने बेठा छे माटे ए पाका मूर्ख छे अने जेटला मूर्ख कहेवाय तेना राजा छे अने ए तो कोटी कोटी कल्प सुधी नरकना कुंडमां पडशे ने यमना मार खाशे तो पण एनो छुटको नहि थाय अने एवा दुष्टनो जे संग तेनुंज नाम कुसंग छे, ने जेम सत्पुरुषनो जे संग तेथी कोइ मोटुं पुन्य नथी तेम चांडाळ एवा जे शुष्क वेदांति तेना संगथी कोइ मोटुं पाप नथी, माटे जेने कल्याणने इच्छवुं तेने नास्तिक तथा वेदांतिनो संग करवोज नहि. (१) १

इति वचनामृतम् ॥ १८ ॥ (१५१)

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे नास्तिक ने शुष्क वेदांती ए बे मतने अतिशे दुष्ट ने महा पापी कह्या छे ने तेमनो कोइ काळे नरकमांथी छुटको नहि थाय ने एना संग करनाराने पण अति पापी कह्या छे. (१) बाबत छे.

१ प्र० श्वेतद्वीपने विषे निरन्न मुक्त छे तेने ब्रह्म स्वरूप तथा अक्षर स्वरूप कह्या अने अक्षरातीत पुरुषोत्तमना दास कह्या ते पुरुषोत्तम किया जाणवा? ने ते निरन्न मुक्त कोने कह्या हशे?

१ उ० आ ठेकाणे वासुदेव ब्रह्मने पुरुषोत्तम कह्या छे ते मूळ पुरुषोना पुरुषोत्तम छे. जे एमना तेजने अक्षर कह्युं छे ने ते अक्षरथी तेमने अतीत पदके पर कह्या छे. अने तेमना सांघनिक मुक्तोने काळना काळ ने अक्षर स्वरूप कह्या छे.

२ प्र० कोना कोना तेजने अक्षर नामे कहेवातुं हशे ?

२ उ० मूळपुरुष ब्रह्म मूळअक्षर तथा श्रीजीमहाराज ए सर्वेना तेजने अक्षर तथा अक्षरधाम कहेवाय. ॥ १५१ ॥

संवत् १८७८ ना मागशर वदि १४ चौदशने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां परमहंसने उतारे दिवस उग्या समे पधार्या हता पछी त्यां आवीने गादी तकिया उपर उदास थइने बेठा ते कोइने बोलावे पण नहि अने कोइना सामुं पण जुवे नहि अने मस्तक उपर धोळो फेंटो बांध्यो हतो ते छुटीने शिथळ थइ गयो तेने पण संभारे नहि, एवी रीते एक घडी सुधी अतिशे उदास थइने बेसी रह्या अने नेत्रमांथी जळ पडवा लाग्यां.

१ पछी श्रीजीमहाराज परमहंस प्रत्ये बोल्या जे, [१] अमे वेदांत शास्त्रनो मत जाणवा सारु वेदांत शास्त्रनुं श्रवण कर्युं ते श्रवण मात्रे करीनेज अमारा अंतरमां आवो उद्वेग थइ आव्यो, केम जे जे वेदांत शास्त्रने श्रवणे करीने जीवनी बुद्धिमांथी भगवाननी उपासनानुं खंडन थइ जाय छे अने हइयामां समभाव आवी जाय छे एटले अन्य देवनी पण उपासना थइ जाय छे अने ते वेदांतीना वचनने जे सांभळे तेनी बुद्धि अतिशे भ्रष्ट थइ जाय छे. (१) अने अमे तो कांइक प्रयोजन सारु वेदांतनी वात सांभळी हशे तेणे करीने पण हवे अमारे शोक घणो थाय छे, एम कहीने श्रीजीमहाराज सुधाउदास थइ गया. पछी घणीवार सुधी दिलगीर थइने पछी पोताने हाथे नेत्रमांथी जळ लुइने एम बोल्या जे, भगवद्गीता उपर जे रामानुज भाष्य छे तेनी कथा सांभळीने अमे आज रात्रिए सुता हता पछी अमने स्वप्न थयुं जे अमे गोलोकमां गया, त्यां भगवानना अनंत पार्षद दीठा तेमां केटलाक तो भगवाननी सेवामां रह्या छे ते तो स्थिर सरखा जणाणा अने केटलाक तो परमेश्वरनां कीर्त्तन गाय छे ते कीर्त्तन पण मुक्तानंदस्वामी ने ब्रह्मानंदस्वामीनां गाय छे अने ते कीर्त्तन गाता जाय अने डोलता जाय, जेम केफे करीने गांडा थया होय ने ते डोले ने गाय तेम कीर्त्तन गाय ने डोले पछी अमे पण ए गावता हता ते भेळा जाइने भळ्या ने कीर्त्तन गावा लाग्या ते गावतां गावतां एवो विचार थयो जे आवी जे परमेश्वरनी प्रेमभक्ति अने आवी जे परमेश्वरनी उपासना तेनो त्याग करीने जे ब्रह्मज्ञानी थाय छे अने एम जाणे छे जे अमेज भगवान छइए ते महादुष्ट छे एम कहीने श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जे प्रकारे धर्मथकी तथा भगवाननी भक्ति थकी कोइ रीते पाछो न पडे अने पोताना इष्टदेव जे श्रीकृष्ण नारायण तेमांथी कोइ रीते बुद्धि डगे नहि एवो लाखो एक कागद लखीने देशदेशना सत्संगी प्रत्ये मोकलीए. लिखावितं स्वामीश्रीसहजानंदजी महाराजना सर्वे परमहंस

तथा सर्वे सत्संगी बाई भाइ नारायण वांचजो. बीजुं अमारी आज्ञा एम छे जे, श्रीकृष्ण नारायण एवा जे पुरुषोत्तम भगवान तेना जे अवतार ते धर्मना स्थापनने अर्थे तथा ब्रह्मचर्य, अहिंसादिक धर्म, आत्मनिष्ठा, वैराग्य ने महात्म्ये सहित भक्ति ए चार गुणे संपन्न एवा जे पोताना एकांतिक भक्त तेने दर्शन देवाने अर्थे ने तेमनी रक्षा करवाने अर्थे तथा अधर्मनो उच्छेद करवाने अर्थे देव मनुष्यादिकने विषे थाय छे ते अवतारने विषे पतिव्रताना जेवी अनन्यपणे निष्ठा राखवी, जेम सीताजीने श्रीरामचंद्रजीने विषे निर्दोषपणे निष्ठा हती तेम निष्ठा राखवी. अने एवा जे भगवान तेनी हेते करीने मानसी पूजा करवी तथा देहे करीने नव प्रकारे भक्ति करवी अने जो ए श्रीकृष्ण नारायणना अवतार पृथ्वीने विषे प्रगट न होय तो तेनी जे प्रतिमा तेनी पूजा मने करीने तथा देहे करीने चंदन, पुष्प, तुळसी आदिक सामग्री वते करवी पण भगवान विना बीजा देवनी उपासना न करवी अने जो बीजा देवनी उपासना करीए तो तेमां मोटो दोष लागे छे ने पतिव्रतापणुं जाय छे ने वेश्याना जेवी भक्ति थाय छे, माटे भगवानने विषे सीता ने रुक्मणीना जेवी भक्ति करवी ने ते भगवानतुंज ध्यान करवुं अने ते विना बीजा कोइ देवनुं ध्यान न करवुं.बीजुं जे साधु सिध्धगतिने पाम्या होय ने समाधिनिष्ठ होय तेनुं पण ध्यान न करवुं. अने सर्वने पोत पोताना वर्णाश्रमधर्मने विषे दृढपणे वर्त्तवुं. बीजुं आजे अमारी आज्ञा छे तेने जे पुरुष दृढपणे पाळशे तेने श्रीकृष्णनारायणने विषे नारदना जेवी दृढभक्ति थाशे अने आ अमारी आज्ञाने जे स्त्री मानशे तेने श्रीकृष्णनारायणने विषे लक्ष्मीजी तथा राधिकाजी आदिक जे गोपियो तेना जेवी भक्ति थाशे अने आ अमारा वचनने जे नहि माने तेनी भक्ति वेश्याना जेवी थाशे. संवत १८७८ ना मागशर वदि १४ चौदशने दिवस लख्यो छे. एवी रीते कागळ लखीने देशदेशना सत्संगी प्रत्ये मोकलाव्यो.(२)इति व०॥१९॥(१५२) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे वेदांत शास्त्रना श्रवणथी बुद्धि भ्रष्ट थाय छे ने पोताने भगवान मनाय छे ने अमारी उपासनानुं खंडन थइ जाय छे माटे तेनुं श्रवण न करवुं. (१) अने अमारा एकांतिक भक्तने दर्शन देवाने तेमनी रक्षा करवाने अधर्मनो नाश करवा मनुष्यरूपे थया छीए, एवी अमारे विषे निष्ठा राखीने मानसी पूजा तथा भक्ति करवी अने ज्यारे अमे आ मनुष्य स्वरूप अदृश्य करीए त्यारे अमारी प्रतिमानी पूजा, भक्ति, उपासना तथा ध्यान करवुं पण बीजा कोइ देवनुं ध्यान करवुं नहि ने साधने करीने सिद्ध गतिने पाम्या होय एवा साधुनुं पण ध्यान करवुं नहि, तो अमारे विषे दृढ भक्ति थशे अने आ अमारा वचनथी बीजी रीते वर्तशे तेनी भक्ति वेश्याना जेवी थशे. (२) बावतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां शुष्क वेदांत शास्त्रना श्रवणे करीने भगवानननी उपासनानुं खंडन

थइ जाय छे एम कह्युं अने पछी अन्यदेवनी उपासना थइ जाय छे एम कह्युं ते भगवाननी उपासना टळीने अन्यदेवनी उपासना थवानो शो हेतु हशे ?

१ उ० शुष्क वेदांत शास्त्रना श्रवणथी सर्वे देवने विषे समभाव थइ जाय छे पण ए श्रवण करनार पाको वेदांती थयो न होय तेने ज्यारे कांइक संकट आवे त्यारे पोतानी रक्षाने माटे कोइक देवनी उपासना करे एम अन्य देवनी उपासना आपत्काळे करे.

२ प्र० बीजी बाबतमां श्रीजीमहाराजे कह्युं जे अमो गोलोकमां गया त्यां अनंत पार्षद दीठा ते गोलोक कोने कह्युं हशे ?

२ उ० पोताना तेजरूप अक्षरधामने आ ठेकाणे गोलोकनामे कह्युं छे ते (अ० ६ ना बीजा प्रश्नमां) गोलोक अमे एनेज कहीए छीए एम कह्युं छे.

३ प्र० भगवानना अवतार देव मनुष्यादिकने विषे थाय छे एम कह्युं ते देवलोकमां एकांतिक भक्त हशे अने त्यां भगवान एकांतिक धर्म स्थापन करता हशे के नहि ?

३ उ० देवलोकमां एकांतिक धर्मनुं स्थापन थातुं नथी अने त्यां एकांतिक भक्त पण नथी एकांतिक भक्त तो मर्त्य लोकमांज छे अने एकांतिक धर्म पण मर्त्य लोकमां स्थापन थाय छे, केम जे आ कर्म भूमि छे ने ए भोग भूमि छे माटे देवलोकमां श्रीजीमहाराज प्रगट थता नथी; बीजा अवतारो कोइक प्रयोजन माटे देवलोकमां प्रगट थाय छे ते बीजा अवतारोने विषे पोते अंतर्यामी शक्तिये रह्या छे माटे अवतारोना अभेदपणे करीने देवलोकने विषे प्रगट थाय छे एम कह्युं छे.

४ प्र० ध्यान करवानुं कह्युं ते ध्यान केवी रीते करवुं ?

४ उ० देहात्मबुद्धि सोतो श्रीजीमहाराजने सन्मुखधारीने ध्यान करे ते अवरभावनुं ध्यान छे; अने सदा दिव्यसाकार मूर्तिमान सर्वोपरि पुरुषोत्तम एवा जे श्रीस्वामिनारायण तेमना तेजरूप थइने ए तेजरूप जे अक्षर ब्रह्म तेमां मूर्त्ति धारवी ते परभावनुं ध्यान छे अने मूर्त्तिना तदाकारभावने पामीने ध्यान करवुं ते परभावमां उत्तम ध्यान छे.'

५ प्र० बीजा कोइ देवनुं ध्यान करवुं नहि एम कह्युं ते देव किया जाणवा ?

५ उ० ते टाणे प्रत्यक्ष सर्वोपरि श्रीस्वामिनारायण भगवानपोते विराजमान हता तेमणे पोतानुंज ध्यान करवानुं कह्युं छे जे अमारा आश्रितोए अमारुंज ध्यान करवुं पण बीजा कोइ देवनुं एटले कोइ अवतार मात्रनुं ध्यान करवुं नहि एम पतिव्रतापणे निष्ठा राखवी ते (लो० ११ ना ३ ना बीजा प्रश्नमां) पण कह्युं छे अने सिद्धगतिने पाम्या एवा साधुनुं पण न करवुं एम कह्युं छे.

६ प्र० आ अमारी आज्ञा पाळशे तेने श्रीकृष्णनारायणने विषे नारद, लक्ष्मी, राधिका तथा गोपियोना जेवी भक्ति थशे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते श्रीकृष्णनारायण कोने कह्या हशे? अने नारदादिकना जेवी भक्ति थाशे एम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

६ उ० श्रीकृष्णनारायण पोताने कह्या छे अने जेवी भक्ति नारदने तथा लक्ष्मी आदिकने एमना

इष्टदेवने विषे हती तेवी भक्ति अमारी आज्ञा पाळशे एवा जे अमारा आश्रित तेमने अमारे विषे थाशे एम कह्युं छे. ॥ १५२ ॥

संवत् १८७८ ना पोष वदि १४ चौदशने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदिरनी आगळ विराजमान हता अने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळो चोफाळ ओढीने ते उपर छिंटनी रजाइ ओढी हती ने मस्तक उपर श्वेत पाघ बांधी हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने परमहंस ताळ, मृदंग, वजाडीने कीर्तन बोलता हता.

पछी श्रीजीमहाराज परमहंस मत्ये बोल्या जे आज तो अमारा उतारामां अमारी पासे रहेनारा जे सोमलाखाचर आदिक हरिभक्त तेमने अमे एक प्रश्न पुछयो छे तेनो सर्वे परमहंस मळीने उत्तर करो. पछी परमहंसे कह्युं जे, हे महाराज ! ए प्रश्न
१ अमने संभळावो. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) समाधिनिष्ठ पुरुष थाय छे तेने तो माया थकी पर स्थिति थाय छे अने भगवानना स्वरूपनो पण दृढ संबंध रहे छे माटे ए समाधिनिष्ठने तो ज्ञान शक्ति तथा देह इंद्रियोनी शक्ति ते वृद्धि पामी जोइए, शामाटे जे माया थकी जे चोवीश तत्त्व थयां छे ते जड चैतन्य रूप छे पण एकलां जड न कहेवाय, तेम एकलां चैतन्य पण न कहेवाय, अने ते तत्त्वमां शक्ति पण सरखी न कहेवाय, इंद्रियो थकी अंतःकरणमां जाणपणुं विशेष छे अने अंतःकरण थकी इंद्रियो अंतःकरणनो द्रष्टा जे जीव तेमां ज्ञान विशेष छे ते जीवने ज्यारे समाधि थाय छे त्यारे इंद्रियो अंतःकरणना द्रष्टापणानो त्याग करीने माया पर जे ब्रह्म ते सरखो ए जीव चैतन्य थाय छे अने भगवानना स्वरूपनो संबंध रहे छे ते समाधिवाळाने केटलाक एम समझे छे जे जेने समाधि थाय छे तेने तो मेरे समझण हती तेटली पण रहेती नथी, माटे ए समाधिवाळाने ज्ञान तथा देह इंद्रियोनी शक्ति वृद्धि पामे छे के नथी पामती ? ए प्रश्न छे. पछी परमहंसे जेवी जेनी बुध्धि पुगी तेणे तेवो उत्तर कर्यो पण श्रीजीमहाराजना प्रश्ननो उत्तर थयो नहिं. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ल्यो अमे उत्तर करीए ए प्रश्नना तो एम उत्तर छे जे, साक्षी जे ब्रह्म ते तो मायामांथी उत्पन्न थयुं एवुं जे चोवीश तत्त्वात्मक ब्रह्मांड तेने विषे प्रवेश करीने तेने चैतन्यमय करे छे अने तेने सर्वे क्रिया करवानी सामर्थि आपे छे अने ते ब्रह्मनो एवो स्वभाव छे जे, काष्ठ तथा पाषाण जेवुं जड होय तेने विषे प्रवेश करे त्यारे ते चाले हाले एवुं थइ जाय छे. (१) ते ब्रह्म संघाथे समाधिए करीने तुल्य भावने पामे त्यारे ए जीव पण ब्रह्मरूप १ कहेवाय छे ने तेने ज्ञाननी वृध्धि थाय छे. अने इंद्रियोनी शक्ति तो ज्यारे तप ने नि-

वृत्ति धर्म ने वैराग्य तेणे युक्त होय तेने शुकजीना जेवी सिध्धदशा प्राप्त थाय छे अने जेने तप तथा निवृत्ति धर्म तथा वैराग्य तेनुं सामान्यपणुं होय अने धर्म, अर्थ ने काम रूप जे प्रवृत्ति मार्ग तेने विषे रह्यो होय तेने तो समाधि थाय तोय पण एकलुं ज्ञानज वृध्धि पामे पण इंद्रियोनी शक्ति वृध्धि पामीने सिध्धदशा न आवे, ने जेम जनकराजा ज्ञानी हता तेवो ज्ञानी थाय पण प्रवृत्तिमार्गवाळाने नारद सनकादिक शुकजीना जेवी सिध्धदशा न पमाय अने जे सिध्ध होय ते तो श्वेतद्वीपादिक जे भगवाननां धाम तेने विषे एने एज शरीरे करीने जाय अने लोक अलोक सर्वे ठेकाणे एनी गति होय, अने प्रवृत्ति मार्गवाळाने तो जनकनी पेठे केवळ ज्ञाननीज वृध्धि थाय छे पण ज्ञान घटतुं नथी, अने जेम श्रीकृष्ण भगवाने गीतामां कह्युं तेम तो थाय छे, त्यां श्लोक छे ।। या निशा सर्व भूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।। यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ।। १ ।। ए श्लोकनो ए अर्थ छे जे, जेने विषे भूत प्राणी मात्र सुता छे तेने विषे संयमी पुरुष जाग्या छे अने जेने विषे भूत प्राणी मात्र जाग्या छे तेनी कोरे संयमी पुरुष सुता छे, माटे जे पुरुषनी अंतरात्मा सन्मुख दृष्टि वर्त्तती होय तेने देह, इंद्रियो, अंतःकरणनी कोरे शून्य भाव वर्ते छे तेने देखीने अणसमझु होय ते एम जाणे जे, समाधिवाळाने ज्ञान ओछुं थइ जाय छे पछी रजोगुण, तमोगुण तथा मलीन सत्त्वगुणमां रहीने आ प्रश्ननो उत्तर करवा जाय तेने एमज सुझे जे, समाधिवाळाने ज्ञान ओछुं थइ जाय छे पण एम नथी जाणतो जे हुं देहाभिमानी छुं ते मूर्खाइमांथी कहुं छुं. माटे समाधिवाळो तो देह इंद्रियो, अंतःकरणथी जुदो पडीने वर्ते छे तोपण ज्ञाननी वृध्धि थाय छे अने पाछो इंद्रियो अंतःकरणमां आवीने वर्ते तोपण पोताने समाधिने विषे जे ज्ञान थयुं छे तेनो नाश थाय नहिं अने तप, निवृत्ति धर्म ने वैराग्य तेने ग्रहण करीने प्रवृत्तिमार्गनो त्याग करे तो जेम ज्ञान वृध्धि पाम्युं छे तेम इंद्रियो, अंतःकरणनी शक्तियो पण वृध्धि पामे अने नारद सनकादिक शुकजीना जेवी सिध्धगतिने पण पामे. (२) इति वचनामृतम्. ।। २० ।। (१५३)　　२

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां साक्षी जे ब्रह्म, कहेतां अमे, लोढाने विषे अग्निनी पेठे, ब्रह्मांडने विषे प्रवेश करीने सर्वेने सर्व क्रिया करवानी सामर्थी आपीए छीए. [१] अने समाधिए करीने अमारी साथे तुल्य भावने पामे त्यारे ते जीव ब्रह्मरूप कहेवाय छे ने तेने ज्ञाननी वृद्धि थाय छे अने तप, निवृत्तिधर्म ने वैराग्य तेणे युक्त होय तेने शुकजीना जेवी सिद्धदशा आवे छे ने सर्वत्र गति थाय छे अने देहाभिमानी जीव होय ते एम जाणे छे जे, समाधिवानने ज्ञान ओछुं थइ जाय छे पण समाधिवान इंद्रियो, अंतःकरणथी जुदो पडीने वर्ते छे तोपण ज्ञान वृद्धि पामे छे अने पाछो तेमां मळीने वर्ते तोपण समाधिमां थएलुं ज्ञान नाश थतुं नथी अने ए समाधिवान प्रवृत्ति मार्गनो त्याग

करीने तपादिके युक्त थाय तो अमारा मुक्तना जेवी सिद्धदशा पामे, जेम पूर्वे नारद सनकादिक शुकजी पाम्या छे तेम. (२) बाबतो छे. ॥ १५३ ॥

संवत् १८७८ ना फागण शुदि १५ पुन्यमने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ विराजमान हता अने श्वेत सेस पहेर्यो हतो ने श्वेत चादर ओढी हती तथा श्वेत पाघ बांधी हती अने श्रीजीमहाराजना मुखारविंदनी आगळ प्रेमानंदस्वामी आदिक सर्वे परमहंस विष्णुपद बोलता हता.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, [१] कीर्तन रहेवा द्यो ने सर्वे सुरत देइने सांभळो एक वार्ता करीए छइए जे जेटला कल्याणने अर्थे व्यासजीए ग्रंथ कर्या छे ते सर्वे सुरत राखीने अमे सांभळ्या ते सर्वे शास्त्रमां एज सिध्धांत छे अने जीवना कल्याणने अर्थे पण एटलीज वात छे जे आ सर्व जगत् छे तेना कर्त्ता हर्त्ता एक भगवान छे अने ए सर्वे शास्त्रने विषे भगवानना चरित्र छे कां भगवानना संतना चरित्र छे अने वर्णाश्रमना धर्मनी जे वार्त्ता छे अने तेनुं फळ जे धर्म, अर्थ ने काम छे तेणे करीने कांइ कल्याण थातुं नथी अने केवळ वर्णाश्रमना धर्म वर्ते तो संसारमां कीर्ति थाय ने देहे करीने सुखीयो रहे एटलुंज फळ छे. (१) अने कल्याणने अर्थे तो भगवानने सर्व १
कर्त्ता हर्त्ता जाणवा एज छे. [२] अने जेवुं परोक्ष भगवानना रामकृष्णादिक अवतारनुं २
महात्म्य जाणे छे तथा नारद, सनकादिक, शुकजी जडभरत, हनुमान, उध्धव इत्यादिक जे परोक्ष साधु तेनुं जेवुं महात्म्य जाणे छे तेवुंज प्रत्यक्ष एवा जे भगवान तथा ते भगवानना भक्त साधु तेनुं महात्म्य समझे तेने कल्याणना मार्गमां कांइ समझवुं बाकी रहुं नहि ते आ वार्ता एक वार कहो समझो अथवा लाखवार कहो समझो आज समझो अथवा लाख वर्ष केडे समझो पण ए वात समझ्येज छुटको छे अने नारद, सनकादिक, शुकजी, ब्रह्मा, शिव एमने पुछो तो पण डाह्या छे ते अनेक वातनी युक्ति लावीने प्रत्यक्ष भगवान ने प्रत्यक्ष संत तेनेज कल्याणना दाता बतावे अने जेवुं परोक्ष भगवान ने परोक्ष संतनुं महात्म्य छे तेवुंज प्रत्यक्ष भगवान ने प्रत्यक्ष संतनुं महात्म्य बतावे अने एटलो जेने दृढ निश्चय थयो होय तेने सर्वे मुद्दो हाथ आव्यो अने कोइ काळे ते कल्याणना मार्ग थकी पडे नहि, जेम ब्रह्मा, शिव, बृहस्पति ने पराशरादिक ते कामादिके करीने धर्म थकी पड्या तो पण प्रत्यक्ष भगवान ने प्रत्यक्ष संत तेनो परोक्षना जेवो जो महात्म्ये युक्त निश्चय हतो तो कल्याणना मार्गमांथी पड्या नहि, माटे सर्वे शास्त्रनुं रहस्य आ वार्त्ता छे. (२) अने तेज दिवस सांजने समे स्वामी श्री सहजानंदजीमहाराज श्री गढडा ३
मध्ये दादाखाचरना दरबारमांथी घोडीए चडीने श्री लक्ष्मी वाडीए पधार्या हता ने त्यां

आंबाना वृक्ष हेठे ओटा उपर ढे'लिये विराजमान हता अने श्वेत खेस पहेर्यो हतो ने श्वेत चादर ओढी हती ने श्वेत पाघ माथे बांधी हती अने ते पाघने विषे पीळा पुष्पनो तोरो विराजमान हतो ने कान उपर मोगराना पुष्पना गुच्छ विराजमान हता अने कंठने विषे मोगराना पुष्पनो हार विराजमान हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

२ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, सांभळो एक तमने प्रश्न पुछीए जे, (२) जीवने स्वप्न अवस्थाने विषे जे जे स्वप्नमां सृष्टि देखाय छे अने ते स्वप्ननी सृष्टिना जे भोग तेने जीव भोगवे छे ते ए सृष्टि रूपे ते जीव पोते थाय छे के ए जीव पोताना संकल्पे करीने स्वप्नने विषे ए सृष्टिने सृजे छे ? अने जेम जीवने छे तेमज सर्वे ब्रह्मादिक ईश्वर छे तेने पण स्वप्न सृष्टि छे ते पोते ए सृष्टिरूपे थाय छे के संकल्पे करीने सृजे छे के ए जीव ईश्वर थकी पर जे परमेश्वर तेज स्वप्ननी सृष्टिने सृजी आपे छे ? ए प्रश्ननो उत्तर करो. पछी जेवी जेनी बुध्धि तेवुं तेणे कह्युं पण कोणेय यथार्थ उत्तर थयो नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जीव तथा ईश्वर एमांथी कोइ स्वप्न सृष्टिने सृजता नथी अने पोते पण स्वप्न सृष्टि रूपे थाता नथी ए तो ए जीव ईश्वर थकी पर जे परमेश्वर कर्मफळप्रदाता छे ते ए जीव ईश्वरना कर्मने अनुसारे करीने ए स्वप्न सृष्टिने सृजे छे. [४] अने ए स्वप्न सृष्टिने विषे जे अस्थिरपणुं छे ने भ्रांतपणुं छे ते तो देशने योगे ४ करीने प्रवर्त्ते छे, केमजे कंठ देश छे ते एवोज छे जे ए स्थळमां अनंत भातनी एवी सृष्टि देखाइ आवे जेम काचनुं मंदिर होय तेमां एक दीशे दीवो कर्यो होय तो अनेक दीवा देखाइ आवे तेम कंठदेशने योगे करीने एक संकल्प होय ते अनंत रीते देखाय छे अने जे ज्ञानी होय ते तो ज्यां देशनुं प्रधानपणुं होय त्यां देशनुंज समझे अने काळनुं प्रधानपणुं होय त्यां काळनुंज समझे अने कर्मनुं प्रधानपणुं होय त्यां कर्मनुंज समझे अने परमेश्वरनुं प्रधानपणुं होय त्यां परमेश्वरनुंज समझे अने मूर्ख होय ते तो जे कोइक एक वात समझाइ गइ तेनेज मुख्य जाणे जो काळनी वात समझाणी होय तो काळनेज मुख्य जाणे अने कर्मनी वात समझाणी होय तो कर्मने मुख्य जाणे अने मायानी वात समझाणी होय तो मायाने मुख्य जाणे पण ज्यां जेवुं प्रधानपणुं तेने त्यां जुदुं जुदुं मूर्खने समझतां न आवडे अने ज्ञानी होय ते तो जे ठेकाणे जेवुं प्रधानपणुं होय ते ठेकाणे तेवुंज प्रधानपणुं ले अने परमेश्वर छे ते तो देश, काळ, कर्म, माया ए सर्वेना प्रेरक छे अने पोतानी इच्छाए करीने देशकाळादिकनुं प्रधानपणुं रहेवा दे छे पण सर्वे परमेश्वरने आधारे छे, जेम शिशुमार चक्र छे ते ध्रुवंडळने आधारे छे, अने जेम प्रजा सर्वे राजाने आधारे छे तेवां दिवान होय तथा वजीर होय तेवुं राजा चालवा दे तेवळुं

चाले पण न चालवा दे त्यारे एक अणुमात्र पण न चाले तेम देश, काळ, कर्म, माया तेनुं परमेश्वर चालवा दे तेटलुं चाले पण परमेश्वरना गमता बहार अणुमात्र पण न चाले, माटे सर्व कर्त्ता ते परमेश्वरज छे. एटली वार्ता करीने श्रीजीमहाराज पाछा दरबारमां पधारता हवा. (५) ५

पछी वळी तेज दिवसे अर्ध रात्रिए श्रीजीमहाराज पोते साधुनी जायगाए पधार्या हता, पछी सर्व साधु श्रीजीमहाराजने नमस्कार करीने पासे बेठा. पछी ते मुनि प्रत्ये
३ श्रीजीमहाराज एम बोल्या जे, (३) अमने एक विचार उपज्यो ते सारु आ टाणे तम पासे आव्या छइए जे अमारा मनमां एम समझाय छे जे आ संसारने विषे जेने गाम गरास होय वा धन दोलत होय एज अतिशे दुःखीयो छे अने जेने धन, दोलत, राज
न होय तेज सुखीयो छे. (६) माटे आपणे पण श्रीनरनारायणनुं मंदिर श्रीनगरने विषे ६
कराव्युं छे अने बीजां पण थावानां छे, माटे ते निमित्त श्रद्धा विना कोइने मेरवुं नहि ने श्रीनरनारायण देवनी इच्छा हशे तो मंदिर थाशे अने इच्छा नहि होय तो नहि थाय पण ते सारु आपणे तो कोइ प्रकारनो क्लेश न थाय तेम करवुं ने समैयो आवे त्यारे जन्माष्टमी आदिक उच्छवने दिवस श्रीनरनारायणनी इच्छाए करीने कोइ वार हजारुं ने लाखुं रुपैयानी सामग्रीए करीने उच्छव थाय ने कोइ फेरे तुळसीनुं पत्र मुकीने उच्छव थाय पण जे सहेजे थाय ते खरुं पण आग्रह करीने कोइ बात करवी नहि, अने ए श्री नरनारायण देवने पोतानी श्रद्धाये करीने धरती, वाडी, गाम, गरास आपे ते सुखे आपे पण आपणे कोइने बळात्कारे मेरवुं नहि. [७] ७

४ पछी श्रीजीमहाराजे प्रसन्न थइने साधुने प्रश्न पुछयो जे, (४) एकांतिक प्रभुनो भक्त केने कहीए ? पछी मुक्तानंदस्वामीए आवड्यो एवो उत्तर कर्यो पण समाधान थयुं नहि, पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एकांतिक भक्त तो ते खरो जे पोताने ब्रह्मरूप मानीने, स्वधर्मादिक अंगे युक्त जे भक्ति तेणे युक्त थको परब्रह्म एवा जे श्रीपुरुषोत्तम तेमनुं ध्यान, स्मरण ने उपासना तेने कर्या करे अने देहे करीने जेटलां ईश्वरे वर्त्तमान कह्यां होय तेमां फेर पडवा दे नहि, एवो होय ते एकांतिक भक्त जाणवो.(८) ८
एवी एकांतिक भक्तिनी प्रवृत्ति क्यारेक तो सृष्टिमां न होय तो श्रीनरनारायणने विषे रहे छे अने श्रीनरनारायण पोते एकांतिक भक्तनी पेठे वर्तीने पोताना शरणागत एवा जे भक्त तेने शिखवाडे छे ने एवा एकांतिक तो सत्संग विना बीजे नथी. (९) अने ९
बीजे तो कोइ मतमां उपासना छे तो आत्मज्ञान ने त्याग नथी अने कोइ मतमां आत्मज्ञान छे तो त्याग ने उपासना नथी ने कोइ मतमां त्याग छे तो आत्मज्ञान ने उपासना नथी अने आ समामां सत्संगमां तो सर्वे अंगे संपूर्ण एकांतिक भक्त घणा छे,

एम वात करीने श्रीजीमहाराज पोताने उतारे पधार्या.(१०) इति वच० ॥२१॥१५४॥१०

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (४) छे. तेमां त्रण कृपावाक्य छे. तेमां पहेलामां श्रीजी-महाराजे कह्युं छे जे, केवळ वर्णाश्रम धर्मे करीने संसारमां कीर्ति थाय ने देहे करीने सुखीयो रहे. (१) अने अमने सर्व कर्त्ता हर्त्ता जाणे तोज कल्याण थाय. [२] अने जेम रामकृष्णादिक परोक्ष अवतार थया छे तेमने वैकुंठ गोलोकना पति जाणे छे अने तेमना भक्तोने ते ते धामना पार्षदो जाणे छे, तेम अमने अक्षरधामना धामी समझे अने अमारा भक्तोने अमारा धामना पार्षदो जाणे अने अमने सर्व कर्त्ता हर्त्ता जाणे तो कोइ काळे कल्याणना मार्गथी पडेज नहि. (३) बीजामां जीव वैराज पुरुष ने प्रधान पुरुष ए सर्वेने स्वप्न सृष्टि तथा स्वप्न सृष्टिना भोग ते मूळ पुरुष द्वारे अमे सृजी आपीए छीए (४) अने देशकाळादिकनुं अमे चालवा दइए तेटलुंज चाले. [५] त्रीजामां जेने गाम, गरास, धन, दोलत होय ते दुःखीयो छे अने न होय ते सुखीयो छे. [६] अने देवने अर्थाए करीने धरती, वाडी, गाम, गरास कोइ आपे तो भले पण आग्रह पूर्वक बळात्कारे प्रेरणा न करवी. (७) चोथा प्रश्नमां जे पोताने ब्रह्मरूप मानीने परब्रह्म एवा जे अमे ते अमारी स्वधर्मादिक अंगे युक्त भक्ति तथा ध्यान, स्मरण ने उपासना करे अने जेटलां वर्त्तमान अमे कह्यां छे तेमां फेर पडवा दे नहिं ते अमारो एकांतिक भक्त छे. [८] अने ज्यारे अमे प्रगट थइए त्यारे एकांतिक भक्ति प्रवर्तावीए छीए. (९) अने बीजा मतोमां तो एकांतिक भक्ति नथी. [१०] बाबतो छे.

१ प्र० ($\frac{१}{२}$ पहेला प्रश्नमां) अमने सर्व कर्त्ता हर्त्ता जाणवाथी कल्याण थाय, एम श्रीजी-महाराजे कह्युं ते श्रीजीमहाराजने कर्त्ता हर्त्ता जाणे अने वर्णाश्रमना धर्म न पाळे तो कल्याण थाय के नहि ?

१ उ० श्रीजीमहाराजने सर्व कर्त्ता हर्त्ता जाणे अने वर्णाश्रमना धर्म पण दृढ करीने पाळे तोज कल्याण थाय पण ए बेमांथी एक न होय तो कल्याण न थाय. ते (म० $\frac{३५}{४}$ मां) अमारी उपासना होय पण जो तेमां धर्म न होय तो तेनुं कल्याण न थाय अने तेने चंडाळ कह्यो छे माटे उपासना तथा धर्म बेय राखवां तोज कल्याण थाय.

२ प्र० ($\frac{१}{३}$ पहेला प्रश्नमां) नारद, सनकादिक, शुकजी, ब्रह्मा, शिवने पुछो तो ते प्रत्यक्ष भगवान ने प्रत्यक्ष संतनुं महात्म्य बतावे एम कह्युं ते ए नारदादिक तो दृष्टिगोचर नथी माटे एमने शी रीते पुछाय अने ए श्रीजीमहाराजनुं महात्म्य शी रीते बतावी शके ?

२ उ० जेम नारदादिकने जे जे अवतारो मळया हता तेमनुं महात्म्य तेमणे बताव्युं हतुं तेमज आज अमारा संत तथा अमारा हरिभक्त छे तेमने पुछो तो प्रत्यक्ष भगवान एवा जे अमे ते अमारो तथा अमारा मुक्तनो महिमा बतावे, एम नारदादिकना दृष्टांते पोताना संत हरिजनोने कह्या छे.

३ प्र० केवी रीते प्रेरणा करे ते बळात्कारे प्रेर्या कहेवाय ?

३ उ० देवनी सेवा हरिजननी श्रद्धाथी विशेष करावावानो आग्रह करे ते बळात्कारे प्रेर्या कहेवाय.

४ प्र० [चोथा प्रश्नमां] नरनारायण पोते वर्तीने शरणागतने एकांतिक भक्ति शिखवाडे छे ते किया जाणवा ?

४ उ० आ ठेकाणे श्रीजीमहाराजे पोतानेज नरनारायण नामे कह्या छे ते पोताना भक्तोने एकांतिक भक्ति शिखवे छे. आ नामनो खुलासो (प्र० ८ ना सातमा प्रश्नोत्तरमां) कर्यो छे. ।। १५४ ।।

संवत् १८७८ ना फागण वदि १० दशमीने दिवस श्रीजीमहाराज अर्धरात्रिने समे जाग्या ने श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ दक्षिणादे मुखारविंदे ढोलिया उपर विराजमान थया हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने ते समे सर्वे साधु तथा हरिभक्तने तेडाव्या पछी पोताना मुखारविंदनी आगळ ते सर्वेनी सभा भराइने बेठी हती.

१ त्यारे श्रीजीमहाराज साधु प्रत्ये बोल्या जे, [१] एक वार्ता करीए ते सांभळो जे, जेम बे सेना होय ने ते परस्पर लडवाने तैयार थई होय ने बेयनां निशाण सामसामां रोप्यां होय पछी बेयना मनमां एम होय जे आपणुं निशान छे ते एना निशानने ठेकाणे मांडीए ने एनुं निशान लइ लेइए पण एवो विचार नथी थातो जे, एना निशान लगी जाशुं तेमां तो केटलाकनां माथां पडशे ने लोहीनी नदी चालशे तेनो तो एने भय नथी, कां जे शूरवीर होय तेने मरवानी बीक होय नहि अने जे कायर छे तेतो भागवाना हजारो विचार करे छे अने एम पण विचार करे छे जे आपणी फोज जितशे तो कोइकनुं धन हथियार हशे ते लुंटी लेशुं; अने ते बेय राजाना जे शूरवीर छे तैने तो मरवानो पण भय नथी ने लुंटवानो पण लोभ नथी पण तेनुं निशान लेवुं ने पोतानी जित करवी एटोज एक संकल्प छे. एनो दृष्टांत छे ने एनुं सिध्धांत तो ए छे जे, निशान ने ठेकाणे तो भगवाननुं धाम छे ने राजाना शूरवीरने ठेकाणे तो भगवानना दृढ भक्त छे तैने तो आ संसारने विषे मान थाओ अथवा अपमान थाओ, देहने सुख थाओ अथवा दुःख थाओ, शरीर रोगी रहो अथवा निरोगी रहो, देह जीवो अथवा मरो पण एने कोइ जातनो हैयामां धाट नथी जे आपणे आटलुं दुःख थाशे के आपणे आटलुं सुख थाशे ए बेमांथी कोइ जातनो हैयामां घाट नथी. ए भक्त जनना हैयामां तो एज दृढ निश्चय छे जे आ देहे करीने भगवानना धाममां निवास करवो छेपण वचमां क्यांइ लोभावुं नथी. अने कायरने ठेकाणे जे देहाभिमानी एवा भगवानना भक्त छे तैने तो प्रभु भजवामां हजार जातना घाट थाय छे जे जो करडां वर्तमान थाशे तो नहि नभाय ने सुगम वर्तमान हशे तो नभाशे, अने वळी एवो पण विचार करे जे आवो उपाय करीए तो संसारमां पण सुखीया थइए अने नभाशे तो हळवा हळवा सत्संगमां नभशुं,

एवो भक्त होय ते कायरने ठेकाणे जाणवो. अने शूरवीर जे भगवानना दृढ भक्त होय तेने तो पिंड ब्रह्मांड संबंधी कोइ जातनो घाट न थाय. (१) १

२ पछी श्रीजीमहाराजे पोताना वृत्तांतनी वार्त्ता करवा मांडी जे,(२) अमे अमदावादमां श्रीनरनारायणदेवनी प्रतिष्ठा करवा गया हता त्यारे हजारो माणसनो मेळो भराणो हतो पछी ज्यारे श्रीनरनारायण देवनी प्रतिष्ठा थइ रही अने अमदावादना ब्राह्मण चोराशी जमी रह्या पछी अमे सावदा थइने चाली निसर्या ते जेतलपुरमां जइने रात रह्या. पछी त्यां जइने एवो विचार करवा मांडयो जे जेटलां माणस देख्यां छे ने जेटली प्रवृत्ति देखी छे तेने टाळी नाखवी, पछी तेने विसार्याने अर्थे हैयामां अतिशे दुःख थयुं तेणे करीने शरीरे पण मांदा थइ गया.पछी त्यां थकी धोळके जइने रात रह्या. अने धोळकाना चाल्या एने ए विचारमां गाम कोठने पासे गणेश धोळकानी राण्योमां जइने रात रह्या ते विचार एवो करवा मांडयो जे, देहनी स्मृति न रही पछी विचारतां विचारतां सर्वे प्रवृत्तिने विसारी मेली ने जेवा अमे कांकरीये तलाव उतर्या नहोता ने मेळो पण भराणो नहोतो ने त्यारे कोइ जातनो घाट नहोतो तेवी रीते सर्वे घाट टाळी नाख्या. (२) अने ज्यारे लौकिक घाट मटी गया त्यारे अंत २ र्दृष्टि रहेवा मांडी पछी अलौकिक आश्चर्य देखावा मांडयां अने देवता संबंधी जे भोग छे ते देखावा मांडया ने अनंत प्रकारमां विमान ने अनंत प्रकारनी अप्सरा अने अनंत प्रकारनां वस्त्र ने अनंत प्रकारना अलंकार, ते जेम आंही मर्त्य लोकने विषे छे तेमज त्यां देखावा लाग्या पण अमारा अंतरमां तो एक श्रीनरनारायण विना बीजुं कांइ गम्युं नहि, ने जेम आंहीना पंच विषय ते अमने तुच्छ भास्या ने तेमां अमारुं मन लोभाणुं नहि तेमज देवलोक ब्रह्मलोक पर्यंत अमारुं मन क्यांइ लोभाणुं नहि तेने देखीने देवता सर्वे अमारां वखाण करवा मंडया जे तमे श्रीनरनारायणना एकांतिक भक्त खरा, केम जे तमारुं मन भगवानने मुकीने क्यांइ लोभातुं नथी. पछी तेमनां वचन सांभळीने अमारा हैयाने विषे सुधी हिंमत आवी पछी अमे मनने कह्युं जे तारुं जेवुं रूप छे तेवुं हुं जाणुं छुं जो भगवान विना बीजा पदार्थनो घाट घडयो तो तारा भुका करी नाखीश, तेमज बुद्धिने कह्युं जे, भगवान विना बीजो निश्चय कर्यो तो तारी वात छे ? तेमज चित्तने कह्युं जे, भगवान विना बीजुं चिंतवन कर्युं तो तारा पण भुका करी नाखीश, तेमज अहंकारने कह्युं जे, भगवानना दासत्वपणा विना बीजुं अभिमान थयुं तो तारो नाश करी नाखीश. पछी तो अमारे जेम आ लोकना पदार्थनी अत्यंत विस्मृति थइ हती तेमज देवलोक, ब्रह्मलोकना पदार्थनी पण अत्यंत विस्मृति थइ गइ, अने ज्यारे ए सर्वे संकल्प टळी गया त्यारे संकल्पनो मंदवाड हतो ते पण टळी गयो;

एवी रीते भगवाननो भक्त होय तेने वर्णव्युं एम श्रीजीमहाराजे पोतानुं वृत्तांत भक्तजनना कल्याणने अर्थे कह्युं ने पोते तो साक्षात् श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम नारायण छे. (३) ३

२ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (३) वासुदेवमहात्म्यने विषे एकांतिक भक्तना धर्म कह्या छे जे एकांतिक भक्त होय ते पोतानुं रूप देह माने नहि ने पोताने चैतन्य रूप माने अने स्वधर्म, ज्ञान ने वैराग्य तेणे सहित भगवाननी भक्ति करे ने एक भगवानविना बीजा कोइ पदार्थनी वासना राखे नहि.(४)अने ज्यारे ए भगवानने भजीने ४ आवी रीतनो साधु थयो त्यारे साधु थकी कांइ बीजी मोटी पदवी नथी, जेम राजा होय ने तेनी राणी होय ते जेटलामां राजानुं राज्य छे तेटलामां राणीनुं राज्य पण कहेवाय अने जेवो राजानो हुकम चाले तेवोज राणीनो पण हुकम चाले तेम भगवाननो जेवो प्रताप छे तेवो ए साधुनो पण प्रताप छे. माटे तुच्छ एवां जे संसारनां सुख ते साधुने इच्छवां नहि, कां जे ए साधु ज्यारे भगवानना धामने पामे छे त्यारे अनंतकोटी ब्रह्मांडना पति जे ब्रह्मादिक ईश्वर ते भगवानने अर्थे जेम अनंत प्रकारनी भेट सामग्रीओ लावे छे तेम ए साधुने अर्थे पण लावे छे ने भगवानने प्रतापे करीने ए साधु अलौकिक ऐश्वर्य सामर्थिने पामे छे एवो मोटो विचार हैयामां राखीने एक भगवानविना बीजुं कांइ पण मनमां इच्छवुं नहि, अने जेम हाथमां चिंतामणि आवी त्यारे ते चिंतामणिने यत्न करीने राखवी, केम जे जो हाथमां चिंतामणि छे तो जे पदार्थने इच्छशे ते पदार्थने आपशे तेम भगवानना भक्तने भगवाननी मूर्तिरूपी चिंतामणिने झाली राखवी पण तेने छुकवीज नहि तो एने सर्वे वातनी सिद्धि थाशे. [५] इति ५ वचनामृतम्. ॥२२॥ (१५५)

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य [३] छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे शूरवीर ने कायर भक्तनां लक्षण कह्यां छे. (१) बीजामां पोताने मिषे करीने पोताना भक्तने प्रवृत्ति टाळवानो उपाय बताव्यो छे. (२) अने अक्षरादिक कोइ ऐश्वर्यमां लोभावुं नहि. (३) त्रीजामां पोताना एकांतिक भक्तनां लक्षण कह्यां छे, [४] ने राजा ने राणीने दृष्टांते पोताना मुक्तोनो महिमा पोताना जेवोज कह्यो छे. (५) बाबतो छे.

१ प्र० बीजा प्रश्नमां नरनारायण देवनी प्रतिष्ठा करी तथा कांकरीयानी चोराशी करी ते लीलाने प्रवृत्ति कही अने तेने टाळी नाखवानुं कह्युं अने [प्र० १ मां] लीला संभारी राखवी एम कह्युं छे ते केवी रीते समजवुं ?

१ उ० [प्र० १ मां] अंतरमां मूर्ति देखाती होय तेने मूर्ति भुली जवाय माटे लीला संभारी राखवानुं कह्युं छे अने आमां आत्माने विषे मूर्ति सिद्ध करवानो उपाय बताव्यो छे जे, अमारी लीलाने पण विसारी दइने एकांतमां रहीने पोताना आत्माने ब्रह्मरूप मानीने तेने विषे अमारी मूर्ति धारीने मूर्ति सिद्ध करो तो मुक्त थवाय एम कह्युं छे.

२ प्र० श्रीजीमहाराज तो पोते भगवान छे,एमने प्रवृत्ति विसारी मुकी एम कहेवानो शो हेतु हसे ?

२ उ० पोताने उद्देशे करीने पोताना भक्तोने प्रवृत्ति विसारवानी रीत बतावी छे.

३ प्र० ($\frac{२}{६}$ बीजा प्रश्नमां) देवता कह्या ते किया जाणवा ? अने श्रीजीमहाराज तो पोते भगवान छे तेमने देवताए भक्त केम कह्या हशे ?

३ उ० आ ठेकाणे इंद्र तथा ब्रह्माने देवता कह्या छे. अने श्रीजीमहाराज एमना वैभवमां लोभाणा नहि तेथी देवोए अनुमान कर्युं जे आपणा वैभवमां लोभाता नथी माटे भगवाननना एकांतिक भक्त हशे एम जाणीने भक्त कह्या छे पण भगवान छे एम जाणी शक्या नहिं.

४ प्र० [$\frac{३}{४}$ त्रीजा प्रश्नमां] वासना कही ते वासना केटला प्रकारनी हशे ?

४ उ० मायिक भोगनी इच्छा ते मायिक वासना छे; अने मूळपुरुष,ब्रह्म, मूळअक्षर आदिकना ऐश्वर्यनी इच्छा ते ऐश्वर्यरूपी वासना छे. ए बे प्रकारनी वासना छे तेने टाळे त्यारे साधु एटले मुक्त थाय तेवा मुक्तने श्रीजीमहाराजे राणीने ठेकाणे कह्या छे.

५ प्र० ($\frac{३}{५}$ त्रीजा प्रश्नमां) अनंत कोटी ब्रह्मांडना पति ब्रह्मादिक भेट सामग्रि लावे छे ने अमारी तथा अमारा साधुनी प्रार्थना करे छे एम कह्युं ते किया जाणवा ?

५ उ० आ ठेकाणे मूळपुरुष तथा ब्रह्म तथा अक्षर तेमने ब्रह्मादिक ईश्वर कह्या छे.

६ प्र० अमारा साधु ज्यारे अमारा अक्षरधामने पामे छे त्यारे अनंतकोटी ब्रह्मांडना पतियो तेमनी प्रार्थना करे छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं अने (सा० ५ ना पहेला प्रश्नोत्तरमां) श्रीजीमहाराजना मुक्त विना कोइने श्रीजीमहाराजनी व्यतिरेक मूर्तिनो संबंध नथी एम कह्युं छे ते जो संबंध न होय तो भेट तथा प्रार्थना शी रीते करता हशे ?

५ उ० आमां श्रीजीमहाराजे पोताना भक्तनी मोटयप कही छे जे जेम अमारी प्रार्थना सर्वे करे छे तेमज अमारा मुक्तनी पण करे छे ते प्रार्थना आंहीज करे छे पण अक्षरधाममां जइने करे छे एम नथी कह्युं अने अक्षरधामने अमारा साधु पामे छे एम कह्युं छे तेतो ज्यारे पोताना आत्माने विषे श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनो साक्षात्कार थाय त्यारे ते अक्षरधामने पामी रह्यो छे माटे ज्यारे पोताना आत्माने विषे श्रीजीमहाराजनुं दर्शन थाय त्यारे अक्षरादिक पण प्रार्थना करे छे एम समजवुं. ॥ १५५ ॥

संवत् १८७८ ना ज्येष्ठ शुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेवनारायणना मंदिरनी आगळ बिराजमान हता ने मस्तक उपर धोळी पाघ बांधी हती ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) आजतो अमे मननुं रूप विचारी जोयुं ते मन जीवथकी जुदुं न देखाणुं मन तो जीवनीज कोइक किरण छे पण जीव थकी जुदुं

नथी. अने मननुं रूप तो एवुं देखाणुं छे, जेम उनाळामां लुक होय तथा जेम शियाळा-मां हिम होय तेवुं मननुं रूप देखाणुं, अने जेम माणसना देहमां लुक पेसे तथा हिम पेसे त्यारे ते माणस मरी जाय छे, तेम ए मन इंद्रियो द्वारे थइने ज्यारे विषय सन्मुख जाय छे, त्यारे ते विषय जो दुःखदायी होय तो मन तपीने उनाळानी लुक जेवुं थाय छे, अने ते विषय जो सुखदायक होय तो तेने विषे मन शियाळाना हिम जेवुं थाय छे, ते ज्यारे दुःखदायी विषयने भोगवीने लुक सरखुं उनुं थइने जीवना हृदयमां पेसे छे, त्यारे जीवने अतिशे दुःखीयो करीने कल्याणना मार्गमांथी पाडी नाखे छे,ए ते लुक लागीने मरे तेम जाणवुं; अने ज्यारे ए मन सुखदायी विषयमां सुखने भोगवे त्यारे टाढुं हिम सरखुं थइने जीवना हृदयमां पेसे छे, अने जीवने सुखीयो करीने कल्याणना मार्गथी पाडी नाखे छे, ए ते हिमाळानो वा आवे ने मरे तेम जाणवुं. माटे जेनुं मन भुंडा विषयने देखीने तपे पण नहि अने सारा विषयने देखीने टाढुं पण थाय नहि, एवी रीते जेनुं मन अविकारी रहेतुं होय तेने परम भागवत संत जाणवा. अने एवुं मन थावुं ए कांइ थोडी वात नथी अने मननो तो केवो स्वभाव छे तो जेम बाळक होय ते सर्पने अग्निने तथा उघाडी तरवारने झालवा जाय ते जो झालवा न देइए तो पण दुःखीयो थाय अने जो झालवा दइए तो पण दुःखीयो थाय तेम जो मनने विषय भोगववा न देइए तोपण दुःखीयुं थाय ने जो भोगववा देइए तोपण विमुख थइने अतिशे दुःखीयुं थाय, माटे जेनुं मन भगवानने विषे आसक्त थयुं छे ने विषयने योगे करीने टाढुं उनुं थातुं नथी तेनेज साधु जाणवा.[१]इति वचनामृतम् ॥२३॥ (१५६) १

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां जेनुं मन दुःखदायी विषयमां तपे नहि अने सुखदायी विषयमां टाढुं न थाय, एक अमारे विषेज आसक्त थाय तेज परम भागवत संत छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (१) बाबत छे.

१ प्र० आमां मनने जीवथी जुदुं न कह्युं, अने (लो० $\frac{१\ ४}{६}$ मां) मननो विश्वास न करवो एम कह्युं छे तथा (छे० $\frac{६}{६}$ मां) मनने जीवनुं मित्र कह्युं छे एम जोतां तो मन जीवथी जुदुं थयुं ते केवी रीते समजवुं ?

१ उ० मन आदिक इंद्रियोद्वारे जीवनी वृत्ति आवीने विषयने भोगवे छे एम (लो० २ ना बीजा प्रश्नमां) कह्युं छे अने (लो० १५ ना पहेला प्रश्नमां) पण देवताने इंद्रियो रूपे करीने जीव विषयने भोगवे छे एम कह्युं छे ने (म० $\frac{६\ ३}{६}$ मां) इंद्रियो अंतःकरणनो वृत्तियोने जीवनी वृत्ति कही छे, अने मनने विषे कर्त्तापणुं जीवनुं छे तेथी जीवनी वृत्तिनी ने मननी एकताये करीने आ ठेकाणे मनने किरण कहेल छे ॥१५६॥

संवत् १८७९ ना श्रावण शुदि ८ अष्टमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजीमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमांथी घोडीए चढीने श्रीलक्ष्मी वाडीए पधार्या

हता ने त्यां चोतरा उपर उत्तरादे मुखारविंदे विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठने विषे मोगराना पुष्पनो हार पहेर्यो हतो ने पाघने विषे मोगराना पुष्पनो तोरो धारण कर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी मुक्तानंदस्वामीए श्रीजीमहाराजने प्रश्न पुछयो जे, [१] हे महाराज ! भगवानने विषे अचळ निष्ठावाळो जे भक्त होय तेने कोइ जातनो विक्षेप आडो आवे के न आवे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे एक योगनिष्ठा छे ने बीजी सांख्यनिष्ठा छे तेमां योगनिष्ठावाळो जे भगवाननो भक्त ते भगवानना स्वरूपमां पोतानी अखंड वृत्ति राखे अने सांख्यनिष्ठावाळो जे भगवाननो भक्त तेतो मनुष्यनां सुख तथा सिद्ध, चारण, विद्याधर, गंधर्व, देवता ए सर्वेनां जे सुख तेने समझीराखे तथा चौद लोकनी माहिली कोरे जे जे सुख छे ते सर्वेने प्रमाण करी राखे जे आ सुख ते आटलुंज छे अने ए सुखनी केडे जे दुःख रह्युं छे तेलुं पण प्रमाण करी राखे पछी दुःखे सोतां एवां जे सुख ते थकी वैराग्य पामीने परमेश्वरने विषेज दृढ प्रीति राखे, एवी रीते सांख्यनिष्ठावाळाने तो समझणनुं बळ होय अने योगनिष्ठावाळाने तो भगवानना स्वरूपमां अखंड वृत्ति राखवी तेनुंज बळ होय पण कोइक विषम देशकाळादिकने योगे करीने कोइक विक्षेप आवे तो भगवानना स्वरूपमां वृत्ति रहेती होय ते क्यांइक बीजे पण चोटी जाय, केम जे योगनिष्ठावाळाने समझणनुं बळ थोडुं होय माटे कांइक विघ्न थइ जाय खरुं; अने सांख्यनिष्ठा ने योगनिष्ठा ए बेय जो एकने विषे होय तो पछी कांइ वांधोज न रहे. अने एवो जे भगवाननो भक्त होय तेतो भगवाननी मूर्ति विना बीजा कोइ पदार्थमां लोभायज नहि अने एम समझे जे, भगवाननुं जे अक्षर धाम ने ते धामने विषे रही एवी जे भगवाननी मूर्तिने ते धामने विषे रह्या एवा जे भगवानना भक्त ते विना जे जे लोक छे ने ते लोकने विषे रह्या एवा जे देव छे ने ते देवना जे वैभव छे ते सर्वे नाशवंत छे एम जाणीने एक भगवानने विषेज दृढ प्रीति राखे छे माटे एवा भक्तने कोइ जातनो विक्षेप आवतो नथी. [१] इति व०॥२४॥(१५७) १

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां सांख्यनिष्ठावाळा भक्त सर्वेना सुख दुःखनुं प्रमाण करी राखे ने तेमांथी वैराग्य पामीने अमारे विषे प्रीति राखे एवुं समझणनुं बळ होय; अने योगनिष्ठावाळाने विषम देशकाळे करीने अमारी मूर्तिमांथी बीजे वृत्ति चोटी जाय अने ए बे निष्ठा भेळी होय तो अमारा विना बीजे लोभाय नहि, केम जे अमे तथा अमारा मुक्त ने अमारुं अक्षर धाम ते विना बीजा देवोना वैभव ते सर्वने ते नाशवंत जाणे ने अमारे विषेज प्रीति राखे माटे तेने विक्षेप आवेज नहि एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (१) वाक्य छे.

१ प्र० अमे ने अमारा मुक्त ने धाम ते विना बीजा लोक,देव ने वैभव सर्वे नाशवंत जाणे एम कह्युं त्यारे तो ईश्वर, ब्रह्म ने अक्षर ते सर्वे देव संज्ञामां भेळा आवी गया तेतो अविनाशी छे तेने नाशवंत केम कहेवाय ?

१ उ० श्रीजीमहाराजे नाशवंत छे एम नथी कह्युं पणो जेनी श्रीजीमहाराजने आकारे वृत्ति थइ होय ते भक्त एम समझे, केमके एनी दृष्टि श्रीजीमहाराजने आकारे थइ गइ होय तेथी तेने बीजुं कांइ भासेज नहि. (ते प्र० ५१ मां) पुरुषोत्तम विना बीजुं कांइ भासेज नहि तेनी दृष्टिए कह्युं छे अने प्रकृति पुरुषनुं कार्य तो नाशवंत छेज. ॥ १५७ ॥

संवत् १८७९ना श्रावण वदि ६ छठने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां दक्षिणादे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराजे सर्वे परमहंसने कह्युं जे सांभळो अमे एक प्रश्न पुछीए छइए
१ जे (१) एक तो भगवाननो भक्त त्यागी छे ने देहेकरीने तो सर्व वर्त्तमान दृढ राखे छे ने अंतरमां तो विषय भोगववानी वासना अतिशे तीखी छे तोपण देहे करीने तो भ्रष्ट थातो नथी एवो तो त्यागी छे ने बीजो भक्त छे ते तो गृहस्थाश्रमी छे ने तेने तो देहे करीने धन स्त्रीनो प्रसंग छे ने अंतरमां तो सर्वे प्रकारे निर्वासनिक छे ए बेयजणा ज्यारे देह मुकशे त्यारे ए बेय शी गतिने पामशे ? ए बेय ते सरखी गतिने पामशे के अधिक न्यून थाशे, ए बेयनो विक्तिए करीने जुदो जुदो उत्तर आपो ? पछी गोपाळानंदस्वामी बोल्या जे, ए त्यागी ज्यारे देह मुकशे त्यारे एने विषय भोगववानी अंतरमां तीखी वासना छे माटे एने तो भगवान मर्त्य लोकने विषे अथवा देवलोकने विषे मोटो गृहस्थ करशे अने अतिशे विषय भोग प्राप्त थाशे ते जेवा भगवद्‌गीतामां योगभ्रष्टने भोग कह्या छे तेवा भोगने देवलोकमां भोगवशे. अने ए गृहस्थ हरिभक्त छे ते तो देह मुकशे त्यारे निर्वासनिक छे माटे भगवाननुं जे ब्रह्मपुर-धाम तेने पामशे ने भगवानना चरणारविंदमां निवास करीने रहेशे. अने प्रथम कह्यो जे त्यागी ते तो विषय भोगवीने ज्यारे तृप्त थाशे त्यारे ते विषय थकी वैराग्यने पामीने ने मनमां पश्चात्ताप करीने भगवाननुं भजन करशे पछी निर्वासनिक थइने भगवानना धाममां जाशे. (१) पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ठीक कह्युं एनो उत्तर एज छे. १
२ पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछयुं जे (२) एवी दृढ वासना होय ने तेनी जेने टाळवानी इच्छा होय तो ते शो उपाय करे त्यारे टळे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेवुं उकाखाचरने संतनी सेवा कर्यानुं व्यसन पडयुं छे तेवी रीते भगवान तथा भगवानना संत तेनी सेवा कर्यानुं जेने व्यसन पडे ने ते विना एक क्षण मात्र पण रहेवाय

नहि तो पना अंतःकरणनी जे मलीन वासना ते सर्वे नाश पामी जाय छे. [२] २

३ पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए प्रश्न पुछयो जे, (३) हे महाराज! जेणे करीने भगवान अतिशे राजी थाय एवुं कियुं साधन छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ज्यारे घरमां एक मण अन्न मळतुं होय ने त्यारे जेवी संतनी उपर प्रीति होय ने जेवुं दीनपणुं होय अने पछी तेने एक गामनुं राज्य आवे अथवा पांच गामनुं राज्य आवे अथवा पचास गामनुं राज्य आवे अथवा सो गामनुं राज्य आवे अथवा सर्वे पृथ्वीनुं राज्य आवे तो पण संतनी आगळ जेवो कंगाळ हतो ने दीनआधीन रहेतो तेवोने तेवोज प्रीतिए युक्त थको दीन आधीन रहे तेमज इंद्रलोक तथा ब्रह्मलोकनुं राज्य पामे तो पण संतनी आगळ तेवोने तेवोज दीन आधीन रहे अने जे त्यागी होय ने ते जेवो प्रथम गरीब होय ने जेम सौ संतनी टेल चाकरी करतो होय तेवीने तेवीज पोतामां भगवाननना जेवां ऐश्वर्य आवे तो पण करतो रहे पण साधु साथे पितराइ दावो बांधे नहि ने बरोबरीयापणुं करे नहि एवां जेनां लक्षण होय तेनी उपर भगवान अति प्रसन्न थाय छे. (३) ॥ इति वचनामृतम् ॥ २५ ॥ (१५८) ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (३) छे. तेमां वासना रहित गृहस्थ देह मुकीने अक्षर धामने पामे अने वासनावाळा त्यागीने देह धरवो पडे. [१] बीजामां संतनी सेवा करवानुं व्यसन होय तेनी वासना नाश पामी जाय. (२) त्रीजामां गृहस्थने चक्रवर्ती राज्य मळे के ब्रह्मादिकनी पदवी मळे तो पण संतनी आगळ दीन आधीन रहे अने त्यागीने अमारा जेवां ऐश्वर्य आवे तो पण दीन आधीन रहे तेना उपर अमारी अतिशे प्रसन्नता थाय छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (३) बाबतो छे.

१ प्र० त्रीजा प्रश्नमां गृहस्थ इंद्र, ब्रह्मानुं राज्य पामे एम कह्युं ते केवी रीते पामता हशे ? अने त्यागीने विषे अमारा जेवां ऐश्वर्य आवे एम कह्युं ते ऐश्वर्य कियां जाणवां ?

१ उ० आने आ देहे नहुष ने अर्जुननी पेठे इंद्र,ब्रह्माना लोकमां जाय ने तेनुं स्थान भोगवे एवी सामर्थि आवे ते इंद्र ब्रह्मानुं राज्य पाम्यो कहेवाय; अने श्रीजीमहाराजना जेवां ऐश्वर्य आवे त्यारे ते भक्त अनंत जीवोनो उद्धार करे एवो समर्थ थाय एटले सिद्ध मुक्तना जेवो थाय तथा निर्लेप, असंगी, निर्विकारपणुं इत्यादिक ऐश्वर्य जाणवां. ॥१५८॥

संवत् १८७९ ना मागशर शुदि ११ एकादशीने दिवस रात्रिने समे श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिरनी आगळ विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) जे भगवाननो भक्त होय तेने तो भगवानने तथा भगवानना भक्तने जे न गमतुं होय ते न करवुं अने परमेश्वरने भज्यामां

अंतराय करतां होय ने ते पोतानां सगां वहालां होय तेनो पण त्याग करवो, अने
भगवानने न गमे एवो कोइक पोतामां स्वभाव होय तो तेनो पण शत्रुनी पेठे त्याग
करवो, पण भगवानथी जे विमुख होय तेनो पक्ष लेवो नहि, जेम भरतजीए पोतानी
मातानो पक्ष न लीधो. [१] अने भगवाननो भक्त होय तेने तो सौथी विशेषे पोतामांज १
अवगुण भासे, अने जे बीजामां अवगुण जुवे अने पोतामां गुण परठे ते तो सत्संगी
छे तो पण अर्धो विमुख छे. (२) अने भगवानना भक्तने तो भगवाननी भक्ति करतां २
आत्मज्ञान तथा वैराग्य तथा धर्म तेजो अंतराय करता होय तो तेने पण पाछा पाडीने
भगवाननी भक्तिनुंज मुख्यपणुं राखवुं अने जो भक्तिने विषे सहायरूप थाता होय
तो तो ए ठीक छे एम समझे तेज भगवाननो पुरो भक्त कहेवाय. [३] अने जेने ३
बीजानो अवगुण आवे ने पोतामां गुण परठे ते तो गमे तेवो मोटो होय तो पण तेने
कल्याणना मार्गमां विघ्न थाय छे, जेम राधिकाजी घणां मोटां हतां अने भगवानने
विषे अवगुण मान्यो त्यारे पोताना प्रेममां तमोगुणनो भाग आव्यो पछी श्रीकृष्ण
भगवान तथा श्रीदामा साथे वढवेड करी पछी श्रीदामानो शाप थयो तेणे करीने
गोलोकमांथी पडीने गुजरने घेर अवतार लीधो अने भगवान विना अन्य पुरुष हतो
तेने धणी कर्यो, एवा महामोटा लांच्छनने पाम्यां, अने श्रीदामा हतो तेणे पण
पोतामां गुण मान्यो अने राधिकामां अवगुण परठयो तो राधिकानो शाप पामीने
दैत्य थावुं पड्युं. अने ए धाममांथी तो पडवानी रीत नथी ने जे पड्या ते तो भग-
वाननी इच्छा एवी हती, तो पण भगवाने एम जणाव्युं जे, राधिकाजी जेवो मोटो
होय ने ते पोतामां गुण मानीने भगवानना भक्तनो अवगुण ले तो ते पण पडी जाय
तो बीजानी शी गणती ? माटे भगवाननो भक्त होय तेने तो सर्वे सत्संगीनो गुणज
लेवो ने पोतानो तो अवगुणज लेवो, एवी रीते समझतो होय ने थोडी बुद्धि होय तो
पण तेनो सत्संग दिवसे दिवसे वृद्धि पामतो जाय, अने ते विना तो झाझी बुद्धि
होय तो पण दिवस दिवस प्रत्ये सत्संगमांथी पाछो हठतो जाय अने अंते जातां निश्चे
विमुख थाय. [४] अने वळी ए रीत तो सर्व ठेकाणे छे जे, जे चाकर होय अथवा ४
शिष्य होय तेने राजा होय अथवा गुरु होय ते जेम वढीने कहेवा मांडे तेमां जे
सवळुं ले तो ते उपर राजा तथा गुरुने अतिशे हेत थाय छे, अने जेने शिखामणनी
वात कहे ने अवळुं ले तो ते उपर हेत थातुं नथी. तेमज भगवाननी पण रीत छे जे
जेने शिखामणनी वात कहे ने सवळुं ले तो ते उपर हेत थाय छे, पण जे अवळुं ले ते
उपर थातुं नथी. (५) ॥ इति वचनामृतम् ॥ २६ ॥ (१५९). ५

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे

अमने भजतां अंतराय करे एवा संबंधीनो तथा अमने तथा अमारा भक्तने न गमे एवा स्वभावनो त्याग करवो. [१] अने पोतामां गुण जुवे ने बीजामां अवगुण परठे ते सत्संगी छे तो पण अर्धो विमुख छे (२) अने अमारी भक्तिमां आत्मज्ञान, वैराग्य ने धर्म ते अंतराय करे तो तेने पाछा पाडीने अमारी भक्ति मुख्य राखे ते अमारो पुरो भक्त छे. [३] अने अमारा भक्ते सर्वे सत्संगीना गुण लेवा अने पोतानो अवगुण लेवो तो सत्संग वृद्धि पामे अने अवगुण ले ते विमुख थाय. (४) अने शिखामणनी वात सघळी ले तेना उपर अमारे हेत थाय छे अने अवळुं ले तेना उपर नथी थतुं. (५) वातो छे.

१ प्र० श्रीजी बाबतमां भक्तिमां आत्मज्ञान, वैराग्य ने धर्म अंतराय करनारा कह्या ते केवी रीते अंतराय करता हशे ?

१ उ० भगवाननी तथा भक्तनी सेवारूपी प्रवृत्ति न गमे तथा भगवानने सुख, तरस, टाढ, तडको नथी माटे जमाडवा, पोढाडवा, पंखो नाखवो एवी काइ जरुर नथी, एवी रीते आत्मज्ञान भक्तिमां अंतराय करनारुं छे अने वैराग्यवानने देहनो अनादर होय तेथी भगवानने थाळ करीने जमाडवा तथा मांहुाने रुचि प्रमाणे जमवानुं करी आपवुं तेमां रुचि न रहे, एवी रीते वैराग्य भक्तिमां अंतराय करे. अने धर्मवाळाथी भगवानने अर्थे तुळसी, पुष्प, शाकभाजी लाववां तथा बाग बगीचा करावबा, मंदिरो करावबां तेमां धर्म अंतराय करे तेमने पाछा पाडीने श्रीजीमहाराजनी भक्ति करवी. ॥१५९॥

संवत् १८७९ ना कार्तिक शुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामीश्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां दक्षिणादे बार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठने विषे गुलदावदीना धोळा ने पीळा पुष्पना हार विराजमान हता अने पाघमां बे कोरे तोरा लटकता हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे मुक्तानंदस्वामीने प्रश्न पुछ्यो जे, (१) तमारे क्रोध थाय छे त्यारे शे निमिते थाय छे? अने केटलुं निमित्त होय त्यारे क्रोध थाय छे? अने अमारे तो एकथी लाख रुपैया सुधी बगाड करे तो पण पोता सारु तो क्रोध आवे नहि, अने ज्यारे धर्म लोप करे, अथवा बळीयो होय ते गरीबने पीडे, अथवा अन्यायनो पक्ष ले त्यारे तेनी उपर अमारे कोइकने अर्थे लगारेक क्रोधनी चटकी आवे छे, पण पोता सारु तो लेश मात्र क्रोध आवतो नथी अने कोइक सारु आवे छे ते पण क्षण मात्र पण नथी रहेतो ने गांठी बंधाती नथी, तेम तमारे केइ रीते आवे छे? ने केइ रीते टळे छे? पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे, कोइक पदार्थने योगे तथा कोइकनी अवळाइ देखाय तेने उपर क्रोध थाय पण तत्काळ शमी जाय छे.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (२) एवुं तमारे विचारनुं बळ रहे छे ते शाने योगे रहे छे ? त्यारे मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे, एकतो भगवाननुं महात्म्य विचारीने एम समजाय छे जे, जे रीते भगवाननो कुराजीपो थाय ते स्वभाव राखवो नथी, अने बीजो शुकजीने जडभरत जेवा संतनो मार्ग जोइने एम विचार रहे छे जे, साधुमां एवो अयोग्य स्वभाव न जोइए. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, काम क्रोधादिकना जोरने हठावे एवो जे विचार तेतो गुण थकी पर छे ते ए तमारा जीवमां रह्यो छे अने एवी रीते काम क्रोधादिकने हठावे एवुं जे जोर छे ते पूर्व जन्मनो संस्कार छे अने तमारुं एटलुंतो अमने जणाय छे जे, तमारे जे जे मायिक पदार्थनो योग थाय तेनी आंटीमां प्रथमतो आवी जवाय पण अंते जातां एना बंधनमां रहेवाय नहि बंधन तोडीने निकळाय खरुं. (१) १

पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे, (३) प्रथम आवरण थइ जाय एवी कच्यप रहे छे ते शाने योगे रहे छे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, देश काळादिक जे आठ छे तेमां जेवुं पूर्वना संस्कारमां जोर छे तेवुंज एक एकमां छे माटे ज्यारे एनो योग थाय त्यारे जरूर बंधन थाय छे अने पूर्वना संस्कारनुं जोर रहेवा देतां नथी अने जो संस्कारमां लख्युं एटलुंज सुकृत दुष्कृत थायतो वेद शास्त्रने पुराण तेने विषे विधि निषेधना भेद कह्या छे जे, आ करवुं ने आ न करवुं ते सर्वे खोटुं थइ जाय ते ए मोटानां करेलां शास्त्रतो खोटां थायज नहि. अने जय विजय हता तेणे जो अयोग्य क्रिया करी तो जे टेकाणे काळ, कर्मने माया नथी एवुं जे भगवाननुं धाम त्यांथी पडी गया, अने जो नारदजीने राजी कर्या तो प्रल्हादने देशकाळादिक अशुभ हता तो पण नडी शक्या नहि,अने जो सनकादिकने कोपायमान कर्या तो देश काळादिक शुभ हता तो पण जय विजय पडी गया,माटे जेने कल्याणने इच्छवुं तेनेतो जेम मोटा पुरुष राजी थाय तेम करवुं. (२)अने ते मोटा पुरुष पण त्यारे राजी थाय ज्यारे कोइ प्रकारे २
अंतरमां मलीनवासना न रहे,अने जेने गरीब उपर क्रोधादिकनो संकल्प थातो होय तो तेने मोटा उपर पण थाय अने पोताना इष्टदेव उपर पण क्रोधादिकनो मलीन घाट थाय, माटे जेने कल्याणने इच्छवुं तेने कोइ उपर मलीन घाट करवो नहि,अने जो कोइ उपर मलीन घाट करे तो तेने भगवानना भक्त तथा भगवान उपर पण मलीन घाट थइ जाय, अने अमथी तो जो एक गरीब पण दुवाणो होय तो अमारा अंतरमां एवो विचार आवे छे जे, भगवान सर्वांतर्यामी छे ते एक टेकाणे रहीने सर्वेना अंतरने जाणे छे माटे जेने अमे दुख्यो तेनाज अंतरमां विराजता हशे, तो अमे भगवाननो अ-पराध कर्यो एम जाणीने तेने पगे लागीए, ने तेने कांइ जोइतुं होय ते आपीए पण

जे प्रकारे ते राजी थाय तेम करीए छइए. [३] अने वळी अमे विचारीने जोयुं जे, ३
जे अतिशे त्याग राखे अथवा दया राखे तेथी भगवाननी भक्ति थाय नहि, त्यारे उपा-
सनानो भंग थाय छे अने पूर्वे जे जे अतिशे त्यागी थया छे तेना मार्गमां उपासनानो
नाश थइ गयो छे, माटे अमे एम विचारीने परमेश्वरनी उपासना रहेवा सारु त्यागनो
पक्ष मोळो करीने भगवानना मंदिर कराव्यां छे, तेमां जो थोडो त्याग रहेशे तो पण
उपासना रहेशे तो तेणे करीने घणाक जीवनां कल्याणथाशे. अने जेने भगवाननी भक्ति
करवी तेने तो ढुंढियानी पेठे दया राखे पण केम ठीक पडे ? एने तो परमे-
श्वरने वास्ते पुष्प लाव्यां जोइए, तुलसी लाव्यां जोइए, भाजी तरकारी लावी जोइए,
ठाकोरजीने वास्ते वाग बगीचा कराव्या जोइए, मंदिर कराव्यां जोइए, माटे जे
अतिशे त्याग राखीने ने अतिशे दया राखीने मुठी वाळीने बेसी रहे तेणे भगवाननी
भक्ति थाती नथी, अने ज्यारे भक्तिए रहित थाय त्यारे भगवाननी उपासनानो नाश
थइ जाय एटले पछवाडेथी अंत्र परंपरा चाले ते सारु अमे मंदिर कराव्यां छे ते
अखंड भगवाननी उपासना राख्या सारु कराव्यां छे. अने जे उपासक होय ते
पोताना धर्ममांथी भ्रष्ट थायज नहि, माटे पोतपोताना धर्ममां रहीने भगवाननी भक्ति
उपासना करवी ए अमारो सिद्धांत छे. (४) ॥ इति वचनामृतम् ॥ २७॥ (१६०) ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (३) छे. तेमां पहेलामां तथा बीजामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारुं महात्म्य विचारे तथा संतनो मार्ग विचारे तो कामक्रोधादिकने हठावी दे, अने ए विचार गुणथी पर छे अने एवो विचार पूर्वना संस्कारे करीने आवे छे ते विचार मायिक पदार्थनुं बंधन रहेवा दे नहि. (१) त्रीजामां भुंडा देश काळादिकने योगे करीने प्रथम आवरण थइ जाय एवी काच्यप रहे छे ते मोटा पुरुषने राजी करे तो नडी शके नहि. (२) अने कोइ उपर मळीन घाट न करे तो मोटा पुरुष राजी थाय अने अमारा भक्तने दुखव्या होय तो राजी करवा. [३] अने त्यागनो पक्ष मोळो पाडीने पोत पोताना धर्ममां रहीने अमारी भक्ति उपासना करवी ए अमारो सिद्धांत छे. (४) बावतो छे.

१ प्र० (२/१ बीजा प्रश्नमां) मुक्तानंदस्वामीने प्रथम मायिक पदार्थनी आंटीमां आवी जवाय एम कह्युं ते मुक्तानंदस्वामीने तो (म० ६२ ना त्रीजा प्रश्नमां) दासत्व भक्तिमां गोपाळानंदस्वामीना जेवाज कह्या छे तथा (का० ३ ना पहेला प्रश्नमां) शुकमुनिनी प्रशंसा करी छे तेमां पण तेमने मुक्तानंदस्वामीनी उपमा दीधी छे माटे मुक्तानंदस्वामी तो श्रीजीमहाराजना हजुरी मुक्त हता ते एवा मोटाने आवरण थइ जाय एम कह्युं तेनुं शुं कारण हशे ?

१ उ० श्रीजीमहाराजनो महिमा तथा संतनो मार्ग विचारे तेने कदापि मायिक पदार्थना बंधनमां आवी जवायुं होय तो तेनुं बंधन तोडीने निकळी जवाय एम मुक्तानंदस्वामी-

ना उद्देशे करीने साधनिकने समजाववा सारु कह्युं छे. पण मुक्तानंदस्वामीने बंधन थाय एम न समजवुं.

२ प्र० त्रीजा प्रश्नमां जय विजय पड्या ते धाम तो आ पृथ्वीना गोळानी अंदर छे त्यां काळ, कर्म, माया नथी एम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० जेवा प्रल्हादजीने देश, काळ, कर्म, माया अशुभ हता तेवा अशुभ वैकुंठमां नथी एम कह्युं छे पण शुभ देशादिकतो छे ते आ बाबतमांज जय विजयने देशकाळादिक शुभ हता एम कह्युं छे अने माया नथी एम कह्युं छे ते त्यां कपट रूप माया नथी एम कह्युं छे.

३ प्र० (३/४ त्रीजा प्रश्नमां) उपासक पोताना धर्ममांथी भ्रष्ट थायज नहि एम कह्युं ते केवी उपासनावाळो होय ते धर्मथी भ्रष्ट न थाय ?

३ उ० श्रीजीमहाराजने सदाय साकारने अक्षरादिक सर्वेथी पर ने सर्वेना कर्ता नियंताने पोताना आत्माने विषे सदाय विराजमान छे एवी रीते सदा सर्वत्र प्रत्यक्ष जाणे ने देखे तो ते धर्ममांथी न पडे. ॥ १६० ॥

संवत् १८७९ ना फागण शुदि २ द्वितीयाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे वेदी उपर आथमणे मुखारविंदे विराजमान हता ने धोळो खेस पहर्यो हतो अने धोळी चादर ओढी हती अने मस्तक उपर श्वेत पाघ बांधी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी दवे प्रागजीए कह्युं जे, श्रीमद्भागवत जेवो कोइ ग्रंथ नथी, पछी श्रीजी-

१ महाराज बोल्या जे, (१) श्रीमद्भागवत तो सारुंज छे पण स्कंदपुराणने विषे श्री वासुदेवमहात्म्य छे ते जेवो कोइ ग्रंथज नथी, कांजे ए ग्रंथने विषे धर्म, ज्ञान, वैराग्यने भक्ति तथा अहिंसापणुं एवनुं अतिशे प्रतिपादन कर्युं छे, एम कहीने पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, वाल्मीकि रामायणने विषे अने हरिवंशने विषे अतिशे हिंसानुं प्रतिपादन कर्युं छे अने रघुनाथजी पण क्षत्रियनी प्रकृतिये वर्त्या छे अने रघुनाथजीने विषे शरणागतवत्सळपणुं तो खरुं पण जे शरणागत होय ने ते जो जराय वांकमां आव्यो होय तो तेनो तत्काळ त्याग करी दे, जो सीताजीने माथे अमारेक लोकापवाद आव्यो तो अति व्हालां हतां पण तत्काळ त्याग करी दीधो. पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे, एवी तो रामानंदस्वामीनी प्रकृति हती. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, अमारी प्रकृति तो एवी नथी अमारे तो परमेश्वरना भक्त उपर अतिशे दया वर्ते छे अने पांडवोने विषे पण अर्जुननी प्रकृति बहु दयाळु हती अने पुरुष मात्रने विषे तो रामचंद्रजी तथा अर्जुन ए जेवो कोइ पुरुष नथी अने सीताजीने द्रौपदी एवी कोइ स्त्री मात्रमां स्त्रियो नथी. हवे अमे अमारी जे प्रकृति छे ते कहीए

छीए जे, अमारो दयालु स्वभाव छे, तो पण जे हरिभक्तनो द्रोही होय तेनो तो
अमारे अभाव आवे छे अने हरिभक्तनुं घसातुं जो कोइ बोल्यो होय अने एने जो हुं
सांभळुं तो ते साथे हुं बोलवाने घणो इच्छुं पण बोलवानुं मनज थाय नहि, अने जे
भगवानना भक्तनी सेवा चाकरी करे ते उपर तो अमारे अतिशे राजीपो थइ जाय
छे. [१] अने अमारी प्रकृति एम छे जे, थोडीक वातमां कुराजी पण न थाउं अने १
थोडीक वातमां राजी पण न थाउं, ने ज्यारे जेमां राजी थयानो के कुराजी थयानो
स्वभाव बहु दिवस सुधी जोउं छुं त्यारे राजीपो ने कुराजीपो थाय छे, पण कोइना
कह्या सांभळ्या थकी कोइने उपर राजीपो के कुराजीपो थातो नथी, अने जेटलो
जेनो गुण अमारा मनमां जणाइ जाय छे तेटलो तेनो गुण आवे छे. (२) अने २
अमारे तो एज अंग छे जे जो भगवाननो खरेखरो भक्त होय तो हुं तो ते भगवानना
भक्तनो पण भक्त छुं अने हुं भगवानना भक्तनी भक्ति करुं छुं, एज मारे विषे मोटो
गुण छे अने एटलो गुण जेमां न होय तो तेमां कोइ जातनी मोटपप शोभे नहि. [३] ३
अने भगवानना भक्तनो जेने जेने अभाव आव्यो छे ते अतिशे मोटा हता तो पण
पोतानी पदवी थकी पडी गया छे, अने जेनुं रुडुं थाय छे ते पण भगवानना भक्तनी
सेवामांथीज थाय छे, अने जेनुं भुंडुं थाय छे ते पण भगवानना भक्तना द्रोहमांथीज
थाय छे. अने वळी जीवने भगवानने राजी कर्यानो उपाय तो मन, क्रम वचने भग-
वानना भक्तनी सेवा करवी एज छे अने भगवानना भक्तनो द्रोह करवो एज भगवा-
नने कुराजी करवानो उपाय छे. [४] माटे अमारो तो एज सिद्धांत छे जे भगवा- ४
ननो राजीपो होय, ने भगवानना भक्तनो संग होय, तो भगवानथी अनंत वर्ष सुधी
छेटे रहीए तो पण कांइ मनमां शोक न थाय अने भगवाननी पासे रहेता होइए ने
जो भगवाननो राजीपो न होय तो तेने हुं सारुं नथी जाणतो अने सर्व शास्त्रनुं पण
एज सार छे जे, भगवाननो जेम राजीपो होय तेमज करवुं अने जेम भगवाननो
राजीपो होय तेम जे न करे तेने भगवानना मार्ग थकी पड्यो जाणवो अने जेने भग-
वानना भक्तनो संग छे ने भगवाननो राजीपो छे, ने ते जो मर्त्यलोकमां छे तो पण
भगवानना धाममांज छे, केम जे जे संतनी सेवा करे छे ने भगवानना गमतामां छे
ते भगवानने समीपे जाइनेज निवास करशे अने जो भगवानना धाममां छे ने भग-
वाननो राजीपो नथी ने भगवानना भक्त उपर ईर्ष्या छे तो ते भक्त भगवानना धाम-
मांथी पण जरुर हेठो पडशे, माटे अमारे तो भगवाननो राजीपो थया सारु जन्मो
जन्म भगवानना भक्तनीज सेवा करवी छे, अने जेम अमारो निश्चय छे तेमज तमारे
पण निश्चय करवो. पछी मुक्तानंदस्वामी आदिक जे सर्वे हरिभक्त हता तेमणे हाथ

जोडीने कह्युं जे, हे महाराज ! अमारे पण एज निश्चय राखवो छे, एम कहीने सर्वे हरिभक्त विनतिए सहित श्रीजीमहाराजने पगे लाग्या. पछी वळी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, आ वार्ता जे अमे करी छे ते केवी छे तो वेद्शास्त्र, पुराण आदिक जे जे कल्याणने अर्थे पृथ्वीने विषे शब्द मात्र छे ते सर्वेनुं अमे श्रवण करीने तेनुं सार काढीने आ वार्त्ता करी छे ते परम रहस्य छे ने सारनुं पण सार छे अने पूर्वे जे जे मोक्षने पामी गया छे ने हवे जे जे पामशे ने हमणां जे जे मोक्षने मार्गे चाल्या छे ते सर्वेने आ वार्ता छे ते जीवनदोरी रूप छे. (५) इति वचनामृतम् ॥ २८ ॥ (१६१) ५

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमे दयालु छीए पण अमारा भक्तनो द्रोह करे तेनो अभाव आवे छे. (१) अने राजी थयानो ने कुराजी थयानो तपास करीने राजी कुराजी थइए छीए. (२) अने अमारा भक्तनी भक्ति एटले सेवा करवी ए गुण जेमां न होय तेनी मोटयप शोभे नहि. (३) अने अमारा भक्तनी सेवाथी रुडुं थाय छे ने द्रोहथी भुंडुं थाय छे ने अमारा भक्तनी सेवा करे तेना उपर अमे राजी थइए छीए अने द्रोह करे ते उपर कुराजी थइए छीए. (४) अने जेना उपर अमारो राजीपो होय ते मर्त्यलोकमां छे तो पण अमारा धाममांज छे अने जेना उपर अमारो राजीपो नथी ते अमारा धाममांथी पण पडशे. (५) बावतो छे.

१ प्र० त्रीजी बाबतमां अमे अमारा भक्तनी भक्ति करीए छीए एम कह्युं ते श्रीजीमहाराज शी भक्ति करता हशे ?

१ उ० पोताना भक्तनी काळ, कर्म, माया थकी रक्षा करीने पोताना धाममां लइ जइने पोतानुं सुख आपे छे ए भक्ति कही छे.

२ प्र० अमारा भक्तनी भक्ति करवी ए गुण जेमां न होय तेनी मोटयप शोभे नहिं एम कह्युं ते भक्ति कइ जाणवी ?

२ उ० आ ठेकाणे भक्ति एटले सेवा कही छे ते सेवा कइ तो जेम श्रीजीमहाराजने अर्थे थाळ करीने जमाडे तेम श्रीजीमहाराजना उत्तम भक्तने अर्थे पण थाळ करीने तेमने जमाडे अने श्रीजीमहाराजने अर्थे जेम पांच रुपीयानुं खरच करे तेम ते भक्तने अर्थे पण करे ने संत मांदा होय तो तेनुं माथुं दाबे, पग दाबे, नवरावे, ते भक्ति जेमां न होय तेने विषे कोइ जात्यनी मोटयप शोभे नहिं.

३ प्र० पांचमी बाबतमां जेना उपर अमारो राजीपो छे ते मर्त्य लोकमां छे तो पण धाममांज छे अने धाममां छे तोपण अमारो राजीपो नथी तो ते धाममांथी पडशे एम कह्युं ते श्रीजीमहाराजना धाममांथी पडवानी रीत नथी माटे ते मर्त्यलोक अने धाम शुं समजवुं ?

३ उ० श्रीजीमहाराज मनुष्य रूपे ज्यां विराजमान होय त्यां सदाय सेवामां भेळो रहेतो होय ते स्थळने आ ठेकाणे धाम कह्युं छे अने श्रीजीमहाराजथी जुदुं रहेवुं पडतुं होय तेने मर्त्य लोक कह्युं छे. अने जे श्रीजीमहाराजथी जुदो रहीने संतनी सेवा करतो होय

ने तेना उपर श्रीजीमहाराजनो राजीपो होय तो ते अक्षर धाममां जाय; अने भेळो रहे तो होय पण श्रीजीमहाराजनो राजीपो न होय तो ते पडी जाय एम कह्युं छे.
४ प्र० आ वार्ता सारनुं सार ने जीवनदोरी रूप छे एम कह्युं ते वात कई जाणवी ?
४ उ० सर्वे कारणना कारण अक्षरातीत पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीस्वामिनारायण भगवान तेमनी प्राप्ति कोटी साधने ने कोटी कल्पे पण तेमना धाममांथी आवेला संत विना थाय तेम नथी ते संतनी सेवा करवी ने मन कर्म वचने अनुवृत्तिमां रहेवुं ने तेमनो द्रोह थवा देवो नहि, केम जे आवा भगवानने आवा मुक्त ते सर्वेने अगम्य छे ने फेर मळवा दुर्लभ छे, माटे आ वात सारनुं सार छे ने जीवनदोरी रूप एटले पोताना प्राणथी पण अधिक व्हाली करी राखवा जेवी छे ने जाणवा जेवी छे माटे जीवनदोरी रूप कही छे अने जो एवा मोटा संतनो द्रोह थाय तो आत्यंतिक मोक्ष बंध थइ जाय माटे सेवा करवी ने द्रोह न करवो एम कह्युं छे. ॥ १६१ ॥

संवत् १८७९ ना फागण शुदि ८ अष्टमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उत्तरादे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, [१] श्रीकृष्ण भगवानना स्वरूपने विषे जे भक्तनुं चित्त अति आसक्त थयुं होय तेनां आवां लक्षण होय जे पोते मार्गे चालीने अतिशे थाकी रह्यो होय ने बेठुं थावानो पण शरीरमां शक्ति न रही होय ने तेवा समामां कांइक भगवाननी वार्तानो प्रसंग निसरे तो जाणीए एके गाउ पण चाल्यो नथी एवो सावधान थइने ते वार्ताने करवा सांभळवामां अतिशे तत्पर थइ जाय, अथवा गमे तेवा रोगादिके करीने पीडाने पाम्यो होय, अथवा गमे तेवुं अपमान थयुं होय, ने तेवामां जो ए भगवाननी वार्ता सांभळे तो तत्काळ सर्वे दुःख थकी रहित थइ जाय, अने वळी गमे तेवी राज्य समृद्धिने पामीने अवराइ गयो एवो जणातो होय, अने जे घडीए ए भगवाननी वार्ता सांभळे तो ते घडीए जाणाए एने कोइनो संगज नथी थयो.एवो थको ते भगवाननी वार्ता सांभळवामां सावधान थइ जाय, एवी जात्यनां जेने विषे लक्षण होय तेने ए भगवानने विषे दृढ आसक्ति थइ जाणवी.(१) १

२ पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछयुं जे, (२) ए भगवानने विषे एवी दृढ आसक्ति शा थकी थाय छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, कांतो पूर्व जन्मनो एवो अति बळीयो संस्कार होय अथवा जे संतने भगवानने विषे एवी दृढ आसक्ति होय तेने सेवाए करीने राजी करे ए बेये करीनेज भगवानने विषे एवी दृढ आसक्ति थाय छे पण ए विना बीजो उपाय नथी. (२) इति वचनामृतम् ॥ २९ ॥ (१६२) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे तेमां पहेलुं कृपावाक्य छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे थाकी रह्यो होय, पीडा पाम्यो होय, अपमान थयुं होय तथा सद्बुद्धिमां अवराइ गयो होय, तो पण अमारी वात सांभळवामां सावधान थइ जाय, ते भक्तने अमारे विषे दृढ आसक्ति जाणवी. (१) बीजामां पूर्वनो बळीयो संस्कार होय अथवा एवी आसक्तिवाळा संतनी सेवाथी दृढ आसक्ति थाय छे. (२) बाबतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां श्रीकृष्ण भगवानना स्वरूपने विषे जे भक्तनुं चित्त अति आसक्त थयुं होय एम कह्युं ते श्रीकृष्ण कोने जाणवा ?

१ उ० श्रीकृष्ण नामे श्रीजीमहाराजे पोताने कह्या छे ते हरिवाक्यसुधासिंधुना तरंग (१६८ मां) कह्युं छे जे ॥ सांप्रतंत्विह सर्वेषां भवतां सुहृदामतिः । मय्येव कृष्णोऽयमिति तत्कार्यामदुपासना ॥ ३२ ॥ मच्चरित्राणि गेयानि श्रोतव्यानि च सादरम् । ममध्यातंविधातव्यं स्मर्तव्या मत्कृतोत्सवाः ॥ ३४ ॥ महासभासुमद्वार्ताः कृतंभक्तैर्मदर्चनम् । साधुसंतर्पणंचापि स्मर्तव्यंमत्कृतंमुहुः ॥ ३५ ॥ एवंविदधतोयूयं मद्भक्तेस्तु प्रतापतः । देहांतेपरमंधाम मदीयंप्राप्स्यथध्रुवम् ॥ ३६ ॥ स्वरूपानंदनामासीत् पुरा साधुमदाश्रितः । आत्मदर्शीसदेहांते प्रारब्धादतिदुःख्यऽभूत् ॥ २७ ॥ ततस्तदग्रेवार्त्तेयं मयास्थित्वास्वयंकृता । तदासहित्वात्मध्यानं ममध्यानरतोऽभवत् ॥ २८ ॥ सद्यःशान्तिततः प्राप्यदेहंहित्वासभौतिकम् । मद्धामप्रापपरमंयूयंभजतमांततः ॥ २९ ॥ आ समयमां तो आ लोकने विषे आ श्रीजीमहाराज श्रीकृष्ण छे ए प्रकारे तमारे सर्वेने अमारे विषे अत्यंत दृढ मति करवी त्यार पछी अमारी उपासना करवी ॥ २३ ॥ अने अमारां चरित्र आदर सहित सांभळवां, गाववां, जाणवां अने अमारुं ध्यान करवुं अने अमे करेला उत्सव संभारवा ॥ २४ ॥ अने मोटी सभाने विषे अमोए करेली वार्त्ताओ तथा भक्तोए करेली अमारी पूजा अने अमोए वारंवार संतोने जमाड्या ए आदि अमारी लीला तेने वारंवार संभारवी ॥ २५ ॥ आ प्रकारे करता एवा तमो अमारी भक्तिना प्रतापथी देहने अंते सर्वोत्कृष्ट एवुं अमारुं धाम तेने निश्चय पामशो ॥ २६ ॥ अने अमारा आश्रित स्वरूपानंदस्वामी ते प्रथम आत्मदर्शी हता ते देहना अंतसमे अति दुःखी होता हवा ॥ २७ ॥ त्यार पछी तेमना पासे बेसीने अमोए उपर कहेली अमारा चरित्र संबंधी सर्व वार्ता करी त्यारे ते आत्मानुं ध्यान त्याग करीने अमारुं ध्यान करवुं तेमां प्रीतिवाळा होता हवा ॥ २८ ॥ त्यार पछी तत्काळ शान्ति पामीने भौतिक जणाता देहनो त्याग करीने अमारुं सर्वोत्तम अक्षर धाम तेने पामता हवा तेज हेतु माटे तमे सर्वे पण अमारुं भजन करो तो अमारा धामने पामशो ॥१६२॥

संवत् १८७९ ना द्वितीय चैत्र शुदि ९ नवमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिरनी ओसरीए गादी तकिया उपर विराजमान हता ने श्वेत खेस पहेर्यो हतो ने श्वेत चादर ओढी हती ने काळा छेडानी धोळी मस्तके बांधी हती ने धोळा पुष्पनो हार पहेर्यो

हतो ने पोळा पुष्पनो तोरो पाघमां लटकतो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) श्रीमद्भागवत आदिक जे सत्‌शास्त्र ने सत्य छे ने ए शास्त्रमां जे कह्युं होय ते तेवीज रीते थाय छे पण बीजी रीते थातुं नथी जुओने श्रीमद्भागवतमां सुवर्णने विषे कळिनो निवास कह्यो छे तो ते सुवर्ण अमने दीठुं पण गमतुं नथी अने जेवुं बंधनकारी सुवर्ण छे तेवुंज बंधनकारी रूप पण छे, केम जे ज्यारे रूपवान स्त्री होय ने ते सभामां आवे त्यारे गमे तेवो धीरजवान होय तेनी पण दृष्टि तेना रूपने विषे तणाया विना रहे नहि, माटे सोनुं ने स्त्री ए बे अति बंधन कारी छे ने ए बे पदार्थनुं बंधन तो त्यारे न थाय ज्यारे प्रकृति पुरुष थकी पर एवुं जे शुद्ध चैतन्य ब्रह्म तेनेज एक सत्य जाणे ने ते ब्रह्मनेज पोतानुं स्वरूप माने, न ते ब्रह्मरूप थइने परब्रह्म एवा जे श्रीकृष्ण भगवान तेनुं भजन करे, अने ए ब्रह्म थकी ओरं जे प्रकृति ने प्रकृतिनुं कार्य मात्र तेने असत्य जाणे ने नाशवंत जाणे ने तुच्छ समझे ने मायिक जे नाम रूप तेने विषे अतिशे दोष दृष्टि राखे ने ते सर्व नामरूपने विषे अतिशे वैराग्य पामे, तेने सोनुं ने स्त्री बंधन न करे अने बीजाने तो जरुर बंधन करे. (१) इति वचनामृतम् ॥ ३० ॥ (१६३) १

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य [१] छे. तेमां शुद्ध चैतन्य ब्रह्म जे अमारुं तेज ते रूप थइने परब्रह्म जे अमे ते अमारुं भजन करे अने अमारा विना बीजेथी वैराग्य पामे, तेने सोनुं ने स्त्री बंधन करे नहि एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. [१] बाबत छे.

१ प्र० शुद्ध-चैतन्य-ब्रह्म कह्यु तेने तमे रहस्यार्थमां श्रीजीमहाराजनुं तेज कह्युं ते श्रीजीमहाराजना तेजने शुद्ध-चैतन्य-ब्रह्म कहेवानो शो हेतु हशे ?

१ उ० मूळपुरुष-ईश्वर, वासुदेव-ब्रह्म तथा मूळ अक्षर एमना तेजने चैतन्य-ब्रह्म कहेवाय छे पण ए त्रणने विषे एक बीजाना उपरिनुं शक्ति द्वारे अन्वयपणुं छे अने श्रीजीमहाराजनुं तेज ए सर्वनुं आधार ने कारण ने प्रेरक छे ने एमां परान्वय नथी, माटे आ ठेकाणे श्रीजीमहाराजना तेजने शुद्ध-चैतन्य-ब्रह्म कह्युं छे एम समजवुं. ॥१६३॥

संवत् १८८० ना श्रावण शुदि ४ चोथने दिवस श्रीजीमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे वेदीका उपर गादी तकिया नखावीने विराजमान हता अने श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ने काळा छेडानी धोतली मस्तके बांधी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने प्रागजी दवे पासे श्रीमद्भागवतमां कपिलगीतानी कथा वंचावता हता.

पछी कथानी समाप्ति थइ त्यारे श्रीजीमहाराज परमहंस प्रत्ये बोल्या जे, (१)
सर्व कारणना पण कारण ने अक्षरातीत ने पुरुषोत्तम एवा जे वासुदेव भगवान ते
पुरुषरूपे करीने मायाने विषे वीर्यने धरे छे ते पुरुष अक्षरात्मक छे मुक्त छे ने एने
ब्रह्म कहे छे अने ए पुरुषे मायामां वीर्य धर्युं त्यारे ते मायाथकी वैराजपुरुष उत्पन्न
थया त्यारे ए वैराजपुरुष ते ते पुरुषना पुत्र कहेवाय, जेम आ जगतमां कोइक ब्राह्मण,
क्षत्रिय, वैश्यादिक जे प्राकृत माणस होय ने तेनी स्त्रीमांथी तेनो दिकरो थाय तेम ए
वैराजपुरुष थाय छे एवाजे वैराजपुरुष ते आ व्यष्टि पुरुष जेवाज छे ने एनी क्रिया पण
आ व्यष्टि जीवना जेवीज छे ने ते वैराजपुरुषनी द्विपरार्ध काळनी आवरदा छे. (१) १
अने आ जगतनी उत्पत्ति, स्थिति, प्रलयरूप एनी त्रण अवस्था छे, जेम आ जीवनी
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति ए त्रण अवस्था छे तेम, अने ए वैराजपुरुषनां विराट्, सूत्रात्मा,
अव्याकृत ए त्रण देह छे ने ते देह अष्टावरणे युक्त छे ने ते देह महत्तत्त्वादिक जे चो-
वीश तत्त्व ते द्वारे थयां छे ते ए विराट्ने विषे इंद्रियो अंतःकरण ने देवताए प्रवेश कर्यो
ने एने उठाडवा मांड्युं ने विराट्नो जीव पण मांही हतो तो पण ए विराट् उठ्युं नहि
ने ज्यारे क्षेत्रज्ञ एवाजे वासुदेव भगवान ते पुरुषरूपे करीने एमां आव्या त्यारे ए विराट्
देह उठ्युं, ने ए वैराजपुरुष पोतानी क्रियाने विषे समर्थ थया. अने एज जे भगवान
ते आ जीवने प्रकाश्याने अर्थे सुषुप्तिरूप माया थकी पर रह्या थका ए जीवने विषे
साक्षीरूपे रह्या छे तोपण जीवने देह इंद्रियो ने विषय तेनो संग घणो थयो छे माटे संग
दोषे करीने ए जीव देहादिक रूप थइ गयो छे ते एना संग ने मुकीने ए जीव एम
समझे जे, मारुं स्वरूपतो मायाथकी मुक्त ने पर एवुं जे ब्रह्म ते छे, एवी रीते निरं-
तर मनन करतो सतो ब्रह्मनो संग करे तो ए ब्रह्मनो गुण ए जीवने विषे आवे पण
एने आ वार्ता सांभळी होय तो पण निरंतर स्मृति रहेती नथी ए मोटो दोष छे, एवी
रीते ईश्वर जे वैराजपुरुष ने आ व्यष्टि जीव ए सर्वेना प्रकाशक तो पुरुषरूपे करीने
पुरुषोत्तम एवा वासुदेव छे (२) अने ए वैराजपुरुष पण जीवनी पेठे बद्ध छे ते द्विप- २
रार्ध सुधी पोतानी आवरदा भोगवे छे त्यां सुधी बद्ध वर्ते छे ने एनो प्रलय थाय त्यारे
एने ए पुरुषनो संबंध साक्षात् थाय छे, केमजे एनो बाप जे पुरुष ते समर्थ छे ते एने
एटलो जाळवे छे अने वैराजपुरुषने मायानो संबंध रह्यो छे माटे प्रलयने अंते पाछो
मायामांथी उपजे छे. अने आ जीव छे ते जेवो पोते बद्ध छे ने असमर्थ छे तेवी रीतेज
एनो जे बाप होय ते पण बद्ध ने असमर्थ होय माटे ए बाप ते दिकरानो शो सहाय
करे ? माटे एने सुषुप्ति रूप मायानो संबंध निरंतर रहे छे टळतो नथी एतो ज्यारे पूर्वे
कह्यो तेवी रीते निरंतर पोताना प्रकाशक जे ब्रह्म तेनो मनन द्वारा संग करे त्यारे टळे

अने वळी ए विराट् पुरुष पण संकर्षण, अनिरुद्ध, प्रद्युम्ननी उपासना करे छे तेमां प्रलय रूप अवस्थाने विषे संकर्षणनी उपासना करे छे ने स्थितिरूप अवस्थाने विषे प्रद्युम्ननी उपासना करे छे ने उत्पत्तिरूप अवस्थाने विषे अनिरुद्धनी उपासना करे छे अने ते संकर्षणादिक त्रण जेते वासुदेव भगवाननां सगुण रूप छे ने तेनी उपासनाने बळे करीने वैराजपुरुष जेते उत्पत्ति स्थिति ने प्रलय रूप क्रियाने विषे सामर्थ्यने पामे छे अने ज्यां सुधी ए त्रणनी उपासना करे छे त्यां सुधी एने उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय रूप जे मायानो संबंध ते टळतो नथी ने ज्यारे ए निर्गुण एवा जे वासुदेव भगवान तेनी उपासना करे छे त्यारे ए वैराज पुरुष मायानो त्याग करीने ब्रह्म रूप थाय छे, जेम आ जीव छे ते ब्रह्मादिक देवरूपे भगवाननी उपासना करे छे त्यारे धर्म, अर्थ काम रूप फळने पामे छे अने ज्यारे भगवानना अवतार जे राम कृष्णादिक तेनी उपासना करे त्यारे ब्रह्म रूप थाय ने एनी मुक्ति थाय तेम ए विराट् पुरुषने पण छे. (३) अने ए वैराज पुरुष द्वाराए अवतार थाय छे एम शास्त्रमां कह्युं छे ते तो एम ३ समजवुं जे, ए जे वासुदेव नारायण ते पुरुष रूपे करीने वैराज पुरुषने विषे आवीने विराजमान होय त्यारे अवतार कह्या छे माटे ते अवतार तो सर्वे वासुदेव भगवानना छे अने ए वासुदेव भगवान ज्यारे प्रतिलोमपणे ए वैराज पुरुष थकी नोखा पडी जाय त्यारे ए केवळ वैराज पुरुष थकी अवतार संभवेज नहि, माटे ए थकी अवतारतो एने विषे वासुदेव आव्या छे ते सारु कह्या छे अने एने विषे वासुदेव जे क्षेत्रज्ञ तेणे प्रवेश कर्यो नहोतो त्यारे ए वैराज पुरुष पोतानी क्रिया करवी तेने विषे पण समर्थ नहोता थया अने पूर्वे जे पुरुष कह्या ते मायामां गर्भ धरे त्यारे एक एवो जे वैराज पुरुष रूप दिकरो ते थाय अने एज मायामांथी बीजा पण घणांक एवां वैराज पुरुष रूप ब्रह्मांड थाय छे अने ते पुरुषतो निरन्न छे ने मुक्त छे ने ब्रह्म छे ने मायाना कारण छे ते मायाने विषे लोभपणे वर्ते छे तो पण एने मायानो बाध थातो नथी ने मायाने विषे एने भोगनी इच्छा नथी एतो पोते ब्रह्म सुखे सुखीआ छे ने पूर्ण काम छे अने जे वैराज पुरुष ईश्वर छे ते मायाना भोगने भोगवीने प्रलय काळने विषे मायानो त्याग करे छे ने जे जीव छे ते तो मायाना भोगने भोगवीने दुःखीयो थको मायामांज लीन थाय छे (४) ४

२ त्यारे शुकमुनीए पुछ्युं जे (२) पुरुषोत्तम वासुदेव छे ते पुरुष रूपे करीने अनेक ब्रह्मांडनी उत्पत्ति, स्थिति, प्रलयना कर्ता छे माटे पुरुष रूपे करीनेज बहुधा शास्त्रमां पुरुषोत्तमने कह्या छे त्यारे पुरुषमां ने वासुदेवमां केटलो भेद छे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेम आ जीवने विषे ने वैराज पुरुष ईश्वरने विषे भेद छे

ने वळी जेम ईश्वरने विषे ने पुरुषने विषे भेद छे, तेम पुरुषने पुरुषोत्तम एवा जे वासुदेव भगवान तेने विषे एवो घणो भेद छे ने पुरुषोत्तम वासुदेव तो सर्वना स्वामी छे. अने एवा अक्षरात्मक पुरुष ब्रह्मरूप घणाक छे तेजे ते वासुदेवना चरणारविंदनी उपासना करे छे ने स्तुति करे छे एवी रीते पुरुषोत्तम, पुरुष, ईश्वर ने जीव ए चार भेद अनादि छे. ते आवी रीते वार्ता अमे घणीक वार करी छे पण एवुं मनन करीने सारी पेठे पोताना अंतरमां घेड्य बेसारता नथी एटले शास्त्रना शब्दने सांभळीने समजणमां टा रहेतो नथी ने टावकी घेड्य बेसारी होय तो एनी समजण कोइ दिवस ते शब्दने सांभळवे करीने फरे नही माटे आ वार्ताने सारी पेठे विचारजो अने लखज्यो एवी रीते आ वार्ता श्रीजीमहाराजे करी छे ते लखी छे. (५) इति ५
वचनामृतम् ॥३१॥ (१६४)

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. पहेलुं कृपावाक्य छे, तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमे सर्वे कारणना कारण, अक्षरातीत ने पुरुषोत्तम वासुदेव छीए अने पुरुषद्वाराए मायाने विषे वीर्य धारण करीए छीए ते पुरुषथकी वैराजपुरुष थाय छे. (१) अने वैराजपुरुष तथा व्यष्टि जीवोना प्रकाशक पुरुषरूपे करीने अमे छीए. (२) अने ए वैराजपुरुष आ व्यष्टि जीवनी पेठे बद्ध छे अने वैराजपुरुष तथा जीव ते ज्यारे अमारी उपासना करे त्यारे मायानो त्याग करीने ब्रह्मरूप थाय ने मोक्षने पामे. (३) अने अमारुं ऐश्वर्य पुरुषद्वारे वैराजमां आव्युं होय त्यारे ए वैराजपुरुष थकी अवतार कह्या छे. (४) बीजामां जीवमां ने वैराजमां भेद छे अने वैराजमां ने पुरुषमां भेद छे तेम पुरुषने विषे ने अमारे विषे तो एवो घणो भेद छे अने पुरुष घणा छे अने ए चार भेद अनादि छे. (५) बावतो छे.

१ **प्र०** पहेला प्रश्नमां अमे सर्वे कारणना पण कारण ने अक्षरातीत ने पुरुषोत्तम वासुदेव छीए एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते सर्व शब्द वडे करीने कोने जाणवा ? अने ते सर्वना कारण कोने जाणवा ? अने किया अक्षरथी अतीत कह्या ? अने वासुदेव एवुं नामतो मूळ पुरुषना उपरि जे ब्रह्म तेमनुं छे अने आ ठेकाणे श्रीजीमहाराजे पोताने वासुदेव नामे कह्या तेनुं शुं कारण हशे ?

१ **उ०** जीवकोटी, मूळ पुरुषरूप ईश्वरकोटी, ब्रह्मकोटी तथा मूर्तिमान मूळ अक्षरकोटी ते सर्वे ने सर्व शब्द वडे करीने जाणवा अने ते सर्वेनुं कारण श्रीजीमहाराजनुं तेज छे ते अक्षरादिक सर्वेनुं कारण जाणवुं अने ए तेजनेज अक्षर नामे कह्युं छे ते तेजथी श्रीजीमहाराज अतीत एटले पर छे ने ते तेज पोतानुं छे माटे तेना कारण छे. अने श्रीजीमहाराज पोताना तेज रूपे मूळ अक्षरादिकने विषे व्यापक छे तेथी वासुदेव कह्या छे.

२ **प्र०** श्रीजीमहाराजना तेजने मूळ अक्षरनुं कारण किया वचनामृतमां कह्युं छे ?

२ **उ०** (प्र० ६३/१ मां) श्रीजीमहाराजना तेजने अक्षरनुं आत्मा, द्रष्टा ने व्यापक कह्युं छे

तथा (का० ६ मां) मूर्तिमान अक्षरनुं आत्मा कह्युं छे अने (प्र० ६३ ना 3/4 त्रीजा प्रश्नमां) अक्षरने विषे अमे कांतिए करीने अन्वयपणे रह्या छीए तथा (७२ ना 2/4 बीजा प्रश्नमां) क्षर अक्षरने अमारी शक्तिए करीने धरी रह्या छीए, माटे मूर्तिमान मूळ अक्षरनुं कारण, आधार, व्यापक ने प्रेरक श्रीजीमहाराजनुं तेज छे अने ते तेजना कारण पोते श्रीजीमहाराज मूर्तिमान छे.

३ प्र० मूळ पुरुषादिक सर्वेने प्रेरणा तो अक्षरद्वारे श्रीजीमहाराज करावे छे एम [प्र० ४१ मां तथा सा० ५ ना 2/3 बीजा प्रश्नमां] कह्युं छे ने [आमां 1/2 पहेला प्रश्नमां] श्रीजी-महाराज पाधराज पुरुषद्वारे वैराजने विषे आव्या एम कह्युं तेनुं शुं कारण हशे ?

३ उ० श्रीजीमहाराजना आपेला ऐश्वर्य वडे करीने मूळ अक्षर वासुदेव ब्रह्मने प्रेरणा करे छे ने ते ब्रह्म मूळ पुरुषने प्रेरणा करे छे अने मूळ पुरुष पोताथी ओरा रह्या ते सर्वेने प्रेरणा करे छे पण ते श्रीजीमहाराजना ऐश्वर्य वडे करीने करे छे माटे सर्वेना मूळ प्रेरक श्रीजी-महाराज छे माटे मुझे ते द्वारे प्रेरणा करे तोपण पोतेज करे छे एम जाणवुं. आनो विस्तार [प्र० ४१ ना त्रीजा प्रश्नोत्तरमां] छे.

४ प्र० (1/6 पहेला प्रश्नमां) मनन द्वाराए ब्रह्मनो संग करवानुं कह्युं ते ब्रह्म कियुं जाणवुं ?

४ उ० माया थकी मुक्त कहेतां रहित अने पर एवुं ब्रह्म कह्युं छे माटे सर्वथी पर तो श्रीजीमहाराजना तेज रूप ब्रह्म छे ते ब्रह्म साथे एकता करवी एम कह्युं छे.

५ प्र० श्रीजीमहाराजना तेजने ने श्रीजीमहाराजने स्वामी सेवक भाव नथी एम (प्र० २१ ना चोथा प्रश्नोत्तरमां) कह्युं छे त्यारे ए तेज रूप जे ब्रह्म तेनो मननद्वारा संग करवाथी श्रीजीमहाराजने विषे स्वामी सेवकपणुं केम आवे ?

५ उ० श्रीजीमहाराजना तेजने विषे एकता करवाथी श्रीजीमहाराजनी ने भक्तनी वच्चे आवरण रहेतुं नथी ने श्रीजीमहाराजनुं दर्शन थाय छे, जेम सूर्यनो प्रकाश आपणा नेत्रमां आवे छे तेणे करीने सूर्यनुं दर्शन थाय छे पण चंद्रनो प्रकाश नेत्रमां आवे तेणे करीने सूर्य देखाय नहि तेम श्रीजीमहाराजना तेजने ने भक्तना चैतन्यने एकता थाय छे त्यारेज श्रीजीमहाराजनुं दर्शन ने समीपपणुं थाय छे ते हेतु माटे श्रीजीमहाराजना तेज साथे एकता करवी ते (म० 1/6 मां) कह्युं छे अने ज्यारे समीपपणुं थाय त्यारे स्वामी सेवकपणुं अतिशे दृढ थाय छे ते (सा० 1/6 मां) दासपणुं अति दृढ थाय छे एम कह्युं छे. माटे श्रीजीमहाराजनुं समीपपणुं करवा सारु श्रीजीमहाराजना तेज साथे एकता करवी अने स्वामीसेवकपणुं तो साधनकाळमांथीज छे माटे ज्यारे श्रीजीमहाराजनुं दर्शन थाय त्यारे स्वामीसेवकपणुं तो अति दृढ थाय छे, माटे श्रीजीमहाराजनुं समीपपणुं थवा वास्ते श्रीजी-महाराजना तेज साथे एकता करवी, केमजे मूळअक्षरादिकना तेज अथवा मूर्ति साथे एकता करवाथी श्रीजीमहाराजनुं दर्शन थातुं नथी. दर्शन तो जे जेना तेजरूप थाय तेनुंज थाय, माटे आपणे तो श्रीजीमहाराजना तेजरूप ब्रह्म साथे एकता करवी.

६ प्र० (1/2 पहेला प्रश्नमां) वैराज पुरुषने एनो बाप जे पुरुष ते आळवे छे ते बाप किया जाणवा?

अने ते केटलो जाळवे छे ?

६ उ० वैराज पुरुषनी सो वर्षनी आयुष्य पुरी थाय छे त्यारे तेना कार्यनो तथा पंचभूतनो तथा अहंकार महत्तत्त्व ए सर्वेनो नाश थाय छे ते वखते प्रधान पुरुषनी सांझ पडे छे त्यारे प्रधान पुरुष ते वैराज पुरुषने पोताना लोकमां राखे छे. अने सृष्टि समे प्रधान द्वारे उपजावे छे ने एना स्थानमां राखे छे एटलो जाळवे छे.

७ प्र० (१/२ पहेला प्रश्नमां) मूळपुरुषने मुक्त कह्या अने ब्रह्मसुखे सुखीया कह्या ते मुक्त कोना हशे ? ने किया ब्रह्मना सुखे सुखीया हशे ?

७ उ० श्वेतद्वीपपति वासुदेव ब्रह्मना ए मूळपुरुष मुक्त छे अने वासुदेव ब्रह्मने सुखे सुखीया छे ते (लो० १२ ना पहेला प्रश्नमां) निर्विकल्प निश्चयमां श्रीकृष्ण जेवा जाणे तेने कनिष्ठ कह्या छे अने वासुदेवनी उपासना करे तेने मध्यममां गण्या छे माटे ते वासुदेवना मुक्त छे.

८ प्र० [२/५ बीजा प्रश्नमां] बहुधा शास्त्रमां पुरुषनेज पुरुषोत्तम कह्या छे एम कह्युं ते शास्त्र कियां जाणवां ?

८ उ० भागवत, गीता आदिक शास्त्रने विषे मूळ पुरुषने पुरुषोत्तम तथा श्रीकृष्ण वासुदेव नामे कह्या छे.

९ प्र० मूळ पुरुषने अक्षरात्मक कह्या ते किया अक्षर रूप कह्या हशे ?

९ उ० श्रीजीमहाराज तथा मूर्तिमान मूळअक्षर तथा वासुदेव ब्रह्म तथा मूळ पुरुष ए सर्वेने पुरुषोत्तम कहेवाय छे ने सर्वना तेजने अक्षर कहेवाय छे. अने मूळ पुरुषनुं आत्मा ते वासुदेव ब्रह्मनुं तेज छे ते वासुदेव ब्रह्मना तेजने आ ठेकाणे अक्षर नामे कह्युं छे ते मूळ पुरुषनुं आत्मा कहेतां अंतर्यामी छे माटे तेने अक्षरात्मक कह्या छे.

१० प्र० जीवमां ने वैराज पुरुषमां भेद कह्यो ते भेद कियो जाणवो ? अने वैराजमां ने मूळ पुरुषमां भेद कह्यो ते भेद कियो जाणवो ? अने मूळ पुरुषमां ने श्रीजीमहाराजमां घणो भेद कह्यो ते केवी रीते जाणवो ?

१० उ० एक जीवनो, बीजो देवनो, त्रीजो ब्रह्मा, विष्णु, शिवनो ने चोथो वैराजनो आवी रीते भेद छे. अने वैराजथी पर चोवीश तत्त्व तेथी पर अहंकार तेथी पर महत्तत्त्व तेथी पर प्रधान पुरुषने तेथी पर मूळ पुरुष छे एवी रीते वैराज पुरुषने मूळ पुरुषनी वच्चे चार भेद छे. ने मूळ-पुरुषथी पर महाकाळ, नरनारायण, वासुदेव ब्रह्म तेथी पर मूळ अक्षरना मुक्त ने तेथी पर मूळ अक्षर ने तेथी पर श्रीजीमहाराजना मुक्तने तेथी पर श्रीजीमहाराज छे. माटे एवी रीते मूळ पुरुषनी ने श्रीजीमहाराजनी वच्चे एवो घणो भेद छे तेमां जीव तथा वैराज ते तो सजाति छे पण वैराजने विषे सामर्थि विशेष छे एटलोज भेद छे अने वैराज जीव संज्ञामां छे अने पुरुष ईश्वर छे ने एवा अनंत वैराजना उपरि छे ने तेथी सामर्थि घणी विशेष छे ने वैराजथी विजाति छे अने पुरुषमांने श्रीजीमहाराजमां तो एवो अतिशे घणो भेद छे जे एवा अनंतकोटी पुरुषना उपरि वासुदेव ब्रह्म छे ने ते ब्रह्म संज्ञामां छे ने पुरुषना कारण छे ने एवा अनंतकोटी वासुदेव

ब्रह्म तेना उपरि मूळ अक्षर छे ते अक्षर संज्ञामां छे ने ब्रह्मना कारण छे अने एवा अनंतकोटी मूळ अक्षरना कारण श्रीजीमहाराज छे ने ते पुरुषोत्तम छे तेथी पर कोइ नथी माटे पुरुषमां ने पुरुषोत्तम जे श्रीस्वामिनारायण भगवान तेमां घणोज भेद छे.

११ प्र० शास्त्रना शब्दने सांभळीने समझणमां ठा रहेतो नथी एम कह्युं ते ठा केवी रीते नहि रहेतो होय ?

११ उ० सर्वोपरि पुरुषोत्तम भगवान एक श्रीजीमहाराज छे पण श्रीजीमहाराज विना बीजो कोइ भगवान नथी, एवी समजण श्रीजीमहाराज थकी अथवा मोटा मुक्त थकी थइ होय अने तेवीज रीते बीजां शास्त्रे बीजा अवतारोने सर्वोपरी पुरुषोत्तम कह्या होय तेने सांभळीने समझण फरी जाय ते ठा न रह्यो एम जाणवुं ॥ १६४॥

संवत् १८८० ना श्रावण शुदि ५ पंचमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे विराजमान हता अने श्रीजीमहाराजे अंगने विषे सर्वे श्वेत वस्त्र पहेर्यां हतां अने मस्तकने उपर काळा छेडानी धोतळी बांधी हती अने कंठने विषे पुष्पना हार विराजमान हता तथा कर्णने उपर पुष्पना गुच्छ विराजमान हता तथा मस्तक उपर पुष्पना तोरा विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज सर्वे हरिभक्त प्रत्ये बोलता हवा जे, (१) आ संसारने विषे पोताना कुटुंबीनो संबंध छे तेतो जेम थोरनुं झाड होय अथवा वडनुं के पींपरनुं डाळ होय ते एक ठेकाणेथी कापीने बीजे ठेकाणे रोपीए तो उगीने झाड थाय अने आंबो तथा लींबडो होय ने तेने एकवार काप्यो एटले फरीने चोटे नहि, तेम कुटुंबी विना बीजानो जे संबंध छे ते तो आंबाना झाड जेवो छे ते एकवार काप्यो एटले फरीने चोटे नहि,अने कुटुंबीनो संबंध छे ते तो थोरना अने वडना झाड जेवो छे ते कापी नाख्यो होय तो पण धरतीमां पड्यो पड्यो पण पाल्व्या विना रहे नहि, माटे ए कुटुंबीनो संबंध तो तो टळे जो स्थूळ, सूक्ष्म ने कारण ए त्रणे देह थकी नोखो एवो जे आ देहने जीवात्मा तेने पोतानुं रूप जाणीने, ने तेने विषे भगवाननी मूर्तिने धारीने, ने जाति, वर्ण, आश्रम, तेना मानने मुकीने, ने केवळ भगवानना स्मरणने विषे तत्पर थाय तो कुटुंबीनो संबंध चोखो टळे ते विना बीजो उपाय कोइ नथी. (१) अने वळी जीवनुं १
जे कल्याण थाय अने जीव मायाने तरीने ब्रह्मस्वरूप थाय तेनुं कारण तो पुरुषोत्तम एवा श्री वासुदेव भगवाने तेना प्रत्यक्ष स्वरूपनुं ध्यान, स्मरण, कीर्तन, कथा एज छे ने एणे करीनेज ए जीव छे ते मायाने तरे छे अने अति मोटाइने पामे छे अने भगवाननुं जे अक्षर धाम तेने पामे छे. (२) अने आत्म- २
निष्ठा, वैराग्य ने धर्म ते तो भगवाननी भक्तिनां सहायरूप उपकरण छे पण भगवाननी भक्ति विना एकलो वैराग्य तथा आत्मनिष्ठा तथा धर्म ते जीवने माया

तर्यानुं साधन नथी; अने जो अतिशे आत्मनिष्ठा ने वैराग्य न होय ने एकली भगवाननी भक्ति होय तो पण ए जीवनुं कल्याण थाय अने मायाने तरे माटे जीवने कल्याणनुं कारण तो भगवाननी भक्तिज छे ने ज्यारे भगवानना भक्त देहने मेलीने निसरे छे त्यारे आत्मनिष्ठाने वैराग्य ए बेने भगवान पोतेज जीवने विषे प्रवेश करावे छे माटे भगवाननी भक्ति तेज जीवने तर्यानुं कारण छे. (३) पण जो भूंडा देश,काळ, क्रियाने ३ संग छे तेने विषे प्रवर्ताय तो भगवाननो भक्त होय तेनुं पण अंतर डोळाइ जाय ने तेना स्वभावनो टा न रहे, माटे भुंडो देश, भुंडो काळ, भुंडी क्रियाने भुंडो संग तेनो त्याग करीने रुडो देश, रुडो काळ, रुडो संग, रुडी क्रिया तेने विषे सदा प्रवर्तवुं पण भुंडा देशादिकनो संग करवोज नहि. (४) इति वचनामृतम् ॥३२॥(१६५) ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे त्रण देहथी नोखो पोताना जीवात्माने जाणीने तेने विषे वासुदेव जे अमे ते अमारी मूर्तिने धारीने अमारुं स्मरण करे तो कुटुंबीनो संबंध टळी जाय. (१) अने प्रत्यक्ष कहेतां अमारी दृष्टिने आगळ देखाता एवा परब्रह्म जे अमे ते अमारा स्वरूपनुं एटले अमारुं ध्यान, स्मरण, कीर्तन ने कथा करे तो मायाने तरीने अमारा अक्षर धामने पामे. (२) ने आत्मनिष्ठा वैराग्य ने धर्म ए त्रण भक्तिनां सहायरूप उपकरण छे ने कल्याण तो अमारी भक्तिए करीनेज छे ने अमारो भक्त देह मेले छे त्यारे अमारा विना बीजे प्रीति न रहे ते सारुं आत्मनिष्ठा ने वैराग्य ते भक्तने विषे प्रेरीए छीए. (३) अने रुडा देशादिक सेववा ने भुंडा न सेववा. (४) बावतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां कुटुंबी कह्या ते किया जाणवा ?

१ उ० देहनां संबंधी तथा इंद्रियो अंतःकरण ते सर्वे कुटुंबी जाणवा.

२ प्र० पहेली बाबतमां जे उपाय बताव्यो तेणे करीने केवळ कुटुंबीनो संबंध टळे एम कह्युं अने कल्याणनो उपाय तो बीजी बाबतमां भक्ति वडे बताव्यो ते पहेलो जे उपाय कह्यो तेमां शी न्यूनता आवी ते कृपा करीने समजावो ?

२ उ० पोताने त्रण देहथी नोखो जीवात्मा ते रूप मानीने भगवाननुं स्मरण करे पण तेने कथा कीर्तनने ध्यान ते रूप भक्ति न होय तो ब्रह्मरूप न थवाय, एटले श्रीजीमहाराजना तेज रूप पोतानुं स्वरूप समजाय नहिं ए न्यूनता रहे छे.

३ प्र० त्रीजी बाबतमां आत्मनिष्ठा, वैराग्य ने धर्म ते विना एकली भक्तिए करीने कल्याण थाय छे एम कह्युं, ते एकली भक्तिए कल्याण थाय त्यारे आत्मनिष्ठा ने वैराग्य तेने प्रवेश कराववानी शी जरूर रहेती हशे ?

३ उ० श्रीजीमहाराजनुं ध्यान, स्मरण, कथा, कीर्तन ए भक्ति करी होय, अने आत्मनिष्ठाने वैराग्य दृढ न कर्यां होय तेथी ते भक्तने अंत समे देह गेहादिकमां प्रीति रही गइ होय, तेने विषे आत्मज्ञान ने वैराग्य श्रीजीमहाराज प्रेरे छे तेणे करीने बीजे हेत

एवुं होय ते टळी जाय छे ॥ १६५ ॥

संवत् १८८० ना श्रावण वदि १३ तेरशने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महा-
राज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे ढोलीया उपर गादी
तकिया नखावीने विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना
मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज सर्वे संत तथा सर्वे हरिभक्त प्रत्ये एम बोलता हवा जे (१)
प्रथम अमे अमारा अंगनी वात करीए पछी तमे सर्वे पोत पोतानो जे रीते मोक्ष
मान्यो होय तथा अमे आवी रीते वर्तशुं तो आ लोकमां ने परलोकमां भगवान अम
उपर राजी रहेशे एम जे मान्युं होय ते कहेज्यो, एम सर्वेने कहीने पछी श्रीजीमहाराजे
पोताना अंगनी वात करेवा मांडी जे, अमने तो जे पदार्थमां हेत जणाय तो तेनो
त्याग करीए त्यारे सुख थाय, अने भगवानना भक्त विना जे मनुष्य मात्र अथवा
पदार्थ मात्र तेनी जो मनमां स्मृति थइ होय तो तेथी अतिशे छेटुं करीए त्यारे सुख
थाय, अने जो भगवानना भक्त होय तो तेनो कोइ रीते करीने हैयामां अभाव आवेज
नही, अने अमारे वगर इच्छे पंच विषय छे ते जोरावरीए आवीने प्राप्त थाय छे तो
पण तेने अमे इच्छता नथी अने पगे करीने ठेली नाखीए छइए, अने जे
दिवस थकी अमे जन्म्या छइए ते दिवसथी करीने आज दिवस
पर्यंत कोइ दिवस जाग्रतमां अथवा स्वप्नमां द्रव्यनो के स्त्रीनो भुंडो घाट
थयो होय तो आ समग्र परमहंसना सम छे, अने एवी रीते अमे सदाय निर्दोषपणे
छइए ने जे अमारे विषे दोषबुद्धि करशे तो तेने जाग्रतमां तथा स्वप्नमां भुंडा घाट
थाशे ने तेने देह मूक्या समे बहु कष्ट थाशे. (१) अने अमारा अंतरमां तो एक भग- १
वानना स्वरूपनुंज चितवन रहे छे, अने उपरथी तो भगवानना भक्त होय तेना जीवनुं
सारुं थाय ते सारु हळीमळीने रहीए छीए अने जे दिवस अमारा हैयामां भगवानने भग-
वानना भक्त विना बीजे क्यांइ हेत जणाशे तो अमे एम मानशुं जे अमे अमारी स्थितिमांथी
डग्या पण अमने एवो निश्चय छे जे अमे ए स्थितिमांथी डगीएज नहि ए अमे अमारुं
अंग हतुं ते कह्युं, हवे तमे सौ पोत पोतानुं अंग होय ते कहो ? पछी सर्वे संते तथा सर्वे
हरिभक्ते जेवां जेनां अंग हतां तेवां कह्यां जे आ लोकने विषे ने परलोकने विषे
आवी रीतना अंगमां अमे रहीए तो अमारा उपर भगवान राजी रहे एवी रीते कह्युं. ते
सर्वे हरिभक्तना अंगनी विगत जे, कोणेक तो भगवान विना बीजे टेकणे वैराग्यनुं
कह्युं, अने कोणेक आत्मनिष्ठानुं कह्युं ने कोणेक भगवानने विषे प्रीतिनुं कह्युं ने
कोणेक धर्ममां रहेवानुं कह्युं, एवी रीते बहु प्रकारे कह्युं पण श्रीजीमहाराजे मनमां धारी

राख्युं हतुं ते कोणेय न कह्युं, पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एक निष्कामी वर्त्तमान दृढ होय तो तेने आ लोकमां तथा पर लोकमां कोइ ठेकाणे भगवानथी छेटुं रहे नहि अने अमारे पण ते उपरथी कोइ दिवस हेत ओछुं थाय नहि. अने अमे अहियां टक्या छइए ते पण अहियांना हरिभक्तने अति निष्कामी वर्त्तमाननो दृढाव देखीने टक्या छइए अने जेने निष्कामी वर्त्तमान दृढ होय तो ते थकी अमे हजार गाउ छेटे जाइए तोपण तेनी पासेज छइए अने जेने निष्कामी वर्त्तमानमां काच्यप छे ने ते जो अम पासे रहे छे तोय पण ते लाख गाउ छेटे छे अने अमने निष्कामी भक्त होय तेनाज हाथनी करी सेवा गमे छे, माटे आ मुळजी ब्रह्मचारी छे ते अतिशे दृढ निष्कामी छे तो अमने एनी करेली सेवा अतिशे गमे छे, अने बीजो कोइ सेवा चाकरी करे तो ते एवी गमती नथी अने अमे जे जे वार्ता करीए छइए तेने विषे पण निष्कामी वर्त्तमाननुंज अतिशे प्रतिपादन थाय छे अने अमे जे दिवस थकी प्रगट थया छइए ते दिवस थकी निष्कामी वर्त्तमाननेज अतिशे दृढ करता आव्या छीए अने सभा बेठी होय त्यां कोइक स्त्री अथवा पुरुष तेने जोवामां फेर पडे त्यारे ए गमे तेटली युक्ति करीने संताडे तोपण अमने जणाया विना रहेज नहि त्यारे अमारो ते मनुष्य उपर अतिशे कुराजीपो थइ जाय छे अने अमारुं मुख पण श्यामळुं थइ जाय छे अने तेनुं दुःख तो अतिशे लागे छे पण मोवत जाणीने झाझुं कहेवाय नहि अने वळी साधु दावो छे माटे हैयामां समजी रहीए छइए पण जो राजाना जेवी रीत होय तो तेने माथे झाझो दंड थाय, माटे सर्वे मोटा मोटा परमहंस तथा मोटी मोटी बाइयो तेने अमे मोरथीज कही राख्युं छे जे, सत्संगमां कोइ पुरुषने तथा कोइ स्त्रीने कदाचित् जो निष्कामी वर्त्तमानमां फेर पडे तो अमने संभळावशोमां, शा माटे जे ज्यारे अमे एवी वार्ता सांभळीए त्यारे जेम वांझियाने घेर दिकरो आव्यो होय ने ते मरी जाय ने तेने जेवो शोक थाय तेवो अमारे पण शोक थाय छे तथा मनमां एम विचार थइ जाय छे जे बधा सत्संगने मुकीने जाता रहीए,माटे जे निष्कामी वर्त्तमान राखे तेज अमने व्हालो छे अने तेनेने अमारे आ लोक परलोकमां दृढ मेळाप रहे छे. (२) २

२ पछी हरजी ठकरे प्रश्न पूछयो जे (२) ए निष्कामी वर्त्तमान शे उपाये करीने अतिशे दृढ थाय ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, एनो एक प्रकारनो उपाय नथी एवा तो त्रण प्रकारना उपाय छे, जेम हांकनारो, बळधीया, पैडां, धुसरी, उध्य, रांबडो एवा घणाक सामाने करीने एक गाडुं कहेवाय छे तेम निष्कामी व्रत दृढ राखवानी पण घणीक सामग्री जोइए छीए तेमां पण त्रण उपाय छे ते तो अतिशे मुख्य छे तेमां एकतो मनने वश करवुं जे मनने विषे अखंड एवुं मनन करवुं जे हुं

आत्मा छुं देह नथी ने भगवानननी कथा श्रवणादिक जे नवधा भक्ति तेने विषे मनने अखंड जोडी मेलवुं पण क्षण मात्र मनने नवरुं रहेवा देवुं नहिं, जेम कोइक पुरुषने भूत वश थयो हतो ते ज्यारे काम न बतावे त्यारे तेने खावा तैयार थाय तेम आ मन छे ते पण भूत जेवुं छे ते ज्यारे भगवद्‌भक्तिमां न राखे त्यारे अधर्मना घाट घडे त्यारे ए भूतनी पेठे जीवने खावा तैयार थयुं कहेवाय, माटे मनने अखंड भगवाननी कथा कीर्त्तनादिकमां जोडी राखवुं एटले ए मन वश थयुं कहेवाय. अने बीजो उपाय ए छे जे, प्राणने नियममां राखवो ते जेम भगवाने गीतामां कह्युं छे जे, आहार विहार युक्त राखवो पण अतिशे खावानी लोलुपता न राखवी एवी रीते वर्ते त्यारे प्राण नियममां थयो कहेवाय अने प्राण नियममां न कर्यो होय तो खावानी बहु मनमां तृष्णा रहे पछी अनंत प्रकारना जे रस तेने विषे रसना इंद्रिय छे ते दोडती फरे त्यारे बीजी इंद्रियो वश करी होय ते पण सर्वे मोकळी थइ जाय, माटे आहारने नियममां राखीने प्राणने नियममां करवो. अने त्रीजो उपाय ए छे जे, आ सत्संगने विषे जेने जेने जेजे नियम कह्या छे तेमां देहने राखीने देहने नियममां करवो एवी रीते ए त्रण उपायने जे दृढ राखे तेने निष्कामी वर्त्तमान अतिशे दृढ थाय छे. अने एने विषे एम न जाणवुं जे एवी रीते राखवुं घणुं कठण छे, केमजे जे साधुज होय तेने तो एम राखवुं कांइ कठण छे नहि अने साधु होय ते तो काम, क्रोध, लोभादिक शत्रुनुं बळ होय तोपण भगवानने राजी कर्या सारु तेनो त्याग करे त्यारेज ए पाको साधु कहेवाय. अने मनुष्य देहे करीने न थाय एवुं शुं छे? जे नित्ये अभ्यास राखीने करे ते थाय छे, जेम कुवाना कांठा उपर महा कठण पत्थरो होय छे तेने विषे नित्ये पाणीने सिंचवुं तेणे करीने नरम दोरडी छे ते पण कापा पाडे छे तेमजे साधुज छे ने ते जे स्वभावने टाळवानो नित्य अभ्यास राखशे तो ते स्वभाव क्यां लगी रहेशे ए तो निश्चेज नाश पामशे. माटे जेने निष्काम व्रत राखवुं होय तेने कह्या एवा जे त्रण उपाय ते दृढ करीने राखवा. [३] इति वचनामृतम् ॥३३॥ [१६६] ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलुं कृपावाक्य छे, तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे, अमारा भक्तोए अमारा विना बीजे हेत ने स्मृति न राखवां अने अमारा भक्तनो अभाव आववा देवो नहि ने विषयनो त्याग करवो. (१) अने निष्कामी वर्त्तमान दृढ होय तेज अमने व्हालो छे ने अमे तेना मेळाज छीए ने तेनीज सेवा गमे छे ने वर्त्तमान दृढ न होय तेना उपर कुराजी छीए ने तेनी सेवा गमती नथी अने सत्संगमां कोइ स्त्री वा पुरुषने निष्कामी वर्त्तमानमां फेर पडे तो अमने संभळावशो नहि अर्थात् अमने संभळाव्या विनाज तेने सत्संग बहार काढी मुकज्यो एम सुचव्युं छे. ते

(प्र० १/८ मां) कुपात्रने सत्संग बहार काढी मेलवो एम आज्ञा आपी छे. (२) बीजामां निष्कामी वर्त्तमान दृढ करवाना उपाय बताव्या छे जे, अमारी कथा, कीर्त्तनादिक भक्तिए करीने मनने वश करवुं अने आहार नियममां करीने प्राणने नियममां करवो अने नियममां वर्तीने देहने नियममां करवो. ए त्रण उपाये निष्काम वर्त्तमान दृढ थाय छे. अने स्वभाव टाळवानो अभ्यास राखे तो ते नाश थइ जाय छे. (३) बाबतो छे.

१ प्र० (१/१ पहेला प्रश्नमां) वैराग्य, आत्मनिष्ठा, भगवानने विषे प्रीति ने धर्ममां रहेवुं एवी रीते सर्वे हरिजनोए सौ सौनां अंग कह्यां तेथी पण निष्कामव्रत उपर श्रीजीमहाराजे वधारे प्रसन्नता कही ते उपर कह्यां जे अंग तेमां निष्काम वर्त्तमान पण आवी जाय छे तो पण नोखी विक्ति करी तेनुं शुं प्रयोजन हशे ?

१ उ० आमां वैराग्य, आत्मनिष्ठा, प्रीति अने धर्म ते सामान्य कह्या छे ते सामान्य वैराग्यादिके करीने ब्रह्मचर्य दृढ रहे नहि अने ब्रह्मचर्य दृढ कर्या विना आत्यंतिक मोक्ष थाय नहिं ते (जे० ४ ना ३/१ पहेला प्रश्नमां) जे वर्त्तमानमां कसरवाळो एटले आज्ञा विरुद्ध संकल्प थइ जतो होय तेनाथी पण एकांतिक भक्त थवाय नहिं अने अमारा निर्गुण धामने पामे नहिं अने सत्संगमां पण बेसाय नहि एटले ब्रह्मचर्यादिक वर्त्तमाने युक्त एवा सत्पुरुष तेना भेळुं रहेवाय नहि एम कह्युं छे, माटे ब्रह्मचर्य व्रत दृढ कर्या विना सामान्य वैराग्य, आत्मनिष्ठादिक साधने करीने मोक्ष थतो नथी एटला सारुज श्रीजीमहाराजे पोते तप तथा गोरख आसनादि दृढ करीने ब्रह्मचर्य सिद्ध करी बताव्युं ते श्रीजीमहाराज तो साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान छे तेमने तो कांइ करवुं बाकी होयज नहि पण पोताना भक्तने उपदेश कर्यो छे के अमने ब्रह्मचर्य व्रत व्हालुं छे, माटे जे ब्रह्मचर्य दृढ करे तेज अमने प्रिय छे, ने एनुंज कल्याण करशुं. पण जे ब्रह्मचर्य दृढ नहि करे तेनुं कल्याण नहि करीए एम कह्युं छे ए सिद्धांत वात छे, माटे जेणे ब्रह्मचर्य व्रत अति दृढ करेलुं होय एवा मुक्तनो योग करीने, आमां (२/३ बीजा प्रश्नमां) त्रण उपाय कह्या छे, ते दृढ करीने विषय संबंधी संकल्प टाळे तोज कल्याण थाय, ते आ देहे अथवा बीजे देहे अथवा अनेक देहे करीने पण ब्रह्मचर्य दृढ करवुं; अने जे स्थूळ देहे ब्रह्मचर्य लोपे ते तो यमपुरीमांज जाय ने तेनुं फळ भोगवे ने पछी मनुष्य देह आवे त्यारे पण ब्रह्मचर्य सिद्ध करे तोज अक्षरधामने पामे. ॥१६६॥

संवत् १८८० ना भादरवा शुदि १ पडवाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए बिराजमान हता. अने धोळुं धोतीयुं पहेर्युं हतुं ने धोळी चादर ओढी हती, ने काळा छेडानी धोतळी मस्तके बांधी हती, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरि भक्तनी सभा भराइने बेठी हती, ने परमहंस दुकड, सरोदा लइने गावता हता.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे कीर्तन रत्खो प्रश्न उत्तर करीए तो आकस

१ मटे. एम कहीने श्रीजीमहाराज बोल्या जे प्रथम हुं एक प्रश्न पुछुं छुं जे, (१) आ जीवने विषे मायानां कार्य एवां जे इंद्रियो, अंतःकरण आदिक चोवीश तत्त्व ते रह्यां छे ते तत्त्व जड छे के चैतन्य छे? पछी परमहंसे कह्युं जे ए तत्त्व चैतन्य तो खरां पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ज्यारे ए तत्त्व चैतन्य छे त्यारे आ शरीरने विषे जीव छे ते भेळा चोवीश तत्त्वना पण चोवीश जीव थया त्यारे आ जीवनुं जे कल्याण थाशे ते पण सर्वने वेंचातुं भागे आवशे त्यारे सुख दुःखनुं जे भोक्तापणुं ते एक जीवने विषेज नहि कहेवाय ने संचित, प्रारब्ध ने क्रियमाण ए त्रण प्रकारनां जे कर्म ते पण एक जीवनेज नहि कहेवाय ने नारद सनकादिक जे पूर्वे मुक्त थया छे तेमनो एक पोत पोतानो जीवज मुक्त थयो छे, पण ते भेळा चोवीश तत्त्वना जीवतो मुक्त थया कह्या नथी, एवी रीते आशंका करीने तत्त्वने निर्जीव करी देखाडयां. पछी तेमां जे जे रीते परमहंसे उत्तर कर्या तेने तेने आशंका करीने खोटा करी नाख्या ते कोइ रीते परमहंसथी उत्तर थयो नहि पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो एनो उत्तर अमे करीए जे आ जीव छे ते पोते विशेष सत्ताए करीने हृदयने विषे रह्यो छे, ने पोतानी सामान्य सत्ताए करीने देह, इंद्रियो अंतःकरणमां तदात्मकपणे मळ्यो छे तेणे करीने ए देहादिक चैतन्य जेवां जणाय छे, पण एतो जडज छे अने ज्यारे ए जीव भगवाननो भक्त थइने भगवानना धाममां जाय छे. त्यारे जड एवां जे तत्त्व छे ते पडयां रहे छे अने ए चोवीश तत्त्व छे ते मायामांथी थयां छे माटे माया रूप छे ने जड छे, ने देह, इंद्रियो ने अंतःकरण रूपे जुदां जुदां जणाय छे ते तो जेम एक पृथ्वी छे तेज त्वचा, मांस, मज्जा, अस्थि ने स्नायु ए पांच रूपे थइ छे ने काच रूपे पण करनाराची किंमते थइ छे, तेम ए माया छे, ते परमेश्वरनी इच्छाए करीने ए देहादिक रूपे जुदे जुदे प्रकारे जणाय छे.

२ पछी शुकमुनिए पुछ्युं जे, (२) तत्त्व जड होय त्यारे तेमणे भगवाननी स्तुति केम करी? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ए तत्त्वने विषे कोइक मुक्त हता तेमणे प्रवेश करीने एक एक तत्त्वने देहे स्तुति करी जेम पृथ्वीनो जीव हतो ते पृथ्वीना खोखामांथी निसरीने ब्रह्मा पासे गयो, त्यारे कश्यप ऋषि हता तेणे ते खोखामां प्रवेश करीने तेने जीवाडयुं, पछी पृथ्वीए आवीने प्रार्थना करी जे मारुं देह पाछुं आपो त्यारे कश्यप ऋषि पृथ्वीना खोखामांथी निसरीने पृथ्वीने पृथ्वीनुं देह पाछुं आप्युं, तेणे करीने पृथ्वीनुं काश्यपी एवुं नाम पडयुं तेम मायानुं कार्य जे नाम रूप मात्र ते सर्वे जड द्रव्य छे ने ते मायानो प्रकाशनारो जे पुरुष ते चैतन्य द्रव्य छे, ते ए मायाने विषे प्रवेश करीने चैतन्य करे छे. (१) अने १

परमेश्वर छे तेतो ए प्रकृतिने पुरुष थेय थकी न्यारा छे, ते परमेश्वरनो आ जीव ज्यारे आश्रय करे छे त्यारे ए माया ने मायाना कार्य तेने तरीने ब्रह्मरूप थाय छे. ने भगवानना धामने पामे छे, पण ते विना बीजो जीवने मायाना बंधन टळ्यानो उपाय नथी. [२] इतिवचनामृतम्. ॥ ३४ ॥ (१६७) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. ते बेमां मायानां कार्य ने जड तत्त्व कह्यां छे, अने मायाना प्रकाशक मूळपुरुषने चैतन्य तत्त्व कह्या छे. (१) अने अमे मायाथी ने पुरुषथी न्यारा छीए, अने जे जीव अमारो आशरो करे ते मायाने तरीने अमारुं तेज जे ब्रह्म ते रूप थइने अमारा धामने पामे छे, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (२) बावतो छे. ॥ १६७ ॥

संवत् १८८० ना भादरवा शुदि ११ एकादशीने दिवस रात्रि पाछली छो घडी रही त्यारे श्रीजीमहाराज सुता उठीने श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां जारनी खाण उपर ढोलियो ढळावीने विराजमान थया हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो अने धोळी पछेडी ओढी हती ने श्याम छेडानी धोतली मस्तके बांधी हती.

१ पछी परमहंस तथा हरिभक्तने तेडावीने ते प्रत्ये बोल्या जे (१) आज तो अमने निद्रा बहु आवी ते घणुं उठवानुं कर्युं पण उठाय नहि ने ते निद्रामां अमे विचार घणो कर्यो छे ने ते विचारे करीने जे निरधार कर्यो छे ते कहुं छुं जे हुं रामानंदस्वामी पासे आव्या मोर पण आत्माने साक्षात् देखतो ने हमणां पण देखुं छुं ते आत्मा सूर्यना जेवो प्रकाशे युक्त छे ने आ मारी सर्वे इंद्रियोनी क्रियाने विषे मुने आत्मानुं क्षण मात्र पण विस्मरण थातुं नथी, पण ए आत्मदर्शन थावुं बहु कठण छे एवुं आत्मदर्शन तो पूर्वना घणाक जन्मना सत्संस्कारवाळो कोइक विरला होय तेने थाय छे, ने बीजो तो ए आत्मानो विचार सो वर्ष पर्यंत करे तो पण आत्मानुं दर्शन थाय नहि. एतो क्यारे थाय तो ज्यारे श्रीकृष्ण भगवाननी मूर्त्तिनुं ध्यान करे त्यारे ए आत्माने देखवो ए कांइ कठण नथी अने भगवानना ध्यान विना केवळ आत्माने विचारे करीने आत्मा जणाय छे के देखाय छे एवी तो आशा कोइने राखवी नहि (१) अने भगवाननी उपासना करवी, अने भगवानना चरित्र गावां सांभळवां, १ ने भगवाननुं नाम स्मरण करवुं,ने पोतपोताना धर्ममां रहेवुं, एवी रीते पोताना जीवनुं कल्याण थावुं ते कांइ कठण नथी; एतो जेम वहाणमां बेसीने समुद्रने तरवा एवो सुगम मार्ग छे अने आत्मदर्शने करीने कल्याण करवुं ते तो जेम तुंबडां बांधीने समुद्र तरवो एवो कठण मार्ग छे. अने अमे जे आत्मज्ञाननी वार्ता करीए छइए तेमां तो एटलुंज प्रयोजन छे जे आ पोताना आत्माने देहथी जुदो माने तो देहने विषे प्रीति

न रहे तथा देहना संबंधीने विषे हेत न रहे तथा भगवाननी भक्तिने विषे कोइ विघ्न न थाय एटलुंज प्रयोजन छे पण केवळ एणे करीनेज कल्याण थाय एम तो मानवुंज नहि. (२) अने वळी जगतमां एम वार्ता छे जे, 'मन होय चंगा तो कथरोटमां गंगा' २
ए वार्ता खोटी छे पतो गमे तेवो समाधिनिष्ठ होय अथवा विचारवान होय, ने ते पण जो स्त्रियोना प्रसंगमां रहेवा मांडे तो एनो धर्म कोइ रीते रहेज नहि, ने गमे तेवी धर्मवाळी स्त्री होय ने तेने जो पुरुषनो सहवास थाय तो तेनो पण धर्म रहेज नहि, अने एवी रीते स्त्री पुरुषने परस्पर सहवास थाय ने एनो धर्म रहे एवी तो आशाज राखवी नहि, ते आ वार्ता ते एमज छे पण एमां कांइ संशय राखवो नहि ते माटे धर्ममां तो क्यारे रहेवाय तो परमहंस होय तथा ब्रह्मचारी होय ने ते जो पोतपोताना ब्रह्मचर्यादिक नियम कह्या छे तेमां रहे तो एने धर्ममां रहेवाय, अने स्त्री होय ने ते पण जो पोतपोताना नियम कह्या छे तेमां वर्त्ते तो तेने धर्ममां रहेवाय, अने बीजा जे सत्संगी गृहस्थ होय ते पण जो पोतपोताना नियम कह्या छे तेमां रहे ने युवान अवस्थावाळी जे पोतानी मा बोन ने दिकरी ते भेळे पण एकांतमां न बेसे ने तेनी सामु पण दृष्टि मांडीने न जुवे तो एने धर्ममां रहेवाय. एवी रीते धर्ममां रहेवुं, तथा भगवानना स्वरूपनी उपासना करवी, तथा भगवानना अवतार चरित्रनुं श्रवण कीर्त्तन करवुं, तथा भगवाननुं नाम स्मरण करवुं, ए चार वानांज जीवना अतिशे कल्याणने अर्थे छे. (३) अने आ तमे सर्वे छो ते मुने भगवान जाणो छो ते अमे ज्यां ज्यां उच्छव ३
समैया कर्या होय ने जे जे ठेकाणे परमहंस ब्रह्मचारी तथा हरिभक्त सत्संगी बाइ भाइ सर्वे भेगा थया होय ने अमे कीर्त्तन गवराव्यां होय ने वार्ता करी होय ने अमारी पूजा थइ होय ए आदिक जे अमारां चरित्र लीला तेने कहेवां ने सांभळवां, ने तेनुं मनमां चिंतवन करवुं, अने जेने एवुं चिंतवन अंतकाळे जो थइ आव्युं होय तो तेनो जीव भगवानना धामने जरूर पामे माटे एवां जे अमारां सर्वे चरित्र क्रिया तथा नाम स्मरण ते कल्याणकारी छे. अने आवी रीते अमे स्वरूपानंदस्वामीने वार्ता करी हती ते वार्ताने धारी त्यारे देहमां जे मंदवाडनुं घणुंक दुःख हतुं ते सर्वे निवृत्ति पामी गयुं ने परम शांति थइ पण ए घणाय आत्माने देखता हता तो पण तेणे करीने कांइ सिद्धि थइ नहि अने वळी परोक्ष जे श्रीकृष्ण रामचंद्रादिक भगवानना अवतार तेनां जे चरित्र ते ज्यां ज्यां कह्यां होय तेने पण सांभळवां ने गाववां अने ए चारवानानी दृढता थाय तेने अर्थे अमे श्रीमद्भागवत आदिक आठ ग्रंथनुं अतिशे प्रतिपादन कर्युं छे माटे ए ग्रंथने सांभळवाने भणवा ने ए चार वानानीज वार्ता करवी अने वळी भगवाननी मूर्त्तिनी उपासना, ने भगवाननां चरित्र, ने भगवाननुं नाम स्मरण, ए

त्रण वानां विना केवळ धर्मे करीने कल्याण थावुं ते तो तुंबडां बांधाने समुद्र तरवो
तेवुं कठण छे, अने भगवाननी मूर्त्तिनो आश्रय होय, ने भगवानना चरित्रने गातो
सांभळतो होय, ने भगवाननुं नाम स्मरण करतो होय, ने जो तेमां धर्म न होय तो ते
माथे पाणो लेइने समुद्रने तरवाने इच्छे एवो जाणवो, ने तेने चांडाळ जेवो जाणवो.
माटे ए चार वानांए करीनेज जीवनुं कल्याण जरुर थाय छे पण ए विना बीजुं
कोइ एवुं साधन नथी जे जेणे करीने कल्याण थाय. (४) अने मुक्तानंदस्वामी आदिक ४
साधुनां जे काव्य कीर्त्तन ते गाववां ने सांभळवां तथा भगवानना अवतार चरित्रे
युक्त एवां काव्य कीर्त्तन बीजा कविनां होय तो तेने पण गाववां ने सांभळवां. पण
कबीरने अखानां जे काव्य कीर्त्तन होय तथा ए जेवां जेनां जेनां काव्य कीर्त्तन होय
तेने गाववां नहि ने सांभळवां पण नहि अने तमारे सर्वेने मारे विषे विश्वास छे ने हुं
तमने जेवी तेवी अवळी वाते चडावी देउं, तो जेम सर्वेने कुवामां नाखीने उपरथी
पाणानी शिला ढांके त्यारे तेने नीकळवानी आशाज नहि, तेम तमे पण अमारा वच-
नने विश्वासे करीने अवळे मार्गे चडी जाओ तो एमां अमारे शुं सारुं थाय माटे आ
वार्त्ता तमारा कल्याणनी छे ते अमे तमने हेते करीने कही छे ते सारु तमो सर्वे हवे
आवीज रीते समजीने दृढपणे वर्त्तजो एम कहीने पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जो
तमे सर्वे आ अमे वार्त्ता करी एवी रीते वर्त्तवानो निश्चय कर्यो होय तो एक एक
आवीने अमारे पगे अडीने सम खाओ ने एवी प्रतिज्ञा करो, जे अमारे दृढपणे एमज
वर्त्तवुं छे. पछी सर्वे परमहंस तथा सर्वे सत्संगी राजी थका उठीने श्रीजीमहाराजना
चरण कमळनो स्पर्श करीने ने नमस्कार करीने पाछा बेठा, पछी सर्वे बाइयोने पण
एवी रीते कह्युं त्यारे बाइयोए पण छेटे उभी रहीने एम वर्त्तवानो निश्चय करीने सम-
खाधा. पछी श्रीजीमहाराज प्रसन्न थका पोताने उतारे पधार्या. (५) इति वचनामृ- ५
तम् ॥ ३५ ॥ (१६८)

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य [१] छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे भीकुभ जे अमे ते अमारी मूर्तिना ध्यान विना केवळ आत्माने विचारे करीने आत्मा देखातो नथी. (१) अने अमारी उपासना ने अमारां चरित्र कहेवां ने सांभळवां ने अमारुं नाम स्मरण करवुं ने पोत पोताना धर्ममां रहेवुं तेणे करीने कल्याण थाय छे ने आत्मदर्शने करीने तो अमारी भक्तिमां विघ्न न थाय ए प्रयोजन छे. [२] ने स्त्रीपुरुष ते गमे तेवा धर्मवाळां ने समाधिनिष्ठ होय तो पण सहवास राखे तो तेमनो धर्म रहेज नहि माटे अमे नियम कह्या छे ते प्रमाणे रहेवुं.[३] अने अमारी उपासना, चरित्र ने नाम स्मरण ए त्रण विना एकला ब्रह्मचर्यादिक धर्मे करीने कल्याण थातुं नथी अने जो ए त्रणे होय पण धर्म न होय तो पण कल्याण न थाय. (४) अने अमारा चरित्रनां काव्य सांभ-

ळवां पण कबीर ने अखा आदिनां काव्य कीर्त्तन कहेवां, सांभळवां नहि. [५] बाबतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां पूर्वना घणाक जन्मना सत्संस्कारवाळाने आत्मानुं दर्शन थाय छे एम कह्युं अने वळी अमारी मूर्त्तिनुं ध्यान करे तो आत्माने देखवो ते कठण नथी एम कह्युं ते मूर्तिना ध्यान विना बीजा क्रिया संस्कारे करीने आत्मा देखतो हशे ?

१ उ० मूर्तिनी उपासना विना बीजा कोइ पण संस्कारे करीने आत्मा के ब्रह्म देखायज नहि, एम (छे० २६ ना बीजा प्रश्नमां) कह्युं छे,माटे आ ठेकाणे उपासक भक्तनेज सत्संस्कारी कह्यो छे. ते [अ० १ ना बीजा प्रश्नमां] एकांतिक भक्तनेज अमारुं ध्यान सिद्ध थाय छे पण बीजाथी तो ए मार्गे चलातुंज नथी एम कह्युं छे. माटे एकांतिक भक्तनेज सत्संस्कारी कह्यो छे. अने अमे आत्माने देखीए छीए एम कह्युं छे ते पण भक्तभावेज बोल्या छे.

२ प्र० चोथी बाबतमां परोक्ष श्रीकृष्ण रामचंद्रादिकनां चरित्र सांभळवां ने कहेवां एम कह्युं ने आठ ग्रंथनुं प्रतिपादन कर्युं तथा (म० ३९ ना बीजा प्रश्नमां) भागवतना बे स्कंधनुं प्रतिपादन कर्युं छे अने (म० ५८ मां) अमारा उपासकने अमारां चरित्रनां शास्त्रथीज पुष्टि थाय पण बीजा ग्रंथथी पुष्टि न थाय एवी रीते परोक्ष शास्त्रनो निषेध कर्यो छे ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० ए परोक्ष ग्रंथोमां परोक्ष अवतारोनां घणाक प्रकारनां चरित्र छे ते सांभळेलां होय तो श्रीजीमहाराजना मनुष्य चरित्रमां संशय थाय नहि माटे श्रीजीमहाराजनां मनुष्य चरित्रमां साख्य लेवा सारु प्रतिपादन कर्युं छे. ते (प्र० ७८ ना सत्तरमा प्रश्नमां) श्रीजीमहाराजे भगवदानंदस्वामीने कह्युं छे जे परोक्ष अवतारोना जेवां मनुष्य चरित्र अमे करीए त्यां सुधी संशय करशो नहि.(१) अने [म० ३९ ना $\frac{२}{३}$ बीजा प्रश्नमां] दशम स्कंध ने पंचम स्कंधमां श्रीकृष्ण भगवानने सर्वे अवतारोथी पर कह्या छे तेणे करीने मच्छकच्छादिक अवतारोथी श्रीकृष्ण पर समजाय छे.अने (पं० $\frac{६}{१}$ मां) जेम श्रीकृष्ण भगवाने पोताथी ओरा जे सर्वे अवतारो तेनो भाव पोताने विषे जणाव्यो छे तेणे करीने ते श्रीकृष्णने सर्वोपरी समजाय छे तेम श्रीजीमहाराजे पण्थारानी [९ मी बाबतमां] श्रीकृष्णादिक सर्वे अवतारोनो भाव पोताने विषे जणाव्यो छे माटे श्रीजीमहाराज श्रीकृष्णादिक सर्वे अवतारोथी पर पुरुषोत्तम भगवान छे एम समजवा पूर्वक ए बे ग्रंथ सांभळवानुं कह्युं छे अने (म० ५८ मां) तो पोतानो सिद्धांत कह्यो छे जे अमो सर्वोपरि सर्वे कारण अवतारी छीए माटे अमारा ग्रंथनेज मानवा केम जे अमारा संप्रदायनी पुष्टि अमारा ग्रंथ करीनेज थाय छे पण बीजा कोइ ग्रंथ करीने थाती नथी एम कह्युं छे.

३ प्र० श्रीजीमहाराजनी उपासना चरित्र तथा नाम स्मरण ए त्रण विना केवळ धर्मे करीने कल्याण थावुं ते तुंबडां बांधीने समुद्र तरवा जेवुं कह्युं अने ए त्रण होय पण जो धर्म न होय तो माथे पाणो लइने समुद्र तरवा जेवुं कह्युं ते समुद्रने ठेकाणे शुं जाणवुं ? अने तुंबडां बांधीने समुद्रमां पड्यो ते अने माथे पाणो लइने पड्यो ते बेमां अधिक न्यून कोण हशे ?

३ उ० समुद्रने ठेकाणे माया जाणवी. अने जेने धर्म न होय ने उपासना आदिक त्रण होय तेने श्रीजीमहाराज आ लोकने विषे राखे ने तेने सत्पुरुष मळे ने ते सत्पुरुषने उपदेशे करीने धर्म पाळीने कल्याणने मार्गे चाले ने एक बे जन्मे पण तेनुं कल्याण थाय माटे ते अधिक छे अने धर्म पाळतो होय पण तेने उपासनादिक त्रण वानां न होय माटे तेने धर्म पाळवानुं फळ मळे तेथी ते लांबी आयुषवाळा लोकांतरमां जाय ते सत्पुरुषना योगमां न आवे ने तेनुं कल्याण न थाय माटे ते न्यून छे अने धर्म न पाळे तेने चंडाळ कह्यो तेतो एने मायारूपी समुद्र तरवानुं श्रीजीमहाराजनी उपासना रूपी वहाण मळ्युं छतां तेणे धर्म लोप्यो ने पोतानुं कल्याण करी शक्यो नहि तेथी तेने धिक्कार आप्यो छे जे आवो अवसर मळया छतां पोतानुं कल्याण करी शक्यो नहि माटे तेने चंडाळ कह्यो छे पण जेम ब्रह्मादिक धर्म थकी पडया पण कल्याणना मार्गमांथी पडया नहि तेम ते उपासनावाळो पण कल्याणना मार्गमांथी पडे नहि.

४ प्र० पांचमी बाबतमां कवीश्वने अज्ञानां काव्य कीर्तन सांभळवानो निषेध कर्यो तेनुं शुं कारण हशे ?

४ उ० जगत कारण एवुं जे ब्रह्म तेने निराकारवादीयो निर्गुण ने आकृतिमात्रनुं कारण कहे छे अने मायिक आकृतिने जेम मायिक गणे छे, तेमज परब्रह्म परमात्मानी आकृतिने मायिक गणीने सगुण अवतारोनी पेठेज तेमने पण मायिक कहे छे पण निर्गुण ब्रह्मथी पर ने ते ब्रह्मना कारण जे परब्रह्म तेने दिव्य साकार जाणी शकता नथी अने सगुण अवतारनी पेठेज निर्गुण ब्रह्मथी पर जे परब्रह्म ते पृथ्वी उपर जीवनां आत्यंतिक कल्याण करवा मनुष्याकृति देखाय छे तेमने दिव्य साकार ने परब्रह्म जाणीने, अने निर्गुण ब्रह्मरूप थइने, परब्रह्मनी उपासना करनारा एवा शुद्ध चैतन्य ब्रह्मरूप भक्तने तथा परब्रह्मने जेवा छे तेवा दिव्य जाणी शकता नथी. अने पोते जेम साधनकाळमां सगुणनी उपासनाए करीने निर्गुण ब्रह्मनी प्राप्ति मानी छे, तेमज परब्रह्मनी साथे एकता करीने परब्रह्मने भजनारा जे भक्त तेमने पण पोतानी पेठेज सगुणनी उपासना करनारा माने छे. माटे ए मतमां मोक्ष नथी केम जे, निर्गुण ब्रह्मथी पर जे परब्रह्म परमात्मा ते साक्षात् मळया विना आत्यंतिक मोक्ष थाय नहि तेथी ए मतनां शास्त्रनो निषेध कर्यो छे. ॥ १६८ ॥

संवत् १८८० ना भादरवा शुदि १५ पुनमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी ओसरीये ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्व श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे प्रश्न उत्तर करो त्यारे मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न

१ पूछयो जे (१) जे भगवानना स्वरूपमां अखंड वृत्ति रहे तेनो शो उपाय छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे एनो उपायतो चार प्रकारनो छे. तेमां एकतो जेना चित्तनो

चोटवानो स्वभाव होय ते ज्यां चोटाडे त्यां चोटी जाय ते जेम पुत्र कळत्रादिकमां चोटे छे तेम परमेश्वरमां पण चोटे माटे एक तो ए उपाय छे. अने बीजो उपाय ए छे जे अतिशे शूरवीरपणुं ते शूरवीरपणुं जेना हैयामां होय ने तेने जो भगवान विना बीजो घाट थाय तो पोते शूरवीर भक्त छे माटे तेना हृदयमां अतिशे विचार उपजे ते विचारे करीने घाट मात्रने टाळीने अखंड भगवानना स्वरूपमां वृत्ति राखे छे. अने त्रीजो उपाय ते भय छे ते जेना हृदयने विषे जन्म मृत्यु ने नरक चोरासी तेनी बीक अतिशे रहेती होय ते बीके करीने भगवानना स्वरूपमां अखंड वृत्ति राखे छे. अने चोथो उपाय ते वैराग्य छे ते जे पुरुष वैराग्यवान होय ते सांख्य शास्त्रने ज्ञाने करीने देह थकी पोताना आत्माने जुदो समजीने ते आत्मा विना बीजा सर्व मायिक पदार्थने असत्य जाणीने पछी ते आत्माने विषे परमात्माने धारीने तेनुं अखंड चिंतवन करे अने ए चार उपाय विना तो जे उपर भगवान कृपा करे तेनी तो वात न कहेवाय पण ते विना बीजा तो अनंत उपाय करे तो पण भगवानने विषे अखंड वृत्ति रहे नहि अने भगवानने विषे अखंड वृत्ति रहेवी ते तो घणुं भारे काम छे ते जेने अनेक जन्मनां सुकृत उदे थयां होय तेने भगवानना स्वरूपमां अखंड वृत्ति रहे छे ने बीजाने तो अखंड वृत्ति राखवी महा दुर्लभ छे एवी रीते भगवानना स्वरूपमां अखंड वृत्ति राखवानी वात करी. (१) १

२ ने पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे,(२)आ संसारने विषे माया माया कहे छे ते मायानुं रूप अमे जोइ लीधुं छे जे भगवान विना बीजे ठेकाणे जे हेत रहे छे तेज माया छे अने आ जीवने पोतानो जे देह ने देहनां सगां संबंधी ने देहनुं भरण पोषण करनारो एटलाने विषे तो जेवुं पंच विषयमां जीवने अतिशे हेत छे ते थकी पण विशेषे हेत छे. माटे जेने देहने देहनां सगां संबंधी ने देहनुं भरण पोषण करनारा एमांथी स्नेह तुट्यो ते पुरुष भगवाननी मायाने तरी रह्यो छे अने जे पुरुषने भगवानविना बीजामांथी हेत तुटे छे तेनेज भगवानने विषे हेत थाय छे अने ज्यारे भगवानने विषे हेत थयुं त्यारे तेनी भगवानमां अखंड वृत्ति रहे छे ने ज्यारे भगवानमां अखंड वृत्ति रही त्यारे तेने बीजुं कांइ करवुं रह्यु नथी ते तो कृतार्थ थयोछे. (२) इति वचनामृतम्. ॥३६॥ (१६९) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. बीजुं कृपावाक्य छे, तेमां पहेलामां श्रीजी-महाराजे कह्युं छे जे जेना चित्तनो चोटवानो स्वभाव, शूरवीरपणुं, भय ने वैराग्य होय तेओने तथा जेना उपर अमे कृपा करीए तथा पूर्वनो संस्कारी होय ते सर्वने अमारी मूर्तिमां अखंड वृत्ति रहे छे (१) बीजामां अमारा विना बीजे हेत रहे ते माया छे ने बीजेथी हेत तुटीने अमारे विषे हेत थाय ते मायाने तरी रह्यो छे.(२) आवस्रो छे.॥१६९॥

संवत् १८८० ना भादरवा वदि १ पडवाने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता, ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे [१] गीतामां कह्युं छे जे ज्ञानी होय ते पण पोतानी प्रकृति सरखुं आचरण करे, अने शास्त्रे कह्यो एवो जे निग्रह तेनुं जोर चाले नहि. माटे ए स्वभाविक प्रकृति छे ते शे उपाये करीने टळे ? पछी सर्वे जे मुनिमंडळ तेणे विचारी जोयुं पण श्रीजीमहाराजना प्रश्ननो उत्तर थाय एम जणायुं नहि, पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे एनो उत्तर एम छे जे ए स्वभाव मुकाव्या सारु जे सत्पुरुष उपदेश करता होय, तेना वचनने विषे अतिशे विश्वास होय, अने उपदेशना करनारानी उपर सांभळनाराने अतिशे प्रीति होय, अने उपदेशनो करनारो होय ते गमे तेटलां दुःखवीने कठण वचन कहे तो पण तेने हितकारीज मानतो जाय, तो स्वभाविक जे प्रकृति छे ते पण नाश थइ जाय, पण ए विना बीजो कोइ उपाय नथी माटे जेने पोतानी प्रकृति टाळवानी इच्छा होय, तेने परमेश्वर तथा सत्पुरुष ते स्वभाव टाळवा सारु गमे तेटलो तिरस्कार करे, ने गमे तेवां कठण वचन कहे तो पण कोइ रीते दुःखावुं नहि, ने कहेनारानो गुणज लेवो एवी रीते वर्ते तो कोइ रीते न टळे एवी प्रकृति होय तोय पण टळी जाय छे. (१)इति वचनामृतम्.।।३७।।[१७०] १

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [१] छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमे ने अमारा संत तिरस्कार करीए तोपण गुण ले, ने दुःखाय नहि तो न टळे एवी प्रकृति होय ते पण टळी जाय. (१) बाबत छे.

१ प्र० आमां ज्ञानी होय ते पण पोतानी प्रकृति सरखुं आचरण करे एम कह्युं, अने (व० १७ ना पहेला प्रश्नमां) इंद्रियोने जिते तेने ज्ञानी कह्यो छे, माटे आमां कह्युं ते ज्ञान केवुं जाणवुं ? अने एमां कह्युं ते केवुं जाणवुं ?

१ उ० आमां सार असारने जाणे पण देहादिक सर्वे पदार्थने दुःखदायी जाणीने तेमां दोष बुद्धि थइ न होय, तेथी प्रकृति वश न रहे माटे ते अपक्व ज्ञान जाणवुं, अने (व० १७ मां) श्रीजीमहाराज विना बीजुं सर्वे असत्य ने दुःखदायी जाणीने तेने विषे दोषदृष्टि थइ होय, अने ते पदार्थनो अतिशे अभाव थइ गयो होय तेवुं ज्ञान कह्युं छे, माटे ते परिपक्व ज्ञान जाणवुं ।। १७० ।।

संवत् १८८०ना भादरवा वदि ६ छठने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर गादी तकीया नखावीने विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने

पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.
१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे(१) संसारी जीव छे तेने तो कोइ धन देनारो मळे के दिकरो देनारो मळे तो त्यां तुरत प्रतीति आवे अने भगवानना भक्त होय तेने तो जंत्र मंत्र नाटक चेटकमां क्यांय प्रतीति आवेज नहि अने जे हरिभक्त होय ने जंत्र मंत्रमां प्रतीति करे ते सत्संगी होय तो पण अर्धो विमुख जाणवो अने जे साचा भगवानना भक्त होय ते घणा होय नहि यथार्थ भगवानना भक्त तो कारियाणी गाममां मांचो भक्त हता ते सत्संग थया मोर मार्गीना पंथमां हता तो पण निष्कामी वर्त्तमानमां फेर पडयो नहि अने पोते बाळ ब्रह्मचारी रह्या अने कोइक किमियावाळो पोताने घेर आवीने उतर्यो हतो तेणे त्रांबामांथी रुपुं करी देखाड्युं ने पछी ए भक्तने कह्युं जे तमे सदाव्रती छो माटे तमने आ बुटी बतावीने रुपुं करतां शिखवुं पछी ए भक्ते लाकडी लइने तेने गाम बहार काढी मुक्यो अने तेने एम कह्युं जे अमारे तो भगवान विना बीजा पदार्थनी इच्छा नथी पछी ए भक्तने सत्संग थयो त्यारे भगवानना एकांतिक भक्त थया. (१) माटे जे एकांतिक भक्त होय तेने एकतो आत्मनिष्ठा १
होय ने बीजो वैराग्य होय ने त्रीजो पोतानो धर्म दृढपणे होय ने चोथी श्रीकृष्णभगवानने विषे अत्यंत भक्ति होय ने ते एकांतिक भक्त ज्यारे देह मुके त्यारे तेनो श्रीकृष्णभगवानने विषे प्रवेश थाय छे. (२) अने जे एकांतिक न होय तेनो तो ब्रह्मादि- २
कमां प्रवेश थाय छे अथवा संकर्षणादिकने विषे प्रवेश थाय छे पण एकांतिक थया विना श्रीकृष्ण वासुदेवमां प्रवेश थातो नथी ते प्रवेश ते एम समजवो जे जेम अतिशे लोभी होय तेनो धनमां प्रवेश थाय छे अने जेम अति कामी होय तेनो मनगमती स्त्रीमां प्रवेश थाय छे ने जेम घणीक दोलतवाळो होय ने ते वांझीयो होय ने तेने दिकरो आवे तेनो दिकरामां प्रवेश थाय छे तेम एवी रीते जेनो जीव जे संघाथे बंधाणो होय तेने विषे तेनो प्रवेश जाणवो पण जेम जळमां जळ मळी जाय छे ने अग्निमां अग्नि मळी जाय छे तेम प्रवेश नथी थातो एतो जेनो जेने विषे प्रवेश होय तेने पोताना इष्टदेव विना बीजा कोइ पदार्थने विषे हेत उपजे नहि ने एक तेनीज रटना लागी रहे ने ते विना जीवे ते महादुःखना दिवस भोगवीने जीवे पण सुख न थाय. (३) ३
इति वचनामृतम् ॥३८॥ (१७१)

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे जंत्र मंत्रमां प्रतीति करे ते सत्संगी अर्धो विमुख छे [१] अने आत्मनिष्ठा वैराग्य धर्म ने अमारे विषे अत्यंत भक्ति ए चार वानां होय ते अमारो एकांतिक भक्त छे अने ते भक्त देह मुके त्यारे तेनो अमारे विषे प्रवेश थाय छे अने एकांतिक न होय तेनो ब्रह्मा आदिका

संकर्षणादिकने विषे प्रवेश थाय छे. (२) अने एवा एकांतिक भक्तने देहमां होय त्यां सुधी लोभी कामीने वांझीयानी पेठे अमारीज रटना रहे छे. (३) वावतो छे.

१ प्र० बीजी बाबतमां एकांतिक भक्तनो अमारे विषे प्रवेश थाय छे एम कह्युं अने श्रीजीमां जळमां जळ ने अग्निमां अग्नि मळे तेम प्रवेश नथी थतो एम कह्युं त्यारे केवी रीते थतो हशे ?

१ उ० भक्तनो चैतन्य श्रीजीमहाराजने ध्याने करीने लट भ्रमरवत् तदाकारभावने पामी जाय छे तो पण श्रीजीमहाराज तथा भक्त ते एक थइ जता नथी श्रीजीमहाराजनी मूर्त्तिमां ए भक्त वस्तुताए जुदा रहे छे ने श्रीजीमहाराजने विषे स्वामी सेवक भाव रहे छे. पण जळमां जळ ने अग्निमां अग्नि एक थइ जाय ने तेमां जेम जुदापणुं रहेतुं नथी एवी रीते प्रवेश नथी थतो अने एवो जे एकांतिक भक्त ते देहमां रह्यो होय त्यां सुधी तेने कामी, लोभी, ने वांझीयानी पेठे श्रीजीमहाराजनीज रटना रहे छे.

२ प्र० श्रीजीमहाराजनो भक्त श्रीजीमहाराजने विषे लीन थाय छे एवुं आ विना बीजा किया वचनामृतमां कह्युं छे ?

२ उ० [सा० ११ ना १/१ पहेला प्रश्नमां तथा छे० १२ ना २/३ बीजा प्रश्नमां] श्रीजीमहाराजने विषे लीन थाय छे एम कह्युं छे ते जेने साधनकाळमां अनादि मुक्तना योगे करीने मूर्तिमां लीन रहेवानी समजण थइ होय ते श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां रहे छे अने जेने परम एकांतिकनो योग मळ्यो होय तेने श्रीजीमहाराजना तेजरूप अक्षर धाममां रहेवानी समजण थइ होय ते अक्षरधाममां श्रीजीमहाराजने सन्मुख रहे छे.

३ प्र० आ वर्त्तमानकाळे तो श्रीजीमहाराजनी इच्छाथी आप अनादि मुक्त मनुष्यरूपे प्रत्यक्ष विराजो छो पण ज्यारे आप जेवा अनादि मुक्त तथा परम एकांतिक मुक्त आ सत्संगमां मनुष्यरूपे विचरता न होय त्यारे आ ग्रंथमांथी तेवी समझण थाय के केम ? अने एवी स्थितिने पामे के केम ? केमजे [प्र० ६० ना २/३ बीजा प्रश्नमां] जेने अमारे विषे स्थिति थइ होय ते थकीज एकांतिकनो धर्म पमाय छे पण ग्रंथमां लखी राख्यो होय तेणे करीने पमातो नथी तथा [६४/५ मां] जेने अमारा स्वरूपमां स्थिति थइ होय ते थकी आ वार्ता पमाय छे तथा (म० १३/३ मां) ज्यारे सत्पुरुष प्रगट थाय छे त्यारे तेमना मुखथकी आ वात समझ्यामां आवे छे पण बुद्धिबळे करीने सद्ग्रंथोमांथी पण समजाती नथी एम कह्युं छे माटे तेवी समजण ने तेवी स्थिति वचनामृतनी आ रहस्यार्थ प्रदीपिकामांथी पमाय के केम?

३ उ० श्रीजीमहाराजने जेवा छे तेवा समजी शकाय ते सारु अमे आ टीका करी छे माटे आ टीकामांथी श्रीजीमहाराजने सर्वना कारण सर्वना कर्त्ता सदा साकार दिव्य मूर्तिमान ने ब्रह्मकोटी, मूळअक्षर कोटी तेथी पर श्रीजीमहाराजना परम एकांतिक मुक्त तथा अनादि मुक्त ते सर्वेथी पर ने ते सर्वेना आधार ने ते सर्वना स्वामीने सर्वेने सुखना दाता ने सर्व सुखमय मूर्ति एवा जाणे ने तेज आ प्रत्यक्ष श्रीजीमहाराज प्रतिमारूपे साक्षात् विराजमान छे एवी रीते समजीने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनी मर्यादा राखीने (लो० ११ ना चोथा प्रश्नोत्तरमां) कह्युं छे तेवी रीते श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनुं ध्यान करशे ने सत्संगी जीवन-

मां धर्मामृत, निष्कामशुद्धि, शिक्षापत्री, जनशिक्षा, बृहद्धर्म, नारायणगीता आदिकमां जेना जेना धर्म जेवी जेवी रीते कह्या छे तथा आ ग्रंथमां त्यागी गृही आदिक सर्वेना धर्म तथा ज्ञान वैराग्य भक्ति उपासना महिमा समजवाना उपाय कह्या छे ते प्रमाणे समजशे ने वर्तशे ते सर्वे एवी स्थितिने पामशे.

४ प्र० त्रीजी बाबतमां एकांतिक न होय तेनो ब्रह्मादिकमां अथवा संकर्षणादिकने विषे प्रवेश कह्यो ते ब्रह्मा तथा संकर्षणादिक किया जाणवा ?

४ उ० एकांतिकपणामां न्यूनता छे माटे वैराज ब्रह्माने तेथी पर सगुण जे अनिरुद्ध, प्रद्युम्न, संकर्षण तेमना लोकने पामे ते ज्यारे श्रीजीमहाराज आ लोकने विषे पधारे त्यारे ते पण ते ते लोकोमांथी सत्संगमां आवे ने ज्यारे एकांतिक थाय त्यारे आत्यंतिक कल्याण थाय ॥ १७१ ॥

संवत् १८८० ना भादरवा वदि १० दशमीने दिवस श्रीजीमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमांथी घोडीए चडीने श्री लक्ष्मीवाडीए पधार्या हता पछी त्यां ओटा उपर ढोलीयो ढळावीने ते उपर विराजमान थया हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो जे, (१) देश काळ क्रिया संगादिके करीने पण जे पोतामां एवो गुण होय जे जायज नहि एवो जेने जे स्वभाविक गुण होय ते कहो. एम कहीने श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे अमारामां एवा स्वभाविक गुण रह्या छे ते कहीए जे, एक तो अमारे एम वर्ते छे जे पंच प्रकारना विषय संबंधी जे जे पदार्थ छे तेनो देहे करीने मुझे एटलो योग थाय तो पण तेनो मनमां घाट न थाय तथा स्वप्नमां पण न आवे. अने बीजो एम जे बाहेरथी मुझे एटली प्रवृत्तिमां रह्या होइए पण ज्यारे अंतर्दृष्टि करीने पोताना आत्मा सामुं जोइए तो काचबाना अंगनी पेठे सर्वे वृत्ति संकोचाइने आत्मस्वरूपने पामी जाय ने परम सुखरूपे वर्ताय. अने त्रीजो एम जे चैतन्यरूप ने तेजोमय एवुं जे भगवाननुं अक्षर धाम छे तेमां सदा साकार मूर्ति एवा श्रीकृष्ण वासुदेव विराजमान छे ने ते साकार थकाज सर्वना कर्त्ता छे पण निराकार थकी तो कांइ थातुं नथी एवी रीते साकारनी दृढ मतीति छे, ते केटलाक वेदांतना ग्रंथ वंचाव्या ने सांभळ्या तोपण ए प्रतीति टळी नहि. अने चोथो एम जे जे कोइ बाइ भाइ होय ने तेनी कोरलुं एम अमारे जाण्यामां आवे जे आतो उपरथी दंभे करीने भगवाननी भक्ति करे छे पण ए साचो भगवाननो भक्त नथी तो तेने देखीने मन राजी न थाय ने तेनी साथे सुवाण पण न थाय ने जे खरेखरो भगवाननो भक्त होय तेने देखीनेज मन राजी थाय ने तेनी साथेज सुवाण थाय. ए चार गुण अमारे

विषे स्वभाविकपणे रह्या छे ते कह्या ने हवे तमे सर्वे कहो. पछी जे मोटेरा परमहंस
तथा मोटेरा हरिभक्त हता तेमणे जेमां बे गुण एवो हतो ते कही देखाड्यो.(१) पछी १
श्रीजीमहाराज बोल्याजे, जे मोटेरो होय तेने विषे निष्कामरूप धर्म छे ते अवश्य जोइए
ने बीजी वातमां तो कांइक काच्यप होय तो चाले पण एनीतो दृढता अतिशे जोइए
केम जे ए मोटेरो छे तेनी सारप्ये सर्वेनी सारप्य कहेवाय. (२) २

एवी रीते वार्त्ता करीने पाछा दादाखाचरना दरबारमां पधारीने संध्या आरती
नारायण धुन्य स्तुति करीने पछी सर्वे साधु तथा हरिभक्तनी सभा थइ पछी श्रीजीम-
२ हाराजे मोटेरा परमहंसने पुछयुं जे, (२) अमे पंचमस्कंध तथा दशमस्कंधनुं अतिशे प्र-
तिपादन कर्युं छे माटे ए बे ग्रंथनुं जे रहस्य ते जेम तमने समज्यामां आव्युं होय ते
कहो त्यारे मोटेरा सर्वे परमहंसे पोत पोतानी समझण प्रमाणे जेम जणाणुं तेम कही
देखाडयुं. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, ल्यो हवे अमे ए बे ग्रंथनुं रहस्य कहीए जे
रहस्य ते शुं तो गमे एवो शास्त्री होय पुराणी होय अतिशे बुद्धिवाळो होय ते पण सांभ-
ळीने ते वार्त्ताने निश्चे सत्य माने ने हा पाडे पण तेने कोइ रीते संशय न रहे जे ए
वार्त्ता एम नहि होय एवी रीने जे कही देखाडवुं तेनुं नाम रहस्य कहेवाय. अने ए बे
ग्रंथमां दशमस्कंधनुं तो ए रहस्य छे जे उपनिषद्, वेदांत ने श्रुति, स्मृति तेमां जेने ब्रह्म
कह्या छे,ज्योतिस्वरूप कह्या छे,ज्ञानरूप कह्या छे,तत्त्व कह्या छे, सूक्ष्म कह्या छे,नेनिरंजन
क्षेत्रज्ञ सर्वे कारण परब्रह्म पुरुषोत्तम वासुदेव विष्नु नारायण निर्गुण एवे एवे नामे करीने
जेने परोक्षपणे कह्या छे,ते ते आ प्रत्यक्ष वसुदेवना पुत्र श्रीकृष्ण वासुदेव छे.एवी रीते ज्यां
ज्यां स्तुति भाग छे त्यां त्यां एवा एवा स्तुतिना शब्दने लेइने प्रत्यक्ष श्रीकृष्ण भगवाननेज
कह्या छे,पण श्रीकृष्ण भगवानथी अधिक कांइ नथी कह्युं.तथा सर्वे जगतनी उत्पत्ति स्थिति
प्रळयना कर्त्ता ते पण श्रीकृष्ण भगवानज छे एम कह्युं छे. अने पंचमस्कंधने विषे तो ए
श्रीकृष्णभगवाननुं महात्म्य कह्युं छे तथा ए श्रीकृष्ण भगवान जे ते आ जगतनी स्थितिने
अर्थे ने पोताना भक्त जनने सुख आपवाने अर्थे अनेक प्रकारनी मूर्तियोने धारीने खंड
खंड प्रत्ये रह्या छे एम कह्युं छे अने पोते बांधी जे मर्यादाओ तेने विषे जे रहे ते अ-
तिशे मोटपपने पामे ने जे न रहे ते मोटा होय तोपण पोतानी स्थितिथकी पडी
जाय अने जे साधारण जीव होयने ते मर्यादाने लोपे तो तेने अधोगति थाय छे एम
कह्युं छे. अने एज जे श्रीकृष्ण वासुदेव तेणे वसुदेव देवकीने प्रत्यक्ष चतुर्भुजरूपे अद्भुत
बाळक थका दर्शन दीधुं ए अनादि वासुदेवरूप छे अने ए श्रीकृष्णभगवान धर्म अर्थ
कामने विषे वर्त्या छे ते धर्म अर्थ काम सारु जे जे भगवाने चरित्र कर्यां तेनुं जे
गान करे अथवा श्रवण करे ते सर्वे जीव सर्व पापथकी मुकाइने परमपदने पामे छे.

अने ए वासुदेव भगवानना जन्म कर्म ने मूर्ति ए सर्वे दिव्य स्वरूप छे अने ए जे वासुदेव श्रीकृष्ण तेज सर्वोपरि छे एवी रीते ए वे ग्रंथनुं रहस्य छे. अने जे शुकजी जेवा ब्रह्मस्थितिने पाम्या होय तेने पण ए श्रीकृष्ण परब्रह्मनी उपासना भक्ति करवी. ने दशममां कह्यां जे श्रीकृष्ण भगवानना चरित्र ते शुकजी जेवाने पण गाववां ने सांभळवां, ते शुकजीएज कह्युं छे जे ॥ परिनिष्ठितोपिनैर्गुण्ये उत्तमश्लोकलीलया ॥ गृहीत चेताराजर्षे आख्यानं यदधीतवान् ॥१॥ अने एवा जे वासुदेव भगवान तेना आकारने विषे दृढ प्रतीति राखवी अने जो भगवानना आकारने विषे दृढ प्रतीति हशे ने कदाचित् ए जीव कांइक पाप करशे तो पण एनो उद्धार थाशे केमजे पाप करे तेनुं तो प्रायश्चित्त कह्युं छे पण भगवानने जे निराकार समझे ए तो पंचमहापाप करतां पण अति मोटुं पाप छे ए पापनुं कोइ प्रायश्चित्त नथी. अने भगवानने साकार जाणीने निष्ठा राखी होय ने कदाचित् तेथी कांइक पाप थइ गयुं होय तो एनो शो भार छे? ए पाप तो भगवानने प्रतापे करीने सर्वे बळी जाशे ने एनो जीव भगवानने पामशे. माटे भगवानना आकारने विषे दृढ प्रतीति राखीने एनी दृढ उपासना करवी एम अमे तमने सर्वेने कहीए छइए ते वार्ताने सर्वे दृढ करीने राखजो. एवी रीते श्रीजीमहाराज सर्वेने शिक्षा वचन कहीने भोजन करवा सारु पधार्या.(३)इति वच०॥३९॥(१७२) ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे, तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारा एकांतिक भक्तने अमारा विना बीजा पदार्थेनो घाट थातो नथी ने स्वप्नमां पण आवतां नथी ने प्रवृत्तिमां रह्या होय पण अंतर्दृष्टि करे त्यारे आत्मस्वरूपने पामीने परम सुखरूपे वर्ताय ने अमने सदा साकार जाणे अने जे दंभे करीने अमारी भक्ति करतो होय तेना उपर राजी न थाय ने साचा भक्तने देखीनेज राजी थाय एवा स्वभाविक गुण अमारा एकांतिक भक्तने विषे रह्या छे. [१] अने मोटेरा होय तेने निष्काम वृत्तनी अतिशे दृढता करवी. (२) बीजामां परोक्ष श्रीकृष्णने दृष्टांते करीने पोतानो महिमा कह्यो छे जे जेम दशमस्कंधमां अनेक नामे करीने वसुदेवना पुत्र श्रीकृष्णनेज कह्या छे अने सर्वकर्त्ता कह्या छे तेम वचनामृत, सत्संगीजीवन, सत्संगीभूषण, हरिलीलाकल्पतरु, हरिदिग्विजय आदिक सांप्रदायिक ग्रंथोमां नारायण विष्णु परमात्मा पुरुषोत्तम वासुदेव नरनारायण नीलकंठ हरि हरिकृष्ण श्रीकृष्ण घनश्याम सहजानंद नारायणमुनि ब्रह्म परब्रह्म पूर्णब्रह्म इत्यादिक विशेषणोए करीने साक्षात् दिव्यविग्रह सदा साकार मूर्ति श्रीस्वामिनारायण भगवान जे अमे ते अमनेज कह्या छे एम जाणवुं अने पंचमस्कंधमां जेम ए श्रीकृष्ण भगवाननुं महात्म्य कह्युं छे तेम अमारा सांप्रदायिक सर्वे ग्रंथोमांथी अमने सर्व कर्त्ता समजवा अने सर्वेने आत्यंतिक मोक्षरूपी सुख देवाने अर्थे अनेक प्रकारे अनंत ब्रह्मांडमां मूर्तियो धारण करीने धर्म मर्यादा बांधीए छीए. तेमां जे रहे ते अति मोटप्य पामे ने ते मर्यादा लोपे तो

अति मोटो होय ते पोतानी स्थितिमांथी पडी जाय छे जे साधारण होय ते अधो गतिने पामे छे. अने अमारा जन्म कर्म दिव्य छे ते अमारा चरित्रनुं गान श्रवण करे ते सर्व पापथी मुकाइने परमपद जे अमारुं अक्षर धाम तेने पामे छे. अने सर्व नामना नामी सर्व अवतारोना कारण अवतारी अने मूळपुरुष जे ईश्वरकोटी, ब्रह्मकोटी, मूळ अक्षर कोटी, ने तेथी पर जे अमारा मुक्त ते सर्वेथीपर ने ते सर्वना नियंता प्रत्यक्ष भगवान छीए आवी रीते अमारो महिमा जाणीने निष्ठा राखे ते अंते अक्षर धामने पामे छे (१) वातनो छे. ॥१७२॥

संवत् १८८० ना आसो वदि ३ त्रीजने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उताराने विषे विराजमान हता पछी स्नान करीने श्वेत वस्त्रनुं धारण करीने पोताना आसन उपर विराजमान थया ने पोतानुं देवार्चनादिक जे नित्य कर्म तेने करीने उत्तरादे मुखे श्रीकृष्ण भगवानने साष्टांग दंडवत् प्रणाम करता हवा ते प्रतिदिन जेटला दंडवत् प्रणाम करता तेथी ते दिवसे तो पोते
१ एक दंडवत् प्रणाम अधिक कर्यो तेने जोइने शुकमुनिये पुछयुं जे, (१) हे महाराज ! आज तमे एक प्रणाम अधिक केम कर्यो ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे नित्य प्रत्ये तो अमे श्रीकृष्ण भगवानने नमस्कार करीने एम कहेता जे हे महाराज आ देहादिकने विषे अहंममत्व होय तेने तमे टाळज्यो अने आज तो अमने एवो विचार थयो जे भगवानना भक्तनो मने वचने ने देहे करीने जे कांइक जाण्ये अजाण्ये द्रोह थइ आवे ने तेणे करीने जेवुं आ जीवने दुःख थाय छे तेवुं बीजे कोइ पापे करीने थातुं नथी. माटे जाणे अजाणे मने वचने देहे करीने जे कांइ भगवानना भक्तनो द्रोह बणी आव्यो होय तेनो दोष निवारण कराव्या सारुं एक प्रणाम अधिक कर्यो. (१) अने अमे तो १
एम जाण्युं छे जे भगवानना भक्तना द्रोहे करीने जेवुं आ जीवनुं भुंडुं थाय छे ने ए जीवने कष्ट थाय छे तेवुं कोइ पापे करीने थातुं नथी. अने भगवानना भक्तनी मने वचने देहे करीने जे सेवा बणी आवे ने तेणे करीने जेवुं आ जीवनुं रुडुं थाय छे ने ए जीवने सुख थाय छे तेवुं बीजे कोइ साधने करीने थातुं नथी. (२) अने ए भगवा- २
नना भक्तनो जे द्रोह थाय छे ते लोभ, मान, ईर्ष्या ने क्रोध ए चारे करीने थाय छे. अने भगवानना भक्तनुं जे सन्मान थाय छे ते जेमां ए चार वानां न होय तेथी थाय छे. माटे जेने आ देहे करीने परम सुखीया थावुं होय ने देह मुक्या केडे पण परम सुखीया थावुं होय तेने भगवानना भक्तनो मने वचने देहे करीने द्रोह न करवो, अने जो भगवानना भक्तनो कांइक द्रोह थइ जाय तो तेनी वचने करीने प्रार्थना करवी ने मने करीने ने देहे करीने तेने दंडवत् प्रणाम करवा ने फरीने द्रोह न थाय एवी रीते वर्त्यानो आदर करवो, पण एकवार द्रोह करीने दंडवत् प्रणाम कर्या ने वळी फरीने

द्रोह करीने दंडवत् प्रणाम करवा एवी रीते वर्तवुं नहि. अने आ वार्ता दाडी सांभरती रहे ते सारु आजथी सर्वे संत तथा सर्वे हरिभक्त मात्र एवो नियम राखज्यो जे, भगवाननी पूजा करीने पोताना नित्य नियमना बे दंडवत् प्रणाम होय ते करवा ने ते पछी बधा दिवसमां जे कांइ जाणे अजाणे मने वचने देहे करीने भगवानना भक्तनो द्रोह थयो होय तेनुं निवारण कराववा सारु एक दंडवत् प्रणाम नित्ये करवो एम अमारी आज्ञा छे तेने सर्वे पाळज्यो. [३] इति वचनामृतम् ॥४०॥ [१७३] ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे जाणे अजाणे अमारा भक्तनो द्रोह थइ गयो होय तेना निवारण सारु अमारी पूजा करती वखते अमने एक प्रणाम अधिक करवो (१) अने अमारा भक्तना द्रोहे करीने भुंडुं थाय छे अने सेवाए करीने रुडुं थाय छे. (२) अने लोभ, मान, ईर्ष्या ने क्रोध ए चारवडे करीने अमारा भक्तनो द्रोह थाय छे. (३) बावतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां श्रीजीमहाराज नित्य कर्म करता हवा एम कह्युं तेनो शो हेतु हशे ?
१ उ० पोताना आश्रितोने शिखववाने अर्थे श्रीजीमहाराजनी सर्वे क्रियाओ छे. ॥१७३॥

संवत् १८८० ना कार्तिक वदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंद-जीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने कंठने विषे पीळा पुष्पना हार पहेर्या हता, ने पाघने विषे पीळा पुष्पना तोरा खोश्या हता, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठा हती.

पछी श्रीजीमहाराज कृपा करीने पोताना भक्तजनने उपदेश करता थका बोल्या
१ जे, (१) जेने परमेश्वर भजवा होय तेने भगवाननी अथवा भगवानना भक्तनी सेवा चाकरी मळे त्यारे पोतानुं मोटुं भाग्य मानीने ते सेवा करवी ते पण भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे ने पोताना कल्याणने अर्थे भक्तिए करीनेज करवी, पण कोइक वखाणे ते सारु न करवी. अने जीवनो तो एवो स्वभाव छे जे जेमां पोताने मान जडे तेज करवुं सारुं लागे, पण मान विना एकली तो भगवाननी भक्ति करवी पण सारी लागे नहि, अने जेम श्वान होय ते सुका हाडकाने एकांते लेइ जइने करडे, पछी तेणे करीने पोतानुं मोढुं छोलाय ने ते हाडकुं लोहीवाळुं थाय, तेने चाटीने राजी थाय छे पण मूर्ख एम नथी जाणतो जे माराज मोढानुं लोही छे तेमां हुं स्वाद मानुं छुं, तेम भगवाननो भक्त होय तो पण मान रूपी हाडकाने मुकी शकतो नथी अने जे जे साधन करे छे ते मानने वश थइने करे छे, पण केवळ भगवाननी भक्ति जाणीने भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे

करतो नथी, अने भगवाननी भक्ति करे छे तेमां पण माननो स्वाद आवे छे, त्यारे करे छे पण केवळ भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे नथी करतो अने मान विना केवळ भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे भगवाननी भक्ति तो रतनजी तथा मीयांजी जेवा कोइकज करता हशे पण सर्वेथी तो माननो स्वाद मुकी शकातो नथी. पछी ते उपर मुक्तानंदस्वामीए तुळसीदासनी साखी कही जे "कनक तज्यो कामनी तज्यो तज्यो धातुको संग तुळसी लघु भोजन करी जीवे मानके रंग" ए साखीने सांभळीने श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेवो जीवने मानमांथी स्वाद आवे छे तेवो तो कोइ पदार्थमांथी आवतो नथी माटे मानने तजीने जे भगवानने भजे तेने तो सर्वे हरिभक्तमां अतिशे मोटो जाणवो. [१] इति वचनामृतम्. ॥४१॥ (१७४). १

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारा भक्तनी सेवा मळे तो मोटुं भाग्य मानीने कल्याण तथा प्रसन्नताने अर्थे भक्तिए करीने करवी, पण माने करीने करवी नहि. (१) बाबत छे.

१ प्र० मान विना केवळ अमारी प्रसन्नताने अर्थे अमारी भक्तितो रतनजी तथा मीयांजी जेवा कोइकज करता हशे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते श्रीजीमहाराजनी साथे आवेला मुक्तो तो मायाथी पर ने चैतन्य मूर्ति छे, तेमां तो मायानो गुण होयज नहि ने कोइकज मान रहित भक्ति करता हशे एम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

१ उ० ए तो रतनजी तथा मीयांजीने मिषे साधनिकने उपदेश कर्यो छे, अने कोइकज करता हशे एम कह्युं छे, ते पण साधनदशावाळा मुमुक्षुओमांथी कोइकज करता हशे एम कह्युं छे, पण आवेला सिद्धमुक्तोने कह्युं नथी, अने रतनजी तथा मीयांजी पण साथे आवेला मुक्त हता तेमने मिषे वात करी होय तेणे करीने एमनेज कह्युं छे एम न जाणवुं. ॥१७४॥

संवत् १८८० ना मागशर वदि १२ द्वादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी भगवदानंदस्वामीए श्रीजीमहाराजने प्रश्न पुछयो जे [१] हे महाराज ! भगवानना एक एक रोमने विषे अनंत कोटी ब्रह्मांड रह्यां छे ते केइ रीते रह्यां छे ? अने ब्रह्मांडमां किये किये ठेकाणे भगवानना अवतार थाय छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे पुरुषोत्तम भगवाननुं जे अक्षर धाम तेना बे भेद छे, एक सगुणपणुं ने बीजुं निर्गुणपणुं अने पुरुषोत्तम नारायण छे तेने तो सगुणे न कहेवाय ने निर्गुणे न कहेवाय ने सगुण निर्गुण भेद तो अक्षरने विषे छे, ते अक्षर निर्गुणपणे तो अणुथकी पण अति

सूक्ष्म स्वरूपे छे, अने सगुण स्वरूपे तो जेटलुं मोटुं पदार्थ कहेवाय ते थकी पण
अतिशे मोटुं छे, ते अक्षरना एक एक रोमने विषे अणुनी पेठे अनंत कोटी ब्रह्मांड
रह्यां छे, ते कांइ ए ब्रह्मांड अक्षरने विषे नानां थइ जातां नथी एतो अष्टावरणे सह-
वर्त्तमान होय पण अक्षरनी अतिशे मोटयप छे, ते आगळ ब्रह्मांड अतिशे नानां देखाय
छे, जेम गिरनार पर्वत छे ते मेरु आगळ अतिशे नानो देखाय अने लोकालोक
पर्वतनी आगळ मेरु पर्वत अतिशे नानो देखाय, तेम ब्रह्मांड तो आवडां ने आवडां
होय पण अक्षरनी अतिशे मोटयप छे तेनी आगळ अति नानां देखाय छे माटे अणु
सरखां कहेवाय छे. (१) अने अक्षर ब्रह्म तो जेम सूर्यनुं मंडळ छे तेम छे ते सूर्य ज्यारे १
माथे आवे त्यारे सूर्यने योगे करीने दशे दिशुं कळाय छे तेम अक्षर धाम छे अने ते
अक्षरने उपरने हेठे ने च्यारे पडखे सर्व दिशुंमां ब्रह्मांडनी कोटियो छे अने भगवान जे
पुरुषोत्तम तेतो अक्षर धामने विषे सदाय विराजमान रहे छे ने ते सत्यसंकल्प छे ने
अक्षर धामने विषे रह्या थकाज जे जे ब्रह्मांडमां जे जे रूप प्रकाश्यां जोइए तेवा तेवा
रूपने प्रकाशे करे छे जेम ए श्रीकृष्ण भगवाने रासक्रीडा करी त्यारे पोते एक हता, ते
जेटली गोपांगनाओ हती तेटला रूपे थया, तेमज पुरुषोत्तम भगवान ब्रह्मांड ब्रह्मांड
प्रत्ये ज्यां जेवुं रूप प्रकाश्युं जोइए त्यां तेवा रूपने अक्षर धाममां रह्या थका प्रकाशे छे
अने पोते तो सदाय अक्षर धाममां रहे छे अने ज्यां आ पुरुषोत्तमनी मूर्ति छे त्यांज
अक्षर धामनुं मध्य छे. (२) इति वचनामृतम्. ॥४२॥ [१७५]. २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे मूळअक्षर कोटी आदिकने विषे व्यापकपणुं ते अमारा तेजरूप अक्षरधामनुं निर्गुणपणुं छे, अने ए अक्षर कोटी आदिकने धारवापणुं ते अक्षरधामनुं सगुणपणुं छे. (१) अने सूर्यने ठेकाणे अमारी मूर्ति छे, अने सूर्यना तेजना गोळाने ठेकाणे अमारा तेजरूप अक्षर धाम छे, अने ए अक्षरधामने अडखे पडखे हेठे उपर सर्वे दिशुंमां ब्रह्मांडनी कोटीयो रही छे, अने ए अक्षरधामने विषे अमे सदाय रह्या थका ज्यां जेवुं रूप देखाडयुं जोइए त्यां तेवा रूपने देखाडीए छीए अने ज्यां अमारी मूर्ति छे त्यांज अक्षरधामनुं मध्य छे, एटले अमारा तेजरूप अक्षरधामने मध्ये अमे रह्या छीए एम कह्युं छे. (२) वातो छे.

१ प्र० श्रीजीमहाराजने भगवदानंदस्वामीए तमारा एक एक रोममां अनंत कोटी ब्रह्मांड केवी रीते रह्यां छे? ने किये किये ठेकाणे तमे प्रगट थाओ छो? एम पुछयुं छे पण तमे सगुण छो के निर्गुण छो एवो प्रश्न पुछयो नथी तोपण श्रीजीमहाराजे अमने सगुण के निर्गुण न कहेवाय एम कह्युं तेनुं शुं कारण हशे?

१ उ० (प्र० ७२ ना १ पहेला प्रश्नमां) अमारा एक एक रोमना छिद्रमां अनंत कोटी

ब्रह्मांड परमाणुनी पेठे रह्यां छे, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. ते उपर भगवदानंदस्वामीए पुछ्युं जे हे महाराज ! तमारा एक एक रोममां अनंत कोटी ब्रह्मांड रह्यां छे ते ब्रह्मांडथी तो तमारां रोम मोटां थयां, अने तमारा रोमथी तमारी मूर्ति मोटी थइ, माटे तमे ज्यारे ब्रह्मांडमां पधारो त्यारे तमारी मूर्ति ब्रह्मांडमां शी रीते माय, एवा अभिप्रायथी पुछ्युं छे. ते उपर श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारा प्रकाशरूपी अक्षरधाम छे ते अक्षर धामनी किरणोने अमारां रोम जाणवां, ते रोम सगुण एटले अतिशे मोटां ने सर्वाधार छे अने निर्गुण एटले सर्वत्र व्यापक ने सूक्ष्म तथा बीजाने सूक्ष्मपणाने पमाडे तेवां छे अने अमारी मूर्तितो सदाय मनुष्यना जेवडी छे अने ए जे अमारा तेजरूप अक्षर धामनी किरणोमां असंख्य ब्रह्मांड रह्यां छे, ते ब्रह्मांडमां अमे मनुष्यरूपे दर्शन आपीए छीए एम कह्युं छे.

२ प्र० पहेली बाबतमां अक्षरधामने विषे अष्टावरणे युक्त ब्रह्मांड रह्यां छे एम कह्युं ते ब्रह्मांडो तो मूळपुरुषना तेजमां रह्यां छे अने तेथी पर तो वासुदेव ब्रह्म छे ने तेथीपर मूळअक्षर छे. ने तेथीपर श्रीजीमहाराजना तेजरूप अक्षरधाम छे, ते धामनो संबंध अष्टावरणे युक्त ब्रह्मांडने केवी रीते हशे ?

२ उ० अष्टावरणे युक्त ब्रह्मांडतो मूळपुरुषना तेजमांज रह्या छे, पण मूळपुरुष, ब्रह्म, तथा मूळअक्षरादिक सर्वे श्रीजीमहाराजना तेजरूप अक्षरधामने आधारे छे. माटे सर्वाधार होय तेनेज आधारे रह्यां छे एम कहेवाय, अने मूळपुरुषनी दृष्टिए प्रधानपुरुष रूपी ब्रह्मांड कहेवाय, अने वासुदेव ब्रह्मनी दृष्टिए मूळपुरुष रूपी ब्रह्मांड कहेवाय ने मूळ अक्षरनी दृष्टिए वासुदेव ब्रह्मरूपी ब्रह्मांड कहेवाय ने श्रीजीमहाराजनी दृष्टिए मूळअक्षर रूपी ब्रह्मांड कहेवाय माटे श्रीजीमहाराजना तेजरूप अक्षरधामनी किरणोमां मूळअक्षर रूपी ब्रह्मांड रह्यां छे एम जाणवुं.

३ प्र० बीजी बाबतमां अक्षर ब्रह्म तो जेम सूर्यनुं मंडळ होय तेम छे एम कह्युं ते केम समजवुं ?

३ उ० सूर्यने ठेकाणे श्रीजीमहाराज छे, अने सूर्यना मंडळ एटले तेजना गोळाने ठेकाणे अक्षरधाम छे एम जाणवुं.

४ प्र० सूर्य माथे आवे त्यारे दशे दिशुं कळाय छे एम कह्युं ते माथे केवी रीते समजवुं ?

४ उ० ज्यारे सूर्य माथे आवे त्यारे सर्वे दिशाओ कळाय छे एटले सरखी देखाइ आवे छे, अने ते दिशाओमां रहेलां सर्वे स्थानको सूर्यना फरतां देखाय छे तेम श्रीजीमहाराजना तदाकारपणाने पामे त्यारे तेने श्रीजीमहाराजनी मूर्ति धामने मध्ये देखाय छे, अने ते मूर्तिने योगे करीने अक्षरधामना फरती सर्वे दिशामां मूळअक्षरादिकनी तथा ब्रह्मनी तथा मूळपुरुषादिकनी कोटीयो तथा सर्वे ब्रह्मांड ते कळाय छे एटले देखाइ आवे छे.

५ प्र० श्रीजीमहाराज सदाय अक्षरधाममां रह्या थकाज ज्यां जेवुं रूप प्रकाशवुं जोइए त्यां तेवा रूपने प्रकाशे छे एम कह्युं ते जे रूप अनंत ठेकाणे देखाडे छे, ते रूपमां ने अक्षर धाममां जे मूर्ति छे तेमां कांइ फेर हशे के केम ?

५ उ० श्रीजीमहाराज पोते अक्षरधाममां रह्या थकाज पोतानी इच्छाए करीने अनंत ठेकाणे अनंत रूपे दर्शन आपे छे, तोपण एनी ए मूर्ति छे माटे एक मुर्तिज सर्वे ठेकाणे देखाय छे

अने ए मूर्ति ज्यां दर्शन आपे त्यां अक्षरधामनुं मध्य समजवुं, केमजे जे मूर्ति अक्षरधाममां छे तेज मूर्ति सर्व ठेकाणे दर्शन आपे छे, माटे पोतानुं तेजरूप धाम ते ए मूर्ति भेळुंज होय पण जुदुं नहोय, माटे ज्यां श्रीजीमहाराज दर्शन आपे त्यांज अक्षरधामनुं मध्य छे एम जाणवुं ॥१७५॥

संवत् १८८० पोष शुदि ४ चोथने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां अयोध्यावासीने घेर गादी तकिया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, अने प्रेमानंदस्वामी सरोदो लेइने कीर्तन गावता हता.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो प्रश्न उत्तर करीए एम कहीने श्रीजीमहा-
१ राजे पूछ्युं जे, (१) जे भगवाननो भक्त गुणातीत होय ने केवळ सत्तारूपे वर्ततो होय ने तेने विषे वैराग्यरूप जे सत्वगुण अने विषयमां प्रीतिरूप जे रजोगुण अने मूढपणारूप जे तमोगुण ए त्रणे गुणना भाव तो न होय अने तेतो केवळ उत्थाने रहित शून्य समता धरी रहे ने सुषुप्ति जेवी अवस्था वर्ते एवी रीते सत्तारूपे रह्यो जे निर्गुण भक्त तेने भगवानने विषे प्रीति होय के न होय ? ए प्रश्न छे पछी मुक्तानंद स्वामीए कह्युं जे जे सत्तारूपे वर्ते तेने भगवानने विषे तो प्रीति होय. [१] १
२ त्यारे श्रीजीमहाराजे पुछ्युं जे [२] सत्तारूपे रह्यो एवो जे ए भक्त तेने भगवानने विषे प्रीति छे ते आत्माने सजाति छे के विजाति छे ? पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे ए प्रीति तो आत्माने सजाति छे पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे मध्वाचार्य निंबार्क ने वल्लभाचार्य एमणे आत्मारूपे रहीने जे भगवानने विषे प्रीति करवी ए प्रीतिने ब्रह्मस्वरूप कही छे माटे गुणातीत थइने जे भगवानने विषे प्रीति करे छे एज ब्रह्मनुं स्वरूप छे एम मोटा मोटा आचार्यनो सिद्धांत छे [२]इति वच० ॥४३॥ (१७६) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के निर्गुण भक्तने अमारे विषे प्रीति होय (१) बीजामां आचार्योने दृष्टांते ए प्रीतिने ब्रह्मरूप कही छे. [२] वाक्तो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां गुणातीत थइने प्रीति करवानुं कह्युं ते गुणातीतनो शो अर्थ समजवो ?
१ उ० गुणातीत एटले त्रण गुणथी पर ब्रह्म जे श्रीजीमहाराजनुं तेज ते रूप थइने श्रीजीमहाराजने भजे ते भक्त गुणातीत कहेवाय ने एवी रीते गुणथी पर थइने श्रीजीमहाराजने विषे प्रीति करे ए प्रीति ब्रह्मरूप कहेवाय.
२ प्र० उत्थाने रहित शून्य समता धरी रहे ने सुषुप्ति जेवी अवस्था वर्त्ते एम कह्युं ते शून्य समता एटले शुं जाणवुं ? अने सुषुप्ति जेवी एटले केवी जाणवी ?

२ उ० जेम आकाश निर्लेप छे तेने चारभूतना विकार अडता नथी तेम ए भक्तने देहना विकार अडता नथी केवळ आत्मसत्तारूपे वर्ते छे ते शून्य समता कही छे, अने ते निर्गुण छे ने सत्तारूपे वर्ते छे माटे सिद्धदशावाळो छे तेथी जेम सुषुप्तिमां विस्मृति वर्ते तेम श्रीजीमहाराज विना बीजे विस्मृति वर्ते छे एम कह्युं छे पण सुषुप्ति अवस्था कही नथी माटे सुषुप्तिने दृष्टांते करीने तेनी स्थिति कही छे एम जाणवुं. ॥१७६॥

संवत् १८८० ना पोष शुदि ८ अष्टमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे मुक्तानंदस्वामीने पुछ्युं जे (१) ज्यारे कोइक हरिभक्तनो अवगुण आवे त्यारे मोरे जेटला तेमां दोष सुझता होय एटलाने एटला सुझे के कांइ वधु सुझे ? पछी मुक्तानंदस्वामी बोल्या जे अटकळे तो एम जणाय छे जे मोरे सुझता एटलाने एटला सुझे छे. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ए वातमां तमारी नजर पडी नहि. एटलाने एटला अवगुण सुझता होय तो अवगुण आव्यो एम केम कहेवाय ? माटे एतो भुंडा देश काळ क्रिया संग आदिकने योगे करीने बुद्धि पलटाइने बीजी रीतनी थइ जाय छे तेणे करीने अवगुण वधु सुझे छे त्यारे एम जाणवुं जे बुद्धिने विषे भुंडा देश काळादिकनुं दूषण लाग्युं छे. (१) अने अमे तो एम जाणीए छइए जे जेने पूर्वे १
मोटा पुरुषनो संग हशे अथवा भगवाननुं दर्शन थयुं हशे तेने तो पोतानाज अवगुण भासे पण बीजा हरिभक्तना अवगुण भासेज नहि ने एवां जेनां लक्षण होय तेने दैवी जीव जाणवा.(२) अने जे आसुरी जीव होय तेने तो पोतामां एके अवगुण भासे नहि २
अने बीजा जे हरिभक्त होय तेने विषेज केवळ अवगुण भासे एवी जेनी बुद्धि होय तेने आसुरी जीव जाणवो ने ते आसुरी जीव सत्संगीमां रह्यो होय अथवा संतना मंडळमां रह्यो होय पण जेवा काळनेमी, रावण ने राहु हता ते सरखो रहे पण एने संतनो संग लागे नहि माटे पाको हरिभक्त होय तेने पोतानोज अवगुण सुझे पण बीजा हरिभक्तना दोषने तो देखेज नहि. [३] इति वचनामृतम् ॥४४॥ (१७७). ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [१] छे. तेमां जेने भुंडा देशादिकने योगे करीने बुद्धि दूषित थाय छे तेणे करीने अवगुण वधु सुझे छे (१) अने पूर्वे मोटा पुरुषनो योग थयो होय अथवा अमारुं दर्शन थयुं होय तेने पोतानाज अवगुण सुझे पण बीजा हरिभक्तना अवगुण देखेज नहि (२) ने आसुरी होय तेने पोतामां अवगुण न भासे ने बीजा हरिभक्तमां केवळ अवगुण भासे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (३) वातो छे ॥१७७॥

संवत् १८८० ना पोष वदि १ पडवाने दिवस स्वामी श्रीजीसहजानंदजी

महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) तमे सर्वे मुनिमंडळ तथा ब्रह्मचारी तथा गृहस्थ सत्संगी तथा पाळा तथा अयोध्यावासी ए तमे सर्वे अमारा कहेवाओ छो तें जो हुं तमने खटको राखीने वर्ताबुं नहि अने तमे कांइक गाफलपणे वर्तो ते अमथकी देखाय नहि. माटे जे जे अमारा कहेवाणा छो तेमां अमारे एक तलमात्र कसर रहेवा देवी नथी माटे तमे पण सुधा सावधान रहेज्यो. जो जराय गाफलाइ राखशो तो तमारो पग टकशे नहि अने अमारे तो जे तमे भगवानना भक्त छो तेना हृदयमां कोइ जात्यनी वासना तथा कोइ जात्यनो अयोग्य स्वभाव ते रहेवा देवो नथी. अने मायाना त्रण गुण दश इंद्रियो दश प्राण चार अंतःकरण पंचभूत पंचविषय ने चौद इंद्रियोना देवता एमांथी कोइनो संग रहेवा देवो नथी ने ए सर्वे मायिक उपाधि थकी रहित सत्तामात्र एवो जे आत्मा ते रूपे थइने भगवाननी भक्ति करो एवा सर्वेने करवा छे पण कोइ जात्यनो मायानो गुण रहेवा देवो नथी. अने आ जन्ममां सर्वे कसर न टळी तो बदरिकाश्रममां जइने तप करीने समग्र वासना बाळीने भस्म करावी छे तथा श्वेतद्वीपमां जइने निरन्नमुक्त भेळा तप करीने समग्र वासना बाळीने भस्म करी नाखवी छे, पण भगवान विना बीजा कोइ पदार्थमां प्रीति रहे एवुं रहेवा देवुं नथी. माटे सर्वे हरिभक्त तथा सर्वे मुनिमंडळ सावधान रहेज्यो एटली वार्ता करीने श्रीजीमहाराज पोताना उतारामां पधार्या. (१) १

२ पछी तेज दिवस सायंकाळे वळी सभा करीने विराजमान थया पछी आरतो थइ रही त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, [२] सात्त्विक कर्मे करीने देवलोकमां जाय छे अने राजसि कर्मे करीने मत्र्यलोकनी प्राप्ति थाय छे अने तामसि कर्मे करीने अधोगतिने पामे छे. (२) तेमां कोइ एम आशंका करे जे राजसि कर्मे करीने मनुष्य २ लोकनी प्राप्ति थाय छे त्यारे तो सर्वे मनुष्यने सुख दुःख सरखुं जोइए तो एनो उत्तर एम छे जे एक रजोगुण छे तेना देशकाळादिकने योगे करीने अनंत प्रकारना भेद थाय छे माटे राजसि कर्मनो एक सरखो निरधार रहेतो नथी ए तो जेवा देश काळ संग ने क्रियानो योग आवे तेवुं कर्म थाय छे. (३) तेमां पण भगवानना भक्त संत ३ अने भगवानना अवतार ते कुराजी थाय एवुं कांइक कर्म थइ जाय तो आने आ देहे मर्त्य लोकमां यमपुरीना जेवुं दुःख भोगवे अने भगवानने भगवानना भक्त राजी थाय एवुं कर्म करे तो आने आ देहे परमपद पाम्या जेवुं सुख भोगवे. अने भगवान ने भग-

वानना संतने कुराजी करे ने तेणे जो स्वर्गमां गया जेवुं कर्म कर्युं होय तो पण तेनो नाश थइ जाय ने नरकमां पडवुं पडे, अने भगवान ने भगवानना संत राजी थाय एवुं कर्म कर्युं होय ने तेने जो नरकमां जावानुं प्रारब्ध होय तो पण ते भुंडा कर्मनो नाश थइ जाय ने परमपदने पामे माटे जे समजु होय तेने तो भगवान ने भगवानना भक्त राजी थाय तेमज वर्तवुं अने पोताना संबंधी जे माणस होय तेने पण एम उपदेश करवो जे भगवानने भगवानना संत जे जे प्रकारे आपणी उपर राजी थाय ने कृपा करे तेमज आपणे वर्तवुं अने भगवानने भगवानना संतने अग्नि ज्यारे राजी कर्या हशे त्यारे अग्निने एवो प्रकाश प्राप्त थयो छे अने सूर्य चंद्रादिक जे प्रकाश वान छे तेणे पण भगवान ने भगवानना संतने शुभ कर्मे करीने राजी कर्या हशे त्यारे एवा प्रकाशने पाम्या छे अने देवलोक मर्त्यलोकने विषे जे जे सुखीया छे ते सर्वे भगवान ने भगवानना संतने राजी कर्या हशे ते प्रतापे करीने सुखीया छे माटे जे पोताना आत्मानुं रुडुं थावाने इच्छे तेने तो सद्ग्रंथने विषे कह्या जे सद्धर्म तेने विषे रहीने भगवान ने भगवानना संत राजी थाय एज उपाय करवो.(४)इति वचना०॥४५॥(१७८) ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे तमे सर्वे अमारा कहेवाओ छो माटे तमारे विषे कांइ कसर रहेवा देवी नथी अने तमे पण अमारी आज्ञामां तत्पर रहेजो ने जो गाफलाइ राखशो एटले देहरूपे वर्तशो तो अमारी आज्ञा पाळी शकाशे नहि, तथा अमारा संत हरिजनना समुदायमां रही शकाशे नहि. अने अमारे तो आत्मारूप थइने अमारी भक्ति करो एवा सर्वेने करवा छे ने जो तेमां कसर रहेशे तो बदरिकाश्रम तथा श्वेतद्वीपमां जवुं पडशे माटे सावधान एटले आत्मसत्तारूपे रहेज्यो. (१) बीजामां राजस तामस ने सात्त्विक कर्मे करीने स्वर्ग मर्त्य ने पाताळने पामे छे. (२) अने देशकाळादिकने योगे करीने राजस कर्मना अनंत प्रकारना भेद थाय छे. (३) अने अमे तथा अमारा संत कुराजी थाइए एवुं कर्म करे तो स्वर्गमां गया जेवुं कर्म करेलुं होय ते नाश पामे अने मर्त्य लोकमां देहे करीने यमपुरीना जेवुं दुःख भोगवे अने अमे तथा संत राजी थाइए एवुं कर्म करे तो आ देहे पण अमारा धामना जेवुं सुख भोगवे ने नरकमां जवानुं प्रारब्ध होय ते नाश पामे ने अमारा अक्षरधामने पामे अने सूर्यचंद्रादिक जे जे सुखीया छे ते अमने ने अमारा संतने राजी कर्या हशे ते प्रतापे सुखीया छे. (४) बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां आ ठेकाणे वासना न टळी तो बदरिकाश्रममां तथा श्वेतद्वीपमां जइने वासना टाळवानुं कह्युं अने (छे० ३/२ मां) ए बे धाम करतां आ सत्संगीनी सभाने अधिक कही छे माटे आ सभामां वासना न टळे तो त्यां केम टळे ?

१ उ० श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे तमने अमे दया करीने आ सत्संगमां अमारा तथा अमारा मुक्तना समीपमां राख्या छे माटे जो तमे गाफलाइए करीने वासना नहि टाळो

तो तमने बदरिकाश्रम तथा श्वेतद्वीपमां मेलशुं ने त्यां घणाक काळ पर्यंत महातप करवुं पडशे अने अमारुं के अमारा मुक्तनुं दर्शन नहि थाय पण बीक बतावी छे पण ए स्थानोने आ सभा करतां वखाण्यां नथी त्यांतो श्रीजीमहाराजना ने मुक्तना वियोगरूपी दुःख छे. [१७८]

संवत् १८८० ना पोष वदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पीळी छींटनी रजाइ ओढी हती, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, ने झांझ मृदंग लेइने संत कीर्तन गावता हता.

१ पछी कीर्तन गाइ रह्या त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे (१) आ संसारने विषे जे सत्पुरुष होय तेने तो कोइक जीवने लौकिक पदार्थनी द्रव्य वृद्धि थाती देखीने तेनी कोरनो हर्ष शोक थाय नहि, अने ज्यारे कोइकनुं मन भगवानना मार्गमांथी पाछुं पडे त्यारे खरखरो थाय छे कांजे थोडाक काळ जीववुं ने एनो परलोक बगडशे माटे एने मोटी हाण्य थायछे. (१) अने भगवानना जे अवतार पृथ्वीने विषे थाय छे ते १
धर्मना स्थापनने अर्थे थाय छे ते केवळ वर्णाश्रमना धर्म स्थापन करवाने अर्थेज नथी थाता, केम जे वर्णाश्रमना धर्म तो सप्तर्षिआदिक जे प्रवृत्ति धर्मना आचार्य छे, ते पण स्थापन करे छे माटे एटला सारुज भगवानना अवतार नथी थाता, भगवानना अवतार तो पोताना एकांतिक भक्तना जे धर्म तेने प्रवर्तावबाने अर्थे थाय छे. (२) अने २
वळी जे एकांतिक भक्त छे तेने देहे करीने मरवुं ए मरण नथी, एने तो एकांतिकना धर्ममांथी पडी जवाय एज मरण छे, ते ज्यारे भगवान के भगवानना संत तेनो हैयामां अभाव आव्यो त्यारे ए भक्त एकांतिकना धर्ममांथी पड्यो जाणवो, अने ते जो क्रोधे करीने पड्यो होय तो तेने सर्पनो देह आव्यो जाणवो, अने कामे करीने पड्यो होय तो ब्रह्मराक्षसनो अवतार आव्यो जाणवो, माटे जे एकांतिकना धर्ममांथी पडीने एवा देहने पाम्या छे, ने जो ते धर्मवाळा होय अथवा तपस्वी होय तो पण ते धर्मे करीने तथा तपे करीने देवलोकमां जाय, पण जेणे भगवाननो ने भगवानना संतनो अभाव लीधो तेतो भगवानना धामने तो नज पामे. (३) अने वळी जे पंच महापापे युक्त ३
होय ने तेने जो भगवानने भगवानना संतने विषे अवगुण न आव्यो होय, तो एनां पाप नाश थइ जाय ने एनो भगवानना धाममां निवास थाय, माटे पंच महापाप थकी पण भगवानने भगवानना भक्तनो अवगुण लेवो ए मोटुं पाप छे.
[४] इति वचनामृतम् ॥ ४६ ॥ (१७९) ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां जेने कोइक जीवने लौकिक पदार्थनी हाण्य वृद्धि थती देखीने हर्ष शोक न थाय, अने मोक्षना मार्गमांथी पाछो पडे त्यारे खरखरो थाय तेने सत्पुरुष कह्या छे. [१] अने अमे एकांतिक भक्तना धर्म प्रवर्त्तावचाने अर्थे पृथ्वीने विषे प्रगट थइए छीए. (२) अने अमारो के अमारा संत एटले सिद्ध मुक्तनो अभाव आवे ते एकांतिकना धर्ममांथी पडयो जाणवो, ने एज एनुं मरण छे. ते जो अमारे विषे ने अमारा मुक्तने विषे क्रोध परठीने अभाव ले, तो तेने सर्प जाणवो; अने जो अमारे के अमारा मुक्तने विषे काम परठीने अभाव ले तो तेने यक्ष-राक्षस जाणवो, अने ते धर्मवाळो के तपस्वी होय तो देवलोकने पामे, पण अमारा धामने तो नज पामे. [३] अने पंच महापापीने पण जो अमारो के अमारा बत्रीश लक्षणे युक्त संतनो अवगुण न आव्यो होय तो एनां पाप नाश थाय, ने अमारा अक्षर धामने पामे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. [४] बाबतो छे.

१ प्र० त्रीजी बाबतमां अमारो के अमारा भक्तनो अवगुण आवे एम कह्युं ते भक्तनो अवगुण तो आवे खरो पण भगवाननो अवगुण शी रीते आवतो हशे ?

१ उ० श्रीजीमहाराज ज्यारे मनुष्यरूपे विराजता होय त्यारे वांक विना वारंवार वढे, अथवा कोइकने वारंवार बोलावे प्रसादी आपे वखाणे, ने एने बोलावे नहि ने वखाणे नहि, ते जोइने एना मनमां एम थाय जे मने तो वारंवार वढ्या करे छे, ने बोलावता के वखाणता नथी एम अवगुण आवे. अने मनुष्यरूपे विचरता न होय, त्यारे पण श्रीजीमहाराजे मंदिरो करावीने मूर्तियो पधरावी छे तथा त्यागी, गृही, बाइ भाइना जे जे धर्म कह्या छे, ने धोरण बांध्यां छे तेमां आशंका थाय जे आ ठीक नथी कर्युं, ते श्रीजीमहाराजनो अवगुण आव्यो जाणवो.

२ प्र० केवी रीते पडे ते क्रोधे करीने ने कामे करीने पडयो कहेवाय ? अने सर्प ने राक्षसनो अवतार ते आ देहे आव्यो जाणवो के देह पड्या केडे आवतो हशे ? ने देवलोक किया जाणवा ?

२ उ० मोटा संतमां क्रोध न होय, ने परठे ते क्रोधे करीने पडयो जाणवो, अने मोटा संतमां काम न होय ने परठे ते कामे करीने पडयो जाणवो. अने छती देहेज जे वखते क्रोध आवे ते वखतेज सर्पनो देह जाणवो, एटले तेने ते वखते सर्प जेवो जाणवो अने जे वखते मोटाने विषे काम परठे ते वखते यक्षराक्षसना जेवो जाणवो. अने आ ठेकाणे इंद्र तथा ब्रह्माना लोकने देवलोक जाणवा.

३ प्र० भगवान के भगवानना भक्तनो अवगुण लेवो ते पंच महापापथी मोटुं पाप कह्युं ने वळी तेने देवलोकनी प्राप्ति कही, ते एवा पापीने देवलोकनी प्राप्ति शाथी थती हशे ?

३ उ० किंचित् अभाव आव्यो होय, ने ते माफ न कराव्यो होय तेने देवलोकनी प्राप्ति थाय, अने जेनो अभाव आव्यो होय तेने राजी करे तो मोक्ष थाय, अने झाझो अवगुण आवे तेनो तो जीव पण नाश पामे एम (छे० ५२/३ मां) कह्युं छे.

४ प्र० जेने भगवाननो के संतनो अवगुण न आव्यो होय तेना पंच महापाप बळी जाय, ने ते धामने पामे एम कह्युं ते आ जन्मेज पामे के बीजो जन्म धरवो पडे ?

४ उ० श्रीजीमहाराजनो ने संतनो अवगुण न आवे तेणे करीने ते सत्संगमां आवीने भगवान भजीने धर्म पाळीने धाममां जाय, अने कदापि एने ए देहे सत्संगमां न आवे तो बीजे जन्मे एने श्रीजीमहाराज सत्संगमां लावे, ने पोताना मुक्तनो योग आपे ते मुक्तनो योग ने सेवा करे, पछी मुक्त थइने धामने पामे पण यथार्थ ज्ञान थया विना धामने पामे नहिं, माटे धामने पामे एम कह्युं छे ते आवी रीते पामे एम कह्युं छे पण जे सत्संगमां आवीने पाप करे तेने तो (प्र० ७७ ना ? पहेला प्रश्नमां) ज्ञाननुं के भक्तिनुं बळ लइने धर्मने खोटा करे तेने असुर, गुरुद्रोही, वचनद्रोहीने विमुख कह्यो छे. तथा (म० ? मां) धर्म न पाळे तेतो महा दुष्ट छे ने तेनुं कल्याण न थाय ए सिद्धांत कह्यो छे. ॥१७९॥

संवत १८८० ना महा वदि १० दशमीने दिवस स्वामीश्री सहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पीळी छींटनी रजाइ ओढी हती ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे (१) जे संतनी पासे चार साधु रहेता होय तेने जो मन देइने माणसाइए राखतां आवडतुं होय तो तेनी पासे साधु राजीपे रहे अने जेने साधुने राखतां आवडे नहि तेनी पासे साधु रहे पण नहि अने जे साधुने मोक्षनो खप होय तेने तो जेम दुःखवीए ने विषयनुं खंडन करीए तेम अति राजी थाय जेम आ मुक्तानंदस्वामीने क्षयरोग थयो छे ते दहीं दुध गळ्युं चीकणुं कांइ खावा देतो नथी तेम जे समजु होय तेने एम जणाय जे आ रोगे सारुं सारुं खावा पीवानुं सर्वे खंडन करी नाख्युं माटे आतो क्षयरोग रूपे जाणीए कोइक मोटा संतनो समागम थयो होयने शुं ? एम भासे छे शामाटे जे शिश्न ने उदर ए बेने विषे जे जीवने आसक्ति छे एज असत्पुरुषपणुं छे ते क्षय रोग ए बेय प्रकारनी खोटने काढे एवो छे तेम ए रोगनी पेठे जे सत्पुरुष होय ते विषयनुं खंडन करता होय त्यारे जे मुमुक्षु होय तेने तेमां दुखाइ जावुं नहि अने जे खावापीवानी लालचे के लुगडानी लालचे अथवा पोताने मनगमता पदार्थनी लालचे कोइ मोटेरा संत भेगो रहेतो होय तेने तो साधुज न जाणवो तेने तो लबाड जाणवो ने कुतरा जेवो जाणवो ने एवो मलीन आशयवाळो होय ते अंते जातां विमुख थाय अने वळी संतने कोइ सारुं पदार्थ आपे तेमां जे ईर्ष्या करे तथा जे पंच विषयनो लालची होय ए बेतो पंच महापापीथी पण अति भुंडा छे माटे जे समजु होय तेने संतना समागममां रहीने आवो मलीन आशय

अंतरमां राखवो न जोइए (१) केमजे आ सभा तो बदरिकाश्रममां तथा श्वेतद्वीपमां १
होय तेवी छे तेमां बेसीने ज्यारे मळीन वासना न टळी त्यारे बीजुं टाळवानुं ठेकाणुं
क्यां मळशे अने पंच विषय छे तेतो पूर्वे देव मनुष्यादिकने विषे अनंत देहे करीने
आपणे जीवे भोगव्या छे तो पण हजु लगण ए विषयनी तृप्ति थइ नथी तो हवे भग-
वानना भक्त थइने वर्ष के बे वर्ष के पांच वर्ष विषय भोगवीने पूर्ण थवाशे नहि जेम
पाताळ सुधी पृथ्वी फाटी होय तेने पाणीए करीने भरवा मांडीए ते क्यारेय भराय
नहि तेम इंद्रियो छे तेने क्यारेय विषय थकी तृप्ति थइ नथी ने थाशे पण नहि माटे
हवे तो विषयनी आसक्तिने त्याग करीने अने साधु जेम वहीने कहे तेम गुण लेवो
पण अवगुण लेवो नहि ते मुक्तानंदस्वामीना कीर्तनमां कह्युं छे जे ॥ शूळी उपर शयन
करावे तोय साधुने संगे रहीए ॥ माटे आवो अवसर पामीने तो अशुभ वासना
टाळीनेज मरवुं पण अशुभ वासना सोता मरवुं नहि अने आ देहमांथी निसरीने
नारद सनकादिक शुकजी जेवा ब्रह्मरूप थइने भगवाननी भक्ति करवी छे एवी
वासना राखवी. (२) ने एम करतां थकां जो ब्रह्मलोकमां के इंद्रलोकमां निवास थइ २
जाशे तो पण कांइ चिंता नथी जेम झाडे फरवा गया ने पायखानामां माथाभर पडी
गया तो नाइ धोइने पवित्र थवुं पण एमां पडी न रहेवुं तेम शुभ वासना राखतां रा-
खतां ब्रह्मलोकमां के इंद्र लोकमां जवाशुं तो एने जाणवुं जे माथाभर नरकना खाडामां
पड्या छइए एम जाणीने शुभ वासनाने बळे करीने ब्रह्मलोक इंद्रलोकना भोगने त्याग
करीने भगवानना धाममां पुगवुं पण वच्चमां क्यांइ न रहेवुं एम निश्चय राखवो. [३] ३
अने वळी जेम पोतानी सेवा गृहस्थ करे छे अथवा त्यागी सेवा करे छे तेम आपणे
पण हरिभक्तनुं महात्म्य जाणवुं जोइए जेम अमारी चाकरी मुळजी ब्रह्मचारी महात्म्य
जाणीने करे छे तेम अमे पण ब्रह्मचारीनुं महात्म्य जाणीए छइए तेम आपणी गृहस्थ
अन्न वस्त्रे करीने चाकरी करे छे तेम आपणे पण एमनुं महात्म्य समजीने एमनी वाते
विते करीने चाकरी करवी एम अरस्परस महात्म्य समजीने हरिभक्तनी सोबत
राखवी. (४) इतिवचनामृतम् ॥४७॥ (१८०) ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे मो-
टेरा संतोए साधुने मन दइने राखवा अने मुमुक्षुओए सत्पुरुष दुःखवे ने विषयनुं खंडन
करे तेमां राजी थावुं ने कोइ पदार्थनी लालच राखवी नहि. (१) ने आ संतनी सभाने
दिव्य जाणीने तेनो संग करीने अशुभ वासना टाळीने अमारा धाममां जवानी वासना
राखवी. (२) अने अशुभ वासना रही जाय ने इंद्र के ब्रह्माना लोकमां जावुं पडे तो ते
लोकने नरक जेवा जाणीने एमांथी नीकळीने अमारा धाममां जवानो निश्चय राखवो.

(३) अने गृहस्थोए अन्न वस्त्र करीने त्यागीनी सेवा करवी ने त्यागीए गृहस्थनी वातेचीते करीने सेवा करवी. (४) बाबतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां साधुने माणसाइए राखवा एम कह्युं ते साधुने केवी रीते राखे ते माणसाइए राख्या कहेवाय ?

१ उ० उपदेश आपीने तेना जीवमां धर्म ज्ञान वैराग्य ने भक्ति तथा श्रीजीमहाराजनो महिमा दृढ करावे तो ते साधु जीवतपर्यंत सत्संगमां रहे ते माणसाइए राख्या कहेवाय. अने आवुं ज्ञान दृढ न कराव्युं होय ने पदार्थ आपीने तथा खवरावी पीवरावीने पंपोळीने राख्यो होय तो ते सत्संगमां रहीने जीवतपर्यंत धर्मामृत निष्कामशुद्धिने शिक्षापत्रीमां श्रीजीमहाराजे कहेली जे आज्ञा ते प्रमाणे वर्ती शके नहि ते माणसाइए राखतां न आवड्युं कहेवाय. अने बीजो अर्थ ए छे जे श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने पोताना चैतन्यने विषे अखंड देखता होय ने पंच वर्त्तमान पाळता पळावता होय एवा साधुनी अनुवृत्तिमां रहीए तो ते राजी थइने आपणा भेळा रहे अने जो अनुवृत्तिमां न रहीए तो ते आपणा भेळा न रहे माटे साधुनी अनुवृत्तिमां रहीये तो साधुने राखतां आवडयां कहेवाय.

२ प्र० बीजी बाबतमां बदरिकाश्रम तथा श्वेतद्वीपनी सभा जेवी आ सत्संगीनी सभा कही अने (छे० ३ मां) ए बे धामनी सभाथी आ सत्संगीनी सभाने अधिक कही छे ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० निर्वासनिकपणामां सरखी कही छे पण उपासनामां तथा प्राप्तिमां सरखी नथी कही माटे आवी निर्वासनिक सभामां आवीने मलीन वासना न टळी तो बीजुं टाळयानुं ठेकाणुं क्यां मळशे एम कह्युं छे.

३ प्र० आमां विषय भोगवीने तृप्त थवाशे नहि एम कह्युं ने (म० २५ ना पहेला प्रश्नमां) विषय भोगवीने तृप्त थाशे त्यारे वैराग्य पामशे एम कह्युं छे ते केवी रीते समजवुं ?

३ उ० आमां विषयनी आसक्तिवाळाने विषयनी वासना मुकाववा सारु उपदेश कर्यो छे अने (म० २५ मां) मोक्षना मार्गमां विषयने बंधनकारी जाणीने घर मुकीने त्यागी थयो होय ने श्रीजीमहाराजनी आज्ञा यथार्थ पाळतो होय ने अंतरमांथी विषयभोगनी इच्छा न टळी होय तेने देह मुक्या पछी भगवान विषय आपे ने तेना भेळुं ज्ञान पण आपे तेथी ते एम विचार करे जे मारे भगवानना धाममां जवुं छे ने हुं आवा तुच्छने दुःखदायी विषयमां बंधाइ रह्यो छुं एम पश्चात्ताप करीने श्रीजीमहाराजनुं भजन करीने निर्वासनिक थाय त्यारे धाममां जाय एम कह्युं छे.

४ प्र० नारद सनकादिकने तो परोक्ष भगवाननी उपासना छे अने ते कांइ श्रीजीमहाराजना तेजरूप जे शुद्ध चैतन्य ब्रह्म ते रूप थया नथी माटे नारद सनकादिक ने शुकजी जेवा ब्रह्मरूप थवानुं कह्युं ते केम समजवुं ?

४ उ० पोतानी साथे लावेला मुक्तानंदस्वामी आदिक सिद्धमुक्तोनां नारद शुक सनादिक एवां उपनाम पाडयां हतां ते नाम कह्यां छे ते मुक्तना जेवा ब्रह्मरूप थवुं एम कह्युं छे.॥१८०॥

संवत् १८८० ना महा वदि १४ चौदशने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे वार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता. अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने तुळसीनी नवी श्वेत कंठियो कंठने विषे धारण करी हती, ने पाघने विषे पीळा पुष्पनो तोरो विराजमान हतो, ने कंठने विषे पुष्पना हार धारण कर्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, ने साधु मेमानंदस्वामी भगवानना ध्यानना अंगनी गरबियो जे 'वंदु सहजानंद रसरूप अनुपम सारने रे लोल' ए गावता हता.

१ पछी ज्यारे गाइ रह्या त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे, [१] बहु सारां कीर्तन गायां, आ कीर्तनने सांभळीने तो अमारा मनमां एम विचार थयो जे आवी रीते एने भगवाननी मूर्तिनुं चिंतवन छे, माटे ए साधुने तो उठीने साष्टांग दंडवत् प्रणाम करीए अने जेने आवी रीते अंतःकरणमां भगवाननुं चिंतवन थातुं होय, ने एवी वासनाए युक्त जो देह मुके तो तेने फरीने गर्भवासमां आववुं पडेज नहि,अने एवी रीते भगवाननुं चिंतवन करतां जीवतो होय तोपण ए परमपदने पाम्योज छे,अने जेवा श्वेतद्वीपमां निरन्नमुक्त छे तेवोज ए पण निरन्न मुक्त थइ रह्यो छे,अने देह क्रिया तो योग्य होय एटला सहेजेज थाय छे,अने जेने भगवानना स्वरूपनुं एवी रीते चिंतवन थाय छे तेतो कृतार्थ थयो छे, ने तेने कांइ करवुं बाकी रह्युं नथी.(१)अने जेने भगवान विना बीजा पदार्थनुं चिंतवन १
करते थके देह पड्यो तेने कोटी कल्पे दुःखनो अंत आवतो नथी, माटे आवो अवसर आव्यो छे तेने पामीने भगवान विना बीजा पदार्थनुं चिंतवन मुकीने एक भगवानना स्वरूपनुंज चिंतवन करवुं. (२)अने जो भगवानना स्वरूपनुं चिंतवन थइ न शके तोपण २
धर्म, ज्ञान, वैराग्य ने भक्ति तेणे युक्त एवा जे आ साधु तेने मध्ये पडी रहेवुं. (३) ३
अने अमारे पण एज अंतरमां वासना छे जे आ देहने मुकयुं पछी कोइ रीतनो जन्म थावानुं निमित्त तो नथी, पण अंतरमां एम विचारीए छइए जे जन्म धर्यानुं कोइक कारण उत्पन्न करीने पण संतना मध्यमां जन्म धरवो एम इच्छीए छइए. (४) अने ४
जेने ए कीर्तनमां कह्युं एवी रीतनुं चिंतवन थतुं होय तेतो काळ, कर्म ने मायाना पास थकी मुकाणो छे, अने जेने घेर एवा पुरुषे जन्म धर्यो तेनां मावाप पण कृतार्थ थयां जाणवां. (५) अने भगवान विना बीजा विषयनुं जे चिंतवन करे छे तेतो अतिशे ५
भुल्यो जाणवो. (६) अने स्त्री, पुत्र ने धनादिक पदार्थ तो जे जे योनिमां जाय छे ६
ते सर्वेमां मळे छे, पण आवा ब्रह्मवेत्ता संतनो संग ने श्री वासुदेव भगवाननुं साक्षात्कार दर्शन ने चिंतवन तेतो अतिशे दुर्लभ छे, माटे जेम विषयीजनने पंच विषयनुं

चिंतवन अंतःकरणमां थवा करे छे तेम जेना अंतरमां अखंड भगवाननुं चिंतवन थया करे एथी उपरांत मनुष्य देहनो बीजो लाभ नथी, अने एतो सर्वे हरिभक्तमां मुखीयो छे अने ए भक्तने शब्द, स्पर्श, रूप, रस ने गंध ए पंच विषय होय तोपण भगवान संबंधीज होय ने तेना श्रवण ते अखंड भगवाननी कथा सांभळवाने इच्छे ने त्वचा ते भगवाननो स्पर्श करवा इच्छे, ने नेत्र ते भगवान ने भगवानना संतनां दर्शन करवाने इच्छे ने रसना ते भगवानना महाप्रसादना स्वादने इच्छे, अने नासिका ते भगवानने चडचां जे पुष्प तुलसी तेना सुगंधने इच्छे,पण परमेश्वर विना अन्य वस्तुने सुखदायी जाणेज नहि, एवी रीते जे वर्ते ते भगवाननो एकांतिक भक्त कहेवाय. (७) इति वच- ७ नामृतम् ॥४८॥ (१८१).

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य [१] छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे जेने अंतःकरणमां अमारुं चिंतवन रहे, तेने फरीने गर्भवासमां जवुं पडे नहि, अने देहमां रह्यो थको पण मुक्त थइ रह्यो छे, ने तेने कांइ पण बाकी रह्युं नथी. (१) अने जेने बीजा पदार्थनुं चिंतवन करमां देह पडे तेने दुःखनो अंत आवतो नथी. (२) अने जेने अमारुं चिंतवन थइ न शके तेने धर्म ज्ञानादिक साधने युक्त एवा अमारा साधुना संगमां एटले मन, कर्म, वचने अनुवृत्तिमां रहेवुं एम संतमां पडी रहेवुं, तेणे करीने ए संतना जेवा गुण आवे ने मोक्ष थाय. [३] अने अमारे फेर जन्म धरवानुं निमित्त नथी तो पण कोइक कारण उत्पन्न करीने पण संतना मध्यमां जन्म धरवा इच्छीए छीए. [४] अने जेने अमारुं चिंतवन थाय तेनां मावाप पण कृतार्थ छे. [५] अने जे अमारा विना बीजुं चिंतवन करे छे तेतो अतिशे भूल्यो छे. [६] अने अमारा ब्रह्मवेत्ता साधुनो संग ने अमारुं साक्षात् दर्शन तेतो महादुर्लभ छे, माटे अमारा विना अन्य वस्तुने सुखदायी जाणेज नहिं, ए अमारो एकांतिक भक्त छे. [७] बावतो छे.

१ प्र० पहेली बावतमां जे अमारुं चिंतवन करे ते श्वेतद्वीपमां निरन्न मुक्त छे तेवो छे एम कह्युं ते जे श्रीजीमहाराजनुं चिंतवन करे तेतो श्रीजीमहाराजनो मुक्त थाय, तेने निरन्न मुक्त जेवो कहेवानुं शुं कारण हशे ?

१ उ० आमां श्रीजीमहाराजे पोताना तेजरूप अक्षरधामने श्वेतद्वीप नामे कह्युं छे, जे श्वेत एवुं तेज तेनो द्वीप एटले समूह माटे तेजनो समूह जे अक्षरधाम तेने आ ठेकाणे श्वेतद्वीप नामे कह्युं छे, अने पोताना मुक्तने निरन्न मुक्त नामे कह्या छे, पण वासुदेव ब्रह्मना साधनिक मुक्तोनुं धाम छे ते नथी कह्युं, केमजे ए श्वेतद्वीपतो प्रलय समे नाश पामे छे, अने सातमी बावतमां वासुदेव नामे कह्या छे तेपण पोतानेज कह्या छे.

२ प्र० चोथी बावतमां श्रीजीमहाराजे संतना मध्यमां जन्म धर्यानुं कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० वैराजपुरुषनी आयुष्यमां एकवार आ ब्रह्मांडमां दर्शन देवां एवुं निमित्त छे, तेथी हवे आ वैराजनी आयुष्यमां फेर आववानुं निमित्ततो नथी पण कोइक कारण उत्पन्न करीने

पण संतना मध्यमां पहेले सत्पुरूषरूपे फेर आववानी इच्छा अणावी छे. अने मुमुक्षुने उपदेश कर्यो छे जे अमे अमारा परम एकांतिक तथा अनादिमुक्त भेळा सदाय विचरीए छीए पण एक क्षणमात्र एवा संतथी जुदा रहेता नथी, माटे तमारे पण एवा संत भेळुं सदा रहेवुं एम सुचव्युं छे. ॥१८१॥

संवत् १८८० ना फागण शुदि २ बीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदिरनी आगळ आथमणे बार मेडीनी ओसरीए ढोलिया उपर गादी तकिया बिछावीने विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, अने पाघमां धोळा पुष्पनो हार लटकतो मुक्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे (१) प्रत्यक्ष भगवाननी जे मूर्ति ने बीजा जे मायिक आकार ए बेयने विषे तो घणो फेर छे पण जे अज्ञानी छे ने अतिशे मूर्ख छे ते तो भगवानने ने मायिक आकारने सरखा जाणे छे केपछे मायिक आकारना जे जोनारा छे ने मायिक आकारना जे चिंतवन करनारा छे ते तो अनंत कोटी कल्प सुधी नरक चोराशीने विषे भमे छे.[१] अने जे भगवानना स्वरूपनां दर्शन करनारा छे,ने भगवाननना स्वरूपना चिंतवन करनारा छे ते तो काळ कर्म ने माया ए सर्वेना बंधन थकी छुटीने अभयपदने पामे छे ने भगवानना पार्षद थाय छे माटे अमारे तो भगवाननी कथा कीर्तन वार्ता के भगवाननुं ध्यान एमांथी कोइ काळे मनने तृप्ति थातीज नथी, ने तमारे पण सर्वेने एवी रीते करवुं. [२] इति वचनामृतम् ॥४९॥ (१८२) १ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारी आ प्रत्यक्ष मूर्तिमां ने बीजा मायिक आकारमां घणो फेर छे पण जे अज्ञानी ने अतिशे मूर्ख छे ते अमने ने मायिक आकारने सरखा जाणे छे, ने मायिक आकारनुं चिंतवन करनारा नरक चोराशीमां भमे छे. [१] अने जे अमारा स्वरूपनुं दर्शन ने चिंतवन करनारा छे ते अमारा मुक्त थाय छे. (२) बाबतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां प्रत्यक्ष एवा जे अमे ते अमारी मूर्तिमां ने मायिक आकारमां घणो फेर छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते श्रीजीमहाराजे ज्यारे वात करी त्यारे तो प्रत्यक्ष हता पण आज मनुष्यरूपे प्रत्यक्ष केवी रीते जाणवा ?

१ उ० श्रीजीमहाराजे संकल्प कर्यो जे अमने मनुष्यरूपे देखो त्यारे मनुष्यरूपे दर्शन आप्युं, अने पछी संकल्प कर्यो जे हवे अमने प्रतिमारूपे देखो माटे जेम मनुष्यरूपे देखाता तेम आज प्रतिमारूपे दर्शन आपे छे, माटे आज प्रतिमारूपे प्रत्यक्ष छे.

२ प्र० त्यारे एकांतिकने विषे पण भगवान रह्या छे ते एकांतिकने भगवानरूप मानीए

तो ए मनुष्य रूपे प्रत्यक्ष भगवान कहेवाय के नहिं ?

२ उ० एकांतिकमां भगवान रह्या छे पण एक तो पनो देह ने बीजो एनो जीव ने त्रीजा श्रीजीमहाराज रह्या छे, माटे श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनी अने मुमुक्षुनी वच्चे एकांतिकना देहनो ने चैतन्यनो ए बे पडदा रह्या, माटे एकांतिकने भगवान मानवाथी भगवाननी प्राप्ति थाती नथी.

३ प्र० जेम श्रीजीमहाराज मनुष्य रूपे विचरता तेमांथी मनुष्य भाव टाळवानो छे, ने जेम प्रतिमामांथी प्रतिमा भाव टाळवानो छे तेम एकांतिकमांथी मनुष्य भाव टाळीए तो पछी एकांतिकने भगवान मानवामां शो वांधो छे ?

३ उ० श्रीजीमहाराजने विषेथी मनुष्यभाव ने प्रतिमाभाव टाळीए एटले साक्षात्कार थाय, अने एकांतिकने विषेथी देह भाव टाळीए तो पण एना चैतन्यनो पडदो रह्यो तेथी भगवाननी प्राप्ति न थाय, माटे मोक्षमां वांधो आवे छे केम जे एकांतिक तो साधनदशामां छे माटे एनो देहतो मायिक छे ते देहनो निषेध करीए तेणे करीने देहभाव टळी जातो नथी, अने श्रीजीमहाराज तो कैवल्य मूर्ति छे, माटे एकांतिकने भगवान मानवा एतो घणुं भूलभरेलुं छे.

४ प्र० (प्र० ५१ मां) भक्तनां देह,इंद्रियोने पुरुषोत्तमरूप कह्यां छे अने (का० १ ना पांचमा प्रश्नमां) भक्तनां देह इंद्रियो भगवानने ज्ञाने करीने भगवानने आकारे थाय छे एम कह्युं छे एम जोतां तो एकांतिकमां ने श्रीजीमहाराजमां कांइ भेद रहेतो नथी माटे ते केम समजवुं ?

४ उ० श्रीजीमहाराजना मुक्तने योगे करीने श्रीजीमहाराजनो यथार्थ महिमा समजीने पछी श्रीजीमहाराजना तेजरूप पोताने मानीने श्रीजीमहाराजनुं ध्यान करे त्यारे ते ध्याने करीने श्रीजीमहाराजने आकारे थइ जाय छे, एटले देहमां रह्यो थको मूर्तिमान थइ जाय छे, अने इयळनी भमरी थाय छे एम कह्युं छे ते पण इयळना खोखामां भमरीनो देह बंधाय छे, तेम श्रीजीमहाराजना ज्ञाने तथा ध्याने करीने जीव पोताना देहमां रह्यो थको मूर्तिमान थाय छे, पण मायिक देह इंद्रियो भगवान रूप थाय छे एम नथी कह्युं, श्रीजीमहाराजनो कैवल्य मूर्ति छे, अने एकांतिक भक्तनो देह तो मायिक छे ते देह चैतन्य थतोज नथी, अने श्रीजीमहाराजने ज्ञाने तथा ध्याने करीने जीव श्रीजीमहाराजना साधर्म्यपणाने पामीने श्रीजीमहाराजना जेवो साकार थाय छे, ने देहतो मायामां पड्यो रहे छे ते (म० ३४ ना पहेला प्रश्नमां) जीव अमारो भक्त थइने अमारा धाममां जाय छे त्यारे जड पचांजे तत्त्व ते पडयां रहे छे एम कह्युं छे, माटे तत्त्वतो जड छे ते चैतन्य थायज नहि.

५ प्र० त्यारे केटलाक एम कहे छे के अमारे विषे भगवान रह्या छे ते माटे अमारुं ध्यान ने सेवा करो, एटले तमने श्रीजीमहाराज मळशे एम कहे छे ते शुं श्रीजीमहाराजनी मरजीथी शुद्धं कहेता हशे ?

५ उ० जे श्रीजीमहाराजने मुकीने पोतानुं ध्यान करावे अने प्रतिमाने न्यून कहीने प्रतिमाने विषेथी तुल्ला करे ते एकांतिक नथी, ने एने श्रीजीमहाराजनो संबंध पण नथी ने अनादि मुक्तनो के परम एकांतिकनो योग पण एने थयो नथी माटे श्रीजीमहाराजनुं रहस्य

एना जाण्यामां आव्युं नथी, एतो ज्यारे सिद्धदशावाळा परम एकांतिकनो के अनादिनो योग थाय ने श्रीजीमहाराजनी आज्ञा यथार्थ पाळीने श्रीजीमहाराजने तथा मुक्तोने प्रसन्न करे त्यारे ते मुक्तोनी कृपा थाय ने श्रीजीमहाराजनो रहस्य यथार्थ समजावे त्यारे एकांतिक थवाय छे.

६ प्र० एकांतिकथी परम एकांतिक मुक्त तथा अनादि मुक्त जुदा कह्या ते किया जाणवा ?

६ उ० श्रीजीमहाराजना तेजरूप अक्षरधाममां सन्मुख रह्या छे ते परम एकांतिक कहेवाय छे, अने जे श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां रह्या छे ते अनादि कहेवाय छे, ते मुक्त श्रीजीमहाराजनी इच्छाथी अनंत जीवोनो उद्धार करवाने अर्थे पृथ्वीने विषे दर्शन आपता होय, तेमनो समागम ने सेवा करीने श्रीजीमहाराजनो ने ए मुक्तनो महिमा यथार्थ समजे अने सर्व वासनाथी रहित थाय, त्यारे ते एकांतिक कहेवाय, तोपण एनो देहतो मायिक छे.

७ प्र० परम एकांतिकना तथा अनादि मुक्तना समागमे करीने देह छतांज एमना जेवी स्थिति थाय के केम ?

७ उ० एवा मुक्तनो समागम करीने श्रीजीमहाराजनुं यथार्थ ज्ञान समजे ने श्रीजीमहाराजनुं ध्यान करे तो देह छतांज एमना जेवी स्थिति थाय.

८ प्र० परम एकांतिक तथा अनादि मुक्तनो देह केवो जाणवो ?

८ उ० जेम श्रीजीमहाराज कैवल्यमूर्ति छे तेमज ते मुक्त पण कैवल्यमूर्ति छे पण तेमां देह देहीभाव नथी.

९ प्र० त्यारे तो जेवा श्रीजीमहाराज छे तेवाज ते मुक्त थया त्यारे ते मुक्त पृथ्वीने विषे पधारे ते मुक्तद्वारे श्रीजीमहाराज प्रत्यक्ष कहेवाय के नहिं, ने ए मुक्तनुं ध्यान थाय के नहिं ?

९ उ० परम एकांतिक तथा अनादि मुक्त छे ते तो भक्त छे, ने श्रीजीमहाराज तो मुक्तना स्वामी छे, ने प्रतिमा पण स्वामीज छे, ने मुक्त दास छे माटे मुक्तनुं ध्यान थाय नहिं ने ए मुक्तोने प्रत्यक्ष भगवान पण कहेवाय नहि. श्रीजीमहाराजनी प्रतिमानेज प्रत्यक्ष भगवान कहेवाय ने प्रतिमानुंज ध्यान थाय, पण मुक्तनुं ध्यान थाय नहि. तो मूळअक्षर तथा मूळपुरुषादिकनुं तो थायज केम ? नज थाय. ते (म० $\frac{2}{8}$ मां) अमारा विना कोइ अवतारनुं ध्यान करवुं नहि एम कह्युं छे.

१० प्र० त्यारे (व० $\frac{2}{2}$ मां) श्रीजीमहाराजनी प्रतिमाथी मुक्तने उंचे नंबरे कह्या छे तेनुं शुं कारण हशे ?

१० उ० ज्ञान उपदेश करवानी बाबतमां मुक्तने श्रेष्ठ कह्या छे पण मुक्तनी भक्ति एटले भजन स्मरण करवुं, एम कह्युं नथी भक्ति तो प्रतिमानी करवी एम कह्युं छे, अने मुक्तनो तो ज्ञान लेवाने माटे आश्रय करवो एम कह्युं छे, माटे फक्त उपदेश देवामांज मुक्तने श्रेष्ठ कह्या छे, पण ध्यान भजन तो मुक्तनुं थायज नहिं, अने जे मुक्त होय ते प्रतिमानो महिमा समजावीने प्रतिमाने विषेज वळगाडे, ने प्रतिमानुंज ध्यान करावे माटे

जे पोतानुं ध्यान करावे तेने मुक्त न जाणवा, ने एकांतिक पण न जाणवा, तेने तो आधुनिक जाणीने तेनो त्याग करवो केम जे तेनो संग करवाथी मोक्ष थतो नथी.

११ प्र० त्यारे श्रीजीमहाराजनो ने एमना मुक्तनो रहस्य शो हशे ?

११ उ० (म० ५६ मां) श्रीजीमहाराजे पोतानुं रहस्य कह्युं छे जे अमारी मूर्तिना तेजमां तमारा आत्माने लीन करीने ए तेजमां अमे ने अमारा मुक्त रह्या छीए ते अमारे विषे ने अमारा मुक्तने विषे प्रीति जोडी राखवी ए परम एकांतिकनी स्थिति कही छे अने (जे० १ मां) संतने विषे आपोपुं करवानुं कह्युं छे ए अनादि मुक्तनी स्थिति कही छे. ते श्रीजीमहाराजनुं ने मोटा मुक्तोनुं रहस्य छे, माटे एवी रीते निरंतर वर्तवुं.

१२ प्र० मायिक आकारनुं चिंतवन करनारा नरक चोराशीने विषे भमे छे एम कह्युं ते मायिक आकार किया जाणवा ने नरक चोराशी कइ जाणवी. ?

१२ उ० श्रीजीमहाराज पृथ्वीने विषे मनुष्यरूपे विचरता होय ते मनुष्य रूप मूर्तिने विषे मनुष्य भाव परठे पण दिव्य न जाणे ते मायिक आकारना चिंतवन करनारा कहेवाय, ते नरक चोराशीने विषे भमे छे एम कह्युं छे ते मायारूपी नरक जाणवुं, ने जन्म मरण ते चोराशी जाणवी, एटले श्रीजीमहाराजनी मनुष्यरूप मूर्तिने अथवा प्रतिमाने मायिक जाणीने चिंतवन करनारा ते मायाथकी अने जन्म मरणथकी मुकाय नहिं एम कह्युं छे. ॥१८२॥

संवत् १८८० ना चैत्र वदि २ द्वितीयाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेव नारायणना मंदिरनी आगळ आथमणे बार मेडीनी ओसरी उपर रात्रीने विषे विराजमान हता, ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे (१) आजतो अमारुं जे रहस्य छे ते तमने सर्वेने अमारा जाणीने कहीए छइए जे जेम नदियो समुद्रने विषे लीन थाय छे, ने जेम सती ने पतंग ते अग्निने विषे बळी जाय छे ने जेम शूरो रणने विषे टुकडुक थइ जाय छे, तेम एकरस परिपूर्ण एवुं जे ब्रह्मस्वरूप तेने विषे अमे अमारा जीवात्माने लीन करी राख्यो छे, अने तेजोमय एवुं जे अक्षर ब्रह्म तेने विषे मूर्तिमान एवा जे पुरुषोत्तम भगवान ने ते भगवानना जे भक्त ते संघाथे अखंड प्रीति जोडी राखी छे अने ते विना कोइ पदार्थमां प्रीति नथी एवुं अमारे अखंड वर्ते छे. (१) अने उपरथी १
तो अमे अतिशे त्यागनो फुंफाडो जणावता नथी पण ज्यारे अमे अमारा अंतर सामुं जोइने बीजा हरिभक्तना अंतर सामुं जोइए छइए त्यारे मोटा मोटा परमहंस तथा मोटी मोटी सांख्ययोगी बाइयो ए सर्वेने कांइक जगतनी कोरनो कोचो जणाय पण अमारा

અંતરને વિષે તો ક્યારેય સ્વપ્નમાં પણ જગતની કોરનો ઘાટ થાતો નથી, અને ભગવાનને ભગવાનના ભક્તની ભક્તિમાંથી અમને પાડવાને અર્થે કોઇ સમર્થ નથી એમ જણાય છે.(૨) ૨
અને જે દિવસ ભગવાનની પ્રાપ્તિ નહોતી થઇ તે દિવસ પણ ભગવાનની શક્તિ જે કાળ તે પણ આ જીવનો નાશ કરી શક્યો નથી અને કર્મ પણ નાશ કરી શક્યાં નથી અને માયા પણ પોતાને વિષે લીન કરી શકી નથી ને હવે તો ભગવાન મળ્યા છે માટે કાળ,કર્મ માયાનો શો ભાર છે? (૩) એમ જાણીને એવી હિંમત બાંધી છે જે હવે તો ભગવાનને ભગવાનના ૩
ભક્ત વિના કોઇને વિષે પ્રીતિ રાખવી નથી, અને જે અમારી સોબત રાખશે તેના હૃદયમાં પણ કોઇ જાતનો લોચો રહેવા દેવો નથી, શામાટે જે જેને અમારા જેવો અંતરનો દઢાવ હોય તે સાથેજ અમારે બને છે અને જેના હૃદયમાં જગતના સુખની વાસના હોયતે સંગાથે તો અમે હેત કરીએ તોપણ થાય નહિ, માટે જે નિર્વાસનિક ભગવાનના ભક્ત હોય તેજ અમને વહાલા છે, એ અમારા અંતરનું રહસ્ય છે તે કહ્યું, એવી રીતે શ્રીજીમહારાજે પોતાના ભક્તજનની શિક્ષાને અર્થે વાર્તા કરી. (૪) ઇતિ ૪
વચનામૃતમ્ ॥૫૦॥ (૧૮૩)

રહસ્યાર્થ પ્ર૦—આમાં કૃપાવાક્ય (૧) છે. તેમાં શ્રીજીમહારાજે કહ્યું છે જે સર્વથી પર એકરસ પરિપૂર્ણ એવું જે અમારા તેજરૂપ અક્ષરબ્રહ્મ તેને વિષે તમારા આત્માને લીન કરીને તેમાં અમે તથા અમારા મુક્ત સદા દિવ્ય સાકાર મૂર્તિમાન રહ્યા છીએ તેમાં અખંડ પ્રીતિ જોડી રાખો. (૧) અને મોટા મોટા પરમહંસ તથા મોટી મોટી સાંખ્યયોગી બાઇયો તેને વિષે પણ જગતની કોરનો લોચો જણાય છે. (૨) અને જીવને અમારી પ્રાપ્તિ નહોતી થઇ ત્યાં પણ કાળ કર્મ નાશ કરી શક્યાં નથી, ને માયા લીન કરી શકી નથી તો હવે તો અમે મળ્યા છીએ માટે કાળ, કર્મ, માયાનો ભાર રાખવો નહિ. (૩) અને જગત્ સુખની વાસનાવાળા સાથે અમારે હેત થાતું નથી, ને નિર્વાસનિક ભક્ત વહાલા છે.[૪] બાબતો છે.

૧ પ્ર૦ નદી, સતી ને શૂરાના દષ્ટાંતમાં કોઇ અધિક ન્યૂન હશે કે સરખાં હશે ? અને શ્રીજીમહારાજના તેજરૂપ બ્રહ્મમાં આત્માને લીન કરીને અમારે વિષે ને મુક્તને વિષે પ્રીતિ જોડી રાખવી એમ કહ્યું તે આત્માને કેવી રીતે લીન કરવો ? અને શ્રીજીમહારાજ તો ભગવાન છે તેમણે અમે અમારા જીવાત્માને લીન કરી રાખ્યો છે એમ કેમ કહ્યું હશે ?

૧ ઉ૦ એ દષ્ટાંતમાં અધિક ન્યૂન નથી એ તો જેમ નદીને સમુદ્રમાં મળવાનો વેગ છે તો મોટા મોટા પર્વતોને તોડીને પણ સમુદ્રમાં જાય છે, અને સતીને પતિમાં પ્રીતિ છે તો દેહ સંબંધી વૈભવનો ને સર્વ સુખનો ત્યાગ કરીને ને બાળકની બીક તજીને પણ અગ્નિમાં બળી મરે છે, અને શૂરો પોતાનાં જે છોકરાંમાંથી તથા સુખમાંથી તથા દેહમાંથી સ્નેહ તોડીને કોઇનો રોક્યો ન રોકાતાં રણમાં ડુક ડુક થઇ જાય છે, તે એમને જેવો વેગ છે

तेम तमारे अमारा विना सर्वमांथी प्रीति टाळीने अमारा तेजरूप ब्रह्मने विषे एकता करवी तेणे करीने ए ब्रह्मना साधर्म्यपणाने पमाय पछी अमारुं दर्शन थाय त्यारे ते अमारा जेवोज साकार थइ जाय ने अमारा साधर्म्यपणाने पामीने अमारी हजुर सेवामां रहे छे एम श्रीजीमहाराजे पोताना भक्तने शिखववाने वास्ते कह्युं छे अने जीव शब्दे करीने जीवने, आत्माने, तथा परमात्माने कहेवाय छे.

२ प्र० पहेली बाबतमां सर्वेथी पर एकरस परिपूर्ण ब्रह्म स्वरूप कह्युं ते सर्वेथी एटले कोनाथी पर समजवुं ?

२ उ० सर्वे शब्दवडे करीने जीवकोटी, ईश्वरकोटी, ब्रह्मकोटी ने मूळ अक्षर कोटी ए आदिथी पर समजवुं.

३ प्र० बीजी बाबतमां मोटा मोटा ने विषे जगतनी कोरनो लोचो जणाय छे एम कह्युं ने (प्र० ५८ ना बीजा प्रश्नमां) मोटा पुरुषनो राजीपो थाय तो गमे तेवा मलीन संस्कार होय ते पण नाश पामे, तथा (म० ७ ना बीजा प्रश्नमां) मोटा संतने राजी करे तो सर्वे विकार टळी जाय, तथा [प्र० ५९ ना चोथा प्रश्नमां] मोटा पुरुषने प्रतापे भुंडा देशादिक पण सारा थइ जाय एम कह्युं छे, ते परस्पर विरोध आवे छे ते केवी रीते समजवुं ? अने अमारे जगतनी कोरनो घाट थातो नथी एम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

३ उ० आ ठेकाणे मायानुं बळ बतावीने मोटाने मिषे करीने साधनिकने उपदेश कर्यो छे, पण मोटा सिद्धदशावाळा मुक्तोनी दृष्टिमां माया छेज नहि तो जगतनी कोरनो घाटतो होयज क्यांथी ते तो सदाय श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमांज निमग्न रहेला छे, अने एमनी कृपाथी महा अधम जीव पण मुक्त थइ जाय एवा समर्थ छे. अने अमारा अंतरने विषे घाट नथी एम कह्युं छे ते पण पोताने मिषे करीने पोताना साधर्म्यपणाने पाम्या एवा जे सिद्धमुक्तो तेने विषे कोइ जातनो घाट नथी एम कह्युं छे, अने भगवानने भगवानना भक्तनी भक्तिमांथी अमने पाडवाने अर्थे कोइ समर्थ नथी एम कह्युं छे, ते पण पोताने मिषे करीने पोताना मुक्तने पाडवाने कोइ समर्थ नथी, एम कह्युं छे केमजे श्रीजीमहाराज तो पोतेज भगवान छे, माटे एमने पाडवा कोइ समर्थ होयज नहि, ए तो सर्वोपरि, सर्व नियंता, सर्व कर्त्ता परमेश्वर छे.

४ प्र० त्रीजी बाबतमां काळ कर्म जीवनो नाश करी शक्यां नथी अने माया लीन करी शकी नथी एम कह्युं ते नाश ने लीन केवी रीते समजवुं ?

४ उ० जीव चैतन्य वस्तु छे तेने काळ, कर्म मळीने नाश एटले जडवत् करी शक्यां नथी, अने माया पोतामांथी नीकळीने जुदो न पडी शके एवी रीते लीन करी शकी नथी. ॥१८३॥

संवत् १८८० ना चैत्र वदि ९ नवमीने दिवस स्वामीश्री सहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां दक्षणादे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर गादी तकिया नखावीने विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि

तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे परमहंसने प्रश्न पुछयो जे(१)कोइक समामां तो जीव सुषुप्तिमां जाय छे त्यारे अतिशे सुख थाय छे अने कोइक समामां तो सुषुप्तिमां जाय छे तो पण उद्वेग मटतो नथी तेनुं शुं कारण हशे? ए प्रश्न छे पछी मोटा मोटा संत हता तेमणे ए प्रश्ननुं समाधान करवा मांडयुं पण यथार्थ समाधान थयुं नहि पछी श्रीजीमहाराज बोल्याजे एतो रजोगुणनुं बळ वृद्धि पामी जाय छे ते सुषुप्तिमां पण तमोगुण भेळो रजोगुणनो विक्षेप रहे छे माटे सुषुप्तिमां पण असुख रहे छे माटे गुणनो संग ज्यांसुधी रहे त्यांसुधी कोइ जीव सुखीयो रहे नहि ने ज्यारे आत्मसत्तारूपे रहे त्यारेज सुखी रहे छे (१) १

२ पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पूछयो जे (२) आत्मसत्तारूपे रहे तेनां शां लक्षण छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे शिव ब्रह्मा जेवा कोइ समर्थ कहेवाय नहि एतो नारद जेवाना पण गुरु छे अने ए जेवा ब्रह्म स्वरूपे वर्त्ते छे तेवुं तो बीजाने वर्त्तवुं कठण छे तो पण देश,काळ,क्रिया, संग, मंत्र, शास्त्र दीक्षाने देवता ए आठे जो भुंडा थया तो तेने योगे करीने ए शिव, ब्रह्मा जेवाने पण अंतरमां अतिशे दुःख थयुं माटे गमे तेवो निर्गुण होयने आत्मसत्तारूपे रहेतो होय ने जो तेने भुंडा देशकाळादिकनो योग थाय तो तेने जरुर अंतरमां दुःख थाय माटे मोटा पुरुषनी बांधेल जे मर्यादा तेने लोपीने कोइ सुखी थातो नथी माटे जेटला त्यागी छे तेने तो त्यागीना धर्म प्रमाणे वर्त्तवुं अने जेटला गृहस्थ हरिभक्त छे तेमणे गृहस्थना धर्म प्रमाणे वर्त्तवुं अने जेटली बाइयो हरिभक्त छे तेने बाइयोना धर्म प्रमाणे वर्तवुं अने जो ते थकी ओछुं वर्त्ते तोपण सुख न थाय अने जो ते थकी अधकुं वर्त्ते तो पण सुख न थाय शा माटे जे परमेश्वरना कहेल जे धर्म ते प्रमाणेज ग्रंथमां लख्युं होय तेमां कोइ रीते बाध आवे एवुं नहोय ने सुखे पळे एवुं होय ने तेथी ओछुं अधकुं करवा जाय ते करनारो जरुर दुःखी थाय माटे सत्पुरुषनी आज्ञा प्रमाणे जे रहे छे तेज रुडा देशकाळादिकने विषे रह्यो छे अने जे सत्पुरुषनी आज्ञाथी बहार पड्यो तेज एने भुंडा देशकाळादिकना योग थयो छे माटे सत्पुरुषनी आज्ञाने विषे वर्त्ते छे तेज आत्मसत्तारूपे वर्ते छे. (२) इति २
वचनामृतम् ॥५१॥ [१८४]

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे.तेमां पेहेलामां गुणनो संग टाळीने आत्मारूपे थाय त्यारेज सुखी थाय (१) बीजामां अमारी बांधेली मर्यादा पाळे ते आत्मसत्तारूपे वर्ते छे ने न पाळे ते भुंडा देशकाळमां रह्यो छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (२) बावतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां गुणनो संग होय त्यां सुधी कोइ सुखी रहे नहि एम कह्युं अने (श्लो०

१० मा (३/४ सातमा प्रश्नमां) मायाना सत्त्वगुणने सुखरूप कह्यो छे ते केम समजवुं ?
१ उ० आमां रजोगुणने दुःखदायी कह्यो छे पण सत्त्वगुणने दुःखदायी कह्यो नथी माटे विरोध नथी पण यथार्थ सुखीयो तो ज्यारे निर्गुण सत्तारूप थाय त्यारेज थाय.
२ प्र० बीजा प्रश्नमां शिव ब्रह्माने समर्थ ने नारदजीना गुरु कह्या अने ब्रह्मस्वरूपे वर्त्ते छे एम कह्युं अने वळी शुंडा देशादिक नडया, एम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?
२ उ० इंद्र तथा प्रजापति आदिकथी शिवब्रह्मानुं ऐश्वर्य अधिक छे माटे तेथी समर्थ कह्या छे अने ब्रह्मा नारदजीना पिता हता ने ते शिव थकी वर पाम्या हता तेथी गुरु कह्या छे, अने ते सगुण छे ने उपासना पण वैराजनी छे ते पण सगुण छे अने एमना जेवुं बीजाथी ब्रह्मरूपे न वर्ताय एम कह्युं छे ते बीजा एटले ऋषि तथा प्रजापतिथी एमना जेवुं वर्ती शकाय नहि, एम कह्युं छे. अने शुकजीना जेवी स्थिति एमनी नहोती तेथी शुंडा देशादिक नडया छे ते ज्यारे परब्रह्मनी उपासना थाय ने पोते ब्रह्मरूप थाय ने पोताना चैतन्यने विषे परब्रह्मनी मूर्तिने साक्षात् देखे त्यारे शुंडा देशादिक नडी शके नहि ते (प्र० ३/६ मां) कह्युं छे. ॥ १८४ ॥

संवत् १८८० ना चैत्र वदि ११ एकादशीने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमांथी घोडीए अस्वार थइने श्री लक्ष्मीवाडीये पधार्या हता ने त्यां वेदिका उपर विराजमान थया हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठने विषे पुष्पनो हार पहेर्यो हतो ने पाघने विषे फुलनो तोरो विराजमान हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने पोतानी आगळ मुनि मंडळ झांझ मृदंग लेइने कीर्त्तन गावता हता
१ ते ज्यारे कीर्त्तन गाइ रह्या त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे.(१) ल्यो हवे वार्त्ता करीए ते सांभळो. जे आ संसारने विषे गृहस्थाश्रमी ने त्यागी ए बेना मार्ग जुदा जुदा छे ते जे गृहस्थने शोभा होय ते त्यागीने दूषणरूप होय ने जे त्यागीने शोभा होय ते गृहस्थने दूषणरूप होय तेने बुद्धिमान होय ते जाणे पण बीजो जाणी शके नहि माटे तेनी विक्ति कहीए छइए जे, जे गृहस्थाश्रमी छे तेने धन, दोलत, हाथी, घोडा, गाय, भेंस, मेडी, हवेली, स्त्री, छोकरां, भारे भारे वस्त्र आभूषण ए सर्वे पदार्थ शोभारूप छे अने ए ज जे सर्वे पदार्थ ते जे त्यागी होय तेने दोषरूप छे. अने त्यागी छे तेने वनमां रहेवुं, वस्त्र विना उघाडुं एक कौपिनभर रहेवुं माथामां टोपी घालवी, दाढीमुछ मुंडावी नखाववी, भगवां वस्त्र राखवां, अने कोइ गाळ्युं दे, ने कोइ धुळ नाखे, ते अपमानने सहन करवुं एज त्यागीने परम शोभारूप छे. अने ए त्यागीनी जे शोभा ते गृहस्थने परम दोषरूप छे. माटे आ संसारमांथी जे निसर्यो ने त्यागी थयो तेने तो एम विचारवुं जे हुं किया आश्रममां रह्यो छुं, एम बुद्धिमान

होय तेने विचार करवो पण मूर्खनी पेठे विचार्या विना कोइ चाळे चडी जावुं नहि.
[१] अने जे समझु होय तेने कोइक वढीने कहे त्यारे सामो गुण ले, अने जे मूर्ख १
होय तेने कोइक हितनी वात कहे त्यारे ते मुंझाइ जाय. अने मुकुंदब्रह्मचारी तथा
रतनजी ए बे मुंझाता नथी तो एमनी साथे अमारे घणुं बने छे. [२] अने वळी जे २
श्रद्धाये सहित सेवा चाकरी करे ते अमने गमे अने श्रद्धा विना तो कोइ जम्यानुं
लावे तो ते जम्यानुं गमे नहि ने वस्त्र लावे तो ते वस्त्र ओढवुं गमे नहि अने पूजा लावे
तो पूजा गमे नहि अने श्रद्धाये करीने करे ते अतिशे गमे अने श्रद्धाये करीने भक्ति
करता होय ने बीजो कोइक तेमां भक्ति करवा आवे तेनी उपर ईर्ष्या करे तो ते
अमने न गमे माटे श्रद्धाये सहित ने ईर्ष्याये रहित जे भक्ति करे ते अमने अतिशे गमे
छे. [३] इतिवचनामृतम् ॥५२॥१८५॥ ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे,तेमां श्रीजीमहाराजे गृहस्थनी शोभा त्यागीने दोषरूप कही छे. ने त्यागीनी शोभा गृहस्थने दोषरूप कही छे. (१) अने हेतनी वात वढीने कहे त्यारे समजु गुण ले ने मूर्ख मुंझाय (२) अने श्रद्धाये सहित ने ईर्ष्याये रहित अमारी भक्ति करवी एम कह्युं छे. (३) बाबतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां मूर्खनी पेठे विचार कर्या विना कोइ चाळे चडी जावुं नहि एम कह्युं ते केवी रीते वर्त्ते तो चाळे न चडया कहेवाय? अने केवी रीते वर्त्ते तो चाळे चडया कहेवाय ?

१ उ० श्रीजीमहाराजे त्यागीने वनमां एटले स्त्रियोना प्रवेशे रहित स्थळ ते वन कहेवाय माटे तेवां मंदिरोमां रहेवानी आज्ञा करी छे तेमां रहेवुं ते वन जाणवुं. ने धर्मामृतमां कह्यां जे अगीयार वस्त्र तेथी विशेष न राखवां ते वस्त्र विना रह्या समझवुं. अने कौपिन हंमेशां पहेरवी ते कौपिनभर रह्या समजवुं. ने टोपी घालवी ने डाढीमुछ न राखवां ने अगीयारमां एके वस्त्र धोळुं न राखवुं ने मान अपमान सहन करवुं आ प्रमाणे वर्त्ते तो चाळे चडया न कहेवाय. अने एमां फेर पडे तो चाळे चडया जाणवुं अने त्यागी द्रव्य राखे रखावे के पोतापकी हरिकृष्ण महाराजनी मूर्ति राखी होय ते मूर्तिने जरी-यानी वस्त्र के साच्चां खोटां घरेणां राखे तो अधिक चाळे चड्या जाणवुं.

२ प्र० हालमां नोटो चाले छे तेने साधु ब्रह्मचारीथी अडाय के नहि ?

२ उ० जेवा पैसा छे तेवीज नोट छे माटे पैसाने जेम न अडाय तेम नोटने पण न अडाय अने रखाय रखावाय पण नहि. ॥ १८५ ॥

संवत् १८८० ना वैशाख शुदि ५ पंचमीने दिवस स्वामीश्री सहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे गादी तकिया बिछावीने विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे [१] शास्त्रने विषे जे मोह कह्यो छे ते मोहनुं
ए रूप छे जे ज्यारे हृदयने विषे मोह व्यापे त्यारे ए जीवने पोतानो अवगुण तो सुझेज
नहि माटे पोतानो अवगुण न सुझे एज मोहनुं रूप छे [१] अने वळी जीव मात्रने १
पोताना डहापणनुं अतिशे मान होय पण एम विचारे नहि जे मुंने मारा जीवनी खबर
नथी जे आ शरीरमां जीव रह्यो छे ते काळो छे के गोरो छे के लांबो छे के टुंको छेएनी
कांइ खबर नथी तो पण मोटा पुरुष होय अथवा भगवान होय तेने विषे पण खोट
काढे अने एम समझे जे आ मोटा पुरुष छे अथवा भगवान छे पण आटलुं ठीक करता
नथी एम खोटय काढे छे पण ए मूर्खो एम नथी जाणतो जे ए भगवान तो अनंत
कोटी ब्रह्मांडने विषे रह्या एवा जे जीवने ईश्वर तेने जेम हथेळीमां जळनुं टीपुं होय ने
तेने देखे तेम देखे छे अने अनंत कोटी ब्रह्मांडना आधार छे ने लक्ष्मीना पति छे अने
अनंतकोटी ब्रह्मांडना कर्त्ता हर्त्ता छे अने शेष शारदा ने ब्रह्मादिक देव ते पण जेना
महिमाना पारने पामता नथी अने निगम पण जेना महिमाने नेति नेति कहे छे माटे
एवाजे परमेश्वर तेनां चरित्रने विषे ने ते भगवाननी जे समजण तेने विषे जे दोष
देखे छे तेने विमुख ने अधर्मी जाणवो अने सर्व मूर्खनो राजा जाणवो अने भगवान ने
भगवानना भक्त तेनी तो अलौकिक समजण होय तेने देहाभिमानी जीव क्यांथी स-
मजी शके ?माटे पोतानी मूर्खाइए करीने भगवान ने भगवानना जे भक्त तेनो अवगुण
लइने विमुख थइ जाय छे. अने ए भगवानना खरेखरा भक्त जे सत्पुरुष होय ते तो
अलौकिक दृष्टिये युक्त वर्त्या करे छे. [२] इतिवचनामृतम् ॥५३॥१८६॥ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां जेने पोताना अवगुण न सुझे ते मोहनुं रूप कह्युं छे. [१] अने मूर्ख जीवने पोतानी खबर न होय जे हुं केवो छुं तोपण मोटा पुरुषने विषे तथा अमारं विषे खोटय काढे पण अमे सर्वेना अंतर्यामी ने सर्वेना आधार ने सर्वेना कर्त्ता छीए एवो अमारो महिमा समजे नहि. ने अमारां ने अमारा भक्तनां चरित्रमां दोष देखे छे तेणे करीने विमुख थइ जाय छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (२) वाक्तो छे.

१ प्र० बीजी वातमां जीव काळो छे के गोरो छे के लांबो छे के टुंको छे एम कह्युं ते काळो, गोरो, लांबो, टुंको केवी रीते जाणवो ?

१ उ० मायिक विषयमां राग होय त्यां सुधी काळो कहेवाय. अने मायिक विषयमांथी राग टळी जाय पण ऐश्वर्यमां राग होय त्यां सुधी गोरो कहेवाय. अने ए बेय प्रकारनी वासना टाळीने श्रीजीमहाराजना तेज साथे एकता करीने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने धारतां धारतां पोताना आत्माने विषे श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने देखे ते लांबो कहेवाय. अने श्रीजी-महाराजना सार्वज्ञपणाने पामीने साकार दिव्य मूर्तिमान थइने श्रीजीमहाराजनी हजु-

रमां रहे, अथवा श्रीजीमहाराजना तदाकारपणाने पामीने मूर्तिमां रह्यो थको मूर्तिना सुखने भोगवे, ते टुंको कहेवाय. ।। १८६ ।।

संवत् १८८० ना जेष्ठ शुदि ७ सप्तमीने दिवस त्रीजापोरने समे स्वामीश्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमांथी घोडीये अस्वार थइने श्रीलक्ष्मी वाडीये पधार्या हता त्यां घणीवार सुधी तो घोडी फेरवी पछी ते वाडी मध्ये वेदी उपर विराजमान थया हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र पहेर्यां हतां अने मस्तक उपर काळा छेडानी धोतळी बांधी हती ने कंठने विषे मोगराना पुष्पनो हार विराजमान हतो ने पाघने विषे तोरो विराजमान हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे मुनि प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे(१)एकादश स्कंधना बारमा अध्यायमां श्रीकृष्ण भगवाने उद्धव प्रत्ये कह्युं छे जे अष्टांगयोग, सांख्य, तप, त्याग, तीर्थ, व्रत, यज्ञ ने दानादिक एणे करीने हुं तेवो वश थातो नथी जेवो सत्संगे करीने वश थाउंछुं एम भगवाने कह्युं छे माटे सर्व साधन करतां सत्संग अधिक थयो ते जेने सर्वे साधन थकी सत्संग अधिक जणातो होय ते पुरुषनां केवां लक्षण होय ? पछी जेने जेवुं समजाणुं तेवुं तेणे कह्युं पण यथार्थ उत्तर थयो नहि पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेने भगवानना संतने विषेज आत्मबुद्धि छे, जेम कोइक राजा होय ने ते वांझीयो होय ने पछी तेने घरडपणमां दिकरो आवे पछी ते छोकरो तेने गाळो दे, मुछो ताणे तोपण अभाव आवे नहि अने कोइकना छोकराने मारे तथा गाममां अनीति करी आवे तो पण कोइ रीते तेनो अवगुण आवेज नहि, आ माटे जे ए राजाने पोताना दिकराने विषे आत्मबुद्धि थइ गइ छे, एवी जेने भगवानना भक्तने विषे आत्मबुद्धि थाय छे तेणेज सर्व साधन थकी अधिक कल्याणकारी सत्संगने जाण्यो छे. ए वार्ता भागवतमां कही छे जे ।।"यस्यात्मबुद्धिःकुणपेत्रिधातुके स्वधीःकलत्रादिषुभौमइज्यधीः । यत्तीर्थबुद्धिःसलिलेनकर्हिचिज्जनेष्वभिज्ञेषुसएवगोखरः" ।। एश्लोकने विषे ए वार्ता यथार्थ कही छे. (१) इति वचनामृतम्. ।।५४।। (१८७) १

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के जेवी देहने विषे आत्मबुद्धि छे तथा स्त्रीपुत्रादिकने विषे पोतापणानी बुद्धि छे अने देवनी जे मूर्तियो तेने विषे जेवी पूज्यबुद्धि छे कहेतां देवने चंदनपुष्प धूप दीप आरती थाळ अनेक प्रकारनी पूजा सेवा करवामां कोइ प्रकारे संशय थतो नथी तेवीज अभिज्ञजन कहेतां भगवाननी मूर्तिना साक्षात्कारवाळा सत्पुरुषने विषे आत्मबुद्धि तथा पोतापणानी बुद्धि तथा देवताबुद्धि होय अने तीर्थना जळने विषे जेम पवित्र करवापणानी बुद्धि छे तेवीज सत्पुरुषना प्रसादी जळने विषे पवित्र करवापणानी बुद्धि छे तेणे सर्व साधनथी अधिक कल्या-

णकारी सत्संगने जाण्यो छे अने एवी रीते सत्पुरुषने विषे बुद्धि नथी ते गो कहेतां बळध अने खर कहेतां गर्धभ तुल्य छे. (१) बाबत छे.

१ प्र० सत्पुरुषने विषे आत्मबुद्धि अने पोतापणानी बुद्धि अने पूज्यबुद्धि अने तीर्थबुद्धि करवानुं कह्युं ते केवी रीते करवां ?

१ उ० वात पित्त ने कफयुक्त एवा देहने खानपानादिक हरकोइ प्रकारे करीने जेम सुख उपजे तेम करे छे तेवी रीते सत्पुरुषने सुख उपजे एवी शुश्रुषा करे ने तेमने दुःखे दुःखी ने तेमने सुखे सुखी थाय ते सत्पुरुषने विषे आत्मबुद्धि कहेवाय. अने स्त्रीपुत्रने अन्नवस्त्र घरेणां खानपान वैभव आदिके करीने सुखी राखे छे ने तेमने अर्थे देशपरदेश जइने, दुःखने न गणीने तेमने अर्थे पैसा पेदा करी लावे छे ने तेमना उपयोगमां वापरे छे तेमज सत्पुरुषने अर्थे वापरे ते सत्पुरुषने विषे पोतापणुं कहेवाय. अने जेम धातु काष्ट पाषाणादिकनी मूर्त्तियोने थाळ जमाडवा पोढाडवा जगाडवा धूपदीप आरती दंडवत् प्रदक्षिणा थाय छे एवी पूज्यबुद्धि ने देवताबुद्धि छे तेवी पूज्यबुद्धि ने देवताबुद्धि सत्पुरुषने विषे थाय. अने तीर्थ जे गंगा, यमुना, साभ्रमति,उन्मत्तगंगा आदिकना जळने विषे न्हावे तथा पीवे करीने पवित्र थवापणानी बुद्धि छे तेवीज सत्पुरुषना चरणोदकनुं पान करवे करीने पवित्र थवाय तेवी बुद्धि थाय तेणे सर्व साधनथी अधिक कल्याणकारी सत्संगने जाण्यो छे अने एम न थाय तो ते बळधने गधेडा जेवो छे. ॥१८७॥

संवत् १८८० ना ज्येष्ठ शुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने मस्तक उपर नवानगरनुं सोनेरी कोरे युक्त श्वेत मोळीयुं बांध्युं हतुं अने श्वेत पछेडी ओढी हती अने श्वेत खेस पहेर्यो हतो अने श्रीजीमहाराजना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने ते सभाने विषे मुनि झांझ मृदंग लेइने कीर्तन गावता हता. पछी ते मुनि
१ कीर्तन भक्ति करी रह्या. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे (१) जेवुं आज जेवुं अंग होय तेवुं सत्संग थया मोरे पण कांइक होय खरुं ते माटे आज तो सर्वे जेनुं जेवुं अंग होय ते तेवुं कहो तेमां प्रथम तो अमे अमारुं जेवुं अंग छे तेवी वार्ता कहीये छइए ते सांभळो जे ज्यारे अमारे बाळ अवस्था हती त्यारे पण देव मंदिर होय त्यां दर्शने जावुं कथा वार्ता सांभळवी, साधुनो समागम करवो,तीर्थ करवा जावुं,एवी वार्ता गमती अने ज्यारे घर मुकीने निसर्या त्यारे तो वस्त्र राखवुं पण गमतुं नहि, अने वनमांज रहेवुं गमतुं अने बीक तो लेश मात्र लागतीज नहि, अने वनने विषे मोटामोटा सर्प, सिंह, हाथी इत्यादिक अनंत जनावर दीठामां आव्यां पण कोइ प्रकारे हैयामां मरवानी

तो बीकज लागती नहि, एवी रीते महावनने विषे सदा निर्भय रहेता, पछी तीर्थने विषे फरता फरता श्रीरामानंदस्वामी पासे आव्या. अने पछी श्रीरामानंदस्वामी ज्यारे अंतर्धान थया ते केडे सत्संगनुं रुडुं थावाने अर्थे कांइक बीक राखवा मांडी, पण अंतरमां अखंड विचार एवो रहे छे जेम मनुष्यने मुवा टाणे पथारी उपर सुवार्यु होय त्यारे ते मनुष्य-मांथी सौने पोताना स्वार्थनी वासना टळी जाय छे अने ते मरनाराने पण संसारथकी मन उदास थइ जाय छे तेमनुं तेम अमारे पोतानी कोरनुं अने बीजानी कोरनुं अंत अवस्था जेवुं सदा वर्ते छे.अने जेटलुं मायिक पदार्थ मात्र छे ते सर्वे नाशवंत ने तुच्छना सरखुं जणाया करे छे पण एम विक्ति नथी जणाती जे आ सारुं पदार्थ छे ने आ भुंडुं पदार्थ छे जेटलां मायिक पदार्थ छे तेतो एक सरखां जणाय छे जेम कागना मुवाळा छे तेमां सारो कियो ने नरसो कियो, तेतो सारो नरसो सौ एकपाडमां छे तेम मायिक पदार्थ पण सर्वे सरखां छे. अने कांइक सारुं नरसुं जे कहीये छइए ते तो भगवानना भक्तने सारुं लगाडवाने अर्थे कहीए छइए जे आ सारुं भोजन छे, आ सारुं वस्त्र छे आ सारुं घरेणुं छे आ सारुं घर छे आ सारुं घोडुं छे आ सारां पुष्प छे ते भक्तने सारुं लागे ते सारुं कहीए छइए अने अमारी सर्वे क्रिया छे ते भ-गवानना भक्तने अर्थे छे पण पोताना सुखने अर्थे एके क्रिया नथी. (१) अने भगवा- १
नना जे एकांतिक भक्त होय तेनुं जे मन ते भगवानना स्वरूपनुंज चिंतवन करे अने वाणी ते भगवानना यशनेज गाय अने हाथ ते भगवान के भगवानना भक्तनी सेवा परिचर्यानेज करे अने कान ते अखंड भगवानना यशनेज सांभळे एम भगवाननी भक्ति जाणीने जे जे क्रिया करीए छइए ते थाय छे, पण ए भगवाननी भक्ति विना तो अमे सर्व पदार्थथी उदासी छइए, जेम कोइक मोटो राजा होय ने तेने एकज दिकरो होय अने ते राजा साठ सीत्तेर वर्षनो थाय ने पछी तेनो दिकरो मरी जाय त्यारे ते राजानुं मन सर्व पदार्थमांथी उदास थइ जाय तेम अमारे पण खातां, पीतां घोडे चढतां, राजीकुराजीपणामां सर्वे काळे मन उदासीज रहे छे. [२] अने अंतरमां एम २
विचार रहे छे जे आपण तो देह थकी पृथक् आत्मा छइए पण देह जेवा नथी अने वळी अंतरमां एम विचार रह्या करे छे जे आत्माने विषे रखे रजोगुण तमोगुण आदिक कोइक मायानो भाग मळी जाय नहि तेने घडीए घडीए तपासता रहीए छइए.जेम सादा सोळवलुं कंचन होय ने तेने सोनीनी पेढीए कइ जाय अने जो धणीनी लगारेक नजर चुके तो सोनी सोनुं काढी लइने तेमां त्रांबुं मेळीदे तेम आ हृदयरूपी तो सोनीनी पेढी छे अने तेमां मायारूपी सोनी छे ते पोते बेठो थको संकल्परूपी जे एखोटो तेना अखंड ठब ठब ठबका मारतो रहे छे अने जेम सोनीनां छोकरां, को,

होय ते पारसी करीने तेने हाथ आवे तो कांइक सोनुं चोरी जाय, तेम इन्द्रियो अंतःकरण ए सर्वे मायारूपी जे सोनी तेनां छोकरां ज्ञी छे ते कंचनरूप जे चैतन्य तेने विषे-त्रण गुण तथा पंच विषयमां आसक्ति तथा देहाभिमान तथा काम, क्रोध, लोभादिक, रूप जे त्रांबुं तेने मेळीने ज्ञान वैराग्यादिक गुणरूप जे सोनुं तेने काढी लेछे, अने जे सोनामांथी सोनुं काढीने त्रांबुं मेळवे तो ते सोनुं वारवलुं थइ जाय छे अने पछी ते सोनाने तावी तावीने पाछुं सोळवलुं करे तो थाय छे, तेम आ जीवने विषे रज, तम, आदिक जे त्रांबुं भळ्युं छे तेने गाळीने काढी नाखवुं ने पछी कंचनरूप जे एक आत्मा तेज रहे पण बीजो मायिक मेग कांइ रहे नहि एवी रीतना विचारमां अमे रात दिवस मंडया छइए ए अमे अमारुं अंग छे ते कह्युं हवे एवी रीते जेने जे अंग होय ते कहो.पछी संत मंडळे एम कह्युं जे हे महाराज ! तमारे विषे तो मायिक गुणनो मेग होयज नहि तमे तो कैवल्य मूर्ति छो पण ए जे सर्वे तमे वात करी तेतो अमारा अंगनी छे अने तमे कह्यो जे विचार ते अमारे सर्वेने राख्यो जोइए पछी श्रीजीमहाराज जय सच्चिदानंद कहीने पोताना उताराने विषे पधार्या. (३) इति वचनामृतम्. ॥५५॥ [१८८]. ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे, तेमां श्रीजीमहाराजे पोताना उद्देशे करीने देव, दर्शन, कथा, वार्ता, साधुसमागम, तीर्थ, त्याग, वैराग्यनी रुचि राखवी एम पोताना आश्रितोने शिखव्युं छे. (१) अने पोताना एकांतिक भक्तनां लक्षण कह्यां छे. अने पोताना भक्तने आत्मविचार करवानुं कह्युं छे. (३) बाबतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां सत्संगनुं रुडुं थावाने अर्थे कांइक बीक राखवा मांडी एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते बीक शी राखी हशे ?

१ सत्संगनुं रुडुं पटले आत्यंतिक मोक्ष करवा साह मनुष्यरूपे दर्शन आपवां पण अदृश्य न थवुं एवो संकल्प कर्यो माटे बीक राखवा मांडी पटले सत्संगमां मनुष्यरूपे देखावुं एवो संकल्प कर्यो एम जाणवुं. ॥ १८८ ॥

संवत् १८८१ ना अषाढ शुदि ५ पंचमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर गादी तकिया बिछावीने बिराजमान हता, ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि मंडळनी सभा तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, अने साधु दुकड सरोदा लेइने कीर्तन बोलता हता.

१ ते कीर्तनभक्ति थइ रह्या पछी श्रीजीमहाराज एम बोल्या जे (१) आ कीर्तन सांभळ्यामांथी तो अमारो जीव विचारमां जातो रह्यो, पछी तेमां एम जणाणुं जे भगवानने विषे जे अतिशे प्रीति ए घणी मोटी वात छे,पछी तो गोपाळानंदस्वामी आदिक

जे भगवानने विषे प्रीतिवाळा हरिभक्त ते सर्वे सांभरी आव्या, अने ए सर्वेना अंतः-
करण ने ए सर्वेना जीव ने एमनी जे भगवानने विषे प्रीति ते सर्वे जोयामां आव्यां
पछी अमे अमारा जीवने पण तपासीने जोयो, त्यारे अमारे जेवी भगवानने विषे
प्रीति जणाणी तेवी बीजानी प्रीति जणाणी नहिं शामाटे जे कोइक भुंडा देशकाळा-
दिकनो ज्यारे योग थाय छे त्यारे ए सर्वे मोटा छे, तोपण कांइक एमनी बुद्धिने विषे
फेर पडी जाय छे, त्यारे एम जणाय जे अंते पायो काचो देखाय छे, ते सारी पेठे
जो कोइक भुंडा देश काळादिकनो योग थाय तो भगवानमां प्रीति छे तेनुं कांइ ठेका-
णुं रहे नहिं. (१) माटे ए सर्वेने जोतां अमने अमारी कोरनुं ठीक भासे छे जे गमे १
तेवा भुंडा देशकाळादिकनो योग थाय पण कोइ रीते अमारुं अंतःकरण फरे नहिं, अने
भगवानने विषे प्रीति तो तेनीज साची जे जेने भगवान विना बीजा कोइ पदार्थने
विषे प्रीतिज न थाय, अने सर्वे सद्ग्रंथनुं पण एज रहस्य छे जे भगवान छे एज परम
सुखदायक छे, ने परम सार वस्तु छे, ने ते प्रभुविना जे जे बीजां पदार्थ छे ते अतिशे
तुच्छ छे ने अति असार छे, अने जेने भगवान जेवी बीजा पदार्थमां पण प्रीति होय
तेनो तो घणोज पायो काचो छे, जेम कसुंबल वस्त्र होय ते घणुं सारुं जणातुं होय पण
ज्यारे ते उपर पाणी पडे ने पछी तेने तडकामां सुकवीए त्यारे सुधुं नकारुं थइ जाय,
ने धोळा वस्त्र जेवुं पण न रहे. तेम जेने पंच विषयमां प्रीति होय तेने ज्यारे कुसंगनो
योग थाय त्यारे कांइ ठेकाणुं रहे नहिं. माटे जे भगवाननो भक्त होय तेने तो भग-
वानने राजी कर्या सारु पंच विषयनो अतिशे त्याग कर्यो जोइए पण भगवानने विषे
जे प्रीति तेमां विघ्न करे एवुं कोइ पदार्थ वहालुं राखवुं नहिं. (२) इ. व. ॥५६॥.(१८९) २

रहस्यार्थ प्र०——आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे प्रीतिने वखाणी छे अने अनादिमुक्तराज श्रीगोपाळानंदस्वामी आदिक सिद्ध मुक्तने मिषे करीने साधनिकनी प्रीतिमां भुंडा देश काळादिके करीने फेर पडी जाय अने पोताने मिषे करीने पोताना सिद्ध मुक्तोने पोताने विषे प्रीति छे, तेमां भुंडा देश काळादिकने योगे पण फेर पडतो नथी, एम कह्युं छे. (१) अने अमे परम सुखदायी छीए ने अमारा विना बीजां पदार्थो अतिशे तुच्छ ने असार छे, माटे अमारा भक्तोए पंच विषयनो त्याग करवो. (२) वातो छे.

१ प्र० पहेली वातमां अमारो जीव विचारमां जतो रह्यो एम कह्युं ते जीव तो मायाबद्ध छे, ने श्रीजीमहाराज तो सर्व जीव, ईश्वर, ब्रह्म, अक्षर अने मुक्त ए सर्वेथी पर साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण छे, तेमणे पोताने जीव शब्दे करीने केम कह्या हशे ?

१ उ० जीवाडे ते जीव कहेवाय, माटे जीव देहने चलावे हलावे छे ने देहनो प्रकाशकारो छे एम देहने जीवाडे छे तेथी तेने जीव कहेवाय छे, ते (लो० १७ ना ३/५ श्रीजा प्रश्नमां)

अंतःकरण, इंद्रियोनो प्रकाशकने जेणे करीने देह चाले हाले छे एम कह्युं छे, माटे ते जीव कहेवाय छे. तेमज मूळपुरुष, ब्रह्म, अक्षर ते पण पोतपोताना कार्यमां प्रवेश करीने तेने सचेतन करे छे, ने हलावे चलावे छे; ने प्रकाश करे छे ने धारण करे छे, माटे तेमनी पण जीव संज्ञा कहेवाय, ते (श्लो० ५ ना ६ गीता अ७मां) ॥ अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धिमेपराम्।जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत्॥जीवभूतां कहेतां अक्षररूपी चैतन्य प्रकृति जे अक्षर जेणे करीने आ जगत् धारण कराय छे त्यां अक्षरने जीव शब्देथी कहेल छे. अने जीवकोटी, मायाकोटी, ईश्वरकोटी, ब्रह्मकोटी, मूळ अक्षरकोटी, ने मुक्तकोटी ए सर्वेना प्रकाशक नेधारण करनारा ने सचेतन करनारा श्रीजीमहाराज छे,माटे सर्वेने जीवाडनारा श्रीजीमहाराज पोतेज छे, तेथी अमारो जीव एम पोताने जीव शब्देथी कह्या छे.

२ प्र० पहेली बाबतमां गोपाळानंदस्वामीनी प्रीति करतां श्रीजीमहाराजे पोतानी प्रीतिने वखाणी ते श्रीजीमहाराज तो पोते भगवान छे, तेमने कोनी साथे प्रीति करवानी हशे ते पोतानी प्रीति वखाणी हशे ?

२ उ० श्रीजीमहाराज तो पोते साक्षात् भगवान पुरुषोत्तम नारायण छे, पण पोताने मिषे करीने पोताना सिद्ध मुक्तनी प्रीतिने अधिक कही छे, अने अनादि मुक्तराज श्रीगोपाळानंद स्वामीने मिषे करीने पोताना साधनदशावाळा भक्तोनी प्रीति कही छे, पण गोपाळानंद स्वामीने प्रीति ओछी छे एम कह्युं नथी, गोपाळानंदस्वामीने तो (छे० ३१ मां) धाममां सन्मुख रहेला परम एकांतिक मुक्तोथी अधिक एटले मूर्तिमां रहेला अनादि मुक्त कह्या छे, अने जो गोपाळानंदस्वामीने साधनिक कह्या होय तो श्रीजीमहाराजे अमारे भगवानने विषे प्रीति छे एम कह्युं छे, त्यारे तो श्रीजीमहाराज पण मुक्त ठर्या, ने भगवान कोइक बीजा ठर्या माटे एम नथी, एतो श्रीजीमहाराजे पोताने मिषे करीने सिद्ध मुक्तनी प्रीति कही छे, अने गोपाळानंदस्वामीने मिषे करीने साधनदशामां उत्तम भक्तोनी प्रीति कही छे. ॥१८९॥

संवत् १८८१ ना अषाढ शुदि ६ छठने दिवस संध्या आरतीने समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने मस्तक उपर श्वेत पाघ पुष्पने तोरे युक्त विराजमान हती अने श्वेत चादर ओढी हती ने श्वेत खेस पहेर्यो हतो अने श्रीजीमहाराजना मुखारविंद आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने मशालनो प्रकाश थइ रह्यो हतो अने मुनिमंडळ दुकड सरोदा लइने भगवानना कीर्त्तननुं गान करता हता.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे (१) सांभळो एक वार्ता करीए जे ज्यारे तमे कीर्त्तन गाता हता त्यारे अमे कीर्त्तन सांभळतां जेम विचार कर्यो छे ते विचार कहीए छीए जे भगवानमां प्रीति करवी ते एक सत्तारूपे रहीनेज करवी नेते सत्तारूप आत्मा

कैवो छे तो जेने विषे मायाने मायानां कार्य जे त्रणगुण ने देह इंद्रियो अंतःकरण तैलुं कोइ आवरण नथी अने कांइक जे आत्माने विषे आवरण जेवुं जणाय छे ते अज्ञाने करीने वृथा भ्रांति जणाय छे पण जेणे ज्ञान वैराग्ये करीने एनो सर्व प्रकारे निषेध करी नाख्यो छे तेने तो ए आत्माने विषे कोइ जातनुं आवरण नथी अने ए आत्मारूपे जे वर्त्तवुं ते केवळ ब्रह्म थइने ग्रस्त थावुं तेने अर्थे नथी ए तो पोताने आत्मारूपे रहेवुं तेनुं ए प्रयोजन छे जे हुं आत्माछुं ते मारे विषे कोइ जातनुं मायानुं आवरण नथी तो आत्मा थकी पर जे परमात्मा नारायण वासुदेव तेने विषे तो मायानो लेश पण केम होय? एवी रीते भगवानमां कोइ रीतनो दोष न आवे ते सारु आत्मनिष्ठा दृढ कराने राखवी अने ए आत्माना प्रकाशने विषे विचारने राखीने सत्तारूपमां जे पेसवा आवे तेनो नाश करी नाखवो. जेम दिवाना प्रकाशमां गरोळी आवी ने जे जे जंतु आवे तेने नाश करे छे तेम, आत्मानो जे प्रकाश तेमां रह्यो जे विचार ते आत्माविना बीजा पदार्थनो नाश करी नाखे छे.(१) अने वळी जेने परमेश्वरने विषे प्रीति होय १
तेने परमेश्वर विना बीजा कोइ पदार्थमां प्रीति न होय अने परमेश्वर विना बीजुं जे जे पदार्थ अधिक जणाय तेनो जे अतिशे त्याग करे ते त्याग खरो छे अने ते पदार्थ नानुं होय अथवा मोटुं होय पण तैनो जे त्याग करवो तेनुंज नाम त्याग कहेवाय अने जे पदार्थ भगवानना भजनमां आडुं आवतुं होय तेने तो न तजी शके ने बीजो उपरथी तो घणो त्याग करे पण तैनो ते त्याग वृथा छे अने एम कांइ जाणवुं नहि जे सारुं पदार्थ होय तेज भगवानना भजनमां आड्य करे ने नरसुं पदार्थ होय ते न करे ए तो जीवनो एवो स्वभाव छे जे जेम कोइकने गळ्युं भावे कोइकने खारुं भावे कोइकने खाटुं भावे कोइकने कडवुं भावे तेम जीवनी तो एवी तुच्छ बुद्धि छे ते अल्प पदार्थ होय तेने पण भगवान करतां अधिक वहालुं करी राखे छे.[२]अने ज्यारे भगवाननी २
मोटयप साधुं जोइये त्यारे तो एवुं कोइ पदार्थ छे नहि जे तेनी कोटोमा भागना पासंगमां पण आवे एवा भगवानने यथार्थ जाणीने जो हेत कर्युं होय तो मायिक पदार्थ जे पिंड ब्रह्मांडादिक तेमां क्यांइ पण प्रीति रहे नहि मायिक पदार्थ सर्वे तुच्छज थइ जाय अने ए भगवाननो ज्यारे यथार्थ महिमा जणाणो त्यारे चित्रकेतु राजाए करोड स्त्रियोनो त्याग कर्यो अने सर्वे पृथ्वीनुं चक्रवर्ती राज्य हतुं ते राज्यनो पण त्याग कर्यो. ने ते एम समज्या जे ए भगवानना सुख आगळ ए सो लाख स्त्रीयोनुं सुख ते शी गणतीमां अने चक्रवर्ती राज्यनुं सुख पण शी गणतीमां अने तेथी इंद्रना लोकनुं ने ब्रह्माना लोकनुं सुख पण शी गणतीमां अने एवा जे भगवान ते विना जे बीजा पदार्थ ने विषे प्रीति करे छे तेतो अतिशे तुच्छ बुद्धिवाळो छे जेम कुतरुं होय ते सुका हाड-

काने एकांते लइ जाइने करडे ने तेमां सुख माने छे तेम मूर्ख जीव छे ते दुःखने विषे सुखने मानीने तुच्छ पदार्थने विषे प्रीति करे छे. अने जे भगवाननो भक्त कहेवातो होय ने तेने भगवान थकी बीजा पदार्थमां तो हेत वधु होय ते तो केवळ मीनडीयो भक्त छे, अने जे यथार्थ भगवाननो भक्त होय तेने तो भगवानथी बीजुं कोइ पदार्थ अधिक होयज नहि. (३) अने ज्ञान, वैराग्य, भक्ति ने धर्म तेणे युक्त एवो जे भगवान- ३
नो भक्त ते तो एम जाणे जे जे शूरवीर होय ते लडवा समे शत्रु सन्मुख चाले पण बीये नहि ते शूरवीर साचो. अने शूरवीर होय ने लडाइमां काम न आव्यो ने गांठे घन होय ने ते खरच्या वावर्यामां काम न आव्युं ते वृथा छे, तेम मुने भगवान मळ्या छे ते जे जीव मारो संग करे तेनी आगळ हुं कल्याणनी वात न करुं तारे मारुं ज्ञान ते शा काममां आव्युं एम विचारीने उपदेश कर्या निमित्त कांइक थोडी घणी उपाधि रहे तो पण परमेश्वरनी वात कर्यामां कायरपणुं राखे नहि. (४) एम कहीने श्रीजी- ४
महाराजे तुळसीदासनां त्रण पद गवराव्यां ते त्रण पदनां नाम एक तो ॥ ज्याकी लगन राम सो नांहि॥ तथा बीजुं॥ एहि कह्यो सुनु वेद चहु॥ तथा त्रीजुं॥ ज्याकुं प्रिय न राम वैदेही ॥ ए त्रण पद गवरावीने पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेवी रीते आ पदमां कह्युं छे तेवी रीते आपणे रहेवुं छे ते करतां करतां जो कांइक अधुरुं रह्युं अने एटलामां जो देह पडयो तोपण मरीने नरक चोराशीमां जावुं नथी के कोइ भूत प्रेत थावुं नथी सुद्धो भुंडामां भुंडो देह आवशे तोपण इंद्रना जेवो के ब्रह्माना जेवो तो आवशे पण एथी उतरतो तो नहि आवे माटे निर्भे रहीने भगवाननुं भजन करवुं एम कहीने श्रीजीमहाराजने मुकुंद ब्रह्मचारी तेडवा आव्या ते मेडे जमवा पधार्या. (५) ॥ ५
इति वचनामृतम् ॥ ५७ ॥ (१९०)

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे सत्तारूप एवो जे आत्मा तेने मायानुं आवरण नथी तो परमात्मा नारायण वासुदेव जे अमे ते अमारे विषे तो कोइ जातनुं आवरण होयज केम ? एवो अमारो महिमा जाणीने अमारे विषे प्रीति करवी. (१) अने जे पदार्थ अमाराथी अधिक जणाय अने अमारा भजनमां आडुं आवे तेनो त्याग करवो. (२) अने अमारा करतां बीजुं पदार्थ वहालुं राखे ते मीनडीयो भक्त छे. (३) अने अमारा स्वरूपनुं ज्ञान कहेवामां उपाधि रहे तोपण अमारी वात कर-वामां कायरपणुं राखवुं नहि.(४) अने अमारे विषे प्रीति करवामां अधुरुं रहे ने देह पडे तो पण इंद्र के ब्रह्माना जेवो तो देह आवशेज एम निर्भय रहीने अमारुं भजन करवुं.(५)बावतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां आत्माने सत्तारूप कह्यो ते सत्तारूप एटले केवो जाणवो ? अने आत्माने विषे आवरण नथी एम कह्युं अने (का० १२ ना पहेला प्रश्नमां) कारण शरीररूप जीवनी माया ते कोइ रीते जुदी पडती नथी एम कह्युं छे ते केवी रीते समजवुं ?

૧ ઉ૦ જીવને આંબલીયાની છાલ્યની પેઠે માયાનો દઢ સંબંધ છે પણ જીવ મેળી મળીને એકરસ થઇ ગઇ નથી એમ સત્તારૂપ કહ્યો છે તે એને શ્રીજીમહારાજના સ્વરૂપનું જ્ઞાન થાય ને શ્રીજીમહારાજનું ધ્યાન કરે ને આજ્ઞા પાળે એટલે માયાનું આવરણ નાશ પામે, ને પોતે શ્રીજીમહારાજના તેજરૂપ થાય ત્યારે તે આત્મસત્તારૂપ કહેવાય.

૨ પ્ર૦ ચોથી બાબતમાં મને ભગવાન મળ્યા છે માટે હું કલ્યાણની વાત ન કરું ત્યારે મારું જ્ઞાન શા કામમાં આવ્યું ? એમ કહ્યું તે જ્યારે વાત કરી તે વખતે તો મનુષ્યરૂપે મળ્યા હતા પણ આજ કેવી રીતે મળ્યા જાણવા ?

૨ ઉ૦ જ્યારે શ્રીજીમહારાજના સ્વરૂપનું યથાર્થ જ્ઞાન થાય ને યથાર્થ મહિમા સમજાય ત્યારે એને સદાય મેળાજ છે અને જો મહિમા યથાર્થ ન જાણ્યો હોય ને મનુષ્યરૂપે રાતદિવસ મેળા રહેતા હોય તોપણ તેને પરોક્ષજ છે એતો જ્યારે શ્રીજીમહારાજનું યથાર્થ જ્ઞાન થાય ત્યારેજ મળ્યા સમજવા. માટે જ્ઞાને કરીને મળ્યા એજ મળ્યા કહેવાય કેમજે જ્ઞાનીને ભગવાન આવતા જતા નથી સદાય છે છે ને છેજ તે મનુષ્યરૂપે અથવા પ્રતિમારૂપે મળે પણ જ્યારે મનુષ્યરૂપમાંથી મનુષ્યભાવ ટળે અને પ્રતિમાને વિષેથી પ્રતિમાભાવ ટળે ને દિવ્ય ભાવ સમજાય તોજ મળ્યા કહેવાય પણ જ્યાં સુધી દિવ્યભાવ ન આવે ત્યાં સુધી મનુષ્યરૂપે મળે તોપણ યથાર્થ મળ્યા ન કહેવાય અને પ્રતિમારૂપે મળે તોપણ યથાર્થ મળ્યા ન કહેવાય માટે જ્યારે દિવ્યભાવે સહિત સાક્ષાત્ જ્ઞાન થાય ત્યારેજ મળ્યા કહેવાય.

૩ પ્ર૦ અમારી વાત કરવામાં ઉપાધિ રહે તોપણ વાત કરવી એમ શ્રીજીમહારાજે કહ્યું તે ઉપાધિ શી સમજવી ?

૩ ઉ૦ શ્રીજીમહારાજનો મહિમા કહેતાં જેને ઉપાસના પુરી ન હોય તે ઉપાધિ કરે જે તમે આવી વાતો કરશો નહિ કેમ જે શાસ્ત્રમાં બાધ આવે છે માટે તમારે ઝાઝો મહિમા કહેવો નહિ એવી રીતે ઉપાધિ કરે તે ઉપાધિને સહન કરીને પણ શ્રીજીમહારાજની ઉપાસનાની વાતો કરવી. ॥ ૧૯૦ ॥

સંવત્ ૧૮૮૧ ના શ્રાવણ શુદિ ૪ ચોથને દિવસ સ્વામી શ્રીસહજાનંદજી મહારાજ શ્રી ગઢડા મધ્યે દાદાખાચરના દરબારમાં ઉગમણે બાર ઓરડાની ઓસરીએ ઢોલિયા ઉપર ગાદી તકિયા બિછાવીને બિરાજમાન હતા અને શ્રીજીમહારાજે સર્વે શ્વેત વસ્ત્ર ધારણ કર્યાં હતાં ને પોતાના મુખારવિંદની આગળ મુનિ મંડળ તથા દેશ દેશના હરિભક્તની સભા ભરાઇને બેઠી હતી.

૧ પછી શ્રીજીમહારાજે પ્રશ્ન પુછયો જે, (૧) જે જે આચાર્ય થયા છે તેના સંપ્રદાયની વૃદ્ધિ ઘણાક કાળ સુધી શે ઉપાયે કરીને રહે છે ? પછી મુક્તાનંદસ્વામીએ કહ્યું જે એક તો સંપ્રદાય સંબંધી ગ્રંથ હોય, અને બીજો શાસ્ત્રે કહ્યો એવો વર્ણાશ્રમનો ધર્મ હોય, અને ત્રીજો પોતાના ઇષ્ટદેવને વિષે અતિશે દઢતા હોય, એ ત્રણને યોગે કરીને પોતાના સંપ્રદાયની વૃદ્ધિ રહે છે. પછી શ્રીજીમહારાજે બ્રહ્માનંદસ્વામી તથા નિત્યાનંદસ્વામીને એમ

पुछ्युं त्यारे एमणे पण एवीज रीते कह्युं. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ए प्रश्न-नो उत्तर अमे करीए जे संप्रदायनी पुष्टि तो एम थाय छे जे, जे संप्रदायना इष्टदेव होय तेनो जे हेतु माटे पृथ्वीने विषे जन्म थयो होय, अने जन्म धरीने तेमणे जे जे चरित्र कर्यां होय अने जे जे आचरण कर्यां होय ते आचरणने विषे धर्म पण सहेजे आवी जाय अने ते इष्टदेवनो महिमा पण आवी जाय. माटे पोताना इष्टदेवनां जे जन्मथी करीने देह मुकवा पर्यंत चरित्र तेनुं जे शास्त्र तेणे करीने संप्रदायनी पुष्टि थाय छे, ते शास्त्र संस्कृत होय अथवा भाषा होय पण तेज ग्रंथ संप्रदायनी पुष्टि करे पण ते विना बीजो ग्रंथ पोताना संप्रदायनी पुष्टि न करे. जेम रामचंद्रना उपासक होय तेने वाल्मीकि रामायणे करीनेज पोताना संप्रदायनी पुष्टि थाय, अने श्रीकृष्ण भगवानना जे उपासक होय तेने दशम स्कंध अने एकादश स्कंध ए बे जे भागवतना स्कंध तेणे करीनेज पोताना संप्रदायनी पुष्टि थाय, पण रामचंद्रना उपासक तथा श्रीकृष्णना उपासक तेने वेदे करीने पोताना संप्रदायनी पुष्टि न थाय. माटे पोताना संप्रदायनी रीतनुं जे शास्त्र होय तेज पाछले दाडे पोताना संप्रदायने पुष्ट करे छे एम कहीने श्री-जीमहाराजे मुक्तानंदस्वामीने कह्युं जे तमे पण पोताना संप्रदाय संबंधी ने पोताना इष्ट देव संबंधी जे वाणी तथा शास्त्र तेज देह पर्यंत कर्या करजो ने तमारे देह रहे त्यां सुधी तमने एज आज्ञा छे पछी ए जे श्रीजीमहाराजनुं वचन तेने मुक्तानंदस्वामीए अति आदर करीने माथे चढाव्युं अने श्रीजीमहाराजने बे हाथ जोडीने नमस्कार कर्यो. (१) १
इति वचनामृतम् ॥ ५८ ॥ १९१ ॥

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के जे संप्रदायमां जे इष्टदेव होय ते जे हेतु माटे पृथ्वी उपर प्रगट थया होय तेना चरित्रना शास्त्रथीज तेना संप्रदायनी पुष्टि थाय छे पण बीजा ग्रंथे करीने थती नथी माटे अमारा संप्रदायनी पुष्टिने अर्थे अमारा चरित्रनां शास्त्र करवां एम मुक्तानंदस्वामी आदिक संतोने आज्ञा करी छे. (१) बाबत छे.

१ प्र० श्रीजीमहाराजने प्रगट थवानो हेतु शो हशे ?

१ उ० पोताना एकांतिक भक्तने सुख आपवा तथा तेमना मनोरथ पूर्ण करवा अने तेमने लाड लडाववां ए एक हेतु. (१) अने अधर्मी तथा असुरोथी कष्ट पामतां एवां भक्ति धर्म तेमनुं रक्षण करवुं अने तेमनी पृथ्वीने विषे प्रवृत्ति करवी ते बीजो हेतु. [२] अने पोतानुं सर्वोपरि ज्ञान तथा सर्वोपरि उपासना प्रवर्तावयी अने जीवोने पोताना मुक्त भेळा भेळ-ववा ए त्रीजो हेतु. (३) अने पोताना अवतारोने तथा अवतारोना भक्तोने पृथ्वीने विषे मनुष्यरूप धरावीने पोतानुं ज्ञान तथा उपासना समजावीने तेमने पोताना धाममां लइ जवा ए चोथो हेतु. (४) अने एकांतिकधर्मने स्थापन करवो तथा दुष्टजननो नाश करवो

तथा सत्पुरुषनुं रक्षण करवुं ए पांचमो हेतु. (५) अने मुमुक्षुने मुक्त करवा तथा पोताना अने पोताना मुक्तोना दर्शन स्पर्शादिक संबंधे करीने नवा मुमुक्षु करीने तेमनो आत्यंतिक मोक्ष करवो ए छठ्ठो हेतु.(६) एवी रीते श्रीजीमहाराजने प्रगट थवाना आ छो हेतु छे.

२ प्र० केवी क्रिया करे ते चरित्र कहेवाय ?

२ उ० चरित्र बे प्रकारनां छे प्राकृत ने दिव्य, तेमां क्यांइक भागे क्यांइक हारे इत्यादिक प्राकृत चरित्र कहेवाय, अने समाधियो करावीने तेमां सर्व अवतारोने पोतानी वंदना करता देखाडे ने पोताने विषे सर्वे अवतारोने लीन करी देखाडे, इत्यादिक आश्चर्य जणावे ते दिव्य चरित्र कहेवाय. एवा चमत्कारमां महिमा आवी जाय एवां पोतानां चरित्र तेना ग्रंथ करवानी मुक्तानंदस्वामी आदिकने आज्ञा करी तेथी मोटा संतोए ग्रंथो कर्या छे. ते ग्रंथोए करीने आ संप्रदायनी पुष्टि थाय पण परोक्षना ग्रंथोथी पुष्टि न थाय. आमां श्रीजीमहाराजनो अभिप्राय एवो छे जे अमारा चरित्र संबंधी ग्रंथनेज वांचवा ने सांभळवा ने करवा तेणे करीने अमारे विषे सर्वोपरिपणानी दृढता थशे एम कह्युं छे. माटे आपणा इष्टदेव साक्षात् श्री स्वामिनारायण भगवान तेमनां चरित्र संबंधी ग्रंथ वांचवा ने सांभळवा. ते ग्रंथोनां नामः-वचनामृत, (हरिवाक्यसुधासिंधु) [१] सत्संगीजीवन, [२] सत्संगीभूषण, (३) हरिदिग्विजय, [४] हरिलीलाकल्पतरु, [५] भक्तचिंतामणी, [६] पुरुषोत्तम प्रकाश, [७] घनश्याम लीलामृतसागर, (८) पुरुषोत्तम लीलामृतसुखसागर [९] पुरुषोत्तमचरित्र (१०) हरिचरित्रामृत,(११)इत्यादिक संप्रदाय संबंधी ग्रंथे करीने आ संप्रदायनी पुष्टि थाय.

३ प्र० केवी रीतनी क्रिया करे ते आचरण कहेवाय ?

३ उ० श्रीजीमहाराजे नैष्ठिक ब्रह्मचर्य पाळ्युं, तप कर्युं, त्याग वैराग राख्यो, भिक्षा मागी, तुंबडीए पाणी पीधुं, पत्तरमां जम्या तथा देवनी सेवा करी, इत्यादिक क्रियाओ पोताना भक्तजनने शिखववा सारु करी ते आचरण कहेवाय ते आचरणमां धर्म आवी जाय.॥१९१॥

संवत् १८८१ ना श्रावण शुदि १२ द्वादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिरनी ओसरीए ढोलिया उपर उगमणे मुखारविंदे बिराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे. (१) चार वेद पुराण इतिहास ए सर्वेमां एज वार्ता छे जे भगवान ने भगवानना संत एज कल्याणकारी छे अने भगवानना जे साधु छे ते तो भव ब्रह्मादिक देव थकी पण अधिक छे ते भगवान के भगवानना संतनी ज्यारे प्राप्ति थइ त्यारे ए जीवने एथी उपरांत बीजुं कोइ कल्याण नथी एज परम कल्याण छे अने भगवानना संतनी सेवातो बहु मोटा पुन्यवाळाने मळे छे पण थोडा

पुन्यवाळाने मळती नथी माटे भगवानना संत साथे तो एवुं हेत राखवुं जेवुं हेत स्त्री
उपर छे के पुत्र उपर छे के मा बापने भाइ उपर छे तेवुं हेत राखवुं तो ए हेते करीने
जाव कृतार्थ थइ जाय छे. (१) अने पोतानां जे स्त्री पुत्रादिक होय ते तो कुपात्र होय १
ने कुलक्षणवाळां होय तोपण कोइ रीते तेनो अवगुण ए जीवने आवतो नथी अने जे
भगवानना भक्त होय ते तो सर्वे रुडे गुणे करीने युक्त होय पण जो तेणे लगारेक
कठण वचन कह्युं होय तो तेनी आंटी जीवे त्यांसुधी मुके नही एवी जेनी वृत्ति छे
तेने तो जेवुं पोताना संबंधी उपर हेत छे तेवुं ते भगवानना भक्त उपर कहेवायज नहि,
त्यारे एनुं कल्याण पण थाय नहि. (२) अने संतनो महिमा तो प्रथम कह्यो एवो २
मोटो छे ते संतनी ने भगवाननी प्राप्ति थइ छे तो पण कोइकने एम डगमगाट रहे छे जे
मारुं कल्याण थाशे के नहि थाय, तेनुं शुं कारण छे ? तो ए जीवने पूर्व जन्मने विषे
भगवान के भगवानना संतनी प्राप्ति थइ नथी ने तेमनी सेवा पण तेणे करी नथी
एने तो आ जन्ममांज नवो आदर छे ते आगला जन्ममां फळशे अने जेने पूर्व जन्ममां
भगवाननी के भगवानना भक्तनी प्राप्ति थइ हशे तथा तेमनी सेवा करी हशे तेने तो
आ जन्ममां भगवान के भगवानना भक्तमांथी हेत मटेज नहि अने निश्चयमां पण डग-
मगाट थाय नहि, अने काम, क्रोध, लोभ संबंधी घाट तो कदाचित् रहे पण भगवा-
ननो निश्चय तो कोइ रीते मटे नहि. ते कोइकने वचने करीने न मटे एमां शुं कहेवुं
एने तो जो पोतानुं मन डगमगाट करावे तोपण डगमगाट थाय नहि, अने तेनी दृढ-
तातो जेवी नाथ भक्तनी छे के जेवी विष्नुदासनी हती के जेवी हिमराजशानी हती के
जेवी काशीदासने छे के जेवी माइचंद शेठने हती के जेवी दामोदरने छे एवी दृढता होय
त्यारे जाणवुं जे आ पूर्व जन्मनो भगवाननो भक्त छे. (३) इति वच० ॥५९॥(१९२) ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमे तथा अमारा संत कल्याणकारी छइए अने अमारा साधु भव ब्रह्मादिक देवथी अधिक छे अने अमारी के अमारा संतनी प्राप्ति थाय एज परमकल्याण छे ने अमारा संतनी सेवा ने तेमां हेत करवाथी जीव कृतार्थ थाय छे. (१) अने अमारा संत कोइकने कठण वचन कहे तेनी आंटी मूके नहि तेने अमारा भक्त उपर हेत छेज नहि. [२] अने जेने पूर्वजन्ममां अमारी के अमारा संतनी प्राप्ति थइ हशे अने तेमनी सेवा करी हशे तेने आ जन्ममां अमारे ने अमारा संतने विषेथी हेत मटेज नहि अने अमारा निश्चयमां पण डगमगाट थायज नहि त्यां भक्तोनां नाम आप्यां छे. (३) बावतो छे.

१ प्र० पहेली बावतमां अमारा साधु भव ब्रह्मादिकथी अधिक छे एम कह्युं ते भव ब्रह्मा तो वैराज थकी उत्पन्न थया छे तेथी अधिक जाणीए तो वैराज जेवा थया, अने (छे० ९/२मां) आ सत्संगीनी सभा जेवी कोइ धाममां सभाज नथी एम कह्युं छे ते एम जोतां

तो मूळ अक्षरादिक सर्वे थकी संतनो महिमा विशेष थयो अने [म० २२ ना $\frac{२}{५}$ त्रीजा प्रश्नमां) राणीनी उपमा आपी छे अने (पं० ७ मां) पण अमे ने अमारा मुक्तो अमारा धामने विषे अतिशे प्रकाशेयुक्त छइए अने [प्र० ६३ना $\frac{३}{४}$ त्रीजा प्रश्नमां] पण एमज कह्युं छे अने (म० ६७मां) पोताना सरखा कह्या छे ते परस्पर विरोध आवे छे माटे आ भव ब्रह्मा किया समजवा ?

१ उ० आ ठेकाणे मूळ पुरुषने ब्रह्मा कह्या छे अने महाकाळने भव कह्या छे अने तेथी ब्रह्मकोटी ने मूळ अक्षरकोटी तेमने आदि शब्दथी जाणवा ते सर्वेथी अमारा संत अधिक छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे.

२ प्र० अमारा संतनी सेवा बहु मोटा पुन्यवाळाने मळे छे एम कह्युं ते पुन्य कियुं जाणवुं ? अने हरिभक्तोनी हदता वखाणी ते किया किया गामना हता ?

२ उ० श्रीजी वातमां पूर्व जन्मने विषे श्रीजीमहाराजनी अथवा संतनी एटले मुक्तनी सेवा करी होय तेनेज बीजे जन्मे एमनी सेवा मळे छे पण बीजे कोइ साधने करीने सेवा मळती नथी एम कह्युं छे माटे पूर्वनी सेवा ते पुन्य जाणवुं.अने नाथ भक्त कणभाना पाटीदार हता. अने विश्रुदास उभाणना पाटीदार हता. हिमराज शा सुंदरीयाणाना वणीक हता. काशीदास बोचासणना पाटीदार हता.भाइचंद शेठ सुरतना वणीक हता.दामोदरभाइ अमदावादना पाटीदार हता. ॥ १९२ ॥

संवत् १८८१ ना श्रावण वदि ४ चोथ्यने दिवस स्वामीश्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी उगमणी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता ने श्वेत पाघ मस्तक उपर बांधी हती अने श्वेत पछेडी ओढी हती अने श्वेत खेस पहेर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, पछी श्रीजीमहाराजे कह्युं जे प्रश्न उत्तर करो.

१ त्यारे मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो (१) जे हे महाराज ! आ संसारने विषे तो केटलीक जातना विक्षेप आवे छे तेमां केइ रीते भगवाननो भक्त समजे तो अंतरे सुख रहे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे एनो उत्तरतो जेम अमने वर्ताय छे तेम करीए जे ज्यारे कोइ जातना विक्षेपनो योग आवे त्यारे उपरथी तो चित्तनो धर्म छे ते विक्षेप जेवुं जणाय पण ते विक्षेपनो पोताना चैतन्यमां तो डंस बेसतो नथी ते केम जणाय जे ज्यारे सुइए छइए त्यारे वारल्यो जे विक्षेप ते कोइ दिवस स्वप्नमां देखातोज नथी अने जे चैतन्यमां विक्षेप पेठो होय ते तो त्रणे अवस्थामां जणाय छे माटे स्वप्नमां कोइ रीते विक्षेप जणातो नथी ते थकी एम जाणीये छइए जे चैतन्यमां विक्षेप कोइ रीते वळगतो नथी (१) अने जे भगवाननो भक्त होय ने तेने कोइक प्रकारना दुःखनो विक्षेप १

थयो होय ए तो सारी पेठे अंतरमां जणाय छे पण न जणाय एम नथी अने एतो रघु-नाथदास सरखो विमुख होय तेने तो न जणाय ते ज्यारे रामानंदस्वामीए देह मुक्यो ने सर्वे सत्संगी रोवा लाग्या त्यारे पण रघुनाथदासने तो जराय शोक थयो नहि अने हसतो जाय ने बीजाने आगळ वात करतो जाय माटे भगवानना भक्तने दुःख आवी पडे त्यारे तो जे चांडाळ ने विमुख होय तेने दुःख न थाय. (२) पण जे भगवाननो २
भक्त होय ते तो हरिभक्तने दुःखे करीने जरुर दुःखीयो थाय अने जे भगवाननो भक्त होय ने तेने कोइक मारी नाखतो होय अथवा तेने कोइक दुःख देतो होय ने ते भग-वानना भक्त आडो जाइने जो मरे के घायल थाय, तो शास्त्रमां एम कह्युं छे जे तेनां ब्रह्महत्यादिक जे पंचमहापाप ते सर्वे मटी जाय छे एवो भगवानना भक्तनो पक्ष राख्या-नो प्रताप छे. (३) अने जेने भगवानना भक्तनुं वचन बाणनी पेठे हैयामां वसम्रुं लागे ३
अने तेनी वैरभावे आंटी पडी जाय ते जीवे त्यांसुधी टळे नहि एवो जे चांडाळ जेवो जीव होय, ते धर्मे युक्त होय त्यागे युक्त होय तपे युक्त होय ते सर्वे वृथा छे अने बीजां पण कोटीक साधन करे पण तेना जीवनुं कोइ काळे कल्याण थाय नहि. (४) अने ४
आ संसारने विषे जेम केइक स्त्री होय ते पोताना पति उपर ने बीजा पुरुष उपर सरखुं हेत राखे ते वेश्या सरखी भुंडी कहेवाय तेम आ संसारने विषे जे एवो पुरुष होय जे आपणे तो बधाय साधु सरखा छे केने सारो नरसो कहीए तो ते सत्संगी कहेवातो होय तोपण तेने विमुख जाणवो अने जे पुरुष एम जाणे जे आपण कांइक अवळुं सवळुं बोलीए तो आपणो माणस अवगुण लेशे एवी रीते पोतानी सारप्य रा-ख्या सारु भगवाननुं के भगवानना भक्तनुं कोइक घसातुं बोले ने तेने सांभळी रहे तो ते सत्संगी कहेवातो होय तोपण तेने विमुख जाणवो. (५) अने जेवो पोतानां सगां ५
वहालां होय अथवा मावाप होय तेनो पक्ष रहे छे तेवो भगवानना भक्तनो दृढ पक्ष राखवो अने भगवानना भक्त साथे कोइ रीतनो विक्षेप थाय तो जळमां लिटानी पेठे फेर एक थइ जाय पण आंटी राखे नहि तेज भगवाननो यथार्थ भक्त कहेवाय. (६) ६
एटली वार्ता करीने पछी श्रीजीमहाराज एम बोल्या जे हुं तो दत्तात्रेय जडभरत नार-द ने शुकजी ते सरखो दयाळो छुं अने पूर्वे देशमां एक समे नागडा वेरागीनी ज-मात मेळो हतो ते सुने सर्वे वेरागीए कह्युं जे, तांदळजानी लीली भाजी तोडो, त्यारे में कह्युं जे, एमां तो जीव छे ते अमे नहि तोडीए, पछी एक जणे तरवार उघाडी क-रीने डारो कर्यो तोपण अमे लीली भाजी न तोडी एवो अमारो दयाळो जीव छे तोपण जो कोइक भगवानना भक्तने क्रूरदृष्टिये करीने जोतो होय ने ते जो पोतानो सगो वहालो होय तोपण जाणीए जे तेनी आंख्य फोडी नाखीए अने हाथे करीने जो

भगवानना भक्तने दुवे तो ते हाथने कापी नाखीए एवो तेनो अभाव आवे छे पण त्यां दया नथी रहेती अने एवो जेने भगवानना ने भगवानना भक्तनो पक्ष होय तेनेज भगवाननो पुरो भक्त कहेवाय. [७] इति वचनामृतम् ॥ ६० ॥ (१९३) ७

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे विक्षेप स्वप्नमां आवे तोज ते विक्षेप चैतन्यमां पेठो छे एम जाणवुं. (१) अने जे अमारा भक्तने दुःखे दुःखी न थाय ते चंडाळने विमुख छे. (२) अने जे अमारो भक्त होय तेतो अमारा भक्तने दुःखे जरुर दुःखी थाय अने अमारा भक्तने कोइक मारतो होय तेने आडो पडीने मरे के घायल थाय तो तेनां सर्व पाप नाश पामी जाय. (३) अने जेने अमारा भक्तनुं वचन वसमुं लागे ने वेर बंधाय ते धर्म, त्याग, तप तेणे युक्त होय, तोपण तेनुं कल्याण थाय नहि. (४) अने जे वधाय साधुने सरखा जाणे तथा अमारुं ने अमारा भक्तनुं कोइक घसातुं बोले तेने सांभळी रहे ते विमुख छे. (५) अने जे अमारा भक्तनो पक्ष राखे ने तेमनी साथे विक्षेप न राखे ते अमारो यथार्थ भक्त छे. (६) अने अमे दयाळु छीए पण अमारा भक्तने दुखवे ते उपर दया नथी राखता अने जेने अमारो ने अमारा संतनो पक्ष होय तेज अमारो पुरो भक्त छे. (७) वातो छे.

१ प्र० चोथी वातमां वधाय साधु सरखा जाणे तथा भगवाननुं के भक्तनुं कोइक घसातुं बोले तेने सांभळी रहे तेने विमुख कह्यो ते केवी रीते सरखा जाणे तो विमुख कहेवाय?

१ उ० सिद्धदशावाळा अने साधनदशावाळाने सरखा जाणे तथा श्रीजीमहाराजनो यथार्थ निश्चय होय ने पंच वर्त्तमान यथार्थ पाळता होय तेने ने निश्चयमां ने वर्त्तमानमां कसरवाळाने सरखा जाणे अने श्रीजीमहाराजनो सर्वोपरि निश्चय होय ने साधुनां बत्रीश लक्षणे युक्त होय तेनुं ने श्रीजीमहाराजनुं कोइ घसातुं बोले तेने सांभळी रहे तेने विमुख जाणवो.॥१९३॥

संवत् १८८१ ना श्रावण वदि ७ सातमने दिवस स्वामीश्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी उगमणी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता, अने मस्तक उपर श्वेत शेलुं सोनेरी छेडानुं बांध्युं हतुं, अने एक बीजुं श्वेत शेलुं ओढयुं हतुं, अने श्वेत खेस पहेर्यो हतो अने मोगराना पुष्पना हार पहेर्या हता, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या, जे (१) जेमां त्रण वानां होय ते पाको सत्संगी कहेवाय, ते त्रण वानां कियां तो एकतो पोताना इष्टदेवे जे नियम धराव्यां होय ते पोताना शिर साटे दृढ करीने पाळे, पण ए धर्मनो कोइ दिवस त्याग न करे, अने बीजो भगवानना स्वरूपनो जे निश्चय ते अतिशे दृढपणे होय तेमां कोइ संशय नाखे तो संशय पडे नहि ने पोतानुं मन संशय नाखे तोय पण संशय पडे नहि, एवो भग-

वाननो अडग निश्चय होय, अने त्रीजो पोताना इष्टदेवने भजता होय एवा जे सत्संगी वैश्नव तेनो पक्ष राखवो ते जेम माबाप दिकरा दिकरी तेनो पक्ष राखे छे, ने जेम पुत्र होय ते पोताना पितानो पक्ष राखे छे, ने जेम स्त्री होय ते पोताना पतिनो पक्ष राखे छे, तेम भगवानना भक्तनो पक्ष राखवो ए त्रण वानां जेमां परिपूर्ण होय ते पाको सत्संगी कहेवाय. (१) अने हरिभक्तनी सभामां मोटा आगळ आवीने बेसतो होय १
त्यारे बीजाने एम जणाय जे ए मोटेरो सत्संगी छे पण मोटेरानी तो एम परीक्षा छे, जे गृहस्थ होय तेतो पोतानुं जे सर्वस्व ते भगवान ने भगवानना भक्तने अर्थे करी राखे अने सत्संगने अर्थे माथुं देवुं होय तो दे,अने जे घडीए पोताना इष्टदेव आज्ञा करे जे तुं परमहंस था तो ते तत्काळ परमहंस थाय, एवां जेनां लक्षण होय ते हरिभक्तनी सभाने आगळ बेसे अथवा वांसे बेसे पण तेनेज सर्वे हरिभक्तमां मोटेरो जाणवो अने जे त्यागी होय ते ज्यारे देश प्रदेशमां जाय ने त्यां कनक कामनीनो योग थाय तोय पण तेमां फेर पडे नहि,अने पोताना जे जे नियम होय ते सर्वे दृढ करीने राखे ते सर्वे त्यागीमां मोटेरो कहेवाय. [२] अने वळी जे कोइक संसारमां रजोगुणी मोटुं मनुष्य कहेवातुं २
होय, ने ते ज्यारे सभामां आवे त्यारे तेने आदर करीने सर्वे सभाने मोटा आगळ बेसार्यो जोइए, ते ए व्यवहार छे ते ज्ञानी होय त्यागी होय तेने पण राख्यो जोइए, अने जो न राखे तो एमांथी भुंडुं थाय छे, जेम राजा परीक्षित ऋषिना आश्रममां गया त्यारे ऋषि समाधिमां हता, ते राजानुं सन्मान थयुं नहि पछी ते राजाने रीस चडी ते मरेल सर्प हतो ते ऋषिना गळामां नाख्यो, पछी ते ऋषिना पुत्रे शाप दीधो तेणे करीने ते राजानो सात दिवसमां मृत्यु थयो, अने ज्यारे ब्रह्मानी सभामां दक्ष प्रजापति आव्या त्यारे शिवजी उभा न थया,अने वचने करीने पण दक्षनुं सन्मान न न थयुं, पछी दक्षने रीस चडी ते शिवनो यज्ञमांथी भाग काढी नाख्यो पछी नंदीश्वर ने भृगु ऋषि तेने सामसामा शाप थया पछी ते पापमां सती दक्षना यज्ञमां बळी मुवां अने वीरभद्रे दक्षनुं माथुं कापीने अग्निमां होम्युं अने दक्षनुं मुख बकरानुं थयुं माटे गृहस्थ तथा त्यागी ए सौने ए रीत राखवी जे संसार व्यवहारे जे मोटुं माणस कहेवातुं होय तेनुं सभामां कोइ रीते अपमान करवुं नहि, ने जो अपमान करे तो एमांथी जरूर दुःख थाय, अने भजन स्मरणमां पण विक्षेप थाय माटे आ वार्ता सत्संगी गृहस्थ सर्वे तथा त्यागी सर्वे दृढ करीने राखज्यो. (३) इति वचनामृतम् ॥६१॥[१९४] ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारा कहेला नियम तथा अमारो निश्चय तथा अमारा भक्तनो पक्ष ए त्रण वानां जेने होय ते पाको सत्संगी छे. [१] अने अमारे ने अमारा संतने अर्थे पोतानुं सर्वस्व करी राखे,

ने सत्संगने अर्थे माथुं दे, अने अमे आज्ञा करीए तो परमहंस थाय ते सर्वे हरिभक्तमां मोटो छे, अने त्यागी कनक कामनीमां लेवाय नहिं, ने नियम दृढ राखे ते त्यागीमां मोटो छे. [२] ने ज्ञानी के त्यागी होय तेने पण मोटा मनुष्यनुं सन्मान करवुं एम कह्युं छे. (३) वातनो छे.

१ प्र० पहेली वातमां नियम कह्या ते किया जाणवा ?

१ उ० श्रीजीमहाराजे शिक्षापत्री, धर्मामृत, निष्काम शुद्धि, जनशिक्षा तथा नारायण गीतामां त्यागी गृहीने जे प्रमाणे वर्तवानुं कह्युं छे ते नियम जाणवा.

२ प्र० श्रीजीमहाराजनो निश्चय कह्यो ते निश्चय केवो जाणवो ?

२ उ० श्रीजीमहाराजने जीवकोटी, ईश्वरकोटी, ब्रह्मकोटी, मूळअक्षरकोटी ए सर्वेना पोतानी अंतर्यामी शक्तिए करीने आधार ने ए सर्वेना कर्त्ता ने नियंता ने सदा साकार मूर्त्ति ने ए सर्वेने अगम्य अने पोताना मुक्तोने सुखना दाता एवा जाणे ते निश्चय कहेवाय.

३ प्र० सत्संगीनो पक्ष राखवानो कह्यो ते केवा सत्संगी होय तेनो पक्ष राखवो ?

३ उ० आमां बीजी वातमां गृही त्यागीनां लक्षण कह्यां छे ते लक्षणे युक्त होय तेवानो पक्ष राखवो, ने एवाने दुःखे दुःखी थावुं एम कह्युं छे. ॥१९४॥

संवत् १८८१ ना मागशर शुदि २ बीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उत्तरादे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता, अने श्वेत पाघ मस्तक उपर बांधी हती, तथा श्वेत चोफाळ ओढ्यो हतो तथा श्वेत खेस पहेर्यो हतो, अने श्रीजीमहाराजना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती,पछी श्रीजीमहाराजे पाताना भत्रिजा जे अयोध्याप्रसादजी अने रघुवीरजी तेने बोलावीने कह्युं जे तमे अमने प्रश्न पुछो.

१ पछी प्रथम अयोध्याप्रसादजीए प्रश्न पुछयो जे (१) आ संसारने विषे एवो पुरुष होय जे आठ पहोर तो संसारनी विटमनामां रह्यो होय, ने गमे एवुं योग्य अयोग्य कर्म पण थइ जातुं होय अने ते एक घडी के बे घडी भगवानन्तुं भजन करतो होय त्यारे ते भजने करीने तेणे दिवस बधामां पाप कर्युं ते बळे के न बळे ? ए प्रश्न छे, पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे सारो दिवस प्रवृत्ति मार्गमां रहीने गमे तेवी क्रिया करी होय ने भगवानतुं भजन करवा बेसे ते समे ए भजनना करनारानां इंद्रियो अंतःकरण ने जीव ए सर्वे एकाग्र थइने जो भजनमां जोडाय,ते एवी रीते एक घडी के अर्धी घडी पण जो भगवानना भजनमां जोडाय,तो समग्र पाप बळीने भस्म थइ जाय छे.अने इंद्रियो, अंतःकरण ने जीव ते एकाग्र थइने जो भगवानना भजनमां न जोडाय तो तेना भजन थकी तो घडी के अर्धी घडीमां पाप न बळे, अने एवुं जे कल्याण ते तो भगवानने प्रतापे करीने थाय एवो एम उत्तर छे. (१)

२ पछी रघुवीरजीए प्रश्न पुछ्यो जे (२) हे महाराज ! आ जीवनो मोक्ष ते केम करे त्यारे थाय छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेने पोताना कल्याणनी इच्छा होय तेने पोतानुं जे देह, धन, धाम, कुटुंब, परिवार ए सर्वेने भगवाननी सेवामां जोडी देवां ने भगवाननी सेवामां जे पदार्थ काम न आवे तो तेनो त्याग करी देवो एवी रीते जे भगवान परायण वर्ते ते गृहस्थाश्रमी होय, तोपण मरे त्यारे भगवाननां धाममां नारद सनकादिकनी पंक्तिमां भळे, अने परम मोक्षने पामे एनो एज उत्तर छे. (२) २

एवी रीते श्रीजीमहाराजे वार्ता करीने पछी पोतानी इच्छाए करीने बोलता हवा
३ जे (३) अमे जे दिवसथी विचारीए छइए ते दिवसथी अमारी नजरमां एम आवे छे जे जीवना कल्याणने अर्थे त्रण अंग छे, ते अतिसुखदायी छे. तेमां एक तो अतिशे आत्मनिष्ठा जे शुकजीनी पेठे आत्मारूप थइने परमेश्वरनुं भजन करवुं. अने बीजुं पतिव्रतानुं अंग जे गोपियोनी पेठे पतिभावे भगवाननुं भजन करवुं. अने त्रीजुं दासपणानुं अंग जे हनुमानजी तथा उद्धवजीनी पेठे दासभावे भगवाननुं भजन करवुं ए त्रण अंग विना कोइ रीते करीने जीवनुं कल्याण थातुं नथी, अने अमे तो ए त्रणे अंगने दृढ करीने राखीए छइए, अने ए त्रण अंगमांथी जेने एके अंग दृढपणे होय तो ते कृतार्थ थाय छे. अने हवे ए त्रण अंगवाळानां जे लक्षण ते नोखां नोखां करीने कहीए छइए. तेमां आत्मनिष्ठावाळानुं तो ए लक्षण छे जे, एक कोरे तो आत्मा छे, अने एक कोरे तो देह, इंद्रियो, अंतःकरण त्रण गुण पंच विषय आदिक जे मायानुं टोळुं ते छे, ने ए बेना मध्यने विषे जे विचार रहे ते विचार ज्ञानरूपी छे, ते विचार जेम वायुए रहित स्थळने विषे दीपकनी शिखा अतिशे स्थिर थइने रहे छे तेम स्थिर थइने रहे छे, ने ते विचार देह, इंद्रियोने अंतःकरण एमने आत्मा संघाथे एक थावा देतो नथी, अने ते विचार पण आत्मा संघाथे एक थातो नथी, अने ज्यारे ते विचारने जीव पामे छे, त्यारे ते जीवनी वृत्ति काशी सुधी लांबी होय ते वरताल जेटलामां आवे छे, अने पछी ते विचार ज्यारे दृढ थाय त्यारे वरताळ थकी आ गढडा जेटलामां आवे छे, ने पछी आ गढडा जेटले लांबी वृत्ति होय ते संकेलाइने पोताना देह जेटलामां रहे छे, अने पछी देहमांथी वृत्ति टुंकी थइने इंद्रियोना गोळकमांज रहे छे. ने पछी इंद्रियोना गोळक थकी इंद्रियोनी वृत्ति छे ते अंतःकरण सन्मुख थइ जाय छे, ने पछी इंद्रियोनी ने अंतःकरणनी जे वृत्ति छे ते आत्माने विषे लीन थइ जाय छे. त्यारे ए जीवना वासना लिंग देहनो नाश थयो कहेवाय छे, अने ए विचार छे ते ज्यारे आ जीव संगाथे मळे छे त्यारे ते जीवना हृदयने विषे प्रकाश थाय छे, ने पोताना आत्मानुं अक्षररूपे दर्शन थाय छे, ने ते अक्षरने विषे परब्रह्म जे नारायण तेनुं पण द-

र्शन थाय छे, अने ते दर्शनना करनाराने एम अनुभव थाय छे जे हुं आत्मा छुं, अने मारे विषे आ परमात्मा छे ते अखंड रह्या छे, अने एवी रीतनी अखंड स्थिति रहे ए आत्मनिष्ठानी अति उत्तम दशा छे अने पतिव्रतानुं जे अंग छे तेतो व्रजनी गोपियोना जेवुं जोइए. जेम गोपियोए जे दिवस थकी श्रीकृष्ण भगवानना चरणारविंदनो स्पर्श कर्यो ते दिवस थकी जेटलां संसार संबंधी जे सुख ते सर्वे झेर जेवां थइ गयां, तेम जेने पतिव्रताना अंगनी भक्ति होय ते गमे तो इंद्र जेवो रुपाळो पुरुष होय तथा देवता जेवो होय तथा कोइक राजा होय ने तेने ज्यारे देखे त्यारे जेम सडेल कुतराने देखे अथवा विष्टाने देखे त्यारे अतिशे ग्लानि पामीने दृष्टि पाछी खेंची ले छे तेम दृष्टि पाछी खेंचाइ जाय ते उत्तम पतिव्रतानी रीति छे, ते माटे जेनी एक भगवानने विषेज पतिभावे करीने वृत्ति जोडाणी छे तेनुं बीजा कोइ पुरुषने देखीने मन राजी थायज नहि. अने त्रीजुं जेने दासभावे करीने भक्तिनुं अंग छे तेने पण पोताना जे इष्टदेव छे, तेनुंज दर्शन गमे, अने तेनीज वार्ता सांभळवी गमे, ने पोताना इष्टदेवनोज स्वभाव गमे,अने तेनीज पासे रहेवुं गमे,एवो प्रीतिवान होय तोपण पोताना इष्टदेवनी सेवा सारुं ने राजीपा सारुं रात दिवस एम इच्छया करे जे मुने मारा इष्टदेव कांइक आज्ञा करे तो हुं अतिशे हर्षे करीने करुं पछी पोताना इष्टदेव छे, ते आज्ञा करे तो छेटे जाइने रहे तोपण राजी थकोज रहे पण कोइ रीते अंतःकरणमां खेद पामे नहिं, अने आज्ञाने विषेज परम आनंद माने ए दासत्व भक्तिनी उत्तम दशा छे एवा दासत्व भक्तिवाळा तो आज गोपाळानंदस्वामी छे अने बीजा मुक्तानंदस्वामी छे. (३) ३ अने ए त्रण अंगवाळा जे भगवानना भक्त तेमां उत्तम मध्यम ने कनिष्ठ पक्ष छे, अने एथी जे बहार रह्या ते तो केवळ पामर कहेवाय. माटे ए त्रणमांथी एक अंग परिपूर्ण थाय ने ते केडे देह मुके तेतो ठीक छे, अने ए त्रणमांथी एके अंग जेने परिपक्व न थयुं होय ने तेने जे मरवुं ते ठीक नथी, ने तेतो पांच दहाडा वधु जीवे ने पोतानी अणसमझणने टाळीने ए त्रण अंगमांथी कोइक एक अंग दृढ करीने मरे एज ठीक छे. अने वळी आ जीवनो तो एवो स्वभाव देखाय छे जे ज्यारे गृहस्थाश्रममां होय त्यारे संसारनो त्याग करवो गमे, अने ज्यारे त्याग करे छे त्यारे पाछा संसार संबंधी सुखना वाट थया करे, एवी रीते ए जीवनो अवळो स्वभाव जणाय छे. माटे जे भगवानना दृढ आश्रित होय तेने तो एवा अवळा स्वभावनो त्याग करीने पोताना मनतुं गमतुं सर्वे मुकीने भगवानने भजवा ने भगवान विना बीजी सर्वे वासनाने टाळीने मरवुं तेज ठीक छे, अने जेने भगवानमां अतिशे प्रीति न होय तेने तो आत्मनिष्ठाज विचारे करीने दृढ करवी केमजे जे भगवानना भक्त होय, तेने कांतो आत्म-

निष्ठा दृढ जोइए ने कांतो भगवानने विषे अतिशे दृढ प्रीति जोइए, अने ए बे अंगमांथी जेने एके अंगनी अतिशे दृढता न होय तेने तो जे आ सत्संगना नियम छे तेमां दृढपणे करीने रहेवुं तोज सत्संगी रहेवाय नहि तो सत्संग थकी बहार पडी जवाय. अने भगवाननो जे भक्त होय तेने तो जे प्रकारनां दुःख आवे छे ते दुःखना देनारा काळ, कर्म, माया एमांथी कोइ नथी एतो पंडे भगवानज पोताना भक्तनी धीरज जोवाने अर्थे दुःखने प्रेरे छे, अने पछी जेम कोइक पुरुष पडदामां रहीने जुवे तेम भक्तनी धीरजने भगवान भक्तना हृदयमां रहीने जोया करे छे, पण काळ, कर्म, मायानो शो भार छे जे भगवानना भक्तने पीडी शके एतो भगवाननीज इच्छा छे, एम जाणीने भगवाननो भक्त होय तेने मग्न रहेवुं. (४) ४

४ ए वार्ता सांभळीने मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे (४) हे महाराज ! ए त्रण जे अंग तमे कह्यां ते वात तो अति झीणी छे ने कठण छे, ते कोइकनाज समझ्यामां आवे ने कोइकनाज वर्त्यामां आवे, पण सर्वेने न आवे अने आ सत्संगमां तो लक्षावधि मनुष्य छे ते सर्वेने तो आ वार्ता समझवी कठण छे माटे ते केम करे त्यारे तेनुं रुडुं थाय ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे तेनो ए त्रण अंगवाळा मांहिलो जे हरिभक्त होय तेनो दासनुदास थइने तेनी आज्ञामां रहे तो ते कांइ न समझतो होय तोपण छती देहेज भगवाननो पार्षद थइ रह्यो छे, ने कृतार्थ थइ रह्यो छे, अने आ संसारने विषे भगवान ने भगवानना भक्तनो तो महिमा अतिशे मोटो छे,ते गमे तेवो पामर ने पतित जीव होय पण भगवान के भगवानना भक्तने आश्रित थाय तो ते जीव कृतार्थ थइ जाय छे,एवो भगवान ने भगवानना भक्तनो महिमा छे, माटे जेने भगवानना भक्तनी सेवा प्राप्त थइ तेने तो निधडक रहेवुं. अने आ त्रण अंगनी जे अमे वार्ता करी छे ते बहुधा तो आ मुक्तानंदस्वामी सारु करी छे, अने मुक्तानंदस्वामी उपर अमने घणुं हेत छे, ने एमने शरीरे मंदवाड छे ते रखे कोइ वातनी समजणमां स्वामी रही जाय नहि, एम जाणीने आ वार्ता करी छे, पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे हे महाराज ! में पण जाण्युं छे जे हुं सारुंज आ वार्ता करी छे. (५) इतिवचनामृतम् ॥६२॥ (१९५) ५

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (४) छे. त्रीजुं कृपावाक्य छे. तेमां पहेलामां इंद्रियो अंतःकरण ने जीव एकाग्र थइने अमारा भजनमां जोडाय तो संसारनी विटमनामां थएलां योग्य अयोग्य सर्व पाप भस्म थइ जाय, ने एकाग्र न थाय तो पाप न बळे ने मोक्ष तो अमारा प्रतापे करीए. (१) बीजामां देहादिक सर्वने अमारी सेवामां जोडी दे ने जे अमारा उपयोगमां न आवे तेनो त्याग करे तो गृहस्थाश्रमी अमारा अक्षरधाममां मुक्तनी पंक्तिमां भळे अने परम मोक्षने पामे (२) त्रीजामां शुकजी आदिकने दृष्टांते कह्युं छे के देहादिक मायाना टोळाथी पोताने जुदो माने ने ज्ञान रूपी विचारे करीने वृत्ति पाछी

बाळे ते वृत्ति आत्माने विषे लीन थाय त्यारे वासना लिंग देह नाश पामे, ने तेना हृदयमां प्रकाश थाय ने पोताना आत्मानुं ब्रह्मरूपे दर्शन थाय ने तेमां अमारुं दर्शन थाय, एवी आत्मनिष्ठा दृढ करवी, अने गोपियोने दृष्टांते अमने देखीनेज राजी थवुं पण अमारा विना बीजा कोइने देखीने राजी न थवुं ने तेमांथी वृत्ति पाछी खेंची लेवी, एवुं पतिव्रतापणुं अमारे विषे दृढ करवुं, अने हनुमान, उद्धवने दृष्टांते अमारुंज दर्शन ने अमारीज वात ने अमारोज स्वभाव ने अमारी पासेज रहेवुं गमे, अने अमारीज राजीपो ने सेवा इच्छवी ने अमारी आज्ञामां परम आनंद पामवो एवुं दासपणुं दृढ करवुं तोज सुखी थवाय. एम कहीने श्रीगोपाळानंदस्वामी तथा श्रीमुक्तानंदस्वामीनी दासत्व भक्तिना अंगनी प्रशंसा करी छे.(३)आ त्रण अंगवाळा भक्तमां उत्तम,मध्यम,कनिष्ठ होय अने आमांनुं एकेय अंग न होय ते पामर छे,अने आ अंग दृढ करीनेज मरवुं ने अवळा स्वभावनो त्याग करीने अमने भजवा,अने आत्मनिष्ठा ने प्रीति न होय तेणे सत्संगना नियममां रहेवुं, अने न रहे तो सत्संगथी बहार पडी जवाय,अने दुःख आवे तो अमारी इच्छा जाणवी पण काळ आदि कर्मे दुःख आपनारा न जाणवा.(४)अने आ त्रण अंगवाळानो दास थइने तेमनी आज्ञामां रहे ते छती देहेज अमारो पार्षद थइ रह्यो छे,अने पामर के पतित जीव अमारे के अमारा संतने आशरे आवे तो कृतार्थ थइ जाय एवो अमारो ने अमारा भक्तनो महिमा छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (५) बावतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां इंद्रियो, अंतःकरण ने जीव ए त्रणे एकाग्र थइने अमारा भजनमां जोडाय तो समग्र पाप भस्म थइ जाय एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते पाप कियां जाणवां ?

१ उ० संसारने विषे रहेनारा पुरुषोने संसार संबंधी प्रवृत्ति होय तेमां जे पाप थाय ते पाप कह्युं ते खेडु होय तेने खेतीमां जीवजंतु मरे तथा वेपारी होय तेने वेपारमां जीवजंतु मरे, एवीज रीते सर्वे वर्णने पोतपोताना उद्यममां सहेजसाज पाप थाय तथा वर्तनमां बहार संकल्प थइ जाय,ते पाप श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां उपशम करे तो बळे एम कह्युं छे, पण जे पापनुं शास्त्रमां प्रायश्चित्त बताव्युं छे ते पापनुं तो प्रायश्चित्त करवुंज पडे.

२ प्र० बीजा प्रश्नमां नारद सनकादिकनी पंक्तिमां भळे एम कह्युं ते नारद सनकादिक कोने कह्या हशे ?

२ उ० रघुवीरजी महाराजे आत्यंतिक मोक्ष केम करे तो पामे एम श्रीजीमहाराजने पूछ्युं त्यारे श्रीजीमहाराजे कह्युं के सर्वने अमारी सेवामां जोडी दे तो अमारा धाममां नारद सनकादिकनी पंक्तिमां भळे, ने परम मोक्षने पामे एम कह्युं ते त्यां परोक्ष नारद सनकादिक अनादि काळथी तो छे नहि. माटे आ ठेकाणे अनादि काळथी पोताना धाममां पोताना सिद्ध मुक्त रह्या छे, ते मुक्तोने ए नामे कह्या छे,एम जो न कहीए तो पूर्वे नारद सनकादिक जे स्थानकोमां विचरता हता तेटलीज गति थवी जोइए पण परम मोक्ष पमाय नहि, माटे आ ठेकाणे परम मोक्ष पामे एम कह्युं छे ते परम मोक्ष तो श्रीजीमहाराजना मुक्त पामेला छे,माटे नारदादिक नामे पोताना मुक्तोनेज कह्या छे.

३ प्र० त्रीजा प्रश्नमां जीव विचारने पामे छे त्यारे तेनी वृत्ति काशी सुधी लांबी होय ते वरताल जेटलामां आवे छे, ने पछी गढडा जेटलामां आवे छे एम कह्युं ते काशी जेटले पटले क्यांसुधी जाणवी ? अने वरताल जेटलामां पटले क्यांसुधी समजवी ? अने गढडा जेटले पटले क्यांसुधी समजवी ? अने देह जेटलामां पटले क्यां सुधी समजवी ? अने इंद्रियोना गोळकमां ते क्यांसुधी समजवी ? अने अंतःकरण सन्मुख ते क्यांसुधी समजवी ? अने आत्माने विषे लीन ते केवी रीते समजवी ?

३ उ० मायाना कार्य आकारे जे वृत्ति ते काशी सुधी जाणवी,अने मायानां कार्य जे देहादिक तेथी पोतानो आत्मा पृथक् ने सत्य छे, एवा ज्ञानने पामीने मोक्षनी इच्छा थाय ते वरताल जेटलामां आवी एम जाणवुं, आ शुभेच्छा नामनी पहेली भूमिका जाणवी. (१) अने देहथी आत्मा जुदो छे एवुं दृढ श्रवण, मनन करीने आनंद पामवो ए गढडा जेटलामां आवी एम समजवुं, आ विचारणा नामनी बीजी भूमिका जाणवी. (२) अने आत्मविचारना निदिध्यासे करीने अशुभ संकल्पने टाळीने आत्मस्वरूपने ग्रहण करवामां योग्यपणुं ते देह जेटलामां आवी एम समजवुं, आ तनुमानसा नामनी त्रीजी भूमिका जाणवी. (३) आ त्रण भूमिकाओ जागृत अवस्थानी कही छे, अने देहनी विस्मृति थइने आत्माकारे वृत्ति थाय ते इंद्रियोना गोळकमां रही एम जाणवुं, आ सत्तापत्ति नामनी चोथी भूमिका जाणवी. (४) अने संशय रहित ने महात्म्ये सहित परमात्मा जे श्रीस्वामिनारायण भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान थाय, ने मन स्थिर थाय ने सुषुप्तिनी पेठे जागृतनी विस्मृति थाय, पण ऐश्वर्यमां राग रहे ते अंतःकरण सन्मुख वृत्ति थइ एम जाणवुं, आ असंसक्ति नामनी पांचमी भूमिका जाणवी. (५) अने ऐश्वर्यरूप पदार्थनी भावना टाळीने पोताना आत्माने श्रीजीमहाराजना तेजरूप अक्षरब्रह्म साथे एकता करवी ते आत्माने विषे लीन थइ जाणवी, आ पदार्थाभावी नामनी छठ्ठी भूमिका जाणवी. [६] अने पोताना आत्मानुं ब्रह्मरूपे दर्शन थाय, ने ए आत्माने विषे परमात्मा जे श्रीजीमहाराज तेमनी मूर्तिनुं साक्षात्कार दर्शन थाय, ने तेमां सदा निमग्न रहे ते तुर्यगा नामनी सातमी भूमिका जाणवी. [७]

४ प्र० आत्मनिष्ठा, प्रीति ने दासपणुं ए त्रण अंग कह्यां ते सरखां हशे के अधिकन्यून हशे ?

४ उ० आ त्रण अंगनी उत्तम दशा कही छे माटे त्रणे सरखां छे, पण एमां कोइ अंग अधिक न्यून नथी, आ अकेका अंगमां धर्म, ज्ञान, वैराग्य ने भक्ति ए चारे आवी जाय छे.

५ प्र० दासत्व भक्तिवाळा श्रीगोपाळानंदस्वामी छे, तथा बीजा मुक्तानंदस्वामी छे एम कह्युं ते एमने दासत्वपणानुं एकज अंग हशे के ए त्रणे अंग हशे ?

५ उ० गोपाळानंदस्वामी तथा मुक्तानंदस्वामी तेतो अनादि मुक्त छे तेमने प्रतापे करीने अनंत जीवो आ त्रण अंगे संपन्न थइने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने सुखे सुखीया थइ जाय छे, एवा महा समर्थ छे एतो श्रीजीमहाराजनी साथे आवेला हता एमने विषे साधनिकपणानो भाव लाववो नहिं.

६ प्र० (३/६ त्रीजा प्रश्नमां) पांच दहाडा बधु जीवीने अणसमझण टाळीने मरवुं एम कह्युं, ने [पं० २/६ मां] क्यारे देह पडे ने क्यारे भगवानना धाममां जवाय एम कह्युं छे, ते

केवी रीते समजवुं ?

६ उ० आमां अणसमजण टाळवा माटे जीववुं एम कह्युं छे, अने (पं० १ मां) जेमे श्रीजी-
महाराजनो यथार्थ महिमा समजीने श्रीजीमहाराजना मुखमां दृष्टि पहोंची होय
तेनी वात कही छे.

७ प्र० (५/४ चोथा प्रश्नमां) गमे तेवो पामर ने पतित जीव होय ने ते अमारो के अमारा
भक्तनो आश्रित थाय, तो कृतार्थ थइ जाय एम कह्युं ते श्रीजीमहाराजना आश्रित तो
थवाय पण श्रीजीमहाराजना भक्तना आश्रित केवी रीते थवातुं हशे ?

७ उ० श्रीजीमहाराजने विषे स्वामी सेवकपणे आशरो करवो ने पंच वर्तमाने युक्त एवा ते-
मना भक्तने विषे श्रीजीमहाराजनुं ज्ञान पामवाने अर्थे गुरुभावे आशरो करवो. ॥१९५॥

संवत् १८८१ ना मागशर वदि २ बीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उताराने विषे विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ भजनानंद स्वामी श्रीमद्भागवतनो पाठ करता हता ने परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछयो जे(१) हे महाराज! द्रष्टा ने दृश्यना मध्य-
मां जे विचार रहे छे ते द्रष्टाने ने दृश्यने जुदा जुदा राखे छे एमां जीवनुं जाणपणुं कियुं
जाणवुं ? ने इंद्रियो अंतःकरणनुं जाणपणुं कियुं जाणवुं ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या
जे अमने तो एम जणाय छे जे जेनो जीव अतिशे बळने पाम्यो होय तेने तो अंतःक-
रणनी वृत्तियो ते जीवनीज वृत्ति छे ने तेना चार क्रियाए करीने चार विभाग जणाय
छे अने ते अंतःकरणमां ने इंद्रियोमां जाणपणुं छे ते जीवनुंज छे ते इंद्रियो अंतःकर-
णने ज्यां घटित होय त्यां चालवा दे अने ज्यां घटित न होय त्यां न चालवा दे अने
जेनो जीव अतिशे बळने पाम्यो होय तेने तो भुंडुं स्वप्न पण आवे नहि.(१)अने जेनो १
जीव निर्बळ होय तेने तो सांख्यना मतने अनुसरीने एक द्रष्टा एवो जे पोतानो आत्मा ते
आत्मापणे रहेवुं पण इंद्रियो अंतःकरण भेळुं भळवुं नहि एवी रीते सत्तारूप रहेतां थकां
एनो जीव बळने पामे छे. (२) अने एथी पण बळ पामवानो एक अतिशे मोटो उपाय २
छे जे भगवानने भगवानना जे संत तेने विषे जेने प्रीति होय ने तेनी सेवाने विषे अति-
शे श्रद्धा होय ने भगवाननी नवधा भक्तिये युक्त होय तेना जीवने तो तत्काळ अतिशे
बळ आवे छे माटे जीवने बळ पामवाने अर्थे भगवान ने भगवानना भक्तनी सेवा बरोबर
बीजो कोइ उपाय नथी. [३] अने वळी अमे अमारा अंतरनी वार्ता कहीए जे ज्यारे ३
अमे अगनोतरानी सालमां मांदा थया हता त्यारे कैलास ने वैकुंठ ते देखवामां आव्यां
ने नंदीश्वरनी अस्वारी ने गरुडनी अस्वारी पण अमे करी एम अमारा दीठामां आव्युं

पण ते सामर्थिमां अमने कांइ सारुं लाग्युं नहि पछी तो अमे केवळ सत्तारूपे रहेवा
मांड्युं त्यारे सर्व उपाधिनी शांति थइ. (४) पछी तेमां पण अमने एम विचार थयो ४
जे सत्तारूपे रहेवुं तेथी पण भगवान ने भगवानना भक्त भेळे देह धरीने रहेवुं ए श्रेष्ठ छे
माटे अमने एम बीक लागी जे रखे सत्तारूपे रहीए ने पाछो देह न धराय माटे देह
धरीने भगवान ने भगवानना भक्तनी भेळे रहीए ने तेने अर्थे जे सेवा बनी आवे तेज
अतिशे श्रेष्ठ साधन छे. [५] अने ज्यारे जीवने अंत समो आवे छे त्यारे अनंत जातनी ५
आधि ने व्याधि प्रगट थाय छे पछी भगवान के भगवानना संतनुं ज्यारे दर्शन थाय छे
त्यारे सर्वे दुःखनो नाश थइ जाय छे, एवो भगवाननो ने भगवानना भक्तनो महिमा
मोटो छे अने भगवानना भक्त छे ते तो केवळ ब्रह्मनीज मूर्तियो छे एने विषे तो
मनुष्य भाव लाववोज नहि. [६] अने जेम पोताना देहनां कुटुंबी होय छे ने तेने तेना ६
हेतने अर्थे आपण वढीने कहीए ने आपणने ते वढीने कहे पण अंतरमां कोइने आंटी
पडती नथी, तेम भगवान ने भगवानना भक्त संघाथे वर्त्युं जोइए अने जेने भगवान के
भगवानना भक्त संगाथे आंटी पडी जाय छे ते तो अमने दीठो पण गमतो नथी ने
ते उपरथी रीस पण कोइ दिवस उतरती नथी अने आ संसारमां पंच महापापनी कर-
नारानो कोइ दिवस छुटको थाय पण भगवानना भक्तना द्रोहना करनारानो कोइ
दिवस छुटको थातो नथी. [७] माटे भगवानना भक्तनी जे सेवा चाकरी करवी ते ७
बरोबर कोइ पुण्य नथी, ने भगवानना भक्तनो द्रोह करवो ते बराबर कोइ पाप नथी,
माटे जेने पोताना जीवने बळवान करवो होय तेने तो भगवान के भगवानना भक्तने
मन क्रम वचने शुद्ध भावे करीने सेववा. (८) इति वचनामृतम् ॥६३॥ (१९६). ८

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [१] छे, तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे जीव अतीशे बळने पाम्यो होय तो इंद्रियो अंतःकरणने ज्यां घटित होय त्यां चालवा दे एटले अमारी आज्ञा विरुद्ध चालवा दे नहि अने तेने भुंडुं स्वप्न पण आवेज नहि. [१] अने आत्मसत्तारूपे रहेवाथी एवुं बळ आवे छे.(२)अने अमारे ने अमारा संतने विषे प्रीति ने सेवामां अतिशे श्रद्धा ने अमारी नवधा भक्ति तेणे करीने जीवने तत्काळ अतिशे बळ आवे छे; अने ऐश्वर्यमांथी राग टाळीने केवळ सत्तारूपे रहेवुं ते श्रेष्ठ छे.(४) अने तेथी पण अमारीने अमारा भक्तनी देहे करीने सेवा करवी ते श्रेष्ठ छे. [५] अने जीवने अंत समे अनंत प्रकारनी आधिव्याधि थइ आवे छे ते दुःख अमारुं अथवा अमारा संतनुं दर्शन थाय त्यारे नाश पामे छे एवो अमारा भक्तनो एटले मुक्तनो महिमा मोटो छे. अने पंच वर्त्तमाने युक्त अमारा भक्त तेमने केवळ ब्रह्मनीज मूर्तियो समजवा. (६) अने अमारी ने अमारा भक्तनी साथे आंटी पाडे ते तो पंच महापापीथी पण वधु पापी छे.[७]अने अमारा भक्तनी एटले मुक्तनी सेवा जेवुं कोइ पुण्य नथी अने तेना द्रोह जेवुं कोइ पाप नथी.[८]बाकतो छे.

१ प्र० पांचमी बाबतमां सत्तारूपे रहेवाथी पण भगवान ने भगवानना भक्तनी भेळा देह धरीने रहेवुं ते श्रेष्ठ छे एम कह्युं ते सत्तारूप रहेवा करतां देह धरवामां शुं विशेष हशे ?

१ उ० सत्तारूपे वर्ते तेनाथी श्रीजीमहाराजनी तथा एमना मुक्तोनी सेवारूप प्रसन्नतानां साधन थइ शके नहि अने वळना मृगलानी पेठे एकलोज फरतो रहे एटले मोटा संतनो समागम पण थाय नहि अने श्रीजीमहाराजनो तथा एमना मुक्तोनो महिमा पण यथार्थ समजाय नहि माटे तेने प्रसन्नतानां साधन करवा सारु तथा महिमा जाणवा सारु फेर जन्म धरवो पडे ए न्यूनता रहे छे, ते श्रीजीमहाराजे आ बाबतमांज कह्युं छे के सत्तारूपे रहीए तो रखे पाछो देह न धराय एटले आ देहे करीने प्रसन्नता नकरी शकाय तो प्रसन्नतानां साधन करवा पाछो फरीथी बीजो देह धरवो पडे माटे देह धरीने एटले आ धरेलो छे ते देहे करीनेज सत्तारूपे रहेवा करतां पण श्रीजीमहाराज ने तेमना मुक्तोना भेळा रहीने तेमनी सेवा करवी ते अतिशे श्रेष्ठ साधन छे. केम जे श्रीजीमहाराजनी ने तेमना मुक्तोनी सेवा करे तेने आ फेरेज धाममां श्रीजीमहाराजनुं सुख मळे अने जे सत्तारूपे रहे तेने प्रसन्नतानां साधन करवा सारु बीजो देह धरवो पडे एटली न्यूनता रहे छे. ते [व० १७ ना बीजा प्रश्नमां] केवळ आत्मनिष्ठावाळा त्यागी करतां जे अमारी ने अमारा भक्तनी सेवाने अर्थे प्रवृत्ति मार्गमां रहे छे ते अतिशे श्रेष्ठ छे ने अमारी कृपानुं पात्र छे एम कह्युं छे. माटे सत्तारूपे रहेवा करतां श्रीजीमहाराजनी ने तेमना भक्तनी सेवा करवी ते श्रेष्ठ छे. ॥१९६॥

संवत् १८८१ ना पोष सुदि ७ सातमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिरनी ओसरीए ढोलिया उपर गादी तकिया नंखावीने उत्तरादे मुखारविंदे विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी स्वयंप्रकाशानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे (१) हे महाराज ! भगवानना जे अवतार छे ते सर्वे सरखाज छे के तेमां अधिक न्यून भाव छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे अमे व्यासजीना करेल जे सर्वे ग्रंथ ते सांभळ्या ने पछी पूर्वापर विचारीने जोयुं त्यारे तेमांथी अमने एम समजाणुं छे जे मच्छ, कच्छ, वाराह,नृसिंहादिक जे भगवानना अवतार छे ते सर्वे अवतारना अवतारी ते श्रीकृष्ण भगवान छे पण बीजा अवतारनी पेठे श्रीकृष्ण भगवान ते अवतार नथी एतो अवतारीज छे एवा जे श्रीकृष्ण भगवान ते आपणा इष्टदेव छे अने ते श्रीकृष्ण भगवाननां चरित्र श्रीमद्भागवत पुराणना दशमस्कंधने विषे संपूर्ण कह्यां छे माटे आपणा उद्धव संप्रदायने विषे अमे दशमस्कंधने अतिशे प्रमाण कर्यो छे अने बीजा जे सर्वे अवतार ते पण श्रीकृष्ण भगवाननाज छे माटे ए अवतार ने ए अवतारने प्रतिपादन करनारा जे ग्रंथ ते सर्वेने आपणे

मानवा पण विशेषे करीने तो श्रीकृष्ण भगवान ने तेना प्रतिपादन करनारा जे ग्रंथ
तेनेज मानवा. (१) १

२ पछी पुरुषोत्तम भट्टे प्रश्न पुछ्यो जे (२) भगवान जीवना कल्याणने अर्थे आ
जगतने सृजे छे ते विश्व न रच्युं होय ने मायाना उदरमां जीव होय तेनुं भगवान
कल्याण करे तो शुं न थाय ? जे आटलो विश्व सृजवानो भगवान दाखडो करे छे ए
प्रश्न छे. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, जे भगवान श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम छे तेतो राजा-
धिराज छे अने अखंड मूर्त्ति छे अने पोतानुं अक्षरधाम रूपी जे तखत तेने विषे सदा
विराजमान छे अने ते अक्षरधामने आश्रित अनंतकोटी ब्रह्मांड रह्यां छे. ते जेम कोइक
मोटो चक्रवर्ती राजा होय ने तेने असंख्य गामडां होय तेमांथी एक बे गाम उजड थयां
होय अथवा वस्यां होय पण ते तो ते राजानी गणतीमां पण नहोय तेम श्रीकृष्ण भग-
वान ते अनंतकोटी ब्रह्मांडना पति छे ते ब्रह्मांडोनो कांइ एक सामटो प्रलय थातो
नथी अने तेमांथी एकादा ब्रह्मांडनो प्रलय थाय तेतो भगवाननी गणतीमां पण नथी
अने ते श्रीकृष्ण भगवाननो देवकीजी थकी जे जन्म तेतो कथन मात्र छे अने ए श्री-
कृष्णतो सदा अजन्मा छे. (२) अने ते श्रीकृष्ण भगवाननुं जे अक्षरधाम छे ते व्यति- २
रेकपणेतो प्रकृति पुरुष थकी पर छे अने अन्वयपणे करीने तो सर्वे ठेकाणे छे. जेम
आकाश छे ते अन्वयपणे करीने तो सर्वत्र छे अने व्यतिरेकपणे तो चार भूत थकी
पर छे, तेमज श्रीकृष्ण भगवाननुं अक्षरधाम छे अने ते धामने विषे भगवान अखंड
विराजमान रहे छे. अने ते धाममां रह्या थका अनंतकोटी जे ब्रह्मांड छे तेने विषे ज्यां
जेने जेम दर्शन देवुं घटे त्यां तेने तेम दर्शन दे छे अने जे साथे बोलवुं घटे ते साथे
बोले छे अने जेनो स्पर्श करवो घटे तेनो स्पर्श करे छे. जेम कोइक सिद्ध पुरुष होय
ते एक ठेकाणे बेठो थको हजारो गाउ देखे ने हजारो गाउनी वार्ताने सांभळे तेम भ-
गवान पोताना अक्षरधाममां रह्या थका अनंत कोटी ब्रह्मांडने विषे ज्यां जेम जणावुं
घटे त्यां तेम जणाय छे, अने पोते तो सदा पोताना अक्षरधाममांज छे अने एक ठे-
काणे रह्या थका जे अनंत ठेकाणे जणाय छे तेतो पोतानी योगकळा छे, जेम रास
मंडळने विषे जेटली गोपीयुं तेटलाज पोते थया माटे एक ठेकाणे रह्या थका जे अनंत
ठेकाणे देखावुं एज भगवाननुं योगकळाए करीने व्यापकपणुं छे पण आकाशनी पेठे
अरूपपणे करीने व्यापक नथी. अने जे भगवाननी योगमायाये करीने पचासक्रोड
योजन जे पृथ्वीनुं मंडळ छे ते प्रलयकाळने विषे परमाणुरूप थइ जाय छे अने ते पृथ्वी
पाछी सृष्टिकाळने विषे परमाणुमांथी पचास क्रोड योजन थाय छे, अने चोमासुं आवे
छे त्यारे मात्र विजने मेघनी घटा थइ आवे छे ए आदिक सर्वे आश्चर्य ते भगवाननी

योगमायाये करीने थाय छे एवा जे श्रीकृष्ण भगवान ते मुमुक्षुने सर्व प्रकारे भजन करवा योग्य छे. शामाटे जे बीजा अवतारने विषे तो एक के बे कळानो प्रकाश होय छे, अने श्रीकृष्ण भगवानने विषे तो सर्वे कळाओ छे, माटे ए श्रीकृष्णभगवान तो रसिक पण छे ने त्यागी पण छे ने ज्ञानी पण छे ने राजाधिराज पण छे ने कायर पण छे ने शूरवीर पण छे ने अतिशे कृपाळु पण छे ने योगकळाने विषे प्रवीण छे ने अतिशे बळीया पण छे ने अतिशे छळीया पण छे माटे सर्वे कळाये संपन्न तो एक श्रीकृष्ण भगवानज छे. अने ते श्रीकृष्ण भगवाननुं जे अक्षरधाम तेने आश्रित जे अनंतकोटी ब्रह्मांड ते पण सदाय रहे छे तेमांथी जे ब्रह्मांडनी सो वर्षनी आवरदा पुरी थाय ते ब्रह्मांडनो नाश थाय तेणे करीने कांइ सर्वे ब्रह्मांडनो नाश थातो नथी माटे प्रलयकाळमां शा सारु कल्याण कर्युं जोइए सर्वे ब्रह्मांड वसेज छे तो एवी रीते ए प्रश्नुं समाधान छे. एवी रीते परोक्षपणे पोताना पुरुषोत्तमपणानी वार्ता श्रीजीमहाराजे करी तेने सांभळीने सर्वे हरिभक्त एम जाणता हवा जे एज जे श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम तेज आ भक्ति धर्मना पुत्र श्रीजीमहाराज छे. (३) इति वचनामृतम् ॥ ६४ ॥ (१९७) ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे मच्छ कच्छादिक अवतारोना अवतारी श्रीकृष्ण छे माटे ए मच्छ कच्छादिक अवतारोना ग्रंथथी श्रीकृष्णना ग्रंथने अधिक मानवा तेमज अमे सर्वे अवतारना अवतारी सर्वोपरी साक्षात् भगवान छीए माटे अमारा ग्रंथने विशेष मानवा एम जणाव्युं छे. (१) बीजामां परोक्ष श्रीकृष्णना दृष्टांते करीने पोतानुं सर्वोपरीपणुं कह्युं छे जे अमे राजाधिराज अखंड मूर्ति अक्षरधामने विषे विराजमान छीए अने अमारा अक्षरधामने आशरीने अनंतकोटी ब्रह्मांड रह्यां छे ते ब्रह्मांडोनो एक सामटो प्रलय थातो नथी एम कह्युं छे अने श्रीकृष्णने दृष्टांते करीने पोताने अजन्मा कह्या छे. [२] अने अक्षरधाम जे पोतानुं तेज तेनुं अन्वय व्यतिरेकपणुं कह्युं छे ने ए अक्षरधाममां रह्या थका योगकळाए करीने अनेक ठेकाणे दर्शन आपीए छीए एम कह्युं छे. [१] बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां श्रीजीमहाराजे श्रीकृष्णने पोताना इष्टदेव कह्या अने [श्लो० १४/२- मां] श्रीकृष्णने नारायणना पटले पोताना अवतार कह्या छे अने (अ० ९/२ मां) अमारा विना बीजो कोइ भगवान नथी एम कह्युं छे ते केवी रीते समजवुं ?

१ उ० श्रीजीमहाराज मनुष्यभावे बोले त्यारे परोक्ष अवतारोने दृष्टांते करीने पोतानी वात करे अने ज्यारे पोते भगवानपणे बोले त्यारे अमे भगवान छीए एम कहे माटे आ ठेकाणे मनुष्यभावे बोल्या छे तेथी श्रीकृष्णने इष्टदेव कह्या छे अने आमां बीजा प्रश्नमांज पोताना धामने पण प्रकृति पुरुषथी पर कह्युं छे ते प्रकृतिपुरुष तेज श्रीकृष्ण छे ते ज्यारे श्रीकृष्णथी पोतानुं धाम पर कह्युं तो पोते तो पर होयज. आनो विस्तार (प्र० ८ ना पहेला प्रश्नोत्तरमां) कर्यो छे.

२ प्र० आमां बीजा प्रश्नमां एकादा ब्रह्मांडनो प्रलय थाय छे पण सामटो थातो नथी एम कह्युं अने (प्र० ८ ना २/४ बीजा प्रश्नमां) ज्यारे महाप्रलय थाय छे त्यारे पुरुषोत्तम जे अमे ते अमे एकज रहीए छीए तथा (५६ ना ३/४ त्रीजा प्रश्नमां) सर्वे ब्रह्मांडनो प्रलय थइ जाय छे त्यारे प्रगट भगवान जे अमे ते अमे एकज रहीए छीए तथा (का० ७ मां) पण चोथा प्रश्नमां आत्यंतिक प्रलय थाय छे त्यारे एकलुं सच्चिदानंद चिद्घन जे अमारुं तेज ते रहे छे अने ए तेजमां दिव्यमूर्ति एवा अमे रहीए छीए एम कह्युं छे ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० मूळपुरुष अनंत छे ते सर्वे मूळपुरुषोना कार्यनो साथे प्रलय थतो नथी अने एक मूळपुरुषना कार्यनो प्रलय थाय तेने महाप्रलय तथा आत्यंतिक प्रलय कहे छे माटे (प्र० ८ तथा ५६ मां) प्रलय कह्यो छे तथा [का० ७ मां] आत्यंतिक प्रलय कह्यो छे ते एक मूळपुरुषना कार्यनेज कह्यो छे अने बीजा मूळपुरुषोनां कार्य तो होय छे तेथी आमां सामटो प्रलय थतो नथी एम कह्युं छे आनो विस्तार (प्र० ८ ना पांचमा प्रश्नोत्तरमां) कर्यो छे.

३ प्र० [२/४ बीजा प्रश्नमां] अक्षरधाम व्यतिरेकपणे तो प्रकृति पुरुषथी पर छे अने अन्वयपणे तो सर्वे ठेकाणे छे एम कह्युं ते केवी रीते जाणवुं ? केमजे जे मूर्तिमान होय ते मूर्तिने व्यतिरेक कहेवाय अने तेना प्रकाशने अन्वय कहेवाय पण अक्षरधाम तो निराकार एक रस तेज छे तेमां अन्वय व्यतिरेकपणुं केवी रीते जाणवुं ?

३ उ० श्रीजीमहाराज पोताना तेजना समुहने विषे पोताना मुक्तोये सहित विराजमान छे ते समुहने व्यतिरेक कहेल छे अने ए तेजना समुहनी अनंत किरणो छे ते किरणो मूळ अक्षर, ब्रह्म तथा मूळपुरुषादिक सर्वेने विषे अंतर्यामीपणे व्यापक छे तेने अन्वय कहेल छे आ अन्वय स्वरूपने (प्र० ३/४ मां) तथा (का० ६ मां) साकार मूळअक्षरनुं आत्मा कह्युं छे माटे मूळअक्षरादिकमां व्यापक छे ते तेजने अन्वय कहे छे. आनो विस्तार [प्र० ७ ना पांचमा प्रश्नोत्तरमां, तथा २१ ना सातमा प्रश्नोत्तरमां, तथा ४१ ना पहेला प्रश्नोत्तरमां] कर्यो छे. ॥ १९७ ॥

संवत् १८८१ ना पोष शुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना मंदिरनी समीपे ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे सांभळो भगवाननी वार्ता करीए त्यारे ताळ पखाज लइने संत कीर्तन गावता हता ते छाना रह्या अने सर्वे हाथ जोडीने सांभळवा बेठा.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) जीवना कल्याणने अर्थे भगवानना राम कृष्णादिक जे अवतार थाय छे तेने तो मायानुं कार्य एवुं जे आ जगत तेमां कोइ ठेकाणे मोह थतो नथी अने पोताना अलौकिक प्रतापे करीने निःशंक वर्ते छे अने पोताना भक्त जननी भक्तिने अंगीकार करवाने अर्थे पंच विषयने पण सारी पेठे भोगवे

छे तेने जोइने आ संसारने विषे जे अलवतरडाया मनुष्य छे ते परमेश्वरने विषे दोष
परठे छे अने एम जाणे छे आ तो परमेश्वर कहेवाय छे तोपण एने आपणा करतां पण
बधु संसारने विषे आसक्ति छे एम जाणीने भगवानने पण पोता जेवा मनुष्य जाणे
पण भगवाननो जे अलौकिक महिमा तेने जाणता नथी एज भगवाननी माया छे अने
ब्रह्मस्थितिने पाम्या एवा जे आत्मदर्शी साधु तेने पण आ संसारने विषे कोइ पदार्थ
देखीने मोह थातो नथी तो ब्रह्मथी पर परब्रह्म एवा जेश्रीकृष्ण भगवान तेने माया ने
मायाना कार्य थकी निर्लेप रहेवाय एमां ते शुं कहेवुं ? ए तो रहेवायज. (१) अने १
आत्मनिष्ठावाळा जे संत तेने आत्मनिष्ठा ने तीव्र वैराग्य ए बे होय तेणे करीने
कोइ रीतनुं बंधन तो न थाय पण जो तेने भगवानने विषे भक्ति न होय तो जेम बहु
प्रकारनां भोजन ने बहु प्रकारनां व्यंजन कर्यां होय ने तेमां जो एक लवण न होय
तो ते सर्वे नकारां थइ जाय छे, तेम भगवाननी भक्ति विना एकलुं जे ब्रह्मज्ञान छे
तथा वैराग्य छे तेतो नकारुंज छे ने सदा अकल्याणकारीज छे. एम जाणीने शुकदेवजी
ब्रह्मस्वरूप थया हता तोपण श्रीमद्भागवतने भणता हवा अने श्रीकृष्णभगवानने विषे
दृढ भक्तिने करता हवा माटे आत्मनिष्ठावाळाने जो भगवानने विषे भक्ति न होय तो
ए एने मोटुं दूषण छे. (२) अने जेने भगवानने विषे भक्ति होय तेने पण जो आत्म- २
निष्ठाने वैराग्य न होय तो जेवी भगवानने विषे प्रीति होय तेवी बीजा पदार्थने विषे
पण प्रीति थइ जाय माटे ए भक्तिमार्गवाळाने पण मोटुं दूषण छे अने जे आवो प-
रिपक्व भगवाननो भक्त होय तेणे तो भगवाननो यथार्थ महिमा जाण्यो छे माटे तेने तो
परमेश्वर विना बीजुं सर्वे तुच्छ जणाणुं छे ते सारु कोइ पदार्थमां ते मोह पामतो नथी
माटे आत्मनिष्ठा वैराग्य ने भगवानने विषे भक्ति ए त्रणेय भेळां होय त्यारे कोइ जा-
तनी खोटथ न कहेवाय अने एवो जे होय तेतो भगवाननो ज्ञानी भक्त कहेवाय, एकां-
तिक भक्त कहेवाय, अनन्य भक्त कहेवाय. ॥३॥ इति वचनामृतम् ॥ ६५ ॥ १९८ ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमे जीवोना कल्याण अर्थे प्रगट थइए छीए त्यारे अमारा भक्तनी भक्तिने अंगीकार करवाने अर्थे पंचविषयने भोगवीए छीए ते जोइने अलवतरडाया मनुष्यो अमारे विषे दोष परठे छे पण ब्रह्मस्थितिने पामेला एवा जे आत्मदर्शी साधु तेमने पण मोह थतो नथी तो अमने तो मोह होय ज केम ? अमे तो सदा निर्लेप छीए. (१) अने केवळ आत्मनिष्ठा ने वैराग्यवाळाने कोइ जातनुं बंधन तो न थाय पण अमारी भक्ति नहोय तो मोक्षोपयोगी नथी थतां. (२) अमारे विषे भक्ति होय पण जो ए बे नहोय तो अमारा विना बीजा पदार्थमां प्रीति थइ जाय माटे ए त्रणे होय ते अमारा अनन्य भक्त कहेवाय. (३) वाक्तो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां ब्रह्मस्थितिने पाम्या एवा आत्मदर्शी साधुने मोह न थाय एम कह्युं ते किया ब्रह्मने विषे स्थितिने पामेला जाणवा ?
१ उ० पोताना आत्माने जोवानी इच्छाथी भगवाननुं ध्यान करतां करतां पोतानो आत्मा ते रूप ब्रह्मने विषे स्थिति थइ होय तेने आत्मदर्शी कह्या छे.
२ प्र० परब्रह्म श्रीकृष्ण भगवान कह्या ते श्रीकृष्ण कोने जाणवा ?
२ उ० आ पहेली बाबतमां परब्रह्म तथा श्रीकृष्ण नामे श्रीजीमहाराजने कह्या छे, अने बीजी बाबतमां दृष्टांतमां जे श्रीकृष्ण कह्या छे ते मूळपुरुषने कह्या छे. ॥१९८॥

संवत् १८८१ ना पोष वदि १ प्रतिपदाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे वार ओरडानी ओसरीए ढोलया उपर गादी तकिया बिछावीने विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पीळा पुष्पना ने राती गुलदावदीना पुष्पना हार कंठने विषे विराजमान हता, ने पीळा पुष्पनो तोरो पाघने विषे विराजमान हतो, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि मंडळ तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, अने पोतानी आगळ सरोदा ने दुकड लइने संत मंडळ विष्णुपद गावता हता.

ते कीर्तनभक्ति थइ रह्या पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे आज तो अमारे मोटा मोटा संतने प्रश्न पुछवां छे. एम कहीने प्रथम आनंदस्वामीने पुछता हवा, जे,
१ (१) कोइक एवो पुरुष होय जे तेने बुद्धि थोडी होय तोपण पोतामां जे दोष होय तेने देखे अने बीजा हरिभक्तमां दोष होय तेने न देखे, अने गुण होय तेनेज देखे, अने बीजो जे पुरुष छे तेने तो बुद्धि घणी छे तोपण पोताना अवगुणने देखतोज नथी, अने बीजा हरिभक्तने विषे गुणनो त्याग करीने केवळ दोषज देखे छे एनुं शुं कारण हशे ? जे थोडी बुद्धिवाळो होय ते पण पोताना दोषने देखे छे, अने झाझी बुद्धिवाळो छे ते ने पोताना दोष सुझता नथी, ए प्रश्न छे. पछी आनंदानंदस्वामीए जेवो सुझ्यो तेवो उत्तर कर्यो पण प्रश्ननुं समाधान थयुं नहिं, पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे एनो उत्तर एम छे जे आ जन्मे अथवा कोइ जन्मांतरने विषे एणे कोइक मोटा भगवानना भक्तनो अपराध कर्यो छे, ते पापे करीने एनी बुद्धि दोषे युक्त छे माटे एने हरिभक्तना दोष सुझे छे, ने पोताना दोष सुझता नथी एज एनो उत्तर छे. (१) १
२ एम कहीने पछी श्रीजीमहाराज नित्यानंदस्वामीने प्रश्न पुछता हवा, जे (२) भगवानने पाम्यानुं एकज साधन छे के घणाक साधने करीने भगवान पमाय छे ? त्यारे तमे एम कहेशो जे ज्ञान, वैराग्य, भक्ति ने धर्म ए चार साधने करीने पमाय छे, ते ज्यारे ए चार साधने करीने भगवाननी प्राप्ति थाय छे, त्यारे एक भगवानना आश्रये करीनेज कल्याण थाय एवा अनन्य भावनो निरधार रह्यो नहि, पछी नित्यानंदस्वा-

मीए बहु प्रकारे उत्तर कर्यो पण प्रश्नतुं समाधान थयुं नहिं, पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे कल्याण तो एक भगवानना आश्रये करीनेज छे, पण भगवान छे ते अति समर्थ छे ने तेनी आज्ञाने ब्रह्मादिक समग्र देव पाळे छे, तथा काळ मायादिक जे सर्वे ब्रह्मांडना कारण ते पण भगवानना भय थकी सावधान थइने भगवानननी आज्ञामां रहे छे, माटे भगवाननो भक्त होय तेने ए भगवाननी आज्ञा छे ते दृढ करीने मानवी, एज भगवानना भक्ततुं लक्षण छे ते सारु साधन सर्वे अति दृढ करीने राखवां, एटले एक भगवान वतेज कल्याण छे, अने ए साधन छे तेतो भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे छे, एज ए प्रश्ननो उत्तर छे. (२) २

३ पछी श्रीजीमहाराज ब्रह्मानंदस्वामीने पुछता हवा, जे (३) आ देहने विषे जीव छे ते साकार छे के निराकार छे ? पछी ब्रह्मानंदस्वामीए कह्युं जे जीव तो साकार छे, त्यारे श्रीजीमहाराजे कह्युं जे जो जीव साकार होय तो ते कर चरणादिके युक्त थयो, त्यारे दशमस्कंधने विषे वेदस्तुतिना अध्यायमां एम कह्युं छे जे भगवान जे ते जीवना कल्याणने अर्थे ते जीवनां बुद्धि, इंद्रिय, मन ने प्राण तेने सृजता हवा, ते जो जीव साकारज होय तो तेने अर्थे बुद्धि, इंद्रिय, मन, प्राण सृजवानुं शुं काम छे ? माटे एवी रीतनां शास्त्रनां वचनने जोतां एमज निरधार थाय छे जे जीवतो सत्तामात्र छे, अने चैतन्य वस्तु छे ते जेम चमक पाण होय ते लोढाने तार्णाने लोढा साथे चोंटी रहे छे, तेम ए चैतन्य द्रव्य छे तेनो पण चोटवानो स्वभाव छे तेने मायिक एवां जे स्थूळ, सूक्ष्म ने कारण ए त्रण शरीर तेनो संबंध वर्ते छे, अने ए जीव अज्ञाने करीने ते शरीरने विषे पोतापणुं माने छे, पण वस्तुगते तो जीव निराकारज छे. [३] ३

४ पछी ब्रह्मानंदस्वामीए कह्युं जे, (४) वस्तुगते ए जीव निराकार छे तो ज्यारे ए जीवना अज्ञाननी निवृत्ति थाय छे त्यारे ए जीवने स्थूळ, सूक्ष्म ने कारण ए मायिक त्रण देहनो संबंध रहेतो नथी, त्यारे ए जीव भगवानना धाममां जइने निराकारपणे रहे छे के साकारपणे रहे छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ज्यारे ए जीवना अज्ञाननी निवृत्ति थाय छे त्यारे एने मायिक त्रण देहनो संग छुटी जाय छे, पछी निराकार जे चैतन्य ते रहे छे, तेने भगवाननी भूमि आदिक जे आठ प्रकारनी प्रकृति ते थकी जुदी जे चैतन्य प्रकृति तेनो भगवाननी इच्छाये करीने देह बंधाय छे, ने तेणे युक्त थको भगवानना अक्षरधामने विषे रहे छे, एवी रीते ए प्रश्ननो उत्तर छे. (४) ४

५ पछी गोपाळानंदस्वामीने श्रीजीमहाराज पुछता हवा जे, (५) अष्टांग योग सिद्ध थाय छे अथवा आत्मदर्शन थाय छे तेतो भगवान ने भगवानना संतनी कृपा थकी थाय छे ते ए योग ने आत्मदर्शन सिद्ध थयानुं कारण जे भगवान ने भगवानना संत तेने विषे हेत गौण थइ जाय छे, अने अष्टांग योग ने आत्मदर्शन एने विषे बधु

कमि थाय छे तेनुं शुं कारण हशे ? पछी गोपाळानंदस्वामीए कह्युं जे एने योगाभ्यास करते थके योग सिद्ध थाय छे तेनुं कांइक मान आवे छे, तेणे करीने भगवाननी कोरे कांइक वृत्ति गौण थइ जाय छे, पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ज्यारे सिद्धदशाने पामे त्यारे ए योगी छे ते ब्रह्मरूप थाय छे, ते ब्रह्ममां तो कोइ जातनुं मान होय,नहि. माटे ए उत्तर संभवे नहि, पछी गोपाळानंदस्वामी बोल्या जे हे महाराज ! एतो कांइ समझातुं नथी, माटे तमे कृपा करीने कहो. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ए तो एम समझवुं जे ज्यारे पोतानी खोट काढवी होय त्यारे तेने मोटाओना वचननी साख्य लइने काढवी, जेम कोइक व्यवहारिक काम होय ने ते कामने अतिशे सिद्ध करवुं होय, त्यारे सारा सारा माणसनी साइदी करवी तेम आंहीपण ए साइदी छे, जे शुकदेवजी ब्रह्मस्वरूप थया हता, तोपण अति प्रीतिए करीने श्रीमद्भागवत भण्या अने आज दिवस सुधी पण भगवाननी भक्तिनेज करे छे, अने शौनकादिक अठ्यासी हजार ऋषि ते ब्रह्म स्वरूप छे तोपण सुतपुराणिना मुख थकी भगवाननी कथाने सांभळे छे एवी जातना वचननी साख्य भक्तिनी दृढताने अर्थे लेवी, अने जे खोट्य पोताना जाण्यामां न आवती होय तेनी कोरनी भगवानने आगळ प्रार्थना करवी जे हे महाराज ! मुंमां जेजे खोट्य होय ते कृपा करीने नाश करजो, जेम कोइक पुरुषने माथे कलंक आव्युं होय ने ते कलंक टाळ्यानो कोइ साइदी नहोय त्यारे ते लोढानो गोळो रातो चोळ होय तेने उपाडीने पोतानुं कलंक टाळे छे, तेम जे दोष न ओळखातो होय त्यारे ते दोष टाळवाने अर्थे भगवाननी स्तुति करवी, ए ते लोढानो गोळो झाल्या जेवी छे एम करीनेपोतानी खोट्यने टाळवी ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे. (५) ५

६ पछी श्रीजीमहाराज मुक्तानंदस्वामीने पुछता हवा जे (६) भगवानने यथार्थ जाण्या होय, ने भगवान तो कांइ चमत्कार न देखाडता होय ने बीजा जे जंत्र मंत्रवाळा होय तेतो परचो देखाडता होय तेने देखीने भगवानना भक्त होयतेनुं मन भगवानमांथी क्यारेय डगे के न डगे ? पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे हे महाराज! जेने भगवाननो यथार्थ निश्चय होय तेने तो भगवान विना बीजे क्यांइ प्रतीति आवेज नहि, अने जो बीजे ठेकाणे प्रतीति आवे तो तेने भगवाननो निश्चयज नथी, एतो गुण बुद्धिवाळो हरिभक्त कहेवाय, पण यथार्थ भगवाननो भक्त न कहेवाय. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे एज एनो उत्तर छे. (६) ६

७ पछी श्रीजीमहाराजे शुकमुनिने पुछ्युं जे (७) भगवाननो भक्त होय ने ते भगवान तथा भगवानना संत तेने साक्षात्कार पाम्यो तेने जीवतां शी प्राप्ति थाय छे ? अने मुवा केडे शी प्राप्ति थाय छे ? पछी शुकमुनि बोल्या जे हे महाराज ! एनो उत्तर

तो तमे करशो त्यारे थशे, पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेने भगवान ने भगवानना संतनी प्राप्ति थइ छे तेने जीवते तो भगवाननां कथा कीर्तन करतां थकांज दिवस ने रात्रि वीते छे. अने त्रणे अवस्थाथी पर जे पोतानो जीवात्मा तेनुं ब्रह्मरूपे साक्षात् दर्शन थाय छे, अने भगवान विना अन्य पदार्थ मात्रने विषे वैराग्य थाय छे, अने अधर्मनो त्याग करीने धर्मने विषे रहेवाय छे, अने देह मुके त्यारे एवा भक्तने भगवान पोता जेवोज करे छे, जेम भगवाने ब्रह्माने कह्युं छे, जे 'हे ब्रह्मा ! जेवो हुं छुं ने जेवो मारो महिमा छे ने जेवां मारां गुण ने कर्म छे, तेवुं मारा अनुग्रह थकी तुंने विज्ञान थाओ ' एवुं जे ब्रह्माने कह्युं छे, तेम जे पोताना अनन्य भक्त होय ते सर्वने भगवान एवी प्राप्ति करावे छे, ने जेम भगवान काळ, कर्म ने माया थकी रहित छे, तेमज भगवानना भक्त पण काळ, कर्म ने माया थकी रहित थाय छे, ने अखंड भगवाननी सेवाने विषे रहे छे एवी देह मुक्या केडे प्राप्ति थाय छे एज ए प्रश्ननो उत्तर छे. (७) इति वचनामृतम् ॥ ६६ ॥ (१९९) ७

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (७) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्यु छे जे आ जन्मे अथवा जन्मांतरे अमारा मोटा भक्तनो अपराध कर्यो होय तेने हरिभक्तना दोष सुझे, ने पोताना न सुझे. (१) बीजामां अमारे आश्रये करीने कल्याण थाय छे ने चार साधने करीने अमारी प्रसन्नता थाय छे.[२] त्रीजामां जीवने निराकार कह्यो छे. (३) चोथामां जीव ज्यारे अमारा धाममां जाय छे त्यारे साकार थाय छे. (४) अने पांचमामां अमारी तथा अमारा मुक्तनी कृपाथी अष्टांगयोग ने आत्मदर्शननी सिद्धि थाय छे. ते अष्टांगयोगने विषे ने आत्मदर्शनने विषे बधु लगिन थाय तो अमारो तथा अमारा संतनो महिमा समजीने अमारीने अमारा संतनी सेवा करवी पण अष्टांगयोगने विषे ने आत्मदर्शनने विषे अमारा जेवी तथा अमारा भक्तना जेवी लगिन थवा देवी नहि. (५) छठ्ठामां अमारा विना बीजो परचा चमत्कार जणावे तेमां जेने प्रतीति आवे ते यथार्थ भक्त नथी. (६) अने सातमामां अमारी ने अमारा संतनी प्राप्ति थइ होय तेने अमारां कथा कीर्तन करतां दिवस ने रात्रि वीते, अने पोताना जीवात्मानुं अमारा तेज रूप जे ब्रह्म ते रूपे दर्शन थाय छे, अने अमारा विना बीजेथी वैराग्य थाय छे, अने धर्ममां रहेवाय छे, अने देह मुक्या पछी अमारा जेवोज स्वतंत्र थाय छे, ने अमारी अखंड सेवामां रहे छे. (७) बाबतो छे.

१ प्र० चोथा प्रश्नमां ब्रह्मानंदस्वामीए जीवने साकार शा कारणथी कह्यो हशे ?

१ उ० भक्तनो जीव श्रीजीमहाराजना ध्याने करीने अज्ञानथी मुकाय छे त्यारे साकार थाय छे, एवा अभिप्रायथी साकार कह्यो छे, अने श्रीजीमहाराजे मायाबद्ध जीव निराकार छे एवा अभिप्रायथी पुछेलुं तेथी फरीथी उत्तर कर्यो छे.

२ प्र० पांचमा प्रश्नमां चैतन्य प्रकृतिनो देह बंधाय छे एम कह्युं ते चैतन्य प्रकृति शी जाणवी?

२ उ० आ ठेकाणे चैतन्य प्रकृति जीवने कह्यो छे ते जीव श्रीजीमहाराजना धाममां साकार

थाय छे, ते [प्र० ३७/५ मां] चैतन्यनीज मूर्ति थइने अमारी हजुरमां रहे छे एम कह्युं छे.

३ प्र० सातमा प्रश्नमां अमारी ने अमारा संतनी साक्षात् प्राप्ति कही, ते साक्षात् प्राप्ति तो दृष्टिगोचर होय तेज कहेवाय, ते आज तो दृष्टिगोचर छे नहि, माटे आज साक्षात् प्राप्ति केवी रीते समजवी ?

३ उ० श्रीजीमहाराज मनुष्यरूपे दर्शन आपता होय त्यारे तेमांथी मनुष्यभाव टाळीने तथा प्रतिमारूपे दर्शन आपता होय त्यारे प्रतिमाभाव टाळीने दिव्य साक्षात् जाणीने आशरो करे ते साक्षात् प्राप्ति कही छे. अने बत्रीश लक्षणे युक्त एवा जे संत तेमने विषेथी मनुष्यभाव टाळीने दिव्यमुक्त जाणीने तेमनो समागम ने सेवा करे ते संतनी साक्षात् प्राप्ति कही छे. ॥ १९९ ॥

संवत् १८८१ ना महा वदि ३ तृतीयाने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उतारानें विषे गंगाजळीया कुवा पासे ओटा उपर ढोलियो ढळावीने गादी तकिया नखावीने विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, अने पोतानी आगळ साधु दुकड सरोदा लइने विष्णुपद गावता हता.

ते कीर्तनभक्ति थइ रह्या पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे अमे सर्वे संत प्रत्ये

१ प्रश्न करीए छइए जे(१)भगवाननो भक्त होय ते देह मुकीने ब्रह्मरूप थइने भगवानना धाममां जाय छे, पछी एमां ने भगवानमां शो अंतराय रहे छे जेणे करीने स्वामी सेवक पणानो नातो रहे छे केम जे ए भगवाननो भक्त छे तेपण जेवा भगवान स्वतंत्र छे, ने काळ, कर्म ने माया तेने आवरणे करीने रहित छे तेवोज थाय छे. माटे एमां शो भेद रहे छे जेणे करीने स्वामी सेवकपणुं रहे छे ? ए प्रश्न छे, पछी परमहंसे जेने जेवुं समझाणुं तेणे तेवो उत्तर कर्यो पण श्रीजीमहाराजना प्रश्ननुं समाधान थयुं नहिं, पछी सर्वे संते कह्युं जे हे महाराज!तमारा प्रश्ननो उत्तर तो तमेज करशो त्यारे थाशे,पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे एनो उत्तर एम छे जे भगवाननो भक्त होय तेणे जेवा भगवानने जाण्या होय, जे भगवान आटली सामर्थिए युक्त छे, अने आटली शोभाए युक्त छे अने आवा सुखरूप छे, एवी रीते ए भक्ते जेटलो भगवाननो महिमा जाण्यो छे,अने जेवा प्रतापेयुक्त भगवानने जाण्या छे ते भक्त ज्यारे देह मुकीने भगवानना धाममां जाय छे, त्यारे रूपतथा सामर्थि ते ए भक्तनी पण तेवीज थाय छे,तोपण भगवाननी सामर्थि अने भगवाननुं सुंदरपणुं इत्यादिक जे प्रताप ते ए भक्तने भगवानने विषे अतिशे जणाय छे,त्यारे ए भक्त एम जाणे छे जे में जेटलो प्रताप जाण्यो हतो ने सुंदरपणुं जाण्युं हतुं तेटलुं ऐश्वर्य ने सुंदरपणुं तो मुने पण भगवाने आप्युं छे, तोपण भगवाननुं ऐश्वर्य ने

भगवाननुं सुंदरपणुं ते तो अतिशे अपार देखाय छे, माटे मुं जेवा अनंत भगवानना साधर्म्यपणाने पाम्या छे, तोपण भगवान जेवो कोइ थावाने समर्थ थातो नथी, श माटे जे भगवाननो महिमा, गुण, कर्म, जन्म ने सामर्थि तथा सुंदरता सुखदायकपणुं ए आदिक जे अनंत कल्याणकारी गुण तेना पारने शेष, शारदा, ब्रह्मादिक देवता तथा चार वेद ए पामता नथी, अने भगवान पोते पण पोताना महिमाना पारने पामता नथी, माटे भगवान तो सर्व सामर्थिए करीने अपार छे, अने ए भगवानने भजीने अनंत कोटी वैष्णव भगवान सरखा थया छे, तोपण भगवानमांथी कोइ जात्यनो प्रताप अणु जेटलो पण न्यून थयो नथी, जेम मीठा जळनो समुद्र भर्यो होय तेमांथी मनुष्य, पशु, पंखी सर्वे जेटलुं भावे तेटलुं जळ पीए तथा पात्र भरी ले, तोपण ओछुं थातुं नथी, श माटे जे ते समुद्र तो अगाध छे तेमज भगवाननो महिमा पण अतिशे अपार छे, माटे कोइ रीते करीने वधे घटे एवो नथी ते सारु जे जे भगवानना भक्त ब्रह्मस्वरूप थया छे, तोपण भगवानना दृढ दास थइने भगवाननुं भजन करे छे, एवी रीते भगवानना भक्त भगवानना साधर्म्यपणाने पामे छे, तोपण स्वामी सेवकपणुं रहे छे एज ए प्रश्नो उत्तर छे. (१) इति वचनामृतम् ॥ ६७ ॥ (२००) १

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [१] छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारा भक्त अमने जेवा जाणे तेवा थाय छे. तोपण अमारो महिमा, सामर्थि, प्रताप, ऐश्वर्य ते अतिशे अपार देखाय छे तेणे करीने अमारे विषे स्वामी सेवकपणुं अति दृढ थाय छे. (१) बाबत छे.

१ प्र० अमारा भक्त अमारा सरखा थाय एम कह्युं अने (का० १० ना $\frac{1}{4}$ पहेला प्रश्नमां) अमारो भक्त छेवट अक्षर जेवो थाय, पण अमारा जेवो न थाय, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे ते केवी रीते समजवुं ?

१ उ० (का० १० मां) ऐश्वर्यनी इच्छावाळा सकाम भक्तनी वात कही छे जे अमारा भक्त ऐश्वर्यने इच्छे तो छेल्लामां छेल्ली मूळअक्षरनी पदवीने पामे, पण अमारी जे पदवी छे ते न मळे अने आमां जे ऐश्वर्यने न इच्छे ने एक श्रीजीमहाराजनी सेवानेज इच्छे एवा निष्काम भक्तनी वात कही छे, माटे जे सेवाने इच्छे एवा जे निष्काम भक्त ते श्रीजीमहाराजना साधर्म्यपणाने पामे, एटले मुक्त थाय एम कह्युं छे माटे एमां सकाम भक्तनी प्राप्ति कही छे. अने आमां निष्काम भक्तनी प्राप्ति कही छे.

२ प्र० जेवा श्रीजीमहाराजने जाणे तेवो भक्त थाय एम कह्युं त्यारे मूळअक्षर तथा तेथी पर परमएकांतिक तथा तेथी पर अनादिमुक्त तेथी श्रीजीमहाराजने पर जाणे तो ते भक्त केवो थाय ?

२ उ० अनादिमुक्तनी पदवीथी पर दासनी पदवी छेज नहिं तेथी पर तो स्वामीनीज पदवी छे, अने जे दास होय ते स्वामीनी पदवीने इच्छेज नहिं, अने जे दासपणुं मुकी दइने स्वामीनी पदवीने इच्छे तेने तो कांइपण प्राप्ति न थाय, अने ए श्रीजीमहाराजने अमेज

नहिं, ते (छे० २६ ना ३/४ त्रीजा प्रश्नमां) श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमने अभेदपणे भजे ते न गमे, माटे जे दासपणुं मुकी दे ते अभेदपणे भज्या कहेवाय.

३ प्र० अमे अमारा महिमाना पारने पामता नथी एम कह्युं ते श्रीजीमहाराज तो पोते साक्षात् भगवान छे तेमने तो कांइपण अगम्य न होय, माटे पारने पामता नथी एम कहेवानुं शुं कारण हशे ?

३ उ० एतो पोताना महिमानुं अपारपणुं कहेवा माटे एम कह्युं छे. जे अमारो महिमा तो अतिशे अपार छे, तेने कोइ जाणी शकवा समर्थ छेज नहिं, अने अमे आटलुंज करी शकीए ने आटलुं जाणी शकीए एवो कोइ अवधि नथी माटे अमारा महिमानो कोइ प्रकारे अवधि नथी.

४ प्र० आमां तथा [प्र० ६३ ना ३/४ त्रीजा प्रश्नमां, ६४/३ मां, सा० ११ ना पहेला प्रश्नमां, लो० १३ ना बीजा प्रश्नमां, म० ६६ ना सातमा प्रश्नमां, छे० ३७ तथा ३०/५ मां] पुरुषोत्तमना साधर्म्यपणाने पामे छे, एम कह्युं छे अने [प्र० २१/७ मां, ४० ना पहेला प्रश्नमां, तथा सा० १७/२ मां] महातेज जेवो थाय एम कह्युं छे, ते अक्षरधामनुं अने पुरुषोत्तमनुं साधर्म्यपणुं केवी रीते जाणवुं ?

४ उ० (प्र० २१/८ मां) अक्षरना साधर्म्यपणाने पामे छे एम कह्युं छे, ते साधन काळमां साधन करतां करतां पामे छे अने अक्षरना साधर्म्यपणाने पाम्या एवा अनंत मुक्तो रह्या छे एम कह्युं छे, ते पण साधन करीने पाम्या पछी रह्या छे तेमनी वात छे, अने (प्र० ४० मां) पण अक्षर ब्रह्मना साधर्म्यपणाने पामीने अमारी मूर्तिने विषे निमग्न रहेतो होय ते निर्विकल्प समाधिवाळो छे, ते पण साधनदशावाळाने कह्युं छे अने (सा० १७ मां) खद्योतथी करीने महातेज जेवो थाय छे ते पण साधनदशावाळानी वात छे, माटे साधनकाळमां ब्रह्मनुं मनन करतां करतां ब्रह्मना गुण एमां आवे छे, ते (म० ३१ ना १/६ पहेला प्रश्नमां) ब्रह्मनु मनन करतां करतां ब्रह्मना गुण एमां आवे छे एम कह्युं छे, ने ब्रह्मना गुण आवे त्यारे ते ब्रह्मरूप थाय त्यारे ते श्रीजीमहाराजनो कृपापात्र थयो पछी श्रीजीमहाराजनी कृपा थाय, ते [सा० ११ ना पहेला प्रश्नमां] आत्मसत्ताने पामे कहेतां श्रीजीमहाराजना तेजरूप आत्मा ते जेवो थाय छे, ते पछी अमे कृपा करीए त्यारे अमारा तुल्यपणाने कहेतां साधर्म्यपणाने पामे छे एम कह्युं छे, माटे साधन काळमां साधन करतां करतां अक्षरब्रह्म जे श्रीजीमहाराजनुं तेज ते रूप थाय, ने पछी श्रीजीमहाराजनी कृपा थाय त्यारे ते पुरुषोत्तमरूप थाय, माटे सिद्ध थया पछी तो पुरुषोत्तमनुंज साधर्म्यपणुं रहे छे, पण अक्षरनुं रहेतुं नथी केमके श्रीजीमहाराज जेवा दिव्य साकार छे तेवाज मुक्तपण दिव्यसाकार छे, माटे मूर्तिमान थया पछी मूर्तिमान पुरुषोत्तम श्रीस्वामिनारायण भगवाननुंज साधर्म्यपणुं रहे छे, पण निराकार श्रीजीमहाराजना तेजरूप अक्षरधामनुं साधर्म्यपणुं रहेतुं नथी, माटे अक्षरब्रह्मनुं साधर्म्यपणुं कह्युं छे ते साधनकाळनी वात छे.

इतिश्रीकच्छदेशे वृषपुरनिवासी अनादिमुक्तराज श्रीअबजीभाइविरचित साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम भगवान श्रीस्वामिनारायण मुखकमळनिःसृत वचनामृत रहस्यार्थप्रदीपिकायां मध्य प्रकरणं समाप्तम्.

॥ अथ वचनामृत वरताल प्रकरणम् ॥

संवत् १८८२ ना कार्तिक शुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री वरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना मंदिरथी उत्तरादि कोरे गोमतीजीने कांठे आंबावाडीयामां सिंहासन उपर गादि तकिया नखावीने विराजमान हता ने धोळो सुरवाळ ने धोळो अंगरखो पहेर्यो हतो अने गुढा रंगनो रेटो कमरे बांध्यो हतो ने माथा उपर कसुंबल रेटो सोनेरी तारना छेडावाळो बांध्यो हतो, ने खभे कसुंबल रेटो जरकसि छेडानो विराजमान हतो ने कंठने विषे गुलाबना पुष्पना हार विराजमान हता. ने माथा उपर गुलाबना पुष्पना तोरा विराजमान हता, ने भुजाओने विषे गुलाबना गजरा ने बाजुबंध बांध्या हता एवी शोभाने धरता थका उत्तरादे मुखारविंदे विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी वडोदरावाळा शोभाराम शास्त्रीए श्रीजीमहाराजने प्रश्न पुछ्यो जे (१) हे महाराज! मुमुक्षु होय ते ज्यारे निर्विकल्पसमाधिने पामे त्यारे ते गुणातीत थाय ने भगवाननो एकांतिक भक्त थाय त्यारे जेने निर्विकल्प समाधि न थाय तेनी शी गति थाय ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे प्राणनो निरोध थाय त्यारेज निर्विकल्प समाधि थाय एम नथी निर्विकल्पसमाधिनी रीत तो बीजी छे ते कहीए ते सांभळो जे श्रीमद्भागवतमां कह्युं छे जे ॥ अत्र सर्गो विसर्गश्च स्थानपोषणमूतयः । मन्वंतरेशानुकथानिरोधो मुक्तिराश्रयः ॥ ए श्लोकनो एम अर्थ छे जे विश्वना सर्ग विसर्गादिक जे नव लक्षण तेणे करीने जाण्यामां आवे एवुं आश्रयरूप जे श्रीकृष्णभगवाननुं स्वरूप तेने विषे जे मुमुक्षुनी अचळ मति थइ जेम आ आंबानुं वृक्ष छे ते एकवार दृढ करीने जाण्युं पछी काम व्यापे क्रोध व्यापे लोभ व्यापे तो पण कोइ रीते आंबाने विषे भ्रांति न थाय जे आंबानुं वृक्ष हशे के नहि होय. तेम जेने प्रत्यक्ष श्रीकृष्ण भगवानना स्वरूपनो दृढ निश्चय थयो ने तेमां कोइ जात्यनो कुतर्क न थाय तो ते पुरुषना प्राण लीन न थया होय तो पण निर्विकल्पसमाधि छे ने प्राण लीन थया होय तो पण निर्विकल्पसमाधि छे. (१) अने जेने आ भगवानना स्वरूपमां संकल्पविकल्प रहेता होय जे ब्रह्मपुरने १
विषे केवुं भगवाननुं स्वरूप हशे अने श्वेतद्वीप ने वैकुंठने विषे केवुं भगवाननुं स्वरूप हशे अने ते स्वरूपनुं क्यारे दर्शन थाशे एवी जातना संकल्प विकल्प कर्या करे पण प्रगट भगवान मळ्या तेनेज सर्वेना कारण जाणीने तेणे करीनेज पोताने कृतार्थ न माने अने एवाने जो दैव इच्छाए करीने समाधि थाय तो पण संकल्पविकल्प मटे नहि

अने समाधिमां जे जे देखाय तेथी नवुं नवुं जोवाने इच्छे पण मनना विकल्प मटे नहि एवो होय तेने समाधि छे तो पण सविकल्प छे ने समाधि न होय तो पण स-विकल्प छे माटे एवो होय ते गुणातीत एकांतिक भक्त न कहेवाय. अने जेने भगवा-नना स्वरूपनो दृढ निश्चय होय ने तेने समाधि छे अथवा नथी तोय पण तेने सदा निर्विकल्प समाधिज छे. (२) २

२ पछी दीनानाथ भट्टे प्रश्न पुछ्यो जे (२) मनना संकल्पविकल्प टाळवानो उ-पाय करे अने जो मनने न जिती शके तो तेनी शी गति थाय ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ज्यारे कौरवने ने पांडवने युद्ध करवानो प्रारंभ थयो त्यारे कौरव ने पांडव विचार्या जे आपणे एवे ठेकाणे युद्ध करीए जे ते युद्धमां जे कोइ मरे तो पण तेना जी-वनुं रुडुं थाय एवुं विचारीने कुरुक्षेत्रने विषे युद्ध कर्यों पछी जित्या तेनुं पण सारुं थयुं ने ए संग्राममां मराणा तेने पण देवलोकनी प्राप्ति थइ ने राज्यथकी पण अधिक सु-खने पाम्या. तेम जे मन साथे लडाइ आदरे अने जो मनने जिते तो निर्विकल्पस्थिति ने पामे ने भगवाननो एकांतिक भक्त थाय. (३) अने जो मन आगळ हारे तो ३ पण योगभ्रष्ट थाय ते पछी एक जन्मे अथवा बे जन्मे अथवा घणे जन्मे पण अंत्ये-जातो ए एकांतिक भक्त थाय पण एणे दाखडो कर्यों ते छुटी न पडे माटे बुद्धिमान होय तेने तो पोताना कल्याणने अर्थे मन साथे जरुर वैर बांधवुं पछी ए मनने जितशे तो पण सारुं छे ने ए मनथी हारशे तो पण योगभ्रष्ट थाशे तेमां अंत्ये जातां सारुं छे ते माटे जे कल्याणने इच्छे तेने तो मन साथे जरुर वैर बांधवुं.(४)इति व०॥१॥(२०१) ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के जे भक्तने अमारा आ प्रत्यक्ष मनुष्यरूपने विषे दिव्यभावनो दृढ निश्चय थाय तेना प्राण लीन न थया होय तोपण सदा निर्विकल्प समाधिज छे. अने ए गुणथी पर एवो एकांतिक भक्त छे. (१) अने धामने विषे अमारुं स्वरूप केवुं हशे ? अने ए स्वरूपनुं क्यारे दर्शन थशे ? एवा विकल्प रहे तेने समाधि होय तोय सविकल्प छे. (२) बीजामां अमारी आ प्रत्यक्ष मूर्तिने विषेथी मनुष्यभावना विकल्पने जिते, अने प्रतिमाने विषेथी प्रतिमाभावना विकल्पने जिते तो तेनुं आ जन्मेज कल्याण थाय. (३) अने विकल्प न जिते ते योगभ्रष्ट थाय, ने तेनुं जन्मांतरे कल्याण थाय छे. (४) वातो छे.

१ प्र० (२/४ बीजा प्रश्नमां) योगभ्रष्टनुं एक बे जन्मे कल्याण कह्युं, अने (प्र० ७०ना त्रीजा प्रश्नमां) फिकर न राखशो अमे सहाय करशुं एम कह्युं ते केम समजवुं ?

१ उ० आमां जेने भगवानना मनुष्य स्वरूपने विषे दिव्यभाव समजवामां खामी रहे तेने जन्म धरवानुं कह्युं छे, अने (प्र० ७० मां) श्रीजीमहाराजनी मनुष्यरूप मूर्तिने विषे दिव्यभाव तो थयेलो होय पण पंच विषय संबंधी संकल्प थता होय तेने कह्युं छे जे

अमे सहाय करशुं केम जे ते स्थूल देहे करीने पंच वर्त्तमान पाळे छे, अने वासना टाळवाना उपायमां मंडयो छे तेवामां देह पडी जाय तो तेनी भगवान रक्षा करे छे, अने जेने श्रीजीमहाराजना मनुष्य स्वरूपने विषे दिव्यभाव न थयो होय तेने तो जन्म धरीने ए अज्ञान टाळवुं जोइए. ॥२०१॥

संवत् १८८२ ना कार्तिक शुदि १३ तेरसने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री वरताल मध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना मंदिरथी उत्तरादि दिशे गोमतीजीने कांठे आंबाना दृक्षनी हेठे ढोलिया उपर विराजमान हता, अने पीळा तासतानो सुरवाळ पहेर्यो हतो, तथा राता किनखापनी डगली पहेरी हती, तथा मस्तक उपर जरकसि छेडानी कसुंबल पाघ बांधी हती, तथा जरकसि छेडानुं कसुंबल शेलुं खभे नाख्युं हतुं, अने पागने उपर चंपाना पुष्पना हार विराजमान हता, ने कंठने विषे धोळा पुष्पना हार विराजमान हता, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे कांइक प्रश्न उत्तर करो.

१ पछी गाम बुवाना पटेल कानदासजीए हाथ जोडीने पुछयुं जे (१) हे महाराज ! भगवान शे प्रकारे राजी थाय छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जो भगवाननो द्रोह न करीए तो भगवान राजी थाय, त्यारे कहेशो जे द्रोह ते शुं तो जे आ सर्वे जगत्ना कर्ता हर्ता भगवान छे तेने कर्ता हर्ता न समजीए ने विश्वना कर्ता हर्ता काळने जाणीए, अथवा मायाने जाणीए, अथवा कर्मने जाणीए, अथवा स्वभावने जाणीए, ए ते भगवाननो द्रोह छे, केम जे भगवान सर्वना कर्ता हर्ता छे, तेनो त्याग करीने केवळ काळ, कर्म, स्वभाव ने माया तेने जगतना कर्ता हर्ता कहे छे, माटे ए भगवाननो अति द्रोह छे, त्यां दृष्टांत जेम तमे गामना पटेल छो ते जे तमारी गाममां पटलाइ न रहेवा दे ते तमारो द्रोही कहेवाय, अने वळी जेम चक्रवर्ती राजा होय तेनो हुकम खोटो करीने जे राजा न होय तेनो हुकम चलावे तो ते पुरुष राजानो द्रोही कहेवाय, अने वळी जेम कोइक एवा कागळ लखी लखीने मेले जे अमारो राजा छे ते नाक, कान विनानो छे, अथवा हाथ, पग विनानो छे, एवी रीते राजानुं रूप संपूर्ण होय तेने खंडित करीने वर्णवे ते राजानो द्रोही कहेवाय, तेम भगवान छे ते करचरणादिक समग्र अंगे करीने संपूर्ण छे, ने लेश मात्र पण कोइ अंगे विकळ नथी अने सदा मूर्तिमानज छे, तेने अकर्ता कहेवा तथा अरूप कहेवा, ने भगवान विना बीजा जे काळादिक तेने कर्ता कहेवा एज भगवाननो द्रोह छे. एवी जातनो जे भगवाननो द्रोह तेने जे न करे तेणे संपूर्ण भगवाननी पूजा करी अने ते विना तो चंदन पुष्पादिके करीने पूजे छे तो पण भगवाननो द्रोही छे, माटे भगवानने जगतना कर्ता हर्ता जाणे

ने मूर्तिमान जाणे ते उपरज भगवान राजी थाय छे. (१) अने वेदमां तो भगवाननुं १
स्वरूप बहु रीते वर्णवीने नारायणे पोते पोताने मुखे कहुं छे पण ते कोइना समजवामां
आव्युं नहि, त्यारे सांख्य शास्त्रे करीने चोवीश तत्त्व कह्यां ने पचवीशमुं भगवाननुं स्व-
रूप कहुं ते सांख्यना आचार्य जे कपिलमुनि तेणे एम विचार्युं जे स्थूल सूक्ष्म ने कार-
ण तेने विषे जीव एकपणे करीने वर्ते छे अने एथी न्यारो जीव रही शकतो नथी. अने
ईश्वर छे ते पण पोतानी उपाधि जे वैराट् सूत्रात्मा ने अव्याकृत तेने विषे एकपणे वर्ते
छे, पण ते विना रही शकतो नथी, माटे सांख्य शास्त्रे जीवने ने ईश्वरने चोवीश तत्त्व
भेळाज गण्या छे अने पचवीशमा परमात्माने कह्या छे, अने योगशास्त्रना आचार्य जे
हिरण्यगर्भ ऋषि तेणे चोवीस तत्त्व कहीने पचवीशमो जीवने कह्यो छे तेमज समष्टिने
विषे पचवीशमा ईश्वरने कह्या छे अने परमात्माने छवीशमा कह्या छे. एवी रीते सांख्य
शास्त्र ने योगशास्त्र तेणे भगवाननुं स्वरूप कहुं तो पण साक्षात्कार भगवानना स्वरूपनुं
ज्ञान न थयुं, अने अनुमान प्रमाणे तो थयुं जे सांख्यने मते चोवीश तत्त्वथी पर छे
ते वस्तु सत्य छे, अने योगने मते चोवीश तत्त्वथी पर जीव ईश्वर छे ने तेथी पर पर-
मात्मा छे ते सत्य छे, एवी रीते परमात्माना स्वरूपनुं बेय शास्त्र वते अनुमान प्रमाणे
करीने ज्ञान थयुं, पण ते भगवान काळा छे के पीळा छे के लांबा छे के टुंका छे के
साकार छे के निराकार छे एवुं कांइ ज्ञान न थयुं. पछी पोते वासुदेव भगवाने पंच-
रात्र नामे तंत्र कर्युं, तेने विषे एम प्रतिपादन कर्युं जे श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम भगवान छे
ते पोताना अक्षरधामने विषे सदा दिव्य साकार मूर्तिमान रह्या छे, अने तेज भगवान
जे ते श्वेतद्वीपवासी जे अनंत निरन्न मुक्त तेमने पांच वखत पोतानुं दर्शन आपे छे,
तथा वैकुंठ लोकने विषे तेज भगवान चतुर्भुज मूर्ति थका लक्ष्मीजीए सहित छे ने ते
शंख चक्र गदा पद्मने धरी रह्या छे, तथा विष्वक्सेनादिक जे पार्षद तेमणे सेव्या छे
अने एज भगवान पूजवा योग्य भजवा योग्य ने पामवा योग्य छे अने तेज भगवान
रामकृष्णादिक अवतार धारण करे छे, अने वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध ए चतु-
र्व्यूह रूपे वर्ते छे, एवी रीते साकार मूर्तिनुं प्रतिपादन कर्युं छे. पछी तेज पंचरात्रतंत्रने
नारदजीए फरीने कर्युं तारे ते नारद पंचरात्र कहेवाणुं तेने विषे एवी रीते भगवानना
स्वरूपनुं प्रतिपादन कर्युं जे कोइ रीते संशय रह्यो नहि. अने तेज रीते शिवजीए पा-
शुपत शास्त्र कर्युं, तेने विषे पण अष्टभुज चतुर्भुज रूपे करीने श्रीनारायणना स्वरूप-
नुं वर्णन कर्युं छे ते माटे श्रीमद्भागवतमां कहुं छे, जे ॥ नारायण परावेदा देवा
नारायणाङ्गजाः । नारायणपरालोका नारायण परामखाः ॥ नारायणपरो योगो
नारायणपरंतपः । नारायण परंज्ञानं नारायणपरागतिः ॥ तथा ॥ वासुदेवपरावेदा

वासुदेवपरा मखाः । वासुदेव परायोगा वासुदेव पराःक्रियाः ॥ वासुदेवपरंज्ञानं वासुदेव परंतपः । वासुदेवपरो धर्मो वासुदेवपरा गतिः ॥ एवी रीते ए पांच शास्त्रे करीने श्रीकृष्ण नारायण वासुदेवना स्वरूपनुंज प्रतिपादन कर्युं छे अने ए पांच शास्त्रे करीने जे भगवानना स्वरूपने समजे तेज पुरो ज्ञानी कहेवाय जेम दुध छे तेने नेत्रे जुवे त्यारे धोळुं देखाय अने नाके सुंघे त्यारे सुगंधवान जणाय अने आंगळीए करीने अडे त्यारे टाडुं ऊनुं जणाय. अने जिव्हाए करीने चाखे तारे स्वादु जणाय, पण एक इंद्रिये करीने दूधना स्वरूपनुं संपूर्ण ज्ञान न थाय अने सर्वे इंद्रिये करीने तपासी जुवे त्यारे संपूर्ण ज्ञान थाय छे. तेम वेदादिक पांच शास्त्रे करीने भगवानना स्वरूपने समजे त्यारे संपूर्ण भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान थाय छे ने एम जाणवुं तेने संपूर्ण ज्ञान कहीए. अने भगवान पण एम समजेज राजी थाय छे पण परमेश्वरने राजी कर्यानो बीजो उपाय नथी. माटे एवी रीते समजे तेज पुरो ज्ञानी कहेवाय अने भगवान पण ते उपरज अतिशे राजी थाय छे. (२) इति वचनामृतम् ॥ २ ॥ (२०२) २

रहस्याय प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे तेमां अमने अरूप ने अकर्त्ता कहे ने अमारा विना बीजा काळादिकने कर्त्ता कहे ते अमारी चंदनपुष्पादिके पूजा करे, तोपण ते अमारो द्रोही छे, अने अमने मूर्तिमान ने सर्व कर्त्ता हर्त्ता समजे ते सेवा मानीए छीए ने राजी थइए छीए. [१] अने परोक्षशास्त्रने दृष्टांते करीने ते शास्त्रनां नामपूर्वक पोताना स्वरूपने समजवानी रीत कही छे, जे वेदमां भगवाननुं स्वरूप नारायणे कह्युं पण समजाय एवुं नथी अने सांख्यशास्त्रे चोवीश तत्त्वथी पर परमात्माने कह्या छे अने योगशास्त्रे तत्त्वथी पर जीव ईश्वरने कहीने तेथी पर परमात्माने कह्या छे, पण यथार्थ ज्ञान थयुं नथी, अने पंचरात्रशास्त्रे भगवानने साकार मूर्तिमान अक्षरधाममां पार्षदोए सहित छे. अने सर्व अवतारनुं धारण करे छे एम कह्युं छे माटे अमारा भक्तोए अमने जीव, ईश्वर, ब्रह्म, अक्षर, ते सर्वेथी पर समजवा ते सांख्य विचार जाणवो अने योगशास्त्र जीव, ईश्वरथी पर परमात्माने कहे छे तेम प्रधान पुरुष सुधी जीव अने मूळ अक्षर सुधी ईश्वरने तेथी पर अमारा तेजरूप ब्रह्म ते ब्रह्मथी पर अमने जाणीने अमारुं ध्यान करवुं,अने वेद कोइक भगवान छे एम कहे छे ते अमे आ प्रत्यक्ष छीए,एम जाणवुं.अने पंचरात्रशास्त्र सदा साकार ने सर्व कर्त्ता कहे छे तेवी रीते अमने सदा दिव्य साकार मूर्तिने सर्वेना कर्त्ता हर्त्ता ने सर्व अवतारो मात्रना अवतारी सर्वेने सुखदाता सर्वोपरी समजवा, अने अमारी भक्ति करवी अने अमारी प्रतिमानी पूजा आरती करवी ने थाळ जमाडवा, पोढाडवा एवी रीते सेवा करवी. आवी रीते समजे तेज ज्ञानी भक्त छे ने ते उपर अमे राजी थइए छीए, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (२) वातो छे.

१ प्र० पहेली वातमां काळकर्मादिकने कर्त्ता जाणे तेने द्रोही कह्यो ते केवी रीते समजे तो काळादिकने कर्त्ता जाण्या कहेवाय ?

१ उ० प्रलयना कर्ता काळने जाणे पण श्रीजीमहाराजनी प्रेरणाथी करे छे एम न जाणे तेणे काळने कर्ता जाण्यो कहेवाय, अने आ जगत्‌नी उत्पत्तिकर्ता मायाने जाणे पण श्रीजीमहाराजनी प्रेरणाथी करे छे एम न जाणे तेणे मायाने कर्ता जाणी कहेवाय. अने कर्मे करीनेज सुख दुःख भोगवाय छे, ने मोक्ष थाय छे, एम जाणे पण श्रीजीमहाराजने कर्मफळप्रदाता ने मोक्षकर्ता न जाणे तेणे कर्मने कर्ता जाण्युं कहेवाय. अने आ जगत्‌नी उत्पत्ति,स्थिति ने प्रलय ते स्वभाविकज थया करे छे एम जाणे पण तेना कर्ता श्रीजीमहाराजने न जाणे तेणे स्वभावने कर्ता जाण्यो कहेवाय.

२ प्र० बीजी बाबतमां वेदमां भगवाननुं स्वरूप नारायणे कह्युं छे एम कह्युं ते नारायण किया जाणवा ? अने भगवान किया जाणवा ?

२ उ० आ ठेकाणे मूळपुरुषने नारायण कह्या छे. अने तेमणे पोताना स्वरूपनुं वर्णन कर्युं छे, अने वेदमां तेमनेज भगवान कह्या छे.

३ प्र० वासुदेव भगवाने पंचरात्र तंत्र कर्युं एम कह्युं ते वासुदेव किया जाणवा ? अने तेमणे श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम भगवान कह्या ते भगवान किया जाणवा ? अने तेमनुं अक्षरधाम कह्युं ते कियुं जाणवुं ?

३ उ० मूळपुरुषना उपरि जे वासुदेवब्रह्म छे तेमणे पंचरात्रतंत्र कर्युं छे. अने श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम भगवान ते पोतानेज कह्या छे. अने (अ० ७/१ मां) जे ब्रह्मपुर नामे धाम कह्युं छे तेनेज आ ठेकाणे अक्षरधाम नामे कह्युं छे. अने एज वासुदेव पोते ब्रह्मपुरमां रह्या थका निरन्न मुक्तोने श्वेतद्वीपमां पांच वखत दर्शन आपे छे, अने रामकृष्णादिक अवतारनुं धारण करे छे, अने वासुदेवादिक चतुर्व्यूह रूपे वर्ते छे एम कह्युं छे तेतो महत्तत्त्व जे वासुदेव ने तेथी उत्पन्न थया जे अनिरुद्ध, प्रद्युम्न, संकर्षण ते रूपे थाय छे एटले तेमां अंतर्यामीशक्तिद्वारे प्रवेश करे छे एम कह्युं छे, अने वासुदेव कोने कोने कहेवाय छे ? तेनो खुलासो (पं० २ ना ४ प्रश्नोत्तरमां) छे.

४ प्र० वासुदेव ब्रह्मने श्रीकृष्णथीपर ने तेना कारण आमां तो कह्या पण बीजे क्यां कह्या हशे ?

४ उ० (का० १० ना ३/४ पहेला प्रश्नमां) प्रकृति पुरुषथी पर ब्रह्म कह्या छे ते वासुदेवने कह्या छे ने (लो० १२ ना पहेला प्रश्नमां) श्रीकृष्ण जेवा श्रीजीमहाराजने जाणे तेनो निर्विकल्पमां कनिष्ठ निश्चय कह्यो छे, अने श्वेतद्वीपपति वासुदेव जेवा जाणे तेने निर्विकल्पमां मध्यम कह्यो छे. अने (पं० ६/१ मां) श्रीकृष्णना अवतारी वासुदेवने कह्या छे. अने एमनुं धाम गोलोक धामथी पर ब्रह्मपुर नामे (अ० ७/१ मां) कह्युं छे, माटे वासुदेव ब्रह्म श्री कृष्णना अवतारी, कारण ने नियंता छे.

५ प्र० नारायण नामे कोने कोने कहेवाता हशे ?

५ उ० विष्णुथी लइने वैराज पुरुष, प्रधानपुरुष, मूळपुरुष, नरनारायण, वासुदेव, मूळअक्षर ए सर्वेने नारायण कहेवाय, अने सर्वेना स्वामी श्रीजीमहाराज छे, माटे श्रीजीमहाराजने स्वामिनारायण कहेवाय छे.

६ प्र० बीजी बाबतमां वासुदेव भगवाने पंचरात्र शास्त्र कर्युं तेमां वासुदेवनुंज प्रतिपादन

छे एम कह्युं अने पछीथी पांच शास्त्र श्रीकृष्णनुं प्रतिपादन करे छे एम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

६ उ० पाछळथी पण श्रीकृष्णनारायण अने वासुदेवनुं प्रतिपादन ए पांच शास्त्र करे छे एम मेळे कह्युं छे तेमां पंचरात्र वासुदेवनुं प्रतिपादन करे छे, ने बीजां चार शास्त्र श्रीकृष्णनुं प्रतिपादन करे छे एम समजवुं ॥ २०२ ॥

संवत् १८८२ ना कार्तिक वदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीवरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना मंदिरमां सिंहासन उपर विराजमान हता. ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. ने कंठने विषे गुलाबना पुष्पना हार धारण कर्या हता. अने मस्तकने विषे पाघमां तोरा विराजमान हता. अने पोताना मुखार-विंदनी आगळ मुनि मंडळ समस्त तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) आपणा उद्धव संप्रदायने विषे ज्ञान, वैराग्य, धर्म ने भगवाननी भक्ति ए चार वानां जेमां होय ते एकांतिक भक्त कहेवाय अने आपणा सत्संगमां मोटो करवा योग्य पण तेज छे. ने ए चार संपूर्ण न होय ने एकज मुख्यपणे करीने होय तो पण त्रण जे बाकी रह्यां ते एकना पेटामां आवी जाय एवुं एक कियुं ए चारेमां श्रेष्ठ छे ? त्यारे गोपाळानंदस्वामीए तथा मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे हे महाराज ! एवो तो एक धर्म छे ते धर्म होय तो त्रणे वानां ते पुरुषमां आवे त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे धर्म तो केटलाक विमुख माणस होय, तेमां पण होय माटे तेने शुं सत्संगमां मोटो करशुं ? पछी ए वात सांभळीने कोइथी उत्तर देवाणो नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जो महात्म्ये सहित भगवाननी भक्ति होय ने आत्मनिष्ठा, धर्म ने वैराग्य ए सामान्यपणे होय तो पण कोइ दिवस ए धर्ममांथी पडे नहि केम जे जे भगवाननुं महात्म्य जाणतो होय ते तो एम विचारे जे भगवाननी आज्ञाने विषे ब्रह्मादिक समग्र देव रह्या छे ते भगवाननी आज्ञा हुंथी केम लोपाय ? एम जाणीने भगवानना नियममां निरंतर रहे. (१) १

२ त्यारे शुकमुनिए पुछ्युं जे (२) ज्यारे एक महात्म्ये सहित भक्तिए करीने संपूर्ण थाय त्यारे एक भक्तिज केम न कही ने चार वानां शा सारुं कह्यां ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे अतिशे महात्म्ये सहित भक्ति भगवानने विषे होय तो एक भक्तिने विषे त्रणे आवी जाय. अने सामान्य भक्ति होय तो एकमां त्रण न आवे माटे चार वानांये सहित जे भक्ति ते जेमां होय ते एकांतिक भक्त कहेवाय एम कह्युं छे अने एवी असाधारण भक्ति तो पृथुराजाने हती ते भगवाने वर देवालुं कह्युं त्यारे भगवाननी कथा सांभळ्या सारु दश हजार कान माग्या पण बीजुं कांइ न माग्युं अने जे गोपियोने रासक्रीडामां न आवा दीधी ते देह मुकीने श्रीकृष्ण पासे गइ एवी असा-

चारण भक्ति होय तो ज्ञानादिक त्रणे एक भक्तिमां आवी जाय. (२) २
३ त्यारे ब्रह्मानंदस्वामीए पुछ्युं जे (३) एवी असाधारण भक्ति शे उपाये करीने आवे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे मोटा पुरुषनी सेवा थकी आवे छे ते मोटा पुरुष पण चार प्रकारना छे. एक तो दीवा जेवा, ने बीजा मशाल जेवा, ने त्रीजा विजळी जेवा, ने चोथा वडवानळ अग्नि जेवा. तेमां दीवा जेवा होय ते तो विषयरूपी वायुए करीने ओलाइ जाय, ने मशाल जेवा होय ते पण तेथी अधिक विषयरूपी वायु लागे तो तेणे करीने ओलाइ जाय. ने विजळी जेवा जे होय ते तो मायारूपी वर्षादने पाणीए करीने पण न ओलाय, अने वडवानळ अग्नि जेवा होय ते तो जेम वडवानळ समुद्रमां रहे छे पण समुद्रना जळनो ओलाव्यो ओलातोज नथी, अने समुद्रना जळने पीने मूळद्वारे काढी नाखे छे ते पाणी मीठुं थाय छे तेने मेघ लावीने संसारमां वृष्टि करे छे तेणे करीने नाना प्रकारना रस थाय छे, तेम एवा जे मोटा पुरुष छे ते समुद्रना जळ जेवा खारा जीव होय तेने पण मीठा करी नाखे छे. एवी रीते ए चार प्रकारना जे मोटा पुरुष कह्या तेमां जे विजळीना अग्नि जेवा तथा समुद्रना अग्नि जेवा मोटा पुरुष छे तेमनी सेवा जो पोत पोताना धर्ममां रहीने मनक्रम वचने करे तो ते जीवना हृदयमां महात्म्ये सहित भक्ति आवे छे. ते विजळीना अग्नि जेवा तो भगवानना एकांतिक साधु छे अने वडवानळ अग्नि जेवा तो पोते भगवान छे एम जाणवुं. (३) ३
इति वचनामृतम् ॥ ३ ॥ (२०३)

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (३) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे जेने अमारी महात्म्ये सहित भक्ति होय ने आत्मनिष्ठा धर्म ने वैराग्य ए त्रण सामान्य होय तोपण ते धर्ममांथी पडे नहि. माटे त्रणथी भक्ति श्रेष्ठ छे, (१) बीजामां एवी असाधारण भक्तिमां ज्ञानादिक त्रणे आवी जाय छे. (२) त्रीजामां चार प्रकारना पुरुष छे तेमां विजळी तथा वडवानळ जेवा पुरुषनी सेवाथी असाधारण भक्ति आवे छे. (३) वातछे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां श्रीगोपाळानंदस्वामीए तथा मुक्तानंदस्वामीए धर्म होय तो त्रणे ते पुरुषमां आवे एवो उत्तर कर्यो ते एतो अनादि मुक्त हता तेमणे एवो उत्तर केम कर्यो हशे?

१ उ० श्रीगोपाळानंदस्वामीए तथा मुक्तानंदस्वामीए भागवतधर्म होय तो ज्ञान, वैराग्य ने भक्ति ए त्रणे एमां आवी जाय एम उत्तर कर्यो छे, पण भागवतधर्म न बोल्या ने बाधे भारे धर्म बोल्या तेथी कोइकने सामान्य धर्म समजाय ते साह श्रीजीमहाराजे फरीथी उत्तर करीने धर्मने निर्बळ करी बताव्यो ने भक्ति होय तो धर्मादिक त्रण आवे एम कह्युं ते भक्ति ने भागवत धर्म ते एकज छे. माटे श्रीजीमहाराजना तथा तेमना उत्तरमां फेर नथी.

२ प्र० श्रीगोपाळानंदस्वामीए तथा श्रीमुक्तानंदस्वामीए भागवत धर्मने अधिक कह्यो होय तो श्रीजीमहाराजे आशंका करी त्यारे अमे भागवत धर्म कह्यो छे एम बोल्या केम नहि?

२ उ० ए बेय मुक्त दासत्व भक्तिना अंगवाळा छे ते श्रीजीमहाराज उत्तर करवा लाग्या तेथी वचमां न बोल्या केमजे मोटा वात करता होय त्यारे वचमां न बोलवुं ए दासनो धर्म छे माटे न बोल्या.

३ प्र० त्रीजा प्रश्नमां दीवा जेवा ने मशाल जेवा विषयरूपी वायुए करीने ओलाइ जाय एम कह्युं ते केवा विषयमां लेवाय ते दीवा जेवा कहेवाय, अने केवा विषयमां लेवाय ते मशाल जेवा कहेवाय ?

३ उ० स्त्री, द्रव्य, स्नान, पान, आदिक पदार्थोनो संबंध थयो थाय तेने भोगववानो कोइक वखत संकल्प थइ जाय ते दीवा जेवा कहेवाय. अने एवा पदार्थोना योगमां सदाय रहेता थका पण तेने भोगववानो संकल्प थाय नहिं, पण बळात्कारे नियम मुकावे एवा आपत्कालमां मनुष्योनो झाझो प्रसंग होय तो तेने भोगववानो मनमां संकल्प थइ जाय ते मशाल जेवा कहेवाय. अने जो देहे करीने आज्ञा विरुद्ध भोगवे तो ते दीवा जेवा पण न कहेवाय, केमके श्रीजीमहाराजे धर्मामृत, निष्काम शुद्धि, शिक्षापत्री, आदिकमां कहेलां वर्तमानना प्रबंध प्रमाणे न वर्ते तेतो मोटा पुरुष कहेवायज नहि, अने मायारूपी वर्षाद्ने पाणीए करीने न ओलाय एटले मायाना कार्यमां जळ कमळवत् रहे अने तेमां भुंडा देशकाळादिके करीने पण लेवायज नहि, अने एना समागम करनाराने पण पोता जेवा निर्वासनिक करीने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने विषे हेत करावे ने बीजे बधेथी लुखा करे ते एकांतिक विजळी जेवा कहेवाय. अने महा अधम जीवने पण संकल्प मात्रमां निर्वासनिक करीने श्रीजीमहाराजने सुखे सुखीया करे ते सिद्धदशावाळा परमएकांतिक तथा अनादि ते वडवानळ जेवा कहेवाय.

४ प्र० आमां वडवानळ जेवा तो पोते भगवान छे एम कह्युं अने तमे तो त्रीजा प्रश्नोत्तरमां सिद्धदशावाळा परम एकांतिक तथा अनादि मुक्तने वडवानळ जेवा कह्या तेनो शो हेतु हशे ?

४ उ० श्रीजीमहाराजना साधर्म्यपणाने पामेला सिद्धमुक्त छे ते श्रीजीमहाराजना जेवाज समर्थ छे ते (प्र० ६२ ना पहेला प्रश्नमां) भगवानना कल्याणकारी गुण आवे छे. पछी जेम भगवान सर्व प्रकारे निर्बंधने पहाय ते करवा समर्थ छे तेम ते भक्त समर्थ ने निर्बंध थाय छे, तथा (सा० ११ ना पहेला प्रश्नमां) भगवानना तुल्यपणाने पामे छे ने भगवानना जेवोज स्वतंत्र थाय छे तथा (प्र० $\frac{१}{५}$ मां) मुक्तने पोतानी मूर्तिमो कही छे तथा (म० ६ मां) मुक्तोने पोताना सरखा कह्या छे. माटे आ ठेकाणे वडवानळ जेवा तो पोते भगवान छे एम कह्युं छे तेतो पोताना मुक्तोनो महिमा कह्यो छे, जे अमारा सिद्धदशावाळा मुक्त छे तेतो जेवा अमे छीए तेवाज छे, एम समजवानुं छे पण वडवानळ जेवा पोते श्रीजीमहाराज छे एम न समजवुं जो एम समजीए तो श्रीजीमहाराज पण सत्पुरुष ठर्या माटे एम नथी. श्रीजीमहाराज तो ए मुक्तपणुं नित्य तेना ने स्वामीने आधार छे, ने एमने मुक्तना दाता छे ने सत्पुरुष तो

श्रीजीमहाराजना दास छे, ने सुखना भोक्ता छे पण श्रीजीमहाराजनी पेठेज जीवोनां आत्यंतिक कल्याण करवा समर्थ छे, ते माटे पोता तुल्य कह्या छे; माटे वडवानळ जेवा तो पोते भगवान छे एम कह्युं ते जेवा भगवान छे तेवाज ते मोटा पुरुष छे एम कह्युं छे. ॥२०३॥

संवत् १८८२ ना मागशर शुदि १० दशमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीवरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना मंदिरमां विराजमान हता, ने अंगने विषे सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे प्रश्न उत्तर करो.

१ त्यारे मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे [१] भक्ति मार्गने विषे प्रवर्त्यो एवो जे भगवाननो भक्त तेने एवुं एक साधन ते कियुं छे जे एक साधनने कर्या थकी जेटलां कल्याणने अर्थे साधन छे ते सर्वे ते एक साधनने विषे आवी जाय ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे बत्रीश लक्षणे युक्त एवा जे संत तेनो जे संग ते मन क्रम वचने करीने
राखे तो जेटलां कल्याणने अर्थे साधन छे, तेटलां सर्वे ते संतना संगमां आवी जाय छे.(१) १

२ एम उत्तर करीने पछी श्रीजीमहाराज प्रश्न पुछता हवा, जे (२) भगवाननो एकांतिक भक्त एवो जे योगी होय ते सांख्यशास्त्र ने योगशास्त्र ए बेयनो मत एक वासुदेव नारायण पर छे एम जाणे, माटे ते योगी किये प्रकारे भगवानना स्वरूपमां वृत्ति राखे ? अने केम पोताना मनने चलावे ? ने ते मन भेळी केम मूर्तिने राखे ? अने ते केवी रीते अंतरमां वृत्ति राखे ? ने केवी रीते बारणे वृत्ति राखे ? अने निद्रारूपी लय ने संकल्प विकल्प रूपी विक्षेप ते थकी केइ योगनी कळाए करीने जुदो पडे ? एनो उत्तर कहो. पछी मुक्तानंदस्वामीए तथा गोपाळानंदस्वामीए जेवुं आवड्युं तेवुं कह्युं पण कोइ थकी उत्तर थयो नहि, पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेम जळनो फुवारो होय तेने योगे करीने घुमरी खाइने जळ उंचु उछळे छे, तेम अंतःकरणरूपी जे फुवारो तेने विषे जीवनी वृत्ति छे, ते घुमरी खाइने पंच इद्रियद्वारे उछळे छे तेने जे योगी होय ते बे प्रकारे करीने एक वृत्तिए करीने तो पोताना हृदयने विषे साक्षीरूपे रह्या एवा जे श्रीवासुदेव भगवान तेनुं चिंतवन करे, अने बीजी वृत्ति छे तेने तो दृष्टिद्वारे करीने बहार राखे, अने ते वृत्तिए करीने बहार भगवाननुं चिंतवन करे, ते पण नखशिखापर्यंत समग्र मूर्तिनुं भेळुंज चिंतवन करे पण एक एक अंगनुं जुदुं जुदुं चिंतवन न करे, जेम मोटुं मंदिर होय तेने एक सामटुं भेळुंज जुवे, तथा जेम मोटो पर्वत होय तेने एक सामटो भेळो ने भेळोज जुवे. एवी रीते भगवानना स्वरूपने जुवे पण एकुकुं अंग न जुवे, अने ते मूर्तिने ज्यारे पोतानी दृष्टि आगळ छेटे धारे ने ते मूर्तिने पडखे बीजुं कांइक पदार्थ देखाय तो ते मूर्ति छेटे धारी छे तेने टुकडी लावीने पोतानी नासिका-

मा अग्रनी उपर ए मूर्तिने राखे, एम करतां पण आसपास कांइक पदार्थ जणाय तो पोतानी भ्रकुटीना मध्यने विषे मूर्तिने धारे, एम करतां जो आळस के निद्रा जेवुं जणाय तो वळी मूर्तिने दृष्टि आगळ छेटे धारे, पछी जेम छोकरां पतंगने उडाडे छे तेवी रीते मूर्तिरूपी पतंगने पोतानी वृत्ति रूपी जे दोरी तेणे करीने मूर्तिने उंची चडावे, अने वळी पाछी हेठे लावे अने अडखे पडखे डोलावे एवी रीते योगकळाए करीने ज्यारे सचेत थाय, त्यारे वळी पाछी मूर्तिने नासिकाने अग्रे धारे ने त्यांथी भ्रकुटीमां लावीने हृदयने विषे मूर्तिने उतारे, अने अंतरने विषे साक्षी रूप जे मूर्ति अने बहारनी मूर्ति ए बेयने एक करे, पछी अंतःकरणनी बे प्रकारे वृत्ति होय ते एक थइ जाय छे, एम करतां जो आळस के निद्रा जेवुं जणाय तो वळी बे प्रकारे वृत्तिने करीने मूर्तिने बहार लावे, एवी रीतेज श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, रसना ने घ्राण ते द्वारे पण योगकळा साधे अने तेमज मन, बुद्धि, चित्त ने अहंकार ते द्वारे पण भगवाननी मूर्तिने धारे, अने इंद्रियो ने अंतःकरण ए सर्वेने सांख्य विचारे करीने जुदां करीने एकला चैतन्यने विषेज भगवाननी मूर्तिने धारे अने ते भगवाननी मूर्तिने अंतरमां के बहार धारी होय, अने ते समे कोइक व्यवहार संबंधी विक्षेप आडो आवे तो ते विक्षेपनुं पण मूर्तिने धारवापणे करीनेज समाधान करे, पण विक्षेपने विषे पण पोतानी योगकळानो त्याग न करे एवी रीतनी योगकळाए युक्त ए योगी वर्ते छे. [२] इति २ वचनामृतम्. ॥ ४ ॥ (२०४)

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे बत्रीश लक्षणेयुक्त एवाजे अमारा संत तेमनो मन, क्रम वचने संग राखे तो तेना संगमां सर्वे साधन आवी जाय. (१) बीजामां वृत्तिने बे प्रकारे करीने एक वृत्तिए हृदयने विषे अमारी मूर्तिनुं चिंतवन करवुं, ने बीजी वृत्तिए नेत्र आगळ छेटे अमारी मूर्तिने धारीने चिंतवन करवुं, अने मूर्तिने अडखे पडखे बीजुं पदार्थ देखाय तो नासिकाग्र मूर्ति धारवी, एम करतां अडखे पडखे पदार्थ देखाय तो भ्रकुटीना मध्ये धारवी, अने आळस निद्रा आवे तो मूर्ति छेटे धारवी ने ढुकडी लाववी ने अडखे पडखे धारवी पछी सचेत थवाय त्यारे नासिकाग्र लाववी ने भ्रकुटीमां लावीने हृदयमां उतारवी, अने बे वृत्तियो होय ते एक करवी एम करतां आळस निद्रा आवे तो मूर्ति बहार लाववी एवी रीते ज्ञान इंद्रियोद्वारे अमारी मूर्ति धारवी, पछी चैतन्यमां धारवी तेमां व्यवहारिक विक्षेप आवे तो मूर्ति धारवी पडी मुकवी नहिं ए योगकळाए करीने अमारी मूर्ति धारवानो उपाय छे (२) बावतो छे.

१ प्र० बीजा प्रश्नमां ज्ञान इंद्रियोए करीने मूर्ति धारवानी कही ते ज्ञान इंद्रिये करीने श्रीजीमहाराजने केवी रीते धारवा ?

१ उ० श्रीजीमहाराज गाता गाता आवे छे एम काने करीने धारवा ने कान द्वारे मूर्तिने हृदयमां उतारवी, अने श्रीजीमहाराजने मळुंछुं एम त्वचाए करीने धारवा, अने त्वचा द्वारे प्रेमे

करीने हृदयने विषे उतारवा, अने श्रीजीमहाराज छेटेथी महा तेजोमय मूर्त्ति चाल्या आवे छे एम नेत्रद्वाराए धारवा अने नेत्रद्वाराए करीने हृदयमां उतारवा, अने श्रीजीमहाराज भारे भारे भोजन जमे छे ने मने प्रसादी आपे छे ते हुं जमुं छुं एम धारवा, ने एम धारतां धारतां जिव्हा-द्वारे हृदयमां उतारवा, अने श्रीजीमहाराज भारे वस्त्र धरेणां तथा पुष्पना हार तथा अत्तर चंदन तेणे गरकाव थका आवे छे तेनो सुगंध आवे छे, एम घ्राण इंद्रिये धारवा अने ते घ्राण इंद्रिय द्वारे हृदयमां उतारवा अने चित्तमां चिंतवन करवुं, मनमां मनन करवुं, बुद्धिमां निश्चय करवो, अने हुं एमनो छुं ने ए मारा छे एवुं अहंकारे करीने अहंपणुं लाववुं. एम सर्वे इंद्रियोद्वारे श्रीजीमहाराजने पोताना हृदयमां उतारवा.

२ प्र० मूर्तिने धारवापणे करीने व्यवहारिक विक्षेपनुं समाधान करवुं एम कह्युं ते मूर्तिने धारवापणे समाधान केवी रीते करवुं ?

२ उ० ज्यारे व्यवहारिक विक्षेप आवे त्यारे एम विचारवुं जे आपणे तो मूर्तिज धारवी ने व्यवहार तो जेम थवानो हशे तेम थशे एम विक्षेपनुं समाधान करवुं पण विक्षेप भेळुं भळवुं नहिं ने मूर्ति मुकवी नहिं ए समाधान जाणवुं. ॥ २०४ ॥

संवत् १८८२ ना मागशर वदि ४ चतुर्थीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीवरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना मंदिरथी उत्तर दिशे गोमतीजीने कांठे आंबाना वृक्ष हेठे वेदी उपर ढोलियाने विषे उत्तराद्दे मुखारविंदे विराजमान हता अने अति सूक्ष्म एवां श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठने विषे गुलाबना पुष्पना हार घणाक धारण कर्या हता, अने श्रवण उपर मोटा बे बे गुलाबना पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता. अने पाघने विषे गुलाबना पुष्पना तोरा विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि मंडळ समग्र तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे वांकडां वांकडां प्रश्न करो जे जेणे करीने सौनी आळस उडी जाय एम कहीने पोते आथमणी कोरे उसीकुं करीने पडखाभर थया.

१ पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे [१] ॥ दैवीह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया । मामेवये मपद्यंते मायामेतांतरंतिते ॥ ए श्लोकमां श्रीकृष्णभगवाने एम कह्युं छे जे जे पुरुष मुने पामे ते दुःखे करीने पण न तराय एवी जे मारी गुणमयी माया तेने तरे छे त्यारे जेने भगवाननी प्राप्ति थइ छे तेने भगवाननुं भजन करतां थकां कांइक अंतरमां संकल्प विकल्पनो विक्षेप थइ आवे छे तेने माया विना बीजुं कोण क-रतुं हशे ? ए प्रश्न छे. पछी श्रीजीमहाराज पोढ्या हता ते बेठा थइने अति करुणाये भिना थका बोलता हवा जे मायाना त्रण गुण छे तेमां तमोगुणनां तो पंचभूत ने पंच मात्रा छे अने रजोगुणनां दश इंद्रियो ने प्राण छे अने सत्त्वगुणनां चार अंतःकरण ने इंद्रि-यो अंतःकरणना देवता छे ते जे जे भक्त थइ गया छे ते सर्वेमां ए त्रण गुणनां का-

र्यरूप जे भूत, इंद्रियो, अंतःकरण ने देवता ते सर्वे हतां माटे एनो एम उत्तर छे जे परमेश्वरने यथार्थपणे करीने परमेश्वर जाण्या जे ए भगवानना स्वरूपने विषे कोइ प्रकारे मायिकभाव नथी अने ए भगवान तो माया ने मायानुं कार्य जे त्रण गुण ते थकी पर छे एवो जेने भगवाननो दृढ निश्चय थयो ते भगवाननी मायाने तरी चुक्यो छे. अने पोतामां तो मायाना गुणनुं कार्य जे भूत इंद्रियो,अंतःकरण ने देवता ते पोत पोतानी क्रियाने विषे प्रवर्ते छे तोपण ए मायाने तर्यो कहेवाय केमजे ए मायानुं कार्य पोताने विषे तो होय पण पोताने भजन करवा योग्य एवा जे प्रगट प्रमाण श्रीवासुदेव भगवान तेने तो ए मायाना गुणथी पर समझे छे माटे एने पण मायाथी परज जाणवो अने ब्रह्मादिक देवने वसिष्ठ, पराशर, विश्वामित्रादिक ऋषि ए सर्वेमां गुणनो प्रवेश जणाणो छे ते शास्त्रमां पण लख्युं छे माटे ते शुं मुक्त न कहेवाय ? ने मायाने तर्या न कहेवाय ? सर्वे मुक्त छे ने सर्वे मायाने तर्या छे अने एम जो उत्तर न करीए तो ए प्रश्ननुं समाधान थाय नहि माटे एज उत्तर छे. (१) १

२ पछी नित्यानंदस्वामीए पुछ्युं जे (२) हे महाराज ! भगवानने आशरे जावुं ते आशरानुं शुं रूप छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे भगवाने गीतामां कह्युं छे जे ॥ सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज । अहंत्वां सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि माशुचः ॥ ए श्लोकमां एम कह्युं छे जे बीजा सर्व धर्मनो परित्याग करीने मारे एकनेज शरणे आव्य तो हुं तुने सर्व पापथकी मुकावीश, तुं शोक मां करय, अने एवो जे भगवाननो दृढ आश्रय तेे जेने होय तेने महा प्रलय जेवुं दुःख आवी पडे तोपण ते दुःख थको रक्षानो करनारो भगवान विना बीजाने न जाणे अने जे जे पोताने सुख जोइतुं होय तेपण भगवान थकीज इच्छे पण प्रभु विना बीजाने सुखदायक न जाणे ने प्रभुनी जेम मरजी होय ते प्रमाणेज वर्त्ते एवो जे होय ते प्रभुनो शरणागत जीव कहेवाय ने तेज भगवाननो अनन्य भक्त कहेवाय. (२) २

३ पछी नाजेभक्ते पुछ्युं जे [३] जेने परिपूर्ण भगवाननो आशरो न होय ने बोल्यामां तो नकी हरिभक्त होय तेना जेवुंज निश्चयनुं बळ देखाडतो होय ते शी रीते करीने कळयामां आवे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे भगवानना भक्तनो सरस नरस निश्चय होय ते तो भेळा रह्या थकी अने भेळो व्यवहार कर्या थकी जेवो होय तेवो कळाइ आवे छे. पछी जेने थोडो निश्चय होय ते कचवाइने सत्संगना भीडामांथी भाग दइने एकांत पकडीने जेवुं थाय तेवुं भजन करे पण हरिभक्तनी भिसणमां रहेवाय नहि माटे भगवाननो आशरो पण उत्तम, मध्यम ने कनिष्ठ ए त्रण प्रकारनो छे अने तेणे करीने भक्त पण त्रण प्रकारना छे. (३) ३

४ पछी वळी नित्यानंदस्वामीए प्रश्न पुछ्यो जे, [४] ए कनिष्ठ होय ते मटीने आ जन्मने विषेज उत्तम भक्त थाय के न थाय ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेम भगवाननी मानसी पूजा करे तेमज जे उत्तम हरिभक्त होय तेनी पण भगवाननी प्रसादीए करीने भगवान भेळी मानसी पूजा करे अने जेम भगवानने अर्थे थाळ करे तेमज उत्तम जे भगवानना भक्त तेने अर्थे पण थाळ करीने तेने जमाडे अने जेम भगवानने अर्थे पांच रुपैयानुं खरच करे तेमज ते मोटा संतने अर्थे पण खरच करे एवी रीते भगवान ने उत्तम लक्षणवाळा, जे संत तेनी अति प्रेमे करीने सरखी सेवा जे करे तो ते कनिष्ट भक्त होय ने ते बे जन्मे तथा चार जन्मे, तथा दश जन्मे के सो जन्मे करीने उत्तम भक्त जेवो थानारो होय ते आने आ जन्मे करीने उत्तम भक्त थाय छे. एवुं भगवान ने ते भगवानना भक्त तेनी सरखी सेवा कर्यानुं फळ छे.(४)इ०व०॥५॥(२०५) ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (४) चार छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमने मायाथी पर जाणे तो ते भक्त मायाथी पर थाय छे. (१) बीजामां महाप्रलय जेवुं दुःख आवे के दीर्घ रोगादिक तथा राजा संबंधी नात्य संबंधी एवा घणाक प्रकारनां दुःख ने उपद्रव आवे तोपण अमारा विना कोइने रक्षानो करनारो जाणे नहि, ने अमारी मरजी प्रमाणे वर्ते ते अमारो शरणागत छे. (२) त्रीजामां जेने अमारो निश्चय थोडो होय तेनाथी सत्संगना भीडामां रहेवाय नहिं. (३) चोथामां अमारी ने अमारा उत्तम लक्षण वाळा संतनी सरखी सेवा करे तेना उपर सोगणा राजी थइने सोजन्मनी कसर आ जन्मेज टाळीए छीए. (४) बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां अमने मायाथी पर जाणे तेमां मायानुं कार्य होय तोपण ते मायाने तरी चुक्यो छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं. अने (प्र० २४ ना ३ पहेला प्रश्नमां) अमारो यथार्थ महिमा समजाय तो भुंडा घाट मात्र टळी जाय एम कह्युं ते केम समजवुं? अने श्रीजीमहाराजे वांकडां प्रश्न पुछवानुं कह्युं ते वांकडुं प्रश्न केवी रीते जाणवुं ?

१ उ० आमां श्रीजीमहाराजने मायाथी पर दिव्य जाणे पण जेवा छे तेवो यथार्थ महिमा न जाणे ने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां अखंड वृत्ति राखवानो अभ्यास न होय तेवा काचा भक्तने कह्युं छे जे अमने दिव्य जाणे छे, तो अंत वखते दिव्य थशे एवुं पोताना प्रतापनुं बळ बताव्युं छे, अने (प्र० २४ मां) यथार्थ महिमा तथा ज्ञान तेणे सहित अखंड श्रीजीमहाराजमां वृत्ति राखतो होय तेवा पाका भक्तनी वात कही छे अने श्रीजीमहाराजे वांकडां प्रश्न पुछवानुं कह्युं त्यारे मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे तमे कहो छो के अमने पामे ते मायाने तरे त्यारे तमारा भक्तने माया विक्षेप केम करे छे अर्थात् तमे भक्तनी मायाने टाळता केम नथी एम टींखळ कर्युं ते वांकडुं कहेवाय त्यारे श्रीजीमहाराजे पण पूर्वेना भक्तो ब्रह्मा, वसिष्ठादिकने विषे मायानो संबंध हतो तोपण ते मायाने तर्या कहेवाय छे तेम आज पण अमारा भक्तने मायाना गुण व्यापता होय पण अमने मायाथी पर जाणे छे तो ते

भक्तने पण मायाने तर्या जाणवा एम रमुज करीने समाधान कर्युं छे.

२ प्र० बीजा प्रश्नमां श्रीकृष्ण ने अर्जुनने दृष्टांते श्रीजीमहाराजनो आशरो करवामां त्याग करवा योग्य सर्व धर्म कह्या ते किया जाणवा ?

२ उ० जेम हिमराजशाना परिवारने नातीलाए नात्य बहार मुक्या हता तथा आ गामना रतना भक्तने राजाए तथा नातीलाए गाममांथी काढी मुक्या हता, एवां दुःख आवे तथा मा, बाप, स्त्री, पुत्रादिक सगां संबंधी गुरु अंतराय करे देहमां दीर्घ रोग आवे व्यवहारमां दुःख आवे ने आजीविका तुटी जाय एवां घणां दुःख आवे तोपण श्रीजीमहाराजनो आशरो मुकवो नहि, अने श्रीजीमहाराज विना बीजा कोइ देव देवीने सुखदायी जाणवा नहि, ने श्रीजी-महाराजनी मरजी प्रमाणे जे सुख दुःख आवे तेने टाळवा इच्छवुं नहिं अने ज्यारे ज्यारे धर्मनो नाश थाय छे त्यारे त्यारे भगवान प्रकट थाय छे तेम आ समे श्रीजीमहाराज एकांतिक धर्म स्थापन करवा प्रगट थया छे, माटे जेम श्रीकृष्ण भगवान प्रकट थया त्यारे गोपी गोवाळे रामचंद्रजीनो आशरो मुकीने श्रीकृष्ण भगवाननो आशरो कर्यो, तेम श्रीजी-महाराजनो आशरो करवामां प्रथम जेनो आशरो कर्यो होय ते केम मुकी देवाय एवी आशंका करवी नहि, पण पंच वर्त्तमान संबंधी धर्मनो त्याग करवो नहि, ते [लो० ६ ना १७/२६ सत्तरमा प्रश्नमां] अमारा भेळां स्त्रियोनां दर्शन थतां होय त्यां अमे बेसारीए तोपण न बेसवुं एम कह्युं छे, अने एमांज (१३/२६ तेरमा प्रश्नमां) जेम श्रीकृष्णे अश्वत्थामाने मार-वानुं वचन कह्युं ते अर्जुने न मान्युं तेम अमारुं वचन अधर्म जेवुं होय तो न मानवुं एम कह्युं छे, माटे अगीयार नियम संबंधी वचन सिवायना बीजा मने मानेला धर्म होय ते मुकी देवा तथा श्रीजीमहाराज विना बीजा कोइने कर्त्ता जाण्या होय ते धर्म मुकी देवा.

३ प्र० चोथा प्रश्नमां अमारी ने उत्तम लक्षणवाळा भक्तनी सरखी सेवा करवी एम श्रीजी-महाराजे कह्युं ते केवा होय ते उत्तम लक्षणवाळा जाणवा ?

३ उ० (छे० ३५ ना ५/२ पांचमा प्रश्नमां) छो लक्षण कह्यां छे तथा (प्र० ७७ ना त्रीजा प्रश्नोत्तरमां) साधुनां बत्रीश लक्षण कह्यां छे तेणे युक्त होय तथा (व० ३ ना त्रीजा प्रश्नोत्तरमां) विजळी जेवा तथा वडवानळ जेवा मोटा पुरुष कह्या छे तेवा जाणवा. ॥२०५॥

संवत् १८८२ ना मागशर वदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री वरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना मंदिर आगळ मंच उपर बिराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. ने कंठने विषे पुष्पना हार धारण कर्या हता ने पाघने विषे पुष्पना तोरा लटकता हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी चिमनरावजीए प्रश्न पुछयो जे [१] हे महाराज ! जीव ज्यारे प्रथम कारण शरीरे युक्त थका मायाने विषे हता त्यारे एमने कर्म विनानुं स्थूळ शरीर केम थइ आव्युं ? अने जो कर्म एने हतां एम कहीए तो जेम जीव अनादि छे तेम कर्म पण

अनादि थाय त्यारे तो जैनना जेवो मत थायछे माटे कर्मविना जीवने स्थूळ देहनी प्राप्ति केइ रीते छे ? ए प्रश्न छे. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे एकलुं काळनुंज बळ कहे ते पण प्रमाण नहिं ने एकलुं कर्मनुं बळ कहे ते पण प्रमाण नहिं ने एकलुं परमेश्वरनुं बळ कहे ते पण प्रमाण नहिं ए तो ज्यारे जेनुं प्रधानपणुं होय ते समे शास्त्रमां तेनुंज प्रधान पणुं कह्युं होय पण सर्वे ठेकाणे एनुं ए लेवुं नहिं अने ज्यारे जेवी परमेश्वरनी इच्छा होय त्यारे तेवुंज काळनुं सामर्थ्य प्रवर्ते छे ते काळे करीने परमेश्वर जे ते जीवना देह, इंद्रिय, मन, प्राणने सृजे छे. पछी तो जे जीव जेवुं कर्म करे तेने तेवा देहनी प्राप्ति थाय छे. (१) ते ज्यारे प्रथम आ विश्व रच्युं त्यारे प्रथमनो जे सत्ययुग तेने विषे सर्वे मनु- १
ष्यना संकल्प सत्य थाता अने सर्वे ब्राह्मणज हता. अने मनमां संकल्प धारे त्यारे संकल्प मात्रे करीने पुत्रनी उत्पत्ति थाती अने सौने घेर कल्पवृक्ष हतां अने जेटलां मनुष्य हतां ते सर्वे परमेश्वरनुं भजन करतां अने ज्यारे त्रेतायुग आव्यो त्यारे मनुष्यना संकल्प सत्य रह्या नहिं ज्यारे कल्पवृक्ष हेठे जाय त्यारे सत्य संकल्प थाय अने स्त्रीनो स्पर्श करे त्यारे पुत्रनी उत्पत्ति थाय.अने ज्यारे द्वापर युग आव्यो त्यारे स्त्रीनो अंग संग करे त्यारे पुत्रनी उत्पत्ति थाय,एवी रीतनोजे सत्ययुग,त्रेतायुगनो स्वभाव ते सर्वे सत्ययुग त्रेता युगमां न होय एतो प्रथम सत्ययुग ने प्रथम त्रेतायुग हता तेमां हतुं एवी रीते ज्यारे काळ बळवान प्रवर्ते त्यारे कर्मना सामर्थ्यने न्यून करी नाखे छे अने ज्यारे अतिशे दुर्भक्ष वर्षे आवे त्यारे सर्वे प्रजाने दुःख आवे अथवा मारे लडाइ थाय त्यारे लक्षावधि माणस एक काळे मराइ जाय छे त्यारे शुं वधायनुं एक मेळे कर्म खुटी रह्युं?ए तो काळनीज अतिशे सामर्थि छे तेणे कर्मना बळने हठावी दीधुं माटे ज्यारे बळवान काळनो वेग प्रवर्ते त्यारे कर्मनो मेळ रहे नहिं कर्ममां सुख लख्युं होय ते दुःख थइ जाय ने कर्ममां जीववुं लख्युं होय ते काळे करीने मरी जाय, एवी रीते ज्यारे बळवान काळनो वेग होय त्यारे काळे करीनेज सर्व थाय छे एम शास्त्रमां लख्युं होय, अने ज्यारे घणाक मनुष्य भगवानना एकांतिक भक्त थाय छे त्यारे कळियुगने विषे पण सत्ययुग थाय छे, ए ठेकाणे एकांतिक भक्तना जे भगवाननी भक्ति संबंधी कर्म तेनुंज जोर शास्त्रमां कह्युं होय, पण काळनुं जोर कह्युं न होय ते वार्ताने जाण्याविना नास्तिक मतवाळा छे ते कर्मनेज सर्व कर्त्ता कहे छे पण एम नथी जाणता जे एतो भगवानना एकांतिक जे भक्त तेना कर्मनुं सामर्थ्य कह्युं छे पण विमुख जीवना कर्मनुं एवुं सामर्थ्य कह्युं नथी अने ज्यारे भगवान एवो संकल्प धारीने प्रगट थाय छे जे आ देहे करीने तो पात्र कुपात्र जे जे जीवने मारी मूर्तिनो योग थाय ते सर्वनुं कल्याण करवुं छे त्यारे काळनुं ने कर्मनुं कांइ सामर्थ्य रहे नहिं त्यारे तो एकलुं परमेश्वरनुंज सामर्थ्य रहे छे ते ज्यारे भगवाने कृपा-

अवतार धार्यो त्यारे महापापणी जे पूतना तेणे भगवानने झेर पायुं तेने श्रीकृष्ण भगवाने पोतानी माता जे यशोदाजी ते बरोबर गति आपी अने बीजा पण महापापी दैत्य हता ते भगवानने मारवा आव्या हता तेने पण श्री कृष्णभगवान परमपद आपता हवा ने बीजा पण जे जे भावे करीने श्रीकृष्ण भगवानना संबंधने पाम्या ते सर्वेनुं कल्याण कर्युं माटे ए ठेकाणे तो परमेश्वरनुंज बळ अतिशे कह्युं छे पण काळनुं के कर्मनुं कांइ सामर्थ्य नथी कह्युं माटे जे ठेकाणे जेवुं प्रकरण ते ठेकाणे तेवुं जाणवुं एवी रीते ज्यारे प्रथम विश्व रच्युं त्यारे कर्मविनाज परमेश्वरनी इच्छाये काळे करीने जीवने स्थूळ देहनी प्राप्ति थइ अने ते पछी जेम जेम युग पलटाता गया त्यारे जेवां जेणे कर्म कर्यां तेने तेवा तेवा देहनी प्राप्ति थाती गइ. (२) इतिवचनामृतम् ॥ ६ ॥ (२०६) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे प्रथम कर्म विना जीवने काळद्वारे अमे स्थूळ देह आपीए छीए. पछी जेवां कर्म करे तेवा देहनी प्राप्ति थाय छे. (१) अने कर्मथी काळनुं बळ विशेष छे अने काळथी अमारा एकांतिक भक्तनां अमारी भक्ति संबंधी कर्मनुं बळ विशेष छे, ने एकांतिक भक्तनां भक्ति संबंधी कर्मथी अमारुं बळ अधिक छे. (२) बावतो छे. ॥ २०६ ॥

संवत् १८८२ ना मागशर वदि १४ चौदशने दिवस श्रीजीमहाराज श्रीवरताल मध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना मंदिरनी आगळ मंच उपर विराजमान हता, ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने हरिभक्त परस्पर भगवद्वार्ता करता हता, तेमां एवो प्रसंग निसर्यो जे दैवीने आसुरी ए बे प्रकारना जीव छे तेमां दैवी जीव होय ते तो भगवानना भक्तज थाय, ने आसुरी होय ते तो भगवानथी विमुखज रहे. त्यारे चिमनरावजीए श्रीजीमहाराजने
१ प्रश्न पुछयो जे (१) हे महाराज! आसुरी जीव होय ते कोइ प्रकारे दैवी थाय के न १
थाय? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे आसुरी जीव तो दैवी नज थाय, एनुं तो बीजज असुर छे, अने जो कोइक रीते करीने आसुरी जीव सत्संगमां आवी पड्यो, तोपण आसुरभाव तो टळे नहिं, पछी सत्संगमां रह्यो थकोज ज्यारे शरीरने मुके त्यारे ब्रह्मने विषे लीन थाय, ने वळी पाछो निकळे एम अनंतवार ब्रह्ममां लीन थाय ने पाछो निसरे त्यारे एनो आसुरभाव छे ते नाश पामे, पण ते विना तो आसुरभाव नाश पामे नहिं. (१) १
२ पछी शोभाराम शास्त्रीए पुछ्युं जे (२) हे महाराज! भगवाननुं अन्वयपणुं केम छे? ने व्यतिरेकपणुं केम छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे अन्वय व्यतिरेकनी वार्ता तो एम छे जे भगवान अर्धांक मायाने विषे अन्वय थया छे, ने अर्धांक पोताना धामने विषे व्यतिरेक रह्या छे एम नथी, ए तो भगवाननुं स्वरूपज एवुं छे, जे मायामां

अन्वय थया थका पण व्यतिरेकज छे,पण भगवानने एम बीक नथी जे रखे हुं मायामां जाउं ने अशुद्ध थइ जाउं,भगवानतो मायाने विषे आवे त्यारे माया पण अक्षर धामरूप थइ जाय छे,अने चोवीश तत्त्वने विषे आवे तो चोवीश तत्त्व पण ब्रह्मरूप थइ जाय छे, तेश्रीमद्भागवतमां कह्युं छे जे।।धाम्नास्वेन सदा निरस्त कुहकं सत्यं परंधीमहि।।इत्यादिक अनंत वचने करीनेभगवानना स्वरूपनुं प्रतिपादन कर्युं छे,अने जेम वृक्षनुं बीज होय तेमां पण आकाश छे, पछी ए बीजमांथी वृक्ष थयुं त्यारे ते वृक्षनां डाळ,पांदडां, फुल, फळ,ए सर्वेने विषे आकाश अन्वय थयो, पण ज्यारे वृक्षने कापे त्यारे वृक्ष कपाय ते भेळो आकाश कपाय नहि,अने वृक्षने बाळे त्यारे आकाश बळे नहि, तेम भगवान पण माया ने मायानुं कार्य तेने विषे अन्वय थया थका पण आकाशनी पेठे व्यतिरेकज छे, एम भगवानना स्वरूपनुं अन्वय व्यतिरेकपणुं छे. (२) इतिवचनामृतम् ।।७।। (२०७) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [२] छे, तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे आसुरी जीव सत्संगमां आवे तो ते ब्रह्ममां अनंतवार लीन थाय, ने निकळे त्यारे आसुर भाव नाश पामे. (१) बीजामां अमे मायाने मायाना कार्यमां अन्वय थया थका आकाशनी पेठे व्यतिरेकज छीए [२] बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां आसुरी जीव ब्रह्ममां लीन थाय ने निकळे एम कह्युं ते ब्रह्ममांथी तो निकळाय नहिं एम (प्र० ६४/५ मां) कह्युं छे ते केम समजवुं ?

१ उ० आ ठेकाणे श्रीजीमहाराजना भक्तने ब्रह्मनी मूर्तियो कह्या छे तेने घेर अनंतवार जन्म धरे त्यारे ते दैवी थाय ते (म० ६३/६ मां) कह्युं छे.

२ प्र० बीजा प्रश्नमां अमे मायाने विषे तथा तत्त्वने विषे आवीए त्यारे ए माया आदिक अक्षरधाम रूप थइ जाय छे एमश्रीजीमहाराजे कह्युं ते मायाने विषे केवी रीते आवता हशे ?

२ उ० अग्निनी ज्वाळा लोढाने विषे आवे छे त्यारे ते लोढुं अग्निनुं काम करे छे, तेम मायाने विषे तथा तत्त्वने विषे श्रीजीमहाराज अंतर्यामी रूपे प्रवेश करे त्यारे ते द्वारे पोते उत्पत्त्यादिक करे छे अने ज्यारे ए कार्य थइ रहे एटले प्रलय थाय त्यारे ते माया तथा तत्त्व ते जेवां होय तेवां रहे छे, जेम लोढामांथी अग्नि निकळी जाय त्यारे ते लोढुं प्रथम जेवुं होय तेवुं रहे छे ते [पं० ७/२ मां] कह्युं छे जे जेने विषे अमे प्रवेश करीए छीए तेना प्रकाशने ढांकीने अमारो प्रकाश प्रगट करीए छीए एम कह्युं छे. ।। २०७ ।।

संवत् १८८२ ना पोष शुदि ४ चोथने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री वरताल मध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना मंदिरनी आगळ मंच उपर विराजमान हता, ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

अने मुनि दुकड सरोदा लइने कीर्तन गावता हता,ते समे श्रीजीमहाराज अंत

दृष्टि करीने ध्यान मुद्राए युक्त थइने थोडीकवार दर्शन दीधां ने पछी नेत्रकमळने उघा-
१ डीने सर्वे सभा सन्मुख जोइने बोल्या जे [१] हवे सर्वे सांभळो वात करीए छइए
जे आ नेत्रनी जे वृत्ति ते अरूप छे, तोपण ते वृत्तिने आडुं कांइक स्थूळ पदार्थ आवे
त्यारे ते वृत्ति रोकाय छे, माटे ए वृत्ति पण स्थूळ छे, ने पृथ्वी तत्त्व प्रधान छे, ने ते
वृत्तिने ज्यारे परमेश्वरनो भक्त परमेश्वरना स्वरूपमां राखे छे त्यारे ते वृत्ति प्रथम तो
पातळी दोरडीनी पेठे पीळी भासे छे, अने जेम करोळियो होय ते पोतानी लाळने एक-
स्थंभथी बीजा स्थंभ सुधी लांबी करे पछी ए करोळियो क्यारेक तो आ स्थंभ उपर जाय
ने कयारेक ओ स्थंभ उपर जाय, ने क्यारेक बे स्थंभने मध्ये बेसे तेम करोळियाने
ठेकाणे जीव छे, ने एक स्थंभने ठेकाणे भगवाननी मूर्ति छे, अने बीजा स्थंभने ठेकाणे
पोतानुं अंतःकरण छे,ने लाळने ठेकाणे वृत्ति छे ते द्वारे करीने ध्याननो करनारो जे योगी
ते क्यारेक तो भगवानना स्वरूप संघाथे संलग्न थइ रहे छे, ने क्यारेक तो अंतःकरण
ने विषे रहे छे, ने क्यारेक तो अंतःकरणने भगवान तेना मध्ये रहे छे एम वर्ततां थकां
पृथ्वीतत्त्व प्रधान एवी जे पीळी वृत्ति ते ज्यारे जळ तत्त्व प्रधान थाय त्यारे श्वेत ज-
णाय,ने ज्यारे अग्नि तत्त्व प्रधान थाय त्यारे रक्त जणाय,ने ज्यारे वायु तत्त्व प्रधान
थाय त्यारे नीली जणाय,ने ज्यारे आकाश तत्त्व प्रधान थाय त्यारे श्याम जणाय,पछी
पंच भूतनुं प्रधानपणुं मटीने वृत्ति निर्गुण थाय,त्यारे अतिशे प्रकाशे युक्त जणाय छे,ने भ-
गवानना स्वरूपने आकारे थाय छे,माटे एवी रीते जे भगवानना स्वरूपमां वृत्ति राखतो
होय तेने अतिशे पवित्रपणे रहेवुं, जेम देवने पूजवाने तत्पर थाय ते देव सरखो पवित्र
थइने जो देवनी पूजा करे त्यारे तेनीज पूजाने देव अंगीकार करे छे, तेम परमेश्वरने
विषे वृत्ति राखतो होय तेने पण सांख्य शास्त्रनी रीते करीने स्थूल,सूक्ष्मने कारण ए
त्रण देहथी पोतानुं स्वरूप न्यारुं जाणीने केवळ आत्मारूप थइने परमेश्वरना स्वरूपने
विषे वृत्ति राखवी, एम वृत्ति राखतां राखतां ज्यारे ए वृत्ति भगवानना स्वरूपमां लीन
थइ जाय एज ध्यान करनारा योगीने निद्रा कही छे,पण सुषुप्तिमां लीन थावुं एवी
ए योगीने निद्रा होय नहि. (१) इतिवचनामृतम् ॥८॥ (२०८) १

रहस्यार्थ० प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे, तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारो
भक्त प्रथम अमारी मूर्तिमां वृत्ति राखे त्यारे पंच भूतना आकारे ते वृत्ति भासे छे पछी
वृत्ति निर्गुण थाय त्यारे श्वेत तेजोमय थाय छे, ने पछी अमारी मूर्तिने आकारे थाय
छे, एवी रीते अमारे विषे वृत्ति राखतां राखतां अमारे विषे लीन थइ जाय एटले एक
मूर्तिज देखाय बीजुं कांइ देखाय नहि ते योगीनी निद्रा छे. (१) बाबत छे ॥ २०८ ॥

संवत् १८८२ ना पोष शुदि ८ अष्टमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महा-
राज श्री वरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना मंदिरनी आगळ मंच उपर गादी तकिया

बिछावीने विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां,अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे मुनि मंडळ समस्त प्रत्ये प्रश्न पुछयो जे (१) राजसी तामसीने सात्विकी ए त्रण प्रकारनुं जे मायिक सुख ते जेम त्रण अवस्थाने विषे जणाय छे, तेम निर्गुण एवुं जे भगवान संबंधी सुख ते केम जणाय छे ? पछी ए प्रश्ननो उत्तर मुनिमंडळ समस्त मळीने करवा मांडयो पण एनुं समाधान थयुं नहिं, पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे पृथ्वी आदिक चार भूत विना एकलोज आकाश होय, अने जेटला आकाशने विषे तारा छे तेटला चंद्रमा होय, ने तेनो जेवो प्रकाश थाय, तेवो चिदाकाशनो प्रकाश छे अने ते चिदाकाशने मध्ये सदाय भगवाननी मूर्ति विराजमान छे, ते मूर्तिने विषे ज्यारे समाधि थाय त्यारे एक क्षण मात्र भगवानना स्वरूपमां स्थिति थइ होय, ते भजनना करनाराने एम जणाय जे हजारो वर्ष पर्यंत में समाधिने विषे सुख भोगव्युं. एवी रीते भगवानना स्वरूप संबंधी जे निर्गुण सुख ते जणाय छे, अने जे मायिक सुख छे ते बहु काळ भोगव्युं होय तोपण अंते क्षण जेवुं जणाय छे,माटे भगवानना स्वरूप संबंधी जे निर्गुण सुख छे ते अखंड अविनाशी छे, ने जे मायिक सुख छे ते नाशवंत छे. (१) इतिवचनामृतम् ॥९॥ (२०९) १

रहस्यार्थ० प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारा तेजरूप चिदाकाशने मध्ये अमे सदाय विराजमान छीए ते अमारे विषे समाधिए करीने क्षणमात्र स्थिति थाय तो ते समाधिवाळाने हजारो वर्ष सुख भोगव्युं एम लागे एवुं अमारुं निर्गुण सुख छे, अने मायिक सुख नाशवंत छे. [१] बाबत छे. ॥ २०९ ॥

संवत् १८८२ना पोष शुदि ११एकादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री वरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना दरबारमां लिंबडाना वृक्ष हेठे पाट उपर गादीतकिया नखावीने विराजमान हता अने अंगने विषे सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां अनेपोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

ते समयमां गाम भादरणना कोइक पाटीदार आव्या तेणे श्रीजीमहाराज प्रत्ये
१ प्रश्न पुछयो जे (१) हे महाराज ! जीवनुं कल्याण केम थाय? पछी श्रीजीमहाराजे कह्युं जे आ पृथ्वीने विषे राजारूप ने साधुरूप ए बे प्रकारे भगवानना अवतार थाय छे. तेमां राजारूपे ज्यारे पृथ्वी उपर प्रगट थाय त्यारे तो ते ओगणचाळीश लक्षणे युक्त होय अने ज्यारे साधुरूपे पृथ्वी उपर प्रगट थाय त्यारे तो बत्रीश प्रकारने लक्षणे युक्त होय अने ज्यारे राजारूपे भगवान होय ते तो चोसठ प्रकारनी कळाये युक्त होय तथा साम, दान, भेद, दंड ए चार प्रकारना जे उपाय तेणे युक्त होय तथा शृंगार आदिक

जे नव रस तेणे युक्त होय. अने ते भगवान ज्यारे साधुरूपे होय त्यारे तेमां ए लक्षण होय नहि अने जे राजारूपे भगवान होय तेने जो आपत्काळ आव्यो होय तो मृगयाकरीने पण जीवे अने चोर होय तेने गर्दन पण मारे अने घरमां स्त्रियो पण राखे अने साधुरूपे भगवान होय ते तो अतिशे अहिंसापर वर्ते ते निला तृणने पण तोडे नहिं अने काष्ठनी तथा चित्रामणनी स्त्रीनो पण स्पर्श करे नहि माटे साधुरूपे जे भगवाननी मूर्ति ने राजारूपे जे भगवाननी मूर्ति ए बेनी रीति एक होय नहि अने श्रीमद्भागवतना प्रथम स्कंधने विषे पृथ्वी ने धर्मना संवादे करीने राजारूप जे श्रीकृष्णादिक भगवानना अवतार तेनां ओगणचाळीस लक्षण कह्यां छे अने एकादश स्कंधने विषे श्रीकृष्णभगवानने उद्धवना संवादे करीने साधुरूप जे दत्तात्रेय कपिल आदिक भगवानना अवतार तेनां त्रिंश लक्षण कह्यां छे.[१] माटे जेने पोतानुं कल्याण इच्छवुं तेने ते लक्षणे करीने ते १
भगवानने ओळखीने ते भगवानने शरणे थावुं.अने तेनो दृढ विश्वास राखवो ने तेनी आज्ञामां रहीने तेनी भक्ति करवी एज कल्याणनो उपाय छे. अने भगवान ज्यारे पृथ्वीने विषे प्रत्यक्ष न होय त्यारे ते भगवानना मळेला जे साधु तेनो आश्रय करवो तो ते थकी पण ए जीवनुं कल्याण थाय छे. अने ज्यारे एवा साधु पण न होय त्यारे भगवाननी प्रतिमाने विषे दृढ प्रतीति राखवी ने स्वधर्ममां रहीने भक्ति करवी ते थकी पण जीवनुं कल्याण थाय छे. (२) इति वचनामृतम् ॥ १० ॥ (२१०) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [१] छे तेमां श्रीजीमहाराजे राजारूपे ने साधुरूपे पोताना अवतार थाय छे तेनां लक्षण कह्यां छे, (१) अने अमे पृथ्वीने विषे मनुष्य रूपे प्रगट थया छीए, ते अमने ओळखीने अमारो आशरो करे तेनुं कल्याण थाय छे, अने अमे पृथ्वी उपर मनुष्यरूपे विचरता न होइए त्यारे अमने मळेला एटले अमारा धाममांथी आवेला मुक्त मळे तेनो आशरो करे तो कल्याण थाय, अने एवा मुक्त मनुष्यरूपे न होय त्यारे अमारी प्रतिमाने विषे प्रतीति राखीने भक्ति करे तो मोक्ष थाय एम कह्युं छे. (२) बाबतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां राजारूपे ने साधुरूपे भगवान प्रगट थाय छे एम कह्युं ते राजारूपे केवी रीते जाणवा ? अने साधुरूपे केवी रीते जाणवा ?

१ उ० भगवान पृथ्वीने विषे प्रगट थइने गृहस्थना आश्रममां रहे ते राजारूपे जाणवा. अने त्यागीना आश्रममां रहे ते साधुरूपे जाणवा. पण साधुने भगवान न जाणवा एतो भगवान पोतेज प्रगट थइने त्यागीने वेषे विचरता होय तेज साधुरूप जाणवा.

२ प्र० बीजी बाबतमां प्रतिमाथी मुक्तने विशेष कह्या ते केम समजवुं ?

२ उ० फक्त श्रीजीमहाराजनुं ज्ञान समजवा माटे प्रतिमाथी मुक्तने विशेष कह्या छे, पण ध्यान भजन करवानुं कह्युं नथी. ॥ २१० ॥

संवत् १८८२ ना पोष शुदि १५ पुन्यमने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री वरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना दरबारमां लिंबडाना वृक्ष हेठे पाट उपर गादी तकिया नखावीने विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठने विषे श्वेत पुष्पना हार पहेर्या हता.ने कर्णनी उपर पुष्पना गुन्छ खोश्या हता,ने पाघने विषे पुष्पना तोरा लटकता हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि मंडळ समस्त तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्याजे (१)अमारो तो एवो स्वभाव छे जे एकतो भगवान,
ने बीजा भगवानना भक्त, ने त्रीजा ब्राह्मण,ने चोथो कोइक गरीब मनुष्य,ए चारथी
तो अमे अतिशे बीए छीए जे रखे एमनो द्रोह थइ जाय नहिं ने एवा तो बीजा कोइथी
अमे बीता नथी. केमजे ए चार विना बीजानो कोइक द्रोह करे तो तेना देहनो नाश
थाय, पण जीव नाश पामे नहिं अने ए चारमांथी एकेनो जो द्रोह करे तो तेनो जीव
पण नाश पामी जाय छे. (१) १
२ ए वात सांभळीने मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछयो जे [२] हे महाराज ! जीव
तो अविनाशी कह्यो छे तेनो नाश ते केम जाणवो ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे
पर्वतनुं के बीजुं एवुंज जे कोइक जड देह आवे तेमां कोइ काळे जीवनुं कल्याण थाय
नहि एटले एना जीवनो नाश थइ गयो एम जाणवुं. [२] माटे जेने पोतानुं कल्याण २
इच्छवुं तेने ए चारमांथी कोइनो द्रोह न करवो अने वळी भगवान के भगवानना भक्त
ते आगळ कोइ प्रकारे मान राखवुं नहिं केमजे मान छे तेतो क्रोध, मत्सर ईर्ष्याने द्रोह
एनो आधार छे अने मानी होय तेनी भक्ति पण आसुरी कहेवाय अने भगवानना
भक्तने जो बिवरावतो होय ने ते प्रभुनो भक्त होय तोपण तेने असुर जाणवो अने
अमारो तो ए स्वभाव छे जे ब्राह्मणनो ने गरिबनो ने भगवानना भक्तनो कोइक द्रोह
करे ते तो अमने दीठोज गमे नहि अने आ लोकमां ने परलोकमां तेने ने अमारे
सोबत रहेवानी नथी. एटली वार्ता करीने पछी श्रीजीमहाराजे बे पद गवराव्यां जे ॥
॥मारा हरजीशुं हेत न दिसेरे तेने घेर शिद जइए॥एक तो ए ने बीजुं जे॥ मारा वा-
लाजी शुं वालप दिसेरे तेनो संग केम तजीये॥अने पछी ए बे पद शिख्यानी सत्संगी मा-
त्रने आज्ञा करीने एम कह्युंजे एबे पदमां वार्ताछे तेने नित्य गाइने संभारीराखवी. (२) ३
एम कहीने श्रीजीमहाराज श्रीलक्ष्मीनारायणना मंदिर आगळ एक मंच हतो ते
३ उपर आवीने विराजमान थया पछी गोपाळानंदस्वामीए पुछ्युं जे (३) आ संसारने
विषे जे पंडित छे ते शास्त्रपुराण सर्वे वांचे छे पण तेने भगवानना ने संतनो जेम छे
तेम महिमा केम समझातो नथी ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे शास्त्रपुराण वांचे छे

तो खरा पण एने भगवाननो आशरो नथी माटे काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या, मत्सर तेणे एना जीवने हरवि नाख्यो छे अने कामादिक जे शत्रु ते एने कोइ काळे माथुं उपाडवा देता नथी. पछी ते पंडित पोतानी पेठेज भगवानने भगवानना संतने समझे जे जेम अमारा कामादि शत्रु कोइ काळे निवृत्ति पामता नथी तेम एना पण कामादिक शत्रु निवृत्ति नहिं पामता होय एम भगवानने भगवानना संतने विषे दोष समझे माटे शास्त्रपुराण वांचे पण एने भगवान के भगवानना संततुं जेम छे तेम यथार्थ महात्म्य समझातुं नथी. (४) ४

पछी श्रीजीमहाराजे दीनानाथ भट्ट तथा मुनि मंडळ समस्त प्रत्ये प्रश्न पुछयो जे
४ (४) ब्रह्मस्वरूप एवा जे सत्पुरुष ते तो त्रण शरीरने त्रण अवस्था ते थकी पर वर्तता होय अने चौदे इंद्रियोनी क्रिया ते पोताने विषे एके मानता न होय तेने अज्ञानी जीव छे ते ओळखी शके नहि ने ज्यारे एने मोटा पुरुषना सरखी स्थिति थाय त्यारे ए मोटा पुरुष जेम वर्ते छे ते सत्य मनाय अने ज्यां सुधी ए सत्पुरुषनो महिमा एने न जणाय त्यां सुधी ब्रह्मस्वरूपने विषे स्थिति पण न थाय अने आत्माने विषे स्थिति थया विना सत्पुरुषनो महिमा पण न जणाय. माटे परस्पर विरोध आव्यो ते विरोध टळे ते उपाय कहो ? पछी जेनी जेवी नजर पुगी तेणे तेवो उत्तर कर्यो पण ए प्रश्नतुं समाधान थयुं नहिं पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे उत्तर करीए एनो उत्तर तो ए छे जे पृथ्वीने विषे जे भगवाननो अवतार तेमने मळेला जे संत ते संघाथे ज्यारे एने अतिशे प्रीति थाय त्यारे ए सत्पुरुषने विषे एने कोइ प्रकारे दोष भासे नहि, अने जेने जे संघाथे दृढ हेत होय तेने तेनो अवगुण कोइ प्रकारे आवेज नहिं अने तेनां वचन पण सत्य मनाय. एवीरीते लौकिक मार्गमां पण रीति छे अने कल्याणना मार्गमां पण ए रीति छे माटे सत्पुरुषने विषे दृढ प्रीति एज आत्मदर्शनतुं साधन छे,अने सत्पुरुषनो महिमा जाण्यातुं पण एज साधन छे अने परमेश्वरतुं साक्षात् दर्शन थवातुं पण एज साधन छे. [५] इतिवचनामृतम् ॥११॥ (२११) ५

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (४) चार छे, तेमां पहेलुं कृपावाक्य छे, तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारो, अमारा भक्त, ब्राह्मण ने गरीब एमांथी कोइनो द्रोह करे तेनो जीव नाश पामे. (१) बीजामां कोइ काळे कल्याण न थाय एवो जड देह आवे, ते जीवनो नाश जाणवो. (२) अने क्रोध, मत्सर ने ईर्ष्यातुं आधार मान छे, अने मानीनी भक्ति आसुरी छे.[३] त्रीजामां अमारे विषे ने भक्तने विषे दोष परठे ते शास्त्र,पुराण वांचे तोपण अमारुं महात्म्य समजी शके नहि. (४) चोथामां सत्पुरुषने विषे प्रीति एज आत्मदर्शनतुं ने मुक्तनो महिमा जाण्यातुं, ने अमारुं दर्शन थवातुं साधन छे. (५) बावतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां भगवान, भक्त, ब्राह्मण, ने गरीबनो द्रोह करे तेनो जीव नाश पामे एम कह्युं ते द्रोह केवी रीते थतो हशे ?

१ ह० श्रीजीमहाराजने निराकार तथा अकर्त्ता जाणे ने तेमनी बांधेली जे पंचवर्त्तमान संबंधी आज्ञा ते न पाळे ते श्रीजीमहाराजनो द्रोह कर्यो कहेवाय. अने आज्ञा यथार्थ पाळता होय ने ध्यान भजन करता होय तेने ध्यान भजन करवामां विक्षेप करे, दुःख दे, ताडन करे ने एवुं भुडुं थवानो संकल्प करे, एवी रीते भक्तनो द्रोह थाय छे. अने ब्राह्मणना लक्षणे युक्त एवा ब्राह्मणने भयंकर वचने करीने डागो दे तथा आजीविका तोडे एम दुःखवे ते ब्राह्मणनो द्रोह कर्यो कहेवाय. अने गरीबने वांक विना पीडे, तथा वढे, ताडन करे एम दुःख दे ते गरीबनो द्रोह कर्यो कहेवाय. आ गरीबनो खुलासो [प्र० १७ ना चोथा प्रश्नोत्तरमां] कर्यो छे. ॥ २११ ॥

संवत् १८८२ ना पोष वदि २ बीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री वरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना दरबारमां लिंबडाना वृक्ष तळे पाट उपर गादी तकिये युक्त ढोलियो हतो ते उपर विराजमान हता अने श्वेत खेस पहेर्यो हतो अने मांहिली कोरे श्वेत पछेडीए युक्त गुलाबी रंगनी शाल ओढी हती अने मस्तक उपर श्वेत पाग बांधी हती.अने कंठने विषे गुलाबना पुष्पनो हार पहेर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने ते समे श्रीजीमहाराज अंतर्दृष्टि करीने बहुवार सुधी विराजमान थया हता.

पछी नेत्र कमळने उघाडीने सर्वे हरिभक्तनी सभा सामुं करुणाकटाक्षे करी जो-
१ इने श्रीजीमहाराज बोल्या जे (१) आज तो सर्वने निश्चयनी वात करवी छे ते सर्वे सावधान थइने सांभळो जे अनंतकोटी सूर्य चंद्रमा ने अग्नि ते सरखुं प्रकाशमान एवुंजे अक्षरधाम तेने विषे पुरुषोत्तम भगवान सदा दिव्य मूर्ति थका विराजमान छे अने तेज भगवान जीवोना कल्याणने अर्थे पृथ्वीने विषे राम कृष्णादिक अवतारनुं धारण करे छे त्यारे ते भगवानना स्वरूपनो जेने संत समागमे करीने दृढ निश्चय थाय छे तेनो जीव बीजना चंद्रमानी पेठे दिवसे दिवसे वृद्धिने पामतो जाय छे अने जेम चंद्रमाने विषे जेम जेम सूर्यनी कळा आवती जाय तेम तेम ते चंद्रमा वृद्धिने पामतो जाय छे ते ज्यारे पूर्णमासी आवे त्यारे संपूर्ण चंद्रमा थाय छे. तेम भगवाननो परिपूर्ण निश्चय थया मोर तो ए जीव अमावास्याना चंद्रनी पेठे कळाये रहित खद्योत जेवो होय पछी जेम जेम परमेश्वरना महिमाये सहित निश्चयने पामे छे तेम तेम वृद्धिने पामीने पूर्णमासीना चंद्र जेवो ए जीवात्मा थाय छे. पछी एने इंद्रियो के अंतकरण निश्चयमांथी डगाववाने समर्थ नथी थातां अने परमेश्वर गमे तेवां चरित्र करे तोपण तेने कोइ रीते भगवानने विषे दोष भासतोज नथी. एवो जेने महिमाये सहित भगवाननो निश्चय होय ते भक्त निर्भय थइ चुक्यो.(१)अने तेज भक्तने क्यारेक असत् देश असत्काळ असत्संग ने असत् शास्त्रा- १
दिकने योगे करीने अथवा देहाभिमाने करीने भगवाननां चरित्रने विषे संदेह थाय ने म-

गवाननो अभाव आवे तो ए जीव पूर्णमासीना चंद्र जेवो हतो पण पाछो अमावास्याना चंद्र जेवो थइ जाय छे माटे पोतामां जे कांइक थोडी घणी खोट होय ते ए जीवने झाझी नडती नथी.पण परमेश्वरना चरित्रमां कोइ रीते संदेह थाय अथवा परमेश्वरनो कोइ रीते अभाव आवे त्यारे ए जीव कल्याणना मार्गमांथी तत्काळ पडी जाय छे.जेम वृक्षनां मूळ कपाणां त्यारे ते वृक्ष पनी मेळेज सुकाइ जाय तेम जेने भगवानने विषे कोइ रीते दोषबुद्धि थइ ए जीव कोइ रीते विमुख थया विना रहे नहि. (२) अने जेने निश्चयनुं अंग दुबळुं होयने २
ते सत्संगमां होय तोपण तेने एवा घाट थाय, जे हुं जाणीए मारुं ते कल्याण थाशे के नहि थाय, अने हुं ज्यारे मरीश त्यारे देवता थइश के राजा थइश के भूत थइश, जेने भगवानना स्वरूपनो परिपूर्ण निश्चय न होय तेने एवा घाट थाय. (३) अने जेने परि- ३
पूर्ण निश्चय होय ते तो एम समझे जे मुने आ भगवान मळ्या ते दिवसथीज मारुं कल्याण थइ चुक्युं छे, अने जे मारुं दर्शन करशे के मारी वार्त्ता सांभळशे ते जीव पण सर्वे पाप थकी मुकाइने परमपदने पामशे, माटे एवी रीते भगवाननो महिमा सहित निश्चय राखीने पोताने विषे कृतार्थपणुं मानवुं ए वात सर्वे खबडदार थइने राखजो.(४) ४
पछी श्रीजीमहाराजे कह्युं जे ॥ धन्य वृंदावन वंसीवटनी छायारे ज्यां हरि बेसता ॥ ए महात्म्यनुं कीर्तन गाओ पछी ते कीर्तन गायुं पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे एवी रीते श्रीकृष्ण भगवाने पण भागवतमां कह्युं छे जे ॥ अहो अमी देववरामरार्चितं पादांबुजं तेसुमनः फलार्हणम् । नमंन्युपादायशिखाभिरात्मनस्तमोपहत्यै तरुजन्म यत्कृतम्॥ एम परमेश्वरना योगने पामीने वृक्षनो जन्म होय तेपण कृतार्थ थाय छे माटे जे वृक्ष तळे भगवान बेठा होय ते वृक्षने पण परमपदनुं अधिकारी जाणवुं. अने जेना हृदामां एवो भगवाननो महिमा सोतो दृढ निश्चय न होय तेने तो नपुंसक जेवो जाणवो, ते एने वचने करीने कोइ जीवनो उद्धार थवानो नहि जेम राजा होय ने ते नपुंसक होय ने तेनुं राज्य जातुं होय ने वंश जातो होय पण ए थकी तेनी स्त्रीने पुत्र थाय नहि,अने सर्वे मुलकमांथी पोता जेवा नपुंसकने तेडावीने ते स्त्रीने संगे राखे तोपण ते स्त्रीने पुत्र थाय नहि, तेम जेने भगवाननो महिमा सहित निश्चय नथी, तो तेने मुखे गीता भागवत जेवा सद्ग्रंथ सांभळे पण तेणे करीने कोइनुं कल्याण नथी थातुं अने वळी जेम दुध ने साकर होय ने तेमां सर्पनी लाळ पडी पछी एने जे कोइ पीए तेना प्राण जाय तेम महात्म्ये सहित जे भगवाननो निश्चय तेणे रहित एवो जे जीव तेना मुखथकी गीता भागवतने सांभळे तेणे करीने कोइनुं कल्याण थातुं नथी, एमांथी तो भुंडुं थाय छे. (५) इति वचनामृतम् ॥१२॥(२१२) ५

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे, तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अतिशे प्रकाशमान एवुं जे अमारा तेजरूप अक्षरधाम तेने विषे अमे सदा दिव्य साकार मूर्ति

विराजमान छीए, अने जीवोना कल्याणने अर्थे पृथ्वीने विषे प्रगट थया छीए, ते अमारा संतना समागमे करीने अमारो महिमाए सहित निश्चय थाय, ते जीव पूर्णमासीना चंद्र जेवो एटले सर्व अंगे संपन्न थाय छे ने निर्भय थाय छे. (१) अने तेने पण जो अमारा चरित्रमां अभाव आवे तो अमावास्याना चंद्र जेवो एटले एना धर्म ज्ञानादिक गुण नाश पामीने निस्तेज थइ जाय छे. (२) अने जेने अमारो निश्चय यथार्थ न होय तेने पोताना कल्याणनो भरुसो आवतो नथी. (३) अने जेने अमारो यथार्थ महिमाए सहित निश्चय होय तेने छती देहे कल्याण मनाइ जाय छे, अने पोतानुं दर्शन करनारनुं ने वात सांभळनारनुं पण कल्याण थइ गयुं एम माने छे. (४) अने अमारा संबंधने पामे ते वृक्ष पण परमपद जे अक्षरधाम तेनुं अधिकारी छे एवो महिमाए सहित अमारो निश्चय जेने न होय तेना मुख थकी कथा सांभळनारनुं कल्याण न थाय, ने मुळगुं भुंडुं थाय छे. (५) वातो छे.

१ प्र० पहेली वातमां जीवना कल्याणने अर्थे राम कृष्णादिक अवतारनुं धारण करीए छीए एम कह्युं, अने (व० $\frac{२}{१}$ मां) अमे कां अमने मळेला संत तथा अमारी प्रतिमा तेज कल्याणकारी छे, अने (जे० १ ना पहेला प्रश्नमां) अमारी अथवा अमने मळेला (अमारा धाममांथी आवेला) संत एटले मुक्त तेमनी ज्यारे जीवने प्राप्ति थाय त्यारेज माया ओलंघाय छे एम कह्युं छे, ते केम समजवुं ?

१ उ० राम कृष्णादिक अवतारो जीवने पोताना धाममां लइ जाय पण आत्यंतिक कल्याण तो श्रीजीमहाराज तथा तेमना मुक्तज करे.

२ प्र० अमारो महात्म्ये सहित यथार्थ निश्चय थाय ते जीव पूर्णमासीना चंद्र जेवो थाय ने निर्भय थाय, पण जो तेने अमारा चरित्रमां अभाव आवे तो अमावास्याना चंद्र जेवो थइ जाय एम बीजी वातमां कह्युं ते जे निर्भय थयो तेतो मुक्त थयो कहेवाय तेने पाछो श्रीजीमहाराजनो अभाव केम आवतो हशे ?

२ उ० साधने करीने वृद्धिने पाम्यो होय पण मुक्तदशा नथी आवी तेने देशकाळादिके करीने धको लागे पण पूरो आत्मनिष्ठ थयो होय, तेने तो कोइ रीते कोइ कुसंगे करीने अथवा गमे तेवां प्राकृत चरित्र देखीने अभाव आवेज नहि, माटे जेने अभाव आवे के देशकाळ लागे ते मुक्तभावने पाम्यो नथी. ॥ २१२ ॥

संवत् १८८२ ना पोष वदि ७ सप्तमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीवरताल मध्ये श्रीलक्ष्मीनारायणना दरबारमां लिंबडाना वृक्षनी तळे पाट उपर गादी तकिया नखावीने विराजमान हता, अने अंगने विषे सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, अने कंठने विषे श्वेत पुष्पना हार पहेर्या हता, अने हस्त कमळे करीने एक दाडमनुं फळ उछाळता हता, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनो सभा भराइने बेठी हती, अने श्रीजीमहाराजने उपर सोनाने इंडाये सहित छत्र विराजमान हतुं, एवी शोभाने धरता थका श्रीजीमहाराज विराजमान हता.

ते समयमां गाम आदरणना पाटीदार श्रीजीमहाराज पासे आव्या हता तेणे
१ पुछ्युं जे (१) हे महाराज ! आ समाधि ते केम थाती हशे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जीवोना कल्याणने अर्थे आ भरतखंडमां भगवान अवतार धरे छे, ते भगवान ज्यारे राजारूपे होय त्यारे तो ओगणचाळीश लक्षणे युक्त होय, अने दत्त कपिल जेवा साधु रूपे होय त्यारे बत्रीश लक्षणे युक्त होय, ते भगवाननी मूर्ति देखवामां तो मनुष्य सरखीज आवती होय पण अतिशे अलौकिक मूर्ति छे, जेम पृथ्वीने विषे सर्वे पथरा छे तेम चमकपाण पण पथरो छे, पण चमकपाणमां सहेजे एवो चमत्कार रह्यो छे जे चमकना पर्वतने समीपे वहाण जाय त्यारे तेना खीला चमकना पाणा पासे तणाइ जाय छे, तेम भगवाननी जे मूर्ति राजारूपे छे ने साधुरूपे छे ते मूर्तिनुं ज्यारे जे जीव श्रद्धाए करीने दर्शन करे छे तेनां इंद्रियो भगवान सामां तणाइ जाय छे, त्यारे समाधि थाय छे, जेम श्रीकृष्ण भगवाननुं दर्शन करीने गोकुळवासी सर्वेने समाधि थइ हती, ने भगवाने ते समाधिमां पोतानुं धाम देखाडयुं हतुं. तेवी रीते जे जे समयमां भगवानना अवतार होय ते ते समयमां भगवाननी मूर्तिने विषे एवो चमत्कार जरुर होय, ते जे श्रद्धाए युक्त भगवाननां दर्शन करे तेनां इंद्रियो सर्वे भगवान सामां तणाइ जाय, अने तत्काळ समाधि थाय, अने कोइक समयमां भगवानने घणाक जीवने पोताने सन्मुख करवा होय त्यारे तो अभक्त जीव होय अथवा पशु होय तेनेपण भगवानने जोइने समाधि थइ जायछे,तो भगवानना भक्तने थाय एमां शुं आश्चर्य छे?(१) १

२ पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे (२) ब्रह्म छे ते तो सर्वत्र व्यापक छे एम सर्वे कहे छे ने जे व्यापक होय तेने मूर्तिमान केम कहेवाय ? ने जे मूर्तिमान होय तेने व्यापक केम कहेवाय ? ए प्रश्न छे, पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ब्रह्म तो एकदेशी छे पण सर्वदेशी नथी, ने ते ब्रह्म ते श्रीकृष्णभगवान छे ते एकदेशी थका सर्वदेशी छे, जेम कोइक पुरुषे सूर्यनी उपासना करी होय पछी सूर्य तेने पोताना सरखी दृष्टि आपे त्यारे ते पुरुष ज्यांसुधी सूर्यनी दृष्टि पहोचती होय त्यां सुधी देखे, अने वळी जेम सिद्धदशावाळो पुरुष होय ते हजारोने लाखो गाउ उपर कोइक वात करतो होय तेने जेम पासे वार्ता करे ने सांभळे तेम सांभळे छे, तेमज लाखो गाउ उपर कांइक वस्तु पडी होय तेने मनुष्यना जेवडा हाथ होय तेणे करीने पण उपाडे, तेमज श्रीकृष्णभगवान एक ठेकाणे रह्या थका पोतानी इच्छाए करीने ज्यां दर्शन देवां होय त्यां दर्शन आपे छे, अने एकरूप थका अनंतरूपे भासे छे अने सिद्ध होय तेमां पण दूरश्रवण दूरदर्शन रूप चमत्कार होय, तो परमेश्वरमां होय तेमां शुं आश्चर्य छे ! अने भगवानने ग्रंथमां व्यापक कह्या छे ते तो मूर्तिमान छे तेज पोतानी सा-

मर्थिए करीने एक ठेकाणे रह्या थका सर्वने दर्शन आपे छे, एम व्यापक कह्या छे पण आकाशनी पेठे अरूप थका व्यापक नथी, भगवान तो सदा मूर्तिमानज छे. ते मूर्तिमान भगवान अक्षर धाममां रह्या थकाज अनंतकोटी ब्रह्मांडमांभासेछे.(२)इ.व.॥१३॥(२१३) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलामां अमे जीवोनां कल्याण करवा राजा रूपे ने साधु रूपे प्रगट थइए छीए ते ज्यारे राजा रूपे प्रगट थइए त्यारे (३९) लक्षणे युक्त होइए, अने साधु रूपे प्रगट थइए त्यारे (३२) लक्षणे युक्त होइए, अने अमे मनुष्यना जेवा देखाइए छीए पण अलौकिक मूर्ति छीए, अने अमारुं दर्शन श्रद्धाए सहित करे तेने समाधि थाय छे, जेम श्रीकृष्णने दर्शने गोकुळवासीने थइ तेम, अने जेम चमकमां सहज चमत्कार रह्यो छे तेम मनुष्य रूपे देखाता छता जे अमे ते अमारे विषे सहजज चमत्कार छे ने अमारे सन्मुख करवा सारु अभक्तने तथा पशुओने पण समाधि करावीए छीए. (१) बीजामां ब्रह्म कहेतां सर्वथी मोटा साक्षात् श्रीकृष्ण अमे ते अमे अमारा अक्षरधाम रूप एक देशमां मूर्तिमान रह्या थका सर्व ठेकाणे दर्शन आपीए छीए अने जेम सूर्यना उपासकने सूर्य पोताना सरखी दृष्टि आपे छे, तेम अमे अमारा आश्रितने अमारा सरखी दृष्टि आपीए छीए, अने अनंत ब्रह्मांडमां मूर्तिमान दर्शन आपीए छीए, एम व्यापक छीए, पण अरूप थका व्यापक नथी. (२) बाबतो छे. [आमां ब्रह्म नामे तथा श्रीकृष्ण नामे श्रीजीमहाराजने कह्या छे तेमां ब्रह्म नामनो खुलासो (परथाराना चोथा प्रश्नोत्तरमां तथा प्र० ३९ ना बीजा प्रश्नोत्तरमां, कर्यो छे, अने श्रीकृष्ण नामनो खुलासो (परथाराना पांचमा प्रश्नोत्तरमां) कर्यो छे.]

१ प्र० (बीजा प्रश्नमां तथा म० ६४ ना बीजा प्रश्नमां) श्रीजीमहाराजे पोताने मूर्तिमान व्यापक कह्या छे, अने (प्र० ७/१ तथा ४१, ४५, ६४/६, सा० ५ ना २/३ बीजा प्रश्नमां, का० ८/१, मां पं० ७/२ मां) पोताना तेज रूपे व्यापक कह्या छे ते मूर्तिमान व्यापक केवी रीते समजवा ? अने तेज रूपे व्यापक केवी रीते समजवा ?

१ उ० जीवोना कल्याण करवाने अर्थे मनुष्य रूपे दर्शन आपे छे तथा पोताना भक्तोने विषे मूर्तिमान रह्या थका ते भक्तोने ध्यानमां आत्माने विषे दर्शन आपे छे तथा पोताना भक्तोने अंत वखते दर्शन आपे छे ते साकार व्यापक कह्या छे, अने जीव, ईश्वर, ब्रह्म तथा अक्षरादिक सर्वने विषे पोताना तेज रूपे कर्मफळप्रदातापणे अंतर्यामीपणे रह्या छे, माटे कल्याण करवाने अर्थे साकार व्यापक छे, अने कर्मफळ आपवाने अर्थे अन्वयस्वरूप जे तेज ते द्वारे व्यापक छे. आनो विस्तार [प्र० ४५ ना बीजा प्रश्नोत्तरमां] छे. ॥२१३॥

संवत् १८८२ ना पोष वदि ९ नवमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री वरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना मंदिर आगळ विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी वडोदराना वाघगोडीया रायचंद्रे श्रीजीमहाराजने प्रश्न पुछयो जे (१) हे

महाराज ! जे कुपात्र जीव जणातो होय ने तेने समाधि थइ जाय छे तेनुं शुं कारण हशे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे धर्मशास्त्रने विषे जे वर्णाश्रमना धर्म कह्या छे ते थकी जे बाह्य वर्त्ततो होय तेने सर्वे लोक एम जाणे जे आ कुपात्र माणस छे, अने ते कुपात्रने भगवान के भगवानना संतनो जो हैयामां गुण आवे तो अने ए मोटुं पुन्य थाय छे, ने वर्णाश्रमना धर्म लोप्या हता तेनुं जे पाप लाग्युं हतुं ते सर्वे नाश थइ जाय छे, अने ते जीव अतिशे पवित्र थइ जाय छे माटे एने भगवानना स्वरूपमां चित्त चोटे छे, त्यारे समाधि थइ जाय छे. (१) अने जे पुरुष धर्मशास्त्रे कह्या एवा जे वर्णाश्रमना १
धर्म तेने पाळतो होय त्यारे तेने सर्वे लोक धर्मवाळो जाणे पण भगवान ने भगवानना साधु तेनो जो द्रोह करतो होय तो ते सत्पुरुषना द्रोहनुं एवुं पाप लागे छे जे वर्णाश्रमना धर्म पाळ्यानुं जे पुन्य तेने बाळीने भस्म करी नाखे छे, माटे सत्पुरुषना द्रोहनो करनारो तेतो पंच महापापनो करनारो तेथी वधु पापी छे, ज्ञा माटे जे पंच महापाप कर्या होय ते तो सत्पुरुषने आशरे जइने छुटाय छे, पण सत्पुरुषनो द्रोह करे तेने तो कोइ ठेकाणे छुट्यानो उपाय नथी, केम जे अन्य ठेकाणे पाप कर्युं होय ते तो तीर्थमां जइने छुटाय छे, अने तीर्थमां जइने पाप करे ते तो वज्रलेप थाय छे, माटे सत्पुरुषनो आशरो करे त्यारे गमे तेवो पापी होय तोपण अति पवित्र थइ जाय छे, ने तेने समाधि थइ जाय छे, अने सत्पुरुषनो द्रोही होय ने ते गमे तेवो धर्मवाळो जणातो होय तोपण महापापी छे, ने तेने कोइ काळे भगवाननुं दर्शन हृदयने विषे थायज नहि, माटे जेने विमुख जीव पापी जाणे छे ते पापी नथी, अने जेने विमुख धर्मी जाणे छे ते धर्मी नथी. [२] इतिवचनामृतम् ॥१४॥ (२१४) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां वर्णाश्रमना धर्मथी बाह्य वर्त्ततो होय एवा कुपात्रने पण अमारो के अमारा संतनो गुण आवे तो तेनुं पाप बळी जाय छे, ने ते पवित्र थाय छे ने अमारे विषे चित्त चोटे छे ने समाधि थाय छे. (१) अने वर्णाश्रमना धर्म पाळतो होय ने ते अमारो के अमारा संतनो द्रोह करे तो ते पंच महापापीथी वधु पापी छे, अने पंच महापापी अमारो के अमारा संतनो आशरो करे तो अति पवित्र थाय, ने तेने समाधि थाय माटे विमुख पापी जाणे ते पापी नथी, ने धर्मी जाणे ते धर्मी नथी एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (२) बाबतो छे. ॥ २१४ ॥

संवत् १८८२ ना पोष वदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री वरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना मंदिर आगळ लिंबडाना वृक्ष हेठे मंच उपर गादी तकिया बिछावीने विराजमान हता, अने किनखापनो सुरवाळ ने डगली पहेर्यां हतां, अने मस्तक उपर मोटा सोनेरी छेडानुं भारे कसुंबल शेलुं बांध्युं हतुं, अने मोटा मोटा सोनेरी छेडानुं कसुंबल शेलुं खभा उपर विराजमान हतुं, अने मस्तक उपर

सोनेरी इंडानुं छत्र विराजमान हतुं, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि मंडळ समस्त तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ ते समामां शोभाराम शास्त्रीए प्रश्न पुछयो जे (१) हे महाराज ! दैवी ने आसुरी ए वे प्रकारना जीव छे ते अनादिकाळना छे के कोइक योगे करीने थया छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे प्रथम तो जीव मायाने विषे सत्तामात्र हता, पछी ए जीव जेवां जेवां कर्म करता जाय छे तेवा तेवा भावने पामता जाय छे. (१) जेम जय १ विजय भगवानना पार्षद हता तेणे सत्पुरुष एवा जे सनकादिक तेनो द्रोह कर्यो त्यारे असुर भावने पामी गया, अने प्रह्लादजी दैत्य हता तेणे नारदजीनो उपदेश ग्रहण कर्यो तो परम भागवत संत कहेवाणा, माटे मोटा पुरुषनो जे उपर कोप थाय ते जीव आसुरी थइ जाय छे, अने जे उपर मोटा पुरुष राजी थाय ते जीव दैवी थइ जाय छे. पण बीजुं दैवी आसुरी थवानुं कारण नथी, माटे जेने पोतानुं कल्याण इच्छवुं होय तेने भगवान ने भगवानना भक्त तेनो कोइ रीते द्रोह करवो नहि, अने जे रीते भगवान ने भगवानना भक्त राजी थाय तेम करवुं. (२) इतिवचनामृतम् ॥१५॥ (२१५) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [१] छे, तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे जीव प्रथम मायाने विषे सत्तामात्र एटले कर्म विनाना हता ते जेवां जेवां कर्म करे छे तेवा तेवा भावने पामे छे. [१] अने जेना उपर मोटा पुरुषनो कोप थाय ते जीव आसुरी थइ जाय छे, ने मोटा पुरुष राजी थाय ते जीव दैवी थइ जाय छे, माटे जेने कल्याण इच्छवुं तेने अमारा भक्तनो द्रोह करवो नहिं. (२) बाबतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां जीव मायाने विषे सत्तामात्र हता एम कह्युं अने [सा० ११ ना पहेला प्रश्नमां] पांच साधने युक्त थाय ते आत्मसत्ताने पामे छे एम कह्युं ते आत्मसत्ता कइ जाणवी ? अने आमां कही ते कइ जाणवी ?

१ उ० आमां कर्मे रहित एटलाज सत्तारूप कह्या छे, अने [सा० ११ मां] तो श्रीजीमहाराजना तेज रूप सत्ता कही छे, माटे आमां कही ते अने [सा० ११ मां] कही ते एक नथी.

२ प्र० बीजी बाबतमां मोटा पुरुषनो कोप एज आसुरी थवानुं कारण कह्युं, अने [व० ७ ना पहेला प्रश्नमां] दैवीने आसुरी बे प्रकारना जीव अनादि छे एम कह्युं ते केम समजवुं ?

२ उ० प्रथम तो जीव सत्तामात्र कर्म विनानो होय पण पछी ज्यारे सृष्टिमां आवीने कर्म करे छे त्यारे जो मोटा पुरुष कुराजी थाय एवुं कर्म करे तो ते आसुरी थाय छे, ने राजी थाय एवुं कर्म करे तो दैवी थाय छे, माटे मोटा पुरुषना कोपथीज प्रथम आसुरी थयेला तेनी वात [व० ७ मां] कही छे पण सृष्टिमां आवीने कर्म कर्या विना आसुरभाव नहोतो माटे सृष्टिमां आव्या पछी आसुर थयेला जाणवा, पण सृष्टि पहेलां मायामां हता त्यारे बे प्रकारना हता एम न जाणवुं ॥ २१५ ॥

संवत् १८८२ ना पोष वदि १३ तेरशने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्रीवरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना दरबारमां लिंबडाना वृक्ष हेठे मंच उपर गादी तकिया बिछावीने विराजमान हता, ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ समस्त तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ ते सभामां वडोदराना शास्त्री बेठा हता तेणे एम कह्युं जे (१) हे महाराज तमे जो कोइक मोटा माणसने चमत्कार जणावो तो तेमांथी घणो समास थाय. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे मोटा माणस साथे अमारे झाझुं बने नहि. शा माटे जे एने राजनो ने धननो मद होय, अने अमारे त्यागनो ने भक्तिनो मद होय, माटे कोइ केने नमी दे एवुं काम नथी अने कोइक मोटा माणसने जो समाधि करावीए तो कोइक गाम गरास आपे तेनी अमारा हैयामां लालच नथी, केम जे गाम गरास तो सुखने अर्थे इच्छीए ते अमारे तो नेत्र मीचीने भगवाननी मूर्तिनुं चिंतवन करीए तेमां जेटुं सुख छे तेवुं चौद लोकना राज्यने विषे पण नथी, अने जो भगवानना भजन जेवुं राज्यने विषे सुख होय तो स्वायंभूवनु आदिक जे मोटा मोटा राजा ते सर्वे राज्य मुकीने वनमां तप करवा शा सारुं जाय ? अने भगवानना भजन जेवुं स्त्रीने विषे सुख होय तो चित्रकेतु राजा करोड स्त्रियोने शा सारु मुके? अने भगवानना भजनना सुख आगळ तो चौद लोकनुं जे सुख ते नरक जेवुं कह्युं छे, माटे जे भगवानने सुखे सुखीयो थयो होय तेने तो ब्रह्मांडने विषे जे विषयनुं सुख छे ते नरक तुल्य भासे छे. [१] अने अमारे पण १
भगवानना भजननुं सुख तेज सुख जणाय छे ने बीजुं सर्वे दुःखरूप जणाय छे, माटे परमेश्वरनुं भजन स्मरण करतां थकां जेने सहेजे सत्संग थाय तेने करावीए छइए पण कोइ वातनो अंतरमां आग्रह नथी, ने आग्रह तो केवळ भगवानना भजननो अने भगवानना भक्तनो सत्संग राख्यानो छे, ए अमारा अंतरनो रहस्य अभिपाय हतो ते अमे तमारी आगळ कह्यो. (२) इतिवचनामृतम् ॥१६॥ [२१६] २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे, तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारा भजनना सुख आगळ चौद लोकनां तथा ब्रह्मांडोनां सुख ते नरकतुल्य ने दुःख रूप छे.(१) अने अमारा भजननो ने अमारा भक्तनो सत्संग राख्यानो आग्रह राखवो पण अमारुं भजन भूलीने कोइ प्रकारनो आग्रह राखवो नहि ए अमारो रहस्य अभिप्राय छे.[२]बाबतो छे.

१ प्र० ब्रह्मांडोनुं सुख नरकतुल्य कह्युं ते ब्रह्मांडो कियां जाणवां ?

१ उ० प्रकृति पुरुषना लोक सुधी ब्रह्मांड जाणवां ते नरक तुल्य ने दुःखदायी छे केमजे माया जड दुःख ने मिथ्या रूप छे, तेमां सुख होयज नहिं, केवळ दुःखज रह्युं छे.

२ प्र० बीजी बाबतमां कोइ प्रकारनो आग्रह न करवो एम कह्युं अने (म० ५७ मां) उपदेश कर्या निमित्त थोडी घणी उपाधि रहे तोपण उपदेश करवो एम कह्युं छे ते केवी रीते समजवुं ?

२ ७० जेने ध्यान करीने श्रीजीमहाराजनी मूर्ति सिद्ध करवी होय तेने ते मूर्त्तिनुं अनुसंधान चुकी जवाय एवो आग्रह न करवो. मूर्त्तिनुं अनुसंधान राखीने सत्संग कराववो. एवी रीते धर्मनी, ज्ञाननी, वैराग्यनी, पंच वर्त्तमाननी, ध्यान उपासनानी वातो करीने सत्संगीने पुष्टि करवी तेमां मूर्त्तिनुं अनुसंधान भुली जवाय एवो आग्रह न राखवो एम कह्युं छे, अने ते उपासना आदिकनी वातो करवामां कोइ उपाधि करे तोपण वातो करवी एम (म० ५७ मां) कह्युं छे. ॥ २१६ ॥

संवत् १८८२ ना पोष वदि अमासने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री वरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणने सन्मुख हवेली उपर गादी तकिया नखावीने विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ सर्वे साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछ्यो जे[१]पंचज्ञानइंद्रियो ने पंच कर्मइंद्रियो छे ते पोत पोताना विषयने यथार्थ जाणे छे ते ज्ञानी तथा अज्ञानी ने इंद्रियोद्वारे एक सरखो व्यवहार छे पण ज्ञानी होय तेनां इंद्रियो अज्ञानी थकी बीजी रीते नथी वर्ततां, माटे ज्ञानीने जितेंद्रिय कह्या छे ते केइ रीते जाणवा? ए प्रश्न छे. पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे निर्विकल्प समाधि थाय त्यारे जितेंद्रिय थाय एम जणाय छे, पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे निर्विकल्प समाधिवाळाने पण पंच विषय ग्रहण करवा ते तो सौनी पेठे इंद्रियो द्वारेज ग्रहण थायछे, माटे जितेंद्रियपणुं केम छे? पछी बहुरीते करीने मुक्तानंदस्वामीए उत्तरकर्यो पण समाधान थयुं नहि, पछी श्रीजीमहाराजे कह्युं जे एनो उत्तर तो एम छे जे शब्दादिक जे पंच विषय छे तेमां जे दोष रह्या छे तेने जाणे अने भगवाननी जे मूर्ति छे तेमां जे कल्याणकारी गुण छे, तेने पण जाणे अने मायिक जे पंच विषय तेने भोगववे करीने जीवने नरकना कुंडनी प्राप्ति थाय छे ने महादुःख भोगववां पडे छे तेने पण जाणे त्यारे एने पंच विषयनो अतिशे अभाव आवे छे, ने एने विषे वैरबुद्धि थाय छे ने जे साथे जेने वैर थयुं तेने विषे कोइ रीते प्रीति थायज नहि, एम समजीने ज्यारे पंच विषयनो मनमांथी जेने अतिशे अभाव थइ जाय ते जितेंद्रिय पुरुष कहेवाय. पछी भगवाननी श्रवण कीर्तनादिक भक्तिए करीने पोतानुं जीवितव्य पुरुं करे पण विमुख जीवनी पेठे पंच विषयमां आसक्त थाय नहि, एवो होय ते जितेंद्रिय कहेवाय. (१) १

२ पछी श्रीजीमहाराजे बीजो प्रश्न पुछ्यो जे, (२) एक त्यागी संत छे तेतो केवळ निवृत्ति मार्गवाळा छे, अने ते एम जाणे छे जे अमे आत्मा छइए पण देहने पोतानुं रूप मानता नथी, ने तेना देहनी रीति तो जड ने उन्मत्तना जेवी होय, अने ते पुरुषने जाति वर्णाश्रम तेनुं अभिमान होय नहि, ने खावुं, पीवुं, उठवुं बेसवुं ते सर्वे घेलाना जेवुं होय पण लोकमां मळतुं आवे तेवुं न होय ने एवा जे त्यागी होय तेने कोइनो

संग पण रहे नहि, जेम वननुं मृगलुं होय तेनी पेठे उन्मत्त थको एकलो फरतो रहे, ने एने कोइ रीतनुं बंधन पण थाय नहि, अने बीजा त्यागी संत छे तेतो निवृत्तिमार्गवाळा छे तोपण प्रवृत्तिमार्गमां वर्त्ते छे, अने जे प्रवृत्तिने योगे करीने काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, आशा, तृष्णा इत्यादिक दोष हृदयने विषे प्रवर्ते तेवी क्रियाने विषे प्रवर्ते छे त्यारे कोइक जातनो अंतरमां विकार पण थइ आवे छे, माटे त्यागीने ए प्रवृत्ति मार्गमां रहेवुं घटे के न घटे, अने वळी ए प्रवृत्ति मार्गमां रहेतां थकां केइरीते निर्विकार रहेवाय? अने तमे कहेशो जे जो परमेश्वरनी आज्ञाये करीने ए प्रवृत्ति मार्गमां रहे तो बंधन न थाय, ते उपर ए आशंका छे जे परमेश्वरनी आज्ञाये करीने भांग्य पीए तो शुं गांडो न थाय? जरुर गांडो थाय, माटे ए त्यागी केवी रीते प्रवृत्ति मार्गमां रहे तो बंधन न थाय, ए प्रश्न छे? पछी नित्यानंदस्वामीए ने शुकमुनिए एनुं समाधान करवा मांडयुं पण यथार्थ उत्तर थयो नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जे केवळ निवृत्तिधर्मवाळा त्यागी छे ने उन्मत्तनी पेठे वर्ते छे तेतो केवळ आत्मनिष्ठावाळा जाणवा, अने वळी जे निवृत्तिधर्मवाळा त्यागी भगवाननी भक्तिये युक्त छे तेने तो परमेश्वरे कह्या एवा जे नियम तेने विषे रहीने भगवान ने भगवानना भक्त संबंधी जे प्रवृत्ति मार्ग तेने विषे सावधान थइने जोडावुं, अने ए जे भगवान ने भगवानना भक्तने अर्थे प्रवृत्तिमार्गमां जोडावुं एनुं नामज भक्ति छे, अने एवी प्रवृत्तिवाळा जे त्यागी छे तेनी बरोबर निवृत्ति मार्गवाळो जे केवळ आत्मनिष्ठ त्यागी ते थइ शकतो नथी, शा माटे जे आनो त्यागी छे ने निवृत्तिमार्गवाळा छे तोपण भगवानना भक्तनी सेवाने अर्थे प्रवृत्तिमां प्रवर्ते छे, अने ए जे भगवाननो भक्त त्यागी तेने तो परमेश्वरना नियममां रहीने प्रवृत्तिमार्गने विषे रहेवुं पण परमेश्वरना नियमथी अधिक पण वर्त्तवुं नहि, ने न्यून पण रहेवुं नहि अने काम, क्रोध, लोभ, मोह, आशा तृष्णा, स्वाद ए आदिक जे विकार तेने त्याग करीने भगवान ने भगवानना भक्तनी सेवाने अर्थे प्रवृत्ति मार्गने विषे वर्तवुं तो एने कोइ जातनुं बंधन थाय नहि, अने केवळ आत्मनिष्ठावाळो जे त्यागी ते करतां तो आ त्यागी श्रेष्ठ छे, ने भगवाननी कृपानुं पात्र छे. (२) इति वचनामृतम् ॥१७॥ (२१७) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे, तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारे विषे कल्याणकारी गुण रह्या छे तेने जाणीने अमारी नवधा भक्तिए पोतानुं जीवितव्य पुरुं करे, अने पंच विषयमां आसक्त थाय नहिं, ते जितेंद्रिय छे. (१) बीजामां केवळ आत्मनिष्ठ त्यागी करतां कामादिक विकारनो त्याग करीने पोताना नियममां रही ने अमारी ने अमारा भक्तनी भक्ति एटले सेवा करे ए त्यागी केवळ आत्मनिष्ठ त्यागी करतां श्रेष्ठ छे ने अमारी कृपानुं पात्र छे. (२) बावतो छे.

१ प्र० बीजा प्रश्नमां निवृत्ति मार्गवाळा त्यागी संतने अमारी तथा अमारा भक्तनी सेवा रूप प्रवृत्तिने योगे विकार थइ आवे एम कह्युं ते कामादिक विकार थइ आवे एवी शी क्रिया हशे ?

१ उ० देवनी सेवामां रह्या होय त्यां स्त्री आदिक देखवामां आवी जाय, ने कोइक वखत रजोगुण आव्यो होय ते समे कामनो खोटो संकल्प थइ जाय,तथा कोठार भंडारमां रह्या होय ते बीजा संतने सेवा बतावे ते कह्युं न माने त्यारे तेना उपर क्रोध थइ आवे, अने घणां पदार्थ दीठामां आवे तेमां पोतानो स्वार्थ साधवानो संकल्प थाय ए लोभ कहेवाय, तथा खावानी वस्तु सारी होय तेने खावानो संकल्प रही जाय ते मोह कहेवाय, तथा पोताने कोठार के भंडारनो अधिकार मळ्यो होय तेनो गर्व आवे ते मद कहेवाय, तथा पोताथी नाना होय तेनी कोइक पूजा, सेवा, सन्मान करे ने तेनी न करे तो मत्सर आवे, तथा पोते सेवा करतो होय तेना फळनी इच्छा रहे जे हुं सेवा करूं छुं ते मने घी, दुध मळे के गादी तकियो आपे तो ठीक एवी इच्छा रहे ते आशा कहेवाय, अने ते इच्छा पुरी न थाय तो तेनी तृष्णा रहे, आ उपर कह्या ते दोषनो त्याग करीने श्रीजीमहाराजना नि-यममां रहीने निष्कामभावे सेवा करे तो तेने कोइ जातनुं बंधन थाय नहिं ॥२१७॥

संवत् १८८२ ना महा शुदि १ पडवाने दिवस श्रीजीमहाराज श्री वरतालमध्ये संध्या आरती थया केडे श्री लक्ष्मीनारायणना मंडपमां गादी तकिया नखावीने विरा-जमान थया हता. ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोतानी चारे कोरे मंडपने उपर तथा हेठे परमहंस सर्वे तथा देश देशना हरिभक्त सर्वे बेठा हता.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे (१) आ तमे सर्वे मोटा मोटा परमहंस छो तेमने अमे प्रश्न पुछीए छइए जे सत्संगी होय तेने अवश्यपणे शी शी वार्ता जाणी जोइए ? केमजे तेने कोइ पुछे अथवा पोताना मननां कोइक तर्क थइ आवे त्यारे जो ते वार्ता जाणी न होय तो तेनुं समाधान केम थाय? एम प्रश्न पुछीने पछी पोतेज बोल्या जे त्या एनो उत्तर अमेज करीए छइए जे एकनो आपणो उद्धव संप्रदाय छे तेनी रीत जाणी जोइए तथा बीजी गुरु परंपरा जाणी जोइए, ते केइ रीते तो उद्धव ते रामानंदस्वामी रूपे हता. (१) ने ते रामानंदस्वामी श्रीरंग क्षेत्रने विषे स्वप्नमां साक्षात् रामानुजा- १
चार्य थकी वैष्णवी दीक्षाने पाम्या माटे रामानंदस्वामीना गुरु ते रामानुजाचार्य छे ने
ते रामानंदस्वामीना शिष्य अमे छइए एवी रीते गुरु परंपरा जाणवी. [२] अने अमे २
अमारा धर्मकुळनुं स्थापन कर्युं छे तेनी रीत जाणवी.[३] अने त्रीजा अमारा संप्रदा- ३
यमां अति प्रमाण रूप जे शास्त्र छे तेने जाणवां ते शास्त्रनां नामः—वेद, (१) व्यास सूत्र; (२) श्रीमद्भागवत पुराण, (३) अने महाभारतने विषे विष्नुसहस्र नाम; (४) भगवद्गीता,(५)विदुरनीति,(६)अने स्कंदपुराणना विष्णुखंड पांहिलुं वासुदेव महात्म्य,

[७] अने याज्ञवल्क्य स्मृति (८) ए जे आठ शास्त्र तेने जाणवां. (४) अने चोथा सर्वे ४
सत्संगीना जे जे नियम छे तेने जाणवा. [५] अने पांचमा आपणा इष्टदेव जे श्रीकृष्ण ५
भगवान तेने जाणवा. (६) अने स्थानक सेवक ने कार्य तेने भेदे करीने ते श्रीकृष्ण ६
भगवाननी मूर्त्तियोनुं बहुपणुं छे तेने जाणवुं.[७] अने ते श्रीकृष्ण भगवाननां जे परोक्ष ७
रूपने प्रत्यक्षरूप तेने जाणवां तेमां परोक्षरूप ते केइ रीते तो मायाना तम थकी पर एवो जे गोलोक तेने मध्ये जे अक्षरधाम तेने विषे श्रीकृष्ण भगवान रह्या छे, ते द्विभुज छे, ने कोटी कोटी सूर्य सरखा प्रकाशमान छे ने श्यामसुंदर ने राधिकाजी ने लक्ष्मीजीए सहित छे ने नंद सुनंद ने श्रीदामादिक जे पार्षद तेमणे सेव्या छे, ने अनंत कोटी ब्रह्मांडनी जे उत्पत्ति स्थिति ने प्रलय तेना कर्ता छे, ने महाराजाधिराजपणे विराजमान छे,अने एवा जे भगवान ते चतुर्भुजरूपने धारे छे,अष्टभुज रूपने धारे छे ने सहस्रभुजरूपने पण धारे छे,ने वासुदेव,संकर्षण,अनिरुद्ध ने प्रद्युम्न ए जे चतुर्व्यूह ने केशवादिक जे चोवीश व्यूह ए सर्वे रूपने धारे छे,तथा वाराह,नृसिंह, वामन,कपिल, हयग्रीव ए आदिक जे अनेक अवतार तेने धारे छे,ने पोते तो सदा द्विभुज छे,अने उपनिषद् तथा सांख्य शास्त्र ने योगशास्त्र तथा पंचरात्र एमने विषे एम स्वरूपनुं वर्णन कर्युं छे,एवी रीते परोक्षपणे भगवाननुं स्वरूप कह्युं. अने सर्वे जे आचार्य थया छे तेमां व्यासजी मोटा आचार्य छे ने ते व्यासजी जेवा तो शंकराचार्य न कहेवाय, रामानुजाचार्य न कहेवाय, मध्वाचार्य न कहेवाय, निंबार्क न कहेवाय, विष्णुस्वामी न कहेवाय, वल्लभाचार्य न कहेवाय, केम जे ए आचार्य जो व्यासजीना वचनने अनुसरे तो ए आचार्यना वचननुं लोकमां प्रमाण थाय, नहि तो न थाय अने व्यासजीने तो बीजा कोइनी अपेक्षा नथी केम जे व्यासजी तो वेदना आचार्य छे ने पोते भगवान छे माटे आपणे तो व्यासजीना वचननेज अनुसरवुं. अने ते जे व्यासजी तेणे जीवना कल्याणने अर्थे वेदनो विभाग कर्यो ने सत्तर पुराण कर्यां ने महाभारत कर्युं तोपण ते व्यासजीना मनमां एम थयुं जे जीवना कल्याणनो उपाय जेम छे तेम यथार्थ न कहेवायो ने तेणे करीने पोताना मनमां संतोष न थयो. ते पछी समग्र वेद पुराण इतिहास पंचरात्र योगशास्त्र सांख्य शास्त्र तेनुं सार एवुं जे श्रीमद्भागवत पुराण तेने व्यासजी करता हवा. ते भागवतने विषे सर्व अवतार करतां श्रीकृष्णभगवाननेज अधिकपणे कह्या छे ने सर्व अवतारना धरनारा जे छे तेज स्वयं श्रीकृष्णभगवान छे, अने ए श्रीकृष्णभगवाने उद्धव प्रत्ये गुण विभागना अध्यायमां कह्युं छे जे हुं निर्गुण छुं ने मारा संबंधने जे पामे छे तेपण निर्गुण थाय छे. माटे कामभाव, द्वेषभाव, भयभाव,संबंधभाव, स्नेहभाव एमांथी जे जे भावे करीने ए श्रीकृष्णभगवानने जे जीव आश्रयां ते निर्गुण थइ गया, माटे ए श्री

कृष्णभगवान ते निर्गुण छे एवी रीते व्यासजीए श्रीकृष्ण भगवानने कह्या छे ने ते व्या-
सजीए एम सिद्धांत कर्यो छे जे सर्व अवतारना धरतल जे परमेश्वर तेज स्वयं श्रीकृष्ण
भगवान छे ने बीजा जे अवतार ते एना छे.(८) अने जो ए श्रीकृष्णभगवानने निर्गुण ८
नहि कहे ने शुद्ध सत्वात्मक कहेशे तो तेने भागवतना पूर्वापर संबंधनी खबरज नथी
ने ते तेने विषे मोटो बाध आवशे केम जे गोपियोए श्रीकृष्णने भगवान न जाण्या ने काम
भावे करीनेज श्रीकृष्न भगवानने मज्या तेणे करीने ते गोपियो निर्गुण थइ गइ त्यारे
ते श्रीकृष्ण भगवानने शुद्ध सत्वात्मक केम कहेवाय ? माटे श्री कृष्णभगवान तो निर्गुणज
छे. (९) तथा श्रीकृष्ण भगवाने पोते अर्जुन प्रत्ये कह्युं छे जे ॥ जन्मकर्मचमेदिव्यमेवं ९
योवेत्तितत्त्वत: । त्यक्त्वादेहंपुनर्जन्म नैतिमामेतिसोऽर्जुन (१०) अने श्रीकृष्ण भगवाने १०
पोताना जन्म समयमां वसुदेव देवकीने परमेश्वरपणानी प्रतीतिने अर्थे जे चतुर्भुज रूप
देखाड्युं तथा ब्रह्माने जे अनेक चतुर्भुज रूप देखाड्यां तथा अक्रूरने जे शेषशायी
रूप देखाड्युं तथा अर्जुनने विश्वरूप देखाड्युं इत्यादिक रूपने भेदे करीने जे
श्रीकृष्ण भगवाननी उपासनाना भेद कहेवा ते तो योग्य छे. (११) पण ए११
श्रीकृष्ण भगवान व्रजने विषे बाळमुकुंद कहेवाया, मोरलीमनोहर कहेवाया, राधा-
कृष्ण कहेवाया, तथा वाछडां चार्यां गायो चारी, गोवर्धन पर्वत धार्यो, गोपियो
साथे रास क्रीडा करी, तथा मथुरापुरीमां आवीने कंसने मार्यो, ने यादवने सुखीया
कर्या, तथा सांदीपिनी ब्राह्मणने घेर विद्या भण्या, तथा कुब्ज्या संगाथे विहार कर्यो,
तथा द्वारिकापुरीमां वस्या, ने रुक्मणी आदिक अष्ट पटराणीयोने परण्या तथा सोळ
हजार स्त्रियोने परण्या, तथा हस्तिनापुरमां रह्या ने पांडवनी सर्व कष्ट थकी रक्षा करी, ने
द्रौपदीनी लाज राखी, ने अर्जुनना सारथि थया इत्यादिक स्थानकने भेदे करीने जे
श्रीकृष्ण भगवाननी अनेक लीला छे तेणे करीने ए श्रीकृष्ण भगवानना द्विभुज स्वरूप-
ने विषे उपासनाना भेद न करवा, ने जे करशे ते वचनद्रोही गुरुद्रोही छे. [१२]१२
अने ए श्रीकृष्ण भगवाननां आचरण जे गोवाळीयानुं उच्छिष्ट खाधुं, तथा रासरमण
कर्युं, इत्यादिक अनेक प्रकारनां छे ते आचरण प्रमाणे ते श्रीकृष्ण भगवानना भक्तने
आचरण न करवुं, अने ए श्री कृष्न भगवाने एकादश स्कंधमां तथा भगवद्गीतामां
तथा वासुदेव महात्म्यमां जेम साधुनां लक्षण कह्यां छे तथा वर्णाश्रमना धर्म कह्या छे
तथा पोतानी भक्ति कर्यानुं कह्युं छे ते प्रमाणे वर्तवुं. (१३) पण ए श्री कृष्न भगवा-१३
नना आचरण प्रमाणे आचरण न करवुं ने जे करशे ते विमुख छे ने अमारो सत्संगी
नथी. अने ए श्री कृष्न भगवान तेना आचरण प्रमाणे जेम न करवुं तेमज तमारो
सर्वेनो आचार्य ने गुरु ने उपदेष्टा ने इष्टदेव एवो जे हुं ते मारा देहनां जे आचरण

ते प्रमाणे पण तमारे न करवुं, अने अमारा संप्रदायने विषे जेम जेना धर्म कह्या छे ते जे अमारां वचन ते प्रमाणे तमारे सर्वेने रहेवुं पण अमारा आचरण प्रमाणे न रहेवुं, ने आ जे अमे वार्ता करी तेने सर्वे परमहंस तथा सर्वे सत्संगी शिखी लेज्यो ने ए प्रमाणे समझीने एमज वर्तज्यो ने बीजा आगळ पण एमज वार्ता करज्यो. एम कहीने श्रीजीमहाराज भोजन करवा पधार्या.एवी रीतनी वार्ताने सांभळीने सर्वे साधु ने सत्संगी ते एम समझता हवा जे ए परोक्ष जे श्रीकृष्ण भगवान कह्या तेज आ भक्ति धर्मना पुत्र श्रीजीमहाराज छे, पण ए थकी पर कोइ नथी अने एज आपणा इष्टदेवछे ने गुरु पण एजछे.(१४)१४ इति वचनामृतम् ॥१८॥ (२१८)

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के अमारा सत्संगीए उद्धव संप्रदायनी रीत जाणवी. (१) तथा गुरु परंपरा जाणवी. (२) तथा धर्मकुळना स्थापननी रीत जाणवी. (३) तथा परोक्षना दृष्टांते करीने कह्युं छे के संप्रदाय संबंधी शास्त्र जाणवां. (४) तथा सत्संगीना नियम जाणवा. (५) तथा इष्टदेवने जाणवा (६) अने स्थानक सेवक ने कार्य तेने भेदे करीने मूर्तियोनुं बहुपणुं जाणवुं. (७) अने अमारुं परोक्ष ने प्रत्यक्ष रूप जाणवुं [८] अने अमारां जन्म कर्म दिव्य जाणवां. [९] अने अमारा संबंधने पामे ते सर्वे निर्गुण थाय छे. [१०] अने अमारे विषे परमेश्वरपणानी प्रतीति लवराववाने अर्थे अमे चतुर्भुजादिक तथा मच्छ कच्छादिक अनंत रूप देखाडीए छीए ते रूपने भेदे करीने उपासनाना भेद कहेवा. [११] अने स्थानकना भेदे करीने अनेक प्रकारनी लीला करी होय तेणे करीने द्विभुज एवा जे अमे ते अमारा स्वरूपने विषे उपासनाना भेद करवा नहिं. [१२] अने साधुए साधुनां लक्षण प्रमाणे वर्त्तवुं ने पोत पोताना वर्णाश्रमना धर्ममां रहीने अमारी भक्ति करवी. (१३) अने तमारा इष्टदेव जे अमे ते अमारा आचरण प्रमाणे तमारे आचरण न करवुं, अमारी आज्ञा प्रमाणेज वर्तवुं. (१४) बाबतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां आपणो उद्धव संप्रदाय छे एम कह्युं ते उद्धव संप्रदायनो अर्थ शो समजवो ?

१ उ० उत् कहेतां उत्कृष्ट अने धव कहेतां स्वामी ते उद्धव कहेवाय,तेनो संप्रदाय एटले उत्कृष्ट स्वामी एवा जे साक्षात् श्रीस्वामिनारायण भगवान तेमनो संप्रदाय ते उद्धव संप्रदाय कहेवाय.

२ प्र० उद्धव संप्रदायनी रीत जाणवानी कही ते रीत केवी रीते जाणवी ?

२ उ० मूळ अक्षरादि सर्वे अवतारनुं कारण अवतारी ने सर्वोपरि एवुं श्रीजीमहाराजनुं स्वरूप जाणवुं, अने तेमना आश्रित त्यागी गृहीना धर्म जाणवा तथा पोताने ब्रह्मरूप एटले श्रीजीमहाराजना तेजरूप अक्षरधाम ते रूप मानीने धर्मादिक अंगे सहित श्रीजीमहाराजनी भक्ति करवी ते रीत जाणवी.

३ प्र० उद्धव ते रामानंदस्वामी रूपे हवा एम कह्युं तेनो शो अर्थ जाणवो ?

३ उ० उत्कृष्टस्वामि एवा जे साक्षात् भगवान श्रीस्वामिनारायण ते रामानंदस्वामी रूपे

प्रगट थया हता, एटले रामानंदस्वामी ते श्रीजीमहाराजना मुक्तावतार हता एम जाणवुं.
४ प्र० मुक्तने श्रीजीमहाराजना अवतार किया वचनामृतमां कह्या छे ?
४ उ० (प्र० ३३ ना पहेला प्रश्नमां) अमे जीवोनां कल्याणने अर्थे नारद सनकादिक रूपे वर्तिए छीए तथा (पं० ९/२ मां) अमे नारद सनकादिक रूपे थइए छीए एम कह्युं छे, माटे जीवोना कल्याणने अर्थे श्रीजीमहाराज मुक्त रूपे प्रगट थाय छे ते मुक्तने अवतार जाणवा, अने उत्पत्यादिकने अर्थे मूळअक्षरादि रूपे थाय छे एटले मूळअक्षरादिकने विषे पोतानी शक्तिद्वारे अन्वयपणे रह्या छे. ते (प्र० ७२ ना ३/३ बीजा प्रश्नमां) अमे क्षर अक्षरादिकने अमारी शक्तिए करीने धरी रह्या छीए, तथा (६३ ना ३/३ त्रीजा प्रश्नमां) अमे कांतिए करीने अक्षरादिक सर्वने विषे अन्वयपणे रह्या छीए, तेमज मोक्ष करवाने अर्थे मुक्तरूपे प्रगट थाय छे ते मुक्तने विषे साक्षात् व्यतिरेक मूर्तिमान रह्या छीए एम कह्युं छे.
५ प्र० बीजी बाबतमां गुरु परंपरा कही ते केवी रीते जाणवी ?
५ उ० रामानंदस्वामी स्वप्नमां रामानुजाचार्य थकी दीक्षा पाम्या माटे रामानंदस्वामीना दीक्षा गुरु रामानुजाचार्य छे अने रामानंदस्वामी थकी श्रीजीमहाराज दीक्षा पाम्या माटे श्रीजीमहाराजना दीक्षागुरु रामानंदस्वामी छे, अने श्रीजीमहाराजे अमदावाद तथा वरताल देव पधरावीने गादी स्थापन करी श्रीअयोध्याप्रसादजी तथा श्रीरघुवीरजीने गुरुपदवी आपी ते गुरु जाणवा ने ए बे गादी उपर जे जे आचार्य स्थापन थाय तेमनेज आचार्य तथा गुरु जाणवा एम गुरु परंपरा जाणवी.
६ प्र० केवा होय ते आचार्य कहेवाय ?
६ उ० पोते श्रीजीमहाराजे शिक्षापत्री तथा सत्संगीजीवनमां आचार्यना धर्म कह्या छे ते प्रमाणे धर्ममां वर्ते ने बीजाने वर्तावे, अने पोताना संप्रदायना शास्त्रना अर्थने जाणता होय. आवा गुणे युक्त होय ते आचार्य कहेवाय.
७ प्र० श्रीजीमहाराज तो पोते साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान छे तेमने रामानंदस्वामीने गुरु करवानुं शुं कारण हशे ?
७ उ० मुमुक्षुओने गुरु करवानी रीत शिखववाने अर्थे पोते रामानंदस्वामीने गुरु कर्या छे.
८ प्र० त्रीजी बाबतमां धर्मकुळना स्थापननी रीत जाणवानी कही ते केवी रीत जाणवी ?
८ उ० धर्मदेवना कुळमांथी बे गादी उपर बे आचार्य स्थापन कर्या तेमने आचार्य तरीके मानवा अने बीजा सर्वने धर्मकुळ तरीके मानवा, ते धर्मकुळना स्थापननी रीत जाणवी.
९ प्र० चोथी बाबतमां संप्रदाय संबंधी शास्त्र कह्यां ते कियां जाणवां ? केम जे आ वचनामृतमां तो परोक्ष शास्त्रनुं प्रमाण कर्युं छे, अने (म० ५८ मां) श्रीजीमहाराजे पोताना संबंधना ग्रंथो करीने पोताना संप्रदायनी पुष्टि कही छे, ते विरोध आवे छे माटे संप्रदाय संबंधी शास्त्र कियां जाणवां ?
९ उ० ज्यारे श्रीजीमहाराज मनुष्यभावे बोले त्यारे परोक्षने दृष्टांते करीने पोतानी वात करे अने परोक्ष शास्त्रने दृष्टांते करीने पोतानां शास्त्र मानवानुं कहे माटे आमां श्रीजी-

महाराज मनुष्यभावे बोल्या छे तेथी परोक्ष श्रीकृष्णने दृष्टांते करीने पोतानी वात कही छे, माटे आ पणे तो आपणा इष्टदेव जे साक्षात् श्रीस्वामिनारायण तेमनां लीला चरित्र जे शास्त्रमां वर्णन कर्या होय एवां जे शास्त्र ते मानवां ते शास्त्रनां नाम:–वचनामृत जे हरिवाक्य सुधासिंधु (१) सत्संगीजीवन (२) सत्संगीभूषण (३) हरिदिग्विजय (४) हरिलीलाकल्पतरु (५) भक्तचिंतामणि (६) हरिचरित्र चिंतामणि [७] हरिलीलामृत [८] घनश्यामलीलामृतसागर [९] पुरुषोत्तमलीलामृत सुखसागर [१०] पुरुषोत्तमप्रकाश (११) कल्याण निर्णय (१२) हरिलीला सिंधु (१३) पुरुषोत्तमचरित्र [१४] इत्यादिक जे श्रीजीमहाराज संबंधी शास्त्र ते प्रत्यक्ष श्रीजीमहाराजना जे उपासक तेमणे वांचवां, सांभळवां ने भणवां अने तेमां कह्या प्रमाणे वर्तवुं.

१०प्र० पांचमी बाबतमां सत्संगीना नियम जाणवाना कह्या ते नियम किया जाणवा ?

१०उ० सत्संगीजीवनमां शिक्षापत्री धर्मामृत निष्काम शुद्धि आदिकमां जे जे कह्या छे ते नियम जाणवा.

११प्र० छठ्ठी बाबतमां आपणा इष्टदेव श्रीकृष्ण भगवान तेमने जाणवा एम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

११उ० श्रीजीमहाराज मनुष्यभावे बोल्या छे माटे परोक्षने दृष्टांते करीने पोताने इष्टदेव मानवा एम कह्युं छे.

१२प्र० सातमी बाबतमां स्थानक सेवक ने कार्य कह्यां ते कियां जाणवां ? अने तेने भेदे करीने मूर्तियोनुं बहुपणुं कह्युं ते केवी रीते जाणवुं ?

१२उ० अक्षरधाम रूपी स्थानमां मूर्ति दिव्य तेजोमय छे अने ते मूर्ति जे जे लोकोमां कल्याण करवा देखाय ते ते लोकोमां तेते लोकोना जेवी देखाय ते लोकोनां स्थान जाणवां, अने ए लोकमां रह्या जे भक्त ते सेवक जाणवा, अने मनुष्यरूपे प्रगट थइने भगवान जे जे आचरण करे ते कार्य जाणवां, अने जीवोना कल्याणने अर्थे अनंत ब्रह्मांडमां एकमूर्ति थका अनंत रूपे देखाय छे ते मूर्तिनुं बहुपणुं जाणवुं, तेणे करीने दिव्य मूर्तिने विषे भेद न करवा. जे मूर्ति अक्षरधाममां छे तेज मूर्ति मनुष्यरूपे आंही देखाय छे एम जाणवुं.

१३प्र० आठमी बाबतमां परोक्षने प्रत्यक्षरूप जाणवां एम कह्युं ते केवी रीते जाणवुं ?

१३उ० अक्षरधाममां दिव्यमूर्ति श्रीजीमहाराज बिराजे छे ते आपणी दृष्टिए देखवामां नथी आवतुं ते परोक्षरूप समजवुं, अने आंही मनुष्यरूपे तथा प्रतिमारूपे दर्शन आपे छे ते प्रत्यक्षरूप जाणवुं

१४प्र० मायाना तम थकी पर एवा गोलोकने मध्ये जे अक्षरधाम तेने विषे द्विभुज एवा जे श्रीकृष्ण ते रह्या छे एम कह्युं, अने (म०३९ना २/१ बीजा प्रश्नमां) जे श्रीकृष्ण वसुदेव देवकीने चतुर्भुजरूपे दर्शन दीधुं ते चतुर्भुज रूप अनादि छे एम कह्युं छे, माटे वसुदेवना पुत्र जे श्रीकृष्ण ते तो सदा चतुर्भुज छे, तेमनी सेवामां तो राधिका, लक्ष्मी, नंद, सुनंदादिक पार्षद होय पण अक्षरधामने विषे रह्या एवा द्विभुज श्रीकृष्ण जे श्रीस्वामिनारायण भगवान

तेमनी सेवामां राधिका, लक्ष्मी तथा नंद सुनंदादिक पार्षद कह्या ते केवी रीते समजवा ?
१४उ० श्रीजीमहाराज मनुष्यभावे बोले त्यारे परोक्षने दृष्टांते पोताने भगवान कहे अने परोक्षनां शास्त्र तथा पार्षदने नामे करीने पोतानां शास्त्र तथा पोताना पार्षदोने कहे ते (प्र० ८, १८, ४८, इत्यादिमां) घणे ठेकाणे छे.
१५प्र० (अगीयारमी बाबतमां) परोक्ष श्रीकृष्णे पोताने विषे परमेश्वरपणानी प्रतीति लवरावबाने अर्थे घणांक रूप देखाड्यां ते रूपने भेदे करीने जेम श्रीकृष्णने विषे उपासनाना भेद कहेवा एम कह्युं तेमज श्रीजीमहाराजे पोताने विषे प्रतीति लवराववाने अर्थे कियां रूप धार्यां हशे ? अने ते रूपने भेदे करीने उपासनाना भेद केवी रीते कहेवा ?
१५ उ० श्रीजीमहाराज पोताने विषे सर्वोपरिपणानी प्रतीति लवराववाने अर्थे घणाक मलवाडीयोने तथा भक्त, अभक्त, सर्वेने मच्छ, कच्छ, रामकृष्णादिक घणांक रूप देखाड्यां हतां, ने लीन कर्यां हतां ते परथारामां नवमी बाबतमां मच्छ, कच्छादिक घणा रूपे देखाता हवा एम कह्युं छे, अने (म० १३ मां) अवतार प्रगट थाय छे ने लीन थाय छे एम कह्युं छे, माटे ते रूप बताव्यां एटले जे जे अवतारो थया हता, तेवां रूप बताव्यां हतां ते अवतारोथी श्रीजीमहाराजने पर कहेवा, एवी रीते तो उपासनाना भेद कहेवा पण पोतानी मूर्तिं अनंत अवतारो रूपे श्रीजीमहाराजे देखाडी ते मूर्तिमां भेद न करवा पण अवतारी स्वरूप श्रीजीमहाराज अने बीजा अवतारो ते पृथक् छे एम तो भेद करवा खरा.
१६प्र० चौदमी बाबतमां अमे तमारा आचार्य, गुरु, उपदेष्टा ने इष्टदेव छीए एम कह्युं ते इष्टदेव तो छेज पण आचार्य गुरु ने उपदेष्टा केम कह्या हशे ?
१६ उ० श्रीजीमहाराज अनंत जीवोनां कल्याणने अर्थे मनुष्यरूपे प्रगट थइने मुमुक्षु जीवोना उपदेशने अर्थे रामानंदस्वामीना शिष्य थइने आचार्य रूपे वर्त्या तेथी पोताने आचार्य कह्या छे. अने सर्वे त्यागी, गृहीना गुरुपणे वर्त्या तेथी गुरु कह्या छे. अने सर्वेने उपदेश कर्यो माटे उपदेष्टा कह्या छे, पण आचार्यने तथा गुरुने तथा उपदेश करनाराने भगवान न जाणवा. एम (का० १० ना ३/२ पहेला प्रश्नमां) अमारा जेवो बीजो कोइ समर्थ नथी ने अक्षर पर्यंत सर्व अमारा सेवक छे ने अमे स्वामी छीए. तथा [पं० २ मां) प्रकृति पुरुषादिक अमारा भक्त छे. माटे भगवान तो एक श्रीजीमहाराजज छे. अने नाना मोटा सर्वे अवतारो तथा मुक्त ते सर्वे श्रीजीमहाराजना भक्त छे.
१७प्र० आ वार्ता शिखी छेजो ने ए प्रमाणे वर्तज्यो ने बीजा आगळ करजो ते वार्ता शी समजवी?
१७ उ० उपर कही जे समग्र रीत तथा जेम श्रीकृष्ण भगवानना भक्तने तेमना आचरण प्रमाणे आचरण न करवुं, तथा ते श्रीकृष्णभगवाने एकादश स्कंध आदि शास्त्रमां साधुनां लक्षण तथा धर्म तथा भक्ति करवानुं कह्युं छे तेम वर्तवुं, तेमज अमारा भक्तोए अमारा आचरण प्रमाणे आचरण न करवुं, अने अमारा संप्रदायनां शास्त्र जे वचनामृत, सत्संगी जीवन आदिकमां अमे जेना जेना धर्म कह्या छे ने अमारी भक्ति करवानुं कह्युं छे ते प्रमाणे वर्तवुं, ए बात शिखीने बीजा आगळ करवी एम कह्युं छे. ॥२१८॥

संवत् १८८२ ना महा शुदि २ बीजने दिवस श्रीजीमहाराज सांझने समे श्री वरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना मंदिरमां उगमणी कोरनी रूपचोकी उपर गादी तकिया नखावीने विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी ठाकोरजीनी संध्या आरती थइ रही त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे (१) सांभळो भगवाननी वार्ता करीए छइए जे आ जीवने ज्यारे भरतखंडने विषे मनुष्य देह आवे छे त्यारे भगवानना अवतार कां भगवानना साधु ए जरुर पृथ्वी उपर विचरता होय, तेनी जो ए जीवने ओळखाण थाय तो ए जीव भगवाननो भक्त थाय छे, पछी ए भगवाननो भक्त थयो तेने भगवान विना बीजा कोइ पदार्थने विषे प्रीति राखवी घटे नहि, शा माटे जे भगवानना धामनुं जे सुख छे तेनी आगळ मायिक पंच विषयनुं सुख छे ते तो नरक जेवुं छे, अने जे नरकना कीडा छे ते तो नरकने विषे परम सुख माने छे,-पण जे मनुष्य होय ते तो ते नरकने परम दुःखदायी जाणे छे, तेम जेने भगवाननी ओळखाण थइ ते तो भगवाननो पार्षद थयो ने तेने भगवाननो पार्षद मटीने विष्टाना कीडानी पेठे मायिक पंच विषयना सुखने इच्छवुं नहि. अने जे भगवाननो भक्त होय ते तो जे जे मनोरथ करे ते सर्वे सत्य थाय छे, माटे भगवान विना बीजा पदार्थने अणसमझणे करीने जे इच्छे छे एज एने मोटो अविवेक छे, ते सारु जे भगवाननो भक्त होय तेने तो चौद लोकमां जे भोग सुख छे तेने काकविष्टा तुल्य जाण्यां जोइए ने मनक्रम वचने करीने भगवानना भक्तने विषेज दृढ प्रीति करी जोइए, अने एम समझवुं जोइए जे जे भगवाननो भक्त होय ने तेने जो कदाचित् भगवान विना बीजी वासना रही गइ होय तो ते पण इंद्र पदवीने पामे कां ब्रह्मलोकने पामे पण प्राकृत जीवनी पेठे नरक चोराशीमां तो जायज नहि. त्यारे जे यथार्थ भगवाननो भक्त होय तेनो जे महिमा ने तेनुं जे सुख ते तो वर्णव्यामांज केम आवे ? माटे भगवाननो भक्त होय तेने तो भगवानमांजदृढ प्रीति राखवी.(१) १ इति वचनामृतम् ॥१९॥ (२१९)

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) एक छे, तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के अमे कां अमारा संत आ पृथ्वी उपर जरूर विचरता होइए ते जेने अमारी ओळखाण पडे ते अमारो भक्त थाय ते पछी तेने अमारा सुख विना मायिक सुख न इच्छवुं केम जे अमारा धामना सुख आगळ मायिक सुख छे ते नरक जेवुं ने काकविष्टा तुल्य छे, माटे जेम मनुष्य नरकने परम दुःखदायी जाणे छे तेम अमारा भक्तोए मायिक सुख नरक जेवुं जाणवुं ने अमारा संतने विषे प्रीति राखवी,अने अमारा भक्त सवासनिक होय तेपण

इंद्र ब्रह्मानी पदवी पामे तो यथार्थ अमारा भक्तनो महिमा ने सुख तेनो वर्णन थाय ज केम, एम जाणीने अमारे विषे प्रीति करवी. [१] बाबत छे. ॥ २१९ ॥

संवत् १८८२ ना महा शुदि ३ त्रीजने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री वरताल मध्ये श्री लक्ष्मीनारायणना दरबारमां लिंबडाना वृक्षनी हेठे वेदी उपर गादी तकिया नखावीने विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठने विषे चंमेलीना पुष्पनो हार विराजमान हतो अने मस्तक उपर राता अतलसनुं छत्र विराजमान हतुं अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे परमहंसने प्रश्न पुछयो (१) जे रजोगुणमांथी कामनी उत्पत्ति थाय छे अने तमोगुणमांथी क्रोध ने लोभनी उत्पत्ति थाय छे माटे ए कामादिकनुं बीज न रहे एवुं एक साधन कियुं छे ? पछी शुकमुनिए कह्युं जे ज्यारे निर्विकल्प समाधि थाय ने ज्यारे आत्मदर्शन थाय त्यारेज एना हृदयमांथी कामादिकनुं बीज बळी जाय. पछी श्रीजीमहाराजे आशंका करीजे शिव, ब्रह्मा, शृंगी ऋषि, पराशर, एमने शुं निर्विकल्प समाधि नहोती जे कामे करीने ए सर्वे विक्षेपने पाम्या ? माटे ए सर्वे निर्विकल्प समाधिवाळाज हता तोपण इंद्रियोनी वृत्ति क्षोभ थइ त्यारे कामादिके करीने विक्षेपने पाम्या, माटे तमे कह्युं एवी रीते ए प्रश्ननो उत्तर न थयो. अने जेम ज्ञानी निर्विकल्प समाधिने विषे जाय त्यारे निर्विकार रहे छे तेमज अज्ञानी सुषुप्तिने विषे निर्विकार रहे छे, अने ज्यारे इंद्रियोनी वृत्ति क्षोम थाय छे त्यारे तो ज्ञानी ने अज्ञानी बेय कामादिके करीने विक्षेपने पामे छे एमांतो ज्ञानी अज्ञानीनो कांइ विशेष जाणतो नथी माटे हवे बीजा परमहंस उत्तर करो. पछी तो गोपाळानंदस्वामी देवानंदस्वामी नित्यानंदस्वामी मुक्तानंदस्वामी ए सर्वे मळीने जेवो जेने भास्यो तेवो तेणे उत्तर कर्यो पण श्रीजीमहाराजना प्रश्ननुं कोइथी समाधान थयुं नहि पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेम जनक विदेही हता ते प्रवृत्ति मार्गमां हता तोपण निर्विकार हता अने ज्यारे जनकनी सभामां सुलभा नामे सन्यासिनी आवी त्यारे जनक राजा सुलभा प्रत्ये बोल्या जे तुं मारा चित्तने मोह पमाडयानुं करे छे पण मारा गुरु जे पंचशिख ऋषि तेनी कृपाथकी हुं सांख्य ने योग ए बे मतने अनुसर्यो छुं माटे मारा अर्धा शरीरने चंदन चर्चे अने अर्धुं शरीर तरवारे करीने कापे ए बेय मारे बरोबर छे अने आ मारी मिथिलापुरी बळी जाय तोपण मारुं कांइ बळतुं नथी, एम हुं प्रवृत्तिमां रह्यो थको असंगी ने निर्विकार छुं एवी रीते राजा जनके सुलभा प्रत्ये कह्युं अने शुकदेवजीना पण राजा जनक गुरु कहेवाणा.माटे ए प्रश्ननो एज उत्तर छे जे इंद्रियोनी वृत्ति क्षोमपणे वर्तेनी दोप

अने प्रवृत्ति मार्गमां रह्यो होय तोपण जो राजा जनकनी पेठे जेना हृदयमां समझणनी दृढता थइ होय तो ते कोइ रीते विकारने पामे नहि अने जेने जेवुं जाण्युं जोइए तेवुं यथार्थ जाण्युं होय जे आ ते सार छे ने आ ते असार छे पछी एक भगवानती मूर्ति विना जेटला मायिक आकार छे ते सर्वे अतिशे दुःखदायक छे ने नाशवंत छे एम जाणे,अने पोताने देह इंद्रियो ने अंतःकरण ते थकी नोखो आत्मारूपे जाणे पछी एने एवुं कोइ पदार्थ नथी जे मोह पमाडवाने अर्थे समर्थ थाय केमजे एतो सर्वे मायिक आकारने तुच्छ करी जाणे छे अने एवी रीते जेना अंतरमां समझणनी गेडय बेठी होय ने तेनां इंद्रियो प्रवृत्ति मार्ग ने विषे सर्वे लोमपणे वर्ततां होय तोपण ते कामादिके करीने क्षोभने न पामे एवोजे हरिभक्त होय ते त्यागी होय अथवा गृहस्थ होय पण तेना हृदयमांथी कामादिकनुं बीज नाश पामी जाय छे, अने एवो होय तेज सर्वे हरिभक्तमां श्रेष्ठ वैश्नव छे माटे गृही त्यागीनो कांइ मेळ नथी जेनी समझण मोटी तेनेज सौथी मोटो हरिभक्त जाणवो, अने शिव ब्रह्मादिकने विषे जे खोटय कहेवाय छे तेनुं तो एम छे जे केटलाकने विषे तो आवी रीतनी समझणनी कसर छे, ने केटलाकने विषे तो आवी समझण होय तो पण भुंडा देश काळ संग क्रियादिकने योगे करीने तेमने कामादिक विकाररूप खोटय कहेवाणी छे, माटे आवी समझण होय तो पण कोइ प्रकारे कुसंगतो करवोज नहि ए सिद्धांत वार्ता छे. (१) इतिवचनामृतम् ॥२०॥ (२२०) १

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [१] एक छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारी मूर्ति विना बीजा मायिक आकारने अति तुच्छ ने दुःखदायीने नरक रूप जाणीने पोताने आत्मारूप माने ते त्यागी होय के गृहस्थ होय पण तेना हृदयमांथी कामादिकनुं बीज नाश पामे छे, ते सर्व भक्तथी श्रेष्ठ छे, अने आवी समझण न होय, कांतो भुंडा देशकाळनो योग थाय तो खोट आवे, माटे एवी समझण होय तोपण कुसंग तो करवोज नहि.(१) बाबत छे.

१ प्र० आमां जनकराजाने शुकजीना गुरु कह्या, अने (म० ९/१ मां) जनकथी शुकजीनी स्थिति अधिक कही छे, ते केम समजवुं ?

१ उ० शुकजीनी स्थिति जनक करतां अधिक हती पण जनक राजाए शुकजीने ज्ञान कर्युं हतुं तेथी गुरु कह्या छे.

इतिश्रीकच्छदेशे वृषपुरनिवासी अनादिमुक्तराज श्रीअबजीभाइविरचित साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम भगवान श्रीस्वामिनारायण मुखकमळनिःसृत वचनामृत रहस्यार्थप्रदीपिकायां वरताल प्रकरणं समाप्तम्.

॥ अथ वचनामृत अमदावाद प्रकरणम् ॥

संवत् १८८२ ना महा वदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीअमदावाद मध्ये श्रीनरनारायणना मंदिरमां आथमणीकोरे मुखारविंद करीने विराजमान हता. ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठने विषे गुलाबना पुष्पना हार विराजमान हता ने काननी उपर गुलाबना पुष्पना गुच्छ विराजमान हता ने पाघने विषे गुलाबना पुष्पना तोरा विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ते सभामां श्रीजीमहाराज अंतर सामी दृष्टि करीने विराजमान हता.

१ पछी नेत्रकमळने उघाडीने सर्वे सामुं जोयुं पछी एम बोल्या जे (१) अमारे एक ध्यानना अंगनी वार्ता करवी छे ते वार्ता मोक्ष धर्मने विषे पण कही छे. अने जे मोटा मोटा ए ध्याने करीने सिद्धदशाने पाम्या छे तेपण अमे घणाक दीठा छे ने अमारा पण अनुभवमां एम वर्ते छे जे अनंत प्रकारनां ध्यान छे पण जे आ वात कहेवी छे तेनी बरोबर बीजुं कोइ ध्यान थाय नहि जेम कोइक चमत्कारी मंत्र होय अथवा चमत्कारी औषधि होय तेमां स्वभाविकज चमत्कार रह्यो छे तेम जे आ ध्यान अमारे कहेवुं छे ते ध्यानमां पण एवो स्वभाविक चमत्कार छे जे तत्काळ सिद्धदशाने पामी जाय. ने हवे ते वार्त्ता करीए छइए जे ध्याननो करनारो छे तेने जमणा नेत्रमां सूर्यनुं ध्यान करवुं ने डाबा नेत्रमां चंद्रनुं ध्यान करवुं. एवी रीते ध्यान करतां करतां सूर्य ने चंद्रमा जेवा आकाशमां छे तेवाने तेवाज देखावा मांडे, त्यारे जमणुं नेत्र छे ते तपवा मांडे ने डाबुं नेत्र छे ते ठरवा मांडे, त्यारे सूर्यनी धारणा डाबा नेत्रमां करवी ने चंद्रनी धारणा जमणा नेत्रमां करवी. एवी रीते धारणा करीने पछी सूर्यने ने चंद्रने अंतर्दृष्टि करीने हृदाकाशमां जोया करवा, अने जोनारो जे पोतानो जीव तेना रूपने पण देखवुं अने देखनारो जे जीवात्मा तेने विषे परमात्मानुं ध्यान करवुं. पछी तेनुं जे वासनालिंग देह छे ते जेम रेंटनो फाळको फरे तेम आकाशने विषे फरतुं जणाय पछी एवी रीते ध्यान करतां थकां भगवाननुं जे विश्वरूप छे तेनुं दर्शन तेने थाय छे, ने ते रूपने विषे चौदे लोकनी रचना छे ते देखाइ आवे छे, अने ते स्वरूप अतिशे मोटुं पण नथी देखातुं जेम वटपत्रशायी भगवान एक वडना पत्रमां नाना बाळक थइने पोढ्या हता अने तेज भगवानना उदरने विषे मार्कंडेय ऋषिए समग्र ब्रह्मांड दीठुं एवी रीते भगवाननुं ध्यान करतां थकां जेटलां कांइ शास्त्रमां पदार्थ कह्यां छे ते सर्वे एनी दृष्टिमां आवे छे, त्यारे एना जीवात्माने विषे जे कांइक नास्तिकभाव रह्यो होय ते मटी जाय

छे अने तेनो जीव अति बळीयो थाय छे अने जे जे शास्त्रमां कह्युं छे ते सर्वे सत्य छे एवी एने दृढ प्रतीति आवे छे. अने अणिमादिक अष्टसिद्धियो तेपण ए ध्यानना करनाराने आवीने हाजर थाय छे, अने ज्यां लगण सूर्यनी ने चंद्रनी किरण पहोंचती होय त्यां लगी तेनी दृष्टि पहोंचे, एवी अनंत सिद्धियो प्रगटे छे. पण परमेश्वरनो भक्त छे माटे कोइ सिद्धियोने ग्रहण करतो नथी केवळ परमेश्वरनुंज ध्यान करे छे, त्यारे ए ध्याननो करनारो नारद सनकादिक शुकजीना सरखी सिद्धदशाने पामे छे. माटे अनंत प्रकारनां ध्यान छे पण तत्काळ सिद्धदशाने पमाडे एवुं तो एज ध्यान छे. एटली वार्ता करी रह्या. (१) १

२ त्यारे मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे (२) एवुं ध्यान ते अष्टांगयोगने मार्गे करीने प्राणायाम करतो होय तेनेज सिद्ध थाय छे के बीजाने पण थाय छे? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे प्राणायामवाळानो कांइ मेळ नथी, ए तो जो एवा ध्याननो अभ्यास करे ने ते परमेश्वरनो एकांतिक भक्त होय तो तेनेज ए ध्यान सिद्ध थाय छे. पण बीजा जीव थकी तो ए मार्गने विषे चलातुं ज नथी माटे ए ध्यानना जे अधिकारी छे तेने तो कह्युं एवुं जे ध्यान ते थको बीजो तत्काळ सिद्ध थवानो उपाय नथी. (२) २
॥ इति वचनामृतम् ॥१॥ (२२१)

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलुं कृपावाक्य छे तेमां योगमार्गना ध्याननी प्रशंसा करीने तेनी रीत बतावी छे जे सूर्य चंद्रने नेत्रद्वारे करीने हृदयमां जोवा ने पोताना आत्माने जोवो ने ते आत्मामां अमारुं ध्यान करवुं तेणे करीने सूक्ष्म देह जुदुं देखाय ने ब्रह्मांडनी रचना देखाय ने नास्तिक भाव टळी जाय ने सिद्धियो प्राप्त थाय पण अमारो भक्त ते सिद्धियोने ग्रहण न करे ने केवळ अमारुंज ध्यान करे, तो जेम सूर्यने ध्याने करीने सूर्यना सरखी दृष्टि थाय छे तेम अमारे ध्याने करीने अमारा सिद्ध मुक्त सरखी सिद्धदशाने पामे छे, एटले जेम अमे अनंतकोटी ब्रह्मांडमां व्यापवा समर्थ छइए तेम ते पण अमारा जेवोज समर्थ थाय छे. (१) बीजामां अष्टांग योग सिद्ध कर्या विना पण अमारा एकांतिक भक्त अमारुं ध्यान करे तो तत्काळ ते ध्यान सिद्ध थाय छे. (२) बावतो छे.

१ प्र० (छे० ३१ मां) जीवने विषे अमारी मूर्तिने धारे तो अंगुष्ठ मात्रज जुवे पण जेवी छे तेवी न देखे एम कह्युं छे ने आमां जीवने विषे मूर्ति धारे तो तत्काळ सिद्ध दशाने पामे एम कह्युं ते केम समजवुं ?

१ उ० (छे० ३१ मां) बुद्धिने विषे जीव रह्यो छे तेमां मूर्ति धारे तो जेवी छे तेवी न देखे एम कह्युं छे शा हेतु माटे तो बुद्धि गुणमय छे अने ज्यां सुधी बुद्धिमां जीव रह्यो छे त्यां सुधी जीव पण गुणमय कहेवाय, माटे तेमां मूर्ति धारे तो अंगुष्ठ मात्र देखे पण जेवी छे तेवी न देखे एम कह्युं छे पण त्रण देहथी नोखो पडीने पछी जी-

वात्माने विषे मूर्ति धारे तो जेवी छे तेवी न देखे एम नथी कह्युं अने आमां तो वासना लिंग देहथी जुदो पडीने शुद्ध आत्मारूप थइने श्रीजीमहाराजनी मूर्ति धारे तो मूर्ति जेवी छे तेवी देखे त्यारे कारण शरीर नाश पामे. अने (छे० ३१ मां) ध्यान करवानो उपाय कह्यो तेमां पोताने अक्षरधाम रूप मानीने श्रीजीमहाराजनी मूर्ति धारवी ए श्रेष्ठ छे अने एवी रीते ध्यान करवामां प्रयास घणोज ओछो पडे अने तत्काळ मूर्ति सिद्ध थाय छे ते ध्यान करवानो उपाय आथी श्रेष्ठ छे.

२ प्र० योग मार्गे ध्यान करनारा सूर्य चंद्रने न धारे अने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने धारे तो धराय के नहि ?

२ उ० श्रीजीमहाराजनी मूर्ति धारवी तेतो सर्वेथी श्रेष्ठ छे.

३ प्र० पहेला प्रश्नमां शास्त्रमां कह्यां ते पदार्थ ज्यारे दृष्टिमां आवे त्यारे जीवने विषेथी नास्तिक भाव संपूर्ण जाय एम कह्युं त्यारे सत्पुरुषना समागमथी नास्तिकभाव जाय के नहि?

३ उ० आमां जेणे केवळ शास्त्र थकी समजण दृढ करी होय ते शास्त्रमां कहेलुं होय तेने ज्यारे दृष्टिए देखे त्यारे यथार्थ मनाय एम कह्युं छे. अने जेने मुक्तनो योग थयो तेने तो आत्मा परमात्मानुं दर्शन थाय एम (व० ११ ना ४थे चोथा प्रश्नमां) कह्युं छे, तो नास्तिकपणुं जाय एमां शुं कहेवुं ? ॥ २२१ ॥

संवत् १८८२ ना फागण शुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री अमदावाद मध्ये श्रीनरनारायणना मंदिरनी आगळ वेदीने विषे पाट उपर गादी तकिया नखावीने विराजमान हता ने धोळो खेस पहेर्यो हतो ने धोळी चादर ओढी हती ने मस्तकने विषे गुलाबी रंगनो फेंटो बांध्यो हतो ने ते पाघने विषे गुलाबना पुष्पना तोरा झुको रह्या हता ने कानने उपर गुलाबना बे गुच्छ खोश्या हता ने कंठने विषे गुलाबना पुष्पना हार पहेर्या हता ने बे भुजने विषे गुलाबना बाजु बांध्या हता ने बे हाथने विषे गुलाबना पुष्पना गजरा पहेर्या हता एवी रीते सर्वे अंगमां गुलाबना पुष्पे गरकाव थया हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज सर्वे परमहंस प्रत्ये बोल्या जे एक प्रश्न पुछुंछुं जे (१) एक परमेश्वरनो भक्त छे ते तो जाग्रत स्वप्न ने सुषुप्ति ते थकी पर वर्ते छे ने मलीन रज तम ने मलीन सत्त्व तेनो त्याग करीने शुद्ध सत्त्वमय वर्ते छे ने एवो थको परमेश्वरने भजे छे ने बीजो जे भक्त छे ते तो त्रिगुणात्मक वर्ते छे ने परमेश्वरने विषे तो अतिशे प्रीतिए युक्त वर्ते छे ए बे भक्तमां कियो भक्त श्रेष्ठ छे? पछी संत मंडळे तो एम कह्युं जे भगवानने विषे प्रीतिवाळो श्रेष्ठ छे त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एक तो नाइ धोइ पवित्र थइने भगवाननी पूजा करे छे अने एकनो मळमूत्रनो भर्यो थको भगवाननी पूजा करे छे ए बेमां कियो श्रेष्ठ छे? त्यारे मुनि मंडळे कह्युं जे पवित्र थइने भगवाननी पूजा करे

तै श्रेष्ठ छे. त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे मायिक उपाधिने तजीने भगवानने भजे छे तेने तो तमे न्यून कहो छो ने जे मायिक उपाधिए सहित थको परमेश्वरने विषे प्रीतिवान छे तेने श्रेष्ठ कहो छो ते ए केइ रीते श्रेष्ठ छे? पछी ए प्रश्नतुं कोइथी समाधान न थयुं पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे गीतामां चार प्रकारना भक्त कह्या छे तेमां ज्ञानीनेज भगवाने पोतानो आत्मा कह्यो छे माटे जे मायिक उपाधिने तजीने ब्रह्मरूप थइने भगवानने भजे तेज भक्त श्रेष्ठ छे. शा माटे जे नित्य प्रलय जे जीवनी सुषुप्ति, ने निमित्त प्रलय जे ब्रह्मानी सुषुप्ति, ने प्राकृत प्रलय जे प्रकृतिनुं कार्य सर्वे प्रकृतिने विषे लीन थइ जाय, अने आत्यंतिक प्रलय जे ज्ञान प्रलय तेमां तो प्रकृति पर्यंत सर्वे ब्रह्मना प्रकाशने विषे लीन थइ जाय छे, अने नित्य प्रलयमां जीवनी उपाधि लीन थाय छे, अने निमित्त प्रलयमां ईश्वरनी उपाधि लीन थइ जाय छे. ने प्राकृत प्रलयमां पुरुषनी उपाधि सर्वे लीन थइ जाय छे, पण ज्यारे सृष्टि सर्जाय छे त्यारे ए त्रणेने पोत पोतानी उपाधि वळगे छे अने आत्यंतिक प्रलय जे ज्ञान प्रलय तेणे करीने जेणे मायिक उपाधिनो त्याग कर्यो तेने तो पाछी कोइ काळे मायिक उपाधि वळगती नथी, अने ए जो कोइक काळे देह धरे तो जेम भगवान स्वतंत्र थका देह धरे छे तेम ते पण स्वतंत्र थको देह धरे छे. पण काळ कर्मने माया तेने आधीन थको देहने नथी धरतो माटे ब्रह्मरूप थइने परमेश्वरने भजे तेज श्रेष्ठ छे. (१) अने आ वार्ता छे ते जे परमेश्वरनो अनन्य भक्त छे अने एकां- १
तिक भक्तना लक्षणे युक्त छे तेनेज समजाय छे. (२) इतिवचनामृतम् ॥२॥ (२२२) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) एक छे, तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे नित्य निमित्त ने प्राकृत प्रलयमां जीव ईश्वर ने पुरुषनी उपाधि लय पामे छे ने पाछी सृष्टि समे वळगे छे पण ज्ञान प्रलये करीने मायिक उपाधिने तजीने ब्रह्मरूप एटले अमारा तेजरूप थइने अमने भजे तेने कोइ काळे मायिक उपाधि वळगती नथी अने ते जीवोनां आत्यंतिक कल्याण करवाने अर्थे स्वतंत्रपणे देह धरे ने मुक्ते पवो समर्थ थाय. (१) अने आ वात अमारा एकांतिक भक्तने समजाय छे. (२) बावतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां शुद्ध सत्त्वमय वर्ते छे एम कह्युं ते शुद्ध सत्त्वमय केवी रीते जाणवुं?

१ उ० एनो उत्तर एज बाबतमां नीचे कर्यो छे जे मायिक उपाधिनो त्याग करीने श्रीजीमहाराजना तेज रूप जे ब्रह्म ते रूप थइने श्रीजीमहाराजने भजे तेने आ ठेकाणे शुद्ध सत्त्वमय वर्ते छे एम कह्युं छे माटे शुद्ध सत्त्वमय एटले ब्रह्मरूपे वर्ते छे एम समजवुं.

२ प्र० आमां श्रीजीमहाराजना तेजरूप जे ब्रह्म ते ब्रह्मरूपे वर्ते तेने शुद्ध सत्त्वमय कह्यो अने (व० ५/८ मां) श्रीकृष्णने पण शुद्ध सत्त्वात्मक कहे तो बाध आवे एम कह्युं छे माटे श्रीकृष्णने शुद्ध सत्त्वात्मक न कहेवाय तो तेथी पर महाकाळ ने तेथी पर नर नारायण ने तेथी पर वासुदेवब्रह्म ने तेथी पर मूळअक्षरना मुक्त ने तेथी पर मूळअक्षर ने तेथी पर श्रीजीमहाराजना मुक्त छे तेमने शुद्ध सत्त्वमय वर्ते छे एम केम कहेवाय माटे ते केम समजवुं ?

२ उ० [व० १८ मां] रजतमथी रहित मायानो सत्त्वगुण तेने शुद्धसत्त्व कह्यो छे ते स-त्त्वात्मक श्रीकृष्णने न कहेवा, ए गुणथी पर कहेवा एम कह्युं छे, अने आमां तो सत्त्व शब्द शक्तिवाचक छे ते श्रीजीमहाराजनी शक्ति जे ब्रह्म ते ब्रह्मरूपे वर्ते तेनेज शुद्ध सत्त्वमय कह्यो छे माटे शुद्ध सत्त्वमय वर्ते छे एटले ब्रह्मरूपे वर्ते छे एम जाणवुं.

३ प्र० नित्य नैमित्तिक प्राकृत ने आत्यंतिक ए चार प्रकारना प्रलय कह्या ते केवी रीते थता हशे ?

३ उ० पाताळथी आरंभीने स्वर्गलोक पर्यंत दश लोकमां झीणा जंतुथी लइने इंद्र सुधीना देहनो क्षण क्षण प्रत्ये नाश थाय छे तेने नित्य प्रलय कहेवाय छे. (१) अने ज्यारे मर्त्य लोकनां चार अबजने बत्रीश करोड वर्ष थाय छे त्यारे वैराज पुरुषनी सांझ पडे छे, त्यारे प्रथम सो वर्ष पर्यंत अनावृष्टि थाय छे, पछी शेषनारायणना मुख थकी अग्नि उ-त्पन्न थाय छे अने उपरथी सूर्य तपे छे ते दश लोकने बाळी दे छे. त्यारे महर्लोकनिवासी ते जनलोकमां जाय छे पछी सांवर्तक नामना मेघ मुशळधाराथी वरसे छे, ने ध्रुव तारा सुधी जळ भराइ जाय छे, त्यारे वैराज तथा ब्रह्मा, विष्णु, शिवनी रात्री पडे छे त्यारे ते सूइ जाय छे तेना भेळा तप तथा जन ए लोकमां रहेनारा ते पण सूइ जाय छे. आवी रीते नैमित्तिक प्रलय थाय छे.[२] अने ए वैराजनो जेवडो दिवस तेवडीज रात्री छे ते रात्री दिवस थइने आपणां आठ अबजने चोसठ करोड वर्ष थाय छे अने तेनुं सवार थाय छे त्यारे जागीने सृष्टिने उत्पन्न करे छे. एवी रीते छत्रीश हजार निमित्त प्रलय थाय छे, त्यारे वैराजनी सो वर्षनी आयुष्य पुरी थाय छे, त्यारे तेनो देह नाश पामे छे त्यारे प्रधान पुरुषनी सांझ पडे छे त्यारे अष्टावरणने चौद लोकनो नाश थइ जाय छे तेने प्राकृत प्रलय कहे छे. [३] अने प्रधान पुरुषनो जेवडो दिवस छे तेवडी रात्री छे ते प्रधान पुरुषनी आयुष्यमां छत्रीश हजार प्राकृत प्रलय थाय छे त्यारे ते प्रधान पुरुष मूळ मायाने विषे लय पामे छे, एवां अनंत प्रधान पुरुषो मायामां लीन थाय छे अने मूळ माया मूळ पुरु-षने विषे लीन थाय छे तेने महा प्रलय अथवा आत्यंतिक प्रलय कहे छे. त्यारे मूळ पुरुष वासुदेव ब्रह्मना ब्रह्मपुर धाममां वासुदेवने समीपे जइने निवास करे छे. आवी रीते आत्यं-तिक प्रलय थाय छे. (४) आवी रीते ज्ञाने करीने प्रकृतिनुं कार्य सर्वे प्रकृतिने विषे लय करीने त्रण देहथी पर एवो पोतानो चैतन्य तेने ईश्वरकोटी, ब्रह्मकोटी, मूळ अक्षर कोटी थी पर श्रीजीमहाराजना तेज रूप मानीने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां जोडाय ते मुक्त थाय छे तेने फेर उपाधिमां आववुं पडतुं नथी, ने श्रीजीमहाराजनी पेठे स्वतंत्रपणे जीवोनां कल्याण करवाने अर्थे श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां रह्या थका अथवा श्रीजीमहाराजना तेजरूप जे धाम तेमां श्रीजीमहाराजनी समीपे रह्या थका ज्यांही दर्शन आपे, ने श्रीजीमहाराजनी इच्छाथी अंतर्धान थाय पण काळ आदिक कोइने आधीन थाय नहि. ॥ २२२ ॥

संवत् १८८२ ना फागण वदि २ द्वितीयाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीअमदावाद मध्ये श्रीनरनारायणना मंदिरने सन्मुख ओटा उपर ढोलियो

बिछाव्यो हतो ते उपर विराजमान हता ने मस्तक उपर गुलाबी रंगनी पाघ विराजमान हती ने ते पाघने विषे गुलाबना ने चमेलीना हार विराजमान हता तथा पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे समग्र मुनिमंडळ प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे (१) जीव मात्र छे ते पंच विषयने आधारे जीवे छे ते ज्यांतो बहार पंचविषयने भोगवतो होय अने ज्यारे बहार पंचविषयनो योग नहोय त्यारे अंतःकरणमां पंच विषयनुं चिंतवन कर्या करे पण ए जीव विषयना चिंतवन विना ने विषयने भोगव्या विना क्षणमात्र पण रही शकतो नथी अने जेम वडनुं वृक्ष छे तेनां जे मूळ तेज वडने लीलो राखे छे अने बीजां सर्वे मूळ उखडी गयां होय ने जो एक वडवाइ पृथ्वीमां चोटी रही होय तोपण ए वडनुं वृक्ष लीलुं रहे छे, तेम उपर थकी कदाचित् पंचविषयनो त्याग कर्यो छे पण अंतरमां विषयनुं चिंतवन थाय छे एज एने जन्म मरणनो हेतु छे एवा जे पंचविषय ते परमेश्वरना भक्तने केइ रीते जन्म मरणना हेतु नथी ए प्रश्न छे ? पछी एनो उत्तर जेम समझायो तेम मुक्तानंदस्वामीए कर्यो. पण यथार्थ समाधान थयुं नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो ए प्रश्ननो उत्तर अमे करीए जे मायामय एवां जे त्रण शरीर तेनी भावनाए रहित केवळ आत्मसत्तारूपे रहीने जे भक्त परमेश्वरनी मूर्तिनुं चिंतवन करतो होय तेने भगवानना चिंतवनने बळे करीने ज्यारे उपशम अवस्था वर्त्ते त्यारे ए भक्तने उपशमने बळे करीने पंचविषय जन्म मरणना हेतु न थाय जेम मही जेवी के साबरमती जेवी नदी बे कांठामां वहेती होय त्यारे हाथी घोडा वृक्ष सर्वे तणाइ जाय पण कोइ ठरी शके नहि तेम उपशमवाळाने पण गमे तेवा रमणिक भोग इंद्रियोने गोचर थया होय पण ज्यारे अंतर सन्मुख दृष्टि करे त्यारे जेवा पूर्वजन्मने विषे देख्या होय ते आ जन्ममां विसरी जाय छे तेवी तेनी विस्मृति थइ जाय छे. एवी रीते जे भक्तने वर्त्ततुं होय ते उपशम कहेवाय ते उपशमनो महिमा अति मोटो छे.अने जेम आ संसारने विषे अज्ञानी स्त्री पुरुष होय ने तेने परणाव्या मोरे अतिशे प्रीति वर्त्तती होय ने पछी तेने परणावीने त्रण रात ने त्रण दिवस सुधी उजागरोने पंथ कराव्यो होय ने पछी ए बेने भेळां कर्यां होय तो निद्राने मार्ये एक बीजाना रूपनुं के स्पर्शनुं सुख भोगववाने समर्थ थाय नहि. अने एक बीजाने आलिंगन करी रह्यां होय तोपण जेम काष्टने सापसामां बांधी मूक्यां होय तेम सुतां होय पण पंच विषयमां एके सुख आवे नहि. ए जो अज्ञानकाळे सुषुप्तिमां उपशमने पाम्यां छे तोपण कोइ जातनी विषयनी खबर रहेती नथी तो जे ज्ञानी छे ने परमेश्वरना स्वरूपने ध्याने [illegible] पाम्यो छे तेने पंचविषय केम बाध करे ? नज करे. माटे जे उपशमदशाने

पाम्यो तेने पंचविषय जन्म मरणना हेतु थाता नथी. (१) १
२ पछी नित्यानंदस्वामिए पुछ्युं जे (२) उपशमदशा पाम्यानो शा हेतु छे? पछी
श्रीजीमहाराज बोल्या जे एक तो भगवाननुं अतिशे महात्म्य समझतो होय अने बीजुं
भगवानने भगवानना भक्तनी सेवा, चाकरी, दर्शन करवुं तेमां अतिशे वेगवान श्रद्धा
वर्त्तती होय एवो जे भगवाननो भक्त तेने ए उपशम दशा आवे छे. [२] पण अमने २
एम भासे छे जे जे सेवक मानी हशे ते तो कोइने नहि गमतो होय, अने मानी सेवक
पासे जे टेल चाकरी कराववी ते तो जेम काळ पडे त्यारे मोटा माणस पण कोदरा
खाइने जीवे तेम मानी सेवकने पासे जे सेवा चाकरी कराववी तेपण एवी छे अने धणीनो
राजीपो तो जेवो निर्मानी सेवक उपर होय एवो मानी उपर न होय माटे धणीनुं ग-
मतुं करे तेज सेवक साचो. [३] ३
३ पछी शुकमुनिए पुछ्युं जे (३) जेने विवेक ने समझण न होय ते धणीने केम राजी
करे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे मुळजी ब्रह्मचारी ने रतनजी ए अतिशे क्यां डाह्या
छे, पण कल्याणनो खप अतिशे छे माटे भगवान जेम राजी थाय तेम एमने करतां
आवडे छे खरुं. अने वळी आ समयमां तो अयोध्यावासी बाइ भाइ सर्वे जेवा अमारा
गमतामां वर्त्ते छे तेवा तो परमहंस तथा सांख्ययोगी ने कर्मयोगी सत्संगी तेपण अमारा
गमतामां नथी वर्त्तता केमजे अयोध्यावासीए तो अतिशे ज सत्संगपारायण पोतानुं जी-
वितव्य कर्युं छे माटे अयोध्यावासीनी पेठे भगवानने राजी करतां कोइने आवडतुं नथी
अने ए अयोध्यावासी तो बहु विश्वासी छे माटे कांइक कसटी हशे तो एमने छेतरी
जाशे ते सारु एमने कांइक कार्यनो आदर करवो होय त्यारे मोटेरा परमहंस तथा मो-
टेरा सत्संगी गृहस्थ तेमने पुछीने ते काम करवा देवुं पण कोइक एक जणाने कहे करवा
देवुं नहि एवी रीते त्यागी तथा गृहस्थ सत्संगीने अयोध्यावासीनी खबर राखवी एम
अमारी आज्ञा छे. (४) इति वचनामृतम् ॥३॥ (२२३) ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [३] छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे पंच
विषयनुं चिंतवन ते जन्म मरणनो हेतु छे ते मायामय शरीरनी भावनाए रहित केवळ
आत्मसत्तारूपे रहीने अमारी मूर्तिनुं चिंतवन करे ते चिंतवने करीने ज्यारे उपशमदशाने
पामे त्यारे पंच विषय जन्म मरणना हेतु न थाय. (१) बीजामां अमारो अतिशे महिमा
समझे अने अमारी तथा अमारा भक्तनी सेवा चाकरी दर्शन करवामां अतिशे वेगवान
श्रद्धा होय तो उपशम दशा आवे. (२) अने मानी सेवकनी सेवा अमने नथी गमती
ने निर्मानी सेवक उपर अमे बहु राजी छइए ने ते साचो भक्त छे. (३) त्रीजामां अयो-
ध्यावासीनी प्रशंसा करी ने पछी एमने कोइक कार्यनो आदर करवो होय त्यारे मोटेरा
एटले स्वधर्मनिष्ठ ने सत्संगना धोरणने जाणनारा ने सत्संगना ममत्ववाळा परमहंस तथा

एवा सत्संगी गृहस्थ तेमने पुछीने ते काम करवा देवुं पण कोइक एक जणाने एटले सत्संगना धोरणने न जाणनार ने धर्मे रहित एवाने कहेवेथी कोइ काम करवा देवुं नहि एम स्वधर्मनिष्ठ मोटेरा त्यागी गृहीने आज्ञा करी छे. (४) बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां आत्मसत्तारूपे रहीने अमारी मूर्तिनुं चिंतवन करे ते उपशम दशाने पामे एम कह्युं ते आत्मसत्ता कइ जाणवी ?

१ उ० त्रण देहथी पर एवो जे जीवात्मा तेने ब्रह्मरूप मानीने श्रीजीमहाराजनुं चिंतवन करे ते चिंतवनने बळे उपशमदशा पमाय छे त्यारे विषय जन्म मरणना हेतु थता नथी ते ब्रह्म रूपे वर्तवुं ते आत्मसत्ता कही छे.

२ प्र० उपशमदशाने न आवे ने विषयनुं चिंतवन थाय पण तेने अंतरमां बहु खेद थतो होय तेने जन्म मरण टळे के न टळे ?

२ उ० एवुं तो श्रीजीमहाराज पुरुं करे पण जन्म धरावे नहि पण जेने विषयना संकल्प जोइने खेद न थाय तेने तो जन्म मरण थाय खरुं ॥ २२१ ॥

संवत् १८८२ ना फागण वदि ३ तृतीयाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री अमदावाद मध्ये श्रीनरनारायणना मंदिरने सन्मुख वेदिका उपर गादी तकियो तेणे युक्त जे ढोलियो ते उपर विराजमान हता ने मस्तक उपर गुलाबी रंगनी पाघ विराजमान हती अने ते पाघने विषे गुलाबना तोरा झुकी रह्या हता ने श्रवण उपर गुलाबना गुच्छ खोश्या हता ने गुलाबना अगणित हार ते कोटने विषे विराजमान हता अने बाजुबंध बांधे गुलाबना बांध्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज मुनिमंडळ तथा हरिभक्त प्रत्ये एम बोल्या जे (१) सर्वे सांभळो आज एक वात करवी छे ते कहीए छइए जे भगवान केवा छे तो जन्म धरते थके पण अजन्मा छे अने देहने मुकते थके पण अजर अमर छे ने निरंजन छे कहेतां मायाना अंजन थकी रहित छे ने मूर्तिमान छे अने स्वप्रकाश छे ब्रह्म छे अक्षर छे अंतर्यामी छे ने अनंत कोटी ब्रह्मांडना आधार छे. अने मनुष्य देहने जे धरवुं ने मुकवुं ते तो नटवानी पेठे इंद्रजाळ सरखुं छे अने अनंतकोटी अक्षरातीत मुक्तना नियंता छे ने सर्वेना स्वामी छे. (१) एवा जे श्रीनरनारायण ते जे ते प्रथम धर्मदेव थकी मूर्तिने विषे १ प्रगट थइने बदरिकाश्रमने विषे तप करे छे अने वळी ते श्रीनरनारायण जे ते मत्स्य, कच्छ, वाराह, वामन, रामकृष्णादिक जे देह तेने ग्रहण करीने अने ते पोताने देहे करीने अन्य जीवोना देहना अभिमाननो त्याग करावीने अने ब्रह्म अभिमाननुं ग्रहण करावीने ते पछी पोताना देहने ने अन्य जीवोना देहने सम देखाडे छे जेम कांटे करीने कांटाने काढीने बे कांटानो त्याग करे छे तेम भगवान पोताना देहनो अने अन्य जीवोना देहनो तुल्यपणे त्याग करे छे. ते मारवने विषे आख्यान छे जे नृसिंहजीने ज्यारे

देहनो त्याग कर्यानी इच्छा थई त्यारे अंतर्यामीरूपे करीने शिवना हृदयने विषे प्रेरीने शिवपासे सरभनो देह धराव्यो अने ते सरभने ने नृसिंहजीने मांहोमांही युद्ध थयुं ने पछी नृसिंहजीए पोतानो देह मूकी दीधो एवी रीते देहनुं ग्रहण करे छे ने पछी देहनो त्याग करे छे ते जेम ऋषभदेवे अग्निने विषे बळीने देहनो त्याग कर्यो अने श्रीकृष्णभगवानना पगमां तीर लाग्यो ने देहना त्याग कर्यो, ते चरित्रने देखीने जे नास्तिकमतिवाळा छे ने अभक्त छे तेनी बुद्धि भ्रमाइ जाय छे अने भगवानने विषे जन्म मृत्युनो आरोपण करे छे अने तेनी मतिने विषे एम जणाय छे जे भगवान पण कर्मे करीने देहने धरे छे अने कर्मे करीने देहने मुके छे अने नैष्कर्म्य कर्मने करशे त्यारे कर्म खपीने मुक्त थाशे अने जे आस्तिक बुद्धिवाळा छे अने हरिभक्त छे ते एम जाणे छे जे नास्तिकनी समजण छे ते तो जुठी छे ने भगवाननो देह तो नित्य छे अने बाळ, यौवन, वृद्धने जन्म मृत्यु इत्यादिक जे देहना गुण ते भगवाननी लीला छे अने जे काळने माया ते तो भगवानना देहने विषे चेष्टा करवाने अर्थे समर्थ थाता नथी, अने ए भगवानना देहने विषे परिणामपणुं जणाय छे ए तो ए भगवाननी मायाए करीने जणाय छे अने तेने विषे जे भगवानना भक्त छे ते मोह नथी पामता ने जे अभक्त छे तेनि मति भ्रमि जाय छे जेम नटवाना चरित्रने देखीने जगतना जीवनी मति भ्रमि जाय छे अने नटनी विद्यानो जाणतल जे पुरुष तेनी मति नथी भ्रमाती तेम पुरुषोत्तम एवा जे श्रीनरनारायण ते अनेक देह धरीने नटवानी पेठे बदली दे छे, ने ए श्रीनरनारायण तो सर्वे जे अवतार तेना कारण छे ने ते श्रीनरनारायणने विषे मरणभाव जे कल्पे छे तेने अनेक देह धरवा पडे छे ने चोराशीना दुःखनो ने यमपुरीना दुःखनो तेने पार आवतो नथी. (२) अने जे श्री २
नरनारायणने विषे अजर अमरपणुं समझे छे ते कर्म थकी ने चोराशी थकी मुकाइ जाय छे. माटे आपणा उद्धव संप्रदायना सर्वे सत्संगी साधु ते जे ते भगवाननी मूर्तियो छे थइ गई ने हमणां छे ने आगळ थाशे तेने विषे मरणभाव कोइ करशोमां अने आ वार्ता सौ लखी लेजो एम कहीने श्रीजीमहाराज पोतानुं वर्तमानकाळे प्रगटपणुं जणावता हवा. (३) ॥इति वचनामृतम् ॥ ४ ॥ (२२४) ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य [१] छे, तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के अमे अजन्मा, अजर, अमर, ने मायाने आवरणे रहित ने मूर्तिमान छीए ने सर्वेना आधार ने स्वामी छीए अने नटनी पेठे मनुष्य रूपे देखाइए छीए. (१) अने श्रीनरनारायण जे अमे ते अमे प्रथम धर्मदेव थकी मूर्तिने विषे प्रगट थइने बदरिकाश्रममां तप करीए छीए अने मच्छ, कच्छ, रामकृष्णादिक रूपने ग्रहण करीने जीवोना देहाभिमाननो त्याग करावीने ने ब्रह्म अभिमान ग्रहण करावीने अन्य जीवोनी पेठे देहनो त्याग करीए छीए जेम नृसिंहजी ऋषभदेव तथा श्रीकृष्ण भगवाने देहनो त्याग कर्यो तेम, अने एवां अमारां चरित्रने विषे

नास्तिक अने अभक्तनी मति भ्रमि जाय छे, ने अमारा भक्त मोह नथी पामता, अने श्रीपुरुषोत्तम नरनारायण जे अमे ते अमे सर्वना कारण छीए अने अनेकरूपे दर्शन आपीने अदृश्य थइए छीए ने अमारे विषे मरणभाव कल्पे तेने चोराशी ने यमपुरीना दुःखनो अंत नथी आवतो. (२) अने अमने अजर, अमर जाणे ते चोराशी ने कर्मथी मुकाय छे. माटे आगळ थया जे अवतार अने हमणां आ प्रगट प्रमाण जे अमे ने आगळ थशे जे अवतार ते सर्वेमां मरणभाव परठशो नहि. [३] वातो छे.

१ प्र० श्रीजीमहाराजने स्वप्रकाश कह्या ते स्वप्रकाश केवी रीते जाणवा ?

१ उ० स्वप्रकाश एटले बीजा कोइनो आपेलो प्रकाश नहि पोतानेज प्रकाशे प्रकाशमान छे, माटे स्वप्रकाश कह्या छे.

२ प्र० आमां श्रीजीमहाराजने ब्रह्म ने अक्षर कह्या अने (प्र० ३९, ४२, ५० तथा व० १३ ना २ बीजा प्रश्नमां) ब्रह्म कह्या छे. अने (पं० २ मां) अक्षर कह्या छे अने केटलांक वचनामृतोमां परब्रह्म तथा अक्षरातीत कह्या छे ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० जे सर्वथी अतिशे मोटा होय ते ब्रह्म कहेवाय, अने जे न क्षरे तेमने तथा जे मूर्तिथी जुदा न पडे ते सर्वने तथा चैतन्य वर्गे सर्वने अक्षर कहेवाय ते श्रीजीमहाराज जेवा अक्षर बीजा कोइ नथी माटे श्रीजीमहाराजने अक्षर कह्या छे. अने श्रीगोपाळानंदस्वामी मुक्तानंदस्वामी, ब्रह्मानंदस्वामी, नित्यानंदस्वामी, गुणातीतानंदस्वामी, शतानंदस्वामी आदी सर्व अनादि मुक्त छे ते श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां सदाय रह्या छे पण जुदा पडताज नथी माटे तेमने पण अक्षर कहेवाय छे. पण जे सृष्टिकर्त्ता मूळअक्षर छे तेनो अनादि तथा परम एकांतिकथी न्यून छे अने गोपाळानंदस्वामी आदिकने मूळअक्षरनी उपमा आपी होय ते तो शास्त्रमां तेनी मोटयप होय तेथी तेनी उपमा आपी छे पण अनादि मुक्त जेवा अक्षर बीजा कोइ कहेवाय नहि अने ब्रह्म तथा अक्षरथी पर छे माटे परब्रह्म तथा अक्षरातीत कह्या छे.

३ प्र० बदरिकाश्रममांतो नरनारायण कल्प कल्प प्रत्ये आवीने तप करे छे अने प्रथम प्रगट थइने बदरिकाश्रममां तप करे छे एम बीजी बाबतमां केम कह्युं हशे ?

३ उ० आ ब्रह्मांडमां श्रीजीमहाराज प्रथम प्रगट थया छे तेथी प्रथम धर्मदेवने मुर्ति जे भक्ति ते थकी प्रगट थइने तप करे छे एम कह्युं छे अने मुमुक्षु जीवोना कल्याणने अर्थे वनमां विचर्या ने तप कर्युं ते तप कह्युं छे अने आ लोकने विषे पोताना भक्तोने दर्शन स्पर्शादिकनुं सुख आपवा सारु उंघ उजागरो भुख तरस टाढ तडकाने सहन करीने देश विदेशमां विचरता हता माटे तप करे छे एम कह्युं छे. अने जेम पोताने नरनारायण नामे कह्या छे तेम वनने बदरिकाश्रम नामे कह्युं छे पण जे बदरिकाश्रममां तप करे छे ते नरनारायण अने श्रीजीमहाराज तो जुदा छे ने सर्वना कारण ने अवतारी छे ते एज बाबतमां अमे मच्छ, कच्छ रामकृष्णादिक अवतारोनुं ग्रहण करीए छीए एम कह्युं छे. ॥२२४॥

संवत् १८८२ ना फागण वदि ४ चतुर्थीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री अमदावाद मध्ये श्रीनरनारायणना मंदिरने विषे पोताने पोढवानी मेडीने

विषे विराजमान हता अने ढोलिया उपर तकियानुं उठीगण दीधुं हतुं ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ने कंठने विषे गुलाबनो मोटो हार विराजमान हतो ने मस्तकने विषे पुष्पना तोरा लटकता हता ने हस्तने विषे तुळसीनी माळाने फेरवता हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मोटा मोटा मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ ते समे कुबेरसिंहजी छडीदारे श्रीजीमहाराजने प्रश्न पुछयो जे [१] हे महाराज! श्रीपुरुषोत्तम एवा जे भगवान तेनुं असाधारण लक्षण ते शुं छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जीवनां प्राण, नाडी, तेनो संकेलो करवो ते बीजाथी थाय नहि, ने लाखुं माणस नियममां रह्या थकां वश थइ रहे ते बीजा कोइथी थाय नहि, अने अक्षर आदिक जे मुक्त तेने पण नियममां राखवाने समर्थ छे ए असाधारण लक्षण कह्युं. (१) १

२ वळी कुबेरसिंहे बीजो प्रश्न कर्यो जे (२) हे महाराज ! असंख्य कोटी ब्रह्मांड छे ने भगवाननो अवतारतो आ ब्रह्मांडमां ने जंबुद्वीपना भरतखंडने विषे छे अने बीजा ब्रह्मांडमां असंख्य जीव छे ते जीवोनो उद्धार भगवान शी रीते करता हशे ? ते कहो. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जे भगवान आ ब्रह्मांडने विषे विराजे छे तेज भगवान सर्वना स्वामी छे ने अनंत कोटी ब्रह्मांडने विषे असंख्य जीवोना कल्याणने अर्थे ब्रह्मांड ब्रह्मांड प्रत्ये भगवान पोते देहने धारण करे छे तेने शरणे असंख्य जीव थाय छे तेणे करीने अक्षर धाममां श्रीपुरुषोत्तमना चरणारविंदने घणाक जीव पामे छे ए उत्तर एनो छे. (२) २

३ अने वळी कुबेरसिंहे प्रश्न पुछयो जे (३) हे महाराज ! भगवानने जाणवावाळा जे भगवानना भक्त सत्संगी तेने शुं शुं तजवुं ने शुं शुं ग्रहण करवुं ? ते कहो. पछी श्रीजीमहाराज एम बोल्या जे आ लौकिक आशा जे छे तेनो त्याग करवो ने भगवाननी तरफनी आशानुं ग्रहण करवुं.ते जो धनने विषे आशा होयतो एम आशा बांधवी जे भगवानना धाममां सोनामहोरुंना ढगलाने ढगला छे ने हीरा, रत्न, माणेक अमूल्य तेना पण ढगलाने ढगला छे ए सर्वे भगवानने भजशुं तोपामशुं एम आशा बांधवी, पण अहियांनी आशा न बांधवी. अने जो कामी होय तो एम विचार करे जे पर स्त्री सामी खोटी नजर करशुंतो नरक चोराशीमां ते पापे जावुं पडशे ने त्यां महादुःख थाशे,ने विषयतो कुतरां गधेडां पण भोगवे छे अने मुने तो प्रगट पुरुषोत्तम मळ्या छे ते कुराजी थाशे तो मोटी खोटय आवशे, एम जाणीने काम वासनानो त्याग करवो अने भगवान संबंधी सुखनुं ग्रहण करवुं.ने देहना संबंधीमां प्रीति होय तेनो त्याग करवो ने भगवान ने भगवानना दास जे संत ते संघाथे प्रीति करवी ए ग्रहण करवुं ने देहने विषे अहंबुद्धि होय तो तेनो

त्याग करीने भगवानना दासपणानी बुद्धिनुं ग्रहण करवुं ने भगवान अथवा साधु ते पोताने कांइक रीते वढ्या होय ने तिरस्कार कर्यो होय तो तेनो मनमांथी त्याग करवो ने पोतानी भुल्य जाणवी ने भगवाननो ने संतनो गुण ग्रहण करवो एवी रीते सर्वे सवळुं विचारवुं पण अवळुं तो कोइ दिवस विचारवुंज नहि ए उत्तर छे. (३) ३

४ अने वळी कुबेरसिंहे प्रश्न पुछ्यो जे (४) हे महाराज ! धर्म, अर्थ, काम ने मोक्ष ए चारेनुं रूप कहो. पछी श्रीजीमहाराज मंदमंद हसीने एम बोल्या जे अर्थनुं रूप तो ए छे जे जेणे करीने धन मेळुं करवुं अथवा मोक्ष संबंधी पोतानो अर्थ साधवो ए पण अर्थनुं रूप छे. अने धर्मनुं रूप तो ए जे ते धन धर्मने अर्थे सत्संगमांज वापरे पण कुमार्गे क्यांय न वापरे ए धर्मनुं रूप छे. अने कामनुं रूप तो एम छे जे एक परणेल स्त्री राखे ने तेनो पण ऋतुकाळे संग करे अने बीजी स्त्रियो जगतमां छे तेने मा, बेन, दिकरी तुल्य जाणीने त्याग राखे. अने मोक्षनुं रूप तो ए जे सत्संग संबंधी जे सर्वे वर्तमान तेने खबडदार थइने राखे ने भगवाननो अचळ निश्चय राखे एम ए चारेनो उत्तर छे.एम कहीने श्रीजीमहाराज पछी पोढी जाता हवा.(४)इतिवचनामृतम् ॥५॥ (२२५)४

रहस्यार्थ० प्र०—आमां प्रश्न (४) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं के जे जीवना नाडी प्राणनो संकेलो करवो तथा लाखो माणसोने वश करवां तथा मूर्तिमान अक्षर कोटीने नियममां राखवा तथा अमारा मुक्तने पण नियममां राखवा ते अमारुं असाधारण लक्षण छे (१) बीजामां अमे सर्वना स्वामी छीए अने अनंत ब्रह्मांडमां असंख्य जीवोना कल्याणने अर्थे ब्रह्मांड ब्रह्मांड प्रत्ये दर्शन आपीने असंख्य जीवोने अमारा धाममां लइ जइए छीए. (२) त्रीजामां धननी तथा कामनी वासनानो त्याग करवो ने अमारा सुखनी वासना राखवी, अने देह ने देहना संबंधीने विषे प्रीति ने अहंबुद्धि त्याग करीने अमारे ने संतने विषे प्रीति ने अमारे विषे दासपणुं राखवुं, ने अमे तिरस्कार करीए तो पोतानी भूल जाणवी ने अमारो ने संतनो गुण लेवो. (३) चोथामां धर्म, अर्थ, काम ने मोक्षनां रूप कह्यां छे. (४) बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां सर्वोपरि ने मूळ अक्षरादिक सर्वे अवतारोना अवतारीने अनंतकोटी मुक्तोना स्वामी साक्षात् श्रीस्वामिनारायण पूर्णपुरुषोत्तम तेमणे पोताना असाधारण बे लक्षण कह्यां ते विनानां बीजां असाधारण लक्षण होय ते कृपा करीने कहो.

१ उ० पूर्वे थइ गयेला सर्वे अवतारोने पोतानी मूर्तिने विषे देखाडे ते दिव्य मूर्ति एवा श्रीजीमहाराजनुं प्रथम लक्षण छे [१] अने वैकुंठादिक लोकने विषे रहेली दिव्य मूर्तियो तथा ते मूर्तियोमां रहेलुं दिव्य अद्भुत एवुं जे ऐश्वर्य ने सुख ते पोतानी मूर्तिने विषे बहु मनुष्योने देखाडे ते बीजुं लक्षण छे. [२] अने साधारण मनुष्योने पण समाधि करावीने पोतानी मूर्तिने विषे चित्तनो निरोध करावे ते आमां पहेली बाबतमां प्रथम लक्षण कह्युं जे नाडी प्राणनो संकेलो करवो ते आ श्रीजीमहाराजनुं त्रीजुं लक्षण छे.(३)

अने बीजा अवतारोए कल्याण कर्युं तथा चित्तनो निरोध कर्यो तेवुं सामर्थ्य तो पोताना भक्तो द्वारे जणाव्युं ते श्रीजीमहाराजनुं चोथुं लक्षण छे. (४) अने पोतानुं अपार तेजोमय एवुं जे अक्षरधाम तेने विषे दिव्यसिंहासन उपर बिराजमान ने अनंतकोटी मुक्तो पोतानी सेवामां छे एवां पोतानां दर्शन जेवा तेवा मनुष्योने करावे ते पांचमुं लक्षण छे [५] अने पूर्वना शास्त्रने विषे ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, धर्म, योग, सांख्य, विगेरेनां स्वरूपनुं वर्णन करेलुं छे तेनुं वर्णन पोताना योग बळथी करे अथवा पोताना भक्त पासे वर्णन करावे त्यारे पूर्वना शास्त्र करतां तेमां बहु चमत्कार आवे अने अर्थ पण सौना समज्यामां आवे ने अमृतनी पेठे सर्वेने शान्ति करे ते साक्षात् भगवान श्रीस्वामिनारायण तेमनुं छठुं लक्षण छे. (६) अने लोहचमकवत् पोताना दर्शन मात्रे करीने अनेक जीवनी वृत्तियोनो पोताने विषे सहज स्वभावे निरोध थाय ने लाखो माणसने वश करवा तथा मूळअक्षर कोटीने तथा अनंतकोटी मुक्तोने पण नियममां राखवा समर्थ एम आ वचनामृतमां पहेली बाबतमां पछीथी बीजुं लक्षण कह्युं ते आ सातमुं लक्षण छे. (७) अने जीवनुं पोताना आश्रय मात्रे करीने परम कल्याण थाय ने अंतकाळे पोताना मुक्तोए सहित दर्शन आपीने अक्षरधाममां लइ जाय ते आठमुं लक्षण छे. (८) अने घोर कळियुगने विषे पोतानी आज्ञाने विषे अनेक मनुष्योने वर्तावीने तेमने धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्तिने विषे स्थिति करावे ते नवमुं लक्षण छे. [९] अने अष्टांगयोग सिद्ध कर्या विना पण, पोताना संबंधने पामेलुं वस्त्र तथा पुष्प तथा छडी तेना स्पर्शे करीने तथा दर्शने करीने समाधियो करावे, तेते समाधियोमां पोतानुं ऐश्वर्य मूर्ति धाम ते सर्वेने देखाडे ते दशमुं लक्षण छे. (१०) अने कोइ परदेशमां जइने मनुष्योनी आगळ श्रीजीमहाराजनी मूर्ति संबंधी वार्ता करे ते वार्ताने सांभळनारा मनुष्यो श्रीजीमहाराजने तेजना समुहमां देखे ते अगीआरमुं लक्षण छे.[११] अने प्रधानपुरुष पर्यंत जीवकोटी अने मूळ प्रकृतिरूप माया ने मळपुरुषरूप ईश्वर अने महाकाळ ने ब्रह्म ने मूळअक्षर ए सर्व कोटीयोथी पर परम एकांतिक तथा अनादि मुक्त ते सर्वेना स्वरूपनां तथा पोताना स्वरूपनां भेदे सहित जुदां जुदां लक्षण करे अथवा पोताना भक्त पासे करावे अने ते सर्वेनां ऐश्वर्य सहित स्वरूपने घणाक मनुष्योने देखाडे ते सर्वोपरी अक्षरधामाधिपति एवा पुरुषोत्तम श्रीस्वामिनारायण भगवान तेमनुं आ बारमुं लक्षण छे. (१२) अने पोताना पूर्वना अवतारोने पोतानी मूर्तिने विषे लीन करतां घणाक मनुष्योने देखाडे अने पोते कोइ अवतारमां लीन न थाय ते धर्म देवना पुत्र श्रीहरिभगवाननुं आश्चर्यकारक आ तेरमुं लक्षण जाणवुं. (१३)

२ प्र० श्रीजा प्रश्नमां अमारा धाममां सोना महोरोना तथा हीरा माणेकना ढगला छे एम कह्युं ते ए मायिक वस्तु श्रीजीमहाराजना धाममां तो नहोय माटे केवी रीते समजवुं ?

२ उ० नवा आदरवाळा सकाम भक्तने लोभ देखाडीने आ लोकमांथी उखेडवा सारु कह्युं छे. पण मायाथी पर जे लोक छे तेमां मायिक वस्तु छेज नहि. ॥ २२५ ॥

संवत् १८८२ ना फागण वदि ६ छठने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज

श्रीअमदावाद मध्ये श्रीनरनारायणना मंदिरने सन्मुख वेदिका उपर गादी तकियो तेणे
युक्त जे ढोलियो ते उपर विराजमान हता ने सर्वे श्वेतवस्त्र धारण कर्यां हतां ने कोटने
विषे गुलाबना हार पहेर्या हता ने पाघने बेउ कोरे चंमेलीना पुष्पना तोरा झुकी रह्या
हता ने बेउ कान उपर गुलाबना गुच्छ विराजमान हता ने गुलाबनो मोटो गुच्छ हस्त
कमळमां लइने मुखारविंद उपर वारंवार फेरवता हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ
मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.
पछी संध्या आरती थइ रही ते केडे कुबेरसिंहे श्रीजीमहाराज प्रत्ये प्रश्न पुछयो
१ जे (१) हे महाराज! जे भगवानने भगवान जाण्या तेने सर्वे अंगे भगवाननो निश्चय डगे
नहि ते अंग कहो ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे आ वात तो सौने सांभळवा योग्य
छे ते माटे सर्वे सांभळो,जे आ सत्संगने विषे भगवान विराजे छे तेज भगवानमांथी चो-
वीश अवतार थया छे ने पोते तो अवतारी छे, ने एज सर्वे जीवोना अंतर्यामी रूप छे ने
एज अक्षरधामने विषे तेजोमय छे ने सदा साकार रूप छे ने अनंत ऐश्वर्य युक्त छे, ने
एज राजाधिराज अनंत ब्रह्मांडना छे ने अक्षर ब्रह्मना पण कारण छे ने ते भगवान
प्रगट थइने ऋषभदेवनी क्रियाने ग्रहण करे त्यारे जाणीए जे ऋषभदेव छे ने रामाव-
तारनां चरित्र करे त्यारे जाणीए जे रामचंद्रजी छे, ने श्रीकृष्णावतारनी लीला आचरे
त्यारे जाणीए जे श्रीकृष्ण छे, एज प्रकारे चोवीश अवतारमां जे जे अवतारनी क्रिया
जाण्यामां आवे त्यारे एम समजवुं जे मोरे भगवानना जेटला अवतार थया छे ते सर्वे
आपांथी थया छे अने तेज आ छे एम सर्वे अंगे समजे त्यारे निश्चय तेनो डगे नहि ने
एम न समजे तो कांइक डगमगाट थाय खरो ए उत्तर छे. ने तमने सर्वेने आज भग-
वान मळ्या छे ते तो सर्वना कारण छे ने सर्व अवतारना अवतारी छे ने अक्षरधामना
धामी छे ने तेज श्रीनरनारायण रूपे थइने धर्म थकी भक्तिने विषे प्रगट थया छे ते
माटे आ श्रीनरनारायणने अमे अति आग्रह करीने अमारुं रूप जाणीने सर्वेथी प्रथम आ
श्रीनगरने विषे पधराव्या छे एज ब्रह्ममहोलना निवासी छे. (१) १
२ त्यारे वळी कुबेरसिंहे कह्युं जे (२) ब्रह्म महोल केवो छे तेनुं रूप कहो अने तेने
विषे जे भगवानना भक्त छे तेनुं रूप कहो ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे अक्षररूप
जे ब्रह्म छे तेज श्री पुरुषोत्तमनारायणने रहेवा सारु महोलरूप थयो छे ने सर्वे अक्षर
ब्रह्म थकी भगवानना महोलरूप जे अक्षर ब्रह्म ते अनादि छे. ने ते ब्रह्म महोलने विषे
बहु प्रकारना महोल छे ने ते महोलुंने बहु प्रकारना गोख छे ने बहु प्रकारना जरुखा
छे ने बहु प्रकारनी तेने अगासीयो छे ने तेने विषे बहु चित्र विचित्रपणुं छे ने बहु प्र-
कारना फुवारा छे ने बहु प्रकारना बाग बगीचा छे ने तेमां फुल पण अनंत जातनां छे

ने तेजोमय छे ने अनंत छे ने एने कोइ धामनी उपमा न देवाय एवुं छे अने गोलोक पण एनेज कहीए छइए अने अनंत अन्य धामनी विभूतियो ते थकी असंख्य कोटी जातनी शोभानुं अधिकपणुं छे ने अपार छे तेनुं दृष्टांत जे जेम वादळने चारे दिशामां जोइए त्यारे एम जणाय छे जे ढळतुं ढळतुं पृथ्वीने आणीए अड्युं छे पण चाली चालीने थाकी जाइए तोय पण पार आवे नहिं, ने वादळने उंचु जोइए तोपण जाणीए जे आ रह्युं पण विचारीने जुवे तो घणुं उंचुं छे ने अपार छे ने तेनो जो पार लेवा मांडे
तो पार आवे नहि एवुं ब्रह्म धाम मोटुं छे. (२) ते धामने विषे जे असंख्य मुक्त २
रह्या छे ते आकारे सहित तेजोमय छे ने सर्वभूत प्राणी मात्रना अंतर्यामी छे ने ते सर्वे भगवाननी सेवामां निरंतर तत्पर रहे छे अने तेज धामना जे धणी अने अक्षरातीत मुक्तना स्वामी ने परब्रह्म श्री पुरुषोत्तम जे छे तेज आ सत्संगने विषे विराजमान
छे आवो जेने निश्चय छे तेज ब्रह्म धामने पामे छे.(३) इतिवचनामृतम् ॥६॥ (२२६) ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमे भगवान छीए सर्वे अवतारोना अवतारी, सर्वेना अंतर्यामी ने अक्षरधामने विषे तेजोमय ने सदा साकार ने अनंत ऐश्वर्ये युक्त ने अनंत ब्रह्मांडना राजाधिराज छीए ने अक्षरब्रह्म जे अमारुं तेज तेना पण कारण छीए. माटे अमारी क्रियामां सर्वे अवतारोना चरित्र जोइने अमने सर्वे अवतारोना अवतारी जाणीने अमारो निश्चय करवो तो ते निश्चय डगे नहि. ने आज तमने अमे भगवान मळ्या छीए ने अमे सर्वेना कारण अवतारी ने अक्षरधामना धामी छीए ने अमे नरनारायणरूपे एटले नरनारायणने मिषे करीने धर्मभक्ति थकी प्रगट थया छीए ते अमारुं रूप आ श्रीअमदावादने विषे पधराव्युं छे. (१) बीजामां अमारा तेजरूप जे अक्षरब्रह्म ते अनादि छे ने एनेज अमे ब्रह्ममहोल अक्षरधाम तथा गोलोक नामे कहीए छीए. अने ते ब्रह्म धाम ते अपार छे ने तेने विषे शोभानुं अधिकपणुं छे. (२) अने ए अक्षरधाममां अक्षरातीत एवा अमारा मुक्त रह्या छे ते साकार तेजोमय छे अने सर्वेना अंतर्यामी छे ने अमारी सेवामां निरंतर तत्पर रह्या छे अने अमे सर्वेना स्वामी छीए आवो अमारो निश्चय होय तेज ए धामने पामे छे. (३) वावतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां अमारे विषे चोवीशे अवतारोनां चरित्र जोइने अमने सर्वे अवतारोना कारण समजवा एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते श्रीजीमहाराजे सर्वे अवतारोनी क्रिया कइ करी हशे ?

१ उ० रामावतारे एक पत्नीव्रत राख्युं ने वर्णाश्रम धर्ममां दृढपणे वर्त्या तेम श्रीजीमहाराजे पोताना सत्संगीयोने एक पत्नीव्रत रखाव्युं अने वर्णाश्रमना धर्म अतिदृढ पळाव्या. अने जेम कृष्णावतारे असुरांशने मारीने पृथ्वीनो भार उतार्यो तेम श्रीजीमहाराजे जगन्नाथपुरी आदिक तीर्थोमां रहेला असुरोने मारीने पृथ्वीनो भार उतार्यो अने पोताना आश्रितोने विषेथी काम क्रोधादिक अधर्मनो सर्ग नाश पमाडीने एकांतिक धर्म स्थापन कर्यो. अने

जेम ऋषभदेवे पोताना देहनी संभाळ न राखी ने दावानळमां देह बळी गयो तेम श्री-जीमहाराजे नदीने विषे पोतानो देह तणातो मुक्यो ने वनने विषे अनंत जनावरो मेळा थिचर्या त्यां कांइ बीक राखी नहि अने पोताना आश्रितोने पण वनमां राख्या गोळा खमराव्या टाट पहेराव्यां तथा मांख मच्छर आदिक करडे तो पण देहनी संभाळ न रहे एवी स्थिति करावी ते सर्वे चरित्र जाणवां, अने सर्वे अवतारोने पोतानी मूर्तिमांथी देखाड्या ने सर्वेने पोतानी मूर्तिने विषे लीन कर्या ते चरित्र सर्व चरित्रथी मोटुं छे तेणे करीने श्रीजीमहाराजने सर्वोपरि सर्वना कारण अवतारी जाणवा.

२ प्र० अमे नरनारायणरूपे धर्मभक्ति थकी प्रगट थया छीए एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते नरनारायणरूपे केवी रीते समजवा. अने ते नरनारायणने अमारुं रूप जाणीने पधराव्या छे एम कह्युं ते रूप केवी रीते समजवुं अने एज ब्रह्म महोलना निवासी कह्या ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० अक्षरधामना धामी जे श्रीजीमहाराज तेमना रामकृष्णादिक तथा नरनारायणादिक अनंत अवतारो छे, तेमां आज श्रीजीमहाराज नरनारायणना शाप निमित्ते प्रगट थया छे तेथी नरनारायणरूपे प्रगट थया छीए एम कह्युं छे माटे नरनारायणने मिषे प्रगट थया छे एम समजवुं. अने श्रीजीमहाराजे लोकोने समाधियो करावीने नरनारायणादिक अनंत रूपे दर्शन आप्यां हतां ते रूप पधराव्यां छे एम समजवुं. अने नरनारायण रूपे श्रीजी-महाराज प्रगट थया छे ते श्रीजीमहाराज अक्षरधामना निवासी छे एम समजवुं.

३ प्र० बीजा प्रश्नमां अक्षररूप जे ब्रह्म ते अमारे रहेवा सारु महोलरूप थयो छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं अने (पं० १/२ मां) अमारा अंगनो प्रकाश तेज अमारे रह्यानुं धाम छे एम कह्युं छे अने (म० १/३ मां) पण पोताना तेजनेज अक्षरधाम कह्युं छे ते केवी रीते समजवुं ?

३ उ० श्रीजीमहाराजना तेजरूप अक्षरधाम छे ते महोलरूपे थया छे एटले महोलरूपे शोभा आपे छे एम कह्युं छे. अने आ पोताना तेजने अक्षरधाम तथा ब्रह्म महोल तथा ब्रह्म ज्योति तथा गोलोक आदिक घणे नामे कहेल छे ते [प्र० ७ ना छठा प्रश्नोत्तरमां) छे.

४ प्र० श्रीजीमहाराजना तेजने श्रीजीमहाराज तथा मुक्तोने रह्यानुं धाम कह्युं ते धाम तो आधार रूप कहेवाय ने (म० ६४ ना पहेला प्रश्नोत्तरमां) तेजना आधार श्रीजीमहाराजे पोताने कह्या छे ते केम समजवुं ?

४ उ० जेम सूर्यने आधारे सूर्यनुं तेज छे अने अग्निने आधारे अग्निनो प्रकाश छे तेम श्री-जीमहाराजने आधारे श्रीजीमहाराजनुं तेज छे पण तेज आधार नथी पण ए तेजमां पोते रह्या छे माटे धामरूप अथवा महोलरूप कहेवाय तेणे करीने आधाररूप न समजवुं.

५ प्र० सर्वे अक्षर ब्रह्म ते किया जाणवा ?

५ उ० मूळअक्षर अनंत छे; तेमने सर्व अक्षरब्रह्म कह्या छे ते सर्वे मूळअक्षर ब्रह्मथी श्रीजी-महाराजना तेजरूप जे अक्षरब्रह्म ते अनादि छे ने सर्वेनुं आधार छे.

६ प्र० श्रीजीमहाराजना तेजरूप ब्रह्म धामने विषे बहु प्रकारना महोल तथा गोख, झरूखा

आदिक कह्या ते अक्षरधाममां महोल झरुखा आदिक केवी रीते समजवा ?

६ उ० आ लोकने विषे महोल, गोख, झरुखा, बाग बगीचाने विषे श्रीजीमहाराज विराज्या होय ते कह्या छे केम के जे श्रीजीमहाराजना संबंधने पामे तेने निर्गुण कहेवाय छे (म० ६ मां) अमे जे जग्यामां विराजता होइए ते जग्या तथा वस्त्र वाहन सेवक आदिक जे जे अमारा संबंधने पामे ते निर्गुण छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे माटे महोल गोख झरुखा आदिक जे जे श्रीजीमहाराजना संबंधने पाम्या तेने अक्षरधामना कह्या छे एम जाणवुं ॥ २२६ ॥

संवत् १८८२ ना फागण वदि ७ सातमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री अमदावाद मध्ये श्रीनरनारायणना मंदिरने विषे दरवाजाना मेडा उपर वासुदेव महात्म्य वंचावता हता पछी उठीने दरवाजा पासे लिंबडाना वृक्ष तळे ढोलिया उपर संध्या समे विराजमान थया हता अने मस्तक उपर गुलाबी रंगनी पाघ बांधी हती ने तेमां गुलाबना तोरा खोस्या हता ने गुलाबना हार पहेरीने गरकाव थया हता ने श्वेत पछेडी ओढी हती ने श्वेत सुरवाळ पहेर्यो हतो ने उगमणे मुखारविंदे विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ ते समे प्रागजीदवेव मुनियोने प्रश्न पुछ्यो जे (१) भगवानने विषे मन व्यभिचारने कोइ काळे न पामे ते कहो ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे एनो उत्तर तो अमे करशुं एम कहीने श्रीजीमहाराज बोल्या जे अमे गाम पिपळाणामां लाधा ब्राह्मणने घेर रामानंदस्वामीने एम पुछ्युं हतुं जे तमे सनातन ईश्वर छोके आधुनिक ईश्वर छो? त्यारे रामानंदस्वामी तो बोल्याज नहि ने उत्तर न कर्यो त्यार पछी अगनोतरा काळमां अमे मांदा थया हता त्यारे अमे क्षीर सागरने विषे शेषशय्याने विषे शेषशायी नारायण सुता छे त्यां गया त्यारे त्यां अमे रामानंदस्वामीने जोया ते धोळी धोती पहेरी हती ने पछेडी ओढी हती ने एवा बीजा पण घणाक शेषशायी नारायणना चरणारविंदने समीपे बेठा हता तेने अमे जोया त्यारे अमे नारायणने कह्युं जे आ रामानंदस्वामी ते कोण छे ? पछी नारायणे कह्युं जे ए तो ब्रह्मवेत्ता छे. पछी रामानंदस्वामी तो नारायणना शरीरने विषे लीन थया त्यार पछी अमे देहने विषे आव्या पछी अमे अंतर्दृष्टि करी त्यारे प्रणवनादने जोयो ते जोतां जोतां नंदीश्वर पोठीयो आव्यो ते उपर बेसीने कैलासमां गया ने त्यांथी गरुड उपर बेसीने वैकुंठ तथा ब्रह्म महोलने विषे जाता हवा त्यां गरुड पण उडी शक्यो नहि एटले अमे एकलाज उड्या ते सर्वे थकी पर एवुं जे श्री पुरुषोत्तमनुं धाम तेमां गया. त्यांपण हुंज पुरुषोत्तम छुं पण मारा विना बीजो मोटो कोइ देख्यो नहि. एटले ठेकाणे फर्या ने पछी अमे देहने विषे आ-

थया ने फेर अंतरवां जोयुं त्यारे एम जणाणुं जे सर्व ब्रह्मांडोनी उत्पत्ति स्थिति ने प्रलय
तेनो कर्त्ता पण हुंज छुं. अने मारे तेजे करीने अनंत ब्रह्मांडना असंख्य शिव असं-
ख्य ब्रह्मा असंख्य कैलास असंख्य वैकुंठ अने गोलोक ब्रह्मपुर अने असंख्य करोड
बीजी भूमिकाओ ए सर्वे तेजायमान छे. ने वळी हुं केवो छुं तो मारा पगने अंगुठे
करीने पृथ्वीने डगावुं तो असंख्य ब्रह्मांडनी पृथ्वी डगवा लागे, ने मारे तेजे करीने
सूर्य चंद्रमा तारा आदिक सर्वे तेजायमान छे. एवो जे हुं ते मारे विषे एम समझीने
निश्चय करे तो भगवान एवो जे हुं ते मारे विषे मन कोइ काळे व्यभिचारने पामे नहि.
(१) ने जे जे जीव मारे शरणे आव्या छे ने आवशे ने एम समझशे ते सर्वेने हुं सर्वो- १
परि एवुं जे मारुं धाम छे तेने पमाडीश ने सर्वने अंतर्यामी जेवा करीश ने ब्रह्मांडोनी
उत्पत्त्यादिक करे एवा समर्थ करीश. पण एवी सामर्थि पामीने एम जाणे जे हुंज मोटो
छुं एम जाणीने ऋषिरूप एवा जे प्रत्यक्ष श्री नरनारायण तेने गणवाज नहि एवो अ-
हंकार आववा देवो नहि, ने एम जाणवुं जे आ श्री नरनारायण भगवाननी कृ-
पाए करीने हुं मोक्षपद पाम्यो छुं एम श्रीजीमहाराजे ए प्रश्ननो उत्तर कर्यो. (२) इति २
वचनामृतम् ॥ ७ ॥ (२२७)

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे रामानंदस्वामीने विषे केटलाकने भगवानपणानो निश्चय थयेलो ते टळाववा सारु रामानंदस्वामी शेषनारायणमां लीन थइ गया एम वात करीने पछी पोतानो महिमा कह्यो छे, जे अमे नंदीश्वर अने गरुडनी अस्वारी करीने धामोमां जतां गरुड उडी शक्यो नहि तेने पड्यो मुकीने सर्वथी पर अमारा धाममां गया. त्यांपण अमेज पुरुषोत्तम छीए अमारा विना कोइ मोटो दीठो ज नहि ने सर्वे ब्रह्मांडोनी उत्पत्ति स्थिति प्रलयना कर्त्ता अमेज छीए अने असंख्यात कैलास, वैकुंठ, गोलोक, ब्रह्मपुर ने तेथीपर भूमिकाओ आदि सर्व अमारे तेजे तेजाय-मान छे आवो महिमा समजीने अमारो निश्चय कर्यो होय तेने डगमगाट न थाय. (१) अने अमारे शरणे जे आव्या छे ने आवशे ने अमने आवा समझशे ते सर्वने उपर कही गया जे कैलासथी आरंभीने भूमिकाओ पर्यंत ते सर्वथीपर एवुं अमारुं अक्षरधाम तेने पमाडीशुं ने उत्पत्त्यादिक करे एवा समर्थ करीशुं ते सामर्थी अमारी कृपाए आवी छे एम जाणवुं. (२) बाबतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां रामानंदस्वामीने श्रीजीमहाराजे पुछ्युं जे तमे आधुनिक ईश्वर छो के सनातन छो ते आधुनिक ने सनातन ईश्वर कोने कहेवाय ?

१ उ० जे स्वतंत्र सत्तावान होय ते सनातन ईश्वर कहेवाय अने जेमां उपरिनो प्रवेश होय ते आधुनिक ईश्वर कहेवाय. माटे सनातन ईश्वर तो श्रीजीमहाराजनेज कहेवाय अने वैराज अहंकार महत्तत्त्व प्रधान पुरुष मूळपुरुष वासुदेव ब्रह्म ने मूळअक्षर पर्यंत सर्वे श्रीजी-महाराज आगळ परतंत्र ने आगंतुक ऐश्वर्यवान छे माटे ते आधुनिक ईश्वर कहेवाय.

१ प्र० रामानंदस्वामी शेषशायी नारायणने विषे लीन थया एम कह्युं ने (परथाराना तेरमा प्रश्नोत्तरमां तथा व० १८ ना त्रीजा प्रश्नोत्तरमां) रामानंदस्वामीने श्रीजीमहाराजना मुक्त कह्या छे माटे ते केम समजवुं ?

२ उ० रामानंदस्वामीने भगवान जाणीने केटलाक संत तथा हरिभक्तो ध्यान भजन करता ते रामानंदस्वामीने विषेथी भगवानपणानी प्रतीति टळाववाने माटे एम कह्युं छे. पण रामानंदस्वामी तो श्रीजीमहाराजना मुक्त हता

३ प्र० असंख्य वैकुंठादिक धाम कह्यां ते कोनां कोनां जाणवां ?

३ उ० वैकुंठधाम कह्यां ते विष्णुओनां जाणवां अने गोलोक कह्यां ते मूळपुरुषोनां जाणवां अने ब्रह्मपुर कह्यां ते वासुदेव ब्रह्मनां जाणवां अने भूमिकाओ कही ते मूळअक्षरोनां धाम जाणवां आ सर्वे असंख्य छे. आनो विशेष विस्तार (का० १० ना बीजा प्रश्नोत्तरमां)कर्यो छे.

४ प्र० बीजी बाबतमां ब्रह्मांडनी उत्पत्त्यादिक करे पवा शरणागतने करवा छे एम कह्युं ते उत्पत्त्यादिक तो मूळअक्षरादिक ऐश्वर्यार्थीयो करे छे ने मुक्त तो ए कार्य करता नथी एम [का० १० ना पांचमा प्रश्नोत्तरमां तथा म० ६७ ना पहेला प्रश्नोत्तरमां] कह्युं छे ते केम समजवुं ?

४ उ० ए तो सकामभक्तनी प्राप्ति कही छे जे सकाम भक्त होय तेने पण मूळअक्षरादिक जेवा ऐश्वर्यवान करीशुं अने निष्काम भक्तने तो पोतानी हजुरमां तथा पोतानी मूर्तिमां राखे छे.

५ प्र० ऋषिरूप थया ते ऋषिरूपनो अर्थ शो हशे ? अने ऋषिरूप कोने कह्या हशे ?

५ उ० पोते ब्राह्मणना कुळमां प्रगट थइने ऋषिरूपे वर्त्या ने तप कर्युं तेथी ऋषिरूप कह्या छे अने ते ऋषिरूप पोतानेज कह्या छे ते हरिवाक्य सुधासिंधुना तरंग (२२७)मां कह्युं छे जे:—

॥समर्थं मंडजन्मादौ करिष्यामिच तंह्यहम् । अंतर्यामिसमंकृत्वा प्रापयिष्येस्वधामच॥२२॥
तादृशं तस्यसामर्थ्यं सांप्रतं गोप्यते मया॥अन्यथा ऋषिरूपंमां सोऽवमन्येत धर्मजम्॥२३॥
ज्ञान वैराग्य धर्मादि सामर्थ्यं यस्ययस्यचा॥प्तंस्याचेन तेनापि ज्ञेयं तन्मत् कृपाफलम्॥२४॥

ए कारे अमारा शरणने पामीने अमने भजनार भक्तो तेने अमे ब्रह्मांडोनी उत्पत्त्यादिकने करे एवा समर्थ करीशुं अने अंतर्यामी तुल्य कहेतां अमारा तुल्य करीने अमारा धामने पमाडीशुं. ॥२२॥ ते प्रकारनुं तेनुं सामर्थ्य तेने अमे ढांकी राखीए छीए जो न ढांकी राखीए तो धर्मदेवनापुत्र ने ऋषिरूप एवा जे अमे ते अमने पण गणे नहि. ॥२३॥ अने जेने जेने ज्ञान वैराग्य धर्मादिकनुं सामर्थ्य प्राप्त थयुं होय तेणे तेणे अमारी कृपानुं फळ छे कहेतां अमारी कृपाथीज प्राप्त थयुं छे एम जाणवुं. ॥२४॥ माटे पोतानेज ऋषि रूप कह्या छे. ॥२२७॥

संवत् १८८२ ना फागण वदि ८ आठमने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीअमदावाद मध्ये श्रीनरनारायणना मंदिरने विषे संतनी पंक्तिमां लाडु फेरवता हता ने सुंदर श्वेत रुमाल मस्तक उपर बांध्यो हतो ने श्वेत खेस पहेर्यो हतो ने डाबा खभा उपर खेस नांखीने केड बांधी हती. ने कंठने विषे गुलाबनो मोटो हार बिराजमान हतो.

१ अने पछी झाडु फेरवतां फेरवतां श्रीजीमहाराजे साधु सर्वेने वार्ता करी जे (१) प-
रमहंसने मांहोमांही प्रश्न उत्तर करतां क्रोध उपजे, तथा वादविवाद करतां क्रोध उपजे
तथा कोइक पदार्थ लेवा देवामां क्रोध उपजे, तथा कोइकने शिक्षा करता होइए ने क्रोध
उपजे, तथा पोतानी शुश्रुषाने विषे रहेतो होय जे साधु तेने पक्षपाते करीने क्रोध उ-
पजे, तथा अपमाने करीने क्रोध उपजे तथा ईर्ष्याये करीने क्रोध उपजे, तथा आसन
करवाने विषे क्रोध उपजे तथा भगवाननी प्रसादी वेंचवाने विषे न्यूनाधिकपणुं
करे ने क्रोध उपजे इत्यादिक जे जे क्रियाने विषे क्रोध उपजे ते मोटा साधुने उपजे
अथवा नाना साधुने उपजे, तो जेनी उपर क्रोध उपजे तेने एक साष्टांग दंडवत
प्रणाम करवो. अने गद्गद हृदय थइने दीनताए करीने रुडांरुडां वचन बोलीने तेने प्र-
सन्न करवो एम अमारी आज्ञा छे. अने जो कोइक साधु उपर द्रोहनी बुद्धिनो संकल्प
थाय तो निष्कपट थइने पोताने मुखे ते संकल्प कहेवो जे हे महाराज आ रीतनो भुंडो
संकल्प तमारी उपर थयो अने ते संकल्पनो जे दोष तेनी निवृत्तिने अर्थे तेनी प्रार्थना
करवी. बीजुं जो गृहस्थ उपर परमहंसने क्रोध उपजे तो ते परमहंस ते गृहस्थनी वचने
करीने प्रार्थना करे अने बेठे थके नमस्कार करे पण साष्टांग दंडवत न करे. अने जे
सांख्ययोगी बाइयो तेने जो परस्पर क्रोध उपजे तो वचने करीने प्रार्थना करवी ने
बेठे थके नमस्कार करवो अने जे सांख्ययोगी पुरुष तथा परमहंस तेनी तो एक रीत
छे. अने जेनी उपर क्रोध उपजे तेनी आगळ पोतानी मोट्यप मुकीने तेने पोताना इष्ट-
देव जे श्री स्वामिनारायण तेना भक्त जाणीने नमस्कार करवो ने प्रार्थना करवी. (१) १
पण देहदृष्टि न राखवी जे हुं मोटो छुं ने उत्तम छुं ने आ तो मोटो नथी ने नानो
छे एवी रीते देहदृष्टि नकरवी. [३]ने बीजुं आपणा इष्टदेव जे श्रीनरनारायण ते क्रोध तथा
मान तेने नथी राखता माटे आपणी उद्धव संप्रदायना जे होय ते क्रोध तथा मान त्याग
करज्यो. बीजुं आ जे अमे क्रोधनुं प्रायश्चित्त कह्युं छे तेने जे करशे तेने उपर श्री नर-
नारायण प्रसन्न थाशे ने तेनुं अंतःकरण शुद्ध थाशे अने तेना काम, क्रोध, मान,
लोभ, ईर्ष्या, मद, मत्सर, ते सर्व नाश पामी जाशे. (२) अने क्रोध उपज्यो ने जे आ २
प्रायश्चित्त नहि करे तेने सर्प तुल्य जाणवो पण तेने साधु नजाणवो. (३) इति ३
वचनामृतम् ॥ ८ ॥ (२२८)

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य [१] छे. तेमां श्रीजीमहाराजे त्यागी, गृही, बाइ
भाइने कोइ क्रियामां क्रोध उपजे तो दंडवत आदिके करीने जेना उपर क्रोध उपजे तेने
प्रसन्न करवानी रीत कही छे. [१] अने अमारा भक्तने विषे देहभाव न राखवो अने कह्या
प्रमाणे प्रायश्चित्त करशे तेनुं अंतःकरण शुद्ध थशे ने कामादिक दोष टळी जशे अने प

प्रायश्चित्त नहि करे तेने सर्प तुल्य जाणवो. (३) बावलो छे. ॥ २२९ ॥

इतिश्रीकच्छदेशे वृषपुरनिवासी अनादिमुक्तराज श्रीअबजीभाइविरचित साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम भगवान श्रीस्वामिनारायण मुखकमळनिःसृत वचनामृत रहस्यार्थप्रदीपिकायां अमदावाद प्रकरणं समाप्तम्.

॥ अथ अश्लाली वचनामृतम् ॥

संवत् १८८२ ना चैत्र शुदि २ द्वितीयाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीअमदावाद नगरथी गाजते वाजते चाल्या ते सांझे गाम श्रीअश्लाली पधार्या ने उत्तरादि कोरे गामथी बहार आंबावाडीआमां उतर्या ने त्यां मंच उपर विराजमान थया ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठने विषे सुंदर पुष्पना हार पहेर्या हता ने पाघने विषे पुष्पना तोरा लटकता हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

ते समे श्रीजीमहाराज मुक्तानंदस्वामी तथा ब्रह्मानंदस्वामी आदिक सर्वे साधु
१ प्रत्ये बोल्या जे (१) सांभळो एक वात करवी छे जे कांइक प्रभु भजतां समझणमां फेर रहे छे तेने खोट पण बहु मोटी आवे छे ने भगवान जे श्री पुरुषोत्तम जेने श्रीकृष्ण कहीए जेने श्रीवासुदेव कहीए जेने श्रीस्वामिनारायण कहीए जेने श्री नरनारायण कहीए जेने परब्रह्म कहीए जेने श्रीनारायण कहीए तेनुं सुख यथार्थ आवतुं नथी अने एकांतिक भक्त थवातुं नथी. माटे जुवोने प्रजापति आदि दइने जे जगतना स्रष्टा ते जेवे वारंवार सृष्टि भेळा उत्पन्न थाय छे ने अंते मायाने विषेज लीन थाय छे पण श्रीपुरुषोत्तम भगवान तेमने समीपे अक्षरधामने विषे ए जाताज नथी ते शा सारु तो तेमनी समझणमां भूल्य छे. (१) १

२ त्यारे सर्वे मुनि बोल्या जे (२) हे महाराज एमने विषे एवी शी जातनी भूल्य छे ते कहो ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो एमनी भूल्य कहीए ते सांभळो जे एकतो पोतपोतानी जे क्रिया तेनुं बळ समझे छे अने भगवानना आशरानुं ने भगवाननुं बळ नथी समझता, ने बीजुं अक्षररूप पोताने नथी मानता ने अक्षर रूप थइने भगवान जे श्रीपुरुषोत्तम नारायण तेना दासपणाने नथी मानता ए भूल्य छे, अने त्रीजुं जे रामकृष्णादिक भगवानना अनंत अवतार तेने तो ए सर्वे अंश करीने जाणे छे. एज एमने विषे मोटी भूल छे. अने आ ब्रह्मांडनी उत्पत्ति केम थाती हशे ? ते एकवार जोइए तो खरा एवो संकल्प पोताना मनमां रह्यो हतो ते संकल्प जाइने भगवाने तेमने ब्रह्मां-

ण्डनी उत्पत्ति करवा सारु ते साथे जोडी दीधा छे ते ब्रह्मांडमां जेटला जीव छे तेटली-
वार ब्रह्मांडनी उत्पत्ति साथे जोडाशे त्यारे तेनो छुटको थाशे ने त्यार पछी ते समज-
णनो त्यागकरीने भगवानना समीपपणाने पामशे ते सारु भगवानने जाण्या पछी भग-
वान विना बीजुं कांइ जाणवा इच्छवुं नहि. (२) अने भगवानने भजीने जे ब्रह्मांडनी २
उत्पत्तिना सामर्थ्यने इच्छे ते भक्त सार्थ्यार्थी कहीए ने कनिष्ठ कहीए. अने जे केवळ
आत्मारूप थइने भगवानने भजे तेतो कैवल्यार्थी जाणवो ने ते भक्ततो मध्यम छे. अने
त्रीजो जे आ प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवाननी मूर्ति तेनी निरंतर अनन्यपणे करीने सेवाने
विषे निष्ठा राखे ते भगवत् निष्ठार्थी जाणवो ने ए भक्त अति श्रेष्ठ छे ने अति उत्तम
छे माटे आपण तो सर्वे प्रगट प्रमाण श्री नरनारायण तेनी निष्ठावाळा छइए. (३) इति ३
वचनामृतम् ॥ १ ॥ (२२९)

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (०) छे. तेमां (१) पहेलुं कृपावाक्य छे तेमां श्रीजी-महाराजे कह्युं छे जे अमने भजतां समजणमां फेर रहे छे. तेने खोट्य बहु आवे छे, अने श्रीपुरुषोत्तम भगवान एवा अमे ते अमारुं सुख यथार्थ आवतुं नथी अने अमारा एकांतिक भक्त थवातुं नथी एवी आ जगतना स्रष्टानी समजणमां भूल छे तथा ते अमारा धामने पामता नथी. (१) बीजामां ए स्रष्टा उत्पत्त्यादिक पोतानी क्रिया तेनुं बळ समजे छे पण अमारा आशरानुं बळ नथी समजता, अने अक्षरधामरूप थइने अमारा दासपणाने नथी पामता, अने रामकृष्णादिक अमारा अवतारोने अंश जाणे छे अने ब्रह्मांडनी उत्पत्ति जोवानो पूर्वे संकल्प हतो तेथी अमे तेमने ते क्रियामां जोडी दीधा छे ते एवी समजणनो त्याग करशे त्यारे अमारा समीपपणाने पामशे. माटे अमारा विना बीजुं कांइ जाणवाने इच्छवुं नहि. (२) अने अमने भजीने ऐश्वर्यने इच्छे ते कनिष्ठ छे, ने केवळ आत्मारूप थइने अमने भजे ते मध्यम छे, अने प्रत्यक्ष श्रीस्वामिनारायण अमे ते अमारी सेवाने इच्छे ते उत्तम छे. [३] बाबतो छे.

१ प्र० बीजा प्रश्नमां जगतना स्रष्टा रामकृष्णादिक अवतारोने अंश करी जाणे छे एम कह्युं ते अंश केवी रीते जाणता हशे ?

१ उ० जे जे अवतारो ब्रह्मांडोने विषे प्रगट थइने कांइ ऐश्वर्य जणावे छे ते अवतारोने पोतानी सृष्टिमांना माने छे अने ते अवतारोने विषे जे ऐश्वर्य होय तेने पोतानुं आपेलुं माने छे जे मारुं ऐश्वर्य ते एमने विषे आवेलुं छे एम अंश माने छे.

इतिश्रीकच्छदेशे वृषपुरनिवासी अनादिमुक्तराज श्रीअबजीभाइविरचित साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम भगवान श्रीस्वामिनारायण मुखकमळनिःसृत वचनामृत रहस्यार्थप्रदीपिकायां अश्लाली वचनामृतं समाप्तम्.

॥ अथ वचनामृत जेतलपुर प्रकरणम् ॥

संवत् १८८२ ना चैत्र शुदि ३ त्रीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीजेतलपुर मध्ये मोहोलनी जग्यामां आसोपालवनी हेठे ढोलियो बिछाव्यो हतो ते उपर विराजमान हता, ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने कंठने विषे गुलदावदीना बहु हार पहेर्या हता, ने मस्तक उपर श्वेत पाघ ढोलरीयाना तोरा तेणे करीने व्याप्त हती, ने बे कान उपर बे कर्णिकारनां पुष्प खोश्यां हतां, ने हस्तने विषे सुंदर लिंबुना फळने फेरवता हता, ने दहाडो चार घडी चडयो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ संत तथा देशदेशना सत्संगी बाइ भाइ सर्वेनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे सर्वे सभा प्रत्ये प्रश्न पुछयो जे, (१) एक तो द्वैत मत छे ने एक तो अद्वैत मत छे, ते बेमांथी मुमुक्षु होय ते कोण मतने ग्रहण करे ते कहो ? त्यारे पुरुषोत्तम भट्ट बोल्या जे हे महाराज! मुमुक्षु होय तेने तो द्वैत मतने ग्रहण करवो, त्यारे श्रीजीमहाराजे आशंका करी जे द्वैत मत तो जीव, ईश्वर ने माया, ते ज्यारे माया रहे छे त्यारे जीवनो मोक्ष केम थाय ? त्यारे पुरुषोत्तम भट्ट बोल्या जे शुभ कर्म करतां करतां मोक्ष थाय. त्यारे श्रीजीमहाराजे वळी आशंका करी जे निवृत्ति ने प्रवृत्ति ए बे प्रकारनां जे कर्म छे ते तो सुषुप्तिमां लीन थइ जाय छे, ते सुषुप्ति केवी छे तो जेम लोकालोक पर्वत उलंघवा कोइ समर्थ नथी, तेम सुषुप्ति जे छे तेने उलंघवाने जीव कोइ समर्थ थातो नथी, तो जे जाग्रत स्वप्नावस्था छे तेतो बहु मोटी छे तेतो केम जीवथी उलंघाय? त्यारे सर्वेने एम समझ्युं जे ज्यारे सर्वे कर्म अने माया तेना नाश करनारा ने मायाथी पर जे साक्षात्कार श्रीपुरुषोत्तम भगवान वा भगवानना मळेल संत तेमनी जीवने प्राप्ति ज्यारे थाय छे त्यारे ते सर्वेने उलंघाय छे, ए वात जे त्यां कर्मनी तो गतिज नथी.(१) १

एम कहीने पछी श्रीजीमहाराज मोहोल उपर भोजन करवा पधार्या, पछी भोजन करीने पाछा आसोपालव हेठे ढोलिया उपर विराजमान थया, ने सर्वे संतने ने हरि-

२ भक्तने अमृतदृष्टिये जोता थका श्रीजीमहाराज एम बोल्या जे, (२) प्रथम तो आ जीवने कोइ न मानतो होय त्यारे एनी वृत्ति केवी होय, अने पछी ज्यारे सो मनुष्य एने माने त्यारे एनो अहंकार ते पण नोखी जातनो थाय छे, ने हजार मनुष्य माने तथा लाख मनुष्य माने तथा करोड मनुष्य माने त्यारे एनो अहंकार ते जुदी जातनो थाय छे, अने ए क्यारेक ब्रह्मा जेवो थाय, क्यारेक शिव जेवो थाय, क्यारेक इंद्र जेवो थाय, त्यारे ते सघळा विचारवाळो एम जाणे जे आ मारी जे मोटयप ते आ वडे नथी, त्यारे शा वडे छे ? तो आत्मा वडे मोटयप छे, अने बीजुं संतने समागमे करीने मोटयप छे,

त्यारे जुवोने एवा मोटा छे ते पण संतना चरणनी रजने इच्छे छे, त्यारे संतने विषे शी मोटयप छे ते कहोए छए, जे द्रव्य पदार्थे के राज्ये करीने तो कांइ संतने मोटयप नथी, पण संतने तो मोटयप भगवाननी उपासना ने भक्ति ते वडे छे, ने बीजुं संतने आत्मनिष्ठा छे ते मोटयपे मोटयप छे, अने एम न जणाय तो आत्मानो एम निश्चय करवो जे प्रगट भगवान जेने मळ्या होय एवा जे संत तेने विषे आत्मनिष्ठा राखवी ने तेम पोतानुं स्वरूप मानवुं, त्यारे कोइक आशंका करे जे त्यारे स्वामी सेवकपणुं केम रहे ? त्यां दृष्टांत छे, जे गालव राजा हतो तेने यज्ञ करवो हतो त्यारे तेने श्यामकरण घोडा लाववा हता ते श्यामकरण घोडा तो वरुणने घेर हता त्यां तो पोताथी जवाय नहिं, त्यारे गालवराजाए गरुडजीने तेडाव्या त्यारे गरुडजी आव्या, पछी ते गरुड उपर बेसीने घोडा त्यांथी लइने आव्या त्यारे शुं गरुडजीने विषेथी गालव राजाने दास पणुं मटी गयुं ? ए तो न मट्युं, तेम ब्रह्मवेत्ताने विषे आपोपुं मानवुं, ते शा सारु जे एने आवरण भेद्यानी गति छे, ते सारु एने विषे आत्मबुद्धि राखवी. पछी एम कह्युं जे आ वार्ता सर्वे राखजो ने आ वात सर्वेनुं जीवन छे. (२) इति व० ॥१॥ (२३०) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे, तेमां बीजुं कृपावाक्य छे, तेमां पहेलामां मुमुक्षु पोताना मोक्षने अर्थे शुभ कर्म करे तोपण पणे सांख्य ज्ञान सिद्ध थयुं नथी ने माया ने मिथ्या जाणी नथी त्यांसुधी तेनी देहात्मबुद्धि टळे नहि ने उपास्य मूर्तिने पण यथार्थ दिव्य जाणी शके नहि तेथी ते शुभ कर्मे करीने प्रधान माया सुधी पहोचे पण ते प्रधान मायारूप सुषुप्तिने ओळंघी शके नहि, तो साम्यावस्थारूप मूळमाया तेतो ओळंघाय ज केम ? ए तो सर्व कर्म ने माया तेना नाश करनारा अने माया-थी पर साक्षात् श्रीपुरुषोत्तम भगवान जे अमे ते अमारी अथवा अमने मळेला अ-मारा संतनी ज्यारे जीवने प्राप्ति थाय त्यारे माया ओळंघाय छे. (१) बीजामां जी-वने घणां माणसो माने अथवा कोइ मोटयप पामे त्यारे तेने अहंकार आवे छे, ने सवळा विचारवाळो पणे करीने मोटयप न माने पतो आत्मावडे ने अमारा संतना स-मागमवडे करीने मोटयप माने, अने अमने मळेला संतने तो अमारी उपासना ने आत्म-निष्ठा तेणे करीने मोटयप छे, अने एवा अमने मळेला संतने विषे आपोपुं करवुं तो गा-लव राजानी पेठे आवरण भेदावे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. (२) बावतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां निवृत्ति ने प्रवृत्ति ए बे प्रकारनां कर्म कह्यां ते निवृत्ति कर्म कियां जाणवां ? अने प्रवृत्ति कर्म ते कियां जाणवां ?

१ उ० त्यागीने पाळवानां जे ब्रह्मचर्य, अहिंसादिक नियम छे ते निवृत्ति कर्म जाणवां, अने गृहस्थने पाळवानां जे नियम छे ते प्रवृत्ति कर्म जाणवां.

२ प्र० ते कर्म सुषुप्तिने विषे लीन थइ जाय छे एम कह्युं ते केवी रीते लीन थतां हशे ?

२ उ० ए बे प्रकारनां कर्म करनारा जीवोने ते ते कर्मनुं फळ सुषुप्ति सुधीज भोगवाय छे

पण ते कर्म करीने सुषुप्तिथीपर गति थती नथी पण लीन कह्यां छे एटले कर्म लीन थइ जाय छे एम नहि पण ए कर्म करनारने सुषुप्तिथी पर गति थती नथी एम कह्युं छे.

२ प्र० सर्व कर्मने मायाना नाशने करनारा एम कह्युं ते कर्म कियां जाणवां ? अने माया कइ जाणवी ?

२ उ० आ ठेकाणे कर्म एटले वासना जाणवी ते वासना बे प्रकारनी छे, एक तो मायिक पंचविषय संबंधी वासना छे, अने बीजी ब्रह्मकोटी तथा मूळअक्षर कोटीना ऐश्वर्यनी इ-च्छा ते ऐश्वर्य संबंधी वासना कहेवाय; ए बे प्रकारनी वासना ते श्रीजीमहाराज कां ए-मना मुक्त नाश करे. अने मूळ मायाने माया कही छे.

४ प्र० साक्षात्कार जे श्रीपुरुषोत्तम भगवान जे अमे ने अमने मळेला संतनी ज्यारे जीवने प्राप्ति थाय त्यारे कर्म तथा माया ओळंघाय छे, एम कह्युं ते श्रीजीमहाराजने मळेला केवी रीते जाणवा ?

४ उ० श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां तथा श्रीजीमहाराजना तेजरूप धाममां सदा भेळा रहेता होय तेमने आ ठेकाणे मळेला कह्या छे, अने जेने एवा मुक्तना योगे एवी स्थिति थइ होय एटले आत्माने विषे श्रीजीमहाराजनो साक्षात्कार थयो होय तेपण मळेला कहेवाय अने तेनो योग करनारने पण माया ने कर्म ओळंघाय छे.

५ प्र० बीजा जन्ममां क्यारेक ब्रह्मा जेवो थाय, शिव जेवो थाय, इंद्र जेवो थाय, त्यारे स-वळा विचारवाळो आत्मावडे ने संतना समागमवडे मोटयप माने एम कह्युं ते ब्रह्मा शिव जेवो एटले केवो जाणवो ? केम जे ब्रह्मा, शिव, इंद्रना स्थानमां तेते पदवी पामे तेने तो सवळो विचार रहे नहि, केमके ए स्थानोमां सवळो विचार रहेवो ते अगम्य छे ते केवी रीते समजवुं ?

५ उ० पोताने आत्मारूप एटले श्रीजीमहाराजना तेजरूप मानवुं अने संतनो समागम करवो तेज मोटयप छे एम माने,पण यश कीर्ति ने मान सन्मानमां मोटयप माने नहिं,जे मना-वानी के पूजावानी के कोइ ऐश्वर्यनी इच्छा न रहे तेने विषे ब्रह्मा जे मूळ अक्षरादि तथा शिव जे महाकाळादिक तथा इंद्र जे मूळपुरुषादिकना जेवां ऐश्वर्य आवे तोपण तेमां मोटयप न माने, एक मुक्तनो समागम ने पोताने अक्षरधामरूप मानवुं एज मोटयप माने एम कह्युं छे.

६ प्र० मूळअक्षरने ब्रह्मा कह्या अने महाकाळने शिव कह्या ने मूळपुरुषने इंद्र कह्या ते केवी रीते समजवा ?

६ उ० उत्पत्ति करे ते सर्वने ब्रह्मा कहेवाय माटे आदि सृष्टिना कर्त्ता मूळअक्षर छे, तेथी मूळअक्षरने ब्रह्मा नामे कह्या छे, अने प्रळय करे तेने शिव कहेवाय,ते आत्यंतिक प्रलय जे महाप्रलय ते महाकाळ करे छे माटे महाकाळने शिव कह्या छे. अने जे वृष्टि करे तेने इंद्र कहेवाय, ते जेम इंद्र वर्षाद करे छे तेणे करीने पृथ्वीमांथी बीज उत्पन्न थाय छे तेम मूळ पुरुष मेघने ठेकाणे छे ने माया पृथ्वीने ठेकाणे छे ते मूळपुरुष मायाने विषे वीर्यने धरे तेणे करीने मायामांथी जीव उत्पन्न थइ आवे छे, माटे मूळपुरुषने इंद्र कह्या

छे ते (छै० १० मां) पुरुषने मेघने ठेकाणे कह्या छे.

७ प्र० प्रगट भगवान जे अमे ते अमने मळेला संतने विषे आत्मनिष्ठा राखवी, ने एज पोतानुं स्वरूप मानवुं एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते श्रीजीमहाराजने मळेला संतने विषे आत्मनिष्ठा केवी रीते राखवी ने एमने पोतानुं स्वरूप केवी रीते मानवुं ?

७ उ० श्रीजीमहाराजना मुक्तने विषे पोताना आत्मानी एकता करवी जे ते मुक्त ते हुं छुं एम पोताने मुक्तरूप मानवुं, अने जेम मुक्त मूर्तिमां जोडाया छे तेम श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां जोडावुं, आ वार्ता सर्वेनुं जीवन छे कहेतां सर्वोत्तम छे अने एवा श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां एकतावाळा मुक्त पृथ्वीने विषे प्रत्यक्ष नहोय त्यारे तो (म० ५० मां) एकरस परिपूर्ण एवुं श्रीजीमहाराजनुं तेज तेमां एकता करीने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां ने मुक्तमां प्रीति जोडवी एम कह्युं छे तेम करवुं. पण श्रीजीमहाराजना धाममांथी आवेला न होय तेने विषे आपोपुं नकरवुं.

८ ० श्रीजीमहाराजना धाममांथी आवेला मुक्तनां लक्षण केवां होय?ने एकांतिकनां केवां होय?

८ उ० जे एमनो समागम करे तेना घाट संकल्प बंध थइ जाय, ने ध्यानमां विक्षेप नथाय, ने मूर्तिनुं सुख आवे ने छेटे रहे थके पण जे संभारे तेना घाट संकल्प टळी जाय, ने एमनी पासे बेठा होइए तो ते वखते मायिक घाट संकल्प टळी जाय, अने कोइ देह मुके तेने अक्षरधामां तेडी जाय, एवां केटलाकने दर्शन आपे ने कोइने तेडी अवा होय तेने आगळथी दर्शन आपीने देह मुकवानो अवधि पण कही जाय, अने कोइक प्रार्थना करे तो तेने राखी पण जाय, ने कोइने देह मुकवो होय तो तेने आयुष्य होय तोपण तेने तेडी जाय एवी सामर्थि होय ते श्रीजीमहाराजना धाममांथी आवेला परमएकांतिक तथा अनादिमुक्त जाणवा. अने श्रीजीमहाराजे कह्या जे धर्म ते यथार्थ पाळे तथा त्यागी, गृहीने पोतपोताना धर्म यथार्थ पळावे अने श्रीजीमहाराजनी प्रतिमाने विषे सर्वेने जोडे पण पोताने विषे जोडे नहि अने मानअपमान सुख दुःख हाण्य वृद्धि कचरो कंचन शत्रु मित्र सर्वेमां समबुद्धि होय अने पोताना संगीने सत्संगमांथी लुखा थवा दे नहि ने मायिक विषय तथा ऐश्वर्यनी वासनाए रहित होय ने श्रीजीमां अखंड वृत्ति राखता होय आवां लक्षण होय ते एकांतिक जाणवा.

९ प्र० गालव राजाने दृष्टांते सिद्धांत शो समजवो ?

९ उ० जेम गालव राजाने वरुण पासे जवुं हतुं पण त्यां पोताथी जवाय तेम नहोतुं. तेणे गरुड उपर अस्वारी करी पण तेने विषेथी दासपणुं मट्युं नहि, तेम मुमुक्षु जीवने श्रीजीमहाराज पासे जवुं ते तेनाथी जवाय तेम नथी, माटे मुक्त जे गुरु, तेमने विषे आपोपुं पटले एज पोतानुं स्वरूप मानवुं के ते मुक्त ते हुं छुं एम गुरुने विषे आपोपुं मानवाथी ते गुरुने विषेथी दासपणुं मटे नहिं. अने ते गुरुने विषे आत्मबुद्धि राखवाथी श्रीजीमहाराजनी ने मुमुक्षुनी वच्चे आवरण छे ते टळी जाय छे.अने श्रीजीमहारानी मूर्तिनो साक्षात्कार थाय छे, अने जेम मुक्तने विषे आपोपुं मानवुं तेमज श्रीजीमहाराज मनुष्य

रूपे साक्षात् मळया होय तो श्रीजीमहाराजने विषे पण तेमज आपोपुं मानवुं तोपण स्वा-मीसेवकपणुं टळी जतुं नथी. आ वात सर्वेनुं जीवन छे, एटले श्रीजीमहाराजने पामवाना जेटला उपाय मात्र छे ते सर्वे उपायथी आ वात सर्वोत्तम छे. ॥ २३० ॥

संवत् १८८२ ना चैत्र शुदि ३ त्रीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीजेतलपुर मध्ये सांझने समे श्रीराधाकृष्णना मंदिरना चोक वच्चे ढोलियो बिछाव्यो हतो तेने उपर पोते विराजमान हता ने सुंदर श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पाघने विषे डोलरियाना पुष्पना तोरा लटकता हता, ने श्वेत पछेडी ओढी हती, ने श्वेत खेस पहेर्यो हतो, ने श्वेत रुमाल हस्त कमळने विषे धरी राख्या हता, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज प्रत्ये ब्रह्मानंदस्वामीए एम प्रश्न पुछयो जे (१) हे महाराज ! यति ते केने कहीए ते कहो ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे हनुमानजी ज्यारे लंका-मां जानकीजीनी खबर काढवा गया त्यारे जानकीजीने ओळखवां हतां ते सारु जेटली स्त्रियो लंकामां हती ते सर्वेने जोता हवा, ने ते पछी मंदोदरीने हनुमानजी देखता हवा, त्यारे पोते एम जाण्युं जे आ जानकीजी हशे ? पछी एम मनमां विचार कर्यो जे जान-कीजीने तो भगवान रघुनाथजीनो वियोग छे तेणे करीने आवुं शरीर पुष्ट होयज नहि, ने आवी निद्रा पण न होय एवो मनमां विचार करीने हनुमानजी पाछा वळी निसर्या, पछी पोताने एवो मनमां संकल्प थयो जे हुं यति छुं ने में आ स्त्रियो सर्वेने जोइ तेनो मुने कांइ बाध हशे के नहि ? पछी वळी एम विचार कर्यो जे मेंतो रघुनाथजीनी आज्ञाए करीने जानकीजीनी खबर काढवी छे ते सारु में स्त्रियोने जोइ तेनो शो बाध छे ? पछी वळी मनमां एम विचार कर्यो जे मारी वृत्तिमां ने मारी इंद्रियामां रघुना-थजीनी कृपाए करीने क्षोभ पण नथी उपज्यो एवो होय ते यति कहेवाय, अने वळी ज्यारे जानकीजीनुं हरण थयुं त्यारे रघुनाथजी ने लक्ष्मणजी ए बेय ज्यां सुग्रीव फटक शिला उपर हतो त्यां गया त्यारे सुग्रीवने जणाव्युं जे जानकीजीनुं हरण थयुं छे ते माटे अहीं आव्या छइए ते जो कांइ तमने खबर होय तो कहो, त्यारे सुग्रीवे कह्युं जे हे महाराज ! आकाशने विषे हे राम ! हे राम ! एवो शब्द थातो हतो ते में सांभळ्यो हतो, अने बीजुं जे आ चिरमां बांधीने घरेणां पडतां मुक्यां हतां ते मारे पासे में राख्यां छे, त्यारे रघुनाथजीए कह्युं जे ते लावो जोइए, त्यारे ते घरेणां सुग्रीवे रघुनाथजीने आप्यां, पछी रघुनाथजीए लेइने लक्ष्मणजीने देखाड्यां ते प्रथम तो काननां देखाड्या पछी हाथना बाजुबंध आदिक देखाड्या ते लक्ष्मणजीए न ओळख्यां, त्यार पछी पगनां झांझर देखाड्या त्यारे लक्ष्मणजीए कह्युं जे हे महाराज ! आतो जानकीजीनां

झांझर खरां, त्यारे रघुनाथजीए पुछ्युं जे हे लक्ष्मणजी बीजां घरेणां न ओळख्यां ने झांझर केम ओळख्यां ? त्यारे लक्ष्मणजीए कह्युं जे हे महाराज जानकीजीनुं स्वरूप तें में नथी दीठुं अने सांझे पगे लागवा जातो त्यारे झांझर दीठां हतां ते सारु में ओळख्यां, एवी रीते चौद वर्ष सुधी सेवामां रह्या पण दृष्टिये करीने जानकीजीनुं स्वरूप एक चरणारविंद विना बीजुं दीठुं नहि एवो होय ते यति जाणवो. एम कहीने श्रीजीमहाराज बोल्या जे आ ब्रह्मानंदस्वामी छे ते पण ते जेवाज यति छे, एम सर्वे सभाने सांभळते सते ब्रह्मानंदस्वामीनी श्रीजीमहाराजे यतिपणानी बहु प्रशंसा करी. (१) ने गाम १ बहार पधार्या ने यज्ञ थया हता ते ठेकाणे परथार उपर ढोलियो बिछाव्यो हतो ते उपर पोते विराजमान थया, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.पछी श्रीजीमहाराजे कह्युं जे कांइक प्रश्न उत्तर करो.

२ त्यारे पटेल आशजीभाइए प्रश्न पुछयो जे,(२)हे महाराज ! आ जीवनुं स्वरूप ते केवुं छे ते कहो ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जीवतो अछेद्य, अभेद्य, अविनाशी, चैतन्यरूप अणु मात्र एवो छे त्यारे ते जीव क्यां रहे छे ? तो हृदाकाशने विषे रहे छे अने विविध क्रियाने त्यां रह्यो थको करे छे अने रूप जोवुं होय त्यारे नेत्रद्वारे करीने जुवे छे, अने शब्द सांभळवो होय त्यारे कानद्वारे आवीने सांभळे छे, ने नासिकाद्वारे सारो नरसो गंध ले छे ने रसनाद्वारे रस ले छे, ने त्वचाद्वारे स्पर्शनुं सुख ले छे, अने मनद्वारे मनन करे छे, ने चित्तद्वारे चिंतवन करे छे, ने बुद्धिद्वारे निश्चय करे छे एम दश इंद्रियोद्वारे तथा चार अंतःकरण द्वारे सर्वे विषयनुं ग्रहण करे छे, ने नखथी ते शिखा पर्यंत शरीरमां व्यापीने रह्यो छे, एवी रीते जीवनुं स्वरूप छे. अने आपणे तो प्रगट प्रमाण पुरुषोत्तम एवा जे श्री नरनारायण तेने प्रतापे करीने ए जीवने सारी पेठे ओळख्यो छे ने जाण्यो छे. एम कहीने सर्वने राजीकरीने जय सच्चिदानंद कहीनेमोहोलमां पोढवा पधारता हवा. (२) इति वचनामृतम् ॥ २ ॥ (२३१) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे हनुमानजीने लक्ष्मणजीने दृष्टांते यतिनां लक्षण कह्यां छे, अने ब्रह्मानंदस्वामीनी यतिपणानी प्रशंसा करी छे. (१) बीजामां जीव हृदयने विषे रह्यो थको इंद्रियो, अंतःकरण द्वारे विषयनुं ग्रहण करे छे, ने शरीरमां व्यापी रह्यो छे ते जीवने प्रगट प्रमाण पुरुषोत्तम श्रीनरनारायण जे अमे ते अमारे प्रतापे करीने तमे सारीपेठे एटले जेवो जाणवो जोइए तेवो यथारूप जाण्यो छे एम कह्युं छे. (२) बावतो छे ॥२३१॥

संवत् १८८२ ना चैत्र शुदि ४ चतुर्थीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्रीजेतलपुर मध्ये पोत ने रहेवानो जे मोहोल तेनी आथमणी कोरने समीपे

जे फुलवाडी तेने विषे सवारमां वेळा पधारीने वाडीने वचमां मोटुं बोरसलीनुं वृक्ष तेनी
हेठे चोतरा उपर गादी तकिये सहित जे ढोलियो ते उपर उगमणे मुखारविंदे विराजमान
हता,ने सर्वे श्वेतवस्त्र धारण कर्यां हतां, ने कंठने विषे चंपाना तथा बोरसलीना तथा
गुलदावदीना हार पहेर्या हता, ने पाघने विषे चंमेलीने डोलरीयोना तोरा लटकता
मेल्या हता,ने बे श्रवण उपर हजारी पुष्पना गुच्छ खोश्या हता,ने बे हस्तकमळने विषे दाड-
म तथा लिंबुना फळने फेरवता हता, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुक्तानंदस्वामी
तथा ब्रह्मानंदस्वामी आदिक मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज घडीकवारसुधी विचारीने एम बोल्या जे (१) सर्वे सांभळो
एक वार्ता कहीए जे दुष्टवासना राखवी तेथी कांइ भुंडुं नथी ने दुष्टवासनावाळा भक्त छे
ते अमारे समीपे रहे छे, पण ते सुखीया नथी रहेता कांजे तेमणे प्रभु भजतां प्रथम एम
माग्युं हतुं जे समीपे राखज्यो पण दुष्ट वासना न मुकी ते सारु दुःखीया छे. [१] १

त्यारे मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे, (२) हे महाराज ए दुष्ट वासना केम टळे ? त्यारे
श्रीजीमहाराज बोल्या जे दुष्ट वासना टाळवानो तो ए उपाय छे जे ज्यारे वर्त्तमानथी
बाहेर संकल्प थाय, तथा कोइ हरिजनना तथा संतना अभावनो संकल्प थाय, त्यारे
नरनारायण स्वामिनारायण एम वारंवार पोकारीने नाम उच्चारण करवुं, अने बीजुं
महात्म्ये सहित ने धर्मे सहित भगवाननी नव प्रकारनी भक्ति कर्या करे, त्यारे भग-
वान तेना हृदयमां वास करीने दुष्ट वासनाने नाश पमाडे छे जेम गजने ग्राहना मुख
थकी भगवाने छोडाव्यो तेम,माटे आटली वात समझ्या तो सर्व समझाइ रह्युं. (२) ने २
वळी कहीए छइए जे एकतो पांच वर्त्तमान पाळवां, ने बीजुं पोतानुं स्वरूप साक्षी मा-
नवुं जे संकल्प तथा नाना प्रकारना जे तर्क ते थकी पर जे आत्मा ते हुं छुं, अने मने
सहित जे देह ते हुं नहिं एम विचारे, ने त्रीजुं भगवान कोइना सामुं जोइने हसता
होय वा कोइने बोलावता होय वा बीजां गमे तेवां चरित्र करे तेमां कोइ दहाडे अभाव
न आवे एवी रीतनो निश्चय राखवो एटलुं समज्या तो सर्वे समझ्या छो अने वळी कोइक
एम जाणे छे जे में तो महाराजने बहु भज्या ने घणीक सेवा करी, पण आपणने तो
महाराज बोलावता नथी,ने बीजाने तो बहु बोलावे छे त्यारे आपणे घेर बेठाज प्रभु भजशुं,
एम अवगुण ले छे त्यारे अमे पण एम धारीए जे ए जीवने ने अमारे शुं तो ए जीवनुं
ठेकाणुं रहेज नहिं, पण अमे तो कोइनो अवगुण लेताज नथी, अने अमारो स्वभाव
ते तो सदा गुणग्राहकज छे. ने हवे ए भक्तने गुण ग्रहण करवो ने अवगुण टाळवो
तेनो उपाय कहीए छइए, जे ए भक्त एम विचारे जे हुं सत्संग मोरे केवो हतो तो
काळ, कर्म, जन्म, मरण, चोराशी तेनो भोक्ता हतो, ते मुने सर्व थकी छोडावीने

निर्भय कीधो ने रुडा गुण आपीने मोटो कीधो, ते भगवाननो अभाव केम हुं लेउं ? ने प्रभुनुं गमतुं मुकीने पोतानुं गमतुं केम इच्छुं ? एम विचारीने अभाव न ले त्यारेज ते सुखीयो थाय छे, अने आ देहे करीने भगवाननुं गमतुं करवुं, पछी बीजी वात कांइ मोटी नथी, ने एज भक्ति छे एणे करीनेज भगवानने पमाय छे माटे मान, ईर्ष्या, काम, क्रोध, लोभ, ए आदिक कल्याणना विरोधी छे ते सर्वने त्याग करवा ने तेमां मान छे तेतो अति भुंडामां भुंडुं छे, जुवोने बीजा वर्त्तमानमां कांइक काचप थोडी घणी होय तो पण सत्संगमां नभता जाय छे, पण मानवाळा तो नभी शक्याज नहिं, माटे हे संतो ! निर्मान आदिक वर्त्तमानमां कोइ दिवस चुक पडवा देओमां अति कुशळ रहेवुं, अने देह थकी पोतानुं स्वरूप जुदुं जाणवुं, अने श्रीपुरुषोत्तम एवा जे नरनारायण तेमनी निरंतर खटके सहित भक्ति करवी ने भगवाननी अखंड स्मृतिए सहित
भजन करवुं ते तो भगवानना प्रगट दर्शनना सुख तुल्य छे. (३) बीजुं आपणा सत्सं- ३
गमां शास्त्र भणतां आवडे तेणे करीने कांइ मोटो नहिं, त्यारे कोण मोटा ? तो जे चौद लोक पर्यंत तृण समान जाणे एवी वैराग्यनी अवधिए युक्त होय, अने जेम देहने विषे आत्मबुद्धि छे तेम परमात्मा जे पुरुषोत्तम तेना स्वरूपनी दृढता साक्षात्कार बोधे युक्त होय, अने सुषुप्तिने विषे जेम जगत्नी विस्मृति छे एम जाग्रत अवस्थाने
विषे जगत्नी विस्मृतिए युक्त वर्ते एवो जे होय ते आपणा सत्संगमां मोटेरो छे. [४] ४
इति वचनामृतम् ॥ ३ ॥ [२३२]

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [२] छे. तेमां पहेलुं कृपावाक्य छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे दुष्ट वासना राखे ते सुखी न थाय. (१) बीजामां वर्त्तमान बहार संकल्प थाय तथा अमारा भक्तने विषे अभावनो संकल्प थाय त्यारे अमारुं नरनारायण स्वामिनारायण एवा नामनुं उच्चारण वारंवार करे, ने महात्म्ये ने धर्मे सहित अमारी नवधा भक्ति करे तेना हृदामां वास करीने विषयनी आसक्तिनो नाश करी नाखीए. [२] अने पंच वर्त्तमान पाळे ने पोताने आत्मारूप माने अने अमारां चरित्र दिव्य जाणे ने अमारो निश्चय होय नेअमारा गमतामां वर्ते, ने मान कामादिकनो त्याग करीने अमारी भक्ति करे,ने अखंड स्मृतिए सहित अमारुं भजन करे तेने अमारा प्रगट दर्शन तुल्य सुख आवे. (३) अने जगत्नी विस्मृतिए युक्त वर्तेने अमारा स्वरूपनी दृढता ज्ञाने युक्त साक्षात्कार करे ते सत्संगमां मोटो छे. (४) वाक्यो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां दुष्टवासनावाळा भक्त अमारे समीपे रहे छे, पण सुखीया नथी एम कह्युं ते दुष्ट वासना कइ जाणवी अने ते दुष्टवासनावाळाथी श्रीजीमहाराजने समीपे शी रीते जवातुं हशे ?

१ उ० श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के अमारी आज्ञा विरुद्ध पोताना मनमां संकल्प थाय ते दुष्ट वासना जाणवी ते तरंग. ३६४ मां श्लोक छे जे:—

यदा मदीय मर्यादोल्लंघने मनसो भवेत् । संकल्पर्तर्हि विज्ञेया सैव दुर्वासनात्मनः॥८॥
जीवोनां कल्याण साऱु ज्यारे श्रीजीमहाराज पृथ्वीने विषे मनुष्य रूपे प्रगट थया होय ते वखते श्रीजीमहाराजने समीपे भक्त रह्या होय पण मायिक वासना अंतरमां रही होय, तो तेने ध्यान भजननुं सुख आवे नहिं. तेथी दुःखीया रहे माटे आ श्लोकने विषे समीपे कह्या छे पण अक्षर धाममां समीपे नथी कह्या.

१ प्र० अमने भजतां प्रथम माग्युं हतुं एम कह्युं ते प्रथम माग्युं क्यारे जाणवुं ?

१ उ० पूर्वे जन्मने विषे पण मागे ने आ जन्मे पण श्रीजीमहाराजनी समीपे सेवामां रहेवानुं मागे माटे समीपे राख्या पहेलां मागे ते प्रथम माग्युं कहेवाय, पण दुष्ट वासना जे वर्त्तमान बहार संकल्प थता होय तेथी श्रीजीमहाराजनी प्रसन्नता थाय नहिं ने ध्यान भजननुं सुख आवे नहिं, माटे दुःखीया रहे.

२ प्र० ($\frac{2}{3}$ बीजा प्रश्नमां) वर्त्तमानमां थोडीघणी कासप होय तोपण सत्संगमां नभ्या जाय छे एम कह्युं ते कासप केटली जाणवी ?

२ उ० श्रीजीमहाराजने सर्वोपरि जेवा जाण्या जोइए तेवा जाण्या होय पण पंच वर्त्तमान विरुद्ध संकल्प टळी गया नहोय ते कासप कही छे, आनो खुलासो [म० ११ ना अगीआरमा प्रश्नोत्तरमां] कर्यो छे.

३ प्र० ($\frac{2}{3}$ बीजा प्रश्नमां) जेम देहने विषे आत्मबुद्धि छे तेम अमारा स्वरूपनी दृढता साक्षात्कार ज्ञाने युक्त होय एम कह्युं ते साक्षात्कार दृढता केवी रीते जाणवी ?

३ उ० जेम देहमां जीव रह्यो छे ते देहने विषे एकत्वभाव छे तेम श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने विषे एकत्वभाव थाय, ने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां सुख भोगवे ते श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनी साक्षात्कार दृढता कहेवाय, पण एवी स्थिति क्यारे थाय तो पोताने देहथी पृथक् मानीने श्रीजीमहाराजने आकारे थइने मूर्तिने धारे ते मूर्तिने धारतां धारतां मूर्तिनो साक्षात्कार थाय, ने ते भेळी जगतनी विस्मृति थइ जाय ने एक श्रीजीमहाराजनेज देखे पण बीजुं कांइ देखेज नहि पण जगतनी विस्मृति थयाविना ने मूर्तिनो साक्षात्कार थया विना पाधरीज उपर कही एवी जे अनादि मुक्तनी स्थिति ते थायज नहिं.

४ प्र० देहमां जीवात्मा रह्या छे ते देहनेज पुरुषोत्तमनुं स्वरूप माने जे आ पुरुषोत्तमनुंज स्वरूप छे, ने देह तो छेज नहिं, एम मानीने ए देहमां रह्यो थको ध्यान करे ते अनादि मुक्तना जेवी स्थिति कहेवाय के नहिं ?

४ उ० एवी रीते मानवाथी मायानो संबंध टळतो नथी, ने देह तो मायिक छे ते पुरुषोत्तम रूप मानवाथी पुरुषोत्तमरूप थतो नथी, ने एम मानवाथी एवी स्थिति कोटी कल्पे पण थाय नहि, एम माननार तो असत्पुरुष छे ने वेदांतिथी पण अति नीच ने मलीन छे, केम जे वेदांती तो मायिक देहनो निषेध करीने सत्यरूप एवो जे आत्मा तेने ब्रह्म माने छे, ने आ तो असत्य ने मिथ्या एवो जे देह तेने सत्य माने छे माटे वेदांतीथी पण अति पापी ने दुष्ट छे. ने ए तो असत्पुरुषनी समजण छे एम (लो० ११ना पहेला प्रश्नमां) कह्युं छे. ॥१३१॥

संवत् १८८२ ना चैत्र शुदि ४ चतुर्थीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गाम श्री जेतलपुर मध्ये मोहोलने विषे दक्षणादा गोखने विषे गादी उपर तकियानुं उठींगण दइने विराजमान हता, ने मस्तक उपर पुष्पनो खुंप तेणे युक्त श्वेत पाघ शोभती हती, ने श्वेत पुष्पनी पछेडी ओढी हती, ने केसरे सहित जे चंदन तेणे करीने सर्व अंग चरच्यां हतां, ने श्वेत हीरकोरी खेस पहेर्यो हतो, ने कंठने विषे गुलदावदीना हार पहेर्या हता, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज सर्वे सभा प्रत्ये एम बोल्या, (१) जे जीवनुं कल्याण ता एटला वडेज छे, जे प्रत्यक्ष भगवानना दर्शन ने तेनी अखंड स्मृति तेणे करीने थाय छे, कां जे भागवतमां एम कह्युं छे जे कंस, शिशुपाळ, दंतवक्र आदे दइने जे निंदक तेने अखंड भगवाननी स्मृति रही तेणे करीने कल्याण थयुं छे, माटे भगवाननी निरंतर स्मृति एज भक्ति छे. (१) त्यारे तमे कहेशो जे भगवान तो मळ्या छे, ने तेमनी १
स्मृति पण निरंतर रहे छे तेने वर्त्तमान पाळ्यानुं शुं प्रयोजन छे ? तो तेनुं तो एम छे जे एक तो वर्त्तमान दृढ राखे छे ने एक तो वर्त्तमानमां कसरवाळो छे, ते बेमां फेर केटलो छे ते कहीए जे स्मृति तो बेयने छे पण नियम धर्मे रहित छे ते पोतानुं कल्याण करे पण बीजा जीवनुं कल्याण एथी थाय नहिं, ने एकांतिक भक्त पण ते न थाय, ने भगवानना निर्गुण धामने पण न पामे ने जन्म मरण रहित तो थाय, ने तेथी सत्संगमां पण न वेसाय. (२) अने तम जेवा संत जे धर्म नियमे युक्त तेनी तो वातज २
नोखी छे, ते कहीए छइए जे तमने कोइक भावे करीने जमाडे तेने कोटी यज्ञनुं पुन्य थाय, ने अंते मोक्षने पामे छे, अने तमारा चरणनो कोइ स्पर्श करशे तेनां कोटी जन्मनां पाप नाश पामशे ने तमने भावे करीने वस्त्र ओढाडशे तेनुं पण परम कल्याण थाशे, अने तमे जे जे नदी तळावने विषे पग बोळो छो ते ते सर्वे तीर्थ रूप थाय छे, अने तमे जे वृक्ष तळे बेठा हो ने जे जे वृक्षनुं फळ जम्या हो ते ते सर्वेनुं रुडुंज थाय छे, अने तमारां कोइक भावे करीने दर्शन करे छे ने कोइ तमने भावे करीने नमस्कार करे छे तेना पापनो क्षय थाय छे, ने वळी तमे जेने भगवानना वात करो छो अने कोइने धर्म संबंधी नियम धरावो छो तेनो मोक्ष थाय छे, इत्यादिक जे धर्म नियम वाळा तम जेवा संत तेनी सर्वे क्रिया कल्याण रूप छे ा सारु जे प्रत्यक्ष श्रीनारायण ऋषिनो तमने दृढ आश्ररो छे, ने ते श्री नारायण ऋषि तमारी सभामां नित्य विराजे छे. (३) अने वळी तमे कहेशो जे भगवाननो दृढ आश्ररो छे, ने मायिक गुण ३
केम व्यापे छे ? तो ते कहीए छइए जे षड्उर्मिये रहित ने मायिक गुणे रहित सर्वेने करवा तेमां तो कांइ वार नथी, अने असंख्य जन्मनी स्मृति थइ आवे ने अनंत

ब्रह्मांडनी क्रियाने जुवे एवा सर्वेने करवा तेमां तो कांइ वार नहि, पण अमारी इ-
च्छाये करीने एम तमने राख्या छे ने तमारा सामर्थ्यने रुंधि राख्युं छे, ते प्रत्यक्ष
भगवानना सुखने अर्थे छे, ने बीजुं श्री पुरुषोत्तम ते जे ते आज तमने सर्वेने श्री नर-
नारायण ऋषि रूप थइने मळ्या छे. माटे निःसंशय थइने आनंदमां भजन करजो.(४) ४

२ ते समे आशजीबाइए श्रीजीमहाराजने प्रश्न पुछ्यो जे, [२] हे महाराज !
वैर भावे करीने कल्याण थाय छे ते केम थाय छे ते कहो ? पछी श्रीजीमहाराज एम
बोल्या जे द्रुपद राजा हतो तेने द्रौपदी जे पोतानी पुत्री तेने परणाववां हतां, ते सारुं
स्वयंवर रच्यो हतो त्यां राजा मात्रने तेडाव्या हता,अने द्रोणाचार्य पण आव्या हता,
अने पांडव पण आव्या हता,पछी बीजा सर्वे राजाए मळीने मच्छ वेंधवा मांडयो पण
कोइथी मच्छ न वेंधाणो, त्यारे युधिष्ठिरे कह्युं जे हुं मच्छ वेंधुं एम कहीने युधिष्ठिरे
सुरत बांधी त्यारे द्रोणाचार्ये कह्युं जे आ सभा देखाय छे ? त्यारे कह्युं जे देखाय छे,
अने वळी कह्युं जे तमारुं शरीर देखाय छे ? त्यारे कह्युं जे देखाय छे, पछी द्रोणा-
चार्ये कह्युं जे तमथी मच्छ नहि वेंधाय, एवी रीते चार भाइ थकी मच्छ न वेंधाणो,
त्यार पछी अर्जुने उठीने धनुष्य लइने सुरत बांधी त्यारे द्रोणाचार्ये पुछ्युं जे आ
सभाने देखो छो ? त्यारे अर्जुने कह्युं जेसभा नथी देखतो, ने मच्छ पण नथी देखतो
अने मच्छ उपर पक्षी छे तेने देखुं छुं, त्यारे द्रोणाचार्ये कह्युं जे एना माथा सामी
सुरत राखो त्यारे अर्जुने सुरत बांधीने कह्युं जे पक्षी नथी देखतो, ने एकलुं मस्तक
देखुं छुं त्यारे द्रोणाचार्ये कह्युं जे हवे घा करो त्यारे अर्जुन मच्छना मस्तकने वेंधता
हवा, एवी रीते ज्यारे वृत्ति एकाग्र थाय त्यारे ते द्वेषभाव कल्याणकारी छे जेम
शिशुपाळ, तथा कंस ए आदिकनी श्रीकृष्णना स्वरूपने विषे तदाकारवृत्ति थइ गइ
हती, त्यारे कल्याण थयुं एवी रीतनो द्रोह जो न आवडे तो नारकी थाय, अने ते क-
रतां भक्ति सुलभ छे अने द्रोहबुद्धि राखीने भजे तेनुं असुर एवुं नाम पडेज नहि, ने
ते भक्त तो कहेवायज नहि, माटे असुरनी रीत मेलीने जेने ध्रु,प्रल्हाद, नारद, सनका-
दिकनी पंक्तिमां भळवुं होय तेने तो भक्तिए करीने भगवानने भजवा ते अति श्रेष्ठ छे.
(५) इति वचनामृतम् ॥ ४ ॥ (२३३) ५

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) बे छे, पहेलुं कृपावाक्य छे. तेमां श्रीजीमहाराजे
कह्युं छे जे प्रत्यक्ष भगवान अमे ते अमारुं दर्शन ने अमारी अखंड स्मृति तेणे करीने
कल्याण थाय छे, ने अमारी अखंड स्मृति एज भक्ति छे. (१) अने वर्तमानमां कसर
वाळो अमारी अखंड स्मृति राखे तो पण तेनाथी कोइनुं कल्याण थाय नहिं, ने ते
एकांतिक न थाय, ने अमारा धामने न पामे ने एनाथी सत्संगमां न बेसाय. (२) अने
अमारी अखंड स्मृतिए युक्त ने यथार्थ धर्म नियमवाळा तम जेवा संतनां दर्शन, स्पर्श,

सेवा, इत्यादिक करे तेमां सर्वे पापनो क्षय थाय छे,ने तमे जेने धर्म संबंधी नियम धरावो छो तेनो मोक्ष थाय छे, ने तम जेवा धर्म नियमवाळा संतनी सर्वे क्रिया कल्याणकारी छे, केम जे प्रत्यक्ष श्रीनरनारायण ऋषि जे अमे ते तमारी सभामां नित्य विराजीए छइए ने अमारो तमारे आशरो छे. (३) अने तमारुं ऐश्वर्य अमारुं यथार्थ सुख आपवा सारुं अमे रोकी राख्युं छे. (४) बीजामां द्रोहबुद्धिए भजे ते असुर छे, ने भक्तिए भजे ते मुक्त थाय छे. (५) वातनो छे.

१ प्र० (१/२ पहेला प्रश्नमां) नियम धर्मे रहित केवळ श्रीजीमहाराजनी अखंडस्मृतिवाळानुं कल्याण कह्युं ते केवुं थाय ?

१ उ० एनो उत्तर ए वातमांज छे के एकांतिक न थाय ने निर्गुणधामने पटले अक्षरधामने न पामे ने सत्संगमां न लेखाय पण सर्वे अवतारोना अवतारी ने सर्वोपरि एवा श्रीस्वामिनारायण भगवान तेमनी अखंडस्मृति होय ते स्मृतिना प्रतापथी श्रीजीमहाराज एने जन्ममरणथी रहित करे ने मायाथी पर ईश्वरकोटीमां मुके पछी त्यांथी पस्तावो पामीने मोक्षनी इच्छा करे त्यारे तेने क्यां श्रीजीमहाराजनो ने मुक्तनो योग होय त्यां लावीने निर्वासनिक करीने आत्यंतिक मोक्ष करे पटले अक्षरधाममां लइ जाय एवुं श्रीजीमहाराजे आ ठेकाणे पोतानी अखंड स्मृतिना प्रतापनुं बळ देखाड्युं छे.

२ प्र० (१/२ पहेला प्रश्नमां) धर्म नियमे युक्त संतनी वात नोखी छे एम कह्युं ते केवा संत जाणवा ?

२ उ० जो द्रव्यादिक मायिक पदार्थनो कोइ दिवस संकल्पज थाय नहिं, ने त्रणे अवस्थामां पंच विषयनो अतिशे अभाव वर्ते ने श्रीजीमहाराजनी मूर्ति विना बीजी कोइ प्रकारनी वासना न होय, ने आत्मानेविषे श्रीजीमहाराजनो साक्षात्कार होय तेवा जाणवा.

३ प्र० (१/२ पहेला प्रश्नमां) अमे तमारा सुखने अर्थे तमारा सामर्थ्यने रुंधी राख्युं छे एम कह्युं ते सामर्थ्य आपवाथी श्रीजीमहाराजना सुखमां शी न्यूनता रहेती हशे ?

३ उ० षड्उर्मिए ने मायिक गुणे रहित थाय तथा असंख्य जन्मनी स्मृति थइ आवे, अने अनंत ब्रह्मांडनी क्रियाने देखे एवुं ऐश्वर्य आवे तेमां लोभाइ जाय, ने ए ऐश्वर्यमां वधु लगनि थाय, तो श्रीजीमहाराजने भुली जाय ने कल्याणने रस्तेथी बीजे ऐश्वर्यने रस्ते चडी जाय, तो श्रीजीमहाराजनुं सुख न आवे पटला सारुं सामर्थी रोकी राखी छे, अने जो सामर्थी रोकी न राखे तो तेमां मोटपण मानी बेसे ने मोटा मुक्तनुं महात्म्य जाणीने तेमनो समागम ने सेवा करे नहिं, ने जीवनुं बगडे तेथी नथी जणावता. ।।१३३।।

संवत् १८८२ ना चैत्र शुदि ५ पंचमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज गामश्री वेतळपुर मध्ये मोहोळनी दक्षिणादि कोरे जग्यानी मांही चोकने विषे उत्तरादे मुखारविंदे पाट उपर विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने मस्तक उपर झीणपोती श्वेत पाघ धरी रह्या हता ने श्वेत झीणी चादर ओढी हती ने श्वेत धोतीयुं पहेर्युं हतुं अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना

हरिभक्तजी सभा भराइने बेठी हती अने रात्य दोढ पहोर वीती हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज घडीक विचारीने बोल्या जे (१) सर्वे सांभळो आज तो १
अमारे जेम छे तेम वात करवी छे जे भगवानने भजवा थकी बीजी वात मोटी नथी,
कां जे भगवाननुं कर्युं सर्वे थाय छे, अने आ समे तो आ सभानुं कर्युं पण थाय छे,
अने श्रीनरनारायणने मतापे करीने अमारुं कर्युं पण थाय छे. ते त्यो कहीए जे जेवो
अमे मनमां घाट करीए छीए तेवो आ जगतने विषे प्रवर्ते छे अने जेम धारीए छीए
तेम थाय छे पण खरुं, जे आने राज आवो तो तेने राज पण आवे छे अने आनुं
राज्य छे ते जाओ तो तेनुं जाय छे, अने धारीए जे आ पळे आटलो वरसाद आंहि
थाओ तो त्यां जरूर थाय छे अने आंहि न थाओ तो त्यां नथी थातो, अने वळी
धारीए जे आने धन प्राप्त थाओ तो तेने थाय छे ने आने न थाओ तो तेने थातुं
नथी, अने आने दिकरो आवो तो तेने दिकरो आवे छे अने धारीए जे आने दि-
करो म आवो तो तेने आवतोज नथी, अने आने रोग थाओ तो तेने रोग पण
थाय छे अने आने रोग न थाओ तो तेने रोग नथी थातो, एवी रीते अमे धारीए
छइए तेम थाय छे खरुं. त्यारे तमे कहेशो जे सत्संगीने सुखदुःख थाय छे अने रोगा-
दिक प्राप्त थाय छे ने कांइक धन समृद्धिनी हानि थाय छे अने महेनत करीने मरी
जाय छे तोय पण ए दरिद्री जेवो केम रहे छे ? तो एनुं तो एम छे जे एने भगवान
भज्यामां जेटली कसर छे तेटली एने सर्व क्रियाने विषे बरकत थाती नथी. अने भग-
वानने तो एनुं सारुंज करवुं छे जे शूळीनुं दुःख हशे ते भगवान पोताना आश्रितज-
ननुं कांटे करीने टाळता हशे. अने अमे तो एम जाणीए छइए जे सत्संगीने तो एक
वींछीनी पीडा थाती होय तो अमने हजार गणी थाओ पण ते पींडाथी ते हरिभक्त
रहित थाओ अने सुखीया रहो, एम अमे रामानंदस्वामी आगळ बोल्या हता, माटे
अमारी तो नजर एवी छे जे सर्वेनुं सारुं थाओ. अने भगवानने विषे जीवना मननी
रुचिने राखवानो उपाय निरंतर करीए छइए ते शा सारु जे अमे तो भूत, भविष्य ने
वर्तमान ए त्रण काळने विषे सर्वे क्रियाने जाणीए छैए अने आंहि बेठां छतां पण सर्वेने
जाणीए छइए अने माताना उदरने विषे हता ते दिवस पण जाणता हता अने उदरने
विषे नहोता आव्या ते दिवसे पण जाणता हता, केम जे अमे तो भगवान जे श्रीनर-
नारायण ऋषि ते छइए अने महापापवाळो जीव हशे ने अमारे आशरे आवशे ने
धर्म नियममां रहेशे तेने अमे अंतकाळे दर्शन देइने भगवाननुं जे अक्षरधाम तेने पमा-
डीए छइए. अने हवे ते अक्षरधामना पति श्री पुरुषोत्तम जे ते प्रथम धर्म देव थकी जे
मूर्ति नामे देवी तेने भक्ति कहीए तेने विषे श्रीनरनारायण ऋषि रूपे प्रगट थइने

बदरिकाश्रमने विषे तपने करता हवा. अने ते श्री नरनारायण ऋषि आ कळियुगने
विषे पाखंडी मत तेनुं खंडन करवा अने अधर्मना वंशनो नाश करवा अने धर्मना वं-
शने पुष्ट करवाने धर्म, ज्ञान, वैराग्य तेणे सहित जे भक्ति तेने पृथ्वीने विषे विस्तारवा
सारु श्री धर्मदेव थकी भक्तिने विषे नारायण मुनि रूपे प्रगट थइने आ सभाने विषे
विराजे छे ते जाणज्यो. एम कहीने पोताना जनने अति मग्न करता हवा. अने वळी
बोल्या जे अमे वारे वारे श्री नरनारायण देवनुं मुख्यपणुं लावीए छइए तेनुं तो एज
हारद छे, जे श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम अक्षरधामना धामी श्री नरनारायण तेज आ सभामां
नित्य विराजे छे ते सारु मुख्यपणुं लावीए छइए. अने ते सारु अमे अमारुं रूप जा-
णीने लाखो रुपैयानुं खर्च करीने शिखरबंध मंदिर श्री अमदावादमां प्रथम करावीने श्री
नरनारायणनी मूर्तियो प्रथम पधरावी छे. अने ए श्री नरनारायण तो अनंत ब्रह्मांडना
राजा छे अने तेमां पण आजे भरतखंड तेना तो विशेषे राजा छे. अने एवे श्री नर-
नारायण तेने मेलीने आ भरतखंडनां मनुष्य बीजा देवने भजे छे, ते तो जेम व्यभि-
चारिणी स्त्रियो होय ते पोताना धणीने मेलीने बीजा जारने भजे तेम छे. अने श्री नर-
नारायण भरतखंडना राजा छे, ते श्रीमद्भागवतमां कह्युं छे अने अमे आ संत सहित
जीवोना कल्याणने अर्थे प्रगट थया छइए, ते माटे तमे अमारुं जो वचन मानशो तो
अमे जे धाममांथी आव्या छइए ते धाममां तमने सर्वेने तेडी जाशुं, अने तमे पण एम
जाणज्यो जे अमारु कल्याण थइ चुक्युं छे. अने वळी अमारो दृढ विश्वास राखशो ने
कहीए तेम करशो तो तमने महा कष्ट कोइक आवी पडशे तेथी अथवा सातदकाळी
जेवुं पडशे ते थकी रक्षा करशुं. अने कोइए उगर्यानो आरो नथी एवुं कष्ट आवी पडशे
तोय पण रक्षा करशुं, जो अमारा आ सत्संगना धर्म बहु रीते करीने पाळशो तो, ने
सत्संग राखशो तो. अने नहि राखो तो महा दुःख पामशो तेमां अमारे लेणा देणा
नथी. (१) ने अमे तो आ समे कोइ वातनुं काचुं राख्युं नथी. ने जुओ ने ! आ १
जयतलपुर गाममां अमे केटलाक यज्ञ कर्या, अने केटलांक वर्ष थयां आंहि रहीए छ-
इए. अने जुओने आ तळावने विषे अमे सर्वे संते सहित हजारो वार नाह्या छइए,
अने आ जयतलपुर गाममां अमे घेर घेर सो वार फर्या छइए, अने घेर घेर भोजन
कर्यां छे, अने आ गामनी सीमने गाम ते वृंदावन करतां पण विशेष रमण स्थळ कर्युं
छे. (२) एम वात महाराज करे छे एटलाकमां तो आकाशमां एक मोटो तेजनो गोळो २
देखाणो, अने ते एक गोळाना त्रण गोळा थइ गया, ने मोहोल उपर घडीक आका-
शमां देखाइने अदृश्य थइ गया. त्यारे सौए कह्युं जे हे महाराज ! ए शुं हतुं ? त्यारे
महाराजे कह्युं जे ब्रह्मा, विष्णु ने शिव ए त्रणे देव नित्य आ संतनी सभानां ने अ-

मारां दर्शन करवा आवे छे,पण आज तो विमाने सोता हरि इच्छाए करीने देखाणा. [३] ॥ इति वचनामृतम् ॥ ५ ॥ २३४ ॥ ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे सर्वे साधन करवाथी अमने भजवा ए मोटी वात छे. ने अमारुं कर्युं सर्वे थाय छे ने अमारे प्रतापे करीने आ सभानुं कर्युं पण थाय छे अने अमने भज्यामां कसर रहे तेटली बरकत थती नथी अने अमे तो अमारा सत्संगीने सर्व पीडाथी रहित करीए छीए अने आंही बेठा थका सर्वेने जाणीए छीए अने अमे भगवान छीए अने महापापीजीव अमारे आशरे आवीने धर्म नियममां रहे तेने अमारुं अक्षरधाम पमाडीए छीए. अने अमे पाखंडी मतनुं खंडन करवा, ने अधर्मना वंशनो नाश करवाने धर्मना वंशने पुष्ट करवाने धर्मादिक अंगे सहित भक्तिने पृथ्वीने विषे विस्तारवा, धर्मभक्ति थकी प्रगट थइने आ सभाने विषे विराजीए छीए.अने अमने मेलीने बीजा देवने भजे ते जारने भजे तेम छे. अने अमे आ अमारा संत सहित जीवोनां कल्याण करवाने अर्थे प्रगट थया छीए ते अमारा वचनमां रहेशो तो अमारा धाममां तेडी जशुं अने तमे पण तमारुं कल्याण थयुं छे एम जाणज्यो. अने अमारो दृढ विश्वास राखशो ने अमे कहीए तेम करशो तो उगर्यानो आरो नहि होय एवा कष्टमां पण रक्षा करशुं, ने सत्संग नहि राखो ने नियम नहि पाळो तो अमारे तमारे लेवा देवा नथी. (१) अने आ जेतलपुर गाम तथा सरोवर तथा सीम जेवुं रमण स्थळ कर्युं छे तेवुं कोइ कर्युं नथी. [२] अने आ देवो नित्ये अमारां ने आ सभानां दर्शन करवा आवे छे, एवी रीते सभानी प्रशंसा करी छे. [३] बावतो छे.

१ प्र० पहेली बावतमां अमे करीए ते थाय छे अने [प्र० ८ मां $\frac{?}{२}$ बीजा प्रश्नमां] अमने दिकरो आपतां के मुवाने जीवतो करतां नथी आवडतुं एम कह्युं ते केइ रीते समजवुं ?

१ उ० कोइने दिकरो आपवो के मुवाने जीवतो करवो ए अमने ने अमारा मुक्तने प्रिय नथी एम कह्युं छे पण ए काम न करी शकीए एम नथी कह्युं.

२ प्र० अक्षरधामना पति श्रीपुरुषोत्तम ते प्रथम धर्मदेव थकी भक्तिने विषे श्रीनरनारायण ऋषि रूपे प्रगट थइने बदरिकाश्रमने विषे तप करता हवा तेज नरनारायण धर्मदेवथकी भक्तिने विषे प्रगट थइने आ सभाने विषे विराजे छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं अने (छे० २ मां) श्वेतद्वीप, गोलोक, वैकुंठ बदरिकाश्रमनी सभाथी आ सत्संगीनी सभा अधिक छे एम समजाइने पोते कह्युं छे माटे एम जोतां तो बदरिकाश्रमने विषे नरनारायण रह्या छे तेथी श्रीजीमहाराज अतिशे मोटा थया अने जो बदरिकाश्रममां नरनारायण छे तेज श्रीजीमहाराज होय तोतो आ सभा ने बदरिकाश्रमनी सभा ते सरखी होवी जोइए माटे ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० बदरिकाश्रमने विषे नरनारायण रह्या ते नरनारायणने विषे श्रीजीमहाराज अंतर्यामीरूपे रह्या छे माटे नरनारायण रूपे रह्या छे एम कहेवाय माटे अक्षरधामना पति जे श्रीजीमहाराज ते नरनारायणरूपे एटले नरनारायण द्वारे बदरिकाश्रममां रह्या छे पण जेम

अक्षरधाममां पोते स्वयं बिराजमान छे तेम नथी रह्या माटे नरनारायणथी जुदा छे ने पर छे ने कारण छे. अने नरनारायण ऋषि धर्म भक्ति थकी प्रगट थइने आ सभामां विराजे छे एम कह्युं ते तो नरनारायणना शाप निमित्ते पोते पधार्या तेथी कह्युं छे. अने अमे अमारुं रूप जाणीने श्रीनरनारायणनी मूर्तियो प्रथम पधरावी छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते मतवादीओने पोते संकल्पे करीने ए रूपे देखाया हता ते रूप पधराव्यां छे एम जाणवुं अने नरनारायणने भजवानुं कह्युं छे ते पण पोतानेज भजवानुं कह्युं छे.

२ प्र० बीजी बाबतमां आ जेतलपुर गामनी सीम ने गाम ते वृंदावन करतां पण विशेष रमण स्थळ कर्युं छे एम कह्युं ते वृंदावनमां तो श्रीकृष्ण भगवान रह्या हता ते वृंदावनथी तो जेतलपुर विशेष होयज माटे वृंदावनथी विशेष कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

३ उ० जेम श्रीकृष्णभगवाने गोकुळ मथुरां आदिकथी वृंदावनने विषे अधिक लीला करी हती तेम श्रीजीमहाराजे सर्व धाम थकी जेतलपुर धाममां विशेष लीला करी छे ने विशेष रह्या छे ने मोटा मोटा यज्ञ कर्या छे माटे सर्व धामथी विशेष कह्युं छे.

इतिश्रीकच्छदेशे वृषपुरनिवासी अनादिमुक्तराज श्रीअबजीभाइ विरचित साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम भगवान श्रीस्वामिनारायण मुखकमळनिःसृत वचनामृत रहस्यार्थप्रदीपिकायां जयतलपुर प्रकरणं समाप्तम्.

॥ अथ वचनामृत गढडा छेल्लुं प्रकरणम् ॥

संवत् १८८२ ना वैशाख वदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री वासुदेव नारायणना फळीयानी पांहेलीकोरे आथमणे बार ओरडानी उंची ओसरिए गादी तकिये युक्त जे सुंदर रंगत ढोलियो ते उपर विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने मस्तकने विषे जे मोटी श्वेत पाघ तेमां सुंदर मोगराना पुष्पनो तोरो विराजमान हतो अने कंठने विषे मोगराना पुष्पनो हार विराजमान हतो ने बे हाथने विषे ते पुष्पना गजरा विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ . पछी श्रीजीमहाराजे परमहंसने पुछ्युं जे (१) परमेश्वरना भक्तने भुंडा देशकाळादिकनो योग थाय तोय पण भगवाननी भक्तिमां विघ्न थाय नहि एवी शी समजण छे ? पछी परमहंसने जेवुं समझाणुं तेवुं कह्युं, पण यथार्थ उत्तर थयो नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जे भगवानने भजे तेने एक तो दृढ वैराग्य जोइए ने बीजी आ-

त्मनिष्ठा जोइए. तेमां जो वैराग्य न होय तो ज्यारे मनगमतुं पदार्थ मळे त्यारे जेम भगवानमां प्रीति करे छे तेम बीजा पदार्थमां पण भगवानना जेवी प्रीति थइ जाय. अने जो आत्मनिष्ठा न होय तो ज्यारे देहमां सुखदुःख आवे त्यारे ए भक्तनी रुचि चुंथाइ जाय, पछी जेने सुखदायी जाणे तेमां प्रीति करे अने जेने दुःखदायी जाणे ते साथे द्वेष करे. एवी रीते एनी भ्रष्ट बुद्धि थइ जाय माटे भगवानना भक्तने आत्मनिष्ठा ने वैराग्य ए बेय अतिशे दृढ जोइए. ते शा सारु जे वैराग्ये करीने तो भगवाननी मूर्ति विना बीजा मायिक आकार मात्र खोटा थइ जाय छे, अने आत्मनिष्ठाये करीने मायिक जे सुख ने दुःख ते खोटां थइ जाय छे. अने जेने वैराग्य ने आत्मनिष्ठा न होय तेने तो निर्विकल्प समाधि थइ होय तो पण ज्यां सुधी समाधिमां रहे त्यां सुधी सुख शान्ति रहे, अने ज्यारे समाधिमांथी बहार निसरे त्यारे नारायणदासनी पेठे सारा पदार्थने जोइने चाळा चुंथवा मांडे. (१) अने वळी जे भगवानना १
भक्त होय तेने तो भगवानने विषे ज्ञाननुं अंग होय ने कांतो हेतनुं अंग होय. तेमां जेने ज्ञाननुं अंग हाय ते तो भगवाननुं अतिशे महात्म्य समझे. अने जेने हेतनुं अंग होय तेने तो भगवान विना अर्ध घडी पण चाले नहि. ते ज्ञानना अंगवाळा तो झीणोभाइ, देवराम, ने प्रभाशंकर ए छे. एवी रीते जे हरिभक्त भगवाननुं महात्म्य जाणे तेने ज्ञानना अंगवाळा जाणवा. अने जेवुं व्रजनी गोपियोने भगवानने विषे हेत हतुं तेवी रीतना जे हरिभक्त होय तेने हेतनुं अंग जाणवुं. अने जेने ज्ञाननुं अंग होय ते भगवानने अंतर्यामी जाणे ने एम जाणे जे भगवान ते कोइनुं कह्युं सांभळेज नहि, ने भगवान तो जे भक्तनुं जेवुं अंग होय तेने तेवुं जाणीने तेवी रीते कहे छे, पण कोइनी शिखामणे करीने चालता नथी. अने जे एम जाणे जे भगवान तो कोइकना शिखव्या थका हुंमां वांक नथी तोय पण मुने कहे छे तेने तो भगवानना स्वरूपनुं ज्ञानज नथी. अने आ संसारमां पण जे मनुष्यने जे संघाथे स्वार्थ होय तेनो ते कोइ रीते अवगुण ले नहि, शा माटे जे एने पोताना स्वार्थनुं हेत छे तो जेणे भगवान साथे जन्म मरणना भय थकी छुटवानो स्वार्थ जाण्यो होय, तेने कोइ रीते भगवाननो अवगुण आवे नहि. अने जे एम जाणे जे भगवान तो कोइकना फेरव्या फरी जाय छे, एम समझीने जे भगवाननो अवगुण ले तेने तो ज्ञाननुं अंग पण नथी अने हेतनुं अंग पण नथी. एवी रीते कहीने श्रीजीमहाराजे मोटा मोटा परमहंसने कह्युं जे तमे तमारुं ए बेमांथी जे अंग होय ते कहो. पछी सर्वे परमहंसे कह्युं जे अमारे तो ज्ञाननुं अंग छे. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेने हेतनुं अंग होय तेने तो पोताना जे प्रितम तेने अर्थे जे न करवानुं होय ते पण थाय, केम जे आ संसारने विषे जे चोर होय तेने पोतपोतानी

स्त्री ने छोकरां तेने विषे हेत होय छे ते ज्यारे चोरी करवा जाय त्यारे बीजा माणसने मारीने पोताना घरना माणसने द्रव्य आपे छे. ने ए चोर घणो निर्दय छे पण पोताना कुटुंबी उपर हेत छे तो ते संघाथे निर्दय नथी थातो. तेम जेने भगवान के भगवानना भक्त संघाथे हेत होय तेने भगवान के भगवानना भक्त उपर क्रोध के ईर्ष्या आवेज नहि अने अवगुण पण कोइ रीते आवेज नहि. एवुं जेने होय तेने हेतनुं अंग कहाय. अने जेने ज्ञान के हेत ए बेमांथी एकेय अंग नथी तेने चाळाचुंथणो कहीए. (२) २
एटली वार्ता कहीने श्रीजीमहाराज पोताना उतारामां पधार्या. पछी तेज दिवस सांझने समे दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए गादी तकिया बिछावेल ढोलिया उपर विराजमान थया हता. अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठने विषे मोगराना पुष्पनो हार पहेर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने पोतानी आगळ साधु दुकड सरोदा बजावीने कीर्त्तन गाता हता.

२ ते कीर्त्तन भक्ति ज्यारे करी रह्या त्यारे श्रीजीमहाराजे एम आज्ञा करी, जे (२) अमारी लखेली जे शिक्षापत्री तेनो पाठ अमारा आश्रित जे त्यागी साधु, तथा ब्रह्मचारी, तथा गृहस्थ, बाइ, भाइ, सर्वे तेने नित्य करवो. अने जेने भणतां न आवडतुं होय तेने नित्ये श्रवण करवुं. अने जेने श्रवण करवानो योग न आवे तेने नित्ये शिक्षापत्रीनी पूजा करवी, एवी रीते अमे शिक्षापत्रीमांज लख्युं छे माटे ए त्रणमांथी जेने फेर पडे तेने एक उपवास करवो एम अमारी आज्ञा छे. एवी रीतनी जे श्रीजीमहाराजनी आज्ञा तेने पाळवानो नियम ए सर्वेए धार्यो, जे हे महाराज! जेम तमे कहो छो तेम अमे सर्व पाळीशुं. तेने सांभळीने श्रीजीमहाराज अतिशे प्रसन्न थइने सर्वे साधुने ने सर्वे ब्रह्मचारीने मळता हवा अने सर्वे सत्संगीना हृदयने विषे पोतानां चरणारविंद आपता हवा. (३) ॥ इति वचनामृतम् ॥ १ ॥ २३५ ॥ ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. बीजुं कृपावाक्य छे, तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे वैराग्य न होय तो बीजा मन गमता पदार्थमां अमारा जेवी प्रीति थइ जाय. ने आत्मनिष्ठा न होय तो देहिक सुख दुःखमां वृत्ति चुंथाइ जाय. अने वैराग्ये करीने अमारी मूर्ति विना बीजा मायिक आकार खोटा थइ जाय छे. अने आत्मनिष्ठा ए करीने मायिक सुख दुःख खोटां थइ जाय छे. अने आत्मनिष्ठा न होय तो समाधिमांथी बहार आवे त्यारे चाळा चुंथवा मांडे. (१) अने ज्ञानना अंगवाळाने अमारुं अतिशे महात्म्य समझाय ने अमने अंतर्यामी जाणे ने हेतना अंगवाळाथी अमारा विना रहेवाय नहि ने अमारे अर्थे न करवानुं पण करे ने ए बेमांथी एकेय अंग न होय ते चाळा चुंथणो छे. (२) अने बीजामां शिक्षापत्री वांचवी ने वांचतां न आवडे तेणे सांभळवी

अने संभळावनार न होय तो पूजा करवी तेमांथी फेर पडे तेने एक उपवास करवो एम कह्युं छे. (१) वातो छे. ॥ २३५ ॥

संवत् १८८२ ना ज्येष्ठ शुदि ६ छठने दिवस सांझने समे स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीवासुदेवनारायणना मंदिरना फळियाने विषे बाजोठ उपर विराजमान हता अने मस्तक उपर श्याम छेडानी धोळी पाघ बांधी हती अने श्वेत चादर ओढी हती अने श्वेत खेस पहेर्यो हतो अने पाघने विषे मोगराना पुष्पनो तोरो खोस्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे प्रश्न पुछयो (१) जे जगतने नाशवंत देखे छे अने देहने मुकीने चैतन्य जुदो थइ जाय छे तेने पण देखे छे तोपण आ जीवने जगतनुं प्रधानपणुं हैयामांथी मटतुं नथी. अने परमेश्वरने सर्व प्रकारे सुखना सिंधु जाणे छे तोपण परमेश्वरमां जीवनुं चित्त चोटतुं नथी तेम सत्संग पण एना हृदयमां मुख्य थातो नथी, अने धन स्त्री आदिक जे संसारिक पदार्थ तेमांथी प्रीति मटती नथी तेनुं शुं कारण हशे ? पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे, जीवना हृदयमां वैराग्य नथी तेणे करीने जगतनुं प्रधानपणुं मटतुं नथी ने भगवानमां प्रीति थाती नथी. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, वैराग्यनी न्यूनता छे ए तो वात साची; पण अमने तो एम भासे छे, जे जेने सत्संग थातां वांत जेवुं अंग बंधाइ जाय छे तेवुं ने तेवुंज सदाय रहे छे पण ते विना बीजुं थातुं नथी अने सत्संगे करीने ते अंगनी पुष्टि तो थाय पण अंग तो तेनुं तेज रहे छे. अने ज्यारे जेने जे अंग बंधाय छे त्यारे अंग बंधाता वांत एनुं चित्त विश्रांत जेवुं थइ जाय छे. जेम कामी होय तेनुं चित्त कामे कराने विश्रांत थाय ने जेम क्रोधी होय तेनुं चित्त क्रोधे करीने विश्रांत थाय, ने जेम लोभी होय तेनुं चित्त लोभे करीने विश्रांत थाय, तेम एनुं चित्त अंग बंधातां वांत विश्रांत थइ जाय छे, पछी ते विश्रांतिमां जेवुं अंग बंधाय तेवुं अंग रहे छे.माटे जे समझु होय तेने पोतानुं जे अंग होय तेने ओळखी राख्युं जोइए, ते ज्यारे काम क्रोधादिके करीने पोताने विक्षेप थाती होय त्यारे पोताना अंगनो विचार करे तो ते कामादिक क्षीण पडी जाय, जेम कोइक गृहस्थ होय तेने पोतानी माता, बोन,अथवा दिकरी अति रूपवान होय तेने जोइने जो भुंडो घाट थइ जाय तो पछी तेनी केवी दाझ्य थाय? तेवी दाझ्य ज्यारे सत्संग विना बीजुं पदार्थ प्रधान थाय त्यारे थइ जोइए.अने ज्यारे एवी दाझ्य अयोग्य पदार्थना संकल्पने देखीने न थाय तेना हृदयमां तो सत्संग पण प्रधान न रहे. अने सर्वे साधननुं फळरूप तो आ सत्संग छे, ते श्रीकृष्णभगवाने उद्धव प्रत्ये एकादश स्कंधमां कह्युं छे जे, अष्टांग योग, तथा सां-

रूप विचार, तथा शास्त्र पठन तथा तप, त्याग, यज्ञ ने व्रतादिके करीने हुं तेवो वश थातो नथी जेवो सत्संगे करीने वश थाउं छुं. माटे अमने तो एम भासे छे जे पूर्वे जन्मनो संस्कार हशे तेपण सत्पुरुषने योगे करीने थयो हशे. अने आजपण जेने जेने संस्कार थाय छे ते सत्पुरुषने योगे करीनेज थाय छे. माटे एवा सत्पुरुषनो संग प्राप्त थयो छे तोपण जेने जेम छे तेम समझातुं नथी तेने अतिशे मंदबुद्धिवाळो जाणवो. (१) श्री १
माटे जे जेवी श्वेतद्वीपमां सभा छे ने जेवी गोलोक वैकुंठलोकने विषे सभा छे ने जेवी बदरिकाश्रमने विषे सभा छे तेथी पण हुं आ सत्संगीनी सभाने अधिक जाणुं छुं अने सर्वे हरिभक्तने अतिशे प्रकाशे युक्त देखुं छुं, एमां जो लगारपण मिथ्या कहेता हइए तो आ संतसभाना सम छे, ते सम श्रा सारु खावा पडे छे जे सर्वने एवुं अलौकिकपणुं समझातुं नथी अने देखवामां पण आवतुं नथी, ते सारु सम खावा पडे छे. अने ब्र-ह्मादिकने पण दुर्लभ एवो जे आ सत्संग तेमां आवीने परमेश्वर विना जेने बीजा प-दार्थमां हेत रहे छे तेनुं कारण ए छे जे जेवी ए जीवने परोक्षने विषे प्रतीति छे तेवी प्रत्यक्षने विषे दृढपणे प्रतीति थाती नथी, ते श्रुतिमां कह्यु छे जे जेवी परोक्ष देवने विषे जीवने प्रतीति छे तेवी जो प्रत्यक्ष गुरुरूप हरिने विषे आवे तो जेटला अर्थ प्राप्त थवाना कह्या छे तेटला सर्वे अर्थ तेने प्राप्त थाय छे. अने ज्यारे आवो संत समागम प्राप्त थयो त्यारे देह मुकीने जेने पामवा हता तेतो देह छतां ज मळ्या छे, माटे जेने परमपद क-हीए मोक्ष कहाए तेने छते देहेज पाम्यो छे.अने आ वार्ता जे कही ते जणाय छे तो जाडी जेवी पण एतो अतिशे झीणी छे. ते जे एवी रीते वर्त्ततो होय तेने एम समझाय जे ए वार्त्ता अति झीणी छे ने बीजाने तो समज्यामां पण आवे नहि एवी अतिशे झीणी वार्ता छे एम वार्ता करीने श्रीजीमहाराज जय सच्चिदानंद कहीने पोताना उतारामां पधार्या. (२) २
॥ इति वचनामृतम् ॥ २ ॥ २३६ ॥

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्यु छे जे सत्संग थातां जेवुं अंग बंधाय छे ते अंग सदा रहे छे अने अयोग्य पदार्थना संकल्पे करीने दार्ढ्य न थाय तेने सत्संग प्रधान रहे नहि. अने सत्पुरुषने योगे करीने संस्कार थाय छे माटे सत्पु-रुषने योगे पण जेम छे तेम न समझे ते अतिशे मंद बुद्धिवाळो छे. (१) अने सर्वे धामोनी सभाथी आ सत्संगीनी सभा अधिक छे ने आ सत्संग ब्रह्मादिकने पण दुर्लभ छे, ने जेवी परोक्ष पटले अक्षरधाममां अमे दिव्य स्वरूपे विराजमान छीए तेमां प्रतीति पटले दिव्यभावनो दृढ विश्वास छे तेवोज आ प्रत्यक्ष मनुष्यरूपे देखाता जे अमे तेमां दिव्यभाव नथी आवतो, ने आ मूर्ति ने अक्षरधाममां मूर्ति ते एकज छे एम समझातुं नथी, एज अमारा विना बीजे हेत रहेवानुं कारण छे, अने जो परोक्षना जेवीज प्रत्यक्षने विषे प्रतीति आवे तो छते देहेज मोक्षने पामी रह्यो छे. (२) बावतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां सत्संग थातां जेवुं अंग बंधाय छे तेवुं सदाय रहे छे एम कह्युं ते सत्संगनो अर्थ शो हशे ?

१ उ० सत् रूप एवा भगवान श्रीस्वामिनारायण, तथा तेमनी मूर्तिना सुखभोक्ता ने तेमनी आज्ञामां वर्त्तनारा एवा सत्पुरुष, तथा श्रीजीमहाराजे वर्णन करेलो एवो तेमनो धर्म, तथा ए त्रणेनुं जेमां वर्णन छे एवां वचनामृत तथा सत्संगी जीवन आदिक शास्त्र, ए चारनो संग तेनुं नाम सत्संग कहेवाय.

२ प्र० पहेली बाबतमां अंग बंधातां चित्त विभ्रांत जेवुं थइ जाय छे एम कह्युं ते विभ्रांत केवी रीते थतुं हशे ?

२ उ० ज्यारे संतनो समागम करे त्यारे कोइक पासेथी ज्ञाननी वात सांभळे, ने कोइक पासेथी वैराग्यनी वात सांभळे, ने कोइक पासेथी धर्मनी ने कोइक पासेथी भक्तिनी, एम नोखी नोखी वातो सांभळे त्यारे संशय थाय जे कोनी वात साची हशे ? अने कियुं अंग बांधीए तो मोक्ष थाय ? एम भ्रांति रह्या करे पछी तेमांथी जे अंगनी दृढता थाय ते अंग बंधाय माटे अंग बंधाया पहेलां संशयवत् थाय ते विभ्रांति जाणवी.

३ प्र० काम क्रोधादिके करीने विक्षेप थाय त्यारे पोताना अंगनो विचार करे तो ते कामादिक क्षीण पडी जाय एम कह्युं ते अंग कियुं जाणवुं ?

३ उ० ज्ञान, वैराग्य, धर्म, भक्ति आदिक अंग छे तेमांनुं जे अंग पोताने होय ते अंगनो विचार करे तो कामादिक जिताय एम कह्युं छे.

४ प्र० ज्ञान वैराग्यादिक अंगनो विचार केवी रीते करवो ?

४ उ० ज्ञानना अंगवाळाने काम क्रोध लोभादिकनो संकल्प थाय त्यारे एम विचार करे जे सर्वे सुखमय मूर्ति ने सर्वोपरि एवा श्रीजीमहाराजने मुकीने अति तुच्छ नाशवंत ने दुःखरूप मायिक पदार्थमां जो हुं प्रवर्तीश तो श्रीजीमहाराज कुराजी थशे ने मोक्षमां विघ्न पडशे ने मारे माथे जन्म मरण रहेशे ने महादुःखीयो थइश, एम पश्चात्ताप करीने संकल्पने टाळी नाखे. अने वैराग्यना अंगवाळाने काम क्रोध लोभादिकनो संकल्प थाय त्यारे ते नाशवंत ने तुच्छ पदार्थमां प्रीति करवा जेवुं नथी एम विचारीने संकल्पने टाळी नाखे. अने धर्मवाळाने श्रीजीमहाराजनी आज्ञा विरुद्ध संकल्प थाय त्यारे एम विचारे जे आ संकल्प प्रमाणे हुं प्रवर्तीश तो जन्म मरण ने गर्भवास ने यमयातनानां दुःख भोगववां पडशे एम विचारीने आज्ञा विरुद्ध संकल्पने टाळी नाखे. अने भक्ति एटले प्रीतिना अंगवाळाने श्रीजीमहाराज विना बीजो संकल्प थाय तो तेने वसमुं लागे जे आवा मोटा भगवानने मुकीने मने आवो तुच्छ घाट थाय ते ठीक नहि एम विचारे तो कामादिकना घाट टळी जाय.

५ प्र० सर्वे साधननुं फळरूप आ सत्संग कह्यो ते फळरूप केवी रीते समजवो ?

५ उ० समग्र साधन तथा भक्तिनुं फळ जेवुं आ सत्संगमां मळे छे तेवुं बीजा कोइ संगथी मळतुं नथी एवो श्रीजीमहाराजनो ने एमना अनादि तथा परम एकांतिक मुक्तनो

संग मळ्यो छे ते आत्यंतिक कल्याण रूपी फळ आपे छे तेवुं बीजाथी मळवुं नथी एम कह्युं छे.

६ प्र० बीजी बाबतमां श्वेतद्वीप, गोलोक, वैकुंठ तथा बदरिकाश्रमनी सभाओथी आ सत्संगीनी सभाने अधिक कही अने वळी पछीथी ब्रह्मादिकने पण आ सत्संग दुर्लभ छे एम कह्युं ते ब्रह्माथी तो वैकुंठनी सभा अधिक छे ने तेथी गोलोकनी अधिक छे ने तेथी बदरिकाश्रमनी अधिक छे ने तेथी श्वेतद्वीपनी अधिक छे ते सर्वेने आ सत्संग दुर्लभ छे तो ब्रह्माने तो दुर्लभ होयज माटे ब्रह्मादिकने दुर्लभ कहेवानी तो कांइ जरुर रही नहि माटे तेने दुर्लभ छे एम कहेवानो शो हेतु हशे ?

६ उ० आ ठेकाणे मूळअक्षरने ब्रह्मा नामे कह्या छे ते मूळ अक्षरने पण आ सत्संग दुर्लभ छे तो तेना मुक्तने तथा श्वेतद्वीपपति वासुदेवादिकने तथा तेमना मुक्तोने दुर्लभ होय तेमां शुं कहेवुं ? एम कह्युं छे.

७ ० जेवी परोक्षदेवने विषे प्रतीति छे तेवी जो प्रत्यक्ष गुरु रूप हरिने विषे आवे तो जेटला अर्थ प्राप्त थवाना कह्या छे ते सर्वे अर्थ प्राप्त थाय छे एम कह्युं ते परोक्षदेव किया समजवा ने प्रत्यक्ष गुरु रूप हरि किया समजवा ?

७ उ० श्रीजीमहाराज अक्षरधाममां रह्या छे ते परोक्ष जाणवा अने आंही दर्शन आपे छे ते प्रत्यक्ष जाणवा ने श्रीजीमहाराज पोते त्यागी गृहीना गुरुपणे वर्त्या तेथी एम कह्यु जे अमे तमारा गुरुरूपे छीए पण अमे पोते हरि एटले भगवान छीए माटे अमने प्रत्यक्ष भगवान जाणीने अमारे विषे प्रतीति लावो एम कह्युं छे एम गुरुरूप हरि कह्या छे पण सत्पुरुष जे गुरु तेमने हरि एटले भगवान जाणवा एम नथी कह्युं.

८ प्र० आ वार्त्ता जाडी जेवी जणाय छे पण अतिशे झीणी छे एम कह्युं ते केवी रीते समजे तो जाडी कहेवाय ने केवी रीते समजे तो झीणी कहेवाय ?

८ उ० जेवी परोक्षने विषे प्रतीति छे तेवी प्रत्यक्षने विषे प्रतीति आवे तो सर्व अर्थ प्राप्त थाय एम कह्युं ते परोक्ष अवतार थइ गया एवा श्रीजीमहाराजने समजे ते जाडी वात कहेवाय अने अक्षरधाममां श्रीजीमहाराज दिव्य तेजोमय मूर्ति विराजे छे ते परोक्ष छे तेवाने तेवाज आहीं मनुष्यरूपे अथवा प्रतिमारूपे दर्शन आपे छे ते प्रत्यक्ष छे एम समजे तो झीणी वात कहेवाय.

९ प्र० ज्यारे श्रीजीमहाराज मनुष्यरूपे दर्शन आपता त्यारे तो प्रत्यक्ष गुरुरुप हरि हता पण आज प्रत्यक्ष गुरुरूप हरि कोने जाणवा ?

९ उ० जे मूर्ति अक्षरधाममां छे तेज मूर्ति मनुष्यरूपे छे अने तेज मूर्ति प्रतिमा छे पण प्रतिमा तथा मनुष्यरूप मूर्ति तथा अक्षरधाममां मूर्ति ते जुदी नथी एकज छे. माटे प्रतिमारूपे दर्शन आपे छे तेज प्रत्यक्ष हरि छे. अने जे मुक्त होय तेमने गुरु जाणवा पण हरि एटले भगवान जाणवा नहि. ॥ २३६ ॥

संवत् १८८३ ना अषाढ वदि १ पडवाने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उताराने विषे बिराजमान

हता ने ते दिवस ठकर हरजीए पोताने घेर श्रीजीमहाराजनी पधरामणी करी त्यारे श्रीजीमहाराज त्यां पधार्या पछी उगमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर गादी तकिया बिछावीने श्रीजीमहाराजने विराजमान कर्या पछी हरजी ठकरे श्रीजीमहाराजनी केसर चंदने करीने पूजा करी एवी रीते श्रीजीमहाराज पूर्वमुखारविंदे विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठने विषे मोगराना पुष्पना हार तथा बे भुजाने विषे ते पुष्पना गजरा तथा पाघने विषे ते पुष्पना तोरा ते अतिशे विराजमान हता अने श्रीजीमहाराजना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडल तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ ते समयमां श्रीजीमहाराजे सर्वे संत मंडळने प्रश्न पुछ्यो जे (१) जे हरिभक्तना हृदयने विषे दया ने स्नेह ए बे स्वभाविक रह्यां होय. त्यारे स्नेहनुं स्वरूप तो मध जेवुं छे ते ज्यां त्यां चोटे, अने दयानो स्वभाव एवो छे जे ज्यां त्यां दया करे, त्यारे भरतजीए मृगला उपर दया करी तो ते मृगलीने पेट जन्म लेवो पड्यो, अने जे दयावान होय तेने जे उपर दया आवे ते संघाथे स्नेह थया विना रहे नहि अने ए दया ने स्नेह तेने टाळ्यानो उपाय तो आत्मज्ञान ने वैराग्य ए बेज छे ते आत्मज्ञान एवुं छे जे जेमां कोइ बीजुं पेसेज नहि अने वैराग्यनुं एवुं स्वरूप छे जे सर्वे नाशरूपने नाशवंत देखाडे माटे आत्मज्ञान ने वैराग्य ए बे वते करीने दया ने स्नेहनो नाश थइ जाय छे, अने स्थूळ, सूक्ष्म ने कारण ए आदिक सर्वे उपाधिनो पण नाश थइ जाय छे, अने केवळ ब्रह्म सत्तामात्र रहे छे. पछी एने भगवान तथा भगवानना भक्तने विषे दया ने स्नेह रहे छे के नथी रहेतां ? ए प्रश्न छे पछी मुक्तानंदस्वामी, तथा शुकमुनि तथा नित्यानंदस्वामी ए आदिक परमहंसे जेवी जेनी दृष्टि पुगी तेणे तेवो उत्तर कर्यो पण श्रीजीमहाराजना प्रश्ननुं यथार्थ समाधान थयुं नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ल्यो अमे उत्तर करीए एनो तो उत्तर एम छे जे ज्ञान ने वैराग्ये करीने त्रण शरीर ने त्रण अवस्था ने त्रण गुण ए सर्व मायिक उपाधि थकी चैतन्य जुदो थइ जाय छे, ने केवळ सत्तामात्र रहे छे पण मायिक उपाधिनो लेश पण रहेतो नथी, त्यारे जेम दीपकनो अग्नि ते कोडीयुं तेल ने वाट ए त्रणने योगे करी ने दृष्टिमां आवे तथा ग्रहणकर्यामां आवे, पण ज्यारे ए त्रणे प्रकारनी उपाधिनो संग छुटी जाय छे त्यारे ए अग्नि कोइनी दृष्टिमां पण न आवे ने ग्रहण पण न थाय, ने उपाधिए युक्त होय त्यारेज दृष्टिए आवे ने ग्रहण कर्यामां आवे, ते ज्ञान ने वैराग्ये करीने सर्वे मायिक उपाधि निवृत्ति पामे छे त्यारे ए जीवात्मा छे ते केवळ ब्रह्म सत्तामात्र रहे छे, ने ते मन वाणीने अगोचर छे ने कोइ इंद्रिये करीने ग्रहण कर्यामां आवतो नथी. पछी ते काळे तो एने जो शुद्ध संप्रदाये करीने भगवाननुं ज्ञान प्राप्त थयुं होय ने भग-

वान ने भगवानना भक्तनुं महात्म्य यथार्थपणे समझाणुं होय, तेने तो सर्व मायिक उपाधिनो संग टळी जाय ने पोतानो जीवात्मा ब्रह्मरूप थाय तोपण भगवान ने भगवानना भक्तने विषे जे दया ने प्रीति ते निरंतर रहे छे. त्यां दृष्टांत छे जेम दीपकनी ज्योत छे तेने ज्यारे उपाधिनो संग टळी जाय छे त्यारे ए अग्नि कोइ इंद्रिये करीने ग्रहण न थाय एवो आकाशने विषे रहे छे, तोपण ए अग्निने विषे सुगंधी तथा दुर्गंधीनो जे पाश लाग्यो होय ते टळतो नथी, तथा जेम वायु छे ते तो अग्नि थकी पण वधु असंगी छे तोपण तेने सुगंधी तथा दुर्गंधीनो पाश लागे छे, तेमज जीवात्माने ज्ञान वैराग्ये करीने मायिक उपाधिनो संग टळी जाय छे तोपण सत्संगनो पाश लाग्यो छे ते टळतो नथी, अने ते ब्रह्मस्वरूप थाय छे तोपण नारदसनकादिक ने शुकजीनी पेठे भगवान तथा भगवानना भक्तने विषे अतिशे दया ने प्रीतिए युक्त वर्ते छे, त्यां श्लोक ॥ परिनिष्ठितोपिनैर्गुण्ये उत्तम श्लोकलीलया । गृहीत चेताराजर्षे आख्यानंयदधीतवान ॥१॥ तथा ॥ नित्यंविष्णुजनः प्रियः ॥ तथा ॥ आत्मारामाश्चमुनयो ॥ तथा ॥ प्रायेण मुनयोराजन् ॥ तथा गीतामां कह्युं छे जे ॥ ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा नशोचतिनकांक्षति। समः सर्वेषुभूतेषु मद्भक्तिंलभते परां ॥ १ ॥ इत्यादिक घणाक श्लोके करीने प्रतिपादन कर्युं छे जे भगवानना भक्त होय ते ज्ञान वैराग्ये करीने मायिक उपाधिनो त्याग करीने ब्रह्मरूप थया होय तोपण भगवान तथा भगवानना भक्तने विषे दया ने प्रीति तेणे युक्त होयछे.

(१) अने जे भगवाननो भक्त न होय ने केवळ आत्मज्ञानने वैराग्ये करीने मायिक उपाधिने टाळीने सत्तामात्र वर्ततो होय तेने तो साधनदशाने विषे भगवानना उपासनाए रहित एवा जे केवळ आत्मज्ञानी तेना संग रूप कुसंगनो पाश लाग्यो छे, माटे भगवानने भगवानना भक्तने विषे दया ने स्नेह थातो नथी. जेम वायुने ने अग्निने दुर्गंधनो पाश लागे छे तेमज एने ते कुसंगना पाश लाग्यो छे ते कोइ प्रकारे टळतो नथी. जेम अश्वत्थामा ब्रह्मरूप थयो हतो पण तेने कुसंगनो पाश लाग्यो हतो माटे श्रीकृष्ण भगवानने ते भगवानना भक्त जे पांडव तेने विषे दया ने स्नेह थयो नहि, तेम केवळ जे आत्मज्ञानी छे ते ब्रह्मरूप थाय छे तोपण तेने कुसंगनो पाश जातो नथी ने भगवान ने भगवानना भक्तमां दया ने स्नेह थातो नथी, माटे भगवानना भक्तने तो मायिक उपाधिनो संग मटी जाय छे तोपण, भगवान तथा भगवानना भक्त तेने विषे अतिशे दया ने प्रीति वृद्धिने पामे छे पण कोइ रीते दया तथा प्रीति टळती नथी अखंड रहे छे एम वार्ता करीने श्रीजीमहाराज जय सच्चिदानंद कहीने पोताने उतारे पधार्या.(२) २ ॥ इति वचनामृतम् ॥३॥२३७॥

रहस्यार्थ प्र०——आमां प्रश्न [१] छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारा

भक्तने साधनदशाने विषे अमारी उपासनावाळा सत्पुरुषना संगे करीने अमारुं ज्ञान प्राप्त थयुं होय ने अमारुं ने अमारा भक्तनुं महात्म्य यथार्थ समझाणुं होय तेने मायिक उपाधिनो संग मटी जाय ने पोतानो जीवात्मा ब्रह्मरूप थाय तो पण अमारे विषे ने अमारा भक्तने विषे दया ने प्रीति निरंतर रहे छे. (१) अने जे अमारो भक्त न होय ने केवळ आत्मज्ञान ने वैराग्ये करीने मायिक उपाधि टाळीने सत्तामात्र वर्त्ततो होय तेने साधनदशामां अमारी उपासनाये रहित केवळ आत्मज्ञानी एवा कुसंगीनो पाश लाग्यो छे तेने अमारे विषे ने अमारा भक्तने विषे दया ने स्नेह नथी रहेतां. (२) बावतो छे.

१ प्र० बीजी बाबतमां अश्वत्थामा ब्रह्मरूप थयो एम कह्युं ते केवी रीते ब्रह्मरूप जाणवो ?

१ उ० एणे कोइक साधने करीने नाशवंत देहने चिरंजीवी कर्यो हतो ते देहनुं अचळपणुं कर्युं हतुं एटलो ब्रह्मरूप कह्यो छे पण देहथी नोखो जे आत्मा ते रूपे थयो न होतो ॥ २१७ ॥

संवत् १८८३ ना श्रावण शुदि ३ तृतीयाने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराजश्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे मेडीनी ओसरी उपर गादी तकीया बिछावीने उत्तरादे मुखारविंदे बिराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे (१) भगवानना भक्त होय, ने ते ज्ञान वैराग्ये युक्त होय ने विचारने बळे करीने पोताने बंधन करे एवी जे मायिक पदार्थमां प्रीति तेने टाळी नाखी होय, तोपण ए भक्तने ज्यांसुधी निर्विकल्प समाधि थाय नहि त्यांसुधी बाधितानुवृत्ति रही जाय छे,तेणे करीने विचारमां एम रहे छे जे रखे मारे मा,बाप,स्त्री, छोकरां द्रव्य, कुटुंब, देह गेह एमने विषे प्रीति रही गइ होय नहि ! एम बीतो रहे छे, जेम कोइक शूरवीर पुरुष होय तेणे पोताना सर्वे शत्रु मारी नाख्या होय तोपण ते मरेल शत्रु थकी पण क्यारेक बी जाय छे तथा स्वप्नमां ते शत्रुने देखे त्यारे बी जाय छे, तेम ते ज्ञानी भक्तने पण जे जे पदार्थ अंतरमांथी जुठुं करी नाख्युं छे ने तेमांथी प्रीति तोडी नाखी छे तोपण बाधितानुवृत्तिये करीने अंतरमां मायिक पदार्थना बंधन थकी बीक लागे छे अथवा धन कलत्रादिक पदार्थनी कोइक समे एनेस्मृति थइ आवे छे त्यारे मनमां बी जवाय छे जे रखे मुने बंधन करे. एवी रीते जे पदार्थ अंतरमांथी असत्य करी नाख्यां ते पदार्थनी पाछी स्मृति थइ आवे तेने बाधितानुवृत्ति कहीए ते बाधितानुवृत्ति ज्यारे निर्विकल्प समाधि थाय त्यारे नाश थाय छे, ने ए पुरुषने खावा पीवानी तथा दिवस रात्रिनी तथा सुखदुःखनी कशी खबर रहेती नथी अने ज्यारे ए निर्विकल्प समाधिमांथी बारणे निसरे ने सविकल्प समाधिमां वर्ते त्यारे तो बाधितानु-

वृत्ति रहे खरी माटे ते हरिभक्तने ताव आवे अथवा देह पडवानो समो थाय त्यारे बाधितानुवृत्तिने योगे करीने भगवान विना बीजा पदार्थनी पण क्यारेक स्मृति थइ आवे अने ते समामां जे बोलाय ते पण बरल्या जेवुं बोलाय अने ओय बाप ! ओयमा! एवां वचन पण बोलाय त्यारे जे आ बाधितानुवृत्तिना मर्मने न समझतो होय तेना हैयामां ते हरिभक्तनो अवगुण आवी जाय, जे आ भगवाननो भक्त कहेवातो हतो ने अंतकाळे आम केम बरले छे ? एवो जे अवगुण लेवाय छे ते बाधितानुवृत्तिनो मर्म जाण्या विना लेवाय छे, अने आ संसारमां केटलाक पापी मनुष्य होय ने ते अंतसमे बोलतां चालतां खबरदार थका देहने मेले छे, अथवा कोइक सिपाइ ने रजपुत होय ने तेने शरीरमां घा वागे एटले खबरदार थका ने बोलता चालता मरी जाय छे, माटे भगवानथी विमुख होय ने ते खबरदार थको देहने मुके तो पण शुं तेनुं कल्याण थाय छे ? तेनो तो नरकमांज निवास थाय छे. अने भगवाननो भक्त होय ते भगवाननुं नाम स्मरण करता थको देह मुके अथवा बाधितानुवृत्तिने योगे करीने बेशुद्ध थइने देह मुके तोपण ए भगवाननो भक्त भगवानना चरणारविंदनेज पामे छे.(१)अने तेज १
दिवसे संध्या समे श्रीजीमहाराज पोताना उतारामां मेडीनी ओसरीए विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

२ पछी श्रीजीमहाराजे मोटेरा परमहंस प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे (२) आ देहने विषे जीव रह्यो छे, ते एक ठेकाणे केवी रीते रह्यो छे ? ने सर्वे देहमां केवी रीने व्यापी रह्यो छे ते कहो ? पछी जेने जेवुं भास्युं तेवुं तेणे कह्युं पण श्रीजीमहाराजना प्रश्ननुं कोइथी समाधान थयुं नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेम देहने विषे अन्नादिकना विकाररूप वीर्य छे तेम पंच महाभूतनो विकाररूप एवुं एक हृदयने विषे मांसनुं चक्र छे तेने विषे जीव रह्यो छे ते जेम चिंथरानो काकडो होय तेने तेले पलाळीने अग्निए सळगाव्यो होय तेम जीव छे, ते मांसना चक्र संघाथे वळगीने रह्यो छे, अने वळी जेम लोढानो खीलो होय तेने विषे अग्नि व्यापी रह्यो होय तेम मांसना चक्रने विषे जीव जे ते विशेष सत्ताए करीने व्यापी रह्यो छे, अने सामान्य सत्ताये करीने बधा देहने विषे व्यापी रह्यो छे, माटे जे जे ठेकाणे देहमां दुःख थाय छे ते सर्वे दुःख जीवनेज छे पण देहना सुखदुःख थकी ए जीव जुदो न कहेवाय. अने कोइक एम कहेशे जे जीवतो प्रकाशमान छे अने मांसनुं चक्र ने देह तो प्रकाशे रहित छे ते बेने एक बीजामां मळ्या केम कहेवाय ? तो एनो उत्तर एम छे जे जेम तेल कोडियुं ने वाट तेना संबंध विना एकली अग्निनी ज्योति आकाशने विषे अधर पधर रहेतो नथी, तेम पंचभुतना विकार

रूप एवुं जे मांसनुं चक्र तेना संबंध विना एकलो जीव रहेतो नथी. अने जेम कोडिया थकी, तेल थकी ने वाट थकी अग्नि जुदो छे ते कोडियाने भागवे करीने अग्निनो नाश थातो नथी, तेम मांसना चक्रने विषे ने देहने विषे जीव व्यापीने रह्यो छे तो पण देहने मरवे करीने जीव मरतो नथी अने देह मेळे सुखदुःखने तो पामे खरो, पण देहना जेवो ए जीवनो नाशवंत स्वभाव नथी. एवी रीते जीव अविनाशी छे ने प्रकाशरूप छे ने देहने विषे व्यापक छे, अने जेम मंदिरने विषे एक स्थळमां दिवो मुक्यो होय ते दिवाना अग्निनी ज्योति विशेषे करीने तो वाटने विषे व्यापी रही छे, अने सामान्यपणे करीने तो बधा घरने विषे व्यापी रही छे, तेम जीवात्मा छे ते पण विशेषे करीने तो पंच महाभूतना विकार रूप जे मांसनुं चक्र तेने विषे व्यापीने रह्यो छे, अने सामान्यपणे करीने तो बधा देहमां व्यापीने रह्यो छे, एवी रीते आ देहने विषे जीव रहे छे अने ए जीवने विषे परमेश्वर पण साक्षीरूपे करीने रहे छे. (२) इतिवचनामृतम् ॥ ४ ॥२३८॥ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे, तेमां पहेलुं कृपावाक्य छे, तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अंतरमांथी असत्य करेलां पदार्थनी स्मृति थइ आवे ते बाधितानुवृत्ति छे. ते ज्यारे निर्विकल्प समाधि थाय त्यारे नाश पामे छे ने कशी खबर रहेनी नथी, ने ज्यारे बहार निसरे ने सविकल्प समाधिमां वर्त्ते त्यारे बाधितानुवृत्ति रहे त्यारे बीजा पदार्थनी स्मृति थइ आवे ते जोइने बाधितानुवृत्तिनो मर्म न जाणतो होय, ते अवगुण ले छे. अने पापी मनुष्य बोलतां चालतां मरे तोपण नरके जाय अने अमारो भक्त बाधितानुवृत्तिने योगे बेशुद्ध थइने देह मुके तोपण अमनेज पामे. (१) अने बीजामां मांसना चक्रने विषे जीव विशेषसत्ताये करीने व्यापीने रह्यो छे ने सामान्यसत्ताए करीने बधा देहमां व्यापी रह्यो छे, ने देहने योगे सुखदुःखनो भोक्ता छे पण देहने मरवे करीने जीव मरतो नथी अविनाशी ने प्रकाशमय छे अने ए जीवने विषे अमे साक्षीरूपे रह्या छीए एम कह्युं छे. (२) बावतो छे.

१ प्र० बीजा प्रश्नमां जीवने विषे अमे साक्षीरूपे रह्या छीए एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते साक्षी तो साकारनेज कहेवाय अने (४५ ना बीजा प्रश्नोत्तरमां) सर्वेने विषे तेज द्वारे रह्या छे एम कह्युं छे ते केवी रीते समजवुं ?

१ उ० श्रीजीमहाराज साकार व्यापे तोज साक्षी कहेवाय ने तेज द्वारे व्यापे तो साक्षी न कहेवाय एम नथी. मूर्तिमान व्यापे तोपण साक्षी कहेवाय अने तेज द्वारे व्यापे तो पण साक्षी कहेवाय छे. जेम जीव देहमां व्यापे छे तो ते निराकार छे तोपण तेने (जे० १ ना ३ बीजा प्रश्नमां) साक्षी कह्यो छे. अने ब्रह्मने पण (म० २० मां) साक्षी कहेल छे, माटे जे व्यापे ते देखे ते सर्वने साक्षी कहेवाय छे. माटे श्रीजीमहाराज पोताना तेज द्वारे जीव, ईश्वर, ब्रह्म अने अक्षर ते सर्वने विषे रह्या छे, अने परम एकांतिक मुक्तने विषे मूर्तिमान रह्या छे एवी रीते श्रीजीमहाराज सर्वना साक्षी

छे ने सदा मूर्तिमान छे ने पोताना अक्षरधाम रूपी तखतमां सदा विराजमान छे ॥२१८॥

संवत् १८८३ ना भादरवा शुदि ११ एकादशीने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए गादी तकिया उपर विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ने कंठने विषे मोगराना पुष्पना हार पहेर्या हता ने पाघने विषे मोगराना पुष्पना तोरा विराजमान हता ने हाथने विषे मोगराना पुष्पना गजरा विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

ते समयमां श्रीजीमहाराजे कह्युं जे कांइक प्रश्न पुछो पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं
१ जे (१) हे महाराज! भगवाननी जे भक्ति छे तेमां कोइ रीतनुं विघ्न न थाय एवी ते
केइ भक्ति छे? अने जे भक्तिमां कांइक विघ्न थाय छे ते केइ जातनी भक्ति छे? पछी
श्रीजीमहाराज बोल्या जे तृतीय स्कंधमां कपिल गीताने विषे माता देवहूतिये कपिलदे-
वजी प्रत्ये कह्युं छे जे ॥यन्नापधेयश्रवणानुकीर्तनात्॥ ए बे श्लोके करीने जेवुं भगवाननुं
महात्म्य कह्युं छे, तथा कपिलजीए माता देवहूति प्रत्ये पोतानुं माहात्म्य कह्युं छे जे
॥ मद्भयाद्वाति वातोयंसूर्यस्तपतिमद्भयात् ॥ एवी रीते महात्म्ये सहित भगवाननी भक्ति
होय तेमां तो कोइ जातनुं विघ्न आवे नहि. अने महात्म्य जाण्या विना प्राकृत बुद्धिये
करीने जो भक्ति करे तो तेमां विघ्न आवे छे. (१) १
२ पछी वळी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे(२)ए महात्म्ये युक्त भक्ति आव्यानुं शुं साधन
छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे शुक सनकादिक जेवा मोटा पुरुष तेनी जे सेवा ने
प्रसंग तेमांथी महात्म्ये सह वर्तमान एवी जे भक्ति ते जीवना हृदयमां उदय थाय छे.(२) २
३ पछी शुकमुनिए पुछ्युं जे [३] एक तो भगवाननो भक्त एवो होय जे तेने भ-
गवाननो निश्चय पण परिपक्व होय ने काम, क्रोध, लोभ, मोहादिक जे विकार ते एके
तेना हृदयमां आवे नहि, अने बीजो भक्त होय तेने तो भगवाननो निश्चय परिपक्व
होय पण काम क्रोध लोभ मोहादिक विकारे करीने अंतरमां विक्षेप थातो होय ए बे
प्रकारना भक्त ज्यारे देहने मुके त्यारे ए बेय भक्तने भगवानना धाममां सरखा सुखनी
प्राप्ति थाय छे? के अधिक न्यून सुखनी प्राप्ति थाय छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या
जे जे भगवानना भक्तने भगवाननो निश्चय पण परिपूर्ण होय ने काम, क्रोध, लोभा-
दिके करीने विक्षेपने न पामतो होय ने अतिशे त्यागी ने अति वैराग्यवान ने अति
आत्मनिष्ठावाळो होय ने जो ते प्रत्यक्ष श्रीकृष्णभगवाननी मूर्ति विना कांइक बीजुं इच्छे
तो तेने न्यून सुखनी प्राप्ति थाय छे. [३] अने बीजो जे भक्त छे तेने पण भगवाननो ३
निश्चय तो परिपूर्ण छे तो पण हृदयमां काम, क्रोध लोभ, मोहादिकनो विक्षेप आवे

त्यारे पोताना हृदयमां दाझ थाय ने भगवान जे प्रत्यक्ष श्रीकृष्ण तेनी मूर्ति विना बीजा कोइ पदार्थने इच्छे नहि, तेने आत्मनिष्ठा ने वैराग्य जो थोडां होय तोपण ए देहने मुकीने भगवानना धाममां बहु मोटा सुखने पामे छे, शा माटे जे प्रथम कह्यो जे भक्त ते उपरथी तो त्यागी ने निष्कामी जणाय छे पण भगवाननी मूर्ति विना बीजी आत्मदर्शनादिक प्राप्तिनी हृदयमां इच्छा छे, माटे ए सकाम भक्त कहेवाय ने एने परलोकने विषे जरुर न्यून सुखनी प्राप्ति थाय छे. अने जे बीजो भक्त कह्यो ते उपरथी तो सकाम जेवो जणाय पण ए भक्त भगवाननी मूर्ति विना अंतरमां बीजुं कांइ इच्छतो नथी, अने भगवाननी मूर्ति विना बीजा सुखनी इच्छानो जो घाट थइ जाय त्यारे अतिशे मनमां दाझे छे, माटे ए निष्काम भक्त कहेवाय, ते ज्यारे देहने मुके त्यारे बहु मोटा सुखने पामे छे ने भगवाननो पार्षद थाय छे अने श्रीकृष्णभगवाननी मूर्तिने विषे अतिशे प्रीतिये युक्त थाय छे. (४) ॥ इति वचनामृतम् ॥ ५ ॥ २३९ ॥ ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (३) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारी महात्म्ये सहित भक्ति होय तेमां कोइ विघ्न आवे नहि ने प्राकृत बुद्धिये करीने भक्ति करे तेमां विघ्न आवे छे. (१) बीजामां अमारा मोटा संतनी सेवा ने प्रसंगथी एवी भक्ति आवे छे. [२] त्रीजामां अमारो निश्चय परिपूर्ण होय ने कामादिके करीने विक्षेपने न पामतो होय ने अतिशे त्यागीने वैराग्यवान ने आत्मनिष्ठ होय पण जो प्रत्यक्ष श्रीकृष्ण भगवान जे अमे ते अमारा विना बीजुं कांइ आत्मदर्शनादिक इच्छे तो तेने न्यून सुखनी प्राप्ति थाय छे. (३) अने कामादिकनो विक्षेप आवे पण तेनी दाझ थाय ने प्रत्यक्ष श्रीकृष्ण जे अमे ते अमारा विना बीजुं कांइ न इच्छे तो देह मुकीने अमारा धाममां बहु मोटा सुखने पामे छे. (४) बाबतो छे.

१ प्र० आमां बीजा प्रश्नमां शुकसनकादिक जेवा मोटा पुरुषनी सेवा ने प्रसंगथी अमारी महात्म्ये युक्त भक्ति आवे छे एम कह्युं ते शुक सनकादिकनी सेवा ने प्रसंगथी श्रीजीमहाराजनी महात्म्ये सहित भक्ति शी रीते आवे केम जे एतो परोक्षना भक्त छे माटे केम समजवुं ?

१ उ० जेम शुक सनकादिक परोक्ष अवतारोना भक्तोमां मोटा भक्त हता तेमनी सेवा ने प्रसंगथी परोक्ष अवतारोनी महात्म्ये सहित भक्ति आवे तेमज आज गोपाळानंदस्वामी आदिक श्रीजीमहाराजना मोटा मुक्त होय तेमनी सेवा ने प्रसंगथी श्रीजीमहाराजनी महात्म्ये सहित भक्ति आवे छे. ते (प्र० २९ ना पहेला प्रश्नमां) तम जेवा संतना संगथी अमारी भक्तिनुं बळ अतिशे वृद्धिने पामे एम श्री गोपाळानंदस्वामीने कह्युं छे माटे आज श्रीजीमहाराजना मोटा संतना समागमथी एवी निर्विघ्न भक्ति आवे छे.

२ प्र० (३/२ त्रीजा प्रश्नमां) काम, क्रोध, लोभ, मोहादिकनो विक्षेप आवे छे तोपण देह मुकीने अक्षर धामने विषे बहु मोटा सुखने पामे छे एम कह्युं अने [अ० ३ ना पहेला

प्रश्नमां] अंतरमां विषयनुं चिंतवन थाय तेने माथे जन्म मरण कह्युं छे ते केम समजवुं?
२ उ० [अ० १ मां] विषयनुं चिंतवन थाय तेनी दाझ न थती होय तेने जन्म मरण कह्युं छे अने आमां लडाइ ले ने हृदयमां दाझ थाय तेने अक्षरधामनी प्राप्ति थाय एम कह्युं छे. ते (प्र० ७० ना त्रीजा प्रश्नमां) तेनी अमे सहाय करीए छीए एम कह्युं छे. ॥ २३९ ॥

संवत् १८८३ ना भादरवा वदि ५ पंचमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उताराने विषे विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज सर्वे हरिभक्त उपर कृपादृष्टि करीने बोलता हवा जे (१) भगवाननो भक्त होय ने भगवाननी कथा कीर्त्तन श्रवणादिक जे नवधा भक्ति तेने जो हरिभक्त उपर ईर्ष्याये करीने करे तो ते भक्तिये करीने भगवान अतिशे राजी थाता नथी अने ईर्ष्यानो त्याग करीने केवळ पोताना कल्याणने अर्थे भक्ति करे पण लोकने देखाडवा सारु न करे, तो ते भक्तिये करीने भगवान प्रसन्न थाय छे माटे जेने भगवानने राजी करवा होय तेने तो लोक रीझववाने अर्थे तथा कोइकनी ईर्ष्याये करीने भक्ति न करवी केवळ पोताना कल्याणने अर्थेज करवी. (१) अने भगवाननी भक्ति १
करतां थकां कांइक पोताने अपराध थइ जाय तेनो दोष बीजाने माथे धरवो नहि. अने जीव मात्रनो तो एवो स्वभाव छे जे ज्यारे कांइक पोतामां वांक आवे त्यारे एम बोले जे मुने बीजे कोइए भुलाव्यो त्यारे मारामां भुल पडी पण मारामां कांइ वांक नथी, पण एम कहेनारो महा मूर्खो छे केम जे बीजो तो कोइक कहेशे जे तुं कुवामां पडय त्यारे एने कहेवे करीने शुं कुवामां पडवुं माटे वांक तो अवळुं करे तेनोज छे, ने बीजाने माथे दोष दे छे. तेमज इंद्रियोने अंतःकरणनो वांक काढवो ए पण जीवनी मूर्खाइज छे, ने जीव ने मनतो परस्पर अति मित्र छे जेम दुधने ने पाणीने मित्रता छे तेम जीवने ने मनने मित्रता छे, ते ज्यारे दुधने ने पाणीने भेळां करीने अग्नि उपर मुके त्यारे पाणी होय ते दुधने तळे बेसे ने पोते बळे पण दुधने बळवा नदे,त्यारे दुध पण पाणीने उगारवाने सारु पोते उभराइने अग्निने ओलावी नाखे छे, एवी रीते बेयने परस्पर मित्राचार छे तेमज जीवने ने मनने परस्पर मित्राचार छे, ते जे वात जीवने न गमती होय ते वातनो मनमां घाट थायज नहि. ज्यारे कांइक जीवने गमतुं होय त्यारेज मन जीवने समझावे. अने जीव ज्यारे भगवाननुं ध्यान करतो होय त्यारे मन कहेशे जे भक्त कोइक बाइ होय तेनुं पण भेळुं ध्यान करवुं, पछी तेना सर्व अंगनुं चिंतवन करावीने पछी जेम बीजी स्त्रीने विषे खोटो घाट घडे तेम तेने विषे पण खोटो घाट घडे

त्यारे जो ए भक्तनो जीव अतिशे निर्मळ होय तोतो मननुं कह्यु न माने ने अतिशे दास थाय तो मन एनो फरीने क्यारेय घाट घडे नहि. अने जो एनो जीव मलीन होय ने पापे युक्त होय तो मनतुं कह्युं माने त्यारे वळी मन एने भुंडा घाट कराबी करावीने कल्याणना मार्गमांथी पाडी नाखे. ते सारु कल्याणना मार्गथी अवळी रीते अधर्मनी वार्ता पोतानुं मन कहे अथवा बीजो कोइ माणस कहे तो तेने संघाथे जे शुद्ध मुमुक्षु होय तेने अतिशे वैर थइ जाय छे, पछी पोतानुं मन अथवा बीजो माणस ते फरीने तेने ते वार्ता कहेवा आवे नहि, अने मन छे तेतो जीवनुं मित्रज छे ते जीवने न गमे एवो घाट घडेज नहि, अने ज्यारे कांइ मनने अयोग्य घाट थइ जाय त्यारे जो जीवने मन उपर अतिशे रीस चडती होय तो फरीने मनमां एवो घाट थायज नहि, अने ज्यारे मनने सदाय अयोग्य घाट थया करता होय त्यारे एने पोताना जीवनोज वांक समझवो पण एकला मननो वांक समझवो नहि. एवी रीते समझीने भगवाननी भक्ति करे तो तेने कोइ विमुख जीवनो तथा पोताना मननो जे कुसंग ते लेश मात्र अडी शके नहि अने निर्विघ्न थका भगवानतुं भजन करे. (२) इति वचनामृतम्॥६॥ (२४०) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे ईर्ष्याये रहित केवळ पोताना कल्याणने अर्थे अमारी भक्ति करे तो अमे राजी थइए. (१) अने अमारी भक्ति करतां कांइक अपराध थइ जाय तो ते दोष पोताने माथे लेवो पण इंद्रियो अंतःकरणनो वांक काढवो ते जीवनी मूर्खाइ छे. अने जीवने न गमतुं होय तेनो घाट मन करे तो ते जीव निर्मळ होय तो मनतु कह्युं न माने, ने मलीन ने पापे युक्त होय तो माने तो ते मन ए जीवने कल्याणना मार्गमांथी पाडी नाखे, माटे जीवनो वांक समझवो पण एकला मननो वांक समझवो नहि. एम समझे तेने कुसंग अडी शके नहि ने निर्विघ्न थको अमारुं भजन करे. (२) बाबतो छे. ॥ २४० ॥

संवत् १८८३ ना भादरवा वदि ६ छठने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उताराने विषे गादीतकिया उपर विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, अने कंठने विषे मोगराना पुष्पना हार पहेर्या हता, ने पाघने विषे मोगराना पुष्पना तोरा विराजमान हता, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज सर्वे हरिभक्त प्रत्ये बोल्या जे, (१) अमारा अंतरनो जे सिद्धांत छे ते कहीये छइए, जे जेने पोतानुं कल्याण इच्छवुं तेने तो भगवान ने भगवानना साधु एथी उपरांत बीजुं कांइ जगतमां सुखदायी नथी, माटे जेम पोताना शरीरने विषे जीवने आत्मबुद्धि वर्ते छे,तेवी भगवान ने भगवानना संतने विषे आत्मबुद्धि राखी जोइए अने भगवानना भक्तनो पक्ष दृढ करीने राख्यो जोइए, अने ते पक्ष रा-

रखतां थकां आबरु वधो अथवा घटो अथवा मान थाओ के अपमान थाओ अथवा देह
जीवो के मरो पण कोइ रीते भगवानने भगवानना भक्तनो पक्ष मुकवो नहिं, ने एमनो
अभाव आववा देवो नहि,अने भगवानना भक्त जेवां देहने देहना सगांसंबंधिने वहालां
राखवां नहिं, एवी रीते जे हरिभक्त वर्ते तेने अति बळवान एवा जे काम क्रोधादिक
शत्रु ते पण पराभव करी शकता नथी.(१)अने जे भगवाननुं ब्रह्मपुर धाम छे तेने विषे १
भगवान सदाय साकार मूर्ति विराजमान छे,अने भगवानना भक्त पण ए भगवानना
धाममां मूर्तिमान थका भगवाननी सेवाने विषे रहे छे,ते भगवाननो जेने प्रत्यक्ष प्रमाण
दृढ आश्ररो होय तेने मनमां एवी बीक न राखवी जे हुं रखे मरीने भूत प्रेत थाउं केरखे
इंद्रलोकनेज पामुं,के रखे ब्रह्मलोकनेज पामुं,एवी आशंका मनमां राखवी नहिं,केमजे एवो
भगवानना भक्त होय ते तो भगवानना धामनेज पामे पण वचमां क्यांइ तेने भगवान
रहेवा दे नहिं. (२) अने ए भक्तजनने पण पोतानुं जे मन छे तेने परमेश्वरना चरणा- २
रविंदने विषे दृढ करीने राखवुं, जेम वज्रनी पृथ्वी होय तेमां वज्रनी खीली चोडी होय
ते कोइ रीते उखडे नहिं, तेम भगवानना चरणारविंदने विषे पोताना मनने दृढ राखवुं
अने एवी रीते जे भगवानना चरणारविंदने विषे पोताना मनने राखे तेने मरीने भ-
गवानना धाममां जावुं एम नथी, ए तो छती देहेज भगवानना धामने पामी रह्यो छे
एम वार्त्ता करीने जय सच्चिदानंद कहीने सर्व सभाने उठवानी आज्ञा करी.(३) इति- ३
वचनामृतम् ॥ ७ ॥ (२४१)

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे, तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के जेने कल्याण इच्छवुं होय तेणे अमने ने अमारा संतनेज सुखदायी जाणीने अमारा संतने विषे आत्मबुद्धि राखवी ने अमारा भक्तनो पक्ष राखवो,ने तेमनो अभाव आववा देवो नहिं, ने तेमना जेवुं बीजुं कोइ वहालुं राखवुं नहि, तो अति बळवान जे कामादिक शत्रु ते पराभव करी शके नहि. (१) अने ब्रह्मपुर जे अमारुं अक्षरधाम तेने विषे अमे सदा साकार मूर्तिमान विराजमान छीए, ने अमारा भक्त पण धाममां मूर्तिमान छे ने अमारी सेवा करे छे एवा प्रत्यक्ष प्रमाण अमने जाणीने जेणे अमारो आश्ररो कर्यो होय ते अमारा धामने पामे. (२) अने जे भक्त पोताना मनने अमारा चरणारविंदने विषे एटले मूर्तिने विषे दृढ करीने राखे ते छते देहेज अमारा धामने पामी रह्यो छे. (३) बावतो छे.

१ प्र० पहेली बाबतमां पोताना शरीरने विषे आत्मबुद्धि वर्ते छे तेवी अमारे विषे ने संतने विषे राखे एम कह्युं ते केवी रीते राखवी ?

१ उ० जेम देहने दुःखे दुःखी ने सुखे सुखी थवाय छे एवो भाव श्रीजीमहाराज तथा मुक्तने विषे राखे ते बहारवृत्तिथी आत्मबुद्धि छे, अने जेम समग्र देहमां रहीने जीव सुख दुःखने भोगवे छे तेम श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां नखशिखा पर्यंत रहीने श्रीजीमहाराजनुं

सुख भोगववुं ते अंतवृत्तिए श्रीजीमहाराजने विषे आत्मबुद्धि जाणवी. अने श्रीजीमहाराजनो साक्षात्कार होय एवा सत्पुरुषने विषे आपोपुं मानवुं जे ते संत ते हुं छुं ते संत ने विषे आत्मबुद्धि जाणवी.

१ प्र० अमारो ने अमारा भक्तनो पक्ष राखवो एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते भक्तने तो कोइक दुःख देतो होय तो न देवा दइए एम पक्ष राखीए, अने श्रीजीमहाराज पण ज्यारे मनुष्यरूपे विचरता होय, त्यारे पक्ष राखीए पण आज श्रीजीमहाराजनो पक्ष केवी रीते राखवो ?

२ उ० श्रीजीमहाराजनुं कोइ घसातुं बोले ते सांभळी रहेवुं नहि, तेने तीखां बाण जेवां वचन मारवां ने पोताथी बळीयो होय ने सामुं बोली शकाय एम न होय तो त्यांथी चाली निसरवुं, अने श्रीजीमहाराजे मंदिरो करावीने पोतानी मूर्तियो पधरावी छे, ते मंदिरोने कोइ नुकशान करतुं होय के मंदिरोनी आजीविकाओने अर्थे द्रव्यादिक होय तेनी कोइ हानि करतुं होय तेनी तन, मन, धनथी रक्षा करवी ते श्रीजीमहाराजनो पक्ष राख्यो कहेवाय. ॥ २४१ ॥

संवत् १८८३ ना भादरवा वदि ९ नवमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणेबार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर गादी तकीया नखावीने विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठने विषे मोगराना पुष्पना हार विराजमान हता, ने पाघने विषे मोगराना पुष्पना तोरा विराजमान हता, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ **पछी श्रीजीमहाराजे मुनिमंडळने प्रश्न पुछ्यो, जे (१) भगवाननो भक्त होय तेने एवो कियो उपाय छे जे जेणे करीने सदा सुखी रहेवाय ? पछी मोटा मोटा साधु हता तेणे जेवुं जेने समझाणुं तेणे तेवो उत्तर कर्यो, पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे एनो उत्तर तो एम छे जे जे भगवानना भक्तने एक तो दृढ वैराग्य होय, अने बीजो अतिशे स्वधर्म होय, अने जेणे ए बे साधने करीने सर्वे इंद्रियोने जितीने पोताने वश कर्या होय अने जेने भगवान ने भगवानना भक्तने विषे अतिशे प्रीति होय,अने जेने भगवान ने भगवानना भक्तने विषे अतिशे मित्रभाव वर्ततो होय, अने जे कोइ दिवस भगवान के भगवानना भक्त थकी उदास थाय नहिं, अने जे भगवान ने भगवानना भक्तने संगेज राजी रहे पण कोइ विमुख जीवनी सोबत गमे नहिं, एवां जे हरिभक्तनां लक्षण होय ते आ लोकने विषे तथा परलोकने विषे सदाय सुखीयो रहे छे,अने वैराग्य ने स्वधर्म तेणे करीने जेणे पोतानां इंद्रियोने वश न कर्यां होय तो ते भगवान तथा भगवानना भक्त ने संगे रह्यो थको पण दुःखीयो रहे छे, आ माटे जे जेणे पोतानां इंद्रियो न जित्यां होय**

तेने कोइ ठेकाणे सुख थाय नहि,अने भगवाननी भक्ति करतो हाय तोपण ज्यारे इंद्रियो विषयमां तणाइ जाय त्यारे ते हरिभक्तना हृदयमां अति दुःख थाय छे,माटे सर्वे पोतानां इंद्रियोने जितीने वश करे तेज सदा सुखीयो रहे छे अने जेणे सर्वे इंद्रियोने जितीने वश कर्या होय तेनेज वैराग्यवान ने धर्मवाळो जाणवो,पण जेनां इंद्रियो वश न थयां होय तेने वैराग्यवान ने धर्मवाळो न जाणवो, अने जे वैराग्यवान ने धर्मवाळो होय तेने तो सर्वे इंद्रियो नियममां होय अने ते सदाय सुखीयो होय. (१) १

२ पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं जे,(२)हे महाराज भगवाननो भक्त होय तेने भगवाननी भक्तिमां कियुं अतिशे मोटुं विघ्न छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे भगवानना भक्तने एज मोटुं विघ्न छे जे जे पोतामां दोष होय तेने देखे नहि,अने भगवान ने भगवानना भक्त थकी जेनुं मन नोखुं पडी जाय,अने ते भगवानना भक्त थकी जेने बेपरवाइ थइ जवाय एज एने अतिशे मोटुं विघ्न छे.(२) इति वचनामृतम्॥८॥(२४२) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [२] छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे वैराग्य ने स्वधर्म ए बे साधने करीने सर्वे इंद्रियोने जितीने वश कर्यां होय ने अमारे ने अमारा भक्तने विषे प्रीति ने मित्रभाव होय, ने अमारा ने अमारा भक्तना संगेज राजी रहे, ने विमुखनी सोबत गमेज नहि, ते आ लोक परलोकने विषे सदाय सुखीयो रहे छे, ने इंद्रियो वश न कर्यां होय ते दुःखीयो रहे छे.(१) बीजामां जे पोताना दोषने देखे नहि, ने अमे ने अमारा भक्तथी मन नोखुं पडी जाय एटले अमारे विषे ने अमारा भक्तने विषे हेत न रहे,ने बेपरवाइ एटले अमारा भक्तने मोक्षना दाता जाणीने तेनी गरज न राखे, तेने अमारी भक्तिमां मोटुं विघ्न छे.(२) बाबतो छे.॥२४२॥

संवत् १८८३ ना आसो शुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, अने पुष्पना हार तथा गजरा विराजमान हता. अने पाघ उपर पुष्पना तोरा झुकी रह्या हता, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.पछी श्रीजीमहाराजे सर्वे हरिभक्तने कह्युं जे जे अमारा मोटा मोटा परमहंस छे तेनी जेवी स्थिति छे ते अमे तमने बाइ भाइ सर्वेने कहीए तेने सांभळीने पछी जेवी रीते तमे सर्वे वर्तता हो ने जेवी तमने स्थिति होय तेवी रीते तमे कही देखाडजो.

१ एम कहीने श्रीजीमहाराज बोल्याजे, (१) अमारा मुनि मंडळमां जे मोटा मोटा संत छे तेने एम वर्ते छे जे पोताना हृदयने विषे जे जाणपणुं छे ते भगवानना धामनो दरवाजो छे ते दरवाजा उपर सर्वे संत उभा छे, जेम राजाना चाकर छे ते राजाना पगने दरवाजे उभा रह्या थका कोइ चोरचकारने राजा पासे जावा देता नथी, अने ते

राजानो चाकरने एम हिंमत रहे छे जे कोइ राजा पासे विघ्न करवा जाय, तो तेना कटका करी नाखीए पण कोइ रीते राजा सुधी पुगवा देइए नहि, एवी हिंमते सहित ढाल त-रवार बांधीने उभा रहे छे, तेम आ सर्वे संत छे ते जाणपणारूप जे भगवानना धा-मनो दरवाजो त्यां उभा रहे छे ने ए जाणपणाने मांही जे अक्षर धाम तेमां भगवान छे तेनां दर्शन करे छे, अने ते भगवान मेलुं पोताना हृदयने विषे धन स्त्री आदिक जे मायिक पदार्थ तेने पेसवा देता नथी, अने कोइ जोरे करीने मायिक पदार्थ हृदयमां पेसवा आवे तो तेनो नाश करी नाखे छे पण कोइ रीते जे ठेकाणे भगवानने हृदयमां धार्या छे ते ठेकाणे पेसवा देता नथी, अने शूरवीरनी पेठे सावधान थका उभा रहे छे, अने हाण, वृद्धि, सुख, दुःख, मान, अपमान, आदिक अनंत जातनां विघ्न आवे तेणे करीने पोताना मुकामथी डगता नथी. त्यारे कोइक आशंका करे जे त्यांथी डगता नथी, त्यारे देहनी क्रिया जे खानपानादिक तेने केम करता हशे? तो ते दृष्टांते करीने कहीए छइए जे जेम पाणीयारी होय ते कुवा उपर जळ सिंचवा जाय छे त्यारे कुवाना कांठा उपर पग मुक्यो होय तेनी पण सुरत राखे छे जे रखे कुवामां पडी जाउं, अने बीजी वृत्तिए करीने कुवामांथी पाणी सिंचे छे, ने वळी बीजुं दृष्टांत जेम कोइक पुरुष घोडे चड्यो होय त्यारे घोडाना पेगडामां पग होय त्यां पण सुरत राखे, अने घोडानी लगाम पकडी होय त्यां पण सुरत राखे, अने दोडतां थकां वाटमां झाड आवे, खाडो आवे, पथरो आवे, त्यांपण सुरत राखे, एवी रीते आ सर्व साधु छे ते अंतर सन्मुख दृष्टि राखीने भगवाननी सेवामां पण रहे छे, ने देहनी क्रिया पण करे छे ने पोतानी स्थितिमांथी डगता नथी, एवी रीते श्रीजीमहाराजे मोटा मोटा जे संत तेनी स्थिति कही देखाडी, ने पछी एम बोल्या जे तमारे सर्वेने पण एवी रीते अंतर सन्मुख दृष्टि राखीने निरंतर भगवाननी सेवामां रहेवुं, अने भगवान विना बीजां पदार्थ वहालां थावा देवां नहि, ए वातनी अतिशे सावधानि राखवी अने जेम राजानो चाकर छे ते राजा पासे गाफल थइने उभो होय तो राजा पासे चोरचकार जइ पुगे त्यारे ए चा-करनी चाकरी खोटी थाय. तेम हरिभक्तने पण भगवान विना बीजा पदार्थमां प्रीति थइ जाय तो जे ठेकाणे पोताना हृदयने विषे जाणपणामां भगवान रह्या छे ते ठेकाणे धन, स्त्री आदिक बीजां पदार्थ पण पेसी जाय, त्यारे एनी भक्ति खोटी थइ जाय माटे पोतानी भक्तिने निर्विघ्न राखीने जे परमेश्वरना चरणारविंदने पामवाने इच्छे तेने जाणपणा रूप जे भगवानना धामनो दरवाजो तेने विषे सावधान थइने रहेवुं, ने भ-गवान विना बीजां पदार्थ त्यां पेसवा देवां नहि, एवी रीते श्रीजीमहाराजे पोताना सर्व भक्तजनने शिक्षानां वचन कह्यां. (१) इति वचनामृतम् ॥९॥ (२४३) १

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति ए चार साधने संपन्न एवा अंतर्दृष्टिवाळा अमारा एकांतिक संत छे, ते हृदयने विषे जाणपणारूप अमारां धामनो दरवाजो त्यां रहे छे, ने ए जाणपणानी मांही जे अक्षरधाम तेमां अमारां दर्शन करे छे ने अमारा भेळुं पोताना हृदयने विषे बीजुं मायिक पदार्थ पेसवा देता नथी, एवी रीते अंतर्वृत्तिए अमारी सेवा करे छे, जे देहनी क्रिया पण करे छे; ने पोतानी स्थितिमांथी पण डगता नथी, एवी रीते सर्वेने वर्तवुं. (१) बाबत छे.

१ प्र० जाणपणारूप धामनो दरवाजो कह्यो ने तेनी मांही अक्षर धाम कह्युं ने मोटामोटा संत अक्षरधाममां भगवाननां दर्शन करे छे, ने दरवाजे पण उभा रहे छे एम कह्युं ते दरवाजो ने अक्षरधाम शुं समजवुं ? अने संत ए बे ठेकाणे केवी रीते रह्या हशे ?

१ उ० अंतर्दृष्टिवाळा संत पोताने धामरूप मानीने ते अक्षरधाममां श्रीजीमहाराजनां दर्शन करे छे, ने पोताना हृदय सामी दृष्टि राखीने हृदयने विषे धर्म ज्ञान वैराग्य भक्ति ए सहित आत्मा परमात्माना ज्ञान रूपी जाणपणुं छे, ते हृदयने विषे कामक्रोधादिक तथा स्त्री द्रव्यादिक कोइ पदार्थनो संकल्प थवा देता नथी. माटे जाणपणारूप जे ज्ञान ते रूप दरवाजो जाणवो अने ते दरवाजे संत उभा छे, एटले आत्मा, परमात्माना ज्ञान रूपी शुद्ध विचार छे ते विचारे करीने मायिक संकल्प हृदयमां थवा देता नथी, ने हृदयने मांही अक्षर धाम छे तेमां श्रीजीमहाराजनां दर्शन करे छे. ॥२४१॥

संवत् १८८३ ना आसो वदि १२ द्वादशीने दिवस श्रीजीमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता, ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

ते समे श्रीजीमहाराज पासे एक माध्वी संप्रदायनो विद्वान ब्राह्मण आव्यो तेने

१ श्रीजीमहाराजे पुछ्युं जे [१] तमारा संप्रदायना ग्रंथने विषे वृंदावनने ज भगवाननुं धाम कह्युं छे, अने वळी एम कह्युं छे जे महाप्रलयमां पण वृंदावननो नाश थातो नथी, अने शिवमार्गी होय ते एम कहे छे जे महाप्रलयमां काशीनो नाश नथी थातो ए वार्ता अमारा समज्यामां आवती नथी, आ माटे जे महाप्रलयमां तो पृथ्वी आदिक पंचभूतनो अतिशे प्रलय थइ जाय छे, त्यारे वृंदावन ने काशी ते केम रहेतां हशे? ने शाने आधारे रहेतां हशे? एवी जातनो अतिशे मोटो संशय थाय छे. एम वार्ता करीने श्रीजीमहाराजे भागवतनुं पुस्तक मगावीने एकादश स्कंधमांथी तथा द्वादशस्कंधमांथी चार प्रकारना प्रलयनो प्रसंग हतो ते वांची संभळाव्यो, पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे आ भागवतनो तथा गीतानो मत जोतां तो जेटलुं प्रकृति पुरुषथी थयुं छे, ते महाप्रलयमां कांइ रहेतुं नथी अने जो महाप्रलयमां वृंदावन अखंड रहेतुं होय तो तेना प्र-

माण नो व्यासजीना ग्रंथनो श्लोक तथा वेदनी श्रुति ते कही संभळावो, शा माटे जे व्यासजीथी बीजा कोइ मोटा आचार्य नथी, अने बीजा तो जेजे आचार्य थया छे तेमणे व्यासजीना करेला ग्रंथने आश्रीने पोत पोताना संप्रदाय चलाव्या छे, माटे आदि आचार्य जे व्यासजी तेनां जे वचन ते सर्वे आचार्यना वचन करतां अति प्रमाण छे, माटे व्यासजीनां वचन तथा वेदनी श्रुतिए करीने वृंदावन महा प्रळयमां नाश नथी थातुं एवुं जे प्रमाण ते कही संभळावो तो अमारो संशय निवृत्त थाय. अने जे जे आचार्य थया तेणे पद्म पुराणना वचने करीने पोतपोतानो मत स्थापन कर्यो छे, ते तो पद्मपुराणमां क्षेपक श्लोक नाखी नाखीने स्थापन कर्यो छे, ते पोताना मतना होय ते माने पण बीजा कोइ माने नहि,माटे श्रीमद्भागवत सरखा प्रसिद्ध पुराणनुं वचन कही संभळावो तो अमारे प्रतीति आवे, शा माटे जे व्यासजीए वेद, पुराण, इतिहास ए सर्वेनुं सार सार ग्रहण करीने श्रीमद्भागवत कर्युं छे, माटे जेवुं भागवत प्रमाण एवां बीजां पुराण अतिशे प्रमाण नहि, अने जेवी भगवद्गीता प्रमाण तेवुं समग्र भारत प्रमाण नहि माटे एवा बळवान शास्त्रनुं वचन कही संभळावो तो अमने हा पडे. एवी रीतनां जे श्रीजीमहाराजनां वचन तेने सांभळीने ते ब्राह्मण एम बोल्यो जे हे महाराज ! तमे जे प्रश्न कर्युं ते सत्य छे, ने तमारा प्रश्ननो उत्तर करवाने आ पृथ्वी उपर कोइ समर्थ नथी, अने मारा मनने तो तमारा स्वरूपनी दृढ प्रतीति आवी छे जे तमे तो सर्व आचार्यना आचार्य छो ने ईश्वरना ईश्वर छो माटे मुने तमारो सिद्धांत होय ते कृपा करीने कहो.

२ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे (२) वेद पुराण इतिहास ने स्मृतियो ए सर्वे शास्त्रमांथी अमे ए सिद्धांत कर्यो छे, जे जीव, माया,ईश्वर ने परमेश्वर ए सर्वे अनादि छे, अने माया छे ते तो पृथ्वीने ठेकाणे छे,ने पृथ्वीमां रह्यां जे बीज:तेने ठेकाणे जीव छे,अने ईश्वर तो मेघने ठेकाणे छे ते परमेश्वरना इच्छाए करीने पुरुषरूप जे ईश्वर तेनो माया संघाथे संबंध थाय छे, त्यारे जेम मेघना जळना संबंधे करीने पृथ्वीमां हतां जे बीज ते सर्वे उगी आवे छे,तेम मायामांथी अनादि काळना जीव हता ते उदय थइ आवे छे,पण नवा जीव नथी थाता माटे जेम ईश्वर अनादिछे तेम माया पण अनादि छे. ने ते मायाने विषे रह्या जे जीव ते पण अनादि छे, पण ए जीव परमेश्वरना अंश नथी एतो अनादि जीवज छे,ते जीव ज्यारे परमेश्वरने शरणे जाय,त्यारे भगवाननी मायाने तरे ने नारद सनकादिकनी पेठे ब्रह्मरूप थइने भगवानना धाममां जाय छे,ने भगवाननो पार्षद थाय छे, एवी रीते अमारो सिद्धांत छे.एवी रीतनां जे श्रीजीमहाराजनां वचन तेने सांभळीने ते ब्राह्मण पोताना वैष्णवपणाना माननो त्याग करीने श्रीजी-

महाराजनो समाश्रय करतो हवो, अने उद्धव संप्रदायनी दीक्षाने ग्रहण करतो हवो.(१) १
इति वचनामृतम् ।। १० ।। (२४४)

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे धांगध्रा निवासी शास्त्री भवानीशंकर माध्वी संप्रदायना हता तेने पोतानो सिद्धांत समजाव्यो छे, जे अमारी इच्छाए करीने पुरुष जे ईश्वर तेनो माया संघाथे संबंध थाय छे, त्यारे मायामां अनादिकाळना जीव रह्या छे. ते उदय थइ आवे छे पण नवा थता नथी, अने जेम ईश्वर अनादि छे तेम माया तथा जीव पण अनादि छे अने ते जीव अमारा अंश नथी अनादि जीवज छे, ते ज्यारे अमारे शरणे थाय त्यारे ब्रह्मरूप थइने अमारा धामने पामे ए अमारो सिद्धांत छे. (१) बाबत छे.

१ प्र० आमां मूळपुरुषने ईश्वर कह्या अने मायामांथी प्रधान पुरुषादिक उत्पन्न थाय छे, ते सर्वेने जीव कह्या. अने (म० ३१ ना ३ जा प्रश्नमां) वैराज पुरुषने ईश्वर कह्या छे ते केवी रीते समजवुं ?

१ उ० वैराज पुरुषने विषे मूळ पुरुषनो आविर्भाव छे तेथी तेने ईश्वर कहेवाय छे, पण वास्तव्य ईश्वर तो मूळपुरुषज छे माटे आमां वास्तव्य ईश्वरने ईश्वर कह्या छे. अने परमेश्वर श्रीजीमहाराजे पोताने कह्या छे. ।।२४४।।

संवत् १८८४ ना अषाड शुदि ३ तृतीयाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता, अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे अमे एक प्रश्न पुछीए छइए जे (१) इंद्रियो ने मन ए बेने जित्यानुं एक साधन छे के इंद्रियोने जित्यानुं जुदुं साधन छे ने मनने जित्यानुं जुदुं साधन छे ए प्रश्न छे ? पछी मोटा मोटा परमहंस हता तेमणे जेवुं जेने भास्युं तेवुं तेणे कह्युं पण श्रीजीमहाराजना प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि, पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे एनो उत्तरतो एम छे जे वैराग्य स्वधर्म तप ने नियम ए चार साधने करीने इंद्रियो जिताय छे, अने भगवाननी महात्म्ये सहित जे नवधा भक्ति तेणे करीने मन जिताय छे. (१) १

२ पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछ्युं, जे (२) जेवी निर्विकल्पसमाधिने विषे भगवानना भक्तने शांति रहे छे तेवी ए समाधि विना पण शांति रहे एवो शो उपाय छे ? पछी श्रीजीमहाराजे कह्युं जे जेवी पोताना देहने विषे आत्मबुद्धि ने दृढ प्रीति रहे छे तेवाज भगवान तथा भगवानना भक्तने विषे आत्मबुद्धि ने दृढ प्रीति रहे तो जेवी निर्विकल्प समाधिमां शांति रहे छे तेवी शांति ए समाधि विना पण सदाय रह्या करे एज एनो उत्तर छे. (२) २

३ पछी श्रीजीमहाराजे वळी परमहंस प्रत्ये पुछ्युं जे (३) गमे तेवा भुंडा देशकाळादिक प्राप्त थाय तोपण कोइ रीते कल्याणना मार्गमांथी पाछो पडेज नहिं, एवो जे हरिभक्त होय तेनी केइ जातनी समझण होय जे, जे समझणे करीने एवी रीतनी एने दृढता आवे छे जे तेने विषे कोइ रीतनुं विघ्न लागतुं नथी ? पछी मोटा मोटा संत हता तेमां जेवुं जेने भास्युं तेवो तेणे उत्तर कर्यो, पण श्रीजीमहाराजना प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे एनो उत्तर तो एम छे जे, जीवने जेवी देहने विषे आत्मबुद्धि छे तेवी भगवान तथा भगवानना भक्तने विषे आत्मबुद्धि होय तो तेने कोइ रीतनुं विघ्न लागे नहिं, ने गमे तेवा देशकाळादिक भुंडा आवे तेणे करीने ए भगवान ने भगवानना भक्त थकी विमुख थाय नहि. (३) ३

४ पछी वळी श्रीजीमहाराजे परमहंस प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे [४] जानकीजीने रामचंद्रजीए वनवास दीधो त्यारे जानकीजीए अतिशे विलाप करवा मांड्यो त्यारे लक्ष्मणजी पण अतिशे दिलगीर थया, पछी सीताजी लक्ष्मणजी प्रत्ये बोल्यां जे हुं मारा दुःख सारु नथी रोती हुं तो रामचंद्रजीना दुःख सारु रोउं छुं, श्या माटे जे रघुनाथजी अति कृपाळु छे ते लोकापवाद सारु मुने वनमां मुकी पण हवे एम विचारता हशे जे, सीताने में वगर वांके वनमां मुकी छे, एम जाणीने कृपाळु छे ते मनमां बहु दुःख पामता हशे. माटे रामचंद्रजीने कहेजो जे सीताने तो कांइ दुःख नथी, ने वाल्मीक ऋषिना आश्रममां जइने सुखे तमारुं भजन करशे, माटे तमे सीताने दुःखे करीने कांइ दुःख पामशो मां एम सीताजीए लक्ष्मणजी संघाथे कही मोकल्युं, पण कोइ रीते रामचंद्रजीना अवगुण लीधो नहिं. एवी रीते जे भगवान ने भगवानना भक्तनो कोइ रीते अवगुण ले नहि, अने वैराग्य ने धर्म ते तो सामान्यपणे होय, एक हरिभक्त तो एवो छे; अने बीजो हरिभक्त छे तेने तो वैराग्य ने धर्म तो अति आकरा छे, पण सीताजीना जेवी समझण नथी ए बे प्रकारना हरिभक्त छे तेमां क्यिा संघाथे अतिशे प्रीति राखीने सोबत करवी ? पछी चैतन्यानंदस्वामीए कह्युं जे धर्म ने वैराग्य जो सामान्यपणे होय तोपण जेनी जानकीजीना जेवी समझण होय तेनोज अतिशे प्रीतिए करीने समागम करवो पण अतिशे वैराग्य ने धर्मवाळो होय, ने भगवान ने भगवानना भक्तनो अवगुण लेतो होय तो तेनो संग करवो नहिं. पछी श्रीजीमहाराजे कह्युं जे यथार्थ उत्तर थयो. (४) इति वचनामृतम् ॥ ११ ॥ (२४५) ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (४) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के वैराग्य, स्वधर्म, तप ने नियमे करीने इंद्रियो जिताय छे ने माहात्म्ये सहित भक्तिए: अंतःकरण जिताय छे. (१) बीजामां अमारे विषे ने अमारा संतने विषे आत्मबुद्धि ने

दृढप्रीति थाय तेने निर्विकल्प समाधिना जेवी शांति रहे छे. (२) त्रीजामां एवी आत्मबुद्धि होय तेने देशकाळादिकनुं विघ्न न लागे, ने अमाराथी ने अमारा संतथी विमुख न थाय. [३] चोथामां धर्म ने वैराग्य सामान्य होय पण अमारो ने अमारा भक्तनो अवगुण न ले तेनो संग करवो, अने अवगुण लेतो होय ने धर्म ने वैराग्य आकरा होय तोपण तेनो संग करवो नहि. (४) बावतो छे.

१ प्र० बीजा प्रश्नमां जेवी देहने विषे आत्मबुद्धि ने दृढप्रीति छे तेवीज अमारे विषे ने अमारा भक्तने विषे रहे तो निर्विकल्प समाधिना जेवी शांति सदाय रहे एम कह्युं ते आत्मबुद्धि ने प्रीति केवी रीते जाणवी ?

१ उ० जेम अज्ञानी जीवने देहने विषे एकत्वपणानी भावना थइ गइ छे ते कोइ प्रकारे टाळी टळे नहि, एवी दृढ प्रीति छे तेम श्रीजीमहाराजने विषे ने मुक्ते विषे एकता थइ जाय जे श्रीजीमहाराज ने संत ते भुलायज नहि, एवी आत्मबुद्धि ने दृढ प्रीति होय ने भगवान ने भगवानना भक्तने सुखे सुखीयो थाय, ने भगवान ने भगवानना भक्तने दुखे दुःखीयो थाय एवां लक्षण जेने साधनकाळमां होय तेने श्रीजीमहाराजने विषे, ने संतने विषे आत्मबुद्धि कहेवाय. अने ज्यारे सिद्धदशाने पामे त्यारे जेवी रीते देहमां रहिने सुख दुःख भोगवे छे तेवी रीते श्रीजीमराराजनी मूर्तिमां सुखभोक्तापणे रहे ते दृढ आत्मबुद्धि कहेवाय.

२ प्र० श्रीजीमहाराज ज्यारे मनुष्यरूपे विचरता होय त्यारे तो तेमने दुःखे दुःखी ने सुखे सुखी थवाय पण आज श्रीजीमहाराजने दुःखे दुःखी ने सुखे सुखी शी रीते थवाय ?

२ उ० पोताना आत्माने विषे श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने अखंड देखता होय, ने श्रीजीमहाराजनी पेठेज जीवोने अंत वखते दर्शन आपीने अक्षरधाममां तेडी जता होय, ने सर्वेना संकल्पने जाणता होय ने कोइकने कहेता पण होय, ने पोताना समागम करनारना घाट संकल्प टाळी नाखता होय, ने शरणागतने विक्षेपे रहित करीने ध्यानमां श्रीजीमहाराजने सुखे सुखीया करता होय ने श्रीजीमहाराजनी आज्ञा यथार्थ पाळता पळावता होय तेवा सत्पुरुषने सुखे सुखी ने दुःखे दुःखी थाय तेमां भगवान आवी जाय. ।।२४५।।

संवत् १८८४ ना अषाढ वदि ८ अष्टमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उतारानी मेडीना गोखने विषे विराजमान हता, ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज पोताना भक्तजनने शिक्षा करवाने अर्थे वार्ता करता

१ हता जे (१) जेने पोतानुं कल्याण इच्छवुं तेने कोइ प्रकारनुं मान राखवुं नहि, जे हुं उंचा कुळमां जन्म पाम्यो छुं के हुं धनाढ्य छुं के हुं रूपवान छुं के हुं पंडित छुं एवुं कोइ प्रकारनुं मनमां मान राखवुं नहि, अने गरीब सत्संगी होय तेना पण दासानुदास थइ रहेवुं, ने भगवान तथा भगवानना भक्त तेनो जेने अवगुण आवतो होय, ने ते

सत्संगी कहेवातो होय तो पण तेने हडकाया श्वान जेवो जाणवो, जेम हडकाया श्वान-
नी लाळ जेने अडे तेने पण हडकवा हाले, तेम जेने भगवान ने भगवानना भक्तनो
अवगुण आव्यो होय ते साथे जे हेत राखे, अथवा तेनी वात सांभळे तो ते हेतनो क-
रनारो ने वातनो सांभळनारो पण विमुख सरखो थाय. अने वळी जेम क्षयरोग थयो
होय ते कोइ औषधे करीने मटेज नहि,तेम जेने भगवान ने भगवानना भक्तनो अव-
गुण आव्यो होय तेना हृदयमांथी क्यारेय आसुरी मति टळे नहिं, अने अनंत ब्रह्मह-
त्या करी होय, अने अनंत बाळहत्या करी होय, ने अनंत स्त्रीहत्या करी होय ने अ-
नंत गौहत्या करी होय ने अनंत गुरुस्त्रीनो संग कर्यो होय तेना पण कोइ काळे छुटको
थाय, ने शास्त्रमां ते पाप छुटयानो उपाय पण कह्यो छे, पण भगवान ने भगवानना
भक्तना अवगुण लेवावाळाने कोइ शास्त्रमां ए पाप छुटयानो उपाय कह्यो नथी. अने
झेर खाय अथवा समुद्रमां पडे अथवा पर्वतथी पडे अथवा कोइ राक्षस मळे ने खाइ
जाय तो एकज वार मरवुं पडे, अने जे भगवान ने भगवानना भक्तना द्रोही होय तेने
तो अनंत कोटी कल्प सुधी मरवुं पडे ने अवतरवुं पडे. अने वळी गमे तेवो शरीरमां
रोग थयो होय ने तेणे करीने शरीर पडे अथवा कोइ शत्रु मळे ने शरीरनो नाश करी
नाखे पण जीवनो नाश थातो नथी, अने भगवान ने भगवानना भक्तनो द्रोह कर्यांथी
तो जीवनो पण नाश थइ जाय छे. त्यारे कोइ कहेशे जे जीवनो नाश केम थातो
हशे ? तो त्यां दृष्टांत जे जेम हिजडो होय ते पुरुष पण न कहेवाय ने स्त्री पण न
कहेवाय, एतो केवळ वृंदळ कहेवाय, तेम जे भगवान ने भगवानना भक्तना द्रोहनो
करनारो होय तेनो जीव पण एवो नकारो थइ जाय, जे कोइ दिवस पोताना कल्या-
णना उपायने करीज शके नहि, माटे एनो जीव नाश थइ गयो जाणवो, एम जाणीने
भगवान ने भगवानना भक्तना द्रोह करवोज नहि. (१) अने वळी पोताना देहनां जे १
सगां संबंधी होय ने ते सत्संगी होय तोपण तेमां अतिशे हेत राखवुं नहिं, जेम दुध
साकर होय ने तेमां सर्पनी लाळ पडी होय तेनुं जे पान करे तेना प्राण जाय, तेम
पोताना देहना जे सगा संबंधी होय ने ते हरिभक्त होय तोपण तेमां देहना संबंध रूप
सर्पनी लाळ पडी छे, माटे तेमां हेतना करनारानुं जरूर अकल्याण थाय छे. एम जा-
णीने जेने पोतानुं कल्याण इच्छवुं होय तेने देहनां जे सगां संबंधी होय ते साथे हेत
राखवुं नहिं. एम संसारमांथी निस्पृह थइने भगवानना चरणारविंदमां प्रीति राखीने
भगवाननुं भजन कर्या करवुं. आ जे अमे वात करी छे तेने जे अंतरमां राखे तेने कोइ
रीते कल्याणना मार्गमां विघ्न थायज नहिं, अने आ जे वात ते करामत जेवी छे एम
कहीने श्रीजीमहाराजे वार्तानी समाप्ति करी. (२) इति वचनामृतम् ॥ १२ ॥ (२४६) २

रहस्यार्थ प्र०——आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के कल्याण इच्छवुं होय तेने मान राखवुं नहि, ने दास थइने रहेवुं ने अमारो के अमारा भक्तनो अवगुण लेनारो ने तेनी वात सांभळनारो बेय विमुख थाय छे, ने ए पापथी छुटयानो कोइ उपाय नथी, ने एना जीवनो पण नाश थइ जाय छे. (१) अने संबंधी हरिभक्त होय तोपण तेना साथे हेत करनारनुं कल्याण थाय नहि, ने अमारे विषेज प्रीति राखीने अमारुं भजन करे तेने कल्याणमां विघ्न थायज नहि. (२) बावतो छे.

१ प्र० जेने द्रोहे जीव नाश पामे ते भक्त केवा जाणवा ?

१ उ० श्रीजीमहाराजना धाममांथी आवेला मुक्त जाणवा. अने साधनदशावाळा होय तेमां कोइ प्रकारनो दोष न होय, ने पंच वर्तमान यथार्थ पाळता होय ने अल्प वचन पण न लोपता होय, ने शत्रु मित्र सम थइ गया होय ने पोताने अक्षरधाम रूप मानीने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने धरी रह्या होय, एवा एकांतिक भक्तनो द्रोह पण श्रीजीमहाराजना जेवोज छे.अने अखंड ध्यान न करी शकता होय पण अल्प वचन लोपता न होय, ने द्रोह करनारनुं भुंडुं न इच्छता होय अने श्रीजीमहाराजनी सर्वोपरि उपासना होय एवा भक्तना द्रोहे करीने पण एवुंज पाप थाय छे, अने जे पंच वर्तमानमां फेर पाडतो होय तेनेतो भक्त न जाणवो, अने तेनो अवगुण ले तेमां बाध नथी एम (प्र० ५३ तथा छे० २१/३ मां) कह्युं छे.

२ प्र० श्रीजी बाबतमां आ वात करामत जेवी कही ते केवी जाणवी ?

२ उ० जेम त्रांबानुं रुपुं करवुं होय तथा लोढानुं सोनुं करवुं होय ते कोटी साधने पण थाय नहि, पण जे करामतवाळो होय ते वगर दाखडे ने वगर खरचे करी दे तेम आ जीव कोटी कल्पे ने कोटी साधने पण जीव मटीने ईश्वर पण थइ शके नहि तो तेथी पर ब्रह्म तेथी पर मूळ अक्षर ने तेथी पर मुक्त थवुं ते थवाय ज नहि, ते श्रीजीमहाराजनो ने तेमना भक्तनो द्रोह न करे ने देहना संबंधी साथे हेत न राखे ने श्रीजीमहाराजने विषे प्रीति राखीने भजन करे एटलामांज मुक्त थाय ते वात करामत जेवी एटले आश्चर्यकारी कही छे. ॥ २४६ ॥

संवत् १८८४ ना अषाढ वदि ९ नवमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठने विषे मोगराना पुष्पना हार ने पाघने विषे तोरा विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती अने आगळ मुनि मंडल दुकड सरोदा लइने कीर्तन गाता हता.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे कीर्तन राखो हवे भगवद्वार्ता करीए. एम कहीने

१ श्रीजीमहाराजे मुनिमंडळ प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे (१) जीवनो बेद छे ते तो पूर्व कर्मने आधीन छे तेनो एक निरधार रहेतो नथी ते क्यारेक सारा रहे ने क्यारेक कर्म-

धीनपणे करीने मांदो थइ जाय ने क्यारेक स्वतंत्र वर्ततो होय ने क्यारेकपराधीन पण थइ जाय अने धार्युं होय ते ठेकाणे रहेवाय के नज रहेवाय, अने क्यारेक हरि-भक्तना मंडळमां रहेता होइए ने कर्म के काळने योगे करीने नोखा पडी गया ने एकळाज रही जवाय, त्यारे जे जे नियम राखवानी दृढता होय तेनो कांइ मेळ रहेज नहि. अथवा इंग्रेज जेवो कोइक राजा होय ने तेणे क्यांइक परवश राख्या अथवा पोताना मन ने इंद्रियो ते इंग्रेज जेवांज छे तेणेज परवश राख्या, त्यारे जे संतना मंडळमां रहेवुं ने सत्संगनी मर्यादा पाळवी तेनो कांइ मेळ रहे नहि. अने शास्त्रमां तो एम कह्युं छे जे धर्म ज्ञान वैराग्य ने भक्ति ए चार संपूर्ण होय त्यारे एकांतिक भक्त कहेवाय ने एकांतिकनी जे मुक्ति छे तेने पामे, ने काळ कर्मने योगे करीने देहनी व्यवस्था तो एकनी एक रहे एम जणातुं नथी माटे भगवानना भक्तने केइ रीते एकांतिकपणुं रहे छे ? ए प्रश्न छे. पछी गोपाळानंदस्वामी चैतन्यानंदस्वामी, नित्यानंदस्वामी, मुक्तानंदस्वामी ब्रह्मानंदस्वामी शुकमुनि इत्यादिक मोटा मोटा साधु हता तेमणे जेवुं जेने जणाणुं तेवो उत्तर कर्यो पण ए प्रश्ननुं समाधान न थयुं. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेम अमारे भगवानने विषे निष्ठा रहे छे तेम अमे कहीए, जे अमारे तो गमे तेवुं सुख दुःख आवे तथा संपत् विपत् आवे तेमां एम रहे छे जे एकतो भगवाननी अतिशे मोटयप जाणी ये छइए तेणे करीने आ संसारमां मोटा मोटा राजानी समृद्धि ने राज्य लक्ष्मी तेने जोइने लेशमात्र पण अंतरमां तेनो भार आवतो नथी, अने एम समझीये छइए जे आपणे तो भगवान थकी कांइ अधिक नथी ने आपणो जीव छे ते भगवानना चरणारविंदमां चोटाड्यो छे अने भगवान संघाथे एवी दृढ प्रीति करी छे जे ते प्रीति ने काळ कर्म माया एमांथी कोइए टाळवाने अर्थे समर्थ नथी, अने पोतानो जीव ए प्रीति टाळवाने करे तोय पण भगवानमांथी ए प्रीति न टळे एवी रीतनो दृढाव छे, ते गमे तेवुं सुखदुःख आवे छे तोय नथी टळतो. अने स्वभाविक जीवमां एवी रुचि रहे छे जे शहेर होय के मेडी होय के राज दरबार होय त्यां तो गमेज नहि, अने वन होय पर्वत होय नदी होय, झाड होय एकांत ठेकाणुं होय त्यां अतिशे गमे छे, ने एम जाणीये छइए जे एकांतमां बेसीने भगवाननुं ध्यान करीए तो सारुं एवी सदाय रुचि रहे छे.अने क्यारे अमने रामानंदस्वामीनुं दर्शन नहोतुं थयुं त्यारे मुक्तानंदस्वामी संघाथे अमे एम ठराव करी राख्यो हतो, जे मुने रामानंदस्वामीनुं दर्शन करावो तो आपणे बे जण वनमां जइने भगवाननुं अखंड ध्यानकर्या करशुं.अने कोइ दिवस वस्तीमां तो आववुंज नहि एम मननो ठराव हतो, ते हमणां पण मन एवुं ने एवुंज वर्ते छे. अने भगवान ने भगवानना जे भक्त तेमां तो एवुं दृढ हेत छे जे तेने काळ कर्म ने माया तेमांथी कोइए टा-

ळवाने समर्थ नथी ने पोतानो जीव टाळ्यानुं करे तोय पण हृदयमांथी टळेज नहि एवी
भगवान ने भगवानना भक्त संघाथे अतिशे प्रीति छे. अने अमे केटलीकवार सत्संग-
मांथी जावाने अर्थे उदास थया छइए पण भगवानना भक्तनो समूह जोइने टक्या छइए,
ते कोइ रीते मुकीने जवातुं नथी. अने जेने हुं भगवाननो भक्त न जाणुं ते ठेकाणे तो
मुने राख्याना कोटी उपाय करे तोय नज रहेवाय, अने गमे तेवी अमारी शुश्रुषा करे
तोय अभक्त संघाथे अमारे बनेज नहिं एवी रीते भगवानना भक्त संघाथे अमे अमारा
जीवने अतिशे प्रीतिये करीने जोडी राख्यो छे, अने ते भगवान विना बीजुं कांइ पदार्थ
वहालुं राख्युं नथी. माटे शा सारु भगवानमां प्रीति नहि रहे? अने भगवाननां कथा
कीर्तनादिक करता होइए त्यारे तो एवी मस्ताइ आवे छे, जे जाणीये दिवाना थइ ज-
वाशे अने जेटलो विवेक रहे छे ते तो कोइक भक्तजनना समासने अर्थे रहे छे. पण म-
नमां तो एवीने एवीज खुमारी रहे छे अने उपरथी तो लोकने भळतो व्यवहार राखीए
छइए. [१] अने ते भगवान छे ते आ देहना प्रवर्तावनारा छे ते गमे तो देहने हाथीए १
बेसारो ने गमे तो बंधीखानामां नखावो अने गमे तो आ देहमां कोइक मोटो रोग प्रेरो,
पण कोइ दिवस भगवान आगळ एवी प्रार्थना करवी नथी जे हे महाराज! आ मारुं
दुःख छे तेने टाळो शा माटे जे आपणे तो पोताना देहने भगवानना गमतामां वर्तावबो
छे. ते जेम ए भगवाननुं गमतुं होय तेमज आपणे गमे छे पण भगवानना गमता थकी
पोतानुं गमतुं लेश मात्र पण नोखुं राखवुं नथी. अने आपणे ज्यारे तन, मन, धन,
भगवानने अर्पण कर्युं, त्यारे हवे भगवाननी इच्छा तेज आपणुं प्रारब्ध छे ते विना बीजुं
कोइ प्रारब्ध नथी माटे भगवाननी इच्छाये करीने गमे तेवुं सुख दुःख आवे तेमां कोइ
रीते अकळाइ जावुं नहिं, ने जेम भगवान राजी तेमज आपणे राजी रहेवुं. एवी रीते
श्रीजीमहाराज पोताने उद्देशे करीने जे भगवानना अति दृढ भक्त होय तेने जेम सम-
जवुं घटे ने जेम भगवानमां दृढ प्रीति करी जोइए ते सर्वे वार्ता करी देखाडता हवा.
(२) इति वचनामृतम् ॥१३॥ (२४७) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारी मोटयप
जाणे तथा वैराग्य होय तथा अमारुं ध्यान करवानी रुचि होय तथा अमारे विषे ने
अमारा भक्तने विषे अतिशे प्रीतिए करीने जीव जोड्यो होय पने काळ कर्मादिक पराभव
करी शकता नथी.(१)अने अमारी इच्छा एज अमारा भक्तने प्रारब्ध मानवुं(२)बावतो छे.
१ प्र० पहेली बाबतमां श्रीजीमहाराजे पोताना उद्देशे करीने पोताना एकांतिक भक्तनी सम-
जण कही तेमां अमारा भक्त अमारे विषे दृढ प्रीति करे छे ते प्रीतिने काळ कर्म माया
टाळवाने समर्थ नथी एम कह्युं ते केवी रीते प्रीति टाळतां हशे? अने जे भक्ते भगवा-
नने विषे प्रीति करी छे तेनो जीव प्रीति टाळवानुं करे तो पण टळे नहि एम कह्युं

ते प्रीति करनारज ए प्रीति टाळवानुं केवी रीते करतो हशे ?

१ उ० ए भक्ते श्रीजीमहाराजनो महिमा जाणीने श्रीजीमहाराज तथा तेमना शुद्ध साधे दृढ प्रीति करी होय ते भक्तने प्रारब्ध वशे करीने परदेशमां जावुं पडे त्यां सत्पुरुषनो योग न होय ने दारु मांसना भक्षण करनारा अधर्मी मनुष्योना मेळुं रहेवुं पडे, त्यां पण पोताने श्रीजीमहाराजने विषे ने तेमना भक्तने विषे प्रीति होय तेमां फेर पडे नहि, ने ते विना बीजे क्यांइ लेश मात्र प्रीति थाय नहि. अने कर्मे करीने देहमां रोगादिक प्राप्त थाय ने खावा पण मळे नहि ने अतिशे दुःख प्राप्त थाय तो पण अकळाय नहि जे हुं स्वा-मिनारायण भगवानने भजुं छुं तोपण मारी सहाय करता नथी एवो संकल्प थाय नहि ने सदा राजी रहे अने ए दुःख श्रीजीमहाराज टाळे तो ठीक एवो पण संकल्प करे नहि ने श्रीजीमहाराज मने दुःख दे छे ते मारुं सारुंज करता हशे एम समजे पण ते दुःखथी लेशमात्र मुंझवण थाय नहिं. अने माया छे ते इंद्रियो अंतःकरण द्वारे बाट करावे जे तुं भगवानने भजी भजीने मरी गयो तोय भगवान तने दुःख दे छे माटे भजन मुकी दे तो सुख थाय तथा बीजा लोको द्वारे एवा शब्द बोलावीने श्रीजीमहाराजने विषेथी प्रीतिमां डगमगाट करावे तो पण डगे नहि ए काळ कर्म मायानो डगाव्यो न डग्यो कहेवाय. अने आ लोकनी अतिशे संपत् थाय ने घणां ऐश्वर्य प्राप्त थाय तेमां लोभावानो संकल्प थाय पण प्रथम श्रीजीमहाराजनी मोटयप जाणेली छे ते श्रीजीम-हाराजनो महिमा विचारे ते शुद्ध विचारवडे करीने संकल्पने टाळी नांखे ते पोतानो जीव टाळवानुं करे तोपण टळे नहि एम जाणवुं.

२ प्र० श्रीजीमहाराजे रामानंदस्वामीनां दर्शन इच्छयां ने वनमां जइने अखंड ध्यान कर-वानुं कह्युं अने सत्संगमांथी केटलीकवार जवाने अर्थे उदास थया छइए एम कह्युं ते श्री-जीमहाराज तो पोते भगवान छे एमने रामानंदस्वामीना दर्शननुं शुं प्रयोजन हशे ? अने ध्यान कोनुं करवानुं हशे ? अने उदास थवानुं शुं कारण हशे ?

२ उ० अमारा तथा सत्पुरुषना दर्शननी आतुरता राखवी तथा अमारुं ध्यान करवुं एम पोताना आश्रितोने शिखववाने अर्थे पोताने मिषे वात करी छे. अने जेने अमारुं सदाय ध्यान करवानी रुचि होय तेने पण अमारा भक्तना समूहमां रहीनेज अमारुं ध्यान क-रवुं पण अमारा भक्तना संगथी उदास न थावुं एम पोताना आश्रितोने सुचव्युं छे.

३ प्र० भगवाननां कथा कीर्तनादिक करता होइए त्यारे दिवाना थइ जवाशे एवी मस्ताइ आवे छे एम कह्युं ते मस्ताइ शी समजवी ? अने कोइक भक्तजनना समासने अर्थे विवेक रहे छे एम कह्युं ते विवेक शो समझवो ?

३ उ० श्रीजीमहाराजनी कथा कीर्त्तनादिकमां श्रीजीमहाराजनो महिमा आवे त्यारे अतिशे प्रीतिवाळा भक्त प्रेममग्न थइने पोतानी देहदशा भुली जाय ने मूर्तिमां जोडाइ जाय ने जळमस्तनी पेठे वर्त्ते अने मूर्तिमांथी बहार निकळवुं ते प्रिय न लागे तो पण बीजा भक्तना कल्याणने अर्थे देहमां वर्त्तिने तेमने ज्ञान उपदेश करवो ए विवेक समजवो.

४ प्र० पहेली बाबतमां जीवनो देह पूर्व कर्मने आधीन कह्यो अने बीजीमां अमारी इच्छा पण तमारुं प्रारब्ध छे एम कह्युं तेनुं शुं कारण हशे ? अने बीजीमां तन मन धन अर्पण कर्युं कह्युं ते अर्पण कर्युं क्यारे कहेवाय ?

४ उ० स्थूळ देहे करीने शिक्षापत्री, जनशिक्षा, निष्कामशुद्धि, ने धर्मामृत तेने विषे कहेला जे त्यागी गृहीना नियम ते सर्वे पाळे त्यारे तन अर्पण कर्युं कहेवाय. अने मने करीने श्रीजीमहाराजनी आज्ञा विरुद्ध एके संकल्प थावा दे नहि ने मननी वृत्ति मूर्तिमां अखंड राखे त्यारे मन अर्पण कर्युं कहेवाय, अने पोताना उद्यममांथी जे प्राप्त थाय तेमांथी दशोंद विशोंद भाग श्रीजीमहाराजने अर्पण करे त्यारे धननी शुद्धि थाय छे ने शेष रह्युं ते पोताना निर्वाहमां ने सत्संगमांज वापरे ते धन अर्पण कर्युं कहेवाय. (४) आवी रीते उपर कह्या प्रमाणे जे भक्तजन वर्ते तेने श्रीजीमहाराजनी इच्छा एज प्रारब्ध छे.॥२४७॥

संवत् १८८४ ना अषाढ वदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ने मस्तक उपर पाघमां पुष्पना तोरा झुकी रह्या हता ने कंठने विषे पुष्पना हार पहेर्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने मुनिमंडळ कीर्तन गावता हता पछी श्रीजीमहाराजे कह्युं जे कीर्तन भक्तिनी समाप्ति करो ने प्रश्न उत्तर करीए.

१ पछी मुक्तानंदस्वामीए हाथ जोडीने पुछ्युं जे (१) हे महाराज ! परमेश्वर थकी तो बीजुं कांइ सार वस्तु नथी तो पण ए परमेश्वरमां ए जीवने केम दृढ प्रीति थाती नथी ? ए प्रश्न छे पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे एने विवेक नथी, जो विवेक होय तो एम विचार थाय जे मारे तो ब्रह्मचर्य व्रत छे तो पण स्त्रीना सुखनी तृष्णा हृदयमांथी टळती नथी ते बहु खोटुं छे. अने ते स्त्रीनुं सुख तो चोराशी लाख योनिमां ज्यां ज्यां जन्म धर्या त्यां त्यां सर्वत्र प्राप्त थयुं छे, ते पण मनुष्यदेहथी अधिक प्राप्त थयुं छे,केम जे ए जीव बकरो थयो हशे त्यारे हजार बकरीयोने पोते एकलो भोगवतो हशे अने ज्यारे घोडो के पाडो के सांढ के बुढीयो वांदरो इत्यादिक पशुना देहने पाम्यो हशे त्यारे तेने विषे पोतपोतानी जात्यनी अतिशे रूपवान ने यौवनवान एवी अनंत स्त्रियो ते एके एक पने मळी हशे, ने तेमां कांइ प्रारब्धनुं कारण नथी ने भगवाननी कृपानुं पण कारण नथी ए तो सहेजेज मळी हती, ने वळी पण जो भगवाननुं भजन नहि करे तो जे जे योनिमां जाशे त्यां त्यां अनंत स्त्रियो प्राप्त थाशे ने तेमां कोइ देवतानुं पण सेवन पूजन नहि कर्युं जोइए, ने कोइ मंत्रनो पण जप नहि कर्यो जोइए, ए तो सहेजेज ते स्त्रियादिकना सुखने पामशे अने आ जीवे केटलीकवार देवता थइने देवलोकनां पण सुख भोगव्यां छे ने केटलीकवार चक-

वर्ती राजा थइने पृथ्वीमां पण अनंत सुख भोगव्यां छे तो पण ए जीवने स्त्रियादिक जे पदार्थ छे तेने भोगववानी तृष्णा टळती नथी, ने स्त्रियादिकनुं जे सुख छे तेनुं अतिशे दुर्लभपणुं जाणे छे, ने तेनुं अति महात्म्य जाणीने तेमां प्रीति करे छे ते प्रीति कोइ रीते टाळी टळती नथी. ए पापे करीने परमेश्वरमां दृढ प्रीति थाती नथी, अने एवी मलीन वासना आ जीवने थाय छे ते अमे नजरे दीठी छे. ज्यारे अमे नाना हता त्यारे अयोध्यापुरीमां एक शिवनुं मंदिर हतुं तेमां जइने अमे सुता त्यां एक कायथ नित्य शिवनुं पूजन करवाने आवतो ते शिवनी पूजा करीने गाल वजाडीने एम वर मागतो, जे हे महाराज! हे शिवजी! मने कोइ दिवस मनुष्यनो अवतार देशो मां, आ माटे जे मनुष्य देहमां तो आंखु खाइ खाइने मरी गया पण स्त्रीनुं सुख सारी पेठे भोगवातुं नथी, माटे हे शिवजी! मने तो जन्मो जन्म लंबकर्णनोज अवतार देजो, जे लाज मर्यादा मुकीने सारी पेठे स्त्रीनुं सुख तो भोगवीए, एम नित्य शिवजी पासे वर मागतो एवी रीते आ जीवना हृदयमां पापरूप वासना थाय छे माटे एने कोइ रीते परमेश्वरमां प्रीति थातीनथी.(१) १

२ पछी मुक्तानंदस्वामीए वळी पुछ्युं जे (२) हे महाराज जेने एवो अतिशे अविवेक होय तेने तो भगवानमां प्रीति न थाय पण जेने एम जणातुं होय जे भगवान सर्व सुखना निधि छे ने भगवान विना बीजां पदार्थ छे ते तो केवळ दुःखदायीज छे तो पण तेने भगवानमां प्रीति नथी थाती तेनुं शुं कारण छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ए जीवने पूर्व जन्मने विषे अथवा आ जन्मने विषे कोइक अतिशे भुंडा जे देश काळ संग ने क्रिया तेनो योग थइ गयो छे तेणे करीने अतिशे तीक्ष्ण कर्म थयां छे, ते भुंडा कर्मनो एना चित्तमां पास लाग्यो छे माटे सार असारने जाणे छे तो पण एने असारनो त्याग करीने परमेश्वरने विषे दृढ प्रीति थाती नथी (२) ते जेवी रीते भुंडा देश २ काळ क्रिया ने संग तेने योगे करीने भुंडा कर्मनो चित्तमां पास बेठो छे,तेवी रीते अतिशे पवित्र देश पवित्र काळ पवित्र क्रिया ने पवित्र संग तेने योगे करीने अतिशे तीक्ष्ण जो सुकृत कर्म थाय तो तेने योगे करीने अति तीक्ष्ण जे भुंडां पापकर्म तेनो नाश थइ जाय छे त्यारे एने भगवानने विषे दृढ प्रीति थाय छे ए प्रश्ननो एज उत्तर छे.(३) ३

३ पछी अयोध्याप्रसादजीए पुछ्युं जे(३)एकनी तो बुद्धि पण घणी होय ने शास्त्रमां पण बहु दृष्टि पुगती होय, ने बीजो छे तेनी तो बुद्धि पण थोडी होय ने शास्त्रमां पण झाझुं जाणतो न होय, अने घणी बुद्धिवाळो होय ते सत्संगमांथी विमुख थइ जाय छे ने थोडी बुद्धिवाळो होय ते दृढ थका सत्संगमां रहे छे,तेनुं शुं कारण छे?पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे आ संसारने विषे दैवी ने आसुरी बे प्रकारना जीव छे, तेमां आसुरी जीव होय तेने झाझी बुद्धि होय तोपण सत्संगमांथी विमुख थाय, ने दैवी जीव होय

जे तेने थोडी बुद्धि होय तोपण कोइ काळे सत्संगमांथी विमुख नथाय.जेम मरचानुं बीज होय ने किवडानुं बीज होय ने सिंगडिया वछनागनुं बीज होय तेने वावीने नित्य साकरनुं पाणी सिंचीए तो पण मरचां ते तीखांज थाय ने किवडो ते कडवोज थाय ने सिंगडियो वछनाग ते झेरज थाय, शा माटे जे एवुं बीज छुंडुं छे. अने शेलडीने वावीने किवडाना पाननुं खातर नाखीए ने कडवुं पाणी सिंच्या करीए तो पण शेलडीनो रस ते मीठोज थाय तेम दैवी जीव छे ते भगवानने सन्मुखज रहे छे ने आसुरी जीव होय ते विमुखज थाय छे. [४] ४

४ पछी शुकमुनिए पुछयुं जे (४) दैवी ने आसुरी जीव होय ते केम जाणवामां आवे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे दैवी जीव होय तेने काम क्रोध लोभादिक दोष होय ते भुंडा देशकाळादिकने योगे करीने होय, पछी सारा देशकाळादिकनो योग थाय तो थोडेक काळे करीने नाश थइ जाय अने आसुरी जीवने जे काम क्रोध लोभादिक दोष होय ते कोइ काळे नाश थाय नहि, अने तेने एकवार जो कांइक कठण वचन कह्युं होय तो जीवे त्यांसुधी भुले नहि, अने ते आसुरी जीव जो सत्संगी थयो होय तो सौ करतां सरस हरिभक्त जणाय, पण जेम भाल देशमां मोरे समुद्र हतो ते कांप जणाइने मीठी पृथ्वी थइ छे ते ज्यां सुधी कांप होय त्यांसुधी जो खोदीए तो पाणी मीठुं निसरे अने तेथी जो हेठुं खोदीए तो समुद्रना जेवुं खारुं झेर पाणी निसरे, तेम आसुरी जीव होय ते हरिभक्त थयो होय ने एवुं गमतुं मरडीने लगारेक छेडयो होय तो जेटली मोरे साधुनी सेवा करी होय तेथी लाखगणो द्रोह करे तो पण मनमां संतोष न थाय. (५) ५

५ पछी मुक्तानंदस्वामीए पुछयुं जे (५) हे महाराज ! तमे एम कह्युं जे आसुरी जीव होय ने हरिभक्त थयो होय तो तेनुं ज्यां लगी गमतुं राखीए त्यां सुधी तो सत्संगी रहे ने जो गमतुं न राखीए तो विमुख थाय ते ज्यां लगी विमुख नथी थयो तेवामां जो तेनो देह पडी जाय तो आसुरी रहे के दैवी थाय ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ते आसुरी जीव ज्यांसुधी सारो होय ने तेवामां देह पडे तो दैवी थाय अने भगवाननी भक्ति करीने परमपदने पामे. (६) ६

६ पछी नृसिंहानंदस्वामीए पुछयुं जे [६] नवधा भक्तिमां श्रेष्ठ भक्ति कइ छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे नवधा भक्तिमांथी जेणे जे भक्तिए करीने भगवानमां दृढ स्नेह थाय तेज भक्ति तेने श्रेष्ठ छे. [७] ७

७ पछी गोपाळानंदस्वामीए पुछयुं जे (७) जेने बाळ अवस्था होय अथवा यौवन अवस्था होय तेने केवा पुरुषनो संग राखवो ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जे वये करीने पण वृद्ध होय ने धर्म ज्ञान ने वैराग्य जेने दृढ होय अने भगवानने विषे पण

दढ प्रीति होय तेवा पुरुषनो संग प्रीतिये करीने ए बेय जणाने करवो. (८) ८

८ पछी नाजे जोगीए पुछ्युं जे (८) एकनुं क्रोधे करीने भगवानमां मन जोडाणुं छे, ने एकनुं भये करीने भगवानमां मन जोडाणुं छे, अने एकनुं तो स्नेहे करीने भगवानमां मन जोडाणुं छे, ए त्रणमां कियो श्रेष्ठ छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेनुं हेते करीने भगवानमां मन जोडाणुं छे ते श्रेष्ठ छे. (९) ९

९ पछी शिवानंदस्वामीए पुछ्युं जे [९]भगवाननो भक्त तो होय पण जेने श्रीजीमहाराजे कह्यो एवो जे सार असारनो विवेक ते न होय ने वैराग्य पण नहोय तेने एवो विवेक तथा भगवान विना बीजा पदार्थमां वैराग्य ते केम थाय ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जो प्रथमज भगवानमां द्रढ हेत थइ जाय, तो विवेक ने वैराग्य ते हेतने योगे करीने प्रगट थाय छे. ने जेने जे पदार्थमां हेत थाय छे तेने हेत कहीए अथवा कामना कहीए, ते जे जे पदार्थमां हेत होय ने तेमां जो अंतराय कर तो ते उपर क्रोध थइ जाय छे, ते माणसना देहमां तो थाय पण पशु ने पण क्रोध थइ जाय छे. जेम पाडो होय ते कामनाये करीने भेंस उपर आसक्त थयो होय ने बीजो पाडो आवे तो तेने मारी नाखे छे एवी रीते पशु पक्षीमां सर्वत्र देखाय छे, तेम जेने भगवानने विषे दढ प्रीति होय तेने जे पदार्थ ते प्रीतिमां अंतराय करवा आवे तो ते उपर तुरत क्रोध थइ जाय ने ते पदार्थनो तत्काळ त्याग करे. माटे जो भगवानमां दढ हेत होय तो एनी मेळेज वैराग्यने विवेक थइ आवे छे ? (१०) १०

१० पछी वळी शिवानंदस्वामीए पुछ्युं जे (१०) बुद्धिमान तो बेय पुरुष छे तेमां एक तो जेम परमेश्वर कहे तेमज मानी ले एवो विश्वासी छे, ने बीजो तो परमेश्वरनां वचन होय तेमां पण मानवुं घटे तेटलुंज माने, ए बेमां कियो श्रेष्ठ छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे विश्वासी एज श्रेष्ठ छे.ने रामकथामां रामचंद्रजीये कह्युं छे जे जे मारे दढ विश्वासे रहे तेनी जेम माता बाळकनी रक्षा करे छे तेम हुं रक्षा करुं छुं माटे विश्वासी एज श्रेष्ठ छे. (११) ११

११ पछी आत्मानंदस्वामीए पुछ्युं जे (११) मनमां तो एम निश्चय छे जे देह पर्यंत परमेश्वरना मतमांज रहेवुं छे तो पण एम जाणीये छइए जे परमेश्वरने ने संतने केम करीए तो आपणो विश्वास आवे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे विश्वास तो परमेश्वरने ने संतने त्यारे आवे ज्यारे अतिशे मांदो थाय ने ते मंदवाडमां चाकरी पण सारी पेठे न थइ होय तोपण कोइनो अवगुण न ले ने पोते मुंझाय पण नहि, तथा वांक विना पण परमेश्वरने संत ते पोतानुं अतिशे अपमान करे तो पण कोइनो अवगुण न ले, त्यारे एनो परमेश्वरने ने संतने विश्वास आवे, अने त्रीजो प्रकार ए छे जे जेटला

सत्संगमां नियम छे तेमांथी जो लेश मात्र फेर पडे तो अतिशे दुःखाइ जाय,ने तेनुं तत्काळ प्रायश्चित्त करे अने जो मनमां खोटो घाट थाय तो बीजाने देहे करीने वर्त्तमानमां फेर पडे तेटलो ज दुःखायने त्रास पामे, त्यारे एनो परमेश्वरने ने संतने परिपूर्ण विश्वास आवे जे आ कोइकाळे सत्संगमांथी डगशे नहि. (१२) १२

१२ पछी भगवदानंदस्वामीए पुछ्युं जे(१२)केम करीए तो भगवान ने भगवानना भक्तनुं अखंड महात्म्य रहे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे प्रथम तो एम करवुं जे देहे करीने सर्वे संतने पगे लागवुं अने कोइक संत मांदा होय तो तेनुं माथुं दाबवुं पग दाबवा ने खावा पावाना खबर राखवी अने पोतानी पासे पोताने मन गमती व्हाली वस्तु आवे तो ते संतने आपीने पछी पोताना काममां वावरवी. एवी रीते देहे करीने जो वर्ते तो अंतरमां भगवाननुं ने संतनुं महात्म्य अखंड रहे. (१३) १३

१३ पछी श्रीजीमहाराजे संतने प्रश्न पुछ्यो जे (१३) धर्म ज्ञान वैराग्य ने भक्ति ए चारे अति तीव्रपणे करीने वर्तता होय तोपण धर्ममां कांइक संकरपणुं थाय, ने वैराग्यमां कोइक ठेकाणे राग रही जाय, अने भक्तिमां पण कांइक शिथिलपणुं थइ जाय, अने ज्ञानमां पण कांइक देहासक्ति रही जाय तेनुं शुं कारण हशे ? पछी गोपाळानंदस्वामीए ने ब्रह्मानंदस्वामीए कह्युं जे जेने धर्म ज्ञान वैराग्यने भक्ति ए चार तीव्र वर्ते छे एवा जे इश्वरमूर्ति समर्थ तेमां जे कांइक कसर जेवुं जणाय छे ते तो केवळ दयाये करीने रहे छे पण बीजी कोइ जातनी कसर नथी, अने एवा जे मोटा होय ते बाह्य दृष्टि राखीने वर्ते त्यारे केटलाक जीवोने जडभरत जेवा ने शुकजी जेवा करी मुके माटे एवा अतिशे जे मोटा तेमने जे व्यवहारिकदृष्टिये वर्त्तवुं ते केवळ जीवो उपर दयाये करीने छे, पछी श्रीजीमहाराजे कह्युं जे एनो उत्तर एज छे. (१४) इति १४ वचनामृतम् ॥ १४ ॥ (२४८)

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१३) छे तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे जेने स्त्री संबंधी मलीन वासना होय तेने अमारे विषे प्रीति न थाय. (१) बीजामां अतिशे भुंडा देशकाळादिकने योगे भुंडा कर्मनो पाश लाग्यो होय ते सार असारने जाणे तोपण अमारे विषे प्रीति न थाय. (२) अने अतिशे पवित्र देशादिक ने अतिशे सुकृत कर्म थाय तो ए पाप कर्मनो नाश थइ जाय. (३) त्रीजामां आसुरीने झाझी बुद्धि होय पण ते विमुख थाय ने दैवीने थोडी बुद्धि होय तोपण सत्संगमांथी विमुख थाय नहि. (४) चोथामां दैवीना दोष सारा देशादिकने योगे नाश थाय ने आसुरीना न थाय ने एनुं गमतुं मरडीए तो द्रोह करे. (५) पांचमामां आसुरी जीवनुं गमतुं राखीए एवामां देह पडी जाय तो परमपदने पामे. (६) छठ्ठामां नवधामां जे अधिक अमारे विषे स्नेह थाय ते भक्ति तेने श्रेष्ठ छे. (७) सातमामां बाळ तथा यौवन अवस्थावाळाये

वयोवृद्ध ने धर्मज्ञान वैराग्य ने अमारे विषे दृढ प्रीतिवान होय एवा पुरुषनो संग करवो [८] आठमामां हेते करीने अमारे विषे मन जोडाणुं होय ते श्रेष्ठ छे. (९) नवमामां प्रथम अमारे विषे हेत थाय तो वैराग्य ने विवेक आवे.(१०) दशमामां विश्वासी श्रेष्ठ छे. (११) अगीयारमामां मंदवाडमां चाकरी न थइ होय ने वगरवांके अमे ने संत अपमान करीए तोपण अवगुण न ले, अने नियममां लेशमात्र फेर पडे तो तत्काळ प्रायश्चित्त करे ने खोटो घाट थाय तो वर्त्तमानमां फेर पड्या जेटलो त्रास पामे त्यारे तेनो अमने ने संतने विश्वास आवे. (१२) बारमामां देहे करीने सर्वेने पगे लागे ने मांदानी सेवा करे ने व्हाली वस्तु संतने आपीने पछी पोताना काममां वापरे तेना अंतरमां अमारुं ने संतनुं महात्म्य रहे.[१३] तेरमामां धर्मज्ञान वैराग्यने भक्ति अति तीव्र वर्त्ततां होय एवा अतिशे मोटाने व्यवहारिक दृष्टिये वर्त्तवुं ते केवळ जीवो उपर दयाये करीने छे. (१४) वाचतो छे.

१ प्र० बीजा प्रश्नमां अतिशे भुंडां कर्म कह्यां ते कियां जाणवां ! अने त्रीजी वाक्यमां अतिशे सुकृत कर्म कह्यां ते कियां जाणवां.

१ उ० मद्य, मांस, लसण डुंगळी हींग आदिक अभक्ष वस्तुनुं भक्षण करवुं तथा चोरी हिंसा, व्यभिचारादिक कर्म करवां न जोवानुं जोवुं न बोलवानुं बोलवुं इत्यादिक श्रीजीमहाराजनी आज्ञा विरुद्ध आचरण थाय ते भुंडां कर्म जाणवां अने ज्ञान वैराग्य धर्म भक्ति ध्यान भजन सत्पुरुषनी सेवा ब्रह्मचर्य अहिंसा ए आदिक श्रीजीमहाराजनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्तवुं ते शुभकर्म जाणवां. आवां अतिशे शुभकर्मे करीने अतिशे भुंडां पाप कर्मनो नाश थइ जाय एम कह्युं छे.

२ प्र० (८ आठमा प्रश्नमां) स्नेहे करीने मन जोडाणुं होय ते श्रेष्ठ छे एम कह्युं ते स्नेहे करीने तो श्रीजीमहाराजने विषे मन जोडाय पण क्रोध ने भये करीने केवी रीते जोडातुं हशे ?

२ उ० ज्यारे भगवान मनुष्य रूपे पृथ्वीने विषे विचरता होय त्यारे भगवानने विषे जे ने द्वेषभावे करीने अतिशे वैरबुद्धि थइ होय तेने अखंड भगवानमां वैरभावे करीने वृत्ति रहे ते क्रोधे करीने मन जोडाणुं कहेवाय. अने जेने जन्म मरण गर्भवास चोराशी ने यम यातनानी बीक होय तेने भगवाननी स्मृति अखंड रहे ते भये करीने मन जोडाणुं कहेवाय.

३ प्र० (१३/१४ तेरमा प्रश्नमां) कह्युं ते धर्ममां संकरपणुं केवी रीते थातुं हशे अने वैराग्यमां राग शो रहेतो हशे अने भक्तिमां शिथिलपणुं शुं थातुं हशे ? अने ज्ञानमां देहासक्ति शी रीते रहेती हशे ?

३ उ० त्यागीए ज्ञान उपदेश करीने घणा माणसोने भगवान भजावीने निर्वासनिक करीने तेमना कल्याण करवां,अने लीला तृणने पण तोडवुं नहि एवो धर्म छे,तोपण मंदिरो संबंधी क्रियामां तृणादिकना छेदन रूप अहिंसा धर्ममां कसर देखवामां आवे अने अति तीव्र

वैराग्य होय पण कोइक भक्तने राजी करवा सारु सारी वस्तु आपे ते जमे एम वैराग्यमां पण राग देखवामां आवे अने श्रीजीमहाराजने विषे अतिशे स्नेहे करीने जोडाइ रह्या होय तेथी उपरथी दर्शन स्पर्शादिकने विषे आतुरता जेवुं न जणाय तेणे करीने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिने विषे प्रीतिमां शिथिलपणुं बीजाने देखवामां आवे ते (सा० १५/२ मां) जेने आत्मनिष्ठिा वैराग्य ने प्रीति होय तेने उपरथी तो अमारा दर्शन स्पर्शादिकने विषे आतुरता जेवुं जणातुं नथी पण एनी प्रीतिनां मूळ उंडा छे माटे ते भक्त श्रेष्ठ छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे माटे उपरथी दर्शनादिकनी आतुरता न जणाय तेणे करीने बीजाने देखवामां शिथिलपणुं आवे पण एमने विषे कसर न होय. अने ज्ञाने करीने श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनो पोताना आत्माने विषे साक्षात्कार होय ने देहने खोटो करी नांख्यो होय तो पण बीजाना कल्याणने अर्थे तेने पोताना देहनी सेवा करावे त्यारे बीजाना देखवामां देहासक्ति आवे पण पोताने देहमां आसक्ति न होय आवा मोटा मुक्त होय ते अखंड श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां रह्या होय ने मूर्तिमां रह्या थका बाह्य दृष्टि राखीने ज्ञान उपदेश करीने तथा सेवा अंगीकार करीने ने श्रीजीमहाराजनुं ध्यान भजन करावीने जडभरत शुकजी जेवा पटले पोताना जेवा मुक्त करी मूके. ॥२४८॥

संवत् १८८४ ना अषाड वदि १३ तेरसने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उतारानी मेडीना गोख उपर विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठने विषे मोगराना पुष्पना हार पहेर्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी मुक्तानंदस्वामीने श्रीजीमहाराजे कह्युं जे आजतो अमे अमारा रसोइया हरिभक्तनी आगळ बहु वात करी त्यारे मुक्तानंदस्वामी बोल्या जे हे महाराज ! केइ
१ रीते वात करी ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे (१) वानतो एम करी जे भगवाननो भक्त होय ने ते भगवाननी मानसी पूजा करवा बेसे तथा भगवाननुं ध्यान करवा बेसे ते समे एनो जीव प्रथम जे जे भुंडा देशकाळादिकने योगे करीने पंच विषय थकी पराभव पाम्यो होय अथवा काम, क्रोध, लोभादिकने योगे करीने पराभव पाम्यो होय ते सर्वेनी एने स्मृति थइ आवे छे जेम कोइ शूरवीर पुरुष होय ने संग्राममां जइने घाइ आव्यो होय ने ते घायल थइने पाछो खाटलामां आवीने सुवे पछी एने ज्यांसुधी पाटो मोठे नहि त्यांसुधी घानी वेदना टळे नहि ने निद्रा पण आवे नहि, ने ज्यारे पाटो गोठे त्यारे घानी पीडा टळी जाय ने निद्रा पण आवे तेम भुंडा देश काळ संग ने क्रिया तेने योगे करीने जीवने पंचविषयना जे घा लाग्या छे ते ज्यारे नवधा भक्ति माहिली जे भक्ति करतां थकां ए पंचविषयना घानी पीडा नरहे ने पंचविषयनुं स्मरण न थाय एज एने पाटो गोठ्यो जाणशो अने एज एने भजन स्मरणनुं अंग दृढ जाणवुं, पछी ए

अंगमां रहीने मानसी पूजा करवी नाम स्मरण करवुं जे करवुं ते पोताना अंगमां रहीने करवुं तो एने अतिशे समास थाय अने जो पोताना अंगने ओळखे नहि तो जेम घायलने पाटो गोठे नहि ने सुख न थाय तेम एने भजन स्मरणमां कोइ रीते सुख न थाय ने पंचविषयना जे घा एने लाग्या होय तेनी पीडा टळे नहि. माटे ए नवधा भक्तिमांथी जे भक्ति करते थके पोतानुं मन भगवानमां चोटे अने भगवान विना बीजो घाट करे नहि त्यारे ते हरिभक्तने एम जाणवुं जे मारुं तो एज अंग छे. पछी ते जातनी भक्ति एने प्रधान राखवी ए सिद्धांत वात छे. (१) इति वचनामृतम् ॥१५॥ (२४९) १

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे भुंडा देश काळादिकने योगे करीने पंच विषयना घा लाग्या होय ते नवधा भक्ति माहेली जे भक्तिये करीने पंच विषयनुं स्मरण नथाय ते अंगमां रहीने अमारी मानसी पूजा नाम स्मरण करवुं तो अतिशे समास थाय, ने जे पोताना अंगने ओळखे नहि तेने सुख न थाय. ॥ २४९ ॥

संवत् १८८४ ना अषाड वदि अमावास्याने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठने विषे मोगराना पुष्पना हार पहेर्या हता तथा पाघमां तोरा अतिशे शोभायमान झुकी रह्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे मुनि मंडळ समस्त तथा गृहस्थ हरिभक्त १ समस्त प्रत्ये अमे प्रश्न पुछीए छइए (१) ते जेथी उत्तर थाय ते करजो ते प्रश्न ए छे जे भगवाननो भक्त होय तेने अवगुणवाळानो त्याग करतां कांइ वार लागे नहि, पण जेमां अतिशे रुडा गुण होय तेनो केइ रीते त्याग थाय ? अने जेमां रुडा गुण होय ते तो पोताना संबंधी होय अथवा बीजो कोइक होय पण गुणवान संघाथे सहेजेज प्रीति थाय, ने ते गुणने योगे करीने जे प्रीति थइ होय ते टाळी टळेज नहि, माटे भगवानना भक्तने भगवान विना बीजे ठेकाणे गमे तेवो गुणवान होय तेनी संघाथे प्रीतिज न थाय एवो शो उपाय छे ए प्रश्न छे ? पछी मोटा मोटा जे संत तेमणे जेवो भास्यो तेवो उत्तर कर्यो पण श्रीजीमहाराजना प्रश्ननुं समाधान थयुं नहि. पछी श्रीजीमहाराजे कह्युं जे ल्यो अमे उत्तर करीये एनो उत्तर ए छे जे जेम पतिव्रता स्त्री होय तेने पोतानो पति कंगाल होय ने कुरूप होय अथवा रोगी होय के वृद्ध होय तोपण बीजा जे ताळेवर ने रूपवान ने यौवनवान पुरुष तेने जोइने लेशमात्र मनमां गुण आवे नहि. अने जे

पतिव्रता होय तेतो बीजा पुरुष सामुं भावे करीने जुवे अथवा हसीने बोले त्यारे एनुं पतिव्रतापणुं नाश पामे. अने ते पतिव्रताने घेर कोइक परुणा आव्या होय तो तेने अन्नजळ आपे तथा पोताना पतिना जे संबंधी पुरुष तेने पण अन्नजळ आपे, तेतो पतिना संबंधी जाणीने आपे. पण पोताना पतिना जेवी बीजा पुरुष मात्र संघाथे लेशमात्र प्रीति नहोय, अने पोताना पतिना जेवो बीजा पुरुषनो गुणपण न भावे, ने पोताना पतिनी मरजी प्रमाणेज वर्त्ते, एवी रीते पतिव्रता स्त्रीने पोताना पति संघाथे दृढ टेक छे, तेमज भगवानना भक्तने पण भगवान संघाथे दृढ टेक जोइए. अने जेवे रूपे करीने भगवाननुं दर्शन पोताने थयुं छे ने ते संगाथे जेने पतिव्रताना जेवी दृढ प्रीति बंधाणी छे, तेने मोटामोटा जे बीजा मुक्त साधु ते संगाथे पण प्रीति थायज नहि अने पोताना इष्टदेव जे भगवान तेना जे बीजा अवतार होय ते संगाथे पण प्रीति थाय नहि, केवळ जे स्वरूपनी पोताने प्राप्ति थइ होय तेने संगाथेज प्रीति रहे ने तेनी मरजी परमाणेज वर्त्ते, ने बीजाने जे कांइक माने तेतो तेना जाणीने माने एवी जेने पोताना इष्टदेव जे भगवान तेने विषे पतिव्रताना जेवी दृढ भक्ति होय ने ते गमे तेवा बीजा गुणवानने देखे पण तेने विषे प्रीति थायज नहि. जेम हनुमानजी श्रीरघुनाथजीना भक्त छे ते रामावतार पछी बीजा केटलाक भगवानना अवतारथया छे पण हनुमानजीने रामचंद्रजीने विषेज पतिव्रताना जेवी भक्ति रही छे. ते माटे हनुमानजीनी भक्ति ते पतिव्रताना जेवी छे एवी रीते जे भगवानना भक्तनी टेक होय तेनी पतिव्रताना जेवी भक्ति कहेवाय अने जेनु अंग एवुं नहोय तो तेनी व्यभिचारणीना जेवी भक्ति कहेवाय माटे जाणी जोइने पोतानुं नाक कपाय एवी भक्ति न करवी ने भगवानना भक्तने तो समजी विचारीने पतिव्रताना जेवी दृढ भक्ति करवी. (१) इति वचनामृतम् ॥१६॥ (२५०) १

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [१] छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के अमारे विषे पतिव्रतापणे प्रीति करवी ने अमारा मुक्तमां जीवोनो मोक्ष करे एवो मोटो गुण छे तो पण ते साथे अमारा जेवी प्रीति न करवी ने बीजा अवतारने विषे तो करवीज नहि ने अमारी मरजी प्रमाणेज वर्त्तवुं अने जेम हनुमानजीए रामचंद्रजीने विषे निष्ठा राखीहती ते पछे घणाक अवतार थइ गया तोपण निष्ठा मुकी नही तेम तमारे अमारे विषे निष्ठा छे. ते अमारा पछी बीजा अवतारो थाय तोपण अमारे विषेथी निष्ठा फरवा देवी नहि ते पतिव्रतानी भक्ति छे, अने जेनुं अंग एवुं न होय तेनी भक्ति व्यभिचारिणीना जेवी छे. (१) वाक्य छे.

१ प्र० पतिव्रता स्त्री पतिविना बीजा पुरुष सामुं भावे करीने जुवे के हसीने बोलेतो एनुं पतिव्रतापणुं नाश पामे एम कह्युं ते पतिने ठेकाणे तो श्रीजीमहाराज छे अने पतिव्रताने ठेकाणे श्रीजीमहाराजना भक्त छे पण बीजा पुरुषने ठेकाणे कोने जाणवा ने भावे करीने जोवा के हसीने बोलवुं ते शुं समजवुं ?

१ उ० बीजा पुरुषने ठेकाणे सर्वे अवतारो जाणवा ते अवतारोने श्रीजीमहाराजना अवतार जाणीने दर्शन करवां ते ठीक अने जो एमने श्रीजीमहाराजना जेवाज जाणीने दर्शन करे तो भावे करीने जोयुं कहेवाय. अने श्रीजीमहाराजना दर्शन जेवोज आनंद एमने दर्शने थाय ते हसीने बोल्युं कहेवाय. माटे श्रीजीमहाराज विना अन्य अवतारोनी मोटयप रही जाय के तेमने देखीने हर्ष पामे तो ते भक्तनुं पतिव्रतापणुं नाश पामे.

२ प्र० पतिव्रताने घेर परोणा आव्या होय तेने तथा पोताना पतिना संबंधीने अन्नजळ आपे एम कह्युं ते परोणाने ठेकाणे कोने जाणवा ? ने संबंधीने ठेकाणे कोने जाणवा ?

२ उ० विष्णु वैराजादिथी आरंभीने मूळअक्षर पर्यंत सर्वे अवतारोने विषे श्रीजीमहाराजनो आवेश छे तेमने परोणा जाणवा. अने श्रीजीमहाराजना मुक्तने श्रीजीमहाराजनो साक्षात् संबंध छे तेमने संबंधी जाणवा.

३ प्र० जे जेवे रूपे करीने भगवाननुं दर्शन पोताने थयुं छे ते संघाथे जेने पतिव्रताना जेवी दृढ प्रीति बंधाणी छे तेने मोटा मोटा जे बीजा मुक्त साधु ते संघाथे पण प्रीति थायज नहि एम कह्युं ते जेवे रूपे, ते केवे रूपे जाणवुं ?

३ उ० जेवे रूपे एटले छपैया धामने विषे धर्म भक्ति थकी श्रीजीमहाराजे मनुष्यरूपे प्रगट थइने दर्शन आप्यां छे ते रूप जाणवुं अने तेमने इष्टदेव जाणीने प्रीति बांधवी ने तेमना जेवी मोटा मुक्तने विषे पण प्रीति न करवी तो बीजा अवतारोने विषे तो करायज केम ? माटे श्रीजीमहाराजने विषेज इष्टदेवपणानी पतिव्रतापणे टेक राखवी. अने आज प्रतिमारूपे श्रीजीमहाराज साक्षात् दर्शन आपे छे ते मूर्तिने विषे पतिव्रतापणानी टेक राखवी अने मुक्तने विषे मुक्तपणानी बुद्धि राखवी.

४ प्र० पोताना इष्टदेवनी मरजी प्रमाणेज वर्ते एम कह्युं ते मरजी शी जाणवी ?

४ उ० श्रीजीमहाराजे गृही त्यागीने जे जे आज्ञा करी छे ते यथार्थ पाळे ते मरजी प्रमाणे वर्त्या कहेवाय.

५ प्र० आमां हनुमानजीए रामचंद्रजी पछी केटलाक अवतार थया तोपण रामचंद्रजीने विषेथी पतिव्रतानी टेक मुकी नहि एम कह्युं, त्यारे कोइ मुमुक्षुए अवतारने विषे पतिव्रतानी टेक राखी होय ने पछी तेने अवतारी मळे, ने ते अवतारने विषेथी पतिव्रतानी टेक मुकीने, अवतारीने विषे पतिव्रतानी टेक राखे तो तेने पतिव्रतापणामां खोट्य आवे के लाभ थाय ?

५ उ० हनुमानजीने जे रामचंद्रजीमां पतिव्रतानी टेक छे तेने मूढपणानो निश्चय कहेवाय, ते मूढपणाना निश्चयवाळा करतां, समझणना निश्चयवाळा ज्ञानीने श्रीजीमहाराजे वधारे वखाण्यो छे. अने एवो जे ज्ञानी ते तो, अवतार अवतारीनो भेद, सगुण निर्गुणपणुं, अन्वय व्यतिरेकपणुं,तथा पृथ्वीने विषे जे भगवानना अवतार थाय छे ते सर्वे रीतने जाणे.माटे ते सर्वे अवतारोना तथा मुक्तोना स्वामी एक श्रीस्वामीनारायणनेज जाणे. माटे तेने ज्यारे अवतारी मळे त्यारे अवतारने विषे निष्ठा करी होय ते मुकीने अवतारीने विषेज पतिव्रतानी टेक राखे, तेमां कांइ बाध नथी, एमां तो लाभज छे. केमजे सर्वेना पति

तो एक अवतारीज छे, माटे अवतारमांथी निष्ठा मुकीने अवतारीमां निष्ठा करवीज. अने ज्यां सुधी सर्व सुखना धाम एवा अवतारीनी उपासना न मळे त्यां सुधी सर्वोपरि सुख न मळे ए तो ज्यारे अवतारी मळे ने तेमने ओळखीने तेमनी उपासना करे त्यारेज सर्वोपरि सुखनी प्राप्ति थाय. ॥ २५० ॥

संवत् १८८४ ना श्रावण शुदि ६ छठने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ने कंठने विषे पुष्पनो हार पहेर्यो हतो ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे (१) श्रीमद्भागवतमां जेवुं भरतजीनुं आख्यान चमत्कारी छे तेवी तो कोइ कथा चमत्कारी नथी, केम जे भरतजी तो ऋषभदेव भगवानना पुत्र हता ने भगवानने अर्थे समग्र पृथ्वीनुं राज्य त्याग करीने वनमां गया हता. अने त्यां भगवाननुं भजन करतां थकां मृगलीना बच्चाने विषे पोताने हेत थयुं त्यारे ते मृगने आकारे पोताना मननी वृत्ति थइ गइ, पछी एवा मोटा हता तो पण ते पापे करीने मृगनो अवतार आव्यो, माटे अनंत प्रकारना पाप छे पण ते सर्वे पाप थकी भगवानना भक्तने भगवान विना बीजे ठेकाणे हेत करवुं ते अति मोटुं पाप छे, माटे जे समझु होय ने ते जो ए भरतजीनी वात विचारे तो अंतरमां अतिशे बीक लागे जे रखे भगवान विना बीजे ठेकाणे हेत थइ जाय एवी रीतनी अतिशे बीक लागे अने भरतजी ज्यारे मृगना देहनो त्याग करीने ब्राह्मणने घेर अवतर्या त्यारे भगवान विना बीजे ठेकाणे हेत थइ जाय तेनी बीके करीने संसारना व्यवहारमां चित्त दीधुंज नहि, ने जाणीने गांडानी पेठे वर्त्या अने जे प्रकारे भगवानमां अखंड वृत्ति रहे तेमज रहेता हवा. एटली वात करीने श्रीजी महाराज ठाकोरजीनी आरती थइ त्यां पधार्या. (१) इति वचनामृतम् ॥१७॥(२५१) १

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे, तेमां अमारा भक्तने अमारा विना बीजे ठेकाणे हेत रहे ते अति मोटुं पाप छे माटे बीजे ठेकाणेथी हेत टाळीने अमारे विषे अखंड वृत्ति राखवी एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे (१) बावत छे ?

१ प्र० भरतजीनुं आख्यान चमत्कारी कह्युं ते एमां शो चमत्कार हशे ?

१ उ० भरतजी राज्य समृद्धि मुकीने वनमां गया एटलुं बधुं त्याग कर्युं ने महा तप कर्युं तो पण एक मृगलीना बच्चामां हेत थयुं एटलामां त्रण जन्म धरवा पड्या एम वासनाये करीने महा दुःख थाय छे ते वार्ता सांभळीने सर्वने भय लागे जे वासना राखशुं तो महा दुःख थाशे अने बीजुं एमने भगवाननी स्मृति रही ते चमत्कारी वात जाणवी.॥२५१॥

संवत् १८८४ना श्रावण वदि १०दशमीने दिवस श्रीजीमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता अने

सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठने विषे पुष्पना हार पहेर्या हता ने पाघने विषे पुष्पना तोरा लटकी रह्या हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजना भत्रीजा जे रघुवीरजी तेमणे प्रश्न पुछ्यो जे [१]जेवी जाग्रत अवस्थाने विषे जीवनी स्थिति छे तेवी स्वप्न अवस्थाने विषे केम रहेती नथी ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जीव जेवो जाग्रत अवस्थामां रहे छे तेवोज स्वप्न अवस्थाने विषे रहे छे केम जे जाग्रत अवस्थामां जेवी वासना होय तेवीज स्वप्न अवस्थामां स्फुरे छे. (१) १

२ पछी निर्लोभानंद स्वामीए पुछयुं जे(२)हे महाराज! जाग्रत अवस्थामां तो कोइ दिवस दीठांय नहोय ने सांभळयां पण नहोय तेवां तेवां पदार्थ स्वप्नमां स्फुरी आवे छे तेनुं शुं कारण हशे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे न दीठां होय ने न सांभळ्यां होय एवां जे पदार्थ स्फुरे छे ते तो पूर्व जन्मनां जे कर्म तेनी वासनाए करीने स्फुरे छे.(२) २

३ पछी अखंडानंदस्वामीए पुछयुं जे (३) हे महाराज ! आ जीवने पूर्व जन्मनां जे कर्म ते कर्मनुं जोर भगवाननो भक्त थाय तोपण क्यां सुधी रहे छे? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ए जीवने ज्यारे सत्पुरुषनो संग थाय छे त्यारे जेम जेम समागम करतो जाय तेम तेम पूर्व कर्म संबंधी जे वासना ते जुनी थाती जाय छे, पछी एने जन्म मरण भोगवावे एवी ते वासना रहे नहि. जेम त्रण वर्षनी तथा चार वर्षनी जे जुनी डांगर थइ पछी ते जम्यामां तो आवे खरी पण वावे तो उगे नहि, तेम पूर्व कर्मनी वासना छे ते जीर्ण थाय त्यारे जन्म मरणने भोगवावे एवी रहे नहि. त्यारे कोइ एम पुछशे जे वासना जीर्ण थइ केम जणाय ? त्यां दृष्टांत जेम कोइक पुरुषो ढालो तरवारो लइने सामसामा लडाइ करता होय ते ज्यां सुधी सामसामा एमने एम उभा रहे त्यां सुधी ए बेनुं बळ बरोबर जणाय, अने ज्यारे एक जणानो पग पाछो हठयो त्यारे ए हार्यो कहेवाय. तेम भगवाननो जे भक्त होय तेने भगवान संबंधी ने विषय संबंधी जे संकल्प ते ज्यांसुधी तुल्यपणे वर्तता होय त्यांसुधी एम जाणवुं जे वासना बळवान छे, अने ज्यारे भगवान संबंधी जे संकल्प ते विषय संबंधी संकल्पने हठावी दे त्यारे एम जाणवुं जे वासना जीर्ण थइ गइ छे. (३) ३

४ पछी श्रीजीमहाराजे परमहंस प्रत्ये प्रश्न पुछ्यो जे [४] जे भगवानना भक्तने देहाभिमाननी निवृत्ति थइ होय ने पंचविषयनो अभाव थइ गयो होय ते बीजा सर्वे भक्तने केम कळ्यामां आवे ? पछी मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे हे महाराज ! आ तमारा प्रश्ननो उत्तर अमथी नहि थाय माटे तमे कृपा करीने करो. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या

जे भगवाननो भक्त गृहस्थाश्रमी होय अथवा त्यागी होय ने तेने देहाभिमान तथा पंचविषयमांथी आसक्ति तेतो निवृत्त थइ होय पछी परमेश्वरनी आज्ञाये करीने जेवी रीते घटे तेवी रीते देहाभिमान पण राख्युं जोइए अने जेम जेने योग्य होय तेम पंचविषय पण भोगव्या जोइए. त्यां दृष्टांत जेम अतिशे दुबळुं ढोर होय तेने हेठे लाकडां भरावीने ने शिंगडे पुंछडे झालीने उभुं करे ते ज्यां सुधी ए माणस झाला रहे त्यां सुधी उभुं रहे अने ज्यारे माणस मुकी दे त्यारे पृथ्वी उपर पडी जाय, तेम जे निर्वासनिक होय तेने तो ज्यां सुधी परमेश्वर आज्ञा करीने जेटली क्रियामां जोडे तेटलीज क्रियाने करीने रहेवा दे. जेम कोइक पुरुषना हाथमां तीरकमान्य होय ते ज्यां सुधी ए पुरुष खेंचे त्यां सुधी ए कमान्य करडी थाय अने ज्यारे ए पुरुष कमान्यने खेंचतो आळसी जाय, त्यारे ए कमान्य ढीली थइ जाय छे. तेम जे निर्वासनिक पुरुष छे ते तो जेटली परमेश्वरनी आज्ञा होय तेटलाज व्यवहारमां जोडाय पण आज्ञाथी बहार कांइ न करे, अने जे सवासनिक होय ते तो जे जे व्यवहारमां जोडाणो होय ते व्यवहारमांथी पोतानी मेळे छुटी शके नहि अने परमेश्वरनी आज्ञाये करीने पण छुटी शके नहि. एवी रीते निर्वासनिक पुरुष ने सवासनिक पुरुषनां लक्षण छे.(४) इति व०॥१८॥(२५२) ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (४) छे, तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे जीव जेवो जाग्रत अवस्थामां रहे छे तेवोज स्वप्नअवस्थाने विषे रहे छे. (१) बीजामां न दीठां होय ने न सांभळ्यां होय एवां पदार्थ ते पूर्वे जन्मना कर्मनी वासनाए करीने स्फुरे छे. (२) त्रीजामां सत्पुरुषनो समागम करतां करतां वासना जीर्ण थइ जाय ने जन्म मरण भोगवावे एवी रहे नहि अने ते वासना जाणवानी विक्ति कही छे. (३) चोथामां निर्वासनिक पुरुष अमारी आज्ञा होय एटलोज व्यवहारमां जोडाय अने सवासनिक अमारी आज्ञाये करीने पण छुटी शके नहि. (४) बाबतो छे.

१ प्र० चोथा प्रश्नमां घटित देहाभिमान राखवुं ने योग्य पंच विषय भोगववा एम कह्युं छे ते केवी रीते देहाभिमान राखवुं ? ने केवी रीते विषय भोगववा ?

१ उ० एवा जे निर्वासनिक भक्त ते गृहस्थाश्रममां रह्या होय तेने पोतानी आबरु प्रमाणे ने समृद्धि प्रमाणे सारां वस्त्र पहेरवां तथा वाहन राखवुं पण दरिद्रीना जेवो वेष न राखवो ते योग्यता प्रमाणे देहाभिमान राख्युं कहेवाय. अने घरमां परणीने स्त्री राखवी तथा खानपानादिक भोग शास्त्रनी मर्यादा प्रमाणे भोगववा ते पंच विषय कहेवाय. अने जे त्यागीना आश्रममां रह्या होय ने ते साधुताना गुणे करीने मान सत्कारने योग्य होय अथवा वृद्धावस्था होय अथवा विद्वान होय तेमने घटित सत्कार कोइक करे ते सत्कारने अंगीकार करवो ते योग्यता प्रमाणे देहाभिमान राख्युं कहेवाय, अने पोताने जेवुं तेवुं खावानी रुचि होय तो पण सर्वेना भेळुं जे मळे ते जमवुं पण काचा दाणा खाइने के फळ फुल खाइने के लोट फाकीने चलववुं नहि ते योग्यता प्रमाणे पंच विषय भोगव्या कहेवाय. ॥ २५२ ॥

संवत् १८८४ ना श्रावण वदि १३ तेरशने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर गादी तकिया नखावीने बिराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठने विषे मोगराना ने कर्णिकारना पुष्पना हार विराजमान हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि मंडळ तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे (१) जेणे संसारनो त्याग कर्यो होय एवा जे हरिभक्त तेने बे कुलक्षण छे ते आ सत्संगने विषे शोभवा देतां नथी. तेमां एक तो कामना ने बीजी पोताना कुटुंबीने विषे प्रीति ए बे कुलक्षण जेमां होय ते तो अमने पशु जेवो जणाय छे, तेमां पण जेने पोताना संबंधीमां बहु हेत होय तेनो तो अमारे अतिशे अवगुण आवे छे. माटे जेणे संसार त्याग कर्यो होय तेने तो लेशमात्र पण पोताना संबंधी साथे हेत न राख्युं जोइए, शा माटे जे पंचमहापाप छे ते थकी पण देहना संबंधीमां हेत राखवुं ते बहु पाप छे. माटे जे भगवाननो त्यागी भक्त होय तेने तो आ देह थकी ने देहना संबंधी थकी पोतानो चैतन्य जुदो जाण्यो जोइए, जे हुं तो आत्मा छुं अने मारे कोइ साथे लेश मात्र संबंध नथी, अने देहनां संबंधी छे ते तो चोराशी लाख जातनी हारे गण्यां जोइए, अने ते संबंधीने सत्संगी जाणीने तेनुं महात्म्य समजवा जाय तो एक तो संबंधनुं हेत ज होय, ने बळी तेनुं हरिभक्तपणानुं महात्म्य समजे, पछी भगवानने भगवानना भक्तथी संबंधीमां बहु हेत बंधाइ जाय छे. माटे जेमां स्वभाविक हेत रह्यु ज छे एवां जे पोतानां संबंधी तेने हरिजन जाणीने जो तेमां हेत करे तो तेनो जन्म खराब थइ जाय छे, अने वळी देहनो संबंधी न होय पण जे पोतानी सेवा चाकरी करतो होय तेमां पण स्वभाविक हेत थइ जाय छे, माटे जे समजु होय तेने पोतानी चाकरी करतो होय ने ते हरिभक्त होय तो पण तेने विषे हेत न राखवुं, जेम दुधने साकर होय तेमां सर्पे मोढुं नांख्युं होय तो ते पण झेर कहेवाय तेम जेमां सेवा चाकरी रूप स्वार्थ भळ्यो होय ने ते हरिभक्त होय तो पण तेमां पोतानुं स्वार्थ लेइने हेत न राखवुं. शा माटे जे पोताना जीवने ए थकी बंधन थाय छे अने जेम भगवाननुं चिंतवन थाय तेमज जेमां पोतानो स्वार्थ होय तेनुं पण चिंतवन थावा मांडे एज एने भगवानना भजनमां विघ्न कहेवाय, जेम भरतजीने मृगलीनुं बच्चुं तेज अविद्यारूप थयुं एवी रीते जे जे भगवानना भजनमां अंतराय थाता होय तेनो भगवानना भक्तने अविद्यारूप जाणीने अतिशे त्याग करवो. अने आ प्रकरणनी जे वार्ता तेने संतमंडळ तथा सांख्ययोगी हरिभक्त समस्त तेमने नित्य प्रत्ये कहेवी ने

सांभळवी. तेनी विगत जे जेना मंडळमां जे मोटेरो होय तेने नित्य प्रत्ये आ वात करवी अने बीजाने सांभळवी अने जे मोटेरो होय ने जे दिवस वात न करे तो तेने ते दिवस उपवास करवो. अने जे श्रोता होय ने ते श्रद्धाये करीने आ भगवाननी वात सांभळवा न आवे तो तेने पण उपवास करवो. अने आ वचनने अतिशे दृढ करीने राखजो. [१] इति वचनामृतम् ॥ १९ ॥ (२५३) १

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे काम-वाळा तथा कुटुंबीने विषे हेतवाळा त्यागी पशु जेवा छे. तेमां पण कुटुंबीने विषे हेत-वाळाने अमने अवगुण आवे छे माटे त्यागीने लेश मात्र पोताना संबंधी साथे हेत न राखवुं, अने पोतानी चाकरी करतो होय तेना उपर पण हेत न राखवुं. आ वात नित्य न कहे ने न सांभळे तेणे उपवास करवो, [१] बावत छे. ॥२५३॥

संवत् १८८४ ना श्रावण वदि अमावास्याने दिवस रात्रिने समे स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताने उतारे विराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी दिनानाथ भट्टे प्रश्न पुछयो जे (१) हे महाराज ! काळ तो भगवाननी शक्ति छे अने कर्म तो जीवे कर्यां होय ते छे पण स्वभाव ते वस्तुगते शुं हशे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जीवे जे पूर्वजन्मने विषे कर्म कर्यां छे ते कर्म परिपक्व अवस्थाने पामीने जीव भेळां एकरस थइ गयां छे, जेम लोढाने विषे अग्नि प्रवेश थइ जाय तेम परिपक्वपणाने पामीने जीव साथे मळी रह्यां एवां जे कर्म तेने ज स्वभाव कहीए अने तेनेज वासना तथा प्रकृति कहीए. (१) १

२ पछी मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछयो जे, (२) हे महाराज ! जीव साथे एक रसपणाने पामी रह्यां एवां जे कर्म एनेज स्वभाव तथा वासना करीने कहो छो ए वासनाने टाळ्यानो शो उपाय छे ? पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे ए वासना टाळ्यानो उपाय तो आत्मनिष्ठाये सहित श्रीकृष्ण भगवानना भक्ति करवी एज भासे छे. अने जो आत्मनिष्ठा विना एकलीज श्रीकृष्ण भगवाननी भक्ति होय तो जेम भगवानमां हेत करे तेम बीजा पदार्थमां पण हेत थइ जाय माटे आत्मनिष्ठा सहित भक्ति करवी एज वासना टाळ्यानो उपाय छे. अने आत्मनिष्ठावाळाने पण कोइक भुंडा देशकाळादिकने योगे करीने अज्ञानीनी पेठेज क्षोभ थइ आवे पण झाझीवार टके नहि. (२) २

इति वचनामृतम् ॥ २० ॥ (२५४)

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे परिपक्वपणाने

पामीने जीव साथे मळी रह्यां एवां जे कर्म तेनेज स्वभाव, वासना, ने प्रकृति कही छे. (१) अने बीजामां आत्मनिष्ठाये सहित भक्ति करवी ए वासना टाळयानो उपाय कह्यो छे.(२)

१ प्र० बीजा प्रश्नमां आत्मनिष्ठावाळाने भुंडा देशकाळादिकने योगे करीने क्षोभ एटले मोह थइ आवे एम कह्युं अने (प्र० ६१ ना पहेला प्रश्नमां) आत्मनिष्ठावाळाने धिरज डगती नथी एम कह्युं ते केवी रीते समझवुं ?

१ उ० (प्र० ६१ मां) दृढ आत्मनिष्ठावाळानी वात कही छे अने आमां सामान्य आत्मनिष्ठावाळानी वात कही छे. ॥ २५४ ॥

संवत् १८८४ ना भादरवा शुदि ९ नवमीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर गादी तकिया नखावीने विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने कंठने विषे चमेलीना पुष्पना हार विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ समस्त तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्रीजीमहाराजे गोपाळानंदस्वामीने ने शुकमुनिने प्रश्न उत्तर करवानी
१ आज्ञा करी. पछी शुकमुनिये गोपाळानंदस्वामीने प्रश्न पुछयो जे, (१) भगवाननी जे भक्ति छे तेणे करीने जीव भगवाननी मायाने तरे छे ने अक्षरधामने पामे छे, अने जे धर्म छे तेणे करीने तो देवलोकनी प्राप्ति थाय छे ने ते पुन्यने अंते पाछो देवलोकमांथी ते जीव पडी जाय छे. अने भगवानना जे अवतार थाय छे ते तो ज्यारे ज्यारे धर्मनी ग्लानि थाय छे त्यारे त्यारे ते धर्मने स्थापन करवाने अर्थे थाय छे, पण भक्तिना स्थापनने अर्थे थाता नथी,अने जे प्राप्ति भक्ति वडे थाय छे ते प्राप्ति धर्मे करीने जणाती नथी. माटे भक्ति सरखी किये प्रकारे धर्ममां मोटाइ आवे ए प्रश्न छे ? पछी गोपाळानंदस्वामीए ए प्रश्ननो उत्तर करवा मांड्यो ते जे जे वात करी तेमां धर्म ते भक्तिनुं अंगरूप थइ जाय पण कोइ रीते भक्ति सरखी धर्ममां गोरवता आवे नहि. पछी ए वार्ता सांभळीने श्रीजीमहाराज अतिशे हसता हवा. अने एम बोल्या जे ए प्रश्ननो उत्तर घणो कठण छे माटे ल्यो अमे एनो उत्तर करीए. जे ए धर्म तो बे प्रकारनो छे. एक निवृत्ति धर्म छे ने बीजो प्रवृत्ति धर्म छे ते ए बे प्रकारनो धर्म ते भगवानना संबंधे सहित पण छे ने भगवानना संबंधे रहित पण छे. तेमां भगवानना संबंधे सहित जे धर्म छे ते तो नारद सनकादिक शुकजी ध्रु प्रह्लाद अंबरीष ए आदिक जे भक्त जन तेनो छे, अने ए धर्मनेज भागवत धर्म कहे छे तथा एकांतिक धर्म कहे छे. अने ते धर्म ने भक्ति तो बे नथी एकज छे. अने जे धर्म स्थापनने अर्थे भगवानना अवतार थाय छे ते पण एज धर्मना स्थापनने अर्थे थाय छे, अने जे केवळ वर्णाश्रमना धर्म छे ते तो भागवत धर्म थकी अतिशे गौण छे,अने भागवत धर्मे करीने तो जीव जे ते भग-

त्राननी मायाने तरीने पुरुषोत्तमना धामने पामे छे. माटे भागवत धर्म ने भक्ति एनुं
तो एक सरखुं गौरवपणुं छे अने प्राप्ति पण एक सरखीज छे एवी रीते भक्तिनी ने
धर्मनी सरखी मोटाइ छे.[१]अने केवळ जे वर्णाश्रम धर्म ते तो ते थकी अतिशे दुबळा १
छे ने तेनुं फळ पण नाशवंत छे. [२] अने अमारो पण मत ए छे जे भगवान तथा २
भगवानना एकांतिक भक्त ते विना कोइ संघाथे हेत करीए तो पण थातुं नथी. अने
अमने एम जणाय छे जे जडभरत, शुकदेव, दत्तात्रेय, ऋषभदेव भगवान एना सरखो
अमारा जीवनो ढाळो छे माटे अमने पण वन पर्वत ने जंगल एयांज रहेवुं गमे छे,
पण मोटां मोटां शहेर पाटण होय एमां रहेवुं गमतुं नथी एवो अमारो सहज स्वभाव
छे. तो पण भगवान तथा भगवानना भक्तने अर्थे लाखो माणसना भीडामां रहीए
छइए तो पण अमारे जेवुं वनमां रहीए ने निर्बंध रहेवाय तेवुंज रहेवाय छे. अने अमे
पोताने स्वार्थे करीने लाखो माणसमां नथी रहेता अमे तो भगवान तथा भगवानना
भक्तने अर्थे माणसना भीडामां रहीए छइए अने भगवानना भक्तने अर्थे गमे तेटली
प्रवृत्ति करवी पडे तो पण अमे एने निवृत्ति जाणीए छइए. अने भगवाननो जे भक्त होय
ने ते गमे तेटला वांकमां आव्यो होय तो पण अमारे तेनो अवगुण आवतो नथी,
अमे तो एम जाणीये छइए जे भगवानना भक्तमां जो कोइक स्वभाविक अल्प दोष
होय तो पण ते जोवा नहि अने ए दोष जो पोतामां होय तो तेने टाळवानो उपाय
करवो, पण भगवानना भक्तमां ए जात्यनो दोष होय तो पण ए हरिजननो अवगुण
लेवो नहि, अने हरिभक्तनो तो अवगुण ज्यारे मोटा वर्त्तमानमां चुकी जाय त्यारे
लेवो, ने बीजा अल्प दोष होय ते सारु भगवानना भक्तनो अवगुण लेवो नहि. (३) ३
ने भगवानना भक्त होय तेने वादविवादे करीने जीतीने राजी थावुं नहि एसाथे तो
हारीनेज राजी थावुं, ने जे वादविवादे करीने भगवानना भक्तने जीते छे ते तो पंच-
महापापना जे करनारा तेथी पण बधु पापी छे. अने अम आगळथ जे कोइ भगवा-
नना भक्तनुं घसातुं बोले ते तो अमने दीठोज गमे नहि, ने जे भगवानना भक्तनो
अवगुण लेतो होय तेना हाथनुं तो अन्नजळ पण भावे नहि, अने देहनो संबंधी होय
पण जो भगवानना भक्तनो अवगुण ले तो ते साथे पण अतिशे कुहेत थइ जाय. [४] ४
आ माटे जे आपण तो आत्मा छइए ते आपणे देहना संबंधी साथे शा सारु हेत
जोइए, आपणे तो सत्तारूपे रहीने भगवान तथा भगवानना भक्त संघाथे हेत कर्युं
छे पण देहबुद्धिये करीने हेत कर्युं नथी. ने जे सत्तारूप रही नहि शके तेने तो काम,
क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सरादिक जे शत्रु ते पीड्या विना रहेज नहि, माटे जे
आत्मसत्तारूप थइने भक्ति नहि करता होय तेनुं रूप तो आ सत्संगमां उघाडुं थवा

विना रहेज नहि. (५) आ माटे जे आ सत्संग छे ते तो अलौकिक छे ने जेवा श्वेत- ५
द्वीप, वैकुंठ गोलोक तेने विषे भगवानना पार्षद छे, ते जेवाज आ सर्वे सत्संगी छे
ने अमे तो जेवा सर्वथी पर जे दिव्यधाम तेने विषे भगवानना पार्षद छे, ते थकी अ-
धिक जो आ सत्संगीने न जाणता होइए तो अमने भगवान तथा भगवानना भक्तना
सम छे. (६) अने जेने ज्ञान, वैराग्य, धर्मने भक्ति ए अतिशे दृढ नहि होय ते तो ६
अंते जातां ढीलो पड्या विना नहिज रहे. जेम मीणे पाएल दोरो होय ने ते शियाळामां
ने चोमासामां तो अकड रहे पण ज्यारे उनाळो आवे त्यारे जरूर ढीलो थइ जाय.
तेम अहियां हरिभक्तने सर्वे प्रकारे सुख रहे ने सत्संगमां पण सन्मान थातुं रहे, ते
रूप जे चोमासुं ने शियाळो तेमां तो ज्ञान, वैराग्य, धर्म ने भक्ति ते सुधां आकरां
जणाय पण ज्यारे सत्संगमां अपमान थाय ने देहे करीने पण दुःखी थाय ते रूप जे
उनाळो, तेमां तो ज्ञान, वैराग्य, धर्म ने भक्ति ते मीणे पाएल दोरानी पेठे ढीलां थइ
जाय. तो पण अमे तो तेनो त्याग करता नथी पण एज एनी मेळे ओशीयाळो थइने
सत्संगमांथी पाछो हठी जाय छे. पछी ते सत्संगी कहेवातो होय तो पण तेने अंतरे
सत्संग संबंधी सुख न रहे. माटे सत्संग करवो तेतो आत्मसत्तारूप थइने अति दृढपणे
करवो पण देह तथा देहना संबंधीने संघाथे हेत रही जाय एवो सत्संग करवो नहि.
जेम सोनानो दोरो कर्यो होय ते छो ये ऋतुमां सरखो रहे पण उनाळाने तापे करीने
ढीलो थाय नहि. तेम जेनो दृढ सत्संग होय तेने गमे तेवां दुःख आवी पडे तथा गमे
तेटलुं सत्संगमां अपमान थाय पण तेनुं कोइ रीते सत्संगमांथी मन पाछुं हठे नहि. एवा
जे दृढ सत्संगी वैष्णव छे तेज अमारे तो सगा वहाला छे, ने तेज अमारी नात छे, ने
आ देहे करीने पण एवा वैष्णव भेळुंज रहेवुं छे ने श्रीकृष्ण भगवानना धाममां पण एवा
वैष्णव भेळुंज रहेवुं छे एम अमारो निश्चय छे, ने तमारे पण एमज निश्चय राख्यो
जोइए, आ माटे जे तमे सर्वे अमारे आश्रित थया छो माटे अमारे तमने हेतनी वात
होय ते कही जोइए, ने मित्र पण तेनेज जाणवो जे पोताना हेतनी वात होय ते दुःख
लगाडीने पण कहे एज मित्रनुं लक्षण छे,ते समजी राखजो.(७)इ०व०॥२१॥ (२५५) ७

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारा संबंधे सहित जे निवृत्ति ने प्रवृत्ति धर्म ते भागवत धर्म छे ते धर्मने भक्ति ए बे एकज छे ए धर्म स्थापन करवाने अर्थे अमे प्रगट थया छीए ते भागवत धर्मे करीने जीव अमारा धामने पामे छे. (१) अने केवळ वर्णाश्रम धर्मनुं फळ नाशवंत छे. (२) अने अमने वन पर्वत जंगलमांज रहेवुं गमे छे तो पण अमारा भक्तने अर्थे माणसना भीडामां रहीए छीए ने अमारा भक्तने अर्थे प्रवृत्ति करवी ते निवृत्ति जाणीए छइए, अने अमारा भक्त-

नो अल्प दोष जोइने अवगुण नलेवो अने मोटा वर्त्तमानमां चुके त्यारे अवगुण लेवो. (३) अने अमारा भक्तने वादे करीने जीते ते पंचमहापापीथी वधु पापी छे अने अमारा भक्तनुं घसातुं बोले ते अमने दीठो गमतो नथी ने अमारा भक्तनो अवगुण ले तेना हाथनुं अन्नजळ भावे नहि. (४) अने देहना संबंधी साथे हेत न राखवुं सत्तारूप थइने अमारी साथे हेत करवुं जे सत्तारूप नहि रही शके तेने कामादिक शत्रु पीडशे अने अमारा दिव्य अक्षरधामने विषे अमारा पार्षद छे तेथी अधिक आ सत्संगी एटले आ गोपाळानंदस्वामी छे. (६) अने जेने ज्ञान, वैराग्य, धर्म ने भक्ति अति दृढ नहि होय ते अंत्ये ढीलो पडशे तो पण अमे तेनो त्याग करता नथी पण एज घनी मेळे सत्संगमांथी पाछो पडी जाय छे. अने जे दृढ सत्संगी छे तेना मेळुं आंहि तथा अक्षरधाममां रहेवुं एवो निश्चय राखवो. (७) बावतो छे.

१ प्र० (१) पहेली बाबतमां श्रीजीमहाराज अतिशे हसता हवा एम कह्युं ते अतिशे हसवानुं शुं कारण हशे ?

१ उ० आ प्रश्न अक्षर ओरडीमां जीवुबा, लाडुबा अने राजबाए श्रीजीमहाराजने पुछेलो तेनो उत्तर श्रीजीमहाराजे करेलो ते शुकस्वामीए सांभळेलो ते प्रश्न श्रीगोपाळानंदस्वामीने शुकस्वामीए पुछ्यो तेथी श्रीजीमहाराज हसता हवा जे अमारा पासेथी सांभळीने मोटा मुक्त साथे विवाद करे छे ए हसवानुं कारण छे.

२ प्र० बीजी बाबतमां श्रीजीमहाराजे जडभरतादिकना सरखो अमारा जीवनो ढाळो छे एम कह्युं ते जीव तो जे मायानी अंदर होय ने जेने माथे जन्म मरण होय तेनेज कहेवाय ने श्रीजीमहाराजतो जीव, माया, ईश्वर, ब्रह्म, अक्षर ने मुक्तथी पण पर ने दिव्य चैतन्यघन मूर्ति छे छतां पोताने जीव शब्दथी केम कह्या हशे ?

२ उ० जडभरत आदिकने जेम वस्तिमां रहेवुं गमतुं नहि तेम अमने पण वस्तिमां रहेवुं गमतुं नथी ते रुचि बतावी छे. अने जीवाडे ते जीव कहेवाय ते श्रीजीमहाराज जीव ईश्वरादिक सर्वेने सुखदाता ने प्रकाशक ने सचेतन करे छे एवी रीते सर्वेने जीवाडे छे माटे जीव शब्दे कह्या छे आनो विस्तार (म० ५६ ना पहेला प्रश्नोत्तरमां) छे.

३ प्र० (६ छठ्ठी बाबतमां) श्वेतद्वीप, वैकुंठ, गोळोकने विषे भगवानना पार्षद छे ते जेवाज आ सर्व सत्संगी छे एम कह्युं अने पछीथी सर्वथीपर जे दिव्य अक्षरधाम तेने विषे जे पार्षदो रह्या छे एम कह्युं ते केवी रीते समजवुं ?

३ उ० त्यारे श्रीजीमहाराज तथा तेमना मुक्तो जीवोना कल्याणने अर्थे आ पृथ्वी उपर पधारे त्यारे गोळोकादिक सर्वे धामोना पार्षद तथा अधिपति ते पोताना कल्याणने अर्थे आ लोकने विषे मनुष्यदेह धरीने सत्संगमां आवे छे. ते सर्वेनी तथा अक्षरधामना मुक्तोनी सभा मेळी होय ते गोळोकादिकने विषेथी आवेलाने ते धामोना पार्षद कह्या छे अने अ[illegible]धाममांथी आवेला मुक्तने ते सभाओथी अधिक कह्या छे.

४ प्र० दिव्यधामने विषे अमारा पार्षदो छे तेथी अधिक जो आ सत्संगीने न जाणता हो-

इए तो अमने अमारां तथा अमारा भक्तना सम छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते दिव्य धामतो पोताना प्रकाशरूप अक्षरधामने कह्युं छे पण ते अक्षरधाममां रहेनारा पार्षद ए-टले मुक्तथी अधिक कह्या ते अधिक एटले केवा जाणवा अने अधिक कोने कह्या हशे ?

४ उ० श्रीजीमहाराजना धामने विषे श्रीजीमहाराजने सन्मुख परम एकांतिक मुक्त श्रीजी-महाराजनी हजुरमां रह्या छे तेथी पण श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां रहेनारा अनादि मुक्त अधिक छे ते अनादि मुक्तोने अधिक कह्या छे ने आ सत्संगी कह्या ते श्रीगोपाळानंद स्वामीना सन्मुख हस्त करीने कह्या छे जे आमनी साथे तमे संवाद करोछो तेतो अ-मारी मूर्तिमां रहेनारा अमारा अनादि मुक्त छे एम शुकमुनिने ठपको दीधो छे.

५ प्र० दढ सत्संगी वैभव छे तेज अमारे तो सगावाळा छे ने एज अमारी नात्य छे ने आ देहे करीने पण एमना भेळुंज रहेवुं छे अने श्रीकृष्णभगवानना धाममां पण एवा वैभव भेळुंज रहेवुं छे, एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते वैभव कोने कह्या हशे ? अने सगावहाला तेनो शो अर्थ जाणवो? अने नात्य केवी रीते जाणवी ? अने श्रीकृष्णभगवान कोने कह्या छे?

५ उ० पोताना मुक्तोने वैभव नामे कह्या छे, अने मुक्त जेवा बीजा कोइ वहाला नथी माटे सगावहाला कह्या छे, अने ए मुक्त पोताना साधर्म्यपणाने पाम्या छे माटे पोतानी नात्य कही छे, अने अक्षरधाममां पोताना मुक्तोए सहित सदाय भेळा रहे छे अने अ-क्षरधाममां रह्या थकाज जीवोना कल्याण करवाने अर्थे आ लोकने विषे दर्शन आपे छे, तो पण सदाय भेळाने भेळाज रहे छे पण कोइ काळे जुदा पडता नथी तेथी भेळा रहेवुं छे एटले भेळा रहीए छइए एम कह्युं छे, अने श्रीकृष्णनामे पोताने कह्या छे.।।२५५।।

संवत् १८८४ ना भादरवा वदि ४ चोथने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महा-राज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी ओसरीए वि-राजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पाघने विषे धोळा पुष्पना तोरा झुकी रह्या हता अने कंठने विषे धोळा पुष्पना हार विराजमान हता ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने परमहंस दुकड सरोदा लेइने पोतानी आगळ विष्णुपद गावता हता ते समयमां श्रीजीमहाराज अंतर सन्मुख दृष्टि करीने विराजमान हता.

१ पछी श्रीजीमहाराज एम बोल्या जे (१) जेवुं प्रेमलक्षणा भक्तिये युक्त आ कीर्तनने विषे हरिजनतुं अंग कह्युं छे एवुं तो झीणाभाइनुं अंग छे तथा पर्वतभाइ ने मुळजी एनां पण एवां अंग हतां माटे अमे अंतर सन्मुख दृष्टि करीने विचारता हता अने बीजा पण सत्संगमां एवा अंगवाळा हशे, अने जेने प्रेमलक्षणा भक्तिनुं अंग आवे तेने पंच विषयने विषे प्रीति टळी जाय छे अने आत्मनिष्ठा राख्या विनानीज रहे छे. (१) १

२ पछी मुक्तानंदस्वामीये पुछ्युं जे (२) नरसिंह महेतो तो सखीभावे श्री कृष्ण
भगवानने भजता ने केटलाक नारदादिक भगवानना भक्त छे ते तो दास भावे करीने
भगवानने भजे छे ए बे प्रकारना भक्तमां केनी भक्ति श्रेष्ठ जाणवी ? पछी श्रीजीमहा-
राज बोल्या जे नरसिंह महेतो गोपियो ने नारद सनकादिकनी भक्तिमां बे प्रकार नथी
एतो एक प्रकारज छे. अने देह तो पुरुषनो ने स्त्रीनो बेय मायिक छे ने नाशवंत छे
अने भजननो करनारो जे जीवात्मा ते पुरुष पण नथी ने स्त्री पण नथी ए तो सत्ता-
मात्र चैतन्य छे. (२) ते देह मुकीने भगवानना धाममां जाय छे त्यारे जेवी भगवाननी २
मरजी होय तेवो तेनो आकार बंधाय छे अथवा ए भक्तने जेवो सेवानो अवकाश आवे
तेवो आकार धरीने भगवाननी सेवा करे छे, (३) अने जे भगवाननो भक्त होय तेने ३
जेम भगवानमां प्रीति होय तेमज जो धन स्त्री आदिक पदार्थमां प्रीति थइ जाय तो ए
भगवाननो दृढ भक्त कहेवाय नहि, अने परमेश्वरनो भक्त थइने भक्ति करतां थकां जे
पाप करे छे ने सत्संगमांज कुवासना बांधे छे ते पाप तो एने वज्रलेप थाय छे. अने
कुसंगमां जइने परस्त्रीनो संग करे ते थकी पण सत्संगमां भगवानना भक्त उपर कुदृष्टि
ये जोवाणुं होय तेने तो तेनुं वधु पाप छे. माटे जेने भगवानमां दृढ प्रीति करवी होय
तेने तो कोइ जातनुं पाप पोतानी बुद्धिमां रहेवा देवुं नहि शा माटे जे सत्संगी हरिजन
छे ते तो जेवां पोतानां मा बोन दिकरी होय तेवां छे. अने आ संसारने विषे अतिशे
जे पापी होय ते पोताना गोत्रनी स्त्रियोने विषे कुदृष्टि राखे छे माटे जे हरिजनने विषे
कुदृष्टि राखे ते अतिशे पापी छे, ने तेनो कोइ काळे छुटको थाय नहि, माटे जेने र-
सिक भक्त थावुं होय तेने आवी जातनुं पाप तेनो त्याग करीने पछी रसिक भक्त
थावुं. (४) अने सर्व पापमांथी मोटुं पाप ए छे जे भगवान ने भगवानना भक्तने विषे ४
दोष बुद्धि थाय ने ते दोषबुद्धिये करीने भगवान ने भगवानना भक्त संघाथे वैर बंधाइ
जाय माटे कोटी गौहत्या करी होय तथा मद्य मांसनुं भक्षण कर्युं होय तथा असंख्य गु-
रुस्त्रीनो संग कर्यो होय ते ए पाप थकी तो कोइ काळे छुटको थाय, पण भगवानने
भगवानना भक्तनो जे द्रोही तेनो तो कोइ काळे ए पाप थकी छुटको न थाय. अने ते
पुरुष होय तो राक्षस थइ जाय ने स्त्री होय तो राक्षसी थइ जाय पछी ते कोइ जन्ममां
असुर मटीने भगवाननो भक्त थातो नथी. (५) अने जेणे भगवानना भक्तना द्रोह ५
आदर्यो होय ने परिपक्व द्रोही न थयो होय तेनी तो द्रोहबुद्धि मोटा पुरुषने संगे
करीने टळे छे, पण जेनी परिपक्व द्रोहबुद्धि थइ होय तेनी तो कोइ योगे करीने द्रोह
बुद्धि टळे नहि, अने द्रोह कर्यानी साधनदशामां होय ने एम जाणे जे भगवानने भ-
गवानना भक्तनो में द्रोह कर्यो ए मोटुं पाप कर्युं माटे हुं तो अतिशे नीच छुं अने भ-

पवान ने भगवानना भक्त ते तो बहु मोटा छे एवी रीते जे भगवानने ने भगवानना भक्तनो गुण ले अने पोताने विषे दोष जुवे, तो गमे तेवां मोटां पाप कर्यां होय तोपण ते नाश पामे छे अने भगवान पोताना भक्तना द्रोहना करनारा उपर जेवा कुराजी थाय छे ने दुःखाय छे तेवा कोइ पापे करीने दुःखाता नथी. अने ज्यारे वैकुंठ लोकमां जय विजये सनकादिकनुं अपमान कर्युं त्यारे भगवान तत्काळ सनकादिक पासे आव्या ने सनकादिक प्रत्ये एम बोल्या जे तम जेवा जे साधु छे तेनो जे द्रोह करे ते तो मारा शत्रु छे, माटे तमे जय विजयने शाप दीधो ए बहु सारुं कर्युं अने तम जेवा भगवदि ब्राह्मण तेनो जो मारो हाथ द्रोह करे तो ते हाथने पण हुं कापी नाखुं तो बीजानी शीवात कहेवी ! एवी रीते वैकुंठनाथ भगवान सनकादिक प्रत्ये बोल्या ने जय विजय हता, ते भगवदिना अपराधरूपी जे पाप तेणे करीने दैत्य थया. एवी रीते जेणे भगवाननना भक्तनो द्रोह कर्यो छे ते सर्वे मोटी पदवीमांथी पडी गया छे ते शास्त्रमां वात प्रसिद्ध छे. माटे जेने पोतानुं रुडुं इच्छवुं तेने भगवानना भक्तनो द्रोह करवो नहि ने जो जाणे अजाणे कांइक द्रोह थइ गयो होयतो पगे लागी स्तुति करीने जेम ते राजी थाय तेम करवुं. (६) इति वचनामृतम् ।। २२ ।। (२५६) ६

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे, तेमां पहेलुं कृपावाक्य छे, तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे जेने प्रेमलक्षणा भक्तिनुं अंग आवे तेने पंच विषयने विषेथी प्रीति टळी जाय छे ने आत्मनिष्ठा राख्या विनानीज रहे छे. (१) ने बीजामां सखी भावे अथवा दास भावे अमने भजे ते वेयनी भक्ति एकज छे, (२) अने अमारो भक्त देह मुकीने धाममां जाय छे त्यारे अमारी कां भक्तनी मरजी होय तेवो आकार बंधाय छे. (३) अने सत्संगी बाइ उपर कुदृष्टिए जुवे ते अतिशे पापी छे. (४) अने अमारा भक्तनो द्रोह करे ते राक्षस थइ जाय छे. (५) अने परिपक्व द्रोही न थयो होय तेनी द्रोहबुद्धि मोटा पुरुषने संगे टळे छे, अने परिपक्व द्रोहीनी कोइ योगे द्रोहबुद्धि टळती नथी ने अमारा भक्तना द्रोह करनार उपर अमारो अतिशे कुराजीपो थाय छे, ने तेणे अमने अतिशे वश कर्या होय ने अमारे विषे अतिशे एकता थइ होय ने जेम हाथ सेवा करे तेम हाथनी पेठे सेवा करतो होय तो पण तेनो त्याग करी दइए. अने जेनो द्रोह थयो होय ते राजी थाय तेम करवुं. [६] वातनो छे.

१ प्र० (३ बीजा प्रश्नमां) अमारी वा भक्तनी मरजी प्रमाणे आकार धरीने अमारी सेवामां रहे छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते श्रीजीमहाराजनी मरजीथी केवो आकार बंधातो हशे ? ने पोते केवो आकार धरतो हशे ? ने धाममां सेवा शी हशे ?

१ उ० जेने विश्वासनुं अंग होय ते ज्ञान मार्ग समझतो न होय जे भगवानना धाममां केवी रीते रहेवातुं हशे तेने भगवान पोता जेवो मूर्तिमान करे छे ते भगवाननी इच्छाये आकार बंधायो कहेवाय अने जेने ज्ञाननुं अंग होय ते एम जाणे जे भगवानना धाममां भगवाननना सरखा आकारवाळा मुक्त रह्या छे तेवा मूर्तिमान आपण थइशुं एम जाणे तेने पण

भगवान पोता जेवो मूर्तिमान करे ए भक्तनी इच्छाथी बंधायो कहेवाय, ने श्रीजीमहाराजने विषे दासपणुं राखवुं ते सेवा कही छे. ॥ २५६ ॥

संवत् १८८५ ना आसो शुदि १५ पुनमने दिवस रात्रिने समे स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां पोताना उताराने विषे फळीयानी वच्चे ढोलियो ढळावीने ते उपर बिराजमान हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज कृपा करीने सर्वे हरिजन प्रत्ये बोलया जे (१) जे भगवाननो भक्त होय ते निरंये भगवाननी मानसी पूजा करे ते मानसी पूजा करवानी एम विधि छे जे, उनाळो शियाळो ने चोमासुं ए त्रणे ऋतुने विषे नोखी नोखी मानसी पूजा करवी.नेमां उनाळाना चार महिना सुधी तो एम पूजा करवी जे सारुं टाढुं सुगंधीमान पवित्र जळ होय तेणे करीने भगवानने प्रथम नवरावदा, ने पछी धोयेलो धोळो खेस सुंदर झीणोने घाटो होय ते पहेरवा आपवो ने पछी सुंदर आसन उपर विराजमान एवा जे भगवान तेना अंग अंगने विषे सुंदर मळियागर चंदन घसीने वाटकामां उतारी राख्युं होय ते चर्चवुं. ते प्रथम तो ललाटने विषे चर्चीने ललाटने सारी पेठे निरखवुं तथा हाथने विषे चर्चीने हाथने सारी पेठे निरखवा,तथा हृदय उदर साथळ पिंडी ए आदिक जे अंग तेने विषे ते चंदननुं लेपन करी करीने ते ते अंगने निरखवां तथा चरणारविंदनी उपर ने तळे सुंदर कुंकुम चोपडवुं ने ते चरणारविंदने निरखवां. पछी मोगरा चमेली गुलाब चंपो ए आदिक जे सुगंधीमान पुष्प तेना हार तथा कंकण बाजुबंध टोपी ए आदिक जे आभूषण ते ते पुष्पनां पहेरावां. अने मोगराना पुष्प जेवुं धोळुं ने झीणुं ने बहु भारे नहि एवुं वस्त्र मस्तकने विषे धरावुं तथा धोळी झीणी ने हलकी एवी जे सुंदर पछेडी ते ओढाडवी पछी ते भगवानने मळवुं ते एकवार मळवुं बे वार मळवुं जेवुं पोताने हेत उपजे तेम मळवुं,तथा भगवाननां चरणारविंद पोतानी छातीमां लेवां तथा मस्तक उपर धारवां,अने ते मळने करीने जे भगवानना अंगनुं चंदन पोताना अंगमां वळगे तथा भगवानना चरणारविंदने पोतानी छातीमां ने मस्तक उपर धार्यां होय तेणे करीने जे कुंकुम वळगे तथा पुष्पना हारनां चिन्ह इत्यादिक जे जे पोताना अंगमां वळगे,तेने धारवुं कहेतां एम जाणवुं जे भगवाननुं प्रसादी चंदन कुंकुम ने हार ते मारा अंगमां अडयां छे. अने शियाळाना चार महीना सुधी तो एम पूजा करवी जे प्रथम तो भगवानने उने जळे करीने नवरावदा, ने पछी धोळो खेस पहेरवा आपवो ने पछी ढोलियाउपर मखमलनुं गादलुं पाथरीने ते उपर धोळो ओछाड ओ-

छाटीने ते उपर भगवानने विराजमान करवा. ने पछी सुरवाळ पहेरावदो तथा डगली पहेरावबी तथा सोनेरी तारावाळो भारे कसुंबी रेटो मस्तके बंधाववो तथा केडे भारे रेटो बंधाववो तथा खभे भारे रेटो धरावबो तथा हीरा मोती सुवर्ण ठाळनां जे भात्य भात्यनां घरेणां ते अंग अंगने विषे धरावबां तथा मोतीनी माळा पहेरावबी. अने वस्त्र पहेरावीने तथा आभूषण पहेरावीने भगवानना जे तेते अंग तेने सारी पेठे निरखवां अने भगवानना ललाटने विषे एक कुंकुमनो चांदलो करवो. अने चोमासाना चार महीना सुधी एम पूजा करवी जे, जाणीये भगवान कोइक गाममां आव्या ते धोळां वस्त्र सर्वे पलळी गयां छे, अथवा नदीये परमहंसे सहित नावा पधार्या हता त्यांथी पलळीने आव्या छे पछी ते पलळेलां जे वस्त्र तेने उतरावीने सर्वे कसुंबल वस्त्र पहेरवा आपवां, अने ललाटने विषे पीळुं जे केसर चंदन तेनुं लेपन करवुं अने उनाळो होय त्यारे चोगान जायगामां तथा फुलवाडीमां भगवान विराजमान छे एवी रीते भगवानने धारवा अने शियाळो ने चोमासुं होय त्यारे कोइक सारी मेडीने उपर भगवान विराजमान छे अथवा घरने माहेली कोरे विराजमान छे एवी रीते भगवानने धारवा अने भगवानने जमवा केइ वस्तु आपवी तो जे भक्ष भोज्य लेह्य चोस्य पोताना मनमां खावाने गमतां होय तेवां भगवानने अर्थे चिंतववां, अने तेवां भगवानने न भावतां होय तोपण पोताने गमतांज भोजन भगवानने अर्थे चिंतववां. अने बीजा जे धुप दिप आरती ए आदिक उपचार ते यथायोग्य भगवानने अर्पण करवा, एवी रीते त्रणे ऋतुमां भिन्न भिन्न पूजा करे तो ते भक्तने भगवानने विषे हेतनी वृद्धि थाय छे ने तेना जीवने बहु समास थाय छे, माटे जेणे आ वात सांभळी छे ते राखजो ने नित्ये आवी रीते भगवाननी मानसी पूजा करजो ने आवी वात अमे कोइ दिवस करी नथी. (१) १

२ अने वळी श्रीजीमहाराजे एक बीजी वात करी जे (२) ज्यारे भगवानने भगवानना भक्त ते पोतानी उपर राजी थाय त्यारे ते भक्तने एम विचारवुं जे मारां मोटां भाग्य जे मारी उपर भगवान ने भगवानना भक्त राजी थया, अने शिक्षाने अर्थे भगवान ने भगवानना भक्त पोताने वढे त्यारे पण एम विचारवुं जे मारां मोटां भाग्य जे मुने भगवान ने भगवानना भक्त वढ्या, जेणे करीने मारामां अवगुण हशे ते जाशे. एवी रीते वढे तो पण राजी थावुं पण वढे त्यारे मनमां शोक न करवो ने कचवावुं नहिं, ने पोताना जीवने अति पापी न मानवो ने राजी रहेवुं आ वार्ता पण राख्या जेवी छे.(२) इति वचनामृतम् ॥२३॥ (२५७) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (२) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारा भक्तोए अमारी मानसी पूजा त्रणे ऋतुने विषे भिन्न भिन्न प्रकारे करवी तेणे

करीने अमारे विषे हेतनी वृद्धि थाय छे. (१) बीजामां अमे तथा अमारा भक्त वढीए त्यारे राजी थावुं पण कचवावुं नहि. (२) वातो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां भिन्न भिन्नपणे मानसी पूजा करवानी कही तेथी बीजी रीते थती हशे के केम ?

१ उ० आ मानसी पूजा कही ते अवर भावनी छे अने पोताने दिव्य चैतन्यमय अवयवे रहित मानीने पोताना आत्माने विषे श्रीजीमहाराजनी मूर्ति दिव्य तेजोमय धारवी ने सर्वे पदार्थ चैतन्यमय धारीने जमाडवा अने वस्त्रादिक अलंकार ते मूर्ति जेवांज दिव्य धारवां पण मूर्तिथी भिन्न न धारवां ए परभावनी मानसी पूजा छे.

२ प्र० बीजा प्रश्नमां कह्युं जे आ वात पण राख्या जेवी छे ते केइ वात हशे ?

२ उ० आ मानसी पूजा करवानी कही ते वात राख्या जेवी, ने शिक्षाने अर्थे श्रीजीमहाराज तथा मोटा संत वढे त्यारे मारे विषे दोष छे तेथी हुं पापी छुं एम मानी तो ग्लानि पामीने हिंमत्य हारी जाय ने कल्याणने मार्गेथी पाछो पडी जाय माटे पोताने पापी न मानवो अने मारा उपर दया करीने श्रीजीमहाराज ने मोटा संत मने वढया तेथी हवे मारा दोष नाश पामशे एम राजी थावुं पण कचवावुं नहि, ए बे वातो राख्या जेवी कही छे. ॥२५७॥

संवत् १८८५ ना आसो वदि १२ द्वादशीने दिवस श्रीजीमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीगोपीनाथजीना मंदिरने विषे विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ **पछी श्रीजीमहाराजने मुक्तानंदस्वामीए प्रश्न पुछयो जे (१) ॥ यानास्थाय नरो राजन् ॥ ए श्लोकमां कह्या जे भागवत धर्म तेने केवी रीते आशरवा ? त्यारे श्रीजीमहाराजे कह्युं जे ॥ प्रसंग मजरं पाश ॥ तथा ॥ यस्यात्म बुद्धिः ॥ ए श्लोकमां एम कह्युं छे जे आ जीवने जेवी रीते देहगेहादिकने विषे प्रसंग छे, तेवी रीते ज्यारे एने संतनो दृढ प्रसंग थाय त्यारे ए नेत्रने मींचीने दोडे तोपण भागवत धर्मथी पडे नहि ने आखडे पण नहि. (१)** १

२ **पछी शुकमुनिए प्रश्न पुछयो जे [२] आपणा सर्वे संत वर्त्तमानमां रहे छे तथापि एमने विषे एवुं कियुं लक्षण छे जे जेणे करीने एम जाणीए जे एने आपत्काळ पडशे तोपण ए धर्मथांथी नहि डगे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे भगवानना जे जे नानां मोटां वचन तेनी उपर निरंतर जेनी दृष्टि रहे, पण वचन बाहेर पग देवो पडे तेमां अति कठण पडे अने ते वचनथी आगळ पग मांडीने अधिक पण न वर्ते अने ओछो पण न वर्ते तेने जाणीये जे ए धर्मथांथी आपत्काळे पण नहि पडे. [२]** २

३ **पछी श्रीजीमहाराजे कृपा करीने एम वार्ता करी जे (३) प्रकृति जे जावी ते जी-**

वने बहु कठण छे, तथापि जो सत्संगमां स्वार्थ जणाय तो प्रकृति टळवी कठण नपडे जेम दादाखाचरना घरनां माणसोने अमने राखवानो स्वार्थ छे तो अमने जे प्रकृति न गमे ते राखता नथी. तेम स्वार्थे करीने प्रकृति टळे छे तथा भये करीने पण टळे छे पण ते अतिशे नथी टळती, केम जे ज्यारे कोइक माणस होय त्यारे तेनो भय राखे ने माणस नहोय तो नराखे. जेम राजाने भये करीने चोर प्रकृतिनो त्याग करे छे तेमजेनो जे स्वभाव होय तेनी उपर वारंवार अमे कठण वचनना डंक मार्या होय ने कचवाव्यो होय तोपण ते कोइ रीते पाछो न पड्यो होय, ते उपर तो अमारे एवुं हेत रहे छे ते जाग्रत स्वप्नमां संभार्या विना ते हेत एमनुं एम रह्युं जाय छे ने गमे तेम थाय पण ते हेत टळतुं नथी. [३] अने वळी जे हरिभक्तने विषे जे अंग होय तेमां एक अंग सरस ३
होय ते कहीए छइए, जे दादाखाचरने विश्वासनुं अंग, अने राजबाइने त्यागनुं अंग, अने जीवुबाइने श्रद्धानुं अंग, अने लाडुबाइने अमारी प्रसन्नता करवी ए अंग, अने नित्यानंद स्वामीने अमारी प्रसन्नता करवी ए अंग, अने ब्रह्मानंदस्वामीने सत्संगनी मर्यादानो कोइ रीते भंग नथाय एवो आग्रह ए अंग, अने मुक्तानंदस्वामीने अमारी प्रसन्नता करवी तथा अमारो विश्वास ए अंग, अने सोमलाखाचरने सदा एकरेणीपणुं ए अंग, अने चैतन्यानंदस्वामीने एम जे कोइ रीते महाराज प्रसन्न थाय एम आपणी वते वर्ताय तो ठीक ए अंग,अने स्वयंप्रकाशानंदस्वामीने निश्चय तथा महात्म्य ए अंग, अने ठाकोर झीणाभाइने एम जे भगवान विना बीजा पदार्थमां रखे मारुं मन बंधाइ जाय नहि एवुं अंग,अने मोटा आत्मानंदस्वामीने अमारा वचननुं उलंघन थाय नहि एवुं अंग, एवी रीते घणाक मोटेरा परमहंस तथा हरिभक्त तेनां अंग कह्यां. अने पछी एम बोल्या जे आहिंनी मोटेरी त्रण बाइयो तथा गोपाळानंदस्वामी, ब्रह्मानंदस्वामी, मुक्तानंस्वामी नित्यानंदस्वामी, शुकमुनि, सोमलोखाचर, दादोखाचर, ए तमे सर्वे जेम हमणां आ वर्तमानकाळे केवा रुडी रीते वर्तो छो, तथापि जो देशकाळ, संग, क्रिया ए चारने विषे विषमपणुं थाय तो एमनो एम रंग रहे नहि ए वातमां कांइ संशय नथी. [४] ४
अने कदाचित् विषयमां बंधाइ गयो होय पण जो जेने विषे जेटलो ज्ञानांश वधारो होय तो ते विषयना बंधनने तोडीने निकळे ते ज्ञानांश ते शुं ? तो एम समजण होय जे हुं जे जीव ते आवो छुं तथा देह ते आवो छे तथा देहना संबंधी ते आवां छे, तथा प्रकृति पुरुष, विराट्, सुत्रात्मा ने अव्याकृत तेनां स्वरूप ते आवी रीतनां छे, तथा भगवान ते आवी रीतना छे तथा भगवाननुं धाम ते आवी रीतनुं छे, इत्यादिक जे ज्ञानांश तेनी जे अंतरमां दृढतानी ग्रंथी ते पडी होय, ने पछी जे वैराग्य उपजे ते वैराग्य खरो. अने ए विना बीजो जे वैराग्य तेतो उपरथी जणाय पण एमां बळ नहि, ने

बळ तो ज्ञानांशथी उपज्यो जे वैराग्य तेमांज छे. जेम दिवानो अग्नि तेने वायु लागे
त्यारे ओलाइ जाय अने वडवानळ अग्नि तथा मेघमां जे विजळीनो अग्नि ते जळमां
रह्यो छे पण ते जळनो पराभव एने थातो नथी ने प्रज्वलित थका रहे छे, तेम ज्ञानांश
विनानो जे वैराग्य तेने विषयनो संबंध थाय त्यारे ए वैराग्य टके नहि, अने ज्ञानांशे
करीने थयो जे वैराग्य तेने विषयनो संबंध थाय तो पण ए वैराग्य क्षीण न पडे, व-
डवानळ अग्निनी पेठे प्रज्वलित थको वर्त्ते छे, अने एवो जे ज्ञानांश तेनी कोइ रीते
करीने तमारा मनमां आंटी पडी जाय ते सारु अमे निरंतर वार्ता करीए छइए. केम
जे कोइक वार्तानी चुंक लागे तो एवी आंटी पडी जाय. अने जे एम न समजे ने
आ मारी जात,आ मारी मा, आ मारो बाप, आ मारां संबंधी, एवी रीतनी अहंममता
ए युक्त जेनी समजण छे तेने तो अति प्राकृत मतिवाळो अणसमजु जाणवो. (५) ५
४ अने वळी श्रीजीमहाराजे कृपा करीने एम वार्ता करी जे (४) मुमुक्षुने उत्कृष्ट
गुणनी प्राप्ति थाय तेनुं कारण शुं छे ? तो भगवाननी कथा वार्तामां जेने जेटली प्रीति
तेने तेटलो जगतनो अभाव थाय तथा काम क्रोध लोभादिक दोषनो नाश थाय. अने
जो कथा वार्तामां जेने आळस होय तेनां कोरनी एम अटकळ करवी जे एमां मोटा गुण
नहि आवे. अने शास्त्रमां नव प्रकारनी भक्ति कही छे तेमां श्रवण भक्तिने प्रथम गणी
छे, माटे जो श्रवण भक्ति जेने होय तो प्रेमलक्षणा पर्यंत सर्व भक्तिनां अंग एने
प्राप्त थाशे. (६) ६

एवी रीते वार्ता करी अने तेज दिवस मध्यान समे दादाखाचरना दरबारमां
उत्तरादे बार ओरडानी ओसरीनी आगळ परमहंस सर्वेनी पंक्ति जमवा सारु बेठी
हती ते समयमां श्रीजीमहाराज लिंबडाना वृक्षनी हेठे ढोलियो ढळावीने विराजमान
५ हता पछी श्रीजीमहाराजे परहंस आगळ एम वात करी जे, (५) बाइयो हरिभक्त छे
तेनुं महात्म्य तो शास्त्र समजवुं नहि केम जे ए महात्म्यने मिषे करीने मनमां एवुं
मनन थाय एटले स्वप्नमां आवे माटे महात्म्य लेवुं तो सौनुं समपणे लेवुं, जे ए
सर्वे भगवानना भक्त छे पण अधिक न्यूनपणे महात्म्य लेवुं नहि अने जो अधिक
न्यूनपणे महात्म्य समजे तो तेमां मोटुं विघ्न छे. तेमज बाइयोने भाइनुं महात्म्यपण
समपणे समजवुं अने जो एम न समजे तो ए बाइयोने पण मोटुं विघ्न छे. (७) ७
इति वचनामृतम् ॥ २४ ॥ (२५८)

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (५) छे, तेमां छेल्लां (३) त्रण कृपावाक्य छे, तेमां
पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारा मुक्तनो दृढ प्रसंग राखे तो भागवत धर्मथी
पडे नहि. (२) बीजामां अमारा वचन प्रमाणे वर्ते ते आपत्काळे पण धर्म थकी न पडे

नहि, (२) त्रीजामां जेने मोक्षनो खप होय तेनी प्रकृति टळे छे. (३) अने मोटेरा परमहंस तथा हरिभक्तनां अंग कह्यां छे, (४) अने ज्ञाने सहित वैराग्य होय ते विषयमां बंधाय नहि अने मायिक पदार्थमां अहंममत्ववाळो अणसमजु छे. (५) चोथामां श्रवण भक्ति होय तेना कामादिक नाश पामे ने अमारे विषे प्रेमलक्षणा भक्ति थाय छे. (६) पांचमामां बाइ भाइए अरस्परस महात्म्य समपणे समजवुं. (७) आवतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां भागवत धर्मने केवी रीते आशरवा एम पुछ्युं तेना उत्तरमां श्रीजीमहाराजे संतनो प्रसंग राखवानुं कह्युं तेनुं शुं कारण हशे ? ने भागवत धर्मनुं शुं रूप हशे ? अने नेत्र मीचीने चाल्यो जाय तोपण भागवत धर्ममांथी पडे आखडे नहि एम कह्युं ते नेत्र शां समजवां ? ने नेत्र मीचवां ते शुं समजवुं ? अने पडवुं आखडवुं ते शुं समजवुं ?

१ उ० निवृत्ति ने प्रवृत्ति ए बे प्रकारनो धर्म छे ते श्रीजीमहाराजना संबंधे सहित होय ते भागवत धर्म कहेवाय पण ते धर्मनुं पोषण श्रीजीमहाराजना मुक्तने प्रसंगे करीने थाय छे तेथी संतनो प्रसंग राखवानुं कह्युं छे. अने श्रुति ने स्मृति ए बे नेत्र छे ते श्रुति स्मृतिने जाणतो न होय ते नेत्र मीच्यां कहेवाय. अने स्थूळ देहे करीने धर्म लोपे ते भागवत धर्मथी पड्यो कहेवाय, अने अंतःकरणमां खोटा घाट थाय ते आखड्यो कहेवाय, ते सत्पुरुषनो प्रसंग राखे तो स्थूळ देहे नियममां फेर पडे नहि ने मनमां खोटा घाट पण थाय नहि. केम जे सत्पुरुषना प्रसंगथी सत्पुरुषना गुण तेमां आवे छे.

२ प्र० बीजा प्रश्नमां वचनथी अधिक पण न वर्ते ने ओछो पण न वर्ते तो आपत्काळे पण धर्ममांथी पडे नहि एम कह्युं ते अधिक वर्ते ते धर्ममांथी आपत्काळे शी रीते पडतो हशे ?

२ उ० श्रीजीमहाराजे त्यागी गृही बाइ भाइ सर्वेने जे जे वचन पाळवानां कह्यां छे तेथी अधिक वर्ते तो तेने बीजा भक्तनो अवगुण आवे तो तेनुं पाप लागे तेणे करीने ते पडी जाय.

३ प्र० (३/४ श्रीजा प्रश्नमां) गोपाळानंदस्वामी तथा सोमलाखाचर आदिक मोटा संत हरिजन तथा मोटेरी त्रण बाइयो एवा मोटाने विषम देशकाळमां एवो रंग न रहे एम कह्युं अने (लो० ११ ना पहेला प्रश्नमां) अमारी मूर्तिमां निमग्न रहे तेने देशकाळादिके करीने पराभव न थाय तो ज्यारे साधनिकने पराभव न थाय तो सदा मूर्तिमां रहेनाराने धाममांथी बीजा जीवोनां कल्याण करवा आवेला एवा मोटाने पराभव थाय एम कहेवानो शो हेतु हशे ?

३ उ० एमने उद्देशे करीने साधनिकने शिक्षा करी छे पण एतो मूळपुरुष तथा मूळअक्षरादिकना ऐश्वर्यने पण तुच्छ जाणे छे तो माया तो बिचारी शानुं पण क्यांथी जोइ शके ? तो मायानुं कार्य एवा जे देशकाळादिक तेतो बिचारा शुं करी शके ? एवा समर्थ मुक्त छे अने जे एमने शरणे आवे के दृष्टिये चडे एवा जीवने पण मायाथी रहित करीने

अक्षरधाममां लइ जाय एवा समर्थ छे, पण साधनिकने बीक लागे ते माटे कह्युं छे. ॥१५८॥

संवत् १८८५ ना कार्तिक सुदि १० दशमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणा बारना ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे कृपा करीने एम वार्ता करी जे (१) भगवान संबंधी भक्ति उपासना, सेवा, श्रद्धा,धर्मनिष्ठा ए आदिक जे जे करवुं तेमां बीजा फळनी इच्छा न राखवी एम सत्शास्त्रमां कह्युं छे ते तो साचुं पण एटली तो इच्छा राखवी जे एणे करीने मारी उपर भगवाननी प्रसन्नता थाय एटली इच्छा राखवी. अने एवी इच्छा राख्या विना अमथुं करे तो तेने तमोगुणी कहेवाय. माटे भगवाननी भक्ति आदिक जे गुण तेणे करीने भगवत् प्रसन्नता रूप फळने इच्छवुं, अने जो ए विना बीजी इच्छा राखे तो चतुर्धा मुक्ति आदिक फळनी प्राप्ति थाय. अने भगवाननी जे प्रसन्नता ते घणा उपचारे करीने जे भक्ति करे तेनीज उपर थाय ने गरीब उपर न थाय एम नथी. गरीब होय ने श्रद्धा सहित जळ पत्र फळ फुल भगवानने अर्पण करे तो एटलामां पण राजी थाय, केम जे भगवान तो अति मोटा छे. ते जेम कोइक राजा होय तेना नामनो एक श्लोकज कोइक करी लावे तो तेने गाम आपे तेम भगवान तुरत राजी थाय छे. (१) अने वळी भगवाननो १
खरो भक्त ते कोण कहेवाय तो पोताना देहमां कोइक दीर्घ रोग आवी पडे, तथा अन्न खावा न मळे, वस्त्र न मळे, इत्यादिक गमे एटलुं दुःख अथवा सुख ते आवी पडे तोपण भगवाननी उपासना, भक्ति, नियम, धर्म, श्रद्धा एमांथी रंच मात्र पण मोळो न पडे रतिवा सरस थाय तेने खरो भक्त कहीए. (२) २

२ पछी श्रीजीमहाराजने राजबाइए प्रश्न पुछ्यो जे (२) हे महाराज ! किया गुणे करीने तमे राजी थाओ ने किया दोषे करीने कुराजी थाओ ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे आटला तो वचनमां दोष छे, ते किया तो पोताना अंतरमां कांइक विशेष वर्त्तवानुं होय तेनुं अमने एकवार कही देवुं जे हे महाराज! तमे कहो तो हुं आवी रीते वर्तुं पण वारंवार न कहेवुं, जे हे महाराज ! हुं आम वर्तुं, हुं आमवर्तुं, तमे केम मुने कहेता नथी ? ते न गमे. अने मने पोतानो इष्टदेव जाणे ने वारेवारे मारा वेण उपर वेण लावे ते न गमे. अने हुं कोइनी आगळ वात करतो होउं ने बोलाव्या विना वचमां बोले ते न गमे. अने भगवाननुं ध्यान करवुं तथा धर्म पाळवो भक्ति करवी इत्यादिक जे जे शुभ क्रिया करवानी छे तेने जे भगवान उपर नाखे जे भगवान करावशे तो थाशे ते न गमे. अने आम हुं करीश एम केवळ पोतानुंज बळ राखे पण

भगवाननुं बळ न राखे ते न गमे. अने बेने बोल्यामां पोताना अंगनो ठा न होय ते तो अतिशे न गमे. अने बीजां व्यवहारिक काम करवां होय तेमां तो लाज तथा आळस न होय ने भगवाननी वार्ता करवी कथा करवी कीर्तन गाववां तेमां लाज राखे ने आळस राखे ते न गमे. अने त्यागनो अथवा भक्तिनो अथवा कोइ रीतनो जे अहंकार बोलीमां लावे ते न गमे. अने सभा बेठी होय त्यारे सौथी छेल्लो आवीने बेसे पण पोताने ज्यां घटतुं होय त्यां न बेसे ते न गमे. तथा कोइक मोटा ते सभामां बेठा होय ने तेने कुणी मारीने माग करीने पोते बेसे ते न गमे. अने बाइ माणस होय ने ते पोताना अंगने ढांकीने लज्जा सहित वर्ते ते गमे. तथा चाले त्यारे नीची दृष्टि राखीने चाले पण फाटी दृष्टि राखे नहि ते गमे. अने अमारां दर्शन करता होय ने कोइक बाइ भाइ आवे के कुतरुं निसरे के कांइ खडखडे तेनी सामुं वारंवार दर्शन मुकीने जुवे, पण एक दृष्टिये दर्शन न करे तेनी उपर तो एवी रीस चडे जे शुं करीए साधु थया, नहि तो एवुं कांइक ताडन करीए पण ते तो थाय नहि, केमजे साधुने कोइनुं ताडन करवुं ए अति अयोग्य कर्म छे. अने जे कपट राखे पण पोताना मनना जे संकल्प ते जेने कहेवा योग्य होय तेनी आगळ पण कहे नहि ते न गमे. अने मान, तथा क्रोध तथा कोइथी दबाइने रहेवुं, ते शुं तो पोताना मनमां जेवुं होय तेवुं बीजाथी दबाइने कहेवाय नहि ए त्रणवानां तो अतिशे भुंडां छे. अने हरिभक्तने मांहोमांही बरोबरीयापणुं रहे पण एक एकनो भार न आवे ए पण अतिशे भुंडुं छे.
(२) ॥ इतिवचनामृतम् ॥२५(२५९) ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे, तेमां पहेलुं कृपावाक्य छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे भक्ति आदिक गुणे करीने अमारी प्रसन्नता रूप फळने इच्छवुं अने श्रद्धाये करीने थोडी सेवा करे तो पण अमे राजी थइए छीए. (१) अने गमे तेवुं सुख दुःख आवी पडे तो पण नियम धर्ममांथी मोळो पडे नहि ते अमारो खरो भक्त छे. [२] बीजामां राजी, कुराजी, थवाना गुण दोष बताव्या छे अने मान क्रोध तथा कोइथी दबाइने रहेवुं एटले जेने जेम कहेवुं घटे तेम तेने कहेवामां तेनाथी दबाइने तेनी मोबतमां लेवावुं तेतो अतिशे भुंडुं छे तथा मांहोमांही बरोबरीयापणुं रहे ते पण अतिशे भुंडुं छे. (२) वातो छे. ॥ २५९ ॥

संवत् १८८५ ना कार्तिक शुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीगोपीनाथजीना मंदिरने विषे विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां.ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे एम वार्ता करी जे (१) भगवाननी पेठे सेवा करवा योग्य

एवा जे संत ते केवा होय तो,इंद्रियो अंतःकरण आदिक जे मायाना गुण तेनी जे क्रिया तेने पोते दाबीने वर्त्ते पण एनी क्रियाए करीने पोते दबाय नहि, ने भगवान संबंधी क्रियानेज करे, ने पंच वर्त्तमानमां दृढ रहेता होय, ने पोताने ब्रह्मरूप माने ने पुरुषोत्तम भगवाननी उपासना करे, एवा जे संत तेने मनुष्य जेवा न जाणवा ने देव जेवा पण न जाणवा, केम जे एवी क्रिया देव मनुष्यने विषे होय नहि अने एवा संत मनुष्य छे तो पण भगवाननी पेठे सेवा करवा योग्य छे. माटे जेने कल्याणनो खप होय एवा जे पुरुष तेने एवा संतनी सेवा करवी अने एवा साधुगुणे युक्त जे बाइ तैनी सेवा बाइने करवी. (१) १

२ पछी श्रीजीमहाराजने आत्मानंदस्वामीए प्रश्न पुछयो जे, (२) आ सत्संगमां जे वर्त्तमाननो प्रबंध छे तेमां ज्यां सुधी रहेतो होय त्यां सुधी तो जेवो तेवो होय तेने पण पंचविषये करीने बंधन थाय नहि, पण कोइक देशकाळने योगे करीने सत्संगथी बहार निसरी जवाय तो पण जेने पंचविषय बंधन न करी शके ते पुरुष केवो होय तेनां लक्षण कहो ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जेनी बुद्धिमां धर्मांश विशेषपणे वर्त्ततो होय, ने आस्तिकपणुं होय जे आ लोकमां जे सारुं नरसुं कर्म करे छे तेनुं जे सारुं नरसुं फळ तेने जरुर परलोकमां भोगवे छे एवी दृढ मति जेने होय, तथा लाज होय जे हुं करीश तो आ लोकमां माणस आगळ शु मुख देखाडीश ? एवो जे होय, ते गमे त्यां जाय तो पण एने कोइ पदार्थ तथा स्त्री आदिक ते बंधन करी शके नहि. जेम मयाराम भट्ट छे तथा मुळजी ब्रह्मचारी छे तथा निष्कुळानंदस्वामी छे एवी जातना जे होय तेने स्त्री धनादिक पदार्थनो योग थाय तो पण ए डगे नहि. (२) अने एवो न होय ने तेने जो २ एक आत्मनिष्ठापणुं होय जे हु तो आत्मा छुं ब्रह्म छुं ते मारे विषे शुभ अशुभ क्रिया लागती नथी हुं तो असंग छुं एवु अंग होय, तथा बीजुं एम होय जे भगवाननो महिमा बहु समझे, ने ते महिमानी बहु वार्ता करे जे कांइक धर्म विरुद्ध वर्त्ताइ जाशे तेनो शो भार छे ? भगवाननो महिमा बहु मोटो छे. ए बे रीतना जे होय तेमां ए बे रीतना जे दोष ते धर्म पाळवामां मोटा अंतराय रूप छे. माटे आवी रीते समझे तो सारुं जे आत्मनिष्ठा पण यथार्थ होय तथा भगवाननुं महात्म्य पण सारी पेठे समजे अने निष्कामपणुं, निर्लोभपणुं, निःस्वादपणुं, निःस्नेहपणुं, निर्मानपणुं ए आदिक जे धर्म तेने भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे समझी ने दृढपणे पाळे ने एम समझे जे हुं ए धर्मने पाळीश तो मारी उपर भगवान बहु राजी थाशे. ने जो मुने कोइ रीते धर्ममांथी कांइक भंग पडशे तो भगवाननो मारी उपर बहु कुराजीपो थाशे. एवी रीते जेना अंतरमां दृढ ग्रंथी होय ते भक्त धर्ममांथी कोइ दिवस पडेज नहि, अने एवो जे होय तेने कोइ

मायिक पदार्थ बंधन करी शके नहि. अने आवी रीतनी समझणवाळो न होय ने बीजो गमे तेवो ज्ञानवाळो होय के भक्तिवान होय तेने पण धर्ममांथी कांइक भंग थइ जाय खरो, तथा मायिक पदार्थ बंधन करे खरुं ए सिद्धांत वार्ता छे. (३) ३

३ पछी वळी श्रीजीमहाराजे कृपा करीने एम वार्ता करी जे (३) अमने अहंकार न गमे, ते अहंकार भक्तिपणानो होय, त्यागपणानो होय, वैराग्यपणानो होय, ब्रह्मपणानो होय, समझणनो होय, वर्त्तमान पाळ्यानो होय ए रीतनो जे जे अहंकार ते अमने न गमे. अने दंभ न गमे, ते दंभ शुं तो पोताना हृदयमां भगवाननो निश्चय भक्ति ने धर्म ते थोडां होय ने बीजा आगळ पोतानी मोटयप वधार्या सारु उपरथी तो तेने बहु जणावे ते न गमे, अने पोताने ने भगवानने जे अभेदपणे भजे ते न गमे, तथा जे नियम धार्यो होय ते नियमने घडीक मुकी दे ने वळी घडीकमां पाळे एवी रीते जे शिथळ वर्त्ततो होय ते न गमे, अने भगवाननो महिमा तो झाझो मोटो समझे ने पोताने अतिशे तुच्छपणे समझे पण देहथी जुदो जे आत्मा ते रूप पोताने न माने ते न गमे. ने हवे जे गमे ते कहीए छइए जे भगवाननो महिमा तो यथार्थ समझे ने पोताना देहथी व्यतिरेक जे पोतानो आत्मा तेने ब्रह्मरूप समझे ने धर्ममां दृढ रह्यो होय, ने भगवाननी अचळ भक्ति करतो होय, अने आवी रीतनो पोते होय तो पण सत्संगमां कोइक कांइ न समझतो होय ने भगवाननो निश्चय तो होय तेने मोटो जाणे ने तेनी आगळ पोताने अति तुच्छ जाणे, अने वार्ता कर्यामां पोताने मुखे करीने पोतानी समझणनो केफ कोइनी आगळ लगार पण जणावे नहि, एवो जे होय ते अमने बहु गमे. एवी रीते श्रीजीमहाराजे वार्ता करी.(४)॥ इ० व० ॥२६॥(२६०) ४

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [३] त्रण छे, तेमां पहेलुं ने त्रीजुं कृपावाक्य छे. तेमां पहेलामां इंद्रियो अंत:करणने दाबीने अमारा संबंधी क्रिया करे ने शुद्ध ब्रह्मरूप पोताने मानीने अमारी उपासना करे एवा एकांतिक संतनी सेवा ते अमारी सेवा तुल्य छे अने एवा गुणे युक्त बाइ होय तेनी सेवा बाइयोए करवी एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. [१] बीजामां धर्म तथा आस्तिकपणुं ने लाज ए त्रण होय ते स्त्री आदिकमां लेवाय नहि, (२) अने आत्मनिष्ठा होय ने अमारुं महात्म्य बहु जाणतो होय ते एम जाणे जे हुं निष्कामादिक धर्म नहि पाळुं तो श्रीजीमहाराज कुराजी थशे एम समजेतो धर्मथी पडे नहि. (३) त्रीजामां पोताने जे अंग गमे ने न गमे तेनी विक्ति कही छे. (४) बाधतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां अमारी पेठे सेवा करवा योग्य एवा जे संत तेमने मनुष्य जेवा न जाणवा ने देव जेवा पण न जाणवा एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते मनुष्य कोने जाणवा? ने देव कोने जाणवा ?

१ उ० मायामांथी उत्पन्न थाय छे एवा जे जीव ते जीवकोटीने आ ठेकाणे मनुष्य जाणवा.

अने मायाथी पर जे ईश्वरकोटी, ब्रह्मकोटी, मूळअक्षरकोटी ते सर्वेने आ ठेकाणे देव जाणवा केम जे ए सर्वे तपस्यादिक क्रिया करे छे ते क्रिया संत नथी करता संत तो एक मूर्तिना सुखमांज लुब्ध रहे छे. माटे ते सर्वथी श्रीजीमहाराजना संत पहेले मुक्त तेमने अधिक कह्या छे.

१ प्र० आमां अमारा संबंधीज क्रिया करे एवा जे अमारा संत ते अमारी पेठे सेवा करवा योग्य छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं अने (छे० ३५ ना $\frac{?}{४}$ पांचमा प्रश्नमां) छो लक्षणे युक्त साधुनी सेवा पण श्रीजीमहाराजे पोतानी सेवा तुल्य कही छे अने (व० ५ना चोथा प्रश्नमां) मोटा पुरुषनी अने श्रीजीमहाराजनी सरखी सेवा करवाथी सो जन्मे कसर मटवानी होय ते आ जन्मे मटी जाय एम कह्युं छे आ त्रणमां श्रीजीमहाराजना सरखीज मोटा संतनी सेवा करवानुं कह्युं ते सरखी सेवा केवी रीते करवी ?

२ उ० (म० ५४ ना पहेला प्रश्नोत्तरमां) जेवी रीते आत्मबुद्धि, पोतापणानी बुद्धि, देव बुद्धि ने तीर्थबुद्धि राखवानी कही छे तेवी रीते सेवा करवी.

३ प्र० ($\frac{३}{४}$ त्रीजा प्रश्नमां) पोताने ने अमने अभेदपणे भजे ते अमने न गमे एम कह्युं ते श्रीजीमहाराजने केवी रीते भजे ते अभेदपणे भज्या कहेवाय ?

३ उ० परब्रह्म जे भगवान ते हुं छुं एम माने पण स्वामी सेवकपणुं न राखे ते अभेदपणे भज्या कहेवाय ते श्रीजीमहाराजने न गमे ॥ २६० ॥

संवत् १८८५ ना कार्तिक शुदि १५ पुनमने दिवस स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीगोपीनाथजीना मंदिरने विषे विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे वार्ता करी जे, (१) शब्द, स्पर्श, रूप, रस ने गंध, ए पंच विषय संबंधी जे सुख ते दिव्य मूर्ति एवा जे भगवान पुरुषोत्तम तेनी जे सुखमय मूर्ति ते रूप जे एक स्थळ तेने विषे रह्युं छे. ते जो भगवाननी मूर्तिनां दर्शन करता होइए तो रूपनुं सुख प्राप्त थाय ने बीजा जे स्पर्शादिक चार विषय तेनुं सुख पण प्राप्त थाय ते एकज समयने विषे थाय छे. अने बीजा मायिक जे पंच विषय छे तेमांतो एक विषयनो संबंध थाय त्यारे एक विषयनुंज सुख प्राप्त थाय पण बीजानुं न थाय. माटे मायिक विषयमां भिन्न भिन्नपणे सुख रह्यां छे, अने ते सुख तो तुच्छ छे ने नाशवंत छे ने अंते अपार दुःखनुं कारण छे, अने भगवानमां तो सर्वे विषयनुं सुख एक काळे प्राप्त थाय छे ने ते सुख महा अलौकिक छे अने अखंड अविनाशी छे. ते माटे जे मुमुक्षु होय तेने मायिक विषयमांथी सर्वे प्रकारे वैराग्य पामीने अलौकिक सुखमय एवी जे भगवाननी दिव्य मूर्ति तेने विषे सर्वे प्रकारे जोडावुं. (१) १

२ अने वळी श्रीजीमहाराजे एम वार्त्ता करी जे, (२) जे हरिभक्तने भगवाननी भक्तिनो खप होय तथा संत समागमनो खप होय तो ते गमे तेवो पोतानो स्वभाव होय तो तेने टाळीने जेम ते संत कहे ने तेनी मरजी होय तेम वर्त्ते अने ते स्वभाव तो एवो होय जे चैतन्य साथे जडाइ गयो होय तो पण तेने सत्संगना खपवाळो टाळी नाखे. ते उपर पोतानी वार्ता करी जे अमारो प्रथम त्यागी स्वभाव हतो पण जो रामानंदस्वामीनां दर्शननो खप हतो तो मुक्तानंदस्वामीनी आज्ञा अनुसारे वर्त्या, पण अमारा मनतुं गमतुं कांइ न कर्युं. अने वळी जे हरिभक्त होय तेने कोइ जातनी आंटी पाडवी तेनी एव विक्ति छे, जे एक तो निष्कामादिक वर्त्तमाननी आंटी पाडी होय, ने एक एवी आंटी पाडी होय जे आ ठेकाणे हुं आसन करुं तो निद्रा आवे ने बीजे ठेकाणे न आवे. ए आदिक अनेक प्रकारनी जे तुच्छ स्वभावनी आंटी पाडी होय ए बेयने एक रीतनी न समझवी,वर्त्तमाननी आंटी तो पोताना जीवनरूप छे, ने तेने विषे बहु माल छे एवी रीते महात्म्ये सहित तेनी आंटी पाडवी, अने बीजा स्वभावनी आंटी पाडी होय तेने विषे तो तुच्छपणुं जाणवुं ने तेने संत मुकावे तो मुकी देवी, ने प्रथमनी आंटी मुकवी नहि. अने ए बेयने बरोबर समझे तो एने विषे मुढपणुं जाणवुं. जेम बाळक होय तेणे मुठीमां बदाम झाली होय तेने कोइ मुकावे तो मुके नहि, ने रुपियानी मुठी वाळी होय ने सोना महोरनी मुठी वाळी होय ने तेने मुकावे तो तेने मुके नहि. त्यारे ए बाळके बदाम तथा रुपिया ने सोना महोर तेने विषे बरोबर माल जाण्यो माटे ए बाळकने विषे मुढपणुं छे. अने वळी जेम कोइकना हाथमां बदाम होय ने चोर आवीने कहे जे तुं मुकी दे नहि तो तरवारे माथुं कापी नाखीश त्यारे ते डाह्यो होय तो तेने आपीदे ने मूर्ख होय तो न आपे, तेम ए बे प्रकारनी आंटीमां न्युनाधिकपणुं जाणवुं. ने एम होय नहि ने बेयमां सामान्यपणुं जाणे तो एनो आंटीदार स्वभाव जाणवो ने तेने मानी जाणवो, ने आंटीए करीने ते वर्त्तमान पाळतो होय ने जो मरण पर्यंत एमने एम नभे तो ठीक पण तेनो पुरो विश्वास न आवे, केम जे जो एने कोइक जातनां वेण लागे अथवा तेनुं मान न रहे तो एवो ए रहेशे नहि,अने जे आंटीए करीने वर्त्तमान पाळता होय ने भक्ति करतो होय तेतो राजर्षि कहेवाय, ने जे भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे भगवाननी भक्ति करतो होय तथा वर्त्तमान पाळतो होय ते तो ब्रह्मर्षि कहेवाय ने ते साधु कहेवाय, एवी रीते ए बेमां फळनो भेद पण छे. (२) २

३ अने वळी एम वात करी जे, (३) मान ईर्ष्या ने क्रोध ए त्रण दोष ते काम करतां पण अतिशे भुंडा छे, केम जे कामी उपरतो संत दया करे पण मानी उपर न करे, ने मानमांथी ईर्ष्या ने क्रोध उपजे छे माटे मान मोटो दोष छे. ने माने करीने

सत्संगमांथी पडी जाय छे एवो कामे करीने नथी पडतो, केम जे आपणा सत्संगमां
गृहस्थ हरिभक्त घणा छे ते सत्संगमां पड्या छे माटे ए मान ईर्ष्या ने क्रोध ए त्रण
उपर अमारे अतिशे अभाव रहे छे, ने अमारां जे जे वचन लखेलां हशे तेमां पण ए-
मज हशे ते विचारीने जुवो तो जणाइ आवशे माटे भगवाननुं महात्म्य समझीने
मानने टाळवुं. (३) ३
४ अने वळी श्रीजीमहाराजे एम वार्ता करी जे, (४) भगवाननो निश्चय ते केने
कहीए तो जेम आ संसारमां प्रथम बाळकपणामांथी मा, बाप, वर्ण, आश्रम, नात्य,
जात्य,पशु,मनुष्य,जळ, अग्नि, पृथ्वी, वायु, आकाश इत्यादिक जे जे पदार्थनो निश्चय
थयो छे ते शास्त्रे करीने थयो छे. ने शास्त्र न सांभळ्यां होय तो लोकमां जे शब्द ते
शास्त्रथीज प्रवर्त्या छे तेणे करीने तेनो निश्चय कर्यो छे. तेम शास्त्रे कह्यां जे निष्काम,
निर्लोभ, निर्मान, निःस्वाद, निःस्नेह इत्यादिक संतनां लक्षण तेने सांभळीने एवां
लक्षण ज्यां देखाय एवा जे संत तेने ने भगवानने साक्षात् संबंध होय माटे एवा
संतना वचने करीने भगवाननो निश्चय करवो ने तेना वचनमां दृढ विश्वास करवो
तेने निश्चय कहीए. (४) ४
५ अने ते पछी वडोदरावाळा नाथभक्ते श्रीजीमहाराजने प्रश्न पुछयो जे [५]
जेने भगवाननो दृढ निश्चय होय एवो जे भगवानना भक्त तेनां जे संबंधी तेनुं कल्याण
ते भक्तना संबंधे करीने छे के नथी ?त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे,जो एना संबंधीने
तथा एना मित्रीने एने विषे हेत होय तो एनुं कल्याण थाय ने हेत न होय तो न
थाय ने जो संबंधी पण न होय ने जो तेने ए भक्तने विषे हेत होय तो तेनुं पण सारुं
थाय केम जे एने मुवाटाणुं थाय त्यारे ते भक्त तेने सांभरी आवे ने ते भक्तनी वृत्ति
तो भगवान साथे निरंतर लागी छे ने ते भक्तनुं तेने स्मरण थाय माटे तेनुं कल्याण
थाय छे. [५] ५
६ अने वळी श्रीजीमहाराज बोल्या जे [६] अमे आत्माना स्वरूपनी वार्त्ता करीए
छइए तथा भगवानना स्वरूपनी वार्ता करीए छइए ते वार्ताए करीने जेवुं एनुं सुख छे
तेवुंज सुख तो आवतुं नथी. अने जेवुं एनुं यथार्थ सुख छे ते तो समाधिए करीने जा-
णवामां आवे छे, तथा देह मुक्या केडे जाणवामां आवे छे, पण केवळ वार्ताए करीने
जाण्यामां आवतुं नथी. जेम रूपनुं सुख ते नेत्रे करीने भोगवाय छे, पछी ते सुखने
मुखे करीने वखाण करे जे बहु सारु रूप दीठुं त्यारे ते सुखनो अनुभव जेवो नेत्रने
थयो तेवो मुखने न थयो. तथा श्रवणे करीने शब्दने सांभळ्यो नासिकाए करीने
गंध सुंघ्यो, जीव्हाए करीने रस चाख्यो, पछी ते ते सुखनुं वचने करीने वखाण करे

जे बहु सारो गंध हतो बहु सारो रस हतो बहु सारो स्पर्श हतो बहु सारो शब्द हतो एम कहुं तो खरुं पण जेवी रीते ते ते इंद्रियोने ते ते सुखनो अनुभव थयो तेवो वचनने न थयो तेम समाधिए करीने तथा देह मुकीने जेवो भगवानना सुखनो अनुभव थाय छे ने आनंद थाय छे,तथा आत्माना सुखनो अनुभव ने आनंद थाय छे,तेवो एनी केवळ वात करे तेणे करीने थातो नथी. अने जो ए बेनी वार्त्ता सांभळीने तेनुं मनन ने निदिध्यास करे तो एनो साक्षात्कार थाय ने साक्षात्कार थाय तारे समाधिये करीने जेवो ए बेनो अनुभव ने आनंद थाय तेवोज थाय माटे ए बेनी वार्त्ता सांभळी ने एनुं मनन ने निदिध्यास करवो. (६) ॥इति वचनामृतम् ॥२७॥(२६१) ६

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न [६] छे, तेमां पांचमुं प्रश्न छे ने बीजां कृपावाक्य छे, तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे मायिक सुख नाशवंत ने दुःखदायी जाणवुं ने अमारुं सुख दिव्य जाणीने अमारे विषे जोडावुं. (१) बीजामां गमे तेवो कठण स्वभाव होय तो पण सत्संगना खपवाळो टाळी नाखे अने संतने वचने करीने स्वभावनी आंटी मुकी दे अने वर्त्तमाननी आंटी मुके नहि ने अमारी ने संतनी प्रसन्नताने अर्थे वर्त्तमान पाळे ने भक्ति करे ते ब्रह्मर्षि छे, अने तुच्छ स्वभावनी आंटी संतने वचने करीने मुके नहि ते वर्त्तमान पाळतो होय तो पण राजर्षि छे. (२) त्रीजामां मान, ईर्ष्या ने क्रोध ते काम करतां भुंडा छे अने अमारुं महात्म्य समजे तो मान टळी जाय छे. (३) चोथामां निष्कामादिक लक्षणे युक्त जे संत तेने अमारो साक्षात् संबंध होय एवा संतने वचने करीनेज अमारो निश्चय करवो ने एवा संतना वचनमांज दृढ विश्वास करवो तेनेज निश्चय कहेवाय. [४] पांचमामां एवा संत साथे हेत होय तेनुं कल्याण थाय छे. [५] छठ्ठामां आत्मानुं तथा अमारुं यथार्थ सुख समाधिए करीने तथा देह मुक्या पछी आवे छे पण केवळ तेनी वाते करीने आवतुं नथी. (६) आवतो छे.

१ प्र० त्रीजा प्रश्नमां कामथी मानने अधिक भुंडुं कह्युं अने (प्र० ७६ मां) मानथी कामने अधिक भुंडो कह्यो छे ते केम समजवुं ?

१ उ० सत्संगमां क्रोध मानादिक न राखे ते करतां कामी भुंडो कह्यो छे अने श्रीजीमहाराज ने श्रीजीमहाराजना भक्तनी आगळ मान,क्रोध ईर्ष्या राखे तेथी कामीने सारो कह्यो छे केम जे मानीथी श्रीजीमहाराज ने तेमना भक्तनो द्रोह थइ जाय. एवा मानीने कामी करतां भुंडो कह्यो छे. ॥ २६१ ॥

संवत् १८८५ ना कार्तिक वदि १ पडवाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी-महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीगोपीनाथजीना मंदिरने विषे विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे (१) भगवानमांथी बे प्रकारे जीव पडे छे. एक-

तो वेदांतना ग्रंथने सांभळीने बीजा आकारने खोटा करे तेम श्रीकृष्णादिक जे भगवाननना आकार तेने पण खोटा करे ए वेदांतीने अति पापी जाणवा. अने बीजो जे एम समझतो होय जे भगवानने भजीए तो गोलोकने वैकुंठ लोकमां स्त्री, भोग, खान, पान आदिक जे पंच विषयनां सुख तेने पामीए, पछी ते सुखनी आसक्तिए करीने भगवानने पण भुली जाय ने मुख्यो कुबुद्धिवाळो थइने एम समझे, जे ए सुख न होय तो ए धाममां राधिका लक्ष्मी आदिक स्त्रियो भेळे भगवान पण रमे छे माटे ए सुख पण खरुं छे. पण भगवानने पूर्णकाम ने आत्माराम न समझे अने एवी जे भगवाननी क्रिया छे तेतो पोताना भक्तना सुखने अर्थे छे ते सारु ज्ञान वैराग्ये सहित भगवाननी भक्ति करवी. अने ए भगवानना स्वरूपने जेणे एम जाण्युं होय जे सर्व सुखमय मूर्तितो ए भगवानज छे ने बीजे पंच विषयमां जे सुख तेतो ए भगवानना सुखनो किंचित् लेश छे. एम भगवानने महात्म्ये सहित जे समझ्यो होय ते कोइ पदार्थमां बंधायज नहि अने ए भगवानना धामना सुख आगळ बीजा लोकनां जे सुख ते तो नरक जेवां छे एम मोक्ष धर्ममां कह्युं छे. आवी रीते भगवानना भक्तने समझवुं. अने एम न समझे तो ए बे प्रकारे करीने भगवानमांथी पडी जाय छे. (१) १

२ पछी श्रीजीमहाराजने सुराखाचरे प्रश्न पुछ्यो जे, (२) भगवानने तथा संतने जेवा छे तेवा निश्चयपणे जाणीने पण कोइनुं अंतर पाछुं पडी जाय छे तेनुं शुं कारण छे ? पछी श्रीजीमहाराजे उत्तर कर्यो जे एणे भगवाननो निश्चय कर्यो हतो त्यारेज एमां काचप रही गइ छे. ते शुं तो कोइकने स्वादे करीने सारुं सारुं खावा जोइतुं होय ने तेने भगवान तथा संत ते खोदे त्यारे तेनुं अंतर पाछुं पडी जाय, तथा कामनो घाट रही गयो होय ने तेने खोदे तथा लोभ रह्यो होय ने ते लोभने मुकावे ने कहे जे आ तारुं धन, माल, खेतरवाडी ते कोइकने आपी दे त्यारे ते वचन पळे नहिं तेणे करीने पाछो पडी जाय, तथा मान होय ने ते मानने संत तथा भगवान खोदे ने अपमान करे तेणे करीने पण पाछो पडी जाय एवी रीते निश्चय होय ने जे जे पोतामां अवगुण रही गयो होय तेणे करीने पाछो पडी जाय छे अने जेणे निश्चय कर्यो होय ते समयमांज ए अवगुणने टाळीने कर्यो होय तो ते पाछो पडे नहि. अने ए अवगुण हमणां पण जेमां जेमां हशे ते जो विचारीने पोताना अंतर सामुं जुवे तो जणाइ आवे जे आ रीतने अंगे हुं काचो छुं ते जो एम मुने पाळ्यानुं कहेशे तो हुं विमुख थइश एम यथार्थ जाणे. (२) २

पछी ब्रह्मानंदस्वामी तथा शुकमुनि तथा सुरोखाचर ए त्रणने श्रीजीमहाराजे
३ पुछ्युं जे (३) तमे जेणे करीने पाछा पडी जाओ एवो तमारामां कियो अवगुण छे ?

त्यारे ए वणे कह्युं जे हे महाराज ! मानरूप दोष छे माटे जो कोइक बरोबरीया संत
अपमान करे तो कांइक मुंझवण थाय.
४ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे अमे पुछीये छैए जे,(४) ॥ द्युपतय एव ते न
ययुरन्तमनन्ततया ॥ एवी रीते महात्म्ये सहित भगवानने जाण्या होय ने एवा जे
भगवान तेना जे संत ते साथे मान, ईर्ष्या, क्रोध केम थाय ? ने जो थाय छे तो शुं
जाण्यामां फेर छे ? केम जे जनरल साहेबने जाण्यो छे जे ए समग्र पृथ्वीनो पादशाह छे
ने बळीयो छे ने जो तेनो एक गरीब सरखो हमेलीयो आव्यो होय तो तेनो हुकम
मोटो राजा होय ते पण माने ने ते जेम कहे तेम दोर्यो दोराय. शामाटे जे ते राजाए
एम जाण्युं छे जे बळीयो जे जनरल साहेब तेनो ए हमेलीयो छे, अने तेथी जे बळीयो
तेनी आगळ मान रहे नहि, तेम जेणे भगवानने समग्र ऐश्वर्य सम्रुद्धिमा वणी जाण्या
होय तो तेना संतनी आगळ मान केम रहे ? पछी ब्रह्मानंदस्वामीए कह्युं जे हे महा-
राज ! तमे ठीक कहोछो जो एम महात्म्ये सहित भगवानने जाण्या होय तो मान
ईर्ष्या क्रोध ते संतने आगळ थायज नहि. पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे जुवोने उद्ध-
वजा केवा मोटा हता ने केवा डाह्या हता पण जो भगवाननी मोटाइने जाणता हता
तो ते भगवानने विषे हेतवाळी जे व्रजनी गोपीयुं तेना चरणनी रजने पाम्या सारु
वन वेलीनो अवतार माग्यो ते कह्युं छे जे ॥ आसामहोचरणरेणुजुषामहंस्यां ॥ तथा
ब्रह्माये पण कह्युं छे जे ॥ अहोभाग्यमहोभाग्यंनंदगोपव्रजौकसां । यन्मित्रं परमा-
नंदं पूर्णं ब्रह्म सनातनं ॥ एवी रीते ब्रह्मा पण भगवाननुं महात्म्य जाणता हता तो
एवी रीते बोल्या ते माटे जो भगवाननी ने संतनी एवी रीते मोटाइ जाणतो होय तो
मान, ईर्ष्या, क्रोध रहेज नहि ने तेने आगळ दासानुदास थइने वर्ते ने गमे तेटलुं
अपमान करे तोपण तेना संगने मुकीने छेटे जवाने इच्छेज नहि. अने एम मनमां
थाय नहि जे हवे तो क्यां सुधी खमीए ? आपण तो आपणे घेर बेठा थकाज भजन
करशुं ते माटे एम महात्म्य समझे तो मान टळे एवी रीते वार्ता करी. [३] ३
५ अने वळी श्रीजीमहाराजे एम वार्ता करी जे, [५] भगवाननो भक्त होय ने तेने
कोइक कर्मयोगे करीने शूळीए चडाव्यो होय ने ते समयमां अमे पण तेनी पासे उभा
होइये, पण ते भक्तना हृदयमां एम घाट न थाय जे आ भगवान मुने शूळीना कष्ट
थकी मुकावे तो ठीक. एवी रीते पोताना देहना सुखनो संकल्प न थाय ने जे कष्ट
पडे तेने भोगवी ले एवो जे निष्कामी भक्त तेनी उपर भगवाननी बहु प्रसन्नता
थाय छे. (४) ४
६ अने वळी श्रीजीमहाराजे एम वार्ता करी जे, (६) भगवान संबंधी सुखने

कोण पामे छे तो ते कहीए छइए, जे जेम माछलुं होय तेने जळ छे ते जीवनरूप छे ते जळनो योग ज्यां सुधी होय त्यां सुधी ते जळमां माछलुं चाले, हाले क्रीडा करे, ने जळनो वियोग थाय त्यारे तेनी चंचळता टळी जाय ने मरी जाय. तेम जेने पंच विषये करीने जीवनपणुं ज्यां सुधी मनाणुं छे ने तेणे करीने सुख मान्युं छे ने तेनो वियोग थाय त्यारे मुवा जेवो थइ जाय छे, एवो जे होय ते भगवानना सुखने क्यारे पण पामे नहि. अने पंच विषये करीने जेने जीवनपणुं टळी गयुं छे तेज भगवानना सुखने अनुभवे छे ने भोगवे छे ने एवानेज भगवानना सुखनी प्राप्ति थाय छे. [५] इति वचनामृतम्. ॥२८॥(२६२) ५

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (६) छे, तेमां पहेलुं चोथुं, पांचमुं ने छठुं ए कृपावाक्यो छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे भगवानना आकारने खोटा करे अने भगवानना धाममां मायिक पंच विषय सुखनी इच्छा राखे ए बेय मोक्षना मार्गमांथी पडी जाय छे. (१) बीजामां पोताना अवगुण टाळीने अमारो निश्चय करे ते सत्संगमांथी पाछो पडे नहि. (२) त्रीजा तथा चोथामां अमारुं महात्म्य जाणे तो मानादिक दोष टळी जाय छे, (३) पांचमामां निष्काम भक्त उपर अमे राजी थइए छीए (४) छठ्ठामां मायिक पंच विषये करीने जीवनपणुं मनाणुं होय ते अमारा सुखने पामे नहि ने मायिक पंच विषयमांथी प्रीति टळी गइ होय तेज अमारा सुखने पामे छे. (५)बावलो छे.

१ प्र० त्रीजा प्रश्नमां ब्रह्मानंदस्वामी, शुकमुनि तथा सुराखाचरे माने करीने पाछा पडी जाइए एम कह्युं ते एवा मोटा मुक्तमां तो मान होय नहि ने एम केम कह्युं हशे ?

१ उ० सर्वे दोषमां मानरूपी दोष मोटो छे. माटे सर्वे तजाय पण मान तजाय नहि एवुं बळवान छे एम माननुं अधिकपणुं जणाव्युं छे पण एतो श्रीजीमहाराज भेळा अक्षरधाममांथी आवेला हता तेमनामां तो मायानुं कार्य होयज नहि पण पोताने मिषे करीने साधनिकने उपदेश कर्या छे. ॥२६२॥

संवत् १८८५ ना पोष शुदि २ बीजने दिवस श्रीजीमहाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां मेडीनी आगळ ओटा उपर ढोलियो ढळावीने रात्रिने समे विराजमान हताने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे शुकमुनिने प्रश्न पुछ्यो जे, [१] बे सत्संगी छे तेनी अवस्था वीश वीश वर्षनी छे, तथा बेयने निश्चय हेत भक्ति वैराग्य धर्म ते बरोबर छे, अने तेमांथी एकने तो प्रारब्धयोगे करीने परणीने स्त्री मळी, ने एकने न मळी ने सांख्ययोगी रह्यो, ने एने पण परण्यानी तो इच्छा हती पण मळी नहि. त्यारे ए बे जणने तीव्र वैराग्य तो प्रथमथीज नहोतो, माटे विषयभोगमां बेयने तीक्ष्णवृत्ति हती, ते तीक्ष्णवृत्ति ओछी ते ए गृहस्थ थयो तेनी थाय के सांख्ययोगीनी थाय ते

कहो ? अने वेद तो एम कहे छे जे जेने तीव्र वैराग्य होय तेने ब्रह्मचर्यपणा थकीज सन्यास करवो ने जेने मंद वैराग्य होय तेने विषयभोगनी तीक्ष्णता टाळवाने अर्थे गृहस्थाश्रम करवो ने पछी वानप्रस्थ थावुं ने पछी सन्यास करवो माटे विचारीने उत्तर करजो ? पछी शुकमुनिये एनो उत्तर करवा मांड्यो पण थयो नहि. पछी श्रीजीमहाराजे एनो उत्तर कर्यो जे ए गृहस्थाश्रमी सारो, ने बीजो जे सांख्ययोगी ते भुंडो केम जे एने तीव्र वैराग्य नथी माटे एणे विषयने तुच्छ ने असत्य जाण्या नथी, तेम कांइ पोतामां आत्मनिष्ठानी पण दृढता नथी, ते सारु ए सत्संगथी बाहेर जाय ने विषयनो योग थाय तो बंधाइ जाय, ने जो विषयनो योग न थाय तो सत्संगनी पाछी लालच राखीने सत्संगमां आवे. अने जे गृहस्थ छे तेने छ महिने संतनां दर्शन थाय तोपण समास रहे माटे मंद वैराग्यवाळाने त्याग करवो ए ठीक नथी, ने त्याग तो तीव्र वैराग्यवाळाने करवो ते ठीक छे. अने मंद वैराग्यवाळो त्याग करे तो एनो त्याग देह पर्यंत नभे नहि वर्षे बे वर्षे दश वर्षे तेना त्यागमां विघ्न जरूर पडे.

२ त्यारे शुकमुनिए आशंका करी जे, (२) हे महाराज ! ए मंदवैराग्यवाळो त्यागी छे ते संत थकी भगवानना महात्म्यनी वात सांभळे ने पछी पोते मनमां विचार करे तो शुं एने तीव्र वैराग्य न आवे ? अने प्रथमथीज तीव्र वैराग्य तो कोइकने प्रारब्धयोगे करीने हशे ने बहुधा तो एम प्रत्यक्ष देखायछे जे आवे वैराग्य नहोतो ने पछी थयो त्यारे एनुं केम समजवुं ? पछी श्रीजीमहाराजबोल्या जे एनो तो एम उत्तर छे जे पोताने विचारे तो कोइ रीते तीव्र वैराग्य थाय नहि अने जो धर्म ज्ञान वैराग्य भक्ति ए चार गुणे करीने संपन्न एवा जे मोटा साधु तेनी साथे एने अतिशे हेत थाय, जेम भगवान साथे हेत थाय छे त्यारे तो ते जुवे सांभळे बोले इत्यादिक जे जे क्रिया करे ते पोताने जे मोटा संत साथे हेत छे तेनी मरजी प्रमाणेज करे, पण तेनी मरजी न होय तेवी कोइ क्रिया करे नहि अने ते संतनी मरजीथी बाहेर वर्त्यामां तेना मनने विषे निरंतर भय वर्ते, जे जो हुं एमनी मरजी प्रमाणे नहि वर्तुं तो ए मारी साथे हेत नहि राखे. ते सारु निरंतर तेनी मरजी प्रमाणे वर्ते माटे जो एवुं संत साथे हेत थयुं होय तो वैराग्य न होय तो पण एनो त्याग पार पडे. अने जुवो आपणा सत्संगमां बाइ भाइ परमहंस ए सर्वने अमारी उपर हेत छे, तो मोटेरी बे त्रण बाइयुं छे ते बरोबर बीजी सर्वे बाइयुं वर्त्तमान पाळे छे केम जे ए मनमां एम जाणे छे, जे जो अमे खबरदार थइने वर्तमान नहि पाळीये तो महाराजनुं हेत अमारी उपर नहि रहे ने कुराजी थाशे. तथा परमहंसमां पण एम छे तथा बीजा जे सत्संगी ब्रह्मचारी तथा पाळा ए सर्वेमां पण एम छे, तथा देशदेशना हरिभक्त बाइ भाइ छेते

रह्या छे ते पण वर्तमानमां खबरदार वर्ते छे, ने एम जाणे छे जे जो आपण सारी
पेठे नहि वर्तीए तो महाराज कुराजी थाशे. माटे अमारे विषे हेते करीने बंधाणा थका
सर्वे धर्ममां दृढपणे वर्ते छे, पण वैराग्य तो कोइकने थोडो हशे ने कोइकने झाझो हशे
तेनो कांइ मेळ छे नहि. अने अमे पंचाळामां मोरे मांदा थया हता ने तेमांथी जो कां-
इक थयुं होत तो जेम हमणे सर्वेनी वृत्तियो छे तेवी न रहत. (१) त्यारे तो जे तीव्र १
वैराग्यवाळा होय ते धर्ममां रहे, तथा तेनी साथे जेणे पोताना जीवने हेते करीने बांधी
राख्यो होय ते धर्ममां रहे, तथा जे सत्संगनो योग राखे ने भगवानने अंतर्यामी जा-
णीने पोतपोताना नियम कह्या छे ते प्रमाणे वर्ते तो धर्ममां रहे, अने ए विना बीजानुं
तो कांइ ठीक रहे नहि. माटे अमे जे प्रश्न पुछयो हतो तेनो तो आ अमे कह्यो एज
उत्तर छे. (२) इतिवचनामृतम् ॥२९॥ (२६३) २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे तीव्र वैरा-
ग्यवाळो त्यागी थाय तो विघ्न थाय नहि,अने मंद वैराग्यवाळो त्यागी मोटा संत साथे
हेते करीने पोताना जीवने बांधे तो एनो त्याग पार पडे. (१) अने सत्संगनो योग
राखे ने भगनने अंतर्यामी जाणे ने पोत पोताना नियम प्रमाणे वर्ते तो धर्म रहे. (२)
बावतो छे. ॥ २६३ ॥

संवत् १८८५ ना पोष शुदि १५ पुन्यमने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा
मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री गोपीनाथजीना मंदिरने विषे विराजमान हता ने
सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनि तथा देशदेशना
हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे, (१) जे अमारा मनमां आ बे वार्ता गमे छे
ने त्यां मन अटके छे. तेमां एक तो जेने एम होय जे एक चैतन्यना तेजनो राशि छे
ने तेना मध्यने विषे श्रीपुरुषोत्तम भगवाननी मूर्ति सदा विराजमान छे एवो दृढ नि-
श्चय होय, ने ते भगवाननी उपासना भक्ति करतो होय ते वात गमे. पण केवळ
चैतन्य तेजने मानतो होय ने तेनी उपासना करतो होय ने भगवानने सदा साकार
न मानतो होय ने तेनी उपासना न करतो होय तो ते न गमे. [१] अने बीजुं १
एम जे एवा जे भगवान तेने अर्थे जे तपने करतो होय तथा योगने साधतो होय
तथा पंचविषयना अभावने करतो होय तथा वैराग्यवान होय, इत्यादिक जे जे सा-
धन ते भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे निर्दंभपणे करे ते गमे. अने एवाने देखीने अमारुं
मन राजी थाय छे जे एने शाबाश छे जे आवी रीते वर्ते छे. (२) २
२ अने वळी आ पांच वार्तानुं अमारे नित्ये निरंतर अनुसंधान रहे छे(२) तेमां,

एक तो एम जे आपणे आ देहने मुकीने जरुर मरी जावुं छे ने तेनो विलंब नथी जणातो, एतो एमज निश्चे जणाय छे जे आ घडी आ क्षणमां आपणे मरवुं छे ने सुखदुःख राजीपो कुराजीपो सर्वे क्रियामां एवी रीते वर्त्ते छे एवो वैराग्य कह्यो. अने बीजुं एम जे आपण मरशुं तेमां आटलुं काम तो आपणे कर्युं छे ने आटलुं बाकी छे ते करवुं छे एवुं निरंतर अनुसंधान रहे छे. अने त्रीजुं एम जे अमारा मनमां पंचविषयनी वासना टळी गइ छे के नथी टळी ? अने एम जाणुं छुं जे टळी तो गइ छे त्यारे ते ते विषयनी जे क्रिया ते केम थाय छे ? त्यारे रखे न टळी होय एम अणविश्वासनुं निरंतर अनुसंधान रहे छे. अने चोथुं एम जे मुक्तानंदस्वामी आदिक मोटा मोटा साधु तथा बीजा पण मोटा मोटा हरिभक्त ए जे सर्वे छे तेने पंचविषयनी वासना टळी गइ छे के नहि ? अने आने आनी वासना टळी छे ने आनी नथी टळी एम सर्वेना हृदय सामुं जोया करवुं एम अनुसंधान रहे छे. अने पांचमुं एम जे जो हुं मारा जीवने उदासी करवा लागुं तो कोण जाणे क्यांइ जातु रहेवाय ने देह पडी जाय, माटे एम जाणीये छइये जे मनने उदासी न करवुं. केम जे भक्त अमारे योगे करीने आ सर्वे बाइ भाइ परमहंस राजीपे बेठा भगवद्भक्ति करे छे तो ए ठीक छे. ने भगवद्भक्तिने करता देखीने मनमां बहु राजीपो थाय छे, जे मरी तो सर्वेने जावुं छे पण आवी रीते भक्ति करवी एज जीव्यानो मोटो लाभ छे एम निरंतर अनुसंधान रहे छे. एवी रीते श्रीजीमहाराजे पोताना भक्तनी शिक्षाने अर्थे पोतानुं वर्तन लेइने वार्ता करी ने पोते तो साक्षात् पुरुषोत्तम नारायण छे. (३) इतिवचनामृतम् ॥३०॥(२६४) ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (२) छे. तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे सर्वथी पटले जीव, माया, ईश्वर, ब्रह्म ने मूळअक्षर तेथी पर अमारा तेजरूप अक्षरधाम छे तेने मध्ये अमे सदा साकार मूर्ति विराजमान छीए एवो निश्चय करीने अमारी उपासना भक्ति करे ते भक्त अमने गमे छे, पण केवळ तेजनी उपासना करे ते गमे नहि. (१) अने तप वैराग्यादिक साधन अमारी प्रसन्नताने अर्थे करे ते गमे. (२) बीजामां पांच वातोनुं निरंतर अनुसंधान राखवानुं कह्युं छे. (३) बाबतो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां आ बे वार्ता अमने गमे छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते बे वार्ता कइ जाणवी ? अने त्यां मन अटके छे एम कह्युं ते त्यां पटले कियां अटकतुं हशे ?

१ उ० चैतन्य तेजनो राशि जे पोतानी मूर्तिनो प्रकाश तेना मध्यमे विषे आकारमूर्ति थका श्रीजीमहाराज सदाय विराजे छे एवो दृढ निश्चय ने ते साकार मूर्तिनी उपासना करवी एक ए वात. अने बीजुं श्रीजीमहाराजनी प्रसन्नताने अर्थे तप करे योग साधे तथा पंच विषयनो अभाव करे तथा वैराग्यादिक साधन ते निर्दंभपणे करे ए बीजी वात ए बे वातो जाणवी. अने श्रीजीमहाराजथी पर कोइ नथी पटले त्यां मन अटके

छे एटले तेथी पर कांइ जाणवानुं नथी एम समजवुं.

२ प्र० (२/३ बीजा प्रश्नमां) अमारे पांच वातोनुं अनुसंधान रहे छे एम कह्युं ते श्रीजी-महाराज तो साक्षात् भगवान छे ने अनंत ब्रह्मांड तथा मूळअक्षरादिक सर्वेना अंतर्यामी छे ने एक काळावच्छिन्न सर्वेने जाणे छे एमने अनुसंधान शुं राखवुं पडे ते एम कह्युं हशे ? अने आटलुं काम कर्युं छे ने आटलुं बाकी छे एम कह्युं ते शुं जाणवुं. ?

२ उ० पोताने मिषे करीने पोताना साधनिक भक्तोने उपदेश कर्यो छे जे तमे तमारो देह पडी जवानुं अनुसंधान राखीने सर्व वासना टाळी नाखो एम पोताने विषे प्रीति कर-वामां पोताना भक्तने सावधान राखवा ए पोतानुं हारद छे ते वासना टाळीने श्रीजीम-हाराजने विषे प्रीति करीने मूर्तिनो साक्षात्कार करवो तेमां बाकी होय ते बाकी जाणवुं. अने मुक्तानंदस्वामी जेवा मोटाने विषे वासना छे के टळी गइ छे एम कह्युं छे ते पण सर्वे वासना टळी गइ होय एवा अमारा मोटा संतने ओळखीने एमनो समागम करवो ने अमारा विना सर्वे वासना टाळी नाखवी एम कह्युं छे. अने हुं मारा मनने उदासी करवा लागुं तो क्यांइ जतुं रहेवाय ते पोताना मुक्तनी वात कही छे जे अमारा मुक्त आ लोकमांथी उदास थाय एटले मनुष्य रूपे दर्शन आपे छे ते अदृश्य थइ जाय तो साधनिकने अमारा स्वरूपनुं ज्ञान आपीने अमारी भक्ति कोण करावे तेथी अमारा मुक्त आंहि दर्शन आपे छे एम श्रीजीमहाराजे कह्युं छे. ॥ २६४ ॥

संवत् १८८५ ना महा शुदि ४ चोथने दिवस सांझने समे श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणा बारना ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर बिराजमान थया हता ने माथे धोळो फेंटो बांध्यो हतो ने धोळो खेस पहेर्यो हतो तथा राती कोरनुं बिलायती धोळुं धोतियुं ओढयुं हतुं ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने वाजां वगा-डीने कीर्तननुं गान परमहंस करता हता ते " हरि मेरे हारळकी लकरी " ए कीर्तन गाइ रह्या त्यारे महाराजे कह्युं जे " यमुनाके तीर ठाडो " ए कीर्तन गाओ पछी ए कीर्तन गावा लाग्या.

१ त्यारे एवा समयमां श्रीजीमहाराज बहु वार विचारी रह्या ने पछी बोल्या (१) १
जे हवे कीर्तन राखो अमे आ एक वार्ता करीए छइए, ते छे तो थोडीक पण ध्या-नना करनाराने बहु ठीक आवे एवी छे,ने ए वात कोइ दिवस अमे करी नथी. पछी वळी नेत्रकमळने मिंचीने विचारी रह्या ने पछी बोल्या जे, कोटी कोटी चंद्रमा सूर्य अग्नि तेना जेवो तेजनो समूह छे ते तेजनो समूह समुद्र जेवो जणाय छे, एवुं ब्रह्मरूप तेजोमय जे भगवाननुं धाम तेने विषे आ पुरुषोत्तम भगवाननी आकृति रही छे. ते आकृतिमांथी पोते भगवान अवतार धारे छे अने आ भगवान केवा छे तो क्षर अक्षर

थकी पर छे ने सर्व कारणना पण कारण छे ने अक्षररूप एवा जे अनंत कोटी मुक्त तेमणे सेव्यां छे चरण कमळ जेमनां एवा छे अने एवा जे भगवान तेज पोते दयाये करीने जीवोनां परमकल्याण करवाने अर्थे हमणां प्रगट प्रमाण थका तमारी सर्वनी दृष्टिने गोचर साक्षात् पणे वर्ते छे माटे जे धाममां रही मूर्ति ने आ प्रगट श्रीकृष्णनी मूर्ति तेमां अधिकपणे सादृश्यपणुं छे ते श्रीकृष्णनी जे मनुष्यरूप मूर्ति तेना ध्याननो करतल जे होय तेनी जे दृष्टि ते भगवानना रूप विना बीजा रूप विषय मात्रमां अतिशे वैराग्यने पामीने भगवानना रूपमांज लुब्ध थाय त्यारे तेने आ प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्ति ने धामनी मूर्ति ते बेयमां लगार पण भेद न जणाय. अने ते मूर्तिने आ मूर्तिनां रूप ने अवस्था ते बरोबर जणाय, तथा ते मूर्ति जेटली उंची छे ने जेटली पुष्ट छे, तेवीने तेवीज आ मूर्ति पण जणाय छे, पण तेमां ने आमां एक रोमनो पण फेर न जणाय अतिशे एकपणुं जणाय. एवी रीते तेमां ने आ मूर्तिमां फेर लगार पण नथी. ते मूर्ति ने आ मूर्ति एकज छे. एवी जे प्रत्यक्ष मूर्ति तेनुं ध्यान नेत्रने आगळ बाहेर करे त्यारे तो तेमां ने आमां लगार फेर नथी. ने तेज मूर्तिने ध्याननो करतल प्रतिलोम पणे पोताना नेत्रमां जुवे त्यारे तेज मूर्ति प्रथम जणाती तेवी न जणाय ने नेत्रनी कीकीमां जेवडी मूर्ति छे तेवडी जणाय. पछी वळी ए ध्याननो करतल प्रतिलोम पणे कंठथी हेठे सुधी मांहेली कोरे ध्याने करीने जुवे त्यारे एज मूर्तिने मोरे बे प्रकारे देखतो तेम न देखे ने तेज मूर्तिने बहुज मोटो बहुज उंची बहुज जाडीने बहुज भयंकर एवी देखे, जेम मध्यान काळनो सूर्य होय त्यारे छाया पुरुषना शरीर बरोबर होय ने तेज सूर्यने आथम्याटाणुं थाय त्यारे छाया मोटी लांबी थाय पण पुरुषना शरीर प्रमाणे नथी रहेती, तेम ते मूर्ति पण पूर्वे कही तेवी मोटो थाय पछी ए मूर्तिने हृदयने विषे रही जे बुद्धि ते बुद्धिने विषे जुवे तथा ते बुद्धिमां रह्यो जे पोतानो जीव तेने विषे जुवे त्यारे तेज मूर्तिने अंगुष्ट मात्र परिमाणे जुए, अने द्विभुज जणाय के चतुर्भुज जणाय पण मोरे त्रण प्रकारे देखी तेवी न देखाय अने पछी वळी ए ध्याननो करतलने प्रतिलोमपणे पोताना जीवथी पर कोटी कोटी सूर्य चंद्र अग्निना तेजना समूहने विषे आ मूर्ति जणाय छे, ते जेवी दृष्टि आगळ जणाती हती तेवीज रीतनी जणाय छे पण लगार फेर नथी जणातो. माटे गुणातीत एवुं जे अक्षरधाम तेने विषे जे मूर्ति छे ते मूर्ति आ प्रत्यक्ष छे ए बेमां फेर नथी, जेम धामनी मूर्ति गुणातीत छे तेमज मनुष्य मूर्ति पण गुणातीत छे. अने पूर्वे जे मूर्तिमां फेर पड्यो ते तो गुणमय एवां जे स्थानक तेणे करीने पड्यो ते नेत्रमां सत्व गुण ने कंठमां रजोगुण ने बुद्धिमां रह्यो जे जीव ते पण गुणमय छे एम वार्ता करीने पछी

बोल्या जे मोरे गाता हता ते कीर्त्तन गाओ एवी रीते श्रीजीमहाराजे पोताना पुरुषोत्तम स्वरूपना निरूपणनी वार्ता परोक्षपणे करीने कही. (१) इति वचनामृतम् ॥३१॥(२६५) १

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के ब्रह्मरूप तेजोमय एवुं अमारा तेजरूप अक्षर धाम छे तेमां अमारी आकृती रही छे एटले अमे मूर्तिमान रह्या छीए अने ए आकृतिमांथी अवतारधारण करीए छीए एटले त्यां रह्या थका ज सर्व ब्रह्मांडमां देखाइए छीए. अने क्षर अक्षरथीपरनेसर्वेनु कारण जे अमारुं तेज तेना पण कारण छीए अने अमारा धामने विषे अनंतकोटी मुक्तोए सेव्या एवा अमे ते दया करीने जीवोना परमकल्याण करवाने अर्थे प्रगट प्रमाण तमारी सर्वेनी दृष्टि गोचर साक्षात्पणे वर्तिए छीए. अने अमारी आ मनुष्य रूप मूर्ति ने धाममां मूर्ति छे ते एकज छे पण जुदी नथी अने अमारु ध्यान नेत्रने आगळ बहार करे तेने धाममां जे मूर्ति छे ते अने आ अमारी मनुष्यरूप मूर्ति ते एकज जणाय. अने अमारी आ मनुष्यरूपमूर्तिने नेत्रमां जुवे तो नेत्रनी कीकीमां जेवडी मूर्ति छे तेवडी जणाय. अने कंठथी हेठे सुधि मांहेली कोरे जुवे तो बहुज मोटी देखे अने बुद्धिमां तथा बुद्धि ए युक्त एवो जीव तेमां जुवे तो अंगुष्ट मात्र देखे अने अमारा तेज रूप धाम ते धाम रूप थइ ने जुवे तो प्रथमना जेवी देखे. अने अमे अक्षरधाममां जेवा गुणथी पर छीए तेवाज मनुष्यरूपे देखाइए छीए तो पण तेवाज गुणथी पर छीए पण मनुष्यरूप मूर्तिमां ने धाममां मूर्ति छे तेमां किंचितपण फेर नथी (१) बाबत छे.

१ प्र० हरी मेरे हारलकी लकरी अने यमुनाके तीर ठाढो ए बे कीर्त्तनमां कांइ अधीक न्यून भाव हशे के नहि ?

१ उ० जेम हारल लाकडी राखे छे, तेम मूर्तिने त्रणे अवस्थामां क्षणवार पण दृष्टिथी छेटे मुके नहि, एम ए कीर्त्तनमां सन्मुख मूर्ति धारवानो भाव छे. अने यमुना के तीर एटले सर्वथी पर अक्षर धाम ते रूप थइने, तेमां मूर्ति धारीने मूर्तिमां जोडाइ जावुं एवो अंतर वृत्तिनो भाव छे, माटे आ अधिक छे.

२ प्र० आमां तथा (अ० १ ना पहेला प्रश्नमां, तथा व० ४ ना बीजा प्रश्नमां, तथा ८ मां) आ चारेमां ध्यान करवानुं कह्युं तेमां कियुं श्रेष्ट हशे ?

२ उ० चारेमां श्रीजीमहाराजनी मूर्तिनुं ध्यान करवाना उपाय कह्या छे. ते सर्वेथी आमां श्रीजीमहाराजना तेज रूप थइने ध्यान करवुं. तेमां मूर्तिविना बीजुं कांइ देखवामांज न आवे. माटे आ ध्यान सर्वथी सुगम, ने श्रेष्ठ छे.

३ प्र० तेजनुं कारण तो मूर्ति छे. अने केटलाक तेजने मूर्तिनुं कारण कहे छे. ते केवी रीते समजता हशे ?

३ उ० मूळपुरुषना तेजरूप ब्रह्म ते द्वारे सर्व जगत उत्पन्न थाय छे ने तेमां लय पामे छे. ते ब्रह्मने परोक्षज्ञानी सर्वेनुं कारण कहे छे. पण ए ब्रह्मना कारण ने आधार मूळपुरुष मूर्तिमान छे, एम जाणता नथी तेथी तेजने कारण कहे छे. ने ते तेजनुं कारण जे मूर्ति,

तेने कार्य समजो छे. अने आ वचनामृत ग्रंथमां तो तेथकी पर मूळपुरुष, अने ते मूळ पुरुषथी पर वासुदेवब्रह्मनुं तेज, अने तेथी परब्रह्मनीमूर्ति, अने तेथी पर अक्षरनुंतेज ने तेथी अक्षरनी मूर्ति, अने तेथी पर श्रीजीमहाराजनुं तेज, अने तेथी पर श्रीजीमहाराजने कह्या छे. एटला सारुज सर्वेथी पर एवो तेजनो समूह छे. एमां अमे रह्या छीए. एम कह्युं छे ते पुरुषोनां, तथा ब्रह्मनां, तथा अक्षरोनां ए सर्वेनां तेजथी पर अमारुं तेज छे. तेमां अमे रह्या छीए. एम कह्युं छे, माटे जेमे साकारनी उपासना नथी, ते मूर्तिनुं कारण तेजने कहे छे. पण ए तेजनुं कारण मूळपुरुषमूर्तिमान छे. ते जेना जाणवामां आवे ते तेजने कारण कहे नहि, मूर्तिनेज कारण कहे.

४ प्र० धाममां रही जे मूर्तिने आ मूर्तिमां अधिकपणे आश्चर्य पणुं छे. एम कह्युं ते आश्चर्यपणुं शुं समजवुं ?

४ उ० धामने विषे श्रीजीमहाराज दिव्यमूर्ति छे,तेज आ मूर्ति छे.पण जुदी नथी एम समजवुं.

५ प्र० गुणातीत एवुं अक्षरधाम कह्युं तेनो शो अर्थ हशे ?

५ उ० सर्वे गुणथी पर होय तेने गुणातीत कहेवाय, माटे सर्वे गुणथी पर जाणवुं.

६ प्र० धामनी मूर्ति गुणातीत छे, एम कह्युं तेनो अर्थ शो हशे ? अने मनुष्यमुर्ति गुणातीत छे, एम कह्युं तेनो अर्थ शो हशे ?

६ उ० धामनी एटले धाममां रही जे श्रीजीमहाराजनीमूर्ति ते गुणथी पर छे, अने एनी ए मूर्ति मनुष्य रूपे देखाय छे. तो पण गुणथी पर छे. एम मनुष्यरूपमूर्ति अने धाममां रही मूर्ति ते बे नथी एकज छे. एम कह्युं छे. अने गुणातीतनो अर्थ (प्र० १२ ना सोळमा प्रश्नोत्तरमां छे ॥ २६५ ॥

संवत् १८८५ ना महा सुदि ५ पंचमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां आथमणे बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर विराजमान हता अने सर्वे वसंति वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती ने गवैया परमहंस वसंतनां कीर्तन गावता हता.

१ पछी श्रीजीमहाराजे मुक्तानंदस्वामी आदिक साधुने कह्युं जे (१) ॥ विषयाविनिवर्तं ते ॥ ए श्लोकनो अर्थ करो त्यारे तेमणे रामानुज भाष्ये सहित अर्थ कर्यो. त्यार पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे एनो तो अमे एम निश्चय कर्यो जे युवान अवस्था जेने होय तेने आहार क्षीण करवो ने युक्ताहारविहारपणे रहेवुं, ने आहार क्षीण थाय त्यारे देहनुं बळ क्षीण थाय त्यारेज इंद्रियो जिताय ते विना इंद्रियो जिताय नहि. अने एवो थको पोताना मनने भगवाननी नव प्रकारनी भक्तिने विषे रुचि सहित राखे ने भक्तिमां प्रीति राखे. ए बे प्रकारे ए वर्ते तो एनो सत्संग पार पडे, ने एम न होय तो ए ज्यारे त्यारे जरुर इंद्रियोने वश थइने विमुख थाय. ते गोवर्धन जेवो

समाधि निष्ठ होय तो पण एनो एने भय छे तो बीजानी शी वार्ता ? अने आहार नियममां करवो ते एणाक उपवास ठासुका करवा मांडे तेणे करीने न थाय, एम तो झाझी तृष्णा थाय ने भुख्यो आहार वधे ने उपवासनो खांगो खाय त्यारे बमणो वाळे. माटे एतो धीरे धीरे आहारने घटाडवा मांडे तो नियममां आवे, जेम मेघ झीणी झीणी बुंदे वर्षे छे पण बहु पाणी थाय छे; तेम धीरे धीरे आहारने नियममां करवो ने एम करे त्यारे इंद्रियो नियममां आवे. ने भक्तिमां प्रीति होय तो ए पार पाडे ए निश्चित वार्ता छे. (१) १

२ अने वळी श्रीजीमहाराजे एम वार्ता करी जे (२) भगवाननो जे साचो भक्त तेने भगवाननुं महात्म्य समज्यानी केवी रीत छे ? तो जे भगवान छे ते तेजोमय एवुं जे पोतानुं अक्षरधाम तेने विषे सदा साकार मूर्ति थका विराजमान छे ने सर्वना कारण छे, सर्वना नियंता छे, सर्वना अंतर्यामी छे, अनेककोटी ब्रह्मांडना राजाधिराज छे ने अलौकिक दिव्य सुखमय मूर्ति छे ने मायाना गुण थकी रहित छे, एवी रीते आ प्रत्यक्ष भगवानने जाणीने भगवान विना जे बीजा सर्वे मायिक पदार्थ मात्र तेने अतिशे तुच्छ ने नाशवंत समझे, ने एक भगवानने विषेज प्रीति करे ने नव प्रकारनी भक्तिने करे. अने वळी एम समझे जे आवा अतिशे मोटा जे भगवान तेनी मर्यादाने विषे काळ माया ब्रह्मा शिव सूर्य चंद्रमा इत्यादिक सर्वे समर्थ छे ते पण निरंतर वर्त्ते छे, एवुं जाणीने भगवाने बांधी जे धर्म मर्यादा तेने विषे भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे पोते निरंतर वर्त्ते, पण ते धर्म मर्यादानो क्यारेय लोप न करे. (२) अने २ जे कुबुद्धिवाळो होय ते केम समझे तो एवा मोटा जे भगवान ते तो पतित पावन छे अधम उधारण छे, ते माटे कांइक धर्म विरुद्ध अवळुं वर्त्ताइ जाशे तो तेनी शी चिंता छे ? भगवान तो समर्थ छे एवी रीते महात्म्यनी ओथ लइने मूळगो पाप करवा थकी डरे नहि एवो जे होय ते तो दुष्ट छे पापी छे. ने एवी समझण वाळो होय ने ते उपरथी भक्त जेवो जणातो होय तो पण तेने भक्त न जाणवो ने तेनो संग क्यारेय न करवो अने भक्त तो प्रथम कही तेवी रीतनी समझणवाळानेज जाणवो ने तेनोज संग करवो. (३) ॥ इति वचनामृतम् ॥ ३२ ॥ २६६ ॥ ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य(२)छे, तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे आहार विहार युक्त करे तो इंद्रियो जिताय ने एवो थको नव प्रकारनी भक्तिमां प्रीतिए सहित रुचि राखे तो सत्संगमां पार पडे. (१) बीजामां सर्वेथी पर अमारा तेजरूप अक्षरधाममां अमे सदा साकार मूर्ति विराजमान छीए ने सर्वना कारण ने सर्वना नियंता ने सर्वना अंतर्यामी ने दिव्य सुखमयमूर्ति छीए आवो अमारो महिमा समझीने

अमारे विषे प्रीति करे ने नवधा भक्ति करे ने अमारी आज्ञामां वर्ते ते अमारो साचो भक्त छे. (२) अने अमारा महिमानो ओथ लइने अमारी बांधेली मर्यादानो भंग करे ते पापी ने दुष्ट छे. (३) वावलो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां क्षमाधिनिष्ठने इंद्रियोनो भय कह्यो ने (अ० ३ ना पहेला प्रश्नमां) उपशम दशाने पामे तेने पंच विषय बाध न करे एम कह्युं छे ते केम समजवुं ?

१ उ० आमां पोताना साधनिक भक्तोने शिक्षाने अर्थे मायानुं बळ बताव्युं छे पण गोवर्धन भाइना जेवी उपशमदशा आवे तेने विषय बाध करेज नहि. ॥ २६६ ॥

संवत् १८८५ ना फागण शुदि ११ एकादशीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीगोपीनाथजीना मंदिरने विषे विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां.ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे सर्वे परमहंस आगळ एम वार्ता करी जे (१) धन दोलत स्त्री ने पुत्र ए आदिक जे पदार्थ तेणे करीने जेनी बुद्धिमां फेर पडे नहि, ने एने अर्थे कोइने विषे आस्ता आवे नहि एवा तो सत्संगमां थोडाक गणतीना हरिभक्त होय पण झाझा होय नहि, एम कहीने वळी बोल्या जे एवा तो आ मुक्तानंदस्वामी तथा गोपाळानंदस्वामी छे ते एमने कोइ बीजो गमे तेवो होय ने चमत्कार देखाडे तो पण तेनो कोइ रीते भार आवेज नहि, अने केवो होय तेने कोइनो भार न आवे ? तो जे एम समझतो होय जे आ देहथी नोखो जे आत्मा ते हुं छुं ने ते हुं प्रकाशमान सत्तारूप छुं, ने ते मारा स्वरूपने विषे प्रत्यक्ष भगवान अखंड विराजमान छे, अने ते भगवानना आकार विना बीजा जे प्राकृत आकारमात्र ते असत्य छे ने अनंत दोषे युक्त छे एवो वैराग्य होय, ने भगवाननुं महात्म्य यथार्थ जाणतो होय तेने कोइ जातनो बुद्धिमां भ्रम थाय नहि. (१) पण ए वार्ता अति कठण छे केम जे एवा मोटा छे तो पण १ जो एमने माननो बहु योग थाय तथा रूपैया ने सोना महोरना ढगला आगळ आवीने पडवा लागे तथा रूपवान एवी जे स्त्रियो तेनो योग थाय तो ए त्यागी छे तोय पण एणे करीने एमनुं ठेकाणुं रहे नहि. अने जो एवो योग थाय तो आज आपणा त्यागीमां जे अति उतरतो हशे ते जेवा पण रहे के न रहे एमां पण संशय छे केम जे ए पदार्थनो तो योगज एवो छे जेम आपण सर्वे बेठा छइये ते केवा डाह्या छइये पण जो दारूना शीशानुं पान कर्युं होय तो कांइ ठा रहे नहि तेम ए पदार्थनो संग जरूर लाग्या विना रहेज नहि माटे ए पदार्थनो योगज न थवा दे तो ए थकी बचे ने एनो योग थया मोर एनो भय राखे जे रखे मुने एनो योग थाय. अने ए वार्ता शास्त्रमां प्रसिद्ध छे जे एनो संग तो एक भगवानने न लागे ते कह्युं छे जे ॥ ऋषि नारायण-

मृते ॥ तथा ॥ येन्येस्वतः परिहृतादपि बिभ्यतिस्म ॥ [२] २

२ अने पछी श्रीजीमहाराज एम बोल्या जे (२) वासुदेवभगवाननो एकांतिक भक्त केने कहीए ? तो जेने विषे स्वधर्म ज्ञान वैराग्य ने महात्म्ये युक्त एवी वासुदेव भगवाननी अनन्य भक्ति एटलां वानां होय तेने एकांतिक भक्त कहीए ने एनी गति एम कही छे जे एनो वासुदेवभगवानमां प्रवेश थाय. ते प्रवेश ते शुं तो तेजना मंडळने विषे दिव्यमूर्ति एवा जे वासुदेवभगवान तेने विषे ए भक्तने स्नेह होय, ते स्नेहे करीने वासुदेवभगवाननीमूर्तिने विषे एना मननुं निरंतर अनुसंधान रहे ने आसक्त थको वर्ते, ने एवी रीते रह्यो थको ए वासुदेवभगवाननी सेवाने विषे पण बाहेर थकी रहे. जेम लक्ष्मीजी छे ते वासुदेवभगवाननाहृदयने विषे चिन्ह रूपे स्नेहना अधिक पणे करीने रह्यां छे ने बाहेर थकी स्त्री रूपे करीने सेवामां पण रह्यां छे, तेम ए
एकांतिक भक्तनो वासुदेवभगवानने विषे प्रवेश जाणवो. (३) अने हमणां पण जे ३
भक्तने भगवाननी कथा कीर्त्तन नाम स्मरण इत्यादिक जे दश प्रकारनी भक्ति तथा भगवाननुं महात्म्य तथा स्वधर्म तथा वैराग्य तथा आत्मनिष्ठा तथा संतनो समागम एवुं बंधाण होय ते एवुं होय जे ते विना कोइ रीते चालेज नहि, जेम अफीण आदिकनो बंधाणी होय तेने ते विना चाले नहि, ने ते अफीण तो कडवुं झेर छे तो पण अफीणना बंधाणीने अफीण विना चाले नहि, तथा दारुनुं बंधाण होय तो ते दारु पण पीये त्यारे गळुं बळे एवो छे तो पण ते विना चाले नहि, ते एने घणाक रुपैया आपे तो पण ते बंधाणथी ते वहालो न थाय ने न ले, केम जे ए व्यसन एना जीव संघाथे जडाइ गयुं छे. तेम जेने भगवद्भक्ति आदिक क्रियानुं बंधाण थयुं होय ते गमे तेवो कुसंग थाय तो पण ते विना एने चालेज नहि, ने ए विना बीजा कार्यमां एनुं मन राजी थाय नहि, ने भगवद्भक्ति आदिक क्रियामां एनो जीव जडाइ गयो होय ने एनोज एने अति इशक होय एवो जे भगवाननो भक्त तेनो पण वासुदेवभगवानने विषे प्रवेश छे एम जाणवुं, अने ते भगवद्भक्त केवो होय तो भगवाननी सेवा विना चतुर्धा मुक्तिने पण न इच्छे तो बीजानी शी वार्ता? एवो होय ते भगवाननो एकांतिक
भक्त जाणवो ने एने कोइ पदार्थमां इशक न होय.(४) अने एवो न होय ने क्यारेक ४
भगवाननी भक्तिमांय सुवाण थाय ने जो कुसंगनो योग थाय तो भक्तिने भुली जाय ने ते चाळे चडी जाय, एने तो प्राकृत देहाभिमानी कहीए पण ए भक्त खरो नहि
ने एनो विश्वास नहि. (५) ५

३ अने वळी श्रीजीमहाराजे एम वार्ता करी जे,(३)जे भगवानना भक्तने स्त्री धन देहाभिमान ने स्वभाव ए चार वानामां काच्यप होय, ने ते भगवाननी भक्ति करतो होय तो पण एनी भक्तिनो विश्वास नहि एनी भक्तिमां जरुर विघ्न आवे. केम जे क्या-

रेक एने स्त्री धननो योग थाय तो भक्तिनो ठा रहे नहि ने तेमां आसक्त थइ जाय, तथा देहाध्यास होय तो ज्यारे देहमां रोगादिक कष्ट प्राप्त थाय तथा अन्न वस्त्रादिक न मळे अथवा कोइक कठण वर्तमान पाळवानी आज्ञा थाय, त्यारे पण तेने भक्तिमां भंग थाय ने विकळ थइ जाय ने कांइ विचार न रहे ने चाळा चुंथवा लागे, तथा कोइक रीतनो स्वभाव होय तेने संत टोकवा मांडे ने ते स्वभाव प्रमाणे वर्तवा न दे ने बीजी रीते वर्तावे त्यारे पण ए मुंझाय, ने एने संतना समाजमां रहेवाय नहि त्यारे भक्ति ते क्यांथी रहे ? माटे जेने दृढ भक्ति इच्छवी होय तेने ए चारवानामां काचप राखवी नहि ने ए चारनी काचप होय तो पण समजीने धीरे धीरे त्याग करवी तो वासुदेवभगवाननी निश्चळ भक्ति थाय. आ वार्त्ता ते आमज छे पण एमां कांइ संशय नथी. (६) इति वचनामृतम् ॥३३॥ (२६७) ६

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (६) त्रण छे, तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे पोताना आत्माने प्रकाशरूप ने सत्तारूप माने ने तेने विषे अमारी आ प्रत्यक्ष मूर्ति विराजमान छे एम समजे, ने आ अमारी मूर्त्ति विना बीजा प्राकृत आकारने असत्य ने दोषे युक्त समजे तेनी बुद्धिमां कोइ जातनो भ्रम थाय नहि. (१) अने एवाने पण मान द्रव्य तथा रूपवान स्त्रियोनो योग थाय तो ठेकाणुं रहे नहि माटे एनो योग थावा देवो नहि. (२) बीजामां स्वधर्म ज्ञान वैराग्य ने महात्म्ये युक्त एवी अमारी अनन्य भक्ति होय ते अमारो एकांतिक भक्त छे ने एनो अमारे विषे प्रवेश थाय छे अने अमारी सेवाने विषे बहारथी पण रहे छे, (३) अने देह छतां पण जे भक्तने अमारी दश प्रकारनी भक्ति तथा अमारुं महात्म्य तथा स्वधर्म वैराग्यने आत्मनिष्ठा तथा अमारा संतनो समागम ते विना चालेज नहि एवुं बंधाण होय तेनो पण अमारे विषे प्रवेश जाणवो ने ते एकांतिक छे, (४) अने जे कुसंगने योगे अमारी भक्तिने भुली जइने चाळे चडी जाय ते प्राकृत देहाभिमानी छे, [५] त्रीजामां स्त्री धन देहाभिमान ने स्वभाव ए चारमां काचप होय तेनी भक्ति रहे नहि ए काच्यपनो त्याग करे तो अमारी निश्चळ भक्ति थाय. (६) बावतो छे.

१ प्र० (१/२ पहेला प्रश्नमां) मुक्तानंदस्वामीने तथा गोपाळानंदस्वामीने माननो तथा द्रव्यनो तथा स्त्रियोनो योग थाय तो तेमनुं ठेकाणुं रहे नहि एम कह्युं ने (छे० २६ ना बीजा प्रश्नमां) मयाराम भट्ट तथा मुळजी ब्रह्मचारी तथा निष्कुळानंदस्वामीने स्त्री आदिक कोइ पदार्थ बंधन करी शके नहि एम कह्युं छे तेनुं शुं कारण हशे ? केम जे श्रीजीमहाराजे देहोत्सव वखते सर्वे साधु ब्रह्मचारी पार्षद हरिजनोने आज्ञा करी हती के श्रीगोपाळानंदस्वामीनी आज्ञामां रहेजो ने जे एमनी आज्ञामां नहि रहे ते अमारा नथी एम त्यागी गृही सर्वेने गोपाळानंदस्वामीनी आज्ञामां रहेवानुं कह्युं हतुं माटे गोपाळानंदस्वामी तो सत्संगमां सर्वथी मोटा हता ने (छे० २/२ मां) अक्षरधाममां परम ए-

कार्तिक मुक्त रह्या छे तेथी पण अधिक कह्या छे ने दासत्व भक्तिमां पण [म० ६९ ना त्रीजा प्रश्नमां] गोपाळानंदस्वामीने तथा मुक्तानंदस्वामीने उत्तम कह्या छे अने [का० ३ ना पहेलाप्रश्नमां] शुकस्वामीनी प्रशंसा करी छे, तेमां पण एमने मुक्तानंदस्वामी जेवा कह्या छे माटे मुक्तानंदस्वामी पण गोपाळानंदस्वामीना जेवाज मुक्त छे ते एवा मोटा अनादि मुक्तनुं ठेकाणुं रहे नहि एम कह्युं तो बीजानी तो वात शी कहेवी अने (लो० १३ ना पहेला प्रश्नमां) पण तुच्छ जेवो जीव श्रीजीना चरणारविंदमां निमग्न रहे तो तेने पराभव न थाय एम कह्युं छे ते साधनिकने पराभव न थाय तो आतो अनंतने एवी स्थिति करावता एवा मोटा सिद्ध मुक्तने पराभव थाय एम केम कह्युं हशे ?

१ उ० गोपाळानंदस्वामी तथा मुक्तानंदस्वामी तो श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां रहेनारा अनादि मुक्त हता एमना सामु तो माया जोइज शके नहि एवा मोटा हता पण एमने मिषे करीने साधनिकने शीक्षा करी छे केम जे मोटाने उद्देशीने वात करे त्यारे साधनिकने बीक लागे जे एवा मोटा ने पराभव थाय तो आपणने तो थायज एम बीक लागे एटला माटे मोटाने मिषे कह्युं छे.

२ प्र० (३ बीजा प्रश्नमां) श्रीजीमहाराजे पोताने विषे प्रवेश कह्यो ते तेजना मंडळमां दिव्य मूर्ति छे त्यां तो मायिक मननी गति होय नहि ते केम समजवुं.

२ उ० जेम लक्ष्मीजी श्रीकृष्णवासुदेवने विषे रहे छे ने बहारथी स्त्री रूपे सेवामां रहे छे तेमज मुक्त पण श्रीजीमहाराजनी मूर्तिमां रहे छे ने बहार पण रहे छे अने मननुं अनुसंधान रहे छे एम कह्युं छे ते मन शब्द तो आ लोकनी रूढीये वापर्यो छे पण जे मुक्त थाय तेने मन छेज नहि ने एने विषे देह देही भाव पण नथी मुक्त पण श्रीजीमहाराजनी पेठेज दिव्य मूर्तियोज छे. ॥ २६७ ॥

संवत् १८८५ ना चैत्र शुदि ३ त्रीजने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीगोपीनाथजीना मंदिरने विषे विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजने शुकमुनिए प्रश्न पुछ्यो जे (१) भगवान विना बीजां मायिक पदार्थ मात्रने विषे वासना न रहे ने एक भगवानने विषेज वासना रहे तेनां बे साधन जणाय छे. एक तो भगवानने विषे प्रीति ने बीजो ज्ञाने सहित वैराग्य ए बे साधन छे. ते ए बे साधन तो जेने अतिशे पणे न वर्ततां होय ने भगवाननो निश्चय ने विश्वास तो होय, एवाने पण एक भगवाननीज वासना रहे ने बीजा पदार्थनी वासना न रहे एवो त्रीजो कोइ उपाय छे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ए प्रश्न खरो ने ए बे साधने करीनेज एक भगवाननी वासना रहे ने बीजा पदार्थनी न रहे ते खरुं, अने जो ए बे साधन न होय तो एने भगवान विना अन्य पदार्थनी वासना

न टळे माटे जीव ते दुःखीयो वर्त्ते. ने भगवानतो निश्चय छे माटे मरे त्यारे एनुं कल्याण, भगवान करे, अने भगवान विना अन्य पदार्थनी वासना टाळ्यानां जेम ए बे साधन छे तेम त्रीजुं पण एक छे. ते शुं तो जेना जेवा नियम कह्या छे तेमां सावधानपणे वर्त्ते, ते नियम किया तो एक तो स्वधर्म संबंधी नियम ते केम तो जेम आत्मनिवेदी साधु ब्रह्मचारीना नियम छे, तेमज आत्मनिवेदी न होय तो पण स्त्रीने न जोयानो नियम राखे तथा स्त्रीनी वार्ता न सांभळवानो नियम राखे. एवी रीते पंच विषयना त्याग संबंधी नियमने दृढपणे सावधान थको पाळे, तथा भगवानने भगवानना भक्त तेनी देहे करीने परिचर्या करे, तथा भगवाननी कथा सांभळे इत्यादिक नव प्रकारनी भक्ति संबंधी जे नियम तेने पाळे, त्यारे एना मनमां पण शुभ संकल्प थावा लागे एवी रीते बे प्रकारना नियममां जे वर्त्ते तो तेने वैराग्य ने भगवानने विषे प्रीति ए बे न होय तोपण ते थाय, ने अतिशे बळीयो थइ जाय ने एने पदार्थमां अशुभ वासना टळीने एक भगवाननी वासना दिवसे दिवसे वृद्धि पामती जाय छे. (१) १

२ पछी वळी श्रीजीमहाराजने शुकमुनिए प्रश्न पुछ्यो जे (२) हे महाराज ? जे क्रोध छे ते शामांथी उत्पन्न थाय छे तो पोताने जे पदार्थनी कामना होय तथा जेमां पोते ममत्व बांध्यो होय ने तेनो भंग कोइक करे त्यारे तेने तेमांथी क्रोध उपजे छे, ने कामना जे इच्छा तेनो भंग थयो त्यारे ते काम हतो ते क्रोध रूपे परिणामने पामे छे. माटे एनो तो एवो स्वभावज थयो जे एमां क्रोध उपजे अने एम थाय तो पण क्रोध न उपजे एम छे के नहि ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जे मोटा साधु छे तेमणे भगवाननी आज्ञाये करीने अथवा शास्त्र दृष्टिए करीने महात्म्य जाणीने पोतानी इच्छाए करीने अनेक जीवाने धर्म मर्यादामां रखाववाने भगवानने मार्गे चढाववा एवो शुभ संकल्प मनमां इच्छ्यो होय ने तेमां प्रवर्त्या होय, अने कोइक जीव धर्म मर्यादानो भंग करीने अधर्ममां प्रवर्ते त्यारे ते मोटा पुरुषने ते जावनी उपर क्रोध उपजी आवे. केम जे पोतानो जे शुभ संकल्प तेनो तेणे भंग कर्यो माटे धर्म मर्यादामां राखवानी शिक्षाने अर्थे तेनी उपर क्रोध करीने तेने शिखामण न दे तो मर्यादानो भंग थातो जाय ने ते जीवनुं सारुं न थाय. माटे एवी रीते तो क्रोध थाय ते ठीक ने एमां कांइ बाध नहि.केम जे एवा मार्गमां जे मोटा साधु प्रवर्त्या तेने आश्ररीने हजारो माणस रह्यां होय तेने कांइक रीस करीने कह्या विनानुं केम चाले?अने क्रोध तो त्यारे न थाय जे जेमांथी क्रोध थाय तेनो त्याग करीदे अने एकाएकी वनमां फरतो रहे त्यारे क्रोध न थाय.पण एम तो एमनाथी केम कराय?केम जे एमणे तो अनेक जीवने वार्ता करीने भगवान सन्मुख करवा ने तेनुं जे कल्याण थाय तेनुं जे महाफळ ते शास्त्रदृष्टिए करी-

ने समझ्युं छे. तथा एवी रीतनी जे भगवाननी आज्ञा तेनुं महात्म्य जाण्युं छे, माटे क्रोध थाय तोय पण ए जे पोतानो शुभ संकल्प तेनो त्याग करेज नहि, अने वळी जेने कोइक मोटा साधु संघाथे हेत थयुं होय ने तेने विषे पोताना कल्याण थावा रूप स्वार्थ मान्यो होय, ने एम जाणतो होय जे आ साधुथीज मारुं सारुं थाशे एवो जे होय तेने क्रोधनो स्वभाव होय तोपण ते मोटा साधु उपर एने कोइ दिवस क्रोध न थाय ने ए क्रोधने मुकीज दे एम पण क्रोध जाय छे, अने पदार्थना लेण देण सारु ते तुच्छ पदार्थने अर्थे जे साधु संघाथे क्रोध करे छे तेने तो साधुनुं महात्म्य तथा साधुनो जे आवी रीतनो मार्ग ते समझाणोज नथी. ने समझाणा होय तो तुच्छ पदार्थ सारु क्रोध करे नहि ने बुद्धिवान होय समझु होय ने तुच्छ पदार्थ सारु साधु संघाथे क्रोध करे तो तेनी बुद्धि राजाना कामदारना जेवी व्यवहारिक जाणवी, पण साधु पणानी बुद्धि एने आवीज नथी एम समझवुं. (२) ॥ इति वचनामृतम् ॥३४॥२६८॥ २

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (२) छे, तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारा विना बीजेथी वासना टळीने एक अमारे विषे वासना थयानां साधन तो अमारे विषे प्रीति ने ज्ञाने सहित वैराग्य छे अने अमारो निश्चय ने विश्वास होय ने पंच विषयना त्याग संबंधी नियम तथा अमारी नव प्रकारनी भक्ति संबंधी नियममां सावधान थको वर्ते तो अमारा संबंधी वासना वृद्धि पामती जाय. (१) बीजामां जीवने अमारा सन्मुख करवाने तेमने अमारी आज्ञा पळाववा माटे तेना उपर क्रोध करवो ते ठीक छे, अने मोटा साधु साथे हेत होय ने पोताना कल्याणनो स्वार्थ मान्यो होय तो क्रोध जाय छे, अने तुच्छ पदार्थ सारु साधु साथे क्रोध करे तेने साधुनुं महात्म्य समजाणुं नथी अने बुद्धिमान तुच्छ पदार्थ सारु साधु साथे क्रोध करे तो तेनी बुद्धि साधुपणानी नथी. (२) बाबतो छे.

१ प्र० बीजा प्रश्नमां शुकस्वामीए ममत्वनो भंग करे तो पण क्रोध न उपजे तेनो उपाय शो छे ? एम पुछ्युं तेनो उत्तर केम नहि कर्यो होय ?

१ उ० शुकस्वामीए एम हारदथी पुछ्युं हतुं जे तमारी आज्ञा पळाववानो ममत्व होय तेने कोइकने धर्ममां रखाववा सारु तेना उपर क्रोध करवो पडे ते अमारे त्यागीने घटे नहि माटे ते न थाय तेनो उपाय बतावो त्यारे श्रीजीमहाराजे तेमने कह्युं जे धर्ममां वर्तावा सारु तमारे क्रोध करवो तेमां बाध नथी. एम कहीने पछी ते क्रोध न थवानो उपाय बताव्यो छे जे ए शुभ संकल्पनो त्याग करीने एकाएकी वनमां फरे तो न थाय, अने बीजुं जेने मोटा साधु साथे हेत होय ने कल्याणनो स्वार्थ होय तो क्रोध न उपजे ए उपाय बताव्यो छे.

२ प्र० पहेला प्रश्नमां अमारे विषे प्रीतिने ज्ञाने सहित वैराग्य ए बे साधन न होय ते जीवतां दुःखीयो रहे ने मरे त्यारे थर्तुं कल्याण तो अमे करीए, एम श्रीजीमहाराजे

कह्युं अने (अं० ३ ना पहेला प्रश्नमां) पंच विषयनुं चिंतवन थाय तेज जन्म मरणनो हेतु छे एम कह्युं माटे ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० आमां विषयनुं चिंतवन थाय छे तेणे करीने ए दुःखीयो रहे छे जे मने आवा भुंडा घाट श्रीजीमहाराजना भजन स्मरणमां विक्षेप करे छे एम पश्चात्ताप करे छे तेथी श्रीजीमहाराज एना उपर प्रसन्न थइने एनुं कल्याण करे छे एम कह्युं छे, अने (अं० ३ मां) जेने दाझ्य न थाय तेने जन्ममरण कह्युं छे. ॥ ११८ ॥

संवत् १८८५ ना चैत्र शुदि ९ नवमीने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजीमहाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्री गोपीनाथजीना मंदिरने विषे विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजने शुकमुनिए प्रश्न पुछ्यो जे, (१) हे महाराज ! जेना हृदयमां भगवानना ने भगवानना भक्तनो दृढ आश्रय होय ते आश्रय गमे तेवो आपत्काळ आवी पडे ने देहने सुख दुःख मान अपमान देशकाळनुं विषमपणुं इत्यादिके करीने जाय नहि ते केम जणाय जे एने एवो आश्रय छे, ने तेना मननो अभिप्राय तथा देहनो आचार ते केवो होय ते कहो ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे जे भक्तने एक भगवानने विषेज मोटपप होय ने भगवानथी बीजुं कोइ पदार्थ अधिक न जाणतो होय, ने भगवान विना बीजा सर्वने तुच्छ जाणतो होय, तथा पोतानी जे प्रकृति होय तेने भगवान तथा साधु ते मरोडे ने प्रकृति प्रमाणे न चालवा दे ने प्रकृति होय तेथी बीजी रीते वर्तावे, त्यारे जे मुंझाय नहि ने प्रकृति मरोडे तेमां कचवाइ जाय नहि ने पोतानी प्रकृति गमे तेवी कठण होय तेने मुकीने जेम भगवान तथा साधु जे कहे तेम जे सरल पणे वर्ते, एवी पे प्रकारे जेनी समझण्य होय तेने गमे तेवो आपत्काळ पडे तो पण भगवाननो आश्रय न टळे. (१) १

२ त्यारे वळी शुकमुनिए पुछ्युं जे, (२) मुंझातो तो होय केम जे प्रकृतिने मरोडे त्यारे जीवने मुंझवण थाय पण ते मुझवणमां पण कांइ फेर छे के नहि त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे प्रकृति मरोडे ने मुंझाय त्यारे जे पोतानोज अवगुण ले, पण भगवाननो ने साधुनो अवगुण न ले ए मारो, अने जे पोतानो अवगुण न ले ने भगवाननो ने साधुनो अवगुण ले, तो एनो विश्वास नहि ने एवो जे होय तेना आश्रयनो पण ठा नहि. (२) २

३ त्यारे वळी शुकमुनिए पुछ्युं जे, (३) जेनी जे प्रकृति होय तेने भगवाने तथा साधुए कोइ दिवस मरोडी न होय त्यारे ते पोताना मनमां केम समजे जे मारी प्रक-

तिने मरोडशे त्यारे मारुं ठीक नहि रहे केम जे पोते जे अजमावेल वार्ता न होय तेनो विश्वास केम आवे ? त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे ए तो पोताना मनना जे संकल्प तेना सामी दृष्टि राखे, जे मारा मनमां भगवान विना बीजा पंच विषय संबंधी भोग छे तेमां शानी वासना बळवान छे ने बळवान पणे किया विषय भोगनो संकल्प थाय छे ? एम विचारे तो जेवो पोते होय तेम मालम पडे पण बीजी रीते न पडे अने ज्यारे ए विचारे त्यारे एम विचारे जे आ पदार्थनी मारे बळवान घाट छे ने तेमां हुं मवर्तु छुं ने तेमांथी ज्यारे मुने साधु मरोडशे त्यारे मारे ठीक नहि रहे एम एने पोतानो निश्चय थाय अने बळवान प्रकृति होय ने तदपि जो एनी प्रकृतिने भगवान तथा साधु कोइ दिवस मरोडे नहि तो तो ए पार पडी जाय, ने जो मरोडे तो तो एनो ठा रहे नहि अंते अति मुंझाइने विमुख थइ जाय. (३) ३

४ अने वळी श्रीजीमहाराजे एम वार्ता करी जे (४) साधुना द्रोहनुं शास्त्रमां सर्व करतां अधिक पाप कह्युं छे तेनुं शुं कारण छे ? तो ए साधुना हृदयने विषे साक्षात् श्रीकृष्णभगवान रह्या छे माटे साधुनो द्रोह करे त्यारे भगवाननो द्रोह थाय छे. केम जे ते साधुनो द्रोह करे त्यारे तेना हृदयमां रह्या जे भगवान ते दुखाय छे त्यारे ए भगवानना द्रोहनुं अधिक पाप छे माटे संतना द्रोहनुं सर्व करतां अधिक पाप कह्युं छे. (४) ४ अने कंस शिशुपाळ पूतना ए आदिक जे दैत्य तेमणे भगवाननो द्रोह कर्यो ने तेनुं पण भक्तनी पेठे भगवाने कल्याण कर्युं तेनो शो अभिप्राय छे ? जे ए दैत्ये वैर बुद्धिये करीने भगवाननुं चिंतवन कर्युं त्यारे भगवाने एम जाण्युं जे वैर बुद्धिए कराने पण ए दैत्ये मारुं चिंतवन कर्युं ने मारा संबंधने पाम्या, माटे मारे एनुं कल्याण करवुं एवी रीते एने विषे भगवाननी दयानुं अधिकपणुं जाणवुं अने वळी एम जाणवुं जे ए वैर बुद्धिए करीने आव्यां तेनुं पण भगवाने कल्याण कर्युं तो जे भक्त भक्तिए करीने एनो आशरो लेशे ने भगवानने भक्तिए करीने राजी करशे तेनुं भगवान केम कल्याण नहि करे ? करशेज एवी रीते भगवाननी दयानुं अधिकपणुं जणावीने मनुष्यने भगवाननी भक्तिमां प्रवर्त्तावया एवो अभिप्राय शास्त्रना करनारानो छे. पण एम नथी जे दैत्यनी पेठे भगवाननुं अणगमतुं करवुं माटे भगवाननी उपर वैरभाव राखीने जे भगवाननो द्रोह करे ने अणगमतुं करे तेने तो दैत्यज जाणवा, ने ए पक्ष तो दैत्यनो छे, अने जेम भगवाननुं गमतुं होय ते परमाणेज वर्तवुं ने भक्ति करवी ने भगवान ने भगवानना भक्तने राजी करवा एवो भगवानना भक्तनो पक्ष छे. (५) ५

५ पछी शुकमुनिए श्रीजीमहाराजने पुछ्युं जे (५) हे महाराज ? जे साधुना हृदयमां भगवान रह्या होय ने तेना द्रोहथी भगवाननो द्रोह थाय ने तेनी सेवा करीए तो

भगवाननी सेवा थाय ते साधुनां लक्षण शां छे ते कहो ? त्यारे श्रीजीमहाराज थोडी-कवार विचारीने कृपा करीने बोल्या जे प्रथम तो मोटुं लक्षण ए छे जे भगवानने क्या-रेय पण निराकार न समझे सदाय दिव्यसाकारमूर्ति समझे अने गमे एटलां पुराण उपनीषद वेद इत्यादिक ग्रंथनुं श्रवण थाय ने तेमां निराकारपणा जेवुं सांभळवामां आवे तोपण एम जाणे जे कांतो आपणने ए शास्त्रनो अर्थ समझातो नथी ने कांतो एमां केमे कह्युं हशे पण भगवान तो सदा साकारज छे अने जो साकार न समझे तो तेनी उपासना दृढ न कहेवाय,ने साकार न होय तेने विषे आकाशनी पेठे कर्त्तापणुं न कहे-वाय तथा एक देशने विषे रहेवापणुं न कहेवाय माटे भगवान तो सदा साकारज छे, ने अनेक ब्रह्मांडनी उत्पत्ति स्थिति प्रळयना कर्ता छे,ने सदा पोताना अक्षरधामने विषे विराजमान छे ने राजा धिराज छे ने तेज आ प्रत्यक्ष छे,एवी रीते जे आ समझण ते कोइ रीते कोइ काळे टगी न जाय सदा एमज समझे एकतो ए लक्षण होय. (१) तथा ए भगवाननी जे एकांतिक भक्ति तेने पोते करतो होय ने ए भगवाननुं जे नाम स्मर-णने कथा कीर्त्तनादिक तेने कोइ करतुं होय तेने देखीने मनमां बहु राजी थाय.(२) तथा ए भगवानना भक्तमां रहेवुं होय तेमां कोइ स्वभाव आडो आवे नहि,ने ते स्वभावने मुके पण भगवद्भक्तना संगनो त्याग न करे ने ते पोताना स्वभावने साधु खोवेतो सा-धुनो अभाव न ले ने पोताना स्वभावनो अवगुण लेतोरहे, पण कचवाइने भक्तना समूहमांथी छेटे रहेवानो कोइ दिवस मन घाट पणन करे,ने एमने एम भक्तना समूहमां पडयो रहे एवो होय. (३) तथा सारुं वस्त्र, सारुं भोजन, सारुं जळ तथा जे जे कांइ सारुं, पदार्थ पोताने प्राप्त थाय तो मन एम घाट करे, जे आ पदार्थ हुं भगवानना, भक्तने आपुं तो ठीक ने ते पदार्थ तेने आपे ने राजी थाय एवो होय. (४) तथा भक्तना समूहमां रहेतोहोय ने तेनी कोरनुं एम न थाय जे आ तो केटलाय वर्ष भेगो रह्यो पण एना अंतरनो तो कांइ ताग आव्यो नहि, ने आते कोण जाणे केवोय हशे. एवुं तो कांइ कळातुं नथी, एवो न होय, ने जेवो ए मांही बाहेर होय तेने सर्वे जाणे जे आतो आवो छे. एवो जे सरळ स्वभाव वाळो होय.(५) अने शान्त स्वभाव वाळो होय तोपण कुसंगीनी सोबत न गमे, ने ते थाय तो तपी जाय, एवी रीते विमुखना संगनी स्वभाविक अरुचि वर्त्तती होय. [६] आवे छो लक्षणे युक्त जे साधु होय तेना हृदयमां साक्षात् भगवान विराजमान छे एम जाणवुं, अने एवा साधुनो द्रोह करे तो भगवाननो द्रोह कर्या बरोबर पाप लागे, अने एवा साधुनी सेवा करे तो भगवाननी सेवा कर्या तुल्य फळ थाय छे. [७] इति वचनामृतम् ॥३५॥ ॥२६९॥ ७

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (५) छे, तेमां चोथुं कृपावाक्य छे, तेमां पहेलामां

श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारा विना बीजा सर्वेने तुच्छ जाणे ने पोतानी प्रकृति मुकीने अमे ने अमारा साधु कहीए तेम वर्ते तेने आपत्काळे पण अमारो आश्रय टळे नहि. (१) बीजामां अमे तथा अमारा साधु प्रकृति मरोडीए त्यारे अमारो ने साधुनो अवगुण न ले ते सारो ने अमारो ने साधुनो अवगुण ले तेना आश्रयनो ठा नहि. (२) त्रीजामां जे विषयनो बळवान घाट थातो होय त्यारे एम विचारे जे आ पदार्थनो मारे बळवान घाट छे ने तेमां हुं प्रवर्तु छुं तेमांथी मने साधु मरोडशे त्यारे मारे ठीक नहि रहे, एम पोतानो निश्चय थाय अने एनी प्रकृतिने अमे के साधु न मरोडीए तो तो ए पार पडी जाय ने मरोडीए तो मुंझाइने विमुख थइ जाय. (३) चोथामां साधुने विषे अमे साक्षात् रह्या छीए माटे साधुना द्रोहथी अमारो द्रोह थाय छे तेथी संतना द्रोहनुं अधिक पाप छे (४) अने अमारा उपर वैरभाव राखीने अमारो द्रोह करे ते दैत्यनो पक्ष छे, अने अमारा गमता प्रमाणे वर्तीने अमारी भक्ति करवी ए भक्तनो पक्ष छे.(५) पांचमामां अमने सदा दिव्यसाकार समजे. ने अमारी एकांतिक भक्ति करे ने अमारुं नाम स्मरणादिक करता होय तेने देखीने राजी थाय, अने स्वभावनो त्याग करे पण अमारा भक्तना समूहथी छेटे न रहे, अने सारुं पदार्थ अमारा भक्तने आपीने राजी थाय, अने सरल स्वभाव होय, अने विमुखना संगनी अरुचि वर्ते, आ छो लक्षणे युक्त होय तेने विषे अमे साक्षात् विराजमान छीए माटे एवा साधुनो द्रोह ते अमारा द्रोह तुल्य छे ने एवा साधुनी सेवा ते अमारी सेवा तुल्य छे एम कह्युं छे. (६) बाबतो छे. ॥२६५॥

संवत् १८८५ ना वैशाक शुदि १ पडवाने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमांथी घोडीए चढीने श्री लक्ष्मीवाडीए पधार्या हता ने ते वाडीने मध्ये जे ओटो ते उपर विराजमान थया हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे सर्वे परमहंस तथा हरिभक्त मत्ये प्रश्न कर्यो जे (१) आ जीवने कल्याणनुं असाधारण साधन शुं छे जे जेने विषे ए प्रवर्ते तो एनुं निश्चे कल्याण थाय ने तेमां बीजां कोइ विघ्न प्रतिबंध करे नहि ते कहो तथा एवा कल्याणना साधनमां मोटुं विघ्न शुं छे जे जेणे करीने तेमांथी निश्चे पडी जाय ते पण कहो ? पछी सर्वे ए पोतानी बुद्धि प्रमाणे उत्तर कर्यो पण ए प्रश्ननुं समाधान न थयुं, त्यारे श्रीजीमहाराज बोल्या जे कल्याणनुं असाधारण साधन तो ए छे जे पुरुषोत्तम भगवान ने ब्रह्मज्योतिना समूहने विषे अनादि साकार मूर्ति समजवा, ने तेनाज सर्वे अवतार छे एम समजीने ते प्रत्यक्ष भगवाननो जे ते भावे करी ने आश्रय करवो, ने धर्मे सहित ते भगवाननी भक्ति करवी, ने तेवी भक्तिए युक्त जे साधु तेनो संग करवो ए कल्याणनुं असाधारण साधन छे. अने एमां बीजां कोइ विघ्न प्रतिबंध करतां नथी. [१] १

अने ए साधनने विषे मोटुं विघ्न ए छे जे शुष्कवेदांतीनो संग करवो. ने जो एनो संग करे तो तेने शुं विघ्न थाय ? तो तेनो संग करनारो जे पुरुष तेने तेने विषे हेत थाय, ने जे हेत थाय ते गुणे करीने थाय छे, जेम कोइके काळमां अन्न आपीने जीवाड्यो होय तेनी उपर हेत थाय एवी रीते जेणे गुण कर्यो होय तेनी उपर हेत थाय, तेम ते वेदांति ते एने एम गुण देखाडे, जे आत्मा छे तेने जन्म मरण नथी ने ते निराकार छे ने ते गमे एटलुं पाप करे तोपण तेने दोष न लागे. एवो एने गुण बतावीने भगवाननी मूर्तिना आकारतुं खंडन करी नाखे त्यारे एने ए मोटुं विघ्न थयुं केम जे भगवाननी मूर्तिमांथी पडी गयो माटे ए वेदांतीनो संग क्यारेय न करवो ने ए वेदांतीतो महादुष्ट छे ने भगवाननी भक्ति मार्गमां एवुं मोटुं कोइ विघ्न नथी. [२] २

एटली वार्ता करीने श्रीजीमहाराज पाछा दादाखाचरना दरबारमां पधार्या
२ ने उगमणा बारना ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर बेसीने एम वार्ता करी जे (२) अमे सर्व शास्त्रने सांभळीने ए सिद्धांत कर्यो छे अने अमे आ पृथ्वीमां सर्व ठेकाणे फर्या ने तेने विषे घणाक सिद्ध दीठा छे, एम कहीने गोपाळदासजी आदिक साधुनी वार्ता करी देखाडी, ने पछी एम बोल्या जे हुं तो एम जाणुं छुं जे भगवाननी मूर्तिनी जे उपासना ने ध्यान ते विना जे आत्माने देखवो ने ब्रह्मने देखवुं ते तो थायज नहि. अने उपासनाये करीनेज आत्मा देखाय, ब्रह्म देखाय, पण ते विना तो देखायज नहि, ने उपासना विना आत्मा ब्रह्मने देखवाने इच्छवुं ते केम छे तो जेम आकाशने जीभे करीने सो वर्ष सुधी चाटीए तोपण क्यारेय खाटो खारो स्वाद आवेज नहि, तेम भगवाननी मूर्तिनी उपासना विना आत्मा ब्रह्म देखायज नहि. ते गमे एटलुं यत्न करे तोपण न देखाय अने निर्बिज एवाजे सांख्यने योग तेणे करीने जे आत्मा नुं दर्शन शास्त्रमां कह्युं छे ते भले कह्युं छे, पण अमे एवो कोइ दीठो नथी ने अनुभवमां पण ए वार्ता मळती आवती नथी माटे ए वार्ता खोटी छे.(२)इति व०॥३६॥२७०॥ ३

रहस्यार्थ प्र०—आमां प्रश्न (१) छे, तेमां बीजुं कृपावाक्य छे,तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमने ब्रह्मज्योतिना समूहने विषे अनादि साकार मूर्ति ने सर्वेना अवतारी समजीने आश्रय करे, ने धर्मे सहित अमारी भक्ति करे, ने एवी भक्तिए युक्त साधुनो संग करे, ते कल्याणनुं असाधारण साधन छे तेमां बीजो कोइ विघ्न प्रतिबंध करतां नथी. (१) अने महादुष्ट एवा जे शुष्क वेदांती तेनो संग करवो ए मोटुं विघ्न छे. (२) बीजामां अमारी उपासना ने ध्यान ए बे होय तो आत्मा तथा ब्रह्म देखाय पण ते विनातो देखायज नहि एम कह्युं छे. (१) वातो छे.

१ प्र० पहेला प्रश्नमां अमारो जे ते आशे करीने आश्रय करवो एम श्रीजीमहाराजे कह्युं ते कैवी रीते थाय ते किवो समजवो ?

१ उ० श्रीजीमहाराज सर्वे अवतारना अवतारी ने ब्रह्मज्योति जे अक्षरधाम तेने विषे अनादि साकार मूर्ति विराजे छे तेज आ मनुष्यरूपे प्रत्यक्ष दर्शन आपे छे एम समझवा एवो जे भाव ते भावे करीने आश्रय करवो.

२ प्र० (२/४ बीजा प्रश्नमां) अमारी मूर्तिनी उपासना विना आत्मा के ब्रह्म देखायज नहि एम श्रीजीमहाराजे कह्युं अने (लो० ७ ना २/४ बीजा प्रश्नमां) ब्रह्मरूप थयो तेने पण परब्रह्म पुरुषोत्तम ते जाणवा बाकी रह्या छे एम कह्युं ते परब्रह्मने जाण्या न होय तो पण ब्रह्मरूप थाय एम कह्युं छे ते केवी रीते समजवुं ?

२ उ० (लो० ७ मां) मूर्तिनी उपासना विना ब्रह्मरूप थाय एम नथी कह्युं एमां तो मूळ-पुरुषादिक अवतारने भजीने तेना तेजरूप थइ गयो होय ते ब्रह्मरूप कह्यो छे, तो पण श्रीजीमहाराजनो यथार्थ महिमा जाणवो बाकी रह्यो छे एम कह्युं छे, माटे मूर्तिनी उपासना होय तोज ब्रह्मरूप थाय ने ब्रह्मने तथा आत्माने देखे पण ते विना तो ब्रह्मरूप थवायज नहि ने आत्मा के ब्रह्म देखायज नहि.

३ प्र० निर्बिज सांख्यने निर्बिज योग कह्यो तेनुं रूप शुं हशे ?

३ उ० देहथी नोखो जे आत्मा तेने जाणवो ते निर्बीज सांख्य कहेवाय अने ते आत्माकारे वृत्ति करवी ते निर्बीज योग कहेवाय. ॥२७०॥

. संवत् १८८५ ना वैशाक शुदि ३ त्रीजने दिवस स्वामी श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां उत्तरादे बार ओरडानी ओसरीए चाकळा उपर विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे सर्वे साधु तथा सर्वे हरिभक्त प्रत्ये एम वार्ता करी जे (१) जेने भगवानना स्वरूपनुं यथार्थज्ञान एकवार थयुं होय, ने पछी तेने देश काळ क्रिया संग विषय थइ जाय तोपण ते ज्ञाननो लेश जाय नहि. त्यां दृष्टांत छे जेम कोइक मोटो राजा होय अथवा मोटो करोडपति शाहुकार होय ने तेने प्रारब्धानुसारे ते अधिकार छुटी गयो ने दारीद्रपणुं आवी गयुं, तेणे करीने खडधान खावा मळे अथवा डोडीनी भाजी मळे तथा कोठां बोरां बाफेली पीपर्यो इत्यादिक जेवुं तेवुं खावा मळे, त्यारे तेने खाय पण मोरे जे पोते भारे भारे मेवा खाधा होय तथा भारे मूल्यवाळी चीजुं कोइने न मळे एवी मगावीने खाधी होय ते सर्वे सांभरी आवे, ने मनमां एम घाट करे जे एवी एवी भारे चीजोने हुं मोरे खातो ने हवे हुं आवुं जेवुं तेवुं अन्न खाउं छुं एवी रीते ज्यारे ज्यारे खाय त्यारे ते सांभरी आवे ने जे मनमयीज जेवुं तेवुं अन्न खातो होय ने तेने दारीद्रपणुं बधु आवे तारे पण तेज खाय त्यारे तेने शुं सांभरे ? तेम जेणे भगवानना स्वरूपनुं सुख तथा भगवानना भजननुं सुख पोताना मनमां एक-

वार यथार्थ पणे जाण्युं छे ने तेने पछी समागमनो योग न रह्यो ने बाहेर निकळी गयो तो पण ते सुखने संभारतो थकोज सुखदुःखने प्रारब्धानुसारे भोगवे पण ते सुखने भुली न जाय. अने जेणे भगवाननुं सुख जाण्युं नथी ने तेनो अनुभव थयो नथी ते शुं संभारे ए तो पशु जेवो छे. हवे ते भगवाननुं जे स्वरूप तेनुं ज्ञान कहीए छइए जे, भगवाननो जेवो आकार छे तेवो आकार बीजा देव मनुष्यादिक जे प्रकृतिमांथी आकार थया छे ते कोइनो नथी, ने भगवान विना बीजा सर्वेने काळ भक्षण करी जाय छे ने भगवानना स्वरूपमां काळनुं सामर्थ्यपणुं नथी चालतुं एवा भगवान छे. ने भगवान जेवा तो एक भगवानज छे पण बीजो कोइ नथी, अने भगवानना साधर्म्यपणाने पाम्या एवा जे भगवानना धाममां भक्त छे तेनो आकार पण भगवान जेवोज छे, तो पण ते पुरुष छे ने भगवान पुरुषोत्तम छे ने ते सर्वेमां श्रेष्ठ छे ने एमने उपास्य छे ने ए सर्वेना स्वामी छे ने ए भगवानना महिमानो कोइ पारपामता नथी. एवा दिव्य मूर्ति जे भगवान ते निर्गुण छे ने ध्येय छे ने एनुं जे ध्यान करे छे ते निर्गुण थइ जाय छे एवुं भगवाननुं स्वरूप छे. अने जेम चारे कोरे लाखो काचनां पुतळां होय ने तेना मध्यने विषे एक पुरुष उभो रह्यो होय त्यारे ते सर्वे पुतळांने विषे ते एकलोज अनेक रूपे देखाय, तेम एक भगवान छे ते पोताना धामरूप एक देशने विषे रह्या थकाज अनेक ब्रह्मांडने विषे रह्या जे सर्वे जीवना समूह तेमने विषे तेमना यथायोग्य कर्मफळप्रदातापणे अंतर्यामी रूपे करीने रह्या छे, ने जेवा पोते छे तेवाज देखाय छे ते कह्युं छे जे ॥क्षेत्रज्ञं चापिमांविद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत ॥ अने सर्वे जीवना जीवन छे ने ए भगवान विना ए जीव कांइ करवाने ने भोगववाने समर्थ नथी थातो. अने ए जे भगवान ते सिद्धेश्वर छे जेम कोइक सिद्धिवाळा पुरुष होय ते अहींयां बेठो थको ब्रह्माना लोकमां पदार्थ होय तेने आ हाथे करीने ग्रहण करी ले, तेम भगवान एक देशमां रह्या थकाज पोतानी योगकळाना सामर्थ्ये करीने सर्वे क्रियाने करे छे, अने जेम अग्नि जे ते काष्टने विषे ने पाषाणने विषे रह्यो छे ते अग्निनुं स्वरूप बीजी रीतनुं छे, ने काष्ट पाषाणनुं स्वरूप बीजी रीतनुं छे, तेम भगवान तो प्रथम काचनुं दृष्टांत दीधुं तेवी रीते सर्व जीवने विषे रह्या छे ते भगवाननुं स्वरूप बीजी रीतनुं छे, अने ते जीवनुं स्वरूप बीजी रीतनुं छे. अने एवी रीतना अनंत ऐश्वर्ये युक्त एवा जे ए भगवान तेज पोते जीवोना कल्याणने अर्थे मनुष्य जेवा थाय छे, ते भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान जेने आवी रीते थयुं होय ने ते भगवाननी भक्ति करी होय ने ते ज्ञान भक्तिना सुखनो पोताना जीवमां अनुभव एकवार यथार्थ थयो होय, तो तेनी विस्मृति क्यारेय थाय नहि, ते गमे तेवुं सुखदुःख पडे तो पण तेने विषे ते भगवानना स्वरूपना सुखनो जे अनुभव ते विसरी

जाय नहि. जेम ते राजाने प्रथमनुं जे पोतानुं सुख ते दरीद्रपणामां पण विसरतुं नथी तेम.अने आ वार्ता छा सारु करीए छैए तो आवो सत्संगनो योग हमणां तो छे पण कदाचित् देशकाळ प्रारब्धना विषमपणा थकी एवो योग न रहे, तो जो आवी वार्ता समझी राखी होय तो तेना जीवनुं कल्याण थाय, अने एवो दृढ निश्चय होय तो एने क्यारेय एम न समझाय जे मारुं अकल्याण थाशे, अने आवो योग रहेवो ते बहु दुर्लभ छे ने आवी रीते देहे वर्त्तवुं ते पण दुर्लभ छे. केम जे कोइक दिवस बाहेर निकळी जवाय त्यारे आम देहे न वर्ताय तो पण आ वार्ता समझी राखी होय तो एना जीवनुं बहु सारुं थाय माटे आ वार्ता करी छे. (१) इतिवचनामृतम् ।।३७।। (२७१) १

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य(१) छे, तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे अमारा जेवो बीजा कोइनो आकार नथी, ने अमारा विना बीजा सर्वेने काळ भक्षण करे छे ने अमारा जेवो बीजो कोइ नथी, अने अमारा धाममां अमारा भक्त छे तेनो आकार अमारा जेवोज छे, तोपण ते पुरुष छे अने अमे पुरुषोत्तम छीए ने ए मुक्तोथी श्रेष्ठ छीए ने ए मुक्तोने उपास्य ने स्वामी छीए ने ए मुक्तो अमारा महिमाना पारने पामता नथी, एवा दिव्य मूर्ति निर्गुण ने ध्येय छीए अने अमारुं ध्यान करनारा निर्गुण थइ जाय छे अने अमारा धामने विषे एकदेशने विषे रह्या थका अनेक ब्रह्मांडमां कर्मफळ-प्रदातापणे अंतर्यामीरूपे रह्या छीए. अने जेवा अक्षर धाममां छीए तेवा ज्यांहि देखाइए छीए ने सर्वे जीवोना जीवन छीए अने सिद्धेश्वर छीए अने अमारुं स्वरूप बीजी रीतनुं एटले अक्षरादिक सर्वेथी अति विलक्षण छे अने जीवोना कल्याणने अर्थे मनुष्य जेवा देखाइए छीए आवुं अमारुं ज्ञान थयुं होय ने अमारी भक्ति करी होय ते। ते क्यारेय विसरी जाय नहि ने तेना जीवनुं सारुं थाय. (१) बाबत छे.

१ प्र० चारे कोरे लाखो काचनां पुतळां होय तेना मध्यने विषे एक पुरुष उभो होय ते पुरुष सर्वे पुतळामां देखाय तेम अमे धाममां रह्या थका अनेक ब्रह्मांडने विषे जीव जीव प्रत्ये कर्मफळप्रदातापणे अंतर्यामीरूपे रह्या छीए एम श्रीजीमहाराजे कह्युं अने (का० ४ ना बीजा प्रश्नमां) पण जेम दर्पणने विषे सभा जणाय छे तेम जीवने विषे अमे जणाइए छीए एम कह्युं छे अने (लो० ४ ना पहेला प्रश्नमां) मध्यना काचना मंदिरमां पुरुष उभो होय ते फरती काचनी ओरडीयोमां देखाय, तेम अमे जेवा अक्षरधाममां छीए तेवाज अनंतकोटी ब्रह्मांडने विषे अनंतरूपे देखाइए छीए, एम कह्युं छे ते जीवजीव प्रत्ये जेवा धाममां छे एवाज रह्या होयतो तो जीवनां कल्याण करवा सारु (लो० ४ मां) कह्युं तेवी रीते ब्रह्मांडमां देखावानी कांइ जरुर रही नहि केम जे अक्षरधाममां छे तेवाज जीवमां होय तो जीवनां कल्याण थइ जवां जोइए माटे ते केवी रीते समझवुं ?

१ उ० आमां सर्व जीवना समूहने विषे फळप्रदातापणे अंतर्यामीरूपे रह्या छीए एम जे कह्युं छे ते तो अंतर्यामीरूपे पोताना तेजरूपे रह्या छे अने जेवा छीए तेवा देखाइए

छीए एम जे कह्युं छे ते तो ध्याने करीने मूर्तिने जोइ शके एवा जे पोताना भक्त तेने ज देखाइए छीए एम कह्युं छे पण सर्वेने देखाइए छीए एम नथी कह्युं माटे तेज द्वारेज सर्वे जीवोने विषे रह्या छे ते तेज द्वारे मूळअक्षरने विषे पण रह्या छे अने मूळअक्षरद्वारे वासुदेवब्रह्मने विषे रह्या छे अने ब्रह्म द्वारे मूळपुरुषने विषे रह्या छे अने जीवोमां तो मूळपुरुष द्वारे रह्या छे ते (प्र० ११ मां) पुरुष प्रकृतिरूप जे अमारी शक्ति तेणे सहित जीव जीव प्रत्ये अंतर्यामी रूपे रह्या छीए अने (प्र० ४६ मां) प्रकृति जे माया तेना कार्यने विषे अन्वय व्यतिरेकपणुं ते मूळपुरुषनुंज छे एम कह्युं छे माटे जीवमां तो पुरुषद्वारेज रह्या छे अने (म० १/१ मां) जे जे पदार्थ अमारा संबंधने पामे ते निर्गुण थइ जाय छे अने आमां पण जे अमारुं ध्यान करे छे ते निर्गुण थइ जाय छे एम कह्युं छे माटे जे संबंधने पामे तथा ध्यान करे ते निर्गुण थइ जाय, तो जीवमां साक्षात् रह्या होय तो जीव निर्गुण केम न थाय ? अने (प्र० २७ मां) आवे लक्षणे युक्त थाय तेने विषे अमे सर्वे प्रकारे निवास करीए छीए तो जो पहेलांथीज रह्या होय तो सर्वे प्रकारे निवास करवानुं शुं करवा कहे ? अने (छे० २७ मां) पांच वर्तमाने युक्त होय तेनेज अमारो संबंध होय छे, माटे जीवमां तो अंतर्यामी पणे पोताना तेजद्वारेज रह्या छे,ते पण पात्रनी तारतम्यताए रह्या छे ते(प्र०४१मां)जेवा अक्षरमां छीए तेवा पुरुष प्रकृतिमां नथी अने जेवा पुरुष प्रकृतिमां छीए तेवा प्रधानपुरुषमां नथी, अने प्रधानपुरुषमां छीए तेवा महत्तत्त्वमां नथी, अने तेवा अहंकारमां नथी ने तेवा चोवीश तत्त्वमां नथी ने तेवा वैराजमां नथी ने वैराजमां छीए तेवा विश्नु ब्रह्मा शिवमां नथी, अने जेवा ए त्रणमां छीए तेवा मनुष्यमां नथी ने मनुष्यमां छीए तेवा पशु पक्षीमां नथी, एम कह्युं छे माटे तेज द्वारे पण पात्र प्रमाणे रह्या छे अने (सा० ५ ना २/३ बीजा प्रश्नमां) पण बद्ध जीव तथा मुक्त जीव तथा ईश्वर तथा अक्षर तेने विषे अन्वयपणे रह्या छीए अने व्यतिरेक स्वरूपे तो मूळअक्षरादिक सर्वेथी पर छीए एम कह्युं छे. अने (प्र० ६/६४ मां) जेम सूर्य पोताना प्रकाशनो आत्मा छे तेम अमे अमारा तेजना आत्मा छीए अने अमारुं तेज मूळअक्षरनुं आत्मा छे एम कह्युं छे. माटे श्रीजीमहाराज तो मूळअक्षरादिक सर्वेथी पर छे ने सर्वेने अगम्य छे ने पोताना तेजरूप धामने विषेज मूर्तिमान रह्या छे ते मूर्तिनां दर्शन तो एमना मुक्तनेज छे पण बीजा कोइने नथी. अने ज्यारे जीवोनां आत्यंतिक कल्याण करवा सारु पृथ्वीने विषे मनुष्यरूपे दर्शन आपे, ने एमना मुक्तने योगे करीने जेने श्रीजीमहाराजना स्वरूपनुं ज्ञान थाय,ने एमनी उपासना ध्यान भजन करे, ने एमनी आज्ञा पाळे त्यारेज आत्यंतिक कल्याण थाय छे ने दर्शन पण त्यारेज थाय छे. अने (का० ४ मां) पण अन्वयपणे रह्या छे तेनो खुलासो एमांज पहेला प्रश्नोत्तरमां कर्यो छे अने काचनी ओरडीयोनी तथा पुतळांनी मध्ये पुरुष उभो होय ते बधेय देखाय छे तेम अमे देखाइए छीए एम कह्युं, ते तो समझाववा सारु दृष्टांत दीधुं छे पण पुरुष तो जडने असमर्थ छे ते बधे देखावा समर्थ नथी अने भग-

वान तो समर्थ छे ने सर्वज्ञ छे माटे जीवोना कल्याणने अर्थे जेवा अक्षरधाममां छे तेवाज अनंत ब्रह्मांडमां दर्शन आपे छे, पण पुरुषनी पेठे प्रतिबिंब नथी देखातुं पुरुषनो तो आभास पडे छे, माटे जडवस्तुनुं दृष्टांत चैतन्य वस्तुने सर्व प्रकारे सादृश्य थायज नहिं. ॥ २७१ ॥

संवत् १८८५ ना वैशाख शुदि १४ चौदशने दिवस स्वामि श्रीसहजानंदजी महाराज श्री गढडा मध्ये दादाखाचरना दरबारमां श्रीगोपीनाथजीना मंदिरने विषे विराजमान हता ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराज बोल्या जे (१) अमे सांख्यादिक शास्त्रना विचारे करीने एम निश्चय कर्यो छे जे मायाना कार्यमांथी उत्पन्न थया जे आकार मात्र ते सर्वे मिथ्या छे केम जे ए सर्वे आकार काळे करीने नाश पामे छे अने भगवानना अक्षरधामने विषे जे भगवाननो आकार छे तथा ते भगवानना पार्षद जे मुक्त तेमना जे आकार छे ते सर्वे सत्य छे ने दिव्य छे ने अतिशे प्रकाशे युक्त छे अने ते भगवाननो ने ते मुक्तनो जे आकार ते पुरुषना जेवो द्विभुज छे ने सच्चिदानंद रूप छे अने ते अक्षरधामने विषे रह्या जे ए भगवान ते जे ते ते मुक्त पुरुष तेमणे दिव्य एवा जे नाना प्रकारना उपचार तेणे करीने सेव्या थका ने ते मुक्त पुरुषने परम आनंदने उपजावता थका सदा विराजमान छे. अने एवा सर्वोपरि जे पुरुषोत्तम भगवान तेज दयाए करीने जीवोना कल्याणने अर्थे आ पृथ्वीने विषे प्रगट थया थका सर्व जनना नयनगोचर वर्ते छे ने तमारा इष्टदेव छे ने तमारी सेवाने अंगीकार करे छे ने एवा जे प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवान तेना स्वरूपमां ने अक्षरधामने विषे रह्या जे भगवान तेना स्वरूपमां कांइ पण भेद नथी ए बे एकज छे अने एवा जे आ प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवान ते अक्षरादिक सर्वना नियंता छे ने ईश्वरना पण ईश्वर छे ने सर्व कारणना पण कारण छे ने सर्वोपरि वर्ते छे ने सर्व अवतारना अवतारी छे ने तमारे सर्वेने एकांतिक भावे करीने उपासना करवा योग्य छे अने आ भगवानना जे पूर्वे घणाक अवतार थया छे ते पण नमस्कार करवा योग्यछे ने पूजवा योग्यछे.(१) अने वळीश्रीजीमहाराजे १

२ एम वार्ता करी जे(२)एकद्रव्यादिकनो लोभ तथास्त्रीने विषे वेठा उठयानी वासनातथा रसने विषे जिह्वानी आसक्ति तथा देहाभिमान तथा कुसंगीमां हेत रही जाय तथा संबंधीमां हेत होय ए छो वानां जेने होय तेने कोइ दिवस जीवते ने मरीने पण सुख तो क्यारे थायज नहि माटे जेने सुख इच्छवुं होय तेने एवा स्वभाव होय तो टाळवाने निरंतर यत्न करवो ने बरोबरीयानी साथे न राखवी ने देहाभिमाने रहित ने वैराग्ये युक्त ने भगवाननुं अल्प वचन होय तेमां फेर पडे तो ते महत् वचनमां फेर पड्यो होय तेम मानवा होय एवा जे भगवद्भक्त मोटा साधु ते संगाथे पोताना जीवने

जही देवो ने तेना वचनमां मन कर्म वचने वरतवुं ने विषयना संबंधथी तो छेटेज रहेवुं पण एनो संबंध पोताना नियमनो त्याग करीने थावा देवो नहि ने जो विषयनो संबंध करवा मांडे तो एनो ठा रहेज नहि ए सिद्धांत वार्ता छे.(२)इ०त्र०॥३८॥(२७२)२

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (२) छे तेमां पहेलामां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे के मायामांथी थया ते आकार मिथ्या ने नाशवंत छे अने अमारा अक्षरधामने विषे अमारो ने अमारा मुक्तनो आकार सत्य दिव्य ने अतिशे प्रकाशे युक्त सच्चिदानंदरूप अने द्विभुज छे अने मुक्त पुरुषोए सेव्या थका सर्व मुक्तोने आनंद उपजावीए छीए अने सर्वोपरि छीए ने दयाए करीने जीवोना कल्याणने अर्थे आ पृथ्वीने विषे प्रगट थया छीए अने तमारा सर्वना इष्टदेव छीए ने तमारी सेवाने अंगीकार करीए छीए अने अमारा आ मनुष्य स्वरूपमां ने धाममां रह्यं जे स्वरूप तेमां कांइ पण भेद नथी एकज छे. अने अमे अक्षरादिक सर्वना नियंता ने ईश्वरना ईश्वरने सर्व कारणना पण कारण ने सर्व अवतारना अवतारी छीए ने तमारे एकांतिकभावे उपासना करवा योग्य छीए (१) अने बीजामां छो वानां होय तेने सुख क्यारे पण थाय नही माटे अमारा मोटा साधु संघाथे जीव जडी देवो ने एमना वचनमां वर्त्तवुं अने विषयनो संबंध करे तेनो ठा रहे नहि. [२] बावतो छे.

१ प्र० बीजा कृपावाक्यमां द्रव्यादिक छो वानां होय तेने जीवतां ने मरीने सुख न आवे एम कह्युं ते त्यागी, गृहीने केवी रीते वासना होय तेने सुख न थाय ?

१ उ० त्यागी होय तेने स्त्रियो पासे बेसवानो तथा बोलवानो तो संकल्प न होय पण स्त्री समीपे आवी जाय तेने जोवानो संकल्प थइ जाय ते स्त्रीनी वासना कहेवाय.(१) अने अंतरमां पर स्त्री साथे बोलवानो के बेसवानो संकल्प थतो होय ते गृहस्थने वासना कहेवाय. (१) अने त्यागीने रोगादिक आपत्काळ आवे तथा कोइक तीर्थादिकमां जावुं होय त्यां भाडानो योग न बने त्यारे द्रव्य राख्युं होत तो आवा आपत्काळमां काम आवे एवो संकल्प थाय, तेमज वस्त्रादिक जे वखते जोइतुं होय ते वखते न मळे ने विलंब थाय त्यारे तेने राख्युं होय तो जोइए ते वखते काम आवे तेवो संकल्प थाय ते लोभ कहेवाय. (१) अने गृहस्थने न्याये करीने मेळवुं करेलुं द्रव्य तेने श्रीजीमहाराज तथा पंचवर्तमाने युक्त एवा सत्पुरुषना उपयोगमां न आवे, तथा पंचवर्तमाने युक्त एवा सत्संगी होय ने तेने खावा पीवानी तंगाश होय अथवा कोइ राज्य संबंधी संकट आव्युं होय तेने छोडाववाना उपयोगमां न आवे ते द्रव्यादिकनो लोभ कहेवाय. (२)अने त्यागी जे मळे तेने पाणीमां मेळाव्याविना जुदी जुदी वस्तुओ राखीने जमे ते रसनी आसक्ति कहेवाय. [१] अने गृहस्थने जमती वखते खारूं मोळुं होय तो मनमां कचवाय के रसोइ करनार साथे कजीयो करे ते रसनी आसक्ति जाणवी, तो त्यागीथी तो खारूं मोळुं बोलायज केम ? [२] अने त्यागीने विद्यादिक गुणनुं अभिमान आवे के झीणां वस्त्र पहेरवानो संकल्प थाय के मोटा संतनी सेवा

थइ शके नहि इत्यादिक देहाभिमान कहेवाय. (४) अने गृहस्थने नात्यनुं, कुळनुं, धननुं तथा लोकमोटाइ आदिकनुं अभिमान होय तथा सारां वस्त्र, घरेणां पहेरीने देहने शोभाडवानी आसक्ति रहे, तथा उत्तम भक्त होय ने ते लोक व्यवहारे गरीब होय के पोताथी उतरती जाति होय तेनो महिमा न जणाय, तथा देहे करीने भगवाननी के तेमना भक्तनी सेवा न थाय, ते देहाभिमान कहेवाय. [४] अने जे श्रीजीमहाराजना आश्रित न होय एवा सत्संग बहारना कुसंगीमां तथा श्रीजीमहाराजनी आज्ञा न पाळता होय एवा त्यागीमां तथा एवा सत्संगीमां हेत ने पक्ष होय तो त्यागी तथा गृहस्थने कुसंगमां हेत कहेवाय. [५] अने पोतानां पूर्वनां माबाप आदि संबंधीने सुखी दुःखी देखीने हर्ष शोक करे तथा तेनी खबर रखावे, ने तेना समाचार पुछे ने तेने बोलावे ते त्यागीने संबंधीमां हेत कहेवाय.[६] अने पंचवर्तमाने युक्त एवा श्रीजीमहाराजना भक्त होय तेना करतां पोतानां स्त्री पुत्रादिक तथा सगां संबंधी ते श्रीजीमहाराजनां भक्त न होय तो पण भक्त करतां वधारे वृत्ति खेंचाय ने वधारे पक्ष रहे ते गृहस्थने संबंधीमां हेत कहेवाय. (६)

१ प्र० मोटा साधु संबंधे पोताना जीवने जडी देवो एम कह्युं ते जीव केवी रीते जडी देवो ?

२ उ० जेवुं जीवने देहने विषे हेत छे एवुं मोटा संतने विषे करवुं अने जेवी देहमां एकता छे तेवी रीते संतमां एकता करवी. ॥ २७२ ॥

संवत् १८८६ ना अषाड वदि १० दशमीने दिवस श्रीजीमहाराज श्री गढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीए विराजमान हता, ने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां, ने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

१ पछी श्रीजीमहाराजे सर्वे परमहंस तथा सर्वे सत्संगी आगळ वार्ताकरी जे(१)जे भगवाननी माया ते केइ छे ? तो देहने विषे अहंबुद्धिने देह संबंधी पदार्थने विषे ममत्वबुद्धि एज माया छे. ते ए मायाने टाळवी ने ए मायाने जेणे टाळी ते मायाने तर्यो कहेवाय, ने ए मायाने टाळीने भगवानमां प्रीति करवी एटलो सर्व शास्त्रनो सिद्धांत छे, तेने आज समजो के घणे दिवसे करीने समजो. अने हनुमान, नारद, प्रह्लाद ए जे मोटा मोटा भगवानना भक्त तेमणे पण भगवान पासे एमज माग्युं छे जे अहंममत्वरूप माया थकी रक्षा करजो, ने तमारे विषे प्रीति थाजो, ने ए मायाने तर्यां होय ने तमारे विषे प्रीतिवाळा होय एवा जे साधु तेनो संग थाजो, ने ए साधुने विषे हेतने ममत्व थाजो, माटे आपणे पण एम करवुं ने एम मागवुं, ने एनो श्रवण, मनन, निदिध्यास करवो. (१) अने भगवाननो जे भक्त होय तेने आत्मनि- १ ष्ठानुं बळ तथा भगवानना महात्म्यनुं बळ ए बे बळ जोइए. ते आत्मनिष्ठा ते शुं तो

पोताना आत्माने देहथी पृथक् जाणवो, अने साधु भेळा रहेता होइए तेमां परस्पर कोइक निमित्ते बोला चाली थाय तथा कोइक जातनो अहंममत्व थाय तथा मान, क्रोध, स्वाद, लोभ, काम, मत्सर, ईर्ष्या, ए आदिक अवगुणनी प्रवृत्ति थाय त्यारे जो आत्मा पोताने न जाणता होइए तो साधुनो अवगुण आवे तेमांथी पनुं बहु भूंडुं थाय, माटे पोताने देहथी पृथक् आत्मा जाणवो, ने ते आत्मा छे ते ब्राह्मण नथी, क्षत्रिय नथी, कणबी नथी, कोइनो दिकरो नथी, कोइनो बाप नथी, एनी कोइ जात्य नथी, नात्य नथी एवो छे. अने ए आत्मा तो सूर्य तथा अग्नि जेवो तेजस्वी छे, ने जाणपणे युक्त छे ने ते अग्निनी ज्वाळा तथा सूर्यनी किरण ते तो जड छे, केम जे तेने आंगळी अडाडीए तो खसे नहिं, ने कीडी होय तेने आंगळी अडाडीए तो खसी ने अवळी चाले, माटे आत्मा ते जाणपणे युक्त छे ने एने सूर्य, अग्नि जेवो कहीये छइए, ते तो एनो आकार एवो तेजस्वी छे, ते माटे कहीये छइए. अने ए आत्मा अनेक योनिने पाम्यो छे, अने एम कहेवाय छे जे जेटलुं समुद्रनुं पाणी छे तेटलुं ए जीव पोतानी मातानुं दुध धाव्यो छे, अने त्यां त्यां अनेक प्रकारे मराणो छे तो पण मर्यो नथी जेवो छे तेवोने तेवोज छे. ने ए अज्ञान अवस्थामां पोताने देहरूपे मानतो हतो त्यारे पण न मर्यो तो हवे आपणे एनुं ज्ञान थयुं त्यारे तो ए केम मरशे एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानवुं. (२) अने भगवाननुं महात्म्य केम जाणवुं तो भगवान छे ते अनेक ब्रह्मांडना राजाधिराज छे अने जे ब्रह्मांडना ए राजा छे ते ब्रह्मांडनी पण गणती नथी ते कह्युं छे जे ॥ द्युपतयएवतेनययुरंतमनंततया ॥ अने ते एक एक ब्रह्मांडमां ब्रह्मा, विष्णु, शिव होय तथा सात द्वीप, सात समुद्र, मेरु, लोकालोक आदिक पर्वत तेणे युक्त पृथ्वीनी रचना होय तथा चौदलोकनी रचना होय तथा अष्ट आवरणनी रचना होय इत्यादिक सामग्रीए सोतां जे अनेक ब्रह्मांड तेना राजा भगवान छे, ने जेम आ पृथ्वीनो चक्रवर्ती राजा होय ने ते राजानां जे गामडां ते तो गणाय एवां होय तो पण तेनी केटली मोटयप जाण्यामां आवे छे, ने भगवानने तो एवा ब्रह्मांडनी पण गणती नथी, माटे भगवाननी तो बहुज मोटयप छे. अने ते ब्रह्मांडने विषे आ जीव छे ते भगवाननी आगळ था लेखामां छे? कांइ नथी अति तुच्छ छे. अने ते भगवाने ए ब्रह्मांडोने विषे पंच विषय संबंधी सुख जीवोने आप्युं छे, ते सुख केवुं छे ? तो ए सुखने सारु केटलाक पोतानां माथां कपावे छे एवुं महादुर्लभ जेवुं जणाय छे, त्यारे पोतानी मूर्त्तिमां तथा पोताना धाममां जे सुख छे ते तो बहु भारे छे, अने प्राकृत विषय सुख छे ते तो अन्य पदार्थने आशरीने रह्युं छे, तथा पृथक् पृथक् छे, अने जे भगवान छे ते तो सर्व सुख मात्रना राशि छे,ने ए भगवान संबंधि

जे सुख छे ते अविनाशी छे, ने महा अलौकिक छे. अने जेम कोइक भारे धनाढ्य गृहस्थ होय ते पोताना घरमां अनेक प्रकारनां भोजन जमतो होय, ने ते जमीने उच्छिष्ट कांइक बटकुं रोटलो वधे ते कुतराने नाखे त्यारे ते अतिशे तुच्छ कहेवाय, ने पोते जमतो होय ते महा सुखमय कहेवाय, तेम भगवाने ब्रह्मांडोने विषे अनेक जीवोने पंचविषय संबंधी सुख आप्युं छे, ते तो कुतराने नाख्यो जे बटकुं रोटलो तेनी पेठे अति तुच्छ छे, ने पोताने विषे जे सुख छे ते तो महा मोटुं छे. अने वळी सुषुप्ति अवस्थाने विषे ए जीवने भगवान मोटुं सुख पमाडे छे, ते गमे तेवी वेदना थइ होय ने सुषुप्तिमां जाय त्यारे सुखीयो थइ जाय छे. अने वळी ए भगवानना चरणकमळनी रजने ब्रह्मा, शिव, लक्ष्मीजी, राधाजी, नारद, शुक, सनकादिक नवयोगेश्वर एवा एवा मोटा छे ते पण पोताना मस्तक उपर चडावे छे, ने मानने मुकीने ए भगवाननी निरंतर भक्ति कर्या करे छे, अने वळी ए भगवाने जगतमां विचित्र सृष्टि केवी करी छे, ने तेमां केवुं डहापण कर्युं छे जे जुवोने माणसमांथी माणस थाय छे, पशुमांथी पशु थाय छे, झाडमांथी झाड थाय छे, कीडामांथी कीडो थाय छे, ने माणसना अंगमांथी कोइक अंगनो भंग थइ गयो होय ने गमे तेवो डाह्यो होय, तोपण ते अंगने तेवुं ने तेवुं करवाने समर्थ कोइ रीते नज थाय, इत्यादिक अनेक कळा भगवानमां रही छे, एवी रीते भगवाननुं महात्म्य जाणीने तथा भगवानने सुखमय मूर्ति जाणीने बीजा सर्व पदार्थमां वैराग्य थाय छे, ने एक भगवानमांज प्रीति थाय छे. अने एवी रीते प्रथम कह्युं जे पोताना जीवात्मानुं ज्ञान तथा भगवानना महात्म्यनुं ज्ञान ए बे जेने सिद्ध थयां होय, ने ते जो गमे तेवा पंच विषय संबंधी सुखमां कदाचित् बंधाइ गयो होय तो पण तेमां बंधाइ रहे नहिं, तेने तोडीने निकळेज रहे अने जे विषयना सुखनो त्याग करीने वर्ततो होय ने ते न बंधाय एमां ते शुं कहेवुं? माटे ए बे प्रकारना ज्ञानने सांभळीने एनो पोताना मनमां वेग लगाडी देवो, जेम कोइक शूरवीर ने आकरो माणस होय ने तेनो कोइ प्रतिपक्षी होय तेणे तेनो बाप मारी नाख्यो होय तो तेनी तेने बहु दाझ थाय, ने ते दाझ थाती होय ने वळी तेनो दिकरो मारी नाखे, ने वळी भाइने मारी नाखे, ने वळी बायडीने लेइ जाय ने वळी माने लेइने मुसलमानने आपे, ने वळी गामगरास झुंटी ले, एवी रीते जेम जेम एनो पराभव करे तेम तेम एने बहु मनमां दाझ थाय, ने जाग्रत, स्वप्नमां सर्व काळे एने ए वातनोज आलोच रहे, तेम जेने आ बे वातनो निरंतर आलोच रहे त्यारे एने ए ज्ञान सिद्ध थाय. अने एने गमे तेवो आपत्काळ पडे तो तेने विषे एनी सहाय करे. अने जेम विशल्यकरणी औषधि लावीने हनुमानजीए रामचंद्रजीने पीवाडी त्यारे जे देहमां शल्य लाग्यां हतां ते

सर्वे एनी मेळे देहथी बाहेर निकळी गयां, तेम जेने आ बे वात मनमां लागी गइ होय तेने इंद्रियोने विषयभोगनी इच्छा रही छे ए शल्य छे ते सर्वे निकळी जाय, कहेतां विषय भोगमांथी एनी इंद्रियोनी वृत्ति निकळीने एक भगवानमां वळगे, अने सत्संगी पण एनेज कहीए केम जे सत्यरूप एवो जे पोतानो आत्मा तथा सत्यरूप एवा जे भगवान तेनो जेने आवी रीते संग थयो तेने सत्संगी कहीए. (३) अने आ बे प्रकारे जे वार्ता छे तेने दैवी जीव सांभळे त्यारे तेना हृदयमां लागीने रगरगमां प्रवर्ती जाय, ने जे आसुरी जीव होय ने ते सांभळे त्यारे तेने तो कानथी बाहेरज निकळी जाय पण हृदयमां उतरे नहि, जेम श्वान होय ने ते खीर खाय ते तेना पेटमां रहेज नहि, वमन थइ जाय, ने खीर जेवुं कांइ भोजन सरस न कहेवाय तो पण ते श्वानना पेटमां रहीने रगरगमां प्रवर्ते नहि, ने ते खीरने माणस खाय त्यारे तेने पेटमां रहे ने रगरगमां प्रवर्ते ने बहु सुख थाय, तेम श्वान जेवो जे आसुरी जीव तेना हृदयमां तो आ वात पेसेज नहि,ने माणस जेवो जे दैवी जीव तेना हृदयमां उतरे ने रगरगमां व्यापी जाय. (४) अने वळी जे भगवान छे ते जेवा तो ए एकज छे, ने भगवानने भजी भजीने घणाक भगवानना साधर्म्यपणाने पाम्या छे, तोपण ते भगवान जेवा तो थताज नथी ने जो भगवान जेवाज थाय तो तो भगवान घणाक थाय, त्यारे तो जगतनी स्थिति ते एक आत्यन्तीज न रहे. केम जे एक भगवान कहेशे जे हुं जगतनी उत्पत्ति करीश ने बीजो कहेशे हुं जगतनो प्रलय करीश, अने वळी एक भगवान कहेशे हुं वर्षाद करीश ने बीजो कहेशे हुं नहि करूं, ने एक कहेशे हुं माणसना धर्म पशुमां करीश ने बीजो कहेशे हुं पशुना धर्म माणसमां करीश, एवी रीते स्थिति न रहे. अने आ तो जुवोने जगतमां केवी रीते बराबर अद्-क प्रमाणे सर्वे क्रियानी प्रवृत्ति थाय छे, पण तलभार पण फेर पडतो नथी, माटे सर्व क्रियाना प्रवर्तावनारा ने सर्वेना स्वामी आ एकज भगवान छे,तथा भगवान संघाथे बीजाने दाव बंधाय एम पण जणातुं नथी, माटे भगवान ते एकज छे पण बीजो आ जेवो थातो नथी, अने आ सर्वे वात करी ते थोडीक छे पण एमां सर्वे वात आवी गइ. अने आ वातनुं जे रहस्य छे ते जे डाह्यो होय तेने समझाय पण बीजाने समझाय नहि, एने आटली वात समझीने जेणे दृढ करी तेने सर्वे वात संपूर्ण थइ एने कांइ करवुं बाकी न रह्युं. अमे आवी रीते जे अमे वात करी तेने सांभळीने ते वातनी जे भगवानना भक्तने दृढता होय तेनो संग राखवो तो एने आ वार्तानी दिवसे दिवसे दृढता थाती जाय. (५) अने आ वात जे अमे करीए छइए ते कांइ बुद्धिनी कल्पनाए नथी करता, तथा सिद्धाइ जणाववा सारु नथी करता आतो अमारी अनुभवेल वात

छे, ने जेम अमे वर्ताए छइए तेम वात करीए छइए केम जे अमारे स्त्री धनादिक पदार्थनो भारे योग छे, तथा पंचविषयनो भारे योग छे, तथा सुरत, अमदावाद, वडोदरे, वरताले जाइए छइए त्यारे हजारो माणस भेगां थाय छे, ने ते माने छे तथा वाजते गाजते अति सन्मान करीने पधरावे छे, तथा त्यां त्यां भारे भारे जायगाओ जोयामां आवे छे, तथा भारे वस्त्र वाहनादिकनो योग थाय छे ए सर्वे छे तथापि पोताना आत्मा सामी दृष्टि करीए छइए तथा भगवानना महात्म्य सामी दृष्टि करीए छइए त्यारे ए सर्वेनुं अति तुच्छपणुं थइ जाय छे एमां कोइ ठेकाणे बंधाइ जवातुं नथी, ने पूर्व देहनी जेम विस्मृति छे तेमज ए सर्वेनी विस्मृति थइ जाय छे. माटे ए बे वात अमारे सिद्ध थइ छे, ते सारुं एम अमारे वर्ताय छे, अने बीजो पण जो ए बे वातने सिद्ध करे तो तेने कदाचित् एवो कोइक योग थइ जाय, तो पण एने एम वर्ताय माटे आ वात अवश्य समझवानी छे. एवी रीते श्रीजीमहाराजे कृपा करीने बीजाने समझाववा सारुं पोतानुं वर्तन लेइने वार्ता करी, ने पोते तो साक्षात् श्रीपुरुषोत्तम नारायण छे. (६) ६

इति वचनामृतम् ॥ ३९ ॥ (२७३)

रहस्यार्थ प्र०—आमां कृपावाक्य (१) छे. तेमां श्रीजीमहाराजे कह्युं छे जे देहमां अहंबुद्धि ने पदार्थमां ममत्वबुद्धि एज माया छे, ते मायाने टाळीने अमारे विषे प्रीति करवी, अने माया थकी रक्षा करजो ने तमारा साधुनो योग थजो, ने ते साधुने विषे हेत ने ममत्व थजो, एम अमारी पासे मागवुं. (१) अने साधु साथे कोइक निमित्ते बोलाचाली थाय तो पोताने आत्मा जाणता होइए तो साधुनो अवगुण न आवे, माटे पोताने देहथी पृथक् आत्मा जाणवो ते आत्मा तेजस्वी छे, जाणपणे युक्त छे ने अजर अमर छे. (२) अने अमे अनंत ब्रह्मांडना राजा छीए, ने अतिशे सुखमय छीए ने सर्वेने सुखना दाता छीए ने सर्वेना कर्त्ता छीए ने अतिशे समर्थ छीए, आवुं अमारुं महात्म्य जाणे तो अमारा विना बीजेथी वैराग्य थाय ने अमारे विषे प्रीति थाय ने आत्मापरमात्माना ज्ञाननो वेग लगाडी दे तो आ ज्ञान सिद्ध थाय, ने इंद्रियोनी वृत्ति विषयमांथी नीकळीने अमारे विषे वळगे ने तेनेज सत्संगी कहीए. (३) अने आ वात दैवी जीवने रगरगमां प्रवर्ती जाय, ने आसुरी जीवने बहार निकळी जाय. (४) अने अमे एकज भगवान छीए पण अमारा जेवो कोइ थतो नथी, आ वात समझाय तेने कांइ करवुं बाकी रह्युं नथी, ने आवी दृढतावाळानो संग राखवो. (५) ने आत्मा तथा अमारा महात्म्य सामी दृष्टि राखे तो कोइ ठेकाणे बंधाय नहिं. (६) बावतो छे.

१ प्र० श्रीजी बाबतमां आत्मा परमात्मामां वेग लगाडवो एम कह्युं ते परमात्मा तो श्रीजीमहाराज छे पण आत्मा कियो जाणवो ? ने वेग लगाडनार कोने जाणवो ?

१ उ० त्रण देहथी नोखो एवो जे जीवात्मा ते पोते पोताने विषे ने श्रीजीमहाराजने विषे हेत लगाडे एम कह्युं छे ते (प्र० १० ना पहेला प्रश्नमां) पोते पोताने जोवो नथी

तेज अज्ञानीमां अतिशे अज्ञानी छे एम कह्युं छे, माटे जीव पोते पोताने विषे वेग लगाडे जे हुं ब्रह्मरूप एवो आत्मा छुं ने मारे विषे श्रीजीमहाराज रह्या छे एवो आलोच राखीने पोताना आत्माने श्रीजीमहाराजना तेजरूप मानीने तेने विषे श्रीजी महाराजनी मूर्तिने अखंड धारे एम कह्यं छे पण जोनारो आत्मा ने जोवानो आत्मा जुदो नथी. ॥ २७१ ॥

इतिश्रीकच्छदेशे वृषपुरनिवासी अनादिमुक्तराज श्रीअबजीभाइ विरचित साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम परब्रह्म भगवान श्रीस्वामिनारायण मुखकमळ निःसृत वचनामृत रहस्यार्थप्रदीपिकायां गढडाअंत्य प्रकरणं समाप्तम् ॥ २७२ ॥

एवी रीते आ जे सर्वे श्रीजीमहाराजनां वचनामृत ते मुक्तानंदस्वामी तथा गोपाळानंदस्वामी तथा ब्रह्मानंदस्वामी तथा नित्यानंदस्वामी तथा शुकमुनि ए पांच सद्गुरु ए मळीने जेम सांभळ्युं छे ने जेम पोतानी बुद्धि छे ते प्रमाणे लख्यां छे, अने श्रीजीमहाराज जे ते दिवस दिवस प्रत्ये आवी रीतनी अनेक प्रकारनी वार्तानि करता थका ने पोताना भक्त जनने आनंद उपजावता थका श्रीगढडा,श्रीनगर ने वरताळ आदिने विषे विराजता हवा. ॥ श्लोकाः ॥ मुक्तानंदोथगोपाळानंदोमुनिरुदारधीः । ब्रह्मानंदमुनि नित्यानंदः शुकमुनिस्तथा ॥१॥ तैः पञ्चभिः सुसंगत्य श्रीहर्युक्तिसुधोदधिः । लिखितः शोधितश्चापि यथा बुद्धिर्यथाश्रुतम् ॥ २ ॥ वचोमृतानितत्रादौ दुर्गपुरे तु धार्मिणा । अष्टसप्तति संख्यानि प्रोक्तानीष्टप्रदानिहि ॥ ३ ॥ प्रोक्तानिच ततस्तेन सारंगपुरसंज्ञके । ग्रामेऽष्टादशसंख्यानितानीष्टानिभवन्तिहि ॥ ४ ॥ तेनोक्तानि ततस्तानि ग्रामे कार्यायनाभिधे । सन्तिद्वादश संख्यानि सर्व सौख्यकराणिहि ॥ ५ ॥ लौहाभिधे ततोग्रामे तानि प्रोक्तानितेनच । सन्त्यष्टादशसंख्यानि भक्ताभीष्टप्रदानिहि ॥ ६ ॥ ग्रामे पंचाळसंज्ञेऽथ तेनतान्युदितानिवै । सन्त्येकान्तिकभक्तानां प्रेष्टानिसप्तसंख्यया ॥ ७ ॥ पुनर्दुर्गपुरेतेन स्वामिनाकथितान्यथ । सन्तितानिसप्तषष्टि संख्यातानिहितत्त्वतः ॥ ८ ॥ ततोवृत्तालयपुरे तेन धर्मसुतेनच । तानिविंशति संख्यानि कथितानि भवन्ति हि ॥९॥ ततः श्रीनगरेप्रोक्तान्यष्टौमोक्षप्रदानिच । श्रीभक्तिधर्मपुत्रेण सन्तिभक्तप्रियाणिहि ॥१०॥ अश्लीलसंज्ञकेग्रामेऽप्येकमुक्तं हिधार्मिणा । पञ्चतान्युक्तवान्स्वामी जयतल्पपुरे ततः ॥११॥ कथितानिपुनस्तेन स्वामिनादुर्गपत्तने । तानिसन्त्येकोनचत्वारिंशत्संख्यानितत्त्वतः ॥१२॥ एवंहितानि सर्वाणि मितानित्रिनगाक्षिभिः।सन्तिसंलिखितानि श्रीमहाराजनिदेशतः॥१३॥ इमानिये पठिष्यन्ति श्रोष्यन्तिचादराज्जनाः। भविष्यतिहरौतेषां भक्तिरेकान्तिकी ध्रुवम् ॥१४॥ आप्याययन्निजजनान्स्वकीयवचनामृतैः । जयतिश्रीहरिःस्वामी श्रीमद्दुर्गपुरे

प्रभुः ॥१५॥ स्वधर्मस्यचजीवात्मज्ञानस्य विरतेस्तथा॥माहात्म्येनसहस्वीय ज्ञानभक्त्यो र्येयार्थतः ॥ १६ ॥ कल्याणानिस्वभक्तेभ्यो यउवाचदयानिधिः । नानाविधैः प्रसंगैस्तं नमामो भक्तिनंदनम् ॥ १७ ॥ निजैर्वचोमृतैर्लोकेऽतर्पयन्यो निजाश्रितान । प्रीतोनः सर्वदासोऽस्तु श्रीहरिर्धर्मनंदनः ॥ १८ ॥ तद्वचोमृतपातारो ये स्युस्तत्पदसंश्रयाः । सत्संगिनः प्रसन्नास्ते भवंन्त्वस्मासु सर्वदा ॥ १९ ॥

॥ इति श्रीभक्तिधर्मात्मजः श्रीसहजानंदस्वामी वचनामृतानि संपूर्णानि ॥



॥ अथ निष्काम शुद्धि प्रारभ्यते ॥

श्लोक. ॥ सुव्रत उवाच ॥ षष्ठ्यानिशागमेराजन्सदस्युच्चासनस्थितम् ॥ ब्रह्मानंदोमु-
नींद्रस्तंप्रणम्याऽपृच्छदीश्वरम् ॥ १ ॥

अर्थः—सुव्रत नामे ऋषि जे ते प्रतापसिंह नामे राजा प्रत्ये कहे छे ॥ हे राजन् छठथने दिवस संध्या आरति थया केडे सभाने विषे उंचा सिंहासन उपर विराजमान एवाने साक्षात् परमेश्वर नारायण एवा जे श्री सहजानंदस्वामी महाराज तेमने नमस्कार करीने मुनि मध्ये श्रेष्ठ एवा जे ब्रह्मानंद मुनि तेजेते पूछता हवा ॥ १ ॥ हे भगवन् आ उद्धव संप्रदायने विषे तमारा भक्त एवा जे अमे घणाक पुरुष ते जे ते निष्काम एवुं जे ब्रह्मचर्य व्रत तेने आशर्या छइए ॥ २ ॥ हे स्वामिन तेजे अमे ते अमने क्यारेक स्त्रीना संबंधे करिने ते ब्रह्मचर्य व्रतनो भंग थइ जाय त्यारे तेनी शुद्धि जे प्रायश्चित्त ते जेम होय तेम तमे कहेवाने योग्य छो ॥ ३ ॥ एवि रीत्ये पुछ्या एवा श्री नारायणमुनी जे श्री सहजानंदस्वामि महाराज तेजेते बोलता हवा ॥ हे मुनि जाणिनेतो ते ब्रह्मचर्य व्रतनो जे भंग ते क्यारेय न करवो अने जो अजाणे ते व्रतनो भंग थइ जाय तो तेनी शुद्धि जेते तत्काळ करवी. ॥ ४ ॥ अने ते शुद्धिये करीने अष्ट अंगे जुक्त एवुं जे ब्रह्मचर्य व्रत तेनुं रक्षण थाय छे अने ते ब्रह्मचर्य व्रतना रक्षण थकी भगवानना जे त्यागी भक्त तेमने एकांतिकपणुं थाय छे ते कारणपणा माटे ते शुद्धि जे ते करीए छीए ॥ ५ ॥ निष्काम एवुं जे ब्रह्मचर्य व्रत तेनो पाळनारो जे पुरुष तेजेते स्त्रियोनी जे वार्त्ता तेने प्रीतिये करीने कान देइने क्यारेय पण जो सांभळे तो एक उपवास करे ॥ ६ ॥ अने ते निष्काम व्रतवाळो जे पुरुष तेजेते सत्शास्त्र जे श्रीमद्भागवतादिक ग्रंथ तेने विषे कही जे स्त्रियोना गुण अवगुणनी कथा ते विना जो बीजी स्त्रियोना गुणनुं वर्णन करे तो एक उपवास करे अने तेमज ते स्त्रियोना अवगुणनुं जो वर्णन करे तो पण एक उपवास करे ॥ ७ ॥ अने असत्काव्य जे रसमंजरीने रसिकप्रिया आदिक रसिक ग्रंथ तेमने विषे वर्णन कर्या एवा जे मुग्धा मध्या आदिक स्त्रियोना भेद तेमने जो निष्कामव्रतवाळो पुरुष सांभळे तो एक उपवास करे अथवा ते भेदनुं जो पोते वर्णन करे तो पण एक उपवास करे ॥ ८ ॥ अने पोतानी इच्छाए करीने परस्पर क्रीडा करती एवी जे स्त्रियो तेमने जोतो थको पुरुषनी पेठये घडिकवार जो त्यां उभो रहेतो ए निष्काम व्रतवाळो पुरुष जे ते एक उपवास करे ॥ ९ ॥ अने स्त्रीनी द्रष्टि संघाथे पोतानी द्रष्टिने बांधतो थको क्षणमात्र पण जो ते स्त्रीने जुवे तो ए निष्काम व्रतवाळो पुरुष जे ते एक उपवास करे ॥ १० ॥ अने स्त्रीना अंग उपर रह्युं जे वस्त्र तेनो जो स्पर्श थाय तो निष्काम व्रतवाळो पुरुष जेते एक उपवास करे अने स्त्रीना हाथ पग आदिक जे अंग तेनो जो स्पर्श थाय तो एक उपवास करे अने स्त्रीने पहेरवानुं जे वस्त्र तेनो जो स्पर्श थाय तो पण एक उपवास करे अने ते वस्त्र

जो धोयुं वकुं भीनुं होय अथवा धोयुं वकुं सुकायेलुं होय अथवा नवुं होय तेने अडी जवाय तो तेनो उपवास नहीं अने स्त्रिये पोताना अंग उपरथी उतारीने मुक्युं जे वस्त्र तेने जो अडी जवाय तो एक उपवास करे ॥ ११ ॥ अने निष्काम व्रतवाळो जे पुरुष तेजेते जो भगवाननी वार्त्ता स्त्रीने संभळाववा सारु पुरुषनी आगळ करे तो एक उपवास करे ॥ १२ ॥ अने जेना चित्तने विषे स्त्री संबंधी मलीन संकल्प पण जो थइ जाय तो ते निष्काम व्रतवाळो पुरुष जे ते एक उपवास करे॥ अने स्त्री संघाथे बोली जवाय तो एक उपवास करे ॥१३॥ स्त्री अने पुरुष पासे स्त्रीने छानो ज्ञान वार्त्ता जो कही मोकले तो ते निष्काम व्रतवाळो पुरुष जे ते एक उपवास करे तथा ते स्त्रिये कोइक पुरुष पासे छानी वार्त्ता कहेवरावी होय ने तेने जो छानो सांभळे तो एक उपवास करे ॥ १४ ॥ अने निष्कामव्रतवाळो जे पुरुष तेजेते भगवाननी प्रसादी एवुं जे पुष्पचंदन अन्नवस्त्रादिक पदार्थ ते जो छानुं स्त्रीने दइ मोकले तो एक उपवास करे ॥ १५ ॥ अने स्त्रिये मोकल्युं जे भगवाननुं प्रसादि एवुं पुष्प चंदन अन्नादिक वस्तु तेने जो छानुं ग्रहण करे तो प निष्काम व्रतवाळो पुरुष जे ते एक उपवास करे ॥ १६ ॥ अने पुस्तक लखीने अथवा लखावीने जो छानुं स्त्रीने अर्थे मोकले तो ते निष्कामव्रतवाळो पुरुष जे ते एक उपवास करे ॥ अने पुस्तक लखाववा सारु स्त्रिये मोकल्या जे कोरा कागळ तेने जो छाना ग्रहण करे तो एक उपवास करे ॥ १७ ॥ अने अन्न वस्त्रादिक जे कांइक पदार्थ होय ने ते जो छानुं स्त्रीने अर्थे मोकले तो ते निष्काम व्रतवाळो पुरुष जे ते एक उपवास करे तथा ते स्त्रिये मोकल्युं जे अन्न वस्त्रादिक कांइक पदार्थ तेने जो छानुं ग्रहण करे तो ते एक उपवास करे ॥ १८ ॥ अने स्त्रियोनां जे चित्रामण तेने मन देइने जो जुवे तो ते निष्काम व्रतवाळो पुरुष तेजेते एक उपवास करे ॥ तथा जो स्त्रीनुं चित्रामण पोते करे तो एक उपवास करे ॥ तथा स्त्रीना वेशने धारी रह्यो जे पुरुष तेने जो अडे तो एक उपवास करे ॥ तथा ते साथे जो बोले तो एक उपवास करे ॥ १९ ॥ अने जे स्थळने विषे स्त्रियोनी जे स्नान आसनादिक क्रिया ते थाती होय ने ते स्थळने विषे जो ते क्रियाने करे तो प निष्काम व्रतवाळो पुरुष जेते एक उपवास करे ॥ २० ॥ अने जे स्थळने विषे स्त्रियोनो पग फेर होय ते स्थळने विषे जो लघुशंका करवा जाय तो ते निष्काम व्रतवाळो पुरुष जेते एक उपवास करे॥तथा ते स्थळने विषे जो दीशा फरवा जाय तो पण एक उपवास करे॥२१॥ निष्काम व्रतवाळो जे पुरुष तेजेते जो स्त्रीना मुख थकी भगवाननी वार्त्ता सांभळवा सारुं उभो रहेतो ते एक उपवास करे अने वळी जो स्त्रियोने सन्मुख बेसे तो पण एक उपवास करे ॥ २२ ॥ अने मार्ग पोळो होय तथा कोइ आपत्काळ न पड्यो होय तो पण जो स्त्री थकि पांच हाथने छेटे न चाले ने ढुकडो चाले तो निष्काम व्रतवाळो पुरुष जे ते एक उपवास करे ॥ २३ ॥ अने निष्काम व्रतवाळो पुरुष जेते जो स्त्री

मेळो एक गाडा उपर बेसे तो ते एक उपवास करे ॥ तथा स्त्रीना चित्रामणने अडे तो पण ते एक उपवास करे ॥ २४ ॥ अने देवतानी प्रतिमा विना बीजी जे काष्ट मूर्तिकाने पाषाण आदिकनी स्त्रीनी पुतळी तेने जो अडी जवाय तो निष्काम व्रतवाळो पुरुष जे ते एक उपवास करे ॥ अने स्त्रीनुं जे गुह्य अंग तेने जो देखी जवाय तो एक उपवास करे ॥ २५ ॥ अने मैथुनने विषे आसक्त एवां जे पशु तथा पक्षी तेमने जो क्यारेक मनने परवश थइने जोवाइ जवाय तो ते निष्काम व्रतवाळो पुरुष जे ते उपवास करे ॥ २६ ॥ अने वाड तथा वंडी तथा भित तेणे करीने बंधीये युक्त एवुं जे पोतानुं स्थानक तेने विषे कोइक प्रयोजन सारु अथवा अजाणे अथवा सहज स्वभावे कोइक स्त्री आवे ने त्यां जो एकलो होय तो ते निष्काम व्रतवाळो पुरुष जे ते एक उपवास करे ॥ २७ ॥ अने कोइक कार्यने अर्थे अथवा सहेज स्वभावे अथवा आपत्काळे करीने निष्काम व्रतवाळो जे पुरुष जे ते पोते एकलोज जे घरमां स्त्री होय ते घरमां पेसीने जो तत्काळ पाछो निसरी आवे तो पण ते एक उपवास करे ॥ २८ ॥ अने स्त्रीना संबंधे करीने पोताना व्रतने दुषण पमाडे एवुं मलिन स्वप्न जो थाय तो ते निष्काम व्रतवाळो पुरुष जे ते एक उपवास करे तथा स्त्रीना दर्शने करीने जो वीर्यपात थाय तो एक उपवास करे ॥ २९ ॥ अने भोजन करवाने अर्थे बेठो एवो जे निष्काम व्रतवाळो पुरुष तेने जो स्त्री पीरसे तोते पोताना आत्मानी शुद्धिने अर्थे एक उपवास करे ॥ ३० ॥ अने निष्काम व्रतवाळो जे त्यागी पुरुष तेजेते बहिरवासे करीने नथी ढांक्युं कौपिन जेणे एवो थको जो कियोथे युक्त एवीजे सभा ते मध्ये आवे तो एक उपवास करे ॥ ३१ ॥ एवी रित्ये सामान्यपणे करीने स्त्रीना संबंधने विषे एक एक उपवास करवो कह्यो अने एवीज रित्यनुं जे बिजुं स्थानक तेने विषे पण जो एवो स्त्रीनो संबंध थाय तो ते निष्काम व्रतवाळो पुरुष जे ते एक उपवास करे. ॥३२॥ हवे एथी कांइक विशेषे स्त्रीनो संबंध थाय तेने विषे विशेषे उपवास करवानी रित्य कहिये छइए ॥ एकली जे स्त्री ते संघाथे एकलो जे पोते निष्काम व्रतवाळो पुरुष तेनी एकांत स्थळने विषे थोडीकवार जो स्थिति थइ जाय तो ते निष्काम व्रतवाळो पुरुष जेते लागट त्रण्य उपवास करे तथा एकली जे स्त्रीते भेळे एकलावतेजो मार्गमां चलाइ जवाय तो पण ते लागट त्रण्य उपवास करे ॥ ३३ ॥ अने निष्काम व्रतवाळो पुरुष जे ते काम वश थइने जो पोताने हाथे करिने वीर्यपात करे अथवा बीजाने हाथे करीने वीर्यपात करावे तो ते लागट चार दिवस सुधी उपवास करे. ॥ ३५ ॥ अने जो साक्षात स्त्रीनो संग थाय तो बार महिना सुधी निरंतर धारणा पारणा नामे जे व्रत तेने करे तेजे दिवस उपवास करे ते दिवस तो केवळ जळमात्रज पिवे अने जे दिवस पारणा करे ते दिवस तो मीठा विनानो केवळ साथवो पाणीमां घोळीने पिवे एवी रीते बार महिना सुधी करे. ॥ ३५ ॥ अने बार महिना सुधी जे ए धारणा पारणा व्रत तेने करवाने अर्थे असमर्थ एवो जे पुरुष तेजेते धर्मशास्त्रने विषे कह्यो जे ए पाप निवारवा-

नो बीजो प्रकार तेने जाणीने पोतानी शक्तिने अनुसारे करीने करे. ॥ ३६ ॥ अने ए निष्काम व्रतनी शुद्धिने अर्थे जे जे उपवास करवा कह्या छे तेने विषे निष्काम व्रतवाळो जे उपवासनो करनारो पुरुष तेजेतें एक जळमात्रज पिवे पण बिजुं कांइ खाय नहि अने बाळक होय तथा रोगी होय तथा वृद्ध होय ने तेमने पण जो ए पूर्वे कही आव्या ते माहिलो उपवास करवो पडे तो ते उपवासने दिवस एक जळमात्रज पिवुं पण बिजुं कांइ खावुं नहि ।। तेमां आठ वर्षथी उपर ने सोळ वर्ष सुधी बाळक कहेवाय अने एंशी वर्षनो होय ते वृद्ध कहेवाय एवी रित्ये व्यवस्था छे ॥ ३७ ॥ अने ए निष्काम व्रतना पाळवावाळा जे पुरुष तेमणे एटला जे ए उपवास ते अवश्य करवा कहेतां जरूर करवा एवी रित्ये अमारीज आज्ञा छे एम तमारे सर्वने जाणवुं. ॥ ३८ ॥ अने निष्काम व्रतना पाळनारा जे पुरुष तेनेते ए निष्काम व्रतना भंगने विषे कह्या जे उपवास तेमने जो करशे नहि तथा ते उपवासने कोइक करतो हशे ने तेने वारशे ए बे जणा जे ते अतिशे कामे करीने व्याकुळ थाशे. ॥ ३९ ॥ अने ए निष्कामव्रतना भंगना जे उपवास तेने करशे एवा जे बाळक वृद्ध ने रोगी तेमने दयाये करीने जे वारे तो तेमनी शुद्धिने अर्थे ते वारनारो पोते ते उपवासने करे. ॥ ४० ॥ अने निष्काम व्रतना पाळनारा जे पुरुष तेमना अंतःकरणने शुद्धिने अर्थे अमे करी जे आ मर्यादा तेने जे निष्काम व्रतवाळा पाळे तेमने अमारा उद्धव संप्रदायना जाणवा अने ए मर्यादाने जे न पाळे ते उद्धव संप्रदाय थकी बाहेर छे ने विमुख छे ॥ ४१ ॥ हवे सुव्रत ऋषि कहे छे हे राजन सर्व दुःख मात्रने नाश करी नाखे एवा हरि जे श्रीसहजानंदस्वामी महाराज तेनुं जेएवी रित्युं वचन तेने सांभळीने मोटा ऋषि जे ते ब्रह्मानंदमुनि तथा ते सभाने विषे बेठा जे गृहस्थ विनाना बीजा ए निष्काम व्रतना पाळनारा हरिना जन ते सर्वे जे ते प्रसन्न थया थका पोताना भक्तजननुं जे हित करवुं तेने विषे तत्पर एवा जे ते श्रीजीमहाराज तेने नमस्कार करीने जेम ए श्रीजीमहाराजे कह्युं तेवीरित्ये पाळवानी सर्वे प्रतिज्ञा करता हवा ॥ ४२ ॥

इतिपरमपवित्रामत्रनिष्कामशुद्धिर्मतिदिनमनुरागाद्येपठेयुः प्रभाते । त्रिभुवनजयदर्पांतेसुखेनैवकामंसकलगुणकलंकंनूनमुन्मूलयेयुः ॥ ४३ ॥

एवी रित्ये श्रीजीमहाराजे कहीने परम पवित्र एवी जे आ निष्काम शुद्धि तेनो आ श्लोकने विषे जे निष्काम व्रतवाळा पुरुष तेजेते दिवस दिवस प्रत्ये प्रभातने समे अति हेत थकी जो पाठ करे तो ते सुखे करीने पोताना हृदय थकी कामने मूळमांथी उखाडी नांखे ते काम केवो छे तो त्रिलोकीनो जे जय तेणे करीने छे अतिशे अहंकार जेने एवो छे अने समग्र जे रुडा गुण मात्र तेनो कलंकरूप छे कहेतां समग्र रुडा गुणने भुंडा करी नांखनारो छे.

॥इति श्रीसहजानंदस्वामी शिष्य नित्यानंदमुनि लिखिता निष्कामशुद्धि टीका समाप्ता.॥

श्री स्वामिनारायणो विजयतेतराम्

॥ अथ वचनामृतस्थविषयानुक्रमणिका अकारादिक्रमेण ॥

+संकेतसूची:—

ल० लक्षण	वि० विवेक	प्र० प्रकार	वि० विगत
उ० उपाय	नि० निरुपण	व० वर्णन	क० कहेवानो हेतु
वि० विशेषण	प्र० प्रयोजन	का० कारण	प्र० प्रतिपादन

वचनामृतस्थविषयानुक्रमणिकासमाप्ता

श्रीस्वामिनारायणो विजयतेतराम्

रहस्यार्थप्रदीपिकाख्यटीकास्थ विषयानुक्रमणिका

अकारादिक्रमेण प्रारभ्यते

* संकेतसुची:—		लक्षण.	ल.	उपाय.	उ.	विगत.	वि.
प्रयोजन.	प्र.	वर्णन.	व.	विशेषण.	वि.		
कारण.	का.	प्रतिपादन.	प्र.	प्रकार.	प्र.	कहेवानो हेतु	क.

॥ इतिश्री टीकास्थ विषयानुक्रमणिका समाप्ता ॥

संवत् १८७६ ना भादरवाशुदि ११ एकादशीने दिवसेस्वामि श्रीसहजानंदजी महाराज श्रीगढडामध्ये दादाखाचरना दरबारमां विराजमानहता ॥ तेसमयनेविषे यह पत्रलखाव्यो छे तेश्रीमद्भागवदादि सद्ग्रंथोनेविषेथीलख्युंछे जेभरतखंडमां मनुष्यनोदेहपामवो ते अतिदुर्लभछे चिंतामणितुल्यछे ॥ जेदेहने इंद्रादिकदेवता इच्छेछे ॥ तेदेवतानेविषय नेवैभवविलासनेआयुष तेतोमनुष्यनाथकि घणुंअधिक छे ॥ पणत्यांमोक्षनुंसाधन नथीथातुं ॥ मोक्षनुंसाधनतो भरतखंडनेविषे मनुष्य देहपाम्याथकिथायछे ॥ तेविना बिजेकोईठेकाणे ने कोइदेहनेविषेथातुंनथी ॥ ए हेतुमाटेसर्वदेशथी मृत्यलोकमां भरतखंडने विषे मनुष्यनोदेहपामवोते अधिकछे॥ तेनेतुल्यबिजुंकोइ चौदलोकमां स्थानकनथी ते चौदलोकनांनाम ॥ यहमृत्यलोकछे तेथीउर्द्धछलोकछे ॥ तेमांप्रथमभुवर्लोक छे १ तेमांमलीनदेवरहेछे ॥ तेथीउर्द्ध बिजो स्वर्गलोकछे २ तेमांइंद्रादिदेवरहेछे ॥ तेथिउर्द्धत्रिजोमहर्लोकछे ३ तेमां अर्यमादिपित्रिदेवरहेछे ॥ तेथीउर्द्धचोथोजनलोकछे ४ तेथीउर्द्धपांचमो तपलोकछे एबेलोकमां भृगवादिऋषिरहेछे ॥ तेथी उर्ध्वछठो सत्यलोकछे ६ तेमांब्रह्मारहेछे ॥ एसत्यलोकसहितसातलोकछे ॥ तेमृत्यलोकथि अधोजे हेठासातलोकछे ॥ तेमां प्रथमतोअतल १ बिजोवितल २ त्रिजोसुतल ३ एत्रण्यनेविषेदैत्यरहेछे ॥ तेथीहे ठोतलातल १ बिजोमहातल २ त्रिजोरसातल ३ एत्रण्यमांनिशाचररहेछे ६ एनेहे ठाकह्यातेथिहेठोसातमो पातालछे ७ तेमांसर्परहेछे ॥ एसातलोकते मृत्यलोकथि हेठाछे ॥ तेसहितसर्वथइनेचौदलोकथया ॥ तेमांमृत्यलोकछेतेश्रेष्ठछे ॥ तेमृत्यलोकना सातद्वीपछे ॥ ते चक्राकारछे ॥ नेतेनेमध्येजंबुद्वीपछे तेएकलक्षजोजननोछे ॥ तेने फरतोखाराजलनोसमुद्रछे ॥ तेपणएकलाखजोजननोछे १ तेथीबिजोप्लक्षनामेद्वीपछे॥ तेबेलाखजोजननोछे तेनेफरतोसमुद्र तेपणबेलाखजोजननोछे २ तेनुंजलईक्षुजेसेर- डिनारसजेवुंछे ॥ नेतेथीत्रिजोशाल्मलिद्वीपछे॥ तेफरतोछे तेच्यारलाखजोजननोछे ॥ तेनेफरनोसमुद्रछे तेच्यारलाखजोजननोछे ॥ तेनुंजलतेसुराजे दारूनाजेवुंछे ३ तेथीचोथोकुशद्वीपछे ॥ तेफरतोछे ॥ नेतेआठलाखजोजननोछे ॥ नेतेवडोफरतो समुद्रछे ॥ नेतेनुंजलघृतजेघीतेजेवुंछे ४ नेतेथीपांचमोक्रौंचद्वीपछे ॥ तेसोललाख- जोजननोछे ॥ नेतेवडोफरतोसोललाखजोजननोसमुद्रछे ॥ तेनुंजलतेक्षीरजेदुधते जेवुंछे ५ तेथीछटोशाकद्वीपछे ॥ तेबत्रीशलाखजोजननोछे तेनेफरतोसमुद्रछे ते ते जेवडोछे ॥ तेनुंजलतेदधिमंडोदजेदहितेना घोलवाजेवुंछे ६ तेथिसातमोपुष्करद्वीपछे तेचोसठलाखजोजननोछे ॥ नेतेनेफरतोसमुद्रछे ॥ तेपणचोसठलाखजोजननोछे ॥ तेनुंजलतेसुधाजेवुंमीठुंछे ७ एविरितेसातद्वीपछे तेमांआजेबुद्वीपछेतेश्रेष्ठछे ॥ नेते जंबुद्वीपनानवखंडछे तेकेमछेतोएद्वीपछे ॥ तेनेमध्येसुवर्णनोमेरुपर्वतछे ॥ तेपर्वतनी तलाटिमांचारेपासे फरतोएकईलावर्तनामेखंडछे ॥ तेमांसंकर्षणनीउपासनाछे ॥ नेत्यांशिवजीमुख्यभक्तछे ॥ अने वलीतेमेरुथि पश्चिमदिशायेएक केतुमालनामे खंडछे ॥ नेतेनुंसुभगएवुंबिजुंपणनामछे ॥ नेतेमांप्रद्युम्ननिउपासनाछे ॥ ने त्यांलक्ष्मी जीमुख्यभक्तछे ॥ अनेवलीतेमेरुथि उत्तरदिशायेत्रण्यखंडछे ॥ तेमांप्रथमरम्यकनामे खंड छे तेमांमच्छभगवाननी उपासना छे ॥ ने त्यांसावर्णिमनुमुख्यभक्त छे ॥ नेतेथीउत्तरमां बिजोहिरण्यमयखंडछे ॥ नेतेमांकूर्मजीनी उपासनाछे ॥ नेत्यांअर्य- मामुख्यभक्तछे ॥ नेतेथीउत्तरमां बिजोकुरुखंडछे ॥ नेतेमांवाराहनीउपासनाछे ॥ नेत्यांपृथ्वीमुख्यभक्तछे ॥ एपांचखंडथया ॥ नेवलीतेमेरुथिपुर्वदिशामांभद्राश्वनामे खंडछे ॥ नेत्यां [illegible] वासनाछे ॥ नेतेमांभद्रश्रवानामेमुख्यभक्तछे ॥ अनेवलीते

मेरुथिदक्षिणदिशामांत्रणखंडछे॥ नेतेमांप्रथमहरिवर्षखंडछे॥ तेनेविषेनृसिंहजिनीउपासनाछे॥ नेप्रल्हादजिमुख्यभक्तछेनेतेथीदक्षिणदिशामांबिजो किंपुरुषनामेखंडछेतेमांरा-मलक्ष्मणजीनीउपासनाछेत्यांहनुमानजीमुख्यभक्तछे ॥ नेतेथिदक्षिणदिशामांभरतखंडछे ॥ नेतेमांनरनारायणदेवनी उपासनाछे ॥ नेत्यांनारदजीमुख्यभक्तछे॥एविरित्थिआ-जंबुद्वीप तेनानवखंडकह्या तेमनेविषे भरतखंडछेतेअतिश्रेष्ठछे ॥ तेश्याहेतुमाटेतो बिजाआठखंडछे तेमांभोगविलासनां सुखतोघणांअधिकछे ॥ पणमोक्षनुं साधनत्यां थातुंनथी तेमोक्षनुंसाधन तेतो एकभरतखंडमांजथायछे ॥ ते हेतुमाटेआभरतखंडने तुल्य चौदलोकनेविषे बिजुंकोइठेकाणुंनथि अनेवलीभरतखंडछे तेमांपणतेरदेशछे ॥ तेअनार्यकेतांकठोरछे तेकहियेछैये ॥ एकतोबंगाल १ बिजोनिपाल २ त्रिजोभूट ३ चोथोकामाक्षि ४ पांचमोसंध ५ छठोकाबुल ६ सातमोलाहोर ७ आठमोमुलतान ८ नवमोएरान ९ दशमोअसतंबोल १० अगीयारमोअरबान ११ बारमोस्वाल १२ तेरमोपिलपिलाम १३ ॥ एतेरदेशमलीनछे तेमांजेमनुष्यदेहपामे तेनेमोक्षनादाता एवाजेसद्गुरु तेनोजोगमळवो नेमोक्षना धर्मनेसमजवुं तेघणुंकठणछे ॥ हवे बीजा साडाबारदेशछे तेआर्यकहेतांउत्तमछे तेमनांनामजेप्रथमतोएकपूर्व १ बिजोव्रज २ त्रिजोमालव ३ चोथोमारु ४ पांचमोपंजाब ५ छठोगुजरात ६ सातमोदक्षिण ७ आठमोमलबार ८ नवमोतिलंग ९ दशमोद्राविड १० अग्यारमोबारमलार ११ बारमोसोरठ १२ अरधोकच्छएसाडाबारदेशउत्तमछे ॥ तेमांसद्गुरुनेब्रह्मवेत्तासंतछे तेमनुंप्रगटपणुंघणुंरहेछे ॥ नेतेदेशमांमनुष्यदेहपामेछे ॥ तेमनेधर्मभक्तिवैराग्यज्ञान ए समजायएमछे॥ नेमोक्षनामारगनेजाणेएमछे तेकेमजाणेतो एजेउत्तमदेशछे॥ तेने विषेभगवाननाअवतार घणाकथायछे एटलामाटेएदेशश्रेष्ठछे ॥ अनेभरतखंडनासर्व मनुष्यछे तेमोक्षनोउपायकरेतो मोक्षथायएमछे ॥ नेनकरेतोनथाय माटेजेविवेकीछे तेनेहिंसादोषरहितथइने कुसंगनोत्यागकरि सद्गुरुनेब्रह्मवेत्तासंतनो आश्रयकरिने तेमनेसेववानेतेसद्गुरुनेसंततेमनांलक्षणसद्ग्रंथोनेविषेलख्यांछे ॥ जेधर्मभक्तिवैराग्य ज्ञानएआदिकशुभगुणसंपन्नहोय ॥ तेनेओळखीनेतेनोआश्रयकरवोने तेकहेतेवीरिते तेनावचनमांपोतानांदेहइंद्रियुंनेअंतःकरणतेराखवां नेभगवाननुंभजनकरवुं ॥ एज मोक्षनुंसाधनछे ॥ तेजेणेभूतकाळेकीधुं ॥ नेवर्तमानकाळेकरेछे ॥ नेभविष्यकाळेकरशे॥ तेनेअमुल्यमनुष्यदेहनोलाभथयोएमजाणवुं ॥नेतेनेसमजुनेमोटोजाणवो॥ अनेएमनथि समझतो नेतुच्छसंसारनांसुखमांलोभाइनेकालनाकोलिया एवाजेखोटामतवादिगुरु तेनांवचनमानिनेआवोमनुष्यदेहअमुल्यछेतेनेखुवेछे ॥ नेतेजगतमांतोडाह्याकहेवाता होय ॥ तथासमजुकहेवाताहोय ॥ अथवामोटाकहेवाताहोयने तेनीजगतमांजशकी-र्ति घणीहोय ॥ तेतोसर्वस्वप्नतुल्यछे ॥ तेनेसाचुंमानीनेतेमांमोहपाम्याछे ॥ ने मोक्षनोउपायनथीसमझता ॥ तोब्रह्मवेत्तासाधुनेसद्ग्रंथछे तेतेमनेमूर्खकहेछे ॥ आ-त्मघातीकहेछे ॥ नेतेमनेपाछोफरीनेआवोमोक्षक्षेत्रमांमनुष्यनोदेहमळवोतेनीविलंबतो घणीछे ॥ तेसद्ग्रंथोनेअनुसारेलख्युंछेजे आपणांवर्ष ६६६ छसेनेछासठनेमास८ आठ जायत्यारेब्रह्मानो१एकलवथायछे ॥ एवां६० साठलवनुं १ एकनिमिषते आपणांवर्ष ४०००० चालीशहजारजाय त्यारेब्रह्मानुंएकनिमिषथाय ॥ एवां ६० साठनिमिषनुं एकपलतेआपणांवर्ष २४०००००० चोविसलाखजायत्यारे ब्रह्मानुं १ एकपलथाय ॥ एवां ६० साठपलनो १ एकघडितेआपणांवर्ष १४४०००००० चौदकरोडनेचालीश लाखजायत्यारेब्रह्मानी १ एकघडिथायछे ॥ एवि ३० त्रिशघडिनो १ एकदिवसते

आपणांवर्ष ४३२०००००० च्यारअबजनेबत्रीशकरोडथाय त्यारेब्रह्मानो १ एकदिवस थायछे ते च्यारजुगनी १ एकचोकडि॥ १७२८००० सतरलाखनेअठाविशहजारसतजुग॥ १२९६००० बारलाखनेछनुहजारत्रेतायुग ॥ ८६४००० आठलाखनेचोसठहजारद्वापर ॥ ४३२००० च्यारलाखनेबत्रीशहजारकलिना ॥ ४३२०००० त्रेतालीशलाखनेविश हजारवर्षथायतारे १ एकचोकडिथाय ॥ एविब्रह्मानाएकदिवसमांएकहजारचोकडि जुगनीथायछे ॥ तेब्रह्माना १ एकदिवसमां ॥ १४ चौदमनुने ॥ १४ चौदइंद्रतेतुल्य राज्यकरीनेनाशपामेछे ॥ एकमनुने १ एकइंद्रआपणांवर्ष ३०८५७१४२८ त्रिशकोटि नेपंचासिलाखनेईकोतेरहजारनेचारशेंनेअठाविशने तेउपरांततमास ६ छोनेदिवस २५ पचविशघडि ४२ बेतालिशपल ५१ एकावननिमिष २५ पचविशलव ४२ बेतालिशनेउपरांत १२ बारलवनोचौदमोभाग एटलुंएकएकरहीनेचौदइंद्रथइजायछे तेब्रह्मानालवनिमिष्यादिक सर्वदिवसमांउपजीनेनाशथायछे ॥ तेनुंनामप्रथमनित्यप्रलय केवायछे नेतेब्रह्मानीएकरात्रीथायछेतारेब्रह्मासुवेछे तारेस्वर्गमृत्युनेपाताल एत्रिलोकिनोनाशथायछे ॥ तेजेवडोदिवसछे तेवडीरात्रिछे तेआपणांवर्ष ८६४०००००० आठअबजनेचोसठकरोडथाय त्यारेब्रह्मानिअहोरात्रिथइने एकदिवसथायछे तेदिवस दिवसप्रत्येनाशथायछे ॥नेदिवसांतरेपालुंकरेछे ॥ नेतेनाशथायछे तेनुंनाम २ बिजो निमित्तप्रलयकेवायछे ॥ एब्रह्माना १ एकदिवसनि अवधिकहि ॥ एवा ३० त्रिशदिवसनो १ एकमास ॥ एवाबारमासनुं १ एकवर्ष ॥ एवां १०० सोवर्षब्रह्मदेहराखे छे ॥ तेब्रह्मादेहमुकेत्यारे एचौदलोकसहित ब्रह्मांडनोनाशथायछे ॥ त्यारेप्रकृतिथी उपज्युंजेकारज तेसर्वप्रकृतिमांलयपामेछे॥ एत्रिजोप्राकृतप्रलयकेवायछे॥ चोथोआत्यंतिकप्रलयथायछे त्यारेतोअनंतकोटिब्रह्मांडनोनाशथायछे ॥ तेदिवसतोप्रधानपुरुषनुं कारणएजे प्रकृतिपुरुषतेपोताने विषेअनंतब्रह्मांडने प्रतिलोमकरीने पोतेअक्षरपुरुषना तेजमांलीनथायछे ॥ तेनुं नाम चोथो आत्यंतिक प्रलय कहेवाय छे ॥ तेप्रलय काळेजेमप्रतिलोमथायछे ॥ तेमउत्पत्तिकाळेअनुक्रमेतेथी लोमजउत्पन्नथायछे ॥ एतो चारप्रकारना प्रलयनुं कह्युं ॥ पणत्रिजोप्राकृतप्रलयतेब्रह्मानिआयुषअवधिनोकीधो एवासाडित्रण्यकोटि प्राकृतप्रलय थइ जाय छे ॥ त्यारेएजीवछे तेआवोमनुष्यदेहपाम्योहोय तेदेहव्रथाखोटामायिकसुखनेमलवादि गुरुनेआशरेरहिनेहारेछे ॥ तेजीवयमयातनाने नर्ककुंडनांदुःखने लखचोरासीजातनाजेदेहछे ॥ तेनादुःखभोगवीने [illegible]आंफरिनेपाछोसाडित्रण्यकोटीप्राकृतप्रलयकह्या एवाथाशे त्यारेफरिनेमोक्षक्षेत्रमांआवो मनुष्यनोदेहपामेछे ॥ एटलीफरिनेमनुष्यदेहपामवानीविलंबछे ॥ माटे हेभाइसुझेतोआजमभजीनेमोक्षना दात.जेसद्गुरुनेसंत तेनोआश्रयकरीनेतेनीआज्ञामां पोतानादेहने इंद्रियुनेअंतःकरणनेवरताविने पोतानाआत्मानुंश्रेयकरीने भगवानना धामनेपांहोंचो ॥ नेजोआजएवातनहिसमझो ॥ नेआवोमनुष्यदेह मोक्षनासाधननुं धामछे तेव्रथाहारशोतो फरीपाछोआवोजोग मलवानीविलंबतोमोटोलखिएटलोछे ॥ तेप्रमाणेभोगवीने तेअवधिपुरिथाशे तेदिवसजोगमोक्ष थवानोथाशे तेदिवसनोविचारशो तोथाशे नेनहिविचारोतो तेदिपणमोक्षथाशेनहि एसिद्धांतवातछे ॥ समझुहोयते विच्यारजोने मुरखनेमाथेतो श्रुतिस्मृतिनीआज्ञामानवि तेतोकोइएवातनेसमझशे नहि ॥ इतिवचनामृतम् ॥ १ ॥ श्रीरस्तु श्रीरस्तु श्रीरस्तु ॥

शुद्धिपत्रम्

प्रष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	२६	ऋपि	ऋषि
६	२९	सहस्त्र	सहस्त्र
८	३	पोनानां	पोतानो
१६	१४	ताळा	तळां
४५	१९	पत्रं	पवुं
५१	५	सनकाविकन	सनकादिकने
५२	७	पायश्चित	प्रायश्चित
५२	२५	श्रीजीमहाज	श्रीजीमहाराज
५५	१८	पुरुप	पुरुष
५७	२८	जेभ	जेम
५८	२५	उत्तभ	उत्तम
६१	२२	मुरवारविंदनी	मुखारविंदनी
६२	१६	भगवागना	भगवानना
६३	२०	सतने	संतने
७२	१०	आणवुं	जाणवुं
७२	३१	अ.४/३श्रीजाप्रभ्रमां	अ. ४/३ श्रीजामां
७९	२४	जेभ	जेम
८१	१२	भगवानभां	भगवानमां
८१	२०	जीवन	जीवने
८७	२	विराजरान	विराजमान
९२	२१	जे	जेजे
१००	२६	भगधानना	भगवानना
१०१	१९	वचनामृनमां	वचनामृतमां
११७	१८	पदार्थ	पदार्थनां
१२६	१७	शुश्रष	सुश्रूषा
१२६	१९	शास्त्रे	अनेशास्त्रे
१२७	२५	राजने	राजनी
१२८	५	जी	श्रीजी
१२८	१४	बांधी	बांधी हती
१३३	२४	समजवो	समजावो
१३५	२२	कृष्णस्य	कृष्णश्च
१३७	७	ताराच	ताराश्च
१३७	१२	तेजस्वि	तेजस्वी
१३७	२६	ज्ञानभक्ता	ज्ञानिभक्ता

प्रष्ट	पंक्ति	अशुध्ध	शुध्ध
१४०	२८	थाय छे	थाय छे तारे
१४२	१३	अते	अने
१४४	११	व्यभिचारी	व्यभिचरी
१४५	६	आत्मरूपे	आत्मारूपे
१४७	११	खोटा	खोटी
१४७	३०	मूतिमां	मुर्तिमां
१५३	१६	प्रकृतिभां	प्रकृतिमां
१५३	१९	पाघरीज	पाधरीज
१६१	२	त्यां	त्यारे
१६१	४	मोटा	मोटा तो
१६१	३०	बळवान	बळवान
१६६	१	जणवी	जाणवी
१७४	८	हो	होय
१७७	११	छटवाने	छुटवाने
१८१	२५	वळे	वडे
१८८	५	सुधी लइने	सुधी
१९०	१३	तं	ने
१९४	२१	मूळअक्षरनुंतेजतें मूळअक्षरनुंतेजते	मूळ अक्षरनुं तेज
१९६	९	प्रकृति	प्रकृतिपर
२००	२५	धोडा	घोडा
२०२	१४	हतो	हती
२०४	२५	नेपशु	ने विषे पशु
२०७	२६	प	पम
२१९	२	पछी जेणे	जेणे
२२०	१८	गोपिने	गोपियोने
२२८	२३	कदम	कर्दम
२२९	१	वर	वेर
२३३	१	करावनार पवा	(करावनार नहि पवा)
२३४	३०	शत्रने	शत्रुने
२३८	२९	करीनें करीने	करीने
२४०	१५	तेमी	तेनो

प्रष्ट	पंक्ति	अशुध्ध	शुध्ध
२४६	२७	ते	छे
२४९	२५	त्यां	ज्यां
२४९	२५	ते तेने	ने तेने
२६०	३०	जाटे	माटे
२७८	१३	अमे	अमे तो
२८४	१८	म २१	म ३१
३११	१८	० १५	प्र १५
३३८	२५	सने	अने
३५३	१४	थथी	नथी
३६०	८	ते स्वभावनो	तेनो
४१७	१२	ता	तां
४१७	२१	हान	होन
४२०	१४	आटा	ऑटा
४३५	५	ज्ञानन	ज्ञानने
४६५	७	श्वत	श्वेत
४७०	२३	पकला	एकली
४७४	९	त्रेवाश	त्रेषीश
४८०	४	अर्थेन	अर्थेने
४८४	२२	प्मन	प्मने
५०४	९	कृ्णोऽय	कृष्णोऽय
५०५	१०	माने न	माने ने
५१०	१२	जणवा	जाणवां
५३९	२७	तापनां	तोपनां
५४३	३२	सनादिक	सनकादिक
५४४	१५	पटला	पटली
५७९	२०	पापनी	पापना
५९३	१७	तोणप	तोपण
६००	२८	म. ६	म. ६६
६२५	९	तेमद	तेमंद
६४८	८	जे	जेणे
६५७	१५	काइ	कोइ
६५८	४	आत्माना	आत्मानो
६५८	१९	ओ ंखाय	ओळंखाय
६७०	१२	मेला	मेली
६७६	१३	प्रताति	प्रतीति
६७९	३०	जाशुद्ध	जोशुद्ध
६८०	१८	भगवानना	भगवाननी
६८०	२१	कुसंगना	कुसंगनो
६८२	१४	श्रीजा	श्रीजी
६८२	१७	माटेरा	मोटेरा
६८२	२२	रह्या	रह्यो
६८८	१०	ना	नो
६९१	५	धनस्था	धनश्री
७१५	७	हाथ	होय
७२२	५	स्रानो	स्रीनो
८२४	२०	मागरा	मोगरा
७२८	३	थका	थको
७३५	२५	पाळता	पाळतो

